

DUE DATE SLIP**GOVT. COLLEGE, LIBRARY**

KOTA (Raj)

Students can retain library books only for two weeks at the most

BORROWER'S No	DUE DATE	SIGNATURE

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रंथमाला

३२
७७७७७

आदर्श-

हिन्दी-संस्कृत-कोशः

डॉ० रामसरूप 'रसिकेश'

शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल० (सस्कृत), एम० ए०

पीएच० टी० (हिन्दी), विद्यावाचस्पति (धर्म०)

पूर्व-प्राध्यापक, डी० ए० वी० कालेज (लाहौर), हंसराज कालेज
(दिल्ली) तथा दिल्ली विश्वविद्यालय



चौरवम्बा विद्याभवन

वा रा ण सी २२१००१

चौखम्बा विद्याभवन

(भारतीय सस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक-विक्रेता)

चौक (बनारस स्टेट बैंक भवन के पोछे),

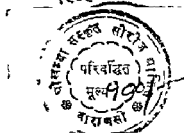
पोस्ट बाक्स नं० ६६

वाराणसी २२१००१

सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण

१९७६



अन्य प्राप्तिस्थान—

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय सस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक-विक्रेता)

के० ३७/११७, गोपाल मन्दिर लेन

पोस्ट बाक्स नं० १२६

वाराणसी २२१००१

मुद्रक—

श्रीजी मुद्रणालय

वाराणसी

THE
VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA

32

ॐ



ĀDARSA—

HINDĪ-SANSKRIT-KOŚA

By

Dr Ramsarupa 'Rasikesha'

*Shastri M A, M O L. (San), M A Ph D, (Hindi),
Vidyacharya (Dharmashastra)*

Ex Professor

D A. V College (Lahore), Hansraja College (Delhi)
and Delhi University



THE

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

VARANASI

© CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
(*Oriental Booksellers & Publishers*)
CHOWK (Behind The Benares State Bank Building)
Post Box No 6^o
VARANASI 221001

Second Edition

1979

Price Rs ~~5000~~ →

Also can be had of
CHAUKHAMBA SURABHARATI PRAKASHAN
(*Oriental Booksellers & Publishers*)
K 37/117, Gopal Mandir Lane
Post Box No 129
VARANASI 221001



समर्पणम्

दिवङ्गतां जननीं

सीतां

प्रति

नमस्कृत्य वदामि त्वां यदि पुण्य मया कृतम् ।
अन्यस्यामपि जात्यां मे त्वमेव जननी भव ॥



प्राक्कथन

प्रोफेसर विश्वबन्धु शास्त्री

M A, M O L., d' A Kt, C. T.

आदरणीय संचालन, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

संस्कृत भाषा का विद्याल, सर्वतोमुख साहित्य हो, निःसंदेह, वह सर्वोत्तम बपीती है, जो प्राचीन भारत से नवभारत को मिली है । संस्कृत-भाषा अतीव चिरंजीविनी है, वस्तुतः, अमिट और अमर है । सहस्रों वर्ष पूर्व के हमारे पुरखा इसी देवबाणी के द्वारा अपना सब बाण्यब्रह्मर चलाते थे । धीरे-धीरे फिर वह समय आया, जब शिक्षित जन ही इसका शुद्ध प्रयोग कर पाने में और शेष-सर्व-साधारण लोग इसके अनेक विकृत रूपों का प्रयोग करने लगे थे । वही विकृत रूप, पीछे—पाली, प्राकृत तथा उपभ्रंश कहलाए और बोल-चाल एवं साहित्य-सृष्टि के समुन्नत माध्यम भी बने । परन्तु, उस समय भी, साधारण जनता भन्ने ही शुद्ध संस्कृत न बोल सकती हो, वह, जबदम, उसे समझ लेती थी । संस्कृत की वही अमिट छाप हमारी धावुनिक भारतीय भाषाओं पर भी पड़ी हुई है, जिसके कारण, हमारे आज के विभिन्न प्रादेशिक बाण्यब्रह्मर के अन्दर ४०-५० से लेकर ८०-९० प्रतिशत तक, मानो, स्वयं संस्कृत-भाषा ही बोली और लिखी जा रही है । शुद्ध संस्कृत के माध्यम से होने वाली साहित्य-सृष्टि तो कभी रुकी ही नहीं । प्राचीन तथा मध्यकालीन युगों की बात तो अलग रही, आज के युग में भी संस्कृत-भाषा के सभी प्रकार के साहित्य की सृष्टि बराबर चालू है । आशा प्रतीत होती है कि देश की स्वतन्त्रता के साक्षान् फलस्वरूप राष्ट्रीय चेतना इस ओर प्रतिदिन अधिकाधिक जागृतक होती जायेगी ।

यह प्रमत्ता की बात है कि देश-भर में जहाँ-तहाँ अभियुक्त जन इस समय संस्कृत-ध्ययन के रङ्ग-ढङ्ग को सरलतर बनाने के प्रयत्न में लग रहे हैं । एतदर्थ कई प्रकार के अभिनव शिक्षण-क्रमों का आविष्कार तथा साधन-भूत सहायक साहित्य का निर्माण किया जा रहा है । प्रस्तुत 'आदर्श-हिन्दी-संस्कृत-कोश' उक्त सहायक साहित्य के ही अन्तर्गत एक उत्तम रचना है । इसके सुयोग्य लेखक ने इसे सब प्रकार से उपयोगी बनाने के लिए सकल प्रयास किया है ।

एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना मुकर नहीं होता । जब तक दोनों भाषाओं के प्रयोग-स्वारस्य का अच्छा धोष प्राप्त न किया हो, तब तक मक्खी पर मक्खी मारने के अतिरिक्त और कुछ सिद्ध नहीं किया जा सकता । एतदर्थ छात्रों को चाहिए कि दोनों भाषाओं के सत्साहित्य के सागर में स्वतन्त्र रूप से खुला अवगाहन करें । कोई भी व्याकरण या कोश का ग्रन्थ इस प्रधान साधन का स्थान नहीं ले सकता । परन्तु उक्त विस्तृत पठन के साथ-साथ, प्रतिदिन के कार्याभ्यास में प्रस्तुत कोश ऐसे सहायक ग्रन्थों का निश्चय ही अपना स्थान एवम् उपयोग है ।

इस कोश में जिन सुविपुल विशेषताओं का आधान करते हुए इसे गुणवत्तर बनाया गया है, इसकी 'प्रस्तावना' में उनका विवरण भली प्रकार से कर दिया गया है । छात्रों को चाहिए कि इसकी 'प्रस्तावना' के पाठ द्वारा उन विशेषताओं का परिज्ञान प्राप्त करते हुए इसका सदुपयोग करते रहे, जिससे उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके ।

साधु ऋधम, होशियारपुर }
१६-६-५७

—विश्वबन्धु



डॉ० राम सरूप 'रसिकेश'

प्रस्तावना (द्वितीय संस्करण)

'आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश' की उपयोगिता व लोकप्रियता इसी से प्रमाणित है कि उनका प्रथम संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गया और इसकी माँग, शुक्ल पक्ष के बाद के समान, निरन्तर बढ़ती ही गई। संस्कृत प्रेमियों, पुस्तक विक्रेताओं, प्रकाशक व लेखक सभी की उत्कण्ठ इच्छा थी कि द्वितीय संस्करण यथाशीघ्र प्रकाशित हो, जिससे देव-वाणी की अधिकाधिक वृद्धि हो। परन्तु, इस सप्ताह में परिस्थितियाँ कभी-कभार ऐसा प्रतिकूल रूप धारण कर लेती हैं कि उन पर विचार करना दुष्कर हो जाता है। यही कारण है कि संस्कृत प्रेमियों को सुदीर्घकाल तक अपत्याशित प्रतीक्षा करनी पड़ी, जिसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं। अस्तु।

सभी भाषा-शास्त्री जानते हैं कि कोरं भी जीवन्त भाषा वर्षों तक एक ही रूप में नहीं रहती। उसके शब्द भंडार & 'दू' में परिवर्तन होता ही रहता है। इसी नियमानुसार दो दशान्दियों में हिन्दी-शब्द भंडार का पर्याप्त विस्तार हुआ और परिणामतः हमने भी कोश का परिवर्द्धित संस्करण ही प्रकाशित करना समीचीन समझा। प्रथम संस्करण में कुछ अशुद्धियाँ भी रह गई थीं। उनका संशोधन भी उपरान्त पत्रिका कर्तव्य था। इस कार्य में हमें अपने मित्र श्री० गोपालचंद्र पाण्डेय, पूर्व-उपनिदेशक, शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश, ने स्तुत्य सहयोग दिया है, जिसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने 'संस्कृत-कोशों का चक्रवर्ति और विकास' शीर्षक अनुसंधानात्मक निबन्ध भी लिखा है, जिसमें संस्कृत प्रेमियों की इस विषय की रोचक व मूल्यवती जानकारी भी उपलब्ध होगी। कोश के सन्दर्भ में निम्न विद्वानों ने स्वामूल्य सन्मनियों प्रदान की हैं उनके प्रति हम हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। साथ ही कृतज्ञ है चौखम्बा विश्वविद्यालय के सचालक श्री वल्लभराम शुक्ल के जिन्होंने विषय परिस्थितियों में भी कोश को प्रस्तुत सुन्दर रूप में प्रकाशित किया है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत संस्करण पूर्ण की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

पठकों से निवेदन है कि प्रथम संस्करण की प्रस्तावना को भी सावधानता से पढ़ने की कृपा करें, क्योंकि इसका बिना वे कोरं में यथेष्ट लाभ न उठा सकेंगे।

अन्त में, विद्वानों व अध्यापक-वर्ग से सादर निवेदन है कि प्रस्तुत संस्करण की छुट्टियों की ओर हमारा ध्यान अवश्य आकर्षित करें ताकि कोश के आगामी संस्करण शुद्धतर रूप में प्रकाशित हो सके। धन्यवाद।

द्वि-२४२
नया सन्वेदनार
नई दिल्ली—१९०७०
वैशाखी—२०३६ दि०

}

विनीत,
रामसरूप

प्रस्तावना

(प्रथम संस्करण)

संस्कृत का अध्ययनाध्यापन करते समय और कभी हिन्दी शब्दों व संस्कृत पद्या का जिकासा के समय अनेक बार हिन्दी-संस्कृत-कोश की आवश्यकता प्रतीत होती थी। बाजार में कोई भी ऐसा कोश प्राप्य न था जो स्कूलों, कॉलेजों, गुरुकुलों, अधिकांशों आदि की उच्च बक्षाओं के विद्यार्थियों तथा संस्कृत-अध्ययन के दृष्टिकोण प्रौढ मज्जनों और अध्यापकों की आवश्यकताएँ पूर्ण कर सके। यह देखकर दुःख भी होता था और आश्चर्य भी कि सात समुद्र पार से आई हुई अंग्रेजी भाषा के कुछ लाख शानाओं के लिए तो अंग्रेजी-संस्कृत-कोश प्रकाशित हो चुके हैं परन्तु करोड़ों हिन्दी-प्रेमियों के पास ऐसा कोई कोश नहीं जिसमें वे संस्कृताध्ययन में सहायता प्राप्त कर सकें। संस्कृतानुराग और उक्त अभाव की प्रबल प्रेरणा से मैं १९४३ ई में कोश संकलन में लग गया और लगभग चार वर्ष के परिश्रम से इस वृहत्कार्य को सम्पन्न कर पाया। देश का विभाजन न होना तो सम्भवतः यह कोश दस वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हो जाना, परन्तु परिस्थितियों की प्रतिकूलता के कारण यह अब प्रकाशित हो रहा है—'देवी विचित्रा गति'।

जिन दिनों मैं कोश का संकलन आरम्भ करने को था उन दिनों हिन्दी-उद्द हिन्दुस्तानी का प्रश्न जोर-शोर से छिड़ा हुआ था। प्रत्येक भाषा के प्रभो स्व-स्व पक्ष की पुष्टि के लिए अनेक युक्तायुक्त युक्तिर्था प्रस्तुत करते थे। तब मेरे समुक्त प्रश्न यह उठा कि मूल (अनुप) शब्दों में विशुद्ध हिन्दी के ही शब्द रखे जाएँ या विदेशी शब्द भी। शोच विचार के पश्चात् मैंने यही उचित समझा कि इसके मूल शब्दों में फ़ारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के भी प्रचलित शब्द अवश्य रखने चाहिए। उसी निश्चय का परिणाम यह है कि कोश के प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर पाँच-सात विदेशी शब्द, जो शताब्दियों के प्रयोग से स्वदेशी बन गये हैं, आपसो मिल ही जाएँगे। इसका सुफल यह होगा कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा बन जाने और परिणामतः प्रत्येक भारतीय के हिन्दी में परिचित हो जाने के कारण उन अन्यमतावलम्बियों को भी संस्कृत सीखने में अधिक सुविधा हो जायेगी, जिनकी भाषाओं के प्रचलित शब्द इन कोश में संगृहीत कर लिये गये हैं। मूल शब्दों के चुनाव के समय दूसरी समस्या पारिभाषिक शब्दों की थी। प्रत्येक कला और विज्ञान से सम्बन्धित सहस्रों पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग प्रायः उन्हीं विषयों के विद्यार्थियों और अध्यापकों तक ही सीमित रहता है। प्रस्तुत कोश में उन सबका मकलन न सम्भव था, न वांछनीय। इसीलिए मैंने भौतिकी, रसायन, भूगोल, गणित, उद्योग, वैद्यक आदि के उन्हीं अत्यंत प्रसिद्ध शब्दों को संगृहीत किया है जो जन-सामान्य या सामान्य शिक्षित जना द्वारा प्रतिदिन प्रयुक्त होते हैं। कोश के मूल शब्दों की संख्या लगभग २०००० है जिनमें ४००० के लगभग तथाकथित विदेशी शब्द, पारिभाषिक शब्द तथा मुहावरें भी सम्मिलित हैं।

कई कोशों में सम-रूप विभिन्न शब्द एक ही शब्द के नीचे मुद्रित रहते हैं। प्रस्तुत कोश में ऐसा नहीं किया गया। कारण, जब सोन (आकर भाषा) और व्युत्पत्ति पृथक्-पृथक् ही दो शब्दों के पाठ्य में सन्देह नहीं रहता। ऐसी दशा में उन्ह, केवल रूपमभ्य के कारण, एक ही शब्द के अन्तर्गत रखना मुझे उचित नहीं ज़ेचा। एमे समरूप शब्दों के उदाहरण १, २, ३, ४ आदि के विह लगा दिये गये हैं जिनमें उन्में से किसी की ओर निर्देश करते समय कठिनता न हो। उदाहरणार्थ 'अम' और 'आया' शब्द देखिये। इन कोश में प्रत्येक मूल शब्द को ही स्वतन्त्र स्थान दिया गया है परन्तु उससे बने हुए समस्त शब्दों का मुहावरों को अधिकतर मूल शब्दों व नीचे ही

१९४७ को मई में जब साम्प्रदायिक दलों के कारण टी ए वी कालेन, लाहौर, पूर्व कर्षों की अपेक्षा कुछ शीघ्र ही बन्द हो गया तब कालेन व छात्रावास को अपने घर में अधिक सुरक्षित समझ में कोश की परिदृष्टि की एक बक्स में बन्द कर वहीं छोड़ बैठनाथ (पूर्वी पन्ना) चला आया। बाद में वहाँ जो लुट-भार हुआ, उसके कुछ सुन-सुनकर यहाँ विचार आता था कि मरा 'कोश' भी लुट ही गया होगा। मैं इसी खान में, ज्ञान जोरिम में डालकर, मितम्बर १९४७ में लाहौर गया परन्तु कुछ पता न चला। दूसरी बार जब दिसम्बर १९४७ में फिर गया तो सौभाग्यवश यह सुरक्षित मिल गया। उन दिनों लाहौर का टी ए वी कालेन और उसका छात्रावास शरणार्थी-कैम्प बना हुआ था। किसी शरणार्थी भाई ने बक्स को तो छोड़ा न था, परन्तु कोश को देना न था। कैम्प के स्वयंसेवकों ने इसे कोश काम की वस्तु समझ, भंगाल रखा था। इस अवसर पर मैं उस अज्ञान शरणार्थी भाई को जिसने इसे ज्यों-का-त्यों रहने दिया और उन अपरिचित स्वयंसेवकों को जिन्होंने इसे कई मास तक भंगाले रखा, हार्दिक धन्यवाद देना अपना पवित्र कर्तव्य समझता हूँ।

कोश के प्रकृत, मरे मित्र श्री हरिवंशदास शास्त्री यदि परिश्रमपूर्वक न देखते तो इस सूक्ष्म सूक्ष्मकाय में बहुत छुट्टियाँ रह जातीं। दो परिशिष्टों के सम्पादन में मरे मित्र प्रो० लाजपतराव पन्ना ने मरा हाथ बँटाया है। इन दोनों सज्जनों के प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। अन्त में कोश के प्रकाशकों के प्रति भी अपना आभार प्रदायक करता हूँ जिन्होंने इसे सुन्दर रूप में छपे ही समय में प्रकाशित कर दिया है।

मनुष्य की अपनी तथा अपनी कृतियों की छुट्टियों स्वभाव ही कम दिवादा देती हैं। इसी नियम के अनुसार मैं भी प्रस्तुत पुस्तक की गूँथतारों और प्राक्तियों से अज्ञान ही परिचित हूँ। अब सब ज्ञान-ज्ञान मूलों के लिए क्षमा-याचना करता हुआ मैं विद्वद्बृन्द से निवेदन करता हूँ कि वे कृष्णकवि की निम्नांकित सूक्ति—

दोषाशिरस्य गृह्णन्तु गुणमस्या मनीषिणः ।

पासूनगम्य मन्वया मकरन्दमिवालय ॥

के अनुसार निन्दितवत् अविद्वत् के मरुद का पाज और पराग का परित्याग कर सुजे-मरी छुट्टियों में परिचित करायें तथा पम अमूल्य सुश्रव भर्षे दिनमें कोश का आगामी संस्करण अधिक निर्दोष और उपयोगी हो सके। प्रभु से प्रार्थना है कि उस देववर्गी सङ्घटन का भूतल पर अधिकारिक प्रसर ही जिसको साहित्य-सुधा का अनन्द ज्ञान भारतभूमि के भी इने गिन हल्लोग ले रहे हैं।

डी-१४१
शारदानिकेतन
रात्रेन्द्र नगर, दिल्ली
दोषाशिरस्य २० २०१४

विनीत,
शामसुन्दर

विद्वत्सम्मतिंसार

M ANANTHASAYANAM AYYANGAR

(SPEAKER LOK SABHA)

I went through a portion of the Hindi-Sanskrit Dictionary prepared by P. of Ram Saroop, Prof of Hindi and Sanskrit, Hans Raj College, Delhi. The pages have been taken at random from the middle of the book. Almost every word in Hindi in ordinary use and even those that are rarely used has been noticed in this book.

There are many Sanskrit-Hindi Dictionaries, but correspondingly there is practically no Hindi-Sanskrit Dictionary. Sanskrit is the mother of Hindi and all the northern Indian Languages. Any new expressions have to be coined from Sanskrit source. It is therefore necessary that any body who desires to have a proficiency in Hindi should have equally good knowledge of Sanskrit. All Hindi writers and those in regional languages have been great Sanskrit scholars. In fact they did not read regional language by itself at any time. After acquiring proficiency in Sanskrit they automatically and without any special attempt, and with little or no effort, became proficient in their own respective language.

I welcome such a book and I hope and trust that it will be found useful not only by scholars but also by laymen who ought to have a working knowledge of Sanskrit if they want to acquire a good knowledge of Hindi. A Dictionary of this type is worth having in every library.

Prof VISHVA BANDHU, M A , M O L,

(Director, V. V. R. Institute, Hoshiarpur.)

It has given me real satisfaction to find that he has taken pains in this behalf and succeeded in producing a handy work which should be of great help to those who may be learning the somewhat difficult art of translating modern Hindi originals into the ancient language of gods.

Dr SURYA KANT SHASTRI, D Litt , D Phil

(Hindu University, Varanasi)

In my opinion this dictionary will prove of great help to the students of Hindi and Sanskrit, since a dictionary of this type and size is not available in the market.

Dr N N CHOWDHURI, M A, D Litt.

(Reader in Sanskrit, University of Delhi)

I have read with great interest a part of the manuscript copy of your Hindi-Sanskrit dictionary. A book of this type is urgently needed in these days. I congratulate you on this excellent work you have under-taken.

श्री एन एन गाडगिल, एम पी

श्री रामसरूप शास्त्री द्वारा सम्पादित 'हिन्दी संस्कृत कोश' के कुछ मुद्रित पृष्ठ पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। मङ्गल दृष्टि से उन पत्रों को देखकर इस बात से प्रमत्तता हुई कि प्रियवर शास्त्राजी ने इतना सुन्दर, सुभ्यवरिष्य और उपयुक्त कार्य किया है कि इन कार्य से वे समाज व ज्ञान से उल्लास ही नहीं हुए, वरन् उन्होंने समाज को उपकृत भी किया है।

लखन महोदय को इन महत्त्वपूर्ण स्तुत्य कार्य के लिए धार्धै देता हूँ।

केदारनाथ शर्मा, सारस्वत

सम्पादक—'संस्कृतरत्नाकर'

मन्त्री, अखिलभारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

श्रीयुत रामसरूप शास्त्री एम ए, एम ओ एल, विद्यावाचस्पति, प्रोनेसर, ईमराज कालेज, देहली द्वारा सम्पादित हिन्दी संस्कृत कोश का कुछ भाग देखने का अवसर मिला है। मैं जो कुछ देख सका उसके आधार पर यह मरुता हूँ कि यह इन युग के अनुकूल और आवश्यक प्रयत्न है।

इस समय ऐसे प्रामाणिक कोश का अभाव जबकि देश का ध्यान संस्कृत की ओर आटूट हो रहा हो, बहुत खटक रहा था। मुझे विश्वास है—इस अभाव की बहुत कुछ पूर्ति इस कोश से हो सकेगी। सम्पादक महोदय का यह प्रयत्न सर्वथा स्तुत्य और श्लाघ्य है। इसके अधिकाधिक प्रयोग और प्रचार की कामना करता हूँ।

महामहोपाध्याय श्री प० परमेश्वरानन्द शास्त्री, विद्याभास्कर

(ओरिएण्टल कालेज, जालंधर, पूर्व प्रिंसिपल, सनातनधर्म संस्कृत कालेज, लाहौर)

श्रीमत्परमेश्वरानन्द शास्त्री, एम ए, एम ओ एल, विद्यावाचस्पति विरचित 'हिन्दी संस्कृत कोश' को देखकर मेरा हृदय अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मूल हिन्दी शब्दों के संस्कृत में पर्याय देने वाला कोश मेरी दृष्टि में यह पहला ही है। ऐसे कोश की बहुत समय से बड़ी भारी आवश्यकता ममशी जा रही थी। संस्कृत के विद्वान अपने छात्रों को अनुवाद की शिक्षा देते हुए बड़ा धर्तनार्थ अनुभव करते थे और करते हैं। संस्कृत भाषा का व्यवहार में प्रचलन न होने के कारण हिन्दी शब्दों के संस्कृत पर्याय ढूँढने में उन्हें बड़ी मुश्किल पती है। इस मुश्किल को विद्यावाचस्पति श्रीरामसरूप शास्त्रीजी ने हिन्दी-संस्कृत कोश की रचना करके बहुत अंशों में हल कर दिया है। इस उपचार के लिए संस्कृत के अध्यापक और उनके शिष्य प्रोफेसर महोदय के अत्यन्त भारी हृदि, ऐसी आशा है।

हिन्दी माध्यम के द्वारा संस्कृत शिक्षादियों के लिये तथा हिन्दी मार्ग में अवसर होने के लिए संस्कृत के विद्वानों के लिए भी—यह कोश अत्यन्त उपयोगी है। स्कूल कालेजों में, संस्कृत

पाठशालाओं में संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने में यह कोश अच्छा सहायक सिद्ध होगा—देमी मुझे पूर्ण आशा है ।

इस कोश ने केवल हिन्दी की ही नहीं, अपितु संस्कृत की भी श्रीवृद्धि की है, अतः दोनों भाषाओं के प्रेमियों की ओर से विद्वान् ग्रन्थकार धन्यवाद के पात्र हैं ।

प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति एम पी

(चन्द्रलोक जवाहरनगर, दिल्ली)

हमराज कालेज, दिल्ली के प्रो० रामरूप एम ए , एम ओ एल. ने अपने आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश का कुछ भाग मुझे दिखाया है । कोश में हिन्दी के तीस हजार शब्दों के व्युत्पत्ति-सहित संस्कृत पर्याय दिये गये हैं । अभी तक ऐसे कोश का अभाव था । प्रो रामरूपजी का यह प्रयत्न उम अभाव की पूर्ति कर देगा । "इसमें सन्देह नहीं कि दत्तनी शतव्य बातों से यह कोश अत्यन्त उपयोगी होगा ।

श्री० दा० सातवलेकर

(अध्यक्ष, स्वाध्याय मंडल, पारडी जि० सूरत)

आपका यह कोश संस्कृत सीखने वालों के लिए तथा संस्कृत शिक्षकों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा, इसमें सन्देह नहीं है ।

पं० ब्रह्मदत्त जिजासु

(मोतीझील, धाराणसी)

'यह ग्रन्थ संस्कृत के छात्रों तथा अध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा । हिन्दी से संस्कृत बनाने वालों को बहुत लाभ होगा । इस विषय पर आगे काम करने वालों को भी इसमें बहुत सहायता मिलेगी । इसमें हम विषय में उत्तरोत्तर उन्नति का मार्ग खुलेगा । इस दृष्टि में इस ग्रन्थ की उपादेयता और बढ़ जाती है ।'

प्रो० चारुदेव शास्त्री

एम. ए , एम. ओ. एल.

(पूर्व प्राध्यापक, डी ए वी कालेज, लाहौर)

प्राध्यापकेन श्रीरामरूपशास्त्रिणा प्रणीतो हिन्दी-संस्कृतकोषो मया केषुचित्स्थलेष्वालोचितः । इदमग्रयमः प्रथम इति प्रशस्यः । महानत्र शब्दराशिः समृद्धीनः । प्रतिहिन्दीशब्दमनेकं संस्कृत-मभिधानमुपन्यस्तम् । तत्रोपन्यासेऽपि प्रसिद्धमपेक्ष्य विशिष्टानुपूर्वी समाश्रिता येनैतदुपयोक्तारः परपरतराच्छब्दान् विहाय पूर्वपूर्वतरान् प्रयोक्ष्यन्ते प्रसिद्धिं च नानिकमिभ्यन्ति । सर्वस्मिन् भारते व्यवहारमवनीर्णार्था हिन्द्यामीदृशः कोषोऽत्यन्तमपेक्षितोऽभूदिति स्वाने प्रयत्नं शास्त्रिवर्येण विदावरेण ।

वामुदेव द्विवेदी शास्त्री

(सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय, वाराणसी)

प्रो० रामसरूप शास्त्री द्वारा संरक्षित एवं सम्पादित "आदर्श हिन्दी संस्कृत कोश" के द्वितीय संस्करण को देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। हिन्दी-संस्कृत कोश क क्षेत्र में यही एक ऐसा कोश था जो आकार, शब्दमयूषा एवं उपयोगिता की दृष्टि से सर्वोत्तम था और इसीलिये इसका अभाव बहुत दिनों तक महक रहा था। मंत्रों विश्वामित्रों को तो मैंने ही इस कोश की सूचना दी होगी पर तब उन्हें यह मालूम हो जाता था कि यह कोश सम्प्रति उपलब्ध नहीं है तो वे हार्दिक दुःख प्रकट करते थे और चाहते थे कि यह कोश किसी प्रकार उन्हें उपलब्ध हो जाय। आज माननीय शास्त्रीजी ने इसका पुनः सम्पादन तथा चौखम्बा विद्यामवन न इसका प्रकाशन कर जो अमर-शब्दों की आकांक्षाओं की पूर्ति की है इसके लिये वे दोनों हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दी संस्कृत कोश का सम्पादन संस्कृत हिन्दी कोश के सम्पादन की अपेक्षा एक कठिन कार्य है। कारण कि आज की हिन्दी में अरबी, पारसी एवं अंग्रेजी के भी बहुत से शब्द प्रचलित हो गये हैं। इनके अनिश्चित देशों तथा लोकभाषाओं के शब्दों की भी मर्यादा कुछ कम नहीं है। फारसी, अरबी तथा अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों का एक विशाल भण्डार अलग ही है। इन शब्दों के पर्यायार्थ शब्द पुरानी संस्कृत में नहीं मिलते अतः उनमें लिये नये संस्कृत शब्दों का निर्माण करना पड़ता है जो माधुर्य विद्वान से संभव नहीं है।

यही स्थिति उन सभी शब्दकोशों में पाई जाती है जो अंग्रेजी, बंगाली, मराठी, गुजराती, तमिल एवं तेलगू आदि भाषाओं में संस्कृत में लिखे गये हैं। मेरे कार्यालय में ऐसे अनेक कोश हैं। इन शब्दकोशों में भी पर्याय संख्या में नये संस्कृत शब्द बनाये गये हैं।

अब कठिनाई यह है कि विभिन्न कोशों में जो नये शब्द बनाये गये हैं उनमें एकरूपता नहीं है। लेखकों ने अपने अपने ज्ञान एवं रुचि के अनुरूप शब्दों का निर्माण किया है। 'विन्दो-विन्द' कोशों में उत्तर एवं दक्षिण भारत के प्रादेशिकता का भी प्रभाव परलक्षित होता है। ऐसी स्थिति में नवीन संस्कृत शब्दों में अन्य भाषाओं से लब्ध शब्दों के लब्ध अर्थों का सहज बोध होना या बराना बल्कि एवं श्रेया दोनों के लिये अमभव या कठिन होता है। संस्कृत के आधुनिक लेखकों एवं बलाओं के लिये यह एक समस्या है निम्नका समाधान होना पाम आवश्यक है।

संस्कृत कोश में शास्त्रीजी ने उक्त कठिनायियों के निवारण के लिये जो प्रयास प्रयत्न किया है जो उनकी भूमिका पढ़ने से अच्छी तरह विदित होता है। यदि कोई समस्या या शब्द निर्माण समिति विभिन्न कोशकारों द्वारा नवनिर्मित संस्कृत शब्दों के अन्वय भारतीय विद्वत्समाज की दृष्टि में सर्वमान्य और सर्वत्र समानरूप में प्रचलित करने की योजना बनाये तो उसकी सफलता में इस कोश से बड़ी सहायता मिल सकती है। परन्तु जब तक इस प्रकार की कार्य योजना नहीं बनती, और जिसके बनने की संभावना भी कम ही दीखती है, तब तक इसी वाश को आदर्श कोश माना जा सकता है। इस दृष्टि में इसका 'आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश' नाम में सर्वथा यथार्थ मानना है।

संस्कृत का प्रत्येक विद्वान् एवं विद्यार्थी इस कोश की एक प्रति अपने पास रखकर और इसमें सहायता लेकर संस्कृत सीखने एवं निराने में अवाधरति में आये बढ़ सकता है, इसमें कोई संदेह नहीं।

संकेत-सूची

(क) पदपरिचयसंबंधी संकेत

- अ०, अन्वय — अन्वय ।
 उप — उपमर्ग ।
 क्रि अ — क्रिया, अकर्मक ।
 क्रि प्रे — क्रिया, प्रेरणार्थक ।
 क्रि वि — क्रिया विशेषण ।
 क्रि स — क्रिया मयुक्त ।
 क्रि म — क्रिया मकर्मक ।
 प्रत्य — प्रत्यय ।
 मु — मुशवरा ।
 वि — विशेषण ।
 स पु — मशा पुरीण ।
 सवो — संबोधन ।
 स खी — सशा खीलि ।
 सर्व — सर्वनाम ।

(ख) स्रोतसंबंधी संकेत

- (अ = अँग्रेजी)
 (अ = अरबी)
 (अनु - अनुवरपात्मक)
 (अप = अपभ्रंश)
 (अल्प = अल्पार्थक)
 (उ = गुजराती)
 (झ = ग्रामीण)
 (त = तातारी)
 (तु = तुर्की)
 (देश = देशीय)
 (प = पंजाबी)
 (पा = पालि)
 (पुर्न = पुर्तगाली)
 (पु हि = पुरानी हिंदी)
 (पूर्व = निर्वचन पूर्ववत्)
 (प्रा = प्राकृत)
 (फ्रा = फ्रांसीसी)
 (फ्रा = फ्रांसीसी)
 (ब = बंगाली)
 (यू = यूनानी)

(डे = डेटिन)

(स = संस्कृत)
 (स्पे = स्पेनिश)
 (हि = हिंदी)

(म रिन् = महाचारिन् २)

(ग) धातुसंबंधी संकेत

- (अ प ने = अदादि परस्मैपदी भेट)
 (क्क अ अ = क्कदादि अत्मनेपदी अनिट)
 (चु उ वे = चुदादि उभयपदी वेट)
 (जु - - = जुहोत्गादि - -)
 (त - - = तनादि - -)
 (तु - - = तुदादि - -)
 (दि - - = दिवदि - -)
 (भ्वा - - = भ्वादि - -)
 (व - - = वधादि - -)
 (स्वा - - = स्वादि - -)

(कर्तृ = कर्तृवाच्य)

(कर्म = कर्मवाच्य)

(न धा = नामधातु)

(प्रे = प्रेरणार्थक रूप)

(भ व = भाववाच्य)

(मन्त्र = मन्त्रन्त रूप)

(घ) शास्त्रीय संकेत

(ज्यो = ज्योतिषशास्त्र)

(धर्म = धर्मशास्त्र)

(न्या = न्यायशास्त्र)

(मो - नीमामानास्त्र)

(योग = योगशास्त्र)

(रा ना = राजनीतिशास्त्र)

(वे = वैरागशास्त्र)

(वै = वैशेषिकशास्त्र)

(व्या = व्याकरणशास्त्र)

(सग = नीतिशास्त्र)

(सा = सांख्यशास्त्र)

(मा = साहित्यशास्त्र)

(ङ) सामान्य संकेत

- अ(ना)वर्षणम् = अवषणम्, अनावषणम् ।
 अप्रचरि(न्नि)न = अप्रचरित, अप्रचरिन् ।
 अनु, गमन-करण स(रणम्) = अनुगमन, अनुकरण,
 अनुसरणम् ।
 क्रोड-उ-डा = क्रोड, क्रोड, क्रोडा ।
 रपट्टी विशदी कृ = रपट्टी, विशदीकृ ।
 वि, लेपन } विलेपनम्, लेपनम् ।
 दि, लेपन }
 राज— = समाप्त का अन्तिम पद अपेक्षित है ।
 —परायण = समाप्त का पूर्वपद अपेक्षित है ।
 इ = इत्यादि ।
 उ = उदाहरण ।
 एक = एकवचन ।
 द्वे = द्विरप ।
 द्वि = द्विवचन ।
 ब = बनाइए ।
 बहु = बहुवचन ।
 मि = मिलाइए ।
 + = योषचिह्न ।
 = = समानतासूचक ।
 * = स्वरचित शब्द ।

(च) सप्तम परिशिष्ट की संकेत सूची

- (विशति) अवदान ।
 (श्रेण्ड) अवन्ता ।
 अवधोष (बुद्धचरित)
 चत्तर (काण्ड, रामायण)
 छदसगिरि (चन्द्र तथा स्व-दयुक्त के शिष्यकेन्द्र)
 क्राणिका (पुराण)
 किराता (जुनीय)
 कूर्म (पुराण)
 गरुड (पुराण)
 काण्ड (माला)
 शिवाण्ड (शेष)
 दशधुमार (चरित)

- देवी (पुराण)
 देवीभा(गवत)
 पद्म (पुराण)
 पाणिनि (अष्टाध्यायी)
 प्रबोध (चन्द्रोदय)
 बदरी वशाळ (यात्रा)
 बृहत्कथा
 बृहत्मा(हिता)
 मल (पुराण)
 मन्वी (वर्तपुराण)
 मन्वीण्ड (पुराण)
 भवभूति (उत्तररामचरित)
 भविष्य (पुराण)
 भागवत (पुराण)
 मत्स्य (पुराण)
 मनुमा(दित)
 मनु(स्मृति)
 महा(भारत)
 (चन्द्रका) महारौली (अभिलेख)
 मेघ(दूत)
 रघु(वशा)
 राजत(रगिणी)
 रामा(यण)
 ललितविरलर
 लिय (पुराण)
 वरुण (पुराण)
 व मन (पुराण)
 विक्रमाक (देवचरित)
 विष्णु (पुराण)
 शतश (भाग्य)
 शिव (पुराण)
 स्वन्द (पुराण)
 स्वयम्भू (पुराण)
 हरिवशा (पुराण)
 (समुद्रमन्थ की) हरिवेण (प्रशस्ति)

संस्कृत-कोषग्रन्थों का उद्भव एवं विकास

संस्कृत-वाङ्मय की अन्य शाखाओं के समान 'कोषविद्या' का भी अपना विशेष महत्त्व है। वैदिक युग से लेकर अद्यावधि कोषग्रन्थों की रचना होते रहना ही इसका ज्वलन्त प्रमाण है। आरम्भ में कोषग्रन्थों का निर्माण विशेष उद्देश्य को अभिलक्षित कर प्रारम्भ हुआ था। यह उद्देश्य भी व्यावहारिक था। इस कारण शब्दों के समाकलन की इस विद्या में कोषकारों को सफलता मिलती चली आ रही है। जनसाधारण की शब्दज्ञानसम्बन्धी पिरासा को दान्त करने में कोषग्रन्थों ने सुमधुर स्रोतस्विनी के समान अपनी सार्थकता सिद्ध की है। कोषकारों ने 'शब्द' की इयत्ता निर्धारित करने की अनेक प्रयत्न किये किन्तु वे इसका अन्त न पासके। 'शब्द' 'वस्तुतः नित्य' है। नित्य शब्द का अन्त कहाँ? 'शब्द' की व्यापकता का एक मात्र कारण उसके विस्तृत प्रयोग का होना है। इस सम्बन्ध में महाभाष्यकार पतञ्जलि ने इस ओर संकेत भी किया है कि शब्दों के प्रयोग का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। सात द्वीपों से युक्त विशाल भूखण्ड में भारतीय वाङ्मय का विस्तार कुछ कम नहीं है। वेदों की ही कई शाखाएँ हैं। इनमें से यजुर्वेद की १०१ शाखाएँ हैं। सामवेद की एक हजार शाखाएँ हैं। ऋग्वेद के इक्कीस प्रकार हैं। अथर्ववेद नौ शाखाओं का है। इसके गतिरिक्त इतिहास, पुराण, वैद्यक इत्यादि सभी विषयों में शब्दों के प्रयोग का ही क्षेत्र है—

“महान् हि शब्दस्य प्रयोगविषयः। सप्तद्वीपा वसुमती। त्रयो लोका। चत्वारो वेदाः साङ्गाः सरहस्याः बहुधा विभिन्नाः। एकशतमध्वर्युशाखाः, सहस्रवर्मा सामवेद, एकविंशतिधा धाह्वन्त्यं, नवधाऽथर्वणो वेदः, बाको वाक्यम्, इतिहासः, पुराणम्, वैद्यकम्—इत्येतावान् शब्दस्य प्रयोगविषयः” (महाभाष्य पस्पशाह्निक)।

यह जानते हुए भी प्राचीन समय में उद्भव की इयत्ता निर्धारित करने का प्रयत्न अवश्य किया गया होगा। इसी को पतञ्जलि ने इस अर्थवाद गर्भित वाक्य के द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया है कि शब्द का प्रतिपद पाठ सम्भव नहीं है। तदनुसार उन्होंने इस आख्यान की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि 'वृहस्पति ने इन्द्र को देवों के एक हजार वर्ष तक प्रत्येक शब्द का उच्चारण कर शब्दशास्त्र पढाया, फिर भी शब्द समाप्त नहीं हुए'। इस प्रसङ्ग में भाष्यकार ने दूसरा आख्यानक प्रस्तुत करते हुए यह बताया है कि जब वृहस्पति सहस्र स्थाननामा व्याख्याता, इन्द्र जैसा विज्ञ शिष्य, देवों के एक सहस्र वर्ष की अवधि अध्ययन-काल नियत किया गया तो भी शब्दों का अन्त ज्ञात नहीं हुआ। फिर आजकल की बात ही क्या? जो सब तरह निरोगी रहकर चिरायु होता है,

अधिक मे अधिक वह सो वर्ष तक जीता है। इसके अतिरिक्त आगे निष्पण करते हुए उन्होंने कहा कि विद्या की सार्थकता चार प्रकार से होती है— (१) गुरुमुख से समझ लेते समय, (२) मनन के समय, (३) दूसरो की सिखाते समय और (४) व्यवहार करने में—“एव हि श्रूयते। बृहस्पति-रिन्द्राय दिव्य वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्ताना शब्दाना शब्दपरायण प्रोवाच, नाम्त जगाम। बृहस्पतिश्च प्रवक्षा, इन्द्रश्च अध्येता, दिव्य वर्षसहस्रमध्ययनकालः, न च अन्त जगाम। किं पुनरद्यत्वे ? य. सर्वथा चिर जीवति स वर्षशत जीवति। चतुर्भिश्च प्रकरारैर्विद्योपयुक्ता भवति आगमकालेन, स्वाध्यायकालेन, प्रवचन-कालेन, व्यवहारकालेनेति।” अन्तः प्रायोगिक शब्दों के समाकलन को व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी समझ कोपकारो ने उन्हे ग्रन्थों के रूप में प्रस्तुत कर संस्कृत वाङ्मय के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ है। इस प्रकार शब्दों के सग्रह करने में ‘कोप’ शब्द रूढ हो गया है।

वैदिक काल में कोप ‘निघण्टु’ के नाम से विख्यात रहे। ‘निघण्टु’ से अग्निप्राय उन वैदिक शब्दों के सग्रह से है, जिनमें सज्ञाशब्दों के साथ क्रिया-पदों को भी एकत्र कर लिया गया था। निघण्टु का उद्देश्य वैदिक शब्दों के अर्थ समझने में सहायता पहुँचाना भी रहा है। इसके विपरीत लौकिक ‘कोषों’ में अधिकतर सज्ञाशब्दों का समाकलन हुआ है। नामसग्रह के अनन्तर परिशिष्ट-रूप में अव्ययों के अर्थ का सग्रह भी इन कोषग्रन्थों में उपलब्ध होता है। लौकिक कोष पद्यमय होने के कारण कविजनों के परिश्रम को कम करने में उपयोगी सिद्ध हुए हैं। फलतः कण्ठस्थ करने में सरलता होने के कारण इनका प्रचार होने में बड़ी सुविधा हुई है। अन्तः विद्यार्थियों को वाक्यशिक्षा देने के साथ ही ‘कोप’ कण्ठस्थ कराने की परिपाटी रही है। अर्थ की दृष्टि से प्राचीन काल में कोषों का विभाजन दो प्रकार से किया गया था—(१) समानार्थक कोष तथा (२) नानार्थक कोष। लिङ्ग-निर्धारण करने की समस्या को कोपकारों ने बड़ी बुद्धिमत्ता से मुलझाया है। इसके लिये उन्होंने कई विधियाँ अपनाई हैं। कहीं-कहीं तो शब्दों के प्रथमान्त प्रयोग से उनका लिङ्ग-निर्देश किया है और कहीं ‘पु’ ‘स्त्री’ ‘क्लीब’ आदि लिङ्गबोधक शब्दों का प्रयोग कर इस विशिष्टता का परिचय दिया है। शब्दचयन के भी अनेक सिद्धान्त हैं। समानार्थक कोषों में विषयों के अनुसार शब्दों का सकृन् कर पूरे कोषग्रन्थ को अनेक वर्णों में विभक्त कर दिया है। नानार्थक-कोषों में अन्तिम वर्णों के अनुसार शब्दों का सकृन् कर कान्त, पान्त, गान्त आदि शब्दों का चयन किया गया है। कहीं आदिम वर्णों को भी महत्त्व दिया गया है। कहीं आदिम तथा अन्तिम दोनो वर्णों की दृष्टि में रखकर शब्द-चयन की प्रक्रिया सम्पन्न की गई है।

निघण्टु—यह 'निघण्टु' ग्रन्थ यास्क से प्राचीन है, क्योंकि इसी के आधार पर यास्क ने 'निरुक्त' लिखा है। महाभारत से अनुसार प्रजापति वसुधेय इस निघण्टु के रचयिता हैं। इसमें पाँच अध्याय हैं। आदि के तीन अध्यायों में 'पृथ्वी' आदि के बोधक समानार्थ शब्दों का सङ्कलन है। इस प्रकरण को 'नैघण्टु-काण्ड' कहा जाता है। चतुर्थ अध्याय में अव्युत्पन्न तथा गूढार्थक शब्दों का चयन किया गया है। इसे 'नैगम-काण्ड' की सजा दी गई है। पाँचवें अध्याय (देवनाण्ड) में मित्र-मित्र देवताओं के रूप तथा स्थान का विस्तृत निरूपण है। 'निघण्टु' के प्रमुख व्याख्याता देवराज यज्वा हैं। ये सायण से प्राचीन अवश्य हैं, क्योंकि सायण के ऋग्वेद-भाष्य में एक स्थान पर निघण्टुभाष्य के वचनों का उद्धरण मिलता है। देवराज ने अपने भाष्य में क्षीरस्वामी को अपने पूर्ववर्ती भाष्यकार के रूप में स्मरण किया है। क्षीरस्वामी 'अमरकोष' के सुप्रसिद्ध टीकाकार हैं। अतः देवराज यज्वा का समय १२ वीं तथा १३ वीं शताब्दी के मध्य प्रमाणित होता है।

वैदिक कोष—प्राचीन परिचाटी के अनुसार भास्कर राय ने वैदिक-कोष की रचना लौकिक कोषों के ढग पर की है। इस कोष के सङ्कलित शब्द तो वे ही हैं जो निघण्टु में हैं, किन्तु उन शब्दों का अर्थ 'अनुष्टुप् छन्द' द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। इस काय का रचना-काल १७७५ ई० है। भास्कर राय ने अपनी गुप्तवनी टीका में अनेक स्थलों पर नागेश की सप्तशती-टीका का खण्डन किया है। अतः ये नागेश के समकालीन अथवा उनसे कुछ ही समय के अनन्तर हुए होंगे।

पुरपोत्तम देव ने अपने लौकिक-संस्कृत के पुराने कोषकारों का उल्लेख 'हारावली' कोष के अन्त में वाचस्पति, व्याडि तथा विक्रमादित्य का नाम लेकर किया है। तदनन्तर केशव ने कात्य, व्याडि, वाचस्पति, नागुरि, अमर, मङ्गल, साहमाङ्ग, महेश तथा हेमचन्द्र का नामोल्लेख किया है। इनके अतिरिक्त किसी हस्तलेख के आधार पर १८ प्रसिद्ध कोषों के विषय में परिज्ञान होता है। इस प्रकार अमर-कोष को केन्द्रबिन्दु मानकर सञ्चित वाङ्मय के कोषग्रन्थों को आचार्य पं० बलदेव उपाध्याय जी ने तीन कालों में विभक्त किया है—

(१) अमरपूर्व काल, (२) अमरकाल तथा (३) अमरोत्तर-काल।

अमर-पूर्व-कोषकार—अमर-पूर्व कोषकारों में व्याडि सर्वप्राचीन कोषकार हैं। व्याडि के कोषग्रन्थ का नाम 'उत्पलिनी' था। पुरपोत्तम ने अपने हारावली कोष के अन्त में इसका उल्लेख किया है। इस कोष में समानार्थ शब्दों की प्रधानता थी। इन्होंने व्युत्पत्ति के द्वारा अर्थानुसन्धान की प्रक्रिया का दिग्दर्शन कराया है। जैसे 'निघण्टु' की व्याख्या इन्होंने इस तरह की है—“अर्थान् निघण्टुग्रन्थस्मात् निघण्टुः परिकीर्तितः”। ये व्याडि कदाचिद् पाणिनि के समकालीन सुप्रसिद्ध 'संग्रह' नामक ग्रन्थ के कर्ता ही होंगे।

काव्य—इनके कोषग्रन्थ का नाम 'नाममाला' था। शीरस्वामी, हेमचन्द्र आदि ने इनका उल्लेख किया है। इनके कोष की विशेषता यह थी कि इन्होंने कही-वही अर्थ का वर्णनात्मक परिचय भी दिया है—“क्षुद्रच्छिद्रसमुपेतं चालनं तित्तज पुमात्”। इनका निश्चित समय ज्ञात नहीं हो सका।

भागुरि—यह त्रिकाण्ड-कोष के रचयिता हैं। अमरसिंह ने 'त्रिकाण्ड' की प्रेरणा इन्हीं से प्राप्त की होगी। इन्होंने केवल समानार्थ शब्दों का ही उल्लेख किया है। व्याकरण के प्रसिद्ध ग्रन्थों में भागुरि के मत का अनेक स्थलों पर उल्लेख मिलता है। विशेषतः हलन्त वाच्, निश्, दिश् आदि शब्दों को आकारान्त बनाने में इनके नाम का उल्लेख मिलता है “वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गायो । आप चैव हलन्ताना यथा वाचा निशा दिशा”। सायण आदि वेदभाष्य-कर्त्ताओं ने इनके कोष ग्रन्थ से पर्याप्त सहायता ली है।

रत्नमाला के अज्ञात-नामा लेखक का उल्लेख सर्वानन्द ने अपनी “अमरकोष” की टीका में किया है। तदनुसार इस कोष के परिच्छेदों का वर्गीकरण लिङ्ग के आधार पर था। इसमें समानार्थ-शब्दों का चयन था।

अमरदत्त—इन्होंने 'अमरमाला' नामक कोषग्रन्थ की रचना की। हलामुधन अपने कोषग्रन्थ का उपजीव्य 'अमरमाला' को माना है। सर्वानन्द ने इस कोष से अनेक उद्धरण अपनी अमर-टीका में दिये हैं। इनका समय भी अनिश्चित ही है।

धावस्पति—यह मुद्रसिद्ध 'शब्दाणव' कोष के रचयिता थे। यह 'अनुष्टुप्-छन्द' में विरचित विशाल कोष था। इसकी विशेषता यह थी कि एक शब्द के विभिन्न रूपों का तथा वर्तनी का भी इसमें उल्लेख है। हेमचन्द्र ने इनके कोष से पर्याप्त सहायता ली है। इनका वास्तविक समय भी अज्ञात है।

धन्वन्तरि—यह वैद्यक-निषण्डु के रचयिता हैं। वैद्यक निषण्डुओं में यह कोष सब से प्राचीन है। शीरस्वामी ने अपनी अमर-टीका में यह उल्लेख किया है कि धमरसिंह के 'अमरकोष' के वनोपधि-वर्ग का उपजीव्य यही कोष रहा है। विक्रम के नवरत्नों में इनका भी उल्लेख है। उस दृष्टि से तो यह भी अधिक प्राचीन है।

महाक्षपणक—इनके नाम से दो कोष-ग्रन्थ हस्तग्रन्थों में उल्लिखित मिलते हैं। ये दोनों अनेकार्थ-ध्वनिमञ्जरी तथा अनिकार्यमञ्जरी नाम में प्रसिद्ध हैं। ये दोनों ग्रन्थ एक ही होंगी, क्योंकि अधिकतर टीकाकर्त्ताओं ने 'अनेकार्यमञ्जरी' नाम का ही उल्लेख किया है। 'रघुवदा' की टीका में बल्लभदेव ने 'अनेकार्यमञ्जरी' का अवतरण उद्धृत किया है। महाक्षपणक काश्मीरी थे। इनके समय का भी कोई निर्णय नहीं हो सका है। यदि यह भी विक्रम के नवरत्नों में से एक हो तो विक्रमादित्य अथवा चन्द्रगुप्त द्वितीय के राज्यकाल के आसपास इनकी स्थिति के विषय में अनुमान किया जा सकता है।

अमरसिंह—सुप्रसिद्ध “नामलिङ्गानुशासन” कोप के रचयिता अमरसिंह की रचना कोपकर्ता के रूप में सबसे अधिक है। इनके नाम से ही यह ग्रन्थ अमरकोप प्रसिद्ध हो गया। इनसे पूर्व प्राचीन कोपकारों ने दो प्रकार की शैलियाँ अपनायी थी। कतिपय कोप केवल नामों का ही निर्देश करते थे और कुछ कोप लिङ्गों के ही विवेचन को अपना मुख्य विषय मानते थे। अमरसिंह ने दोनों का समन्वय कर अपने कोप को सर्वाङ्गपूर्ण बनाया। तीन काण्डों में विभक्त कर इस ग्रन्थ को ‘त्रिकाण्ड’ सज्ञा भी दी गई। इसका उपविभाग ‘वर्गों’ के नाम से किया गया है। ‘अमरकोप’ पद्यबद्ध रचना है। ‘अनुष्टुप्’ छन्द के १५३३ श्लोकों में यह रचना सम्पूर्ण हुई है। ग्रन्थ का छठा भाग नानार्थ के वर्णन में है। शेष भाग में समानार्थ शब्दों का निरूपण किया गया है। समानार्थ-भाग में एक विषय के वाचक नामों का एकत्र सकलन है। नानार्थ-खण्ड में अन्तिम वर्ण के अनुसार पदों का संग्रह है। अव्ययों का वर्णन एक स्वतन्त्र वर्ग में किया गया है तथा ग्रन्थ के अन्त में लिङ्गों के साधक नियमों का उल्लेख किया गया है।

अमरसिंह के समय का निर्णय भी एक समस्या बना हुआ है। इतना तो अवश्य निश्चय है कि यह ग्रन्थ छठी शताब्दी से पहले ही रचा गया था। गुणरात द्वारा चीनी भाषा में इसका अनुवाद किया जाना उस समय की पश्चिम (अन्तिम) अवधि है। इसकी लोकप्रसिद्धि का सबसे अधिक प्रमाण यह है कि इस पर लगभग ४० टीकायें लिखी गई हैं। इनमें क्षीरस्वामी और रामाश्रम (भानुदीक्षित) द्वारा लिखित टीकायें बृहत् उपयोगी सिद्ध हुई हैं। इन दोनों में से रामाश्रमों का पदव्युत्पत्ति-प्रदर्शन अधिक सूक्ष्म तथा परिनिष्ठित है। अमरसिंह बौद्ध थे। इनके समय की पूर्वसीमा २२५ ई० के आसपास निर्धारित की जाती है।

कोप ग्रन्थों में अमरकोप का प्रचलन अद्यावधि सर्वाधिक है। संस्कृत के विद्याधियों को वाटयावस्था में ही इसे कण्ठस्थ कराया जाता रहा। यह परम्परा अब भी थोड़ी-बहुत दिखाई पड़ती है। सरल भाषा एवम् अनुष्टुप्-छन्द में विरचित होने के कारण इसे हृदयङ्गम करने में कठिनाई नहीं होती। अमरकोप के अतिरिक्त शब्द-ज्ञान का लघुभूत उपाय दूसरा कोई नहीं है। इस प्रकार अमरसिंह अपने पश्चाद्गती कोपकारों के प्रेरणा स्रोत बन गए। इसी कारण उनकी सरणि को अधिक प्रशस्त बनाने में आगे के कोपकार तत्पर होते हुए दिखाई पड़ते हैं।

अमरसिंह के पश्चाद्गती कोपकार—बाद के कोपकार शब्दों के वैशिष्ट्य का निर्दर्शन कराने में बड़े सिद्धहस्त प्रतीत होते हैं। उनके प्रकरण भले ही सीमित हो किन्तु उनका क्षेत्र अधिक विस्तृत है। कतिपय कोपकारों ने केवल नानार्थ-कोपग्रन्थों की ही रचना स्वतन्त्र रूप में की है, किन्तु उन्होंने शब्दों की सूक्ष्म

समीक्षा कर अपने पाण्डित्य तथा अर्थ-निर्णय करने की क्षमता का परिचय दिया है। इस दृष्टि से निम्नलिखित विद्वान् प्रसिद्ध कोषकारों के रूप में सर्वमान्य हैं।

शाश्वत—इनका समय भी छठी शताब्दी के आस-पास माना जाता है। इन्होंने स्वयम् अपने विषय में यह लिखा है कि मैंने तीन व्याकरणों को देखा तथा पाँच लिङ्गानुशासनो का अध्ययन किया। केवल इतना ही नहीं किन्तु सिद्ध-प्रयोगों के देखने में भी कोई कमी नहीं होने दी।^१ इनका विरचित कोष अनेकार्थ-समुच्चय है। इस कोष में केवल अनेकार्थ शब्दों का विस्तृत चयन है। शब्दों के चयन में अमरकोष की अपेक्षा अधिक विस्तार तथा प्रौढता दृष्टिगोचर होती है। प्रचुर कोष के अन्तिम पद्य से यह संकेत मिलता है कि ग्रन्थकार ने कवि महाबल तथा बराह से भी इस सम्बन्ध में परामर्श किया था^२। अनेक विद्वानों के सहयोग से इस कोष की रचना होने के कारण इसमें व्यापकता होना स्वामाविक है।

धनञ्जय—शाश्वत के लगभग दो शताब्दी पश्चात् धनञ्जय ने 'नाममाला' कोष की रचना की। यह कोष व्यवहार में आने वाले लोकप्रचलित संस्कृत शब्दों का उपयोगी कोष है। इसे लघुकोष कहना ही उचित है। इसमें केवल २०० श्लोक हैं। विशेषता इस बात में है कि ग्रन्थकार ने शब्दों की रचना के सुन्दर उपाय बताये हैं। उदाहरणार्थ पृथ्वीवाचक शब्दों में 'धर' लगा देने से पर्वतवाची शब्दों का बोध होता है (मही + धर, पृथ्वी + धर आदि)। इसी प्रकार मनुष्यवाची शब्दों में 'पति' शब्द जोड़ देने से राजा के नाम (नर + पति, नृ + पति) तथा वृक्षवाची शब्दों में 'चर' शब्द जोड़ने से बन्दर के समानार्थक शब्द बन जाते हैं (द्रुम + चर, वृक्ष + चर आदि)। इस कोष की यही विशेषता है कि शब्दों के चयन में लोकव्यवहार को विशेष महत्त्व दिया गया है। 'अनेकार्थनाममाला' इसका पूरक अङ्ग है। कोषकार के अतिरिक्त धनञ्जय कवि भी हैं। इनका 'द्विसन्धान' काव्य द्वायाश्रय काव्यों में बड़ा प्रसिद्ध है। इस काव्य में श्लेष पदों के द्वारा रामायण और महाभारत के कथानकों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इनका समय आठवीं शताब्दी का उत्तरार्ध निश्चित-प्रायः है। इस विषय में बीरसेन स्वामी द्वारा 'पट्टखण्डागम' की धबला नामक टीका में 'अनेकार्थनाममाला' का उद्धृत एक श्लोक ही पर्याप्त प्रमाण माना जा

१ दृष्टिसिद्धप्रयोगोऽहं दृष्टव्याकरणतपः।

अधीनो मनुपाध्यायात् त्रिंशशात्रेषु पन्चसु ॥

—शाश्वतकोष—आरम्भ का १ श्लोक

२. महाबलेन कविना बराहण च धीमता।

सह सम्पक् परामृदय निमित्तोऽथ प्रयत्नत ॥

सकता है। घवला टीका ८७३ विक्रमी संवत् (= ८१६ ई०) में लिखी गई थी। अतः धनञ्जय ७४०-७९० ई० के मध्य अवश्य रहे होंगे।

पुरोधोत्तमदेव—धनञ्जय के लगभग ४०० वर्षों के उपरान्त पुरपोत्तमदेव ने तीन कोप-ग्रन्थों की रचना की। ये ग्रन्थ हैं—(१) त्रिकाण्ड कोप, (२) हारावली तथा (३) वर्णदेशना। इनमें से प्रथम तो 'अमरकोष' का पूरक ग्रन्थ है। इसका क्रम 'अमरकोष' के समान है। तदनुसार इसमें भी तीन काण्ड तथा पच्चीस वर्ग हैं। इसमें भी लोकव्यवहार में प्रयुक्त शब्दों के साथ ही 'अमरकोष' में अनुपलब्ध शब्दों का भी समग्र किया गया है। हारावली में अप्रचलित तथा असामान्य शब्दों का समाकलन किया गया है। २७० पद्यात्मक 'लघुकोष' होने पर भी यह दो भागों में विभक्त है—(क) समानार्थक तथा (ख) नानार्थक। समानार्थक भाग के तीन अंश हैं—पहले में पूरे श्लोक में समानार्थक शब्द हैं, दूसरे में अर्थ श्लोक में तथा तीसरे में एक चरण में ही। नानार्थक खण्ड की भी यही सरणि है। वर्तनी अर्थात् शब्दों की शुद्धता बतलाना वर्णदेशना का मुख्य ध्येय है। इन ग्रन्थों की उपादेयता इस कारण सुविदित है। स्वयं ग्रन्थकार ने यह उल्लेख किया है कि गौड़-लिपि में भिन्नता होने के फलस्वरूप शब्दों के रूपों में भ्रान्ति होना सम्भव है। इसके निराकरण-हेतु 'वर्णदेशना' की उपयोगिता है। अमरसिंह की भांति पुरपोत्तमदेव भी बौद्ध थे। इन्होंने सर्वप्रथम बुद्ध को 'मुनीन्द्र' रूप में नमन किया है। इस कार्य में यह अमरसिंह से और आगे बढ़े। देवनागरी के सन्बन्ध में इन्होंने बुद्ध के बाद बुद्ध के पुत्र राहुल का, अनुज देवदत्त का मायादेवी का तथा प्रत्येक बुद्ध का क्रमशः उल्लेख किया है। यह बंगाल के शासक राजा लक्ष्मणसेन ११७०-१२०० के समकालिक थे। इन्हीं के आदेश से पुरपोत्तम देव ने पाणिनि की अष्टाध्यायी पर 'भाषावृत्ति' नामक वृत्ति लिखी। अतः इनका समय बारहवीं शती का उत्तरार्ध मानना युक्तिसंगत है।

हलायुध—इनकी रचना अभिधान-रत्नमाना के नाम से प्रसिद्ध है। इस कोप में पाँच काण्ड हैं—स्वर्, भूमि, पाताल, सामान्य तथा अनेकार्थ। इनमें से प्रथम चार काण्डों में समानार्थक शब्दों का वर्णन है तथा अन्तिम काण्ड में नानार्थ एवं अव्ययों का। इन्होंने अमरसिंह की ही अपना आदर्श माना है। यह मान्यशेट के राजा कृष्णराज तृतीय ९५० ई० के समकालिक थे। अतः इनका समय दसवीं शती का उत्तरार्ध माना गया है।

यादवप्रकाश द्वारा विरचित वैजयन्ती कोप बड़ी महत्त्वपूर्ण रचना है। यह दो खण्डों में विभक्त है—समानार्थ तथा नानार्थ। समानार्थ-खण्ड में पाँच भाग हैं—स्वर्ग, अन्तरिक्ष, भूमि, पाताल तथा सामान्य। नानार्थ-खण्ड में तीन भाग हैं, जिनमें ग्रन्थकार द्वारा शब्दों का चयन अक्षरक्रम से किया गया है।

वर्णक्रम से शब्दसंग्रह किया जाता इसकी तथीनता है। दूसरी विशेषता यह है कि इसमें वैदिक शब्दों का सकलन भी किया गया है। रामानुजाचार्य (१०५५-११३७ ई०) के यह गुरु थे। अतः इनका स्थितिवाल ११ वीं शती का उत्तरार्ध निश्चितप्राय है।

महेश्वर—इनका विश्वप्रकाश-कोष नानार्थ-शब्दों का सकलनात्मक ग्रन्थ है। इस कोष में शब्दों का चयन अन्तिम वर्णों के आधार पर किया गया है। रूपभेद का निर्देश भी इसमें किया गया है। ग्रन्थान्त में अव्ययों का सकलन विद्यमान है। ग्रन्थकार ने स्वयम् अपना परिचय इस कोष के अन्त में दिया है। तदनुसार इस कोष की रचना सन् ११११ ई० में हुई थी। मल्लिनाथ ने इस कोष का उपयोग अपनी टीकाओं में विशेषतया किया है।

अजयपाल—यह बौद्धमतावलम्बी थे। इनकी रचना नानार्थसंग्रह नाम से प्रसिद्ध है। इस कोष में १७३० शब्द हैं। इस कोष में भी वर्णक्रमानुसार शब्दों का चयन किया गया है। इनके मत का उल्लेख अमरकोष के टीकाकार सर्वानन्द-टीकासर्वस्व (११५९ ई०) में बहुधा किया है। इसके अतिरिक्त वर्धमान ने अपने व्याकरण ग्रन्थ 'गणरत्नमहोदधि (रचना ११४० ई०) में इनका बहुधा उल्लेख किया है। फलतः यह बारहवीं शती से कुछ पहले हुए होंगे। इन्होंने 'व' तथा 'व' में अन्तर नहीं माना है। इस कारण इनके वर्गदेशीय होने का अनुमान किया जाता है।

मेदिनीकर—इनका ग्रन्थ 'मेदिनीकोष' के नाम से प्रसिद्ध है। यह भी नानार्थ-कोष है। मेदिनीकर ने शब्दों के चयन में दो प्रकार अपनाये हैं—
१. वारणादि वर्णक्रम तथा अन्तिम वर्णक्रम। मेदिनी ने विश्वप्रकाश को 'बहुदोष' बतला कर अपना महत्त्व सूचित किया है। मेदिनीकोष शब्दों की सख्या में तथा चयन की व्यवस्था में विश्वप्रकाश की अपेक्षा अधिक विशद एवं सुव्यवस्थित है। ऋषिशेखराचार्य (लगभग १३०० ई०) के मैथिली भाषा में लिखित वर्णरत्नाकर ग्रन्थ में मेदिनीकर का उल्लेख होने से डा० गोडे ने इन्हें १२००-१२७५ ई० के मध्य माना है।

मह्व—इन्होंने भी अन्तिम व्यञ्जनों के आधार पर अनेकार्थ-कोष की रचना की है। इसमें १००७ पद्य हैं। इनका विभाजन परिच्छेदों में नहीं किया गया है। इनका स्थितिकाल ११२८-११४९ के मध्य माना गया है। यह काश्मीर के राजा जयसिंह के राज्यकाल में विद्यमान थे। इस कोष में प्रायः काश्मीर के कवियों द्वारा प्रयुक्त शब्दों का चयन किया गया है।

हेमचन्द्र—कोषग्रन्थों के इतिहास में यह सर्वाग्रणी हैं। इन्होंने चार कोषग्रन्थ लिखे हैं—अभिधानचिन्तामणि (समानार्थकोष), अनेकार्थसंग्रह (नानार्थ-

कोप), निघण्टुकोप (वचक) तथा देशीनाममाला (प्राकृतकोप) । इनमें से अभिधानचिन्तामणि को छह काण्डों में विभक्त किया गया है—देवाधिदेव, देव, मर्त्य, भूमि, नरक तथा सामान्य । यह काण्ड नानावृत्तों में निम्न १५४२ पद्यों में समाप्त हुआ है । इस पर स्वयं ग्रन्थकार ने ही टीका लिखी है । अनेकार्यसंग्रह भी छह काण्डों में विभक्त है । इसमें १८२९ श्लोक हैं । शब्दों का संग्रह दो प्रकार का है—अग्निम जशरो द्वारा तथा अग्निम अशरो द्वारा । इन्होंने व्यवहार में आने वाले संस्कृत शब्दों का यथावत् संगृहीत कर उनके प्रति निष्ठा व्यक्त की है । यह ग्रन्थ महाराष्ट्र के राजा सोमदेव के ग्रन्थ मानमोलाय (रचना ११३० ई०) का ममकान्तिक प्रतीत होता है । हेमचन्द्र का प्रभाव अवान्तर्कालीन कोपकारों पर विशेष रूप से पया है ।

केशव स्वामो—इसके द्वारा विरचित नानार्णव-संक्षेप नानार्थ शब्दों का संग्रह बड़ा कोप है । इसमें लगभग ५८०० श्लोक हैं । अशरों की गणना के आधार पर यह कोप भी छह काण्डों में विभक्त है तथा प्रत्येक काण्ड लिङ्ग के अनुसार पाँच भागों में विभक्त है । इसमें वैदिक शब्दों का सकलन भी विद्यमान है । यह ग्रन्थ चोलपरी नरेय राजराज चोल के आश्रय में रहकर लिखा गया है । इसका समय १२०० ई० के आस पास माना जाता है । इस ग्रन्थ के छह काण्डों में प्रति-काण्ड पाँच अध्याय हैं । काण्डों का विभाजन एकाक्षर में लेकर षडक्षर तक है । अध्यायों का विभाजन लिङ्ग के अनुसार किया गया है—स्त्रीलिङ्ग, पुलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, वाच्यलिङ्ग तथा मंकीर्णलिङ्ग । प्रत्येक अध्याय में शब्दों का चयन अक्षरक्रम से किया गया है । आधुनिक काण्ड-ग्रन्थों में यही क्रम स्वीकृत है ।

केशव—अद्यावधि ज्ञात समानार्थ कोषों में केशव का कल्पद्रुकोष सबसे विशाल है । इसमें लगभग ४०० श्लोक हैं । इसके तीन स्तम्भ हैं—भूमि, भुव तथा स्वर्ग । प्रत्येक स्तम्भ प्रकाण्डों में विभक्त है । ग्रन्थकार के अनुसार इसकी रचना १६६० में हुई । इस काण्ड के शब्दचयन में बड़ी विविधता है । अनेक ज्ञातव्य तथ्यों के संग्रह ने इसे विश्वकोष का रूप दिया है । इसमें समानार्थ शब्दों के साथ प्रयुक्त विषयों का विस्तृत वर्णन भी विद्यमान है ।

शाहजो—यह विश्वविद्यालय छत्रपति शिवाजी के भतीजे थे । तजोर के इतिहास के अनुसार शाहजो का राज्य-समय (१६८४-१७१२ ई०) विद्योत्थिति के लिये प्रसिद्ध रहा है । इनकी समा में ४७ विद्वान् रहते थे । इनका विरचित शब्दरत्नसमन्वय-कोष शब्दचयन की दृष्टि में बड़ा महत्त्वपूर्ण है । इस कोष में प्रत्येक वर्ग के भीतर अक्षर-क्रम से शब्दों का विन्यास किया गया है । शब्दों का अवान्तर क्रम भी अकारादि क्रम के अनुसार विद्यमान है । यह विशेषता संस्कृत के बहुत कम कोषों में पाई जाती है । इन्होंने 'क्ष' को अत्रण वर्ण के रूप में

स्वीकार किया है। उसमें आरम्भ होने वाले शब्दों को अन्त में रखा है। इस कोश में लगभग ३५०० श्लोक हैं। इस कोश का दूसरा नाम राजकोश भी है।

हर्षकीर्ति—इन्होंने समानार्थक शब्दों के शारदीयाभिधानमाला नामक कोश की रचना की। यह तीन काण्डों में विभक्त है तथा प्रत्येक काण्ड को भी वर्गों में विभक्त किया गया है। प्रथम काण्ड के तीन वर्ग हैं—देववर्ग, व्योमवर्ग तथा धरावर्ग। द्वितीय काण्ड चार वर्गों में विभक्त किया गया है—अङ्गवर्ग, मयोगादिवर्ग, सगीतवर्ग तथा पण्डितवर्ग। तृतीय काण्ड के पाँच वर्ग हैं—ब्रह्म, राज, वैश्य, शूद्र तथा सर्कीर्ण। पूरे ग्रन्थ में केवल ४३५ श्लोक हैं। कोश के अतिरिक्त हर्षकीर्ति ने अनेक (शास्त्रीय विषयों पर) ग्रन्थों की रचना की। यह जैनधर्मावलम्बी थे। इनके गुरु चन्द्रकीर्ति रहे, जिन्होंने जहाँगीर (१७ वीं शती) से विशेष सम्मान प्राप्त किया। इन्होंने एक दूसरे कोश को भी रचना की। उस कोश का नाम है—शब्दानेकार्यं। इण्डिया आफिस लाइब्रेरी में इस पुस्तक का रचनाकाल वि० स० १६६५ लिखा है। अतः इनका समय सत्रहवीं शती का आरम्भिक चरण मानना युक्तिमग्न प्रतीत होता है।

नवीन ढंग के कोष

विदेशी भाषाओं के सम्पर्क में आने पर कुछ विद्वानों ने विशिष्ट कोशों का ससृष्ट में सकलन किया। इस पद्धति का सर्वप्रथम प्रयोग शब्दकल्पद्रुम नामक प्रख्यात कोष में किया गया। इस कोष को सुप्रसिद्ध मनीषी राजा राधाकान्तदेव ने मान्य पण्डितों की सहायता से अनेक खण्डों में १८२२ तथा १८५८ ई० के बीच प्रकाशित किया। इसमें शब्दों का चयन वर्णक्रम से है तथा पुराण, धर्मशास्त्र आदि प्रमाण ग्रन्थों के उद्धरणों का समावेश होने से इसकी श्रामाणिकता बहुत बढ़ गई है। वस्तुतः यह ससृष्ट का विश्वकोष है। इसमें वैदिक शब्दों का प्रायः अभाव है। शब्दों की व्युत्पत्ति देने से इस कोष की उपादेयता बढ़ गई है। प्रस्तुत कोष में रचना क्रम से आये हुए शास्त्रोपयोगी शब्दों के प्रसङ्ग में प्रमाणों के अतिरिक्त उनकी प्रायोगिक उपयोगिता को भी बतलाया गया है। उन पदार्थों के लक्षण, स्वरूप तथा भिन्नादि देकर कोष को सर्वाङ्गपूर्ण बनाया है। इन सब विषयों का समावेश सात काण्डों में किया गया है। राजा राधाकान्तदेव ने कोष के आरम्भ में 'मुत्सवन्धन' (भूमिना) लिखते हुए प्रसङ्गवश यह सूचित किया है कि लौकिक कोषों का आदिम स्वरूप 'अग्निपुराण' में वर्णित कोष-प्रकरण है। इस प्रकरण का क्रम इस प्रकार है—स्वर्ग-पातालदिवर्ग, अव्ययवर्ग, नानार्थवर्ग, भूवर्ग, पुर-वर्ग, अद्रि-वर्ग, वनीपदिवर्ग, सिंहादिवर्ग, मनुष्यवर्ग, ब्रह्मवर्ग, क्षत्रियवर्ग, वैश्यवर्ग तथा शूद्रवर्ग। इसके अतिरिक्त दोष भाग में सामान्य नामलिङ्गों का वर्णन है। राधाकान्त देव के

अनुसार अमरकोषकार ने अधिकतर अग्निपुराणोक्तश्रम ही अपनाया है। षोडा-
बहुत परिवर्तन कर 'अमरकोष' की पूर्ति की है। जटापर ने भी अमरकोष का
अनुसरण किया है। शब्दकल्पद्रुम में २९ कोषों का उपयोग किया गया है।

शब्दकल्पद्रुम के टग पर आगे चलकर दो कोष और बनाये गये। इनमें
प्रथम शब्दार्थचिन्तामणि तो उतना विशाल नहीं है। उसमें केवल चार भाग
हैं। उसके रचयिता सुखानन्दनाथ रहे। कोष की रचना १८६४-१८८५ तक
हुई। दूसरा कोष वाचस्पत्यम् बड़ा विशाल है। सर्वप्रथम यह कलकत्ता से २०
भागों में प्रकाशित हुआ (१८७३-१८८४ ई०)। इसके सकलनकर्ता तारानाथ
तर्कवाचस्पति थे। इसने वैदिक शब्दों का भी समावेश है, किन्तु उनकी
व्युत्पत्ति अधिकतर कल्पनाप्रसूत है।

इसी समय राय तथा बोथलिक नामक जर्मन विद्वानों द्वारा महान् सस्कृत
कोषों का प्रणयन हुआ, जिसमें वैदिक शब्दों का भी पूर्ण समावेश है। इसकी
रचना भाषावैज्ञानिक रीति पर की गई है। जर्मन विद्वानों ने अनेक पण्डितों की
सहायता से शब्दों के प्रयोगस्थलों का भी निर्देश किया है। इसके साथ ही शब्दों
के अर्थविकास को अङ्कित करने का भी श्लाघ्य प्रयास किया है। उस समय
तक प्रकाशित तथा अप्रकाशित समस्त सस्कृत ग्रन्थों का विधिवत् अनुशीलन कर
इस विशाल कोष की रचना की गई है। आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार
डा० राय ने वैदिक शब्दों का तथा डा० बोथलिक ने वैदिकेतर शब्दों का
विवरण भाषाशास्त्रीय पद्धति पर प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। डा० बोथ-
लिक ने इसका एक सक्षिप्त संस्करण भी जर्मन भाषा में प्रकाशित किया था।

इसी क्रम में डा० मोनियर विलियम्स ने एक सस्कृत-अंग्रेजी कोष की रचना
की। इनका परिश्रम श्लाघनीय है। शब्दों के चयन तथा अर्थनिर्देश में बड़ा
परिश्रम किया गया है। केवल कमी इस बात की है कि प्रयोगस्थलों का निर्देश
नहीं किया गया है। इस कोष की रचना उपर्युक्त जर्मन कोषों के आधार पर हुई
है। यह कोष समानार्थक शब्दों के सम्बन्ध में बड़ा प्रामाणिक माना जाता है।
इसका दूसरा स्वरूप अंग्रेजी में सस्कृत में भी है।

इस प्रकार के कोषों की रचना में आगे चलकर भारतीय विद्वान् भी अग्रसर
हुए, जिनमें धामन सदाशिव ाप्टे का नाम विशेषतया उल्लेखनीय है। इन्होंने
भी संस्कृत-अंग्रेजी तथा अंग्रेजी-संस्कृत कोषों की रचना की। यह कोष विद्वानों
तथा छात्रों के लिये समान रूप से उपकारक है। इस कोष में वर्णक्रमानुसार
शब्दों का चयन किया गया है। प्रयोगस्थलों के निर्देश में पुराण तथा काव्यादि
के उद्धरणों का उपयोग किया गया है। शास्त्रीय परिभाषाओं, छन्दों, प्राचीन

भौगोलिक एवं ऐतिहासिक स्थलों का विवेचन भी यथास्थान किया गया है। हाल में इसका नवीन संस्करण तीन खण्डों में पुनः से प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त छात्रोपयोगी संस्कृत हिंदी लघु संस्करण भी प्रकाशित हुआ है। नवीन संस्करण में शब्दों के चयन में सम्पादकों ने वृद्धि की है।

शब्दपरायण की प्रक्रिया को अभिनव रूप देने वालों में महामहोपाध्याय पण्डित रामावतार शर्मा प्रमुख रहे हैं। उन्होंने एक विशाल कोष की रचना की। इस कोष का नाम है—चाडमयार्णव। शर्माजी (१८७७-१९२९ ई०) ने इस कोष का प्रारम्भ १९११ ई० में किया। जीवन भर वे इसमें परिवर्तन परिवर्धन करते रहे। अचार्य बलदेव उपाध्यायजी के अनुसार यह कोष नामलिङ्गानुशासन की परम्परा का सार्वभौम ग्रन्थ है। यह नानार्थक कोष है। इसमें शब्दों का चयन वैज्ञानिक वर्णक्रमानुसार किया गया है^१। वैदिक तथा लौकिक दोनों प्रकार के शब्दों का इसमें समावेश है। इस कोष में प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति के साथ उसके प्रयोगस्थलों का भी समुचित निर्देश किया गया है। इसमें २०,००० शब्द उपन्यस्त हैं। साथ ही इस कोष की रचना पद्यमयी है तथा ६७९६ अनुष्टुपो में समाप्त हुआ है। ग्रन्थ के आरम्भ में १६ पद्यों का उपक्रम है एवम् अंत में ६ श्लोकों में समाप्त किया गया है। ग्रन्थकार के निधन के ३८ वर्षों के सुदीर्घ काल के पश्चात् सन् १९६७ ई० में ज्ञानमण्डल प्रकाशन द्वारा यह प्रकाशित किया गया है।

वर्तमान काल की काव्य निर्माण प्रवृत्ति

जर्मन संस्कृत कोष के प्रकाशन के लगभग एक दशक के बाद नवीन वैदिक कोष की आवश्यकता प्रतीत होने पर होशियारपुरस्थ विद्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान से अनेक विद्वानों के सहयोग से एक बृहद् वैदिक कोष का प्रकाशन हुआ है। इस काव्य न वैदिक साहित्याओं के सम्बन्ध में ऋषियों के सन्दर्भ की समस्या हल कर दी है। यद्यपि इसे शब्दपरायण की दृष्टि से कोष के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है तथापि इसमें वैदिक शब्दों की सूची विद्यमान होने से वैदिक मूल-शब्दों का परिचय सुलभ हो जाता है। इसके १६ खण्ड प्रकाशित हुए हैं। इसके

१ वर्णानुक्रमवि-परिचय-वैदिक-संस्कृत-कोष-परिचयः ।

२०७३ ई० मद्रास-प्रकाशन-वैदिक-संस्कृत-कोष-परिचयः ॥

विद्वेष-संस्कृत-प्रवृत्ति-परिचयः ।

सोप-सूक्तोदाहृति-विद्वेष-परिचयः ॥

सचित्र-प्रचुर-वैदिक-वैज्ञानिक-परिचयः ।

परिशिष्ट-वैदिक-कोष-परिचयः ॥

अतिरिक्त "संस्कृत का बृहत्तम कोष" प्रकाशन करने की योजना डेक्कन कालेज, पुणे के शोध-विभाग के निदेशक सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० एस० एम० कात्रे ने भी प्रस्तुत की है। उनके साथ अनेक विज्ञ सहयोगी भी इस कार्य में सलग्न हैं। अब तक इस कोश के ३ खण्ड प्रकाशित हुए हैं। इसके समग्र भाग प्रकाशित होने पर कोश-साहित्य का क्षेत्र अधिक विस्तृत हो जायगा। इसकी विशेषता यह है कि शब्दों का अर्थ देने में भाषा-वैज्ञानिक पद्धति का आश्रय लिया जा रहा है तथा यह प्रयत्न किया जा रहा है कि अधिकाधिक प्रचलित शब्दों का विधिवत् समाकलन हो जाय।

शब्दराशि को समाकलित करने में विद्वानों की प्रवृत्ति आज भी देखी जाती है। इस प्रवृत्ति में शब्दों का प्रयोग एव प्रचलन ही मुख्य कारण है। शब्दों के प्रचलन एवं प्रयोग होने में देश-काल की परिस्थिति मुख्य रूप से सापक्ष होती है। अतः कोष-रचना की प्रक्रिया बराबर चलती रहती है। इसके फलस्वरूप वाराणसी से श्रीगोपालचन्द्र वेदान्तशास्त्री ने भी बृहत् संस्कृतकोष के प्रकाशन की योजना बनाई है। उसका एक खण्ड प्रकाशित हुआ है। इसके सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर हिन्दी जगत् को संस्कृत-वाङ्मय में अवगाहन करने के लिए अच्छा अवसर मिलेगा। वर्तमान समय के कोषकारों में सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० सूर्यकान्त का योगदान भी प्रशंसनीय है। उन्होंने संस्कृत हिन्दी-अंग्रेजी कोश की रचना की है। इसके पूर्व सतुबेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा का संस्कृतशब्दार्थकोस्तुभ (संस्कृत-हिन्दी) का अच्छा प्रचार हुआ है। इन्होंने कोष लिखकर अनेक विद्वानों को कोष-रचना करने के लिए प्रेरित किया है।

विविध कोश

(क) इस प्रसङ्ग में संस्कृत के समानान्तर पालि-प्रकृत कोशों पर भी विचार करना आवश्यक है। रचना-क्रम में पालि-कोश अधिकतर वैदिक निघण्टुओं के समान परिलक्षित होते हैं। ये कोश श्लोकबद्ध नहीं हैं। पालिकोशों में सर्वप्रसिद्ध कोष महाव्युत्पत्तिकोश है, जो २८४ प्रकरणों में विभक्त है। इसमें लगभग ९०० शब्द संकलित हैं, जिनमें समानार्थक शब्दों के अतिरिक्त धातुरूप भी सगृहीत हैं। इसके अतिरिक्त पालिकोशों में मोगलान की अभिधानप्यदीपिका नामक कोश अत्यधिक लोकप्रिय है। यह बारहवीं शती की रचना है तथा अमरकोष की शैली में लिखा गया है।

प्राकृत कोषों में सबसे प्राचीन कोष पाण्डित-तच्छिनाममाला है। इसके रचयिता धनपाल हैं। इसे ग्रन्थकार ने ९७२ ई० में लिखा था। इसमें २७९ गणपयें हैं। हेमचन्द्र ने इस कोष का उपयोग अपने देशी नाममाला में किया है।

हमचन्द्र का वेशीनाममाला प्राकृत कोश बड़ा सुन्दर तथा रोचक है। इसमें आठ अध्याय (वर्ग) हैं। इन अध्यायों में शब्दों का सग्रह आदिम अक्षर को अभिलक्षित कर किया गया है। पर्यायवाची शब्द के अनन्तर उसी अक्षर से आरम्भ होने वाले नानार्थ शब्द भी रखे गए हैं। इस ग्रन्थ में तद्भव शब्दों की प्रधानता होने से प्राकृत शब्दों के ज्ञान में बड़ी सहायता मिलती है। इस कोष के अनुशीलन से उस युग (१२वीं शती) के रीति रिवाजों का भी पता चलता है।

इस बीच दो प्राकृत कोशों का प्रकाशन बड़ा उपयोगी मिष्ट हुआ है। ये दो कोश हैं—(१) अभिधान राजेन्द्र-कोश तथा (२) प्राकृत-शब्दमहार्णव। इनमें से प्रथम ग्रन्थ तो जैनधर्म का विद्वकोष ही है, जिसमें जैनधर्म, जैन दर्शन तथा साहित्य के विषयों को अभिलक्षित कर प्राचीन ग्रन्थों के उद्धरणों के माय बड़ा साङ्गोपाङ्ग विवेचन है। यह ग्रन्थ विशालकाय है, सात खण्डों में विभक्त है। इसकी पृष्ठ संख्या १०,००० है। प्राकृतशब्दमहार्णव इसकी अपेक्षा लघुकाय है। इसका आयाम लगभग १५०० पृष्ठों में सीमित है। यह नवीन शैली का कोश है। इसमें प्रयोगस्थलों का निर्देश बड़ी सुन्दरता के साथ किया गया है।

(ख) मुगलकाल में फारसी का प्राधान्य होने के कारण फारसी-संस्कृत कोषों की आवश्यकता प्रतीत हुई। इसके फलस्वरूप अकबर बादशाह के आदेश से बिहारी कृष्णदास मिश्र ने पारसी-प्रकाश ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ के दो भाग हैं—कोश तथा व्याकरण। २६९ अनुष्टुप् श्लोकों में ग्यारह प्रकरणों का समावेश किया गया है। प्रकरणों का शीर्षक अधिकतर अमरकोष के समान है। इसमें फारसी शब्दों के संस्कृत पर्याय दिये गए हैं। इसी प्रकार का दूसरा ग्रन्थ बेबाङ्गराय द्वारा थिरचित पारसी प्रकाश (१६४७ ई०) है। इसमें फारसी तथा अरबी के शब्दों का संस्कृत में अर्थ दिया गया है। तीसरा ग्रन्थ पारसी-विमोद भी इसी समय लिखा गया। इसके रचयिता ब्रजभूषण थे। महाकवि क्षेमेन्द्र का लोकप्रकाश भी इस दृष्टि से उपयोगी है। इसमें भी फारसी के बहुत शब्दों का प्रयोग हुआ है। इस ग्रन्थ में साहजहाँ का भी उल्लेख होने से यह विदित होता है कि इसमें कुछ अक्ष सत्रहवीं शती में जोड़ दिया गया हो।

विशिष्ट-कोष

संस्कृत वाङ्मय के विशिष्ट विषयों को अभिलक्षित कर भी विद्वानों ने अनेक कोष ग्रन्थ बनाये। सगीत में सगीतराय नामक विशालकाय ग्रन्थ का एक भाग कोष के रूप में प्रख्यात है। उस अथ को नृत्यरत्नकोष कहा गया है। इसके लेखक महाराणा कुम्भकर्ण हैं। किसी अज्ञात लेखक ने वस्तुरत्नकोश की रचना भी की है। इसमें नृत्यरत्नकोश के विषयों की व्याख्या की है। इसके अलावा

वमक्त है। प्रथम भाग सूत्रात्मक है तथा दूसरा सूत्रो तथा तत्सम्बन्धी विवरणो मे युक्त है। यह ग्रन्थ सम्भवतः १०००-१४०० ई० के मध्य लिखा गया हा।

इस प्रमङ्ग मे वैद्यक-कोशों का उल्लेख करना अत्यावश्यक है। इन कोशों की भी निघण्टु संज्ञा है। इनमे प्रमुख है—“(क) घन्वन्तरिनिघण्टु। यह नव खण्डो मे विभक्त है। क्षीरस्वामी के अनुसार यह अमरकोष से प्राचीन है। अद्वान्तर् निघण्टुओ मे (स) भाषवकर की रत्नमाला (नवी शती) तथा हरिचरण सेन का (ग) पर्यायमुक्तावली ग्रन्थ सुविदिन हैं। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त (घ) हेमचन्द्र का निघण्टुशेष, (ङ) मदनपाल का मदनपालनिघण्टु (१३७४ ई०) (च) केशव का सिद्धमन्त्र (१२५० ई० के लगभग), (छ) केशवदेव का पञ्चानव्यवोधक निघण्टु एव (ज) नरहरि का राजनिघण्टु भी वैद्यक निघण्टुओ मे मान्य है। इन सबमे राजनिघण्टु सबसे बडा है। इसके लेखक नरहरि नामक वैद्य हैं (१३८० ई० के आसपास)। इन सबके अनिरिक्त नानार्थ-ओपधकोशो मे (झ) शिवकोश (१६७७ ई०) बडा महत्त्वपूर्ण है। इसके रचयिता शिवदत्त मिश्र थे। ग्रन्थकार ने इसकी व्याख्या भी स्वयं लिखी है। यह नानार्थक ओपधि-कोष है। इसमें ऐसे ओपधि-वाचक शब्द सकलित किये गए हैं, जिनके अनेक अर्थ उपलब्ध होते हैं।

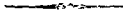
इन पृष्ठो मे वर्णित कोशग्रन्थों के अतिरिक्त अनेक कोशग्रन्थ हस्तलिखित रूप मे हैं तथा अनेक कोश केवल उद्धरणों के रूप मे ही ज्ञात हैं। ऐसे कोश-कारो मे अजयपाल (धरणीकोश के कर्ता), रन्तिदेव, रभस, आदि अनेक विद्वान् प्रसिद्ध हैं।

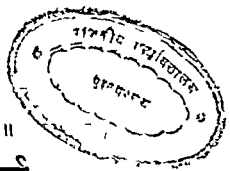
अधिकतर कोशो मे सज्ञाशब्दों का ही बाहुल्य है। कतिपय कोश क्रिया के अर्थ का निरूपण करने के लिए भी लिखे गए हैं। ऐसे क्रियाकोशों मे दो कोश विख्यात है—भट्टमल्ल (१२ वी शति) की आख्यातचन्द्रिका तथा हलायुध का कविरहस्य। इस प्रकार के अन्य ग्रन्थो मे ये भी प्रसिद्ध हैं—विद्यानन्द का क्रिया-कलाप, वीरपाण्ड्य की क्रियापदार्थदीपिका, रामचन्द्र का क्रियाकोश, गुणरत्नसूरि का क्रिया-रत्नसमुच्चय तथा दशबल का धातुरूप भेद। इन ग्रन्थों का उल्लेख 'आख्यातचन्द्रिका' की भूमिका में किया गया है। इसी प्रकार उणादि कोष भी रचा गया है। अब तो कोष-ग्रन्थों की व्यापकता इतनी बढ़ गई है कि ग्रन्थविशेष मे प्रयुक्त शब्दों के सम्बन्ध मे भी कोषग्रन्थों की रचना होने लगी है। कादम्बरी आदि प्रसिद्ध ग्रन्थों के कोष तैयार होने लगे हैं। इसके साथ ही प्रत्येक शास्त्र के पारिभाषिक-कोष एवं शास्त्रीय-कोषों की भी अब बाढ़-सी आ गई है। सार्वजनिक लोकोपयोगी विधि एवं व्यवहार-कोषों की भी रचना हो गई है। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसको अभिलक्षित कर कोष-रचना न हुई हो। रामायण-

कोष, महाभारतकोष, पुराणकोष, व्याकरण, साहित्य, धर्मशास्त्र, मीमांसा, न्याय, योग, तन्त्र, सांख्य, वेदान्त, अर्थशास्त्र आदि सभी विषयों के कोष अब उपलब्ध हो चुके हैं। जो विषय छूटते रह गए हैं उन विषयों पर भी कोषग्रन्थों की रचना दीर्घ हो जायगी। उपनिषदों के आधार पर जैकब का उपनिषद्-वाक्यकोष बहुत पहले ही बन चुका था (१८९१ ई०)।

कोपविद्या के इस समिष्ट विवरण से यह निष्कर्ष निकलता है कि सम्भूत तथा प्राकृत के विद्वानों ने अपनी शब्दनिधि को सुरक्षित रखने तथा प्रचलित करने के लिये कोषग्रन्थों की रचना कर जो प्रयास किये हैं वे सर्वथा श्लाघनीय हैं। विश्व में कोषग्रन्थों का इतना विस्तृत एवं प्राचीन परिचय चीनीभाषा को छोड़ कर फिर संस्कृत में ही विद्यमान है। इस धरोहर को सुरक्षित रखना प्रत्येक संस्कृतज्ञ का पवित्र कर्तव्य है।

—गोपालदत्त पाण्डेय.





॥ श्रीः ॥

आदर्श-

हिन्दी-संस्कृत-कोशः

अ

फडकना

अ

अ, देवनागरीवर्णमालाया प्रथम स्वरवर्गं,
अकार ।

अ-, (= नन्), अव्य० (स) तत्सादृश्यमभावश्च
तदन्यत्वं तदल्पता । अप्राप्तस्य विरोधश्च
नञर्थो षट् प्रकीर्तिता । उदाहरणानि—
(सादृश्ये) अत्राज्ञा = त्रासात्सदृश, (अभावे)
अनोत्पन्नम् = भोजनाभाव, (अन्यत्वे) पण्ड
घट = घटमित्र, (अल्पत्वे) अनुदरी
कन्या = कल्पोदरी, (अप्राप्तस्ये) अधन
चर्मघनम् = अप्राप्तघनम्, (विरोधे) अधर्म
परापकार = धर्मविरोधी ।

अक, स पु (स) चिह्न अनिश्चानं, लक्षणम्
२ तत्प्राधिहन् (१, २, ३ आदि) ३ लेख
४ भाष्यम् ५ रूपकभाग ६ कोठम्
७ शरीरम् ।

—गणित, स पु (स न) गणितभेद, अङ्गविद्या ।
—गत, वि, गृहीत, निरुद्ध ।
—पाली, स स्त्री, परिचारिका ।
—शायिनी, स स्त्री, पत्नी, जाया ।
—देना, भरना वा लगाना, मु, आर्लिग्
(भ्वा, प से), आधिष् (दि, प अ) ।

अकन, स पु (स न) चिह्न-लक्षण, दानम्
२ लेखनम्, ३ गणनम् ।

अकित, वि (स) चिहित, स्पष्टित,
२ लिखित ।

अकुर, स पु (न) अकूर, प्ररोह, उद्धित
(पु) ।

अंकुरित, वि (स) स्फुरित, सांकुर, उद्धित ।

अकुदा, स पु (स) अकुद (स्त्री), अदृष ।

अँकोर, (अँकवार), स पु (स अक)
कोठ-ट-डा, उत्सर्ग २. उत्कोच, उपा-
यनम् ।

अँलुभा, स. पु, दे 'अकुर' ।

अग, स. पु (स न) शरीर, देह, काय,
२. अवयव, प्रतीक, अगक, अपघनः
३. अक्ष, भाग ४. देदागशास्त्राणि [= शिक्षा,
कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्दस्
(न.) ।

—ज, स. पु (स) पुत्र ।

—जा, स स्त्री (स) पुत्री, तनया ।

—खिचना, स पु, आक्षेपक (रोगभेद) ।

—फडकना, स पु, ताण्डव-नर्तन, रोग
२ अंगस्फुरण (शकुनभेद) ।

—रखा, स पु (स अगारश्चक >) अगारसुणी ।
 —राग, स पु (स) गात्ररचन, विलेपनम् ।
 अंगरेज, स पु (पुर्त गलेज) आग्लदेशीय ।
 अंगरेजी, स स्त्री (हि अंगरेज) आग्लभाषा ।
 अगार (-रा,) स पु (स) अगार र,
 दग्धकाष्ठखण्ड अद्यान, उत्तमूकम्, निर्धूमाग्नि ।
 अंगिया, स स्त्री (स अगिका) कञ्जुलिका,
 कञ्जुली, कञ्जुलम्, आंगिक क, चेलिका,
 कु (कु) पांस सक् ।
 अग्नी, वि (स गिन्) शरीरिन्, देहिन्
 २ अवयविन् इ प्रथान, सुर्य ४ दे 'अंगिया' ।
 अग्नीकार, स पु (स) अगाकरण, स्वीकार,
 प्रतिग्रह, प्रतिपत्ति (स्त्री) आदानम् ।
 —करना, कि, स अग्नी स्वी, कृ (त उ अ),
 आ दा (जु व्या अ), प्रतिपद् (दि आ अ)
 प्रति-न्प् (तु प से) ।
 अग्नीकृत, वि (म) स्वी उरी उररी, कृत,
 आ स-उप, कृत, उपगन ।
 अग्नीनी, म स्त्री (हि अग्नी) अगार,
 धानिका श्वटी, हसन्ती, हसन्ती ।
 अग्नीय, वि (स) अगदेशीय २ शरीरक, वादिर ।
 अगुल, स पु (स) अद्ययवपरिमाणम् ।
 अगुली, स स्त्री (स) अगुलि (स्त्री), अगुरी
 रि (स्त्री), वरशाखा ।
 —फाटना, मु, वि रिम (भ्वा आ अ) चनिन
 (वि) + भू ।
 —चटराना, मु अगुली, माटन० स्फोटनम् ।
 अगुरताना, म पु (पा) अगुलित्राणम्,
 अगुलत्राणम् ।
 अगुष्ट, स पु (स.) वृद्धाहुलि (स्त्री) ।
 अगुटा, स पु (स अगुष्ट) वृद्धाहुलि (स्त्री) ।
 —चूमना, मु, चाटुभि तुप् (प्रे), अपीन
 (वि) + भू ।
 —दिखाना, मु, सावमानप्रत्यादिन् (तु प अ) ।
 अंगुटी, स स्त्री (हि अंगुटा) अङ्गुरी (ली) य,
 अङ्गुरी (ली) यक, मुद्रा, कर्मिका ।
 अगूर, स पु (पा), (वेल) द्राक्षा, स्वादी,
 मधुरसा, गोस्नना-नी २ (पल) द्राक्षाफलम्
 आदि ।
 अगुरी, वि (पा) द्राक्षामय २ द्राक्षावर्ण ।
 अगोद्धा, (पु स हि अग + पोटना) अगप्रोच्छ
 नम् ।

अग्नि स पु (स) चरण, पाद २ वृक्षमूलम्
 ३ छन्दश्चरणम् ।
 अचल स पु दे अञ्चल ।
 अजन, स पु (स न) वजन, नेत्रजनम् ।
 अजर पजर, स पु (स पजर र्त्) (पसली)
 पशुना, पार्श्व, पार्श्वस्थि (न)
 २ वजाल-लम्, पजर र्त् ।
 अजली, म स्त्री (स) अजलि, वर-दस्त,
 सम्पुट ।
 अजस, वि (स) मरल अवक्र २ निष्कपट
 निर्व्याज । (अनसी स्त्री०) ।
 अजाम, स पु (पा) परिणाम, फलम्, जन्त,
 पाक ।
 अजित, वि (स) सानन, यज्जलकलित ।
 अजीर, स पु (पा) (वृक्ष) अजीर, उदुम्बर
 नातीया वृक्ष २ (फल) अजीरम् ।
 अजुमन, स स्त्री (पा) सभा, परिषद् (स्त्री) ।
 अज्ञा, स पु (म अनध्याय) अनध्यायदिवस
 २ अरजश, क्षण, कार्पणित्वृत्ति (स्त्री) ।
 अटिया, स स्त्री (हि अटी) शुच्छ, सघात,
 लघुभार ।
 अटियाना, कि स (हि अटी) छलेन आत्म-
 सात् कृ । स पु, छलेन अपहार, प्रसनम् ।
 अटी, म स्त्री (स अष्ठि >) ग्रन्थि, शक्ति
 नाया कटिल्लप्र कुडन मोग्न वा २ अगुलीना
 मध्वस्थनन्तरम् ।
 अट, स पु (स पु न) मुष्क, वृषण, शुक्र
 ग्रन्थि २ दे 'अटा' इ विश्वम्, लाक मण्डल
 म् ४ वीर्य, शुक्रम् ।
 —कोश, स, पु (स) दे. 'अट' ।
 —कोश बदना, स पु, मुष्क वृषण कोश, वृद्धि
 (स्त्री) शीफ ।
 —ज, म पुं, खगसर्पमीनादयो जीवा ।
 अट यट, स पु (अनु०) प्रलाप, अनर्थक वचनम्
 २ वि, व्यर्थ, अन्यवस्थित ।
 अडा, स पु (स अण्डम्) वीष न, हिम,
 पेयी शि (स्त्री) ।
 —देना, कि स, अण्डानि प्र-स् (अ आ अ) ।
 —सेना, वि स, अण्डेभ्य प्रनोरपत्ति कृ ।
 अडाकार, वि (स) अण्डाकृति ।
 अट्टी, स स्त्री (सं षट्) हचक, चित्रक,
 गट २ षट्पल्लव्य बीजम् इ वल्लभेद ।

—विश्वास, स पु (स) निर्विकेक तर्कशून्य, विश्वास प्रत्यय विश्रम्भ ।
 अंधा, स पु (स अन्ध) अनयन, अनेत्र, नेत्रहीनजीव । वि०, विवेक विचार, शून्य रहित ।
 —धुध, स स्त्री, घोरान्धकार, अन्धन्तमस (न) (२) कुप्रबन्ध, अन्याय । वि० विचार-वाय, शून्य रहित । किं वि, निश्शङ्क, अन्धवत्, रभसा, साहसेन, असमीक्ष्य ।
 अधेर, स पुं (स अन्धकार >) अन्याय, उपद्रव, अत्याचार, कुव्यवस्था ।
 —खाता, स पु अन्धवस्था, अन्धभाचार, कुव्यवस्था ।
 —धरना, मु, अन्याय्य आचर (भ्वा प से) ।
 अंधेरा, स पु (स अन्धकार) ध्वान्त, तमिस्र, तिमिर, तमस् (न), वि निरालोक, निष्प्रभ तमो, वृत्त मय ।
 घना—, अन्धतमसम् ।
 थोडा—, अन्धतमसम् ।
 व्यापक—, सन्तमसम् ।
 अंधेरे धर का उजाला, मु, एकल सुत, रत्नाकिपुत्र ।
 अंधेरी, स स्त्री (हि अंधरा) प्रवृत्त, वात्या, झ झावात २ कुणा रात्री, निक्षुब्धा रजनी ।
 —कोठरी, स स्त्री, निरालोक कोष्ठ, २ गर्भ ३ रहस्यम् ।
 अध्र, स पु (स बहु०) अन्धराज्यम् २ अ भ्रजना ३ दश-विशेष ।
 अध्र, स पु (स अध्रम्) आत्र रसाल, फलम् २ रसाल, आत्र (धृष्ट) ।
 अध्रक, स पु (स न) नेत्रम्, नयनम् (सं पु) पितृ, जनक ।
 अध्रर, स पु (स न) आकाश श, गगनम् । २ बल, वसानम् । ३ मेष, जलद ४ शुभाशुभद्रव्यभेद ।
 अधरीय स पुं (स) अधोप्याया वैष्णववृत्त विशेष २ विष्णु ३ शिव ।
 अधा, स स्त्री (स) मातृ (स्त्री), जननी २ पार्वती, दुर्गा ।
 अधवार, स पु (पा) निकर, राशि, सभार ।
 अधवारी, स स्त्री (अ अमारी) परितो (ष्टो) म, प्रवेणी, सज्जना, वरपना ।
 अधालिका, स स्त्री (सं) मातृ (स्त्री), जननी २ सभारी ३ विचित्रवीर्यपत्नी ।

अधिका, स स्त्री (स) मातृ (स्त्री) २ पार्वती ३ विचित्रवीर्यमाया ।
 अधु, स पु (स न) जल, पानीयम् ।
 —ज, स पु (स न) कमलम् ।
 —द, स पु (स) मेष, जलद ।
 —धि, निधि, पति, राशि, स पु (स) सागर ।
 अभ, स पु [स अभस (न)] जल, वारि (न) ।
 अभोज, स पु (स न) कमलम् ।
 अभोद, स पु (स) मेष, अभुद ।
 अभोधि, स पु (स) अभो, निधि, राशि, समुद्र ।
 अश, स पु (स) वि, भाग, एष्ट द, श्वल लं, प्र, देश अवयव, अजम् २ वृत्तरय षष्ठ्यधिकविदानतमो भाग ३ लामाश ४ भाज्याक ५ रिक्शाश ।
 अक्ष-स पु (स) (-Degree of latitude) देशान्तर, स पु (स) ल्वाश (= Degree of longitude)
 अशु, स पु (स) विरण, रदिम ।
 —माही, स पु (स लिन्) अनुमत, सूर्य ।
 अकटक, वि (स) निष्कण्टक, कण्टक-रहित, शून्य २ निर्विघ्न, निरन्तराय ३ शत्रुशय ।
 अकड्ड, स स्त्री (स आ + कड् = गर्व करना) गर्व, दर्प २ भृष्टता ३ आग्रह ।
 —बाज़, वि (हिं + फा) वृत्त, गर्वित २ भृष्ट ३ आग्रहिन् ।
 —बाज़ी, स स्त्री, अभिमानित्व, इतत्त्वम् ।
 अकड्ड, स स्त्री (स आ + कड् = कटा होना) प्रस (सा) र, आतान, आतति (स्त्री) २ दृढता, अनन्दता ३ वक्रता ।
 —वाई, स स्त्री, गात्रोपघात, आक्षेप, उद्वेष्टनम् ।
 अकड्डना, कि अ (स आकड्डनम्) गर्व, आ कट (दोनों भ्वा प से) ।
 अकड्डना, कि अ (स आकड्डनम्) आकड्ड (भ्वा प से), इदो-वक्री, भू ।
 अकथ, वि (स अकथ्य) अकथनीय, वर्णना तीत, अनाख्येय ।
 अकथक, स स्त्री (अनु०) प्रलाप २, चिन्ता ३ चैतन्यम् । वि चकित, अवाक् ।
 अकरणीय, वि (स) अविधेय, अकार्य ।

अक्षरं, स पु (स अक्षरंन् न) कुकार्यम्
 २ पापम् ।
 अक्षरक, वि (स) कर्मरहित (क्रिया, भातु
 आदि) ।
 अक्षर, कि वि (अ) प्राय, प्रायश, बहुश,
 सामान्यत (सब अय०) ।
 अक्षरी, स स्त्री (अ) रसायन, इद्रशो
 रसभदो यो धातून् सुवर्गीकरोति २ सजीव
 नौपधम् । वि, अमोघ, सिद्धिकर ।
 अक्षरमात्, कि वि (स सहसा, एकपदे,
 अक्षरं ०, अतर्कित, देवात् हठात् (सब
 अव्य०) ।
 अकाञ्च, स पु (स अकार्यंन्) कार्यहानि
 (स्त्री), विघ्न, अनुराग २ कुकार्यम् ।
 कि वि, व्यर्थ, निष्प्रयोजनम् ।
 अकाट्य, वि (स अ + हि काटना) अखण्ड
 नीय, अप्रत्यारयेय, अबाध्य ।
 अकाय वि (स) विदेह, अशरीरिन् ।
 अकारण, वि (म) निष्कारण, अहेतुक,
 निानमित्त २ स्वयम्भू । कि वि, निष्प्रयो
 जन निष्कारणम् ।
 अकारय, वि (स अकार्यायं) निष्फल, मोघ ।
 कि वि, वृथा, व्यर्थम् ।
 अकारात्, वि (स) अदन्त, अवर्णान्त ।
 अकारादि, अवर्णां वि (स) अवर्ण, -आरम्भ
 उपक्रम ।
 अकार्यं, वि (स) अकर्तव्य, अकरणीय २
 अनुचित । स पु (स न) कु-निन्दित, -कार्यं
 कर्मन् (न) ।
 अकाल, म पु (स) दुर्मिष्ट, दुष्काल, नीवाक,
 आहाराभाव २ कुममय ।
 —मृत्यु, स स्त्री (स पु) असामयिको मृत्यु ।
 अकालिक, वि (म.) अनवमर, अग्रमकाल,
 असमयोचित ।
 अकाली, स पु (म लिन्) गुरुतानकमतनु
 याधिभेद ।
 अकासी, दे० 'बील' ।
 अक्चिन्, वि (स) निषेध, निःस्व, दरिद्र,
 दग्ध ।
 अक्चिन्ता, स स्त्री (स) दारिद्र्य, निषेधता,
 दीनता ।
 अक्चिक्कर, वि (म) अशक्त, असमर्थ,
 अक्षम ।

अक्लि, स स्त्री दे 'अहु ।'
 अक्लिय, वि (सं) निष्पाप, अनघ, निर्दोष ।
 अक्लीदत्, स स्त्री (अ) अद्वा, निष्ठा ।
 —मन्, वि, अद्वात्, सनिष्ठ, निष्ठावत् ।
 अक्लीद्, स पु (अ) विधास, मतम् ।
 अक्लीनि, म स्त्री (स) अ-अप, यशस् (न),
 वाच्यता ।
 अकुलाना, कि अ (स आकुल >) त्वर्
 (भ्वा आ से), आनु कृ २ आकुली भू,
 उदिज (तु आ अ) ।
 अकृत, वि (स अ + हि कृत्वा) अमित,
 अगणित ।
 अकृतज्ञ, वि (स) कृतज्ञ (कृतज्ञो स्त्री),
 अकृतवेदिन् ।
 अकृत्रिम, वि (स) नैसर्गिक, स्वामाविक २
 यथार्थ, वास्तविक ३ हार्दिक ।
 अकेला, वि (स एकल) एकाकिन् (नी स्त्री),
 असहाय २ अनुपम, अप्रतिम ।
 अकेले, कि वि (हिं अकेला) असहायमेव,
 —मात्र ।
 अकोत्तर स्त्री, वि (स अकोत्तरज्ञत्) एकाधि
 कशनम् ।
 अक्खड, वि (स अक्षर >) उग्र, उद्धत,
 उच्छृङ्खल २ बलह कलि, प्रिय, सुपुस्तु ३ नि
 भय ४ अशिष्ट ५ जड ६ स्पष्टवादिन् ।
 —पन, स पु, उग्रता, बलप्रियता, निर्भयता,
 असम्भयता आच्यम्, स्पष्टवादिता ।
 अक्टोघर, स पु (अ) आंग्लवर्षस्य दशमो
 मास ।
 अक्ल, स स्त्री (अ) बुद्धि मति (स्त्री),
 प्रज्ञा ।
 —मद, वि, बुद्धिमत्, प्राण ।
 —मदी, स स्त्री, बुद्धिमत्ता, प्राणता ।
 अक्ष, स पु (स) देवन, पाशक (हिं पाँसा)
 २ अशरेखा ३ घृत पाशक क्रीडा ४ द्राक्ष
 ५ व्यवहार (हिं मुकदमा) ६ आत्मन् ७
 इन्द्रियम् ८ नयनम् ।
 —क्रीडा, स स्त्री (स) घृत पाशक-क्रीडा ।
 —माला, स स्त्री (स) अपमाला, अक्षसूत्रम् ।
 अक्षत, वि (स) अग्रग, अखण्डित, समग्र ।
 सं पु (सं नित्य बहु) देवपूनायै श्रीहय-
 (बहु०) २. यवा ।

—योनि, वि स्त्री (स) पुरुषसंसाररहिता
(कया नारी वा), मङ्गचारिणी ।

—वीर्य, वि पु (स) आत्मगौरहित (पुरुष),
मङ्गचारिन् ।

अक्षम, वि (स) असहिष्णु, क्षमाशून्य,
अतिदिक्षु २ अशक्त, असमर्थ ।

अक्षमता, स स्त्री (म) असहिष्णुता २
अशक्तत्वम् ।

अक्षय, वि (स) नित्य, अक्षय्य अक्षय्य,
अक्षर, अनक्षर २ कल्पातस्यायिन् ।

अक्षय्य, वि (स) दे 'अक्षय' ।

अक्षर, वि (स) अच्युत रिशर, नित्य । स
पु, अकारादयो वर्णा, ध्वनिचिह्नानि ।

—न्यास, स पु (स) छेद, छेरयम् ।

—श, कि वि (स) प्रत्यक्षर, सामस्त्येन ।

अक्षि, स स्त्री (सं न) नेत्र, नयनं, चक्षुस
(न), डोचनम् ।

—गोलक, स पुं (स) अक्षिमण्डलम् ।

—तारा, सं स्त्री (स) वनोनिका, तारका ।

—पटल, स पु (स न) नेत्र नयन, च्छद
(हि पलक) ।

अक्षुण्ण, वि (स) अक्षुण्ण) अमग्न, समग्र,
अच्छिन्न ।

अक्षोनि, स स्त्री (स अधोहिणी) मर्या
विशेषयुक्ता सेना, सम्पूर्णा चतुराशिणी सेना
(= १०९३५० पैदल, ६५६१० घोड, २१८७०
रथ, २१८७० गज) ।

अक्स, स पु (अ) प्रति, छाया प्रति, विवरूपम् ।
अक्सर, दे 'अक्सर' ।

अखड, वि (स) सम्पूर्ण, समग्र २ सतत,
निरन्तर ३ निर्विघ्न, निर्वाह ।

अखडनीय, वि (स) अमेघ, अविमान्य २
पुष्ट, इष्ट ।

अखडित, वि (म) दे अखड' ।

अखडित, सं पु (हिं अखाडा) मल, बाहुयोध ।

अखडवार, स पु (अ) समाचार वृत्तमात्र,
पत्रम् ।

—नवीर, स पु सम्पादक, समाचार वृत्त
—लेखक ।

अखरभा, कि अ (सं अ + हिं खरा) अधीति
जन् (प्रे), अपरज् (प्रे), न हच् (भ्वा
भा से) ।

अखरावट (-टी), स स्त्री (स अक्षर >)
वर्णमाला २ वा मालाकमानुसारी पद्यसमूह ।
अखरोट, स पु (स अक्षोट), (वृक्ष) अक्षोट
२ (फल) अक्षोटम् ।

अखलक, स पु (अ) चरित्रम्, सदाचार ।
सम्भवा, सिष्टवा ।

अखाड़ा, स पु (स अक्षिपाट) मल्लभूमि
निपुणम् (स्त्री) २ साधुमण्डलम् ३ साधु
निवास ४ गाथकसमुदाय ५ ग्गभूमि, नृत्य
शाला ६ अगनम्, आजरम् ।

अखाद्य, वि (स) अभक्ष्य, अनक्षनाहं ।

अखिल, वि (म) समग्र, समस्त, निखिल ।

अखिलारामा, स पु (स—भम्) परमात्मन्,
विरवात्मन् ।

अखलाह, अव्य (अनु) अह ।

अगद्वृत्ता, वि (स अग्रोदत >) दीर्घ, आद्यन
२ लव, उच्च ।

अगद्वराह, वि (अनु) अग्रम असङ्गत ।
स पु, प्रलाप २ व्यर्थ कार्यम् ।

अगणनीय, वि (म) सामा य, साधारण २
अमरय, गणनातीत ।

अगण्य, वि (म) तुच्छ, प्राट्ट २ अमरयेय,
सटरातीत ।

अगतिक, वि (म) अक्षरण, निराश्रय, अनाथ ।

अगद, वि (म) नीराग निरामय, स्वस्थ ।
स पु (म) शीघ्र, भयन, भयव्यम् ।

अगदकार, स पु (म) वैद्य, जीवद ।

अगम वि (स अगम्य) दुःम, गहन २ विवट,
वठिन ३ दुर्लभ, दुष्प्राप ४ अक्षय, दुर्बोध
५ अगाध, गम्भीर ।

अगम्य, वि (स) दे 'अगम' ।

अगर, स पु (स अगुरु न) वशिष्ठ, राजाहं,
वृष्णम् ।—वृत्ति, स स्त्री, (स अगुरुवर्षी) ।

अगर, अव्य (फा) यदि, क्व ।

—वे, अव्य (फा) यद्यपि, अपि ।

अगल वागल, कि वि (फा) इतलल, उभयत,
उभयत्र ।

अगला, वि (म अग्र >) पूर्व, पीररथ २
पूर्ववतिन्, प्रथम ३ प्राचीन, पुराण ४ आगा
मिन् ५ अपर, द्वितीय । सं पु, प्रधान, २
प्राश ३ पूर्वज ।

अगवाहं, स स्त्री (स अग्रे + गमन >) प्रायुद्-
गमन, प्रायुद्गमनम् । स पु, नेत्र, अग्रणी
(पु) ।
अगवाहा, म पु (स अग्रवा >) गृहद्वारस्य
पुरीवर्तिनी भूमि (स्त्री) २ गृहस्याग्रिमो
भाग ।
अगवानी, स स्त्री दे 'अगवाहं' ।
अगरान्, स पु (अ आगस्ट) आम्बवर्षस्या
ष्टमो मास ।
अगस्य, म पु (म) ऋषिविशेष २ नक्षत्र
विशेष ३ वृश्चभेद ।
अगहन, म पु (म अग्रहायन-ण) मार्गशीर्षं ।
अगाऊ, म पु (म अग्र >) अग्रिम, पूर्वोक्त
मूल्यात् । वि आग्रम अग्रय ।
अगाडी, कि वि (स अग्रे) पुरत, पुरस्तात्
२ अनागतवेला, भावस्थत्वाल । स स्त्री,
अश्वस्याग्रिमा रज्जु (स्त्री) ।
अगिनचोट, म पु (स अग्नि + अ) अग्निपोत,
वाग्धायनी (स्त्री) ।
अगुआ, स पु (स अग्र >) अग्रसर, अग्रणी
(पु) २ मुरद, नायक, ३ पथप्रदर्शक ४
विवाहसम्पादक ।
अगुण, वि (म) निर्गुण मूर्ति । स पु दोष,
दूषणम् ।
—अ, वि (म) अन्तर्निष्ठ, अपर्रोक्षक ।
अगुह, णि (स) ह्वाद्य २ अशिष्ट । स पु
(स) ह्यु हस्व, वर्ण ३ दे 'अगरं' म पु ।
अगोचर, वि (स) इन्द्रियातीत, अतीन्द्रिय,
अग्रद, अव्यक्त, अग्रयक्ष ।
अग्नि, स स्त्री (म पु) अनल, पावक ज्वलन,
वह्नि, दहन, हुताशन, वैशानर, हुतान्,
हुतवह, ह्यवाहन, चित्रमानु, विभावसु,
शुक, शुचि ।
—अर्म, स पु (स न) देवयज्ञ, अग्निहोत्रम् ।
२ शवदाह, अत्येष्टिसंस्कार, अग्निक्रिया ।
—अ्रीडा, स स्त्री (म) दे 'आतश्वानी' ।
—अवाला, म स्त्री (स) अग्नि, जिह्वा शिखा,
अचिम् (स्त्री, न), कील-का ।
—दाह, स पु (स) प्लोप, ताप, ज्वलन २
शवदाह ।
—परांवा, स स्त्री (स) तप्तद्रव्यम् २ अग्नी
शुभादिपरीक्षाम् ।

—वाण, स पु (स) अनल-दहन, शर सायक ।
—विद्या, स स्त्री (स) अग्निहोत्रविधि ।
—शुद्धि, स स्त्री (स) अग्निना शोधनम्
२ दे 'अग्निपरीक्षा' ।
—संस्कार, स पु (स) दाहकर्मन् (न),
शवदाह २ अग्निना शोधनम् ।
—ससा, स पु (स स्त्रि) वायु, पवन ।
—सेवन, स पु (स न) वह्निनिषेवणम् ।
—होत्र, स पु (स न) यज्ञभेद, होम,
हवनम् ।
—होत्री, स पु (स, त्रिन्) आहिताग्नि,
याजक, याज्ञिक ।
अग्न्यख, म पु (स न) आग्नेयाखम् ।
अग्न्याधान, म पु (स न) विधिपूर्वमग्नि
स्थापन २ अग्निहोत्रम् ।
अग्र, म पु (स न) अग्रभाग, शिखर,
प्रान्त, मुख, अणि, (पु, स्त्री) । वि अग्र-
सर, उत्तम, प्रधान ।
—अग्र्य, वि (स) ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, मान्य ।
—आग्नी, स पु (न त्रिन्) पुरोग, नायक ।
—अ, स पु (स) अग्रजन्मन्, ज्यायान्
भ्रातृ (पु) ।
—अणी, स पु (स णी, पु) नायक, नेत्र,
पुरोग ।
—भाग, स पु (म) पूर्व पुरो-भाग खण्ड ।
—आयी, म पु (स यिन्) अग्रसर,
पुरोगामिन् ।
—वर्ती, वि (स वर्तिन्) अग्रस्थ, पुररिपत ।
—सर, स पु (स) नायक, अग्रणी (पु),
नेत्र ।
—अग्रह, स पु (म) अग्रहणम्, त्याग ।
—अग्रानीक, स पु (स न) सेना-मुख,
अग्रम् ।
—अग्राम्य, वि (स)
अग्रामीण, नागरिक २ वन्य, अगृह्य ।
अग्रारान्, म पु (स न) देवादिदेवो
भक्ष्यायाहा ।
अग्रारान्, स पु (स न) समान—श्रेष्ठ—
आसन स्थानम् ।
अग्रार्य, वि (स) त्याज्य, परिहार्य, ह्य ।
अग्रिम, वि (स) माविन्, आगामिन् २
प्रधान, अग्रय ।

अघ, स पु (स न) पाप, पातक, दुरितम्, यन्म् (न) २ दुःखम् ३ व्यसनम् ।
 अघट्ट, वि (स अ + घट्) अशक्य, असम्भव २ दुर्घट, दुष्कर ।
 अघट्ट, वि (हि घटना) अक्षय, अक्षय्य, अव्यय ।
 अघटित, वि (म) अभूत २ असम्भव ३ कठिन ४ अयोग्य ।
 अघमर्षण, वि (स) अघ पाप, हारिन् नाशक । स पु, ऋग्वेदस्य पापनाशक सूक्तविशेष ।
 अघारि, वि (स) पापनाशक २ अघट्टस्य नाशक कुणो विष्णुर्वा ।
 अघोर, वि (स) सौम्य श्राभन, शिवदर्शन ।
 —नाथ, स पु (स) शिव, भूतनाथ ।
 —पथ, म पु (स -पथ) शैवानां सन्ध्यादायविशेष ।
 अघोरी, स पु (स अघोर >) अघोरमता तुयायिन् २ सर्वमक्षक ३ दुर्दान ।
 अघोष, वि (स) नीरव, निश्शब्द २ अल्प ध्वनितु ३ गोपहीन । स पु, वर्गमालया 'क, ल, च, छ, ट्, ठ्, ट्, थ्, प्, फ, श्, ष, म्' वर्णा ।
 अचभा, स पु (स असम्भव >) आश्चर्य्य, विस्मय २ चमत्कार, कौतुबम् ३ अद्भुत वस्तु (न) ।
 अचभित, वि (हि अचम्भा) चकित, विस्मित ।
 अचकन, म पु (स कञ्चुक) ।
 अचक्षु, वि (स क्षुम्) अक्ष २ निरिन्द्रिय ३ अतीन्द्रिय ।
 अचर, वि (न) स्थावर, अवल ।
 अचरज, स पु (स आश्चर्य्यम्) विस्मय, चमत्कार ।
 अचल, वि (स) निश्चल, स्थिर २ चिरस्थायिन्, नित्य । स पु (स) पवन, गिरि २ कौल, शकु ३ सप्तसख्या ४ अद्भन् (न) ५ शिव ६ आत्मन् ।
 अचला, वि (म) स्थिर, गतिरहित्वा । म स्त्री (स) पृथिवी ।
 अचानक, कि वि (सं अचानक >) अकस्मात्, सहसा, एकपदे, अकाण्ठे । (सत्र अग्य)

अचार, म पु (फा) सन्धित, सन्धान, तेमन, निष्ठानम् ।
 अचितनीय, वि (स) अतक्य, अचित्य, अक्षेय ।
 अचितित, वि (म) अनर्कित, अविचारित, आकरिमक २ निश्चिन्त ।
 अचित्य, वि (स) अक्षेय, अतक्य, कल्पना तीत २ अद्भुत ३ आशानीत ४ आकरिमक ।
 —आत्मा, स पु (म —त्वम्) परमात्मन् अतक्यस्वरूप ।
 अचिकित्स्य, वि (न) अनुपचार, असाध्य (रोगादि)
 अचित्ति, स स्त्री (स) अशानम्, अवोध ।
 अचिर, अव्य, (म) शीघ्र सपदि (अव्य) २ वर्तमाने ३ किंचित् पूर्वम् । वि क्षणिक, नरवर २ वर्तमान, —विषयक सम्बन्धिन् ।
 अचीती, वि (स अचितित) आकरिमक २ अचित्य ।
 अचूक, वि (स अ + हि चूकना) अमोघ, सफल । कि वि, अवश्य धुवम् ।
 अचेत, वि (स -तम) अचेतन, निष्प्राण, निर्जावि २ अवाकुल ३ अनवहिन ४ मूढ ।
 अचेतन, वि (म) विचेतन, नष्ट, निष्प्राण, स्थावर २ निसृष्ट, मूर्च्छित । स पु जडद्रव्यम् ।
 अचेतन्य, वि (म) अचेतन, स्थावर । स पु (स न) निर्जावता, निष्प्राणता ।
 अचछा, वि (स अचछ = स्वच्छ >) उत्तम, भद्र, श्रेष्ठ २ निर्मल ।
 अचछाई, म स्त्री (हि अचछा) भद्रता, सौख्यम् ।
 अच्छिन्न, वि (म) निश्छिद्र २ पूर्ण, अराण्डित ।
 अचछेद्य, वि (म) अक्षेय अलाव्य, धविनाशिन ।
 अच्युत, वि (स) अच्युत २ इष्ट, नित्य ३ अमोघ ।
 अच्युतता, वि (सं अच्युत) अच्युत २ नव, पवित्र ।
 अजट, म पु (अ एजेट) प्रति निधि-हस्त ।
 अजसी, स स्त्री (अ एजसी) प्रतिनिधि, —कार्यालय-निवास ।

अज, वि (न) स्वयम्भू, जन्महीन । म पु
 अजन् (पु) २ विष्णु ३ शिव ४ कामदेव
 ५ छाग ६ मेघ ।
 अजगर, म पु शृङ्ग, बाहस ।
 अजगरी, म स्त्री (स अजगर >) आलस्यम् ।
 अजगद्वा, म पु (पा) दे 'अजगर' ।
 अजगरी, वि (पा) आगन्तुक, विदेशीय
 अरिचिन् ।
 अजगन्मा, वि (न मन्) अज स्वयम्भू,
 अनादि ।
 अजगव, वि (न) अद्भुत, विचित्र विलक्षण ।
 अजगमत, म स्त्री (अ) प्रताप, प्रभुत्व,
 महत्त्वम् ।
 अजगय, वि (म्) अधृय, अद्भ्य, अजेय ।
 अजर, वि (म) जराहीन, बार्दक्ष्यरहित ।
 अजवायन, स स्त्री (म यवानिना) शूलहन्त्री ।
 अजस्र, कि वि (म न) सदा, अनवरत,
 नित्यम् ।
 अजहृद, कि वि (पा) असोम, अत्यधिक ।
 अजा, वि स्त्री (म) जन्महीना । स स्त्री
 छागो २ प्रकृति (स्त्री) ।
 अजात, वि (म) अष्ट, अनुत्पन्न, जन्महीन ।
 —शत्रु, वि (स) शत्रुहीन, सर्वमित्रम् । स
 पु सुप्रिष्ठर २ शिव ३ मगधराजविशेष ।
 अजान, वि (म अज्ञान) मूर्ख, मन्द ३ अज्ञात,
 अपरिचित । म पु, अज्ञानिता, अज्ञता ।
 अजात, म पु (अ) यातना, पीडा ।
 अजामिल, म पु (म) कश्चित् पापी ब्राह्मणो
 यो मृत्युनाले नारायणनामकस्य निवस्यतस्य
 नामोच्चार्य मुक्तिं लेभे ।
 अजापव, स पु (अ 'अज' का बहु०) अद्
 भूतवस्तुनि, विलभणा व्यापारा ।
 —घर, म पु अद्भुतालय, मग्नहालय ।
 अजित, वि (स) अपराजित, स्वतन्त्र । म पु,
 विष्णु २ शिव ३ बुद्ध ।
 —इन्द्रिय, वि (म) इन्द्रियलोडप, विषयासक्त ।
 अजिन, स पु (म न) शृंग-चर्मन् (न),
 इति (पु स्त्री), वृत्ति (स्त्री) ।
 अजिर, स पु (स न) अगमन, प्राङ्गण,
 चत्वर रम् ।
 अजी, अव्य (सं अधि) मो, आर्य्य, अङ्ग
 (सत्रो) ।

अजीज्ञ, वि (अ) प्रिय, तात, वरस ।
 अजीत, वि (म अनित) अनेय, अनय्य,
 अधृय ।
 अजीघ, वि (अ) अद्भुत, विलक्षण, विचित्र ।
 अजीर्ण, म पु (म न) अजीर्ण (स्त्री),
 मन्दाग्नि, अन्नविकार, अपाक २ आधि
 क्यम् । वि नर, नूतन ।
 अजीवन, वि (म) आजीविका-उपजीविका
 -रहित-हीन म पु (म न) मृत्यु ।
 अजूया, स पु (अ) अद्भुत वस्तु (न),
 विचित्रवाचा ।
 अजेय, वि (स) दे 'अनय्य' ।
 अजैकपाद, म पु (स) रद्विशेष २
 विष्णु ।
 अजैव, वि (म) जीवन-हीन-विरहित
 (इत-आर्गेनिक)
 अज्ञ, वि (स) मूर्ख, मूढ, अज्ञानिन् ।
 अज्ञता, स स्त्री (स) जाड्य, मौर्ख्य, मूढता ।
 अज्ञात, वि (म) अविदित, अबुद्ध, अपरिचित ।
 —वास, स पु (म) गुप्तनाम ।
 अज्ञान, स पु (सं न) अविद्या, जाड्य, मूर्खता ।
 अज्ञानता, स स्त्री (स) जडता, अबोधता ।
 अज्ञानी, वि (स -निन्) मूढ, मूर्ख, अबोध ।
 अज्ञेय, वि (स) अतर्क्य, बोधागम्य, ज्ञानातीत ।
 अटबर, स पु (स अट् + फा अवार) राशि
 (पु), ममार, निचय ।
 अटक, म स्त्री (हि अटकना) विघ्न, बाध धा
 २ सङ्कोच ३ सिन्धुनदी ४ नगरविशेष
 ५ हानि (स्त्री) ।
 अटकना कि अ (हि अ + टिकना) १ प्र
 उप-शम् (दि प से), विरम् (भ्वा प अ)
 निवृत् (भ्वा आ से), स्था (भ्वा प अ),
 निश्चल (वि) + भू । २ पाठे पठ् (भ्वा
 प से), जालबद्ध (वि) + भू, निरत
 आसक्त (वि) + भू ३ सिद्ध (दि प से),
 अनुरत् (वर्म०), भाव-अभिलाष + क्
 (क् प अ) ४ विवद् (भ्वा आ से),
 विप्रलप (भ्वा प से), वैरायते (ना धा) ।
 अटमल, स स्त्री (म अट + कल >) अनुमान,
 वि, तर्क, उद्वा, अनुमिति (स्त्री) ।
 —पच्चू, स पु कपोलकपना, अनुमानम् । वि
 कार्पणिक ।

—याज्ञ, वि, अनुमात् ।

अटकाना, कि स (हि अटकना) अवस्था (प्र), रुध् (रु उ अ) २ पाशेन बन्ध (कृ प अ) जाले धृ (जु) ३ स्नेह पादै बध ।

अटकात्, स पु (हि अटकना) विप्र, बाध । २ विलम्ब ।

अटन, स पु (स न) भ्रमण, चलन, विचरणम् ।
अटपट, वि (अनु०) कठिन, कुटिल, विकट २ नटिल, गूढ ३ असम्बद्ध, असंगत ४ प्रस्खलद्-विवलद् (श्नु) ।

अटपटाना, कि अ (हि अटपट) आकुली भू, सुह (दि प से) २ विकल्प विलम्ब-यासक् (म्वा आ से) ।

अटपटी, स स्त्री (हि अटपट) रुभ्रम, व्यामोह विकल्प, वितर्क ।

अटपटार, स पु (स आटपटार >) अटकार, गर्व ।

अटल, वि (स अ + हि टलना) अवल, स्थिर, मित्य, ध्रुव, अवश्वभावित् ।

अटलम्, स पु (अ) मानचित्र-देशालय, ग्रन्थ ।

अटारी, स स्त्री (स अटारी) अट्ट ह, अट्टाल शिवा, शिरोगेह, चन्द्रशाला ताली ।

अटाला, स पु (स अटाल >) राशि, निचय २ परिच्छेद, यात्रासामग्री ३ मासिक सौमिक, वसति (स्त्री) ।

अट्टे, वि (स अ + हि ट्टना) अच्छेद्य, असुखनीय २ अजैय, अजन्म ३ निरन्तर ४ अत्यधिक ।

अट्टेरन, स पु (स अति + इरण >) मूत्रवलयनिर्माणार्थं लघुनाशयन्त्रम्, आवापनेम् ।

अट्टेरना, कि स (हि अट्टेरन) आवापनेन पञ्ची रत्न (जु) ।

अट्टहास, स पु (स) अति प्रच्छे, हास ।

अट्टी, स स्त्री (हि अट्टना) पञ्ची ।

अट्टालिका, स स्त्री, (स) दे 'अटारी' ।

अट्टा, स पु (स अट्ट् >) अष्टविद्युक्त कीटापत्रम् ।

अट्टाईस, वि (स अष्टाविंशति स्त्री) ।

—वौ (वी), अष्टाविंश (शी), अष्टाविंशति तम (मी) ।

अट्टानवे, वि (स अष्ट (१) नवति स्त्री) ।

—वौ, (वी) वि, अष्ट (१) नवति तम (मी), अष्ट (१) नव त (-ती) ।

अट्टावन, वि (स अष्ट (१) पञ्चाशत् स्त्री) ।

—वौ, (-वी), वि अष्ट (१) पञ्चाशत् तम (-मी), अष्ट (१) पञ्चाश (-शी) ।

अट्टासी, वि (स अष्टाशीति स्त्री) ।

अट्टासिर्वी (-वी), अष्टाशीतितम (-मी), अष्टाशीत (-ती) ।

अट्टासिल, स पु (स अट्ट् + अ सौसिल) सभा, मसद् परिषद् (स्त्री), गोष्ठी शि (स्त्री) २ मन्त्रणा-णम् ।

अट्टासेली, स स्त्री (स अट्टकेलि >) चपलता, चाञ्चल्य, दहोल । २ मत्तगति (स्त्री), मदोद्धतगमनम् ।

अट्टासी, स स्त्री (स अट्ट् + अण >) अष्टाणी, अष्टाणवी ।

अट्टापहला, वि (स अट्ट् + पा पद् >) अष्ट, वीण पार्थ ।

अट्टापाव, स पु दे 'ऊधम' ।

अट्टावोसा, वि (स अष्टमास) आष्टमासिक (शिन्नु) २ सीमा-तीव्रयनसंस्कार ।

अट्टावारी, स पु (हि आठ + वार) * अष्टवार, अष्टाह, दिनाष्टवम् । २ सप्ताह, दिनसप्तकम् ।

अट्टाहत्तर, वि (स अष्ट (१) सप्तति स्त्री) ।

—वौ (-वा), वि, अष्ट (१) सप्ततितम (-मी), अष्ट (१) सप्तत (-ती) ।

अट्टारह, वि (स अष्टादश) । —वौ (-वी) अष्टादश (-शी) ।

अट्टागा, स पु (हि अट्टाना + टांग) विप्र, इराक्षेप, बाध-धा ।

अट्टचन, स स्त्री (हि अट्टना + चलना) विप्र, कठिनता, आपत्ति (स्त्री) ।

अट्टतालीस, वि (स अष्ट (१) चत्वारिंशत् स्त्री) —वौ (-वी) वि, अष्ट (१) चत्वारिंशत् तम (-मी), अष्ट (१) चत्वारिंश (-शी) ।

अट्टनीस, वि (स अष्टाविंशत् स्त्री) ।

—वौ (वी), वि, अष्टाविंशत् तम (-मी), अष्टाविंश (-शी) ।

अट्टम, कि अ (स अट्ट् = रावता >) दे 'अटकना २ आट्ट न मुच् (रु उ अ) निर्दोषेन वध् (जु) ।

अडवंग, वि (हि अडना + म वक्र) वक्र,
विषम, नतोन्नत २ विकट, दुर्गम ३ विलक्षण ।
अडवोक्रेट, म पु (अ एडवोक्रेट) पक्षममर्धक,
दे 'वकील' ।
अडसट, वि (म अष्ट (१) षष्टि स्त्री) ।
—वौ (-वा), वि अष्ट (१) षष्टितम (-मी),
अष्ट (१) षष्ट (-ष्टी) ।
अडाना, क्रि स, दे 'अटकाना' ।
अडिग, वि (म अ + हि डिगना) निश्चल,
रिश्त इह ।
अडियल, वि (हि अडना) उडन दुर्दम,
दुर्विनीत २ अलम, तन्द्रालु ३ अविनेय
स्वैरन् दुराग्रह ।
अडी, म स्त्री (हि अडना) दुराग्रह, इठ,
निर्वन्ध, प्रतिनिवश ।
अडीट, वि (म अट्ट) अट्टय, लोचनागोचर
२ गुप्त, अन्तर्हित ।
अडोल, वि (म अ + हि डोलना) अचल,
निष्कम्प, स्थिर ।
अडोम पडोस, म पु (हि पडोम) मन्त्रिधि,
पत्रण्ठ, सामीप्य प्रतिवेश ।
अडोमी पडोसी, म पु (हि, अडोम पडोम)
प्रतिवेशेय वैश्य-वशन् वासिन्, निकट-ममी
प, स्थ वासिन् ।
अड्डा, म पु (म अड्डा >) निवेशस्थान, लगन
२ आरवान (-नी) ३ सक्तेन-गृह स्वल,
समागम मक्तेन स्थानम् ४ चतुष्पाठम् ।
अड्डेम, स, पु (अ षडेम) अभिनन्दनपत्रम्
२ पत्रमशा, निवाममक्तेन ।
अडि, स स्त्री (स) अणी, धारा, अग्र, कोटि-
(स्त्री), सीमा, प्राग्न ।
अडिमा, स स्त्री (म अडिमन् पु) अगुता,
सूदमता २ योगस्वाष्टसिद्धिपु प्रथमा, यथा यो
गिनोपदेशा भवन्ति ।
अडिमादिक, म स्त्री (म) यागस्वाष्टसिद्धय,
(= अडिमा महिमा, गरिमा, लविमा, प्राप्ति,
प्राप्तान्य, इशित्वम्, वणि-त्वम्) ।
अडु, स पु (म) लव, लेश, षष्टिपरमाणु
मात्र कण, घुटिग । वि., अनिमृहम ह्युद्र ।
—वीक्षण, म पु (म न) सूक्ष्मदर्शकयन्त्रम् ।
२ छिद्रान्वयणम् ।
अन, क्रि वि (म) अस्मादेव कारणात्, अनेन
कारणन हेतुना, इति हतो ।

अत एव, क्रि वि (म) अस्मादेव कारणात्,
अनेनैव हेतुना ।
अतर, म पु (अ इत्) निर्यास, पुष्पसार ।
—दान, म पु (अ + पा) पुष्पमारपात्रम् ।
अतरमौ, क्रि वि (म इतर + थ >) आगामा
गतौ वा वृत्तायो दिवम ।
अतर्कित, वि (म) अविचारित, आकस्मिक
(-की स्त्री), अचिन्तित ।
अतर्क्य, वि (म) अचिन्त्य, अचिन्तनीय,
अविवेच्य, अनिर्वचनीय ।
अतल, वि (म) तलहीन, अनिगम्भीर । म
पु (म न) सप्तसु पातालपु प्रथमम् ।
—स्पर्शा, वि अनिगम्भीर, अतलस्तम् ।
अतलम्, म स्त्री (अ) अनिर्वाक्य कौशय
पटमे ।
अतलातक, म पु (अ एटलाटिक) अन्धमज्ञा
मागर समुद्रविशेष ।
अता, म पु (पा) दान, त्याग विसर्जनम् ।
—करना, —परमाना, मु, दे० 'दना' ।
अति, वि (म अव्य) अत्यन्त अत्यर्थ अधिक ।
म स्त्री, आधिक्य, अतिशय, सीमाद्वेषणम् ।
अतिक्रधा, म स्त्री (म) अतिरजित, —व्या—
—आख्यायिनी—गण्ड । २ निरर्थक-व्यर्थ,—
मापणम् ।
अतिकाल, म पु (म) विन्म्व, कालानिपात ।
अतिक्रमण, म पु (म न) नियम मर्यादा
सीमा-उद्वेषण अतिक्रम ।
अतिथि, स पु (म) अन्यायन, प्राप्ति,
प्राप्ति (णि) क, गृहागत २ मन्व्यामिन् ।
—पूजा, म स्त्री, आतिथ्य, अतिथि, सत्कार
सेवा क्रिया ।
—यज्ञ, म पु (म) अतिथिपूजा ।
अतिरिक्त, क्रि वि (म) विना, श्रुते अति
रिच्य, विहाय (सब अव्य) । वि (स)
अवशिष्ट २ भद्र, पृथक् ।
अतिबेला, म स्त्री (स) दे 'अतिकाल ।
अतिशय, वि (स) बहु अधिक ।
अतिसार, म पु (म) प्रवाहना ।
अतीन्द्रिय, वि (म) अगोचर, इन्द्रियातान,
अव्यक्त, पराग्न ।
अतीत, वि (म) गत, व्यनीत २ विरक्त,
निर्लेप ३ मृत, दिवगत ।

अतीव, वि (म अन्व्य) अधिक, बहु, प्रभूत ।
 अनुल, वि (स) अनुव्य, अनुलिन, अनुपम
 = अमेय, अत्यधिक ।
 अत्तार, स पु (अ) गन्धोपनीविन्, गांधिक,
 गंध, विक्रियन् वणिन् २ औपधयिकेष्ट ३ भेष
 नवार ।
 अत्यन्त, वि (म) अत्यर्थ, अमित अत्यधिक ।
 अत्याचार, स पु (म) निष्ठुर क्रूर निर्दय,
 कर्मन् (न) कार्यम् २ पाप, दुरितम् ३ पाप
 ण्ड ८, आटम्बर ।
 अत्याचारी, वि (स-रिन्) पाप, दुराचारिन्
 २ निष्ठुर, क्रूरकर्मन् ३ पापविडम्, धर्मघ्न ।
 आयुक्ति, स स्त्री (स) वायुपचय, सत्याति
 व्रम = अलभारभेद (सा) ।
 अय, अन्व्य (म) भगलसूचकशब्द २ आरम्भ
 ३ अनन्तरम् ।—च, अन्व्य (म) अन्यच्च,
 अपर च, अपि च, किंच ।
 अथर्व, स पु (म) अथर्वन् चतुर्वेद ।
 अथर्वणि, स पु (म) अथर्ववेदश्च २ पुरोहित ।
 अथवा अन्य (म) वा, किं वा यद् वा ।
 अथाह वि (म) अ-हि थाह अगाध अनल
 स्पृश, अतिग (ग) भीर २ अत्यधिक अनीव
 ३ गूढ, दुर्बोध ।
 अदत्त, वि (स) दशन दन्त, विहीन रहित
 २ अज्ञान दग्ग-दशन ।
 अदद्, स पु (अ) मत्सा २ मत्सायाश्चिद्ध
 मनेनो वा ।
 अदना, वि (अ) तुच्छ, छुद्र २ साधारण
 प्राकृत ।
 अद्वय, स पु (अ) शिष्टाचार, शिष्टता विनय ।
 अद्वय, वि (म) प्रचण्ड अजेय, दुर्दम ।
 अद्वक, स पु (स) आद्रक शूद्रवेरम् ।
 अद्वल, स पु (अ) न्याय, धर्म नय ।
 अद्वलवद्वल, स पु (अ) परि, चर्न-चर्नन वृत्ति
 (स्त्री), विपर्यय ।
 अदा, वि (अ) दत्त, शोधित । स स्त्री,
 लीला विज्ञम २ प्रकार, विधि ।
 अदालन, स स्त्री (अ) न्यायालय, अधि
 करण, व्यवहारमण्डप, न्याय धर्म, सभा ।
 अदालती, वि (अ) अदालन) आधिकारिक,
 न्यायालयमन्त्रिणम् ।
 अदावत, स स्त्री (अ) शत्रुता, वैरम् ।

अदूरदर्शी, वि (स-शिन्) शूलनुदि अष्ट ।
 अद्वय, वि (स) परोक्ष, अगोचर, अलक्ष्य ।
 अदृष्ट, वि (स) अन्तर्हित, छुप्त, अलक्षित ।
 —पूर्व, वि अद्वय, अभूतपूर्व, विलक्षण ।
 अदेह, वि (स) अनाय, अशरीर । स पु,
 कामदेव, मदन ।
 अद्रोष, वि (म) निर्दाष, निष्पाप, निरपराध ।
 अद्भुत, वि (स) विस्मय प्राश्नार्थ-जनक, अपूर्व,
 अलौकिक ।
 अद्भुतललय, स पु (म) मग्नहालय ।
 अद्भुतीय, वि (स) फल, पनाकिम्, एक
 २ अनुपम, अनुव्य ३ प्रधान ।
 अद्भुत, वि (म) दे 'अद्भुताय' (१, २) ।
 —वाद्, स (म) 'ब्रह्मैव सत्य अन्यद
 सन्न मिथ्या' इति सिद्धा न ।
 अध, अन्व्य (स) नीचै, अधस्तात् (दोनों
 अन्व्य) ।
 —पतन, स पु (म न) नीचै पतन
 = अवनति (स्त्री) ३ दुदशा, दुर्गति (स्त्री)
 ४ विनाश, क्षय ।
 अध, वि (स) अर्द्ध) सामि (समास में ही) ।
 —कचरा, वि, अपरिपक्व, अपूर्ण २ अर्द्ध,
 अकुशल ।
 —कपारी, स स्त्री, अर्द्धशिरावेदना, अर्द्धव
 भेदक ।
 —खिला, वि, अर्द्धविकसित, सामिविकच ।
 —तुला, वि, अर्द्धविकृत, अर्द्धपाकृत २ अर्द्ध
 मोलित ।
 —पर्ई, स स्त्री, अर्द्धपाद, पाशाईम् ।
 —मरा } मृत, प्राय-वत्प, अर्द्ध सामि, मृत ।
 —मुआ }
 —मेरा स पु, अर्द्धसेर, सेराईम् ।
 अधन, वि (म) निर्धन, दरिद्र ।
 अधशी, स स्त्री (म) अर्द्धांगी) अर्द्धांगी,
 अर्द्धांग-शक ।
 अधन्य, वि (स) मन्दमाय, गर्भ ।
 अधम, वि (स) नीच, निरुष्ट २ पापिन्, दुष्ट ।
 —अधम, वि (स) पापिष्ठ, महागाव ।
 अधमर्ण, वि (म) ऋग्नि, धारक, ऋगमन्त्र ।
 अधमाग, (स पु (म न) वाद, पद, पदम् ।
 अधमा स स्त्री (स) नायिका भेद २ ३ कर्क
 शा-भन्तना, -नारी ।

अधमाई, स स्त्री (स अधम >) नीचता, अधमता ।
 अधर, स पु (स) अधस्तन ओष्ठ (२) (ऊपर का) ओष्ठ, रद-रदन-रत-रदान च्छर ।
 —अधर, स पु (स) अधस्तन ओष्ठ ।
 —विव, स पु (स न) रत्नैः ।
 अधर, स पु (स अ+हि धरना) आकाश श अंतरिक्षम् । वि हेय ० नीच ।
 अधर्म स पु (स) पाप, पातक अशाय दुकर्मन् (न) ।
 अधर्मी, वि (स-मिन्) पाप पापिन् पातयिन् ।
 अधार्मिक, वि (स) दे 'अधर्मा ।
 अधिक, वि (न) बहु प्रभूत् ० अनिच्छित् देव । —तर, क्रि वि, प्राय, प्रायश बहु ।
 —ता, स स्त्री (स) बहुत्व अधिक्य बाहुल्यम् ।
 —मास, स पु (स) पुह्वेत्तम-मल-अमकाल नाम ।
 अधिकरण, स पु (स न) आधार, आश्रय २ कारकविशेष (व्या) ३ प्रकारा दीर्घम् ।
 अधिकारा, स पु (स) अधिककार । वि बहु । क्रि वि प्राय, बहु ।
 अधिकाधिक, वि (ए) अधिकतम, भूयिष्ठ ।
 अधिकार, स पु (स) प्रभुत्व, स्वत्व, २ स्वामित्व, अधिपत्यम् ३ क्षमता, योग्यता ४ प्रकरण, दास्यम् ।
 अधिकारी, स पु (स रिन्) प्रभु, स्वामिन् २ स्वत्ववत् ० योग्य, क्षम । (स्त्री अधिका रिणी, स) ।
 अधिकृत, वि (स) हस्तात्, उपलब्ध । स पु, अध्यक्ष, अधिकारिन् ।
 अधिकृति, स स्त्री (स) स्वत्वम्, अधिकार ।
 अधिक्रमण, स पु (स न) आरोहान् २ आक्रमणम् ।
 अधिक्रिप्त, वि (स) विररहन्, अपमानित २ क्षिप्त ३ प्रेषित ।
 अधियका, स स्त्री (स) पर्वतस्योर्षा भूमि (स्त्री) ।
 अधिदेव, सं पु (सं) इष्ट-बुद्ध-देव ।
 अधिनायक, स पु (स) अधिकृत, अधिका रिन्, आधिकारिक, नायविशुद्ध २ प्रभु, स्वामिन् ।

अधिप, स पु (म) स्वामिन् ० अविचारिन् ३ नृप ।
 अधिपति, स पु (स) दे 'अधिप' ।
 अधिवास, स पु (स) निवास, स्थान-स्थान २ परगृहप्रधिको वास ।
 अधिवशन, स पु (स न) लग्न, मगन, गोष्ठो, मनागन ।
 अधिष्ठाता, स पु (स-न्) अधदक्ष निर्वाहक, प्र-न्, व्यवस्थापक, अवैभ्व, प्रवर्क चाल क अधिष्ठन ।
 अधीन, वि (म) अश्रित बन्धीभूत, आशानु वधिन् विवरा, परवरा ।
 अधीनता, म स्त्री (म) परवराता, परनवता ।
 अधीर, वि (म) वैरहित उद्विग्न, व्याकुल, विह्वल चंचल ३ सतोषयुक्त ।
 अधीश } स पु (स) स्वामिन् ० नायकः
 अधीश्वर } ३ नृप ।
 अधूरा, वि (हि अध+पूरा) अपूर्ण, अर्द्ध, छिन्न, अन्तर्मा ।
 अधेष्ट, वि (इ अध) तदधीन, मध्यनवदरक ।
 अधेला, स पु (हि अध) अक्षय ।
 अधोगति, स स्त्री (स) पन्न, अवदान, विनिवात । - अवनति (स्त्री), हय, दुःख ।
 अध्यक्ष, स पु (म) स्वामिन्, प्रभु २ नायकः, अधिकारिन् ३ अधिष्ठातृ ।
 अध्ययन, स पु (स न) पठन पाठ, कथा (स्त्री), वाचन, अध्याय ।
 अध्ययनीय, वि (स) अध्येतव्य, पठितव्य ।
 अध्यर्द्ध, वि (स) सार्द्धक ।
 अध्यवसान, स पु (स न) निश्चय २ प्रयत्न ३ अध्यवसाय ।
 अध्यवसाय, स पु (म) सततोद्योग, निरन्तरपरिश्रम २ उत्साह ३ निश्चय ।
 अध्यवसायी, वि (स-विन्) उद्योगिन्, उद्यमिन्, उत्साहिन्, उद्युक्त ।
 अध्यापक, स पु (स) शिक्षक, गुरु, उपदेष्टु, शस्त्र । (स्त्री, अध्यापिका) ।
 अध्यापकी, स स्त्री (म अध्यापक >) शिक्षा, अध्यापन, पाठनम्, अध्यापक-व्यवसाय ।
 अध्यापन, स पु (स न) दे 'अध्यापकी' ।

अध्याय, म पु (स) पाठ, सर्ग, परिच्छेद, ग्रन्थविभाग ।

अध्येतव्य, वि (स) पठनीय, पठितव्य, अध्ययनार्ह, पाठ्य, अध्येय ।

अध्येता, स पु (स अध्येत्) पाठय, विधायिन् ।

अध्व, म पु (स ध्वन्) भागं, पथिन् ।

—ग, म पु (म) पान्थ, पथिव, यात्रिक ।

अध्वर, स पु (स) यज्ञ, याग, मज्ज, सप्त क्रतु ।

अध्वर्यु, स पु (स) श्रुतिरभेद, रणे यजुर्वेद मन्त्रराठी श्रावण ।

अनग, वि (स) अवाय देहहीन । स पु काम, मदन ।

अनन, वि (स) अपार, अशेष, निरवधि २ सतत, अघिरत, निरन्तर ३ नित्य, अनवर । स पु विष्णु २ शेषनाग ३ आकाश श ४ बाहुभूषणभेद ।

अनन्तर, कि वि (स १ अन्) पश्चात्, ऊपर पर (पचमी के साथ, उ तन पर इ) २ सतत । वि, अन्यवहित, सन्निहित, आमज्ञ ।

अनगिनत, वि (म अगिनत) अनस्य, मर्यानीत, बहु ।

अनग्नि, वि (स) अनग्निहोत्रिन् २ अधार्मिक ३ अग्निमान्ध श्रल ४ अविवाहित ।

अनघ, वि (स) निष्पाप, निर्दोष २ शुद्ध, पवित्र । स पु (म न) पुण्य, सुकृतम् ।

अनचीता, वि (म * हि अन + म चिन्तित) अचिन्तित, अनल्पित २ अनिष्ट, अवांछित ।

अनजान, वि (स अन् + हि जानना) अज्ञ, अज्ञानिन्, मूर्ख २ अज्ञान, अज्ञ ।

अनङ्घान्, स पु (स अनङ्घ) वृष वृषभ, बलन् । (स्त्री० अनङ्घो, अनङ्घाई = गौ)

अनङ्घेया, वि (स अन् + हि देखना) अदृष्ट, अदीक्षित ।

अनधिकार, म पु (स) अमक्ति- (स्त्री), अज्ञानार्थम् ।

अनधिकारी, वि (स रिन्) अधिकार प्रभुत्व, रहित, अशक्त । स पु, अपात्रम् ।

अनध्याय, स पु (स) अवकाशदिनम् ।

अनघ्रास, स पु (प्राजीठियिन, नानस) धूपभेद उत्पन्न च ।

अनन्य, वि (स) एतन्निष्ठ २ अनुपम, अद्वितीय ।

—गति, वि (म) एक, भाग्यिन-मानिक निष्ठ ।

—चित्त, वि (म्) एवाग्र, एकाग्रचित्त, अनन्य, धृति मन्त्रम् ।

अनपद, वि (म अन् + हि पदना) निरक्षर, अनक्षर, विद्या ज्ञान, शून्य, अशिक्षित ।

अनघन, स स्त्री (स अन् + हि वनना) विरोध, वैपरीत्य, विस्मवाद, मतभेद ।

अनभिज्ञ, वि (स) अज्ञ, अवोध (अनभिज्ञा स्त्री) ।

अनभिज्ञता, म स्त्री (स) अज्ञता, मोरर्ष्य, अपरिचय ।

अनमना, वि (स अयमनम्-रक >) सिद्ध, स्थान, विषण्ण, उद्विग्न, अवमन्न २ हृण्ण, रोहिन् ।

—पन, स पु, सिद्धता, स्थानता ० अ य मनस्वता ।

अनमिल, वि (म अन् + हि मिलना) अमगत, अमबद्ध २ भिन्न, अलग्न ।

अनमेल, वि (स अन् + मेल >) अमबद्ध २ विमुद्ध ।

अनमोल, वि (स अन् + हि मोल) अमूल्य, महार्थ, बहुमूल्य २ श्रेष्ठ, उत्तम ।

अनारोल, वि (सं) निरङ्कुश, उच्छृङ्खल, उदास २ विचार विवेक, न्यून ३ निरन्तर ।

अनर्घ, वि (स) दुष्क्रेय, बहुमूल्य २ सुख क्रेय, अव्यमूल्य ।

अनर्घ्य, वि (स) अपूज्य, अवन्द्य २ बहुमूल्य ।

अनर्जित, वि (स) अनुपाजित, अश्रमेण प्राप्त २ अप्राप्त, अलभ्य ।

अनर्थ, स पु (स) विपरीत अयुक्त, अर्थ २ कार्यशानि (स्त्री), विचार, उपद्रव, अनिष्ट, आपद (स्त्री) ३ अन्वयादाजित धनम् ।

अनर्थक, वि (स) निरर्थक, अर्थहीन २ मोघ, व्यर्थ ।

अनर्ह, वि (स) अपात्र, अनधिकारिन्, अयोग्य ।

अनल, स पुं (स) दे 'अग्नि' ।

—वृत्त, स पु (स न) आशेषपूर्णम् (= वास्तु) ।

अनलस, वि (म) उपमिन्, उचोगिन्, उदयुक्त ।

अनलहृक्, स पु (अ) अह प्रहारिम ।
 अनल्प, वि (स) बहु, अधिक ।
 अनवगाह, वि (स) अगाध, अनलरपदं ।
 अनवध, वि (स) अनिन्द्य, अवाच्य ।
 अनवधान, स पु (स न) प्रमाद,
 वित्तविशेष ।
 अनवत, क्रि वि (स न) निरन्तर,
 सत सदा ।
 अनवस्था, स स्त्री (स) अश्ववस्था २ व्याकु
 र्णा ३ दोषभेद (याय०) ।
 अनशन, स पु (म न) उपवास, अन्न
 त्याग निराहारव्रतम् ।
 अनश्वर, वि (म) नित्य भविनादिन्
 अनुसुनी वि स्त्री (म अन् + हिं सुनना)
 अशुन अनाकृति ।
 अनस्तव, स पु (म न) अभाव, अविष
 मानता ।
 अनहृद् नाद, स पु (स अनाहतनाद)
 पिरितकणै योमिभि अयमाण शब्दभेद
 (योग०) ।
 अनहोनी, स स्त्री (म अन् + हिं होना)
 क्लीबिकघटना, असम्भववार्ता ।
 अनागत, वि (स) आगमिन्, भाविन् २
 अनुपस्थित ३ अद्यात् ४ अन् ५ अकृत ।
 अनाचार, स पु (स) कदाचार, दुराचार
 २ कुप्रथा, कुरीति (स्त्री) ।
 अनाचारी, वि (स रिन्) दुराचारिन्, भ्रष्ट ।
 अनाप, स पु (म अनापम्) अन्न, धान्य,
 दास्य, आहार ।
 अनादी, वि (स अनार्य > ?) मूर्ख, अज्ञ २
 नैपुण्यहीन ।
 —पन, स पु, मूर्खता २ नैपुण्याभाव ।
 अनाद्य, वि (स) दरिद्र, निर्धन, अधन ।
 अनातप, वि (स) आनपरहित, छायायुत
 २ शीतल ।
 अनाथ, वि (स) नाथ प्रभु, हीन २ मातृ
 पितृहीन ३ असहाय, निराश्रय ४ द्यौः,
 परवत् ।
 अनाथालय, स पु (स) अनाथाश्रम ।
 अनादर, स पु (स) अवज्ञा, तिरस्कार,
 अवधीरणा, अव-अप-मान, मानभङ्ग ।

अनादि, वि (स) आदि-जन्म-आरम्भ, एय,
 (उ, ईश्वर, नीव, प्रवृत्तिश्च) ।
 अनादिस्व, स पु (सं न) अनादिता, आरम्भ
 शून्यता, नित्यत्वम् ।
 अनादेय, वि (स) अग्राह्य, अग्रणीय,
 अपरिग्राह्य ।
 अनाप-दानाप, स पु (स अनाप > + अनु)
 प्रलाप, निस्सार नित्यक वचनम् ।
 अनामिका, स स्त्री (स) उपवनिष्ठिका,
 अनामन् (पु) ।
 अनायास, क्रि वि (म न) परिश्रम विना,
 सहसा अकस्मात् ।
 अनार, स पु (पा) (वृश्) कुचफल वृक्ष,
 पुकवल्म, दादि (लि) म-मा दादव २
 (फल) कुचफल रस्तबीज, दादि (लि) मन्
 ४ (आतशवाजीका) अग्नि-क्रीडादादिमन् ।
 —दाना, स पु (पा) दादिमनीन् ।
 अनार्य, स पु (म) दुष्ट, लल, दुद्राण्य,
 अधम, न्यन्य २ म्लेच्छ ।
 अनावश्यक, वि (स) निष्प्रयोजन, अनपेक्षित
 २ असार, सुद्र, उपेक्षणीय ।
 अनावृष्टि, स स्त्री (स) अ(ना)वर्षा ।
 अवग्र (ग्रा) ह, नलशोष, वृष्टिविधान ।
 अनाहृदवाणी, स स्त्री (स अनाहत >)
 आकाश-देव गगन, गिरा-वाणी ।
 अनाहार, स पु (स) भोजनत्याग (२) भोजना
 भाव । २ अनशनव्रतिन् ।
 अनाहत, वि (स) अनिमिश्रित, अनाकारित ।
 अनिरय, वि (म) नश्वर, विनादिन् ३ अगुर,
 अस्थायिन्, २ मिथ्या, असत्य ।
 अनित्यता, स स्त्री (स) नश्वरता, भङ्गुरता,
 अस्थिरता ।
 अनिमि(मे)प, वि (स) निर्निदेश,
 स्थिरवृष्टि, निमेषरहित । क्रि वि, निर्निमेष,
 स्थिरवृष्ट्या । स पु (स) देव २ मत्स्य ।
 अनियत, वि (म) अनिश्चित, अनिर्दिष्ट,
 अनिर्धारित २ अस्थिर, अदृढ ३ अपरिमित
 ४ विदिष्ट ।
 अनियतात्मा, वि (स-रमन्) अजितेन्द्रिय,
 छोलचित्त ।
 अनियम, स पु (सं) नियमाभाव, व्यतिक्रम ।

अनियमित, वि (स) व्यवस्थारहित, अव्यवस्थित, विधिविरुद्ध २ अनिश्चित, अनियत।
अनियारा, वि, दे 'दैन'।

अनिरुद्ध, वि (स) अरुद्ध २ निर्बाध ३ स्वतन्त्र।

अनिर्विष्ट, वि (स) अकृतनिर्देश, अमकेतित २ अकनिद, अनुक्त ३ अनादिष्ट, अनाशापित।

अनिर्वचनीय, वि (स) अकथनीय, अवर्णनीय, अनिर्वाच्य।

अनिल, स पु (स) वायु, पवन, वात।

अनिवार्य, वि (स) अवश्यभाविन्, अपरिहार्य, भुव, परमावश्यक।

अनिश्चित, वि (स) अनियत, अनिर्धारित, अनिर्दिष्ट।

अनिष्ट वि (स) अनपेक्षित अवाञ्छित, अनभिलषित। स पु (स न) अमगल, अहित, हानि (स्त्री)।

अनी, स स्त्री (स अनीणि) पूर्व-अग्र, प्रात भाग।

अनीक, स पु (स पु न) सेना सैन्य २ समूह ३ जुद्धम्।

अनीकिनी, स स्त्री (स) सेना, सैन्य २ पूर्णसेनाया दशमो भाग ३ तलिनी, कमलिनी।

अनीति, स स्त्री (स) अत्याय, पक्षपात २ उपद्रव, उत्पात, ३ अत्याचार।

अनु, उपसर्ग (स) सामीप्यभाहृश्यादिद्योतक उपसर्ग।

अनुकपा, स स्त्री (स) दया, कृपा अनुग्रह २ सहायभूति (स्त्री), समवेदना।

अनुकरण, स पु (स न) अनुकार, अनुकृति-अनुकृति (स्त्री), अनुसरण २ विदम्बनम्।

अनुकरणीय, वि (स) अनुकरणाहं, अनुसरणीय।

अनुकूल, वि (सं) हितकर, उपकारक २ सहाय ३ प्रसन्न।

अनुकूलता, स स्त्री (स) अनुग्रह, कृपा २ सहायता ३ प्रसाद।

अनुकूल, वि (सं) अनुग्रह २ विरमिति।

अनुकृति, स स्त्री (स) दे 'अनुकरण'।

अनुक्त, वि (स) अकथित, अनुदित, अभाषित।

अनुक्रम, स पु (स) अन्वय, आनुपूर्व, परपरा।

अनुक्रमण, स पु (स न) अनु, गमन सरण चलनम्।

अनुक्रमणिका, स स्त्री (स) अनु क्रम, परपरा, सूची चि (स्त्री) २ ग्रन्थभेद।

अनुक्रोश, स पु (म) अनुकम्पा दया।

अनुक्षण, क्रि वि (स न) प्रतिक्रमण २ सततम्।

अनुग्रामन, स पु (स न) अनु-सरण गति (स्त्री) २ अनुकरण ३ सम्मोह सहवास।

अनुग्रामी, वि (स भिन्) अनु-यायिन् वतिन् २ अनु कर्तृ कारिन् ३ आशापालक ४ सम्भागिन्।

अनुगृहीत, वि (सं) उपकृत २ कृतज्ञ।

अनुग्रह, स पु (स) कृपा, दया, अनुकम्पा।

अनुग्राहक, वि (सं) कृपात, दयात, मदायक, उपकारक।

अनुचर, स पु (स) सक्क, किङ्कर, दास ३ वयस्य, सहर।

अनुचित, वि (स) अनुक्त अनर्ह, अयोग्य।

अनुज, वि (स) पश्चादुत्पन्न। स पु (स) कनीयान् भ्रातृ २ स्थलपक्षम्। (अनुजा स्त्री)।

अनुजीवी, वि (म विन्) अधीन आयत्त, आश्रित। स पु सेवक, दास।

अनुज्ञा, स स्त्री (स) अनुमति (स्त्री) अनुमतम्। २ आशा, आदेश।

अनुज्ञाप, स पु (स) पश्चात्ताप, अनुज्ञाप, अनुशोक २ तपन दाह ३ छेद, दुःखम्।

अनुसर, वि (स) निरुचर, प्रतिवचनरहित।

अनुदात्त, वि (स) लघु, गुच्छ २ स्वर भेद (व्या)।

अनुदिन, क्रि वि (स न) प्रतिदिनम्।

अनुनय, स पु (स) विनय, प्रार्थना, आवेदन, याचना, दास्या २ प्रसादन, भारा घन, अनुराजनम्।

अनुनाद, सं पुं (स) 'गुण'।

अनुनासिक, वि (स) मुखनासिकाभ्यामुच्चारणीया वर्णा (ङ, ञ्, ण्, न्, म् तथा अनुस्वार) ।
 अनुनीत, वि (स) साङ्ख्य, प्रसारित ? प्राथिन, याचित ।
 अनुपद, त्रि वि (म न) अन्वय, सय, पश्चात्, अव्यवहितोत्तरकालम् ।
 अनुपदिष्ट, वि (स) अदिक्षित उपदेश शिक्षा — वचिन ।
 अनुपपत्ति, स स्त्री (म्) ममाधानामाव असगति असिद्धि-अप्राप्ति (स्त्री) ।
 अनुपपन्न, वि (स) अमिद, असपन्न ।
 अनुपम, वि (स) अप्रतिम निरुपम, अतुल्य अतुल्य, असदृश, अप्रतिरूप, अद्वितीय अनुपमेय ।
 अनुपयोगी, वि (म गिन्) निष्प्रयोजन, निरर्थक, निर्गुण, व्यर्थ ।
 अनुपयोगिता, स स्त्री (स) निरर्थकता व्यर्थता ।
 अनुपस्थित, वि (स) अवियमान, अवर्तमान, दूरस्थ, स्थानान्तरगत ।
 अनुपस्थिति, स स्त्री (स) असन्निधि, परीक्षण ।
 अनुपात, म पु (स) सम्बन्धसाम्य, अनुग्रह्य २ गणिते त्रैशिकक्रिया ।
 अनुपान, स पु (स न) औषधन सह तेन्य वस्तु (न) ।
 अनुपास, म पु (स) वर्णस्तान्मन्, शब्दा एकारभेद (सा, उ कोकिलकुलकल्कृजितन् १) ।
 अनुपध, स पु (स) सम्बन्ध, सम्पर्क २ आरम्भपरिणामौ ३ मित्र, सहृद् ४ हस्तशला वर्णा (व्यं) ५ अनुस्तरण ६ भाविभुभाशुभे ।
 अनुभव, स पु (स) साक्षात् उपलब्ध ज्ञानम् २ परीक्षया प्राप्ता बोध, परीक्षणम् ।
 अनुभवी, वि (स विन्) परिणतप्रज्ञ, बहुदक्षिण सातुभव ।
 अनुभाव, स पु (स) महत्त्व, प्रभाव, महि मन् ? रोमाञ्चवाशादिचेष्टा (सा) ।
 अनुभावी, वि (स विन्) अनुभाववद्, प्रभावशालिन । म पु प्रत्यक्षमाक्षिन् ? मृतस्य निवृत्तसम्बन्धिम् ।
 अनुभूत, वि (स) साक्षात्ज्ञान, परीक्षित ।
 अनुभूति, स स्त्री (स) अनुभव, परिज्ञान, बोध ।

अनुमति, स स्त्री (स) अनुज्ञा, अनुमत ? आज्ञा ३ चतुर्दशीयुक्ता पूर्णिमा ।
 अनुमत्, वि (स) इर्ष्यामत्, अत्यानन्दित ।
 अनुमरण, स पु (स न) दे 'सती होना' ।
 अनुमाता, वि (स — ण्) तर्कयिष्ट, कश्चिद् ।
 अनुमान, स पु (स न) वि, नर्क, कद्, अभ्युद्, अभ्युद्ग, अनुमिति (स्त्री) ।
 — करन्ता, त्रि म, उद् (म्वा भा से), अनुमा (जु आ अ अ प अ), न्क (चु), उनी (म्वा प अ) अनुमान कृ ।
 — सिद्ध, इव तर्क-अपवाद, साधित-दृढीकृत ।
 अनुमिति, स स्त्री (स) दे 'अनुमान' ।
 अनुमेय, वि (स) तर्कणीय, अभ्युद्गनीय, उनेय ।
 अनुमोदन, स पु (स न) समर्थन, दृढीकरण, उपोद्गहन ? हर्षप्रकाशन, मोदानुभव ।
 अनुयायी, वि (स विन्) अनु, नामिन् कारिन् ।
 अनुरक्त, वि (स) अनुरागिन्, बढानुराग, कृमप्रणय, आसक्तचित्त २ लीन, मग्न ।
 अनुराग, स पु (स) राग, प्रेमन् (पु न), स्नेह, प्रणय, भाव, प्रीति-आसक्ति (स्त्री) ।
 अनुरागी, वि (स गिन्) दे 'अनुरक्त' ।
 अनुरूप, वि (स) सदृश, समान, तुल्य २ योग्य, उपयुक्त, अनुकूल ।
 अनुरूपता, स स्त्री (स) सादृश्य, सामान्य ? अनुकूलता, उपयुक्तता ।
 अनुरोध, स पु (स) आग्रह, निर्बन्ध, अभिनिवेश ? प्रेरणा ३ विघ्न ।
 अनुलेपन, स पु (स न) वि, लेपन, अभ्यञ्जन ममालम्भ, उद्दत्तनम् ।
 अनुलोम, स पु (स) निम्नग अवतरण, क्रम, अवरोह ।
 — विवाह, स पु (स) उच्चवर्णपुरुषस्य हीनवर्णया स्त्रिया विवाह ।
 अनुवर्तन, स पु (म न) अनु, नामन-करण स्तरणम् ।
 अनुवर्ती, वि (म तिन्) अनु, नामिन् कारिन् सारिन् । (अनुवर्तिनी स्त्री) ।
 अनुवाद, स पु (स) भाषांतरम् २ पुनरुक्ति- (स्त्री), पुनर्वचनम् ।
 अनुवादक, स पु (स) भाषान्तरकारः ।

अनुवादित, वि (म) भाषान्तरित, अनूदित, वृत्तानुवाद ।

अनुवृत्ति, म स्त्री (म) उपजीविका, सवा मार्ग २ पूर्ववर्तिवाक्याश्रय्य अर्थस्पष्टतायै अग्रे योजनम् ।

अनुशासक, वि (म) अनुशासित् नियन्त्र, अनुशास्त्र, अनुशासितृ २ शिक्षक, उपदेशक ३ दण्ड ।

अनुशासन, स पु (स न) आदेश, आशा २ उपदेश, शिक्षा ३ न्यायपान, विवरणम् ।

अनुशासित, वि (स) अनुशिष्ट, नियमित २ उपदिष्ट ३ दण्डितम् ।

अनुशीलन, स पु (स न) चिन्तन मनन, आलोचन २ आवृत्ति (स्त्री), पुनरभ्यास ।

अनुशोक, स पु (स) अनु, ताप-शय, पश्चात्ताप ।

अनुपग, स पु (स) सम्बन्ध, समर्ग २ करुणा, दया ।

अनुष्ठान, स पु (स न) कार्यारम्भ २ सविधिसम्पादन ३ फलविशेषाय देवताराधन, पुत्रश्चरणम् ।

अनुसन्धान, स पु (स न) अन्वेषण णा, निरूपण, मार्गणम् २ प्रयास, प्रयत्न ।

अनुसरण, स पु (स न) अनुगमन सहगमन २ अनुकरण ३ अनुकूलाचरणम् ।

अनुसार, किं वि (स न) अनुकूल, सदृश समान (नब अन्य०) ।

अनुचान, स पु (स) साङ्गवेदाध्येना, ज्ञातक २ विद्यार्थिक ३ चरित्रवत् ।

अनुस्वार, स पु (स) स्वरानन्तरमुच्चार्यमा णानुनासिका वर्णविशेष २ अनुनासिक चिह्न () ।

अनूठा, वि (स अनुत्थ >) अपूर्व, विलक्षण विचित्र २ सुन्दर, श्रेष्ठ ।

—पुन, म पु वैभित्तम्, वैलक्षण्य ।
अनूदित, वि (म) पुन कथित-वाणद २ अनु वादित, भाषांतरित ।

अनूप, वि (सं) जल, प्राय बहुल । स पु तल्पप्रायदेश, जलबहुल ।

अनूप, वि (स अनुपम) अनुपम, अद्वितीय २ सुन्दर, स्वच्छ ।

अनेक, वि (सं) एकाधिक, बहु, असंख्येय ।

अनोरथा, वि (स अन् + वीक्ष > ?) अनुत, विलक्षण २ नूतन, नव ३ सुन्दर, मन्द ।

—पुन, स पु, विलक्षणता, नूतनता, सुन्दरता ।
अल, म पु (स न) मह्यपदार्थ २ दे 'अनाज ३ पक्वन्न, भक्षम् ।

—जल, स पु (स न) माजनपान २ जीविका, वृत्ति (स्त्री) ३ दैव, दैव-योग घटना गति (स्त्री) ।

—दाता, स पु (स तु) अन्नद, मह्य दायक २ पोषक । (-दात्री स्त्री) ।

—पूर्णा, स स्त्री (स) अन्नाधिष्ठात्रा देवी ।

—प्राशन, स पु (स न) शिद्यूनासकारभेद ।

—सयकोश, स पु (म) स्थूलज्ञातम् ।

अज्ञा, स स्त्री (स अज्ञा > ?) धात्रा, उपमातृ (स्त्री), मातृका, भद्रपत्नी ।

अज्ञाद, म पु (स) अन्नमद्यक २ ईश्वर ३ विष्णु ।

अन्य सर्वं (स) अपर, द्वितीय, अनारमीय, पर, क्षिप्र ।

—देशीय, वि (स) पर वि, देशीय ।

—पुरुष, स पु (स) भिन्न पर अपर, पुरुष २ प्रथमपुरुष (व्या) ।

—पुष्ट, स पु (म) पिक, कोविल ।

—मनस्क, वि (स) चिन्तित, विषण्ण, क्षिप्र ।
अन्यत, अन्य (स) अन्यरमात् जनात् स्थानात् वा ।

अन्यत्र, अन्य (म) अपरत्र अर्थिसन् स्थाने ।

अन्यथा, अन्य (स) इतरथा, २ विपरीत, विरुद्ध ३ असत्यम् ।

अन्यापदेश, स पु (स) दे 'अन्योक्ति' ।

अन्याय, स पु (स) अधर्म, अनय, अनोक्ति (स्त्री) ।

अन्यायी, वि (स यिन्) अ दायवातम्, अन्यथाचारिन्, क्रूर, पाप भर्मेविमुल ।

अन्याय्य, वि (स) न्याय-धर्म, -रहित-विपरीत विरुद्ध ।

अन्योक्ति, स स्त्री (म) अ-यापदेश, अन्कारभेद (सा) ।

अन्योन्य, किं वि (स न) परस्पर, मिय, इतरतर २ वि परस्पर ।

—आश्रय, सं पुं (स) अन्योन्यापेक्षा, परस्पराश्रय २ सापेक्षज्ञानम् ।

अन्वय, म पु (म) परस्परसम्बन्ध
 ० सद्योग, ससर्ग ३ पद्यपदानां गद्यवाक्यवत्
 स्थानम् ४ अवकाश, शून्यस्थान ५ कार्य
 कारणसम्बन्ध ६ वश, कुलम् ।
 अन्वयर्थ, वि (स) अर्थानुसारिन्, सार्थक ।
 अन्वित, वि (स) युक्त, सहित, संगत ।
 अन्वीक्षण, म पु (स न) ध्यान, भावन,
 निदर्शन ० इ 'अनुमन्धान ।
 अन्वेषण, स पु (म न) ३ 'अनुमन्धान ।
 अन्वेषी, वि (म-विन्) अन्वेषक, अन्वेष
 (पु), गवेषक, अनुमन्धान् ।
 अन्वष्टव्य, वि (स) अन्वेषणीय, अनुमन्धेय,
 विवेच्य ।
 अपग, वि (स अपाग) हीनांग, व्या, न्यूनांग
 ० पङ्क्त, अशक्त (हीनांगी, पङ्क्त स्त्री) ।
 अपह्नि, वि (स) अह, मूर्ख, निरक्षर ।
 अप, उप (स) वैपरोत्यविरोधविकारदियोग
 वर्जनादिद्योतक उपमगं ।
 अपकर्ता, वि (स-र्तु) अनिष्ट-हानि-अहित-
 कर्तृ-कर-कारक ।
 अपकर्ष, म पु (स) नीचै कर्षण, पातन
 २ अवनति (स्त्री), क्षय ३ अपमान,
 अनादर ।
 अपकार, म पु (स) अमद्र, अहित, अनिष्ट
 नाशन, हानि अपकृति (स्त्री) ।
 अपकारक, वि (म) अपकारिन्, हानिकारक ।
 अपकीर्ति, म स्त्री (स) दुष्कीर्ति, अदयश्च
 (न) वाच्यता, कलक, निन्दा ।
 अपकृष्ट, वि (स) पतित, अष्ट २ अधम,
 निन्द ३ घृणित ।
 अपच, म पु (स >) अपाक, अजीर्ण,
 अजीर्ण (स्त्री), म-दाग्नि, अनविकार ।
 अपचय, स पु (स) क्षति हानि (स्त्री)
 २ -वय, नाश ।
 अपठ वि (म अपठ) निरक्षर, अशिथिल,
 पठनलक्षणासमर्थ २ मूर्ख ।
 अपत्य, म पु (स न) सन्तान, माननि
 प्रसूति (स्त्री), प्रजा, प्रसव, लोकम् ।
 अपय, स पु (स पु न) कु विकट, मार्ग,
 कुपय ।
 अपय्य, वि (स) कुपय, रोगजनक, स्वास्थ्य-
 नाशक २ अहितकर ।

अपना, वि (स आत्मन-) स्वीय, स्वकीय,
 स्वक, आत्मीय, निज, स्व, आत्मन् ।
 —पन, स पु- आत्मीयता, ममता २ आत्मा
 मिमान ।
 अपनाना, क्रि स (हि अपना) आत्मसात्
 कृ, स्वाधीन स्वायत्त (वि) + कृ २ स्वीकृ,
 अगीकृ, प्रतिपद् (दि आ अ), अभ्युपगन्
 ३ ग्रह (क प मे) ।
 अपपञ्च, म पु (म) पतन अवनति (स्त्री)
 २ विकार ३ विकृतशब्द ४. प्राकृतभाषा-
 भेद । वि विकृत ।
 अपमान, स पु (स) अनादर, अवमान,
 अवज्ञा, अवधीरणणा, उपेक्षा, तिरस्कार,
 परिभव ।
 —करना, क्रि, स, अवमन् (दि आ अ),
 उपेक्ष (ध्वा आ से), अवज्ञा (क् उ अ),
 अवगण (चु), तुच्छी लघू-कृ ।
 अपमानित, वि (म) अनादृत, अवमानित,
 अवज्ञान, अवधीरित, अवगणित ।
 अपमानी, वि (स निन् >) तिरस्कर्तृ, अव
 शात् अवगणयितृ ।
 अपमृत्यु, स पु (स) कुमृत्यु २ अकाल
 असमय, मृत्यु ।
 अपयश, स पु (म शसू न) दे 'अपकीर्ति' ।
 अपर च, अन्य (सं) अन्यच्च २ पुन,
 पुनरपि ।
 अपरपार, वि (स अपरपार >) अनन्त,
 असीम, अमित, निरवधि ।
 अपर, वि सर्वे (स) प्रथम, अग्रिम २
 अन्तिम, अन्त्य ३ अन्व, मित्र ४ आत्मीय,
 स्वकीय ।
 —पच, म पु (म) असिन-कृष्ण, पक्ष २
 प्रनिवादिन् ।
 अपरा, स स्त्री (स) लौकिक पदार्थ विद्या
 २ पश्चिमदिशा । वि अन्वा ।
 अपराग, स पु (म) देश, वैरम् २ अरुचि
 (स्त्री) ३ असन्तोष ।
 अपराजित, वि (स) अजित, दे 'अजोत' ।
 अपराजेय, वि (स) अजेय, दे 'अज्यय' ।
 अपराध, स पु (स) दोष, प्रमाद, स्खलित,
 छिद्र, पाप, वाच्यम् ।

—करना, कि अ, विभ्रम् (भ्वा दि, प से), अपराध् (दि स्वा ष अ), उत्पद्य या (अ प अ), स्तल्-विचल्-व्यतिचर (भ्वा प से), प्रमद् (दि प से प्रमाभति)।

—हीन, वि (स) अनिर, दाष, अनघ, अनवद्य।

अपराधी, वि (स धिन्) सापराध, दोषिन्, दोषक्य, वाच्य निन्द्य, सावध। (अपराधिनी स्त्री)

अपराद्ध स पु (स अपराद्ध,) पराद्ध, विकाल, दिनस्य लूनियो याम।

अपरिग्रह, स पु (स) अरथो अनगी, कार, दानत्याग २ विराग, सगत्याग।

अपरिचित, वि (स) अज्ञात, पर, पारक्य, अन्यजन २ परिचयरहित अज्ञ।

अपरिमित, वि (स), असीम, अमित, अनन्त २ अमरय, अगणित।

अपरिमेय, वि (स) अमेय, अपरिमाण, दुर्मेय, महद्, बद्ध।

अपरिवर्तनीय, वि (स) स्थिर, भ्रुव २ अपरिहाय, अवश्यमाविन् ३ अविनिमेय।

अपरिवर्तित, वि (स) अविवृत्त, परिवर्तन रहित।

अपरोक्षित, वि (स) अकृतपरीक्षा, अननुयुक्त, अप्रक्षिप्त।

अपरोक्षान, स पु (अ आपरोक्षन्) शत्रु, क्रिया कर्मन् (न), उपाय-उपवार चिह्नितः।

अपर्याप्त, वि (स) न्यून, अल्प, हीन, क्षीण।

अपवर्ग, स पु (स) मोक्ष, वि, मुक्ति (स्त्री) निस्तार, निर्वाण २ त्याग, दानम्।

अपवाद, स पु (स) विरोध, प्रतिवाद २ निन्दा, अपकीर्ति (स्त्री) ३ दोष, पाप ४ बाधकशाल, विशेष।

अपवादी, वि (स दिन्) अपवादक, निन्दक २ बाधक, विरोधिन्।

अपवित्र, वि (म) पाप, अपार्थिक २ अशुद्ध, मलिन, दूषित, अशुचि।

अपवित्रता, स स्त्री (स) धर्महीनता, पाप शीलता २ मलिनता, अशुचिता।

अपव्यय, स पु (सं) मुक्तहस्तरव, अति बहु अमित, व्यय, अर्थोत्सग।

अपव्ययी, स पु (स-धिन्) मुक्तहस्त, उत्सर्गिन्, व्ययपरः।

अपशङ्कन, स पु (स पु न) कु अशुभ इर्, लक्षण, अजन्य, दुश्चिह्नम्।

अपशब्द, स पु (स) गाली, अपवाद २ अशुद्धपद ३ निरर्थकशब्द ४ अपान-अत्र, वान वायु।

अपसम्य, वि (स) दक्षिण सव्येतर २ विपरीत ३ दक्षिणस्कन्धेन यज्ञोपवीतधारणम्।

अपस्मार, स पु (स) आमर, अग्निकृि (स्त्री), भूतयिक्रिया। दे 'मिरगी'।

अपहरण, स पु (स न) अपहार, भोषण, विलुण्ठनम् २ मगोपन, लोपत्रम्।

अपहृत, वि (स) चौरित, बलात् नीनम्।

अपहृति, स स्त्री (म) अपहृत, गोपन, प्रच्छादन तिरोधानम्। २ व्याज, कप, छल, अपदेश।

अपाग, स पु (मं पु न) नेत्रकोण, नयनो पात २ कटाक्ष। वि व्यह्न, अगहीन।

अपात्र, वि (स न) गुणहीन, अनर्ह, अयोग्य २ कुमाण्ड, कुपात्रम्।

अपादान, स पु (स न) पृथक् अपा, चरणम् २ पक्षम वारकम् (भ्या)।

अपान, स पु (स) नासिकदा बहि क्षिप्य भागो वायु २ अन्न गुदस्थ, वायु ३ गुद, मलदारम्। वि दुःखनाशक (श्चर)।

—वायु, स स्त्री (स पु) पचप्राणेषु अन्य तम २ अन्न गुदस्थ, वायु।

अपाप, स पु (स न) पुण्यम्। वि निष्पाप, धार्मिक।

अपाय, स पु (सं) प्रस्थानम् २ पार्थक्यम् ३ लोप ४ नाश ५ विपत्ति (स्त्री) ६ हानि (स्त्री)।

अपार, वि (स) असीम, अनन्त २ असंख्य, बद्ध।

अपाधिव, वि (स) अमार्थिक, अमृमय २ अभौम ३ दि-व्य, अलौकिक।

अपावन, वि (म) अशुद्ध, अपवित्र, मलिन।

अपावरण, स पु (स न) अपावृति (स्त्री), उद्घाटनम् २ आ प्रा ममाच्छा दनम् ३ परिवेष्टनम्, परिवारणम्।

अपाहिज, वि (स अपमन्) विकलांग (-गो स्त्री) विनरु, -यग, हीनाङ्ग।

अपि, अव्य (म) १ (= मी) च अपि च,
पुनश्च, अपर च । २ (= ही) केवल, एव,
मात्र ।

—च, अयच्च, पुनश्च ।

—नु, किनु, परन्तु २ प्रयुज् ।

अपील, म स्त्री (अ अप्पील) पुनर्विचार-
प्रार्थना २ निवेदन ३ प्रार्थनापत्रम् ।

अपीलाट, स पु (अ) निवेदक, विचारार्थ
प्राथिन् ।

अपुत्र, वि (स) निरपत्य, निरसन्तान २
पुत्रहीन ।

अपूत, वि (स) अपवित्र, अशुद्ध ।

अपूत, वि (म अपुत्र दे) । म पु, कुपुत्र ।

अपूप, स पु (स) पूष, पिष्टक ।

अपूर्णा, वि (स) अममात्र, सावशेष २ -यून ।

अपूर्व, वि (म) अभूत-अदृष्ट, पूर्व २ अदभुत,
अलौकिक ३ अनुपम, श्रेष्ठ ।

अपूर्वता, म स्त्री (स) विलक्षणता, लोकोत्तरता ।

अपेक्षा, स स्त्री (म) आकांक्षा, इच्छा,
अभिलाष २ आवश्यकता ३ तुलनया, अपे
क्षया (दोनों तुलनायुक्त) ।

अपेक्षित, वि (म) अभीष्ट, आवश्यक ।

अप्रचरि(लि)त, वि (स) अप्रयुक्त
अव्यवहृत ।

अप्रतिपत्ति, म स्त्री (स) बोधामामर्ष्ये
२ निश्चयामात्र ।

अप्रतिम, वि (स) अप्रगल्भ, प्रतिभा-स्कृति,
शून्य २ निर्वृद्धि ३ अलस ४ लज्जावद, सलज्ज ।

अप्रतिम, वि (स) अनुपम, अपतिरूप,
दे 'अतुल' ।

अप्रतिरथ, वि (म) अनुपम-अतुल्य वीर
२ अनुपम, अप्रतिम ।

अप्रतिष्ठ, वि (स) कुरुवात, अपमानित
२ अस्थिर, चंचल ।

अप्रतिष्ठा, स स्त्री (स) अपमान, अमान,
निररकार २ अस्वर्ग्य, नाचल्यम् ।

अप्रत्यक्ष, वि (म) परोक्ष, गुप्त, इन्द्रियातीत ।

अप्रयुक्त, वि (म) अव्यवहृत, अप्रचरि(लि)त ।

अप्रसन्न, वि (स) कुपित, कुद २ अप्रौत,
अतुष्ट ३ रित्र, शोकाकुल ।

अप्रसन्नता, स स्त्री (स) प्रीति प्रसाद,
अमात्र २ रोष ३ रोद, विमनस्कता ।

अप्रसिद्ध, वि (स) अविश्रुत, अविख्यात
२ गुप्त ।

अप्रस्तुत, वि (स) अनुपस्थित, अविद्यमान
२ अप्रासंगिक ३ अनुपगत ४ गौण ।

—प्रशंसा, स स्त्री (स) अलंकारभेद (सा) ।

अप्राप्त, वि (स) अलब्ध, २ अनधिगत
२ दुर्लभ ३ अप्रस्तुत ४ अनागत ।

अप्राप्य, वि (स) अलभ्य, अनधिगम्य,
अप्राप्तव्य ।

अप्रामाणिक, वि. (स) अवैध, प्रमाणरूप
२ अविश्वसनाय ।

अप्रासंगिक, वि (म) असम्बद्ध, अप्रस्तुत,
प्रकरणासंगत ।

अप्रिय, वि (स) अनिष्ट, अगृह्यकर, अनभि
मत । स पु, शत्रु ।

अप्रेंटिस, म पु (एप्रेंटिस) अन्तेवासिन्,
शिष्य, शिक्षणविद्यार्थिन् ।

अप्रैल, म पु (अ एप्रिल) आंग्लवर्षस्य
चतुर्थमास ।

—फूल, स पु चैत्रपक्षस्य, मधुमासपूर्व ।

अप्सरा, स स्त्री (म) अप्सरस (स्त्री बहु),
स्वर् स्वर्ग, वेद्या, नाकनर्तकी ।

अफयून, म स्त्री (फा) दे 'अफीम' ।

अफरना, कि अ (म स्कार = प्रचुर >)
म-परि, उप-नुष (दि प अ) २ स्फाय
(भा वा से), प्र-उप, वि (भा वा प्रची
यने इ) ३ दे 'ऊवना' ।

अफरा, स पु (सं स्कार) उदर, स्फोति
(स्त्री)-उपचय २ अजीर्णवातादिभि उदर
वृद्धि (स्त्री) ।

अफरातफरी, स स्त्री (अ अफरात तफरीत)
सशोम, अव्यवस्था २ सन्नम, आकुलत्वम् ।

अफरीका, स पु (अ एफ्रिका) कालद्वीपम् ।

अफल, वि (स) निष्फल, मोघ, व्यर्थ ।

अफवाह, स स्त्री (फा) जन, प्रवाद, जन
श्रुति (स्त्री), किंवदन्ती, लोक वाद वाचा ।

अफसर, स पु (अ ऑफिसर) दे 'अधिकारी' ।

अफसरी, स स्त्री (दि अफसर) अहि
कारिता २ शासन ।

अफसाना, स पु (फा) कथा, आख्यायिका ।

अफसोस, स पु (फा) दुःख, डोश २. पश्चा
त्ताप, अनुशय, अनुशोक, खेद ।

अफारा, स पु (हि अफरना) आघमानन्
(उदररोग) ।

अ(ए)फीडेविट, स पु (अ) शपथ
पत्रम् ।

अफीम, स स्त्री (यू ओपियन, अ ओपियम)
अहिफेन अफेनम् ।

अफीमी | स पु (हि अफीम) अफेन अहि
अफीमची | केन, मद्यक-व्यसनिन् ।

अव, कि वि (स अथ, अथ ?) अधुना,
इदानीं, सम्प्रति, साम्प्रत, वर्तमाने ।

—वा, वि, आधुनिक, साम्प्रतिक ।

अवज़रवेटरी, स स्त्री (अ आबजवेटरी)
मानमन्दिर, वेपशाला ।

अवतर, वि (फा) मिन्दित, गद्यं २ विकृत ।

अघतरी, स स्त्री (फा) विकार, विकृति (स्त्री) ।

अवरक, (-ख) स पु (म अन्नव) गिरिजा
मल, शुभ्र, बहुवचनम् ।

अवरी, स स्त्री (फा) विकृणपत्रभेद
२ पीतपाषाणभेद ।

अवरू, स स्त्री (फा) भू (स्त्री), भूलता ।

अवला, स स्त्री (स) नारी, रमणी ।

अवाच, वि (स) निविन्न, निर्वाध
२ असीम ।

अवाध्य, वि (स) उच्छृङ्खल, उद्यम २ अग्नि
वायं, अप्रतिकार्यं, दुर्निवारं ।

अवावील, स स्त्री (फा) कृष्णा, कृष्ण
चटकभेद ।

अवीर, स पु (अ) दे 'गुलाल' ।

अवृक्ष, वि (स अद्रुद्ध) मूर्ख, अज्ञ, अनुप ।

अवे, अव्य, (सं अयि ?) अरे, हे ।

अवोध, स पु (स) अज्ञानं, मौख्यम् । वि,
मूलं, अज्ञ ।

अव्ज, स पु (स न) कमल, पद्मम्
२ जलजात पदार्थं ३ शल ४ चन्द्र
५ धन्वन्तरि ६ कर्पूर ७ शत कोटय ।

अव्जा, स स्त्री (स) लक्ष्मी (स्त्री), रमा ।

अव्द, स पु (सं) वर्षं वै, हासन, वासर
२ शेष ३ कर्पूर ४ आकाश शम् ।

अधि, स पु (स) समुद्र २ तडाग ३
समेति मल्या ।

अध्या, स पु (फा) पितृ, जनक ।

अध, स पु (फा, स अन्नम्) शेष, धन ।

अद्रक्ष्यस्य स पु (स न) अत्राद्गणोचित कर्मन्
(न) २ हिसादिकर्मन् ।

अद्याहण, स पु (सं) अविप्र, अभूसुर,
ब्राह्मण विप्र-इतर । वि ब्राह्मणरहित ।

अभग, वि (स) पूर्णं, सकल २ नित्य,
अनन्तर ३ अनन्तरत, गिरन्तर ।

अभगुर } वि (स) इन्द्र, अखण्ड
अर्भजन } २ अनन्तर ।

अभक्त, वि (स) मक्ति-श्रद्धा, हीन-रहित २
अखण्ड, सम्पूर्ण ।

अभक्ष्य, वि (स) अखाद्य, अमोज्य ।

अभद्र, वि (म) अशुभ, अमांगलिक २ दुष्कृत ।

अभय, वि (स) निर्भय, अभीत । स पु
(स न), भय-त्रास, अभाव ।

—दान, स पु (स न) रक्षा प्राण, वचन
प्रतिज्ञा २ रक्षणं, शरणदानम् ।

—पद, स पु, (स न) मुक्ति (स्त्री) ।

अभर्तृका, स स्त्री (स) विपवा, रडा २
कुमारी, कन्या ।

अभध्य, वि (स) अशुभ, अमांगलिक
२ कुदर्शनं, कुलूप ३ अभावितव्य ४ अदुर्मुद
५ अशिष्ट ।

अभागा, वि (स अभाग) अमन्द, माग्य,
प्रारब्ध माग्य, हीन ।

अभागी, वि (स गिन्) भाग्यहीन २ भाग
हीन, अदायाद ।

अभाग्य, स पु (स न) दुर्देव, मन्द-दौर,
माग्यम् ।

अभाजन, स पु (स न) अपाय, कुपाय, दुष्ट ।

अभाव, स पु (सं) सप्ताड्भाव, अविद्यमानता ।

अभावनीय, वि (सं) अचितनीय ।

अभि, उप (स) सामीप्यदूरताऽभिमुख्य
बोत्सादिषोक्त उपसर्गं ।

अभिक्रमण, स पु (स न) दे 'आक्रमण' ।

अभिक्षया, सं स्त्री (सं) शोभा, श्री (स्त्री)
२ यशस (न) कीर्ति (स्त्री) ।

अभिगमन, स पु (स न) उपसर्पण
२ मेषुनम् ।

अभिगामी, वि (स मिन्) उपसर्पक
२ समोचकम् ।

अभिचार, स पु (सं) भर्षमारणोच्चाटनादिक्रिया ।

अभिचारक, वि (सं) अभिचारिन् ।

अभिजन, स पु (स) कुल, वंश, २ जन्म भूमि (स्त्री) ३ कुले वृद्धतम पुरुष ४ रयाति (स्त्री) ।
 अभिजात, वि (म) कुलीन, सुकुलोत्पन्न २ बुध, पट्टिन, ३ योग्य ४ माय ५ सुन्दर ।
 अभिज्ञ, वि (स) द्वाष्ट, विद्व २ निपुण, कुशल ।
 अभिज्ञान, स पु (स न) स्मृति (स्त्री), अनुबोध २ लक्षण, स्मारकचिह्नम् ।
 अभिताप, स पु (स) अतिशय अत्यधिक ताप-दाह २ पीडा, वेदना ।
 अभिघा, स स्त्री (स) शब्दस्य वाक्यार्थ प्रकाशिका शक्ति (स्त्री, सा) ।
 अभिधान, स पु (स न) सज्ञा, नामन् (न) २ कथन, ३ शब्दकोश (-श) ष (षन्) ।
 अभिधायक, वि (स) नामकारक २ वक्तु ३ परिचायक ।
 अभिधावन म पु (स न) आक्रमणम्, अभिद्रव ।
 अभिधेय, वि (स) वाच्य, प्रतिपाद्य । स पु (स न) नामन् (न), सप्ता ।
 अभिध्यान, स पु (म न) इच्छा, वाछा २ लोभ ३ चिन्तनम् ।
 अभिनन्दन, स, पु (स न) प्रशंसा २ आनन्द ३ स तोष ४ प्रोत्साहन ५ प्रार्थना ।
 —पत्र, म पु (स न) प्रशंसा प्रतिष्ठा, पत्रम् ।
 अभिनन्दनीय, वि (स) स्तुत्य, वदनीय ।
 अभिनय स पु (स) नाट्य, भगविक्षेप २ अवस्थानुकृति (स्त्री) ३ नाटकक्रीडा ।
 —करना, कि स, नट् निरूप (लु), अभिनी (भ्वा प अ), प्रयुज (लु) ।
 अभिनव, वि (स) नव, प्रत्यग्र ।
 अभिनिविष्ट, वि (स) प्रविष्ट २ उपविष्ट ३ मग्न, लीन ।
 अभिनिवेश, स पु (स) प्रवेश २ मनो योग, एकाग्रचिन्तनम् २ दृढसफल ४ दृष्टु मयङ्देश ।
 अभिनीत, वि (स) उपनीत २ अलकृत ३ रूपित, नाटित ४ उचित ।
 अभिनेता, स पु (स-नेत्) नट, नर्तक, कुशीलव, शैल्य (अभिनेत्री, नटी, नर्तिका स्त्री)

अभिनेय, वि (स) नाटयितव्य, रूपणीय, अभिनयाह ।
 अभिन्न, वि (स) अविभक्त, सैलग्न, ससृष्ट ।
 अभिप्राय, स पु (स) आशय, भाव अर्थ, तात्पर्य, प्रयोजनम् ।
 अभिप्रेत, वि (स) इष्ट, अभिलषित ।
 अभिभव, स पु (स) पराजय २, अवज्ञा, तिरस्कार ।
 अभिभावक, वि (स) अभिभाविन्, परानेत् तिरस्कर्तुं (२) वशिन् (३) सरक्षक ।
 अभिभाषण, स पु, (स न) समापति (लिखित) भाषणम् २ व्याख्यानम् ३ कथनम् ।
 अभिभूत, वि (स) पराजित, विजित २ पीडित ३ वशीभूत ४ न्यायुल ।
 अभिमन्त्रण, स पु (स न) मन्त्रै पवित्री करण-सस्वरणम् २ आवाहनम् ।
 अभिमत, वि (स) इष्ट, मनोनीत, वाञ्छित २ सम्मत । स पु, मत, मति (स्त्री) २ विचार ३ अभीष्टपदार्थ ।
 अभिमन्यु, स पु (स) अर्जुनसुत ।
 अभिमान, स पु (स) अहकार, गर्व, मद, दर्प, उत्सेक, अवलेप, मान, ऊहमान ।
 अभिमानो, वि (स-निन्) गर्विन, दुष्ट, मत्त, उत्सुक अहकारिन्, मानिन्, अवलिप्त ।
 अभिमुख, कि वि (स) अमि स, मुखमुखे, पुर, पुरत, पुरस्तात्, समक्ष, अग्रे ।
 अभियुक्त, वि (स) प्रत्यभिन्, प्रतिवादिन् ।
 अभियोक्त, वि पु (स-कृ) अपिन्, वादिन्, अभियोगिन् ।
 अभियोग, स पु, (स) व्यवहार, कार्य, अक्ष २ आक्रमण ३ उद्योग ४ मनो योग ।
 अभिराम, वि (स) आहादक, मनोहर, सुन्दर, रम्य ।
 अभिरुचि, म स्त्री (स) रुचि प्रवृत्ति (स्त्री), काम, अभिलाष, छन्द, इच्छा ।
 अभिरूप, वि (स) मनोहर, रमणीय ।
 अभिलषित वि (स) वाञ्छित, ईप्सित, इष्ट ।
 अभिलाषा, स स्त्री (स-ष) वाञ्छा, वाङ्मा, स्पृहा, ईहा ।

अभिलाषी, वि (स-विन्) इच्छु ईप्सु,
अभिलाष(पु) क, वाञ्छक ।
अभिवादन, स पु (स न) प्रणाम, नम
स्कार २ स्तुति (स्त्री) ।
अभिव्यञ्जक, वि (स) प्रकाशक, सूचक,
बोधक ।
अभिव्यक्त, वि (स) प्रकटित, दर्शित स्पष्टीकृत ।
अभिव्यक्ति, स स्त्री (सं) प्रकाशन, आवि
ष्कार, साक्षात्कार ।
अभिव्याप्ति स स्त्री (स) सर्व, व्यापकता
व्यापिता २ समावेश ।
अभिशास, वि (स) आबुष्ट, शापमस्त,
अभिशासन २ मिथ्यादूषित ।
अभिशास्ति, स स्त्री (स) अभि, शाप,
आक्रोश २ विपत्ति-भाषति (स्त्री) ।
अभिशाप, स पु (सं) शाप, आक्रोश
२ दोषारीप मिथ्यामिथ्यायोग ।
अभिशापित, वि (स) दे 'अभिशास' ।
अभिपद्य, म पु (स) पराजय २ निन्दा
३ मिथ्यापवाद ४ अलिंगन ५ शपथ
६ दुःखम् ७ भूतावेश ।
अभिपद्य, स पु (स), सोमस्य निष्पीडनम्
२ सोमदानम् ३ यज्ञ ४ यज्ञक्षानम् ।
अभिपिक्त, वि (स) क(खा)पित, प्रधा
नित २ सिंहासने उपवेशित ३ यथाविधि
निपुक्त ।
अभिपेक, स पु (स) अभिपेक्ष, प्रोक्षण,
आश्रय-सैक २ मार्जन ३ सिंहासने स्थापन
४ यज्ञान्तर शान्तये सानम् ।
अभिप्यद् स पु (म) स्रव, क्षरण, प्रवाह
२ नेत्ररोगभेद ।
अभिसंधि, स स्त्री (स पु) अभिसंधान,
प्रचारण, वचनना २ कुचक, पश्यत्रम् ।
अभिसार, स पु (सं) अभिसारण, नायक
नायिकयोः निश्चितस्थाने गमन २ आश्रय,
साहाय्य ३ युद्धम् ।
अभिसारिका, सं स्त्री (स) अभिसारिणी ।
अभिसारी, स पु (स-रिन्) अभिसारक ।
अभिहित, वि (स) उक्त, कथित, उदित ।
अभी, कि वि (हि अर + ई) साम्प्रतमेव,
अधुनेव, अचिरात् ।
अभीर, सं पु (स आभीर) गोप गोपाल ।

अभीष्ट, वि (स) वाञ्छित, अमिलयित २
अभिप्रेत ३ मनोनीत । स पु, मनोरथ ।
अभूत, वि (स) अवदित २ वर्तमान
३ विलक्षण ।
—पूर्व, वि (स) अघटितपूर्व २ अपूर्व,
अदभुत ।
अभेद, स पु (स) भेदामात्र, एकत्व, अभि
धत्ता २ समानता । वि, भेदरहित समान ।
अभेद्य, वि (स) अच्येय अक्षरणीय,
अभेदनीय ।
अभोज्य, वि (स) दे अमह्य ।
अभौतिक, वि (स) अप्राकृतिक २ अगोचर ।
अभौम, वि (स) अप्रापित, अभुविज ।
अभ्यग, स पु (स) दे, लेखन २ तैल
मर्दन, रनेहनम् ।
अभ्यजन, म पु (स न) दे 'अभ्यग' २
नेत्रया वज्ज-निक्षेप ३ अगाराग ।
अभ्यतर, स पु (स न) मध्य, मध्य, भाग
देश, -गम २ हृदयम् ।
अभ्यर्थना, स स्त्री (स) प्राधना याचना
२ प्रत्युद्गमनम् ।
अभ्यर्थनीय, वि (स) याचित य २ प्रत्युद्
गनीय ।
अभ्यर्दन, म पु (स न) उत्पीडनम् दे ।
अभ्यसित, अभ्यस्त, वि (स अभ्यस) नित्य,
अनुष्ठित आचरित, असकृत् पीन पु-देन व्याव
र्तित मेवित कृत ।
अभ्यागन, वि (स) उपस्थित । स पु, अतिथि ।
अभ्यास, स पु (स) अभ्यसन, आवृत्ति
(स्त्री), अनुशीलनम् २ (= अदत) शीर्ष,
नित्यव्यवहार, वृत्ति (स्त्री) ।
—करना, कि स, अभ्यस (दि प से) पुन पुन
विधा (जु उ अ) -क सतत अनुष्ठा (म्वा प
अ), असकृत् सेव (म्वा आ से) ।
अभ्यासी, वि (स सिन्) साधक, अभ्यास
आवृत्ति-कर-कारक ।
अभ्युत्थान, स पु (स न) उत्थानम् २
प्रत्युद्गम ३ समृद्धि-उन्नति (स्त्री) ४
आरम्भ, उदय ।
अभ्युदय, स पु (स) स्वर्दीनानुरूप २
प्रादुर्भाव ३ मनोरथसिद्धि (स्त्री) ४
शुभावसर ५ उन्नति (स्त्री) ।

अभ्युपगम, स पु (स) समीपगमन, प्राप्ति (स्त्री) २ स्वी अङ्गो, वार ।

अभ्र, म पु (स न) मेघ, जलद २ आनाश ३ अश्रक ४ सुवर्णम् ।

अभ्रगल, वि (स) अशुभ अमद्र, अशिव ।
म पु (स न) अशुभ अमद्र, दौर्भाग्य अनिष्टम् ।

अभ्रचूर, स पु (म आभ्रचूर्ण) आभ्रशोध ।
अभिन, म पु (अ) शान्ति (स्त्री), उपप्लवामाव ।

—अमान, —चैन, स पु, सुखशान्ति, मगल, भद्रम् ।

अमर, वि (स) अमर्त्य, नित्य । म पु, देव, देवता (स्त्री) २ पारद, रस ३ अमरनिह (कौशकार) ।

—येल, स स्त्री, अमरवह्नी आकाशवह्नी ।
अमररत्न, स पु (म न) मुक्ति (स्त्री) २ दत्त्व २ चिरजावनम् ।

अमरस, स पु (स आभ्ररस) रसालद्रव २ आभ्र, पर्यट पट्टी (हि अमपापट) ।

अमरागना, म स्त्री (म) देवागना, देवी, अमरी ।

अमरा, म स्त्री (स) अमरावती, दे ।

अमराई, स स्त्री (स आभ्रराजी) आभ्र, वन वाटिका ।

अमरावती, स स्त्री (स) इन्द्रपुरी, स्वर्ग ।

अमरीका, स पु (अमेरिका) महाद्वीपविशेष ।
अमरुत (वृ), स पु (स अमृत >) पेरुक, इटलीज, मामलम् ।

अमरेश श्वर, स पु (स) दे 'इन्द्र' ।

अमर्ष, स पु (स) क्रोध, रोष २ क्षमाऽ भाव, असहिष्णुता ।

अमल, वि (स) स्वच्छ, निर्मल २ निर्दोष ।
स पु, (स न) अश्रक, गिरिजामलम् ।

अमल, म पु (अ) व्यवहार, आचरण, चरितम् २ अधिकार, शासन ३ मद्र, माद, शौण्ड्या ४ शील, वृत्ति (स्त्री), स्वभाव ५ प्रभाव ६ समय ।

—करना कि स, व्यवह (भ्वा प अ), आचर (भ्वा प से), विषा (जु उ अ), कृ ।

—में आना, कि अ, वृत् (भ्वा आ से), भू ।

—दारी, स स्त्री (अ + फा) शासन, राज्यम् ।

अमलतास, स पु (स अम्ल) वृक्षप्रकार ।
अमलवेत, म पु [स अ (आ) अम्लवेतस]
वेतताम्ल, वीर राज रस, -आम्ल ।

अमला, स स्त्री (म) लक्ष्मी (स्त्री) २ सातलावृक्ष ।

अमला, म पु (अ) कायोप्यसु ।

—फैला, स पु, न्यायालयवर्गचरित्रगण ।

अमली, वि (अ) व्यवहारविषयक २ कर्मण्य ३ मद्य, पानासक्त, मादकद्रव्यसन्निव ।

अमहर, म स्त्री (स आभ्र >) शुष्काभ्रशकम् ।

अमा, स स्त्री (म) अमावस्या २ गृह ३ इहलोक ।

अमात्य, स पु (स) साचव, मन्त्रिन् ।

अमान, स पु (अ) रक्षा, व्राण २ शरण, आश्रय ।

अमानत, म स्त्री (अ) स्थाप्य, निभय, -वास, उपनिधि ।

—रखना, कि स, निषा (जु उ अ), निक्षिप (तु प अ), -यस (दि प स), आधी कृ ।

—दार, वि, न्यासधारिन्, निक्षेपग्राहक ।

—दारी, स स्त्री, प्रत्यय, विश्वास ।

—मे रयानत, स स्त्री, स्थाप्यापहरण दुर्वि निर्दोग ।

अमानिता, स स्त्री (स) अमानित्वम्, नम्रत्व, नम्रता ।

अमानी, वि (स निन्) नम्र, विनीत, निर भिमान ।

अमानुष, वि (स) अपौरुषय, अमानवीय, अनिमर्य २ पाशव, पेशाचिक । स पु, मनुष्येतरा जीव २ राक्षस ३ दव । (अमानुषी = अपौरुषेयी स्त्री) ।

अमारी, स स्त्री (अ) वरटक ।

अमावट, स स्त्री (हि आम >) दे 'अमरस' ।

अमावस, स स्त्री [स अमाव (१) स्या] अमावासी, कृष्णपक्षस्वान्तिमतिथि (पु स्त्री), दश, सूर्येन्दुसमागम ।

अमिट, वि (स अ + हि मिटना) अनाश्य, अमार्ह-य, शाश्व (-ती स्त्री) ।

अमित, वि (स) असीम, अपरिमित २ अत्यधिक ।

अभिप्रेत, स पु (स) शत्रु । वि मित्रदीन ।

अमीन, स पु (अ) अधिकरणस्य कर्मवारिभेद ।
 अमीर, स, पु (अ) अधिकारिन् २ धनिक
 ३ उदार ।
 अमीरी, म स्त्री (अ) भनाढ्यता, समृद्धि
 (स्त्री) ।
 अमुक, वि (स) सङ्केतित, निर्दिष्ट ।
 अमूर्त, वि (स) मूर्ति प्रतिमा, रहित, निरकार,
 निरवयव ।
 अमूल्य, वि (स) अनघ, अनर्घ्य, २ बहुमूल्य,
 महार्थ ।
 अमृत, म पु (स न) सुधा, पी (पे) मूष,
 नितर, ममुदनवनीतक २ जल ३ घृत ४
 अ न ५ मोक्ष ६ दुग्ध ७ विष ८ सुवर्ण ९
 हृषपदार्थ १० मधुरद्रव्यम् ।
 —कर, म पु (म) चद्र ।
 —फल, स पु (स पु न) पारावन पटोल,
 वृक्ष फल ।
 —वान, स पु कक्षणीकृत मृदाण्ड, चिकण कुट ।
 —सार, सं पु, नवनीत, घृतम् ।
 अमृतत्व, स पु (स न) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री) ।
 अमृताशु, स पु (स) शीतांशु, चद्र,
 सोम ।
 अमृता, स स्त्री (स) मध, सुरा २ आमलकी
 ३ हरीतकी ४ तुलसी ।
 अमृत्यु, वि (स) अमर, अमरण । स्त्री
 अमरत्वम् । पु विष्णु ।
 अमेध्य, वि स अपवित्र, अवशाहं, निन्द्य ।
 अमेय, वि (स) असीम २ अश्वेय ।
 अमोघ, वि (स) सफल, सार्थक, फलवण ।
 अमोनिया, स पु (अ) तिक्ताति (स्त्री) ।
 अमोल, अमोलक, वि (स) अमूर्य दे० ।
 अमौलिक, वि (स) निर्मूल, वितथ, मिथ्या ।
 अम्मो, स स्त्री (स अम्मा) माता, जननी ।
 अम्मामा, स पु (अ) मरुष्णीष -यम् ।
 अम्मल, म पु (स) रसभेद । वि अम्मल शुक्त ।
 अम्मलता, स स्त्री (स) अम्मलत्व, शुक्तत्वम् ।
 अम्हीरी, म स्त्री (स अम्मस >) घर्मकण्टक
 कम् ।
 अयन, स पु (म न) गति (स्त्री) २ सूर्य
 चन्द्रयोर्गतिभेद ३ ज्योति शास्त्रम् ३ सेना
 गति ५ मार्ग ६ आश्रम ७ स्थान ८ गृह ९
 काठ १० अश ११ यज्ञभेद १२ अथसू (न) ।

अयश, स पु (स शस् न) अपकीर्ति (स्त्री) ।
 अयस, म पु (स अयम न) दे 'लोहा' ।
 अयस्कान्त, सं पु (स) कान्तायस, कान्त,
 कान्तलोहं ।
 अय्यो, वि (अ) प्रकट २ रपट ।
 अयान, वि (हि अजान) अष्ट, मूर्त्ति ।
 अयाल, म पु स्त्री (तु० याल) बेश (स) २,
 सदा ।
 अयाल, स पु (अ) सतति (स्त्री) ।
 —द्वार, वि गृहिन्, गृहस्थ ।
 अयि, अव्य (स) हे, अरे, भो ।
 अयुक्त, वि (स) अनुचित २ अभिहित, मित्र
 ३ युक्तिशून्य ।
 अयुग, वि (स) विषम, अयुगम् ।
 अयुगम्, वि (स) अयुग, विषम २ एकल,
 एकाविन् ।
 अयुत, वि (स न) सहस्रदशकम् ।
 अयोग, वि (म अयोग्य) अनुचित, अयुक्त ।
 अयोग्य, वि (स) अनर्ह, अनुपयुक्त । २
 पाठवशात् ३ अशक्त ४ अपात्रम् ५ दे
 'अयोग' ।
 अयोध्या, म स्त्री (स) साकेत, नगरीविशेष ।
 अयोनि वि (स) अज, निरत्य ।
 अयोनिज, वि (स) अगर्भज २ स्वयम्भू
 ३ अदेह, अकाय ।
 अयौक्तिक, वि (स) युक्तिविरुद्ध, अनुपपन्न,
 असंगत ।
 अयौगिक, वि (स) अव्युत्पन्न, रूढ (व्या) ।
 अरट, स पु, दे 'अरट' ।
 अर, स पु (स पु न) चक्राह २ कौण-
 ३ शैवाल ।
 अरङ्ग सं पु (अ) भासव २ रस
 ३ प्रसवेद ।
 —निकालना, कि स सु स्थन्द (प्रे), आ
 भि, -सु (स्वा उ अ) ।
 —अरक होना, मु, (प्र) त्विन्द (दि-
 प अ) ।
 अरचित, वि (स) अप्राग, अप्रात अगत ।
 अरगजा, म पु (स अगर्भजा >) पीत
 वर्ण सुगन्धिद्रव्यभेद ।
 अरगनी, स स्त्री (स आरग्न >) वसना
 लम्बनी, वस्त्रालम्बनाव रज्जु (स्त्री) यशो वा ।

अरगल, स पु (स न) अरगला, कपाटा
वष्टम्भवमुसलम् ।

अरगवानी, स पु (पा) रक्तवर्ण, लोहित
रग । वि रक्त-लोहित, -वर्ण २ नीललोहित,
धूमवर्ण ।

अरघा, म पु (स) ताग्रमयोऽर्घ्यपात्रभेद
२ शिवलिङ्गाधारपात्रम् ।

अरणि, णी स स्त्री (स पु स्त्री) निर्मन्थ्य
दारु (न), अग्निमयनकाष्ठम् ।

अरण्य, स पु (स न) वन, जङ्गलम् ।

—गान, स पु (म न) सामवेदस्य
गानविशेष ।

—रोदन, स पु (स न) अरण्यरहित,
व्यथविलाप काननक्रन्दनम् २ व्यथवचनम् ।

अरलि, स स्त्री (स पु स्त्री) कूर्पूर, कफ
(षो) णि (पु स्त्री), २ मुष्टि (पु
स्त्री), मुष्टी ३ बाहु ४ कूर्पूरात् मध्यमाङ्गुली
पर्यन्त मानम् ।

अरथी, स स्त्री (म रथ >) शवयान, खाट,
खाटी ।

अरदल, स पु (देश०) वृक्षभेद ।

अरदल, स स्त्री (अ ऑर्डर) आडा,
नियोग ।

अरदली, स पु (अ ऑर्डरली) परिचारक,
बिकर, प्रेष्य ।

अरदास, स स्त्री (फा अर्जदास) उपहार,
श्रीतिदान २ उपासना, आराधना, प्राधना ।

अरघग, दे० 'अर्दाग' ।

अरघ (घो) गी, स स्त्री (स अर्दागिनी)
पत्नी, भार्या, अर्दागम् ।

अरना, स पु (स अरण्य >) वन्यमहिष,
वन्यसैरिम ।

अरनी, स स्त्री, दे 'अरणि' ।

अरब, स पु (स अरुद -द) शनकोटिसरया ।

अरब, स प (स अरुवन्) घोटक २ इन्द्र ।

अरब, स पु (अ) मरुदेशविशेष, अरबदेश
२ अरबदेशीयोऽथो जनो वा ।

अरवी, वि (फा) अरबदेशीय । स पु
१—३ अरबदेशीयाऽथ लघु वाद्यभेदो वा ।

स स्त्री, अरबदेशस्य भाषा ।

अरमान, स पु (त्त) शलसा, आकाशा ।

अरर, अव्य (स अररे) आक्षर्यघृणादिसूचक
शब्द ।

अरराना, कि अ (अनु) पुरुष ध्वन् स्वन्
(भ्वा प मे) २, सहसा पठ (भ्वा प से)
अरविद्, स पु (स न) कमल, पद्मम् ।

अरविदिनी, स स्त्री (स) नलिनी, कमलिनी
२ कमलसमूह ३ पद्माकर ।

अरवी, स स्त्री, दे 'कवाल' ।

अरस, वि (स) नीरस, विरस २ असभ्य
३ अलस ४ निर्बल ५ अयोग्य ।

अरसा, म पु (अ) समय ० विल व ।

अरहट, स पु (स अरघट्ट) अरघट्टक ।

अरहर, स स्त्री (स आढकी) तुवरो, तव,
रिका, वृधवीजा ।

अराजक, वि, (स) राजहीन शासकरहित ।

अराजकता, स स्त्री (स) राजहीनता ।
२ शाननाभाव ३ उपद्रव, अशांति
(स्त्री) ।

अराति, सं पु (स) शत्रु २ वामकोपलोभ
मोहमदमात्सर्याणि (न बहु) ३ ज्योति
शास्त्रे कुण्डल्या षष्ठ स्थानम् ।

अराहूट, स पु (म (अ परोहूट) अराहूट,
कन्दभेद २ अराहूटचूर्णम् ।

अरिदम, वि (र) शत्रुघ्न, अभिन्नवातिन्
२ विजयिन् ।

अरि, स पु (र) शत्रु, वैरिन् ।

—मर्दन, वि (स) रिपु, सूदन-दमन, शत्रुघ्न ।

अरिघ्न, स पु (स न) क्षि (क्ष) षणी णि
(स्त्री), नो नोका, दण्ड, केनिपातक ।

अरिष्ट, स पु (म न) क्लेश २, विषद
(स्त्री) ३ दुर्भाग्य ४ अपशकुन ५ लशुन
७ निम्ब ८ काक ९ गृध्र १० केनिल
११ मघभेद १२ काय १३ भूकम्पादय
उत्पाता १४ मषित १५ प्रसूतिगृह । वि
अनशर २ शुभ ३ अशुभ ।

अरिष्टक, स पु (स) केनिलवृक्ष । (स न)
केनिलबीजम् (रीठा) ।

अरिहा, वि (स -इन्) रिपुदमन, रिपुजय ।
स पु शत्रुघ्न ।

अरी, अव्य (सं अरे) अथि ।

अरतुद, वि (स) मर्म, भेदिन् स्पृश २ दुःख
दायक ३ कडभातिन् । (स पु) शत्रु ।

अरुंधती, म स्त्री (स) वसिष्ठपत्नी २ दक्ष
पुत्री ३ नक्षत्रविशेष ।

अरु, अरु, दे 'और' ।

अरुई, स स्त्री दे 'कचाल' ।

अरुचि, स स्त्री (स) इच्छाऽभाव २ अग्नि
मान्द्य ३ घृणा ।

—कर, वि बीमरस, गर्स, उद्वेगकर ।

अरुचिर, वि (स) अमिय, अरुचिकर, अरुच्य,
बीभत्स ।

अरुज, वि (स ज) नीरोग, स्वस्थ ।

अरण, वि (म) रक्त लाहित । स पु सूर्य
२ सूर्यसारथि ३ सन्धिप्रकाश ४ प्रभात
५ कुकुम ६, गुल ।

—उदधि, स पु (स) समुद्रविशेष ।

—उदय, स पु (स) प्रभात, दिनमुगम् ।

—उपल, स पु (स) पचराग, शोणरत्नम् ।

—चूड, म पु (स) कुक्कुट ।

अरणा, स स्त्री (स) मजिष्ठा २ वदन
३ रक्तवर्णा गौ ४ उपस (स्त्री) ।

अरुणाई, स स्त्री (स अरण >) रक्तता, अरु
गिमन् ।

अरुणात्मज, स पु (स) शनि, शनैश्वर,
मौरि २ यम ३ सुग्रीव ४ कर्ण ५ जलायु ।

अरुणिमा, स स्त्री (स गिमन् पु) रक्तिमन्,
लाहित्यम् ।

अरूप, वि (स) अमूर्त निराकार ।

अरे, अव्य (स) हे, अयि, अये, भो २ अहो
(मन् अव्य०) ।

अरोडा, स पु (स आरुड >) पचनदप्रान्तीय
जानिविशेष ।

अर्क, म पु (स) सूर्य २ इन्द्र ३ रफटिक
४ विष्णु ५ मदार ६ अम्रज ७ रविवार
८ उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रम् ९ द्वादश इति
सरया १० पण्डित । वि (म) पूज्य,
अर्चनीय ।

—मदल, स पु (स न) मूर्खत्व-वन् ।

अर्क, स पु (अ) दे 'अरक' ।

अर्कज, स पु (स) सूर्यपुत्रा [१ यम
२ शनैश्वर ३ अश्विनी (दि) ४ सुग्रीव
५, कर्ण]

अर्कजा, स स्त्री (स) सूर्यपुत्री (यमुना
तापी च नदी) ।

अर्गल, स पु (स न) अर्गला, कपाटाव
हम्मकमुसल २ कपाट ३ अवरोध
४ दहोल ५ सन्ध्या घना ।

अर्गला, स स्त्री (स) दे 'अर्गल'
२ (चिटवनी) कील-ल ३ राजवन्धनशृङ्खला
४ अवरोध ।

अर्घ, स पु (स) पूजाविधिभेद २ पूजा
सामग्री ३ हस्तधावनाय जर, तदान वा
४ मुख्य ५ उपहार ६, सम्मानार्थ जलेन
सेक ।

—देना, उदकादिदानेन दृप् (प्रे०), निधिच्
(तु प अ)

—पात्र, स पु (म न) शलाकार ताम्र
पात्रम् ।

अर्घट, स पु दे 'राघ' ।

अर्घा, म पु (म अर्घ >) दे 'अर्घपात्र' ।

अर्घ्य, वि (स) पूज्य २ बहुमुख्य । स पु
(स न) पूजाद्रव्यम् २ मधुभेद ।

अर्घक, वि (स) पूजक, उपासक ।

अर्चा, स स्त्री (स) पूजा २ प्रतिमा, मूर्ति
(स्त्री) ।

अर्चि, स स्त्री (म) अर्चिस् (न, स्त्री)
शिला २ तेजस (न) ३ किरण ।

अर्चित, वि (स) पूजित २ सत्कृत ।

अर्चन, स पु (स न) पूजा, अर्चा, अर्चना
२ मत्कार ।

अर्चनीय, वि (स) पूजनीय २ सत्कार्य ।

अर्चिष्मान्, वि (स ध्यत्) भास्वर, कात्तिमर्द
शिखा-बवाला-युत अश्विन । स पु (स) अग्नि
२ सूर्य ३ विष्णु ।

अर्ज्ञ, स स्त्री (अ) प्रार्थना, याचना
२ विस्तार, परिणाह ।

—करता, क्रि स, याच (स्वा उ से)
सविनय निविद् (प्रे) ।

अर्जन, स पु (स न) उपाजन, सचय,
सग्रह, उपादानम् ।

—करता, क्रि स, उप, अर्ज (चु) मर्द्द
(ङ प से)

अर्जित, वि (स) उपाजित, संगृहीत,
सचिन ।

अर्ज्ञी, स स्त्री, (अ) प्रार्थना-निवेदन,-
पत्रम् ।

अर्जा—दावा, स पु (अ) अभियोग-भाषा, पत्रम् ।
 अर्जुन, स पु (ल) धनजय, पार्थ, कपि ध्वज, गुडाकेश, गाण्डीविन् २ सद्भ्राजुन ३ वृश्चभेद ४ मयूर । वि श्वेत २ स्वच्छ ।
 अर्जुनी, स स्त्री (म) शूद्रा गौ (स्त्री) २ कषा ३ कुट्टनी
 अणव, म पु (स) ममुद्र २ मूर्ध ३ अण रिश ४ चतुर इति संख्या ।
 अनिका, स स्त्री (म) अग्रजा, (अचिका) ज्येष्ठमगिनी ।
 अति स स्त्री (म) पीढा, -यवा २ चापाग्रम् ।
 अर्थ, न पु (स) शब्दाशय २ प्रयोजन ३ कर्मन् (न) ४ इन्द्रिविषय ५ धनम् ।
 —देना, क्रि स अमि धा (जु उ अ) मूच् (चु), चुत् (प्रे) ।
 —यताना, क्रि स, व्या-न्या (अ प अ), विवृ (स्वा उ मे), व्याचक्ष (अ आ से) अर्थ प्रकाश (प्रे) ।
 —कर, वि (म) लाभप्रद, फलावह । (-करो स्त्री) ।
 —दृढ, स पु (स) धनदण्ड ।
 —पति, स पु (स) कुवेर २ नृप ।
 —पिशाच, वि (स) कृपण, लोभिन् ।
 —वाद, स पु (म) विविधवाक्येषु अन्य-तमम् (न्या) ।
 —वेद, स पु (स) शिख्यशास्त्रम् ।
 —शास्त्र, स पु (स न) धनप्राप्तिरक्षावृ द्ध्याद्युपायदर्शक शास्त्रम् ।
 —सचिव, स पु (स) अर्थमन्त्रिन् ।
 अर्थात्, अ० (स) अय आशय, दे 'यानी-ने' ।
 अर्थान्तर, सं पु (स न) अन्य भिन्न द्वितीय, अर्थ ।
 —न्यास, स पु (स) अर्थालंकारभेद (सा) ।
 अर्थापत्ति, स स्त्री (स) प्रमाणभेद (न्या) २ अलंकारभेद (सा) ।
 अर्थालंकार, स पु (स) अर्थचमत्कारयुक्तोऽ लंकार (सा) ।

अर्थी, वि (स यिन्) इच्छु, इच्छुक, इच्छक, अमिलायिन् २ कार्यायिन् । (अयिनी स्त्री) स पु, वादिन्, अभियोक्तृ २ मेवक ३ धनिक ।
 अर्देन, म पु (स न) पीठन, हिमा २ याचनम् ।
 अदित, वि (म) वीडित २ हत ३ यायिन ४ गत ।
 अर्द्ध, वि (स) सामि—। स पु, अर्द्ध -र्द्ध, अर्द्ध, भाग -अंश ।
 —चद्र, म पु (स) अष्टम्याक्षन्द् २ चद्रक, मयूरपक्षस्थचन्द्रचिह्न ३ नखक्षत ४ चद्रावद् (~) ५ बहिष्काराय ग्रीवानो ग्रहणम् ६ त्रिपुडभेद ।
 —भाग, स पु (स) अर्द्ध -र्द्ध, अर्द्धांश ।
 —मागधी, स स्त्री (म) प्राकृतमापाभेद (यह कमी मथुरा से परना तक बोली जाती थी) ।
 —वृत्त, स पु (स न) वृत्तार्द्ध, अर्द्धमठलम् २ वृत्तपरिधेरर्द्धभाग ।
 —समवृत्त, स पु (स न) छन्दोभेद ।
 अर्द्धांग, स पु (स न) अर्द्ध, -भाग -अंश २ पक्ष, -आघात -वायु ३ शिव ।
 अर्द्धांगिनी, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या ।
 अर्द्धांगी, स पु (स -गिन्) शिव । वि, अर्द्धांगीरोगग्रस्त, पक्षवायुपीडित ।
 अर्पण, स पु (स न) उपहरण, उपनयन, दान २ उपायन, उपहार ३ स्थापनम् ।
 —करना, क्रि स, उपहृ-उपनी (भ्वा प अ) उपस्था (प्रे) ऋ (प्रे अर्पयति) ।
 अर्पित, वि. (स) दत्त, उद-वि, -सृष्ट ।
 अर्जुद, स पु (म पु न) दशकोटिसंख्या २ अरावलीपर्वत ३ मेघ ४ मासकौलरोग ५ दैमासिको गर्भ ।
 अर्वा, वि (अ०) चतुर ।
 अर्भक, वि (स) अल्प, लघु, २ मूर्ध ३ कुश । स पु, बालक, वड्ड ।
 अर्थ्य, स पु (स) स्वामिन् २ इश्वर ३ वैश्व । वि श्रेष्ठ । (अर्था, अर्थाणी, अर्थास्त्री) ।
 अर्थ्यमा, स पु (स -मन्) सूर्य २ आदि स्वविशेष ३ विशिष्टा पितर (बह०) ४ उत्तराफारगुनीनक्षत्रम् ।

अर्वाक, अव्य (स) पश्चात्, इदानींतने काले,
नामिन्द्रिरात् प्राक्, अचिर २ समीपे,
निकटटे ।

अर्वाचीन, वि (स) नूतन नातिपुराण,
आधुनिक (—वी खी), अमिनव ।

अर्श, म पु (स—शंस्न) शुद्धकीलक,
शुद्धिकुर ।

अर्श, स पु (अ) आकाश-श्च २ स्वर्ग ।

अर्हत, स पु (न) जिन २ बुद्ध ३ दिव
वि मान्य ।

अर्ह, वि (स) पूज्य २ योग्य ।

अर्हणीय, वि (स) पूज्य, समान्य,
पूजनीय ।

अर्हत्, वि (स) मान्य, अर्चनीय ।

अर्हित, वि (स) पूजित, समानित ।

अल, अव्य, दे 'अलम्' ।

अलकार, स पु (स) आभरण, मण्डन,
वि, भूषण २ शब्दार्थयोश्चमत्कारविशेष
(सा०) ।

अलकृत, वि (स) वि, भूषित, महित,
धृताभरण २ मस्कृत, परिष्कृत ।

—करना, कि स, वि, भूष (चु०), अलक,
परिष्क, सस्क, मण्ड (चु०), प्रसाध
(प्रे०) ।

अलघनीय, वि (स) अलघ्य, दुरतिक्रम,
दुस्तर ।

अल, स पु (स न) (= विकृ का टक)
लुप्त, अ(आ)लिदश, इ(द्रो)ण, कण्ठक-
शकु । २ हरितालक २ विष, विषम् ।

अलक, स पु (स) कुरल, चूर्णकुतल
० देश, पाद-बलाप ।

अलकवरा, स पु दे कोलटार* ।

अलकनदा, म स्त्री (स) नदीविशेष ।

अलकली, म स्त्री (अ) विद्यार ।

अलका, स स्त्री (स) कुबेरनगरी,
'अलपुरम्' ।

—पति, स पु (स) कुबेर ।

अलकावलि, स स्त्री (स) केशबलाप ।

अलकोहल, स पु (अ) शुष्व ।

अलक, अलकक, स पु (स) का (रा)
घा, जतु (न), दाब, रक्ता, द्रुमामय
२ काष्ठाभितरगभेद* ।

अलक्षित, वि (स) अदृष्ट, अवीक्षित २.
अदृश्य ३ अज्ञान ४ गुप्त ।

अलक्ष्य, वि (स) अदृश्य २ अतीन्द्रिय ।

अलक्ष, वि (म अलक्ष्य) दे 'अलक्ष्य' ।

—धारी, स पु (स अलक्ष्यधारिन्) गोरक्ष
नाभानुयायिन साधव (वहु०)

—जगाना, मु, भिक्षायाचनम् ।

अलग, वि (स अलग्न) पृथक् (अव्य) वि,
मित्र, वियुक्त, विच्छिन्न, असलग्न ।

—करना, कि स, पृथक् क, विधट् विकिप्
(प्रे), वियुञ् (चु०) ।

—होना, कि अ, पृथक् भू, वियुञ् (मा०
वा) विधिष् (दि प अ) ।

अलगनी, स स्त्री (स आलग्न >) वसना
लंबनी ।

अलगोज्ञा, म पु (अ) मुरली वदा
यणु, भेद ।

अलग्न, वि (म) निर्लज्ज, धृष्ट, वियात ।

अलपाका, स पु (स्पे० एलपाका) ज तुभेद
२ तस्य कर्णा ३ तदूर्णानिमित्त सूक्ष्म
दखभेद ।

अलफ, स पु (अ अलिफ) अरबीवर्णमाला
या प्रथमवर्ण ।

अलवत्ता, अव्य (अ) निस्सदेह, निरसशयम्
२ आम्, सस्यम् ३ किन्तु, परन्तु ।

अलवम, स पु (अ) निष्पत्रिका ।

अलवेला, वि (स अलम्य > ?) वेपा
भिमानिन्, छेक, रूपगवित, दर्शनीयमानिन्
२ अद्वुत्त ३ कामचारिन्, अनवहित ।

अलव्ध, वि (स) अपात्र, अनपिगत,
अहस्तगत ।

अलभ्य, वि (स) अप्राप्य २ दुर्लभ
३ अमूय ।

अलम्, अव्य (म) यथेष्ट, पर्याप्त, प्रचुरम् ।

अलम, स पु (अ) शोक, दुःख २ ध्वन ।

अलमलम्, म पु (अ), पचाङ्ग, पञ्जिका ।

अलमस्त, वि (पा) मत्त, क्षीव २ मिथिन्त ।

अलमारी, स स्त्री (पुन० अलमारियो)
उत्थितपिटक ।

अलमास, स पु (फा) हीरक, वज्र-जम् ।

अललटप्प, वि (देश०) दैर्घ्यान्त,
आकारिमक ।

अलवान, स पु (अ) और्णप्रावार ।
 अलव्य, वि (म) मन्द, मन्दर आलस्य
 शील ।
 अलमान नि, स स्त्री (स आलस्यम्)
 मान्यम्, तन्द्रिका ।
 अलमाना, कि अ, (हि अलसान) शिथि
 लायन (ना था), शिथिली-स्थी मन्दी, भू ।
 अलसी, न स्त्री (स अनसो) उमा, क्षुमा ।
 (बीन उमा भतमी, वीणम् ।
 अलहद्दगी, स स्त्री (अ०) पृथक्ता पार्थक्यम्
 अलहद्दा, वि (अ) अन्य, मित्र, पृथक् ।
 अलात, स पु (स न) अक्षर २ उदलत्
 काष्ठ, उल्का ।
 —अल, स पु (स न) उल्कापूर्णतत्र चक्रम् ।
 अलान, म पु (स आलान) गजबन्धनसम्भ
 २ इतिवचनशृङ्खला ३ वचन, निगद ।
 अलानिया, अ० (अ०) प्रकट, निर्भय, नि
 श्चक्रम् ।
 अलाप, म पु दे 'आकाप' ।
 अलापना, कि स (स आलापनम्) आलप
 (भ्वा प मे), स्वरलयम् उत्पद् (प्रे०) २ मै
 (भ्वा प अ गायति) ।
 अलामन, स स्त्री (अ) लक्षण, विह, अभि
 ज्ञानम् ।
 अलामं घडी, म स्त्री (अ एलामं + स घनी)
 प्रवाहन घटी घटिका ।
 अलात्र, म पु (म अलात >) अक्षिराशि,
 अक्षारनिकर ।
 अलावा, कि वि (अ) विना, ऋत २ दे
 'अतिरिक्त' ।
 अलिंग, वि (म) लिंगरूप विह, रहित
 हीन । म पु, ईश्वर २ विहामात्र ।
 अलिप्त, स पु (म) (वडा घडा) अलनर,
 मणिक २ (इन्द्र) कर्करी, गलन्तिका,
 भाहु (स्त्री) ।
 अलिद्, स पु (म अलान्द्र) अमर
 द्विरक ।
 अलिद्, म पु (म) आलीन्द्र प्रथ (धा) ण,
 प्रथ (धा) न, २ बहिर्द्विप्रबोध ।
 अलि, स पु (स) अमर, शिथीमुख २ पिक
 ३ काक ४ शृङ्खल, ५ कुन्डुर ६ दे
 'अली' ।

अली, स स्त्री (म आलि) सखी, मद्चरी
 २ श्रेणी, पक्ति (स्त्री) ।
 अली, स पु (म अलि) षट्पद, अमर ।
 अलीक, वि (म असत्य, अनृत, विनय ।
 अलील, वि, (अ) रोगिन्, रण्य ।
 अलुमीनम, स पु (अ एलुमीनियम) स्फ
 यानु (न) ।
 अलुवा, स पु (फा आलुव) अलुचम् ।
 अलेख, वि (स) अवेध २ अमणित ।
 अलेख, वि (स अलख्य) अदृश्य ।
 अलेख्य, वि (स) लेखानर्ह ।
 अलोन ना, वि (स अलवा) लवणहीन २
 नारस (अलोनी स्त्री) ।
 अलेल-कलेल, स स्त्री (म अलेल कलेल)
 क्रीडा, लीला, रागा ।
 अलौकिक, वि (स) लोकोत्तर, लोकबाह्य २
 अपूर्व, अद्वय, ३ अति, मर्त्य मानुष,
 अमानुषिक ।
 अल्लिमेदम म पु (अ) अल्लिमेत्तम्,
 अल्लिम, उपयास अभिमधि (पु) ।
 अल्लुवायोलेट रे, स स्त्री (अ) अतिनाला
 रुगरदिम् ।
 अल्प, वि (स) स्वल्प, स्तोत्र, दम्भ, न्यून,
 क्षुद्र अल्प-लक्ष, परिमाण २ हस्त, खर्व, वासन ।
 —आहार, म पु (स) भिनमोचनम् ।
 —आहारी, वि (स रिन्) भिनमुन्,
 अत्याशन ।
 —आयु, वि (स -युस) अचिर, जीवन नीविन् ।
 म पु, अज, छाग ।
 —आवी, वि (म विन्) अचिरानुष्य ।
 —अ, वि (स) स्तावश, अल्पविद् २ मद्
 बुद्धि ।
 —अता, स स्त्री (स) स्तोत्रकथा २ अहता ।
 —आण, स पु (स) अल्पप्राणीभार्या नर्ता (न्,
 ग, ल, न्, ज्, ज्, आदि ।)
 —अुद्धि, वि (स) मूर्ख, मूढ, दुर्नति, जड ।
 —अयस्क, वि (स) अप्राप्त, व्यवहार वय
 स्क, बाल ।
 अल्पता, स स्त्री (स) न्यूनता त्व, अल्पत्व
 २ लघुता त्व ।
 अल्पशा, अव्य (स) स्तोत्र, अल्पत्व
 २ दुर्न शनै, क्रमश (सन अव्य)

अल्ल, म पु (अ आल) वशनामन् (न),
उपगोत्रनामन् (दुम्ने, चौवे आदि) ।

अल्लम-गल्लम, स पु (अनु) प्रलय,
दे 'अल्लवट' ।

अल्लाह, स पु (अ) ईश्वर ।

—ओ अकबर, वाक्य (अ) ईश्वरो हि मदान् ।

अल्लह् वि (स अल = बहुल + लल =
रत्नता >) विलासिन्, विनादिन् २ अनव
धान ३ अल्पवयस्कं ४ उद्धत ५ अज्ञ । म
पु नवजातग्रस ।

—पन, स पु, विनोदिता २ अनवधानता ३
अल्पवयस्कता ४ उद्धता ५ अज्ञता ।

अवति-ती, अवन्तिका, स स्त्री (स) उज्जयिनी
नगरी ।

अव, उप (स) निश्चयानादरन्यूनतानिम्नता
व्याप्तिसूचक उपसर्ग ।

अवमलन, म पु (स न) दर्शन, ईक्षण,
बोधनम् २ अवगमन, ज्ञानम् ३ ग्रहणम् ।

अवकाश, म पु (स) स्थानं, स्थल, प्र,
देश २ गगन ३ दूरता ४ अवसर ५
विश्राम ।

अवकिरण, स पु (स न) विकिरण, विक्षेपण,
प्रासनम् ।

अवकीर्ण, वि (म) प्र वि आ, कीर्ण, प्र वि
अस्त, विक्षिप्त २ ध्वस्त, नाशित ३ स,
चूर्णित ।

अवकीर्ण, वि (म णिन्) क्षुत्प्रत, नष्टवीर्यं ।

अवकुचम, स पु (स न) भोटन, वक्त्रोत्करण,
व्यावर्तन, आकुचनम् ।

अवकुठित, वि (म) कातर, नशीर, मीरु ।

अवकृष्ट, वि (म) बहिष्कृत २ निगलित ३
नीच । म पु दास ।

अवकेदी, वि (स-शिन्) निष्फल २
निरामन्तान ।

अवक्रय, स पु (स) मूक्य, अर्थ २ (किराया)
हाथ, नारिक, आनर ४ कर ।

अवक्रोश, स पु (स) आकाश, शोष,
गर्ह ।

अवगत, वि (म) विदित, ज्ञान, बुद्ध परिचित
२ निगत, पतित ।

अवगति, सं स्त्री (स) ज्ञान, बोध, अवगमन
२ कुगति निगति (स्त्री) ।

अवगाढ, वि (स) निश्चित, गुप्त २ निमग्न,
प्रविष्ट ।

अवगाहन, स पु (स न) जले प्रविश्य
स्नान, निमज्जन २ प्रवेश ३ मथन विलो
टन ४ अनुसन्धान ५ मनन, विचारणा ।

अवगीत, वि (स) निन्दित, लाञ्छित । स
पु (स न) निन्दा, अपवचनम् ।

अवगुंठन, स पु (स न) आवरण, व्यवधान,
आच्छादन, सवरण २ (धुंभ्) आवरक वम् ।

अवगुफन, स पु (स न) सम्प्रथन, वि,
रचन, तन्त्रीभिर्गुणैर्वा बन्धनम् ।

अवगुण, स पु (स) दोष, व्यसनं २ अपराध,
रसलितम् ।

अवग्रह, स पु (म) विघ्न, प्रतिबन्ध २
अनावृष्टि (स्त्री) ३ सेतु वप्र, न-ध, वप्र ४
सन्धिविच्छेद (-वा०) ५ शोष ।

अवघट, वि (म अव + घट् >) विकट, दुर्गम ।

अवघषण, स पु (म न) दे 'रगहना' तथा
'पीसना' ।

अवचन, स पु (म न) निश्चरता, तूष्णीं
भाव । २ निन्दा ।

अवचनीय, वि (स) अकथनीय, अग्लील २
अनिन्य, अगर्ही ।

अवघय, स पु (स) उत्पादन उद्धरण,
उल्लुवनम् ।

अवच्छिन्न, वि (स) पृथक्कृत, विद्वेषित २
ससाम, ३ सविशेषण, विशिष्ट ।

अवच्छेद, सं पु (स) भेद, पृथग्भाव २
इयत्ता ३ अवधारण, निश्चय ४ परिच्छेद,
विभाग ।

अवच्छेदक, वि (म) विभाजक, भेदक २
इयत्ताकारक ३ अवधारक ४ निश्चयक । स
पु, विशेषणम् ।

अवज्ञा, म स्त्री (स) अव अप, मान, अनादर,
अवधीरणणा २ आश्लेषन ३ पराजय ४
अलकारभेद (सा) ।

अज्ञान, वि (स) अवधीरित, अपमानित,
तिरस्कृत ।

अवतस, स पु (स पुं न) भूषण, अलकार
२ शिरोभूषण ३ कर्णभूषण ४ मुकुट ५
श्रेष्ठजन ६ माला, हार ७ मान्य्य C-
पाणिप्राइक ।

अवतरण, म पु (स न) अवरोहन्, अधोगमन २ पारगमन ३ शरीरधारण, अग्रप्रहा ४ प्रतिवेश, प्रतिक्रिपि-प्रतिकृति (स्त्री), ५ प्रादुर्भाव ६ घट्ट, मोषान ७ घट्ट ।
 अवतरणी णिका, स स्त्री (स) घन्त्वा पुस्तक, प्रत्यावना भूमिका-व्याख्या २ रीति (स्त्री) ।
 अवतार, स पु (म) पुराणमतानुसार देव विश्वस्य जीवविशेषस्य वा शरीरधारणम् । (विश्वा जी के २४ अवतार—ऋषा, वाराह, नारद, नरनारायण, कपिल, वसुदेव, दह, ऋषभ, पृथु मत्स्य, कूर्म, धन्वतरि, माहिनी, नृसिंह, वामन, परशुराम, वेदव्यास, राम, बलराम, कृष्ण, बुद्ध कल्कि, इस, हयग्रीव) ।
 —लेना, क्रि, अ, अवतृ (श्वा प से), अवतह (श्वा प अ), शरीरधृ (प्रे) ।
 अवतारण, म पु (स न) नीचैर्नयन २ अनुकरण ३ उद्धरणम् ।
 अवतारी, वि (स-रिन्) अवरोहिन्, अधो गामिन् २ देवाधिधारिन्, अलौकिक ।
 अवदात, वि (स) श्वेत, शुभ २ शुद्ध ३ गौर ४ पीत ।
 अवदान, स पु (स न) सुकर्मन् (न) २ शोभन ३ पराक्रम ४ शोषन ६ वशीर रन् ।
 अवदारण, स पु (ष) ककचेन छेदन-पातनम् २ विभावन ३ सदानम् ४ दे 'कुदल' ।
 अवदीर्ण, वि (स) ककचेन पाठित २ विभाषित ३ क्षात ।
 अवघ, वि (स) अधम, पाप, २ निन्द्य, कुम्भित ।
 अवघ, स, पु (स अवघ्वा >) कोश (स) ला (बहु) २ अयोध्या ।
 अवघ, वि (स अवघ्य) रक्ष्य, प्रगाई ।
 अवघान, स पु (स न) मत्तयोर्ग, क्वध्वा, सतर्कता ।
 अवधार, स पु (स) निक्षय, निश्चितता २ सीमा, अवधि (पु) ।
 अवधारण, म पु (म न) निर्धारण, निक्षय ।
 अवधारित, वि (स) निर्धारत, निश्चित ।
 अवघार्थ, वि (स) निर्धारणीय, निश्चेतव्य ।

अवधि, म स्त्री (स पु) सीमा, परा काष्ठा, पदन्त २ नियत, काल-समय २ गृह्यकाल । अव्य (स) यावत् (उ अया वधि = अद्य यावत् = आज तक) ।
 अवधी, वि (हि अवध) कोश (स) लसम्बन्धिन् २ कास (श) लप्रान्तस्य माया ।
 अवधीरणा, स स्त्री (स) दे, 'भवद्वा' ।
 अवधीरित, वि (म) अवज्ञान, तिरस्कृत ।
 अवधूत, स पु (म) सन्व्यासिन्, योगिन् सायु । वि (स) कपित २ विनष्ट ।
 अवधेय, वि (स) विचारणीय, ध्येय २ श्रेय ३ ज्ञानव्य ।
 अवनत, वि (स) नीच, निम्न, नत, नीचस्य २ पतित ३ न्यून ।
 अवनति, स स्त्री (स) हास, मय, हासि (स्त्री) २ अधोगति (स्त्री) ३ नम्रता ।
 अवनिनी, स स्त्री (स) पृथिवी, भूमि (स्त्री)
 —इन्द्र, ईश, स पु (स) नृप ।
 —तल, स पु (स न) मू, पृष्ठतलम् ।
 —पति, पाल, म पु (म) भूय ।
 अवबोध, स पु (स) जागरण २ ज्ञानम् ।
 अवमृष्ट, स पु (स) दृष्टदोषकर्मन् (न) २ यद्वान्तरानानम् ।
 अवम, वि (स) अधम, अल्प २ रक्षक, परित्र २ नीच, निन्दित । स पु (स) पितृणांविद्वेष २ मलमास ।
 अवमत, वि (स) अवधीरित, तिरस्कृत ।
 अवमति, स स्त्री (स) अपमान तिरस्कार ।
 अवमर्दन, स पु (स न) पीडन, भर्दन, उपमर्द ।
 अवमर्ष, स पु (स) र्षर्ष २, सपर्ष ३ सन्धिविद्वेष (सा०)
 अवमर्ष, स पु (स) सम्, आलोचन-ना २ सन्धिविद्वेष (सा०) ३ आक्रमणम् ।
 अवमर्षण, म पु (स न) असहिष्णुता, दे, 'असहदनशीलता' २ अपमानन, विद्वेदनम् ।
 अवमान, स पु (स) दे 'अवमति' ।
 अवमानना, म स्त्री (म) अवधीरण, तिरस्कार ।
 अवयव, स पु (स) अद्य, भाग २ अग, गम, शरीरैकदेश ३ न्याये पञ्च दश वा

वाक्यांशा (= प्रतिष्ठा, हेतु, उदाहरण, उपनयन, निगमन, जिज्ञासा, सशय, शक्य प्राप्ति प्रयोजन, सशय-व्युदास) ।

अवयवी, वि (स विन्) भक्षिन्, सावयव ५ पूर्ण, समग्र । स पु, सावयव पदार्थ ३ देह ।

अवर, वि (स) अन्य, अपर २, अधम, नीच ।
अवराधक, वि (सं आराधक) पूजक ।

अवराधन, स पु (सं आराधन) पूजा, अर्चा ।

अवरुद्ध, वि (स) उप प्रति, रुद्ध, प्रतिहत, प्रतिबाधित २ आच्छादित, गूढ ।

अवरुद्ध, वि (स) अवतीर्ण, अयोगत ।

अवरोध, स पु (स अव + रो + >) वक्र निर्वर्ण, गति (स्त्री) २ वस्तुस्य तिर्यक कर्तनम् ।

—दार, वि, तिर्यकरुत्त ।

अवरोध, स पु (स) विघ्न, व्याघात २ अवरोध ३ निरोध ४ अनुरोध ५ अन्त पुरम् ।

अवरोधन, स पु (स न) निवारण २ अन्त पुरम् ।

अवरोपण, स पु (स न) उन्मूलन, उपादनम् ।

अवरोह, म पु (स) अवतार, पतनम् २ अवनति (स्त्री) अलकारभेद (सा) स्वरावतार (सगीत) ।

अवरोहण, स पु (स न) अवतरण, नीचे गमनम् ।

अवर्ण, वि (स) रगरहित, वर्णविहीन २ कुवर्ण, कुरग ३ वर्णधर्मशून्य । स पु, अष्टादशविधोऽकार (व्या) ।

अवर्ण्य, वि (स) अवर्णनीय, अनिर्वाच्य, अकथनीय, वर्णनाविषय । स पु, उपमानम् ।

अवलम्ब, स पु (स) आशय, शरण, आधार, अवष्टम् ।

अवलम्बन, स पु (स न) दे 'अवलम्ब' २ धारण, ग्रहणम् ।

अवलम्बित, वि (स) आश्रित, अधीन, आश्रय-विघ्न, -तत्र (समासा-त मे) ।

अवलम्बी, वि (स-विन्) दे 'अवलम्बित' २ आश्रयद (अवलम्बिनी आश्रिता स्त्री) ।

अवलम्ब, वि (स) श्वेत-सित, -रग-वर्ण । स पु (स) श्वेत, -रग-वर्ण ।

अवलम्ब, वि (स) गविन, दृस २ अक्त, विग्ध ३ लीन ।

अवली, स स्त्री (स आवली लि स्त्री) पक्ति, तति, राजी-जि (सब स्त्री) २ समूह, राशि ।

अवलीढ, वि (स) आ, -परि-स-लीढ । २. भक्षित, भुक्त, जग्ध ।

अवलेप, स पु (स) दर्प, गर्व २ वि-प्र-अनु, -लेप ।

अवलेपन, स पु (स न) अभ्यजन, विलेपन २ उद्वर्तन, गात्रानुलेपनी ३ अङ्कार ४ दूषणम् ।

अवलेह, सं पु (स) लेह्य पदार्थ २ लेह्य मोषधम् ।

अवलेहन, स पु (स न) जिह्वाभेग स्पृष्टा-खादनम् ।

अवलोकन, स पु (स न) वि-ईक्षण, दर्शन, निरूपण २ निरीक्षण, अवेषणम् ।

—करना, क्रि स, अव-वि-आ, -लोक (भ्वा आ से, चु) प्र-वि-अव, -ईक्ष् (भ्वा आ से) ।

अवलोकनीय, वि (स) दर्शनीय, ईक्षणीय ।

अवलोकित, वि (सं) ईक्षित, दृष्ट, निरूपित ।

अवश वि (स) वि-पर, -वश, अवशक ।

अवशिष्ट, वि (स) अवशेष, उद्बृत्त ।

अवशेष, वि (स) अवशिष्ट, उद्बृत्त २ समाप्त । स पु (स) अवशिष्ट, शेषभाग २ अन्त, समाप्ति (स्त्री) ।

अवश्यभावी, वि (भ-विन्) अपरिहार्य, अनिवार्य ।

अवश्य, क्रि वि (स अवश्यम्) नियत, भुव, असशय, नून, नाप, खलु (सब अव्य) ।

अवश्य, वि (स) लच्छृङ्खल, दुर्दमनीय, दुर्निग्रह, अवियय, दुर्निवार । (अवस्था = दुर्दमनीया स्त्री) ।

अवश्यमेव, क्रि वि, दे 'अवश्य' ।

अवश्याय, स पु (स) तुषार, प्राण्य, हिमजलम् २ अधिमान, गर्व ।

अवष्टम्, स पु (स) आश्रय २ रतम् ३ धृष्टम् ।

अवसन्न, वि (स) विषण्ण, म्लान, सिन्न, शोकात् २ विनाशोन्मुख २ अलस ।

अवसर, स पु (स) समय, काल २ अवकाश, क्षण ३ देव, देवगति (स्त्री) ।
 अवसर्जन, स पु (स न) विउत्-सर्जनम् उद्धान, त्यजनम् ।
 अवसर्पण, म पु (स न) अवरोहण, अधोगमनम् ।
 अवसाद, स पु (स) नाश, क्षय २ विषाद ३ दैन्य ४ भाग्नि (स्त्री) ५ निर्बलता ।
 अवसान, स पु (स न) विराम, याननिवृत्ति (स्त्री), विष्टम्भ २ समाप्ति (स्त्री), अन्त ३ मृत्यु ४ सीमा ५ सायकाल ।
 अवसाय, स पु (स) अन्त समाप्ति (स्त्री) २ अरविष्ट ३ पूर्ति (स्त्री) ४ स्वरूप ५ निर्णय ।
 अवसित, वि (स) समाप्त २ श्रद्ध ३ परिपक्व ४ मिश्रित ५ सम्बद्ध ।
 अवसृष्ट, वि (स) त्यक्त २ दत्त ३ निष्कासित ।
 अवसेचन, स पु (स न) प्रोक्षण, जलेनाप्लावन २ प्र, स्वेदन ३ जलकादिभि रक्तनिष्कामनम् ।
 अवरकन्द, स पु (स) सैन्यावास, शिविरम् २ जनवास, वरपात्रावास ।
 अवस्कर, स पु (स) विष्ठा, गूढ-धनुः २ [गुहांगन्, लिंगम्, योनि (कमण्डलु) गुदम्] ३ उच्छिष्टम्, निरस्तारवस्तुसमूह ।
 अवस्था, स स्त्री (सं) दशा, गति (स्त्री) २ समय ३ ववस्-आयुस् (न) ४ स्थिति (स्त्री) ।
 अवस्थान्तर, स पु (स न) अन्यावस्था, दशापरिवर्तनम् ।
 अवहित, वि (स) सावधान, एकाग्र, अन-यवृत्ति ।
 अवहित्या, स स्त्री (स) आकारयुग्मि (स्त्री) लज्जादिवशात् चातुर्येण हर्षादि गोपन, भावभेद (सा) ।
 अवहलन, स पु (स न) द्वे 'अवहलना' ।
 अवहेलना, म स्त्री (स) अवज्ञा, अवमान २ आक्षेपलपन ३ उपेक्षा ।
 —करना, किं स, निह, अव-अन, -मन् (प्रे), अवज्ञा (क ठ अ) २ आक्षाम् अनिकम् (म्वा प से) ३ उपेक्ष् (म्वा भा से) ।

अवहेलित, वि (म) तिरस्कृत, उपेक्षित ।
 अवान्तर वि (सं) अन्तर्गत, मध्यवर्तिन् ।
 स पु (स न) अन्तर, अन्यन्तर, तदर, गर्भः ।
 —दिशा, स स्त्री, (सं) विदिशा, मध्यमदिशा ।
 —भेद, स पु (स) भागस्य भाग, अन्तर्गतभेद ।
 अवाक्, वि (स अवाच्) मौनिन्, तूष्णीक, नि शब्द २ स्तम्भ, चकित ।
 —रहना,—होना, किं अ, तूष्णीं-शेष,—आस् (अ भा से), वाचयम् (म्वा प अ) ।
 अवाहमनसगोचर, वि (स अवाहमनो गोचर) अवर्णनीय, अधिन्त्य (ईश्वर) ।
 अवाहमुख, वि (स) अधो-नत,—मुख । (—स्त्री स्त्री) २ उज्जित ।
 अवाची, स स्त्री (स) दक्षिणा, दक्षिणदिशा ।
 अवाच्य, वि (स) विद्युद्, निर्दोष २ निन्द्य, गर्ह्य । स पु (स न) गाली, दुर्वचनम् ।
 अवात, वि (सं) निर्वात, वायु-पवन,—रहित ।
 अवास, वि (सं) प्राप्त, अधिगत, लब्ध ।
 अवार, स पु (सं पु न) अर्वाक्,—तीर-तटम् ।
 —पार, सं पु (सं) सागर, अस्थि ।
 अवारणीय, वि (स) अनिवार्य अपरिहार्य, अवश्यमाविन् ।
 अवि, सं पु (सं) मेघ, पटक २ छाग ३ सूर्य ४ मन्दार ५ पर्वत ६ मूषिक । सं-स्त्री, मैत्री, पटका, उरणी ।
 —पाल, स पु (स) मेघपालक ।
 अविकल, वि (सं) अक्षीग, अनपचिन २ समग्र, पूर्ण ३ निश्चल ।
 अविन्द्य, वि (सं) मिश्रित २ असदिग्ध ।
 अविकारी, वि (स -रिन्) निर्विकार २ अपरिणत ।
 अविहृत, वि (सं) शुद्ध २ अपरिणत ।
 अविगत, वि (स) अज्ञात २ अज्ञेय ३ विद्यमान ।
 अविचल, वि (सं) भुव, स्थिर ।
 अविच्छिन्न, वि (स) निरन्तर, अविरत, सतत ।
 अवितथ, वि (सं) सत्य, यथार्थ, तथ्य । सं-पु (स न) सत्य, श्रुतम् ।

अविद्यमान, वि (स) अनुपरिधन २ असत्
३ असत्य ।

अविद्य, वि (स) निरक्षर, अज्ञ ।

अविद्या, स स्त्री (स) अज्ञान, अवोध २
माया (वे) ३ मर्मनाण्ड ४ प्रथम ब्रह्मेश
(योग) । -ज-य, वि (स) मोहक,
अज्ञानजनित ।

अविनाशी, वि (स) अनवर, अक्षय, अक्षर,
अ यद, चिरस्थायिन् २ नित्य शश्वत ।

अविनीत, वि (स) बद्धस २ दुर्दान ३ धृष्ट ।

अविभाज्य, वि (स) अनशनीय, अनटनीय ।

अविद्युक्त, वि (स) मयुक्त, संलृष्ट ।

अविरत, वि (स) सतत, विरामरहित २
आसक्त, अनिच्छत् । क्रि वि (स न) सतत,
अनवरतम् ।

अविरल, वि (स) सलग्न २ निरिद्ध, घन ।

अविराम, वि (स) सतत, अनवरत २ अवि
शात ।

अविचक्षित, वि (स) अनभिप्रेत, अनुद्दिष्ट
२ वस्तुमनिष्ट, अनिष्टकथन ।

अविवाहित, वि (स) अनुद्ध, कुमार, अकृत
-पाणिग्रह-सपयाम-उदाह, अपरिणीत ।

अविवेक, स पु (स) सदसदिवेचनराहित्य,
विचारामाव २ अज्ञान ३ अ-व्याय ४ मिथ्या
ज्ञानम् (सां) ।

अविवेकी, वि (स-विन्) विवेकशून्य, अज्ञा
निन्, अतत्त्वज्ञ २ विचारशून्य ३ मूर्ख ४
अ-व्यायकारिन् ।

अविश्रान्त, वि (स) विश्राणितशून्य २ सतत,
अविराम ।

अविरचसनीय } वि (सं) विश्वासानर्ह,
अविरचस्त } प्रत्ययाद्योभ्य ।

अविश्वास, स पु (स) अप्रत्यय, विद्वा
सामाव ।

अविश्वासी, वि (स-सिन्) शकामशून्य,-
शूल बुद्धि आ-शक्तिन् २ द्वे 'अविश्वास' ।

अवेक्षण, स पु (म न) दर्शन, अवलोकन
२ निरीक्षण, परोक्षणम् ।

अवेक्षणीय, वि (म) दर्शनीय २ निरीक्षि
तव्य, परोक्षितव्य ।

अवेद्य, वि (स) अज्ञेय २ अज्ञेय्य ।

अवेद्या, वि स्त्री (स) अवोद्वेदा, विवादानर्हा ।
अवैतनिक, वि (सं) निवैतन, भृतिर्यागिन्,
आदरवृष्टि ।

अवैदिक, वि (स) वेदविरुद्ध, वेदाविहित ।

अव्यक्त, वि (स) परोक्ष अतीन्द्रिय शोचर,
अज्ञान, अनिर्वचनीय । स पु (स) वि'पु
२ शिव ३ मदन ४ प्रकृति (स्त्री),
५ आ मन् ६ परमेश्वर ७ मायोपाधिक
महान् (न) ।

अव्यपदेश्य, वि (स) अव्ययनीय २ अनिर्देश्य
३ निर्विकल्प (-या०) ।

अव्यय, वि (स) निर्विकार, अक्षय, नित्य,
व्ययशून्य । स पु (स) परमहान् (न)
२ विष्णु ३ शिव । (स न) सर्वविक्रमि
ल्लिगवचनेषु एकस्य शब्द (उ० सदा, अय
अद्भि, -या०) ।

अव्ययीभाव, स पु (स) समासभेद (उ०
प्रतिदिन व्या) ।

अव्ययीक, वि (स) सत्य, यथार्थ २ प्रिय
वृष्य ।

अव्ययस्था स स्त्री (स) अक्रम क्रममंग,
व्यतिक्रम व्यस्तता, सक्षीम २ अवधि ३
दुर्निर्वाह, दुर्णय ।

अव्ययस्थित, वि (स) अक्रम, क्रमशून्य, २
निर्माया ३ अनियतरूप ४ चञ्चल ।

—सिक्त, वि (स) चञ्चल, नित्तमानस ।

अव्ययहार्य, वि (स) व्यवहारयोग्य, रूप
योगानर्ह २ पतित, पत्तिव्युत् ।

अव्ययवहित, वि (स) सलग्न, ससक्त, -यव
धानशून्य ।

अव्ययवहत, वि (स) अप्रयुक्त, अप्रचरि
(लि) त ।

अव्याकृत, वि (स) अस्पष्ट, अविकसित स
पु (स न) आदिम-तत्त्वम् ।

अव्याप्ति, स स्त्री (स) अनभिव्यापन, व्या
प्त्यमाव २ लक्षणरथ दोषभेद (-या०) ।

अव्याहृत, वि (स) -व्यापादशून्य, अप्रति
कृत २ सत्य ।

अव्युत्पन्न, वि (स) जड, मन्दमति २ व्या
करणनिष्ठ ३, व्युत्पत्तिरहित (शब्द) ।

अव्वल, वि (अ) प्रथम, आदिम २ उत्तम,
भेद । स पु प्रारम्भ, उप-प्र-प्र-, क्रम ।

अशोक, वि (सं.) निर्भय, निःशङ्क । कि वि.
 (सं. न.) निःशङ्कम् ।
 अशोकुन, सं. पु (सं. पु. न.) अपराकुनः न.
 अजन्म, अव अनुम-दुर-लक्षणा ।
 अशक्त, वि (सं) निर्बल, अक्षम, २ अक्षम ।
 अशक्य, वि (सं.) असाध्य, अनिष्पाद्य, अस-
 म्भव ।
 अशान्त, सं. पु (सं. न) मोहन, अन्न, २.
 मशग, छादनम् ।
 अशरण, वि (सं.) अनाथ, निराश्रय ।
 अशरफ़ी, सं. स्त्री (फा.) स्वर्गमुद्रा २ पुष्प-
 भेद ।
 अशाराफ, सं. पु (फा. शरीफ का बहु०) सञ्ज-
 ना आर्या महानुभावा (सब पु बहु०)
 अशरीरी, वि. (सं.-रिन्) अकाय, अशरीर,
 अदेह २. अपायिव । सं. पु देव ।
 अशांत, वि (सं.) व्याकुल, व्यग्र, विह्वल,
 उद्विग्न, वरल, चंचल ।
 अशांति, सं. स्त्री. (सं) अक्षम, उद्वेगः, व्या-
 कुलता, क्षोभ, व्यथता, सन्तोषामावः ।
 अशास्त्रीय, वि. (सं.) शास्त्रविरुद्ध २. शास्त्र
 बाह्य ।
 अशिक्षित, वि. (सं.) अतज्ञ, निरज्ञ, अविष-
 अक्ष, अच्युतपत्र ।
 अशिर, सं. पु. (सं.) अग्निः २. सूर्यः ३.
 वायु. । (सं. न.) हीरा, वज्र-जम् ।
 अशिर, वि. (सं-रत्) शीर्ष-मस्तक, -रहित
 सं. पु कण्ठः, रुण्डः-डम् ।
 अशिष्ट, वि. (सं.) असभ्य, अविनीत, अमद्र,
 अनाथ ।
 अशिष्टता, सं. स्त्री (सं.) असभ्यता, धृष्टता
 दुःशीलता, विनयामावः ।
 अशुद्ध, वि (सं.) अशुचि, अशुचि २. अशु-
 चिन्, असत्कृत २ अज्ञान, वितथ ।
 अशुद्धता, सं. स्त्री. (सं.) अपवित्रता, अशु-
 चिन्ता, २. मलिनता ३. नृदि-भ्रान्तिः (स्त्री) ।
 अशुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अशुद्धता' ।
 अशुभ, सं. पु (सं. न) अमंगल, अहितं,
 अशिवं २. पाप, अन्यायः । वि. अमंगल,
 अमद्र, अशिव ।
 —सूचक, वि. (सं.) उक्तान-अनिष्ट, शक्तिन् ।
 अशोप, वि. (सं.) निःशेष, सर्व, समग्र, सकल,

संपूर्ण, २. अनन्त, असीम, अगणित, बहु, ३.
 समाप्त, अवसित ।
 अशोक, वि. (सं.) दुःख-शोक, -रहित । सं. पु.
 (सं.) विशोक, रक्तपत्रवः (वृक्ष) २. पारदः
 ३ शोकाभावः ४ नृपविशेषः ।
 —वाटिका, सं. स्त्री. (सं.) विशोकवाट २.
 रावणस्य विशोकवाटम् ।
 अशौच, सं. पु (सं. ४) अनेष्यता, अपवि-
 त्रता, अशुद्धता ।
 अशक, सं. पु. (फा.) अशु (न.), नैत्रबलम् ।
 अश्रद्धा, सं. स्त्री. (सं.) अविश्वास, अप्रत्ययः,
 मक्तिनिष्ठा-अभावः ।
 अश्रान्त, वि. (सं.) स्वस्थ, अश्रान्त । कि. वि.
 (सं. न.) सतनम् ।
 अशु, सं पु (सं. न) अशु (न.) वाष्पं,
 नवनाम्दु (न) ।
 —पात, सं. पु. (सं.) रुदित, रोदनम् ।
 —मुञ्ज, वि (सं) सास्र अशुलोचन, सशष्प ।
 अशुत, वि. (सं.) अनिश्चान्त, अनाकर्णित
 २. अनुभवशून्य ।
 —पूर्व, वि. (सं.) अनाकर्णितपूर्वं २. अरमुत ।
 अश्रौत, वि. (सं) अवेदोक्त, अवेदिक ।
 अश्लिष्ट, वि. (सं.) केनरहित, एकार्थक २.
 अमपुक्त ३. असंगत ।
 अश्लील, वि. (सं.) मोडावद, प्राम्य, कुतिसतं,
 शोभत्स, अशान्य, अवाच्य ।
 अश्लीलता, सं. स्त्री. (सं.) प्राम्यता, अवा-
 च्यता ।
 अश्व, सं पुं. (सं.) तुरगः, घोटकः ।
 —आरोहण, सं पुं. (सं. न.) अश्वेन विहरणं,
 घोटकारोहणम् ।
 —आरोही, वि (सं. रिन्) सादिन्, तुरगिन्, ।
 —गंधा, सं. स्त्री. (सं.) ह्य-वाभि, गन्धा ।
 —सर, सं. पु. (सं.) वेगसरः (सञ्चर) ।
 (-नरी = वेगसरी स्त्री.)
 —पति, सं. पु. (सं.) तुरगराजः २. सादिन्
 २. भरतमातुलः ३. नृपविशेषः ।
 —पाल, सं. पु (सं.) घोटकरक्षकः ।
 —सेध, सं. पु. (सं.) वाजिनेधः, कतुभेदः । -
 —शाला, सं. स्त्री (सं.) मन्दुरा, वाजिशाला ।
 अध्याय, सं. पु. (सं.) चलश्कः पिप्लवः ।

अष्टम्यामा, सं पु (स मन्) द्रौणि, द्रोणा
यन, वृषीसुन, द्रोणाचार्यपुत्र ।

अश्वस्तन, वि (स) अश्वस्तनिक अश्वनन
अश्वनीय २ दरिद्र ।

अश्विनी, स स्त्री (म) शोठिकी, बहवा
२ प्रथमनक्षत्र, दाशायणी ।

—कुमार, स पु (स रो द्वि०) अश्विनीसुनौ
देवचित्रित्थवौ, दक्षी, रत्नैषी ।

अथाद्, सं पु, दे 'अथा' ।

अथादी, स स्त्री (स आषादी) आषाढामामस्य
भूमिमा ।

अष्ट, वि तथा स पु (स अष्टन्) दे 'आठ'

—अग, म पु (स न) यागस्याष्टांगानि
(= यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्या
हार, धारणा, ध्यान, समाधि) २ अशुर्वे
दस्य अष्टविभागा (शुल्य १०) ३ शरीर
स्याष्टांगानि वै प्रणामो विहित (= बानुपाद
इस्तवश्च शिरोवचनदृष्टिदृढय) ४ अष्टद्रव्य
घटितपूर्वोपकरणभेद । वि (स) अष्टावयव
२ अष्ट, सुभ वास्व ।

—अष्ट्यायी, स स्त्री (स) पाणिनीय
न्याकरणम् ।

—अष्टौण, स पु (स) अष्टास्र, अष्टकोणा
कृति (स्त्री) २ कुण्डलभेद । वि अष्टास्र,
अष्टास्रिय ।

—घातु, म स्त्री (स पु) घातवष्टकम्
(= सीना, चङ्गी, नौका, रोगा, असता,
सीसा, शोहा, पारा) ।

—पदी, स स्त्री (म) अष्टपदम्भूह
२ छन्दोभेद ।

—पहर, स पु (स-प्रहरा) दिनस्याष्ट
यामा । क्रि वि, अह्निसिद्धिदिवानिहम् ।

—मुजा, स स्त्री (स) दुर्गा विष्वावल
वासिनी देवी ।

—मूर्ति, म पु (म) शिव २ शिवस्य
अष्ट मूर्तय । (= पृथिवी, जल, अग्नि, वायु,
आकाश, यज्ञमात, सूर्य, चन्द्र अथवा शर्व,
मव, रुद्र, लय, भीम, पद्मपति, इष्टान,
महादेव) ।

—वर्ग, सं पु (म) औषधविशेषाष्टकम्
(= ऋषभ, जीवक, भेद, महादेव, ऋद्धि,
वृद्धि, शकरोष्ठी, शीरकाशकी) ।

अष्टक, म पु (स न) अष्टवस्तुसमुदाय
(७० द्विवष्टक) २ अष्टपद्यात्मकवाच्यम्
३ ऋग्वेदस्याष्टमो भाग ४ अष्टाध्वार्या ।

अष्टमी, स स्त्री (सं) तिथिभेद । वि स्त्री
(म) ।

अष्टादश, वि तथा म पु (म शन्) उक्ता
सुरया तद्दक्षोषकावकी (१८) च ।

अश्वक्य, वि (म) अश्वरदेव, अमत्यात,
अगणित, सुरदा-गणना, -अतीत, अगण्य ।

असरा, वि (स) एवम्, एकादिन्
२ निलिप्त ३ भिन्न ।

असगत, वि (स) पूर्वापरविहङ्ग, अमम्बट,
अप्रासंगिक २ अन्याय्य, अनुचित, अयुक्त ।

असगति, स स्त्री (स) अनन्वय सम्बन्धा
भाव २ अनौचित्यम् ३ अलकारभेद,
(सा०) ।

अमृतुष्ट, वि (स) मनेपरहित २ अमृत
३ क्षिप्र ।

अस्तोष, स पु (स) अमृतुष्टि (स्त्री),
सतोषामाव २ अमृति (स्त्री) ३ ह्,
म्लानि (स्त्री) ।

असवद्ध, वि (म) सवधरहित, अनवित
२ स्वतन्त्र ३ असगत, पूर्वापरसम्भारहित ।
असबाध, वि (स) विस्तीर्ण, अन्वीर्ण
शुय, भिन्न ३ सावकाश ४ निर्बाध ।

असमच, वि (स) अमाध्य, अशुभय, अवर
णीय । स पु, अष्टवारभेद (मा०) ।

असभावित, वि (स) आकस्मिक, अतर्कित ।

असभाष्य, वि (म) अनेकर्थ अविचार्य,
२ दुष्ट ।

असभाष्य, वि (स) अकथ्य अवाक्य
२, वातांलापायोग्य (म न) तुवचनम् ।

असयत्, वि (म) अनौष्ट, निरतुष्ट,
वच्छुद्ध २ नियमरहित, अनियम ३ अक्रम ।

असशय, वि (स) निर्विकार, मद्दहम्दय
रहित २ मश्व । वि वि (म न) निस्त
न्देहम् ।

असृष्टृत, वि (म) आदृष्ट, अमश्य, अवि
नीत, अपरिष्टृत ।

असगघ, म स्त्री (म अथा-घा) ह्य
सुरग-गथा, बन्दा, प्रियकारी, रमायनी,
कुडपाणिनी ।

असती, स स्त्री (स) कुलटा, पुश्चली ।
 असत्, वि (स) मिथ्या (अन्वयः), असत्य
 २ अविद्यमान, सत्ता अस्ति तत्त्व, हीन
 ३ अमद, दुष्ट ।
 असत्य, वि (स) अनृत, वितथ, अतथ्य,
 अयनार्थ, अलीक शृषा-, मिथ्या—
 —वादी, वि (स-दिन्) मिथ्या-शृषा अनृत,
 वादिन् माषिन् ।
 असत्यता, स स्त्री (म) अनृतत्व, अनत्यत्व,
 विनयता ।
 असन, म पु (म अशन दे०) ।
 असवाद्य, स पु (अ) परिच्छेद उपस्कर,
 वस्तुनात यात्रासामग्री, वस्त्रपात्र, सम्भार ।
 असम्बन्ध, वि (स) अशिष्ट, असस्कृत, प्रामीण
 २ असमासद्, असदस्य ।
 असम्बन्धता म स्त्री (स) अशिष्टता, असंस्कृति
 (स्त्री) प्रामीणता ।
 असमञ्जस, स पु (स न) सन्देह, संशय,
 द्वैधीभाव, निश्चयभाव २ विघ्न ३ (स
 पु) सगरपुत्र । वि., अमगन, अनुपयुक्त ।
 —मै पटना, कि अ, आशक विशक विकृष्टप
 (स्वा आ से), मशी (अ आ से),
 मनसा दोलायत (ना घा) ।
 असम, वि (स) अतुल्य, असदृश असदृश
 २ अयुग्म, विषम ३ उन्नतानत, असमरेख ।
 (स पु) अलकार-भेद (सा०) ।
 असमत, स स्त्री (अ) सतीत्वम्, पातिव्रत्यम्
 —परोक्ष, वि कुलटा, व्यभिचारिणी ।
 फरोक्षी, स स्त्री व्यभिचार, सतीत्व-विक्रय ।
 असमय, स पु (स) अकाल, दुसमय,
 विपत्काल । कि वि अकाले, अस्थाने, अथ
 धाकालम् । वि अनवसर, अ (आ) कालिक,
 असमयोचित ।
 असमर्थ, वि (स) बल-शक्ति हीन, अक्ष,
 दुर्बल, २ अक्षम अयोग्य ।
 असमर्थता, स स्त्री (स) अक्षता, अक्षमता ।
 असम्मल, वि (म) विमल, विरुद्ध २ अस्वीकृत ।
 असम्मति, स स्त्री (स) वैमत्य विमति
 (स्त्री) मतभेद विरोध ।
 असमान, वि (स) विजातीय, अतुल्य ।
 असमाप्त, वि (स) असंपन्न, अतवसित,
 अर्थात् ।

असमाहित, वि (स) चलचित्त, लोलबुद्धि,
 अपौर ।
 असर, स पु (अ) प्रभाव, प्रताप, प्रतिष्ठा
 २ फल, गुण, परिणाम ।
 —करमा कि स, प्रभाव जन् (प्रे०), फल
 उत्पद् (प्रे०) ।
 —होना, कि अ, परिणाम जन् (दि आ
 से) फल निष्पद् (इद आ, अ)
 असल, वि (अ) अकृतक, अकृत्रिम, निष्कपट
 २ उत्कृष्ट ३ शुद्ध, अमिश्रित । स पु, मूल,
 तत्त्वम् ४ मूल धन द्रव्यम् ।
 असलह, स पु (अ० 'सिलाह' का बहु०)
 शूखात्म २ कवच-न्वम् ।
 असलियत, स स्त्री (अ) सत्यता, वारत
 विकृता २ मूल, तत्त्व, सार ।
 असली, वि (अ) दे 'अमल' वि० ।
 असह, वि (स असह दे०) ।
 असहन, वि (स) दे 'असहनशील' ।
 —शील, वि (स) अमर्षण, अक्षमिन्, अस
 हिष्णु, असहन, अक्षम ।
 —शीलता, स स्त्री (स) असहिष्णुता,
 क्षमा मरण तितिक्षा, अभाव ।
 असहनीय, वि (स) दे 'असह' ।
 असहयोग, स पु (स) असहकारिता,
 असाहाय्य, असहयोग ।
 —नांदोलन, स पु (स न) असहकारिता
 व्यापार ।
 असह्य, वि (स) असहनीय, असोढ्य, सह
 नायोग्य, दुःसह, दुर्विषय ।
 असहाय, वि (स) निराश्रय, निरावलम्ब,
 अगतिक, अशरण ।
 असहिष्णु, वि (स) दे 'असहनशील' ।
 असहिष्णुता, स स्त्री (स) दे असहन
 शीलता ।
 असाप्रत, वि स (स) अशोभन, अनुचित २
 अक्षमयिन् ३ वर्तमानासम्बद्ध ।
 असाप्रदायिक, वि (स) अमतवादिन्, उदार
 २ परम्पराविरुद्ध ।
 असा, स पु (अ) दण्ड, लगुण, यष्टि
 (पु स्त्री) ।
 असाङ्ग, स पु (स आसाङ्ग) वर्षस्य चतुर्थमास ।

असादी, वि (हि असाढ) आषाढसम्बन्धिन् ।
 स खी आषाढोत्तर शब्द २ आषाढपूर्णिमा ।
 असाधन, वि (स) साधन उपाय, -हीन-
 रहित, निरुपाय, निरसाधन ।
 असाधारण, वि (स) विशेष, विलक्षण,
 अद्भुत (—णी खी) ।
 असाध्य, वि (स) अज्ञेय, अनिष्पाय
 २ दुःसाध्य, दुष्कर ३ अचिकित्स्य, दुश्चचार,
 निरुपाय, अप्रतिकार्य ।
 असामयिक, वि (स) अनवसर, असमयो
 चित्त, अ(आ)कालिक (—की खी) अमास
 काल, अस्थान ।
 असामर्थ्य, सं खी (स न) दे 'असमर्थता' ।
 असामी, सं पु (अ आसामी) जन, पुरुष
 २ कृषक ३ प्रत्यर्थिन्, प्रतिवादिन्
 ४ अपराधिन्, दण्ड्य ५ मित्र सखि (पु) ।
 स खी, परकीया २ वेश्या ३ दासवृत्ति
 (खी) ४ रिक्तस्थानम् ।
 असा—, स पु, ऋणशोधक ।
 असा—, स पु, ऋणशोधाक्षम ।
 मोटा—, स पु, धनाढ्य ।
 औवट—, स पु बद्धमुष्टि, अदित्त ।
 असार, वि (स) निस्तार, फल्यु, निष्फल
 २ रिक्त ३ तुच्छ । स पु, शरणा २ अगह ।
 असारता, स खी (स) निस्तारता, तत्त्व
 राहित्यम् २ मिथ्यात्व ३ तुच्छता ।
 असात्त, स खी (अ) कुलीनता २ सत्यता ।
 असात्तन्, कि वि (अ) स्वय, स्वत
 (दोनों अर्थय) ।
 असावधान, वि (स) प्रमात्त, प्रमादिन्,
 म-दादर, अनवधान, अनवहित ।
 असावधानता, स खी (स) प्रमाद, मनो
 योगभाद अनवधान उपेक्षा ।
 असावधानी, स खी दे 'असावधानता' ।
 असावरी, स खी (स अ(आ) शवरी)
 रागिणीभेद ।
 असासा, स पु (अ) सम्पत्ति (खी),
 विभव ।
 असि, स खी (स पु) सह्य २ नदीविशेष ।
 असिक, स पु (स न) विपुकापरयो
 मध्यभाग ।

असिकी, स खी (स) नदीविशेष (वना)
 २ अन्त पुरचारिणी अष्टा दासी ।
 असित, वि (स) कृष्ण, नील, श्याम,
 मेचक २ दुष्ट ३ वक्र ।
 असितांग, स पु (स) शिव । वि, कृष्ण, =
 अग रूप देह ।
 असिता, स खी (स) दे 'यमुना' ।
 असिद्ध, वि (सं) अनिष्पन्न २ अपक
 ३ अपूर्ण ४ निष्फल ५ अप्रमाणित ।
 असिद्धि, स, खी (स) निष्फलता, विकलता
 २ अपुष्टता, अपक्वता ।
 असिस्टेंट, वि (अ) सहायक, सहाय, उप- ।
 —एडिटर, स पु, उपसम्पादक ।
 असी, स खी (स असि पु अमी) काशी
 दक्षिणवर्तिनी नदी ।
 असीम, वि (स) निस्सीम, निरवधि २ अमित
 ३ अपार ४ अगाध ।
 असील दि (अ अमल) दे 'अमल' ।
 असीर, स पु (अ) ग्रहक, कारागृह ।
 असीरी, स खी (फा) कारावास, आक्षेप,
 निरोध ।
 असीस, स खी (स आशिम् खी) आशीर-
 वाद वचन, मङ्गलशब्द ।
 असु, स पु (स) प्राणा असव (दोनों
 बहुवचन) ।
 असुविधा, स खी (स >) कठिनता,
 शोकसोभाव २ विघ्न ।
 असुर, स पु (सं) दैत्य, राक्षस २ रात्रि,
 ३ दुर्जन ४ पृथिवी ५ सूर्य ६ मेघ ७ राहु
 ८ उन्मादभेद ।
 —अरि, स पु (सं) विष्णु २ देवता ।
 —गुर, स पु (स) शुक्राचार्य ।
 असूया, स खी (स) परगुणेषु दोषारोप
 २ सन्धारिभावभेद (सा) ।
 असूयमय्या, वि खी (सं) अवरोध-अन्त पुर-
 वर्तिनी, अवगुण्टमवती, अत्रिलज्जावती ।
 असूल, स पु, दे 'उसूल' २ द 'वसूल' ।
 असेसर, स पु (अ एसेसर) सभ्य,
 समासद् ।
 असोज, स पु (स अथयु > ज्) आश्विनमाम ।
 असोसिवेशन, स खी (अ) समा, समाज ।

असौम्य, वि (स) कुरूप, कुदर्शन २ अभिय,
अरुचिर ।
असौष्टव, स पु (स न) कुरूपता, सौन्दर्या
भाव । वि, कुरूप, अद्भुत-दर ।
अस्त, वि (स) गुप्त, तिरोहित २ अदृष्ट,
लुप्त ३ नष्ट, ध्वस्त । स पु, तिरोधान, लोप,
अदर्शनम् ।
—गत, वि, (स अस्तगत) लुप्त, अस्तमित,
अदर्शनगत ।
अस्तबल, म पु (अ) मन्दुरा, अध-वाजि-
घोटक-शाला ।
अस्तमन, स पु (स न) अदर्शन, तिरोधान
२ सूर्यादीनामस्तोऽस्तमयो वा ।
—वेला, साय, सायकाल, दिनावसान, प्रदोष ।
अस्तमित, वि (स) अस्तगत, अदृष्ट, तिरो
हित २ नष्ट, मृत ।
अस्तर, स पु (फा) अंतराच्छादन अन्त पट ।
—कारी, स स्त्री (फा) सुपालेप २ (पल
स्तर) उपनाह उपदेह ।
अस्त व्यस्त, वि (स) स प्र-वि-आ, -कीर्ण,
सकुल, अयवस्थित ।
अस्ताचल, स पु (स) अस्त-पश्चिम, -गिरि -
पन्त ।
अस्तित्व, स पु (स न) भाव, सत्ता,
विद्यमानता ।
अस्तु, अव्य (स) यद् मवि नद् भवतु
२ वाड भवतु भद्रम् (सब अव्य) ।
अस्तेय, स पु (स न) स्तेय मोष-चौर्य
स्ते य-त्याग ।
अस्त्र, स पु (स न) प्रहरण, आयुध, क्षिपणी
णि (स्त्री) २ शस्त्रम् ।
—चिकित्सक, स पु (स) शल्यशास्त्रज्ञ,
शल्यवेद्य, शल्यतज्ज्ञविद् ।
—चिकित्सा, स स्त्री (स) शल्य, शल्यवेद्यक,
शल्यशास्त्रम् ।
—विद्या, स स्त्री (स) पुढशास्त्र सामागिक,
आयुध रण विद्या ।
—वेद, स पु (स) धनुर्वेद ।
—शाला, स स्त्री (स) अस्त्र आयुध, आगार,
शस्त्रगृहम् ।
अस्थि, स स्त्री (स न) कौकस, कुण्ड, भेदोजम् ।

—पजर, स पु (स) कंकाल, बरक,
देहास्थिसंग्रह ।
अस्थिर, वि (स) घपल, चञ्चल, तरल २ चल
चित्त, लोलमति ।
अस्थिरता, स स्त्री (स) चाञ्चल्य, तारक्य,
अस्थैर्यम् २ चलचित्तता, मनोलैर्यम् ।
अस्पताल, स पु (अ इतिपठल) आत्रुरालय,
चिकित्सालय, रुग्णागार आरोग्यशाला
२ औषधालय ।
अस्पष्ट, वि (स) अप्रकट, अस्पष्ट, अविशद
२ दुर्बोध, सदिग्ध ।
अस्पृश्य, वि (स) स्पर्शायोग्य २ अस्पर्श
नीय, अत्यज, हीनवर्ण, दुष्कुलीन ।
अस्पृष्ट, वि (स) निरस्पृष्ट, लोभरहित, अलोडुपः
अस्पृष्ट, वि (स) अस्पष्ट, अग्यक्त, गुप्त, परोक्ष ।
अस्वाव, स पु दे 'असवाव' ।
अस्मार्त, वि (स) स्मरणातीत २ अवैध,
आर्यशास्त्रविरुद्ध ।
अस्मिता, स स्त्री (स) बलेश्मेद (यो)
२ अहकार ।
अस्त्र, स पु (स) कोण २ केश ।
अस्त्रै, स पु (स न) रक्त, रुचिर २ अश्रु
(न), नयनजलम् ।
अस्त्र, दे 'असल' ।
अस्वस्थ, वि (स) रुग्ण, -याधित, रोगिन्
२ न्ययित ।
अस्वाभाविक, वि (स) अनैसर्गिक, निसर्ग
प्रकृति सृष्टकम, विरुद्ध २ कृत्रिम, कृतक ।
अस्वास्थ्य, स पु (स न) रोग, व्याधि,
गद, आमय ।
अस्ती, वि (स अस्तीति स्त्री) । स पु उक्ता
सत्त्वा, सत्त्वोपकारकौ (६७) च ।
अह, सर्वं (स०) । स पु अह, -कार -कृति
(स्त्री) भाव पूर्विका, आत्मभिमान ।
अहकार स पु (स) गर्व, दप मद, माद,
आटोप, मान, उत्तेक अह, -मान भाव -
कृति (स्त्री) २ अत करणस्य भेदविशेष
(वे) १ महत्तरवजानो द्रव्यविशेष (सा)
४ अस्मिता ५ ममत्वम् ।
अहकारी, वि (स रिन्) दृप्त गर्वित, अव
लित, उदत, मत्त, उत्तेकिन्, अभिमानिन् ।

अहयाद्, स पु (स) आरमशावा, अहका
 रौकि (स्त्री), विकल्पनम् ।
 अह, स पु (स-अहन् न) दिन, दिवस
 २ सूर्य ३ विष्णु ।
 अह, अय (म अह् अय्य) आश्वयैतेदके
 शान्तिबोधकमन्वयम् ।
 अहद्, स पु (अ) प्रतिष्ठा, स-प्रति,-द्रव-
 ५ सकल्प ३ शासनकाल ।
 —नामा, म पु, प्रतिष्ठा समय, पत्र लेख्यम्
 २ मन्त्रपत्रम् ।
 —शिकन, स पु, प्रतिष्ठाविद्, असत्यसन्ध ।
 —शिकनी, स स्त्री, प्रतिष्ठाभग, असत्य
 सन्धत्वम् ।
 अहन्, स पु (म न) दिन दिवस ।
 अह्निसि, अव्य दे 'अह्निसि' ।
 अहवाच, स पु (अ, 'हवी' का षड्)
 अहम्, वि (अ) महत्त्वपूर्ण, आयावश्यक ।
 अहमक, वि (अ) जह, मूढ, मूर्ख ।
 अहमहमिका, म स्त्री (स) अहमिका
 प्रति, रपडा ।
 अहरमति, म स्त्री (स) अहकार २ अविद्या ।
 अहर, स पु (स आहर >) जलाशय ।
 अहरन, म स्त्री (स आ+परण <) शर्म,
 शर्म, शर्मिका, स्थूणा शर्मि (पु स्त्री) ।
 अहरह, अव्य (स) प्रति अह् दिन, प्रायह,
 दिने दिने ।
 अहरा, स पु (स आहर >) गोमदविहरादि
 २ गोमयाग्नि ३ पथिकाश्रम ४ प्रया ।
 अहरी, म स्त्री (हि अहरा) प्रया २, जला
 धार ।
 अहर्निश, कि वि (स श) दिवानिश, रात्रि
 दिवम् २ नित्यम् (सब अव्य) ।
 अह्लकार, स पु (फा) राज,-पुत्र-भृत्य
 २ प्रतिनिधि, प्रतिहस्त ।
 अह्लमद्, म पु (फा) अधिकरणेयव ।
 अह्ल्या, वि (स) कर्मगायोग्या (भूमि) ।
 स स्त्री गीतमपरी ।
 अह्मान, म पु (अ) उपकार, हित
 २ कृपा ३ कृतज्ञता ।
 —परामोश, वि (फा) कृतज्ञ (-ग्री स्त्री),
 अह्न, अ-वेदिन् ।

—परामोशी, स स्त्री (फा) कृतज्ञता,
 उपकारविश्मरण, अकृतवेदिता ।
 —मद्, वि (फा) कृतज्ञ, कृतवेदिन् ।
 —मदी, स स्त्री (फा) कृतज्ञता उपकार
 शता ।
 अहह, अव्य (स) आश्वयैतेदकेशोकादि
 सूचकमन्वयम् ।
 अहो, अव्य (अतु) मा, गो, न ।
 अहा, अव्य (स अह्) ह्यैप्रशोसादिमूचक
 मन्वयम् ।
 अहाता, स पु (अ) परितरभूमि (स्त्री),
 प्रागण (-न) २ प्राकार, प्राचीरम् ।
 अहार, स पु, दे 'आहार' ।
 अहार्य, वि (स) अचोरणीय, अमोघणीय ।
 २ अचञ्छलदिग्नि अवश्य-अद्वन्द्व ।
 अहाहा, अव्य (म अह्) हर्षसूचकमन्वयम् ।
 अहिसक, वि (स) अहिंस, अघातुक (-की
 स्त्री) २ अदृष्टद ।
 अहिंसा, सं स्त्री (स) हिंसा-अपकार-द्रोह
 वैर,-त्याग ।
 अहिंस्र, वि (स) दे 'अहिसिक' ।
 अहि, स पु (म) सर्व २ वृत्राण्ड ३ भूमि
 (स्त्री) ४ सूर्य ५ राहु ६ स्रक ।
 अहित, वि (स) वैरिन्, द्रोहिन् २ हानिकर
 (-रौ स्त्री) । स पु (म न) अमगल, अमदम् ।
 अहिषेन, म पु (स पु न) सर्पविष,
 सर्पमुसलाला २ (अफीम) अफेन, अहिफेनम् ।
 अहिम, वि (स) तप्त, उष्ण ।
 —कर, स पु (स) सूर्य ।
 अहिवात्, स पु (म अभिवाध >) नौमाग्य,
 सधवात्, सत्कारव, धतिमत्ता ।
 अहिवातिन,-ती, (हि अहिवात्) सौभाग्य
 बनी सधवा, समर्पिता ।
 अहीर, म पु (स आभीर) गोप गोपाल,
 गोपाकक गोमत्य, बहव ।
 अहीरिन,-री, स स्त्री (स आभीरी) गोपी,
 गोपिका, दोहिनी, गोदोहिनी ।
 अहीना, स पु (स) शेषभाग, सर्वराज
 २ शेषावतारा (लक्ष्मणवत्तरामादय) ।
 अहुत, स पु (स) जप, मन्त्रपठ, वेदपाठ ।
 अह, अव्य (स) हे, अयि, भो ।

अद्वैत तुक्, वि (स) अकारण, निष्कारण,
निनिमित्त, ० व्यर्थ, निष्फल ।

अद्वैत, स पु (स आसट) मृगया,
मृगयम् २ वयजन्तव, (बहु०) ।

अद्वैतिया, अद्वैती, म पु (हि अद्वैत) व्याप,
लुम्बक मृगयु आसटक ।

अद्वैत, अव्य (न) द्वे, अर २ करुणखद्वयै
प्रशसामूचकमव्ययम् ।

अद्वैतभाव्य, म पु (स न) सौभाग्य, पुण्यो
दय, मात्यापचय ।

अद्वैत बहोर, क्रि वि (दि बहुराना) भूषो
भूय, वार वार (दोनो अव्य०) ।

अद्वैतरात्र, स पु (स पु न) दिवानिश
कहनिश दिवारत्र नक्तदिवम् (म व अव्य) ।

आ

आ, देवनागरीवर्णमालाया द्वितीया स्वरवर्ण,
आकार ।

आ, अव्य (म) स्वीकृत्यनुक्पाकोपशोकरम्
त्यादिसूचकमव्ययम् ।

आँक, स पु (सं अक) चिह्न, अभिज्ञानम्
२ सरयाचिह्न, अक ३ वर्ण, अक्षरम्
४ सिद्धान्त ५ अक्ष, भाग ६ वक्ष
७ पक्ष, क्रोटम् ८ रेखा ९ मूल्यसन्नेत ।

आँकडा, स पु (हि आँक) सरयाचिह्नम्
अक २ व्यावर्तनकौल (पेंच) ।

आँकडे, पु (हि आँक) अका ।

आँकना, क्रि म (स अकनम्) अक (तु,
स्वा आ से), चिह्नयति मुद्रयति (ना भा)
क छ (स्वा प से), २ ऊर्ध्व (स्वा आ
से), उक् (तु) ।

आँकुम्, स पु, दे 'अकुम्' ।

आँक्य, स स्त्री (स अक्षि न) बहुस (न),
वि-मीचन नेत्र, नयन, इक्षण, दृश दृष्टि
(दोनो स्त्री) ० नयनाकार चिह्नम् ३ सूची
छिद्रम् ४ वृषा ५ विवेक ६ निरीक्षणम् ।

—अजनी, म स्त्री (स अक्षि + अजनम् >)
पद्मपिटिका ।

—का गोला म पु, अग्निगोलकम् ।

—का पर्दा, म पु अक्षिपटलम् ।

—मिचौली, स स्त्री, अक्षिनेत्रो, बाल
क्रीदामेद ।

—लागी, म स्त्री, उपपरनी, मुजिष्या ।

—आना, मु, नेत्रपाक ।

—उठाकर न दस्तना, मु, आदगण्-अवपीर (तु) ।

—उठाना, मु, इत् (स्वा प अ) २ अप
कर्तुं यत् (स्वा आ से) ।

—का काजल चुराना, मु नीर्यपाटवम् ।

—का तारा, मु, ताराका, कनानिका २, रनेद
भाजनम् २ एकल पुत्र ।

—की मैल, म स्त्री, दूषिका, अक्षिमलम् ।

और्वं चार करना, मु, परत्परारम्भोक्तम् ।

—चुराना वा छिपाना, मु, निली (दि आ अ)
२ परदर्शन परिद्ध (स्वा प अ) ।

—क्षपकना, मु, निद्रावश (वि) भू २ निमित्त
(तु प से), निमील (स्वा प से) ।

—ठडी करना, मु, दर्शनेन प्रसद (स्वा प अ) ।

—दबदबाना, मु, साक्षनयन (वि) भू ।

—दिलाना, मु, सरोप बीश (स्वा आ से)
० भी जम् (प्रे) ।

—नीची होना, मु, ऊर्ध्वत् (स्वा आ स) ।

—नीली पीली करना, मु, अत्यन्त कुप् (दि
प से) ।

—पर पर्दा पडना, मु, विमुद् (दि प से) ।

—पर बैठाना, मु अत्यन्त समन् (प्रे) ।

—फटकना, मु, नेत्र रज्जुर् (तु प से) ।

—पेर लेना, मु, अवमन् (दि आ मे) २
प्रतिवृत् (वि) जन् (दि आ स) ।

—बद करलेना, मु मृ (तु आ अ) ।

—विद्याना, मु, प्रेम्णा प्रविश (प्रे) २ सरनेद
प्रतीक्ष (स्वा आ से) ।

—भर खाना, मु, साक्षनेत्र (वि) जन् ।

—मटकाना, मु, सदाव वीक्ष (स्वा आ से) ।

—मारना, मु, निमेषण सूच् (तु) ।

—मिच जाना, मु, मृ (तु आ अ) २ दे
'क्षपकना ।

—मिलाना, मु, सदाव दृश (म्या प अ) ।

—मीचना, मत्र निमील (स्वा प स) ।

—म घर करना, मु, इदये वस (स्वा प अ) ।

—में चरवी छाना, मु, दर्पाथ (वि) जन्
(दि आ से) ।

—म धूल शोषना, मु, प्रतृ (प्रे) ।

—लगना, मु, स्वप् (अ प अ) २ बद्धभाक्
(वि) मू ।

—संकना, सु, सौन्दर्यदर्शनेन प्रसद् (भ्वा प अ) ।

—से गिरना, सु, अवगण् अवमन् (कर्म) ।

आंग, वि (स) शारीरिक, दैहिक २ अग्निन्, अदययिन् ३ अगदेशन ।

आंगन, स पु (स अगन णम्) अग्निर, प्रांगणम् ।

आंगिक, वि (स) शारीरिक दैहिक, कायिक (—नी स्त्री) स पु, अभिनयभेद ।

आँच, स स्त्री (स अचि स स्त्री, न०) ताप, दाह, उष्णता, कम्भ २ अग्नि, ज्वाला शिखा जिह्वा ३ अग्नि अनल ४ शानि (स्त्री) ५ विपत्ति (स्त्री) ।

—आना या खाना वा पहुँचमा वा लगाना, कि अ, तप (दि आ अ), ज्णो भू ।

—देना, कि स तप् (प्रे) ।

—न आने देना, सु, कष्टाद् प्रै (भ्वा आ अ) ।

आँचल, स पु (स अचल णम्) पटात्, वल्गप्रान्त २ प्रातभाग ।

—देना, सु स्तन्य दा (जु उ अ) ।

—में बाँधना, सु, स्मरणार्थं पटप्रान्ते ग्रथिदा नम् २ निश्च पाश्वर्षे स्थापनम् ।

—औँजन, स पु, दे 'अजन' ।

आजनेय, स पु (स) इनुमत्, माकृति पवनपुत्र ।

आँट स स्त्री (हिं अटी) करतले अगुष्ठनभे -योर्मध्यस्थानम् २ पण, रूह (दाँव) ३ विरोध ४ नीबो, वधनम् ५ पीटलिका ।

—सोँट, स स्त्री, सहकारिता २ संश्लेष ३ कुमत्रणा ।

आँटी, स स्त्री (आँटना) लवणुप्योडलिका २ सूत्र पत्नी पत्रिका ३ बालकीबोपयोगी वाण्डल दमेद ४ शादीप्रथि (पु) ।

आँटी, स स्त्री (स अष्टि स्त्री) फल, बीज शम्भ २ ग्रथि ३ ज्ञेयताम्भन ।

आऊ, वि (स) अण्ड,—ज—उदभव । स पु (स) हिरण्यगर्भ, ।

आँत, स स्त्री (स अत्रम्) पुरीतद (पु न) परित्र (पु न) ।

—उतरना, सु, अवस्रतेन अववृद्ध्या वा पीड् (कर्म) ।

, ध्रुयन्त्रम् ।

—वही, वृद्धन्त्रम् ।

आतर, वि (स) आभ्यन्तर, अतरात्, अन्तरग ।

आतरिक, वि (स) अन्तरगत, अन्त स्थ, आन्तर, आभ्यन्तर (—री स्त्री), अन्त (उ अन्त वेदना) २ मानसिक, हार्दिक, आरिभक ।

आदेशलन, स पु (स न) चेष्टा, प्रवृत्ति (स्त्री) २ असकृत्कपनम् ३ क्षोभ, विप्लव, प्रकोप ।

आँधी, स स्त्री (स अधम् >) वात्या, चह महा-अति वात, प्रमत्रन, प्रकपन ।

आँध्र, स पु (स आंध्रा) दक्षिणापथे प्रात विशव २ आ भवासिन् ।

आँय यौंय, स स्त्री (अनु०) प्रलाप, जल्पितम् ।

आँव, स स्त्री (स आम >) शेषमन् (पु) ।

—गिरना, कि अ आमानिसारेण पीड् (कर्म) ।

आँवळ, स पु (स उव्वम्) कजळ (पु न), जरायु (न) ।

नाल, स स्त्री, नाभि, नाल नाडी ।

आँवळगटा, स पु (हिं आँवळा + गाँठ) द्युष्कामलकम् ।

आँवळा, स पु (स आमलक-कर्म की) अमृता, शिवा, शांता, धात्री, श्रीफला ।

आँवीं स पु (स आपाक) कुम्भकारपरत्र पाकस्थानम् ।

आँशिक, वि (स) आंगिक, मांगिक, खाण्डिक ।

आँसू, स पु (स अश्रु न) नास्य, अक्ष, नेत्र-मयन,—जल-वारि-उदकम् ।

—गिराना, कि स, रुद् (अ प से) ।

—पी जाना, सु, अश्रूणि अव स भि, रुद् (र उ अ) ।

—पौँछना, सु, आ समा-भस् (प्रे)

ओहाँ, अ (अनु) न, जो, मा (सव अन्य) ।

आहसकीम, स स्त्री (अ) हिम्, सप्तानी शर ।

आई, स स्त्री (हिं आना) वृ पु । कि अ आपत्त ।

आईन, स पु (अ) विधि, विधानम्, निषम २ सविधानम् ।

आईना, स पु (फा) सुन्दर, दर्पण ।

आक, स पु (स अर्क) मन्दार, क्षीरदल, तूपल सूपाई, सदापुष्प ।

—की बुद्धिया, सु, मन्दाश्रुपुष्पम् २ अतिबुद्धा नारी ।

आकर, सं पु (सं) ख(खा)निनि (खी) वरपत्तिस्थानम् २ निधि, माण्डागारम् ३ प्रकार, भेद ।

—भाषा, म स्त्री मूलप्राचीनभाषा (उ०) हिन्दी की आकरभाषा संस्कृत, उर्दू की फारसी ।
आकर्षक, वि (स) आकर्षणकर २ मनोहर ।
आकर्षण, स पु (स न) आकर्ष, आवर्जनम्, अनुकर्ष अनुकर्ष अनुकर्षणम् ।

—करना, क्रि स, आ समा, कृष (स्वा प आ), आवृज (चु) २ विमुद (प्रे०) ।
आकर्षित, वि (स) कृताकर्षण २ प्रलोभित ।
आकलन, स पु (स न) ग्रहणम् २ मचय ३ गगनम् ४ अनुष्ठानम् ५ निरीक्षणम् ।

आकस्मिक, वि (स) अवापड, अचिन्तितपूर्व, हठाजान ।

आकांक्षा, स स्त्री (म) इच्छा, अभिलाष, स्पृहा, वाञ्छा २ अपेक्षा ३ अनुसंधानम् ४ वाक्ये शब्दस्य शब्दांतराश्रितत्वम् ।

आकांक्षी, वि (स) क्षिन् इच्छुक, अभिलाषिन्, ईप्सु, सस्पृह ।

आकार, स पु (स) आकृति मूर्ति (स्त्री), रूपम् २ कायपरिमाणम् ३ अवयवसंस्थानम् ४ निदम् ५ चेष्टा ६ 'आ' इति वर्ण ७ आह्वानम् ।

—गुप्ति, स स्त्री (स) अवहित्या ।

आकारण, स पु (स न) आह्वानम्, आम प्रणम् २ दे 'चुनीती' ।

आकारवान्, वि (स-वत्) साकार, मूर्तिमत् विग्रहिन् ।

आकालिक, वि (स) अक्षानयिक ।

आकालिकी, स स्त्री (स) दे 'विजली'

आकाश, स पु (स पु न) गगन, नभस, विवत्, व्योमन् (स न), अवर, अतरिक्ष, ख, नाक, दिव्, सो (दोनों स्त्री), विहायस (पु न), विहायस, अध, पुंकर, अनन्त, विष्णुपद, तारापथ ।

—कुसुम, स पु (स न) खपुष्प, शश, विषाण-शृङ्गम्, असम्भव वस्तु (न) ।

—गगा, स स्त्री (स) मन्दाकिनो, स्वर्णदी ।

—चारी, वि (स) रिन् घञ्चर, नभश्चर (-चरी स्त्री) । स पु सूर्यादिग्रहा २ वायु ३ खग ४ देव ५ राक्षस ।

—बेल, म स्त्री (सरी-बही) अमरबही, खवही, व्योमलतिका ।

—भाषित, सं पु (स न) गगनलपितम्, नाख्ये भाषणभेद ।

—घाणी, स स्त्री (स) देववाणी, अशरीरिणी वाक (स्त्री) ।

—वृत्ति, स स्त्री (म) अनियतो घनागम ।

—चूमना, मु, अत्रकिह् (अ० प अ), गगन जुम्ब (स्वा प से) ।

—पाताल एक करना, मु, अत्यर्थ प्रयत् (स्वा आ से) ।

—पाताल का अन्तर, मु, महदन्तर, महान् भेद ।

आकुञ्चन, स पु (स न), सकोचन, समा वर्ष, सकाचन, प्रसूनस्य संक्षपण, वक्रत्वसम्पादनम् ।

आकुञ्चित, वि (स) सकोचित २ वक्र ।

आकुल, वि (स) व्याकुल, उद्विग्न, व्यग्र, क्षुब्ध, अशान्त, -यत्न, विह्वल, कानर २ समाकीर्ण, सकुल ।

आकुलता, स स्त्री (स) उद्वेग, क्षोभ, अशान्ति (स्त्री) ।

आकृति, स स्त्री (स) अभिप्राय, आशय २ उत्साह ३ सदाचार ।

आकृति, स स्त्री (स) आकार, रूप, मूर्ति (स्त्री) २ मुख, आननम् ३ अवयवसंस्थान, शरीररचना ४ मुद्रा, चेष्टा ५ जाति । (स्त्री न्या) ।

आकृष्ट, वि (स) आकर्षित, कृताकर्षण ।

आक्रन्द, स पु (स) रोदन, रुदितम्, चींकार २ युद्धबोध ३ तुमुल्युद्धम् ।

आक्रमण, स पु (स न) आक्रम, अवस्वद, अभिद्रव, अभिप्रयाण, आपात २ रोषन, अव-वप, -रोष ३ आक्षेपण, निन्दनम् ।

आक्रांत, वि (स) अभिद्रुत, अभिप्रयात, २ अभि-परा-वशी, -भूत ३ परिवेष्टित ४ व्याप्त, आकीर्ण ।

आक्रामक, स पु (स) अभियात्, अभियायिन्, आक्रमणकारिन् ।

आक्रोश, स पु (स) शोष, आक्षेप, गाली दानम् ।

आक्षेप, स पु (स) अक्वाद्, दोषारोप २
पातन, प्राप्तनम् ३ कट्टिकि (खी) ४
अगकपुत्री वातरोगभेद ।

आक्साइड, स पु (अ) जारेषम् ।

आक्सिजन, स पु (अ) जारक, ओषजनम् ।

आखडल, स पु (स) इद्र ।

—सूत्र, स पु (स) अर्जुन ।

आखत, स पु (स अक्षता) अखडितद्वीद्वय ।
वि, अखडित ।

आखर, न पु दे अक्षर ।

आखिर, वि (अ) अग्निम अत्य २ समाप्त ।

न पु अत, अवसानम् ३ परिणाम, फलम् ।

कि वि, अन्त २ विवश (वि) भूत्वा
३ अवश्यम् ४ कषचिद् ।

—कार, कि वि, अन्ते, अन्तत ।

आखिरी, वि (पा) अन्तिम, अत्य, चरम ।

आखेट, न पु (स) शृगया, दे शिकार ।

आखेटक, स पु (स) व्याध, आखेटिन् ।

आख्या, स स्त्री (स) नामन् (न), सहा
२ यशस (न), कीर्ति (खी) ३ विवरण,
व्याख्या ।

आख्यात, वि (स) विख्यात, प्रसिद्ध २ कथित
३ विकृतकिया ।

आख्यान, स पु (म न) कथा, आर्यायिका
२ वर्णन वृत्तान्त ।

आर्यायिका, स स्त्री (स) कथा, वृत्तान्त,
आर्यानम् २ आर्यानभेद ।

आगन्तुक, वि (स) आयात्, आगत २
२ अतिथि, अभ्यागत ।

आग, न स्त्री (स अग्नि) अन्नक, पावक,
दहन, चरुण, वेदि वृक्षात्, वृत्ताशन,
दुतवद्, उपरुध, इष्यवादन, चित्रभानु, शुक्र,
शुचि २ ताप ३ कामाग्नि ४ वात्स
व्यम् ५ ईर्ष्या । वि, असुष्ण १ क्रुद्ध ।

—का पुत्रला मु बोधिन् २ चपल ३ निपुण ।

—खाना अंगार हगना, मु, दुष्कृतस्य फल
विपद् (खी), धो यद् अपति बीजं हि सोपि
तन्ममेवे कलम् ।

—पानी (पूस) का बेर, मु, सहज बेरम्,
शापतिकी विरोध ।

—यूला (धगुला) होना मु, निररी कुप्,
(दि प से) ।

—भडकाना, मु, बेरोदीपनं, कोषोदीपनम् ।

—लगना, मु, चक्कनम् २ कुप ३ ईर्ष्य
(भा प से) ४ वस्तुनां बहुमूल्यात् ।

—लगाना, मु, आवेशवर्षनम्, कोषोत्पादनम्
२ नाशनम् ।

—लगा कर पानी को दौटना, मु, कलिमुखाद्य
शांतेये प्रयत्न ।

—लगने पर कूर्छो खोदना, मु, सदीप्त भवने
कूपसननम् ।

—लगा कर तमाशा देखाना, मु, कलिमुखाद्य
मनोविनोदनम् ।

—होना, मु, अर्यभे कुप ।

पानी में भाग लगाना मु, अशक्यकरण,
खपुष्पत्रोटनम् । पेट की भाग, मु धुधा,
ब्रुमुधा ।

आगत, वि (स) प्राप्त, उपस्थित २ अतिथि ।

—स्वागत, स पु (न) आतिथ्य, सरकार ।

आगम, न पु (म) आगमन, प्राप्ति (खी)
२ भावि-आगाधि,-काल ३ मास्य, देवम्
४ संगम, समागम ५ आय ६ प्रकृतिप्रत्य
यानुपपाती भाग-तुको वर्ण (व्या) ७ उपपत्ति
(खी) ८ शब्दप्रमाणम् (यो) ९ वेद,
शास्त्रम् १० तन्त्रशास्त्रम् ११ नीतिशास्त्रम् ।

—जानी, वि (म-ज्ञानिन्) पूर्वादिन्,
अप्रतिरूपक, सिद्ध, आदे (पु+ट+) =ट् ।

आगमन, स पु (स न) आगति (खी),
आगम २ आय, काम ।

आगमापायी, वि (स-यिन्) अनित्य, अनुव,
ज मनुरणशील ।

आगर, स पु (स आकर) ख (खा) नी-
नि (खी) २ समूह ३ निधि ४ लक्षणार्थ ।

आगर, स पु (स अर्गल ला) द्वारविश्वम् ।

आगर, न पु (स आगारम्) गृह सदनम्

आगर, वि (स अग्रव) श्रेष्ठ, उत्तम २ दध ।

आगस्ती, न स्त्री (स) दक्षिणदिशा दक्षिणा,
यामी ।

आगा, स पु (स अग्रम्) अग्र पुरी,-भाग
२ उरस, वधत् (दानो न) ३ मुखम्
४ मरुतम् ५ जननेन्द्रियम् ६ मनुकादी
नामप्रभाग ७ सेनाग्रम् ८ नौकाग्रभाग
९ गृहाग्रवति अग्रम् १० अवल लम्
११ आगाधिकाल १२ परिणाम ।

—पीडा, म पु (पु अग्र + पथ >) सशय , विमर्श २ परिणाम ३ अग्रपथभागौ ।

—पीडा करना, मु, दोलायते (ना व्या) ।

—पीडा सोचना, मु, परिणामचिन्तनम् ।

आगाङ्ग, स पु (का) आरम्भ, उपक्रम, आदि ।

आगामी, वि (म -मिन्) भाविन्, भविष्यत् ।

आगार, स पु (स न) अगार, गृह,

गेहम् स्थानम् २ कौष ।

आगाह, वि (का) ज्ञात, नोदय, अभिज्ञ ।

आगे, क्रि वि (स अगे) अग्रत, पुरत, पुर

स्वात् (म अन्व्य) २ समग्र, अभिमुखम्,

मुखम्, सम्मुखम् (स अन्व्य) ३ जीवनकाले,

उपरिपत्नी ४ आगामिसमये ५ अनन्तर, तदनु

६ पूर्व ७ क्रोडे ।

—आना, मु, प्रत्युद्यम् (भ्वा प अ) ।

—निकरना, मु, अतिशी (अ आ से) ।

—पीछे, मु, आनुपूर्व्येण, अनुपूर्वश २ प्रत्यक्ष

परोक्ष च (वा) ३ पूर्व पश्चाद् वा ४ यथा

वचाशम् ५ अक्रमम् ।

आग्नेय, वि (स) अग्नि, -मय-सवधिन् २

अग्निदेवताक ३ दाहक । स पु, (स न)

सुवर्ण २ रुचि ३ घृत् ४ दीपनीषधम् ।

स पु (स पु) वातिकेय २ अगस्त्य

३ देशविशेष ४ अग्निपूजक ५ ब्राह्मण

६ अग्निकोण ७ ज्वालासुप्त ।

—अच्छ, स पु (स न) अग्निवर्षकोऽस्त

भेद ।

आग्नेयी, स स्त्री (स) अग्ने पत्नी २ अग्नि

दीपनमौषधम् ३ दक्षिणपूर्वा दिशा ।

आग्रह, स पु (स) अति, निर्बन्ध, अति,-

याचना-प्रार्थना २ तत्परता, परायणता ३

बल, आदेश ।

आग्रहायण, स पु (स) मार्गशीर्षमास ।

आग्रहायणी, स स्त्री (स) आग्रहायण

मार्गशीर्ष, - पूर्णिमा ।

आग्रही, वि (स -हिन्) अग्निनेय, निर्बन्धवत्,

दुराग्रह, स्वैरिन् ।

आघर्षण, स पु (स न) आघर्ष, मर्दन,

सघर्षण, चूर्णनम् ।

आघात, स पु (स) प्रहार, आक्रमणम् २

प्रसारण, प्रक्षेप ३ वधस्थानम् ।

आघ्राण, स पु (स न) गन्धग्रहणम् २

अतिवृत्ति (स्त्री), पूर्णकामना ।

आचमन, स पु (म न) उपरपरं, आच

(चा) म, अल्पानम् ।

—करना, क्रि स, आचम् (भ्वा प से), आ

चामति ।

आचमनी, स स्त्री (म आचमनीय >)

आचमनोपयोगी चमसभेद ।

आचरण, स पु (स न) अनुष्ठान २ आचार,

व्यवहार ३ स्वरूपता ४ रथ ।

आचरणीय, वि (म) अनुष्ठानव्य २ कर्तव्य ।

आचरित, वि (स) कृत, विहित, अनुष्ठित ।

आचार, स पु (स) व्यवहार २ चरित,

चरित्र, चरित्र, वृत्त, शीलम् ३ शीघ्र, शुद्धि

(स्त्री) ४ स्नानम् ५ आचमनम् ।

—अष्ट, वि (स) दुर्दृष्ट, चरित्रहीन, अनाचार ।

—विचार, स पु (स -री) चरित्र मनोभावश्च

२ चारित्र्यम्, दे 'आचार' ।

आचार्य, स पु (स) उपनेतु गुरु २ वेदा

व्यापक ३ यथे कर्मोपदेशक ४ पुरोहित ५

उपाध्याय, अध्यापक ६ ब्रह्मसूत्राणां चरवार

प्रधानभाष्यकारा सर्वश्रीशंकरारामानुजमध्ववल

भाचार्या ६ वेदभाष्यदृष्ट ७ प्रकाण्डपण्डित ।

—कुल, स पु (स न) गुरुकुलम् ।

आचार्या, स स्त्री (स) मन्त्रोपदेशी, वेदभाष्य

कर्त्री, वेदाध्यापिका ।

आचार्यानी, वि स्त्री (स नी) आचार्यपत्नी ।

आचार्या, वि स्त्री (स) आचार्यसवधिनी ।

आच्छन्न, वि (स) आच्छादित, आचूत २

गुप्त, तिराहित ।

आच्छादक, वि, (म) आवरक, विधायक,

वेशक ।

आच्छादन, स पु (स न) आवरण, पुन,

वहन, अवशुद्धन, पिधान २ प्रच्छदपट ३

३ आवरणक्रिया ।

आच्छादित, वि (स) आवृत, पिहित, तिराहित ।

आच्छोटन, स पु (स न) अगुली, मोटन

स्फोटनम् ।

आज, क्रि वि (स अद्य अन्व्य) वर्तमाने दिने

२ अद्यत्वं, अरिमन् काले । स पु, वर्तमानो

दिवस २ सप्रति, साम्प्रतम् ।

—कल, कि, वि (स अकल्पम्) प्रतेषु दिनेषु
२ अघस्वे, अघ श्वो (कल्पे), वा ।
—सक, कि वि अघ यावत् पर्यन्तम्, अधुना
इदानीं यावत् पर्यन्तम् ।
—कल करना, मु, -याक्षिप (तु उ अ) ।
—कल का मेहमान, मु मरणासन्न, आसन्न
निधन, मुमुर्षुं ।
आजन्म, कि वि (स) यावज्जीवम् २ जन्मन
प्रभृति ।
आज्ञामाह्वश, स स्त्री (फा) परीक्षा अनुयोग
२ परीक्षार्थे प्रयोग ।
आज्ञा, स पु (स आर्थ >) पितामह ।
आज्ञाद, वि (फा) दे 'स्वतन्त्र' ।
आज्ञादी, स स्त्री (फा) दे 'स्वतन्त्रता' ।
आज्ञानु, वि (स) जानु अष्टौत्वं पर्यन्तम् ।
—बाहु, वि (म) जानुस्थबाहु २ दीर्घबाहु
३ वीर, शूर ।
आजीवन, कि वि (म न) दे 'आज म' ।
आजीविका, स स्त्री (स) आजीव, वृत्ति
(स्त्री), उप, जीविका ।
आज्ञा, स स्त्री (स) आनि, देश, शासन,
नियोग २ स्वीकृति अनुमति (स्त्री) ।
—देना, कि स, आनि समा, दिक्ष (तु उ
अ), आहा (प्रे आहापयति) ।
—मानना, कि स, आहा अनुवृत् (भवा
आ से)-पा, (प्रे पालयति) ।
—कारी, वि (स रिन्) आहा वचन, अनु
वर्तिन् प्राहिन् सेचिन् पारुक् ।
—पत्र, स पु (स न) निर्देश भादेश, पत्रम् ।
पालक, वि (स) दे 'आहाकारी' ।
—पालन, स पु (स न) आहा, अनुवर्तन
कारिता ।
—भग, स पु (स) आहातिक्रम, आच्छोह
धनम् ।
आज्य, स पु (स न) घृतम् ।
आटविक, स पु (स) अरण्य-वन्-वासिन्,
आरण्यक २ मार्ग दर्शक ।
आटा, स पु (स अट्टम् वा अट >) गोधूम
चूर्ण, अन्न, चूर्ण, क्षोद, पिष्टान्न, गुंडिक ।
—गोला होना, (गरीबी में), म, दारिद्र्ये
वहाततापान ।

आटे गाल की फिक्र, मु, आजीविकाचिन्ता ।
आटे दाल का भाव मालूम होना, मु
-प्यवहारज्ञानम् ।
आटोकैड, स पु (अ) निरकुश-रूप शासक
२ स्वेच्छाचारि-स्वैरि, -मानव इ असीमा
धिकारसम्पन्नो जन ।
आटोकैसी, स स्त्री (स) निरकुश रूप शाम
नम् २ निरकुशता, स्वेच्छाचारिता ।
आटोप, स पु (स) आच्छादनम् २ आड
बर ३ दर्प ४ उदरगुदगुडाशब्द ।
आठ, वि (स अष्टम्) । स पु, उक्ता सट्टया,
तद्विषयकोऽक (ट) च ।
—आठ आँसू रोना, मु, अश्रुधारापाननम् ।
आठों प्रहर, मु, अष्टनिश, दिवानिशम् (अभ्य)
आठवो, वि (हि आठ) अष्टम (स्त्री स्त्री) ।
आठवर, स पु (स) गभीरशब्द २ तुर्यरव
३ गजगर्जनम् ४ कपटवेश, दम, मिथ्यायो
जनम् ५ आच्छादनम् ६ पटमकप ७ पटङ् ।
आड, स स्त्री (स अल = रोकना >) -दवधान,
तिरस्करिणी, प्रतिहोरा, ज(य) वनिका
२ आशय, शरणम् ३ प्रतिबंध, विघ्न
४ इष्टकालण्ड ५ स्थूणा, वरस्नग्म ।
आदा, स पु (स आली >) रेखायुतो बल
भेद २ (पीतस्य) इयूल शूरत्, -काष्ठम् । वि,
अनुप्रस्थ, दिग तसम, समस्थ २ तिर्यन्, जिह्वा
आडे आना, मु, बाध् (भ्वा आ से)
२ विपत्तौ साहाय्य दा (जु उ अ) इ दिन्
(अ उ अ) ।
आड़े हार्यों लेना, मु, निमस्स (जु) ।
आद, स पु (म आदक-कम्) चतु प्रस्थ
परिमाणम्, द्रोणचतुर्थांश ।
आदत, स स्त्री (हि आदत = जमानत
देना) परार्थविक्रय २ परार्थविक्रयभृति
(स्त्री) ।
आदती, स पु (हि आदत) परार्थविक्रेत् ।
आद्य, वि (स) सम्पन्न, धनिन् २ युक्त ।
आतंक, स पु (स) भयं, त्रास २ प्रताप,
गौरवम् ३ रोग, -वर ४ मुरजध्वनि ।
आततायी, स पु (स पिन्) अग्निद २ गरद,
विषद ३ शस्त्रपाणि ४ घनापह ५ क्षेत्र
हारिन् ५ दारपहारिन् । (-यिनी स्त्री) ।

अष्टप, स पु (स) दिनच्योत्स (न),
 सुदारक त्रासक २ चण्णता ३ उदर ।
 आतप, स पु (स न) छत्र, आतप परम,
 वारणम् ।
 आतपोदक, म पु (स न) मरीचिका मृग,
 बल नृणा ।
 आतिश, स स्त्री (फा) अग्नि ।
 —यानी, स स्त्री (फा) अग्निनीडनवानि
 (न बहु), अग्निनीडा ।
 आतशक, स पु (फा) उपश मेरोग्रे १ ।
 आतशी, वि (फा) आग्निव आग्नेय, २ अग्निज
 ३ अग्निजनक ।
 —शीशा, स पु अग्नि, काच रफटिव ।
 आतिथय, वि (स) अतिथि-सेवक-पूजक ।
 आतिथ्य, स पु (स न) अतिथिसवा २ अति
 ध्यर्षवस्तु (न) ।
 आतिशय, स पु (स न) अतिशयत्व,
 आधिक्य, बहुत्वम् ।
 आनुर, वि (म) आनुर, व्याकुल, व्यग्र,
 उद्विग्न, अर्थात् २ उत्सुक, उत्कण्ठित ३ दुःखित
 ४ रोगिन् ।
 आनुरता, स स्त्री (स) व्याकुलता, व्यग्रता
 २ स्वरा, सन्नम ।
 आनुरालय, स पु (स) चिकित्सालय,
 दे० 'अरपताल' ।
 आम, वि (स आमन्) स्व, निज, स्वीय
 स्वकीय ।
 —अभिमान, स पु (स न) स्वप्रतिष्ठा
 स्वर्णरवम् ।
 —अवलम्बी, वि (स विन्) आमविश्वासिन्,
 स्वाश्रित ।
 —उद्धार, स पु (स) मुक्ति (स्त्री) माक्ष ।
 —उद्वृत्ति, स स्त्री (म) आरम्भव्ययणम्
 २ स्वाम्भुत्थ ।
 —घात, स पु (स) आत्म स्व निज, इत्या
 घात वध, प्राण नीवित, त्याग-समर्पण ।
 —घात करना, क्रि स, आ माग इन्
 (अ प न) ।
 —घाती, वि (स) आ म, घातक घातिन्
 नातिन् इन् ।
 —ज, स पु (स) पुत्र २ कामदेव
 ३ रुधिरम् ।

४ आ० हि०

—ज्ञान, स पु (स न) ज्ञ-जीव, ज्ञानम्
 २ ब्रह्मासाक्षात्कार ।
 —त्याग, स पु (स) परहिताय स्वार्थ-त्याग ।
 —दर्शन, स पु (स न) समाधिना
 जीवेश्वरदर्शनम् ।
 —निवृत्त, स पु (स न) आत्मसमर्पण,
 सर्वस्वापणम् २ स्वविषये कथनम् ३ भक्तिभेद ।
 —प्रदशा, स स्त्री (स) आमन्त्राया,
 स्वस्तुति निजनुति (दोनों स्त्री) ।
 —भू, वि (स) निजशरीर २ स्वयम् ।
 स पु पुत्र २ कामदेव ३ ब्रह्मन् (पु)
 ४ विष्णु ५ शिव ।
 —विश्वास, म पु (स) स्व निज, प्रथय
 विश्रम्भ ।
 —विद्या, स स्त्री (स) ब्रह्मविद्या अध्यात्म
 विद्या, आमन्त्रणम् २ मोक्षविद्या (= मेम
 मरिजम) ।
 —हत्या, स स्त्री दे 'आत्मघात' ।
 —आमक, वि (स) अविगत, रूप, युक्त, मय
 (उ गद्यारम्भक = गद्य-रूप-भय) ।
 आत्मा, स स्त्री (स आत्मन् पु) जीव,
 चेतन, जीवात्मन् २ चित्तम् ३ बुद्धि (स्त्री)
 ४ अहङ्कार ५ मनस (न) ६ ब्रह्मन् (न)
 परमात्मन् (पु) ७ दद ८ धृति (स्त्री)
 ९ स्वभाव, धर्म १० सूय ११ अग्नि
 १२ वायु ।
 आत्मिक, वि (स) अध्यात्म-(समास में)
 आत्म, विषयक सम्बन्धिन् २ स्वीय ३ मानसिक ।
 आत्मीय, वि (स) स्वीय, स्वकीय । स पु,
 स्वजन, व धु, मित्रम् ।
 आत्मीयता, स स्त्री (स) बहुत्व सौहार्दम् ।
 आत्म्यन्तिक, वि (स) अन्त, असीन,
 अत्यधिक ।
 आत्रेय, वि (स) अधिगोत्र, अविस्मयिधन् ।
 स पु अत्रिपुत्र ।
 आत्रेयी, स स्त्री (स) अत्रिपत्नी २ अत्रिपुत्री
 ३ आत्रगोत्रजनारी ४ रजस्वला नारी ।
 आथर्वण, स पु (स) अथर्ववेदो ब्राह्मण,
 पुराहित २ अथर्वपुत्र ३ अथर्ववेदे विहित
 कर्मन् (न) ।
 आदत्, स स्त्री (अ) शील स्वभाव,
 प्रकृति (स्त्री) २ अभ्यास, नित्यप्रवृत्ति (स्त्री) ।

आद्यम्, स पु (अ) आदिम्, प्रजापति
(इत्थाम्) २ मनुष्य ।
आद्यमियत्, सं स्त्री (अ) मानवता, मनुष्यत्व
२ सभ्यता, शिष्टता ।
आद्यमी, स पु (अ) मनुष्य, मनुष्यजाति
(स्त्री) २ दास ।
—वनना, मु सभ्यता शिक्ष (स्वा आ से) ।
फो कि वि, प्रतिमनुष्यम्, प्रतिजनम् ।
आदर, स पु (स) समान, सत्कार,
सत्किया, प्रतिष्ठा, अर्हणा अर्वा ।
—करना, कि स, आट्ट (द + ऋ) (तु प्र अ),
सत्क, पूज भव (चु) समन्, मभू (प्रे) ।
—पाना, कि अ, सख पुरस, कृ (वर्ग),
आट्ट (द + ऋ) पूज्नेव (कर्म) ।
—से, कि वि, सादर, सप्रशयम्, आदरेण ।
आदरणीय, वि (स) मान्य, माननीय पूज्य,
सत्कार्य, पूजनीय ।
आदर्श, स पु (स) मुकुट दर्पण, आरम्भदर्श
२ प्रतिरूप, प्रतिमा, प्रतिमानम् ३ टीका,
माध्य व्याख्या ४ अनुदय, अनुपम ।
आदात्, स स्त्री (अ० 'आदत्' का बहु०) दे
'आदत्' ।
आदाता, वि (स - नृ) ग्रहीतृ ग्राहक, प्रापक ।
आदान, स पु (स न) ग्रहण, स्वीकार,
स्वाकरणम् ।
—प्रदान, स पु (स न) ग्रहणवितरण,
दानादान २ परस्परतितिष्ठा, न्याय्याचरणम् ।
आदाय, स पु (फा 'अदय का बहु०) दे
'अदय' ।
आदि, वि (स) प्रथम अग्रिम, आदिम, आद्य ।
स पु, उपक्रम, आरंभ २ मूल, उत्पत्तिहेतु ।
अ द -प्रभृति, -आद्य (समासान्त में) ।
—अवि, स पु (स) बाष्पिकी ।
—कारण, स पु (स न) मूलकारणम्
(प्रकृति ईश्वरो वा) ।
—से अन्त तक, कि वि, आद्य तम्, आदिो
ऽन्त यावत् ।
आदिक, अव्य (स वि) -आदि, -आद्य,
-प्रभृति (सब समासान्त में) ।
आदित्य, स पु (सं) अदितिपुत्र २ देव
३ सूर्य ४ इन्द्र ५ बामन ६ बसु ७ विदवे
देवा ८ मन्दारपुत्र ।

—वार, स पु (स) रवि भानु, वार वासर'
आदिम, वि (स) प्रथम, आद्य, अदि ।
—निवासी, स पु, (म सिन्) आदिवासिन् ।
आदिष्ट, वि (स) आहृत, आहापित, लब्धाद्य,
प्रासादेश ।
आदी, वि (अ) अभ्यस्त, अभ्यामिन् ।
आहत, वि (स) सस्कृत, समानित, पूजित ।
आदेय, वि (स) ग्रहणीय, परि-प्रति,
-प्राप्त ।
आदेश, स पु (स) आह्वा, निदेश, शासन,
नियोग, देशना २ उपदेश ३ अणाम
४ ग्रहफलम् ५ वर्णस्य वर्णान्तरोत्पत्ति (स्त्री,
व्या) ।
आदेशक, वि (स) आवापक, निदेशक,
नियोजक, शासक ।
आदेशी, वि (स - शिन्) दे० 'आदेशक'
२ देवश्च, ज्योतिर्विद् ।
आघत, कि वि (स न) दे 'आदि से अन्त
तक' ।
आद्य, वि (स) प्रथम, आदिम, आदि
२ अग्रय, प्रधान ।
आद्या, स स्त्री (स) दुर्गा २ प्रतिपदा ।
आद्योपांत, कि वि, दे 'आदि से अन्त तक' ।
आध, वि (स अर्द्ध) सामि- (अव्य व
सामिभुक्) ।
—आना, सं पु, अर्द्धाण ।
आधा, वि (स अर्द्ध) सामि । स पु, अर्द्ध,
अर्द्धम्, अर्द्ध-भाग-अंश ।
—आना, स पु, अर्द्धाण णक ।
—स्तीसी, स स्त्री, अर्द्धावभेदक, सूर्यावर्त्त,
अर्द्धशिरोवेदना ।
—तीतर आधा घटेर, मु चित्रविचित्र
असंगत ।
आधान, स पु (म न) स्थापन २ न्यसनम् ।
आधार, स पु (स) आश्रय, अवन्दनम्
२ आश्रयणम् ३ पात्रम् ४ गृह भित्ति मूल,
वेदमभू (स्त्री) ५ आश्रयदायक पालक ।
—आधेय सबध, स पु (स) आश्रयाश्रयि
सबध (व घृतपात्रयो) ।
—हीना, मु, स्त्रीका वृत्ति (स्त्री) भू ।
आधि, स स्त्री (स पुं) मानसी व्यया, चिन्ता
२ बन्धक, न्यास, निदेश ।

आधिकारिक, स पु (स न) मूलकथावस्तु (न) ० कर्मवारिन् । वि अधिकारयुक्त ।
 आधिक्य, स पु (स न) बाहुव्य, प्रातुर्वै, अनिशय ।
 आधिदृष्टिक, वि (स) देवपरित देवनाहुत (उ अतिदृष्टि) ।
 आधिपत्य, स पु (स न) स्वामि व, प्रभुत्व, अतिकार, शासनम् ।
 आधिभौतिक, वि (म) मनुष्यादवाप्तिपरित (उ सपेदरादुत्तरम्) ।
 आधीन, वि दे 'अधीन' ।
 आधी रात, स छा (स अङ्ग्राज) मध्यरात्र, निशीथ, रात्रिमध्यम् ।
 आधुनिक, वि (स) नूतन, नवीन अधुना वन इदानींनन, अर्वावीन, सौपतिक ।
 आष्टन, वि (स) आश्रित, अवलम्बित ।
 आधेय, स पु (स न) आधारस्थ वस्तु (न), आश्रित पदार्थे । वि स्थापनीय न्यसनीय ।
 आधोरण, स पु (स) हस्तिक, हस्तिक ।
 आध्मान वि (स) उच्छ्वन, वातपूरित २ इम, गर्बित ३ दग्ध ४ ध्वनित ।
 आप्यामिक, वि (स) ब्रह्मजीवविषयक, देह चित्तजीवसत्त्वधिन् (उ अवरमोदशोकादय) ।
 आनद, स पु (स) आह्लाद, मुदा, आ-प्र, -मोद समद, हर्ष प्रमद, शान्ति (स्त्री), सुखम्, प्रसन्नता । वि, आनन्दित, प्रसन ।
 -करना, कि अ, नन्द् (स्वा प से) मुद् (स्वा प से) ।
 -देना, कि स, आह्लाद-नद-प्रमुद (प्र) ।
 -बधाई, स स्त्री अभिनन्दनम् २ मगलोत्वव ।
 -भगल, स पु (स न) आन ०, मोद, कुशुलम् ।
 आनन्दित, वि (स) प्रमुदित, सानन्द, सुखिन् ।
 आन स स्त्री (स आनि पु स्त्री) मोमा, मथाना २ शपथ, समव ३ विजयघोषणा ४ प्रतिज्ञा, स-प्रति, -प्रव ।
 -रघना, पु, प्रतिष्ठा पा (प्रे पालयति) ।
 आन, स स्त्री (फा) हवि (स्त्री), सौदचन २ कधि-, मान ३ लज्जा, सकोच ।

-वान, स स्त्री, वैभव, शोभा, हावभावा ।
 -वान बाला, वि, सुवसन, सुपम ।
 आन, स स्त्री (अ) क्षण, पल, निमेष ।
 -की आन में, मु सप, हठिति, आशु (सब अव्यय) ।
 आनक, स पु (स) पण्ड, भेरी, मुद्ग २ स्तनपित्तुर्मेव ।
 आनम, स पु (स न) आस्य, मुख, वदनम् ।
 आनन-फानन, कि वि (अ) क्षयन, क्षणात् ।
 आनरेचल, वि (अ) मान्य ।
 आनरेरी, वि (अ) अवेनिक, आदरदृष्टि ।
 -मैजिस्ट्रेट, स पु (अ) अवेनिको दण्डाध्यक्ष ।
 आना, स पु (म आणक) रूप्यकस्य षोड-शोडश २ कम्पचिद् वस्तुन षोडशो भाग ।
 आना, कि. अ (स आगमनम्) आगम् (स्वा प अ) आया (अ प अ) आगम् (स्वा प से) स पु, आयानं, उपस्थान, आगमनम् ।
 आई-गद, (वात) वि, अतीना, विस्तृता (वाष्ठा) ।
 आप दिन, कि वि, अन्वद, प्रतिदिनम् ।
 आ पमकना कि अ, अकस्मात् आगम ।
 आनाकानी, स स्त्री, अप-यप, देश छलेन परिहरणम् २ अननयानम् ३ कर्णं बधनम् ।
 आनाकानी करना, कि अ, अप-यप, दिश (तु उ अ), छलेन परिद्ध (स्वा उ अ) ।
 -जाना, स पु, गतागतम् २ पुनर्जन्मम् (न) ।
 आनीत, वि (स) आ वषा हुन, उपस्थापित, उपनीत ।
 आनुकूल्य, स पु, (स न) 'अनुकूलना' दे ।
 आनुपूर्वी, स स्त्री (स) अनुक्रम, आनुपूर्व्य, परपरा ।
 आनुमानिक, वि (स) अनुमान-तर्क, सिद्ध, समा-य, कल्पनिक ।
 आनुपमिक, वि (स) मास्यिक, गौण ।
 आन्वीक्षिकी, स स्त्री (स) तर्कविद्या, -याय २ आमविद्या ।
 आप, सब (स आत्मन् >) स्वय स्वन् (अव्य), २ भवत् (भवनी स्त्री) ।
 -वीती, स स्त्री स्वानुभूत, प्रत्यक्षीकृत ।
 आप, स पु (स आप स्त्री बहू) पानीय, जलम् ।

आपगा, स स्त्री (स) नदी, तटिनी ।
 आपकाल, स पु (स) दुष्काल दुस्समय
 २ विपत्ति (स्त्री) ।
 आपत्ति, स स्त्री (स) दुःख, क्लेश २ विपत्ति,
 विपद, आपद् (सब खा) ३ कुसमय
 ४ दोषारोपणम् ५ आक्षेप, अपवाद ।
 आपद्, स स्त्री (स) दे 'आपत्ति' ।
 —ग्रस्त, वि, आ-वि, -पक्ष भासं दुर्गम ।
 —धर्म, स पु (स) विपन्नवर्तव्य, कुसमय
 वम ।
 आपदा, स स्त्री, दे 'आपत्ति' ।
 आपन्न, वि (स) आपद्ग्रस्त २ प्राप्त ।
 आपस, स पु (हि आप+से) सम्बन्ध ।
 भ्रातृत्व बहुत्वम् ।
 —का, वि, आत्मीयानां, बन्धुनाम् २ पर
 परस्पर, अ योऽयस्य, मिथ (अन्व), इतरे
 तरस्य ।
 —भै, कि, वि, परस्पर अन्यो य मिथ ।
 आपसी, वि (हि आपस) परस्परिक ।
 आपा, स पु (हि आप) आत्मत्व, स्वमत्ता
 २ गर्वं ३ चेतय चेतना ।
 —धापी, स स्त्री, स्वार्थपरता, स्वस्वहितचिन्ता
 २ स्वर्ष, अहमहमिका, अह, पूर्विका प्रथमिका ।
 —पंथी, वि कुमागिन्, कुपथगामिन् ।
 आपे मे आना, मु, जैतन्यलाभ ।
 आपे मे न रहन, मु, कौषादिभि बुद्धि-
 मति-नाश ।
 आपात स पु (स) पतन, अवनति (स्त्री)
 २ अकरमाद् उपागम ३ आरम्भ ४ अत ।
 आपातन, कि वि (स) अकरमाद्, सहसा
 अकाण्ठे २ अ ते, अ नत ।
 आपाती, वि (स-निद्) पतन अवनरण
 वमुख २ आक्रामक ३ मायिन् ।
 आपाद्, स पु (स) प्राप्ति-अवाप्ति (स्त्री)
 २ पुरस्कार ३ पारिमिकम् । अन्य आव
 रणम्, पादपयत्तम् ।
 आपेक्षिक, वि (स) मापेक्ष २ पराश्रित,
 परावल्लिन् ।
 आप्त, वि (स) अपिगत प्राप्त, लब्ध २ जुष्टल,
 दृष्ट ३ साक्षात्पथनेन्, भातिन्-पुम् । स
 पु-श्रुति २ शस्त्रप्रमाणम् ।
 —काम, वि (स) पूर्णकाम, सुत, सजुष्ट ।

आप्ति, स स्त्री (स) लाभ, प्राप्ति (स्त्री)
 आप्लुत, वि (स) स्नान, घृतस्नान २ सिद्ध,
 उक्षिन्, आर्द्र २ स पु, स्नानक, गृहिन् ।
 आफत, स स्त्री (अ) दे 'आपत्ति' (१-२) ।
 —का परवाला, स पु, लोकवदक, कुचेष्टक
 २ क्षिप्रकारिन् ।
 आफिस, स पु (अ) वार्दालय ।
 आय, स स्त्री (फा) वाति धुति (स्त्री),
 २ उत्कर्ष ३ शोभा श्री (स्त्री) । स पु,
 आप (स्त्री बहु) जलम् ।
 —यारी, स स्त्री (फा) मधनिध्वर्षशाला,
 शुडा, सधानी २ मादकद्रव्यनिरीक्षणी शासन
 विभागविशेष ।
 —ताव, स स्त्री (फा) शोभा, विभूति (स्त्री) ।
 —दाना, स पु (फा) आ-उप, जीविका
 २ जल न अन्नजलम् ।
 —पाशी, स स्त्री (फा) जलसक, प्लावनम् ।
 —शार, स पु (फा) निर्दर, जलप्रपात ।
 आवेद्यात स पु (फा) अमुन, शुधा ।
 आवोदना, स स्त्री (फा) जलवायु (न) ।
 आवदद्, वि (स) निगृहीत, नियमित ।
 आवनुम्, स पु (फा) कोविदार, युगपत्त्र ।
 —का कुन्दा, मु अतिकृष्णो मनुष्य ।
 आषाद्, वि (फा) लोकाध्युषित जनाकार्ण
 २ उर्वर, बहुशरयद् ३ सपन्न ।
 आषादी, स स्त्री (फा) जनाकीर्णरयानम्
 २ जनमरया ३ शश्वदा भूमि (स्त्री) ।
 आषाघ, स पु (स) कष्ट, वदना २ क्षति-
 हानि (स्त्री) ।
 आषी, वि (फा) जलीय, जलमय २ जल
 वर्ण, रपत्रील ।
 आषिद्क, वि (स) वापिक सांस्कारिक
 (की स्त्री) ।
 आभरण, स पु (स न) अलकार, मदन
 मूर्धन्य २ बोध, संवर्द्धनम् ।
 आभा स स्त्री (स) कानि दीप्ति (स्त्री)
 २ प्रति विवष्टाया ।
 आभाण्ड, स पु (म) लाविक (स्त्री) ।
 आभार, स पु (स) उपकार २ गार्हस्थ्य
 भार ३ मार, भर ।
 आभारी, वि (स रिन्) घृतघ, घृतवदिन् ।

आभास, म पु (स) प्रति द्विविच्छाया
 २ मकेन ३ मिथ्याज्ञानम् ।
 आभिचारिक, वि (स) ऐन्द्रशालिक मायात्मक,
 मायामय मायिक
 आभीर, स पु (स) गोप ।
 आभूषण, स पु (स न) ३ 'आभर' ।
 आभ्यतर, इव (स) अतस्थ आतर,
 गर्भस्थ, अतगत आभ्यतरिक ।
 आभ्युदयिक, वि (स) मायात्मिक शकर शुभ ।
 आमत्रण, म पु (म न) अज्ञानम्
 ० निमत्रणम् ।
 आमत्रित, वि (स) आकारित आत्रुत
 ० निमात्रत ।
 आम्र, स पु (स आग्र - अ) १ (वृत्)
 आग्र रमात् सद्कार, कामार वमत्तदूत
 बोविलोत्सव ० (फल) आग्र अग्र रमात्
 सद्कार फलम् ।
 —के आम, गुठली के दाम, मु उभयतो
 लाम ।
 —राने से काम या पेड गिनने से, मु,
 आग्ने पयोजन न मु शृङ्गागनया ।
 आम्र, वि (स) अपह, ३ 'कचा' ।
 आम्र, स पु (स न) अत्रश्लेषम् (पु)
 २ अजीर्णरोगमेद ।
 —अतिमार, स पु (स) अहिसारभे,
 मपद्वणी ।
 आम्र, वि (अ) सामाय, प्राकृत अवर,
 २ विरयात, प्रसिद्ध ।
 —फहम, वि (अ) सुशोध, सुविशेष ।
 आम्रद, स स्त्री (फा) आगमन २ आय ।
 आम्रदनी, स स्त्री (फा) आय, धनागम ।
 आम (मा) मरुय, स पु (स न) शोक
 रण २ दुःख वृत्ता ।
 आमना सामना, स पु (हि सामना)
 समगम ।
 आमने आमने, क्रि वि (हि सामना) ।
 परस्परस्य पुरत आयोऽपस्य सम्मुखम् ।
 आमय, स पु (स) रोय, -याधि ।
 आमयात्री, वि (स विन्) रुग्ण, रोगिन् २
 अजीर्ण अयव प्रस ।
 आमरण, क्रि वि (स न) मृद्यु यावत्,
 निवनावधि, आमृदयो ।

आमलकी, स स्त्री (स) लघु-शुद्र, आमलक ।
 आमला, स पु दे 'आवला' ।
 आमाशय, स पु (स) अमाशय, अजर रग् ।
 आमिष, म पु (स पु न) मांस २ भोग्य
 पदार्थ ३ लोभ ४ उत्कोच ।
 आमी, स स्त्री (हि -आम) आभ्रकम् ।
 आमूल, स पु (स न) रूपकप्रस्तावना ।
 आमोद स पु (स) आनन्द, मनोविनोद
 २ सुमध ।
 —प्रमोद, स पु, आहाद, हर्ष २ हान्य
 विनोती जर्मलात् ।
 आम्र, म पु (स) दे 'आम' ।
 आयँती पायँती, स स्त्री (अनु + फा पाय
 ताना) खटवाया दीपपादभागौ ।
 आय, स स्त्री (म पु) धन अर्थ, आगम
 लाम ।
 —व्यय, स पु (स व्ययी) आगमोत्सर्ग ।
 —व्ययिक, स पु (स न) व्याकरण
 (-व्यट) ।
 आयत, वि (स) विस्तृत, विशाल ।
 आयत, स स्त्री (अ) इजीर कुरान, वाक्यम् ।
 आयसु, स स्त्री (स आदेश) आशा ।
 आया, क्रि अ (हि आना) आगत ।
 —गया, स पु., अतिथि ।
 आयौ, स स्त्री (पुर्ण) भात्री, मातृका ।
 आयौ, अन्व (फा) किम्, वत् ।
 आयात, स पु (स न) विदेशादानयनम्
 २ विदेशादानीत पण्यसमूह ।
 आयास, स पु (स) प्रयत्न ० प्रम ।
 आयासक, वि (स) अम, अनक उपादक ।
 नष्टकेश प्रद ।
 आयु, स स्त्री (स आयुस न) वयस (न),
 जीवितकाल नित्यग, त्रिजीविनम् ।
 आयुक्त, वि (स) नियुक्त २ सयुक्त ।
 आयुध, स पु (स न) अस्त्र शस्त्र, पहरण,
 हति (स्त्री) ।
 आयुषागार, म पु (स न) शस्त्र अन्व,
 आभार गृहम् ।
 आयुर्वेद, स पु (स) वैद्यक, वैद्यशास्त्र,
 चिकित्साशास्त्रम् ।
 आयुष्मान्, वि (स) (स मर) चौर
 दीप, जीविन् । (आयुष्मती स्त्री) ।

आयुष्य, वि (स) पथ्य । स पु वयस (न) ।

आयोजन, स पु (स न) द्रव्यामादन सामग्रीसपादनम् २ नियुक्ति (स्त्री) ३ लघोः ४ सामग्री ।

आयोद्धीन, स स्त्री (अ) जन्तुकी, नीलीनम् ।
आरभ, स पु (स) उपक्रम, प्रारम्भ, आदि २ उपपत्ति (स्त्री) ।

—करना, क्रि स, आ प्रा रभ, प्र उप, क्रम् (सद् भ्वा आ अ)

आर, स पु (स न) मुट, लोह आयसम् २ पित्तकम् ३ तट टटीटा ४ कोण ५ आर अरम् ।

आर, स स्त्री (स अलम् = दक) वृद्धिका दीनां दश, दशचतु २ अकुश ३ कील ।

आर, स स्त्री (स आरा) चर्मप्रभेदिका ।

आर, स पु (हि अट) आम्रह निर्बन्ध ।

आर, स स्त्री (अ) संकोच, लज्जा ।

आरक्त, वि (स) ईश्वरक २ लोहित ।

आरण्य, वि (स) वय, वनजात वनसन्निधिम् ।

आरण्यक, वि (स) दे आरण्य । स पु (स न) प्रथमेत् ।

आरती, स स्त्री (स आरातिकम्) नीराजना नम्, देवमूर्तिपरितो दीपचालनम् २ नीराजनापात्रम् ३ नीराजनामालीनम् ।

आरपार, स पु (स आरपारम् >) तटद्वय धी, पारतवार रौरे । क्रि वि आवारपारम्, अवारपार पारं यावत् आद्यत, समग्रम् ।

आरब्ध, वि (स) उपकान्त, कुतारम्भ ।

आरभटी, स स्त्री (स) क्रोधाद्युपमावातां चेष्टा २ रूपके यमवस्तुको वृत्तिभेद

आरसी, स स्त्री (स आरसी) दपण, मुकुर २ दक्षिणहस्तांगुष्ठभूषणम् ।

आरा, स पु (स आरा >) कवच-न्वम् । करपत्र, पत्रदारण २ चर्मप्रभेदिका ३ वर, अरम् ।

—कदा, स पु (फा) नाभिक, द रदारण ।

—कदा, स स्त्री कवचेन काष्ठविपाटनम्

आराहृत्, स स्त्री (फा) परिश्रुति (स्त्री), अलक्ष्या, परिश्रिया सञ्ज्ञा ।

आराधक, वि (स) उपासक, पूजक ।

आराधन, स पु (स न) भक्ति (स्त्री) सेवा, परिचर्या २ तर्पण, तोषण, प्रसादनम् ।
आराधना, स स्त्री (स) दे आराधन ।

—करना, क्रि स, पूज (चु), उपास (अ आ से) अभि, अर्च (भ्वा प स), आराध (प्रे) ।

आराधनीय, वि (स) आराध्य सेवनीय, पूजनीय, अर्चनीय ।

आराम, स पु (स) उपवन उद्यान पुष्प वाटिका ।

आरामाधिपति, स प्र (स) उपवन उद्यान अधिकारिन् अधिकारिक ।

आराम, स पु (पा) सुखम् २ विश्राम ३ स्वस्थम् ।

—करना, क्रि अ, १ कार्यात् निवृत्त (भ्वा आ से) २ विश्राम (दि प से) ३ शी (अ आ से) ।

—कुरसी, स स्त्री, विश्रामासदी ।

—तलव, वि, अलस सुखश्लोक ।

आरास्ता, वि (फा) अलङ्कृत परिष्कृत सञ्ज्ञ ।

आरी, स स्त्री (हि आरा) श्लुककच क्रकचक करपत्रकम् २ दद्यामलनो लोहनील ३ आरा चर्मप्रभेदिका ।

आरूढ, वि (स) अधिरूढ अध्यासीन वृत्ता रोहण २ दृढ, स्थिर ।

—होना, क्रि अ, आ अधि रूह (भ्वा प अ), अध्यास (अ आ से) ।

—करना, क्रि स आ अधि रूह (प्रे आरी पयति) ।

आरोग्य, वि (स आरोग्यम् >) नीरोग, स्वस्थ । स पु (स न) द 'अरोगता ।
आरोग्यता, स स्त्री (म आरोग्यम्) स्वास्थ्य नीरोगता, अनामयम् ।

आरोप, स पु (स) आरोपण संस्थापनं स्थिरीकरणम् २ स्थाना तरे आरोपण स्थापन वा ३ भ्रम ४ वस्तुनि वर वनरपर्यवन्दनम् ।

आरोपान, क्रि स (म आरोपणम्) (स्थाना तरे) आरूढ (प्रे आरापयति) निविश (प्र) मग्ननि स्थ (प्र)

आरोपित, वि (स) रथयित निहित, निवेशित ।

आरोह, स पु (स) उद्गम, उदय, अधिरोहणम् २ आक्रमणम् ३ गजादिपृष्ठेऽधिरोहणम् ४ उत्तमयोनिप्राप्ति (स्त्री) ५ कारणात् कार्यप्राप्तुर्भाव ६ विकाश ७ स्वरोत्कर्ष ८ नितम्ब ।

आरोहण, स पु (स न) उद्गमन अधिरोहणम् २ अंकुरप्ररोहणम् ३ सोपान, निक्षेप ।

आरोही, वि (रा दिन्) आरोहक उद्गामी २ उन्नतिशील । स पु उत्कर्षोऽनुस स्वर २ आरूढ, अश्वदिपृष्ठस्थ ।

आर्जव, सं पु (स न) श्रजुता सरलता निष्कपटता २ सुकरता ३ व्यवहारशुद्धि (स्त्री) ।

आर्जुनि, स पु (स) अजुनपुत्र अभिमन्यु ।

आर्त, स पु (अ) कला, शिल्प २ कौशल, नैपुण्यम् ।

आर्टिस्ट, स पु (अ) निबन्ध, लेख २ धारा नियम ।

आर्टिस्ट, स पु (अ) कलाकार, कलाविद २ चित्रकार ।

आर्देर, स पु (अ) आदेश, आज्ञा २ वस्तुनिर्माण पदार्थप्रेषण, आदेश ।

आर्दिनेस, स पु (अ) अध्यादेश २ युद्धाम्बुजि (न बहु) ।

आर्त्त, वि (स) व्यथित, पीडित २ दुर्गत ३ रुग्ण ।

—नाद, स पु, आर्त्तध्वनि, आर्त्तस्वर ।

आर्त्ति स स्त्री (स) पीडा, व्यथा २ आपद् विपद् (स्त्री) ।

आर्थिक, वि (स) धन-द्रव्य वित्त, विषयक मौद्रिक ।

आर्द्र, वि (स) छिन्न, उन्न, उष्ण, सिक्त ।

आर्द्रता, स स्त्री (स) छिन्नता, सरसता ।

आर्द्रा, स स्त्री (स) बध्नसक्षम् २ आषा दारम्भ ३ आर्द्रकम् ।

आर्य, वि (स) अष्ट भद्र २ मातृ, पूज्य ३ तुलीन सरद्वलज (आर्या स्त्री) । स पु (स) सज्जन, तुलीनमानव २ पूज्यमनुष्य ३ स्वामिन् ४ श्वशुर ५ जातिविशेष ६ आर्यजातीय ७ पुर ८ मित्रम् ।

—आवर्त्त स पु (सं) विध्यहिमाचलयोर्मध्यदेश २ भारतवर्षम् ।

—पुत्र, स पु (स) श्रेष्ठस्य पुत्र २ पति ।

—समान, स पु (स) महर्षिदयानन्द संस्थापित समाजविशेष ।

आर्या, स स्त्री (स) पार्वती २ शशू (स्त्री) ३ पितामही ४ छन्दोभेद ।

आर्य, वि (स) १ ३ ऋषि, सवधिन् प्रणीत सेवित ४ वैदिक ।

—प्रयोग स पु (स) प्राचीनग्रथानाम् प्राचीनव्याकरणविरुद्धा प्रयोगा ।

आलंकारिक, वि (स) अलंकारविषयक २ अलंकारसुत ३ अलंकारविद ।

आलस्य, स पु (स) अवलस, आश्रय २ गति (स्त्री), शरणम् ।

आलपन, स पु (स न) अवलस, आश्रय २ रसोत्पत्ती विभावभेद (सा) ३ कारण, साधनम् ।

आलन, स पु (?) लेपनाय कर्दममिश्रित तृणादिकम् २ शाकादिमिश्रित घणकादिशृणम् ।

आलमारी स स्त्री, दे 'अलमारी' ।

आलय, स पु (स) गृहम् २ स्थानम् ।

आलघाल, स पु (स न) अवाल, आवार ।

आलस, म पु, दे 'आलस्य' ।

आलसी, वि (रि आलस) अलस, तद्द्रव्य, तद्राज, शीतक, दुग्दपरिमृष, उद्योगविमुख ।

आलस्य, सं पु (स न) मातृ, तद्द्रिका, जातय, कार्यद्वेष ।

आला, स पु (स आलय >) मिश्रितमादियु दीपकापर्यं स्थानम् २ काष्ठफलक ।

आला, वि (अ) उत्तम, श्रेष्ठ ।

आलान, सं पु (स न) गजबधन, रत्नम् रज्जु (स्त्री) २ बधन, रज्जु ।

आलाप, स पु (स) सलाप, समापण, कथोपकथन, वार्त्तालाप २ तान, सतरवर साधनम् (संगीत) ।

आलापना, क्रि स (स आलापन >) गै (स्वा प अ) ।

आलिङ्गन, स पु (स न) परि (स्त्री) रभ, परिष्कण, सस्त्रेष, उपगृह्णन रिल्पा ।

—करना, क्रि स, आलिङ्ग (स्वा प से), आलघ् (दि प अ), उपगुद (स्वा उ से, उपगृह्णति) ।

आलि, स स्त्री (स) वयस्या, सखी
सदचरी २ पक्ति (स्त्री) ३ सेतु ४ रेखा ।

आलि, स पु (स) वृद्धिक २ अम ।

आलिरित, वि (स) लिरित २ अविन ३
धिविन ।

आलित, वि (स) प्र वि लित, दिग्ध, भक्त ।

आलिम, वि (अ) पठित, विदस, बहुधन,
बहुधीन ।

आली, स स्त्री (स) सखी वयस्या २ पक्ति,
तति (स्त्री) ।

आलू, स पु (स नात्र) शुक्लद शुभ्राल,
शुद्धकद दम् ।

—बुधारा, स पु, आलूक, आलुक, रत्नफल
मल्लकम् ।

आलूचा, स पु (फा) *आलूच वृगभेद
२ *आलूचम्, फलभेद ।

आलेख, स पु (स) लेख, लेख्य, लिखितम्
२ लिपी लिपि (स्त्री) ।

आशेष्य, स पु (स न) विश्व प्रतिरूप ।
वि लेखाई ।

आठोक, स पु (स) भा, आभा प्रभा
प्रदान २ दिग्ध दीप्ति काण्ठि (मन् स्त्री) ।

आलोचक, वि (स) समालोचन समीक्षक
२ दशक ।

आलोचन, स पु (स न) गुणोप परीक्षण
निरूपण परीक्षा, सम्, आलोचना २ दशनम् ।

आलोचना, स स्त्री (स) ३ 'आलोचन ।

आलोडन, स पु (स न) मथन मथ
२ प्रगाढविचार ।

आलोडित, वि (स) मथित २ सन्तोमित
३ विचारित ।

आलूहा, स पु (देश) वीरच्छ दम (न)
२ महोबावामी प्राचीनो वीरविशय ३ विस्तृत
वर्णनम् ।

आवभगत, स स्त्री (हि आना + स भक्ति)
सरदार, उपचार सेवा, पूजा ।

आवरण, स पु (स न) आच्छादनं पुत्रं
२ आच्छादनवस्त्र प्रच्छाद ३ निरन्तरिणी,
व्यवधान ४ कोश, बोध, वष्टनम् ५ धर्मम्
(न) पञ्चम् (हि दल) ।

—पत्र, म पु (स न) मुक्त पत्र पत्रम् ।
आवत्, स पु (स) जलमम, अमरक

भमि (स्त्री) २ अष्टजलो मेघ ३ राजा
वर्त रत्नभेद ।

आवर्तक, वि (म) आ परिवर्तमान,
धूर्णायमान ।

आवर्तन, स पु (स न) परि भ्रमण,
या परि वर्तनम् २ विलाडनम् ३ पुन पुन
भावे आवृत्ति (सव स्त्री) ।

आवर्तनी, स स्त्री (स) वृषा २ र्वा मुषा
३ चमस सम ।

आवर्तित, वि (म) ईषद्वक वकीभूत् ।

आवली, स स्त्री (म) आवलि पक्ति तति
(सद स्त्री) ।

आवरय, म पु (म न) अवश्यता २ ३
अनिवार्य काथफलम् ।

आवरयक, वि (स) अवश्यकर्तव्य, शीघ्रकार्य,
गुरुर्य २ अनिवार्य ।

आवरयकता स स्त्री (स) आवश्यकत्व,
अपेक्षा ३ प्रयोजनम् ।

आवरयक्रीय, वि, दे 'आवश्यक ।
आवा, स पु दे आना ।

आवागमन, स पु (हि आना + स गमनम्)
पुनरुत्पत्ति (स्त्री), पुनर्नम् (न०),
मेत्यभाव, देहा तरमाप्ति (स्त्री) ।

आवाज, स स्त्री (फा) शब्द, नाद स्वन,
ध्वनि घोष २ गानस्वर ३ उच्चस्वर ।

—उठाना, मु, विपरीत वद (भ्वा प मे) ।

—देठना, मु, स्वरभग जन् (दि आ से) ।

आवारा, वि स्त्री (फा) परिभ्रमक, अहर्मण्य
२ अज्ञानविषय ३ दुष्ट जालम् ।

आवास, म पु (स) गृह गेह मन्थनम् ।

आवाहन स पु (स न) मन्त्रैर्वचनज्ञानम्,
आह्वयणम् २ निमन्त्रणम् ।

आविर्भाव, स पु (स) प्रकाशनं प्रवर्त्य,
विवृत्ति (स्त्री) ० उत्पत्ति (स्त्री) ।

आविर्भूत, वि (स) प्रकटित प्रकाशित
२ उत्पन्न ।

आविष्कर्ता, वि (स कर्त्) आविष्कारक,
प्रकटयित् प्रकाशक कल्पक ।

आविष्कार, स पु (म) अज्ञानतत्त्वप्रकटनम्
२ अपूर्ववस्तुनिर्माणम् ३ प्रवृत्त, प्राकट्यम् ।

आविष्कारक, वि (स) दे 'अविष्कर्ता ।
आविष्कृत, वि (स) प्रकटित, प्रकाशित
२ प्रथमं निर्मित रचित ।

आविष्ट, वि (स) भूतप्रेतादिपीडित
 २ अभिभूत ।
 आगृत, वि (स) प्रसमा आ, च्छादित,
 मवृत पिहित २ परिवृत, बलपित ।
 आगृत्ति, स स्त्री (स) अग्रास क्रिया
 सानत्य प्रवच २ अध्ययनम् ।
 आवेग, स पु (स) आवेश चित्तोद्वेग,
 उत्तेजन, वृद्धीपनम् २ त्वरा ३ संचारिभाव
 भेद (सा) ।
 आवेज्ञा, स पु (फा) प्रालम्ब, लोलक ।
 आवेदक, वि (स) निवेदक, प्रार्थिन् ।
 (स पु) अभियोगिन् वादिन् ।
 आवेदन, स पु (सं न) दे निवेदन ।
 आवेश, स पु (स) आवेग, आतुरता
 २ व्याप्ति (स्त्री), संचार ३ प्रवच
 ४ भूतवाचा ५ अपरमारोग ।
 आवेष्टन, स पु (स न) गोपन, निगूहनम्
 २ अवगुटन, पिथान पुट, कोश ।
 आवेष्टित, वि (स) अवगुठित, आकृत ।
 आशका, स स्त्री (स) सदेह, सशय
 २ अनिष्टभावना ३ भय वास ।
 आशन्तित, वि (स) गीत, वरुण ३ सदे
 हात्मक ।
 आशसा, स स्त्री (स) अपेक्षा आशा
 २ इच्छा, वाञ्छा ३ क्यनम्, चर्चा ।
 आशासित, वि (स) अपेक्षित, आकाङ्क्षित,
 इष्ट २ कथित, वणित ।
 आशासी, वि (स तिन्) आशसु
 अपेक्षी, आकाङ्क्षक, प्रत्याशिन् ।
 आशाना, वि (पा) परिचित, अभिष्ट ।
 स पु जार, प्रणयिन् । स स्त्री प्रेयसी, काता ।
 आशानाई, स स्त्री (फा) मैत्री सख्यम् ।
 २ प्रणय, अनुराग ।
 आशय, स पु (स) तात्पर्य, अभिप्राय,
 अर्थ २ वामना ३ स्थान आधार ४ गर्त ।
 आशा, स स्त्री (म) आशसा आकाङ्क्षा,
 अपेक्षा २ स्पृहा, वाञ्छा, मनोरथ ३ दिशा
 ४ शयनजापते पुत्री ५ रागभेद ।
 —करना, क्रि अ, आशम (भ्वा आ से)
 लृट् प्रति अय, इभ (भ्वा आ से), आशास
 (भ्वा आ से) ।
 —अतीत, वि (स) आशसाधिक ।

—चाद, स पु (स) सदाशावचासिदान्त ।
 —वान्, वि (स) साश, आशान्वित ।
 आशिक, वि (अ) प्रणयिन्, अनुरागिन्,
 आसक्त, अनुरक्त ।
 आशिप, स स्त्री (स आशिम) दे आशीर्वाद ।
 आशीर्वाद, स पु (स) आशिस (स्त्री) आशी
 वंचन, हितान्तरन, मंगलप्रार्थना, आशान्वय,
 शुभकामना ।
 —देना, क्रि स आशिप दा (जु उ अ),
 टि प्रायः लोट व आशीर्ल्लि के रूपे से
 (उ पुत्र आप्नुहि आप्या वा) ।
 आशु, क्रि वि (स) शीघ्र द्रुत, सत्वर
 (सब अण्य) ।
 —कवि, स पु (स) सद्यः वाक्यकार ।
 —तोष, स पु (स) शिव ।
 आशुग, वि (स) शीघ्र द्रुत तीव्र-नामिन् । स
 पु (स) वायु २ वाण ।
 आश्रय, स पु (स न) विरमय, कौतुक,
 चमत्कार, चित्र, अद्भुतम् ।
 —करना, क्रि अ, विरिम (भ्वा आ अ) ।
 —जनक, वि (स) विरमापक, अद्भुत, विचित्र ।
 आश्रम, स पु (स) तपोवन मुनिवसति
 (स्त्री) २ मठ, विहार ३ विश्रामशाला
 ४ मनुष्याद्युष चत्वारो विभागा (ब्रह्मवर्षे
 गृहस्थवानप्रत्यस-यासाश्चमा) ।
 आश्रय, स पु (स) भव आ-लव आधार
 २ अवष्टम्भ, उपग्रह ३ शरण, गति (स्त्री)
 गृह, सदनम् ।
 —दाता, वि (स वृ) रक्षक, रक्षित्, प्रावृ ।
 आश्रित, वि (स) आश्रयप्राप्त, अवलम्बित
 २ अधीन, शरणागत । स पु, सेवक, दास ।
 आश्रासन, स पु (स न) सात्वत, आश्रा-
 प्रदान, समाधासन, प्रोत्सादन, उत्तेजनम् ।
 आश्रित, स पु (स) आश्रयज शारद, इष ।
 आषाढ, स पु (स) अषाढ, शुचि ।
 आस, स स्त्री (स आशा) आशमा २ लालसा
 ३ आश्रय ४ दिशा ।
 आसक्त, वि (स) उत्पर, लीन, मग्न, प्रमित
 २ अनुरक्त बदराग प्राणयिन् ।
 आसक्ति, स स्त्री (स) उत्परता, लीनता,
 मग्नता २ अनुराग, प्रेमन्, काम ।
 आसन, स पु (स न) उपवेशनप्रकार

२ स्थिति (स्त्री) ३ अष्टांगयोगस्य तृतीयमङ्गम्
 ४ उपवेशनाधार, पीठ ५ साधुवसति ६
 नितम्ब ७ शत्रुदुर्गादीनवरुष्य स्थिति ।
 —ढोलना, सु, चनो विकृ (कर्म) ।
 आसन्न, वि (स) समीप, निकट, निकटस्थ ।
 —प्रसवा, वि स्त्री (स) निकटप्रसूति (स्त्री) ।
 —भूत, स पु, वर्तमानसप्तको भूतकाल ।
 आस पास, क्रि वि (अनु आस + स पार्थ) ।
 परित अभित (दोनों द्वितीया के साथ),
 समतल, समताल, विश्वक, सर्वत (सब
 अन्व) ।
 आसमान, स पु (पा, स अश्मान >) ।
 गगन, दे आकाश २ स्वर्ग ।
 —के तारि तोड़ना, पु, अस्मभवानिकार्याणि कृ ।
 —को चूमना, सु गगनं चुम्बन्ना प से),
 —मे चाते करना अन्न वष (न्वा प से) ।
 आसमानी, वि (फा) आकाशीय २ ईषणील ।
 आसरा, स पु (स आश्रय) अवलन,
 आधार २ मरणपोषणाशा ३ आश्रयद ४ शरण,
 गति (स्त्री) ५ प्रतीक्षा ६ आशा ।
 —देना, क्रि सं, रक्ष (न्वा प से) ।
 —लेना, क्रि अ, आत्रि (न्वा ल से),
 शरण गम् ।
 आसव, स पु (स) मद्यभेद २ सुरा, मदिरा
 ३ औषधप्रकार ४ दे 'अरक' ।
 आसा, म स्त्री दे० 'आशा' ।
 आसा, स पु (अ असा) सुवर्णदह रजतयष्टि
 (पु स्त्री) ।
 आसाहृष, स स्त्री (फा) सुख, सौख्यम् ।
 आपाद्, स पुं दे 'आप' ।
 आसादन, म पु (स न) प्राप्ति उपलब्धि
 (स्त्री) २ निधानम् ३ आज्ञामणम् ४ पदवा-
 दागम्य प्राणम् ।
 आसादित, वि (स) प्राप्त, लब्ध २ निहित,
 स्थापित ३ आनात ४ पदवादागम्य गृहीत ।
 आसान, वि (फा) सुवर सुगम, सुखसाध्य ।
 आसाने, स स्त्री (फा) सुकरता सुगमता ।
 आसाम, स पु (स अमम >) कामरूपा,
 अममप्राप्त भारतस्य प्राप्तविशेष ।
 आसामी वि (हि आसाम) अममप्रदेश,
 विषयक संश्लिप्त् । स पु अमम कागरूप,
 वासिन् चारण्य । स स्त्री अममगीया भाषा
 असामी ।

आसाधरी, स स्त्री (सं आशाधरी) श्रीरागरस्य
 रागिणीभेद ।
 आसीन, वि (स) निषण्ण उपविष्ट ।
 आसीस, स स्त्री, दे आशीर्वाद' ।
 आसुर, वि (स) राक्षस, पैशाच, असुरसभ
 धिम् । स पु (स) असुर ।
 आसुरी, वि स्त्री (स) असुरमवधिनी,
 राक्षसी, पैशाची ।
 —चिकित्सा, म स्त्री, शल्यचिकित्सा ।
 —माया, स स्त्री पैशाच छलम् ।
 —संपत्, स स्त्री (सद्) पैशाची वृत्ति (स्त्री) ।
 आसोज, स पु (स आधुञ्ज) दे 'आधिन' ।
 आस्तरण, स पु (म न) कुप, गजपृष्ठस्य
 चित्रकवलयम् २ शय्या, कुशासनम् ।
 आस्तिक, वि (स) इश्वदेवपरलोकविश्वांसिन् ।
 २ ईश्वरसत्तावादिन् ३ अडाड ।
 आस्तिकता, स स्त्री (स) ईश्वदेवपरलोकेषु
 विश्वास २ ईश्वरप्रसन्न्य ।
 आस्तनी, स स्त्री (फा) पिप्पल, कोशना
 लिका, चोलादानां बाहुभाग ।
 —का सौंप, सु गूढशुद्ध, शुभवेरिन् ।
 आल्या, स स्त्री (स) भडा, भक्ति (स्त्री),
 अर्हणा, आदर २ समा आस्थानम् ३ आल
 बन, अपेक्षा ।
 आस्थान, स पु (स न) उपवेशनस्थल,
 समामरूप २ समा ।
 आस्थित, वि (स) स्थित, कृतवासर २ आश्रित
 ३ लब्ध ४ देहित ।
 आस्पद, स पु (स न) स्थानम् २ कार्यम्
 ३ प्रतिष्ठा ४ वश कुलम् ।
 आस्य, स पु (स न) वदन, सुहृद्
 २ मुग्धनंदल, सुखम् ।
 आस्वादन, स पु (स न) स्वादमं, रमनम् ।
 आहं अन्व (सं अहह) कष्ट हा, र न, भा,
 हा, अहो (सब अ य) ।
 आहं, स स्त्री (फा) निधात, उद्यवात,
 दीर्घधात ।
 —भरना क्रि अ, दीर्घ लट् नि धम् (अ
 प से) ।
 आहट, म स्त्री (हि आना + टट प्रत्य)
 पाठशब्द, चरणनिक्षेपध्वनि २ विपदानना
 सूचकध्वनि ।

आहत, वि (स) क्षत व्रणित, विद्ध, मित्रदेह
० गुण्यस्तरया ३ परस्परविरुद्ध (वाक्य)
४ सद्यः क्षालित ५ जीर्ण ६ वपित । स पु,
पट्ट ।

आह्वरण, स पु (स न) आच्छेदन, सहमा
आवृत्तनम् २ अपनयनम् ३ आनयनम्
४ ग्रहणम् ।

आह्वरन, म पु (स आहननम् >) शर्मि
(स्त्री), धर्मा स्थूण ।

आह्वो, वाच्य (अनु) मा न नो, नहि
जाहा, वाच्य (स अहह) अहो, ही आ ।

आहार, म पु (स) मञ्जद, भोजन, नैमन,
वाग्मि (स्त्री) ० राद्य मध्य, सामग्री ।

—विहार, स पु (-रौ) चर्षा, वर्णन वृत्त
आचारव्यवहारी ।

आहार्य, वि (स) मध्य, स्त्राय ० ग्रहीत-य
३ आहरणीय ४ इविम । स पु, अनुषोऽ
नुभाव (सा) ।

अभिनय, म पु (स) बचनचेष्टारहिताऽ
मिनय (सा) ।

आहिस्ता, कि वि (फा त) शनै, मदम् ।
—आहिस्ता, कि वि, शनै शनै, मद मदम् ।

आहुति, स स्त्री (स) इवन, दैवयज्ञ होम,
होत्रम् २ इवनसामग्री ३ सामग्र्या सङ्घ
होतव्या मात्रा ।

—देना, कि स, इ (जु उ अ), यञ् (स्वा
उ अ) ।

आहू, स पु (फा) मृग, हरिण ।

आहुत, वि (स) आकारित, आनि, मन्त्रित ।

आहुति, स स्त्री (स) आकारण, आमन्त्रणम् ।

आहुतिक, वि (स) दैनिक, दैनदिन, प्रात्यहिक ।

क्रि वि अदरइ, अनु प्रति दिनम् । स पु,
दिनस्य वाच्यम् २ महाभाष्यसङ्घ ३ अध्या
पक ४ दैनिकी भृति (स्त्री) ।

आहाद, म पु (स) आनद, हर्ष, मोद ।

आहादक, वि (स) आहादप्रद हर्षजनक,
आनन्ददायक ।

आहादित, वि (स) प्रसन्न, मुदित ।

आह्वान, स पु (स न) आहुति (स्त्री),
आकारण, आमन्त्रणम् २ आहनपत्रम्
(= सम्मन) ३ यद्ये देवताकारणम् ।

—करना, कि स, आह (स्वा उ अ)
आहु (प्रे) २ देवता आवह् (प्रे) ।

इ

इ, देवनागरीवर्णमालाया तृतीय स्वर, इकार ।

इक, स स्त्री (अ) मशी, मषी, मसी ।

इगला, म स्त्री (स इडा) मानवशरीरे वाम
पार्श्वस्था वक्रा नाडी ।

इगलिश, वि (अ) आङ्गदेशीय । स स्त्री
आङ्गभाषा ।

इगलिस्तान, स पु (अ इगलिश + फा स्तान)
आङ्गदेश ।

इगित, स पु (स न) इङ्ग, सकेत आकार,
द्वैदिकवेष्टा । वि मन्केलि ।

इगुर्दा, स स्त्री (स) तापसतर, शूलारि ।

इघ, स पु (अ) अशुभ २ अवस्था रखामात्रम् ।

इजन, स पु (अ पजिन) यत्रम् २ वाप
शकटीकर्षकयत्रम् ।

इजीनियर, स पु (पजीनियर) यत्रकार,
यत्रव्याभिज्ञ, वास्तुविद्याविशारद ।

इजेशन, म पु (अ) मूर्चीभरणम् ।

इइस, स पु (ज) (इ स) द्वार २ प्रवेश
३ आङ्गविद्यालयस्य नवमदशमकक्षे (द्वि)

—परीक्षा, स स्त्री, प्रवेशिका परीक्षा ।

इहुवा, स पु (स गेण्डुक >) घटाघातार
भूत शीर्षस्थ वृत्तलवल्गुम् ।

इतजाम, स पु (अ) सविधा, प्रवच ।

इविरा, स स्त्री (म) यमा, कमला
दे 'लक्ष्मी ।

इदीवर, स पु (स न) नील, कमल उ प
लम् २ कमलम् ।

इदु, स पु (स) चन्द्र २ कपूर रम् ।

इद, वि (स) सपन्न २ श्रेष्ठ । स पु, देव
राज, पानशासन, पुरदर, शक, वज्रिन्,
सुरपति, शचीपति, आसुरल, सद्ब्रह्म,
नाकनाथ वनपाणि २ सूर्य ३ विद्युत् (स्त्री
४ नृप ५ ज्येष्ठानक्षत्रम् ६ चतुर्दशमस्या
७ -वाकरणस्य आदिम आचार्य ८ जीव,
प्राणा ।

—दा आस्तादा, स पु इ दसभा २ सगीतसभा ।

—जाल, स पु (स न) मायाकर्तृन् (न),
कुडकम् ।

—जाही, वि (स लिन्) मायाविन्, कुटुक
 व रिन् ।
 —जीत स पु (स जित्) मेघनाद ।
 —जौ, स पु (स यव) कुटुज शक-बीजम् ।
 —धनुष, स पु (स धनुस न) इन्द्रचाप
 सुरधनुस ।
 —नील, स पु (स) नील उपल मणि
 (नीलम) ।
 —नीटक, स पु (स) मरकत भद्रमगर्भ
 हरि मणि (= जमुर्द) ।
 —प्रस्थ, स पु (स न) शुधिष्ठिरिर्मापित
 ष्टिलीसमीपवति तगरम् ।
 —लोक, स पु (स) नरक स्वर्ग ।
 इन्द्रा, स स्त्री (स) > इन्द्राणी ।
 इन्द्राणी, स स्त्री (स) शची षे द्री पीलोमो
 म ई द्री पुलोमजा २ स्थूलला ३ सूमैला
 ४ निजुण्डी ।
 इन्द्रानुज, स पु (स) विष्णु ।
 इन्द्रायन, स पु (स इन्द्राणी) सुरमा
 निजुण्डी सिंदुवार ।
 —का फल, मु, बही रम्योऽ तर्दुष्ट ।
 इन्द्राधुष, स पु (स पु न) इन्द्रचाप
 २ वज्र पवि ।
 इन्द्रिय, स स्त्री (स न) करण अक्ष इषीक,
 प्रवण, विषयिन् (न) २ जननेन्द्रियम्
 ३ वीर्यम् ४ पव' इति मर्या ।
 —अर्थ, स पु (स) इन्द्रियविषय (रूप
 रसादि)
 —मित्र, वि (स) जितेन्द्रिय दृषीकेश ।
 —निग्रह, स पु (स) इन्द्रिय दमन जय,
 दय
 —घस, वि (स) विषयिन्, विषयज्ञ ।
 इधन, स पु (स न) इधम र्धं पधस (न) ।
 इ (ष्) पायर, स पु (अ) स प्राज्यम्,
 आधिराज्यम् ।
 इंपीरियन्त्रिभ स पु (अ) साम्राज्यवाद
 २ साम्राज्यमनम् ।
 इपोर्ट, स पु (अ) दे आयात ।
 इग्नाप, स पु (अ) वाय धम २ निर्णय
 विवेक
 इरिटायूट, न स्त्री (अ) सरयानम् ।
 इरिटयूटयूज, स स्त्री (अ) शिक्षालय
 विद्यालय २ धर्मशाळा इ रीति (स्त्री)

इन्स्ट्रमट, स प्र (अ) उपकरण यन्त्रम्
 २ साधनम् ।
 इन्स्पेक्टर, स पु (अ) निरीक्षक, द्रष्टु ।
 इक, वि, > एक ।
 इकट्टा, वि (स पवस्थ) पवीकृत, समवेत,
 गणीभूत ।
 —करना, कि स, एकत्र कृ म नि, वि (स्व
 उ अ) ।
 इकट्टे, कि वि (हि इकट्टा) पकीभूय,
 मधूय मिलित्वा ।
 इक्तार, मि वि (स एकतार >) सतन,
 निर तरम् ।
 इकतारा, स पु (स प्वतार >) एक तार
 तथीव वाषभेद ।
 इक्तीस, वि (स एकत्रिंशत् स्त्री एक)
 स पु उक्ता मरया, तद्बोधकावकी (३२) च ।
 इक्वार, स पु (अ) प्रतिष्ठा, सगर प्रति
 स मव २ जगी रवी, कार ।
 —नामा, स पु (पा) प्रतिष्ठा समय, पत्रं
 श्लेष्यम् ।
 इक्लौना, स पु (स एकल >) भगिनेभ्रातृ
 हीन, पित्रो एकल पुत्र ।
 इक्वट, वि (स एकवटि स्त्री एक) स
 पु उक्ता सख्या तद्बोधकावकी (६१) च ।
 इक्मार, वि (स एकमार >) ममान, सइश ।
 इक्कत्तर, वि (हि इक + सत्तर) एकसप्तति
 (स्त्री एक) स पु उक्ता मरया तद्बोध
 कावकी (७१) च ।
 इक्हरा, वि (स एकत्तर) दे एकहरा ।
 इक्वार्ट, स स्त्री (हि इक) एका व्यक्ति
 (स्त्री) २ एकांक इ त्रैराशिकम् (= इकार
 का कायण) ।
 इक्वानवे, वि (हि इक + नवे) एतन
 वति (स्त्री एक) स पु उक्ता मरया
 तद्बोधकावकी (९१) च ।
 इक्वाचन, वि (स एकपचाशत् स्त्री एक) म
 पु उक्ता सख्या तद्बोधकावकी (५१) च ।
 इक्वासी, वि (हि इक + भरसी) पचाशीति
 (स्त्री एक) स पु उक्ता मरया तद्बोधकाव
 की (८१) च ।
 इक्वोत्तर, वि (स एकोत्तर) पचाधिक ।
 इक्टा, वि (स एक) एकाकिन्, एकम् ।

२ अनुस्य, असम । स पु, वाहन यान प्रव
हण भेद २ एकांकितुल क्रीडापत्रम् ३, एवाकी
योष ।

—दुष्टा वि विरल २ मार्गदृष्ट ३ घृषदृष्ट ।

दुष्ट, स पु (स) मधु शुद्ध, दृग, महारस,
रसाल, पयोधर ।

—रस, स पु (स) मधुदृग सार द्रव
निर्यास ।

—सार, म पु (स) शुद्ध ।

इषवावु, स पु (स) वैवस्वतमनो पुत्र
सूर्यःशोच प्रथमनृप ।

—नदन, स पु (स) श्रीरामच द्र ।

इरितयार, स पु (अ) प्रभाव अधि
कार २ अधिवारक्षेत्रम् ३ सामर्थ्यम्
४ स्वामिन्वम्

इच्छा, स स्त्री (स) रुद्रा, आकांक्षा, ईशा
वाग्छा, अभिलाष, मनोरथ इष्ट, अभीष्ट,
इम्षित, कामना ।

—करना, कि म इष (शु प से), अभि
लष, वाञ्छ (दोनो भ्वा प से) कम् (भ्वा
आ से, वामयते), स्पृह (जु, चतुर्थी के
साथ), (सन्नत रूपो से भी, उ पढने की
इच्छा करता है=पिपठिषति) ।

—अनुच्छल, कि वि (स न) यथारुचि,
यथच्छ, यथेष्ट, यथाकामम् ।

—भेदी, स पु (स—दिन्) यथष्टविरचक
मौषधम् ।

इच्छित, वि (स) अभीष्ट वांछित, अभि
लषित ।

इच्छुक, वि (स) इच्छु अभिलाषिन्, आकां
क्षिन् । (टि सन्नत रूपो से भी उ० पढने का
इच्छुक-पिपठिषु । तुमुन्नत रूप के बाद
'काम' वा 'मनस' ल्याप्त् भी उ० जाने का
इच्छुक-गच्छ-काम मना) ।

इजराय, स पु (अ) प्रचालन २ अनुष्ठानम् ।

—डिपारी, स पु (अ + अ विकरी) राजा
शान्पादनम् ।

इजलास, स पु (अ) अधिवेदनम् २ न्याया
लय ।

इजहार, स पु (अ) प्रकाशनम् २ साक्ष्यम् ।

इजाजत, स स्त्री (अ) अनुमति (स्त्री),
अनुशा २ आशा, आदेश ।

इजाफा, स पु (अ) वृद्धि (स्त्री), दे ।
इजार, स स्त्री (अ) दे 'पाजामा' ।

—दद, स पु (अ + फा) दे 'नाडा

इजारा, स पु (अ) पण, समय २ पट्ट,
पट्टोलिका ३ स्वस्वम् ।

इजारे (र) दार, म पु (अ + फा) पणकर्त,
नियमद्वय ।

इजत, स स्त्री (अ) म, मान, आदर ।

—उत्तारभा, सु, लघू नि, कृ ।

—रत्ना, सु, अपमानात् रथ (भ्वा प स) ।
इज्या, स स्त्री (स) यज्ञ, याग, होम २ पूजा,
अर्चो ।

इटा (टै) लिक्कम्, स पु (अ) वक्रमुद्राश्च
राणि (न इडु)

इटालियन, स पु (अ) इटलीवासिन् २.
इटलीत, आगत वस्त्रभेद ३ इटलीभाषा । वि
इटलीसन्विचिन् ।

इठलाना, कि अ (हि ऐंठ) सगर्वं चङ्
(भ्वा आ से) २ हाव इश (प्रे) ३ पर
व्येशय अक्षवत् आवर् (भ्वा प से) ।

इठलाहट, स स्त्री (हि इठलाना) आटोप,
गर्व २ हावभाव ।

इडा, स स्त्री (स) भूमि (स्त्री) २ गी
(स्त्री) ३ वागी ४ स्तुति (स्त्री) ५ ७ यज्ञ
पात्रदेवता आहुति, विशेष ८ भक्त, इविस (न)
९ नमोदेवता १० दुर्गा ११ पार्वती १२ वक्ष्यप
पत्नी १३ वसुदेवपत्नी १४ सुषपत्नी
१५ स्वर्ग १६ नाडीभेद ।

इतना, वि [स एतावत् वा हि ईं (यह) +
तना (प्रत्य)] एतावत्, एत-मान, इयत् (स्त्री,
एतावती, इयती) ।

इतने में, कि वि एतावमध्ये, भवान्तरे २ अ
स्मिन्नेव समये ।

इतमीनान, स पु (अ) तोष स शान्ति
(स्त्री) ।

इतमीनानी, वि (अ) विद्वसनीय, विश्वास्य ।

इतर, स पु (अ इत्) दे 'अतर' ।

इतर, वि (स) अय, अपर, पर २ नीच
३ सामान्य, साधारण ।

—इतर, कि वि, परस्पर अन्यो य, मिथ
(सब अन्य) ।

इतराश्रय, स पु (सं) अन्योयाश्रय ।

इतराना, कि अ (स उत्तरण >) गव् (भ्वा प से) प्रगल्भ (भ्वा आ से) ।

इतवार, स पु (न आदित्यवार) रवि आदि
त्य भातु बार वासर ।

इति, अय (स) इति उम् इत्योम्,
समाप्तिचक्रमण्ययम् । स स्त्री, अवसान,
आन समाप्ति (स्त्री) ।

—कर्तव्यता, स स्त्री (न) कर्मानुष्ठानविधि
(पु) ।

—उत्त, स पु (स न) पुरावृत्त, (पुरानवी)
वधा ।

—श्री, स स्त्री (स) अत, समाप्ति (स्त्री)

इतिहास, स पु (स) पुरावृत्त, पूर्ववृत्तात्,
पुराभूतम् ।

इत्तफाक, स पु (अ) सघटन ना, मघटन जा
२ सोद्धारम्, साम्प्रत्यम् ३ अवसर, अव
वागु ।

इत्तला, स स्त्री (अ) विज्ञापन, रवापन,
सूचना बोधनम् ।

इत्य, कि वि (स) एव अनेन प्रकारेण ।

इत्यभूत्, वि (स) ईदृश, एतादृश ।

इत्यादि, अभ्य (स) आदि, प्रभृति, आद्य
(सब समासा त में, व विककाकार्य) ।

इत्यादिक, वि (स) दे 'इत्यादि' ।

इत्र, स पु (अ) दे 'अतर' ।

इधर, कि दि (स अत्र) इत, एतत्स्थान
प्रति २ अत्र, इध, अस्मिन् स्थाने ।

—उधर, कि वि, इतरतन, अत्र-तत्र अति
यत्स्थाने २ समयत, समयत्र ३ अभित,
परित (जनों के साथ द्वितीया), सर्वत्र,
विधत्, मगलत्, सम-नात् ।

—उधर की बात, सु, जन, प्रवाद इति
(स्त्री) ।

—की उधर लगाना, सु, कलह उदी (प्रे) ।

—की दुनिया उधर होना, सु, असमय
भवेत् चेत् ।

इत्तं सर्वं, (दि इत्) एतद्, इदम् ।

—इतिना, कि दि, वर्तमाने, अद्यत्वे ।

इत्तं, स पु (स) सूर्य २ स्वामिन् ।

इत्तकर्मण्यम्, स पु (अ) आयकर ।

स पु (अ) इत्तपरिवर्तन,
२ । २ राज्यविप्लव, प्रजाशोष ।

इत्तकार, स पु (अ) प्रत्याख्यान, प्रति नि,
वेध ।

—करना, कि स, प्रति नि विध् (भ्वा प वे)
इत्तकिशाफ, सं पु (अ०) आविर्भाव,
प्राकार्य, प्राकृत्यम् ।

इत्तकिस्तार, स पु (अ०) विनय, तत्रत्व-ना ।

इत्तफुलुएजा, स पु (अ) शीतव्वर ।

इत्तसान, स पु (अ) मनुष्य ।

इत्तसानियत्, म स्त्री (अ) मनुष्यत्वम्
२ सज्जनता, शिष्टता ।

इत्तहिस्तार, म पु (अ) अवलक, आशय ।

इत्तनाम, स पु (अ इत्तनाम) पुरस्कार,
पारितोषिकम् ।

इत्तनायत्, स स्त्री (अ) कृपा २ उपकार ।

इत्तने गिने, वि (अनु० इत्त + दि गिनना)
कतिचन, लोका २ अल्पसरसका ।

इत्तवारत्, स स्त्री (अ) लेख २ लेखशैली ।

इत्तमरती, स स्त्री (स० अमृतम् >) कर्णी,
मिष्टान्नभेद ।

इत्तमली, स स्त्री (स अम्लिका) आम्लि (लो-
का, विवा, पितृदि (बी) का २ अम्लिका
विधा, फलम् ।

इत्तमाम, म पु (अ) पुरोहित २ नेव ।

—याडा, स पु (अ + दि) मुहूर्तमपवांनुष्ठा
नवात् ।

इत्तमारत्, स स्त्री (अ) भवन, गृहम् ।

इत्तमहान, म पु (अ) परीक्षा ।

इत्तला, स स्त्री (अ) हुतलेख २ अक्षर
वर्ण, विद्यास ।

इत्तत्ता, स स्त्री (स) मीमा, परिमाणम् ।

इत्तवादा, म पु (अ) मकर, निश्चय ।

इत्तवारती, स स्त्री (म) वर्यपसुता २ नदी
विशेष (= रावी) ३ ओषधिभेद
(- ५ परचट) ।

इत्तं गिर्दं, कि, वि (अनु० इत्त + फा गिर्दं)
परित अभिन, सर्वत्र २ उमदत्, इतरतन ।

इत्तज्जाम, सं पु (अ) अभियोग, दाव,
आरोप ।

इत्तहाम, स पु (अ) देवतागो ।

इत्तला, म स्त्री (स) पृथिवी २ पार्वती
३ वागी ४ कुट्टिमती नारी ५ शी (स्त्री) ।

इत्तलाका, स पु (अ) प्रदेश, भूभाग ।
२ सव्य ।

इलान, स पु (अ) विक्रिसा, उपचार ।
२ औषध, औषधि (स्त्री) ३ युक्ति
(स्त्री) प्रती (ति) वार ।

इलायची, स स्त्री (स एला) (बढी)
एला चढ़वाला बहुला, मिदिवा २ (छोटी)
हुति हुटि (स्त्री) नदिनी ।

—दाना, स पु, (हिं+फा) एलाबीजम्
२ कनिबीजम् २ लुबीजमुक्तो मिष्टान्नभेद ।
इलाही, वि (अ) दैव, ईशरीय । स पु,
ईश्वर ।

इवम, म पु (अ) विद्या, ज्ञानम् ।
इह्यत, स स्त्री (अ) रोग २ बाधा ३ अप
राध ४ व्यसनम् ।

इव, अव्य (स) यथा, तुल्य, सदृश,
समान-वत् ।

इशारा, स पु (अ) सकेत इगितम्
२ सशक्तवचनम् ३ धुमप्रेरणा ।

इरक, स पु (अ) अनुराग, प्रणय ।

इस्तहार, स पु (अ) विद्यापन, विद्यति
(स्त्री) २ घोषणा, स्थापनम् ।

इयु स पु (स) बाण, सायक ।

इयुधी, स पु (स धि) लूणीर, लूणी

इष्ट, वि (स) बाह्य, अभिष्टित, आकाक्षित
२ अभिप्रेत ३ पूजित । स पु, (स न)
धर्मकृत्य, अग्निहोषादिकर्माणि २ कुलदेव
३ मित्रम् ४ भरिष्ट, ५ शुक ।

—देव, स पु (स) कुलदेवना ।

—इवना, स स्त्री (सं) आराध्यदेव ।

इष्टार्त्त, स पु (स न) यशसातादिकर्मन्(न) ।

ई, देवनागरीव-मालाया चतुर्थं स्वरवां,
ईकार ।

ईगुर, म पु (स दिगुल-रुम्) दिगुलि,
दिगुल (पु न), सिन्दूरम् ।

ईट, स स्त्री (म शुक) शटिका । (पक्वी)
शरका, पक्वैवा, अमृशुक २ शुककारो
पातुख ।

—से ईट वजाना, मु, ध्वस्-उन्मूल विनश
निपत्त (सव मे) ।

—पयद, मु, न किमपि, न किंचिद ।

देव वा दार् ई की मस्विद अलग बनाना,
मु, अस्सामाय आचर (व्या प से) ।

इष्टि, स स्त्री (न) कमिलाप २ यश
३ पतजलिकृता व्याकरणनियम ।

इस, सर्व (स एष) एन्द, इदम् ।

इसपत्र, स पु (अ स्पत्र) दुधिरदेहविह
२ पराश्रपुत्र ।

इसवगोल, स पु (फा यशवगोल) रुद्र
स्निग्ध, जीरक ।

इस्तरार, स पु (अ) आमह, इ० ।

इमलाम, स पु (अ) मोहम्मदीयधर्म ।
२ ईश्वरोच्छा स्वीकार ।

इसलामी, मोहम्मदीयधर्मसम्बन्धिन् ।

इस्ते, सर्व (हिं इम) १ (इसकी) एन
(पु), एता (स्त्री), एतद् (न) इम (पु),
इमा (स्त्री), इदम् (न) २ (इसके लिए)
एतस्मै (पु न), एतस्यै (स्त्री) अस्मै
(पु न), अस्यै (स्त्री) ।

इस्तरी, स स्त्री (स स्तरी >) स्तरणी,
रजकलोह इन् ।

इस्तिक्वाल, स पु (अ) प्रत्युद्यमन, प्रत्यु
द्यवनम् । स्वागन्, सरकार ।

इस्तिगासा, अभियोग, भाषापाद ।

इस्तीफा, स पु (अ इस्तीफा) त्यागपत्रम् ।

इस्तेमाल, स पु (अ) उपयोग, व्यवहार,
प्रयोग ।

इह, किं वि (स) अत्र २ भूलोके । स पु,
भूलोक ।

—छीला, स स्त्री (स) जीवनम् ।

इहाता, स पु (अ) बाट-टी, प्रांगण, परि
सरभूमि (स्त्री) ।

ईधन, स पु, दे 'इधन' ।

ईशक, स पु (स) दर्शन वीक्षक
२ चिन्तक ।

ईक्षण, स पु (स न) अवलोकन, दर्शनम्
२ नेत्रम् ३ विवेचनम् ।

ईशा, स स्त्री (स) दर्शन वीक्षणम् । विवे
चन, पर्यालोचनम् ।

ईश्व, स स्त्री दे 'इशु' ।

ईजा, स स्त्री (अ) कष्ट, क्लेश ।

ईजाद, स स्त्री, दे 'आविष्कार' ।

ईठि, स स्त्री (सं इष्टि) सरय, सौहार्दम्
२ प्रयत्न ।

ईति, स स्त्री (स) कृषे षट् उपदेश (यथा अनिवृष्टि, अनावृष्टि, शलभा, मूषिका, खगा, शत्रोराक्रमणम्) २ विघ्न ३ दुःखम् ।
 ईयर, स पु (अ) दधु (न), आहूम् ।
 ईद, स स्त्री (अ) पवभोरसपभेद ।
 —का चोद, सु, दिवाप्रदोष, दुर्लभदर्शन ।
 ईदश, क्ति वि (स न) इत्थ अनेन प्रकारेण । वि, दे 'पेमा' ।
 ईप्सा, स स्त्री (स) इच्छा, अभिलष ।
 ईप्सित, वि (स) अभिलषित, इष्ट ।
 ईमान, स पु (अ) धर्म २ सत्यम् । ३ भासितव्यबुद्धि (स्त्री) ४ शब्दा ।
 —दार, वि (अ + फा) धार्मिक, -दायवर्तिन् २ निष्पत् ३ आश्रितक ४ विधमनीय ।
 ईरान, स पु (पा) पारसीक ।
 ईरानी, वि पारस (—सी स्त्री) । स स्त्री, पारसी, पारसीकभाषा । स पु, पारसीका, पारसीकवासिन (बहु) ।
 ईर्ष्या, स स्त्री (स) मात्सर, मात्सर्द, परोत्सर्षासहिष्णुता, अमूया ।

ईर्ष्यालु, वि (सं) मात्सरिन्, अमूयक, इर्षिन्, परोत्सर्षासहन ।
 ईश, स पु (इम) प्रभु, पति, स्वामिन् २ परमेधर ३ नृप ४ शिव ५ 'एकादश' इति सत्त्वा ।
 ईशान, स पु (स) स्वामिन्, प्रभु २ महादेव, ३ पूर्वोत्तरदिक्पति ।
 ईश्वर, सं पु (स) परमेधर, परमात्मन्, नगदीश्वर, परमेश २ स्वामिन् ३ शिव । वि, आद्य ।
 —प्रणिधान, सं पु (स न) ईश्वरे श्रद्धाविशय, स्वकर्मणामोषरार्पणम् ।
 ईश्वरीय, वि (स) दिव्य, देव, ईदसवधिन् ।
 ईषत्, अव्य (स) अत्य स्नोक, -यूनम् ।
 ईसवगोल, स पु, दे 'रमवगोल' ।
 ईसवी, वि (फा) खिलसवधिन् ।
 —सन्, स पु (फा + अ) खिलान् ।
 ईसा, स पु (अ) खिल, जीप्त ।
 ईसाई, वि (फा) खिलानुयायिन् ।
 ईहा, स स्त्री (स) वेष्टा २ उदोग ३ अभिलाष ४ ओभ (लि) ।

उ

उ देवनागरीवर्णमालाया पचम स्वरवर्ण, उकार ।
 उंकुण, स पु (स) मत्कुण, तस्यकोट भोक्ता ।
 उँगली, स स्त्री (स अगुली) अगुल, अगुरी, करशाखा (उँगलियों के कर्मण नाम—अगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा अनामिका, कनिष्ठा) ।
 —का पटाग्या, स पु, अगुलीमोदन, मुचुटी ।
 उँगलियों पर नधाना, सु, सपेच्छ क (प्रे) ।
 —ठठाना, सु, निद्र (भ्वा प से), अविशिष्ट (तु प अ) २ मनागपि अपकृ ।
 वानी—, स स्त्री, कनिष्ठा ।
 वानी में उगना देना, सु, औदासी देन पर वचनानि न सु (भ्वा प अ) ।
 दौनों लगे उँगली दखाना, सु, अरथे किरिम (भ्वा भा अ), चकितचकित (वि) म् ।
 पाँचो उँगलियों वी में होना, सु, संवा सपृथ (दि प से) ।
 उँचन, स स्त्री (सं उदचनम् >) खट्वाया पादभंगराया रञ्जु (स्त्री) ।

उचास, वि, दे 'उनचास' ।
 उछ, सं स्त्री (स पु) उपासश्रयाय क्षेपण रोषादचयनम्, उच्छनम् ।
 —वृत्ति, सं स्त्री (सं) उच्छेन जीवनि वाँद । वि, उच्छरील ।
 उँजियारी, उँज्यारी, स स्त्री (हि उजारा) चन्द्रिका, उद्योतना । वि स्त्री, चन्द्रिका प्रकाश, सुप्त ।
 उँजेरा, उँजेला, स पु, दे 'उजाला' ।
 उँहेलना, कि स (स अव + हि टालना ?) म, लू (प्रे) निर्मल (प्रे), मत्स्य (प्रे), ध्यु (प्रे) ।
 उदन, स पु (म न) कन्दन, आर्द्रकरणम् ।
 उदुर, स पु (स उदर) मूष (वि) व ।
 उँह, अव्य (अनु) पृणे, देभाभिप्रेषीकादिस्व कर्मभ्यश्च, चिक, न, नदि, भा, हा इ० ।
 उच्छण, वि (स उच्छ + ऋण) अन्ता, ऋणमुक्त ।
 उकड़ू, स पु (स उच्छूरोह) उपबसन प्रकारविशेष ।
 —बैठना, वि अ, अवगतसविष भाम् (अ भा से) ।

उक्ताना, कि अ (सं उक्त >) सिद्ध—
निर्विद् (दि आ अ) उद्विद् (तु आ अ) ।

उक्तताया हुआ, वि सिद्ध, निर्विण्ण ।

उक्तसना, कि अ (सं उक्तषण >) स-वि-
क्षुम (दि प स) उक्त स, नप (दि आ
अ) २ उद्वगम्, उन्नम् (भ्वा प अ)
३ प्ररूह (भ्वा प अ) ४ विशिष्य (दि
प अ) । स पु, सक्षोम, सताप, उद्वगम्,
प्ररोह, विश्लेष ।

उक्तसाना, कि म (हि उक्तसाना) उक्तिञ्ज,
उदीप, प्रोत्सह स-वि-क्षुम्, प्रचुद् (सब
प्रे) २ उथा-उद्वगम् (प्रे) ३ अपस
प्रे) । स पु, उक्तजन, उदीपन उथापन,
अपमारणम् ।

उक्त, वि (स) कथित, उदित, माषित, लपित,
व्याहृत, उदीरित ।

उक्ति, स स्त्री (म) कथन, वचनम् २ अद्भुत
वाक्यम् ३ समिति (स्त्री) ।

उक्थ म पु (स न) सामवेद २ स्तोत्र
३ प्राण

उक्ता, स पु (म उक्त्वा) वृषभ २ सूर्य ।

उक्खदना, कि अ (स उक्खननम्) उमूल,
उखन्, समूल उद्वह (सब कर्म) २ (इड
स्थित) पृथक् भू ३ सधे चल (भ्वा प
से) वा श्रुट (दि प से) ४ स्वर ताल-
च्युत (वि) भू (मगीत) ५ अपस (भ्वा
प अ), विद् (भ्वा प अ) ६ सीवन श्रुट
स पु, उमूलन, उक्खनन, सधेश्वलन, स्वर-
ताल-भग अपसरण, सीवनश्रोतनम् ।

दम—, सु, स्वरभग २ प्राणनिष्क्रमणम् ।

पैर—, सु, विद्रवण, पलायनम् ।

उक्खदवाना, कि प्रे (हि उक्खदना) अन्येन
उन्मूल—उत्पट—उत्खन्—व्यपरुद्—उच्छिद्
(सब प्रे) ।

उक्खली, स स्त्री (स उक्खलम्) उदूखलम् ।

उक्खा, स स्त्री, (स) स्थाली दे 'शैव' ।

उक्खाड, स स्त्री (हि उक्खाडना) उमूलन,
उत्पादन, उक्खननम् ।

उक्खाडना, कि स (हि उक्खदना) उमूल-
उत्पट—उत्खन्—व्यपरुद्—उच्छिद् (सब प्रे)
२ सन्धि चल (प्रे) ३ वि-परा-जि (भ्वा

आ अ) ४ अपस (प्रे) ५ विनदा (प्रे)
गडे मुदें—सु विरमृतकलहान् पुन उदीप (प्रे) ।

उगाना, कि अ (स उद्वगमनम्) उद्वगम्
(भ्वा प अ), उदि (= उद्व + इ अ प
अ), उद्वय (= उद्व + अय्, भ्वा आ से)
२ स्फुट (तु प से), उद्विद् (कर्म) प्ररूह
(भ्वा प अ) ३ उत्पद् (दि आ अ),
जम् (दि आ से) । स पु उद्वम, उद्वय,
उद्वेद, प्ररोह, प्र, स्फुटनम्, उत्पत्ति (स्त्री) ।
उगा हुआ, वि, उद्वगन, उदित, उद्विन्न, प्ररूह,
प्र, स्फुटित, उत्पन्न ।

उगलना, कि स (स उद्विरणम्) उद्वृ (तु
प से), वम् (भ्वा प से), छद् (जु) ।
२ अन्यायप्राप्तधन प्रतिदा (जु उ अ)
३ गोपनीय प्रकाश (प्रे) ४ बहिष्कृ (त
उ अ) ।

उहर—, सु, अरुतुद वपन वद् (भ्वा प से)

उगलवाना, कि प्रे (हि उगलना) वम्
उद्वृ (प्रे) २ अपराध स्वीकृ (प्रे)
३ अन्यायभ धन प्रतिदा (प्र प्रतिदापयति) ।

उगाना, कि स, (1 ह उगाना) प्ररूह (प्रे),
(अत्रादिक) उत्पद् (प्र) ३ प्रहाराय
शस्त्रादिक उन्नम् (प्रे) ।

उगार, स पु (सं उद्वगार >) निपीष्टित-
निर्गलित-निर्गलित-जलम् ।

उगाल, स पु (स उद्वगार) मुत्तलाव,
लाला २ कफ, श्लेष्मन् (पु) ३ जीर्ण
वस्त्रम् ।

—दान, स पु, प्रतिग्राह, पतद्ग्रह ।

उगालना, कि स (हि उगलना) उद्वृ (तु
प से) २ रोमभायते (ना धा) ।

उगाहना, कि स (स उद्वगदणम् >)
(कर ऋण वा) समाह (भ्वा उ अ), मष्ट
(जु उ अ), अव वि स नि, चि (स्वा
उ अ) ।

उगाही, स स्त्री (हि उगाहना) (धनस्य)
समाहार, सगरण, सम्रहण, समुच्चयनम्
२ समृत धनम् ३ भूमिकर ४ ऋणादिकस्य
अज्ञात सम्रहणम् ५ कुसीद, वार्द्ध्यवृत्ति
(स्त्री) ।

उग्र, वि (स) प्रचर, तीव्र, प्रबल, धोर,
रौद्र । स पु (स) शिव २ विष्णु ३ सूर्य ।

उग्रता, स स्त्री (सं) प्रचण्डता, भयकरता, निर्दयता, उग्रण्डता ।

उग्रसेन, सं पु (स) कसजनाक ।

उग्रा, सं स्त्री (स) दुर्गा, महाकाली २ कर्कशा नारी ३ वचा ४ टिकिकीपथम् ।

उघटना, कि अ (सं उघटनम्) उघट् (कर्म) अपा वि, वृ (कर्म) २ नग्री विवस्वी भू ३ प्रकाश (भा आ मे) ४ रहस्य भिद् (कर्म) ।

उघाडना, कि स (हि उघटना) उघट (प्रे) अपा वि, वृ (स्वा उ से) २ नग्री विवस्वा-कृ २ प्रकट् (प्रे) ४ रहस्य भिद् (प्र) ।

उघाडा, वि (हि उघाडना) विवस्, नग्न २ प्रत्यक्ष ३ प्रकाशित ।

उचकन, स पु (हि उचकना) आधार, अवल, पात्रादिकस्याधारभूत प्रस्तरस्य ।

उचकना, कि अ (स उचकरण) प्रपदेन उरथा (भा प अ), पादाग्रेण काय उग्रम् (प्र) २ उत्प्लु (भा आ अ) ।

उचराना, कि स (हि उचकना) उचकना के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप ।

उचका, स पु (हि उचकना) वचक, प्रतारक, धूर्त २ अधि, श्रेयक-चौर ।

उचटना, कि अ (सं उचनम्) विदिल्य (दि प अ), निवट् (भा आ से), विवृज् (कर्म) २ विरज् (कर्म), उपेक्ष् (भा आ से) ।

उचरना, कि स, दे 'दोलना' ।

उचडाना, कि स (स उचानम्) विदिल्य विघट् विच्छिद् (प्रे) ।

उचाट, स पु (सं उचाट) विरक्ति (स्त्री), वैराग्य, बीदासीन्य, अयमनस्कता । वि, उदामीन, विरक्त ।

—होना, कि अ निविद् विद् (दि आ अ) ।

उच्छट, वि (स) प्रकण्ड, अल्पुत्र २ क्रुद्ध, कुपित ३ अर्षार ।

उचित, वि (स), युक्त, समान, उपपन्न ।

उच्च, वि (स) उग्र उच्छ्रित, उद्, तुंग, उदाल २ उत्थम, श्रेष्ठ ।

उच्चय, स पु (स) निचय, निर २ चयनम् ३ अम्युदय ।

उच्चता, सं स्त्री (सं) उच्छ्र (च्चा) व, आरोह, उत्तेष, तुङ्गता २ श्रेष्ठत्व, महत्त्वम् ।

उच्चाटन, स पु (स न) विरलेपण पृथक करणम् २ उत्पादन, उन्मूलनम् ३ तात्रिका भिन्नाभेद ४ विरक्ति (स्त्री) ।

उच्चार, स पु (स) भाषण २ पुरीषम् ।

उच्चारण, सं पु (सं न) उदीरण, भाषणम् २ भाषणविधि ।

—करना, कि स, उच्च-उदीर् (प्रे), व्याड (भा प अ), गद्-वद् (भा प से) ।

उच्चारित, वि (स) उदीरित, उरित, भाषित, व्याडन ।

उच्चावच, वि (सं) उग्रतापथ, उदृष्टापदृष्ट, उत्तरापर, उग्रतावनत ।

उच्चित, वि (स) सगृहीत, सचित ।

उच्चै श्रवा, सं पु (स-श्रवम्) सनुद्रमथनज श्वेतपोटक २ एट, ईषद्-, वधिर ।

उच्छलन, स पु (स न) उद्-पतन-दुवन, बलानम् ।

उच्छिञ्च, वि (स) खण्डित, हन २ उन्मूलित ३ नष्ट ।

उच्छिष्ट, वि (भ) मुक्तावशिष्ट, जुष्ट २ व्यवहानपर । सं पु मुक्तावशिष्टवस्तु (न), जुष्ट २ मधु (न) ।

उच्छ्र, स पु (अनु) जलादिरोधन कासभेद ।

उच्छ्रगल, वि (सं) निरकुश, स्वैरिन्, उदाम, उष्ट, अशिष्ट, अविनीत २ उम्भ्र, विधिकम नियम, विन्द ।

उच्छेद, स पु (स) उन्मूलन, उत्पादन, विश्लेषण, उण्डनम् २ नाश, ध्वंस ।

—करना, कि स, उन्मूल-उत्पट् विरिल्य् नश्च (प्रे) ।

उच्छेदन, स पु (स न) दे 'उच्छेद' ।

उच्छ्राम, स पु (सं) आहर, आन २ आस ३ ग्रन्थपरिच्छेद ।

उच्छ्रा, सं पु (सं उच्छ्रा) क्रोड्य २ हृदयम् ।

उद्धल-वृद्, सं स्त्री (हि उद्धलना-वृद्) कौश, पण, विहार, कूर्जन, वीडाकूर्जनम् २ चाचव्य, अपौरता ।

उद्धलना, कि अ (स उद्धलनम्) उच्छ्र वत् (भा उ से) उत्पु (भा आ अ), उत्पट् (भा ए से) २ अरवन्तं प्रसद

(भ्वा प अ) ३ नृ (भ्वा प से) । सं पु, उच्छलन, उत्पतन, उद्, ध्रुवन, बलिन, ध्रुव, क्षप पा ।

उद्गाल, स स्त्री (सं पु) द्वे 'उच्छलना' स पु । ० प्लवनावधि, प्लुतिसीमा ३ वमनम् ।

उद्गालना, क्रि स (सं उच्छालनम्) उच्छल् (प्रे), उरिक्षप् (तु प अ) ० प्रकट् (प्रे) ।

उद्गाह, स पु (स उत्साह) उत्सुकता, व्यग्रता २ एष आनन्द ३ उत्सव ४ रथयात्रा ।

उज्ज्वला, क्रि अ (स अवज्ज्वलन् >) विन-निर्जन (वि) भू ० नि-अव, पठ् (भ्वा प से), सप्त-अरा (भ्वा आ से) ३ क्षय या (अ प अ) ।

उज्ज्व, वि (स उज् + जड >) जड, मूढ, अज्ञ २ असम्य, अशिष्ट ३ उद्दड, निरकुश ।

उज्ज्वक, स पु (तु) नातिविशेष २ मूर्ख ।

उज्जरत, स स्त्री (अ) श्रुति (स्त्री), वेगनम् २ कर्मण्या, निष्कय ।

उज्जलत, स स्त्री (अ) शीघ्रता, त्वरा ।

उज्जला, वि (स उज्ज्वल) श्वेत, शुद्ध, शुभ्र, धवल, सिन, धौत, गौर २ स्वच्छ, निर्मल ३ दीप्त, दिव्य, प्रकाशमान ।

उज्जागर, वि (स उज् + जागरित >) प्रकाशमान २ प्रसिद्ध ।

उज्जाह, स पु (हि उज्ज्वला) जीर्ण-शीर्ण, स्थानम् ० निर्जन विनन, स्थानम् ३ वनम्, अरण्यम् । वि, अजर, जीर्ण २ द्रव्य, विजन ३ प्धान्त, निश्चल ।

उज्जाहना, क्रि स (हि उज्ज्वला) निर्जनी शूलो-कृ, अवसद् (प्र) ० नि-अव, पठ् (प्रे) वि प्र, नद् (प्रे), प्र वि, ध्वस् (प्रे), उन्मूल-उत्पट् (चु) ।

उज्जाहू, वि (हि उज्जाहना) अतिव्यथिन् २ मुत्तहस्त ।

उज्जाला, स पु (स उज्ज्वल) प्रकाश, आलोक, श्रुति-दीप्ति (स्त्री) । वि, उज्ज्वल, प्रकाशमान ।

उज्जाली, सं स्त्री (हि उज्जाला) चन्द्रिका, ज्योत्सना । वि उज्ज्वला, दीप्ता ।

उज्जाम, सं पु (हि उज्जाला) आलोक, प्रकाश ।

उज्जियारी, सं स्त्री (हि उज्जारा) चन्द्रिका २ प्रकाश ३ सती नारी ।

उज्जयिनी, सं स्त्री (सं) अवन्ती, विशाला, मालवराजधानी ।

उज्ज्वल, वि (सं) देदीप्यमान, प्रदीप्त, रुचिर, भासुर २ विशद, निर्मल ३ श्वेत, सित ४ निष्कलक, अवलुप ।

उज्ज्वलता, स स्त्री (सं) दीप्ति-कान्ति (स्त्री) ० स्वच्छता ३ धवलता ४ निष्कलकता ।

उज्ज, वि (स उत्तुग >) क्षुद्रपरिमाण (वस्त्र) ।

उज्ज, सं पु (स पु न) पर्ण, शाला-कुटी, कुटीर ।

उठाना, क्रि अ (स उत्थानम्) उत्था-समुत्था (भ्वा प अ) २ उद्भू (भ्वा भा से), उद्-इ (अ प अ), ३ उच्छल (भ्वा उ. मे) ४ जागृ (अ प से) ५ उत्पद् (दि आ अ) ६ सहसा आरम्भ (भ्वा आ अ) ७ सञ्जीभू, उदयत् (भ्वा आ से)

८ परिस्पृष्ट (वि) भू ९ देनायते (ना था) १० निष्पद्-समाप् (कर्म) ११ (रीति आदि) विह्वप् (दि प से) १२ व्यष्-विनियुज् (कर्म) १३ विक्री (कर्म)

१४ भित्त्यादय कमदा निर्मा (कर्म) १५ गोमहिष्यादीना गर्भधारणेच्छा । सं पु

उत्थान, उदय, उत्पात, उद्गम, ऊर्ध्वगमन, अधिरोहण, उच्छलन, जागरण, सहसा आरम्भ, सिद्धता, सज्जता, स्पृष्टन, उत्प्रेक, समाप्ति (स्त्री), पिधान, विलोप, व्यय, विक्रय, भाटनेन नियोग ।

उठनी चवानी, स स्त्री, यौवनारम्भ ।

उठने-बैठने, क्रि वि, प्रतिक्षण, सर्वदा ।

उठना-बैठना, सु, आचार, व्यवहार, शालम् ।

उठवाना, क्रि प्रे (हि उठना) अन्येन उत्था-उद्गम्-उज्जम् (प्र) ।

उठाईगौरा, सं पु (हि उठाना + फा गौर >) चौर, मोषक २ धूर्त, कितव ।

उठान, स स्त्री (स उत्थानम्) समुत्थान, उद्गमनम् २ वृद्धि (स्त्री) ३ आरम्भ ४ व्यय ।

उठाना, क्रि स (हि उठना) उठना के धातु-ओं के प्रेरणाधिक रूप बनाएँ ।

उठाव, स पु (हि उठाना) व्यय २ उन ताश ।

उठानी, स स्त्री (हि उठाना) उत्रयन, उत्क्षयणम् २ उत्थापनमूल्यम् ३ प्राग्दत्त मूल्यम् ४ वणिग्भि उद्धार ५ देवपूजायै पृथग्भूत धनम् ६ मृतस्यास्थिचयनरीति (स्त्री) ६ मृत्योर्द्विंशतये तुलीवे वा दिने सर्वधिपुरुषस्य उष्णीषपरिभाषनरीति (स्त्री) ।

उठकू, वि (हि उठना) गगनगामिन् २ चल ।

उठद, स पु (स ऋद्ध >) दे 'उरद' ।

उठनगटोला, स पु (हि उठना + रगोला) विमानम्, वायुधानम् ।

उठनछ, वि (हि उठना) छुत्त, अष्टछ ।

उठना, क्रि अ (स उठयनम्) उठ्, स्त्री (भ्वा तथा दि आ स), उत्पत् (भ्वा प से), खे विसृप (भ्वा प अ) २ सत्वर गम् ३ तितोम्, अतर्वा (कर्म) ४ (गुरु ऋदि) महाशब्देन विभिद् (कर्म) ५ वि प्र सप् (भ्वा प अ) ६ प्रचल् प्रचर् (भ्वा प से) ७ अभिमन् (दि आ अ) ८ उठ् वि सन् (कर्म) ९ मलिनी भू १० बायी शनस्तत स्फुर (तु प से) ११ सहसा विदिल् (कर्म) १२ वन् (तु) १३ वल् (भ्वा प से) । स पु, दे 'उठान' ।

उठती खबर, स स्त्री (हि + अ) किन्दती ।

उठाऊ, १ अ (हि उठाना) दे, 'उठकू' २ अतिव्ययिन्, अतिमुञ्जहस्त ।

उठाना, वि (हि उठना) दे, उठकू' २ वायुदानचालक ।

उठान, स स्त्री (स उठयनम्) डयन, उत्प तन, स विसर्पणम् २ प्लुति (स्त्री) ३ पला यनम् ४ प्रकोष्ठ ।

उठाना, क्रि स (हि उठना) 'उठना' के धातुओं के प्रे रूप । २ चुर् (तु) ३ भपस (प्रे) ४ अपव्यय् (तु) ५ तद् (तु) ६ बाक्छल कृ ७ ध्वा (भ्वा प अ) ८ विनुभ् (प्रे) ।

उठिया, वि (हि उठीसा) उक्ल २ उक्ल धान्तवातिन् ३ उक्लमाया ।

उठीसा, स पु (स ओदेश) उक्ल, उक्लप्रान्त ।

उठुघर, स पु (सं) दे 'गूलर' २ देहली, गृहावग्रहणी ३ ड्डीव नपुसक ४ कुपरो गभेद ।

उठ्, स पु (स स्त्री न) नक्षत्र, तारका २ तारासमूह, राशि ३ पश्चिन् ४ नाविक ५ जलम् ।

—गण, स पु (स) तारासमूह ।

—पति,—राज, सं पु (सं) चद्र, इन्दु ।

उठप, स पु (सं उठुप पम्) प्लव, तरण, तारण, तारक २ नौका ३ चन्द्र ।

उठेठना, क्रि, स दे 'उठेठना' ।

उठुयन, स पु (स न) नभोगति (स्त्री), दे 'उठान' ।

उठुयमान, वि (स) उठुयनविशिष्ट, खे विसर्पत् (शतृ) ।

उत्तग, वि (स उत्तुग) उच्छिद्य २ श्रेष्ठ ।

उठाना, वि (हि उठना >) तावत् (-ती स्त्री) । क्रि वि, तावत् (न), तावत्मात्रम् ।

—भी, तावदपि, तावत्मात्रमपि ।

उतरन, स स्त्री (स अवनरण >) जीर्ण अव तारित्, चक्षम् ।

उतरना, क्रि अ (स अवनरणम्) अवन-अव पत् (भ्वा प से) अधोगम् अवच्छ (भ्वा प अ) २ परिधि (कर्म०) हस (भ्वा प से) ३ (नस आदि का) मध चल (भ्वा प से), विसृधा (कर्म०) ४ (रग) विवर्णी भू, श्लै (भ्वा प अ) ५ (क्रोधादि) शन् (दि प से) न्वपगम् ६ (डेरा वरना) वन्-स्था (भ्वा प अ) ७ (तर्वीर) आलो कलेग्य अक् (कर्म०) ८ सहसा विदिल् (दि प अ) ९ (वस्त्रादि) उमुच्-अवन् अपनी (कर्म) १० वन् (दि आ से), अवतार छ (प्रे) ११ (पवना) पच् (कर्म) । क्रि स, (सं उत्तरणम्) स-उन्, तृ, उन्, लप् (भ्वा आ से) । स पु, अनतार, अवनरण, अधोगमन, हास, विमधान, विवर्णी भाव, श्लानि (स्त्री), उपशम, आलोक लख्याकन, सहसा विदलेष अपनयनं देह धारण, पचन, सम्-उत्, -तरणं वदयनम् ।

उतरकर : उ हीन खन ।

चित्तने—, मु विस्मृ (कर्म) २ अप्रिय (वि) भू ।

वेहरा—, मु म्लानमुख (वि) भू ।

उतरा, वि (हिं उतरना) अवनीर्ण २ म्लान ३ रिन्न ४ धृतत्यक्त (वस्त्र) ।

उतराई, सं स्त्री (हिं उतरना) अवतरण, अधोगमन २ उत्तरणम् ३ आतार, तरप प्यम् ४ अवमपिणी भूमि (स्त्री) ५ गिरि नितम्ब ।

उतराना, कि अ (स उत्तरणम्) म्लु (म्वा आ अ), नृ (म्वा प से) २ क्यू-नप् पच (कर्म) ३ निरनर अनुगम् ४ मास (म्वा आ से) ५ अन्येन + अवत आदिके प्रे रूप ।

उतरायल, वि (हिं उतरना) अवतारित त्यक्त, नीर्ण (वस्त्रादि) ।

उतान, वि (स उत्तान) ऊर्ध्वमुख (-ती स्त्री), अवपृष्ठशायिन्, उतानशय ।

उतार, सं पु (स अवतार) अवतारण नीचे गमनम् २ प्रावण्य, अवसपिणी भू (स्त्री) ३ अवतरणोचित स्थानम् ४ क्रमश दय ५ तीर्थम् ६ क्षीयमाणा बेला ७ निकृष्ट ८ दान्निकर उपहार ९ प्रतिविषम् ।

—चद्राय, स पु, आरोहवरोहो २ लामाल्याभौ ३ पातोत्पानी ४ अस्थैर्वम् ।

उतारत, स पु (हिं उतारना) दे 'उतरायल' २ निकृष्ट-तुच्छ-त्याज्य, -वस्तु-पदार्थ ।

उतारना, कि स (हिं उतरना) उतरना' के धातुओं के प्रे रूप ।

उतारा, सं पु (स अवतार) निवेश, समा वास २ अव-स, स्थिति (स्त्री) ३ उच, स्थन ४ अवतरण-निवेश, स्थानम् ५ प्रेन वाधानाश्च ज्वचारभेद, नदर्य वस्तुनदल वा ।

उतार, वि (हिं उतरना) सन्नद्ध, सज्ज, सिद्ध ।

उतावला, वि (सं. उत्तर) आशुकारिन्, मत्वर, अकिलविन्, २ अविमृश्यकारिन् ३ उत्सुक ।

उतावली, स स्त्री (सं उत्तरा) त्वरा, तूण (स्त्री), शीघ्रता, क्षिप्रता, वेग २ व्यग्रता, चाक्यम् । वि, स्त्री, सत्करा, आशुकारिणी २ असमोक्षकारिणी ३ उत्सुका ।

उतृण, वि, दे 'उत्तृण' ।

उत्कटा, सं स्त्री (सं) उत्कलिवा, लालसा, तीव्रामिलाप २ मन्चारिभावभेद (सा) ।

उत्कटित, वि (सं) उत्क, उमनन, उत्सुक ।

उत्कठिता, स स्त्री (सं) प्रियमिलनोरसुक नायिका ।

उत्कधर, वि (सं) उत्कण्ठ, उत्स्रीव ।

उत्कट, वि (सं) तीव्र, प्रचट, उग्र, दुःसह ।

उत्कर्ष, स पु (सं) महिमन् (पु), महत्त्व, २ श्रेष्ठता ३ समृद्धि (स्त्री) ४ व्याक्षेप-विल्व, ५ अतिशय ।

उत्कल, सं पु (सं) दे 'उदीता' २ व्याप ।

उत्क्रीर्ण, वि (सं) उत्, लिखित २ छिन्न, विद्ध ३ पाषाणकाष्ठादिपु लिखित ।

उत्कृष्ट, वि (सं) प्रकृष्ट प्रशस्त, उत्तम, श्रेष्ठ ।

उत्कृष्टता, सं स्त्री (म) महत्त्व, श्रेष्ठता, प्रकर्व ।

उत्कोच, स पु (सं) दे 'वृँस' ।

उत्तस, वि (सं) परि प्र-स-नात्, अत्युष्णीकृत २ धुब्ध, दुस्विन ३ क्रुद्ध ।

उत्तम, वि (सं) श्रेष्ठ, विशिष्ट, चरेण्य, प्रवर (ति इसी अर्थ में समामान्त में पुगव, ऋषम, व्याधि, सिंह, शार्दूल, इन्द्र आदि, जैसे—नरों में उत्तम = नर, पुगव शार्दूल इ) ।

उत्तमता, सं स्त्री (मं) श्रेष्ठता उत्कृष्टता, गुणानिश्चय, विशिष्टता ।

उत्तमर्ण, स पु (सं) ऋणद, ऋणदातु ।

उत्तमा, वि स्त्री (सं) मद्रा, साध्वी, श्रेष्ठा ।

सं स्त्री (सं) १-२ नायिका-वृत्ती, -भेद ।

उत्तमाग, स पु (सं न) शिरस (न) दे 'सिर' ।

उत्तमार्द्ध, र्ध, स पु (स पु न) उत्कृष्ट, -अर्द्ध—अर्द्धम् २ उत्तर, -अर्द्ध—अर्द्धम् ।

उत्तमोत्तम, वि (सं) सर्वोत्तम, महत्तम ।

उत्तर, स पु (सं उत्तरा) उदीची, उत्तर, दिशा-आया, कौबेरी ।

—अयन, (-उत्तरायणम्) स पु (स न) माघादिभ्रमासारमक मूर्धस्थोत्तरदिग्गमनकाल २ वर्षमकान्ति (स्त्री) ।

—की ओर, कि वि, उत्तराभिमुख, उत्तरेण, उत्तरदिशि, उत्तरत (बड़ी के साथ), उत्तर (पचमी के साथ) ।

—की ओर मुखवाला, वि, उदङ्मुख (—खी स्त्री) ।

—पश्चिम, सं पु, उत्तरपश्चिमा, वायवी (दिशा) ।

—पश्चिमी, वि, वायव, वायुदिकस्थ ।

—पूर्व, स पु, उत्तरपूर्वा, पूर्वोत्तरा, प्रागुत्तरा, प्रागुदीर्घा, पेशानी ।

—पूर्वी, वि पूर्वोत्तर, प्रागुत्तर, प्रागुदाचीन, पूर्वोत्तरस्थ ।

—संबन्धी, वि उदीच्य, उदीचीन, उत्तरस्थ ।

उत्तर, स पु (सं न) प्रतिबचन, प्रतिवाचय, प्रत्युक्ति प्रतिवाच् (स्त्री) २ प्रत्युत्तरम् ३ प्रति (ती) कार ४ अलकारभेद (सा) ।

—दाधिच, सं पु (सं न) प्रतिवाच्यता, प्रष्टव्यता, भार, अनुयोज्यता ।

—दायी, वि (सं यिन्) प्रष्टव्य, अभियोक्तव्य अनुयोज्य, प्रतिवाच्य, उत्तरदात् ।

उत्तर, वि (सं सर्व) पर, अपर, अवर, अन्य २ अन्तिम, चरम ३ उक्तरोक्त ४ गरा यस, ज्यायस् ।

—अधिकार, सं पु (सं) अशित्व, दायादत्व, रिक्धहरत्वम् ।

—अधिकारी, सं पु (सं रिन्) दायाद, रिक्ध, हर भागिन्, रिक्धिन्, अशहर, अशिन् । (स्त्री दायादा, अशहरी) ।

—अर्द्ध, सं पु (सं पु न) अपर-पर अवर, अर्द्ध-अर्द्धम् ।

—उत्तर, क्रि वि (सं न) आधकाधिक, २ अग्रदेशे ३ अनुपूर्वश, आनुपूर्व्येण ४ क्रमश ५ निरंतरम् ६ प्रतिदिनम् ।

—पक्ष, स पु (सं) सिद्धान्त, समाधि ।

—मीमांसा, सं स्त्री (स) वेदान्तदर्शनम् ।

उत्तरण, सं पु (सं न) सतरणम्, उल्लेखनम्, सनुत्तरणम्, पारायणम् ।

उत्तरा, सं स्त्री (सं) उत्तरा दिक् (स्त्री), बौदेरी, उदीची, २ अभिमन्युपत्ती ।

—रङ्ग, सं पु (सं पु न) हिमालयसमीप वनी भारतवर्षोत्तरभाग ।

उत्तराभास, स पु (स) अस्त्योत्तर, मिथ्या प्रतिबचनम् । २ व्याज, मिथ, छलम् ।

उत्तरीय, स पु (स न) घृह्तिका, सव्यान,

प्रावा(व)र । वि, उपरिस्थ, ऊर्ध्व, उपरितन २ दे 'उत्तरसवधी' ।

उत्तान, वि (सं) दे 'उतान' २ गाभीर्यरहित ३ ऊर्ध्वतल ।

—पाद, सं पु (सं) भुवपितृ ।

उत्तीर्ण, वि (सं) पारगत २ मुक्त ३ परीक्षाया सफल ।

उत्तुग, वि (स) अत्युच्च, अतीवोन्नत, प्राशु, अत्युच्छिन्न ।

उत्तेजक, वि (सं) उद्योपक, प्रोत्साहक, प्रवर्तक, प्रेरक २ विकारोत्पादक ३ सक्षोभक ।

उत्तेजन, स पु (सं न) दे 'उत्तेजना' ।

उत्तेजना, सं स्त्री (स) प्रेरणा, प्रोत्साह, उदीपन २ सक्षोभणम् ३ मनोवेगोत्पादनम् ।

उत्तोलन, सं पु (सं न) उत्पापन, उत्कर्षणम् २ तोलन, तुल्या भारबोधनम् ।

उत्थान, सं पु (सं न) उदगमन, उत्पन्नम् २ आरम्भ ३ उत्पत्ति (स्त्री) ४ सैन्यम् ५ युद्धम् ६ पौरुषम् ७ हर्ष ।

उत्थापन, सं पु (सं न) उत्थोलन, उत्थयनम् २ विधूननम्, वेहनम् ३ विप्र, बोधनम् ।

उत्थित, वि (सं) कृतोत्थान, उदगत २ उत्पन्न ३ प्रोषण ४ वृद्धिमत् ५ जागरित ।

उत्पत्ति, सं स्त्री (स) उदगम, उद्भव, उद्गमन् (न) २ सत्तार ३ आरम्भ ।

उत्पन्न, वि (स) जात, उद्भूत ।

उत्पल, सं पु (सं न) कमलम् २ नील कमल, कुबलय, कुबल, कुबेल, रात्रिपुष्प ३ जलजपुष्पमात्रम् ४ पुष्पम् ।

उत्पलिनी, स स्त्री (सं) कमल-उत्पल, -निवर-समूह २ कमलिनी ।

उत्पाटन, सं पु (सं न) उन्मूलनम् ।

उत्पाटित, वि (सं) उन्मूलित २ अपनीत ३ सिंहासनाद् अवपाटित ।

उत्पाप, सं पु (सं) अजन्य, उपद्रव, आपद् (स्त्री) २ कोलाहल, डमर ३ विकल्प ।

उत्पानी, सं पु (सं तिन्) उत्पान-उत्पन्न मशोभ-वर-कारिन्, कुक्षेष्टक, लोकवण्टक ।

उत्पादक, वि (सं) जनक, उत्पादयितृ ।

उत्पादन, सं पु (स न) जनन, प्रसव, प्रसूति (स्त्री) ।

उत्पीडन, सं पु (सं न) पीडन, अर्दन, बाधन, निकार ।

उत्प्रेक्षा, स स्त्री (सं) आरोप उद्भावना २ अर्थात् करभेद (सा) ३ अनवधानम् ।

उत्पुञ्ज, वि (स) विकसित २ प्रसन्न ।

उत्स, स पु (स) प्रलवण, द्वे 'हरना' ।

उत्सग, स पु (सं) अक, क्रोडम् २ मध्य भाग ३ साजु ४ सौधादीनामुपरिभाग ५ विरक्त ।

उत्सर्ग, स पु (स) परि, त्याग, विसर्जनम् २ दान, वितरणम् ३ समाप्ति (स्त्री) ४ व्यापकनियम ।

उत्सर्जन, स पु (सं न) दे 'उत्सग ।

उत्सव, स पु (सं) मह, क्षण उद्वेग यात्रा, पर्वन् (न) ।

उत्साह सं पु (सं) वियदेतिका, औत्सुक्य, व्यग्रता २ उद्यम, अध्यवसाय ३ साहस, वीर्यम् ।

उत्साही, वि (सं, इन्) सोत्साह, उत्साहवत्, अत्युत्सुक २ उद्यमिन्, अध्यवसायिन् ३ शूर, वीर ।

उत्सुक, वि (सं) उत्कण्ठ, मोत्कण्ठ, लालस, सात्साह, विल्लासहिष्णु ।

उत्सुकता, स स्त्री (सं) औत्सुक्य, कुतूहल, व्यग्रता, लालसा, कौतुकम् ।

उत्सृष्ट, वि (सं) त्यक्त, समुज्जित ।

उत्थल-पुथल, स स्त्री (हि उत्थलना) क्रम भग, व्यतिक्रम, व्यरतता, त्वपर्यय, अन्य वस्था । वि, क्रम-व्यवस्था, ह्योन, अव्यवस्थित, विपर्यन्त ।

उत्थला, वि (सं उत्थल) गाध, उत्थान, अल्प गाध, अल-नोय ।

उद्गत, स पु (सं) समाचार, वृत्तान्त, चार्ता २ सञ्जन ।

उद्गक, स पु (सं न) जल, पानीयम् ।

—त्रिया, म स्त्री (सं) तिलाजलि २ तर्पणम् ।

उद्गान, सं पु (सं) तीर, तटम् ।

उद्गधि, स पु (सं) समुद्र, सागर २ धट ३ भेज ।

—सुत, सं पु (सं) चन्द्र २ अमृतम् ३ शख ४ कमलम् ५ सागर (पदार्थम्) ।

—सुता, सं स्त्री (सं) हृदयी २ शुनिका ।
उदय, स पु (सं) उद्वंगमन, उद्गम, उदय नम्, उत्थानम् ।

—होना, कि अ, उदया-उद् इ (अ प अ), उद् अय (भ्वा आ से), उद्गम् ।

—अचल, स पु (सं) उदय, गिरि-अद्रि, पूर्व-पर्वत-अचल ।

उदयास्त, स पु (सं स्त्री) अस्तोदयौ, उदयास्तमने । कि वि प्रातरारभ्य साय यावत्, सर्व दिनम् ।

उदर, स पु (सं न) तुन्द, कुक्ष कुक्षि, पिचिड २ आमाशय, पत्राशय, ३ मध्य-भाग देश, अन्नर, गर्भः ।

—ज्वाला, स स्त्री (सं) अठर, अनल-अग्नि २ क्षुधा, वृषुक्षा ।

उदात्त, वि (सं) उच्चैरुच्चारित (स्वर) २ सदय, कृपालु ३ दातृ, उदार ४ श्रेष्ठ ५ विशद, स्पष्ट ६ समर्थ । स पु (सं) वेदमन्त्रोच्चारणे उच्चस्वर २ अलकारभेद (सा) ।

उदार, वि (सं) दान, शील-शील, बहुप्रद, वदान्य, त्यागशील २ श्रेष्ठ ३ महाशय ४ सरल ।

उदारता, स स्त्री (सं) वदान्यता, त्यागिता, औदार्य, त्याग २ महात्म्यम् ३ सुशील, ऋजुता ।

उदास, वि (सं) रिक्त, अवसन्न, म्लान, विषण्ण २ उदासीन, विरक्त ३ तटस्थ, निष्पक्ष ।

—होना, कि अ, विपद् (भ्वा प अ), दुर्गनायते (ना धा) ।

उदामी, सं स्त्री (सं उदास) अवसाद, म्लानि-ज्वानि (स्त्री) रोद, दीर्घमस्यम् २ विराग, वैराग्यम् ३ निष्पक्षता, तटस्थता । सं पु, सन्न्यासिन्, विरक्त, साधुसंप्रदाय भेद ।

उदासीन, वि (सं) विरक्त, निस्स्पृह, प्रपञ्च रहित २ मध्यस्थ, तटस्थ, सम्प्रमाद ३ रूक्ष, निस्स्नेह ।

उदासीनता, सं स्त्री (सं) विरक्ति (स्त्री) २ तटस्थता ३ सद, अवसाद ।

उदाहरण, म पु (सं न) निदर्शन, दृष्टात् ।

उदाहृत, वि (सं) वर्णिन, कथिन २ दत्त
दृष्टात् ।

उदित, वि (स) उद्यत, उरिधन *उदयित
२ प्रकृत सृष्ट ३ उद्भवत्, विशद ४ कथित
उक्त ।

उदीचण, स पु (स न) ऊर्वावलोकनम्,
२ बीक्षणम् ।

उदीची, स स्त्री (स) उत्तरदिशा ।

उदीच्य, वि (स) उत्तरदिशासिन् २ दे
उत्तरसकथिन् ।

उदीप, स पु (स) सङ्घ, जलविप्लव ।

उदीयमान, वि (स) उद्गच्छत्, उन्नमत् ।

उदुंबर, स पु (स) क्षीरवृक्ष, सदाफल,
पन्थुफल दे 'गूलर' २ क्षीरवृक्षफलम् ३
देहली ४ नपुंसक ५ कुष्ठभेद ।

उद्गत, वि (स) उदित, उरिधत २ प्रकृत
३ भ्यास ४ वात् ५ लब्ध ।

उद्गम, स पु (स) उदय, उद्वान, उद्ग
मन आविर्भाव ऊर्ध्वगमन २ उद्गमस्थान
प्रभव योनि (स्त्री) ।

उद्गाता, स पु (स वृ) सामवेदय, साम
गायक ३ सामवेदज्ञ ।

उद्गार, स पु (स) तरलपदार्थस्य सहसा
निस्तरण उद्गमन स्त्रावो वा । २ वमन,
प्रच्छेदिका ३ सवेग नि सत तरलपदार्थ,
वानस्पृन् (न) ५ लाला मुखस्ताव ६ उद्
वम उक्षेप, ७ आधिक्यम् ८ घोर-नुमुल
शब्द ९ रुद्धभाषना उच्चट प्रकाशनम्
१० इत्यप्रकाशिता भाषा ।

उद्गीथ, स पु (स) सामगानविशेष
२ ओंकार ३ सामवेद ।

उद्घाटन स पु (स न) अपा वि-वरणम्,
उद्गम निरर्गलोरुग्णम् २ प्रकाशन प्रकटा
करणम् ।

उद्दुष्ट, वि (स) उद्वत दुःशाळ, अविनीत,
साहमिक, तीक्ष्णकर्मन् २ कलहप्रिय ।

उद्दाम, वि (स) दध-वधन पाण्ड रहित २
निरुद्ध, अतर्गल, उच्छृङ्खल ३ स्वतंत्र ।

उद्दालक, स पु (स) ऋषिपिशेष २ व्रत
प्रकार ।

उद्दिष्ट, वि (स) निर्दिष्ट सरेतिन २ लक्ष्य
अभिप्रेत ।

उद्दीपक, वि (स) उत्तजक, प्रेरक सशोभक
२ दाहक, तापक, दीपन ।

उद्दीपन, स पु (स न) उत्तजन, प्रोत्सा
हन, प्रकोपन प्रेरणम् २ उत्तेजकपदार्थ
३ विभावभेद (सा) ४ तापन, दहनम् ।

उद्दीप्त, वि (सं) भागुर भास्वर २ प्रवृत्तित ।
स पु गुण्युक्त, देवधूप ।

उद्देश, स पु (स) इच्छा, अभिप्राय
२ भाषय, अभिप्राय ३ कारण हेतु
४ प्रतिज्ञा (न्या) ।

उद्देश्य, वि (स) लक्ष्य, काम्य, स्पृहणीय ।
स पु (स न) प्रयोजन अभिप्रेतोऽर्थ २
यदुद्दिश्य विधेयप्रवृत्ति भवति तत् (न्या) ।

उद्धत, वि (स) उग्र चट, दे उर्द' ।
२ प्रगल्भ, विशिष्ट ।

उद्धरण, स पु (म न) उत्थान, उद्गमनम्
२ मुक्ति (स्त्री) ३ उत्थति (स्त्री)
४ पाठस्यावृत्ति (स्त्री) ५ उद्धृतवाच्यम्
६ उन्मूलनम् ७ उत्थापनम् ८ वमनम् ।

उद्धव, स पु (स) दे 'उत्तव' २ श्रीरुण
मित्रम् ।

उद्धार, स पु (स) निर्वाण, मुक्ति (स्त्री)
२ दुःखनिवृत्ति (स्त्री) ३ उत्थति (स्त्री)
४ ऋणमुक्ति ५ दायन्यायविशेष (मनु)
६ ऋणम् ७ युद्धे उठितद्रव्यस्य राजप्राप्त
पठोऽय ८ चुली ।

—करना, कि स, उद् ह (भ्वा प अ),
मोष् (जु), निरू (प्रे) उत्री (भ्वा
उ अ) ।

—होना, कि अ मुच् (कर्म) ।

उद्धृत, वि (स) अवतारित, उपन्यस्त,
उपनीत, उदाहृत २ उद्धी, उभाषित
३ उदगीर्ण ।

—करना, कि म उपन्यम् (दि प से)
उद् ह (भ्वा प अ) ।

उद्धृष्ट, वि (स) विपसित प्रपुष्ट
२ शानिन् ३ पागरित ।

उद्धोधन, स पु (स न) शाननम्
२ प्रकाशनम् ३ उत्तेजनम् ४ पागरणम् ।

उद्भट, वि (स) प्रबल, उग्र २ श्रेष्ठ
३ महात्मन् ।

उद्भव, सं पु (सं) उत्पत्ति-सृष्टि (स्त्री)
उत्पन्न (न) २ वृद्धि-सृष्टीति (स्त्री) ।

—स्थान, सं पु (स. न) योनि (स्त्री),
प्रभव ।

उद्भाव, सं पु (सं) उद्भव २ कल्पना
३ औदार्यम् ।

उद्भावना, स स्त्री (सं) उद्भावन, कल्पन,
कल्पित, उद्भावित, कल्पना २ उत्पत्ति
(स्त्री) ।

उद्भास, सं पु (सं) कान्ति-दाप्ति (स्त्री)
२ प्रकाश, आलोक ।

उद्भिन्न, सं पु (सं) तद्भिन्ननादि, उद्भिन्न
(पाँच प्रकार के उद्भिन्न-नरु, गुल्म, टना,
वहो, वृत्तम्) ।

उद्भिन्न, (सं पु) अकुरा, प्ररोह २ ओषधि
५ (स्त्री), वृष्टक ३ जलप्रपात, निर्झर
४ नलदनम् ।

उद्भूत, वि (सं) जात, उत्पन्न ।

उद्भेदन, स पु (स न) अग्नि, भवनम्
२ उद्भिन्न निर्माणम् ।

उद्यन, वि (सं) सञ्ज, उद्युक्त, सिद्ध, उद्युक्त,
सन्नद्ध २ उत्पापित ।

उद्यम, स पु (सं) उद्योग, उल्लास, अध्य
वसाय, प्रयत्न, आयात २ आ उद्य, जीविका ।

—वरणा, कि स, चेश् प्रपञ्च (म्वा आ से)
उद्यम् (म्वा प अ), व्यवम् (दि प अ) ।

उद्यमी, वि (सं-मिन्) उद्योगिन्, उद्युक्त,
व्यवसायिन् ।

उद्यान, स पु (स न) उपवन, आरान् ।

उद्योग, स पु, (म) दे 'उद्यम' ।

उद्योगी, वि (स गिन्) दे 'उद्यमी' ।

उद्योक्त, स पु (स उद्योक्त) अत्येक
२ युक्ति (स्त्री) ।

उद्रेक, स पु (स) वृद्धि-उन्नति (स्त्री)
२ आधिपत्य, बहुत्वम् ३ अलकारभेद (सा) ।

उद्वाह, स पु (स) विवाह ।

उद्दिग्म, वि (सं) आ-व्या, कुल, सञ्चान,
अधार, व्यक्त-विश्लिष्ट, चिद, व्यन, कातर ।

उद्देग, स पु (सं) उद्दिग्मता, व्याकुलता
२ मनीषेण, आवेग ३ निरुद्ध-कुसम् ।

उधेदना, कि अ (सं उधेदणम्) सुम्

(तु प से), मिद-विद् (कर्म) २ सावन
मिद (कर्म) ।

उधर, कि वि (स अनुध) तव, सम्पत्तये
२ तत्स्थान प्रति ।

उधार, स पु (सं उधार) ऋण, धनप्रयोग
२ आविहितकालम् द्रव्यप्रयोग ३ सुक्ति
(स्त्री) ।

—चुकाना, कि स ऋण गुप (प्रे), आनृण्य
गम् ।

—लेना, कि स, ऋण कृ अपवा भन् (क
व मे) ।

उधेदना, कि स, (हि उधेदना) स्तर निर्हे
(म्वा उ अ) २ मौवन मिद् (र उ थ)
२ विकृ (तु प से) ।

उधेद-धुन, स स्त्री (हि उधेदना + धुनना)
चिन्ता, विमर्श, ऊहापोह २ उपायकल्पना ।

उन, सर्व (हि उन) तद्-अदत् (सर्व) ।

उनचास, वि (सं ऊनचदत् स्त्री एक)
एकोनचत्वारिंशद्-एकात्रयचत्वारिंशद्-नवचत्वारिंशद्
(स्त्री एक) । सं पु, उक्ता सख्या तद्विषे
कावकाँ (४९) च ।

उनताहीम्, वि (सं ऊनचत्वारिंशद् स्त्री
एक) एकोनचत्वारिंशद्-नवचत्वारिंशद् (स्त्री) ।

स पु, उक्ता सख्या तद्विषेकावकाँ (३९) च ।

उनतीस, वि (सं ऊनत्रिंशद् स्त्री एक)
एकोनत्रिंशद्-नवचत्वारिंशद् (स्त्री) । म पु,
उक्ता सख्या तद्विषेकावकाँ (२९) च ।

उनसठ, वि (स ऊनपत्ति स्त्री एक) एको
नचत्वारिंशद्-नवचत्वारिंशद् (स्त्री एक) । म पु,
उक्ता सख्या तद्विषेकावकाँ (५९) च ।

उनहत्तर, वि (सं ऊनसप्तत् स्त्री एक)
एकोन (एकात्र) सप्तत्-नवचत्वारिंशद् (स्त्री एक) ।

सं पु, उक्ता सख्या तद्विषेकावकाँ (६९) च ।

उनासी, वि दे 'उपात्ता' ।

उनींदा, वि (स उनीद) निद्रा, शकु-वस-
अभिभूत ।

उच्च, वि (सं) आर्द्र, दिन, उन्नत
२ द्योत, दयालु ।

उच्चत, वि (स) उद्गम, उन्नत, उच्च, दुः
२ सत्त्व ३ श्रेष्ठ ।

उच्चति, सं स्त्री (सं) उच्चत, दुःखा
२ सशक्ति (स्त्री), अमृदय ।

उच्चार, सं पु (अ) कौल, कुवल, मौवीरम् ।
उच्चायक, वि (सं) उज्जेत्, उत्कर्षक २ बर्द्धक,
अभ्युदयकारक ।

उच्चास्मी, वि (स उच्चाशीति स्त्री एक)
एवोनाश्रयति नवमसति (स्त्री एक) । सं पु,
उच्चा मरया, तदकौ (७९) च ।

उच्छिष्ट, वि (स) निद्रारहित २ विकसित,
प्रकुट ।

उष्नीम, वि (सं) उष्णयिष्यति स्त्री एक)
एदोनविशति, नवदशन् (बहु) । सं पु,
उष्ण सख्या तदकौ (१९) च ।

—उश्ने, मु, प्राय, प्रायश, प्रायेण (सव
अव्य) ।

उन्मज्जक, वि (सं) जलाद् बहिःस्रगन्तुः ।

उन्मज्जन, सं पु, (सं न) जलाद् बहिः
आगमनम् ।

उन्मत्त, वि (सं) उभादिन्, बाहुल, विशिष्ट
चित्त २ क्षीव, मदोन्मत्त, मदोद्धत ३ सञ्जा
रहित, नष्टमग्न, विचेतन ।

—प्रलाप, सं पु, निरर्थकवचनानि (न बहु) ।

उन्मत्त, वि (सं) अन्यमनस् (अन्यमनस्त्व,
अयश्चित्त, अनवधान ।

उन्मथूय, वि (स) प्रकाशमान, मासुर,
भास्वर ।

उन्माद, स पु (सं) मतिभ्रष्ट, चित्तविभ्रम,
मानमरोगभेद २ सत्कारिभावभेद (सा) ।

उन्मादी, वि (सं दिन्) उन्मत्त, बाहुल ।

उन्मार्ग, सं पु (सं) उन्-का-कु वि, पथ -
मार्ग ।

उन्मीलन, स पु (सं न) उन्मेष, उन्मेषण
२ विकसन, विनाम ।

उन्मीलित, वि (सं) विवृत, उन्मिपिन,
उदापिन २ विकसित, प्रकुट ।

उन्मूल, वि (स) उद्वृ-ऊर्ध्वं, मुल २ उत्क
टिन, उत्सुक ३ उद्यत ।

उन्मूलन, स पु (सं न) निर्मूलन, उत्पाटन,
उत्खननम् २ विष्वमन, विनाशनम् ।

उन्मूलित, वि (स) उत्खान, उत्पाटित
२ विनाशित ।

उन्मेष, सं पु (स) उन्मीलनम् २ विनाम
३ अन्यप्रकाश ।

उप, उप (सं) अनुगत्याधिक्यन्यूनतासामी
प्यध्याप्त्यादिवोधक उपसर्ग ।

उपकठ, सं पु (सं पु न) सामीप्यम् । वि,
निकट । क्रि वि, निकटे ।

उपकरण, स पु (स न) साधन, सामग्री,
परिच्छद, यथ, साधकद्रव्यम् २ छत्रचामरा
दीनि राजचिह्नानि ।

उपकार, सं पु (सं) हित, दया, कृपा, परोप
कार, उपकृति (स्त्री) २ लाभ ।

—करना, क्रि स, उपकृ, अनुग्रह (क उ
से), दिन कृ ।

—मानना, क्रि स, उपकृत स्मृ (म्वा प
अ) कृत विद् (अ प से) ।

उपकारी, वि (सं रिन्) उपकारक, उपकर्तृ,
परोपकारपर, परहितेच्छुक, जगन्मनम्, दान
शील ।

उपकार्या, सं स्त्री (सं) (राजकीय) पद,
मत्प-गृहम् २ रान, भवन प्रासाद ।

उपकुश्या, सं स्त्री (सं) उप, सरणी प्रणाली,
२ परिखा, छानम् ।

उपकृष, सं पु (सं) कृषक, लुप्तप,
उपसात ।

उपकृत, वि (सं) अनुगृहीत, कृतवेदिन् ।

उपक्रम, सं पु (स) उपायज्ञानपूर्वकारम्भ
२ प्रथमारम्भ ३ भूमिका ४ चिकित्सा ।

उपक्रमणिका, सं स्त्री (सं) भूमिका, प्रस्ता
वना, वाङ्मुखम् २ विषयसूची ।

उपगत, वि (सं) उपस्थित, पुर स्थित
२ विदित ३ स्वीकृत ।

उपग्रह, स पु (सं) ग्रहण, धरण, निरोध
२ कारा, वाम निरोध प्रवेश ३ कारागृह,
रुद्ध ४ लुप्तग्रह ।

उपघात, स पु (सं) विष्वम, विनाश
२ रोग ३ इन्द्रियवैकल्यम् ४ पातकममूह
५ अपकार ।

उपचय, स पु (सं) वृद्धि-उत्तति (स्त्री)
२ सचय, सग्रह ।

उपचर्या, स स्त्री (सं) सेवा २ चिकित्सा ।

उपचार, सं पु (सं) रोगप्रतिहार,
चिकित्सा, उपचर्या २ रोगनिदरिचर्या
३ प्रयोग, विधानम् ४ धर्मानुष्ठानम् ।

५. धूपदोषादीनि पूजागानि (न व) ६ चाहू
क्ति (स्त्री) ७ उत्कोच ।

उपचारक, वि (स) चिकित्सक २ सेवक
३ विधायक ।

उपच, सं पु (हि उपजना) उत्पन्न फल
शस्य वा २ उद्भावना, नवकल्पना ३ कल्पित
कार्ता ।

उपजना, क्रि अ (सं उपजननम् >) उपजन्
(दि आ से) उपपद (दि आ अ),
प्रन्ह (म्वा प अ) २ मनसि स्फुर (तु
प मे) ।

उपजाऊ, वि (हि उपज) उर्वर, शस्यप्रद,
बुद्धप्रद ।

उपजाना, क्रि स (हि उपजाना) उपजन्
उपपद प्रन्ह (प्रे) ।

उपनीवी, वि (सं विन्) पराश्रित, अनु
चाविन्, पराधीनवृत्ति ।

उपनाप, सं पु (स) रोग, व्याधि २ त्वरा,
मन्त्रम ३ उत्ताप, उन्मन् (पु) ४ पीडा
५ दर्भायन ।

उपयक्रा, स स्त्री (सं) पर्वतनिकटभूमि
(स्त्री) अचलानक्षा भू (स्त्री) ।

उपदश, सं पु (स) मेहरोगभेद ।

उपदर्शक, स पु (स) पथ-मार्ग, दर्शक
२ दारपाल ३ साक्षिन् ।

उपदर्शन, स पु (स न) टीका, टिप्पणी-नी ।

उपश, स स्त्री (स) उपायन, दे 'भेंट' ।

उपदिशा, स स्त्री (स) उप, आशा-काहा-
क्कुम् (सब स्त्री) [टि चार उपदिशादे दे
है-देशानी, आग्नेयी, नैऋती, वायवी] ।

उपदिष्ट, वि (स) शिक्षित, अध्यापित,
२ निर्देशित ३ दीक्षित ।

उपदेश, स पु (स) अनुशासन, बोधन,
मिक्षा २ दीक्षा, गुरुमत्र ३ धर्म-व्याख्यानम् ।

—देना, क्रि म उपदिष्ट (तु प अ) अनु
शास् (अ प से), शिक्ष-बुध-शा (प्रे),
२ दीप् (म्वा आ से) ।

उपदेशक, स पु (स) उपदेष्ट, धर्मप्रचारक,
प्रवक्तृ ।

उपद्रव, सं पु (सं) द 'उत्पात' (१३)
४ रोगजननरविकार ।

—करना, क्रि स, उत्पातन् उत्था (प्रे) ।

उपद्रवी, वि (सं विन्) दे 'उत्पाती' ।

उपधा, सं स्त्री (स) कपटम् २ उपायया
क्षरम् ३ उपाधि ।

उपधान, सं पु (सं न) शिरोधानम्, उप
बर्ह २ अत्रलवनम् ।

उपनयन, स पु (सं न) यज्ञोपवीतसरकार
२ मर्मपि नयनम् ३ शिष्यस्य गुरुनिकटे
नयनम् ।

उपनाम, स पु (सं मन् न) प्रचलित-अन्य
उपाधि, नामन् (न) २ उपाधि, मानपदम्,
पदवा ।

उपनिधि, स स्त्री (स) न्याम, उपन्यस्त
वस्तु (न) ।

उपनिवेश, सं पु (स) अधिनिवेश, वासित
प्रदेश ।

उपनिषद्, सं स्त्री (स) ब्रह्मविद्यानिरूपका
ग्रन्था २ (गुरो) सर्मपि उपदेशनम् ।

उपनीत, वि (मं) कृतोपनयन २ आमन्न,
उपागत ।

उपनेता, स पु (सं तु) उपनयनसरकारकर्ता,
आचार्य, गुरु २ निकटे प्रापक ।

उपन्यास, स पु (सं) कल्पित, कथा, कथा
प्रबंध, प्रबंधकल्पना २ वाक्योपक्रम
३ निक्षेप, न्यास ।

उपपत्ति, स पु (स) जार, दे 'दार' ।

उपपत्ति, सं स्त्री (स) इतुना वस्तुस्थिति
निश्चय २ सिद्धि (स्त्री), प्रतिपादनम्
३ मगति (स्त्री) ४ युक्ति (स्त्री), हेतु ।

उपपत्नी, स स्त्री (सं) उप, भार्या-जाया
वल्त्रम् ।

उपपद, स पु (सं न) पूर्वोक्त पूर्वलिखित,
पद-शब्द २ समास्यस्य पूर्वशब्द ३ उपाधि
(पु), पदवी ।

उपपन्न, वि (सं) प्राप्त, उपागत ३, शरणागत
४ लब्ध, अधिगत ५ युक्त ६ उपसुक्त ।

उपपादन, स पु (सं न) साधन, प्रतिपादन
युक्तिभि समर्थनम् २ सपादन, निष्पादनम् ।

उपपुराण, स पु (सं न) लघुपुराण (ये
अठारह हैं) ।

उपप्लव, स पु (सं) जल, विद्रव्य प्रलय
२ उत्पात ३ भूकंपादघटना ४ मयम्
५ विन्ना ६ राहु ७ झझावात ।

उपभुक्त, वि (सं) प्रयुक्त २ उच्छिष्ट ।

उपभोग, सं पु (सं) मुख, आस्वाद, आरवा
दनम् २ प्रयोग, व्यवहार ३ सुखसामग्री ।

उपमग्री, स पु (स त्रिन्) उपलेखनसचिव
२ उपमात्य, अमात्यसहाय ।

उपमा, स स्त्री (सं) सादृश्य, साम्यम्
२ अर्थालंकारभेद (सा) ।

—देना, किं स उपमा (जु आ अ), समी
कृ ।

उपमाता, म स्त्री (सं मात्) धात्री, दे
'धाय ।

उपमान, स पुं (स न) सादृश्यज्ञानसाधन,
साम्यप्रतियोगिन्, अप्रस्तुत, उपवर्णनम्
२ प्रमाणभेद ।

उपमित, वि (स) ममी-सदृशी, कृत ।

उपमिति, स स्त्री (स) उपमा २ सादृश्य
जनित ज्ञानम् ।

उपमेय, वि (स) वर्णन, वर्णनाय, उपमातन्व्य,
प्रस्तुत ।

—उपमा, स स्त्री (सं) अर्थालंकारभेद
(सा) ।

उपयुक्त, वि (स) उचित, उपपन्न, सगत,
युक्त, योग्य, यथायोग्य, यथाई ।

उपयुक्तता, स स्त्री (स) औचित्य औचिनी,
युक्त व, योग्यता ।

उपयोग, स पुं (स) प्रयोग, व्यवहार
२ लाभ, फलम् ३ प्रयोजन, आनन्दयकता
४ योग्यता ।

उपयोगिता, सं स्त्री (सं) व्यवहार्यता,
लभकारिता, उपकारकता ।

उपयोगी, वि (स त्रिन्) प्रयोजनीय, हित
साधन २ उपकारक, लाभदायक ३ अनुकूल ।

उपरक्त, वि (स) विपदग्रस्त, दुःखित
२ ग्रहणयुक्त, उपप्लुत (सूर्यादि) ३
विषयामक्त ।

उपरत, वि (स) विरक्त, उदासीन २ मृत ।

उपरति, स स्त्री (स) विरति (स्त्री)
वैराग्य, औदासीन्यम् २ मृत्यु ।

उपरना, स पु (हि ऊपर) चेल, चेल्व
२ उत्तरीय, आच्छादनम् ।

उपरम, स पु (स) विरक्ति (स्त्री), वैरा
ग्यम् २ निवृत्ति विधान्त (स्त्री) ३. मृत्यु ।

उपरात, किं वि (सं उपरि + अन्त >) पर,
तत पर, तदनन्तर, तदनु ।

उपराग, स पु (सं) सूर्य-चन्द्र, ग्रहण, ग्रह
पीठन, २ आपत्ति (स्त्री) ३ वर्ण, रंग
४ प्रतिच्छाया ५ विषयानुराग ।

उपराज, स पु (स) राजप्रतिनिधि, उप,
भूप-नृप ।

उपराम, सं पु (सं) निवृत्ति विरति
(स्त्री), वैराग्यम् २ विभ्रान्त, कार्यान्वृत्ति
(स्त्री) ३ मोक्ष ।

उपरि, किं वि (सं) दे 'ऊपर' ।

उपरूपक, सं पु (सं न) श्रौटकसदृकादयो
रूपकभेदा ।

उपरोक्त, वि (हि ऊपर + सं उक्त) दे
'उपर्युक्त' ।

उपर्युक्त, वि (सं) प्रायुक्त पूर्वोक्त, प्राक-पूर्व,
वर्णित निर्दिष्ट ।

उपल, सं पु (सं) पापाण, प्रस्तर २ रत्नम्
३ मेष ४ करका ५ बालुका ६ सिता,
शकैरा ।

उपलक्षण, सं पुं (स न) स्वस्वायत्य च
बोधक शब्द २ संकेत ३ शब्दशक्तिभेद
(सां) ।

उपलक्ष्य, सं पु (सं न) संकेत चिह्न,
अभिज्ञानम् २ दृष्टि (स्त्री) उद्देश्यम् ।

—मे, विचारेण, उद्दिश्य, निमित्तौक्य ।

उपलब्ध, वि (सं) अधिगत, प्राप्त, गृहीत
२ शब्द ।

उपलब्धि, सं स्त्री (स) प्राप्ति (स्त्री) अधि
गम २ ज्ञानम् ।

उपलभ्य, वि (सं) प्राप्य, प्राप्तव्य
२ समाय, पूज्य ।

उपला, स पुं (सं उपल >) गोमय, गोमय
पिण्डम् ।

उपलाटिका, सं स्त्री (सं) घृता पिपाता ।

उपला, स पुं (हि ऊपर) उपरितन
रत्न, ऊर्ध्वभाग ।

उपवन, स पुं (स न) आराम २ लघु
वनम् ।

उपवास, सं पु (सं) लघन, अनाहार उग्र
वर्ण, आक्षुर्ण, अनशन, उपोषितम् ।

—करना, किं अ., उपवस् (म्वा प अ) ।

उपविप, सं पु (स न) चार, गर, फल
विनन् ।

उपविष्ट, वि (स) आमोन, कृत्रोपवेदन ।

उपवीत, स पु (सं न) यद्यमूत्र, यज्ञोपवीत
२ उपनयनसंस्कार ।

उपवेद, स पु (सं) प्रधानवेदानिरिक्ता
चत्वारः गौर्वेदा (= धनुर्वेद, आनुर्वेद, गधर्व
वेद, ग्धापत्यवेद) ।

उपवेशन, स पु (स न) निषदन, आमन,
स्थिति (स्त्री) ।

उपशम, सं पु (स) शम, शान्ति (स्त्री)
२ श्वाशय ३ श्चन्द्रियनिग्रह ४ प्रतिकार,
उपचार ।

उपशमन, सं पु (सं न) सान्त्वन २ प्रति
विधानन् ।

उपशिय, सं पु (सं) शिष्यस्य शिष्य ।

उपस्पदाक, सं पु (सं) सपादकमहाय,
सहायकसपादक ।

उपसहार, स पु (सं) परि, अवसान, सनाप्ति
(स्त्री) २ श्श्यादिकस्य अन्तिम प्रकरणम्
३ मारात् ४ श्शुक्रादीना वारणम् ।

उपसर्ग, सं पु (स) क्रियायोगे प्रादय
निपाता (प्र, परा, अप, सन्, इ०) । २
अपदानम् ३ आधिदैविक उत्पात ।

उपसागर, सं पु (स) लघुसमुद्र २ वक्,
ज्ञानम् ।

उपस्थ, स पु (सं) स्निग्, श्लेष् २ भग,
योनि (स्त्री) (३४) अघो, मध्य, भाग
५ श्लेष् ६ वक्षस् (न) । वि सनीपोपविष्ट ।

उपस्थान, स पु (स न) समीपामनन
२ पूनादि उपागमनम् ३ उत्थाय पूजनम्
४ पूनास्थानम् ५ समात्र ।

उपस्थापक, वि (स) उपनायक, उपनिधायक
२ स्मारक ।

उपस्थापन, स पु (स न) समीपे-पुरतः-
उपनिधानम्, उपानयनम् २ उपस्थिति
(स्त्री) ३ परिचर्या ४ स्मारणम् ।

उपस्थित, वि (सं) निकटस्य, उपसृज, उपा
गन्, स्मिहित ।

—वरना, कि स, पुरस्क, समक्ष नी (म्वा
उ अ) ।

—होना, कि अ, उपस्था (म्वा प अ),
प्रविष्ट (तु प अ) ।

उपस्थिति, स स्त्री (सं) मनिधानं मानि
ध्य, वर्तमानता विद्यमानता ।

उपस्वेद, स पु (स) प्रस्वेद, धर्म, उदक-उदन्
२ वाष्प, पन् ३ आर्द्रता, उन्नता ।

उपहत, वि (स) नाशित घ्वस्त २ दूषित
३ पीडित ४ अपविष्ट ।

उपहार, स पु (स) उपायन, उपदा ।

उपहास, सं पु (स) परि (री) हाम,
प्रहसन, नर्मन् (न), कीटाकौतुकम् २ निन्दा,
आक्षेप ।

—आस्पद, वि (सं न) उपहास्य, उपहा
सार्ह २ निदनीय ।

उपाग, स पु (सं न) अवयव, अगभाग ।
२ आभूक वस्तु (न) । (वेद के चार उपाग =
पुराण, न्याय, नानाशा, धर्मशास्त्र) ।

उपात, स पु (सं) अन्तसमापभाग २ प्रान्त
भाग ३ लघुतम् ।

उपाल्य, वि (सं) अन्त्यात् पूर्ववर्तिन् ।

उपाक्रम, स पु (स-र्नन् न) सरकारपूर्वको
वेदाध्ययनारम्भ ।

उपाख्यान, स पु (सं न) प्राचीनकथा,
आख्यानम् २ कथान्तर्गतकथा ३ शृत्तान्त,
उदन्त ।

उपादान, सं पु (सं न) प्राप्ति-उपलब्धि
(स्त्री) २ बोध ३ प्रत्याहार ४ समवायि
कारणम् ।

उपादेय, वि (सं) ग्राह्य, ग्रहीतव्य, स्वाकार्यं
२ श्रेष्ठ, उत्तम ।

उपाधि, सं स्त्री (सं पु) छल, कपणम्
२ स्वधर्मस्य-व्यग्नतथावभासक वस्तु (न)
३ उपद्रव ४ कर्तव्यचिन्ता ५ प्रतिष्ठासूचक
पदम् ।

उपाध्याय, स पु (स) वेदवेदान्त-उपायन-
२ शिक्षक, अध्यापक ३ ब्राह्मणोपवाति
(स्त्री) ।

उपाध्याया, सं स्त्री (सं) अध्यापिका, विद्यो
पदेशिका ।

उपाध्यायानी, स स्त्री (सं) उपाध्याय-
शिक्षक-गुरु, पत्नी ।

उपाध्यायी, सं स्त्री (सं) अध्यापिका
० उपाध्यायपत्नी ।

उपानद, -नद्, सं पु (सं उपानद् स्त्री)
पादत्राणम् २ पादुका ।

उपाय, सं पु (सं) साधन, उपकरण, करण,
साधनी, युक्ति (स्त्री) ० शत्रुविजययुक्ति
(= साम, दान, भेद, दंड) ।

उपायन, सं पु (सं न) उपदा, उपहार ।
उपायन, स पु (सं न) धनादिकान्धाहरणम्,
अयनम्, लाभ ।

—रना, कि स, उप, अन् (चु), उपादा
(जु आ अ) ।

उपाजित, वि (सं) सगृहीत, अजित ।

उपावर्तन, सं पु (सं न) प्रत्या, -वर्तन-
वदन-गमनम् ० उपा-गमन-यानम्
३ भ्रामणम् ।

उपालभ, सं पु (सं) आ-अधि, श्लेष, मर्तन
ना, गहर्, परिवाद २ दुःखनिवेदनम् ।

उपासक, वि पु (सं) पूजक, सेवक, आरा-
धक, अर्चक ।

उपासना, सं स्त्री (सं) समीपे उपवेशनम्
२ आराधना, अर्चा ।

—रना, कि स, उपात् (अ आ से),
पू (चु) उपस्था (भ्वा आ अ) ।

उपास्य, वि (सं) उपामनीय, आराध्य, पूज्य,
भजनीय ।

उपेन्द्र, स पु (सं) विष्णु, वामन, कृष्ण ।

उपेक्षणीय, वि (सं) उपेक्ष्य, त्याज्य ३ गहर्
धृगाह ।

उपेक्षा, सं स्त्री (सं) औदासीन्य, नि स्पृहता,
नि मगना, विरक्ति (स्त्री) ० धृणा, गहर् ।

उपेक्षित, वि (सं) अवगणित, अवतीरित,
त्यक्त तिरस्कृत ।

उपोद्घात, सं पु (सं) भूमिका, प्रस्तावना ।
उफ, अव्य (अ) हा, अद्, हत, कटम् ।

—ओह, अव्य, अहो, ही ।

उफनना, कि अ (स उ + फेन >) उफण्
(भ्वा ष से), कच् तप्-पच् (कर्म) २ फेना
यने मढायन (ना धा) ३ उरिमच् (कर्म),
अत धुम् (दि प से) ।

उफान, स पु (सं उ + फेन >) उत्सुक,
फनीराम, उद्रेक ।

उघकना, कि अ (अनु) दे 'कै करना' ।

उवकाई, सं स्त्री दे 'कै' ।

उवटन, सं पु (स उवर्तनम्) अभ्यग,
अभ्यजन, उत्सादन, अनु वि, श्लेष, समालभ ।

उवरना, कि अ (स उद्वारणम् >) मुष्
मोक्ष-उद्वृ (कर्म) २ अव-परि-उत्, शिष्
(कर्म) ।

उवलना, कि अ (सं उद्वहनम् >) फना
यते (ना धा) ध्वत् (कर्म) ० वेगान्
निस्तृ (भ्वा ष अ) ।

उवार, सं पु (हि उवरना) निस्तार, मोक्ष,
प्राण, रक्षा ।

उवारना, कि स, (हि उवरना) वि निरू,
मुच (प्रे) निस्तृ (प्रे), रक्ष् (भ्वा ष
से) ।

उवाल, सं पु (हि उवलना) दे 'उफान'
२ उद्वग, आवेश ।

—आना, कि अ, दे 'उपनना' ।

—विद्, सं पु, उद्वुदाक ।

उवालना, कि स (हि उवलना) उद्वृ
(भ्वा ष से), ध्रा (अ ष अ) ।

उवासी, सं स्त्री (स उ + वास >) जृम्भ,
जृम्भा ।

उभरना, कि अ (सं उद्वरणम् >) धि
(भ्वा ष से), रपात् वृष् (भ्वा षा से)

आध्मा विस्तृ (कर्म) ३ दे 'उठना' ३ परि
वह् (भ्वा उ अ) ४ गर्न् (भ्वा ष से)

५ उरपद् (दि आ अ) ६ अपा वि, वृ
(कर्म) ७ समृष् (दि ष से) ८ अपगम्

९ दौवन आप् (रवा उ अ) १० बहिल्ल्व्
(भ्वा आ से) ११ मार मुच (वि) भू ।

उभरा, वि (हि उभरना) स्पीत, शन
० त्रिगजभार ।

उभारना, कि स (हि उभरना) उत्तेजन,
उत्थानम् २ उत्थापनम् ३ प्रोत्साहन,
प्रेरणम् ।

उभार, सं पु (हि उभरना) उधना,
उच्छाय २ वृद्धि उन्नति (स्त्री) ३ शोक,
शोष ४ स्पीति (स्त्री) पीनता ५ प्रवृत्ता ।

उमंग, सं स्त्री (हि उमगना) उल्लास,
आनन्द २ चिन्तनंग, लहरी ३ आशिक्षम्
४ उस्ताह, भीत्तानयम् ।

उमगना, क्रि अ (सं उमगनम् >) दे
'उमरना', 'उमहना' २ उहस् (भ्वा प से),
ग्री (कर्म) ।

उमहना, क्रि अ (सं उमहनम् >) परिवह्
(भ्वा उ अ), प्रवृष् (भ्वा आ से) २
वेगात् प्रवृत् (भ्वा आ से) ३ ननसवाध
(वि) भू ५ धुम् (दि प से) ।

—धुमहना, परिभ्रम्य तन् (कर्म) ।

उमदा, वि (अ) उत्तम श्रेष्ठ ।

उमर, स स्त्री (अ उम्र) वयस (न)
काल्याणवस्था २ जीवितकाल, आयुस (न) ।

उमरा, स पु (अ०, 'अमीर' का बहु०)
धनिना २ पुरोगा, नायका ३ सामन्ता
(सन बहु०) ।

उमस, स स्त्री (स उमन् पु) उष्म, निर्वा
तना, धमे ।

उमा, स स्त्री (स) पार्वती २ दुर्गा ३ कीर्ति
(स्त्री) ४ कान्ति (स्त्री) ५ मङ्गविद्या ।

उमाहना, क्रि अ, दे 'उमहना' ।

उमेठना, क्रि स (सं उमेठनम् >) मुद्-सुब्
(जु), आवृच् (प्रे), पर्यावृत् (प्रे), मपुटी
पिंही, कृ ।

उमेठवौ, वि (हि उमेठना) कुञ्चित, अराल ।

उम्मेद, सं स्त्री (फा) आशा, आशाता २
प्रतीक्षा, उरीक्षा, ३ आश्रय, अवलंब ४
विश्वास, विश्रम ।

—वार, स पु (फा) आशान्वित, आशावत्
२ याचक, पदान्वेषिन्, प्रत्याशिन् ।

—होना, मु, प्रसव प्रतीक्ष् (कर्म) ।

उम्र, स स्त्री (अ) दे 'उमर' ।

उर, स पु (स उरस न) हृदय, चित्तम्,
मनस (न) २ क्रोध, बह्म (न), यक्ष
स्थल्म् ।

—लाना, मु, आलिन् (भ्वा प से) २ विचर
(प्रे) ।

उरग, स पु (सं) सर्प ।

उरगारि, स पु (स) गरुड ।

उरज, उरजात, सं पु, दे 'उरोज' ।

उरद, स पु (स ऊरुद >) माप, कुहविद,
मासल, धान्यवीर, वृषाकुर, बलाढ्य, पितृ
भोजन ।

उरहा, वि (सं अपर >) अपर, अवर २
पृष्ठस्थ, पश्चिम ३ उत्तर, अपरोक्त ।

उरहृद्, सं पु (सं) उरहाणम्, वक्षसा
णम् ।

उरसिज, सं पु (स) स्तन, उरोज ।

उरसिल, वि (स) विशाल-रूपान्, वक्षम्
उरम ।

उरु, वि (सं) आयता, विस्तीर्ण, विदाल,
विपुल ।

उरु, सं पु (स ऊरु) समिध (न) ।

—क्रम, वि (स) बलवत् २ द्रुतगति ।

सं पु, वामनावतार २ सूर्य ।

उरोज, स पु (स) कुच, स्तन ।

उर्दू, सं स्त्री (तु ओर्दू) अरबीपारसीतुल्य
भाषाशब्दै मिश्रिता पारसीलिप्यां लिखिता
हिंदीभाषा, उर्दू (स्त्री) २ शिविरदृष्ट ।

उर्फ, सं पु (अ) उपनामन् (न),
उपारया ।

उर्वरा, सं स्त्री (सं) बहुफलदा भूमि (स्त्री)
२ पृथिवी । वि स्त्री, फलदा, शस्यप्रदा ।

उर्वी, सं स्त्री (सं) पृथिवी, धरणी ।

उलझन, स स्त्री (हि उलझना) विघ्न,
प्रतिबन्ध, बाधा २ समस्या, चिन्ता विवाद,
विषय ।

उलझना, क्रि अ (सं अवर्ध् >) सशिल्प
सम्रन् (कर्म), जटिली भू २ सन्ध् समिध्
(कर्म) ३ दे 'लिपटना' ४ व्याप्त (वि)
भू ५ रिनद (हि प वे) ६ विवद (भ्वा
आ से), वैरायते-कलहायते (ना धा)
७ सकटे पत् (भ्वा प से) ८ वकी-कुण्डली,
भू ।

उलझाना, क्रि स (हि उलझना) सशिल्प
(प्रे), सम्रन् (जु) २ व्याप्त प्रयुज् विनियुष्
(प्रे) ३ वकीकृ ।

उलटना, क्रि अ (स उलुठनम् >) परि
परा-वृत् (भ्वा आ से), विपर्यस व्यत्यस्
(कर्म) अधोमुखी भू २ परि भ्रम् (भ्वा
दि प से), घूर्ण (तु प से) ३ दे
'उमटना' ४ सकरी-सकुली भू ५ विपरीत
विरुद्ध (वि) भू ६ क्रुप् (दि प अ) ७ सृ
(तु आ अ), मूळ् (भ्वा प से) ८ पत्
(भ्वा प से) । क्रि स, परि परा-वृत्

(प्रे), अधोमुखी कृ २ निपत् (प्रे) ३ क्षिप् (तु प अ) ४ सकरी-सबुली, कृ ५ विपरीत कृ ६ उत्तरप्रत्युत्तर दा (जु उ अ) ७ निमग्न मूर्च्छित (वि) कृ ८ दे 'उल्टे लना' ९ ध्वन-नश (प्रे) ।

उलटप (पु) लट, स खी (हि उलटना पुलटना) विपर्यास, व्यत्यास, परिवर्तनम् २ व्यतिहार, विनिमय ३ क्रमभंग, व्यति क्रम । वि, विपर्यस्त, अव्यवस्थित, अक्रम, अस्तव्यस्त ।

उलटपेर, स पु, दे 'उलट पुलट' सं खी ।

उलटा, वि (हि उलटना) व्यत्यस्त, विपर्यन्त, अधोत्तर, अधोमुख २ क्रमरहित, अव्यवस्थित ३ विरुद्ध, विपरीत ४ अनुचित, अमनन । क्रि वि, व्यतिक्रमेण, विपर्ययेण, अमन्यतम् २ अनुचित, अनुक्तम् ।

—जमाना, मु, विपरीतकाल, न्यायरहित समय ।

—सबा, मु, अति कृष्ण श्याम नील ।

उलटी रौपसी का, मु, मूढ जड ।

—गगा बहाना, मु, असाध्य साधु (स्वा प अ) ।

—पट्टी पदाना, मु, कुपथे प्रवृत्त (प्रे) ।

—माला फेरना, मु, अमगल कर्म (भ्वा आ से) ।

—साम चलना, मु, मरणासन्न (वि) जन् (दि आ से) ।

—सीधी सुनाना, मु, निर्भर्त्स (चु आ से) ।

—धोव फिरना, मु, झटिति प्रतिनिवृत्त (भ्वा आ से) ।

—घुंटे से मूँदना, मु, अतिसहाय स्वप्रयोजन साध (स्वा प अ) ।

उलटाना, क्रि स (हि उलटना) दे 'उलटना' क्रि स । २ प्रति श्र (प्रे प्रत्यर्पयति) ३ अद्यन्था कृ ।

उलटापुलटा-दी, वि, दे 'उलटपलट' ।

उलटी, स खी (हि उलटना) बम, वमन, वमि (खी), छटिका ।

उलटे, वि वि (हि उलटना) विपरीततया, विपर्ययेण ।

उलथा, सं पु (स उत्पलम् >) नृत्तभेद २ विपर्यस्तप्लुतम् ।

उत्पलत, सं खी (अ) अनुराग, प्रमत्त (न) ।

उलार, वि (हि ओलरना = लेटना) पृष्ठ भागे भावत् (शकटादि) ।

उलाहना, स पु (सं उपालमनम्) उपालम्, दुःखनिवेदनम्, आ-अधि, श्लेषा, (सविलापा) विद्यापना ।

—देना, क्रि सं, उपालम् (भ्वा आ अ), निट् (भ्वा प से) ।

उलीचना, क्रि स (स उलुचनम्) उलुच् (भ्वा प से), हस्तादिभिः जल बहिः क्षिप् (तु उ अ) ।

उल्लक, स पुं (सं) घूक, दे 'उल्ल' २ इट् ३ कणाद ।

उल्लपल, सं पु (सं न) उदुसलम् २ गुग्गुलु ।

उल्ला, स खी (सं) खौल्का, उत्पात, पत क्रशत्र २ प्रकाश ३ अग्निशिखा ४ अग्नि ५ दीपिका ६ प्र, दीप, दीपक ७ अग्नि काष्ठ, अलातम् ।

—पात, स पुं (स) तारा-तारका नक्षत्र उडु, पात पतनम् ।

उल्ला, स पु (हि उलथना) अनुवाद, दे ।

उल्लुक, स पुं (स) ज्वलकाष्ठम्, उल्का ।

उल्लधन, सं पुं (सं न) व्यतिक्रम, अति, क्रम-क्रमणम्, भंग, अतिपात २ आश्लयन, प्रतीपाचरणम् ३ उत्प्लव ।

उल्लवित, वि (स) दे० 'खडा' ।

उल्लास, स पुं (स) इर्ष, आनन्द २ प्रकाश ३ अलवारभेद (सा) ४ मन्थपरिच्छेद ।

उल्लिखित, वि (सं) उत्कीर्ण पाषाणादिषु अभिलिखित २ चक्रेण तट्ट ३ लिखित ४ उप लिखित, उपर्युक्त ५ चित्रित, आलिखित ।

उल्लू, सं पुं (सं उल्लू) पेषन, काकारि, कौशिक, दिवाभ, दिवाभीत, घूक, निशा टन २ मूर्ख ।

—का पट्टा, स पुं, जट, बलिश ।

—बनाना, मु, भ्यामुट् (प्रे) ।

—बोलना, मु, निर्दली भू ।

उल्लेख, स पु (स) हस्त, लिखितम्, लेख्यम् २ वर्णन, निरूपणम् ३ अलवारभेद (सा) ।

उल्लेखनीय, वि (सं) लेखाई, उद्, ऐरय
 २ वर्णनीय, निरूपणीय इ अद्भुत ।
 उल्व, सं. पु (सं न) जरातु २ गर्माशय ।
 उल्व (ल्व) ण, वि (सं) स्पष्ट, विशद
 ० प्रवृत्त, वृद्ध इ अर्थिक, अतिशय ।
 उशाना, स पु (स नस) शुकाचार्य ।
 उशारा, स पु (अ) वृक्षभेद ।
 उशीनर, स पु (स-रा) गाधारदेश
 ० गाधारवासन् इ द्विविनय ।
 उशीर, स पु (स पु न) बीरणमूल, अभय,
 नन्द, मेघम् ।
 उषा, स स्त्री (स) उपम (स्त्री न), प्रमात,
 अर्णादय, दिनसुरा, रात्रिशेष, माहावेला ।
 ० अरुणोदयलाटिमन् (पु) इ वाणाधुर
 कन्या, अनिरुद्धपत्नी ।
 उष्ट्र, स पु (स) क्रमेलक, दे 'ऊँट' ।
 उष्ण, वि (स) स-उद्, तप्त ० उद्योगिन्,
 सोयोग, परिश्रमिन्, क्षिप्रकारिन्, दक्ष
 इ उष्णप्रवृत्ति ।
 उ पु, शीष्ण २ नरकविहीन इ पलातु ।
 —कटिबध, सं पु (सं) भूमे उष्णतम
 मध्यप्रदेश ।

उष्णता, सं. स्त्री (सं.) सं-उद् परि, ताप, ताप,
 उ (क) मन् (पु), उष्णत्वम् ।
 उष्णीप, सं. पु (सं. पु न) शिरोवेष्टन
 २ मुकुट, विरोम् ।
 उष्म, सं पु (स.) दे 'उष्णता' २ आतप,
 सूर्यालोच २ ग्रीम ।
 उष्मा, सं स्त्री (स धन् पु) दे 'उष्णता'
 ० आतप इ क्रोध ।
 उस, सर्व (हि वह) तद्, अदम ।
 उसोस, स स्त्री (सं उच्छ्वास) दीर्घवास,
 उच्छ्वासितम् ० आस, निश्वास इ (दु रा
 दिमूचक) दीर्घनिश्वास ।
 उसार, स पु (सं अवसार) विस्तार ।
 उसूल, स पु (अ) नियम, सिद्धान्त ।
 उस्तरा, स पु (फा उस्तुरा) धुर, नापि
 तालम् ।
 उस्ताद, सं पु (फा) अध्यापक, गुरु ।
 वि, कपटिन् २ चतुर ।
 उस्तादी, स स्त्री (फा) अध्यापकत्वम्
 २ नैपुण्यम् इ बज्जन, विप्रलम् ।
 उस्तानी, सं स्त्री (फा) अध्यापिका २ गुरु
 पत्नी इ मायाविनी ।

ऊ

ऊ, वर्णमालाया षष्ठ स्वरवर्ण, उकार ।
 ऊ, अव्य (अनु) आ, हा, षष्ठम् ।
 ऊँघ, सं. स्त्री (सं अवाल् >) तद्रा, ईपत्
 स्वरूप, निद्रा ।
 ऊँघना, कि अ (हि ऊँघ) ईपत् स्वप् निद्रा
 (अ प अ), स्वप् के सन्नत रूप (सपुष्पति
 आदि) ।
 ऊँघ, वि (सं उच) उच्छ्रित २ श्रेष्ठ
 इ कुशीन ।
 —नीच, वि, कुलीनातुलीन, उच्चावच । सं पु
 हानिलाभौ, भद्रामर्त्रे (दि) ।
 ऊँचा, वि (सं उच) सम्, उच्छ्रित, उदरात,
 प्रासु, ऊर्ध्व, तुग, उदग्र, मोच्छाय २ श्रेष्ठ,
 सुरय, अग्रम, परम, महा, प्रधान, इ प्रवल,
 तीव्र ।
 —नीचा, वि, विषम, असम, नतोन्नत । सं.
 पु., हानिलाभौ २ भद्रामर्त्रे ।
 —घोळ बोलना, मु, विकृत् (म्वा आ से) ।

—सुनना, मु, विचिद् बधिरत्वम् ।
 ऊँचाई ऊँचान, सं स्त्री (हि ऊँचा) उच्छ्र
 (ष्ट्रा) य, आरोह, उल्लेख, उद्, तुगता,
 उचाना, उत्कर्ष, उन्नति (स्त्री) २ महत्त्व,
 गौरवम् ।
 ऊँचे, कि वि (हि ऊँचा) उच्चै, उपरि, ऊर्ध्व,
 उचन् ।
 ऊँट, सं. पु (सं उष्) क्रमेलक, महाग,
 मय, दीर्घगति, दासेरक, धृतर, लबोध,
 दीर्घनय, दीर्घ, महाशठ, महाश्रीव ।
 —कटा (टी) रा, स पु (सं. उच्छ्रटका
 कम्) उच्छ्रप्रिय कटाकिनो गुल्मभेद, कटाल,
 उत्कटक ।
 ऊँटनी, सं स्त्री (हि ऊँट) उष्ठी, लबोधी,
 महागा ।
 ऊँहूँ, अव्य (अनु) न, नो, नो नो, न क्वापि ।
 ऊ, सं. पु (स) शिव २ चन्द्र इ रक्षक ।

अ०, अपि । सर्व० स, सा, तद् तत् (न) ।
 उख, पु (स इक्षु) दे 'गत्रा' ।
 उखल, स पु (स उखलम्) उदूखलम् ।
 उखड, वि, दे 'उखाड' ।
 उख नाटक, स पु (स उखट + नाटक >)
 अनर्थक निरर्थक, चार्थम् ।
 उखपटारा, वि (अनु अटपट + स अग) अत
 वद्ध, असगत २ मोघ, निरर्थक ।
 —यात, स स्त्री, निरर्थक वचनम् ।
 उख, वि (स) सपत्नीक, परिणीत, दे०
 'विवहित' ।
 —ककट, वि (सं) सखड, कवचधारिन् ।
 उख, वि स्त्री (सं) परिशीला, उपयता,
 सभर्तृका, सधवा, शुभासिनी, पतिव्रती २ पर
 कीयानायिकाभेद ।
 उखि, स स्त्री (सं) वहनम्, नयनम्
 २ विवाह, परिणय ।
 उख, वि (स अपुत्र) निस्तान, निरपत्य,
 निरन्वय २ मूढ, निर्बुद्धि ।
 स पु, मूर्ख २ पत्नीरहित ३ अपुत्र
 ४ प्रेतभेद ।
 उख, सं पु (स उख) दे 'उखविनाव' ।
 उखबिलाव, स पु (स उखबिल) उख,
 जल, मार्जार विडाल ।
 उख, वि (अ उख अथवा फा कवूद) नील
 लोहित, धूम, धूमल, धूमवर्ण ।
 उखम, सं पु (सं उखम >) उपद्रव, उत्पत्त
 कौलाहल, तुमुल, कलह ।
 —मचाना, क्रि स, उपद्रव उथा (प्रे)
 उखमी, वि (हि उखम) उत्पाप्तिन्, उप
 द्रविन्, दुष्ट ।
 उखो, स पु (सं उखव) शीघ्रणत्य मित्र
 विरोध ।
 —का लेना न माधव का देना, सु, विरक्तता,
 उदासीनता गतमगता ।
 उख, स स्त्री (स उखा) उखा, मेघादिरोमन्
 (न) ।
 उख, वि (सं) म्यून, अल्प, शुद्ध-अल्प-स्तोत्र
 सूक्ष्म तर २ शुद्ध, तुच्छ ।

उखा, वि, दे 'ऊन' ।

उखी, वि (हि ऊन) लोमान, मेघलोमज,
 उर्णामय (नी खी), और्ण (णी खी) ।

उखर, क्रि वि (म उपरि अण्य) ऊर्ध्व उप
 रिष्टात्, सप्तमी विभक्ति मे भी । २ अधिकम्
 अविरिक्तम् ३ बहिः, बहिर्भागे ४ तटे,
 तीरे ५ प्रतिकूल, विरुद्धम् । स पु, अण्य,
 म्युण् ।

—तले, क्रि वि, उपर्यथ ।

—से, क्रि वि उपरिष्टात्, बाह्यत ।

उखरी, वि (हि ऊपर) ऊर्ध्व, उत्तर, उप
 रितान (नी खी) २ बाह्य, बहिर्वर्तिन् ३ अनि
 यत ४ आपातरमणीय, साडवर ।

—आमदनी, स स्त्री, वेतनातिरिक्त आय ।

उखद-खावद, वि (अनु) विषम, नतत्रित ।

उखना, क्रि अ (स उदेनम्) उदिन् (तु
 आ से), निविद् रिद् (दि आ अ) ।

उखासोसी, स स्त्री (हि ऊमना + सोस)
 श्याम प्राण, ऊच्छम्, उखम, दुःश्वासा ।

उखर, स पु, दे 'गूलर' ।

उखस, स स्त्री, दे 'उमस' ।

उखर, सं पु (सं) सविथ (न), जानूपरि
 भाग ।

उखर, सं पु (सं ऊन खी) बल, शक्ति
 (स्त्री) । २ रम ३ भोजन ४ जलम् ।

उखरवी, वि (स-मिवन्) ऊर्जस्वल, उजित,
 बलिन्, शक्तिमत् ।

उर्ण, स पु (सं न) ऊर्णा, दे, 'ऊन' ।

—नाभ, सं पु (स) ऊर्णनाभि, मर्त्यक,
 दे 'मषडी' ।

ऊर्णा, स स्त्री (सं) ऊर्णी, दे 'ऊन' ।

उद्धर्ष, क्रि वि (स ऊर्ध्वन्) उपरि, उप
 रिष्टात् ।

—आरोहण, सं पु (सं न) देहान्त ।

—गामी, वि (सं-मिन्) उच्चात् २ मुक्त ।

—मूल, स पु (सं) सत्तार ।

—रेता, वि (सं-न्त्) ब्रह्मचारिन्, वीर्य
 रक्षक ।

सं पु, महादेव २ भीष्म ३ इन्द्रम् ।

—श्राम, स पु (म) उच्छ्वास २ कृच्छ्रो
च्छ्वास ।

उर्मि, स स्त्री (स पु स्त्री) तरंग, कलोल
२ वेदना ३ बलनबोवरेणा ।

—माली, स पु (म लिन्) रसुत्र ।

उल-लल, वि (देश) अकम २ अद्य
३ असम्भ ।

उपर, स पु (स पु न) अनुर्वर-शार-अश
स्यप्रद भूमि (स्त्री), भरस्वल्पी । वि मोष
निष्पत् ।

उपा, स स्त्री (स) दे उपा ।

ऊम्, स पु (स) उताप, धर्म २ वाष्प
३ ग्रीष्म । वि उत्त, उण ।

—वर्ण, स पु (स) दा, प्, म, ह वर्ण ।

ऊष्मा, स स्त्री (स उष्मन् पु) दे 'ऊम्' ।

ऊम्, स पु दे ऊपर' ।

ऊह, अय, (अनु) (पीडा) आ, हा,
२ (आश्रय) अह, अहो ।

ऊह, स पु (स) अनुमानं, वि, नर्क २ पुंसि-
(स्त्री) हेतु ।

—अपोह, स पु (स स्त्री) तर्क-वतर्क, विमर्श,
विचारणा पक्षप्रतिपक्षचिन्तनम् ।

श्रु

श्रु, देवनागरोवर्णमालाया सप्तम स्वरवर्ण,
श्रकार ।

श्रक्, स स्त्री (स श्रच्) वेदमन्त्रभेद
२ श्रुवेद ।

श्रकृण, वि (स) आहूत, वि, क्षण ।

श्रक्य, स पु (स न) धनम् २ स्वर्णम्
३ दायधनम् ४ दायभाग ।

श्रच्छ, म पु (स) भल्लुक २ नक्षत्र ३ मेघा
दिराशय ।

—पति, स पु (स) चन्द्र २ जाववत् (पु) ।

श्रुवेद, स पु (स) वेदावरोप ।

श्रुवदी, वि (स दिन्) श्रुवेद, श-पाठक ।

श्रुचा, स स्त्री (स श्रच् स्त्री) छन्दोमयो
मन्त्र २ वेदमन्त्र ३ स्तोत्रम् ।

श्रुत्, वि (स) सरल, समरेख प्रगुण, अजस
२ सुकर, सुख-साध्य-सापाय ३ निर्व्याज,
निष्पट ४ प्रसन्न अनुबुद्ध ।

श्रुत्ता, स स्त्री (स) सरलता, समरेखता
२ सुकरत्व एतसाध्यता ३ निष्पटता ।

श्रुण, स पु (स न) पणुदचन, उद्धार ।

—सुकाना, कि स, श्रुण सुष (प्र) ।

—लेना, कि स, श्रुण कृ अथवा श्रुद (क
उ से) ।

—प्रस्त, वि (स) श्रुणिन्, अधमर्ण, खालक,
धारक ।

—मुक्त, वि (स) श्रुण-उद्धार पणुदचन,
विमुक्त ।

श्रुणी, वि (स णिन्) दे 'श्रुणप्रस्त' २ अनु
गृहीत, उपहृत ।

श्रुत, स पु (स न) उच्छ्वृत्ति (स्त्री)
२ मौष ३ तलन् ४ कमपलन् ५ यथ
६ सत्यम् ।

वि, दीप्त २ पूजित ३ सत्य ।

श्रुत्, स स्त्री (स पु) मासद्रव्यात्मक प्रकृति
परिवर्तनयुक्त काल (पट क्रतव-वसन्त,
ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, ह्रमन्त, शिशिर)
समय २ आर्तव पुष-रज, काल ।

—काल, स पु (स) रजोदर्शननन्तर गम
योग्यानि षोडशदिनानि ।

—गमन, स पु (स न) श्रुत्काले
मैथुनम् ।

—वर्या, स स्त्री (स) श्रुत्वनुदल आहार
विहारौ ।

—दान, स पु (स न) गर्माधानम्,
निषेकः ।

—भती, वि स्त्री (स) रजस्वला, पुषवती ।

—राज, स पु (स) वसन्त ।

श्रुविज, स पु (स ज) पुरोहित वाक्क ।

श्रुद्ध, वि (स) सपन्न समृद्ध ।

श्रुद्धि, स स्त्री (स) समृद्धि वृद्धि (स्त्री) ।
२ प्राणप्रिया, ओषधिभेद ।

—सिद्धि, स स्त्री (स) समृद्धिसाधन्ये ।

श्रुशु, स पु (स) देव अमर २ गणदव
विशेष ३ देवानुचरवर्णवशेष ४ शिक्षिण ।

- अपभ, सं पु (स) वृष, दे 'बैल' २ संगीते द्वितीयस्वर ३ समासाते श्रेष्ठता वाचक (उ नरपरम) ।
 —देव, स पु (सं) विणोरवनारो नामि रात्रपुत्र २ प्रथम टीर्थनर (जैन) ।
 —ध्वज, स पु (स) शिव ।
 क्रपि, स पु (सं) सत्यवचसु, शापात्र, भवद्रष्टु, मुनि, तत्त्वविद्, सिद्ध, मन्त्रज्ञ ।
 —ऋण, स पु (स न) मुमुक्षुदार (टि यद् वेदों के पठनपाठन से जनरता है) ।

ए

- ए, हिन्दीवर्णमाहाया अष्टम स्वरवर्ण, एकार ।
 ऐँच ऐँच, स पु (अनु + पा ऐच) वक्रता, कुटिलता ।
 एड़ी, म स्त्री, कौशेय-कौश, भेद २ तस्य कीट ३ कौशिकवन्त्रभेद ।
 एपरर, स पु (अ) सभ्राण्, महारान, राजा धिराज, अधिरान ।
 एपायर, स पु (अ) अ(वा) धिराज्यम्, साम्राज्यम् ।
 एमेस, स स्त्री (अ) सभ्राणी, राजाधिरान महारान पत्नी, अधीश्वरी ।
 एधुल्लैस, स स्त्री (अ) चल्चिवित्तालव २ क्षत ग्ण, वाहन क्षयटी ।
 एकगा, वि (स ध्वाग) एक, पक्षीय देशीय २ असमभार ।
 एङ्, वि (स स) एक, ध्वा, ध्वम् २ अतुल्य, अनुपम ३ कश्चन, कश्चित्, काचन, किंचन ४ तुल्य, समान ।
 स पु, उचा सख्या, तदक (१) न ।
 —करना, कि स, सगम् (प्रे) ।
 —होना, कि अ, सष्ट (भ्वा वा से) ।
 —तरफा, वि, एक, पक्षीय देशीय ।
 —घार, कि वि, सष्ट २ एकदा ३ पूर्व, पुरा, प्राक् ।
 —धारगी, कि वि, युगपत्, समम् ३ साक ल्येन ।
 —मत, वि, एक-सम, चित्त २ सधर्म ।
 —मत होकर, कि वि, साम्प्रत्येन ऐकम ल्येन ।
 —ओंग देगना, मु, सम् दृग् (भ्वा प अ) ।
 —एक, मु, सर्व, सफल २ धृष्य-धृषक ३ मन्त्र ।
 —एक बरके, मु, आनुपूर्वा, आनुपूर्व्येन ।
 —और एक ग्यारह होना, मु, सधेन बढ़ते बलम् ।
 —टफ, मु, निर्निमेषम्, अनिमिषम् ।
 —तो, मु प्रथम तावत् ।
 —दम, मु, निरन्तरम् २ झटिति, सगदि ३ सष्टदेव ४ सर्वथा ।
 —दूसरे को, मु, अयोज्य, परस्पर, इतरेतरम् । वि मिथ (अन्य), परस्पर, इतरेतरम् ।
 —पेट के, मु, सोदर, सहोदर, सोदर्यं ।
 —घात, मु, सत्य प्रतिज्ञा २ यथार्थवचनम् ।
 —सा, मु, तुल्य, सद्रुश, सम ।
 —स्वर से कहना, मु, ऐकमत्येन वद् (भ्वा प से) ।
 केवल-, वि, असहाय, अद्वितीय ।
 कोद-, कश्चित्, कश्चित्, किंचित् ।
 दो में से-, वि, अन्यतर, एतपर, अन्यतरा, अ-यनरत् (न) ।
 बहुतों में से-, अन्यतम, एकतम, एकनमा, एकनमत् (न) ।
 एकचित्त, वि (स) अवहित, स्थिरचित्त २ अभिन्नहृदय ।
 एकचित्तता, स स्त्री (स) अवधान, मनी योग २ ऐकमत्य, समति (स्त्री) ।
 एकछत्र, वि (स) एकशासकाधीन । कि वि ऐकाधिपत्येन ।
 एकद्व, स पु (अ) क्षेत्रफलमानभेद, एकद्वम् (१६ बीघा-४८४० वर्गगन) ।
 एकतरफा, वि (पा यकतरफ) एतपक्षीय २ सपणपान ३ एकपादर्वमवधिम् ।
 —दिगरी स स्त्री (पा + अ) एकपक्ष्यानि देश ।
 एकता, स स्त्री (सं) सपटन, ऐक्यम्, संज्ञति (स्त्री), सगम, समवाय २ साम्यं, तुल्यता ।

एकतान, वि (सं) एकाग्रचित्त, मग्न, हीन ।
 एकतारा, स पु (हि एक + तार) एकतार,
 वापभेद ।
 एकत्र, कि वि (स) एक, स्थले-स्थाने ।
 —करना, कि स, सग्रह (क उ से) ।
 —होना, कि अ, समिल (स्वा प से) ।
 एकत्रित, वि (स एकत्र >) सपीभूत सचित,
 मगूहीत ।
 एकत्रय, स पु (स न) दे 'एकना' ।
 एकदल, स पु (स) गणेश, लबोदर ।
 एकदा, अव्य (स) सटव (अय) २ पूर्व,
 पुरा प्राक् (सब अव्य) ।
 एकदेशीय, वि (स) एकदेश्य एकस्थानीय ।
 एकनिष्ठ, वि (स) एकोपासक ।
 एकुरग, वि (म) समान स्वर्ग २ शुद्धा
 त्मन् ।
 एकुरस, वि (स) तुल्य, सद्दश २ अव्यय,
 अपरिणामिन्, परिवर्तनरहित ।
 एकरूप, वि (म) स-सम-समान रूप, तुल्य,
 समान ।
 एकवचन, स पु (स न) एकवाचक वचनम्
 (व्या) ।
 एकवाच्यता, स स्त्री (स) साम्य, ऐक
 मत्वम् ।
 एकस्मर, अ, आधनम्, आपादमूलकम् ।
 २ सद्दश (अव्य) वि एकाकिन्, असहाय ।
 एकहरा, वि (स एकस्तर) एकास्तर, एक
 फलक २ एक, सूत्र-गुण ३ तनु, सूक्ष्म ।
 —यदन, स पु इन्द्रदेह ।
 एकाकी, स पु (स किन्) रूपकभेद
 २ एकाक्युक्त रूपकम् ।
 एकांग, वि (स) एकावयव, एवभाग
 २ विकल्पांग । स पु अगरक्षक २ त्रिष्णु ३
 बुधमह ४ चन्दन-जम् ५ शिरस् (न) ।
 एकांगी, वि (स गिन्) एकपक्षीय २ दुर्दम् ।
 एकात, वि (स) अत्यन्त २ एकाकिन्,
 पृथक्स्थित । स पु (स) विजन, विविक्तम् ।
 —वास, स पु (स) ससर्गाभाव ।
 —वासी, वि (स सिन्) निर्गन् विजग,
 वासिन् ।
 एका, स पु (हि एक) सहति (स्त्री),
 ऐक्यम्, सघटनम् ।

एकाएक, कि वि (सं एक + एव >) अक
 स्मात् एकपदे, सहसा, अकांठे ।
 एकाकार, सं पु (स) सारूप्य, साम्यम् वि,
 सारूप, सम, समान ।
 एकाकी, वि (स किन्) एकल, दे 'अकेला' ।
 एकाक्ष, वि (स) काण, चन्द्रलोचन । सं
 पु, काक. २ शुक्राचार्य ।
 एकाक्षर, वि (म) एक-अक्षरिन् वर्ण । सं पु
 (स न) ओंकार ।
 एकाग्र, वि (स) स्थिरबुद्धि, धीर २ अनन्य
 चित्त एकतान, एकाग्रवृत्ति ।
 —चित्त, रि, दे 'एकाग्र' २ ।
 एकाग्रता, स स्त्री (स) अनन्य चित्तता
 मेनस्केता, एकतानता ।
 एकात्मता, स स्त्री (स) एकत्व, एकता,
 एकरूपता, ऐक्य, भेदाभाव ।
 एकादशी, स स्त्री (स) हरि, दिन दिनस
 वासर ।
 एकाधिक, वि (स) बहु, बहुल, अनेक,
 बहुसंख्यक, भूरि ।
 एकाधिकार, सं पु (सं) एक, व्यापार
 व्यवसाय २ अनन्यसाधारणीधिकार ।
 एकाधिपति, स पु (सं) अधीश्वर, अधि
 राज, सभ्रान् महाराज ।
 एकाधिपय, स पु (सं न) एक, प्रभुत्व
 स्वामित्वम्, पूर्णप्रभुत्वम् ।
 एकार्थक, वि (स) सम ममान-तुल्य,
 अर्थक । स पु, पर्यायशब्द ।
 एकावली, स स्त्री (स) अलंकारभेद (सा)
 २ एकवटिका, एकतारी हार ।
 एकीकरण, स पु (स न) एकतासाधन,
 एकत्वमपादनम् ।
 एकीभाव, स पु (म) सघटन, मयोग,
 मद्दलप ।
 एकीभूत, वि (स) सयुक्त, मिश्रित, सहित ।
 एका, वि (स एक >) एक विषयक-सवधिन्
 २ एकाकिन्, एकल । स पु यथभ्रष्ट प्राणिन्
 २ एकपशुवाणो द्विचक्रो पादनभेद ३ सैनिक
 भेद ४ एकचिह्नयुक्त कीडापत्रम् ।
 एकावान, स पु (हि एका) सारथि, सूत,
 ह्यकप ।

एकी, स स्त्री (हि एका) एजबुधभवात्
शकटम्, वृषवहनम् ।
एक्जामिनेर स पु (अ) दे 'पराक्षक' ।
एक्जामिनेशन, स पु (अ) दे 'पराक्षा' ।
एक्सरे, स स्त्री (अ) प्लसरदिम् ।
एजेंट, स पु (अ) प्रतिनिधि, प्रतिद्वस्त
२ दे अद्विवा' ३ कारक ।
एजेंसी, स स्त्री (अ) परद्रव्यनयनिकयस्थानम्
२ प्रतिनिध्यम् ३ कावत्वम् ।
एटम, स पु (अ) अणु ।
—यम, स पु अणुवयम् ।
एटर्नी, स पु (अ) परवार्य, साधक सपादक,
प्रति, पुत्र्य हस्त ।
एड, स स्त्री [स एडु (डु) वम्] पाणि
(पु स्त्री) पाद, मूल तलम्, गोहिरम् ।
—लगाना, सु, घोटवादीन् पाष्णना प्रचुद्
(प्रे) २ उत्तन् (प्रे) ३ बाध (भ्वा आ से) ।
एडवोकेट, स पु (अ) दे 'अदवोकेट' तथा
'वकील' ।
एडिटर, स पु (अ) सपादक ।
एडिटरी, स स्त्री (अ एडिटर >) सपादकता ।
एडी, स स्त्री [सं एडु (डु) क] दे 'एड' ।
—रगडना, सु, सुदीर्घकाल वष्ट सद्
(भ्वा आ से) २ चिररोगेण पाङ् (कर्म) ।
—से चोटी तक, सु, आपादशीर्षम्, अत्यतम् ।
एतवार, स पु (अ) निश्वास, प्रत्यय ।

ऐ, हिन्दीवणमालाया नवम श्वरवर्ण ऐवार ।
ऐ, अ य (अनु) कि वध, अनु २ अही,
अधुभुत, आशयम् ।
ऐग्लो, वि (अ समास के आरभ में) अण् ।
—इडियन, स (अ) आंग्लमारीतीय ।
—बर्नोक्विलर, वि (अ) आंग्ल- (विचालय)
स्वदेशीय ।
ऐच, स स्त्री (हि ऐचना) आ समा कर्ष
कर्षणम्, प्रसार, आयाम, वितति (स्त्री) ।
ऐचना, कि म (हि ऐचना) वृष (भ्वा प
अ) २ विरतु (प्रे), विरतु (त उ से)
३ अप-जव-भृष ।
ऐचाताना, वि (हि ऐचना + तानना) वज्रदृष्टि,
वेवर, वेदर, बलिर ।

एतराज, सं पु (अ) आपत्ति (स्त्री),
बाध, विरोध, आक्षेप, प्रत्ययाय ।
एरड, सं पु (स) चित्रक, पचागुल दीर्घ
पनक, गन्धर्वहरतक ।
एलची, स पु (जु) रान, दूत, सदेशहर ।
एला, स स्त्री (स) बालः हिमा, चद्रिका,
बहुलभा, पेद्री, द्राविटी ।
एलान, स पु (अ) घोषणा, विज्ञप्ति (स्त्री) ।
एलेक्टरेट, स पु (अ) निर्वाचनसमूह
२ निर्वाचनक्षेत्रम् ।
एवं, कि वि (सं) इत्य, अनवा रीचा
२ अपि, च ।
एव, अव्य (सं) वेवलम्, मात्र २ अपि, च,
अपि च ।
एवज, स पु (फा) प्रति (ती) कार, प्रति,
क्रिया-अपकार २ हति निष्कृति (स्त्री)-
पूरणम् ३ प्रतिनिधि ।
एशिया, स पु (यू इव अणु = पूर्वदिशा >)
पचमहाद्वीपपु अ यनम् ।
एशियाई, वि (अ एशिया >) एशियासदधिन् ।
एषणा, स स्त्री (स) आकाशा, स्पृहा,
वाष्प, इच्छा ।
एशियायान, स स्त्री (अ) अवधान, अवेशा
२ अल्पाहार ।
एहमान, स पु (अ) कृया, उपकार
२ वृत्तज्ञता ।
—मद, वि, वृत्तज्ञ वृत्तवेदिन् ।

ऐ

ऐचातानी, सं स्त्री (पूर्) उभयत वर्षण
२ सपर्ष, स्पृहा, अहमहमिका ।
ऐट, स स्त्री (हि ऐटना) गर्भ दर्द आगोप
२ समर्पगति ३ द्वेष, मासर्पम् ४ दे
'ऐटन' ।
ऐटन, स स्त्री (पूर्व) न्यावर्तन, आ, कुञ्जन,
वज्रता २ च्चूण, वज्रभय ३ आसर्पणम्
४ मासोपपात, उद्वेहनम् ।
ऐन्चा, कि स (स आवेहनम्) या परि, नृष्ट
(प्रे), मुद् मुद् (जु), आनु (भ्वा प से)
२ पीठयिता आदा (जु आ अ), बनेन
निष्कृ (भ्वा प अ) ३ छान्न आना । कि
अ, आनु (कर्म) न्यावृष्ट (भ्वा आ
से) २ प्र कि, तन् (कर्म) ३ गर्व (भ्वा

प से) ४ प्रल्प (स्वा प से) ५ दे
 'भरना' ।
 पेठ, वि (हि पेंठना) गविन्, इत्त ।
 पेठ, स पु (हि पेंठ) दे 'पेंठ' (१) :
 ० आवर्त भ्रम । वि, निर्गुण, अकिञ्चिक्वर ।
 —दार, वि (हि + धा) सगर्व, अहमाभिन्
 २ उज्ज्वल ।
 —पेंठना, क्रि अ (हि पेंठना) व्यावृत्
 (स्वा आ से) दगानि आनन् (त उ
 से) ३ गव (स्वा प से) । क्रि स, दे
 'पेंठना क्रि स (१) ।
 पेंठाना, क्रि अ (पेंठना) अगानि आतन् (त
 उ से) २ सगव चल् (स्वा प से) ।
 पेंठव, वि (स) चाद्र चाद्रिक, चाद्रमस,
 सौमिक । स पु चाद्रमास ।
 पेंद्र, वि (स) इद्र शक्र विषयक, पीरदर ।
 स पु, पेद्रि, इद्रपुन ।
 पेंद्रजालिक, स पु (स) मायिन्, मायिक,
 कुडुकनीविन् ।
 पेंद्रि, स पु (स) इद्रपुनो नयत् २ अर्जुन
 ३ शालि ४ काज ।
 पेंद्रिय, वि (स) पेद्रिक, इन्द्रिय विषयक,
 प्राक्-भनविन् ।
 पे, अय (छ अयि) भो, दे, अरे ।
 पेक, वि (स) एक विषयक-सम्बन्धिन् ।
 —पय, स पु (स न) एकत्रशासनम्
 २ पूर्ण, प्रमुत्तव-स्वामित्वम् ।
 —भाव्य, सं पु (स न) १ ० स्वभाव-लदेय,
 ऐक्यम् ।
 —मय, स पु (स न) मतैक्यम्, साम्भ
 त्यम् ।
 —राज्य, स पु (स न) एकत्रशशासनम् ।
 पेशातिङ्, वि (स) सिद्ध, सम्पन्न २ सपूर्ण
 ३ निर्दोष ४ अनन्यसम्बद्ध ।
 पेश्ट, स पु (अ) अधिनियम ० रूपक
 नाटक, अथ ३ वृत्ति (स्त्री) ।
 —पशना, क्रि स, अभि नी (स्वा प अ),
 नट् (डु) ।
 पेश्चर, स पु (अ) न'क, जट, गैल्प,
 कुशील्व, अभिनेतृ ।
 पेश्च्रेम, स स्त्री (अ) नदी, नर्तकी, अभिनेत्री ।

पेक्य, स पु (स न) एकता, एकत्वम् २ दे
 'पका' ।
 पेच्छिक, वि (स) वैकल्पिक (-की स्त्री),
 स्वच्छात्र, हव्यधीन, सविकल्प ।
 पेष्टवोकेट, स पु (अ) पक्षसमर्थक, परार्थ
 वक्तृ ।
 पेशिहामिक, वि (स) इतिहास, विषयक
 मवधिन् २ इतिहासज्ञ पुरावृत्तवेन् ।
 पेशिज्ञ, स पु (स न) पारपर्योपदेश, प्रमाण
 भेद (-या) ।
 पेन, स पु दे 'अयन' ।
 पेन, वि (अ) न्यार्य लचिन् २ सपूर्ण ।
 स स्त्री भेत्, नयनम् ।
 पेनक, स स्त्री (अ पेन >) उपनेत्र ने,
 नेत्रवाची ।
 पेय, स पु (अ) दोष, विकार ० व्यसन,
 अकृष्ण ।
 पेयी, वि (अ) दोषिन्, 'यसिन्' २ बुचेष्टक ।
 पेयार, स पु (अ) मायाविन्, धूर्त, छलिन् ।
 पेयारी, स स्त्री (अ) कपटित्व, धूर्तता, माया
 विता ।
 पेयात्, वि (अ) भोगिन्, विलासि
 २ कामुक, लषट् ।
 पेयाती, स स्त्री (अ) विलासिता २ कामु
 कता ।
 पेरागौरा, स पु (अ गैर + अनु ऐर) पर,
 अपरिचित ० सुच्छजन ।
 पेरावत्, स पु (स) इद्रगन् चतुर्दन्त,
 सदादान, अन्नमातङ्ग २ विद्युत्पत्नी भेद
 ३ इद्रवाप ।
 पेरावती, स स्त्री (स) पेरावतभार्या
 २ विद्युत् (स्त्री) ३ पचनदप्रान्त नदीविद्येप
 (= रावी) ।
 पेश, स पु (अ) विलास, मृग, भोग
 २ सुश्रमाधनम् ।
 —च आराम, स पु, सुसमोगी, आमोद
 प्रमोदी ।
 पेश्य, स पु (स न) धन, अर्थ-द्रव्य, वित्त
 विभव, संपत्ति (स्त्री) २ अणिमादयो
 योगसद्वय (स्त्री बहु) ३ प्रमुत्तव, अधि
 पर्यम् ।

ऐश्वर्यशाली, वि (सं लिन्) ऐश्वर्यवत्, धनिक, धनाढ्य, सम्पन्न ।

ऐसा, वि (स ईदृश) एवविध, एतत्तुल्य एतादृश । (स्त्री, ईदृशी, एतादृशी) ।

—वैसा, मु, तुच्छ, साधारण ।

ऐसे, कि वि (हिं ऐसा) इत्थ, एव, अनेन प्रकारेण ।

ऐहिक, वि (स) सासारिक व्यावहारिक, लौकिक ।

ओ

ओ, हिंदीदर्पणमालाया दशम स्वरवर्ण, ओकार ।

ओं, अव्य (स) आ, एव, एवमेव, बादम्, अथ किं, तथा, तथास्तु, अस्तु ।

ओं, स पु (सं अव्य) प्रणव, ओकार ।

ओंकार, स पु (स) ओम् इति शब्द, प्रणव ।

ओंठ, सं पु (ओष्ठ) दंत-रदन-दशन रद, छद पट । (कपर का) कध्वौष्ठ । (नीचे का) अधर ।

—चवाना मु, कुप् (दि प से) ।

ओंडा, वि, ग(ग)भीर, अगाध । सं पु गर्त, गर्तम्, अवट ।

ओ, अव्य (अनु) ओ, अयि, हे, अरे २ च, अयि च ३ अहो, ही ४ स्मरणानुकपादि सूचकमव्ययम् ।

ओक, स पु (स ओकस् न) गृह, आलय २ शरण, आश्रय ।

ओक, स स्त्री (अनु) वमनेच्छा, विवमिषा ।

ओकण, स पु (स) मत्सुग दे 'खटमल' ।

ओकना, कि अ (हि ओक) उद, वम् (भ्वा प से) २ महिषीव रैम (भ्वा आ से) ।

ओकाई, स स्त्री (हि ओकना) वमन २ वमनेच्छा ।

ओखल, स पु, > 'ओखली' ।

ओखली, स स्त्री (स उत्पलन्) वाद्यमय पाषाणमय वा उद् (ल्) खलम् ।

ओघ, सं पु (स) समूह, राशि २ घनत्व, साद्रता ३ प्रवाह, धारा ।

ओछा, वि (स तुच्छ) झुद्र, अधम, लघुचेतस्, वापुस् २ गाव् अल्पजल ३ लघु, मुसल ४ अपयसिलव ।

—पन, स पु, तुच्छता, झुद्रता, नीचता ।

ओज, सं पु (स ओजस् न) तेजस, प्रताप, मुखवाग्नि (स्त्री) २ प्रकाश ३ एका (सा) ४ देहस्वरसानां सारांश ।

ओजस्विता, सं स्त्री (सं) काति (स्त्री) तेजस् (न) ।

ओजरवी, वि (सं विन्) तेजस्विन्, काति मत्, प्रभावशालिन्, शक्तिमत् ।

ओजोन, सं पु (अ) प्रजारक, दाहनम्, वातिभेद ।

ओझरी, स स्त्री (स जठरम्) कुक्षि, पुद, पड २ आमाशय, अन्नाशय, जठरम् ।

ओझल, सं पु (स अवरुन्धनम् >) आवरण, आच्छादनम् । वि, अदृश्य, अतरित ।

ओझा, स पु (सं सपाध्याय >) ब्राह्मण जातिभेद २ भूतवापाहर, कुक्षक ।

ओठ, सं स्त्री (स उठम् घास फूस >) व्यवधान, तिरस्करिणी, प्रतिसेरा, जवनिका २ सशय, आश्रय ।

ओटना, कि स (स आवर्तनम् >) यषेण कार्पासबीजानि दृषक् कृ २ पुन पुन वद (भ्वा प से) ।

ओटनी, स स्त्री (हि ओटना) कार्पास बीजपृथक्करणयन्त्र, *बेलनी ।

ओठ, स पु, दे 'ओठ' ।

ओढ, स पु, गर्दभवाहक, जातिभेद ।

ओढा, स पु (?) वरद, बडोल २ दुर्मिष्ट, आहाराभाव ।

ओढ़, स पु (स) दे 'उड़ीसा' २ ओढ़ उत्पल, वासिन् ।

ओढ़ना, कि. स (सं आ+उठ >) परिधा (जु उ अ) प्रा-आ, वृ (स्वा उ से) । स पु, आवरण, प्रावार, बहन, पुत्रम्, २ उत्तरच्छद, प्रच्छद ।

ओढ़नी, सं स्त्री (हि ओढ़ना) नारीणां उत्तर, बहन प्रावारक ।

—वदलना, मु, सखीरव भगिनीरव वा रथा (मे) ।

ओढ़ाना, कि स (हि ओढ़ना) 'ओढ़ना'
के धातुओं के प्रे रूप ।

ओत्, वि (स) सुम्भित, प्रथित ।

—प्रोत्, वि (स) सुम्भित, सुम्भृक्त ससृष्ट,
परस्पर सुप्रथित । स पु, तत्रवाणी (द्वि),
तत्रप्रतिपत्र (द्वि) ।

ओथ, स स्त्री (अ) शपथ, दिव्य समय,
प्रत्यय ।

—कमिशनर, स पु (अ) शपथ दिव्य
आयुक्त ।

ओदन, स पु (स पु न) भक्त अन्न, पक्क
क्रीहि ।

ओदा, वि (स उदन् >) उन्न, उत्त, आर्द्र ।

ओप, स स्त्री (हि ओपना) कान्ति
बुति दीप्ति (स्त्री), सुधमा, सौन्दर्यम् ।

ओफ, अ य (अनु) पीडाशोकाश्वर्षणसूचक
मन्वयन्, आ, हा, अद्द, अहो ।

ओम्, स पु (स अव्य) प्रणव, ओंकार,
इशसज्ञा २ इश्वर ।

ओर, स स्त्री (स अवार >) दिशा दिश
(स्त्री) काष्ठा, आशा २ पक्ष, पार्श्व । स पु,
अत्त, प्रात, तम् २ आरम्भ, आदि ।

इम—, कि वि, इत्, अन्त्या दिशि, अत्र ।

उस—, कि वि, तत्, तत्र, तस्या दिशायाम् ।

चारों—, कि वि सर्वत समताद्, समतत,
अभित, परित ।

ओल, स पु (स) शरण, दे 'जिमीकन्द' ।

ओला, स पु (स उपल) इन्दीपल पयोधन,

करका, धनवफ, वर्षशिला २ शर्करोपल ।
वि, उपलशीतल ।

सिर मुँहाने ही ओले पड़े, मु, प्रथमे प्राप्ते
मक्षिकापात ।

ओवरकोट, स पु (अ) रक्तचुक् ।

ओवरसिधर, स पु (अ) अपिदर्शक ।

ओपधि-धी, सं स्त्री (स) हरितक, श्राव
क, शिष्ट २ अगद, औषध, भेषजम्,
भेषज्यम् ।

—ईसा, स पु (स) चद्र, सोम ।

ओष्ठ, स पु (स) दे 'ओठ' ।

ओष्ठय, वि (स) ओष्ठसम्बन्धिन् २ ओष्ठो
धार्य (प, फ आदि वर्ण) ।

ओस, स स्त्री (स अवदयाय) तुषार,
प्राण्य हिम रात्रि—ख, जलम्, नीहार,
सुहिनम् ।

—पद् जाना, मु, झै-झै सुद् (भ्वा प अ)
२ लज् (लु अ से) ।

ओसार, स पु, विस्तार, प्रसार २ दे
'ओसारा' । वि विस्तृत विस्तीर्ण ।

ओसारा, सं पु, प्रथ (घा) ण, अलिट ।

ओह, अव्य (अनु) (आश्चर्य) अहो, हो ।
(दु र) अद्द, हा आ ।

ओहदा, स पु (अ) पद, पदवी, अधिकार ।

ओहदेदार, स पु (अ + फा) पदाधिकारिन्,
अधिकृत ।

ओहो, अव्य, (अनु) अहो, हो, हहो ।

औ

औ, हि-दीवर्णमालाया एकादश स्वरवर्ण
ओंकार ।

औंधा, वि (स अधोमुख) अवाहमुख, अधो
मुख, विपर्यस्त, विलोम ।

औंधी खोपटो का मु, मूर्ख, जड ।

औंस, स पु (अ) (सपादतोलुग्मात्मक)
तोलविशेष * औंसम् ।

औ, अ य (हि और) च । दे 'और' ।

औकात स स्त्री एक (अ वक्त वा बहु)
शक्ति (स्त्री), सामर्थ्यम् । स पु, काल,
समया ।

औयुन, स पु, दे 'अयुण' ।

औघड, स पु (स अपोर) अधोरमतात्
वायी पुरुष २ असमीक्ष्यकारी मनुष्य
२ अपराधुन । वि, (स अव + हि घटना)
विवेकहीन २ असवद ।

औचक, कि वि, दे 'अचानक' ।

औचिय, स पु (स न) औचितो, उपयुक्तता,
नैय मवत्वम्, सामनरयम् ।

औजार स पु (अ वज्र का बहु) यज्ञाणि,
उपकरणानि, साधनानि (स न बहु) ।

औटाना, कि अ, दे 'उबलना' ।

औटाना, कि स, 'उबलना' के धातुओं के
प्रे रूप ।

औत्सुक्य, स पु (सं न) उत्सुकता, दे० ।
 औदरिक, वि (सं) उदर-जठर, विषयक
 २ अत्याहारिन्, बहुमुज्ज, घस्मर ।
 औदार्य, स पु (सं न) उदारता दे ।
 औद्ध्य, स पु (सं न) उदतता, अशिष्टता,
 ग्रान्यता २ अनार्यता, धृष्टता ।
 औद्योगिक, वि (सं) उद्योग-व्यवसाय,
 सवधिन् ।
 औद्वाहिक, वि (सं) वैवाहिक, उद्वाह
 उपयम परिणय, विषयक ।
 औना-पौना वि (सं लन पादोन) न्यूना
 विक, इषद्वदु । कि वि, न्यूनाधिकतया ।
 औने-पौने करना, मु, हाथा लभेन वा यथा
 कदाचिद विक्रयणम् ।
 औपचारिक, वि (सं) लाक्षणिक, गौण,
 उपचारविषयक ।
 औपनिवेशिक, वि (सं) आधिनिवेशिक
 उपनिवेश-अधिनिवेश-सवधिन् ।
 —स्वराज्य, स पु (सं न) आधिनिवेशिक
 स्वातन्त्र्यम् ।
 औपन्यासिक, वि (सं) उपन्यास कल्पित
 कथा, सवधिन् २ उपन्यासे वर्णनीय ३ अद्भुत,
 विलक्षण । स पु उपन्यास, कार लेखक ।
 औपपत्तिक, वि (सं) तर्क-शुक्ति, साध्य ।
 और, अन्य (सं अवर >) च अपि च, अन्यच्च,
 चिच्च, अपर च । वि, अन्य, अपर, भिन्न
 २ अधिक, भूयस ।

—का और, मु, विपरीत, विरुद्ध, असंगत ।
 औरत, सं स्त्री (अ) नारी, रामा २ पत्नी,
 भार्या ।
 —की जान, स स्त्री, स्त्री-नारी, जाति (स्त्री) ।
 औरस, स पु (सं) धर्मपत्नीज पुत्र ।
 और्य, स पु (सं अव + र्य >) वक्र तिर्यग्,
 गति (स्त्री) २ वक्रत्य तिर्यक्कर्तृनम्
 २ जटिलत्व, सङ्कलितता ३ छल, कपटम् ।
 —दार, वि, कितव, कचक ।
 औराद, स स्त्री (अ) प्रना, सति प्रसूति
 (स्त्री), सतान, तोक, अपत्यम् ।
 औरिया, स पुं (अ 'वली' का बहु) सिद्धा,
 पुण्यजना ।
 औरल, वि (अ) प्रथम, आदिम २ प्रमुख,
 प्रधान ३ सर्वोत्तम । स पु आरभ, उपक्रम ।
 और्य, स पु (सं न) भेषज, भेषज्य, अन्न
 २ हरितक, शाक, ओषधि (स्त्री) ।
 और्यशाल, स पु (सं) भेषजालय,
 और्यशाला ।
 औरसत, सं पु (अ) मध्यमा, मध्यप्रमाणम् ।
 वि मध्यम, सामान्य ।
 औरसान, स पु (पा) चेतना, चैतन्य, सहा,
 बोध ।
 —उता होना, मु, नतिभ्रम, धैर्यनाश,
 सभ्रम ।

क

क, देवनागरीवर्णमालाया प्रथमव्यञ्जनवर्ण,
 ककार ।
 कंक, स पु (सं) अमिषप्रिय, क्रूर, दीर्घ
 पाद, सगभेद ।
 ककड, सं पुं, दे 'ककर' ।
 ककण, स पु (सं पु न) कटक -क, कल्प -
 य, आवापक क, पारिहार्य -यम् ।
 ककणी, णीरा, स स्त्री (म विवणी)
 विविणी किवि (क) णीरा २ क्षुद्रपाटका ।
 ककत, स पु (सं पु न) ककतिका, ककती ।
 ककती, म स्त्री (सं) दे 'ककत' तथा 'कधी' ।
 ककर, स पु (सं ककरम्) उपलसु, शर्करा
 अरमण्टिका, अष्टौला (बहु) ।

ककरीट, स स्त्री (अ ककरीट) लोहलेप ।
 ककरीला, वि (हि ककर) शर्करावृत,
 ककरमय ।
 ककाल, सं पु (सं पुं न) अस्थिपजर,
 ककर ।
 ककान, स पु, दे 'ककण' ।
 ककानी, स स्त्री (सं ककुनी) प्रियणु, पीत
 सटुल, ककु -गु (स्त्री) ।
 ककाला, वि (सं ककाल >) दरिद्र, अस्थिपन,
 निर्धन, दीन ।
 ककाल, वि, दे 'ककाल' ।
 ककाली, स स्त्री (हि ककाल) दरिद्रता,
 निर्धनता, दरिद्रत्वम् ।

कँगूरा, स पु (फा कुँगरा) शिखर, श्रद्धन् ।
 कधा, स पु (स वत्त) कवनम् ।
 कधी, स स्त्री म (म क्वती) क्वतिका,
 वेदामार्त्नी, प्रसाधनी ।
 कचन, स पु (स काचनम्) सुवर्गम्
 २ सपत्ति (स्त्री) ।
 कचनी, स स्त्री (हि कचन) वेद्या, नर्तकी ।
 कचुक, स पु (स) लव, निचोल-प्रानारक
 २ अगिका, क्नुलिका ३ क्वच-चम्
 ४ वल्लम् ५ दे कचली ।
 कचुरी, स पु (स, किन्) अन्त पुरचारी
 वृद्धाक्षण सौविदल सौविद २ द्वारपाल
 ३ सर्प ४ द कंचला स स्त्री अगिका,
 क्नुलिका ।
 कंचेरा, स पु (हि कंच) नाच, कार धमक ।
 कच, स पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ वेश ।
 (स न) कमलम् २ अमृतम् ।
 कजई, वि (हि कजा) धूत्र, धूमल ।
 कजड (र), स पु (दश या कालिन्तर)
 जालविशय ।
 कजन, स पु कामदेव, मदन २ लगभेद ।
 कजा, स पु (स करज) कटकनिवृद्ध
 २ तस्य बीजम् । वि, करजवर्ण धूमल २ धूम
 नयन ।
 कजूम, वि (स कण + हि चूसना) कृपण
 कदय अमुत्तहस्त विपचान ।
 कजूमी, स स्त्री (हि कजूम) क्षार्ण्य,
 कदर्वता, अमुत्तहस्तत्वम् ।
 कटक, स पु (स पु न) शल्यम् २ विघ्न
 ३ विघ्नकर ४ सूच्यग्रम् ५ शत्रु ६ रोमाञ्च
 ७ क्वच-न्वम् ।
 —अदान, स पु (स) उष्ट्र, क्रमेल्क ।
 कटवित्त, वि (स) सप्तक क्वचपूर्णं २ सविघ्न
 ३ रोमाञ्चित ।
 कँटिया, स स्त्री (हि कौटी) बील, शत्रु
 २ प्रह्वी, धरणी ३ भूषणभद्र ।
 कँटीला, वि (हि कौटा) कटवित्त २ सविघ्न ।
 कठ, स पु (स) गल गर, निगरण २ स्वर
 ३ गुप्तादीना कठरेखा ४ दे 'कठा' ।
 —अग्र, वि (स) दे 'कठस्थ' ।
 —रात, वि (स) निर्मनीमुख (प्राण) ।

—माला, सं स्त्री (सं) गण्डमाला, कठरोग
 भेद ।
 कठस्थ, वि (सं) कठाग्र, कठगत, मुखाग्र,
 मुखस्थ ।
 कँठा, स पु (स कठ >) कठी, सुवर्गुटिका
 निमित्त कठालकार २ गुप्तादीना गळरेखा ।
 कठी, स स्त्री (स) कठ, गल २ अघठ
 ररिम (पु) ३ लघुगुटिका-कठी । ४ तुलसी
 बीजमाला ।
 कठ्य, वि (स) कठोचार्यं २ कठजात
 ३ कठोपकारक ।
 कट्टा, स पु (स स्वदन >) द 'उपला' ।
 कट्टी, स स्त्री (हि कट्टा) लघुगोमयम्
 २ मल्लुटिका ।
 कडील, स स्त्री (अ कदील) कर्गलादि
 निमित्तो दीपकोष ।
 कट्ट, कट्ट, स स्त्री (स) कट्टति (स्त्री),
 दे 'सुवली' ।
 कत्त, स पु (सं कात्त) प्रिय, वल्लम्,
 रमण २ पति, धव ३ इक्षर ।
 कथा, स स्त्री (स) मिश्रकर्षट, दे 'गुदधी' ।
 कथी, स पु (स कथा >) मिश्रक, कथा
 धारिन् ।
 कँद, स पु (स पु न) गोलमूल, राघ
 मूलम् २ लघुनम् ३ मेघ ४ शूरण ।
 कद, स पु (फा) मितारठ गटभोद्व ।
 कदर, स पु (स पु न) गहर, शशा, दरी ।
 कदरा, स स्त्री (स) दे 'कदर' ।
 कदप, स पु (स) गदन, कामदेव ।
 कदा, वि (फा) वकीर्णं तष्ट ।
 कदुक, स पु (स) मेदु, मेण्डु २ उपधान,
 गण्डु ३ पुगफलम् ।
 कधा, स पु (स रक्थ) अस, मुत्रमूल,
 दो इक्षर, क सवरम् ।
 कधार, स पु (स गाधार) नगर प्रदेश,
 विशय ।
 कप, स पु (स) दे 'कंपकपी' ।
 कँपकँपी, स स्त्री (हि कौपना) प्र, कप,
 वेपन, वेपथु, एपन, कायकप ।
 कपनी, स स्त्री (अ) समवाय, समयवसायि
 सब २ सैवशुक्ल ३ गण ४ साइचर्यम् ।

कपाउंडर, स पु (अ) *समिग्र, योगविद्, वैद्यसहाय ।

कपाउंडरी, स स्त्री, समिग्रक, व्यवसाय-धर्मन् (न) ।

कंपाना कि स (हि क्पापना) कप्, वेप, बेल रूप, एज के प्र रूप ।

कपायमान, वि (स क्पमान) श्रमान, कपन कप्र रूपमान ।

कपास, स पु (अ) द्विदशकयत्रम् ।

कपिन, वि (स) वपमान, चचल २ भीत, प्रसत ।

कपू, स पु (अ कँप) शिविर, स्का-वावार २ सेना इ दे 'रोमा' ।

कचल, वि (फा कमवरन) भाग्यहीन, दुर्दैव ।

कवल, स पु (स) रलक, आविक उर्णांयु, औरभ, नीरार ।

कबु, स पु (स) दे शय' ।

कस, स पु (स) कृष्णमालु । (स न) वास्य, ताम्राईम् २ पानभाजन, कंशम् ।

—ताल, स पु दे 'शोश' ।

क, स पु (स) अङ्गम् (पु) २ मूय ३ अग्नि ४ विष्णु ५ यम ६ वायु ७ मदन ।

कई, वि (स कति) कतिपय एकाधिक, अनेक बहु, प्रभूत ।

—धार, कि वि बहुधा, पुन पुन, मुहुर्मुहुः, भूयोभूय, बहुवारम् ।

ककड़ी-री, स स्त्री (स कर्कटी) लोमशा स्थूला तोयफला गजदतफला चिर्भटी मूत्रला ।

ककहरा, स पु [क+क—ह+रा (प्रय)] प्राणमिवशानम् २ वर्णमाला ३ पूर्वकार्य समूह ।

ककुद्, स पु (स ककुद् स्त्री) ककुल् द, असकृत् गडु स्थगु २ राजचिह्नम् (छत्रादि) ।

ककुभ, स पु (स) अजुनवृक्ष २ दे 'दिशा' ।

कच्, स पु (स) वाङ्मूलम्, दे काल २ दे 'लौग' ३ कच्छ दे कछार' ४ लृणम् ५ शुष्क-वनम् ६ भूमि (स्त्री) ७ भित्ति (स्त्री) ८ कोष्ठ ९ दोष १० दे 'कछराली' ११ अणी वना १२ दे 'आंचल' ।

कच्चा, स स्त्री (स) परिधि, परिवेश ५ २ ग्रहमार्ग ३ साम्यम् ४ वर्ग, श्रेणी

५ दे 'क्योटी' ६ नाहुमूलम् ७ दे 'कछराली' ८ गृह, भित्ति (स्त्री)-पक्ष ९ दे 'लौग' १० हस्तिरज्जु (स्त्री) ।

कगर, स पु [स क (कञ्जल)+अग्र>] लच्छित्त, तीर तटम् २ सीमा ३ प्राकार शृगम् ।

कगार, स पु (हि कगर) उन्नताग्रम् २ उच्छिन्न, कूल-तीरम् ।

कच, स पु (स) वेगा कुतला, कचा, शिरसिजा, शिरोरुहा (सब बहु) २ समूह ।

कचकच, स स्त्री (अनु) प्रलाप २ वाग्बुद्धम् ।

कचनार, स पु (स काचनाल) कोविदार, पाकारि, स्वल्पवेसर ।

कचपच, स पु (अनु) संवाध, सम २ दे 'कचकच' ।

कचपचिया, कचपची, स स्त्री (हि कचपच) कृत्तिकानक्षत्रम् २ मस्तकलारा भूषणभेद ।

कचर कचर, स स्त्री (अनु) आमफलचर्वण ध्वनि २ दे० 'कचकच' ।

कचरा, स पु (हि कच्चा) अपक खर्वुन-दशागुलम् २ अपकचित्रवह्नी ३ चर्मट' दे 'कूडाकरवट' ।

कचहरी, स स्त्री (हि कचकच) धर्म-न्याय-सभा व्यवहारामडप, न्यायालय, धर्म-अधिकरणम् २ राजसभा ।

कचाई, स स्त्री (हि कच्चा) आमता, अपवता, २ पाठव-दास्य अनुभव हीनता ।

कचायँध, स स्त्री (हि कच्चा+गध) आम-अपक, गध ।

कचात्, स पु (हि कच्चा+आत्) आलुवी, कचु (स्त्री) कक्षी, तीक्ष्णकद, गजकर्ण ।

कचीची, स स्त्री (अनु कच) हनु (पु स्त्री), हनु (स्त्री) ।

कचूर, स पु (हि कुचलना) निष्पिट पदार्थ, चूर्णितवस्तु २ मृदुसार, मज्जा ।

कचूर, स पु (स कचूर) दुर्लभ, गधमूलक, गधसार, जटाल ।

कचीरी, स स्त्री (हि कचरी) मायगर्भा, सुषिष्टिका, कचैरिका ।

कच्चा, वि (स कच्छ) अदक, हरितनीरस (फलदि) २ अशुत, अश्राग, असिद (भोज नादि) ३ अपरिणत, अपूर्णकाल, अप्राप्तकाल,

अपरिपुष्ट (आयु आदि) ४ विकारिन्, अस्थिर
५ निरमार, अप्रामाणिक (बाल इ०) ५ प्रच
लितमानात् न्यून ६ सरकार-मशोधन, -अपे
क्षिन् (बड़ी इ) ७ नियम विधि, -विरुद्ध
(दस्तावेज इ) ८, पक्वनिर्मित (घर आदि)
९ अशुभकर्म (न्यक्ति) १० पुस्तिसित, अतरुण
(अक्षर इ) ।

—चिट्ठा, सं पु सशोधनापेक्षिगणना २ सत्य-
व्यथार्थ, वृत्तान्त ३ गुप्त गोप्य, -वार्ता ४ गद्य
पद्य ५ पापमकरणा ।

—पका, वि, अर्द्ध सामि, -पक्-शून-श्राण ।

—प्रका, स पु, शिक्षक (बहु) २ गर्भ ।

—माल, स पु, सामग्री ।

कच्ची, वि स्त्री (हि कच्चा) 'कच्चा' के शब्दों
के स्त्रीलिंग के रूप, जैसे-अपका, अग्रना इ ।

—टूट, सं स्त्री, अपक्व, इष्टका ।

—उमर, स स्त्री, अवयस्कता, अप्रामव्यवहारता
२ बाल्यम् ३ शैशवम् ।

—रतोर्द्ध, सं स्त्री, जल्पकमप्रम् ।

—सङ्क, सं स्त्री, मृगयो मार्ग ।

—मिराई, सं स्त्री, रथूलस्युति (स्त्री) ।

कच्छ, सं पु (स पु न) अनूप-प, जल
प्रायदेश २ नद्या सरसो वा प्रांतभाग
३ प्रदेशविशेष ।

कच्छप, सं पु (सं) कूर्म, दे 'कच्छुआ'
२ अवतारविशेष ।

कच्छा, स पु (सं कच्छ >) नौकाभेद
२ दे 'कच्छनी' ।

कच्छी, वि (सं कच्छ >) कच्छीय,
कच्छ, -विषयक-सम्बन्धित । सं पु, कच्छ
वासिन् २ कच्छाक्ष ।

कच्छी, सं स्त्री, दे 'कटनी' ।

कच्छ, सं पु, दे 'कच्छुआ' ।

कच्छनी, सं स्त्री (हि नाछना) जानुलति
वटिवहनम् ।

कछरा(का)ही, सं स्त्री (स कच्छ >) कक्षा ।

कछार, सं पु (सं कच्छ) दे 'कच्छ'
(१, २) ।

कछुआ, स पु (सं कच्छप) कर्मठ, कूर्म,
'वृत्तान्त' (पु), पक्वगूढ, स्फुट १ (स्त्री
कमटी, दुनी, कूर्मी हुनी) ।

कछीया, सं पु (हि काछ) लघुशाब्दिका
२ दे 'कछनी' ।

कजरारा, वि (हि कजरा) सांजन, अजन
सुत, सक्जल २ काल, इयाम ।

कजली, स स्त्री (सं कजल >) कालिम्,
नाउम्य, कलक २ पूर्वविशेष ३ कृष्णाक्षी गौ
(स्त्री) ४ वर्षासु गेयो गीतभेद ।

कजा, स स्त्री (ल) मृद्यु, निधनम् ।

कजान, स पु (तु कजाक) दस्यु, लुण्ठक ।

कजाकी, स स्त्री (तु कजाकी) लुठन, अपहरणम् ।

कजावा, पु (का) जटपदाणम् ।

कजिया, स पु (अ) कलह, विग्रह ।

कजी, स स्त्री (का) वक्रता २ दोष ।

कजल, स पु (स न) अजन, नेजरजन,
लोचक २ पाण्डु, सौवीर, दे 'सुरमा'
३ कालिम् ।

कज्जक, सं पु (तु) तुल्यजातिभेद ।
२ दस्यु, लुण्ठक ।

कट, स पु (स) गजगठ २ कपोल ३ देव
रथूल, -नाल, वासभेद ४ देवनालनिर्मित-
कट, कलिज, आस्तरणम् ५ ज्यौरकाशादि
पासा ६ शव ७ शवयान, द्वाण् टी
८ श्मशान ९ अक्षगतिभेद १० वाङ्मूलक
कम् ११ समय, अवसर १२ दे 'ट्टी'
वि बहु, मूयस् २ उत्कट, उग्र ।

कटक, सं पु (सं पु न) शिवि (वि) र,
निवेश, सैन्यनिवास २ सेना २ ककण णम्
४ परंतमध्यभाग ५ पादकटक ६ चक्रम्
७ नगरविशेष ८ समूह ।

कटकट, सं स्त्री (अनु) दंतघर्षणशब्द, कट
कटायितम् २ कलह ।

कटकटाना, कि स (हि कटकट) दतान्
घृष्ट (म्वा प से) ।

कटना, कि अ (सं कर्नल) अवच्छिन्न-कृत्
लक्षण (कर्म) २ व्ययया (अ प अ)
३ क्षम-मृप (कर्म) ४ लज्ज (तु आ से)
ही (जु प अ) ५ उपकृ (कर्म) ६ लुद्धे
इन् (कर्म) ७ इष्य (म्वा प से) ८ मुह
(दि प वे) ९ घृष्ट (कर्म) ।

कटनीस, सं पु (विश) दे 'नीलकठ' (पक्षी) ।
कटनी, स स्त्री (हि कटना) विकल्प
२ शरवकर्तव्यम् ।

कटपीस, सं पु (अ) भृत्पट ।
 कटरा, सं पु (हि कट्हा) चतुष्कोण
 लघुबद्ध २ महिन्या वत्स ।
 कटवाना, कि प्रे, 'काटना' के भातुओं के प्रे
 रूप ।
 कटमरैया, स स्त्री (स कटसारिका) सैरय,
 सैरयक, श्वेतपुष्प । (पीली) कुरटक,
 पौतपुष्पक । (नीली) नीलपुष्पी, आर्त्त
 गल । (लाल) कुरबक ।
 कटहरा, स पु (हि काठ + पर) काष्ठ
 गृहम् । २ बृहत्पत्रम् ।
 कटहल, स पु [स कटक (कि) फल] (वृक्ष)
 पनस फणस, चपातु । २ (फल) पनस,
 पणस ३ ।
 कटाई, स स्त्री (हि काटना) कर्नन, छेदन,
 लवनम् २ शस्य, लवन समूह ३ लवन
 छेदन, भृति (स्त्री) ।
 कटारुट, स स्त्री (हि अनु) कलह २ कट
 कटापितम् ।
 कटारुटी, स स्त्री (हि काटना) इत्या,
 वध युद्धम् २ वैरम् ३ कटकशब्द ।
 कटाच्छ, स पु (सं) नयनविलास, हावपूर्णा
 दृष्टि (स्त्री) २ आक्षेप, दोषप्रकाशनम् ।
 कटार-री, सं स्त्री (स कटार) अति-
 पुत्रिका, कृपाणिना ।
 कटारा, स पु (स कटार) अति, कृपाण
 २ दे ऊँटकनारा ।
 कटाव, सं पु (हि काटना) कर्नन छेदनम्
 २ नदीतट ३ कवित्वा निर्मित पुष्पपत्रम् ।
 कटि, स स्त्री (स) कटो ।
 —वध, स पु (स) भूकन्य, भूमे पचभागेषु
 शन्यतम २ दे कभरवर' ।
 —वद्ध वि (स) सज्ज, सन्नद्ध उपन, वृद्ध
 परिवर, मित्र ।
 कटियाना, कि अ (हि कटि) कटकित
 पुनक्ति रोमाञ्चि (वि) + भृ ।
 कटीला, वि (हि काटना) निश्चित, तीक्ष्णाम्
 २ मोहक, प्रभावशालिन् ।
 कटु, वि (स) कटुक २ तिक्त, तीक्ष्ण
 ३ अप्रिय, अनिष्ट ।
 कटुता, स स्त्री (स) कटुत्व, कटुवता, काट
 वम् २ तिक्तता ३ अप्रियत्वम् ।

कटोरा, स पु (सं स्त्री) कटोरम् ।
 कटोरी, स स्त्री (हि कटोरा) कटोरिका,
 वधोल ।
 कटौती, सं स्त्री (हि कटना) उदार,
 उद्धृतभाग ।
 कटर, वि (हि काटना) धर्मान्ध, मताभ,
 अभविश्वासिन् ।
 कट्टा, वि (हि काठ) वज्रदेह, वृदाग, मांसल,
 बौर्यवत् । स पु, हनु ।
 कटपरा, सं पु (स काष्ठगृहम्) काष्ठवेष्टन,
 काष्ठसलाकावृत्ति (स्त्री) शकुनल्य २ बृह
 त्काष्ठपत्रम् ।
 कटपुनली, स स्त्री (स काष्ठपुच्छिका) पुत्रिका,
 पुच्छली, पाचारिका ३ मृदुनी बाला ।
 कटफोडवा, सं पु (हि काठ + फोडना)
 काष्ठमूट, दावापाट, शतच्छद, शतपत्रक ।
 कटनाप, स पु (हि काठ + नाप) मातु
 द्वितीय पति ।
 कटला, स पु (स कठ >) कठभूषा ।
 कटिका, स स्त्री (स) दे 'खडिया' ।
 कटिन, वि (स) दुष्कर, दुस्साध्य, कष्टसाध्य,
 गहन २ घन, कौरस, कम्बल २ दुर्बोध,
 दुर्बोध, दुस्वगम ।
 कटिनता, स स्त्री (स) दुष्करता, दुस्साध्यता
 २ घनता, कौकसता ३ दुर्बोधता, दुर्बोधत्वम् ।
 कटिनाई, स स्त्री (स कटिन >) दे
 'कटिनता' ।
 कटोर, वि (सं) निर्दय, क्रूर, नृशस, निर्घृण,
 परुष २ घन, कौकस ३ कर्कर, कम्बल ।
 कटोरता, स स्त्री, (स) निर्दयता, क्रूरता,
 पारुष्य, निर्घृणता, नृशसत्वम् २ घनता,
 कौकसता ।
 कटौता, स पु (स काष्ठवत् >) बृहत्काष्ठ
 भाजन, बृहदारुपात्रम् ।
 कटौती, स स्त्री (हि कटौता) लघुकाष्ठ
 भाजन, दारुभाजनवम् ।
 कटुन, स स्त्री (अनु) महा, -शब्द -रव -
 निनाद २ मेघगर्जनम्, घनध्वनि, गजितम्
 ३ वज्र, -निर्घोष निर्घान्त्वन ४ विराव,
 ध्वनि ५ उद्रेगजनको निनाद' ।
 कटुवद्ध, स पु (अनु) कटुकशब्द, कटु-
 कटापित २ भग स्पृष्टन, -शब्द ।

कडकडाना, क्रि अ (हि कडकड) सदाश्च
भन् मिद्र-इ (कर्म), स्फुट् (तु प से)
२ ल्छै ध्वन् (म्वा प से) ३ डुर् (प्र),
चूर् (तु) ।

कडकडाहट, स स्त्री (हि कडकड) कड
कडान्कार, गति, दे 'कडक' ।

कडकना, क्रि अ (हि कडक) कडकडशब्द
कृ गञ् (म्वा प से) २ महारवेण भन्
(कर्म) ३ स्फुट (तु प से) ४ ल्छै वद
(म्वा प से) ।

कडका, स पु (हि कडक) त्रिजय-युद्ध,
गीतन् २ सौश्रमिनी ३ गतिनन् ।

कडखा, स पु (हि कडक) युद्धगीतन् ।

कडखेत, स पु (हि कडखा) युद्धगीत
गायक, चारण, वैतालिक ।

कडबडा, वि, (स कडुर) दे 'चित्तकवरा' ।
स पु, कडुरूचं ।

कडवा, वि, दे 'कडु' ।

कडा, वि (स कडह >) धन, सान्द्र, कजखट,
कीकस, दृढ, कर्कर, अनन्य २ निष्ठुर, निर्दय
३ दुर्वोध, दुर्ज्ञेय, कठिन ।

कडा, स पु (सं कडक) कटक, ककण-प,
२ केयूर-र, भगद-दन् ।

कडाई, स स्त्री (हि कडा) दृढता, कौक
सता २ निर्दयता ३ द्विष्टता ।

कडाका, स पु (अनु कडाक) भग-भजन-
भेदन-त्रोटन, शब्द-नाद २ अनदान, बना
हार ।

कडाके वा, सु, भीषण, घोर, तीव्र, चट ।

कडाहा, स पु (स कडाह) तैलादिपाक-
पात्रम् ।

कडाही, स स्त्री (हि कडाह) कगाही ।

कडी, स स्त्री (हि कडा) शृङ्खला, मधि-
मधि २ गीतनरणम् ३ दीर्घ-शृणा-काड-
दार (न) । वि स्त्री, कठिना, कीकसा ।

कडवा, वि, दे 'कडु' ।

—तैल, स पु, सर्पतैलम् ।

कडाई, स स्त्री (हि, कडना) सूचीदिलम्
२ सूचीदिलस्य भृति (स्त्री) ३ दे
'कडाही' ।

कडी, सं स्त्री (हि कडना) धृतिता, चणक
चूर्णनिमित्तव्यजनभेद ।

कण, स पु (सं) ख, लडा, अणु ।

कणाद, स पु (सं) वैशेषिकदर्शनकार ऋषि ।

कतरन, स स्त्री (हि कतरना) शक्यानि,
शृच्छदानि (दोनों बहु) ।

कतरना, क्रि स (स कर्तनम्) कर्त्रिकया
वृद्ध (तु प से) ।

कतरनी, स स्त्री (हि कतरना) कर्तनी,
कत्रिका, कर्त्रिका, कर्त्री ।

कतरव्योत, स स्त्री (हि कतरना + व्योत)
अवच्छेद, अस्वीकरणम् २ परिवन, दिग्नि
मय ३ चिन्ता, विमर्श ४ अपहरण, मौप
५ युक्ति (स्त्री), उपाय ।

कतरी, स पु (हि कतरना) रूढ, अश,
शकल ।

कतरी, स पु (अ) कण, विदुः, ख, द्रुप्त ।

कतराई, स स्त्री (हि कतरना) कर्तन,
श्रुत्या-श्रुति (स्त्री) २ कर्तन, कार्य-कर्तन
(न) ।

कतराना, क्रि प्रे, 'कतरना' के धातुओं के प्रे
रूप २ निवृत्त-सलज्ज-समय अपया (अ प
अ), नैपुण्येन परिदृ (म्वा उ अ) ।

कतल, स पु (अ कतल) इत्या, धप ।

कतला, स पु (अ कतल >) शृङ्खल, दे
'फाँक' ।

कतलाम, सं पु (अ कतले आन) व्यापक,
नरलहार-लोकहया ।

कतपार, सं पु, दे 'शृङ्खला' ।

कताई, स स्त्री (हि कानना) कर्तनम्
२ कर्तनश्रुति (स्त्री) ।

कताना, क्रि प्रे, 'कानना' के धातुओं के प्रे
रूप ।

कतार, स स्त्री (अ) पक्ति-शैलि (स्त्री)
२ निवर, समूह ।

कतिपय, वि (स) दे 'कुछ' ।

कतीरा, स पु (देव) युद्धशनिर्वास ।

कतौनी, स स्त्री (हि कानना) तान्त्व,
सूत्रतननम् २ तान्त्व-सूत्रतनन, श्रुति
(स्त्री)-श्रुत्या । ३ कालक्षप, विलम्बनम्,
दीर्घीकरणम् ।

कत्तल, स पु (हि कतरना) शक्यारूढ,
पापाशुद्ध ।

कथक, स पु (स कथक) संगीतव्यवसायिनी
जाति (स्त्री) ।
कथा, स पु (स कथ >) खदिर, खदिर
सार रग, रगद ।
कथक, स पु (स) कथावाचक कथोप
जीवि ।
कथन, स पु (स न) वचन, उक्ति (स्त्री),
निवेदन, निर्देश, उपन्यास ।
कथनीय, वि (स) वचनीय वर्णनीय, वचव्य
उच्चार्य, रूपनीय ।
कथा, स स्त्री (स) उप आख्यायन, आख्या
यिका आर्यानकम् २ वृत्तात्, उदत्त
३ धर्मोपदेश ।
—घाता, स स्त्री (स) धर्मोपदेश, व्याख्यान ।
—वस्तु, स स्त्री (स न) कथासार, आख्या
नरय रूपरेखा ।
कथानक, स पु (स न) कथा २ उपारया
नम्, लघुकथा ।
कथित, वि (स) उक्त भाषित भणित
उदीरत ।
कथोपकथन, स पु (स न) समापण, सवाद,
सलाप, वार्तालाप ।
कैद्व, स पु (स) शृङ्गवहम्, विपन्न, व्रण
हारक, नीप, मदिरागध २ समूह ।
कद, स पु (अ) आकार, प्राज्ञता, देहोचना ।
कदन, स पु (स न) वध, इत्या २ छुरिका ।
कदन्न, स पु (स न) तुच्छाशम् ।
कदम, स पु (अ) पाद पद, चरण ण,
क्रमण, अग्नि (पु) २ अल्पातर पदम् ।
कदर, स स्त्री (अ) आदर, समान २ मात्रा,
परिमाणम् ।
—दान, वि (अ + पा) गुणमाहक ।
कदर्य, वि (स) वृषण मितपत्र ।
कदली, स स्त्री (स) दे 'केला' ।
कदा, अय (स) करिम् काले ।
कदाचित्, अय (स) ख्यात्, समवेत्
२ कदापि ।
कदापि, अय (स) कदाचित् २ एकदा,
पुरा, प्राक् ।
कदद, स पु (फा वद) शत्रु, अन्तु
(पु स्त्री), शत्रुका तुम्, तुषी, तुषिका,
पिड म्हा, पन्ना ।

—वदा, सं पु, लातुवप ।
—दाना, स पु, उदरहृमिभेद ।
कन, स पु (स कण) अणु, क्षुद्रास,
कणिका, कणी, लेश २ अन्नकणिका ३ जुष्ट,
उच्छिष्टम् ५ मिश्राजम् ५ अन्नयणखण्ड ।
कनक, स पु (स न) स्वण, सुवर्ण वाचन,
हाटकम् २ दे 'धनूरा' ३ दे टेम् ।
कनक, स स्त्री (म कणिक >) गोधूम,
प्रनट सुमन, म्लेच्छभोज्य २ गोधूमचूर्णम् ।
कनकटा, वि (स कर्ण + हि कटना) छिन्न
कर्ण २ कर्णच्छेदक ।
कनकना, वि (स कणकण >) भिदुर,
भगुर २ क्रोधन कोपन ।
कनकीवा, स पु, दे 'पतग' ।
कनसज्जरा, स पु (स कर्णसर्ज >) कर्णकीटी,
शनपदी, कर्णजडना चित्राणी ।
कनरपी, स्त्री (हि कोना + औट) कृष्ण
अपागदर्शन, साचिवीक्षणम् २ नैत्रसवेन ।
कनछदन, स पु (स कर्णच्छेदनम्) कर्णविध
सस्नार ।
कनटोप, स पु (स कर्ण + हि टोपी) कर्ण
शिरस्त्रम् ।
कनपटी, स स्त्री (स कर्णपटु >) गड, गड,
खल-ली ।
कनपेड़ा, स पु (स कर्ण + हि पेडा)
पाषाणगर्दम् ।
कनफटा, स पु (स कर्ण + हि फटना)
गौरक्षनाधानुयायी संशु २ विद्वकर्ण ।
कनफुँका, वि (स कर्ण + हि फूजना)
दीक्षादायक २ दीभित । स पु, आचार्य
२ शिष्य ।
कनमनाना, कि अ (अनु) निद्राशामणानि
क्षिप (तु प अ)-प्राप्त (दि प से)
२ शने विरोध प्रकटयति (ना धा) ।
कनरनिया, स पु (स कर्णरसिब) संगीत-
अनुरागिन्-हृद्युपु ।
कनवींसा, स पु, दीहिप्रपुत्र, पुनीषोत्र ।
कनजोकेशन, स स्त्री (अ) दीक्षातमहोरसव,
उपशिक्षितरणोत्सव २ समा ।
कनस्तर, स पु (अ कैनिस्तर) धानुमय
समुद्रक ।

कनाई, सं स्त्री (हि वना) वनसूक्ष्म,
शास्त्रा विद्यम् ।
कनागत, सं पु (सं क्यागत >) पितृपक्ष,
आश्विनमासस्य वृष्णपक्ष २ श्राद्धम् ।
कनात, स स्त्री (तु) पद्मद्वयभित्ति (स्त्री) ।
कनियारी, स स्त्री (स कणिकार) परिव्याध,
हुमोपल २ कणिकारपुष्पम् ।
कनिष्ठ, वि (म) अल्पिष्ठ, लपिष्ठ, यविष्ठ
२ निवृष्ट, तुच्छ, क्षुद्र ।
कनिष्ठा, स स्त्री (स) कानष्ठिका, कनीनी,
दुर्बलागुलि (स्त्री) २ यविष्ठा पत्नी ।
कनी, स स्त्री (सं कनी) हीरकद्रुवादीना
सूक्ष्मखट्ट रत्न २ विदु, द्रव्यम् ।
कनीनिना, सं स्त्री (सं) तारा, तारका
२ कनिष्ठा ।
कनेटी, स स्त्री (हि कान + टेंटना) कर्ण,-
कर्ण मोहनम् ।
कनेर, स पु (सं कगेर) करवीर, अथ
मारक, वीर, कुद, प्रचल ।
कनौज, स पु (स कायकुब्जम्) कन्याकुब्ज,
गाधिपुर, कौदम् ।
कनौदा, वि (हि वाना) काण, प्रकाश
२ हीनाग ३ अपमानित ४ क्षुद्र ५ उपहत ।
कन्ना, सं पु (स कर्ण >) उड्डीनक्रीडनकस्य
वेषकसूत्रम् २ अग्र, कोटि (स्त्री) ।
कन्नी, स स्त्री (हि कन्ना) उड्डीनक्रीडनक
पार्श्वे (हि व) २ अग्र, कोटि (स्त्री)
३ शाटिकादीनामचल ।
—काटना, मु, दर्शन परिहृ (म्वा य अ) ।
कन्या, स स्त्री (सं) कन्यका, कुमारी, बाला,
बालिका, दारका २ दुहितृ, पुत्री, सुता,
उत्तमा, उत्तुगा, आत्मजा ३ राशि विशेष ।
—रासी, वि (सं -राशि >) कन्याराशिज
२ निर्बल ३ दुष्ट ।
कन्याट, वि (स) कन्या, -वापक-पीडक-
सन्तापक ।
कन्सरवेटिव, वि (अ) प्राचीनतासम्भक,
नवीनता विरोधिन् ।
कन्हाई, कन्हाया, सं पु (स कृष्ण) श्रीकृष्ण
२ मुदरबालक ३ प्रियपुत्र ।
कर्प, सं पु (स) वरुण २ दैत्यजातिप्रकार ।

कर्प, सं पु (अ) चक्रक-क, शराव २ पुर
स्कारचक्रक-रम् ।
कपट, सं पु (स न) छल, कैतव, वचना,
प्रतारणा, छद्मन् (न), दम, पापह, व्यान,
शाष्टम् ।
कपटी, वि (स-टिन्) छलिन्, पापविन्,
शठ, कितव, दमिन्, प्रतारक, वचक ।
कपटछ्दन, सं पु (हि कपटा + छानना)
पटपवनम् २ वसनपूतम् ।
कपट्टा, सं पु (स कर्पट) वसन, वल,
अवर, अक्षुक, पट, वासस् (न) २ परिधान,
वेश, -ष, नेपथ्यम् ।
—पहिना, कि स, वखाणि परिधा (जु व
अ) -धृ (चु)-वम (अ आ से) ।
—ऊनी, लोमन-ऊर्णामय, -वस्त्रम् ।
—पुराना, कर्पट, चीर, जीर्णवस्त्रम् ।
—महीन यदिया, दुकूलम् ।
—रेशमी, कौशुय, बोगावर, क्षीम, कौशम् ।
—सूती, तुलावर, पाल, कार्पास, बादरम् ।
कपर्द, सं पु (सं) शिवचटाजूट २ वराहक ।
कपर्दिना, स स्त्री (स) दे 'कौडी' ।
कपाट, सं पु (स पु न) दे 'किवाड' ।
कपाल, सं पु (सं पु न) दे 'लोपडी' ।
—क्रिया, स स्त्री (स) ज्वलच्छवस्य वेगुना
कपालभेदनम् ।
कपाली, स पु (सं. कपालिन्) भैरव,
उमापति ।
कपास, स स्त्री (सं कार्पास) तूल ल, धर,
पिन्नु, पिचुल । (पौदा) कर्पासवृक्ष,
कार्पासी, सूत्रपुष्पा, बदरी-रा पदक, छादन ।
कपि, सं पु (स) वानर, मर्कट २ गज
३ मूर्ध ।
—ध्वज, सं पु (सं) अजुन ।
कपिल, स पु (स) मुनिविशेष २ अग्नि ।
वि, कपिश, पिंगल ३ श्वेत ।
कपिला, सं स्त्री (सं.) शुद्धा विनेया, -गौ (स्त्री)
कपिश, वि (स) पाण्डुवर्ण, पिश्रव, पिंगल,
कपिल ।
कपीश, सं पु (स) सुप्राव (२) इनुमत् ।
कपून, स पु (स कुपुत्र) कुतनय, वसुन् ।
कपूर, स पु (स कर्पूर-रम्) धनसार,
सिताग, हिमबालुका, चद्र, सोम, सिताग्र ।

कपूरी, वि (सं कर्पूर) घनसार-कर्पूर, वर्ण-
रग ।

कपोत, सं पु (सं) दे 'कवूतर' ।

कपोल, स पु (सं) दे 'गाल' ।

—कल्पना, स स्त्री (सं) मिथ्या कथा,
कल्पित वृत्तान्त ।

कप्तान, सं पु (अ वैष्टेन) दलनायक, अग्रग
२ सैन्याधिपति, सेनानी ३ नौकाधिपति,
पोताध्यक्ष ।

कफ, सं पु (स) श्लेष्मन् (पु), सटक,
बलास २ सि (सि) घाण, सिहाण-न ।
३ हृदयकटादिस्थो धातुमेद (वैषक) ।

कफ, सं पु (फा) फेन, डिंडीर २ लाला,
सुरसाव, द्राविका ।

कफ, स स्त्री (अ) कर-हस्त, तल तलम् ।

कफ, स पु (अ) पिप्पलात्र, अश भाग ।

कफन, स पु (अ) शववसन, मृतकच्छ,
प्रेतपरिधानम् २ शव, -माजन-पेटक ।

कफनी, स स्त्री (अ कफन >) शवघ्रीवा
बन्ध २ साधूना घ्रीवावसनम् ।

कवच, स पु (सं) धमुण्ड शरीर, रुण्ड -क,
छिन्नमस्तको देह २ राहु ३ मेघ
४ राक्षसविशेष ।

कव, क्रि, वि (सं वदा) करिम्न काल ।

—तक, कि वि, कियत्, -काल-चिर, वदा
पर्यन्तम् ।

—से, कि वि कदारम्य, वदाप्रभृति ।

कवाड्डी, स स्त्री (देश) बालक्रीडाभेद ।

कवर, स स्त्री (अ कव) प्रेतावट, शवगतं,
समाधि ।

कवर (रि) स्तान, स पु (फा कविस्तान)
प्रेतभूमि (स्त्री), समाधिक्षेत्रम् ।

कवरा, वि (स कर्पुर) चित्र, कल्पाय, शार ।

कवाड़, स पु (स कर्पट >) अवरकर, तुच्छ
वस्तुमग्न २ व्यर्थकार्यम् ।

कवाडिया, कवाडी, स पु (हि कवाट)
अदस्वरविक्रयिन्, व्यर्थवस्तुवणिग् (पु) ।

कवाय, स पु (अ) मृष्टमास, शूलिक, दूत्य
मासम् ।

कवाधी, वि (अ कवाड >) मासभक्षक
२ मासविक्रेतु ।

कवाहत, स स्त्री (अ) अशुभ, कष्ट, विम,
अनिष्टम् ।

कवित-त्त, सं पु (सं कविता >) हिन्दी
काव्यस्य छन्दोभेद २ काव्य, कविता ।

कवीला, सं पु (अ) पत्नी २ परिवार'
३ वश, गोत्रम् ।

कवूतर, स पु (फा) कपोत, बलरव,
पारावत, छेव, रत्नलोचन ।

—खाना, स पु, कपोतविलम् २ (छत्री)
कपोतपालिका, विटक ।

कब्ज, स स्त्री (अ) मलावरोध, विड्मद्,
बद्धकोष्ठ ।

—कुशा, वि, वि-, रचक, सारक । सं पु,
रचक, सारकम् ।

कब्जा, स पु (अ) स्वामित्व, अधिकार
२ गुष्टि (स्त्री), वारग ३ द्वारसधि ।

कभी, क्रि वि (हि कव + ई) कदाचिद्,
कदापि, करिमाश्चिद् काले, कश्चिच्चिद् २ पुरा,
प्राक, प्वदा ।

—वा, कि वि, चिरात्, चिरम् ।

—न कभी, क्रि वि, कदाचित्तु, अथ शो वा ।

कमडल, स पु (स कमडल) बरक,
करक -क, कुटी ।

कमद, स स्त्री (फा) गुण-रञ्जु, पाश -
वधनम् २ गुण-रञ्जु, -अधिरोगिणी-निश्रयणी ।

कम, वि (फा) अल्प, दहर, दभ्र, स्तोक,
लघु, हस्त २ ऊन, न्यून, अल्पतर, अल्पीयस्,
लघीयस, क्षोदीयस् । क्रि वि अल्प, स्तोक,
ईषद्, किञ्चित्, मनाक् ।

—उन्न, वि, अल्पवयरक, बाल ।

—कौमत्, वि अल्पमूल्य, सुखकेय ।

—मर्च, वि, अल्प-मित, व्ययिन् २ वृषण ।

—जोर, वि, अल्प, बल-शक्ति, दुर्बल ।

—वर्त्त, वि, हत-मन्द, -भाग्य, दुर्बल ।

—खर्च वाला नशीन, मु, अल्पव्ययेन गौरव
लाभ ।

—सुनना, मु, उर्चं छ (भ्वा ष अ) ।

कमची, स स्त्री (तु) कचिका, वेणुशाखा,
कुचिका २ नम्यतनुयष्टि (स्त्री) ।

कमठ, सं पु (स) कूर्म, कच्छप ।

कमनीय, वि (सं) सुन्दर, मनोहर, रम्य ।

कमनैत, सं पु (फा कमान >) धनुर्धारिन् ।

कर्मनेती, स स्त्री (हिं कर्मनेत) धनुर्विद्या ।
 कर्मर, स स्त्री (का) कटो-टि (स्त्री),
 काचीपद, मध्य मध्य, मध्या, बलम -न ।
 —कस, स पु पलाशनिर्पास ।
 —वद्, स पु मेरुला राना ।
 —कमना वा वीघना, सु परिवर बध्
 (क प अ) ।
 —दूटना, सु, इतोत्साह (वि) भू ।
 —मीधी करना, सु विश्राम् (दि प से)
 तविरा (तु र अ) ।
 कर्मरग, स पु (स कर्मरग) (धृष्ट)
 कर्मर कर्मर, मुदगर । (पल) कर्म
 रग इ ।
 कर्मरा, स पु (लै बैनेरा) प्र, कोष्ठ शाला,
 कक्षा २ छायाचित्रारोपकयम आलोककल्प
 यम् ।
 अदर वा—, गर्भांगार, अत कोष्ठ ।
 ऊपर वा—, शिरोरु, चन्द्रशाला ।
 कर्मरी-स्त्री, स स्त्री (स कवल >) लघु,
 कवल रडक -आविक, पबलकम् ।
 कर्मशाल, वि (अ) वाणिज, वाणिज्य सम्ब
 धिन् विपयक, वाणिजिक ।
 कर्मल, स पु (स न) अम्न अनुज अमोज,
 अरवि, कच, बल नलिन, एकज, पकेरुह,
 पद्म शत सद्म पत्रम्, सरसिज सरोच
 सरोरुह, मारसम् ।
 —वा पौटा, स पु मृणालिनी, पद्मिनी,
 कमलिनी नलिनी ।
 —गद्दा, स पु कमलाप पद्मशीरम् ।
 —दड, स पु, कमलनाल ।
 —नयन, वि पद्माप कजल्प (-स्त्री स्त्री) ।
 स पु विष्णु २ राम ३ कृष्ण ।
 —नाभ, स पु विष्णु ।
 —नाल, स पु, दे कमलदड ।
 —नेनी, वि स्त्री कर्मशास्त्री कजतयनी ।
 —योगि, स पु ब्रह्मन् (पु) ।
 कमला, स स्त्री (स) पद्मा, लक्ष्मी स्त्री
 (स्त्री) इन्दिरा मा रमा, हरिप्रिया
 २ धनम् ३ नारग ४ वरनारो ।
 —पति, स पु, विष्णु ।
 कमलामन, स पु (स न) पद्मासनम्
 २ (स पु) ब्रह्मन् (पु) ।

कमलाकर, स पु (स) तलाव, २ 'सरोवर' ।
 कमलाशर, वि (स) पद्म जलज, आकार
 सद्रशरूप ।
 कमलाक्ष, वि (स) पद्म, नयन नेत्र ।
 कमलिनी, स स्त्री (स) पद्माकर, पद्मिनी,
 सकमलो जलाशय २ लघुकमलम् ।
 कमाई, स स्त्री (हिं कमाना) उपजीविका,
 वृत्ति (स्त्री) २ उपाजत आगत्यनम् ।
 कमाऊ, वि (हिं कमाना) उप-, अर्नक,
 धनसंग्राहक २ उद्योगिन्, उद्यमिन् ।
 कमान, स स्त्री (पा) धनुम (न) शरा
 सनम्, चाप ।
 कमानिया, स पु (का कमान >) धविन्
 (पु) धातुक धनुर्धर ।
 कमाना, कि स (हिं काम) उप-, अर्ज
 (तु, भ्वा प से) परिश्रमेण प्राप (स्वा
 उ अ) २ (चमडा इ) उपयोगाई विधा
 (जु ट अ) ।
 कमानी, स स्त्री (पा कमान) रिषिनि-
 स्थापकत्वविशिष्टो यज्ञायव ।
 कमाल, स पु (अ) नैपुण्य, दक्षत २ विल
 क्षणकृत्यम् । मि श्रेष्ठ ।
 कमिदानर, स पु (अ) आहुत ।
 कमिदानरी, स स्त्री (अ कमिदानर >)
 महलग ।
 कमी, स स्त्री (का कम >) ऊनता, यूनता,
 अल्पता, अपूर्णता अपर्याप्तता ।
 कमीज, स स्त्री (अ कमीज) चैल, चोल्न,
 उरोवस्त्रम् ।
 कमीना, वि (पा -न) अधम भवम धुद्र
 तुच्छ २ दुधुलीन हीन, -वर्ण-जाति ।
 कमीशन, स पु (अ) परार्थ विज्ञय २ आयोग
 २ उपधुनभाग ।
 कम्पुनिष्ट, स पु (अ) साम्यवाद समष्टिवाद ।
 कम्पुनिष्ट, स पु (अ) साम्यवादिन्,
 समष्टिवादिन् ।
 कयाम, स पु (अ) निवेश अरविनि (स्त्री),
 विश्राम २ निवेशरवातम् ।
 कयामत, स स्त्री (अ) प्रलय २ विपत्ति (स्त्री) ।
 करज, स पु (स) पडग्रह, रोचन ।
 करड, स पु (म) मधुकोष २ रात्र ३ का
 उव (पक्षी) ।

कर, स पु (सं) हस्त, शय, पचमाष्ट, पाणि २ शुद्ध-ह्य, शुद्धा ३ विरण, अशु ४ रात्रि, शुद्ध -क ।

करक, स स्त्री (हि कक्) धोवा वेदना ० मूत्रवृच्छम् ३ क्षताक, क्षतचिह्नम् ।

करकट, म पु (हि खर+सं कट >) अक् स्वर, अवरर, अपस्वर, मल, उच्छिष्टम् ।

करकरा, म पु (स करीड्) सारमभेद । २ दे 'पुरदरा' ।

करका, स पु (सं स्त्री) दे 'ओला' ।

करघा, सं पु, दे 'कपा' ।

करछा, स पु (सं करच्छक >) 'करछी' के वाचक शब्दों के पूर्व 'वृद्धत्' लगाएँ ।

करछी, स स्त्री (हि करछा) कवी-वि (स्त्री), खजि (जा) का, खगणिका, दबी, दबिना, छट्टं दूँ (स्त्री), पाण्डित्य, दारुहस्तक ।

करज, स पु (स) १ नख २ अगुनी ३ करन ।

करट, म पु (स) वाक्, वायम ० गनगण्ड ३ नागिनक ४ निन्द्यजीवनम् ।

करटक, स पु (स) वायस, वाक् २ चौथे विज्ञानप्रदर्शक आचार्यविशेष ।

करगी, स पु (स-टिन्) द्विप, गज, इस्तिन् (पु) ।

करण, स पु (स न) यत्र, उपस्वर, साधनम् ० कारकभेद (व्या) ३ अक्ष, श्लक्ष ४ इन्द्रियम् ५ देह ६ क्रिया, कार्यम् ७ स्थानम् ।

करणीय, वि (स) कर्तव्य, अनुष्ठेय, निष्पाद्य, विषय, मपादनीय ।

करतव, स पु (स कर्तव्यम्) कर्मन् (न), वाय कृद्यन् २ कला, कौशल, शिल्पम् ।

करतनी, वि, (हि करतव) कुशल, दय, सुस्तिम् ० कर्मट ३ षट्त्रयात्मिक ।

करतल, म पु (स पु न) दे 'हथली' ।

करताल, म पु (स न) वाद्यभेद, करतानी ० करतलपानि (पु) ३ दे 'शोश' ।

करती, म स्त्री (म कृति >) मूत्रपूर्णवृत्तिम वम, मूत्रार्क ।

करतून, स स्त्री (स कर्तव्यम्) कूरय, कर्मन् (न) ० गुण, कला ३ कुकर्मन् ।

करद, वि (स) कर-बलि-रात्रि-शुक्ल-द-भद्र-दायक-दानु २ अधान, परवश ३ शरणदायक ।

करधनी, स स्त्री (म वटिधानी >) नैखला, रशना, काशी, सारसनम् ।

करनपृष्ठ, स पु (स वर्णपुत्रम् >) कल्पा, तापपन, उत्तम, वर्णावस ।

करना, स पु (म वर्ण) कुरशंन, श्वेतपुको वृक्षभेद ।

करना, स पु (स कम्प) बुद्धनवीरभेद, परव वीर । (पण) परव वीरम् ।

करना, वि स (स करणम्) वृ (स उ अ), निपाद-निर्वृत्-निर्वृत्-साध् (प्र), विधा (नु उ अ), अनुष्ठा-प्रणी (म्वा प अ), आचर (म्वा प से) ।

स पु तथा भाव, करण, निपादन, मपादन निर्वर्तन, साधन, विधान, अनुष्ठान, आचरणम् ।

—योग्य, वि नि पाय, विषय, सपाय, कार्य कर्तव्य, आचरणीय ।

—बाला, स पु कर्तुं कारक, विधान, मपादक, निपादक अनुष्ठातृ ।

किया हुआ, वि, कृत, अनुष्ठित, निष्पादित विहित ।

करनागकी, म पु (हि करनाग्व) वर्णा टप्राप्तवास्तव्य २ षट्त्रयात्मिक ।

करनी, सं स्त्री (हि करना) वृत्ति (स्त्री) कर्मन् (न), वाय, कृत्यम् २ अन्वेषिक्रिया ।

करनेल, स पु (= कालोनल) व्यूहटल, पति अन्वय ।

करम, म पु (स) मणिवधानु वनिष्ठापर्यन्त करस्य बहिर्भाग २ गनशावक ३ लट्टशावक ४ वगी-टि (स्त्री) ।

करभोग, स पु (स) गजगुण्डोर्ग । वि, वामाण (पु) वामाण (स्त्री) ।

करम, स पु (म कर्मन्) वाय, शेष २ भाग्य, देवम् ।

करमवह्ना, स पु (अ करम+हि कला) दे 'दद गोमी' ।

करमाली, म पु (स-लिन) सूर्य मातृ ।

करवट, म स्त्री (स करवर्त) पार्थ पादक, भाग, पद्य ० वामपार्थवो दक्षिणपार्थवो वा शयनम् ।

करवट, स पु (स करपत्रम्) ककच, पत्र
दारक ।
—लेना, मु, मोक्षमाय ककचैव स्वर्गपञ्चे
दनम् ।
करवाल, स हा (स पु) सङ्घ गसि ।
करशमा, स पु (हा) चनत्कार, कौतुक,
अश्रय ।
करहाट्टक स पु (स) कनहनूटम् २ कन
लान्त्य छन्द ३ मन्त्रम् ।
कराना, क प्र (हि करना) 'करना' के
धातुओं के प्र रूप ।
करामान, स हा (अ करामान का बहु)
दे करमा ।
करामानी, वि (अ करामान >) लोकोत्तर
चनकारिन् मन्त्रुव ।
करार, स पु (अ) शान्ति (स्त्री), दान
२ पैय स्येदम् ।
करार, स पु, (अ इकरार) दे 'प्रतिज्ञा' ।
करारा, स पु (अ करार >) नया उर्ध्वे
पातुक वा तम् २ सौख्यवीरम् ३ छत्र
पञ्चे ।
करारा, वि (स करार) इद, घन, संशय
२ क्रूर, दास्य ३ सुक, सुष्ट ४ वीर्य
उग्र ५ इदगा, वज्रह ६, मयुर, मित्र ।
कराल, वि (स) भाषा मदकर, घोर,
दारुण ।
कराला, स स्त्री (स) मीमांसाकारा दुर्गा ।
कराह, स स्त्री (दे कराहना) आर्षि पीडा,
ध्वनि (पु) शुद्ध-स्वर ।
कराहत, स स्त्री (अ) घृणा दुष्टता ।
कराहमा, कि अ (हि करना + अह) अत
म् हु डालन सन् (म्वा ५ से) ।
करिणी, स स्त्री (स) हस्तिनी ।
करी, स पु (स करिन्) गज हस्तिन् ।
करीना, स पु (अ) सुन्दरस्व, पञ्चक (स्त्री),
सौख्यम् ।
करीब, कि वि (अ) सना, निकट २ प्रायः,
प्रायेण ।
करीर, स पु (स कर) वीर्यकटक, ककर,
गुणवत्, ककच ।
करण, वि (स) दपट, कृत्त २ दुस्मानक ।

स पु रसविद्यया (मा) २ परनेका
३ कला, अनुकाम ।
करुणा, स स्त्री (स) अनुकाम दया व्वा,
२ प्रियविद्येय दुःखम् ।
—निधान वि (स) कर्मान्मन दधान्य,
कृता-कर्म-दया, विधि-संग्रह ।
करेणु, स पु स्त्री (स पुं क्) हस्तिन्
२ इन्दिनी ।
करेला, स पु (स कारवे) कजुर, कड
कुकुट, कठिंक ।
करैत, स पु (हि काल) मातृपथन,
मातृलाहि, कामान्दि ।
करोड, वि (स कोटि टि क्) शतम्प ।
स पु, वज्रा करवा तरकाश (२०००००००) ।
करौली, स स्त्री (स करवाने) छुरा छुरिका,
आम्बुत्रिका ।
करक, स पु (स) ककट, जुलीर २ रात्रि
विशय ३ अश्रय कजुर ।
करका, वि (स) कठोर, कृष्ण । २, वात्र,
प्रचद ३ सकृत्क ।
करका, वि स (स) कर्ह-विषय-प्रिया
(नारी) ।
कर्षा, स पु (अ कारगाह = कार्यस्थान >)
तनुवाधाना २ पञ्चकाले देन-वात
दह-अवयव ३ पथनिर्माहम् ।
कर्ष, स पुं (अ) दे 'अ' ।
कर्ष, स पुं (अ) अवन-न, अवन, क्रोध,
अवन (न) सुत (स्त्री), सुन्दरम् ।
२ अग्राय, बाहुजन, कानीन ३ दे
'अवयव' ।
—कटु, वि (स) वित्तर, ककर, दुःश्रव्य ।
—धार, स पु (स) नाविक, पीनवाह
२ कान् सुखनातिक ।
—परपर, स स्त्री (स) धृतिरपर ।
—पु, स पु (स न) सुदिनवलयम् ।
—पुर, स पु (स न) बन्धनरी (मातृपुर) ।
—पूर, स पु (स) अस्त २ नालेयम् ।
—फूल, स पु (स-फूलम् >) कान्का,
वृत्त, वानत्र, कर्मभूषणम् ।
—पेष, स पु (स) वल्लभाभेद ।
कर्पाट, स पु (स) दक्षिणरते प्रायविद्यया ।

कणाडी, स स्त्री (सं) राशिगीभेद २ कणाट
देशस्य भाषा नारी वा ।

कणिका, स स्त्री (सं) ताटक, दतपत्र, कणा
भूषणभेद २ धरमध्यागुली ३ लेटनी ।

कर्त्तन, स पु (सं न) (कर्त्त या) छेदन,
लवन, कृतनम् २ तन्तुसर्जनम् ।

कर्त्तनी, स स्त्री (सं) दे 'कतरनी' ।

कर्त्तरी, स स्त्री (सं) दे 'कतरनी' २ दे
'दुरा' ।

कर्त्तव्य, स पु (सं न) धर्म, विधेय, अनुष्ठे
यम् २ दे 'करणीय' ।

—विमूढ, वि (सं) कर्त्तव्यमभ्रात ।

कर्त्ता, स पु (सं कर्त्त) विधातृ, सष्टृ, अनुष्ठातृ
२ प्रभु, ईश्वर ।

कर्त्तार, स पु (सं कर्त्तार >) परमेश्वर,
विधातृ, विश्वसृज् ।

कर्त्तृत्व, सं पु (सं न) कारकावम् २ कर्त्तृधर्म ।

कर्दम, स पु (सं) चिक्किल, पक २ पाप
३ छाया ।

कर्पट, स पु (सं पु न) चीर, पटखण्ड,
पटघर जीर्णत्वम् ।

कर्पूर, स पु (सं) दे 'कपूर' ।

कर्पूर, स पु (सं न) स्वर्णम् २ धुस्तुरवृक्ष
३ जलम् । (सं पु) राशस २ पाप
३ कर्पूर । वि नानावर्ण, धिप्र, कम्पाप,
शबल ।

कर्म, स पु (सं कर्मन् न) कार्य, कर्त्तव्य,
क्रिया, वृत्ति (स्त्री), प्रवृत्ति (स्त्री) २ दैव
भाग्यम् ३ द्वितीय वारकम् (व्या) ।

—काड, सं पु (सं न) धर्मकृत्य, यथादि
कार्यम् २ कर्मविधायक शास्त्रम् ।

—कार, स पु (सं) लोडकार २ स्वर्णकार
३ सेवक ।

—चारी, स पु (सं-रिन्) राज, -भृत्य -
पुरुष, अधिकारिन् २ कार्यकर्त्तृ ।

—भोग, स पु (सं) कर्मफलम् २ पूर्वकर्मणां
परिणाम ।

—योग, स पु (सं) चित्तगुणविकर वैदिक
कर्मन् (न) २ निश्चामकर्मणाऽऽत्मज्ञानम् ।

—रेण, स स्त्री (सं-रेण) भाग्यांका
२ भाग्य, दैवम् ।

—विपारु, सं पु (सं) पूर्वकर्मणां फल, कर्म
परिणाम ।

—शील, वि (सं) कर्मवत् २ उद्योगिन्,
उद्यमिन् ।

—सन्यास, सं पु (सं) कर्मत्याग २ कर्म
फलत्याग ।

—हीन, वि (सं) मद-इत, -भाग्य, दुर्देव
२ शास्त्रोक्तकर्मणां अकर्त्तृ ।

—जागना, सु, भाग्य-पुण्य, -उदय ।

—कूटना, सु कर्मदुर्विपाक, भाग्यविपर्यय ।

कर्मठ, वि (सं) कर्मण्य, कर्मशील, उद्यमिन् ।

कर्मण्य, वि (सं) दे 'कर्मठ' ।

कर्मधारय, स पु (सं) समानाधिकरण
तत्पुरुषसमास ।

कर्मिष्ठ, वि (सं) कार्यवश २ क्रियावत् ।

कर्मी, वि (सं कर्मिन्) कार्यकर्त्तृ २ फलेच्छया
कर्मसंपादक ।

कर्मिन्द्रिय, सं स्त्री (सं न) क्रियासाधक
करणम् । (हाथ, पाँव आदि) ।

कर्षक, स पु (सं) कर्षणकर २ क्षेपिन्,
क्षेत्राजीव ।

कर्षण, स पु (सं न) आकर्ष, आकर्षणम्
२ भूमिदारणम् ३ वृषि (स्त्री) ।

कर्षणी, दे 'क्षिरीनी'

कर्षी, वि (सं) अग, -कर्षक-कापिन् । सं पु,
बालिक, हल, -वाह, ह्रस्व, लगलिन् (पु) ।

कलक, स पु (सं) दोष, दूषण, छिद्रम्
२ लटन, अपवाद ३ लक्षण, चिह्नम् ।

कलकित, वि (सं) दूषित, निदित, आक्षिप्त,
लक्षित ।

कलकी, वि (सं-विन्) दे 'कलकित' ।

कलकी, स पु (सं कल्कि) विष्णोर्ग्रन्थ
भावतार ।

कलहर, सं पु (अ देलेटर) पचाग, तिथिपत्रम् ।

कलहर, स पु (अ) यवनभिद्युभेद २ वान
रादिनन्विन् ।

कल, सं पु (सं) मधुरास्पृष्टध्वनि । वि,
मनोष, अभिराम २ मधुर, क्षोमल ।

कल, स स्त्री (सं कल्प >) स्वार्थ्यम्
२ सुखम् ३ मतोष ।

कल, स स्त्री (सं कल्प) उपाय, वृत्ति (स्त्री)
२ यत्र, उपकरणम् ३ यत्रावयव ।

कल, कि वि (सं कल्पन्) अ (गन्व),
आगामिदिनम् । २ आगामिकाले ३ छ
(अन्व), गतदिनम् ।
—का, वि अस्तन (-नी स्त्री), अस्त्य
(-या स्त्री) २ अस्तन, अस्त्य ।
कलई, स स्त्री (अ) रग, बग, वस्तीरन्
२ रग-बग, -लेप ३ स्वर्णादिधातुभिलेप
४ कातिकरो लेप ५ सुधालेप ६ आह्वर ।
—गर, स पु (फा) धातु सुधा-लेपक ।
—खुलना, मु, गोप्य रहस्य वा आविर्भू ।
कलकट, वि (स) प्रियवद, सुस्वर, मधुरभाषिन्
स पु कोकिल २ कपोत ३ हंस ।
कलक, स पु (अ) दुःख, शोक ।
कलकल, स पु (स) निन्दरादीना शब्द
२ कोलाहल ३ विवाद ।
कलगी, स स्त्री (तु) ण्य, पिच्छन् २ बृहत्
कारभेद ३ सुकुन्धा सुपक्षा ४ मवन
शृगम् ।
कलत्र, स पु (स न) पत्नी, भार्या ।
कलदार, स पु (हि कल) यत्ररचिण रूप्यकम्
२ यत्रनुक ।
कलधौत, स पु (स न) सुवर्णन् २ रजतन् ।
कलम, स पु (स न) उपादन, रचन,
जननम् २ प्रहणम् ३ धारण परिधानम्
४ आचरणम् ५ सवध ६ प्राप्त, कवल
७ गणिताक्रया ८ वेतस वैत्र ।
कल्प, स पु (स कल्प >) मठ, मठम्
२ देश, राग-रग ३ दे 'कल्प' ।
कल्पना, कि अ (सं कल्पान् >) शुच्
(भ्वा ष से) पीड् खिद-तप-डु डिश
(कर्म) व्यथ-उत्कट् (भ्वा आ से), दुर्म
नाथते (ना धा) उमुक (वि) + भू ।
कल्पाना, कि प्र, 'कल्पना' के धातुओं के
प्रे रूप ।
कल्प, स पु (स कल्प >) मठ, महम् ।
—लगाना, कि स, मठेन लिप (तु ष अ) ।
कलबल, स पु (स कल बलन्) उपाय,
सुधि (स्त्री) ।
कलबल, स पु (अनु) कोलाहल, कलबल ।
कलवृत्, स पु (फा कालवृत्) आकार
साधनम् २ आधार, उपग्रहम् ।
कलभ, स पु (स) गजशवक, उद्ग्रावक ।

कलम, सं पु स्त्री (सं पु) लेखनी, अक्षर
तुलिका, वर्णिका, वर्णमार्त (स्त्री) २ अन्यत्रा
रोपणाय वृत्ता शाखा ३ अन्यवृक्षे निवेशिता
शाखा ४ गडरोमाणि (न बहु) ५ तुलिका,
वर्तिका ६ तक्षणसाधनम् ।
—दान, स पु, कलम-लेखनी, धानम् ।
—लगाना, मु, वृक्षान्तरे देहातरे वा निविश
(प्रे) ।
कलमलाना, कि अ, दे० 'कुलबुलाना' ।
कलमा, स पु (अ) यवनधर्ममूलमत्र
२ वाक्यम् ३ शब्द ।
—पदना, मु यवनी भू ।
कलमी, वि (फा) हन्त-लिखित २ वृक्षातरे
आरोपित ३ स्फटिकरूपेण धनीभूत ।
—ग्राम, स पु (पेठ) राजात्र, नृपवहम् ।
(फल) राजाघ्रम् ।
—शौरा, स पु, धनीकृतौ यवशार ।
कलमुहूर्त, वि (स कालमुत् >) कृष्ण, -वदन-
आस्य २ लक्षित, कल्पित ।
कलरव, स पु (म) मधुरमदध्वनि, कल, -
स्वन-रतम् । २ कपोत ३ कोकिल ।
कलल, स पु (स पु न) भ्रूल, गर्म, पुखन,
गमस्थशिशो प्रथमावयव । २ गर्माशय ।
कलवरिया, स स्त्री (हि कलवार) सुरालय,
मदिरालय, मजा ।
कलवार, स पु (स कल्पपाल) शौडिक,
सुराजीविन्, सुराकार २ सुराविक्रमी उप
जाति (स्त्री) ।
कलविक, स पु (स) गृहनीट, चित्रक,
चटक-चिह्नम् ।
कलश, स पु (क्ष) कलश शो, कलस-सी-
सम्, घट, कुट, निप २ शिखा, शृगम् ।
कलसा, स पु, दे 'कलश' ।
कलहस, स पु (स) राजहस, वादव,
कलनाद, मराल २ नृपोत्तम ३ परमेधर ।
कलह, स पु (स) कलि, विवाद, द्वन्द,
वाग्बुद्धम्, वित्तवाद ।
—प्रिय, वि (स) विवादप्रिय, कलहकारिन्,
कलाहन् ।
कला, स स्त्री (स) अक्ष, भाग २ वादस्य
घोटशाश ३ सूर्यस्य द्वादशाश ४ अग्नि
मण्डलस्य दशमाश ५ विश्वनाथामक समय

विभाग ६ शिल्प, शिल्पविद्या ७ कौशल,
निपुणता ८ शरीरस्य षोडशाध्यात्मविभाग
(=५ शानेन्द्रियाँ, ६ कर्मेन्द्रिय, ५ प्राण, मन)
९ नृत्यभेद १० मात्रा (छन्द) ११ विभूति
(स्त्री) १२ शोभा, प्रभा १३ कौतुक, लोला
१४ छल, कपटम् १५ मिथ, ब्याज
१६ युक्ति (स्त्री), उपाय १७ नटलोला
भेद १८ यत्रम् १९ प्रकृति (स्त्री, कैव),
२० वर्णवृत्तभेद ।

—कद, सं पु (फा) मिष्टान्नभेद ।

—कौशल, स पु (स न) कला, शिल्पम्
२ कलापाठवम् ।

—निधि, स पु (सं) कलाधर, चद्र ।

—बाजी, स स्त्री (सं + फा) विपर्यस्त
प्लुति (स्त्री) ।

—वत, सं पु (सं कलावत्) सगीतकुशल,
गायक २ रञ्जुनर्तक । वि, कलाकुशल ।

कलाई, स स्त्री (सं कलाची) कलाधिका,
प्रकोष्ठ, मणिवध ।

कलाप, सं पु (स) समूह, गण, निरु
२ जनसघ, लोबनिवह ३ श्पुधि ४ चन्द्र
५ कटिबध, भेदला ६ गुच्छ ७ मयूर
पिच्छन् / आभूषणम् ।

कलापिनी, स स्त्री (सं) मयूरी २ रात्रि
(स्त्री) ।

कलापी, स पु (सं-पिन्) मयूर, पहिन्
२ कोकिल । वि, वृणुषुड ।

कलावत्, सं पु (तु कलावदून) कौशेयसतौ
व्यावर्तिन सुवर्ण-रजत,-तार ।

कलाम, स पु (अ) वचन, उक्ति (स्त्री)
२ वार्तालाप ३ प्रतिष्ठा ४ आक्षेप ।

कलार-ल, सं पु, दे 'कलवार' ।

कलारिन, स स्त्री (हि कलार) शौण्डिकी,
मदविकत्री ।

कलावती, वि (स) कला-शिल्प,-शा बेत्री,
शिल्पिनी २ सुन्दरी ।

कलिंग, स पु (सं-गा) प्रान्तविशेष
(= उदीसा) २ हृदयव-कुटज,-शृष्ट ३ दे
'तरबूज' । वि चतुर, भूत ।

कलिंगादा, स पु रागभेद ।

~ सं पु (सं) पर्वतविशेष २ सूर्य ।

~ स स्त्री (सं) यमुना कालिदी ।

कलि, सं पु (सं) चतुर्थ-तुरीय-अल्प,-
युगम् (यद् ४१२००० वर्षों का होता है)
२ कलह, विवाद ३ युद्धम् ४ शूद्र ५ क्लेश
६ पापम् ७ शिव ८ श्पुधि ।

—कर्म, सं पु (सं-कर्मन् न) समयम् ।

—काल, सं पु (सं) कलियुगम् ।

कलिका, सं स्त्री (सं) दे 'कली' ।

कलित, वि (सं) शाप, विदित २ प्रसिद्ध
३ प्राप्त ४ शोभित ५ सुन्दर ।

कलियाना, क्रि अ (सं कली >) स्फुट (तु प ने)
विकल्-पुल् (भ्वा प से) ।

कली, सं स्त्री (सं) कलिका, कोरक-क,
मुकुल-लं, कुडमल, कोश-प २ त्रिकोणी
वखत्तल ३ धूम्रपानयत्राधोभाग ।

दिल की कली खिलना, मु, मुद् (भ्वा आ से) ।

कली, सं स्त्री (अ कलई) चूर्णजलम्
२ तप्तचूर्णम् ।

कलील, वि (अ) न्यून, स्तोत्र २ लघु, ह्रस्व ।

कलुप, सं पु (सं न) मल, मालिन्यम्
२ पाप, दोष ३ क्रोध ४ महिष ।

वि, मलिन, पकिल २ निर्दित ३ पापिन् ।

कलुपित, वि (सं) पकिल, मलीमस २ अप
विष, अमेध्य ३ आतुर ४ कृष्ण, काल ।

कलुटा, वि (हि काला) काल, कृष्ण, श्याम ।

काला—, वि अति,-कृष्ण-काल ।

कलेजा, सं पु (सं कालेयम्) यकृत (न),
कालखण्ड, कालकर्म २ हृदय, हृद् (न),
३ उरस्, वक्षस्, क्रीड (सब न) ४ साहम,
उत्साह, वीर्यम् ।

—कल्पना, मु, भी (जु प अ), उदिव्
(तु आ से) स वि,-प्रस् (दि प से) ।

—चलनी होना, मु, हृदय व्यथ् (कर्म) ।

—टूक टूक होना, मु, हृदय स्फुट (तु प से) ।

—धाम कर रह जाना, मु, सताप स-नि,-
शम् (भ्वा प अ) ।

—धक्कना, मु, (भयादिभि) हृदय वप्
(भ्वा आ से) ।

—फटना, मु, (शोकमासर्षादिभि) हृदय
विद् (कर्म) ।

—से छगाना, मु, आलिन् (भ्वा प से) ।

कलेवर, स पु (सं न) शरीर, देह ।

—बदलना, कि अ, पुन जन् (दि आ से)
२ नववस्त्राणि परिधा (जु उ अ) ।

कलेवा, सं पु (सं कल्पवर्त) प्रातराश ,
प्रातर्भोजन, कल्पवग्धि (खी), जलपानम् ।

कलोळ, सं खी (सं कल्लो >) क्रीडा,
खला, केलि (पु खी), लीला, विलास ।

कलौजी, स खी (स कालाजानी) पशुका,
दित्वा, काला ।

कलरु, सं पु (सं पु न) घृततैलादिशेष
२ दम ३ विद्या ४ किष्टम् ५ पापम्
६ वस्तुन चूर्णम् ७ अवलेह ।

कल्कि, स पु (सं) विष्णोर्दरमावतार ।

कल्प, स पु (स) धर्मकृत्यविधायको वेदाग-
भेद २ ब्रह्मदिनम्, दैवसहस्रयुगम् (=
४३००००००० वर्ष) ३ महाप्रलय, सृष्टि
संहार ४ विधान, कृत्यम् ५ प्रातःकाल
६ योगनिवृत्तियुक्ति (खी) ७ प्रकरण,
विभाग ८ विकल्प, पक्ष ९ सदेश
१० निश्चय ११ उद्देश । वि, तुल्य, सद्देश ।

—तरु, स पु (स) कल्प, वृक्ष-पादप द्रुम ।

कल्पना, सं खी (सं) उद्भावन-न, कल्पन,
मन कल्पना २ रचना, विधानम् ३ प्रसाधन,
मदनम् ४ तर्ज, ऊहा ५ अध्यारोप ६ मन
सञ्जीकरण ।

—करना, कि अ, उरप्रक्ष ऊर् (भ्वा आ
से), तरु (चु), मनसा कल्प (प्रे),
सभू (प्रे) ।

कल्पित, वि, (सं) रचित, विहित २ सुव्यव-
स्थित ३ वि-म भावित ४ उद्भाषित,
वासना भावना-सृष्ट, मानस, काल्पनिक
५ असत्य, निर्मूल ६ कृत्रिम, कृतक ।

कल्पय, स पु (सं न) अध, पापम् २ मल
मालिन्यम् ।

कल्प्य, स पु (स न) प्रत्यूष, प्रभातम्
२ मधु (न) ३ सुरा ४ श्व (अव्य),
आगामिदिनम् । वि, स्वस्थ, निरामय २ मूक
बधिर ।

कल्या, स खी (स) मद्यम्, सुरा २ कल्याण
स्वस्ति, -वचन वच (न), अभिनन्दनम् ।

कल्याण, सं पु (सं न) सुख, भगल, हित,
शिव, कुशल, क्षेम, भद्र, सुस्थिति (खी)

२ सुवर्णम् ३ रागभेद । वि शिव, भगल,
शकर ।

—कारी, वि (सं रिन्) सुख भगल हित,
कारक ।

कल्याणी, वि खी (सं) भगलकारिणी,
सुन्दरी । स खी (सं) गौ (खी)
२ मापपर्णी ।

कल्याण, सं पु (सं) प्रातराश, कल्पवर्त,
जलपानम् ।

कल्ल, वि (सं) बधिर, अकूर्ण ।

कल्लर, सं पु (देश) ऊपर-२, कल्या
भूमि (खी) ।

कल्लोच, वि दुर्बुद्ध, दुराचारिन् २ दरिद्र,
निर्भन ।

कल्ला, सं पु (स करीर -र >) प्ररोह,
विमलय, उद्भिद् ।

कल्लोल, सं पु (स) महातरंग, उहोल,
महोर्मि २ दे 'कलोल' ।

कल्लोलिनी, सं खी (सं) नदी, नटिनी ।

कवच, सं पु (सं पु न) सन्नाह, कचुक,
वर्मन् (न), तनु, वार-प्राण-त्रम् २ भेरी,
दुदुमि ३ रक्षाकरड ।

—पत्र, सं पु (सं न) भूर्जपत्रम् ।

कवर, सं पु (स पु खी न) वेश, वध
पाश २ घ्रास, बवल, पिण्ड ।

कवरी, सं खी (सं) वेशविन्यास, वेणी णि
(खी), पमिल्ल २ वनतुलसी ।

कवर्ग, स पु (सं) ककारादिवर्णपञ्चकम् ।

कवल, स पु (सं) घ्रास, पिण्ड इन् ।

कवलगद्दा, स पु (स कमलप्रधि >)
कमलाक्ष, पद्मवीनम् ।

कवलित, वि (स) भक्षित, निर्गीर्ण, मुक्त
२ गृहीत, आदत्त ।

कवायद, सं पु (अ 'कायदा' का बहु)
नियमा विषय (बहु) २ व्यायाम ३ सेना
-व्यायाम ४ व्याकरणनियमा ।

कवि, सं पु (सं) काव्यकर, मूरि, सत्सार
२ ऋषि ३ सूर्य ४ ब्रह्मन् (पु) ।

—राज, स पु (स) कवीन्द्र, महाकवि
२ वैतारिक ३ वैद्योपाधि ।

कविता, सं खी (सं) काव्य, काव्यप्रबन्ध,

काव्यवध २ काव्यरचना, कवित्व, कविता कला ।

कवित्त, स पु (सं कवित्वम् >) काव्य कविता २ हिदीछन्दोभेद ।

कविच, स पु (स न) काव्यरचनाशक्ति (स्त्री) २ काव्यगुण ।

कर्णोदु, स पु (स) वाल्मीकि, प्राचेनस, कविज्येष्ठ ।

कर्षाद्र, वि (स) कविश्रेष्ठ, श्रेष्ठकवि, कविराज ।

कशा, स पु, दे 'कशा' ।

कशमकश, स स्त्री (फा) सवर्ष, प्रतिस्पदां ० जनोष ३ सशय ।

कशा, स स्त्री (स) कषा प्रतोद, प्रति ध्कशा -ष ।

कशीदा, स स्त्री (फा) दे 'आकर्षण' ।

कशीदा, स पु (फा) मूची, शिल्प-कर्मन् (न) ।

—काइना, कि स सूच्या पुष्पादिक चिन् (जु) ।

कशती, स स्त्री (फा) दे 'नीका' ।

कशमल, स पु (स न) मोह, मूर्च्छा २ थाप अष्टम् । वि मन्त्रिन, आशिल ।

कशमीर, स पु (स) काश्मीरदेश शास्त्र शिल्पिन् ।

कष, स पु (स) कषपट्टिका, गिकष निकष, उपल पाषाण २ ज्ञान णी ३ परीक्षण, परीक्षा ।

कषण, स पु (स न) निक्षेपेण स्वर्णादिकस्य परीक्षणम् ।

कषाय, वि (स) कुवर, कुवर २ सुवास सुगन्धि ३ रन्तित, रगवत् ४ मरिक्कवर्ण रक्तदयाम । स पु मोव २ काष ३ कुवर, रसभेद ।

कष्ट, स पु (स न) दुःख, ह्येद, पीडा व्यथा ३ अपष्ट, विष्ट, क्षापलि, विस्तलि (सव स्त्री) ।

—साध्य, वि (स) दुरसाध्य, दुष्कर, कष्ट ।

कस, स पु (स कष) निक्षेप कषपट्टिका २ परीक्षणम् २ खड्गवुचनीयता ।

न, स पु (हि कसना) बल, शक्ति (स्त्री) निग्रह, निरोध ३ विग्र ।

कस, सं पु (फा) नर, जन व्यक्ति (स्त्री) ।

फी—, कि वि, प्रतिपुरुष, प्रतिजनम् ।

वे—, वि, असहाय, अनाथ ।

कसक, स स्त्री (स कष = हिंसा >) वेदना, पीडा, व्यथा २ चिर, वैर विरोध ३ अभि लाष ४ सद्दानुभूति (स्त्री) ।

—निकालना, कि स, चिरवैर शुष् (पे) ।

कसरुना, कि अ (हि कसक) व्यथ (भ्वा आ से) पीट् (कर्म) ।

कसकुट, स पु दे 'कौसा' ।

कमना, कि स (स कर्षणम्) दृढीकृत नियम् (भ्वा प अ) द्रव्यति (न धा) २ बध् (क् प अ) ३ पीट् (जु) ४ परीक्ष (भ्वा आ से) ५ सञ्जीकृत ६ मूह्य वृध (मे) ।

कि अ दृढीभू, नियम् (कर्म) २ बध, नियन् (कर्म) ३ पिटीभू ।

स पु, दृढीकरण, नियमनम् २ बधनम् ३ पीटनम् ४ परीक्षणम् ५ सञ्जीकरणम् ।

कसनी, स स्त्री (हि कसना) दृढीकरण नियमन-रज्जु (स्त्री) २ अगिका ३ निक्षेप ४ परीक्षा ५ दे 'दुष्की' ।

कसध, स पु (अ) व्यवसाय वृत्ति (स्त्री) २ गणिकावृत्ति (स्त्री) ।

कसधी, स स्त्री (अ कसध >) वेदया, गणिका २ कुलटा, पुश्लो ।

कसम, स स्त्री (अ) सपथ, प्रतिज्ञा, समय ।

—राना, कि अ, शप् (भ्वा दि उ अ) ।

कसमसाना, कि अ, (अनु०) दे 'कुल कुलाना' ।

कसमसाहट, स स्त्री, शने सर्पणम् २ व्याप्तु लता ।

कसमि (मी) या, अ (अ०) सद्यपथ, सत मय शपथपूर्वम् ।

कसर, स स्त्री (अ) मूलन, क्षणता २ अभाव, हीनता ३ दोष ४ वैरम् ५ हानि (स्त्री) ।

—निकालना, मु, धर्ति पूर (जु), प्रतिफल दा (जु उ अ) ।

कसरत, स स्त्री (अ) बाहुत्य, प्रचुरता, आधिक्यम् २ बहुतरभाग, अधिकमर्या ।

—राय, सं स्त्री, बहुमत, मताधिक्यम् ।
 कसरत, सं स्त्री (अ) व्यायाम, परिश्रम
 २ अभ्यास, आश्रुति (स्त्री) ।
 कसरती, वि (अ कसरत >) व्यायामिन्,
 दृढाङ्ग ।
 कसा, वि (हि कसना) गाढ, दृढ, सुसह्य
 २ दृढवद् ।
 कसाई, सं पु (अ कसाव) सौ (स्त्री) निक
 २ मासिक, घातक, विशक्तिवृत् । वि, क्र, २
 निर्दय ।
 कसाना, कि अ (हि काँसा) कपाय-विकृत
 स्वाद (वि) भू ।
 कसाहा, सं पु (स कष-नीटा >) दुःख,
 कष्ट २ आघात, परि-श्रम ।
 कसाव, सं पु (स कषाव >) कपायता,
 कृत्ता ।
 कसी, सं स्त्री (स कषन् >) रनित्र,
 दग-गन् ।
 कसीदा, सं पु, दे 'कसीदा' ।
 कसीस, सं पु (स कानीसन्) शोधक,
 शुभ्र, पाणुदेहरन्, लचरन् ।
 कसूर, स पु (अ) अपराध, दोष,
 स्फुरितम् ।
 —का, वि, अपराधिम्, होयिन् ।
 कमेरा, स पु (हि काँसा) करणकार,
 पात्रोद्धार ।
 कसेला, वि (हि कसाव) कषाय, तुल्य, कुवर ।
 कसेली, सं स्त्री (हि कसेला) दे 'सुपारी' ।
 वि स्त्री कषाया, लक्ष्णा ।
 कसोरा, स पु (हि काँसा) (कारय-) चक्क
 शरव-भाजन पात्रम् । २ मृगमय मासिक,
 चक्क ।
 कसौटी, सं स्त्री (सं कषपट्टी) नि, कष,
 कषपट्टिका, निकषोदक २ परीक्षा, प्रमाणम् ।
 —पर कसना, पु, परीक्ष् (स्वा आ से) ।
 कस्टम, सं पु (अ) रीति (स्त्री), व्यवहार,
 अभ्यास, नियम ।
 कस्टमर, स पु (अ) ग्राहक, केतु (पु) ।
 कस्टमस, सं पु (अ) शुल्क-क, वर,
 राजस्वम् ।
 कस्तूरी, सं स्त्री (सं) कस्तूरिका, मृग-नाभि
 मन्, अन्ना, शायामोदा, गणधूलि (स्त्री) ।

—मृग, सं पु (सं) गणधृगम् ।
 कस्वा, सं पु (अ-व) वृहत्-महा-ग्राम,
 लघु-नगर पुरम् ।
 कहकहा सं पु (अ अनु) कट्टहास, उच्चै
 हास, अति प्र, हाम ।
 कहत, सं पु (अ) बुद्धिभ्र, नीवाक, आहा
 रामाव, अकाल ।
 कहना, कि स (सं कथनन्) कद्-वद् भू
 (स्वा प से), क् (अ उ), वच् (अ प
 अ) उचर-उदीर (प्रे), उर-न्वा, ङ (स्वा
 प अ) २ कथ (जु), शस (स्वा प से),
 आचङ्ग (अ आ), मि-आ, विद् (प्रे), आ,
 ख्या (अ प अ), वर्-निरूप (जु),
 कभिधा (जु उ अ) ३ आशा (प्रे आशा
 पयत्रि) ४ शप् (स्वा आ से) ५ प्रकार्
 (प्रे) ६ उदादिश (तु प अ) । सं पु,
 कथन, माषा, कथन, व्याहरण, उदीरन्
 २ आशा, आदेश ३ उपदेश, अनुशासनम्
 ४ दे 'कहावत' ।
 —योग्य, वि गदनीय, वदनीय, कथनीय,
 मतिव्य, वज्ज्व ।
 —चाला, स पु, वाचक, कष्ट, वादिन्,
 व्याहर्तु अभिधातृ ।
 —कुडम, वि, यदित्, उदित, मति, उच,
 कथित, उचारित, उदीरित ।
 कइने की, सु, नाममात्रम् ।
 कहर, सं पु (अ) विपत्ति (स्त्री) ।
 कहरवा, स पु (हि कहार) (१-३) ताल
 गीत-नृत्य-भेद ।
 कहरी, वि (अ० कइ >) क्रूर, निर्दय,
 अत्याचारिन् ।
 कहलाना, कि प्रे, 'कहना' के पाठुओं के
 प्रे रूप ।
 कहवा, सं पु (अ) कृष्णभेद २ तस्य बीजानि
 (वु) ३ देवा पेयम् ।
 कहाँ, कि वि (सं कइ) क, कुत्र, कस्मिन्
 स्थाने ।
 —का, वि, कत्य, कुत्रत्य, किदेशीय ।
 —तक, कि वि, किन्दूर-दे, कियता-देत,
 किपर्यन्तम् ।
 कहा, सं पु (हि कहना) कथन, वचन,
 वक्ति (स्त्री), आदा, वरदेश ।

कहानी, स स्त्री (स कथानिका) कथा, आ उपा, ख्यानम्, आरयायिका, वृत्तात् ।

कहार, स पु [सं क (=जल)+हार] कहार, जल-उद वाह, दृतिहार । २ शिविका नरयान, वाह ३ पात्र, क्षालक मार्जक ।

कहावत, स स्त्री (हिं कहना) आभाणक, लोकवाद जनप्रवाद जनोक्ति लोकोक्ति (स्त्री) ।

कहासुनी, स स्त्री (इ कहना+सुनना) कलह, विवाद, वाभ्युदम् ।

कहीं, कि वि (दिं कहीं) वापि वचित्, कुत्रापि, कुत्रचित्, यत्रकुत्रचित् । २ न न कदापि ३ यदि, चैव ४ अच्यतम् ।

—कहीं, कि वि, वचित् वचित्, यत्र कुत्र चिदेव ।

—न कहीं, कि वि, अत्र अन्यत्र वा ।

कौंदूर्यो, वि (अनु कौं व) धूर्त्त कितव ।

कौं कौं, सं स्त्री (अनु) काका, शब्द ध्वनि २ काकरुतम् ।

कौंसा, स स्त्री (स) अभिलाष, कामना ।

कौंस, स स्त्री (स वक्ष) वक्षा, वाहुमूल, मुजकोटर -र, दोग्गुलम् ।

कौरना, कि अ, (अनु) भारतवर्षमलत्या गणादिकाले पार्जनार्द्र ।

कौंशङ्गी, स स्त्री, * गल इसनी-इसती, अगार भानिका प्रकार ।

काग्रेस, स स्त्री (अ) महासभा, प्रतिनिधि समा, समाज ।

कोच, स स्त्री (स कश्च) कच्छ-च्छ, वच्छा, टी टिका २ गुदावर्त, गुदपत्रम् ।

कौच, स पु (स काच) स्फटिक ।

काचन, स पु (स न) स्वर्णम्, सुवर्ण कनकम् २ धन, सपत्ति (स्त्री) । (स पु) पुस्त २ अपक ३ कोविदार ४ वाच नाम् ।

—मय, वि सुवर्णमय, हेम (-मी स्त्री) ।

काची, स स्त्री (स) रसना, बैरला २ बाजिबरम् ।

कांजिव (या) रम्, स पुं, (सं काची) कांची, पुरी नगरी ।

कौंजी, स स्त्री (स) गृहाम्, रक्षोन, सुवी राम् कानि(जी)वम् ।

कौंजी हौद, सं पु (अ काइन हाउस) पत्र, -शाला पुति (स्त्री), गोगृह, अवरोप ।

कौंटा, स पु (स कटक-वम्) तर-दुम-, नस, शिताम्र, शन्यम् २ पृष्ठवक्ष, वशेरका ३ नख रा, नखर -रम् ४ लघु तुला-घट ५ गूल रम् ६ मधुरकुकुटादीना नस । ७ तुला, -जिहा सूची ८ बटिश, मत्स्यवेष नम् ९ मरस्वास्थि (न) १० तिद्धोदमेर ११ शल, शल्लम् १२ पटीसूची १३ कृप कट्य १४ रोमान् ।

—कटकना, मु, (द्वय) कटकमिव व्यम् (दि प अ) ।

—होना, मु, अनिष्टा (वि) भू ।

कौंट बोना मु पीट् (चु) ।

कौंटों में घसीटना, मु, मिथ्यास्तु (अ प अ) ।

रास्ते में कौंटे बिरोटना, मु, विभयति (ना भा) ।

कौंटी, सं स्त्री (हिं कौंटा) धुदवृक २ लघु-धुद, -धरणी आकर्षणी ३ धुदतुला ४ धुदकील ५ पार्पासमलम् ।

काढ, स पु (स पु न) अध्याय, उच्छ्वास, प्ररथ, परिच्छेद, स्फ २ वि-, भाग, खट -हम् ३ दण्ड, यष्टि (स्त्री) ४ वाण ५ शरवृक्ष ६ अवसर ७ तुणादिगुच्छ ८ तरस्वथ ९ समूह १० वशादि पर्वन् (न) ११ शाखा १२ व्यापार घटना १३ नालम् ।

कांड़ी, स स्त्री (स काढ >) दीर्घ स्थूण-काष्ठम्, गृहस्थूण, तुला ।

कात, स पु (स) पति, भर्तृ २ अयस्-लोह, कान जुवन ३ चद्र ४ वसत ५ धीशूण । वि, मनोरम, शोभत ।

काता, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या २ दयिता, प्रिया ३ सर्वांगसुदरी नारी ।

कातार, स पुं (स पुं न) महावन, बृहद् गहन, अरण्याती २ देश, देश ३ विर्द, छिद्रम् ।

काति, स स्त्री (स) प्रति-दीप्ति-एवि (स्त्री), भा, अभिल्या २ सौन्दर्य, लाण्यम् ।

काद्व, सं पु (सं न) कटाहीमृष्ट-कन्दुमजित,
 वस्तु (न) -पदार्थ ।
 कादिशीक, वि (स) भय नास, पलायित
 अपद्रुत धावित ।
 काँप, स स्त्री (स कपा) (१-०) गज
 बराह, -दत्त २ वशकाशादीना शलाका
 ३ कर्णभूषणभेद ।
 काँपना, क्रि अ (स कम्पनम्) कप् स्फट् वेष्
 (भ्वा आ से) स्फुर (तु प से) २ विचल्
 वेल् (भ्वा प से) ३ दे, 'डरना' ।
 काञ्चोज, वि (स) कम्बोजदेश, विषयक सम्ब
 धिन् । सं पु कम्बोजवासिन । २ कम्बोजाश्च ।
 काँच-काँच, स स्त्री (अनु) द 'काँ काँ'
 २ प्रत्यय, विप्रलाप ।
 काँचर, स स्त्री दे 'बईगी'
 काँम, सं पु (सं काश) अमरपुष्पक, वन
 हासक, काशा-शी २ कल्ह ।
 काँसा, स पु (स कास्यम्) कस, कसास्थि
 (न) तात्रार्द्रम्, दीप्ति पीन, -लोहम्, घोषम् ।
 कास्यकार, सं पु (सं) कसकार दे 'कमेरा' ।
 का, प्रथ (सं प्रत्य 'क') षष्ठी वा समास
 द्वारा । (उ० राम की पुस्तक = रामस्य पुस्तक,
 रामपुस्तकम्) ।
 काई, स स्त्री (स कावारम्) शैव (वा) ल,
 शैव (वा) ल, जडनीली २ अयोमलम्
 ३ मूलम् ।
 काक, सं पु (सं) वायस, ध्वञ्च ।
 —तालीच, वि (स) आकस्मिक-यादृच्छिक
 (-की स्त्री), अताकत ।
 —पक्ष, सं पु (स) शिपच -बक, अलक,
 चूर्णकुतल वैशक्लप ।
 —पद, स पु (सं न) इस्तलेपु उच्चित
 वर्णयोगकचिह्नम् (= १) ।
 —वन्ध्या, स स्त्री (स) एकापत्यजननी ।
 काक, सं पु (अ काक) पिधान, कृपा
 छिद्रपिधानम् २ रोषनी, स्तम्भनी ।
 काकली, सं स्त्री (स) सूक्ष्ममधुरास्फुटध्वनि ।
 काका, स पु (पा काका = वन भाग >)
 पितृय, पितृ आतृ २ (प) शाल, शिशु ।
 काकी, स स्त्री (पा काका >) पितृव्या,
 पितृ-पत्नी २ (प) कन्यका, बालिका ।
 काकु, सं पु (स) भिन्नकण्ठध्वनि २ आक्षेप,

व्ययवचन आ-अधि, -क्षेप ३ अलङ्कारभेद
 (सा) ४ विद्या ।
 काकुस्थ, स पु (सं) श्रीरामचन्द्र ।
 काकुल, सं पु (पा) काकपक्ष शिखडक ।
 काग, सं पु द्वे 'काक' १, २
 कागज, स पु (अ) कागद -द, पत्र, कर्णम् ।
 —पत्र, स पु (अ + सं) लेख्यपत्राणि, पत्र
 काणि, लेखयानि (सर्व बहु) ।
 —की नाव, मु क्षणमगुर, विनश्वर ।
 कागजी, वि (अ कागज >) कागद-पत्र,
 मय २ मूहमत्वच् ३ प्रतनु । सं पु, पत्रवि
 क्रयिन् २ श्वेतकपोत ।
 —घोडे दौड़ाना, मु, पत्रे व्यवह (भ्वा
 प अ) ।
 काच, स पु (सं) भ्रष्टिक २ नेत्ररोगभेद
 (सं न) काचलवणम् २ सिन्धकम् ।
 काट, स स्त्री (स कशा >) काटी-जघन,
 वक्षम् ।
 काटुना, क्रि सं (स कशा >) धौताप्रान्त पृष्ठे
 निविश (त्रे) ।
 काटुना, क्रि स (सं कषणम्) केन अपनी
 (भ्वा उ अ) ।
 काटुनी, सं स्त्री (हि काटना) ऊरुवमन,
 सन्धिवक्षम् ।
 काट्टा, स पु, दे 'काटुनी' ।
 काट्टी, सं पु (स कच्छ >) शाक, उत्पादक
 विक्रेतृ २ जातिभेद ।
 काज, सं पु (स कायम्) कृत्य, कार्य, कर्मन्
 (न), वृत्ति (स्त्री) २ वृत्ति (स्त्री),
 आनीविका ३ उद्देदय, प्रयोगनम् ४ विवाह ।
 काज, स पु (अ कायना >) गण्डाधार,
 कुडुपाधार (= बटन का छेद) ।
 काजल, स पु (स कजलम्) लोचक, दीप
 फिट्ट, अचनम् ।
 —की कोठरी, मु, निष्पथानम् ।
 काजी, स पु (अ) न्यायाधीश, धर्माध्यक्ष
 (हस्ताम) ।
 काट, स स्त्री (हि काटना) छेदन, कर्तन,
 लवन, कृन्तन, व्रश्चनम् २ कर्तनरीति (स्त्री)
 ३ व्रण, शतम् ४ खण्ड -द, लव ५ छल,
 कपटम् ।
 —छाँट, स स्त्री, सक्षेपण २ शोधनम् ।

काटन, स पु (अ) कार्पास, तूल-लम्
२ कार्पास, तूलाम्बरम्, बादरम् ।

काटना, कि स (स कर्तनम्) कृत् (तु प से) क् (क उ से), छिद् (र प अ), मथ (तु प वे) २ तुद् (तु प अ), मण् (चु) ३ कन् (चु), सशिप (तु प अ) ४ ह्न् (अ प अ) व्यापद् (प्रे) ५ दे 'कनरना' ६ सधिं द्रुट् (प्रे) ७ विफ लीकृ ८ दश (म्वा प अ) ९ अल्पाश उदधृ (म्वा प अ) १० अतिकम् (म्वा प से) ।

स पु तथा माव, दे 'का' ।

—योग्य, वि, कर्तनीय, छेदनीय, छेत्तय, लवनीय ।

—वाला, सं पु छेदक, लावक, कर्तनकर ।
काटा हुआ, वि, वृत्त, छन, कृष्ण, छिन्न ।
काटने दौटना, मु निर्जन (वि) इशु (कर्म) ।
काटो तो खून नहीं, मु, स-, सन्ध ।

काठ, सं पु (स काष्ठम्) क्षार (भ) २ इध्म, इधन ३ काष्ठनिगट-टम् ४ दे 'शहतीर' । वि कर २ मूर्त्त ।

—का उल्लूह, सं पु अटधी, मूढ, अज्ञ ।

—की हौंड़ी, स, आपनरमणीय वस्तु ।

—मारना, मु, काष्ठनिगटेन बध् (कू प अ) ।

काटसा, स पु, दे 'कठौता' ।

काठिन्य, स पु (स न) दे 'कठिनता' ।

काठी, स स्त्री (दि काठ) पर्याण, पर्यबण, पर्ययनम् २ शरीर, -रचना-संस्थानम् ३ असिक्वोप ।

काटना, कि स (सं कर्षणम्) निप्-आ, कृष (म्वा प अ), निप-स, पीड् (चु), निर उद, -द् (म्वा प अ) २ सूच्या पुष्पादिव सिव (दि प से) ३ काष्ठपाषाणादिपु पुष्पादिक अस्ति-उत्त् (तु प से) ४ पथक् क, विवृज-विदिल्य (प्रे) ५ बध् (म्वा आ से) ।

काटा, स पु (दि काटना) क्षाय, कषाय, जनदास ।

काणेली, सं स्त्री (स) तुल्या, व्यभिचारिणी, पुत्रवन्ती २ अनूदा, अविवाहिना ।

कानना, कि स (सं कर्तनम्) गन्तुं सन् (तु प अ), कृत् (रु प से) ।

स पु तथा भाव, कर्तन, तन्तुनिर्माणम् ।

—योग्य, वि, कर्तनीय, कर्तनाई ।

—घाला, सं पु, कर्तक, तन्तुकार ।

काता हुआ, वि, वृत्त ।

कातर, वि (स) व्याकुल, विह्वल २ भीड, प्रसत ३ भीरु ४ आर्त्त ।

कातरता, सं स्त्री (स) व्याकुलता, धैर्यभाव २ भय, त्रास ३ भीरुता, कातर्यम् ४ अवसाद विपाद ।

कातिव, स पु (अ) लेखक २ अक्षरचक्रु ।

कातिल, सं पु (अ) घातक, हन्त ।

कादम्ब, स पु (सं) (१-३) कदम्ब, -वृष्-पुष्प फल्म् ४ कदम्ब ५ इक्षु ६ बाण ७ कदम्बसुरा ।

कादवरी, स स्त्री (सं) कोविता २ मदिरा ३ सरस्वती ४ बाणरचितो गद्यकाव्यविशेष ।

कादविनी, सं स्त्री (सं) मेघमाला, जल दावली ।

कान, स पु (सं कर्ण) श्रोत्र, ध्वज, छुटि (स्त्री) भाव, शब्दमह ।

—में कहना, कि, स, कर्णे जप् (म्वा प से) ।

—का परदा, सं पु, कर्ण, -पट्ट -कुडुमि ।

—का बहना, स पु, कर्णसाव ।

—का मैल, स पु, कर्ण, -मल-गूथ, पिज्ज ।

—की शाय-शाय, स स्त्री, कर्णप्रणाद ।

—उमोठना, मु, दृढरूपेण कर्णौ मुट् (चु) ।

—का बच्चा, मु, विश्वासिन् ।

—काटना, मु, अतिशी (अ आ से), अति रिन् (कर्म) ।

—खडे होना, मु, विरिष (म्वा आ अ) ।

—सा जाना, मु, कोलाहल कृ ।

—पकड़ना, मु, पश्चात्तरेण कर्णौ स्पृश् (तु प अ) ।

—पर जूँ ज रेंगना, मु, निराल-न यत्नरहित (वि) स्था (म्वा प अ) ।

—पूकना, मु, कलह उरीप् (प्रे) ।

—भरना, मु, वृद्धो द्वेष जन् (प्रे) ।

—में उँगली दिखे रहना, मु, दे 'कान पर जूँ न रेंगना' ।

कानन, स पु (स न) वनम् २ गृहम् ।

कानफरेंस, सं स्त्री (अ) सम्मेलनम् ।
 कानस्टेबिल, सं पु (अ) रक्षिन्, शान्ति
 रक्षक, रक्षापुष्प ।
 काना, वि पु (स काण) एकाक्ष, चन्द्रचक्षु ।
 कानायानी, सं स्त्री, (सं वर्ग >) कर्णेजपन,
 उपाशुवाद २ वार्ता, जनप्रवाद ।
 कानाफृमी, स स्त्री, (सं + भ्रु) दे
 'कानाकानो' ।
 कानि, सं स्त्री (देश) लोचलज्जा, मर्यादा ।
 कानी, वि स्त्री (सं) वाणा, एकाक्षा, एकनेत्रा,
 कागेयी, कागेरी ।
 —डंगली, स स्त्री कनिष्ठा कनिष्ठिका, कनी
 निम्बा, दुर्बलाङ्गुली लि (स्त्री) ।
 —कौडी, सु, दे 'कौडी' के नीचे ।
 कानी हाउस, दे 'कौजी हौद' ।
 कानीन, सं पु (सं) कन्यापुत्र, कुमारी
 तनय ।
 कानून, स पु (अ) अधिनियम २ राज,
 नियम, विधि ३ आचार, व्यवहार ।
 —गो, स पु प्राप्तगणकाध्यक्ष ।
 —दो, स पु, व्यवहारनिपुण, विधिज्ञ ।
 कानूनी, वि (अ कानून >) वैध, राजनियम
 विषयक २ विधिज्ञ ३ भर्त्स्य, शास्त्रविहित
 ४ कृतविन् ।
 कान्द, स पु (सं कृष्ण) धीकृष्णचन्द्र
 २ प्रति ।
 कापालिक, सं पु (सं) शैवताश्रिकसाधु
 २ वर्णमकरजातिभेद ।
 कापुरूप, स पु (सं) कु निच-कातर, जन ।
 काफिया, स पु (अ) अत्यानुप्रास ।
 —तग करना, मु, अतीव सतप्-उद्दिज्-
 अर्द्ध (प्रे) ।
 काफिर, स पु (अ) अयबन (इस्लाम)
 २ नास्तिक, अनीश्वरवादिन् ३ क्रूर ४ दुष्ट ।
 काफिला, स पु (अ-ल) सार्थ, यात्रिक-
 समूह ।
 काफ़ी, वि (अ) पर्याप्त, अन्यूनाधिक, समर्थ,
 उचित, अल्प (अव्य चतुर्थां के साथ) ।
 काफ़ी, स स्त्री (अ) दे 'कहवा' ।
 काफूर, स पु (फा) कर्पूर २, घनसार ।
 —होना, मु, तिरो भू ।

काबिज, वि (अ) अधिकारिन्, प्रभु
 २ मलयबोधक, गरिष्ठ ।
 काबिल, वि (अ) योग्य, समर्थ ।
 कायू, सं पु (तु) अधिकार, प्रभुत्व, वरा ।
 —करना, कि स, वरा नी (भ्या उ अ) ।
 काम, सं पु (सं) इच्छा, अमिलाप, मनो
 रथ, आकाक्षा २ शिव ३ मदन, काम
 देव ४ मैथुनेच्छा ५ इन्द्रियाणा विषयप्रवृत्ति
 (स्त्री) ६ चतुर्वर्गैः प्रयतम् ।
 —आतुर, वि (सं) कामार्त्त, अनगतस,
 विभुर ।
 —केलि, स स्त्री (स पु स्त्री) कामक्रीडा,
 विहार, विलास ।
 —कर, सं पु (सं) वरपवृक्ष ।
 —देव, स पु (स) काम, मदन, स्मर,
 वदर्प, अनग, भगवथ, मनसिज, मनोज,
 कुसुमवाण, पचशर, मार, मीनधेतन,
 मकरध्वज, पुष्पधन्वन्, आत्मभू ।
 —धेनु, स स्त्री (सं) कामदुषा, कामदा ।
 —रिपु, सं पु (सं) कामारि, शिव ।
 —रूप, स पु (स) प्रान्तविशेष, असम
 प्रान्त । वि, स्वेच्छारूप २ मुरूप ।
 —शास्त्र, स पु (स न) वात्स्यायनप्रणीतो
 ग्रन्थविशेष २ कामविज्ञानम् ।
 काम, सं पु (सं कर्मन् न) कार्य, कृत्य,
 क्रिया २ व्यापार, व्यवसाय ३ उद्यम,
 लोभो ४ प्रयोजनम्, लोभोद्यम ५ उपयोग,
 व्यवहार ।
 —आना, कि अ, प्र उप, -युज् (कर्म),
 व्यवह-व्याप्त (कर्म) । मु, वीरगति प्राप्
 (स्वा उ अ) ।
 —काज, स पु, कार्य, अर्थ, व्यवसाय ।
 —काजी, वि, उद्यमिन्, लोभोगिन् ।
 —चलाऊ, वि, उपयुक्त, उपयोगिन् ।
 —चोर, वि, अल्प, वर्ण-यविमुख ।
 —तमाम करना, मु, मृ निषूद-नश-व्यापद
 (प्र), इन् (अ प अ) ।
 कामना, सं स्त्री (सं) इच्छा, आकाक्षा ।
 कामयाव, वि (फा) सफल, कृतकार्य ।
 कामयाबी, स स्त्री (फा) सफलता, कुल
 कार्यता ।
 कामरी, सं स्त्री, दे 'कवल' ।

कामला, स पु (सं कामल) पाण्डु, पाण्डु रोग ।

कामिनी, स स्त्री (सं) सुन्दरी, नारी २ सुरा ३ कामवदुला नारी ।

कामिल, वि (का) सं-पूर्ण २ दक्ष, योग्य ।

कामी, वि (स कामिन) लपट, कामासक्त, कामाध, कामन, अमीक, कामातुर, कामुक २ अनुरक्त, आसक्त, सन्नेह, सेविन् (समा साग में) ४ हृच्छुक, हृष्ट, ससृह ।

स पु, अमि (मी) व, क (का) मन, वस्त्र, कामुज २ चन्द्र ३ कपोत ४ चक्रवाक ५ चक्र ।

कामुक, वि (स) दे 'कामी' वि, 'कामी' स पु (१) ।

कामोद्दिगन्, सं पु (अ) हास्यरसाभिनेतृ (पु), वैहासिक ।

कामोडी, सं स्त्री (अं) सुखात्-सयोगात्, - रूपक नाटकम्, प्रहसनम्, भाणिका, दुर्भटिका ।

कामोद, स पु (स) रागभेद ।

कामोद्दीपक, वि (सं) बाजीकर, कामाग्नि दीपन ।

काम्य, वि (स) स्वरणीय, वाद्यनीय २ सुन्दर, मनोह ।

काम्या, स स्त्री (सं) हृच्छा, कामना, वाञ्छा ।

काय, सं स्त्री (सं पु) शरीर, देह २ समुदाय ।

कायदा, सं पु (अ) नियम, व्यवस्था, रीति (स्त्री), शिष्टाचार ।

कायम, वि (अ) निश्चल, स्थिर, देशेष्ट २ स्थापित ३ निर्धारित ।

—सुक्ताम, स पु (अ) प्रतिनिधि, प्रतिपुरुष २ उत्तराधिकारिन् । वि, स्थानापन्न ।

कायर, वि, दे 'कातर' ।

कायल, वि (अ) छिन्नसहाय, जालप्रदाय ।

कायस्थ, स पु (स) परमेश्वर २ जीव ३ नातिभेद । वि, शरीरस्थ ।

काया, स स्त्री (स काय पु) शरीर, देह, विग्रह, क्लेशवरन् ।

—वक्ष्य, स पु (स) पुनर्यावनोत्पादनम् २ पुनर्यावनोत्पादनविक्रित्वा ।

—पलट, सं पु, बृहत्परिवर्तन, महापरिवर्तन २ शरीररूपरेखापरिवर्तनम् ।

कायिक, वि (स) शारीर (-री स्त्री), शारीरिक-दैहिक (-की स्त्री) ।

कार, स पु (स) कार्य, क्रिया २ कर्तृ, अनुष्ठान् ३ अधरवाचकप्रत्यय (उ च=चकार) ४ ध्वनिवाचकप्रत्यय (उ फूरकार) ।

कार, स पु (फा) कार्य, व्यवसाय ।

—करमा, कि स, नियोग अनुस्था (भ्वा प अ) ।

—खाना, सं पु, शिल्प, -शाण्य-गृहम्, पण्य निर्माणस्थानम् ।

—वार, स पु, व्यवसाय, व्यापार ।

—रवाई, स स्त्री, क्रिया, कार्यम् २ गुप्त चेष्टा-क्रिया ।

—साज, वि, कुशल, दक्ष ।

कारक, वि (सं) कर्तृ, अनुष्ठान् विधान् २ क्रियया स्वस्वसूचक द्वान्द्वस्यभेद (उ कर्तृ कारक इ व्या) ।

कारचोच, स पु (फा) सूचीकर्मापनीविन् २ सूचीकर्माधार ।

कारचोची, वि (फा) सूचीकर्म शुक । (सं पु) सूचीकर्मन् (न), शिल्पम् ।

कारट्टन, स पु (अ) हास्यरमाखेरयम्, हास्यजनक चित्र, उपहासचित्रम् ।

कारण, सं पु (स न) हेतु, निमित्त, मूल, बीज, योनि (स्त्री) निदानम् २ साधनम् ३ कर्मन् (न) ४ प्रमाणम् ५ विष्णु ६ शिव ७ पूजाते मद्यपानम् (ताविक) ।

कारतुस, स पु (पुनं कारट्टम्) गुलि (स्त्री) गुलिका, आग्नेयचूर्णनाडी-दि (स्त्री) ।

कारनिस, स स्त्री (अ) भित्तिदन्तक, कुल्य श्यम् ।

कारा, स स्त्री. (म) निरोध निरोधनम्, बन्धन, आसेध, प्रमह २ क्लेश, पीडा ।

कारागार, स पु (स पु न) कारा, बन्दा लय, बदि, -शाण्य गृहम्, कारागृह, चार, चारक, गुप्तिस्थानम् ।

कारावास, सं पु (स) दे 'कारागार' ।

कारिदा, स पु (फा) कारवर, परकार्य साधक, प्रति, हस्त-निधि २ कर्मचारिन्, राजपुत्र, अधिकारिन् ।

कारी, सं. पु. (मरिन्) कारक, कर्तृ ।
 कारी, वि (का) धातु, प्राश्न ।
 कारीगर, सं. पु. (का.) शिल्पिन्, कार, शिल्पकार । वि., शिल्पपुराल ।
 कारीगरी, सं. स्त्री (का) काव्यता, शिल्प कौशल, दक्षता २ मनोहररचना ।
 कारिणिक, वि (म) दे 'करुणामय' ।
 कार्ही, सं. पु (क) मूमानात्मकस्य सिद्धस्य धनाभ्युदयस्य दिव्यपुत्र । वि, कृष्ण, वदसं ।
 —काप्रजाना, सं. पु, असौम्यन, अग्नि-सपत् (स्त्री) ।
 कारहरा, सं. पु (क) मूत्रन् २ मूत्रदात्रन् ।
 कारोबार, सं. पु, दे 'कारवार' ।
 कार्क, सं. पु (क) कृषी- , पिधानम् ।
 कार्कस्य, सं. पु (सं. न) कर्कशता, कठोरता २. दृढता, दृढत्वम् ३ निर्दयता, क्रूरता ।
 कार्ड, सं. पु (अ) पत्रम् २. स्थूलकर्मणम् ।
 कार्तवीर्य, सं. पु (सं.) वृत्रवीर्यपुत्र सूर्यराजः, अर्जुन ।
 कार्तस्वर, सं. पु (सं. न) कनक, सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्यम् ।
 कार्णिक, सं. पु. (सं.) बाहुल्य, जलं, कौमुदः ।
 कार्णिक्य, सं. पु (सं.) लन्दः, कुमारः, शिल्पिनाहन, दासशोचनः ।
 —कर्म, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, गिरिजा ।
 कार्वन, सं. पु. (क.) प्रणारः, कार्वनम् ।
 कार्थोन्निक, वि (अ.) प्रणारिक, कार्वनिक ।
 —कर्मिणः, सं. स्त्री, कार्वनिकान्वातिः (स्त्री) ।
 कार्मुक, सं. पु (सं. न) चाप, दे 'धनुष' ।
 कार्य, सं. पु (सं. न) कर्मन् (न) कृत्य, क्रिया २. व्यवसाय ३. परिष्कारः ४. प्रयोजनम् ।
 —अप्यङ्ग, सं. पु. (सं.) अधिकारिन् २. कर्मविद्वाक ।
 —कर्ता, सं. पु (सं.—र्तु) कर्मकारिन् २. राजमृत्यु ।
 कार्ववाह, सं. स्त्री, दे 'कारवार' ।
 कार्, सं. पु. (सं.) सनय, बेडा, शिष्टः, अनेहम् (पु.) २. वृत्तः ३. धनः, धनदूता ४. अवसरः प्रसंग ५. दुर्निष्ठ, दुष्कालः

६ कृष्णपत्रः ७ शनैश्चरः ८. शिव ९. लोहः १०. अन्तु ।
 —कूट, सं. पु (सं. पु न.) घोरविष, प्राश्न-हरणरत्नम् ।
 —कोठरी, सं. स्त्री, कालकोष्ठः ।
 —कूप, सं. पु (सं) सनयातिपात्र, व्यङ्ग्यः २. निर्वाह ।
 —चक्र, सं. पु (सं. न.) सनयनरिवर्तः २. भाग्यचक्रम् ३. अक्षरभेदः ।
 —क्ष, सं. पु, (सं.) काण्विद्, २. दैवज्ञः ३. कुहू ।
 —यापन, सं. पु (सं. न) दे 'कालक्षेप' ।
 —रात्रि, सं. स्त्री. (सं.) मीमा कृष्णा च निद्रा २ प्रणयरात्रि ३ मृत्युनिद्रा ४. दीना-वलीनिद्रा ५. मनुष्यजीवने सतततत्रिवर्षं मत्तमाससप्तदिनागन्तरमवा रात्रिः ।
 —सर्प, सं. पु (सं.) महाविष, अण्डरं, कृष्णमर्षविशेषः ।
 काला, वि (सं. काल) कृष्ण, रसान, अस्तिव, नील २ अन्धकारानय, विनिराश्रय, २. दूषित ४. घोर ५. भयकर ।
 —आजार, सं. पु, काण्वरः ।
 —कल्टा, वि. अतिकृष्ण ।
 —चौर, सं. पु, मगधवन्द्यः २. अतिदुष्टदुःखः ।
 —जीरा, सं. पु, कृष्णजीरकः, काष्ठा, कृष्ण ।
 —जनक, सं. पु, कृष्णवाम्, सौवर्णम् ।
 —जाग, सं. पु, कृष्ण-जाग-सर्पः २. प्राश्नः शत्रुः ।
 —पानी, सं. पु, दीनान्तरे निर्वाणनम् २. अवनानादयो दीनविशेषः ।
 कालेकोसौ, कि. वि. अतिदूर-रे ।
 —मुह होना, पु, निर्द-अधिकिर् (कर्म०) ।
 कालानीत, वि. (सं.) अनवसर, असनोचित ।
 कालापन, सं. पु. (हि. काष्ठा) कृष्णता, रसानया, मेचकता ।
 कालिंदी, सं. स्त्री. (सं.) यमुना, कलिन्दवनया ।
 कालिक, वि. (सं.) सानयिक, कालविषयक २. समनोचित, प्राप्तकाल ३. अनुकाल, नियतकाल ।
 कालिका, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा, चण्डी २. मत्ता-बी ३. कनीनिद्रा ४. रसानयनयया ।
 कालिख, सं. स्त्री (सं. कालिका) कब्जं,

मधि -सि (स्त्री) २ कल्क, लछन, दोष ।
 कालिदास, सं पु (सं) सरवृत्तकविशिरोमणि,
 रघुकार, विक्रमसभाया सप्तभरतनम् ।
 कालिमा, सं स्त्री (सं कालिमन् पु)
 कृष्णिमन् (पु), कालदा, श्यामना २ ममी
 ३ लछन, दोष ४ अक्षर ।
 कालिय, सं पु (सं) यमुनावनिदृष्णमर्ष-
 विशेष ।
 —मर्दन, सं पु (सं) श्रीकृष्ण ।
 काली, स स्त्री (सं) चण्डी, दुर्गा २ पार्वती,
 गिरिजा २ मसी । सं पु दे 'कालिय' ।
 वि स्त्री, कृष्णा, श्यामा ।
 —वर्षीसी, सं स्त्री, कालकास ।
 —घटा, सं. स्त्री, (स) काद्विनी, श्याम-
 घनश्रेणि (स्त्री) ।
 —दृष्ट, सं पु (सं. + हि) यमुनाया जलाव
 च्चित्रोप ।
 —मिर्च, सं. स्त्री (सं कालमरि (री) चम्)
 कृष्ण, ऊषण, कालव, वेतवम् ।
 —कालीन, वि (सं) समय बैला-काल, मव-
 धिन् २ सामयिक, प्रासायिक । (टि यह
 शब्द समासान्त में ही प्रयुक्त होगा है) ।
 कालाङ्ग, सं स्त्री (हि काला) कृष्णा,
 श्यामना २. मसी ३ कञ्जम् ।
 कालपतिक, वि (सं.) सकल्पज, मन कल्पित,
 उद्भाविन, कृत्रिम, कृतक ।
 काल्य, वि (सं) काल-ममद-अवमर, उषिन-
 योग्य-अनुकूल, सामयिक । सं पु, प्रमात,
 विभाज, प्रत्युष ।
 कालया, स स्त्री (स) १-२ गर्भाधानार्हा
 नारी धेनु (स्त्री) ।
 कावा, सं पु (पा) वृत्ते अश्वभ्रानगन्
 २ मण्डल, वृधम् ।
 कावेरी, सं स्त्री (सं) दक्षिणमातरस्य प्रसिद्ध
 नदी २ वेदया ३ हरिद्रा, पीतिका ।
 काव्य, सं. पु (सं. न) कविता, कवि-
 कृति (स्त्री), सरसप्रबन्ध २ रसात्मकं
 वाक्यम् ३ कविताप्रबन्ध ।
 काश, अन्य (अ) अपि नाम, प्राथये,
 कामये ।
 काश, सं. पु (सं. पु न) काश, अमर-
 पुष्पक, वनवासक २. काश, क्षवधु ।

—धस, सं. पु, दे 'दमा' ।
 काशिका, वि (सं.) प्रकाशिका । स स्त्री (सं)
 काशी २ अष्टाध्यायीवृत्ति (स्त्री.) ।
 काशी, सं स्त्री (सं.) शिवपुरी, वाराणसी,
 तप स्थली ।
 —फल, सं. पु (सं न) कृष्माड -रव, पीत,
 पुष्पा-फला ।
 कारत, सं. स्त्री (फा) वृधि (स्त्री), कर्षण,
 वृधिवर्मेन् (न) ।
 —शर, सं. पु (फा) कर्षक, कृषाण ।
 काशाय, वि (सं.) गैरिक रक्तधातु, वर्ण । सं.
 पु, गैरिकरजितवस्त्रम् ।
 काष्ठ, सं. पु (सं. न) दे 'काठ' ।
 —कीट, सं पु (सं) वृण ।
 काष्ठा, सं. स्त्री (सं) दिशा, दिग् (स्त्री)
 २ नीमा ३ शिखर. -र ४ चन्द्रकला
 ५ अष्टादशनिमेषात्मक काल ।
 काय, स. पु (सं.) क्षवधु २ काश, वनवासक ।
 कामनी, स स्त्री (फा) गुल्मभेद २. तस्य
 बीजम् ३ नील श्याम, वर्ण ।
 कामार, सं पु (सं.) सरोवर, महाजलाशय ।
 काशील, सं. पु (सं न) धातुशेखर, शोधनम् ।
 कास्तिरु, वि (अ) दाहक ।
 —सोडा, सं पु (अ) दाहकविघ्नार ।
 कास्मिकरे, सं. स्त्री (अ) सृष्टिरदिन ।
 काहिल, वि (अ) अन्त, भद्र ।
 किंकर, सं. पु (सं.) शृत्य, सेवक, प्रेष्य,
 चेट २. क्रीनदाम ।
 किंकर्तव्यविमूढ, वि (सं.) सभ्रान्तमनस्,
 व्याकुलचित्त ।
 किंकिणी, सं स्त्री (सं) क्षुद्र, घटी-पटिका
 २ काची वि (स्त्री), रशना ।
 किंचिद, वि (सं) स्तोक, अल्प ।
 किञ्जल्क, स पु (सं) पद्म-कमल, केसरः
 २ कश्मिरफल, कञ्जकम् (क) ३ नागवेमः ।
 किन्तु, अन्य (सं.) परन्तु, तु, पुन २ अपि
 तु, प्रत्युत, पुन, परन्तु ।
 किंजर, सं. पु (सं.) किपुरूप, शुरगवदन,
 अशमुल ।
 किपुरूप, सं पु (सं.) किंजरः २ कुम्भलीन
 ३ वर्गमकर ।

क्विवदती, स स्त्री (सं) जन प्रवाद श्रुति
 (स्त्री) कर्णोपकरणिना ।
 क्विवा, अव्य (स) वा, अदवा यद्वा, विमुक्त ।
 क्रिशुन, स पु (स) पलाश दे 'दाक' ।
 कि, कि वि (स स्मिन्) दथ कन प्रकारेण ।
 कि, अय (फा) यत् यथा, इति ।
 किचञ्चि, म स्त्री (अनु) प्रत्याप प्रत्यप
 नम् २ बल्ह ।
 किचक्चिचाना, कि अ (अनु) दगैर्दतान्
 नि'पीन् (चु) घृष (म्वा प मे) ।
 किष्ट, स पु (म न) धातुमलम् २ तैलादीना
 मलम् ३ कक मल शेषम् ।
 किनना, वि (म भियद्) किपरिमाण विमात्र
 २ अधिद बहु ।
 क्तिने, वि पु (म कति) किमन्याका ।
 किनव, म पु (स) दूतकार, अक्षदेविन्
 २ वचन ३ दुष्ट ।
 किताव, स स्त्री (अ) पुस्तक ग्रथ
 २ पत्रिका, पाज्या ।
 —का (कितावी) कीदा, स पु, ग्रथ पुस्तक,
 कीट । २ सदापाठिन् ।
 कितावत, स स्त्री (अ) लेख लेखनम् ।
 गत व—, म स्त्री पत्रव्यवहार ।
 क्विधर, कि वि, (स कुम्भ) क्व वरिष्मन् स्थ ने
 २ का दिशा प्रति, कस्या दिशि ।
 किन, सर्व (किन् वा वद्) के (पु), का
 (स्त्री) कानि (न) ।
 किनका, म पु (स कणिना) कणो, कणा
 क्षत लडुल धायम् ।
 किनारा, स पु (फा) तीर, तटम् २ उपांत,
 मान ३ वल्लभा त, अन्त ४ पार्श्व, पत्र
 ५ सीमा ६ अन्त ।
 —रना, सु दूरे स्था (म्वा प अ) परि
 त्यज (म्वा प अ) ।
 किनारी, स स्त्री (फा किनारा >) स्वर्ण-रत्न,
 चालाभरणम् ।
 किनारे, कि वि (फा विनारा) तारे, तट
 २ सीमायाम् ३ धृक्, दूरे ।
 —किनारे, अनु, यूल तः तीरम् २ सीमाम्
 अनु ।
 —लगाना, सु, समाप्त-सप्त (प्र) ।
 किन्नर, स पु (स) किपुरुष, देवयोनिभेद ।

किन्नरी, स स्त्री (स) किन्नरानैर्नारी ।
 किफायत, स स्त्री (अ) मितव्यय, अमुक्त
 हस्तत्वम् ।
 किजला, म पु (अ) प्रतीची २ मकानगरी
 ३ पूज्यनन ४ पितृ ।
 —नुमा, स पु (अ + फा) दिग्दर्शकयन्त्रम्,
 दिग्घटी दिग्घटिका ।
 किर्किरा, वि (स कर्करम् >) शार्करिल,
 सिक्किल ।
 किर्किरी, स स्त्री (स कर्करम् >) नेत्रपतितो
 धूल्यादिकण २ नसरणु अणुरणु ।
 किरच, स स्त्री (स कृति >) अचिदास्पृग,
 अयक्षमसक्ता छुरिका २ वाष्पवावादीना
 तीक्ष्णाग्र शवलम् ।
 किरण, स स्त्री (स पु) रश्मि मरोचि,
 दीधिति, मयूर, कर, अनु अभीष्टु ।
 —माली, स पु (स -लित्) मूय
 किरमिच, स पु (अ वैन्वस) शाग, शणपट,
 स्थूलपत्रभेद ।
 किरांची, स स्त्री (अ कैरेण >) वहन
 शकट -टम् ।
 किरात, स पु (स) अशिष्ट असभ्य, -वन
 २ वन्यजातिभेद ।
 —पति, म पु (स) शिव ।
 किराताशुनीय, स पु (स न) भारविप्रगीत
 महाकाव्यम् ।
 किराना, म पु (स क्रयणम् अथवा कीर्ण >)
 वाणिज्य, वणिक्वर्गम् (न) २ गधद्रयाणि ।
 किराया, स पु (अ) वहनमूल्य, तार्, आत
 (ता) र २ भाग, भाग्यम् ३ शृणि (स्त्री),
 शृवा ।
 —नामा, स पु, भाग्यकानम् ।
 किराये का टट्ट, स पु, वैतनिक, सवेनो
 दामिर ।
 किरायेदार, स पु (फा -यादार) भाग्यकवास्तिन् ।
 किर्रीट, स पु (स) दे मुकुट ।
 किलक, म स्त्री (हि किलकना) हर्ष-
 ध्वनि नाद स्वन, किलकिला २ कलम,
 नट नल ।
 किलकना, कि अ (स किलकिला >) किल
 किला-राव क, हर्षध्वनि क ।

किल्कारना, कि अ, दे 'किल्कना' ।
 किल्किलाना, कि अ (स किल्किल >) ।
 १ दे 'किल्कना' २ बोलाहल कृ ३ वाक्
 कल्ह कृ ।
 किलनी, स स्त्री (हि कीदा) । कुक्कुर,
 यूक यूका ।
 किला, स पु (अ) दुर्ग, कोट ।
 —दार, स पु दुर्गाध्यक्ष, कोटपाल ।
 —बदी, स स्त्री, दुर्गनिर्माणम् २ व्यूहरचना ।
 किल्कारी, म स्त्री (हि किल्कना) किल
 किला, हर्षनाश २ कल्कल ३ चोत्कार ।
 किल्लत, स स्त्री (अ) न्यूनता ।
 किल्ला, स पु (स कील >) बृहत्-स्थूल,
 कील शत्रु २ बृहत्, शूल-स्थूणा शलाका ।
 किल्ली, स स्त्री (हि किल्ला) अंगल, अंगलावध
 २ कील, कीलम् ३ शूल स्थूणा ।
 किल्विष, स पु (स न) पापम् २ अपराध
 ३ रोग ।
 किवाड, स पु (स कपाट) कपाट टी, अर
 न्म् २ द्वार, द्वार (स्त्री) ।
 —खटखटाना, कि स, कपाटम् अभिहन्
 (अ प अ) ।
 किशमिष, स स्त्री (फ) शुष्क, द्राक्षा
 गोस्वनी ।
 किशलय, म पु (स पु न) किशलय-य,
 पटव व, अक्षुर, प्ररोह २ मञ्जरी ।
 किशोर, म पु (स) एकादशावधिपचदशवर्ष
 पर्यंतवयस्को बाल २ बालक ३ पुत्र ।
 किशोरी, स स्त्री (स) तरुणी, बाला,
 बालिका, कन्या, युवती ति (स्त्री) ।
 किशती, स स्त्री (पा) नौका २ दीर्घचतुर
 सपात्रम् ३ मखा, धुटकीप ।
 किम्, सक् (सं कस्य >) किम् के रूपों से ।
 —तरह, कि वि, कथ, केन प्रकारेण, कथा
 रीत्या ।
 किस्लय, स पु-दे 'किशलय' ।
 कितान, स पु (सं वृथाण) कर्षक, कृषिक,
 कृषाण, क्षविक, क्षत्राजीव, क्षत्रिन् ।
 किम्बानी, स स्त्री (हि कितान) इषि (स्त्री),
 कृषिकर्मीन् (न) ।
 किस्ती, सर्व (हि कित) 'किम्' के रूपों के

साथ चिद्, चन वा अपि लगावर । [उ०
 किस्ती ने -कश्चिद्, कोप्रिय, कश्चन (पु),
 काश्चिद् (स्त्री), किश्चिद् (न) इ ।]
 —तरह, कि वि केन केन प्रकारेण, कथंचिद् ।
 किसे, सर्व (हि किम्) क वा किम्
 (द्वितीया), कस्मै, कस्यै, कस्मे (चतुर्थी) ।
 किस्त, स स्त्री (अ) देयभाग, ऋणारा,
 सुण्डिका ।
 —करना, कि स, अशाशत ऋण परिशुद्
 (प्र) ।
 —वार, कि वि, अशाश, अशाशत ।
 किस्म, स स्त्री (अ) प्रकार, भेद, जाति
 (स्त्री) २ प्रवृत्ति (स्त्री), स्वभाव ।
 किस्मत, स स्त्री (अ) भाग्य, भागधय, दिष्ट,
 दैवम् २ प्रान्त, भाग खण्ड ।
 सुसु—, वि, धन्य, पुण्यवत् ।
 कद—, वि, अधय, दैवहतक ।
 —अजमाना, सु, भाग्य परीभ (श्वा आ
 से) ।
 किस्मा, स पु (अ) कथा २ वृत्तात्
 ३ कल्ह ।
 की, प्रत्य ('का' वा खा) दे 'का' ।
 कीक, स स्त्री (अनु) चोत्कार, उन्मोश ।
 कीकट, स पु (स कीकटा) मगधप्रदेश
 २ तत्रत्वानार्थजाति (स्त्री) वि०, निर्धन
 २ कृपण ।
 कीकर, स पु (सं किंकिरात्) दीर्घवण्टक ।
 कीकम्, स पु (स न) अस्थि (न),
 हड्डम् २ कीटभेद । वि, इट, कठिन ।
 —मुर, स पु (सं) स्त्री, पशुिन् ।
 कीचक, स पु (सं) सरभो वश, सच्छिद्रो
 वेणु । २ किराणराजस्य दयाल ।
 कीचद्, स पु (स चिचिन्) पक-क, जवान
 ल, अक्वील, कदम, शाद, निपदर ।
 कीट, स पु (स) कीटक, कृमि, किमि,
 नीलगु ।
 कीट, सं स्त्री (स किट्) घृततैलादीनां
 मलम् ।
 कीदा, स पु (स कीट) दे 'कीट' ।
 २ सर्पगदील, सरीसृप ३ सर्प, अदि
 (पु) ४ रत्नपा, जलीका ।
 —लगाना, कि अ, कीट मधु (कर्म) ।

कीर्त्ती, स स्त्री (हिं रोडा) धुदकी
२ पिपील्का ३ चटका ।

कीना, स पु (फा) द्वेष वैर, द्रोह ।

कीप, स स्त्री (अ कीफ) निवाप ।

कीमत, स स्त्री (अ) मुख्य अर्थ ।

कीमती, वि (अ) महार्थ बहुमूल्य ।

कीमा, स पु (अ) कृत्तनासम् ।

कीमिया, स स्त्री (फा) रसायनम्, रस,
विद्या ज्ञान वनम् ।

कीर, स पु (स) शुक दे 'तोता' ।

कीर्त्तन, स पु (स न) गुणकथनम् २ इश
गुणानम् ।

कीर्त्ति, स स्त्री (स) यशम (न), विख्याति
विश्रुति (स्त्री) अभिलषया समाख्या ।

—मान्, वि (स-मत्) वशस्विन्, विष्टन,
निरयान ।

कील, स स्त्री (स पु) कीलक, शकु, लोह,
कील शकु २ लक्ष्मणनामक नासिकामुष्णम्
३ मुजुरसोक ।

कीलक, स पु (स) कील, कोला २ नाग
दान, भारभण्डि (स्त्री) ३ महाकील, शूल
४ स्थाणु, स्थूणा ५ अन्यमन्त्रप्रभावनशको
मन्त्र ।

कीलना, कि स (स कोलनम्) कोल् (जु)
कोलै इप् (क्त् प अ) २ अभिचरप्रभाव
नाश (प्र) ३ (सर्पादक) वशीकृ ।

कीला, स पु (स) दे 'कला' ।

कीलाल, स पु (स न) अहतम् २ जलम्
३ रक्तम् ४ मधु (न) ।

कीलित, वि (स) (फालै) बद्ध, इवीकृत,
पिनद्ध ।

कीली, स स्त्री (स कोल >) कर्षणी, व्या
वर्तनकील, वलयकीलक २ कुञ्चिका, जड
घाटकम् ३ विवर्तनकील ४ बील ५ अक्ष
रत्ना, अक्ष ।

कीश, स पु (स) कपि २ खल ३ सूर्य ।

कुअर, स पु (स कुमार) पुत्र, मृतु (पु)
२ बलक ३ राजकुमार ४ पुत्रराज ।

कुआरा, वि पु (स कुमार) अकृतविवाह ।

[-रो (स्त्री) -अरिणीना, अनूडा कुमारो ।]

कुइ, स स्त्री, दे 'कुनुरिनी' ।

कुकुम्, स पु (स न) कारनीरज, दे 'वेसर'
२ दे 'रोनी' ।

कुचन, स पु (स न) सकोच, मकोचनम्,
संशयान् ।

कुचिका, स स्त्री (स) ताला, तालिका,
साधारणी ।

कुचित, वि (स) दे आकुचिन् ।

कुज, स पु (स पु न) निहृज-ज, लता,
गृह मद्य ।

—कुटीर, स स्त्री (म पु) लतागृह प^३
दाला, कुञ्जगृहम् ।

—विहारी, स पु (स रिन्) शीकृणा ।

कुजडा, स पु (स कुज >) हरितकविकर
आतिविशेष २ शकविकथिन् ।

कुजर, स पु (स) मज, दिप २ कर ।
(रि समासान्त में 'कुजर' श्रेष्ठनामक है—
नरकुजर - श्रेष्ठपुरष) ।

कुजी, स स्त्री (स कुचिका) तारी, उदधा
दक-क, अजुद, साधारणी । २ दाका,
व्याख्या ।

कुठ, वि (स) कुठित, धाराहीन, तीक्ष्णता
रहित २ मूर्ख ।

कुठिन, वि (सं) कुठीकृत, इतद्वैद्य २ निष्प्र
भौकृत ३ अनुपयोग्य ।

कुड, स पु (स कुण्ड -ड-डो) पल्लव-ल,
अवनसरस (न), वेशन, धुद्रजलाशय २
अग्नि-यज्ञ-हवन, कुण्डम् ३ स्थाली ४ विशा
लमुज्ज्वलतिगमौरपावम् (हिं मटका) ५ सप्त
वाया जातरपुत्र ६ लौहशिरस्सु ७ मानमेद ।

कुडल, स पु (स पु न) का-अवगा वेशन,
कर्गभूषणमेद २ बलय ३ परिदेव-द,
तेजोमदलम् ४ आवेशनम्, व्यावर्तनम् ।

—करना वा मारना, कि स, वज्रणे पुना, क,
व्याघ्र परिवेश (प्रे) ।

कुंडलिया, स स्त्री (स कुण्डलिका) मात्रिक
रुद्रोमेद ।

कुडली, स स्त्री (स) मिष्टानमेद (१६
अलेनी) २ कुण्डल, चूर्णान्तल ३ वन्म-
पत्र, पत्रिका ४ सर्पस्य वज्रुलकारस्थिति (स्त्री) ।

कुडा, सं पु (सं कुण्ड) जीवति मर्तरे
आरज ।

कुडा, स पु (सं कुण्डलन् >) लोह, ग्रहणी
 धरणी २ अगल-ल-ला-ली ।
 कुंदा, म पु (स कुण्ड-न्म्) विशालमुख
 नतिगम्भीरपात्रम् (हि मटका) ।
 कुटिन, म पु (स न) विदर्भराजधानी ।
 कुटी, स स्त्री (म) कुण्डी, खण्ड ।
 —कुटा, म पु, कुण्डीदण्ड-घो ।
 कुटी, स स्त्री (हि कुण्ठा) द्वार-दृखला
 २ अगल-ल-ला-ली ३ शूला मधि-ग्रदि ।
 कुत, स पु (स) प्राप्त, तोमर ।
 कुतल, म पु (म) केश शिरोरुह ।
 कुतिभाज, स पु (स) भाजप्रदेशात्मक,
 न्याया पालकपितृ (पु) ।
 कुती, स स्त्री (स) धृथा, पाण्डुपत्नी, सुधिष्ठिर
 जननी ।
 कुद, स पु (स पु न) मदापुत्र, वन
 हाम २ कमलम् ।
 कुंद, वि (पा) कुण्ड, तीक्ष्णभारहिल
 २ मन्द, षट् ।
 —जहन, वि (पा) मन्दमति, मूल ।
 कुदन, म पु (स कुन्द >) वज्र सुवर्गम्
 वि भास्वर २ पवित्र ३ नीरोग ।
 कुदा, स पु (पा) बृहत्-स्थूल-वाद्यम् २
 अन्वयस्य काष्ठमयो-ररमाण ३ काष्ठनिगट
 ४ मुष्टि (स्त्री), वारण ।
 कुंदी, म स्त्री (पा कुन्दा >) सुदरेवंजला
 वनम् २ ताडनम् ।
 कुभ, स पु (स) घट, घर्ष, कल्प शा
 शम् २ गण्डुम्, इतिशिरस पिण्डद्वयम्
 ३ कुम्भकप्राणायाम ४ शारदापिक पर्व
 विशय ५ रात्रिविष्टेप (न्यो) ।
 —कुण, स पु (स) रात्रिगणुप ।
 —योनि, म पुं (स) अमरयो मुनि ।
 कुम्भक, स पु (स) कुम्भ, प्राणशान्ति वायु
 सम्पन्नम् ।
 कुम्भी, स स्त्री (स) कुम्भ-कुम्भ-वट ।
 —पाक, स पु (म) नरकविद्यय ।
 कुम्भी, स पु (स कुम्भिन्) गण २ नक्र
 ३ विपकीटभेद ।
 कुवर, स पु, दे 'कुवर' ।
 कु, अव्य (स) पापकुराम्पत्न्यादिषोडश
 मध्ययन् (उ कुर्वन् = पापकर्म इ) ।

कुञ्जी, म पु (सं कृप) अयु, प्रहि, अक्ट,
 सात अवन, कव ।
 —शोदना, मु, परान् पीड (जु) ।
 कुआर, स पु (स कुमार >) आशिन,
 शय, आश्रयण ।
 कुड्यी, स स्त्री (हि कुञ्जी) कृपा, कृपण,
 शानक, अयुक्त ।
 कुई, म स्त्री, दे 'कुमुदिनी' ।
 कुक, स पु (अ) पाचन, मूत्र, कर्ष,
 रक्षक ।
 कुकडी स स्त्री (स कुकडी) ताप्रचूनी
 २ शम्भ्व ३ मूनपती, तनुगुच्छ ।
 कुन्डर, स पु (अ) पचन पाक यन्त्रभेद,
 *कुवरम् ।
 कुकर्म, स पु (स न) कु, कार्य-कृत्य-वृत्ति
 (स्त्री) दुराचार, पाप दुष्टता ।
 कुकर्म, वि (म-मिन्) दुश्च, पापिन्, पाप,
 दुरात्मन् ।
 कुकुरमुत्ता, स पु (म कुकुरम्वम् >) दुष्टपत्र ।
 कुकुट, म पु (स) ताद्यचूड चरणायुष,
 कालप, उपावर, शिखण्डिक ।
 कुकुत्, स पु (म) श्वन्, दे 'कुत्ता' ।
 कुकि, स स्त्री (म पु) उदर, अठर, तुदम्
 २ गर्भाशय, मस्थानम् ३ पदार्थात्मनि
 ४ गुहा ।
 कुगति, स स्त्री (स) दुर्दशा, दुगते (स्त्री) ।
 कुच, स पु (स) स्तन, उरोप २ चतुक्-
 व स्तनाग्रम् ।
 कुचकुचाना, त्रि स (अनु कुचकुच) व्यय
 (त्रि प अ) त्रिद्व द्व ।
 कुचक्र, म पु (म न) बृट-वपद, ग्याय,
 उपचार, कर्ष-भवेत्प्र प्रथम ।
 कुचक्री, वि (सं-क्रिन्) उपचारक, कर्ष
 प्रव-यथोक्त ।
 कुचलता, त्रि स (अनु) क्षण (त प से)
 २ कृ (क व मे) विद् (म प अ)
 ३ भूरि त् (जु) ४ पादतलेन आहृ
 (अ प अ) ।
 कुचला, म पु (स कधीर) विप्राक, विप
 तिद्, रन्ध्रक, म्पीड, कालूट ।
 कुचाल, स पु (म कु+हि चाल) दुराचार,
 कुचर्या कदाचरणम् ।

कुचाली, वि (हि कुचाल) दुराचारिन्, दुर्वृत्त ।
 कुचेष्टा, स स्त्री (स) दुःचेष्टा, हानिकरोपस ।
 कुचैला, वि (स कुचेल) मलिनवेष, कुवसन ।
 कुच्छ, वि (स किञ्चित्) (मात्रा) अल्प, स्वल्प,
 रत्नीक, इषव, २ (सरवा) कतिचित्, कति
 पय, ३ किमान, यत्किञ्चन, ४ 'किन्' के
 तीनों लिंगों के रूपों के साथ चित्, चन,
 अपि लगाने हैं, ७ केचित्, काश्चित्, कानि
 चित् इ ।

—कर देना, सु, मत्रै बदीक ।

कुच, स पु (म) मगलप्रद २ वृष ।

कुचाति, स स्त्री (म) हीन-नोच-निवृष्ट प्राणि
 वृत् । स पु, दुष्कृतानि, अत्यन्, नाच ।

कुट, स पु (स कुटम्) गदा, कौवेरम् ।

कुट, स पु (स) दुर्ग, कोण २ टहन
 ३ पर्वत ४ कलश ।

कुटनी, स स्त्री (स कुटकी) दरा, मराक,
 प्राचिका, वनमक्षिका ।

कुटनपत्र, स पु (स कुटनी >) दूतीवृत्ति
 (स्त्री) २ उपचार, भेदबर्द्धनम् ।

कुटना, स पु (हि कुना) भगमक्षक,
 सचारक, दुःशादिन् २ विपुन ।

कुटनी, स स्त्री (स कुटनी) कुट्टिनी, दूती,
 दृष्टिका, सचारिका गमली, रतनाली ।

कुटिया, स स्त्री (स कुटी) उख २, पानं
 दाना, पर्वकुटी टि (स्त्री) कुटीर ।

कुटिल, वि (स) वक्र, निद्रा, अराल, मुग्ध,
 म्लान २ वञ्चक, प्रभारक, कपटिन्, छलिन् ।

कुटिलता, स स्त्री (स) कौटिल्य, वक्रता,
 निष्ठा २ छल, कपट, प्रभारता ।

कुटी, स स्त्री (स)) शुद्रगृहम्,
 कुटीर, म पु (स)) द 'कुटिया' ।

कुटुम्ब, स पु (स पु न) गृहनाम, पुत्र
 कन्वाराय, शानि (स्त्री), बाधवा, सतति
 (स्त्री) २ कुल, वरा, जाति (स्त्री) ।

कुटुबी, स पु (स-विन्) गृहस्थ, गृहपति,
 गार्हन् २ जाति (स्त्री), वपुः, नाथक ।

कुटुम्बिनी, स स्त्री (म) गृहिणी, गेहिनी,
 आर्या, सुतिनी, पुरभी ।

कुटुब, स स्त्री (स कु+हि टव) कुपवृत्ति
 (स्त्री), व्यसन, दुःख ।

कुट्टनी, स स्त्री (स) दे 'कुट्टनी' ।

कुट्टी, सं स्त्री (हि काटना) यवसलदा
 २ बालकेषु मैत्रीविच्छेद ।

कुठला, स पु (स कोष >) शुभधान्यकोष्ठ,
 मृन्मय लघुधान्यागारम् ।

कुठार, स पु (स) परपु, दुष्पा, वृष्टदनी,
 वृक्षभेदिन्, परक्ष ।

कुठाराघात, स पु (स) परपुमहार २ ताम्र
 प्रहार ।

कुठाली, स स्त्री (स कु+स्थाली >) लैजमा
 बननी सु (मूसा) भी ।

कुठौर, स पु (स कु+हि ठौर) कुस्थानम्
 २ अनवसर, असमय ।

कुडकुड़ी, स स्त्री (अनु) दे 'पुडपुडाना' ।
 कुडपुडाना, कि अ दे 'कुना' ।

कुडल, स पु, (रजास्वयया) आ, व्यावर्तन
 आनुचनम् ।

कुडुक, स स्त्री (फा कुक) कुकुगीरतम्
 २ अनवरा कुकुटी। वि, व्यस, निरर्थक ।

कुडौल, वि (स कु+हि डौल) दुर्दंशन,
 वदावार, कुरूप ।

कुडगा, वि पु (स कु+हि डग) अरिष्ट,
 असम्य, दुःशील ।

कुडन, स स्त्री (हि कुडना) मन्तराप,
 विसव्यथा ।

कुडना, कि अ (स कुड >) दुर्जन दत्ते (ना
 था), शुम् (दि प से), अन्त परितप्
 (दि आ थ) ।

कुडव, वि (स कु+हि डव) कुरूप, दुर्द
 र्शन २ आरष्ट ३ कठिन ।

कुडाना, कि स (हि कुडना) सप्त-उद्वि
 (मे) २ प्रदुप्-कुष (मे) ।

कुटरना, कि स (स कर्तनम्) चर्चिन इव
 (तु प से), दनै खण्ड (तु) ।

कुतक, स पु (स) हत्वाभास, मिथ्याश्लु,
 विन्दा, प्रवृत्त्य, विवाद ।

कुतकी, वि (स किन्) विवृण्वानादिन्,
 मिथ्याश्लुवादिन् २ वाचाल, वावदूकः ।

कुतिया, स स्त्री (हि कुटी) मरमा, कुहुरी,
 सुनी, सारमेयी, मयी ।

कुतुब, स पु (अ) भव, भुवगारा ।

—लुमा, स पु दे 'किरालुमा' ।

कुतूहल, स पु (स न) उत्कीर्णता कौतूहल,
कुतुक, कौतुक, जिज्ञासा २ अपूर्व दुर्लभ-
अदृष्ट, -वस्तु (न) ३ विनोद ४ आश्चर्यम् ।
कुत्ता, स पु (दश) कुक्कुर, श्वन्, शुनक,
कौलयक, मशक, सारमय, भृगदशक, मषण,
वकलागूल वृकारि, शयाल ।
कुच वी हृद(ल)क, स स्त्री आर्क, जल
सत्रास, अलकाभिभव ।
कुत्ती, स स्त्री (हि कुत्ता) दे 'कुतिया ।
कुत्तिसत, वि (स) अपम, अवम, गर्ह
निन्दित ।
कुदरत, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री) माया,
इश्वरशक्ति (स्त्री) ० अधिकार, प्रभुत्वम्
३ मंसार अगद (न) ४ रचना ।
कुदरती, वि (अ) नैसागक प्राकृतिक
मायामय २ स्वाभाविक सहज ३ दिव्य
पेश्वर (स्त्री) ।
कुदौव, स पु (स कु + हि दौव) छल,
विश्वासघात २ कुश्चिति (स्त्री) ३ कुस्थानम् ।
कुदान, स पु (स न) गर्हदानम् २ कुपा
प्राय दानम् ।
कुदान, स स्त्री (हि कुदान) कुदन, शप
था २ कुदनभूमि (स्त्री) शपातरालम् ।
कुदाना, कि स, कुदाना' के धातुओं के
प्रे रूप ।
कुदाल, स पु (स कुदाल) कुहार, अव
दारण, स्तम्भान्, खनित्रम् २ टक, पाषा
णदारण ।
कुदिन, स पु (स न) आपकाल, विपत्ति
समय २ दुर्दिनम्, ऋतुविपरीत दिनम् ।
कुदृष्टि, स स्त्री (स) पाप, टि (स्त्री)
२ अमगलदृष्टि ।
कुधर, स पु (स) पर्वत २ शैपनाग ।
कुनकुना, वि (स कटुष्ण) शपदुष्ण, क्षीण
बदोष्ण मन्दोष्ण ।
कुनया, स पु, दे 'कुटुम्ब ।
कुनाम, म पु (स-मन् न) अप, रत्याति
धीनि (स्त्री) ।
कुपय, स पु (स कुपय) वापय, कुमार्ग
० निषिद्धाचरणम् ३ कुभित्तमप्रदाय ।
कुपय्नी, वि (हि कुपय) कुपयिन्, कुमा
गिन्, कदाचारिन् ।

कुपय, स पु (स) दे 'कुपय' ।
—गामी, वि (स मिन्) दे 'वपयी' ।
कुपय्य, स पु (स न) रोगजनको आहार
विहारी ।
कुपात्र, वि (स न) अयोग्य अनर्ह, निर्गुण
अनधिकारिन् ।
कुपित, वि (स) कुद, रुष्ट ।
कुपुत्र, स पु (स) दे 'वपू' ।
कुप्पा, स पु (म कुपुप) कूपक कु
(स्त्री) चममय र्नेहपात्रम् ।
—होना, सु आप्याम् र्पाय् (भ्वा आ मे)
पीनोभू० ।
कुप्पी, स स्त्री (हि कुप्पा) चर्मरूपी लु
पुत्रप-कु (स्त्री))
कुप्पर, स पु (अ कुप) यवनेतरसप्रदाय
२ यवनमतविरोधिवाक्यम् ।
कुफल, स पु (अ) ताल, दारयत्रम् ।
कुव, स पु (स कुवज >) ककुद द, कु
(स्त्री) ।
कुवडा, वि (स कुवन) कुवजक, न्युवन, वक
पृष्ठ गडुल र, गडु । स पु कुवज १ ।
कुवडी, स स्त्री (हि कुवडा) ननशीर्षा
यष्टि (स्त्री) २ दे 'कुच्चा' ।
कुवानि, म स्त्री, दे 'कुदव' ।
कुबुद्धि, वि (स) मूर्ख, मन्दमति । स स्त्री,
मौख्य मूर्खता ।
कुबेर, स पु (स कुबेर) धनद, यशराज,
वैश्रवण, रागराज इच्छावसु नरवाहन
निधीश्वर ।
कुबेला, स स्त्री (स कुबल) कु, -समय बाल
२ अनवसर, अयोग्यकाल ।
कुवन, वि (स) दे 'कुवडा ।
कुच्चा, स स्त्री (स) कमदासी २ मषरा
नाम्नी वैवेचीदासी । वि क्वपृष्ठा, कुच्चा ।
कुभा, स स्त्री (स) काबुलनदी
२ भूमिच्छाया ।
कुमर, स स्त्री (तु) मैय, सहायता ।
कुमरुम, स पु (स कुमरम्) वैमर रम्,
वाग्मीरजम् ।
कुमुकुमा, म पु (तु० म) लाशा, -गोल -
वर्तुल २ अलङ्करणोपपुत्र वाचपीन
३ संवीर्णमुरा-कमदलु -करक ।

कुमाच, मं पु (अ कुमाश) कौशेयवस्त्रभेद ।
कुमार, सं पु (सं) बाल, बाल्य २ पुत्र
३ राजपुत्र ४ युवराज ५ कार्तिकेय
६ अप्राप्तयौवन ८ मननादय ऋषय
७, भारतवर्ष-पंम् । वि, दे 'कुआरा' ।

कुमारबाज, मं पु (अ + फा) चलकार,
किन्व ।

कुमारी, सं स्त्री (स) बाला, बालिका, कन्या
२ पुत्री, ३ राजपुत्री ४ द्वादशवर्षा कन्या
५ महा, घृतकुमारी ६ सीता ७ पार्वती ।
वि दे 'कुआरी' ।

कुमार्ग, मं पु (स) दे 'कुपथ' ।

कुमुद, सं पु (सं न) कैरव, चन्द्रकान्त,
कन्दार, शीतलक, इन्दुमल, चन्द्रिकाजल,
गन्धसौम, कुवलयम् २ कर्पूर -र ३ रूप्यम् ।

—वधु, स पु (सं) चन्द्र २ कर्पूर -रम् ।

कुमुदिनी, सं स्त्री (स) दे 'कुमुद'
२ कुमुदवत् सरस् (न) ।

—पति, सं पु (स) चन्द्र ।

कुमेरु, सं पु (मं) दक्षिणध्रुव ।

कुमोदिनी, सं स्त्री, दे 'कुमुदिनी' ।

कुम्भैत, स पु (तु) पिण्ड, वर्ण -रग
२ पिण्डाच ।

कुम्भदा, सं पु (स कुम्भाड) दे 'वाशीफल' ।

कुम्भलाना, कि अ (स कुम्भलान) म्लै-म्लै
(स्वा प अ), विभ्रू (कर्म), विवर्णी भू ।

कुम्हार, स पु (म कुम्भकार) कुलाल, चक्रिन् ।

कुम्हारिन, सं स्त्री (हि कुम्हार) कुलाली,
कुम्बारी, चक्रिणी ।

कुरग, स पु (स) हरिण, मृग २ कृष्णमार ।

कुरग, वि कुवर्ग, निम्बरग ।

कुरगी, स स्त्री (स) स्त्री, हरिणी ।

कुरड, स पु (म कुरुविदम्) काबलवगन्
२ माणिक्यम् ।

कुरकुरा, वि (अनु कुरकुर) भजुर, भिदुर ।

कुरवान, वि (अ) इष्ट, हुन, बलित्वेन दत्त ।

कुरवानी, सं स्त्री (अ) यज्ञ, याग २ बलि,
उत्सर्ग, आलम्ब ३ रागर्षण, परित्याग ।

कुरमी, म स्त्री (अ) आमदी, पीठ,
आमनम् २ ४ स्तम्भ प्राकार भवन, मूलम्
५ वक्षपरपरा ।

—नामा, सं पु (अ + फा) वश, वृष्ट -
परपरा ।

आराम—, सं स्त्री (फा + अ) विश्रामासदी ।

कुरा, सं पु (अ) दे 'पौमा' ।

कुरान, स पु (अ) यवनधर्मपुस्तकम् ।

कुराह, सं स्त्री (स कु + फा राह) दे 'कुपथ' ।

कुरीति, सं स्त्री (स) कप्रथा, कदाचार,
कुन्पवहार ।

कुरु, सं पु (सं) नृपविशेष २ प्रान्तविशेष
३ कुरुवशज ।

—क्षेत्र, स पु (स न) महाभारतनग्न्याम
भूमि (स्त्री) ।

कुरुप, वि (सं) विरूप, कदाकार, दुर्दर्शन ।
स पु (सं न) वैरूप्य, कदावार ।

कुरुपता, सं स्त्री (सं) दे 'कुरुप' सं पु ।

कुरेद (ल) ना, कि स (सं कर्तनम् ?)
उत् वि, लिख् (तु प से), तश् (स्वा प
से), सुर् (तु प मे), घृप् (स्वा प से)

त्वञ् (स्वा प वे) उत्खन् (स्वा प से) ।

कुर्व, वि (तु) ऋणहेतो अपह्न ।

—करना, कि स ऋणहेतो अपह्न (स्वा
उ अ) ।

—अमीन, स पु (तु + फा) ऋणाग्निहेतो
द्रव्यापहर्ता, राजकर्मचारिन् ।

कुर्वी, म स्त्री (तु कर्क >) (राजादया)
सम्पत्तिहरणम् ।

कुर्ता, म पु (तु) चोल, उरोबक्षम् ।

कुर्ता, स स्त्री (तु, कुर्ता >) आगिक् क,
कृपासक -रम् ।

कुरपर, म पु [रा कु (रु) पर] जागु (न)
चक्रिका २ कपोलि (पु स्त्री) कर्षणी ।

कुर्वानी, दे 'कुरवानी' ।

कर्री, म स्त्री (देश) कोमलास्थि (न) ।

कुर्स, म पु (अ), गुटवा, गुलिका, चटिका ।
कुर्सी, दे 'कुरसी' ।

कुरग, स पु (अ) रक्तशीर्षो घृसर खगभेद ।
२ कुक्कुट ३ दार्य-पो मनुष्य ।

कुलंजन, सं पु (सं) कुलज, कुर्णन, गध
मूल २ गावला नालता, मूलम् ।

कुल, सं पु (सं न) वश, अन्यथ, वशावली
लि (स्त्री) २, जाति (स्त्री) ३ समूह

४ गृहम् ५ वाममार्ग ।

—कलक, स पु (सं) कुलागार, कुलपासल ।
 —कानि, स स्त्री (स + हिं) कुल, गौरव
 मर्यादा ।
 —सारण, स पु (स) वशीकारक ।
 —पति, सं पु (स) गृहस्वामिन् २ दत्त
 सहस्रच्छात्राणां पोषकोऽभ्यापकश्च ३ विश्वविद्या
 लयस्य उपप्रधानाधिकारिन् (अ० वाइम
 चासलर) ।
 —वती, म स्त्री (स कुलवती) कुलीना,
 सद्गति, आर्या ।
 कुल, वि (अ) मकल समस्त निगिल ।
 कुलकुलाना, कि अ (अनु) कुलकुलध्वनि कु ।
 शीर्षे—, सु अनीव ध्रुव (दि प अ) ।
 कुलक्षण, स पु (स न) अपराजन्, दुश्चिह्न
 २ कदाचार, शर्णाचरणम् । वि दुराचारिन् ।
 कुलचा, स पु (फा वलीचा) सविष्णोऽपूप
 २ दे 'पूजी' ।
 कुलटा, स स्त्री (म) व्यवहारिणी, पुशली,
 वधनी ऋषा, स्वेरिणी निशाचरी, नधारण्डा ।
 कुलथ, स पु (स कुलथा) चतुष्पा,
 लोचनहिता, इक्षुप्रमादा ।
 कुलथी, स स्त्री (म कुलथ) बालकृत
 (शस्त्रमेद) ।
 कुल्फ, स पु (अ कुल्फ) दे 'ताला' ।
 कुल्फी, स पु (फा कुल्फ) ब्रह्महोता, बोलिका,
 शाकमेद । २ दे 'कुल्फी' ।
 कुल्फी, स स्त्री (हि कुल्फ) भूमपान
 यत्रस्य भुग्ननाली २ हिमसन्तानीनिर्माण
 पाम् ३ हिमसन्तानी, घनमधुरदुग्धम् ।
 कुलतुलाना, कि अ (अनु कुलतुलाना)
 दुःखार्थं अगानि आरुप (म्वा प अ)
 २ अत्राणि समीर स्वन् (म्वा प से)
 ३ वि-सप्र, युप् (म्वा प अ) ४ व्वाकुल
 (वि) भू ५ दे सुत्ताना' ।
 कुलतुलाहद, स स्त्री (पूर्व) दानै सर्पण,
 वृत्तिसदृशी चेष्टा २ कूलता कचपुरता ।
 कुलहा, स पु (फा कुलाह) शकाकार
 शिरस्त्रम् ।
 कुलदी, म स्त्री (दि कुलहा) शिशुशिर
 स्त्रम्, दे 'वनटोप' ।
 कुलोच, स स्त्री (तु कुलाच) दे 'छत्रांग' ।

कुलावा, स पु (अ) लोहपुट २ वदिश,
 मत्स्यवेधनम् ३ द्वारसधि (पु) ४ गृहलाग,
 अद् द (स्त्री) ५ आर्ल लम् ६ तलमार्ग,
 नाली ।
 कुलाल, सं पु (स) कुम्भकार २ वन-
 कुफद ३ उल्फ ।
 कुलिक, स पु (स) कल्यादि (पु)
 २ शिल्पिन् ३ कुलीन ४ कुलपति ।
 कुलिश, स पु (स) वज्र-क, पवि
 २ विद्युत् (स्त्री) ३ कुठार ।
 कुली, स पु (तु) भार, वाह हर, भारिक
 २ कर्मक (का) र श्रमजीविन् ।
 कुलीन, वि (स) महाकुल, अभिजान आर्य,
 सभ्य, सत्कुल ।
 कुलीनता, म स्त्री (स) आभिजात्य आर्दता ।
 कुलेल, स स्त्री (सं कल्लोल ~) क्रीडा, ग्ला,
 विहार केलि (पु स्त्री), विलास, लीला ।
 कुल्या, स स्त्री (स) धुद्रहृमिनदी
 २ धुद्रनदी ३ पर्व प्रणाली ४ कुलस्त्री ।
 कुल्ला, स पु (स ववर >) चहु, चतुक,
 चुतुक ।
 कुल्हड, स पु (स कुल्हरिवा) करण, धुद्र
 मृत्पात्रम् ।
 कुल्हाडा, स पु (स कुठार, दे) ।
 कुल्हिया, स स्त्री (दि कुल्ह) धुद्रवर्य,
 अतिधुद्रहृत्पात्रम् ।
 कुवलय, स पु (म न) नील, कुमुद वैरव-
 शशिनातम् २ नील, कमल-उत्पलम् ३ भू
 मण्डलम् ।
 कुवाच्य, वि (स) अदलील, अशिष्ट, अवाच्य ।
 स पु (स न) गाली, कुवचन अपशब्द ।
 कुवेणी, स स्त्री (स) मत्स्यकरणी
 २ कुम्भितवेणी ।
 कुवेर, स पु (स) कुवेर, दे ।
 कुश, स पु (स) कुश, दमं पवित्रम्
 २ जलम् ३ रामपुत्र ४ काल ।
 कुशान, स पु (अ) उपधान, उपवर्ह,
 उपवर्णम् ।
 कुशल, वि (स) दक्ष, चतुर, प्रवीण, निपुण,
 विशारद, विचक्षण २ श्रेष्ठ, भद्र ।
 स पु (स न) सुगं क्षेम, मंगलम्, भद्रं,
 शिवम् ३ कुशमादिन् ३ शिव ।

—क्षेम, स पु (सं न) सुख, क्षेम । मगलन् ।
 कुशलता, सं खा (स) पाठक, चातुर्य,
 निपुणा ।
 कुशा, म स्त्री (सं न्द्र इन्) दर्शन, कृपा,
 पवित्र, दार्ष्टिक हस्वगर्भं, बहिम (पु न) ।
 कुशाग्र, वि (सं) लीला, सूदन, नीत्र प्रर ।
 —बुद्धि, वि (सं) तीक्ष्णमति । सं स्त्री,
 तीव्र, नति (स्त्री) ।
 कुशाद्री, स खा (फा) विशालना
 > विस्तर, विस्तरि (स्त्री) ।
 कुशादा, म पु (फा) विस्तर आनर
 रहिन ।
 कुशामन, स पु (म कुश + कामन) कृष
 विर, दर्भासनम् ।
 कुशासन, म पु (म कुश + शम्नन्) कुशा
 मनम्, लसिराम्यवस्था ।
 कुशील, वि (सं) कुशल, दुर्घट, कुत्वभाव ।
 कुम्ता, म पु (फा - न) धातुभक्तन् (न) ।
 कुशती, सं स्त्री (फा) निपुण, मल्ल-बाहु-
 युद्धम् ।
 कुष्ट, स पु (सं न) शिव, श्वेत, नष्टक,
 दुःखेन् (न) > दे (कुम्) ।
 —नाशन, स पु (सं) वाराहीकन्द २ गौर
 मर्ष २ क्षारीयवृक्ष ।
 कुष्ठी, वि (म कुष्ठिन्) शिविन् ।
 कुम्भाण्ड, स पु (स) द कुम्हा ।
 कुम्भ, स पु (स) कुम्भ, मणति (स्त्री) ।
 कुम्भनय, सं पु (म) कुम्भ, अनुमममय
 २ अनवसर, अममय २ विपत्काल ।
 कुम्भाइत, स स्त्री (स कुम्भ + अ मादन)
 अनुममुत्त, अनवसर, कुम्भनय ।
 कुम्भाद, म पु (सं न) वारधुंथ, वृद्धि
 (स्त्री) ।
 —जीवी, दे 'सूदखोर' ।
 —पथ, दे 'सूदखोरा' ।
 कुमुम्भ, स पु (सं न) वलज्वन, महा-
 रत्नम् > दे 'जेमर' ।
 कुमुम्भा, स पु (सं कुमुम्भन्) कुमुम्भ
 रा २ अहिनेतमागिर्मिन मादकद्रव्यम् ।
 कुमुम्भ, सं पु (सं न) पुत्र, प्रभूत, सुन,
 सुन, मनीष, कुम्भनय (स्त्री, केवल बहु)
 २ लघुवाक्यनय म्भन् २ क्षीरजम् (न) ।

—पुर, सं पु (सं न) पाण्डिपुत्रम् ।
 —वाण, सं पु (सं) वामदेव ।
 कुसुमाचलि, स स्त्री (स पु) पुपाचलि ।
 कुसुमित, वि (सं) पुभित, वल्लुह, पुष्टिन् ।
 कुसुर, सं पु (अ) अपराध, स्फलितम् ।
 —पाण, वि अपराधिन्, दोषिन् ।
 कुहक, स पु (सं न) मया, अभिचार,
 इन्द्रनालन् २ इन्द्रनालिक २ वचक ।
 कुहकना, कि अ (अनु कुह) कुहरव क,
 दृज (स्था प मे) ।
 कुहनी, म स्त्री (सं कपोपि पु) कपो
 (पु स्त्री), कपोपि, कु (क) पौ ।
 कुहर, म पु (सं न) छिन्, विवर, विल,
 रभन् ।
 कुहरा, स पु (सं कुहरी) तुषार, खवाप,
 भूमिका, कुहडिका, कुम्भिका ।
 कुहराम, स पु (अ कुहर + आम) विलाप,
 अकन्दन, परिवेदना २ मनु सङ्गम् ।
 कुही, स स्त्री (सं कुधि) श्वेत, लान्तक,
 शदारन, कपोतारि ।
 कुहुक, पु, दे कुह (२) ।
 कुहुकना, कि अ, दे 'कुहकना' ।
 कुह, म स्त्री (सं) अनावस्था २ कोविन्-
 मरु, -आनाप ।
 कुँचा, सं पु (सं कुँचन्) शोभनी, समाईनी,
 कुँचकन् ।
 कुँची, म स्त्री (हि कुँचा) लघु-मुद्र-
 शोभनी-कुँचन् > लोमनयी मार्गनी
 २ तूलिका, वी, -तुली-तूलिका ।
 कुँच, स पु (सं कुचन्-चा) कुँच-चा,
 कलिक, कालिक ।
 कुँड, सं पु (सं कुडन्) लेखन नी २ सीता,
 हलस्ता २ 'सोद' ।
 कुँडा, स पु (सं कुडन्) (जलार्थ) वृह
 नृत्पात्रम् > द्रोणी-नि (स्त्री) २ कुमुन
 पात्रम् ।
 कुँडी, सं स्त्री (हि कुँडा) लघुपात्रा-द्रोणी-नि
 (स्त्री) २ पापा-चपक-कन् ।
 कुक, स स्त्री (अनु) कोकिल-कुञ्जितम्
 २ वेका, ममूरध्वनि २ दीर्घमधुरध्वनि ।
 कुकना, कि अ (हि कूक) कून् (स्था प
 से), कुहरव क, केका क ।

कृत्, स पु (सं कुकुर दे) ।
 कृच, सं पु (तु) प्रस्थान, प्रयाण, अपक्रम
 ० कटङ्गत्याग ३ याथा ।
 —करना, कि अ, प्रस्था (भ्वा या अ)
 प्रया (अ प अ) ।
 कृचा, स पु (पा च) वीची, दे 'गली' ।
 कृजन, स पु (स न) कृजित, कर्त्तव्य,
 रोगध्वनि, विरत, गुंजनम् ।
 कृजना, कि अ (सं कृानम्) कृन् (भ्वा
 प से) क (अ प अ), वि-र (श प
 से) २ गुज (भ्वा प से), दुहृ ।
 कृजा, स पु (पा) सनालीक करण ।
 —मिसरी, स स्त्री, अदंशोलाकारा घनीकृता
 सिता ।
 कृजित, वि (स) ध्वनित, स्वनित, गुञ्जित
 दहृत, कलरवपूर्ण ।
 कृट, सं पु (स न) छल, कषट-ट, माया,
 कञ्जना, प्रतारणा २ अमरय ३ शृंग विषाणम्
 ४ उच्छिष्टारम् ५ राशि ६ गृहार्थवार्ता,
 सनिद्र उपालम्भ ७ प्रवृत्तिका, गृहप्रश्न
 ८ लोहमुद्गर ९ हरिणनालम् १० प्रच्छ-
 धवेरम् ११ नगरद्वारम् १२ भग्नशृंगो
 कृपम् ।
 वि, अमर्यादादिन् ० प्रवञ्चक ३ कृषिम्
 ४ श्रेष्ठ ५ निश्चल ।
 —नीति, स स्त्री (सं) शैत्यर्मन् (न)
 —युद्ध, सं पु (सं न) कषटमग्राम ।
 —योजना, स स्त्री (स) कुचनम् ।
 —माची, स पु (म-क्षिन्) निष्प्रासादिन् ।
 कृट, स स्त्री (हि काटना वा कृटना) कर्त्तन,
 कृन्तनम् २ ताडन, कुट्टनम् ।
 कृत्, स पु (म न) छल, कषटम्
 २ उमेर, उच्छुगता ३ फाल-र, कुक्षिकम् ।
 कृटना, वि स (स कुट्टनम्) कुट्ट-कृण्-
 तट (सु), पिप् (र प अ) २ कृत्
 तट (तु) ।
 स पु तथा भव, कुट्टन, कृण्, गण्डनम्,
 पेषणम् २ ताडन, प्रहरणम् ।
 —योग्य, वि, कुट्टनीय, कृण्वित्यम् ।
 —बाला, सं पुं कुट्टक, पेषक, ताडयित् ।
 कृटा कृभा, वि, कुट्टिन, पिष्ट, ताडित ।

कृत्थ, वि (सं) शिग्रस्थ २ निश्चल
 ३ नित्य ४ गृह ।
 कृत्थ, स पु (सं) कृत् कषट-अश्व-
 देवन-सार ।
 कृत्थयान, स पु (स न) गुहार्थ-गृहार्थ-
 कथा-उपारयानम् ।
 कृत्थ, स पु (स कृ = राशि >) अवस्तर,
 उच्छिष्ट, मल, निरसारस्तुसम्भृ ।
 —करकट, स पु, दे 'कृडा' ।
 कृत्, म स्त्री (हि 'कृटना') कृत्, उर,
 कृति (स्त्री) कृत्वन क्षप-पा, कृत्वन,
 उरुत्व ।
 —कौट, स स्त्री कृत्वनकृत्वन, शपवलितम् ।
 कृटना, कि अ (सं कृटनाम्) कृत् (भ्वा
 आ से), उरु (भ्वा आ अ), बल
 (भ्वा प स) २ प्रमुत् (भ्वा आ से) ।
 स पु, दे 'कृट' ।
 —कौटना, वि अ, इतस्तत वक्ष्य । २ व्या
 याम कृ ।
 कृत्, सं पु (स) द 'कृत्' २ छिद्र, रश्मि ।
 —मङ्क, म पु (सं) व्यवहारगन्धिष,
 अपकृत्ति, अल्पदक्षिन् । २ अधुमेक ।
 कृत्, स पु (अ) पण्डित, कृत्नम् ।
 कृत्, स स्त्री (सं) कृत्क, क्षात्र २ दे
 'कृत्' ३ नामि (पु स्त्री), नामी,
 तुदिका ।
 कृत्, स पु (स कृत् >) कृत्-दम् ।
 कृत्, वि (स कृत्) निर्दय, निर्गुण, नृशत
 २ मयत् २ दुष्ट ४ अलम् ५ मूर्ख
 ६ कुलक्षण ।
 कृत्, स पु (स) कृत्प, दे 'कृत्' २
 विष्णो कृत्-क्षायनार ३ पृथिवी ४ ७
 कृत्पि प्राण-नाडी-आसन, विशप ।
 कृत्, स पु (स न) तप दीट, तीरम्
 ० समीप, निरट ३ कृत् ४ सरम् (न) ।
 कृत्, स पु (सं कृत् >) नितरादिष
 (म) ।
 कृत्, म पु (स) द 'कृत्' ।
 कृत्, सं पुं (स न) कुत्, कषटम् २ पापम्
 ३ मृत्कृत्पटो ४ व्रतभेद । वि, कृत्, कृत्,
 कृत्स्थ ।

कृत, वि (स) विहित अनुष्ठित रचिन
संपादित, निमित्त । स पु सययुगम् २ चतुर
शति सत्त्वा ।

—कार्यं, वि (स) सफल सिद्धार्थं ।

—कृत्य, आप्तकाम मफलमगौरय ।

—युग, स पु (स न) सययुगम् ।

—विद्य, वि (स) विद्वान्, पठित, बहुश्रुत ।

कृतक, वि (स) कृत्रिम, अनैसर्गिक अस्वा
भावक २ अनित्य (न्याय०) ।

—पुत्र, स पु (म) दत्तक, दत्तम सुत ।

कृतघ्न, वि (स) कृतघ्नारहित अकृतबोधम् ।

कृतघ्नता, स स्त्री (स) अकृतबेदिता उपकार
विस्मरणम्, कृतशताराहित्यम् ।

कृतज्ञ, वि (म) उपकारज्ञ कृतविद्,
कृतबोधन् ।

कृतज्ञता, स स्त्री (म) उपकारज्ञता, उप
कारस्मरण, कृतवादत्वम् ।

कृतान्, वि (स) सचिद्ध चिह्नित, अविन,
माक ।

कृतानलि, वि (स) बद्धानलि, बद्धकर ।

कृतात, स पु (स) मृत्यु २ यम ३ पापम्
४ देवता ५ पूर्वनामकमफलम् ६ सिद्धांत
७, शनैश्चरतार ।

कृतार्थ, वि (म) पूणकाम, द 'कृतकार्य'
२ सलुष्ट ३ निपुण ४ मुक्त ।

कृताख, वि (म) सदाख साख सन्नद्ध
२ अरुविद्, शस्त्रानपुण ।

कृति, स स्त्री (स) चेटा, क्रिया २ कमन्
(न) कायम् ३ इन्द्राणम्, माया ४ रचना,
ग्रन्थ ७ प्रहार ८ क्षति (स्त्री) ।

कृती, वि (स) कृतिन् कुशल, दक्ष पद
२ पुण्यात्मन्, पुचित्रन् ।

कृतोदक, वि (स) खान, कृतखान, कृतामिषक

कृत्ति, स स्त्री (स) मृत्तमर्न (न) २ त्वन्
(स्त्री) ३ भूत् ४ द 'कृत्तिका' ।

—वासा, स पु (स-वासन) शिव ।

कृत्तिका, स स्त्री (स) बहुला, आप्तदवा,
नक्षत्रविशेष ।

कृत्य, स पु (स न) अनुष्ठेय, कर्तव्य,
विधेय धर्म, आवश्यक कायम् २ कर्मन्
(न) ।

कृत्रिम, वि (स) कृतक, अनैसर्गिक ।

कृतत, स पु (स) कृतप्रत्ययान्तशब्द (उ
पाचक, भोक्तृ इ) २ कृतप्रत्ययविषयक व्या
करणप्रकरणम् ।

कृपण, वि (स) कदर्यं, द 'कजस' २ क्षुद्र ।

कृपणता, स स्त्री (म) कदर्यता, दे 'वजूसी' ।

कृपया, क्रि वि (स) सदाय, सहृप, सानु
कप, सानुग्रहम् ।

कृपा, स स्त्री (स) करुणा दया, अनुग्रह,
प्रमाण उपकार, अनुकपा २ क्षमा, मर्षणम् ।

—निधान, स पु (स न) दयानिधि ।
वि अत्यंतकृपातु ।

—पात्र, स पु (स न) प्रसादमानन, अनु
ग्राह्य दयार्ह ।

—मिधु, स पु (स) दयासागर अति
दयालु ।

कृपाण, म पु (स) सद्गुण अस्ति २ दे
कटार' ३ दबकवृत्तमेद (छन्द) ।

कृपालु, वि (स) दयालु काराणक, कृपामय ।

कृपालुता, स स्त्री (स) दयालुता, कार
णिकता ।

कृमि, स पु (स) कीट, नीलाग, क्रिमि
(पु) २ लाक्षा ।

—कोश, स पु (स) पट्टकीट, कोप-गृह ।

—नाशक, वि (स) कृमिघ्न, कृमिहर ।

कृमिक, स पु (स) कीटक, लघु, कृमि-
क्रिमि ।

कृमिज, स पु (स न) अपुर (न) राजार्ह
२ कीशेय ३ दे 'हिरमिजी' ।

कृमिजा, स स्त्री (स) कीटजा, लाक्षा ।

कृमिल, वि (स) कृमिबुल चित्तपूर्ण, कृमिमय ।

कृमिला, स स्त्री (स) बहुप्रमू (स्त्री),
बहुप्रना ।

कृश, वि (स) क्षीण, क्षाम, तत्रग-कृशाग
(-गी स्त्री) प्रतनु, दुर्बल २ अल्प, स्तोक,
क्षुद्र, सूक्ष्म, अणु लघु ।

कृशता, स स्त्री (स) क्षीणता, क्षामता,
दुर्बलता २ अल्पता, सूक्ष्मता ।

कृशागी, स स्त्री (स) तत्रगी, क्षीणागी,
तन्वी ।

कृशानु, स पु (स) अनल, अधि (पु)
२ चित्रक ।

कृशोदरी, वि स्त्री (स) तनु-क्षीण, मध्या मध्यमा ।
 कृष्क, म पु (स) कृषीबल, कृषिक, कृषाण ।
 कृषि, स स्त्री (स) कर्मण, हलभृति (स्त्री) ।
 कृष्ण, म पु (स) वासुदेव, वेदान, चक्र पाणि (पु) चक्रिन् (पु), नानार्जन, पीना वर, माधव, मधुसूदन, हृषीकेश, गोपाल, गोवर्धनधारिन् (पु) गोविंद, दामोदर, सुरारि (पु), राधारमण । २ कोकिल ३ वाक ४ कृष्णपक्ष । वि, काल, असिन, २ नील मेचक, श्याम ३ तिमिर, निष्प्रम ।
 —जटा, स स्त्री (स) जटामासी, मुग्धनिधन मूलभेद ।
 —जीरक, स पु (स) कृष्णा, काला, बहुगन्धा ।
 —द्वेपायन, स पु (सं) वेदव्यास, महा भारतवार ।
 —पच, स पु (स) असिनपक्ष, प्रतिपदा यमावत्यातानि पचदश दिनानि ।
 —लवण, स पु (स न) रचक, अभ, सौवर्चल ।
 —लोह, स पु (स न) अयरवान, चुवन ।
 —शार, —सारग, —सार, स पु (स) मृगभेद ।
 कृष्णता, स स्त्री (सं) कृष्णिमन् (पु), कालिमन् (पु), नीलत्व, श्यामत्व ।
 कृष्णा, स स्त्री (स) द्रोपदी, पात्राली २ कालीदेवी ३ दक्षिणदेशे नदीविशेष ४ कृष्णजीरक ५ कृष्णद्राक्षा ६ नयनतारा ।
 कृष्णाष्टमी, स स्त्री (स) श्रीकृष्णजन्मदिवस, जन्माष्टमी, भाद्रमासस्य कृष्णपक्षस्याष्टमी तिथि ।
 कृष्णी, स स्त्री (स) कृष्ण, रजनी रात्रि (स्त्री) ।
 कृष्य, वि (स) वर्षणीय, कृषियोग्य ।
 केंचुआ, स पु (स किंचुलक) महीलता, गदूपद्, किञ्चिलिक ।
 केंचुल, सं स्त्री (स कलुक) निर्मोक, अदि भुजग-सर्प-त्वन् (स्त्री) ।
 केंचुली, वि (हि केंचुल) कलुक, सारस-पुत्र्य । स स्त्री दे 'केंचुल' ।
 केंद्र, स पु (स न) मध्य प्य, मध्यभाग २ उदर, गर्भ ३ मुख्य प्रमुख, श्यानम् ।

केंद्री, वि (स केद्र >) मध्यम, मध्यस्थ, मध्य, गत वतिन्, मध्य, केद्रीय ।
 —करण, स पु (स न) मध्यवर्तिन क, एकतंत्री कु ।
 केंसर, स पु (अ) कर्कट कर्कटिका, रोग, कर्कटस्फीट ।
 के, प्रत्य, (हि का) दे 'वा' ।
 केकदा, स पु (स कर्कट) कर्कटक, कुलीर ।
 केकय, स पु (स) १ वर्तमानकारमीरान गणप्रदेशविशेष २ दशरथधनुः ।
 केकयी, स स्त्री (स कैकेयी) ।
 केका, स स्त्री (स) मयूरवाणी ।
 केकी, स पु (स किन्) मयूर, शिरसिन् ।
 केत, स पु (स) मवन, गृह २ स्थान ३ ध्वज, वेतन ४ बुद्धि (स्त्री) ५ मन्त्र ६ मन्त्रणा ७ अक्षम् ।
 केतक, स पु (स) वेतवीकृष्ण २ तत्पुष्प ।
 केतक, वि (स कति + एक) दे 'कितने', 'किनना', बहुत' ।
 केतकी, स स्त्री (स) सूचीपुष्प, वेतक, कवचच्छट्ट, विफला, कफचा, गधपुष्पा ।
 केतन, स पु (स न) मवन, गृह्ण २ स्थान ३ चिह्न ४ ध्वज ५ निमग्न, आह्वानम् ।
 केतली, स स्त्री (अ केटल) उसा, स्थानी, लोहा लोहम् (स्त्री) ।
 केतित, वि (स) अमत्रित, आहत, आवा रित २ जनाकोर्ण लोकाधुषित ।
 केतु, स पु (स) ग्रहविशेष २ उल्का, उरपात ३ घान ४ दोषि (स्त्री) ५ ध्वज ६ चिह्नम् ७ राक्षसविशेषस्य कन्ध ।
 —तारा, स पु (स स्त्री) धूमकेतु (पु), उल्का ।
 —मान्, वि (स मत्) तेजस्विन् २ ध्वजिन् ३ दुष ।
 —शाह, सं पु (सं न) जवरीयस्य नववर्षे दानगणखटविशेष ।
 —रत्न, स पु (सं न) बेद्वैमणि (पु) ।
 केयीट, स पु (अ) मूत्ररालावा ।
 केळमियम, सं पु (अ) चूर्णित (न), सटिकम् ।
 केदार, सं पु (सं) बीहिधेन २ हिमालये

तीर्थविषय ३ आलवाल ४ मेवरागुण
५ मनुष्य क्षत्रमात्र ।

केन, म पु (स, 'कि' का तृतीया एकवचन)
उपनिषदविषय ।

केमरा, म पु (अ) छायाचित्रपेटिका ।

केमिस्ट्री, म स्त्री (अ) रसायनम् ।

केयूर, म पु (म पु न) अगद-द, वलय य ।

केराना, स पु दे किराना ।

केराना, म पुं (अ क्रिश्चियन >) भारी
पाय ० लखक, कायस्थ, लिपिकार ।

केराया, म पु ल किराया ।

किराये की गाथा, स स्त्री पण्य माधारण
वाहन-रथ ।

केला, मं पु (म बदल), (वृक्ष) कदली,
रभा, मीचा, काडीला, सट्टफला, गुच्छफला,
निमारा, ककम्पमा, मो(री लो)षरु,
वारणवन्मा । (फल) कदलीफल, मोल इ ।

केलि, म स्त्री (स) क्रीडा, लला ० रति
(स्त्री), मैथुन ३ नर्मन् (न), परि (री)
हाम ४ शुभवा ।

—फला, स स्त्री शारदावीणा ० रतिविज्ञान ।

केलोरी, म स्त्री (अ) उपम् ।

केवट, स पु (स केवत) नाविक, पोत
वाह औटपिक २ धीवर, कैवर्त जलिक,
मत्स्यजीव ।

केवगी, म स्त्री (हि केवट) मिश्रद्विदल,
वैतलमकर ।

केवडा, म पु (स केविका) केवी, कविज्ञा,
सुहारि (पु), महागथा नृपवल्गमा २ कवी
पुत्र इ ३ महागतासव ।

केवल, वि (स) एक, अद्वितीय ० विभुद
३ श्रेष्ठ । क्रि वि, पद, केवल-मात्र (समा
सात में) २ सामन्तवैत, सपूर्णतया ।

केवलात्मा, म पु (स-त्तम्) परमेश्वर, जग
दीश्वर ० गुडसत्त्वमनुष्य, पूतात्मन् ।

केवली, म पु (स लिन्) मौख्याधिकारी साधु
० तीर्थकर (जेन) ।

केवोच, म स्त्री (स कच्चु >), (लता)
कपिकच्छू (स्त्री) स्व-आत्म, गुप्ता, कट्टरा,
मर्दटी २ (कली)कपिकच्चु, बीजकोश शिबी ।

केवाङ्, स पु, दे 'किवाङ्' ।

केदा, म पु (स) बाल, कच, कुन्तल,
चिकुर गिरोह, शिरमिन मूर्द्धा वृत्ति
० किरा ३ वक्य ४ किणु ५ मूर्
६ विद्व (७८) अघ-मिद, स्कंधदेश ।

—कर्म म पु, वेदकर्मन् (न), कश्,
वियम प्रमाधनम् ।

—कलाप-पाश, म पु (स) प्रमाधिनवेगा,
अलक, करल ।

—प्रमथनी, म स्त्री } कविका दे कवी ।
—मार्फ, स पु

—विन्याम, स पु (म) दे वेदकर्म ।

केदाक, वि (म) वेदकर्म-वेदविद्याम-कुञ्ज,
वेदप्रगाथक ।

केदारी, म पु (म-रिन्) मिह स्याद
० घोटक (३-४) पुत्राग नागेश्वर वृम ।

केदाशेनी, म स्त्री [म-शि(न)] अयोन्य
वेदग्रहणपूर्वप्रवृत्त मुद ।

केदिनी, स स्त्री (स) सनेनी गा हक्ची-
चा ।

केदी, स पु (स वेदिन्) मिह २ घोटक
० सुवेद (पुरुष) ३ राक्षसशिष्य ।

केम्, म पु दे 'वेद' ।

केम्, स पु (अ) व्यवहारपद, काय
० दुर्गना ३ कोप, पु ।

केमर, म पु (म पु न) कादमीर्ष, कादमी
रज, कुमुम अग्निशिम, वर, वाङ् (ही) क,
पीतन, गार, रक्त, साहितचन्दन, वर्ण, सवेच,
भीर, घस, कुम्भ, घोरम् २ नागवेशरश्श
३ अघ-मिद, स्कंधवाला ४ म्बग ।

केमराचल, स पु (स) मेरु, सुमेरु, इमादि ।

केमरिया, वि (स केमर >) धनपीत, कुकु
प्रवर्ण ।

—घाता, स पु, कुकुमवर्ण धनपीत, वेद-
वेप ।

केसरी, म पु (म-रिन्) दे 'वेशरी' ।

केसू, स पु (स किशु) पलाश, रक्त
पुष्पक ।

केहा स पु (स केका >) मयूर, दे 'मोर' ।

केहरी, स पु (स केगरीन्) मिह २ अश ।

केची, स स्त्री (तु) दे 'कतरनी' ।

—करना, पु, अयाणि निहत् (तु प से)
ट (क ए से) अवच्छिद् (र प अ) ।

—सी जवान चलना, सु, शीघ्र-सत्वर-वेगेन
नद् (स्वा प से) भाप (स्वा आ से) ।
कैचुली, स स्त्री, दे 'कैचुली' ।
कै, वि (स कति) दे 'विनिने', 'कितनी' ।
अव्य, वा, अपवा, यद्वा २ अन्यतर ।
—दफा, चार, चौर, कतिवृत्त (अव्य),
वतिवार ।
कैप, स पु (अ) दे 'कपू' ।
कै, स स्त्री (अ) वात, वमनोद्धार २ वमन,
वम, वमि (स्त्री), प्रच्छदिका, वमयु (प) ।
—आना, कि अ, वमनेच्छया पीड् (वर्म),
विबन्धिपति (सन्नन्त) ।
—करना, कि स उद्, -वम् (स्वा प से)
छद् (चु), उत्क्षिप् (तु प अ), उदर्य
(तु प से) ।
कैतव, स पु (सं न) छल, कपट, वचन
२ दून ३ वैदूर्यमणि (पु) ४ धुमरू ।
वि, छलिन्, कापदिक २ शठ, धूर्त ३ अशु
देदिन्, किन्द, (-वी स्त्री) ।
कैथ-या, स पु (स कथित्य) दक्षिण,
समथ, दधि-पुण्य-कुच-गन्ध-दन्त, -फल ।
कैद, स स्त्री (अ) बधन, निग्रह, निरोध
२ कारा, -निरोध-बधन-प्रवेश-वाम, बदी
करण, प्रग्रह, आनेष ३ नियम, समय,
प्रतिपा, मनेन ।
—करना, कि स, वारागृहे निक्षिप् (तु प
अ) -बध् (क् प अ) -निरुध (रु उ अ),
बदीग्राह गृह (क् प से), बदीकृ ।
—होना, कि अ, करावा निक्षिप्-बध्-निरुध्
बदीकृ (सब कर्म) ।
—प्राणा, स पु (पा) कारा, कारागार २,
कारावाम, दन्दि, -दाला-गृह, वन्धनालय,
चार, चारक, गुप्तिस्थान ।
—तनहाई, स स्त्री (अ + पा) एकान्त-
विजन-निर्गुन, -आनेष ।
—महज, स स्त्री (अ) सरल सुगम, प्रग्रह
आनेष ।
—सखन, स स्त्री (अ + पा) विपम-कुसह,
आनेष, इ ।
कैदी, स पु (अ) बदी दि (स्त्री), बन्दिन्
(पु), कारागार, गृहक, प्रग्रह, बद् ।
कैप, स पु (अ) दे 'दोपी' ।

कैपिटल, पु (अ) मूल-धन द्रव्यम्, २ धन,
पुञ्ज-राशि, पुञ्जि (स्त्री) ३ राजधानी ।
कैपिटलिस्ट, स पु (अ) धनिक, बोदीधर,
पुञ्जिपति ।
कैबिनेट, स पु (अ) मन्त्रिमण्डलम् २ बोर्डर
३ मन्त्रणागृहम् ।
कैकियत, स स्त्री (अ) अवस्था, रिपति
(स्त्री), दशा २, विवरण, वर्णन ३ आश्रयो
त्पादकघटना ।
कैरव, स पु (स न) कुमुद २ सिनोरपट,
शेनकमल । (स पु) विनव २ शत्रु ।
कैरी, स स्त्री (देस) दे 'कैरिया' ।
—आम, स स्त्री, कथिल पिमथ, नयन-नेत्र ।
कैलास, स पु (स) पर्वतविशेष, शिवकुनेर,
निवास ।
—नाथ, पति, सं पु (स) शिव ।
—वास, स पु (स) शत्रु ।
कैवर्त, स पु (सं) दे 'वेवट' ।
कैवल्य, स पु (स न) एकरव, अमसुखा
२ अपवर्ग, मुक्ति (स्त्री) ३ उपनिषद्विशेष ।
कैसर, स पु (ले० सी०) सम्राज, राजधि
राज, अधिराज, अधीश्वर ।
कैसा, वि (स बीइरी) बीइरी, विरुप,
किविध, विमाकार ।
कैसी, वि स्त्री (सं बीइरी) बीइरी, विरुप,
किमाकार, विविधा ।
कैसे, कि वि (हि कैसा) कथ, वेन प्रकारेण,
कया रीत्या ।
कौकण, स पु (म) दक्षिणदिशि प्रांतविशेष ।
कौपल, सं स्त्री (स बोमल) प-व-व,
अकुर, प्ररोह, किस (रा) लय य, उद्भिद
(पुं), उद्भिज्ज ।
—निकलना या फूटना, कि अ, प्ररुह (स्वा
प अ), खुट्ट (तु प से) उद्भिद (वर्म)
पुल्लु विकम् (स्वा प से) ।
को, प्रत्य (यह कर्म और सप्रदान वारक का
प्रत्यय है, इसका अनुवाद प्रायः द्वितीया और
चतुर्थी के रूपों से होता है । (राम को बह =
व, राम प्रहि, ब्राह्मण को दे = विप्राय देहि) ।
कोजा, स पु (स बीइ-व), (पट्टबीट-
बीइ-व २ दे 'कोया' ३ पनसखंड-रुं
४ दे 'मकुआ' (पठ) ।

कोई, सर्व (स कोऽपि) कथन, कश्चिद् (पु), का, अपि-चन चिन् (स्त्री) कि, अपि-चन चिन् (न)।
 —कोई, वि स्तोका, वृत्तिपया, परिमिता।
 —चीज, सं स्त्री किमपि (वस्तु)।
 —दम मे, कि वि, सपथेव, तत्काले, शक्ति, शक् (सब अन्व)।
 —दम का मेहमान, स पु, मुमुषु, आसन, मरण-शुल्य, मरणाभिमुख, मरणो-मुख।
 —न कोई, एष वा परो वा, ए कश्चिदपि, कश्चित्तु।
 —नहीं, न कोपि-कापि किंचिदपि इ।
 कोक, सं पु (स) चक्रवाक, द्रुद्रचर, रथा, चक्र २ नृक ३ विष्णु (पु) ४ बृ ५ खड्गीरुह । [कोकी (स्त्री), चक्रवाकी, रथागी इ]।
 कोक, स पु (अ) न्यहार।
 —शाख, स पु (सं न) कोकपटितरचितो रतिविज्ञानग्रन्थ।
 साफ, स पु, शुकुन्यहार।
 हाई, सं पु दृढ्यहार।
 कोकनद, स पु (स न) रक्तोत्पल २ रक्त तुमुदन्।
 कोकनी, वि (दश) क्षुद्र, लघु।
 कोका, स पु (अ) वृक्षभेद।
 कोका, स पु स्त्री (तु) धात्री-उपमाह, पुत्र-पुत्री, धात्रेय यी।
 —वैली, वैरी, स स्त्री (सं कोकनद + हि वैला) नीरुदुद।
 कोकाह, सं पु (स) कर्क, श्वेनधोत्रक।
 कोकिल, स स्त्री (सं पु) पिक, पर, शूद्र-पुत्र, काल, गधर्व, मधुगायन, कल्कठ, कुहरव, कावलीरव, वसन्तदूत, वनप्रिय, ताम्राक्ष । दे 'कोकिला'।
 —वैनी, वि स्त्री (स + हि) शुकठी, मधुर भाषिणी।
 कोकिला, स स्त्री (स) मदनशलावा, पर, शूद्रा पुष्टा, वनप्रिया, कल्कठी, ताम्राक्षी, वसत दूती।
 कोकिलावास, सं पु (स) कोकिलोत्सव, आश्र, रसाल।

कोकी, सं स्त्री (सं) चक्रवाकी, चक्री, रथा गनाम्नी।
 कोकीन, सं स्त्री (अ कोकेन) कोवापत्र निमित्तमादकपदार्थ * कोकीनम्।
 कोको, स स्त्री (अनु) काक, वायस २ कालनिकमयहतु (पु)।
 कोर, स स्त्री (सं कुक्षि) गर्भाशय, गर्भ कोश प।
 —जली, वन्द, वि, वध्या, सन्तानहीना।
 —की औच, स स्त्री, अपायप्रैमन् (पु), वाराख्य, मततिलेह।
 —मारी जाना, मु, च्युतगर्भा भू, गर्भ पद (भवा प से) च्यु (भवा आ अ)।
 —खुलना, मु सन्तान उत्पद (दि आ अ)।
 कोचना, कि स, दे 'चुमाना', 'धमाना'।
 कोचकस्त, स पु (अ कोचवाकस) सूतासन।
 कोचवान, सं पु (अ कोच >) सारथि (पु), सूत, वाहक।
 कोजागर, सं पु (सं) आधिनी धून, पूर्णिमा, कौमुदी, शारदी, शरत्पर्वन् (न)।
 कोट, स पु (सं) दुर्ग २ प्राचीर ३ राज प्रासाद।
 —वाल, स पु, कोटपाल, दुर्गाध्यक्ष।
 कोट, सं पु (अ) प्रावार रक्ष, नचुक।
 कोटर, स पु (स पु न) निष्कृष्ट, तह विवर, प्रान्तर ० कोटरावण, रक्षार्थं शक्ति मवन।
 कोटि, सं स्त्री (सं) शतलक्षसूर्या, दे 'करोड' ० धनुरद्व ३ अक्षादे कोट ४ वर्ष, श्रेणी।
 कोटिक, वि (स कोटि स्त्री) कोटी टि (स्त्री) लक्षशतक २ अमरय, अगणित। स स्त्री, उक्ता सरया तदकाक्ष।
 कोटिदा, कि वि (स) बहुधा, बहुधा २ अनेक-कोटिवार। वि, बहुसरयाक, अनेक।
 कोटीश्वर, सं पु (सं) कोट्यधीश, अति धनाढ्य।
 कोठरी-झी, सं स्त्री (हि कोठा) लघु क्षुद्र, कोष्ठ शान्ता, अन्त कोष्ठ, गर्भागार।
 कोठा, स पु (सं कोष्ठ) गृह, सदन, आनि, वास, वेदमन् सभन् (न) २ प्र, कोष्ठ, शाला ३ पण्यागार, पण्यावान ४ धान्यागार, कुशल

५ चन्द्रशाला, अशुभिका ६ पटल, छदिस
(स्त्री) ७ उदर ८ आमशय ९ अत्राणि
(न बहु) १० निभृतगार ११ पत्रभाग
१२ गर्भाशय ।

—बिगडना, सु अजीर्णरोगेण पीट (कर्म) ।

कोठार, स पु (हिं कोठा) दे 'भटार' ।

कोठरी, स पु (हिं कोठा) दे 'भटारी' ।

कोठी, स स्त्री (हिं कोठा) भवन, गृह,

हृदय २ एकभूमिक हृदय ३ पण्य-आगार-

आधान ४ धायागार ५ भाठार, कोष

६ वणिजजनसमावाय ७ बृहदापण, महती

विक्रयशाला ८ गर्भाशय ९ शुलिकाक्षपण्या

माग्नेयचूर्णाधान १० मृग्मय बृहदापण

११ लोहमय ताश्रमय वा बृहज्जलपात्र ।

—वाल, स पु, भेडिन् (पु) वाणिज्येष्ट ।

कोडना, कि स, दे 'खोदना' ।

कोदा, स पु (स कवर >) प्रतोद, कथा-

शा, प्रतिशब्द-श, ताडनरञ्जु (स्त्री) ।

—मारना, कि स, कशया प्रतोदेन वा प्रह

(भा प अ)-तद् सुद-दढ (सब चु)-

आहन (अ प अ) ।

कोड़ी, स स्त्री (अ स्कोर) विशति (स्त्री),

विशतिवस्तुसमुदाय ।

कोद, स पु, दे 'कुड' ।

—में खाज निकलना, सु, रन्धोपनिपातिनोऽ

नर्था, छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवति, गण्टे स्फो

टकसजननम् ।

कोदी, वि, दे 'कुठी' ।

कोण, स पु (स) दे 'कोना' ।

कोणि, वि (स) वक्र आगुण-कर इत्य ।

कोतल, स पु (फा) दशनीयथोटक

२ राजाश्व ।

कोतवाल, स पु (स कोटवाल) पुररक्षक ।

कोतवाली, स स्त्री (हिं कोणवाल) कोट

पाल पुररक्षक, न्यायालय ।

कोताह, वि (फा) न्यून, अल्प, २. लघु,

ह्रस्व ३ सवीर्ण, सवुचित ।

—हिम्मत, वि, अल्प साहस विक्रम ।

कोताही, स स्त्री (फा) पुष्टि (स्त्री),

न्यूनता २ प्रमाद ।

कोषला, स पु (हिं गूषल) बृहद्, पुट कोष

प्रक्षेप २ आमशय ।

—भरना, सु उदरपूर् (चु) ।

कोदढ, स पु (सं न) धनुस् (न) ।

(स पु) झू (स्त्री) २ देशविशेष ।

कोदो दो, स पु (स कोदव) कोरद्व,

कुद्व, कुदाल ।

कोन, सं पु, दे 'कोना' ।

कोना, सं पु (सं कोण) अन्न २ कोटि-

अग्नि पालि (स्त्री) ३ निभृतस्थान ४

चतुर्थभाग ।

—दार, वि, अस्रोपेत, कोणविशिष्ट, अक्षिन् ।

—कचोना, सं पु, प्रत्यस्त्र सर्वे कोणा ।

कोप, स पु (स) कोष, रोष ।

कोपन, वि (स) समन्यु, सरोप, कोपिन् ।

कोपिनी, वि स्त्री (स) दे 'कोपिनी' ।

कोपी, वि पु (स पिन्) दे 'कोपी' ।

कोपीन, स पु, दे 'कोपीन' ।

कोमल, वि (स) मृदु, मृदुक, रिन्मथ,

इलक्षण, मसुण, सुसम्पदा २ मृदुल, पेलव,

सुकुमार, सौम्य ३ अपरिपक्व, अप्रीट

४ मनोहर, अनिराम । (स पु) स्वरभेद

(सगीत०) ।

कोमलता, स स्त्री (स) मृदुता, क्षिम्धना, सुकु

मारता, पेलवता, अपरिपक्वत्व, मनोहारिता ३ ।

कोयल, स स्त्री दे 'काकिल' २ लतभेद ।

कोयला, स पु (स कोकिल) कोकिल,

दग्धकाष्ठ, अद्धार ।

—लवड़ी का, स पु काष्ठ, कांकिल अद्धार ।

—पथर का, स पु, प्रस्तर-अश्म, कोकिल ।

कोधा, स पु (सं कोण >) अपाग-गक,

चक्षु वाण, नयनोपात ।

कोर, स स्त्री (स कोण) उपात प्रांत,

परिसर, उपकठ २ कोण अक्ष ३ द्वेष

४ दोष, भवगुण ५ अखादीना धारा ।

६ पक्ति (स्त्री), श्रेणी णि (स्त्री) ।

—कसर, स स्त्री (हिं + फा धमर) वैकल्य,

दोष, छिद्र, न्यूनता २ न्यूनाधिकता ।

कोरक, स पु (सं) क्लिका, दे 'कली

२ मृणाल ३ चरनामकगधद्र-पम् ।

कोरा, वि (सं वैकल) अभि, नव, नवीन,

नूतन, अन्यवहन, अप्रयुक्त २ अधीन,

अक्षारित ३ अरजित ४ अचिप्रित ५ अलि

रिज ६ बचिन, रहित, विहीन ७ निष्कलक
८ मूर्ख ९ निर्धन १० केवल ।

—ज्वार, सं पु, एकान् अयत्त, निराकरण
प्रत्यापान निषेध ।

—बचना, सु० अत्यन्त निर्दान मुच् विमुच
(र्म) ।

—रहना, सु भग्नाश-अहृतायं मनोहत (वि)
स्था (म्वा प अ) ।

—कोरा सुताना, सु, रपष्ट कद् (भ्व प से),
२ भस्त् (जु आ से), आ-अधि, क्षिप
(शु प अ) ।

कोरि, वि, दे 'कोटि' ।

कोरी, सं पु (सं कोल् >) आर्य, पटकार
कुविद ।

कोर्ट, सं पु (अ) न्यायालय, धर्माधिकारम्
२ राज-रूप समा ३ न्यायासनम् ।

—आर्च् बाईंस, सं पु, बालकविषवादि
सपत्तिप्रवर्धक विभाग ।

—फीस, सं स्त्री, न्यायशुल्क-श्लक्म् ।

—मार्शल, सैनिकन्यायालय २ सैनिक
न्यायेन दण्डनम् ।

—क्षिप, सं स्त्री, विवाह, अनुनय-न्याचना ।

कोल् सं पु (सं) श् (स्) वर, भिरि
(पु) २ उपगृह, आलिंगन ३ क्रोट, अक
४ नन्यताविशेष ५ कृणमरिच ६ दे
'तोला' ७ बदरीफलभेद ८ दक्षिणादिशि
देशविशेष ।

कोल्, सं पु (अ) अगार, कोकिल ।

—रैस, सं स्त्री (सं) अन्नारवाणि (स्त्री) ।

—टार, सं पु (सं) कोलतार, तारकोल्म् ।

चार—, सं पु, काष्ठाकार ।

स्त्रीम्—, सं पु, बाष्पाहार ।

कोलाहल, सं पु (सं) कलकल, काल्कोल,
तुनुल, अकोश, निडाद, विराव ।

—मचापा, कि सं, कोलाहल-कलकल, कू,
आ वि, श्लुप्त (म्वा प अ) ।

कोली, सं पु (सं कोल् >) तलुवाप,
पटकार ।

कोल्ह, सं पु (हि कूल्हा ?) १ चक्र, तैलपे
पगी, तिलपेषणयन्त्र २ श्यु-रसाल, पेपणी ।

—काट कर मुँगरी बनाना, सु, अल्पलाभाद
बहुहानि कृ ।

—का वैल, सु परम, उपमिन्-उचोगिन् ।

—में पिरवा देना, सु अत्यत पीड् (जु) ।

कोचिद्, सं पु (सं) विद्स् (पु), पठित ।

कोदा, सं पु (सं कोश प), अभिधान,

शब्दसमूह २ एङ्गादे वेष्टन पुट कोप

कोश ३ आवरण, पुट, पिधान, आच्छादन

४ अट, पेशी शि (स्त्री) ५ मज्जप, सपुट

टक ६ कटिका, मुकुल ७ मघपान, पात्र

चपक ८ पुट ट, स्तूत ९ सचित्रधन

१० समूह ११ अहकोप १२ योनि

(स्त्री) १३ पट्टकीगृहम् १४ आत्मन-

पचावेष्टनानि (वेदान्) १५ आकरोथ्य अभिनव

सुवर्ण रजत वा १६ निधि (पु), निधान ।

—कार, सं पु (सं) अभिधान शब्दसमूह,

कार सपादक २ पट्टकीट ।

—पाल, सं पु (सं) कोशा (पा) ध्वश,

कोशाधीश ।

कोशाक, सं पु (सं) अण्ड, पेशी

२ अण्डकोष ।

कोशाल, सं पु (सं) देशविशेष २ अयोध्या ।

कोशलिक, सं पु (सं न) दे 'कौशलिक' ।

कोशागार, सं पु (सं पु न) कोशगृह,

भाडागार २ ।

कोशिका, सं स्त्री (सं) चपक, शराव ।

२ वस, ग्लवर्क ।

कोशिश, सं स्त्री (फा) यत्न, उद्योग,

परिश्रम ।

कोप, सं पु (सं) दे 'कोश' ।

—अध्यक्ष, सं पु (सं) दे कोप पाल-अधीश ।

कोष्ट, सं पु (सं) उदरमध्य २ गर्भाशयादय

आवरणविशिष्टा अरयवा ३ गृहमध्य

४ प्राकार ५ धान्यागार रम् ६ परिवेष्टित

स्थानम् ।

—वद्धता, सं स्त्री, दे 'वन्ज' ।

कोष्टक, सं पु (सं) परिवेष्टकपदार्थ

(दीवार, रेखादि) २ सारणी, अनेकगृह्युत

चक्र अक अम्बर, जाल ३ अर्द्धचन्द्रय [ल (),

[], { }, }] ४ सारणीवर्ग ।

कोस, सं पु (सं कोश) सहस्रधनुस्

(न), चतु सहस्र (अष्टसहस्र) हस्तपरिमाण,

दिसहस्रदह, गन्धूत, मौल-द्वय-सुग्म ।

कोसों दूर, कि वि, अति, दूर दूरे-दूरत, सुदूर ।

कोसों दूर रहना, सु, सुदूर-शुभक् स्था (भ्वा प अ) ।

कोसना, कि स, (सं कोशन >) आकुश (भ्वा प अ), गहूँ (भ्वा आ से), अभिशस (भ्वा प से), शप् (भ्वा उ अ) ।

पानी पी पी कर कोसना, सु, अत्यन् आकुश ६ ।

कोह, सं पु (फा) पर्वत, गिरि ।

—नूर, स पु (फा + अ) हीरकविशेष ।

कोहनी, स स्त्री, दे 'कुहनी' ।

कोहरा, सं पु, दे 'कुहरा' ।

कोहान, स पु (फा) उष्ण ज्वालक, ककुद् ककुदम् ।

कोहिस्ताम, सं पु (फा) पर्वतीयप्रदेश, शैली स्थली ।

कोहिस्तानी, वि (फा) पर्वतीय, शैल (ली स्त्री), पर्वतमय (यी स्त्री), भगप्राय, सपर्वत । सं पु, पर्वत गिरि-अदि, वासिन्, शैलाट ।

कौंच, सं स्त्री [स कच्चु (स्त्री) >] रोमबही, शूकशिकी, वृथा, २ तस्वा बीजकोष ।

कौंची, सं स्त्री (भं कचिका) वेणुशाखा, कुम्बिका ।

कौंध, सं स्त्री (हि कौंधता >) विदुद्रिलास, तडिदसृति, (स्त्री) चचलारपुरण ।

कौंधना, कि अ (स बनन = चमकना + अथ >) विद्युत् (भ्वा आ से) विद्युत् विलस् (भ्वा प से), सइसा प्रकाश (भ्वा आ से)-शुर् (तु प से) ।

कौंधा, सं पु, दे 'कौंध' ।

कौंसिल, स स्त्री (अ) मभा, मसद्, सरस् (सर स्त्री) ।

कौआ, सं पु दे 'कौआ' ।

कौच, सं पु (अ) खटिका, सदी, निपचा, पेचक ।

कौटिल्य, सं पु (सं) चाणक्य, चद्रगुप्तमौर्यस्य महागतिन् । (स न) वक्रता, बुद्धिन्ता २ दुष्णा, छल, कपटम् ।

कौटुंबिक, वि (सं) कुटुंब-गृहजन परिवार, मन्धिन् विषयक, बोल, पारिवारिक, गृध ।

कौडा, स पु (सं कपर्दक) वराट, बाल शीटक ।

कौडी, सं स्त्री (सं कपर्दिका) वराटिका, काकिनी पी । २ द्रव्य, धन ३ अक्षि नयन, गोल-गोल ४ मासग्रथि (पु) ५ कृपाणाम् ६ अधीननृपतिभ्यो प्राहा कर ७ उरोऽस्थि (न) ।

(दो)—वा,—काम वा नहीं, सु अल्पमूल्य, तुणप्राय, निरर्थक, असार ।

—भर, सु, अत्यल्प, विचिद्, स्वल्प ।

—को मुहताज या तम होना, सु, अर्चिच नरत्न, अत्यतदारिद्र्य, निता तनिर्धनता ।

—सुकाना, सु, ऋण नि शेष परिशुध् (प्रे)-अपाक ।

—जाडना, सु, धन सन्धि (स्वा प अ)-सग्रह् (क, प से) ।

कानी या फूटी कौडी, सु अत्यल्प-विचिद् द्रव्यम् । कौडियों के मोल, सु, अत्यल्पमूल्येन ।

कौतुक, स पु (स न) कु(कौ)मूढल, कुतुक, जिज्ञासा २ आश्चर्य ३ विनोद, नर्मन् (न) ४ हर्ष ५ खला, क्रीडा ।

कौतुकी, वि (सं-विन्) सलील, सोलास, क्रीडाप्रिय, विनोदप्रिय, नर्मगर्भ ।

कौतूहल, सं पु, दे 'कुतूहल' ।

कौन, सर्व (स को नु) 'कि' के तानों लिंगों के रूप (क, वा, कि इ) ।

—कौन, क क इ । दो में से—, कतर, कतरा, कतरत् (पु सं न) बहुओं में से—, कतम, कतमा, कतमत् (पु स्त्री न) ।

कौप, वि (सं.) कूप-अवट, विषयक सम्बन्धिन् ।

कौपीन, सं पु (सं न) मलमलन, धरी, पटिका, कच्छा, कच्छटिका, २ गुदालिने, गुष्मागानि ३ पाप ४ अकार्यम् ।

कौदेरी, स स्त्री (सं) उत्तरदिशा, उदीची ।

कौम, सं स्त्री (अ) वर्ण, जाति (स्त्री) २ कुल, वंश ३ देश, राष्ट्र, विषय ।

कौमार, सं पु (सं न) कुमारवरथा (५ अथवा १६ वर्ष पर्वत), बालत्वम् ।

कौमारिक, वि (सं) कुमार, विषयक-सम्बन्धिन् । सं पु, कन्यानामेव जनक ।

कौमारिकेय, स पु (स) अनूढा-कुमारी
क्या पुत्र-जनय ।

कौमियत, स स्त्री (अ) राष्ट्रियता, ज्ञानीयता ।

कौमी, वि (अ) राष्ट्रिणी, देशीय
जातीय ।

—कुसुमत, स स्त्री, राष्ट्रियशासन, स्वराज्य ।

कौमुदी, स स्त्री (स) ज्योत्स्ना, दे 'चौदनी' ।

कौर, स पु (स कवल) आस, गुडक,
पिट ।

कौरव, स पु (स) कुरुराजसतान ।

—पति, स पु, दुर्बोधन ।

कौल, वि (स) दे 'कुलीन' ।

कौल, स पु, दे 'कौर' ।

कौल, स पु (अ) प्रतिष्ठा, समय
२ उक्ति (स्त्री) ।

कौवा, स पु (स काक) वायस, ध्वांस,
मौकुलि (पु), एकाक्ष उल्लकारि (पु),
कट कुण, प्रोग २ अलिजिह्वा, शुद्धिका,
लविका ३ धूर्त ४ वचक ।

—परी, स स्त्री, अतिकुरूपिणी नारी ।

—उठाना, सु बालशुद्धिका उत्स्था (प्रे) ।

कौशल, स पु (सं न) चालुर्ष, दास्य, नैपुण्य
२ कुशल, मगलम् ।

कौशलिक, सं पु (स न) उत्कोच, दौकन
लम्बा ।

कौशिक, स पु (स) इन्द्र २ गाधिनुप
३ विश्वामित्र ४ कोषाध्यक्ष ५ कोशकार
६ उल्लूक ७ नकुल ८ कौशियवख ९ मज्जा
१० उपपुराणविशेष ।

कौशे(पे)य, वि (स) कौश(ष), कौशि(षि)क ।
स पु (स न) क्षीम, चीनाशुक पट्ट ह,
पद्मशुक, दुहूल, चीनवासस् (न) ।

कौस्तुभ, स पु (स) विष्णुवत् स्थो मणि
(पु) ।

क्या, सर्व (स किम्) ।

वि, कियत्, २ अत्यधिक ३ कींश विचित्र
४ अत्युत्तम ।

अव्य किम् ।

—कहना है या—घात है, सु, साधु साधु
साधु सुद्ध, उत्तम (सर्व अव्य) ।

—पुत्र, पु, साधु, सुद्ध ३ ।

क्यारी, स स्त्री (स वैदार) राजिका ।

क्यों, कि वि (सं किम्) किं, केन हेतुना-
कारणन, किन्निमित्त, किमर्थ, कुत, कस्मात्
२ कया रीत्या, कयम् ।

—कर, कथ, केन प्रकारेण २ किमर्थ, किम् ।

—कि,—यत्, यत्, यस्मात् ।

—नहीं, नि मदेह, नि सशय, अवश्य, ध्रुवम् ।

क्रद्दन्, स पु (सं न) रोदन, रुदित, अह
पात २ परिदेवना न, भा वि, मोश ।

क्रन्तु, स पु (स) यत्, याग २ सक्त्प
३ अभिलाष ४ विवेक ५ र्हाद्रय ६ जीव
७ विष्णु ८ आपाद ९ श्रीकृष्णपुत्र ।

क्रम, स पु (स) अनुक्रम, आनुपूर्वी-०र्थ,
पारपर्यं, परपरा, विद्यास, व्यवस्था, सवि
धान, विरचन २ प्रकार, विधि (पु) रीति
(स्त्री) ३ पादविन्यास ४ काव्यालकारभेद ।

—करके या सै, कि वि, अनुक्रम, यथाक्रम,
अनुपूर्वश आनुपूर्व्येण २ शनै शनै, अन्या
स्पश, उत्तरोत्तरम् ।

क्रमण, स पु (स) पाद, चरण २ अक्ष,
घोट । (स न) गमन चलनम् २ उल्लघनम्,
अतिक्रमणम् ।

क्रमशः कि वि (स) दे 'क्रम क्रम करके' ।

क्रमाक, स पु (स) क्रम, सख्या-गणना ।

क्रमागत, वि (स) क्रम आनुपूर्व्येण, आगत
प्राप्त २ आनुवक्षिक, परपरा प्राप्त ।

क्रमानुसार, कि वि (स-रम्) क्रमशः,
यथाक्रम आनुपूर्व्येण, अनुपूर्वश (सर्व अव्य) ।

क्रमिक, वि (स) क्रम परम्परा, आगत
आवात, अनुपूर्व, क्रमवद्ध, आनुक्रमिक (-की
स्त्री) २ परम्परीयण पैतृक (-की स्त्री),
पिय ।

क्रमुक, स पु (स) दे 'सुपारी' ।

क्रय, स पु (स) दे 'खरीद' ।

—विक्रय, स पु, दे 'खरीद करोज़' ।

क्रव्य, स पु (स न) दे 'मास' ।

क्रव्याद, स पु (स) राक्षस, पिशाच
२ सिंह ३ इयेन ४ मासाशिन (पु) ।

क्रान्ति स स्त्री (स) महत्परिवर्तन, परिवर्त,
२ चरणयसन ३ सूर्यभ्रमणमार्ग ४ रात्र,
द्रोह विरोध, राज्यविप्लव प्रचाक्षीम ।

क्रिकेट, सं पु (अ) पट्टगेन्दुकम् ।

क्रिया, स स्त्री (सं) कर्मन् (न), कार्त्त, व्यापार २ चेष्टा ३ आरम्भ ४ व्यापार निर्देशक शब्द (व्या) ५ नित्यकर्मन् (न) ६ आदादिकर्मन् ७ चिकित्सा ।

—कर्म, स पु (सं न) अन्त्येष्टि मूलक-
क्रिया कर्मन् ।

—विशेषण, स पु (सं न) क्रियाया भाव कालोत्पादिघोतक शब्द (व्या) ।

—इन्द्रिय, सं स्त्री (स न) दे 'कर्मन्द्रिय'
क्रिस्टल, सं पु (अ) स्फटम् ।

निस्ता(स्ता)न, स पु (अ) किश्विन् ,
विस्तानुयायिन् ।

मीढा, सं स्त्री (स) सेला, लीला, कूर्दन,
खेत्न, विहार २ कौतुक, विनोत् विलास ।

क्रीत, वि (सं) कृतकय, मूलेन लम्बः ।

क्रीतक, सं पु (स) क्रीतपुत्र ।

क्रुद्ध, वि (स) कुपित, रुष्ट, कोपिन्, सामर्थ्य,
सकोप, सरोप, समन्तु, क्रोध-कोप, -युक्त ।

क्रूर, वि (सं) निर्दय, कठोर, नृशस, पापाण
कठिन, हृदय, निघृण, क्रूरकर्मन्, निष्करुण
२ परपीठक ३ कठिन ४ तीक्ष्ण ५ लघु
६ नीच ७ घोर ।

—कर्मा, वि (स मन्) घोर, निर्दय, दारुण ।

क्रूरता, स स्त्री (स) निर्दयता, कठोरता,
नृशसना ३ २ रौद्रता, तीक्ष्णता ३ दुष्टता ।

क्रौड, स पु (स न) बाह्योर्मध्य, मुञ्जानर,
उपस्थ, उत्सर्ग, भोग, अक् २ उरसू-वक्षस्
(न), उत्सर्ग ।

—पत्र, स पु (स न) परिशिष्ट, अवपत्र,
पूर्वपत्रम् ।

क्रोध, स पु (स) कोप, रोप, अमर्षं,
मन्तु (पु), प्रतिप, भीम, क्रुधा, रथा,
रुच्-क्रुध् (स्त्री) दे 'शुस्सा' ।

—करना, क्रि अ, क्रुध् (दि प अ), कुप्
(दि प से) ।

क्रोधित, वि (स) दे 'क्रुद्ध' ।

क्रोधी, वि (स-धिन्) कोपिन्, रोपिन्,
अमपिन्, दे 'क्रुद्ध' ।

क्रोश, स पु (स) दे 'कोस' ।

क्रौंच, सं पु (स) क्रुंच चा, क्रौंचा, क्रुच्
(पु), कल्कि, कालि(ली)ञ्ज ।

क्रुच, स पु (अ) ग्रीष्मीगृहम् ।

क्रुक्, स पु (अ) लिपि पञ्जी, कार, ऐसक,
कायस्थ, बोर(ल)व ।

क्रुत्, वि (स) म्लान, रित्र, परि, श्रान,
जातसूद, आयस्व ।

—मना, वि (सं-नम) दुर्मनस्क, विमनस्क,
खित्र ।

क्रुति, स स्त्री (स) अम क्रुम, आयास,
श्रान्ति (स्त्री), खद अवसाद ।

क्रुत्, सं पु (अ) कुह्य-भित्ति, -घटी ।

—टावर, स पु, घटा, -आलय -गृहम् ।

क्रुष्ट, वि (स) दुःखित, क्लेशित, अर्त,
पीडित २ दुष्कर, कठिन, दुस्साध्य ।

क्रुषीव, स पु (स) व (श) ङ, सङ्, शङ्,
नपुंसक, पुरुष-वहीन २ दे 'कायर' ।

क्रुषिता, स स्त्री (सं) श(ष)वता, नपुंसकता
२ कातरता ।

क्रुद्ध, स पु (सं) आर्द्रता, रतेम, तेम ।
२ प्रत्येद ।

क्रुश, सं पु (सं) दुःख, कष्ट, पीडा, व्यथा,
वेदना, चिन्ता, आश्रय, आदीनव ।

क्लेशित, वि (स) दे 'क्रुष्ट' (२) ।

क्लैश्य, सं पु (सं न) दे 'क्रीवता' ।

क्रुम, स पु (स न) वीम, क्लोमन् (न),
तिलव, पुष्पुम, दे 'पिपडा' ।

क्रुरीन, स स्त्री (अ) नीरजी, हरिमम् ।

क्रुरीफार्म, स पु (अ) मूच्छम्, सशालो
पक्व (औषधभेद) ।

क्रुणित, वि (सं) ध्वनित, मरव, सशब्द ।
स पु (सं न) शब्द, स्वन ।

क्रुणित, वि (स) श्राप, मृत, अपित ।

क्रुण, सं पु (स) दे 'काटा' ।

क्रुणटाङ्ग, स पु (अ) निषिद्धसर्गाङ्ग,
२ सर्गाङ्गप्रतिबन्ध, गमनागमननिषध ।

क्रुणा, वि (स कुमार) दे 'द्वारा' ।

क्रुण्ट, सं पु (अ) (राज्यसत्त्वादिनिमित्त)
गृह, गेह, सदनं, भवनम् । २ पाद, चतुर्थाङ्ग
३ त्रिमासम्, वर्षपाद ।

क्रुणी, स स्त्री (अ) राशी, राजपत्नी ।

क्रुण्य, वि (सं) ह्यमाह, मर्षणीय, सोढव्य ।

क्रुण, स पु (स) आर्यवपसमय सुदूर्त,
निमेय, पन्, विश्वकलापरिमितकाल
२ समय ३ अवसर ४ उत्सव ।

—प्रभा, स स्त्री, विपुत्र (स्त्री), चचला ।
 —भगुर, वि, विनश्वर, क्षणिक, अरिधर ।
 —भर, किं वि, क्षणमात्र, मुहूर्त पल, मानम् ।
 क्षणिक, वि (सं) क्षणस्थायिन्, अनित्य,
 अश्वर, वि नश्वर, निम्मार, अस्थायिन् ।
 क्षा, वि (सं) प्रणित, मित्रदेह, ताडित,
 क्षणितुक्त, श्राद्ध ।
 सं पु (स न) व्रण, क्षति (स्त्री), अरुस
 (न), अनात, ईर्ष्ये २ स्फोट, विष्क ।
 —योनि, वि स्त्री (सं) समुक्ता, कृतसद्वासा ।
 —विचत, वि (सं) अतीव प्रणित विद्व आह्वन ।
 क्षति, स स्त्री (सं) क्षय, नाश २ अपचय,
 क्षानि (स्त्री) ३ व्रण, ईर्ष्यम् ।
 क्षत्र, सं पु (सं न) मल, शक्ति (स्त्री)
 २ राष्ट्र ३ धन ४ शरीर ५ जल ६ तगर
 वृक्ष । (सं पु) क्षत्रिय ।
 —पति, सं पु, नृप ।
 क्षत्राणी, सं स्त्री (सं क्षत्रियाणी) (क्षत्रिय
 नानि स्त्री स्त्री) क्षत्रिया, क्षत्रिय(यि)का, क्षत्रि
 याणी २ (क्षत्रिय स्त्री पत्नी) क्षत्रियाणी, क्षत्रियो ।
 क्षत्रिय, स पु (सं) वर्णविशेष २ राजन्य,
 बाहुण, मूर्धाभिषिक्त, धन ३ योष, मट,
 वीर ।
 क्षत्री, स पु दे 'क्षत्रिय' ।
 क्षपणक, न पु (सं) दिगम्बरयति २ बौद्ध
 भिक्षु ३ कविविशेष । वि, निर्लज्ज ।
 क्षपा, सं स्त्री (सं) रात्रि (स्त्री), निशा,
 यामिनी ।
 —कर, —नाथ, सं पु (सं) चन्द्र, सोम ।
 क्षम, वि (सं) शक, समर्थ, उपयुक्त, योग्य ।
 क्षमता, सं स्त्री (सं) योग्यता, सामर्थ्य,
 शक्ति (स्त्री) ।
 क्षमा, सं स्त्री (सं) क्षाति (स्त्री) तितिक्षा,
 सहिष्णुता, मर्षण, सहनशीलता २ पृथिवी
 ३ रादिरवृक्ष, ४ दक्षकन्या ५ दुर्गा ६ वेत्र
 बती नदी ७ राधिकासरती ८ वर्णवृक्षभेद ।
 —करना, किं स, क्षम् (स्था आ ने, वि प
 ने), सह् (स्था आ से), सृप् (दि उ से) ।
 —शील, वि (सं) क्षमिन्, क्षमावत, क्षमित,
 सहिष्णु, सहन, क्षत्, तितिक्षु, क्षमायुक्त ।
 क्षमाधान, वि (सं वत्) दे 'क्षमाशील' ।

क्षम्य, वि (सं) क्षन्तव्य, क्षमाहं, क्षमोचित,
 मर्षणीय, सोढव्य ।
 क्षय, सं. पु (सं) अपचय, हास २ कृपात
 प्रलय ३ नाश, प्रध्वंस ४ गृह ५ यक्ष्म,
 यक्ष्मन् (पु), राज्यक्ष्मन् (पु) ६ रोग.
 ७ अत, अवसान, क्षयरोग, शोष, रोगराज,
 गदाप्रणी (पु), अतिरोग, रोगाधीश
 नृपामय ।
 —कास, स पु (सं) क्षयश्च, यक्ष्मकास (पु) ।
 —मास, सं पु (सं) मल्लिखुच, मल
 अधिक, मास ।
 —रोग, सं पु, दे 'क्षय' (५) ।
 —रोगी, सं पु (सं गिन्) क्षयिन्,
 यक्ष्मिन्, रोगराज शोष, अस्त ।
 क्षयी, वि (सं यिन्) अपचयिन्, हासिन्
 २ शोषिन्, यक्ष्मिन्, रोगराजपीडित ।
 —रोग, सं पु, दे, 'क्षय' (५) ।
 क्षर, वि (सं) नश्वर, अनित्य ।
 क्षरण, सं पु (सं न) शनै शनै विदुश
 विपुत्रकमेण गल्न स्वदन स्रवणम् ।
 क्षांत, वि (सं) क्षमाशील, क्षमावत्, क्षमिन्
 २ सहिष्णु, सहनशील ।
 क्षाति, सं स्त्री (सं) दे 'क्षमा' (२) ।
 क्षार, सं पु (सं) सजिका, विडलवण २ लवण
 ३ दे 'शोरा' ४ दे 'सुहागा' ५ मरुमन्
 (न) ।
 क्षिति, सं स्त्री (सं) भूमि (स्त्री), पृथिवी
 २ क्षय, हास, नाश ।
 —पाल, सं पु (सं) नृप ।
 क्षितिज, सं पु (स न) दिक्-चक्र तट,
 दिगत, दिङ्मण्डल, अदरात, आकाशकक्षा ।
 २ मगलग्रह, कुज ३ वृक्ष ४ दे 'बैजुआ' ।
 क्षिस, वि (सं) त्यक्त, विसृष्ट, प्रारत २ विकीर्ण
 ३ अवज्ञात ४ पतित ५ वातरोगग्रस्त ।
 क्षिप्र, किं वि (सं न) द्रुत, सपदि, द्राक,
 दे 'शीघ्र' ।
 वि, त्वरित, सत्वर, जवन, वेगवत्, शीघ्र ।
 —हस्त, वि (सं) शीघ्रकारिन्, आशुकर्तृ ।
 क्षीण, वि (सं) सूक्ष्म, प्र तनु, श्लक्ष्ण
 २ वृथांग, वृथा, क्षाम, क्षीण शुष्क, मास
 ३ नष्ट, ध्वंस, क्षयगत ।

श्रीगता, स स्त्री (स) दुर्बलता, निशुक्लता
२ सूक्ष्मता, तनुता ३ कृशता क्षामता
४ हाम, अपचय नाश ।

श्रीर, स पु (स न) दुग्ध पयस् (न)
२ नल ३ पायस स ।

—निधि, स पु (स) सागर ।

—नीर, स पु आन्निग्न २ मिश्रणम् ।

—नागर, स पु (स) क्षीराब्धि (पु)
दुग्ध, सागर समुद्र, क्षीरोत् ।

—सार, स पु, दे 'मन्स्रन' ।

श्रीरज, स पु (स) चद्र २ शय ३ कमल
४ दधि (न) ।

श्रीरजा, स स्त्री (स) दे 'लक्ष्मी' ।

श्रीरधि, स पु (स) सागर, समुद्र ।

श्रीरोद, स पु (स) दे 'क्षीरसानर' ।

श्रीच, वि (स) समद, समद, मद्रोन्मत्त ।

श्रुण्ण, वि (स) प्रक्षत, चूर्णीकृत, खड्डयो मिक्ष ।

श्रुद्र, वि (स) अधम, निवृष्ट, नीच २ अल्प,
स्तोक ३ श्रुपण ४ कुटिल ५ दरिद्र ।

श्रुद्रता, स स्त्री (स) वृच्छला, निवृष्टता
२ कुटिलता ३ दरिद्रता ।

श्रुधा, स स्त्री (स) दे 'भूसा' ।

श्रुधानुर
श्रुधात
श्रुधित } वि (स) दे 'भूसा' ।

श्रुप, स पु (स) श्रुपक, श्रुद्रश्च शुक्ल-म् ।

श्रुन्ध, वि (स) व्याकुल, विह्वल आतुर,
उद्विग्न २ चञ्चल ३ मोद, जलन ४ क्रुद्ध ।

श्रु, स पु (स) नापितस्य लोमष्टेकराल क्षौरी,
क्षुरी सुरः २ शफफ, गवादीनां पादाग्रम् ।

श्रुरी, स पु (स रिन्) नापिन, क्षौरिक
मुष्ट, मुष्टिन् ।

श्रुलक, वि (स) स्वल्प, स्तोक २ दुष्ट, दुर्बल
३ निर्धन, दरिद्र । स पु, बाल, बालक ।

श्रेत्र, स पु (स न) वेद (वा) र, भूमि
(स्त्री) चद्र प्र । २ समभूमि ३ उपत्ति
स्थान, उद्भव, उद्गम ४ प्रदेश ५ तीर्थस्थान

श्र, श्रेयनागरीवर्गमालया द्वितीयव्यजनवर्ग,
रासार ।

श्रं, स पु (स न) शयस्थानं २ छिद्र
३ आवाश ४ इन्द्रिय ५ विदु (पुं), शय
६ स्वर्ग ७ सुख ८ मदान् (न) ।

श्र राशि (पु, मेघादि) ७ पत्नी ८ शरीर
९ अत करण १० रेखावेष्टित स्थानम् ।

—गणित, स पु (स) गणितशास्त्राभेद ।

—फल, स पु (स न) वर्गपरिमाणम् ।

श्रेत्रन, स पु (स) नियोजनपुत्र (धर्मशास्त्र) ।

श्रेत्रज्ञ, स पु (स) जीव २ ईश्वर
३ कृपाण । वि शास्त्र दक्ष, निपुण ।

श्रेप, स पु (स) क्षपण, प्ररु, प्र सन विस
र्जन २ निन्दा ३ दापन ४ दूरता ।

श्रेपक, वि (स) क्षेप्ट, प्रासक, प्रेरक २ मिथित
३ निन्दनीय । स पु, नाविक २ प्रक्षिप्त
निदेशित, लेख ।

श्रेपण, स पु (स न) दे 'क्षेप' (१३) ।

श्रेपणी, स स्त्री (स) अश्वविशेष २ नौका
दृष्ट, क्षेपणि (स्त्री) ।

श्रेम, स पु (स पु न) लम्बरक्षण
प्रातरक्षा २ मंगल, कुशल ३ अभ्युदय
४ आनन्द ५ मुक्ति (स्त्री) ।

श्रोणि, स स्त्री (स) क्षीणी पृथिवी ।

—पति, —पाल, स पु (स) रूप, भूप ।

श्रोद, स पु (स) चूर्ण, पिष्ट २ वेपण ३ जल ।

श्रोम, स पु (स) अशाति अनिवृत्ति (स्त्री),
चित्तचाचल्य व्यग्रता, उद्गम, व्याकुलता २ भय
३ शोक ४ क्रोध ।

श्रोभित, वि (स) दे 'श्रुम्भ' ।

श्रोणी, स स्त्री (स) क्षीणि (स्त्री) पृथिवी ।

श्रोद्र, स पु (स न) मधु (न) २ जल
३ श्रुद्रता । (स पु) चक्रवृक्ष ४ वर्ण
मकरविशेष ।

श्रोम, स पु (स पु न) अट्ट, अट्टारिका
(२४) षट् अतसी शणज, वस्त्र ।

श्रीर, स पु (स न)

—वर्म, स पु (स र्मन्) दे 'इजामत' ।

श्रौरिक, स पु (स) दे 'साई' ।

श्रना, स पु (स) पृथिवी, अवनो ।

श्रवेष्ट, स पु (स) ध्वनि, शब्द २ विष
३ वर्णरोगभेद ।

स

संल, वि (स) गिक्त शय्य २ निर्जन, वय ।

संयरा, वि, दे 'सोत्तर' ।

संयार, स पु, दे 'सरा' ।

सगर, स पु (देव) एकीभूतोऽतिपक्वेष्ट
नावय । वि, अतिशुष्क ।

खंगालना, कि स, (सं खालन) ईषत् भाव
(स्वा, तु उ से) -प्रश्ल (तु) ।

खन, सं पु (सं) खोर, खोत्र, खोद,
खोत्र, विकल्पति २ पादरोगभेद ।

खनन, सं पु (सं) खन्नी, खनन,
मुनिपुत्रक, खनिधि (पु), खनीड ।

खनर, स पु (फा) दे 'खनर' ।

खनरी, स स्त्री (सं खनरी = एक ताल >)
लघु, डमरु विडिम् ।

खनरीड, सं पु (सं) दे 'खनन' ।

खंड, स पु (सं खडन्) दे 'खोड' ।

खड, स पु (सं पु न) लव, शकल ल,
खड, विभाग वि, डल, मित्र २ देश
३ नवमख्या ४ रत्नदोषभेद ५ अध्याय
६ पाठ्य, कृष्णलवण ७ दिशा । वि, अल्प,
लघु, अपूर्ण ।

—करना, कि सं खड लवण छिद्र
(क प अ) ड (क उ से) डत्
(तु प से) ।

—काव्य, सं पु (सं न) लघुप्रबन्धकाव्यम् ।

—प्रलय, स पु (सं) ब्रह्माडस्य एकदेशीय
आशिक, नाश विध्वंस क्षय ।

खडन, स पु (सं न) भजन, भेदन, छेदन,
कर्तन, शोचनम् २ प्रत्याख्यान, निराकरण,
निरसनम् ।

खडनीय, वि (म) भेद्य, छेत्तव्य २ प्रत्या
खेय, निरसनीय ।

खडर, सं पु (स खड + हि षर) ध्वसान
क्षय, अर्द्ध-जीर्ण-शीर्ण-गृह नगरम् ।

खडरिच, सं पु, दे 'खनन' ।

खडस, अ (स) विभागा, अक्षय, अद
यवश (सब अर्थ) ।

खडहर, सं पु, दे 'खडर' ।

खडित, वि (सं) मग्न, बुद्धित, लन, छिन्न
२ असमग्र, अपूर्ण ।

खडक, सं स्त्री (अ) परिखा, खय, रात्रिधा
न्यादिवेष्टनगत, २ बृहद्, अन्न-गर्भ-अवत् ।

खड, वि (फा) सहास, हासक । स पु,
हाम, हास्यम् ।

—देशानी, वि स्मेरानन, हास्यसुख

खडा, खड, खंभा, सं पु (मं खन)
उप, स्तम्भ, अवष्टम्भ, स्थापु (पु), स्थापु ।

ख, सं पु (स न) गर्भ-ता, अवट ० रिक्त
स्थान ३ निर्गम ४ विन्, विवर ५ इन्द्रिय
६ कृप ७ इयुष्म ८ शक्यत्वनामिच्छ
९ आशा १० स्वर्ग ११ विटु (पु),
शुभ्य १२ ब्रह्मन् (न) १३ शुब्
१४ कण्ठस्य प्रागनाडी १५ सुख १६ क्षेत्र
१७ पुर । (सं पु) सूर्य ।

खकरा, स पु (अनु) अष्टदास, ज्येष्ठांस,
प्र-अनि, हास ।

खक्या, सं पु (हि खनी का 'ख') पाचनद
क्षत्रिय २ अनुभवो पुरुष ३ महागम ।

खखार, स पु (अनु) कफ, श्लेष्मन् (पु),
सघन, सौम्यभातु (पु), वन ।

खखारना, कि अ (अनु) कफ नि-उ (प्रे)-
उद्गृ (तु प से), निष्ठिव् (स्वा दि प से) ।

खखोडर, स पु (स ख+कोर >) तरकोर
स्य स्य खगनीड-र उदक, निलय-कुलाय ।

खग, सं पु (स) पक्षिन् (पु), अडन,
नीडन २ गधर्व ३ देव ४ वाण ५ ग्रह
६ मेघ ७ सूर्य ८ चंद्र ९ वातु (पु) ।

—पति, सं पु (सं) रागेश, वैजतेय, गहन,
सगकेल (पु), खगरान ।

खगोल, स पु (सं) आकाश-गान, मन्त्र,
गगनामोः ।

—विद्या, स स्त्री (सं) ज्योति-शास्त्र, ज्योतिष ।

खचयत्र, स स्त्री (अनु) एके चत्नध्वनि (पु) ।

खचना, कि अ (स खनन) खन्-निवेश्
प्रतिवप् (कर्म) ३ अक्ति-चित्रित (वि) + भू ।

खचर, स पु (स) सूर्य २ मेघ ३ ग्रह
४ मन्त्र ५ वातु ६ पक्षिन् (पु) ७ वाण
८ राजस । वि नभश्चर, गगनचारिन् ।

खचरा, वि (हि खचर) वर्णमकर, मिश्रण
२ दुष्ट, सुल ।

खचाखच, कि वि (अनु) निविड, गन्,
अधिरल, निरतर । वि जनादीर्ण, जनसकुल ।

—भरना, कि अ, स आन् (कर्म), परिपृ
(कर्म), मन्त्र समाकुल (वि) + भू ।

खचित, वि (सं) निवेशित, प्रत्युप्त
२ लिखित, चित्रित ।

रदधर, स पु (देश) वेगसर, वेस (श) र,
अधर (स्त्री अधरी) ।

रद, म पु (स) रदक, मदन, तका
० मदन, म्थ ३ मुद, मग्राम ४ कवी पि
(स्त्री) ।

रदज्ञानची, स पु (षा) क्रोषधन, अयच्छ
अनीन अर्थापिनारिन् ।

रदज्ञाना, स पु (अ) क्रोश प, निधान,
निधि (पु), द्रव्य, राशि (पु)-मग्रद
२ निष्ठ, द्रविण ३ बोधायार, मांदायार,
बोध (प) गृहम् ।

रदचित्त, वि (षा) लज्जित, प्रीहित, गपिन ।

रदजुही, स स्त्री (स खजू स्त्री) दे
'सुतनी' ।

रदजूर, स पु स्त्री (स रजूर) (वृक्ष)
रजुरी, दुग्धपर्षा, दुरारोक्ष, यत्नेष्टा, हरिप्रिया
२ (फल) खजूर, खजूरीफलम् । ३ मिष्टान्न
भेद, रजूरिका ।

रदजूरी, वि (हि खजूर) रजूर, विषयक-मव
धिन, रजूर २ देगिरूपेणग्राथत, वावसित ।

रदक, स स्त्री (अनु) मय, प्रास २ चिता ।

रदट्ट वि (म वट्ट) दे 'छ' ।

रदट्ट, स पु (अनु) सपट्टजो धनि (पु),
मणितिशब्द, रदट्टशब्द ।

—से, कि वि, सपदि, क्षदिति, क्षणत ।

रदट्टना, कि अ (अनु) रदट्टदायन (ना
धा), रदट्टशब्द छ २ मुदु मुदु पीट्ट
(कर्न)-ट्टीप् (दि आ से) ३ अपुत्त-
असमीचीन अनुचित (वि) + प्रति ३ (कर्म)
४ भौ (जु प अ), वम् (दि प से)
५ वैरायते-कल्हायते (ना धा), विवद
(म्वा आ से) ३ अनिष्ट-अपकार आंशक
(म्वा आ म) ।

रदट्टम, स पु (हि रदट्टना) रदट्टा,
शब्द-भेद धनि २ मय, ग्राम, आशवा
३ जिता ४ वील-ल ५ आंग, तीलक
३ पादशब्द ।

—लगाना, कि अ, वम् (दि प से),
धितिव-वय (वि) + भू ।

रदट्टाना, नि स, दे 'रदट्टाना' ।

रदट्टीचा, संश्रु (सं रदट्टाची) दे 'रदट्ट' ।

रदट्टम, सं स्त्री (अनु) रदट्टा, शब्द धनि
(पु) नाद ० कल्ह, विवाद ३ दे 'दट्ट' ।
रदट्टाना, नि म (अनु) तीक्ष्ण अभिज्ञ
(अ प अ)-तट्ट (जु) प्रह (म्वा प अ)
रदट्टाशब्द छ २ स्मृ (प्रे) ।

रदट्टीर, सं पु, दे 'रदट्ट' ।

रदट्टप्पर, सं पु, दे 'मसहरी' ।

रदटना, कि स, दे 'कमाना' ।

रदट्ट, सं स्त्री (अनु) कल्ह, विवाद
२ रदट्टाशब्द, शब्द, धोष क्षिणितम् ।

रदट्टुना, सं पु (हि साट + तुना) रट्टा,
वाय-वाप, मच-पर्यक, वाय-वाप ।

रदट्टमल, सं पु (सं खट्टामल >) उदरा,
मत्तुण, ओक्कण, ओकोदनी ।

रदट्टमीटा, वि (हि खट्टा + मीटा) अम्ल
मधुर, शुचमिष्ट ।

खट्टाग, स पु (सं पट्टागा) मेघदीपकादय
पट्टागा २ कल्ह ३ विस्वरता, विमवाद्
३ व्यर्थवस्तुनातम् ।

खट्टाई, सं स्त्री (हि खट्टा) अम्लता,
शुचता २ अम्ल, दावक ३ अम्ल-शुक्त,
पत्ताई ।

—चदना, सं पु, अम्लरोग (अनीर्णभेद) ।

—में पदना, सु, चिरायते मदायते (ना
धा), व्याधिप् (कर्म), अनिर्णीत (वि)
स्था (म्वा प अ) ।

खट्टाया, सं पु (अनु) खट्टार, मणिति
शब्द, महा-शब्द-रव ।

खट्टारदा, स पु (अनु) द 'खट्ट' २
२ शिपिन, कणिन । कि वि, सखट्टाशब्द
२ अनवरत, सददि ।

खट्टापटी, सं स्त्री दे 'खट्ट' १ ।

खट्टाव, स पु (दिश) नौकावधनवील-लम् ।

खट्टाव, स पु, दे 'निर्वाह' ।

खट्टास, स पु (सं खट्टास-ग) गधमाजूर,
कनेकमन ।

खट्टाम, सं स्त्री (हि खट्टा) अम्लता,
शुचना ।

खट्टिक, स पु, पञ्चानधिकतुजातिभेद,
*खट्टिक ।

खट्टिया, सं स्त्री (हि साट) रजु रदटा
पर्यक-मच, सट्टिवकी, खट्टावा ।

खटीक, सं पु (सं खटिक) सौनिक, शौनिक २ व्याघ्र, दुग्धक, नालिक ३ दे 'खटिक' ।

खटोलना, सं पु, दे 'खटिया' ।

खटोला, सं पु (हिं खाट) दे 'खटिया' ।

खट्टा, वि (स कट्ट >) अम्ल, शुक्त ।

सं पु, बीज-फल, -पूर, दतशठ, जम्भक, जम्बल छोलग ।

—चूक, वि, अति आयन्त, अम्ल शुक्त ।

—मीठा, वि, दे, 'खटमीठा' ।

—सा, वि, रंपदम्ल, आशुक्त ।

जी—होना, मु, गतस्थ-निर्विण्य वितृष्ण (वि) + भू ।

खट्टास, सं स्त्री (हिं खट्टा) दे 'खट्टास' (२) ।

खट्ट, सं पु (प खट्टना) धनाजक, विद्योपाजक २ कर्म, कर-कार ।

खट्टा, सं स्त्री (सं) दे 'खाट' ।

खट, सं (सं खात) गर्त-नी, अक्ट विल, विवर २ दरी, उपत्यका ।

खट्टकना, कि, अ (अनु) खट्टखा शब्द कृ । दे 'खट्टकना' ।

खट्टका, सं पु, दे 'खट्टका' ।

खट्टकाना, कि स } दे 'खट्टकाना' ।
खट्टकाना, कि स }

खट्टकानाहट, स स्त्री (हिं खट्टकानाहट) खट्टकाना-शब्द रव ध्वान २ तुमुलरव ३ कट्ट कर्कश पत्र, ध्वनि (पु) ।

खट्टकानाहट्या, सं स्त्री (हिं खट्टकानाहट) दे 'पालकी' ।

खट्टग, सं पु (स खट्टग) असि, दे 'तलवार' ।

खट्टगी, वि (सं खट्टगिन्) आशिक, खट्टग धर २ खट्टगमृग, दे 'गैंडा' ।

खट्टकानाहट, स स्त्री दे 'गडबडाहट' ।

खट्टकानी, सं स्त्री दे 'गडबडी' ।

खट्टकानाहट, स पु दे 'गडबडी' ।

खट्टकाना, स पु दे 'खट्टकाना' ।

खट्टा, वि (सं खट्टक = खट्टा >) (दखव) स्थित, उचित २ उचित, उगत, उगतान, कर्म, लम्बरूप, समध्य, वतिन् वधिन् ३ स्थिर, अचल, स्तब्ध, निश्चर, निश्चेष्ट ४ उपस्थित, प्रस्तुत ५ सन्न, सनद, उगत

६ निमित्त, रचित ७ अवका, अतिरु ८ अनु-त्याग, अलग्न ९ समस्त, समग्र [खट्टी (स्त्री) = स्थिता इ] ।

—करना, कि सं, 'खट्टा होना' के प्रे रूप ।

—रहना, कि अ, अचल-रुद्धगति (वि) + स्था इ ।

—होना, कि अ (पञ्जया) स्था (भ्वा प अ), उट् स्था, २ विट् (भ्वा प अ), निवृत् (भ्वा वा से), स्तम् (कर्म), स्थिरी निश्चली, भू ३ उपकृ, सहाय्य कृ ४ उचित-उत्त उक्तान (वि) + भू ५ निर्मा विरच (कर्म) ६ निधानिवेश् (कर्म) ।

खट्टे-खट्टे, कि वि, स्थित एव २ शयिति, सपदि, सप्त (सव अन्य) ।

खट्टाऊँ खट्टाँ, सं स्त्री (अनु खट्ट + हिं + पाँ) कोशी-पी, (काष्ठ-) पादुका ।

खट्टाका, स पु (अनु) खट्टखा, शब्द ध्वान ।

खट्टिया, स स्त्री (सं खट्टिका) खट्टी, कठिनी दे 'चाक' ।

खट्टी, स स्त्री (स खट्टी) दे 'खट्टिया' ।

खट्टग, म पु (सं) दे 'खट्टग' ।

खट्टगी, स पु तथा वि, (स खट्टगिन्) दे 'खट्टगी' ।

खट्ट, खट्टा, स पु (स खट्ट) दे 'खट्ट' ।

खट्टी, स स्त्री (स खट्ट >) तत्रवाप प, वाय(प) दण्ड, वेम, वेमन् (पु न), वान दण्डक, वाणि (स्त्री) ।

प्रत, स पु (अ) सदेश, पत्र-लेख लेख २ हस्तलेख, स्वदस्ताक्षर ३ अक्षरसंस्थान, लिखित, लिपि वि (स्त्री) ४ रेखा, रेखा, रेखा ५ गुरोमन् (न), रगड (न), बूर्च ६ क्षौर मुण्डनम् ।

—आना, कि अ, प्रथमत मुखरोमाणि उद्भू ।

—खींचना, कि स, रेखा आ-अभि लिप् (तु प से) ।

—बनाना, कि स, मुड् (भ्वा प से, तु) क्षुरेण वृत् (तु प से) - छिद् (रु प अ) ख (क उ से) ।

—खितायत, स स्त्री, (अ) पत्र, व्यवहार - विनिमय ।

—शिवस्ता, सं पु (अ + फा) वक्रलेख ।

प्रतना, सं पु (अ) शिखरत्वकच्छेद (इत्थम्) ।
 प्रतम, वि (अ खम्) समाप्त, पूर्ण ।
 —करना मु, मृ (प्र), हन् (अ प अ) ।
 —होना, मु, मृ (तु आ अ) ।
 प्रतर, म पु (अ) दे भय, वास ।
 —नाक, वि भयानक, भयङ्कर ।
 प्रतरा, स पु (अ) मय, भीति (स्त्री),
 दे 'भय' २ सहाय, मरेह ।
 खतरानी, स स्त्री, दे 'क्षत्राणी' ।
 प्रता, स स्त्री (अ) अपराध, दोष २ छल
 बधना ३ प्रमाद, खलितम् ।
 —वार, वि (अ + फा) अपराधिन्, दोषिन् ।
 खनियाना, कि. स (हिं खाना) आद्यव्यय
 पञ्चिकाया यथास्थान लिख (तु प से) ।
 खतियौनी, स स्त्री (हिं खतियाना) (बृहद्)
 आद्यव्ययपञ्चिका २ तत्र यथास्थान लेख
 ३ क्षेत्रपतिमुचोपत्वम् ।
 खत्ता, स पु (सं खान) अव्यय, गर्त
 २ धान्यागार-र ३ मिथि (पु) ४ राशि
 (पु) ।
 प्रतम, वि, दे 'खतम' ।
 खत्री, स पु (स क्षत्रिय) पश्चिमप्रान्ति
 आर्वांगामुरजातिविशेष २ ३ 'क्षत्रिय' ।
 खद्वेदाना, कि. अ (अनु) पुद्वेदायते
 (ना था) मन्द कथ् (कर्म) दे 'उवन्ना' ।
 खददा, स पु (अ) मय, भाषका ।
 खदान, स स्त्री, दे 'खान' ।
 खदिर, म पु (म) सारदुम, कुष्ठारि (पु),
 गायत्री, दत्तवाहन, बाल, नन्दय पत्र, यज्ञाग,
 सुगन्ध, बक्रक १ २ दे 'कथा' ३ बद्र
 ४ हन् ।
 खदेह, स स्त्री (हिं खदना) अनुधावनं,
 सन्त आच्छेदनम् ।
 खदेह(र)ना, कि स (हिं खदना) नि
 अप-स्य (प्रे), बहिष्क, निष्कम्-निर्वन (प्रे)
 २ अनुगन्, अनुधाव् (म्वा प से), मृग
 (तु आ से) ।
 खहर, दे० 'खत्री' ।
 खद्योत, स पु (सं) प्रमावीट, दे 'जुगन्'
 २ मूर्ध ।
 खनक, स पु (स) उडुह (पु), मूप पित्र
 २ मथिलखर ३ अवदारक, सातक

४ आकर, ख(खानि नो (स्त्री) ५ भूत
 खवेत् (पु) । सं स्त्री (अनु) ६ कृषि,
 सिनिनम् ।
 खनकना, कि अ (अनु) शिब् (अ मा
 से, चु), कण् (म्वा प से) ३ इत्थं यते
 खगण्यायते (ना था) ।
 खनकानर, कि स, 'खनकना' के प्रे रूप ।
 खनखनाना, कि अ तथा कि से, दे 'खन
 कना' तथा 'खनकाना' ।
 खनना, दे 'खोदना' ।
 खनिज, वि (सं) धातु (पु), आकरज
 पदार्थ ।
 खनित्र, सं पु (सं न) अवधारणम् ।
 खपची, सं स्त्री, दे 'खपाच' ।
 खपदा(रा), सं पु (स रार्पर) २ कर्पर
 २ मृत्युदृक्वा ३ मिज्ञापानम् ।
 खपदी(री), सं स्त्री (सं खर्पर) धावमर्बेनार्थ
 मृत्यावम् ।
 खपत, खपती, सं स्त्री (हिं खपना) समा
 बेरा, व्याप्ति (स्त्री) २ विकय, पगन
 ३ व्यय, विनियोग ।
 खपता, कि अ (सं क्षपण >) प्र-उप-युञ्
 (कर्म), व्यपह-व्याप्त (कर्म) २ क्षि परिहा
 (कर्म), नस् (दि प से) ३ डिस्-सन्
 पीट् (कर्म) ।
 खपरै (द्वै)ल, सं स्त्री (हिं खपहा) मृत्य
 टिकामि खपरै वा आच्छादित पटल
 ३ तादृशपटलपुस्तक गृहम् ।
 खपाच, सं स्त्री (तु खमची) (वाठ-)
 खट-ट, वशाख शकल-ट, २ भणिकुण
 पुरप ।
 खपाना, कि स (हिं खपना) प्र-उप-युञ्
 (र आ अ, चु), उपयुज्य-उपयुज्य निर
 वशीयोह, व्यवह-व्याप्त (प्रे) २ व्यद्-विनि
 युञ् (तु) ३ वि, नस् (प्रे) ४ साप्-पीट्
 (प्रे) ।
 खपुर, स पु (स न) गगत्थो दैत्यनगर-
 विदेश २ गगनस्था हरिश्चन्द्रनारी ।
 खपुप, सं पु (स न) गगनसुमुम, अमभव
 भसाध्य वस्तु (न), शृणु, विषाण-भ्याम् ।
 खपर(क), सं पु (सं खर्पर) मृत्यावमेद

२ काल्या रुधिरपानपात्र ३ मिश्रामानन
४ कापाल-रुम् ।

खफान, सं पु (अ) ह-रूपन २ (हिन्दी
रिवा) गर्भाशयोमाद, वातोमाद, हर्षमोद ।
खफरी, सं स्त्री (अ) प्रमाद प्रीति, अभाव
२ कोप, कोष ।

खफा, वि (अ) रष्ट, कुपित, मुक्त
२ विपण्ण ।

खफीफ, वि (अ) अल्प, न्यून २ लघु ३ शुद्र
४ लजित ।

खफीफा, म स्त्री (फा) लघु, न्यायान्य
धर्माधिकरणम् २ कुलटा, व्यभिचारिणी ।

खबर, सं स्त्री (अ) समाचार, उदत,
वृत्तान वृत्त, वार्ता, प्रवृत्ति (स्त्री) २ ज्ञान,
बोध ३ सदश ४ सश, चैतन्य ५ जनप्र
वाद ।

—करना, देना या पहुँचाना, कि सं, विज्ञा
(प्रे), नि-आ विद् (प्रे), सदिस (तु प
अ), बुध्-अवाम् (प्रे) ।

—लगाना, कि स, दे 'द्वदना' ।

—देने वाला, स पु, विज्ञापक, आवेदक,
सूचक ।

—ले जाने वाला, सं पु दूत, वार्ता-सदेश,
हर ।

खबरगरीरी, सं स्त्री (अ + फा) अवेशा,
रक्षण, विना २ सहानुभूति (स्त्री),
सहायता ।

खबरदार, वि (अ + फा) दे सावधान ।

खबरदारी, स स्त्री (अ + फा) दे 'साव
धानता' ।

खचीस, स पु (अ) मयजर, रत्न ।

खन्त, सं पु (अ) उमाद, चित्त, विप्लव
भ्रम २ उत्सूनना, सामा-सर्विरोध ।

खन्ती, वि (अ) उमादिन् २ उत्सून,
लोकवाह्य ।

खन्वा, वि (प, स खर्व) वाम, सन्ध्य,
दक्षिणर २ वामहस्त, सन्वसाचिन् ।

खम, म पु (फा) वक्रता, जिह्वता, आयुसता
कुटिलता ।

—दम, सं पु, शौर्य, विक्रम ।

—दार, वि, आनमित, आम्रप्र, कुञ्चिन ।

खमसा, वि (अ) पच, विषयक सम्बन्धिन् ।

सं पु, पचकम् २ पचमेद ३ अजुपी
पचकम् ।

खमियाजा, सं पु (फा) प्रतिफल २ दण्ड
३ वष्टम् ४ हानि (स्त्री) ।

खमीदा, वि (फा) वक्र, जिह्व, अराल ।

खमीर, सं पु (अ) त्रिण्व, जगल, मासर,
मेदक, कारोत्तर, नग्नह (पु) ।

—उदाना, कि स किण्वेन समिश्र (नु) ।
स पु किण्वन, किण्वीकरण ।

खमीरा, वि (अ) किण्व-जगल, मिश्रित
२ घनमधुकाथ ३ तमासुमेद ।

खमानत, स स्त्री (अ) सकपटाहरण,
दुर्विनियोग २ चर्च, वचना ।

—करना, कि स कपटेन आत्मसाद कृ अथवा
विनियुज (र आ अ) ।

खपाल, म पु दे 'ख्याल' ।

खयाली, वि, दे 'ख्याली' ।

खर, स पु (सं) गर्दभ, रासभ २ अश्व
तर, वेसर ३ वक्र ४ काक ५ रावणप्राद
(पु) ६ तुण, घास ।

वि, कठोर, शक्य, कौशल २ तीक्ष्ण ३ स्थूल
४ अमगल, अमागलिक ५ निश्चित ६ प्रवण,
तिर्यच ।

खर, म पु (फा) गर्दभ, रासभ ।

—दिमाग, वि, जड, अत, खरमति ।

खरखर, स स्त्री (अनु) वर्षर, पर्पर, ख-
शब्द ।

—करना, कि स, पर्परायते (जा वा),
पर्परध्वनि कृ ।

खरखरा, वि दे 'खुरखुरा' ।

खरगोश, स पु (फा) शश, शशक, श्लिक
खुरोमन् (पु), रोमकर्म ।

खरच, स पु, दे 'खर्च' ।

खरचना, कि स (फा खर्व) व्यय (नु),
अर वि, सञ्ज (तु प अ), विनियुज (र
आ अ, नु), क्षयव्यय, कृ ।

खरचा, स पु दे 'खर्चा' ।

खरज, सं पु दे 'खटज' ।

खरब, वि (सं खर्वम्) स पु, अर्बशतम्
(१०००००००००००) २ अर्बदशकम्
(१००००००००००) ।

खरबूजा, सं पु (सं खर्वज) दशागुल, षट्, भुजा मुन रेखा मुखा, वृत्तकर्त्री ।

खरमस्ती, स स्त्री (फा) दुष्टता, कुचेष्टा ।

खरमास, स पु, दे 'खरवास' ।

खरल, स पु (स खल्ल) वृद्ध (ल्) खल, औषधमर्दनभाजनम् ।

—करना, कि स चूर्ण (चु), चूर्णीक, पिप् (रु प अ), छुद् (रु उ अ) ।

खरवोस, स पु (स खरमास >) पीषचैत्रो । (इनमें मांगलिक कार्य बन्त हैं) ।

खरसान, स स्त्री (स खरशाण) शाण-ज्ञानी, भेद ।

खरहरा, सं पु (हि खर = तिनका + हरना) अपमार्जनी ।

—करना, कि स, अथ मृज् (अ प वे) ।

खरहा, स पु, दे 'खरगोश' ।

खरही, स स्त्री (हि खर = पास) (पासदे) राशि (पु) २ पासभेद ।

खरा, वि (स खर = तीक्ष्ण) विगम, नीक्षण २ अभिधित, अविज्ञान, स्वच्छ, विशुद्ध, पवित्र, उत्तम ३ भगुर, मिदुर ४ निष्कपट, निरदल ५ स्पष्ट वधार्य, वादिन् वक्तु ६ मूर्ति, बहु ६ कठिन, कौकस । खरी (स्त्री), विशुद्धाह ।

—खेल, सं पु निष्कपट व्यवहार, सरलाचरण ।

—पन, स पु विशुद्धता, पवित्रता, उत्तमता, श्रजुता, निष्कपटता ह ।

खराई, स स्त्री दे 'खरापन' ।

खराद, स पु (अ खरांत से फा खरांद) अमयत्र, कुद-त्र, भ्रम, भ्रमि (स्त्री), चक्र यत्रकम् ।

खरादना, कि स कु-देन सख् ।

खरादी, स पु (फा खरांद) कुदिन्, चकिन् ।

खराव, वि (अ) निरुद्ध, शर्द्धं विद्य, हीन २ हीन, दुर्गत ३ पतित, च्युत ४ दुष्ट, पापिन् ।

—करना, कि स मस्तिनी-वनुषी आविन्नी, कृ २ स पवात्र भ्रम् (प्रे) जुमागें प्रश्न (प्रे) ।

खरायान, स पु (अ) मदिराय २ प्लगृहम् ३ वेद्यवायीथी ।

खरावाती, सं पु (अ) मयप २ घृतकार, कितव ४ वेद्यागामिन् ।

खराथी, स स्त्री (अ) दोष, अवगुण २ दुष्टता, नीचता ३ दुर्दशा, दुर्गति (स्त्री) ।

खरारि(री), सं पु (स रि पु) रामचद्र २ धीष्टण ३ विष्णु ।

खराश, स स्त्री (फा) दे 'खरोच' ।

खरिया, सं स्त्री, दे 'खडिया' ।

खरिहान, सं पु दे 'खरियान' ।

खरी, सं स्त्री (सं) गर्दभी, रासभी ।

खरीद, सं स्त्री (फा) क्रय, मूल्येन ग्रहण २ क्रीतवदार्थ ।

—व फरोख्त, सं स्त्री (फा) क्रयक्रयौ (द्वि) ।

खरीदना, कि स (फा खरीदन) की (क् उ अ) मूल्येन अधिगम् अथवा लभ् (भ्वा आ अ) ।

खरीदार, स पु (फा) क्रयिक, क्रेष्ट (पु), ग्राहक २ इच्छुक, अभिलाषिन् (पु) ।

खरीदारी, स स्त्री (फा) क्रय, मूल्येनादान ।

खरीफ, स स्त्री (अ) शारद शारदीय शर (कालीन) शस्य ।

खरोच, स स्त्री (सं छुर = सुरचना >) ईषत्सत, वक्रण ।

खरोचना, कि स (पूर्व) छुर छर् (तु प से) वि-अयन् (प्रे), (मरोच) छृण् (त उ से) ज्व् (चु)-लिप् (तु प से) ।

खरोट, स स्त्री, दे 'खरोच' ।

खरोटना, कि, स दे 'खरोचना' ।

खर्च, स पु (अ खर्ज) व्यय, धन, त्याग-व्यय-उत्सर्ग, विनियोग २ मूल्य, अर्थ, अर्ह ।

—करना, कि, स दे 'खरचना' ।

—होना, कि, अ, व्यय विसृज् विनियुन् (सब कर्म) क्षय-व्ययया (अ प अ) ।

खर्चना, कि स दे 'खरचना' ।

खर्चा, स पु (अ खर्ज) दे 'खर्च' २ अभि-योग कार्य-व्यवहारपद, व्यय ।

खर्चीला, वि (हि खर्च) -व्ययशील, व ति वधिन्, अमितव्यय ।

खजूर, स पु (स) दे 'खजूर' २ वृथिव, द्रोण । (स न) रजन २ दे 'हरताल' ।

खपरं, सं पु (सं) दे 'सप्पर' ।

खर्ग, सं पु, दे 'खर २ दे 'खर्ग' ।

खर्बूजा, सं पु, दे 'खरबूजा' ।

खर्राटा, सं पु (अनु) खर्पर ।

—भरना, मरना या लेना, कि अ, खर्प
रायने, खर्परसब्दक, प्रगाड स्वप् (अ प अ) ।

खल, कि, (स) क्रूर, नृसस २ अधम,
नीच ३ दुष्ट, दुर्वृत्त ४ पिशुन ५ निर्लज्ज
६ छलिन ।

सं पु, दुर्जन २ मूर्ख ३ तमालवृक्ष
४ पृथिवी ५. स्थान ६ बल (दू) बल
७ ८ दे 'खलियान' तथा 'खलछट' ।

खलक, सं पु (अ) जीवा प्राणिन (बहु)
२ जगद् (न), ससार ।

खलकत, सं स्त्री (अ) सृष्टि (स्त्री), ससार
२ जनौष, जनममर्द ।

खलकी, स स्त्री (हि खाल) त्वच् (स्त्री),
त्वचा, त्वच, त्वचस् (न), छदिम (स्त्री),
सछादनौ, असुधरा २ (पशुओं की) चर्मन्
(न) ३ (मरे पशुओं की) अजिन, इति,
कृत्ति (स्त्री) ४ शिखनाप्रचर्मन् (न) ।

खलता, स स्त्री (सं) कुचेष्टा, दुष्टता,
दुर्वृत्तना, खलत्वम् ।

खलना, कि अ (स मर = तीक्ष्ण >) अनु
चिन्त-अयुक्त-अयोग्य-अनुपपन्न (वि) प्रतिमा
(अ प अ)-दृश (कर्म) ।

खलबल, सं स्त्री (अनु) क्षोभ, विप्लव,
अशांति-अनिर्वृति (स्त्री), प्रकोप, कलइ,
२ कोलाहल, लकोश ३ दे 'कुलबुलाइ' ।

खलबलाना, कि अ (हि खलबल) बुदबुदायते
(ना था), दे 'खलना' २ क्षुम (दि प
से, क् प से), क्षुब्ध-बिह्वल (वि) + भू
३ दे 'कुलबुलाना' ।

खलवली, स स्त्री, दे 'खलव' ।

खलल, सं पु (अ) विघ्न, अतराय, बाधा ।

खलाम्, सं पु (अ) मोम, मुक्ति (स्त्री)
उद्धार । वि, मुक्त, उद्धृत, निस्तीर्ण २ अव
सिन, समाप्त ।

खलासी, स स्त्री (अ) उद्धार, निस्तार,
मोक्ष । सं पु, पटमडपरोपक २ मारवाह
३ पोतभृत्य ।

खलियान, सं पु (सं खल + स्थान)
गणधान खल ल २ धायागार, कुशल
३ राशि (पु) चय ।

खलियाना, कि स (हि, गल) निम्न
चयति (ना था) निस्त्ननीक, चर्मन् (न)
अपनी निह (दोनों म्वा उ अ) ।

खलियाना, कि स (हि गाली) शूर्या
रिक्ती, -क, रिच (रु उ अ) ।

खलिश, स स्त्री (पा) वेदना पीडा २ वैर,
द्वेष ।

खलिहान, स पु, दे 'खलियान' ।

खली-ख्ली, स स्त्री (सं खली) तैलकिट्ट,
तिजबलक पिण्याक, खलि (पु) ।

खलीज, म स्त्री (अ) दे 'खादी' ।

खलीफा, स पु (अ) अध्यक्ष, अधिकारिन्
२ यमननुपवेशविशेष ३ वृद्धजन ४ सूद,
पाचक ५ सौचिक सुचिक ६ नापिन ।

खलु, अव्य (स) निश्चयनिषेधप्रियासा-नुन
यादिवोधकमव्ययम् ।

खलेल, स पु (सं खलिनैल) सुगन्धनैल
किट्टम् ।

खलक, स स्त्री, दे 'खलक' ।

खलत-मलत, दे 'गडबडु' ।

खल्ल, स पु (स) दे 'खरल' २ चर्मन् (न)
३ गर्त ४ चानक ५ इति (स्त्री) ।

खल्लइ, स पु (स) चर्मन् (न) २ अजिन
जलमन्त्रा ३ वृद्ध, जरठ, स्वविर ।

खल्ला, स पु (स खल्ल = खमडा >) जीर्णो
पानइ (स्त्री), पुराणपादनम् ।

खल्लि (स्त्री) ट, खल्लवाट, वि (सं) दे 'गजा' ।
स पु, दे 'गजापन' ।

खला, स पु, दे 'कथा' ।

खलैया, स पु (हि खाना) भक्षक,
खादक भोक्त्वा (पु) ।

खस, स पु दे, खम' ।

खसाम्न (खस) श, सं पु दे 'धमस' ।

खस, स स्त्री (फा खस) उशीर र, नन्द,
जलवाम, वीरणमूल, सेव्य, शीत सुगन्धि, मूलक
वीर, वीरभद्र, हरिमियम् ।

खसकना, कि अ (अनु) दे 'खिसकना' ।

खसकाना, कि स, दे 'खिसकाना' ।

खसखस, स स्त्री (सं खसखस) खसखिल,
सूक्ष्म, तनुल-बीज, सूवीज ।

—रस, स पु (स) दे 'अपीम' ।

खसखसा, वि (अनु) श्लोकचूर्णरूप, सिक
निल, शनरिल ।

खसखसास, स स्त्री, दे 'खसखस' ।

खसस, स पु (अ) पति (पु) भर्तृ (पु)
२ स्वामिन (पु) श्रेय, नाथ ।

खससरा, स पु (अ) क्षेत्रसूची, केदार
लेखम् ।

खससरा, स पु (फा रारिश) रोमान्तिका,
धर्मोपदेश २ राज-कृतित भेद ।

खसखलन, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री),
स्वभाव, २ दे आदत् ।

खससारा, स पु (अ) हानि क्षति (स्त्री),
दे धाया ।

खसिया, वि (अ खसी) लुप्तवृषण छिन्न
मुक् । स पु, क्लीब, पठ २ अज ।

खसोट, स स्त्री (हि खसोटना) बलात्
अकरमात् सद्दसा ग्रहण-अपहरण-आच्छेदन
२ बलात् उपपादन उमूलनम् ।

खसोटना, क्रि, स (स खट >) असम्यक्
उमूल उपपट् (चु)-कृष् (भ्वा प अ)
२ बलात् सद्दसा अपहृ (भ्वा उ अ)-
आच्छिद् (क प अ) ग्रह् (क उ से) ।

खसोटी, स स्त्री, दे 'खसोट' ।

खस्ता, वि (फा खस्त) मिदुर, भयुर, मिदे
लिम २ क्षत, बुद्धित ।

—कचीड़ी, स स्त्री, मिदुर स्निग्ध, सुपिटिका
शङ्कुली ।

—दिल, वि भग्न, चित्त हृदय ।

—हाल, वि, दुर्गत, दरिद्र, दु मित ।

खससी, स पु (अ) छिन्नमुष्क अज-छाग
२ पठ, क्लीब । वि, लुप्तवृषण, छिन्नमुष्क ।

—करना, क्रि स, वृषणी छिद् (ह प अ)
उपपट् (चु) ।

खस, स पु (खसारी, माड सरदार) स्वामिन्
(पु), अपीश २ पठाननाते वपाधि (पु) ।

—साहब,—बहादुर, स पु, आधिभेदी ।
खाम्बर, वि (सं ख-छिद्र >) छच्छिद्र,
सरभ २ रिक्त शून्य-गर्भ, अत शून्य ।

खाम्बर-डा, वि (स खह्य >) श्मिन्,
विषाग्निन् २ सशस्त्र ३ सवल ४ उदण्ड ।

खोचा, स पु (स कर्षणम् >) महा,पेटक
करक बडोक २ वृहद्, २ र पजरम् ।

खोड़, स स्त्री (स खण्डम्) ज्योषित
असृष्ट, सिता-शर्करा ।

खोड़व, स पु (स न) कुक्षेत्रप्रदेशे वन
विशेष ।

—ग्रस्थ, स पु (स) प्राचीननगरविशेष ।
खोड़ा, स पु (स खण्ड >) दिभार,
खडग अस्त्रि निर्दिष्टा कृपाण ।

खोडा, स पु (स खड-ड) भाग, अक्ष ।
खोसना, क्रि अ (स कासन) काम् (भ्वा
प से), क्षु (अ प से) ।

खोसी, सं स्त्री (स कास) काश, उत्काम,
क्षय्यु (पु) ।

खोई, स स्त्री (स खानि >) परिखा, खात,
खातकम् ।

खोऊ, वि (हि खाना) अखाहारिन्, बहु
भोगिन्, अन्न, पत्तर ।

—उदाऊ, वि मुक्तहस्त अर्थनाशिन् ।
खोऊ, स स्त्री (फा) धूलि (पु स्त्री),
धूली, पांशु लु, खजस् (न), गेणु २ भस्मन्
(न) भस्मित भूति (स्त्री) ।

—खोय, स पु, खलू (पु), समाजक ।
—खार, वि, नम्र, विनीत ।

—खारी, सं स्त्री, नम्रता, विनय ।
खोका, स पु (फा) बाधरे (ले) दा, बाधा
कार २ अपरिष्कृतलेख, पाटलेख ३ प्रति
रूप, प्रतिमान ४ सकलन, सत्यानम् ।

—उदाना, मु उप-अव-इत् (भ्वा प से) ।
खोकी, वि (फा) भासिक, शृण्मय २ धूलि
रजो-वर्ण रग ३ स स्त्री, जलहीन-अनासिक,
भूमि (स्त्री) ।

खोका, सं स्त्री [स खजुं (पु)] खजू
(स्त्री), कट्ट-कट्टि (स्त्री), खस, पामा,
विचचिका ।

—खोना, क्रि अ, कट्टि गस अनुभू ।
खोट वी खान, मु, क्षते धार, गंडे खोटक ।

खोजा, स पु (स खाय) भक्ष्य भोज्य खाय
वस्तु (न)-पदार्थ २ भोजन ३ मिष्टान्नभेद ।
खोड, स स्त्री (खोट >) खट्वा, शपनम् ।

- मटोला, सं पु गृह, खरस्कर-परिच्छदः ।
 पारिच्छन् ।
- खाड़ी, सं. स्त्री (सं खान >) ममुद्र, वक्र,
 बन्ना-भन् ।
- खान, सं पु (सं. न) खनन, अवधारण
 २ परिष्ठा, खान, खातक ३ गर्त ४ कूप
 ५ कासार ६ पुरीषादिर्गन् ।
- खानना, सं पु (फा) म्नाहि (स्त्री)
 = नरतु ।
- खाता, सं पु (अ खान >) गन्ना-मत्स्यान,
 पञ्चिका २ विषय, विभाग ।
- खाना, सं पु (सं खान >) कुम्भ (मू) ल.
 दान्दकोष कठोले ।
- खानिर, सं स्त्री (अ) ममान, अरर ।
 कि वि, ह्ये, अर्थे, हेयो ।
- खाह, कि वि (अ + फा) दधीचिउ,
 दध्- दधन् ।
- खमा, सं स्त्री (अ) मलोप, मत्वन् ।
- खारी, सं स्त्री (अ + फा) अरर,
- खान, सं. स्त्री. [सं खानिः (स्त्री)] अकर,
 ख (खा) लीनिः (स्त्री) २ वापत्त्वान
 २ कोनः ।
- खान, सं. पु, दे 'खौ' ।
- खानक, सं. पु (सं) खानकः, खनकः, खनिष्ट
 (पु), कासमिक २ मुग्धाकार ३ गृह,
 कारक-भवेःक, पला-व., लेनकार ।
- खानकाह, सं स्त्री (अ) दवनमिष्टुविहारः ।
- खानगी, वि (फा) गृह, कौटुम्बिक ।
- खानदान, सं पु (फा) वद्य, कन्द, कूलम् ।
- खानदानी, वि (फा) मकुल-उक्कवश, अश्विन्
 २ दिव्य, पैयूक ।
- खानपान, सं पु (सं न) अश्वत्थ, मध्य
 पेय = खानपान मुक्तिपीठि (न) ३ मुक्ति
 पीठिविधि (पु) ३ परस्परमोक्षण, सन्धि
 (स्त्री) ।
- खानसामा, सं पु (फा) (दवनादीना)

खाया पिया निकालना, मु, तीव्र परप तद्ध
(सु) प्रह (भा प अ) अभिद्न् (अ प अ) ।
 मुँह को खाना, मु, पूर्णतया पराभि परिभू
(कर्म) ।
 खाना, स पु (फा) गृह, सधन् (न),
 आलय २ (मेज आदि का) सपुट, निष्क
 र्णनी, चलसमुद्रक ३ कोष पुट ट ४ बोधक,
 सारणी चक्र, विभाग ।
 —खराब, वि (फा) विनाशक, अनिष्टोत्पादक,
 क्षयकर (री खी) ।
 —जगो, स खी (फा) पारस्परिकविग्रह,
 गृहयुद्धम् ।
 —नलाशी, स खी (फा) गृहान्वेषणम् ।
 —दारी, स खी (फा) गार्हस्थ्यम् ।
 —पुरी, स खी (फा + हि पूरना) बोधक
 पूरणम् ।
 —बदोश, वि (फा) अस्थिर अनियत-वाम,
 य (या) यावर । स पु अस्थानिन्,
 नित्यविहारिन् ।
 —शुमारी, स खी (फा) जनसरयानम् ।
 व्याप्ति, स खी (स) दे 'यान' २ प्राचुर्य
 ३ राशि (पु) ४ कोष ५ प्रकार
 ६ दिशा ।
 खानिक, स खी, दे 'खान' ।
 खायक-वृत्रद, वि (अनु०) विषम, ननोन्नत ।
 खामि वि (फा) अपक, आम २ अपुष्ट
 अद्द ३ अनुभूतशय ।
 खामताह, कि वि (फा) खवाह मर-राह)
 बलाद्, हठात् २ अवश्य, भ्रुवम् ।
 खामी, स खी (फा) भागना, अयकता
 २ अनुभवहीनता ३ न्यूनता ।
 खामोदा, वि (फा) नि शब्द, नीरव ।
 खामोशी, स खी (फा) नीरपता मौनम् ।
 खाह, स पु (स धार) १ दे 'धार'
 २ दे 'सजी' ३ दे 'खर' ४ धूलि (खी)
 ५ गुणभेद ।
 खार, स पु (फा) दे 'वर्षा' २ ईर्ष्या,
 अमूया, डेप ।
 —खार, वि, कटविन्, सक्कट ।
 —खाना, मु, ईर्ष्य-ईर्ष्य (भा प से)
 अमू (ना धा), रपर् (भा आ से) ।

खारा, वि पु (स धार) धार, विशिष्ट-युक्त
 २ ईषलवण, ३ लवण, लवणयुगविशिष्ट
 ४ कड़ अरचिकर (-री खी) ।
 खारा, सं पु (स धारक) बरह, कटोल,
 पटक २ घासादिबधनजाल ३ विवाह
 सत्कारोपयुक्तासनभेद ।
 खारि, स खी (स) दे 'खारौ' ।
 खारिज, वि (अ) बाह्यकृत, अपास्त २ निरा
 कृत प्रत्याख्यात ।
 —करना, कि स, बहिष्कृत, अपास (दि प
 से) २ निराकृत, प्रत्याख्या (अ प अ) ।
 —होना, कि अ, बहिष्कृत-अपास (कर्म)
 प्रतिक्षिप् प्रत्याख्या (कर्म) ।
 खारिजा वि (अ) बाह्य, बाहीय बहिस्थ,
 विदेशीय ।
 खारिश, खारिशत, स खी (फा) दे
 'खुली' ।
 खारी, स खी (स) फोहल-चतर, द्रोण
 परिमाणम् ।
 खारी, स खी (हि खारा) उपरज,
 उपरलवण, क्षारलवण । वि खी, दे 'खारा'
 के खी रूप ।
 —पानी, स पु, धार, पानीय चल्म् ।
 खाल, स खी (स खाल >) दे 'खाली'
 (१३) २ आवरण ३ शव ४ भ्रमा खी ।
 —उड़ाना, मु०, निर्दय परहय-चद निष्पुट तन्
 (सु) प्रह (भा प अ) ।
 —उधेड़ना या खींचना, मु लच अपनी
 (भा प अ) निर्ह निष्कूप (भा प अ),
 निस्तवचवति (ना धा) ।
 खाल, स खी (स खाल) निम्नभू (खी)
 २ रिक्तराज अवकाश ३ दे 'खाली'
 ४ गाम्भीर्यम् ।
 खाल, स पु (अ) तिल, तिलक तिल,
 कालक बहुल ।
 खालसा, वि (अ गालिस) एवाधित्त,
 एकाधिष्ठित २ राजवीय । स पु, शिष्य
 (सिन्ध) जातिविशेष ।
 खाला, वि (हि खाली) निम्न, अवनत,
 अवच ।
 —ऊँचा, वि उचावच, ननोन्नत, विषम ।

ब्राह्मण, सं स्त्री (अ) मातृस्त्व(भ्य)सु
(स्त्री), मातृभगिनी ।
—ज्ञाद, वि पु, मातृभ्वसीय, मातृभ्वसेय
(स्त्री, -सीया, -सेयी) ।
—जी का घर, मु, सुकर कर्मन् (न) ।
प्राक्तिक, सं पु (अ) स्रष्टृ विधातृ-सृष्टि
कर्तृ (पु) ।
खालिस, वि, (अ) दे 'खरा' (२) ।
खाली, वि (अ) रिक्त, शून्य २ अनधिष्ठित
३ रहित, हीन ४ अव्यापृत, निष्क्रिय
५ अधिक, उद्वृत्त ६ निष्फल, व्यर्थ । कि
वि, देवलम् ।
—करना, कि स, रिच् (र प अ), परि
त्यज (भ्वा प अ), उत्सृज (तु प अ) ।
—होना, कि अ रिच परित्यज्-उत्सृज (कर्म) ।
—हाथ, मु, अकिंचन, दरिद्र २ नि शस्त्र ।
खाल्, स पु (अ) मातृभ्वत्त्वव ।
प्राविन्द, स पु (फा) पति, मर्त्य २ स्वामिन्
प्रभु (पु) ।
—करना, मु, अथर पति विद् (तु प वे)
वृ (स्वा व से), द्वितीय विवाह कृ ।
प्रास, वि (अ) स, विरूष, विशिष्ट, विलक्षण,
असाधारण २ रहस्य, मवरणीय, गोप्य ३
स्वकीय आत्मीय ४ पवित्र ५ प्रधान, मुख्य ।
—कर, कि वि, विशेषत, विशेषण ।
—व आत्म, सं पु, जनना, लोक ।
प्रासा, वि (अ) प्रास उत्तम, उत्कृष्ट २ स्वस्थ
३ मध्यवर्गीय ४ सुन्दर ५ परिपूर्ण ।
प्रासा, स पु (अ) नृपभोजन, भूपाहार
२ राज्ञो गजोऽथो वा । ३ श्वेतवस्त्रभेद
४ पुरिकाभेद ।
प्रासि(नी)वत, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री),
स्वभाव २ गुण, धर्म ।
प्रास्ता, स पु (अ) दे 'खासियत' ।
खिचना, कि अ (स कर्षण) आन्, कृष्
(कर्म), २ दृढीकृत नियम् (कर्म) ३ बहू
नी (कर्म) ४ (चित्रादि) वर्ण-आलिख
(कर्म) ५ उव् शुष् (दि प अ) नि-आ
पा (कर्म) ६ सु (भ्वा प अ), क्षर
(भ्वा प से) ।
खिचवाना, कि प्रे } न 'खिचना' के प्रे
खिचाना, कि प्रे } रूप ।

खिचाई, सं स्त्री, } १ आकर्षण,
खिचाव, स पु, } २. आकर्ष
खिचावट, खिचाहट, सं स्त्री } ३ दृढीकरण,
४ निदमन ५ घनता, सुमसक्ति. (स्त्री) भा,
तति (स्त्री) इ ।
खिचना, कि अ, दे 'खिरना' ।
खिचवी, सं स्त्री (सं कृसर) कृशर,
मिश्रीदन न, कृसरा, देदलोदन न, खेचराज ।
२ मिश्रितद्रव्य, प्रकीर्णक विविधवस्तुमिश्रणम् ।
—करना, मु, एकीकृ, सं, मिय (चु) ।
—होना, मु, मसृज्-सपृच् (कर्म), एकीभू ।
खिजना, कि अ (स खिद्) दे 'खिचना' ।
खिज्जर, खिज्ज, स पु (अ) देवदूत विशेष
(इस्लाम), २ पथप्रदर्शक, मार्ग-दर्शक ।
खिजलाना, कि स तथा कि अ, दे
'खिचाना' तथा 'खिचना' ।
खिजो, स स्त्री (फा) शिशिर, दे 'पतझड'
२ अवनतिकाल ।
खिजाव, स पु (अ) केश-बाल-भूषण,
लेप रंग-रंग वर्ण ।
—करना या लगाना, कि स, केशान् रम्
वर्ण (चु) ।
खिजालत, स स्त्री (अ) लज्जा त्रया, व्रीडा ।
खिजना, कि अ (स खिद्) दे 'खिचना' ।
खिजाना, कि स, दे 'खिचाना' ।
खिदकी, स स्त्री (म खद(ड)किका) । वाता
यन, लघुदार, गवाक्ष । २ अररी, कपाट
दम् ।
खिताव, स पु (अ) उपाधि (पु), मानपदम् ।
खित्ता, स पु (अ) प्रदेश, भूभाग ।
खिदमत, स स्त्री (अ) सेवा, परिचर्या ।
—गार, सं पु (अ + फा) सेवक, परिचरक ।
—गारी, -गुजारी, स स्त्री (अ + फा)
सेवा, परिचर्या ।
खिन, स पु, दे 'क्षण' ।
खिन्, वि (स) दु स्तित, पीठित २ संचित,
चिन्तित ३ विपणन, शोकमग्न, ३. दीन निरा
श्रय । ४ श्रात, क्लान्त ।
खियानत, सं स्त्री, दे 'खियानत' ।
खिरनी, स स्त्री (स क्षीरिणी) हीमी, हिमगा,
हिमदुग्धा (वृक्षभेद) २ तत्फलम् ।
खिराज, स पु. (अ) दे 'कर' (टैक्स) ।

खिल, सं. पु (सं पु न) ऊपर -२ २
रिक्त, स्थान-स्थलम् ३ परिशिष्ट ४ शेषाश
५ विष्णु ६ ब्रह्मन् (पु) ।
खिलभत, सं स्त्री (अ) समानवेश ५ ।
खिलकत, सं स्त्री, दे 'खलकत' ।
खिलखिल, स स्त्री (अनु०) हास, हसित
हसनम् ।
खिलखिलाना, कि अ (अनु) उच्चैः सदाश्च
हस् (भ्वा प से), अट्टहास कृ ।
खिलना, कि अ (सं खलन भववा किरण ?)
विकस प्रफुल्ल (भ्वा प से), स्फुट् (तु
प से), मिद् (कर्म) २ प्रसद् (भ्वा प
अ) ३ शुभ् (भ्वा आ से) ४ पृथक् भू ।
सं पु, विकसन, फुल्लन, प्रस्फुटन ३० ।
खिला हुआ, वि, विकसित, उच्चैः, प्रस्फुटित ।
खिलवत, स स्त्री (अ) निज्जन विनत, स्थानम् ।
खिलवाङ्, सं पु (हि खलना) खेला, लीला,
क्रीडा, मनोविनोद, विहार ।
खिलवाङ्गी, वि, दे 'खिलवाङ्गी' ।
खिलवाना, कि प्रे, अयेन + 'खाना' धातुओं
के प्रे रूप ।
खिला, सं स्त्री (अ) शयकम् ।
खिलाई, स स्त्री (हि खिलाना) अन्नदान,
पोषण २ भक्षण, खादनम् ।
—खिलाई, स स्त्री, भुक्तपोत, खादनपान,
खानपान २ अन्नपानदान, पोषण २ पोषणार्थ ।
खिलाई, स स्त्री (हि खलाना) अकपाली,
शिपुपालिका ।
खिलाद्, खिलाड़ी, वि (हि खेलना) क्रीडा
खेला लीला, पर शील । स पु, क्रीडक,
खेल्क २ खेद्रनालिक मायाविन् (पु)
३ प्तं ।
खिलाना, कि प्र खलना' के प्रे रूप ।
खिलाना, कि प्रे, खाना के प्रे रूप ।
खिलाना, कि प्रे, 'खिलना' के प्रे रूप ।
खिलाफ, वि (अ) विरुद्ध विपरीत ।
खलाफत, स स्त्री (अ) देवदूत-नृप प्रति
निवास-उत्तराधिकारिस्वम् ।
खिलौना, स पु (हि खेलना) क्रीडाद्रव्य,
क्रीडनक, क्रीडनीयक २ छुद्रालकार ।
खिलप, वि (सं) परिशिष्टे वर्णित लिखित ।

खिल्ली, सं स्त्री (हि खिलना) श्वेला, नर्मन्
(न), विनोद ।
—चाज, वि, विनोदशील, नर्मप्रिय ।
—चाजी, सं स्त्री, विनोदशीलता, नर्मप्रियता ।
खिरत, म स्त्री, (फा) दे 'ईट' ।
खिसकना, कि अ (अनु) शनैः सप (भ्वा
प अ) चल (भ्वा प से) २ प्र, खल्ल
(भ्वा प से) ३ सत्वर-अलक्षित नियून
अपया (अ प अ) अपस् (भ्वा प अ)
गम् । सं पु, शनै-गृह्, सर्पण, खलन,
अलक्षित गमन अपसरण ३० ।
खिसकाना, कि स, 'खिसकना' के प्रे० रूप ।
खिसलना, कि अ, दे 'फिसलना' ।
खिसलाव, सं पु, दे 'फिसलाव' तथा
खिसलाहट, स स्त्री 'फिसलाहट' ।
खिसारा, सं पु (अ) शक्ति क्षति (स्त्री) ।
खिमिआ(या)ना, कि अ (हि खीस=
दाँ) लज्ज (तु आ से), अप (भ्वा
आ वे) शील (दि प से) २ कुप (दि
प अ), कुप् (दि प से) । वि, लज्जित,
हीण, हीन ।
खीच, स स्त्री (हि खीचना) कर्ष, कर्षणम् ।
—तान, म स्त्री, प्रतिस्पर्द्धा, विनिर्गोषा
२ अर्थान्तरकल्पना ।
खिसियाहट, स स्त्री, दे 'खीस' ।
खीचना, कि स (स कर्षण) आ-स, शृप्
(भ्वा, प अ), बलात् दिशाविशेषे प्रेर (प्रे)-
नी (भ्वा उ अ) प्रकृद् (प्रे) ३ दृ (भ्वा
उ अ) दे 'खीसना' ३ निष्कस (प्रे),
वहिर अप, नी । ४ उद्भव (भ्वा उ से),
पयुंश्च । ५ शुप (प्रे) ६ सुस्थद (प्रे)
७ वर्ण (लु), आ-अभि लिख (तु प से) ८
रुप् (रु उ अ) । स पु, आकर्ष, भावर्षण,
नयन, हरण, निष्कासन, उद्वहन, शोषण
छावण, आलेपन, रोष ।
खीचने योग्य, वि आ, कर्षणीय, भेद, हर्तव्य,
इ ।
खीचाखीची, }
खीचातान, } स स्त्री, दे 'खीचतान' ।
खीचातानी, }
खीअ, खीअ, स स्त्री (हि खीजना) दे 'खिअ' ।
खीज(स)ना, कि अ (सं खिज्) दे 'खिजना' ।

खीमा, सं पु (अ) दे 'खिमा' ।
 खीर, स खी (स क्षीर रा >) पायसं, परमाज्ज,
 क्षीरिका २ दुग्ध, पयम (न), क्षीर, स्तन्यम् ।
 —चटाई, सं खा अन्नप्राशनसंस्कार (धर्म) ।
 खीरा, स पु (स क्षीर क) (लता) पीतपुष्पा,
 त्रपुकरांटी, त्रपु-कोप-सुदिह, फणा, वटविडता ।
 (फल) त्रपुष, कन्विफल, सुशीतल, सुधावासम् ।
 —कन्दो, सु, तुच्छवस्तु (न) ।
 खीरी, स खी (स क्षीर र >) उपसृक्धम
 कोपस (न) आपीनम् ।
 खील, सं खी (हि खिलना) घाना (खी,
 बहु) लाजा (पु, खी, बहु) ।
 खीली, स खी (हि खील) बीटीटि (खी),
 बीटिका, ताडूलम् ।
 खीस, सं खी (हि खीज) प्रीति प्रसाद, अभाव
 २ क्रोध, रोष ३ लज्जा, त्रपा । ४ कुस्मित,
 कुहस ।
 खीसा, सं पु (फा कीसा) पुट ट, प्रतेव,
 लघुमपु २ सुप्ति, कोष इ ।
 खुकल, खुख, वि (सं शुक् >) रिक्तदस्त,
 अकिंचन ।
 खुलडी, सं खी (देश) सूज-ऊर्णा, पिंठ पिंठ
 (२) असि-खडग, धेनुका पुत्रिका ।
 खुगीर, स पु (फा) दे 'जीन' ।
 खुच (खु) र, स खी (स कुपर >) दोष,
 न्यूनता २ छिद्रावेषता, पुरोभागि(ग) ता ।
 खुजहाना, कि स (सं खजन >) नरै-
 त्ववेष्टुष (म्वा य से) । कि अ, कण्डू खस
 खर्ज अनुभू । कण्डूयति ते (ना धा) ।
 खुजलाहट, सं खी (हि खुललाना) दे
 'खुजली' ।
 खुजली, स खी (हि खुजलाना) (सरसरी)
 कडु (पु, खी) कडू-कडूति (खी), कडू
 यन, कण्डूया, खर्जू-जू (खी) २ (रोष)
 कच्छु-च्छु (खी), पामा, पामन् (पु),
 विशचिका ।
 —उठना या चलना, कि अ, दे 'खुजलाना'
 (कि अ) ।
 खुजाना, कि स, कि अ, दे 'खुजलाना' ।
 खुटका, स पु, दे 'खटका' ।
 खुटपन-ना, स पु (हि खोटा) दोष,
 अवग्रण, ध्रुता, दुष्टता ।

खुटाई, सं खी, दे 'खुटपन' ।
 खुडी, स खी (अनु) दे 'खेडी' २ (प =
 बदन का मूलाख) गठ-कुडुप, आधार ।
 खुडी, सं खी, दे 'खुरण्ड' ।
 खुबला, स पु (देश) कुन्जुडालय २ चट
 कालप ।
 खुडी, खुपडी, स खी (स खुड >) शीघ्र
 कृपण २ शीघ्ररूपे पादाधानम् ।
 खुतबा, स पु (अ) प्रशस्ता, रतुति (खी),
 प्रशस्ति (खी) ।
 खुद, अव्य (फा) स्वय, स्वत, स्वच्छया
 (समास के आदि में 'स्व' तथा 'आत्मन्' भी
 प्रयुक्त होते हैं । उ स्वार्थ, आत्महत्या) ।
 —कुशी, स खी (फा) आरम-स्व-निज, घात
 हत्या वध ।
 —गर्ज, वि (फा) स्वार्थ, पर परायण ।
 —गर्जी, स खी (फा) स्वार्थ, परता पराय
 णा ।
 —मुन्नतार, वि (फ) स्वतत्र, स्वच्छन्द ।
 —मुन्नतारी, स खी फा) स्वानव्य, स्वार्थी
 नता ।
 खुदना, कि अ (हि खोदना) खन्-उत्कृ-
 तक्ष (कर्म), भवदू मिद् (कर्म) ।
 खुदरा, स पु (स क्षुद्र >) क्षुद्र-साधारण,-
 वस्तु (न) । वि, दे 'खुरदरा' ।
 खुदवाई, सं खी (हि खुदवाना) अन्य
 कृत, खनन-खाति (खी) २ खनन, मृत्या-
 भृति (खी) ।
 खुदवाना, खुदाना, कि प्रे, 'खोदना' के प्रे
 रूप ।
 खुदा, स पु (फा) स्वयम् (पु), दे
 'ईश्वर' ।
 —न धवास्ता, सु, इशो न कुर्यात् ।
 —परस्त, वि, ईश्वरपूजक, आस्तिक ।
 —खुदा कर के, सु, येन वेन प्रहारेण, अति,
 कथेन कृच्छ्रेण, ययाकथञ्चिद् ।
 —की मार, सु, ईश्वर दैन, प्रकोप ।
 खुदाई, स खी (फा) ईश्वरत्व २ सृष्टि (खी) ।
 खुदाई, स खी (हि खोदना) खाति (खी)
 २ खननक्रिया १ खननभृति (खी) ।
 खुदाताला, सं पु (अ) परमेश्वर, परमेश ।

सुधावन्द, सं पु (फा) ईश्वर २. स्वामिन्(पु) ३ भगवत् प्रीयत् (पु), आर्य, मित्र (सब सम्मानमूचक शब्द) ।

सुदी, सं स्त्री (फा) महम्भाव, महद्भार २ अभिमान, दर्प ।

सुदी, सं स्त्री (स ध्रुव >) वैदलतण्डुलादीनां कण ।

सुनक, वि (फा) शीत, शीतल, हिम ।

सुनकी, सं स्त्री (फा) शैत्यम् ।

सुनसुना, सं पु (अनु) शणक्षय, सन्तपण, कौटिल्यभेद ।

सुनस, सं स्त्री (सं विव्रमन्तस् >) क्रोध, क्रोध ।

सुनसाना, कि अ, दे 'क्रोध करना' ।

सुनसी, वि, (हि सुनस) शोषन, क्रोधन, रोषण ।

सुनाक, सं पु दे 'क्षिप्योरिया' ।

सुफिया, वि (फा) गूढ, गुप्त, निश्चल ।

—सुलिस, सं स्त्री (फा + अ) प्रच्छन्न गुप्त गूढ, रक्षिण (बहु), अपसर्पा, चरा, स्पशा ।

सुश(भ)ना, वि अ (अनु) भा प्र विश (तु प अ), व्यध् (दि प अ) छिद्र (क प अ), छिद्र प्रवेश कृ ।

सुमार, सं पु (अ) म(मा)त्र, क्षीयता, शीघ्रता २ तन्द्रा, निद्रालुत्व ३ निराज्ञानरज शैथिल्यम् ।

सुमारी, सं स्त्री, दे 'सुमार' ।

सुरं, सं पु (स सुर = सुरचना >) शुष्क व्रणत्वच् (स्त्री), र्मशिला २ किलास, सिध्मन् ।

सुर, सं पु (सं) शक-क, किंत्, निष्टुव, सुर २ सद्वादीनां पावकम् ।

—दाद, वि, सुरिन्, शक्तिन् ।

सुरसुर, स स्त्री (अनु) सुरसुर परधर, शब्द नाद ।

सुरसुरा, वि (सं सुर=सुरचना >) ३ स्पर्श, भ्रम, विषम, इच्छणताशून्य ।

सुरचन, सं स्त्री (हि सुरचना) सुरित, पय पात्रसुरित २ सुरित, मिष्टान्न-वदिक, भेद ।

सुरचना, कि स (स सुरण) सुरधर (तु प से), ज्, वि, सिन् (तु प से) २ अय म्, अयम् (अ प वे), विपुम् (प्रे) ।

सुरचनी, सं स्त्री (हि सुरचना) उल्लेखनी, निर्वर्षणी २ काष्ठकुटाल, सनित्र ३ दुग्धपात्र सुरितम् ।

सुरजी, सं स्त्री (फा) दे. 'धैला' ।

सुरदरा, वि नतोन्नत २ भ्रम, विषम, पिण्ड कापृत, इच्छणता मिथ्यता परिहार, शून्य ।

सुरपा, सं पु (सं धुरप्र) घासटेदनसक, लघु, टग टग-सनित्र २ चर्मकारोषकरणम् ।

सुरमा, सं पु (फा) सुर्य, सुर्योपपत् २ दे 'सुहारा' ३ मिष्टान्नभेद ।

सुरली, स स्त्री (सं) शकाम्यास २ शकाम्यास स्थलम् ।

सुरौट, वि, दे 'सुरा' ।

सुराक, सं स्त्री (फा) भोज्य, मह्य, पाप, आहार, भोजन २ (औषध) मात्रा, भाग ।

सुराकी, वि (फा) औदरिक, अदमर, पस्तर । स स्त्री, (दैनिक) भोजनव्य ।

सुराकोत, स स्त्री (अ) अदलील ग्राम्य-अशिष्ट, वचनानि (बहु) २ गान्ध दुर्नचनानि (बहु) ३ कल्ह ।

सुरी, सं स्त्री (सं सुर >) शक विख, चिद्र २ दे 'धली' ।

—करना, सु, अतिक्षिप्र चल (म्वा प से) ।

सुर्व, वि (पा) लघु, अल्प, सूक्ष्म ।

—वीन, स स्त्री (फा) सूक्ष्मदर्शकयत्र, अण्वीक्षणयत्रम् ।

—सुर्व, वि, (पा) नष्टभ्रष्ट २ समाप्त ।

सुराटि, वि (देश) धूर्त, कुटिल, शठ २ वृद्ध ३ अनुमानिन् ।

सुलना, कि अ (सं सुद् तोटना >) (द्वारादि) वि अपाष्ट (वर्म), निरर्गली भू, अमशुत-उदाटित (वि) + भू २ (कर्षी आदि) विकसु-दल पुष्प (म्वा प से), भिद्र (वर्म) ३ (औष) उन्मिप् (तु प से), उन्मील (म्वा प से) ४ (दाथ) प्रस (म्वा प अ), विनन् (वर्म) ५ (मुख) व्यादा (वर्म), विजम् (म्वा आ से) ६ (रह स्वादि) प्रकटीव्यली-आभिर्-भू, प्रकान् (म्वा आ से) ७ प्रारम्भ-प्रसु (वर्म) ८ वृद्धम् (वर्म), सिधिलीभू, उमुच् (कर्ष) ९ (भूमि आदि विद-भिर (वर्म) ।

सुल खलना, सु, व्यक्त प्रकाश-अनिभूत निर्भय
(किञ्चि कार्य) कृ अथवा विषयासक्त
(वि) + भू ।

सुलवाना, कि प्रे, 'खोलना' के प्रे रूप ।

सुला, वि (हिं सुलना) उद्दाम, उद्ग्रथित,
उत्सूक्त सुक्त, बन्धनहीन २ शिथिल, प्रदन्ध,
विगलित ३ शिथिलसन्धि, विरल ४ स्पष्ट
प्रकाश, व्यक्त ५ अयावृत्त व्यावृत्त, असवृत्त
६ विन्वृत्त, विस्तारण, विशाल । सुलना के
धानुओं के लति रूप ।

सुले आम } कि दि, प्रत्यक्ष, प्रका
सुले गजाने } प्रकाश व्यक्त निर्भय,
सुले मैदान } निःशङ्कम् ।
सुल्लम सुल्ला

सुलना, कि प्रे, 'खोलना' के प्रे रूप ।

सुलामा, म पु (फा) साराण, मधेय ।

सुश, वि (फा) प्रसन्न, प्रमुदित, प्रहृष्ट ।

—होना, कि अ, आनन्द (भ्वा प से), मुद
(भ्वा आ से), हृष् (दि प से) परि-
म-सुष् (दि प अ), दे 'प्रसन्न होना' ।

—स्मित, वि (फा) मौभाग्यशालिन् ।

—स्मित्ती, स स्त्री (फा) सौभाग्यम् ।

—प्रत, वि (फा) लिपित, सुलेखक ।

—वती, स स्त्री (फा) सुलक्ष्मन्-वैशाल
नैपुण्य विद्या ।

—ववरी, स स्त्री (फ) शुभ-शु ममाचार
वार्ता वृत्त-उदन् ।

—गवार, वि (फा) रुचिर, सुराद, आ नद्रक ।

—दिल, वि (फा) प्रसन्नमनस, सनोषिन् ।

—मसीध, वि (फा) सौभाग्यवद्, धन्य ।

—नसीवी, स स्त्री (फा) सौभाग्यवता ।

—नुमा, वि (फा) बुद्धर्जन, मनोहर, सुन्दर ।

—बू, स स्त्री (फा) दे 'सुगण', सुवास ।

—बृदार, वि (फा) सुगन्धित, सुगण ।

—रग, वि (फा) सुगण, सुवर्ण ।

—हाल, वि (फा) समृद्ध, सपन्न ।

—हाली, स स्त्री (फा) अभ्युदय, समृद्धि
(स्त्री) ।

सुरामद, स स्त्री (फा) चाट (पु न),
चाटूक्ति (स्त्री) अनिमिथ्या-स्तुति (स्त्री),
प्रशंसा, चाटुवाद ।

—करना, कि स, मिथ्या-अतिमात्र अतीव
प्रशंस (भ्वा प से)-स्तु (अ प अ)-शु
(अ प से), अभिपरि-सस्तु, चाटूक्तिमि-
सात्व-उपलब्-उपलब् (चु), चाटूनि वद्
(भ्वा प से) ।

सुरामदी, वि (फा सुरामद) मिथ्या
प्रशंसक, चाटुकार, प्रियवद, चाटुवादिन् (पु) ।

—टट्ट, स पु, अत्यनुरोषिन् चाटुपट्ट ।

सुशी, स स्त्री (फा) हर्ष, प्रमत्तता, मोद,
आनन्द प्रमोद, आह्लाद, सन्ताप उल्लाम,
चित्तप्रसाद, मीनि-सृष्टि (स्त्री) ।

—मनाना, कि अ दे 'सुर होना' ।

सुरक, वि (फा, स शुक्), शुक्, अन्त,
अन्त, वान, नीरस २ रूक्ष, स्नेहशून्य, अशिष्ट
३ ग्लान, ग्लान विशीर्ण ।

—साली, स स्त्री (फा) अनाशुष्टि (स्त्री),
२ दुर्मिश्रम् ।

सुरका, स पु (फा) जलपट्टौदन तम् ।

सुरकी, स स्त्री (फा) शुचता, निर्मलता,
२ रूक्षता ३ स्थल ४ दे 'पलेयन' ।

सुसरफुसर, स स्त्री (अनु) दे 'कानाहूसा' ।

सुसिया, म पु (अ) सुष्क, वृषण, शुक्र
प्रथि ।

—वरदार, वि चाटु कार-वादिन् ।

सुसुमियत, स स्त्री (अ) विदग्धता,
विशिष्टता, विलक्षणता ।

सुखार, वि (फा) रक्त रुचिर, प्रिय, जिवासु,
हिल्ल २ भीषण ३ निर्दय ।

सुँट, स पु (म सुट-ठ) अश, माग ।
२ अन्न, कोण ३ अन्त ४ पादर्व ५ र्व
५ कर्णमलम् ।

सुँटा, म पु (स सुँट) शकु, कील कीलक
पुष्पल २ नागदन्त भारवाटि (स्त्री)
३ काष्ठस्थणा ।

सुँटी, स स्त्री (हि सुँटा) लघु, कील-कीलक,
२ नागदन्त-तक ३ तनुरुह-लोम, मूल
४ शस्यलवनानंतर क्षेत्रस्थ काष्ठमूलम् ।

सुँद, स स्त्री (हि सुँदना) अथादीना
सुरेण भूमिलेखनम् ।

सुँदना, कि स (सुण् लोडना >) (अथा
दय) सुरेण पृथिवा आहन् (अ प अ)-घृष्
(भ्वा प से)-लिख् (तु प से) ।

सुद, सूद, सूदर, स खी (स सुद >)
दे 'सूदा' ।

सून, स पु (फा) रुधिर, रक्त, लोहित
शोणित, असृज् (न), अक्ष २ वध, हत्या ।

—करना, कि स, वध वाग हत्या कृ, हन् (अ
प अ), सू-व्यापद (प्रे) ० प्रमादेन नश्
भवसद् (प्रे) ।

—होना, कि अ, हेवाद् हन् मार्-व्यापद
(कर्म) ।

—प्ररावा, स पु, (फा) नृ-नर, वध हत्या,
रक्त, पात छाव ।

—स्रवार, वि दे 'स्रवार' ।

—शूकना, स पु, रक्तवीचनम् ।

—औत्सो में उत्तर आना, सु, कोपारणनयन
(वि) + भू ।

—उचलना या गौलना, सु, अतीव कुप्
(दि प से) ।

—का प्यासा, सु, जिवाक्षु, वधोपत ।

सवार होना या चदना, सु, वषाद्य हत्यायै
सञ्ज-उचन (वि) + भू ।

खुनी, स पु (फा) घातक, हत (पु) । वि,
हतकाम, वधेपिन्, जिपांसु ।

खूब, वि (फा) अच्छ, भद्र, उत्तम, श्रेष्ठ ।
कि वि, सम्यक, साधु, शोभनम् ।

—रू, वि (फा) सुमुत् (सुमुखी खी) ।

—सुरत, वि (फा) सुन्दर, सुरूप ।

—सुरती, स खी (फा) सुदरता, सुष्पना ।

खूनी, स खी (फा) अच्छता, उत्तमता
२ गुण, विशेष, विलक्षणता ।

खूसट, स पुं (स कौशिक) दे 'उल्ल'
२ जरठ, स्थविर । वि, रसिकताशून्य, दुष्क
हृदय २ जड ३ कुदरान ।

खेचर, स पु (स) गगनविहारिन्, स्वोमग
२ ग्रह, नक्षत्र ३ बायु (पुं) ४ देव
५ विमान न ६ खग ७ मैथ ८ भूतप्रेता
९ हृक्ष्म १० दिवाभर ११ दिग्
१२ १३ दे 'पारा' तथा 'कसीस' ।

खेचराक्ष, स पु (स न) दे 'खिचटी' ।

खेटक, स पु (स) मृगया, आपट २ कर्षण
ग्राम ३ नक्षत्र ४ बलदेवमहा ५ वटि (खी)
६ दान, फलकम् ।

खेटकी, स पुं, दे 'शिकारी' ।

खेद^१, स पु (म खेट) लघुवाम, ग्रामटिका ।
—पति, स पु ग्रामणी (पु) ।

खेदा^१, स पु (देश) विविधात्मयोग ।

खेत, स पु (म क्षेत्र) वेदार, भूमि (खी),
वप्र प्रे, बलज, निष्कट, राजिका, पाटीर
२ शस्य, कृषिकल ३ रण-युद्ध-समर, भूमि
४ खड्ग, फलपत्र । ५ उत्पत्तिस्थान
६ (पशुना) जाति (खी) ।

—आना या रहना, सु, वीरगति, आप् (स्वा
उ अ), युद्धे हन् (कर्म) ।

—छोड़ना, सु, युद्धाय पलाय् (स्वा आ से)

खेतिहर, स पु, दे 'कितान' ।

खेती, सं खी (हि खेत) दे 'कृषि' २ शस्य,
कृषिकलम् ।

—वारी, सं खी, दे 'वृषि' ।

खेद, सं पुं (सं) अनुशोक, अनुपात, २ दुःख,
शोक, आधि (पु), आ (अ) ति (खी),
बलेद्य ३ म्लानि क्षान्ति क्षान्ति (खी) ।

—जनक, वि (स) अनुशोकप्रद, दुःसदायक,
बलेद्यकर, आतिगनक ।

खेदना, कि सं स (खट >) दे 'खदेरना' ।

खेदा, स पु (हि खदना) गजादिबधनपनरम् ।
२ दे 'शिकार' ।

खेदित, वि (सं) खिग, अनुगत २ आन, प्राप्त ।

खेना, कि स, (सं क्षेपण >) नौद्रेण सचन्
प्रेर प्रनुद प्रमुद (प्रे) ६ २ नीका वद् प्रेर
(प्रे) ६ ३ दे 'किताना' ।

खेप, सं खी (सं क्षेप >) सट्टाद्यो भार
२ पोतस्थ द्रव्य ३ नौकादीनां सट्टय यात्रा ।

खेपना, कि स (स क्षेपण) दे 'किताना' ।

खेम, स पु, दे 'क्षेम' ।

खेमा, स पु (अ) पट-बल, मरुप-मृह
वेदमन् (न), दृश्य श्यम् ।

—गाइना, कि स, दृश्य रच् (जु)-उप
बल्प् (प्रे) ।

खेल, स पु (स खला) क्रीडा, वेलि (खी),
खलन, खीला २ वृत्त, उदत ३ मुकर धृद,
नार्य ४ कामव्रीडा, समोग ५ अभिनय,
नाटक ६ कौतुक, विचित्रकार्य ७ (पशुभ्यो
वे लिप) जलद्रीणि (खी)-णी ।

—समस्तना, सु, सुवर् मन् (दि आ अ) ।

खेलना, कि अ (स खलन) खल विलम्ब
 क्रीड (म्वा प से), विह्व (म्वा प अ)
 २ मभो-रतिक्रिया दृ ३ विचर चल् (म्वा
 प से) ४ नूतावय् आगानि चर (प्र)
 कि स नन् रूप (जु) अभिनी (म्वा प
 अ)। (जूआ आदि) दिव (दि प से)
 ग्लह (जु उ से)।

खेलनी, स स्त्री (म) चातुरगक्रीडाप
 २ शा शार (पु)।

खेलवाह, स पु-दे 'खिलवाह'।

खेलवाही, वि, दे 'खिलाही'।

खेलवाना, कि प्र, खलना के प्रे रूप।

खेला, स स्त्री (स) क्रीडा लीला।

खेलाही, वि, दे 'खिलाही'।

खेलाना, कि प्रे, 'खलना के प्रे रूप।

खेलि, स स्त्री (स) क्रीडा लीला। स पु
 पशु २ खग ३ सूर्य ४ शर ५ गीतम्।

खेवक, स पु

खेवट, सं पु } (हि खना) दे 'खेवट'।

खेवट, सं पु (हि खल + वट प्रत्य) क्षेत्र
 पतिलेख।

खेवना, कि स, दे 'खना'।

खेवा, स पु (हि खना) तार्य, तरपण्य,
 आतर तारिक २ नैक्या नदीलधन ३ वार,
 अवसर, पर्याय ४ भाराक्राना नौ (स्त्री)।

खेवैया, स पु (हि खेवना) दे 'खेव'।

खेस, स पु (देश) अवसर, आस्तरपट।

खेसारी, स स्त्री (स खार >) क्लायभेद।

खेह (र) स स्त्री (स शार) रजस (न),

धूलि (स्त्री) २ मस्नन् (न) मसिपन्।

खेचना, कि स, दे 'खीचना'।

खेचवाना, कि प्रे, 'खीचना' के प्रे रूप।

खेचाखेचन्वी } स स्त्री, दे 'खीचान'।

खेचातानन्नी }

खैर, स पु (स खदिर) सारद्रुम, यशाग
 कुमारि (पु), दत्तधावन २ (हि कल्या)
 रादिर, सादरसार ३ खगभेद।

खैर, कि वि (अ) अस्तु, एव, साधु भद्र,

सुपु (सव अन्व) २ का चिन्ता।

स स्त्री, कुशल, मगलम्।

—आफियत, स स्त्री (अ) कुशलभ्रमन्।

—खाह, वि (अ + फा) शुभवितक,
 हितैपिन्।

—खाही, स स्त्री (अ + फा) शुभवितकता,
 हितैपिता।

खैरा, वि (हि खैर) खदरवां। स पु,
 तागिरवा कयेनो अशो बको वा २ नल
 तल-मीन।

खैरात, स स्त्री (अ) दान, त्याग।

खैराती, वि (अ) धनार्थ, पुण्यार्थ २ वदान्य,
 उदार।

खैरियत, स स्त्री (अ) मगलम्, कुशलम्।

खों (स) गाह, स पु (स खण्ण तथा
 खोंकाह) देवतपिलाथ।

खों खों, स स्त्री (अनु) काम-ध्वज्यु रण्य।

खोंच, स स्त्री (स कुच-दकीर डालना >)

कीलादिभि बस विदर-विदल-रभम् २ दे
 'खरोंच'।

—आना या लगाना, कि अ, कीलादिभि दृ
 (कर्म, दीयेने)।

खोंचना, कि स, दे 'खरोंचना'।

खोंचा, स पु (स कुच-जोडना >) खग
 बधनवर २ दे खोंच ३ दे 'खरोंच'
 ४ आधान, प्रहार ५ पूरणम्।

—खोंची, स स्त्री, परस्परकलह, मिथ
 प्रहार।

खोंची, स स्त्री (स कुच >) पूरा २ पदा
 भान्तरनिवेशितवस्तु (न) ३ भद्रवस्तुक्य।

खोंटना, कि स (स सुट् तोडना >)

अनुलाभि पत्रपुप हुट (प्रे), उदपु-उत्कृष्
 (म्वा प अ)।

खोंटा, वि, दे 'खोटा'।

खोंटर, स पु (स कोट-र) निष्कुह।

खोंडा, वि (स खाड) विकला, विकल,
 खम, पय २ दत-नीन।

खोंता, खोंथा, स पु दे 'खोंसला'।

खोंपा, स पु दे 'खोपा'।

खोंसना, कि स (स कोडा >) पूरा, नि
 आ, वेदान, निधानम्।

खोआ, स पु, दे 'खोया'।

खोखला, वि (हि खुख) रूप रिक्त,
 गर्म-उदर-मध्य।

खोखा, स पु (हिं खुख) धनार्पणादेशपत्र ।
 (व) बाल [खोखी (खी) = बालिका] ।
 खोज, स खी (हिं खोजना) अन्वेषणणा,
 गवेषणणा, मार्गणणा, अनुसंधान, शोध
 २ चिह्न, लक्षण ३ चक्रपाद, चिह्नम् ।
 —करना, कि म दे 'खोजना' ।
 —राज, स खी, पृच्छा, अनुयोग २ अनु
 संधान, विचार रणरणा ३ अन्वेषणम् ।
 खोजना, कि स (म खुज=खुराना >)
 अन्विष (दि प से), निरूप माग (चु०),
 शृंग (चु आ से) अनुसंधा (जु उ अ)
 विचि (स्वा उ अ), अव निर ईक्ष
 (भ्वा आ से) ।
 खोजवाना, खोजाना, कि प्रे 'खोजना' के
 प्र रूप ।
 खोजा, स पु (फा ख्वाज) सौविद, सौवि
 दस्त, कचुकिन्, २ सेवक ३ आर्य,
 महात्थ, मिश्र, नायक ।
 खो जाना, कि अ, दे 'खोना' (कि अ) ।
 खोजी, खोजिवा, म पु (हिं खोजना)
 अन्वेषक, निरूपक, निराशक, अनुसंधायक,
 २ चर, चार, अपसप ।
 खोट, सं खी (स खोट >) दोष, वैकल्य,
 वैगुण्य, दूषण २ मिथण, ३ मिथधातु (पु),
 दुष्य, अपद्रव्यम् ।
 —मिलाना, कि स, अपद्रव्येण मिश्र (चु) ।
 खोटा, वि (म खोट >) दूषित, सदोष,
 दोषिन्, विकृत २ (अपद्रयेण) मिश्रित, बूट,
 दृग्निम् ३ दुष्ट, फल ४ छलिन्, अधार्मिक ।
 खोग खरी सुनाना, मु, निर्मलस्त् नर्ज (चु),
 अविशिप् (तु प अ), निद (भ्वा प से) ।
 खोटार्ई, स खी, दे 'खोटापन' ।
 खोटापन, सं पु (हिं खोटा) दुष्टता, क्षुद्रत्व
 २ छल, कपट ३ दोष, वैगुण्य ४ अप
 द्रव्यमिश्रणम् ।
 खोह, वि (स) विकल्प, अगह्नान, विकले
 न्द्रिय, योगह ।
 खोह, स खी (हिं खोट) देव भूत प्रेत,
 योग २ रोग ३ कुसुमूर्त-र्त ४ दोष,
 विरलता ५ चरनबाधकह डम् ।
 खोहरा, स पु, दे 'कोटर' ।

खोदा, सं पु दे 'द्वयवडी' ।
 खोद, सं पु (फा खोद) खोल्क, लोह
 भातुमय, शिरस्त्राण शीर्षण्य शिरस्त्वम् ।
 खोद, सं पु (हिं खोदना) पृच्छा
 २ निरीक्षणम् ।
 —विनोद, सं पु, अनीव अनुयोग अन्वेषण
 विचारणम् ।
 —कर पूछना, मु, निमृत्त रहस्यगूढ प्रच्छ
 (तु प अ)-अनुयन् (रु आ अ) ।
 खोदना, कि स (सं खुद्-खोदना >) रन्
 (भ्वा उ से), (भूमि) अवद् (प्रे), भिद्
 (रु प अ) । २ उत्पट-उमूल (चु)
 ३ उत्कृ (तु प से), तम् (खध् (भ्वा प
 से), सुद्र (चु) ४ उत्सन्, निभिद्
 (रु प अ) ५ यष्ट्यादिभि स आ पीद्
 (चु) ६ उर्दीप-उत्तिज (प्रे) । स पु, खनन,
 खाति (खी), अवदारण, भेदन, उत्पाटन,
 उमूलन, उत्तिरण, तक्षण इ ।
 —योग्य, वि, खनीय, खेप, अवदारयितव्य,
 उत्पाटनीय, उन्मूलयितव्य ।
 —वाला, सं पु खनक (-वी खी), अवदारक,
 उन्मूलक उत्पाटक ।
 खोदा हुआ, वि, खात, अवदार्ण, उन्मूलित,
 उत्पाटित इ ।
 खोदनी, स खी, (हिं खोदना) एतु
 यनित्र ल्ग ।
 कत—स खी, श्रवणशापना, कर्णव हूयनी ।
 दत—स खी, रदनशोभनी दतो लेशनी ।
 खोदवाना, कि प्रे, 'खोदना' के प्र रूप ।
 खोदार्ई, स खी, दे 'खुदार्ई' ।
 खोदूचा, सं पु (फा ख्वाच) भावाह
 भाजन, क्षुद्रवस्तुविकृत पात्रम् ।
 खोना, कि स (स खेषण >) हा (जु प
 अ) रयजू (भ्वा प अ) २ अपद्रव्यद्
 (चु) दूषा क्षेहम् (प्रे) । ३ विप्रकृ, नश
 (प्रे) । कि अ, मार्गात् भद्रा न्नस (भ्वा
 आ से) सभ्रम् (दि प से) २ नश
 (दि प से), चु (भ्वा आ अ) ।
 खोपड़ा, खोपरा, स पु (सं खपर) कपाक
 ल, कर्पर २ शीर्ष, शिरस्त् (न) ३ अफन्,
 नादिवेर-ल, शीशिलपत्र ४ अफन् नादि
 वेर, शीवेगर्भ ५ मिक्षापात्रम् ।

खोपड़ी, सं स्त्री (हिं खोपडा) दे
'खोपडा' (१, २) ।

अथी या औंधी-का, मु जड, अद्य, नदमति ।

—खाना या घाट जाना, मु, वाचान्तया
उद्दिन-सतप-अर्द्ध (प्रे) ।

—गली करना, मु अयधिक तड (प्रे) ।

खोपा, सं पु (स खर्पा) नारिकेल-बीज
— २ र ह्याग्लकोण र मार्गभिमुली टूट
को ४ इक्षरभ्रम्य विकोग केशवियास ।
५ देवी-कवरी-कष वष जूट-कम् ।

खोया, स पु (स खोद ~) बगीच्यानी
सत्रा-कृत दुग्ध विलाप २ इधु रोष देव
हतरस इधु र इष्टकालेप ।

खोया, वि (हिं खोना) नष्ट, भ्रष्ट, मञ्जान ।

खौर, वि (सं) पशु खन, शीत, खोड
खोल ।

खोरा, सं पु (म खोर-या फा अखोर)
चषक-क, पात्रम् । दे 'करोरा' ।

खोरी, स स्त्री, दे 'कृचा' ।

खोल, म पु (स खोल >) कोष र, वेष्टन,
आवरण २ कीर्त्तवच (स्त्री) ३ पुत्र-
४ उचरीय, वेत्न ।

खोलक, स पु, (स) शिरत्काम् २ कपाल-
र ३ क्रमुक-पुल्लवच (स्त्री) ४ बल्नीक-
क ५ सर्पविलम् ।

खोलना, कि स, (स खुड = भेदन >)
(दारादि) उद्धृ (प्रे), वि-अपा धृ (स्वा
उ से), निरर्लीह । (ओलें) उन्मील,
उन्मिष-उफल (प्रे) । (मुख) ब्यादा (जु
प ज), उद् वि । उद्म (प्रे), (रक्षत्यादि)
आविष्य-व्यली प्रवर्गी, कृ । २ शिथिलवति
(ना धा), मोष (चु), उन्मुच् (प्र)
३ विस्मृ विल्ट (प्रे) ४ अपा वि वृ, उच्छिद्
(प्रे) ५ विवक्ष कृ ६ ब्याहृ, ब्यारया
(अ प अ) । स पु, उद्घाटन, विवरण,
उन्मीलन, विकाम, रघुटन, विजृम्भा, आवि
श्ररण, उन्मीचन इ ।

खोलने योग्य, वि, उद्घाटनीय, उन्मीलितव्य,
उज्ज्वलीय इ ।

खोवा, स पु, दे 'खोया' ।

खोशा, स पु (फा) गुच्छ, गुत्स, सनक ।

खोसना, कि स, दे 'धीनता' ।

खोह, सं स्त्री (सं गौह) कदर-रा, गुहा,
गहर, दरी = विवर-र, बिल, कुहरम् ।

खों, सं स्त्री (सं खन् >) गर्त, अदर, बिलम्
= कुखल, धान्यकोष्ठ ।

खौंचा, स पु (स ख् + च) मादंय-भि
पुगनतालिका ।

खौंसदा, स पु (प० खुमना ~) चीर्त,
उपानद् (स्त्री) पादत्रम् ।

खौफ, स पु (श्) भय भोति (स्त्री), भ्राम ।
—नाक, वि (अ + फा) भयकर, भोतिजनक ।

खौर, स स्त्री (स खुर = लकीर डालना >)
अर्द्धचन्द्राकार नदनादेस्तिष्क २ स्त्रीमगतक
भूषणभेद ।

खौरहा, वि (हिं खौरा) (पशु) पामा
सिध्म, पीडित, पामन ।

खौरा, (पशुओं का खुजली-रोग) स पु
(स क्षौर या फा बालखोर >) पानम्
सिध्मन् (पु), पामा । वि दे खौरहा ।

खौर, स पु (देश) वृषभ, शर्नना निनाद
२ बल्लह ।

खौलना, कि अ, दे 'उबलना' २ बुद्धुदायते
पेनायन (ना धा) ३ प्रदुप (दि प मे),
म-वि धुम् (स्वा आ से) ।

खौलाना, कि प्रे, 'खौलना' के प्रे रूप ।

खौहा, वि (हिं खाना) औदरिक, अद्मर,
धरमर, बुद्धुभक्षिन् ।

ख्यात, वि (स) प्रसिद्ध, विपुत ।

ख्याति, स स्त्री (सं) प्रसिद्धि-कारि (स्त्री) ।

ख्यापन, स पु (स न) प्रकाशन, घोषण,
प्रचारणम् ।

ख्याल, सं पु (अ) विचार-रणा मन, म,
मति (स्त्री) २ स-सृष्टि (स्त्री), स्मरण,
धारणा ३ अनुमान, वि, तर्क, अभ्यूह हन
४ आदर, ममान ५ गीतिभेद ।

—से उत्तरना, मु, विस्मृ (कर्म), सृष्टिपथात्
अद्म (स्वा आ से) ।

ख्याली, वि (अ ख्याल) कल्पनिक, कल्पित,
कल्पनात्मक, अवास्तविक, वितथ ।

—पुलाव पकाना, मु, श्यनहुधुनानि रपु
ध्याणि वाचि (स्वा उ अ) ।

खिष्टान, स पु (हिं खोष्ट) दे 'ईतार' ।

खीष्ट, स पु (अ क्राइस्ट) दे 'इसामसीह' ।
 रुचाजा, स पु (फा) स्वामिन्, प्रमु
 = अण्यह, नायक ३ सौविद-रुह ४ श्रेष्ठ
 यवनभिक्षु (पु) ५ आर्य, मिश्र ।
 रुचाव, स पु (फा) निद्रा २ स्वप्न ।
 रुचाव, वि (फा) नष्ट, ध्वस्त, क्षीण २ अना
 दृत, अपमानित ।
 रुचारी, स स्त्री (फा) विध्वंस, विनाश
 २ अनादर, तिरस्कार ।

रुवाह, अव्य, (फा) वा, अथवा, आहारिवत्
 (सव अव्य) ।
 —मरुवाह, किं वि, मताग्रहेण, मताभिमानेन
 २ अवश्य, निर्विबल्परम् ।
 रुघाहिरा, सं स्त्री (फा) अभिलाष, आवाहा,
 इच्छा ।
 —सद, वि (फा) आवाशिन्, इच्छुक ।
 —वरना या रखना, किं स, इष् (तु प से),
 बाह् आकाश् अभिलष् (म्वा प से) ।

ग

ग, देवनागरीवर्णमालाया तृतीयव्यजनवर्ण,
 गकार ।
 गगाशु स पु (सं न) जाह्नवी, गगा, जल
 वारि (न), २ बृहे स्वच्छजलम् ।
 गग, गगा, स स्त्री (स गगा) जाह्नवी, त्रिप
 थगा, भागीरथी, भद्राकिनी, सुरसरिह (स्त्री),
 विष्णुपत्नी, खापगा, हरशेखरा ।
 —जमनी, वि (स गगा + हि जमुना >)
 मिश्रित, सकर, द्विवर्ण २ स्वर्णरजतमय ३ बृह
 ह्यग, सितासित ।
 —जल, स पु (म न) भागीरथीतोय २ श्वेत
 मूढमवल्भेद ।
 —जली, स स्त्री (स गगाजल >) गगाजल
 पात्रम् ।
 —जली उठाना, मु गगोदयेन शष् (म्वा
 उ अ) ।
 —पुत्र, स पु (स) भीष्म, गगोय २ प्रेत
 बाहो जातिविशेष २ तीर्थवासी विप्रभेद ।
 —सागर, स पु (सं) गगामुत्र २ कल्प,
 उद्वपात्रभेद ३ वनेषु तीर्थविशेष ।
 गगाल, सं पु (स गगाल्य >) बृहज्जलपात्र ।
 गगोद्वक्, स पु (सं न) गगा भागीरथी,
 जल तोयन् ।
 ग, स पुं (फा, स) कोश ५ २ राशि
 (पु) ३ निपद्या वाणिज्यस्थान ४ समूह ।
 ग, स पुं (म न न -वैश >) खाल्य,
 रज्जाटगा, विवैशता ।
 गंजन, स पुं (स न) अवशा, तिरस्कार
 २ नाश, ध्वंस ३ पीटा, म्बया ।

गजा, वि (सं कज =केश >) खल्वाट, विवेश
 (शी, स्त्री), खर्लत, खलोट ।
 गजी, स स्त्री (स गज), राशि (पु),
 गिकर, समूह २ दे 'शकरवद' ३ दे
 'बनियावन' ।
 गजीफा, स पु (फा) पत्रखेलाभेद ।
 २ क्रीडापत्रचय ।
 गजेची, गजल, वि (हि गांजा) गजापायिन्,
 गजाप ।
 गैठकटा, स पु (हि गौठ + काटना) ग्रथि
 भेदक, चौर ।
 गैठजोडा, स पु (हि गौठ + जोडना) दे
 'गठवधन' ।
 गैठवधन, सं पु (स ग्रथिवधन) ग्रथि-ग्रथिका,
 वधन यो मन-सश्लेषण । (वैवाहिकरीतिभेद) ।
 गड, स पु (स) गल्ल, कपोल २ हस्ति
 कपोल, कट, करट ३ दे 'कनपटी'
 ४ स्फोटक, पिटक ५ रेखा, चिह्न ६ ग्रथि
 (पु) ७ सङ्गिन्, गटक ८ रक्षाकरट
 ९ गड (पुं) ।
 —गाला, स स्त्री (स) गलाल, बठमाला,
 गलरोगभेद ।
 —स्थल, सं पुं (सं न) दे 'कनपटी' ।
 गडक, स पुं (स) कठधार्यो रक्षाकरट
 २ ग्रथि (पुं) ३ स्फोटकरोगभेद ४ कटगिन्
 (पुं) ५ चिह्न ६ देशविशेष ।
 गंढकी, सं स्त्री (स) नदीविशेष
 २ खड्गिनी, खड्गमृगी, तुंगमुखी ।

गडा, सं पु (सं गडक=गाठ) २ कठघायो
रक्षाकरड २ चतुष्क, चतुष्टय ३ कपदिका
पग, चतुष्टय ४ बलय, चक्र ५ ह्यकठभूषण
६ ह्य (पु) ।

—सावीज सं पु, मन्त्रयन्त्र ।

—सावीज करना, कि म, रक्षाकरडै भूतप्रेतान्
निष्कम (प्रे) दूरी कृ ।

गँडा(डा)सा, सं पु (हि गेडी + स असि >)
यवस-धास-शैदनी २ लघु, परशु (पु)
परश्व ।

गडूप, सं पु (सं) गडूषा, चुलुक चुलुक ।
२ शुटाग्र, शुदाराम् ।

गँडेरी स स्त्री (हि गडा) ह्य,
खण्डक-कम् ।

गदगी, सं स्त्री (फा) मल ल, अव (प) स्वर,
क्व-क्क, किट्ट, कर्दम २ मालिन्य कालुष्य
३ अपवित्रता, अशुचिना ।

गँदला, वि, दे 'गदा' ।

गदा, वि (फा) मलिन, मलीमस, समल,
वतुष, आविल २ अशुद्ध, अपवित्र ३ कुत्सित,
'र्द', अश्लील ।

—करना, कि स, कलुषयति मलिनयति
(ना धा), दुष (प्रे दूषयति), वलुषी
आविली, कृ । [गदी (स्त्री)=मलिना इ]

गदी वानें, अदलील, ग्राम्य-अवाच्य-वचनानि ।

गदा विरोजा, स पु (सं गध + दे विरोजा)
कुद-कु, कुदुर-रु, पालकी, बहु-तीक्ष्ण, गध,
श्रीवत्स सक, सरल, द्रव निर्यास ।

गडूम, म पु (फ, सं गोधूम), सुमन,
स्लेच्छभोग्य, प्रवट ।

गडुमी, वि (फा गडुग) गोधूम (समास नें),
गोधूम-सुमन, वर्ण, प्रवटमय ।

गध, स स्त्री (स पु) आमोद, वाम
२ प्राग्भास्य पृथिवीयु (गै) ३ सुगध,
सुवास ।

—विलाव, स पु (स रधविडाल) गध
मार्जार, खट्टास ।

—रात्र, —सार, स पु (सं) चदनम् ।

गधक, स स्त्री (स पु) गधि (घ) क,
गधादमन्, सौगधिक ।

—का तेजाव, स पु, गधकान्त ।

गंधकी, वि (सं गधक >) गधक, गर्म-युक्त
२ ईवत्पीत ।

गधन, स पु (सं न) गन्धप्रसारणम्
२ श्रीहिभेद ३ अन्धवसाय ४ आपात
प्रहार ५-दोषप्रदर्शनम् ६ समूचनम् ।

गधर्व, सं पु (स) स्वर्गायक, दिव्यगायन,
गातु (पु), देवभेद २ गायक । [-र्वी स्त्री]

—नगर, स पु (सं न) स स्थले वा ग्राम
नगरादीना मिथ्याभास, गातु-गधर्व, पु
२ माया, प्रपच, इन्द्रजालम् ।

—धिद्या, सं स्त्री (स) सगीत, सगीत वाय,
विषा शास्त्रम् ।

—विवाह, स पु (स) विवाहभेद (धर्म)
धिभोरनुमति विना स्वेच्छातो विवाह ।

गधवती, स स्त्री (स) पृथिवी धरणी ।
२ व्यास जननी, सत्यवती ३ सुरा
४ जाताभेद ।

गधार, म पु (स गाधार) भारतवर्षस्यो
धरत्या दिशि देशविशेष २ एतोयत्वर
(सगीत) ।

गधी, स पु (स गधिन् >) गाधिक, गध,
विक्रधिन् लपजोविन् वगिज् २ ३ धास-बीट,
भेद ।

गधारी, स स्त्री, दे 'गाधारी' ।

गभीर, वि (स) ग (ग) भीर, रक्, अगाध,
निम्न २ गहन, निविड ३ दुर्बोध, निगूढार्थ
४ मद्र, घन (शब्द) ५ शान्त, सौम्य ।

गभीरता, स स्त्री (स) गामीर्द, गौरव, भीरता,
निम्नता, गहनता, दुर्बोधता, सौम्यता इ ।

गँवाक, वि (हि गँवाना) अपव्ययिन्,
दिक्षपिन्, दे 'गनाद्' ।

गँवाना, कि स (स गमन >) अपव्यय (जु)
वृथा शै हस (प्रे) २ हा (जु प अ),
त्यज् (भ्वा प अ) ३ (समय) या
अतिवद् (प्रे) ।

गँवार, वि (हि गँव) ग्रामीण, ग्रामिक,
ग्रामिन् (पु), ग्राम्य २ मूर्ख, जठ ३ अनार्य,
असभ्य ।

—पन, स पु, ग्रामीणता, मूर्खता, अस
भ्यता इ ।

गँवारु, वि (हि गँवार) ग्रामीय, असस्कृत,
प्राकृत २ अक्षिप्त, असभ्य ।

गंसीला, वि (हिं गौंसी) प्रथिल, अधि पर्व, मय
२ वैषक, छेदक।

गळ, स स्त्री, दे 'गौ'।

गगन, स पु (स न) आकाश-शब्द।

—भेदी, वि (सं दिन्) आकाश व्योम,
वैषक वैधिन् भेदिन् (शब्दादि) २ (भवनादि)

गगन व्योम, स्पृश चुभिन्, अभ्रलिद्, नभोलिद्।

गगरा, स पु (स गर्गर-दधिमथनपात्र >)
धातु कुभ कल्श घट, गर्गर।

गगरी, स स्त्री (स गर्गरी-दधिमथनपात्र >)
धातुमयल्लु कलश घट कुभ, गर्गरी।

गच, स पु (अनु) पके चरनज शब्द
२ खडगादिवेधनोरथ शब्द ३ लेप, सुधा,

४ गृहभूमि भू (स्त्री) ५ सुधालितल,
कुट्टिम मन्।

—कारी, स स्त्री (हिं गच + फा कारी >)
सुधा लप, कार्य कर्मन् (न)।

गचपच, वि दे 'गिचपिच'।

गद्, स पु (फा) आघाल, प्रहर
२ हानि क्षति (स्त्री) ३ कष्टम्, क्लेश।

गज, स पुं (स) इस्तिर्, कुमिन्, करिन्,
कुभिन्, ददिन्, रदिन्, सुदिन् (सब पुं),
दे हाथी'।

—आनन, स पु (स) गजमुख, गणेश,
गजवदन।

—कुभ, स पुं (स) करिकुभ, गजशिर पिंड।

—गति, स स्त्री (स) गज कुजर, गगन गति।

—गामिनी, वि स्त्री (स) श्म वारण,
गामिनी-चारिणी (सुंदरी)।

—दत्त, स पु (सं) इस्ति करि, दत्त रद
रदन २ गणेश।

—दान, स पुं (स न) गजमद २ वरि
विनरणम्।

—पति, स पु (सं) करीद्र (यूथनाथ,
यूथप)।

—पाल, स पुं (सं) इस्तिप पक्, आधोरण,
निपादिन् (पुं) महामात्र।

—मौनी, स पुं (सं गजमौक्तिक) गजमुक्ता,
गजमणि (पुं)।

—मुष्ण, सं पुं (सं) दे 'गजानन'।

—राज, स पुं (सं) दे 'गजपति'।

—वदन, स पुं (सं) दे 'आनन'।

—वान, सं पुं (सं गज >) दे 'गजपाल'।

—शाला, स स्त्री (सं) द्विप इस्ति, शाला
गृहम्।

गज्ञ, स पुं (फा) गज (माप) २, आग्नेय
चूर्ण प्रणोदनी यष्टि (स्त्री) ३ सारगवादन

यष्टि, वादन वाद्य वादित्र, वण्ड ४ इपुभेद।

गज्ञक, स स्त्री (फा कजक) व्यजन, उपस्कर,
उप अव, दश २ तिलशकैरा (मिठारै)
३ उपाहार ४ प्रातराश।

गज्ञट, स पु (अ) राजपत्रम्।

गजनी, स स्त्री (सं गज >) मृत्तिका-मृद, भेद।

गज्ज, स पुं (अ) रोप, क्रोध २ विपद्
विपत्ति (स्त्री) ३ अयाय, अयाचार
४ विलक्षणवृत्तात्।

—करना, कि स, अयायेन अधिष्ठा (श्वा
प अ) शास् (अ प से) २ विस्मयजन (प्रे)।

—का, वि अद्भुत, आश्चर्य।

—नाक, वि, रष्ट, क्रुद्ध, वृद्धि।

गजर, स पु (स गर्ज, हिं गरज) चतुरष्ट
द्वादशवादनसमयेपटानाद २ प्रात पटानाद।

स स्त्री, श्वेतरक्तगोधूममिश्रणम्।

—हम, कि वि, प्रात, प्रभाते, मंहति प्रत्यये।

—चजर, स पु (अनु) अनुचिनमिश्रणम्।
२ खावालाप, मक्ष्यामक्ष्यम्।

गजरा, स पु (सं गज-देर >) माला,
माल्य, स्रज् (स्त्री) २ बलय, वटक-क,
करभूषण ३ कौशेयबलभेद।

गजरी, स स्त्री (हिं गजरा) कलाची मणि
बन्ध, भूषण आभरणम्।

गजरी, स स्त्री (हिं गजर) लज्जु हृद्र, गजर
गर्जरम्।

गजल, स स्त्री (फा) गृहारकविता।

गज्जी, स स्त्री (फा) श्मूलतीव्रबलभेद।

गज्जी, स स्त्री (स) इस्तिनी, वरिणी।

गजेन्द्र, स पुं (सं) दे 'गजपति'।

गटवना, कि स (अनु गट) राद्
(श्वा प से) २ निम् (तु प से),
घस् (चु) ३ अभ्यायेन अपट (श्वा प अ)।

गटगट, सं पु (अनु) गटगटा, शब्द-ध्वनि
(पु) गटगटायितम्। वि वि, सगटगटा
शब्दम्।

गटपट, स स्त्री (अनु) रति (स्त्री) मैथुनं,
सद्वास २ धनमेयी। (वि) मैथुनासक्त।

गटरम्, स स्त्री (अनु) कपोत, शब्द-स्त
 वृजित, धृत्कार ।
 गट्ट, स पु (अनु) निगरणवनि (पु) ।
 गट्टा, स पु (सं ग्रथ >) ग्रन्थिबध धन, पाणि
 मूल २ गुल्फ धुट ३ नातु (पु न), नल
 कोल ४ रोषना, अवष्टम ५ ग्रथि (पु)
 ग्रन्थिका ६ सधि (पु) पर्वन् (न), अस्थि
 सधि (पु) ७ बीज ८ मिष्टान्नभेद ।
 गट्टी, सं स्त्री (हि गट्टा) भावापन, तलुकील ।
 गट्टु, स पु (हि गौठ) पोटीलिका, भार,
 जूर्न, सधान, गुण्ट ।
 गट्टा, स पु (हि गौठ) काष्ठादीनां भार
 २ दे 'गट्टर' (३-४) पलाडु लघुन, ग्रथि (पु) ।
 गट्टी, स स्त्री (हि गट्टा) दे 'गठरी' ।
 गठ, सं स्त्री (हि गौठ, दे) ।
 —कटा, नि पु, दे 'गैठकटा' ।
 —जोडा, स पु, दे 'गैठकपन' ।
 गठन, स स्त्री (स ग्रथन) घटना, रचना,
 विधान, निर्माणम् ।
 गठना, कि अ (स ग्रथन) मग्रथ-गुण
 (कर्म), गुणै-नतुमि बध (कर्म) २ सम्यक
 रच-निर्मा (कर्म) ३ स्नेहातपयो विद्
 (दि आ अ) ४ पद्यत्र ससृज (कर्म) ।
 गठरा, स पु, दे 'गट्टर' ।
 गठरी, स स्त्री (हि गठरा) लघु पोटीलिका
 भार-जूर्न २ मचिनधनम् ।
 —जोडा, स पु, कृपण, वदर्ये ।
 गठवाना, } कि प्रे, 'गौठना' के प्रे रूप ।
 गठाना, }
 गठाप, स पु (हि गठना) सवध, सरूप
 २ दे 'गठन' ।
 गठिन, वि [स ग्र(ग्र)थिन] युक्ति, वद
 २ रचिन, निर्मित ।
 गठिया, स स्त्री (हि गौठ) दे 'गठरी'
 २ वात, रक्त शोणित, ग्रथिवात, दे 'वातरोग' ।
 —घात, —बाध, स स्त्री (हि +स वात
 तथा वायु) सधि, वात वातु २ वात, वातु,
 वातरोग ।
 गठीला, वि (हि गौठ) ग्रन्थि पर्वसधि-
 मय (मया स्त्री) ग्रन्थिल, पर्ववध ग्रथिमय
 (ती स्त्री) ।
 गठीला, वि (हि गठना) वज्र दृढ, देह-
 ग, स्फूर्तिमय (ती स्त्री) २ दृढ ३ सवल
 ली (स्त्री) = इडाणी, सवला ३ ।

गटौत-स्त्री, सं स्त्री (हि गठना) मैत्री,
 सौहार्द २ कुमभ्रणा, उपजाप, कूट टम् ।
 गडत, सं स्त्री (हि गाठना) अभिचाराय
 निखान निहित, वस्तु (न), *निखानम् ।
 गडकना, कि अ (अनु) गडगटावते (ना धा),
 गडगटा, शब्द नाद राव कृ ।
 गडगज, स पु, दे 'गरगम्' ।
 गडगड, सं स्त्री (अनु) गडित, स्तनित,
 गडगटावित २ वदने, भावशब्द गूलशब्द
 ३ धूम्रपानयत्रशब्द ।
 गडगडा, स पु (अनु) धूम्रपानयत्रभेद,
 भावगट ।
 गडगडाना, कि अ (अनु) गन-गन-स्तन्
 (स्वा प से) गडगटावते (ना धा)
 २ नदरस (स्वा प से) ।
 गडगडाहट, स स्त्री, (हि गडगडाना)
 दे गटगड' ।
 गडगूढ, स पु (अनु गड + हि गूढन >)
 जीर्ण शीर्ष जर्जरित, लज्ज पट, चीर, कपट ।
 २ असार मलन् ।
 गडना, कि अ (स गर्त >) वा प्रविष्ट
 (तु प अ), विष् (तु प से), निर-
 मिद (रु प अ) २ (भूमि) निधा-निक्षिप्
 (कर्म) ३ पीड (कर्म), व्यथ (स्वा आ
 से) ४ नि, मस्ज (तु प अ), अव नि
 सद (स्वा प अ) ।
 गड जाना, सु, लज्ज (तु आ से), उप
 (स्वा आ वे) ।
 गडप, सं स्त्री (अनु) निगरण, घसनम् ।
 गडपना, कि स, (अनु गटप >) सत्वर
 निगू (तु प से) -पा (स्वा प अ)
 २ अन्यायेन आरममाद कृ ।
 गडप्पा, स पु (अनु) बृहद्, गर्त-गर्त-
 अन्ट ।
 गडघट, वि (हि गट = गडटा + वट-उँचा)
 भ्रम, विषम्, नगोन्नर २ अराव्यस्त, अक्रम ।
 स पु अयवस्था, क्रममग २ विप्लव,
 सक्षोभ, कोलाहल ३ रोग, कामय ।
 —अध्याय, स पु } दे 'गडघट' स पु ।
 —छाटा, स पु }
 गडघडाना, कि अ (हि गडघट) आकुली
 भू, मुद् (दि प वे), भात्या मन् (दि

आ अ) । कि स, वि-सं, भ्रम्-शुभ (प्रे),
मुह् (प्रे), आकुली कृ ।

गद्वदाहट, गद्वदाही, स स्त्री, दे 'गद्वद' स पु ।

गद्वद्विया, वि (हि गद्वद) मोहक, मोहन
२ क्रम-यवस्था भङ्गक-नाशक, उपद्रविन् ।

गद्वद, वि (अनु) सकुल, सवीर्ण, व्यत्यस्त,
अव्यवस्थित ।

—करना, कि म, मकरी मकुली वृ, क्रम भञ्ज
(रू प अ) ।

गद्वरिया, स पु (स गद्वरिका >) अवि गद्वर
मेघ पाल ।

गद्ववा, स पु (स गद्वक) गद्व (पु),
गद्वक, गद्वक २ पु-पदानभेद ।

गद्ववाना, कि प्रे, 'गद्वना' के प्रे रूप ।

गद्वहा, स पु (स गर्त ती) गर्ता, अवट,
विल, विवर, स्यात, पत्तर ।

गद्वाना, कि स 'गद्वना' के प्रे रूप ।

गद्वारी, स स्त्री (अनु) उच्छ्वायगचक्र, २ भटल,
वृत्त, चक्रम् ३ मडलाकार गोल, रस्ता ।

गद्वि (रि) धार, वि (हि गद्वना) धृष्ट,
दुदात २ मथर ।

गद्वु, वि (स) कुम्भ, वक्रधृष्ट । स पु (स)
वृन्द, वृन्दम् २ गद्वुन जलपानभेद
३ किनुलुक, गद्वुपद ।

गद्वुआ, स पु (स गद्वु) सनालीक लघु
पानपात्रम् ।

गद्वेरिया, म पु, दे 'गद्वरिया' ।

गद्वु, स पु (स गण) नि स, चय, निकर,
स्नोम ओष ।

गद्वुवद्वु, गद्वुमद्वु, स पु (अनु) सकर,
अक्रम, क्रमभङ्ग । वि, विपर्यस्त, व्यव्यस्त,
भङ्गक्रम ।

गद्वुा, स पु (स शकट) शकट टिवा, वाहन,
प्रवक्षणम् ।

गद्वुाम, वि (अ गाढ + ज्याम) नीच, अधम,
अधम्य ।

गद्वुी, स स्त्री (हि गद्वु) (एक ही वस्तु का)
सनि, चय, सधान २ राशि, समूह ।

गद्वुा, स पु दे 'गद्वहा' ।

गद्वुत, वि (हि गद्वना) वृत्रिम, कल्पित
२ दे 'गद्वन' ।

गद्वु—, वि कपोल मन, कल्पित, मानसोद्
भावित, काल्पनिक, कल्पनात्मक ।

गद्वु, सं पु (सं गद्व) परिग्रह, स्वात, गर्तं गर्तं
२ दुर्ग, कोट ।

—पति, स पु (स) दुर्गपात्र ।

गद्वुन, स स्त्री (हि गद्वना) दे 'गद्वन' ।

गद्वुना, कि स (अ घटन) घट् (जु) घट्ट
रच् (जु) निर्मा (अ प अ, जु आ अ),
कल्प साध सपद (पे), २ सट्ट (जु) ३ मिथ्या
कल्प (प्रे), मनसा सृज् (तु प अ) ।

गद्वुा, स पु, दे 'गद्वहा' ।

गद्वुार्द्ध, स स्त्री (हि गद्वना) घटन, निर्माण,
रचनम् २ घटन-रचन, मूल्य भृति (स्त्री)-
निर्देश ।

गद्वुाना, कि प्रे 'गद्वना' के प्रे रूप ।

गद्वुी, स स्त्री (हि गद्व) लघु दुर्ग कोट
२ कोटाकार इडभवनम् ।

गण, स पु (स) समूह, वर्ग, समुदाय, वृद्धम्
२ अणी, कोटि (स्त्री) ३ त्रिगुणमात्मक सेना
विभाग (= २७ हाथी, २७ रथ ८१ घोडे,
१३५ पैदल) ४ परिचारक परिजन ५ पक्ष
पाति अनुयायि वग ६ सभा, समाज
७ गणशाधिष्ठिता शिवमेवका ८ मगण
व्यग्रादय वर्णमानसमूहा (छद) ९ १० धातु
शब्द समूह (व्या) ११ नक्षत्रसमूहविशेषा
(ज्यो) ।

—अधिप—नाथ,—नायक,—पति, स पु
दे 'गण' ।

—द्रव्य, स पु (स न) सर्वजनीन पदार्थ
२ द्रव्यसमूह ।

गणक, स पु (स) दैवज्ञ, ज्योतिर्विद्
२ गणितज्ञ

गणकी, स स्त्री (म) १ २ गणितज्ञ दैवज्ञ,
पत्नी ।

गणन, स पु (स न) सव्यान, गणना ।

गणना, स स्त्री (स) गणन, सख्यान २ सरदा
३ अलंकारभेद (सा) ।

—करना, कि स, दे 'गिनना' ।

गणनीय, वि (स) सख्येय गण्य २ द
'प्रसिद्ध' ।

गणिका, स स्त्री (सं) वेद्या, भोग्या पण्यस्त्री ।
गणित, स पु (स न) गणित, शास्त्र विद्या
गणना मात्रा-संख्या परिमाण, विद्या शास्त्रम् २

अक, विद्या गणित शास्त्रम् । वि, मख्यान, सक
लित ३ चिंतित, निरूपित ।

—कार, स पु (स) गणित २ ज्योतिर्विद् (पु) ।

—विद्या, म स्त्री (स) दे 'गणित' (१२) ।

अक—, स पु (स न) अक, विद्या-शास्त्रम् ।

वीन—, सं पु (स न) गणितविद्याभेद ।

रेखा—, स पु (स न) रेखाङ्गना, भू-ज्या,
मिति (स्त्री) ।

गणेश, स पु (म) गज, अन्य मुख-वदन
आनन, लंबोदर, गंगाधर, विनायक,
आसुग भूषण, विनेश, परशुपाणि (पु) ।

गोवर—, स पु, नड मूढ ।

गण्य, वि (म) मख्येय गणनाई, गणनीय
२ प्रतिष्ठित, पूज्य, मान्य ।

—मान्य, वि (स) दे 'गण्य' ।

गत, वि (स) अतीत, अतिक्रान्त, व्यतीत,

२ हृत ३ हीन, रहित ४ लब्ध, प्राप्त ।

स स्त्री (स गति स्त्री) दशा, अवस्था

२ रूप, आकृति (स्त्री) ३ उपयोग व्यवहार

४ दुर्दशा, नाश ५ नृत्यभेद ६ प्रेतक्रिया ।

गतका, स पु (स गदा) चर्मावृत्तयष्टि

(स्त्री) २ कौडा-खला, भेद ।

गताक, स पु (स) पत्रपत्रिकापीनाम् इताक

अनीताक अव्यवहितपूर्वाक ।

गतात्, वि (सं) अध, अनयन, अनेत्र ।

गतागत, स पु (स न) गमनागमनम्

२ पुनर्नगम् (न), अममरणम् ।

गतानुगतिक, वि (स) अथानुयायिन्,

अभविष्ठासिन् ।

गति, स स्त्री (सं) गमन, चलन, ब्रजन,

अयन, यान, सरण २ स्फुरण, १५म, स्पदन

३ चेष्टा, व्यापार ४ दशा, अवस्था ५ प्रवेश

६ प्रयनसोमा ७ अवलंब ८ माया, लीला

९ रीति (स्त्री), विधि (पु) १० देशंतर

प्राप्ति (स्त्री) ११ मुक्ति (स्त्री) १२ ताल

ररानुसारमगचालन (सपीन) १३ प्रेन

कर्मन् ।

—वनाना, मु, निर्दय तद् (चु) प्रह

(स्वा प अ) ।

—होना, मु, प्र-उप-युन (कर्म) २ निर्दय

ताद (कर्म) २ मुक्त लभ (स्वा आ अ) ।

गता, स पु (देश) मसृष्टपत्रं, गुरुपत्रम् ।

गद, सं पु (सं) रोग, आमय २ श्रीकृष्ण
नुज ३ ४ वानर असुर, विशेष । (स न)
विष ५, गरलम् ।

गदका, स पु, दे 'गतका' ।

गद्गद्, वि, दे 'गद्गद्' ।

गद्गद्, स पु (अ) प्रजा प्रकृति, कोप-क्षोभ,
२ सैन्य सेना, द्रोह क्षोभ प्रकोप ३ विप्लव,
सप्लव, समर्द ।

—करना या मचाना कि अ (राजे) दुद्
(दि प वे), राजशासन लघ (स्वा आ
से) इ ।

गद्गद्, वि (फा गदा) सपक, सकर्म,
समल, पकिल, मलिन ।

—करना, कि स, कतुषयनि पकिलयनि-आविल
यति (ना धा), मलिनी कु ।

—पन, स पु, मालिय, पकिलरव आविलना ।

गद्गद्पचीसी, म स्त्री (हि गद्गद् + पचीस)

आषोडशाद् आपचविंशते आयुषो मास ।

२ अनुभवदीनता, माध, मौर्यम् ।

गद्गद्, स पु (स गर्दम) रासभ, खर,

बालेय, भारग, घुसर, ग्राम्याश्व २ मूर्ख,

अड [गद्गद् (स्त्री) = राममा, खरी, गर्दभी] ।

—पन, स पु, मौर्य, जहता ।

गदा, स स्त्री (स) लोहमयशस्त्रभेद ।

—धर, सं पु (स) कृष्ण २ विष्णु । वि,

गदाधारिन् ।

गद्गद्, स पु, दे 'गद्गद्' ।

गद्गद्, वि (स) प्रहट, आनदपुलकित, परम

मुदित, सुप्रसन्न २ अस्पष्ट, अमबद्ध, अस्पुट

(अक्षरस्वरदि) ।

गद्गद्, स पु (हि गद्गद् अनु) तूलसस्तर, तूला ।

गद्गद्, स स्त्री (हि गद्गद्) (तूल) आसन,

तूलिका २ पिनूलविष्टर ३ उपधान, उपबर्ह

४ पर्याण, पख्यान ५ मिहासन, नृपासन

५ अधिकारपद ६ ७ कर-चरण, नालम् ।

—पर बैठना, कि अ, सिंहासन आरह् (स्वा

प अ), राज्येभिषिच (कर्म) ।

—पर बैठाना, कि स, अभिषिच (सु प अ),

सिंहासने उपविश (प्र)

—से उतारना, कि स, सिंहासनाद् ध्रु अव

रह् भ्रश् अवपद (प्रे) ।

- नशीन, वि (हिं + पा) सिंहासन, आसीन आरूढ > उत्तराधिकारिन् ।
- नशीनी, सं स्त्री, अभिषेक, राज्याभिषेक ।
- गद्य, सं पु (सं न) छन्दोहीनरचना, अपाद पदसन्तान ।
- गधा, स पु, दे 'गदहा' ।
- गधी, } न स्त्री, दे 'गदही, ('गदहा'
गधैया, } के नीचे) ।
- गनीम सं पु (अ) शत्रु, रिपु २ दस्तु (पु), छुटक ।
- गनीमत, सं स्त्री (अ) लोत्र, लोप्य, अप दूतधन २ अयत्नलम्ब धन ३ सतोषविषय, धन्यत्वम् ।
- गन्ना, स पु (सं काठ -र>) रसाल, इधु, काठ दड, दे 'ईख' ।
- गप, सं स्त्री (सं कल्प अथवा अनु) किव दती, लोक जन, श्रुति (स्त्री) प्रवाद वाचा २ जल्प, प्रलाप ३ मिथ्या-असत्य, वृत्तान्त वृत् समाचार ४ विकल्पन, गर्वोक्ति (स्त्री) ।
- गारना, —होना, कि अ, प्रल्प जल्प (भ्वा प से) ।
- शप, स स्त्री, वृथा, कथा सलाप ।
- गप, स पु (अनु) निगरण-प्रसन, ध्वनि (पु) ।
- गपागप, कि वि, सत्वर, झटिति, शीघ्रम् ।
- गपकना, कि सं, दे 'निगलना' ।
- गपदचौध, सं स्त्री (हिं गपोडा + चौधा) वृथा निरर्थक, सलाप-आलाप-संवाद > दे 'गदवती' ।
- गपदशपद, सं स्त्री, दे 'गपदचौध' ।
- गपागप, अभ्य (अनु) सत्वर, शीघ्र, भाग्य झटिति (म्व अभ्य) ।
- गपोडा, सं पु दे 'गप' ।
- गप्प, स स्त्री, दे 'गप' ।
- गप्पी, स पु (हिं गर) वाक्दूक, जल्प (पा) २ मिथ्याभाषिन्, अनृतवादिन् (पु) ३ आत्मदंष्ट्रादिन् (पु) ।
- गप्पा, सं पु (अनु गप >) वृद्ध, कवट प्राप्त पिंड २ लाभ ।
- गफ, वि (सं प्रप्स = गुच्छ अथवा गुफ = बुनना >), अचिर, घन, सार्द्र, सूत ।
- राफलत, सं स्त्री (अ) अन्वधानता, प्रमाद २ स्खलित, अपराध ।
- गवन, सं पु (अ) कपटेन आत्मसात्करण अपहरण-उपयोग ।
- वरना, कि स, कपटेन आत्मसात्कृ ।
- गवरु, सं पु (फा ख्वरु) (नव) युवक, युवन् (पु), तरुण २ पति (पु), वर । वि, सरल, अमाय ।
- गभस्ति, सं पु । (सं) किरण, रश्मि (पु) २ सूर्य ३ बाहु (पु) ४ हस्त ।
- पाणि—मान्—हस्त, सं पु (सं) सूर्य ।
- गभीर, वि (सं) दे 'गम्भीर' ।
- गम, सं पु (अ) शोक, विषाद, दुःख २ चिन्ता, रणरणक कम् ।
- गीन, वि (अ + फा) विषण्ण, सन्निवृत्त ।
- खाना, सु, क्षम्. (भ्वा आ वे), क्षम् (दि प वे, क्षाम्यति) ।
- गमक, वि (सं) गद्य, धातु, २ सूक्त, बोधक ।
- गमक, सं स्त्री (अनु) पटह नेरी, नाद > सुगन्ध ।
- गमन, स पु (स न) दान, ब्रजन, चलन, प्रस्थान २ मैथुनम् ।
- आगमन, स पु (सं न) यात्रायान, यानायान, गतागमम् ।
- गमला, स पु (पूर्व गैभेलो) प्रसूत पुष्प, पात्र भाजन २ पुरीष, उच्चार, पात्रम् ।
- गमी, सं स्त्री (अ गम) शोक, विलाप २ मृत्यु ।
- गम्य, वि (सं) प्राप्य, लभ्य > यातव्य, अयनीय ३ साध्य, शक्य ४ सम्भोगार्ह ।
- गयद, सं पु (स गयेन्द्र) गज, पति (पु) —राज ।
- गय, सं पु (स गज) द्विरद, द्विप, करिन्, कुम्भिन् ।
- गया, स स्त्री (अ) मगधपु गयराजपिपुरी, नीर्यविशेष ।
- गया, वि (सं गत) यात, प्रस्थित ।
- गुजरा,—वीता, वि, नष्ट, मृत, २. निरुद्ध, वृणप्राय ।
- गर, स पु (सं) विष, उदविष २ रोग ।
- गरक, वि, दे गर्क ।
- गरकाव, वि, दे 'गर्काव' ।

शरकी, सं स्त्री, दे 'शकी'।
 शरगज, सं पु (हि गज + सं गर्ज) दुर्ग
 प्राचोरशृंग । २ उद्वन्धनयत्र, घातशिला ।
 शरगारा, स पु, दे 'शराडी' ।
 शरज, स स्त्री (सं गर्ज) गर्जन-ना, गणित
 स्तनित, महा-दीर्घ-गम्भीर, शब्द नाद ।
 शरज्ज, स स्त्री (अ) आशय, प्रयोजन, अर्थ,
 स्वार्थ २ आवश्यकता ३ अभिलाष ।
 कि वि, अते, अतत, अन्ततो गत्वा २ अम्नु,
 प्रव (अव्य) ।
 —मन्द, वि (अ + फा) स्वार्थलिप्सा, स्वला
 मापेक्ष । २ इच्छुक, ईप्सु ।
 —मन्दी, स स्त्री, स्वार्थलिप्सा, स्पृहा, अपेक्षा ।
 व— दि (फा + अ) निष्काम, निस्पृह,
 नि सग ।
 शरजना, कि अ (स गर्जन), गज्, गज-
 विश्रुज् नद नदं स्वन्-रम (स्वा प से),
 महा-दीर्घ-गम्भीर, नाद कृ ।
 स पु दे 'शरज' ।
 शरजी, वि (अ शरज) दे 'शरजमन्द' ।
 शर—स स्त्री (फा + अ) स्वार्थपरता, स्व
 हितनिष्ठा ।
 शरण, स पु (स न) निगरण, निगलनम्,
 ग्रसन २ अवमेचन, प्रोक्षण ३ विपम् ।
 शरदन, दे 'शरन' ।
 शरदनिया, स पु (हि शरदन) शीवा-चण्ड,
 प्रहण, प्रह, अर्धचन्द्र ।
 शरदा, स पु, दे 'शर्द' ।
 शरदान, स पु (फा) शब्द धातु, रूपसाधन
 (व्या) ।
 —करना कि स शब्दरूपाणि वद (स्वा
 प से) ।
 शरनाल, स स्त्री (हि शर + सं नाल) एक
 वदनी गीतज्ञी ।
 शरम, वि, (फा शर्म, स धर्म) उष्ण, तप्त,
 स-उद, आतपाकात्, सौष्ण । २ उग्र, प्रचट,
 क्रोधिन् ३ तीक्ष्ण, तीव्र ४ उत्साहिन्,
 सोसाह ।
 —करना, कि सं, परि प्रस, तप् (प्रे), उद्,
 दीप् (प्रे), उष्णीकृ । सु, वृत्तिन् (प्रे) ।

—होना, कि अ, उष्णीम्, तप् (स्वा प
 अ, दि वा अ) २ क्रुध (दि प अ) ।
 —कपडा, सं पु, और्ण-ऊर्णामय, वस्त्रम् ।
 —जयर, स स्त्री अभिनव-शरानीतन समा
 चार ।
 —मिज्ञाज, वि, सरभिन्, क्रोधिन् ।
 —सर्द, वि, कोष्ण, क्रोष्ण, वदुष्ण ।
 शरमाशरम, वि (हि शरम + शरम) अत्युष्ण,
 सुतप्त, २ अभिनव, प्रत्यग्र ।
 शरमाना, कि अ कि स (हि शरम)
 दे 'शरम होना' तथा 'शरम करना' ।
 शरमी, स स्त्री (फा, सं धर्म) स-उद परि,
 ताप, उष्णता, दाह, उ (क) श्मन् (पु),
 उष्म । २ उग्रता, चण्डता ३ क्रोध
 ४ उत्साह ५ शीघ्र, शीघ्र समय-काल,
 निद्राह ६ उपद्रव ।
 —दाना, स पु, दे 'पित' (प) ।
 शरल, स पु (स ज) शर, विप २ सर्पविष
 ३ लूणाकम् ।
 शरी, वि (फा) मारिक, मारवत्, गुरु
 २ बहुमूल्य, महाई ।
 शराही (री), स स्त्री (अनु शरर) दे 'शरारी' ।
 शरारा, स पु (अनु कथवा अ शरारा)
 चल, च (नु) लक । २ सुल्लक्ष्मीपथम् ।
 —करना, कि स जलेन कठ (गज) धाव्
 (स्वा प से) शृन् (अ प वे) ।
 शरिमा, स स्त्री (सं मन् पु) शुकव, भार
 वत्त्व २ महिमन् (पु), गौरव, महत्त्व
 ३ अहकार ४ आत्मरक्षण ५ सिद्धिविशेष
 (योग) ।
 शरिष्ट, वि (स) शुकतम, भारवत्तन,
 अविभारवत् २ मलावरोधक, मलावृष्टम्भक ।
 शरी, सं स्त्री (स = शुल्का >) नारिकेल
 (र), सार शूल ।
 शरीय, वि (अ) अकिंचन, दरिद्र, निर्धन
 २ नम्र, विनत ।
 —खाना, स पु (अ + फा) कुटी, कुटीर
 २ दरिद्र-अनाथ, आलय-गृहम् ।
 —नि(ने) वाज } वि (अ + फा) दीन, बहु
 —परवर } दयालु-वत्सल नाथ शालक
 पोषक ।

गरीवी, सं स्त्री (अ गरीव) दारिद्र्य,
निर्धनत्व, अकिंचनता २ नश्रता ।

गरुड, स पु (स) वैजतेय, रमेश श्वर,
सुपर्ण, विश्वरथ, नागात्मक ।

—आसन, —केतु, —ध्वज, स पु (म) विश्वु ।

—पुराण, स पु (म न) पुराणविशेष ।

गरूर, स पु (अ) अभिमान, दर्प, गर्व ।

गरेवान, स पु (फा) निचोलगल ।

गरोह, स पु (फा) समुदाय, समूह ।

गर्क, वि (अ) नलमग्न स परि, प्लुत, जले
तिरोहित २ नष्ट, ध्वस्त ३ कार्ये व्यापृत
लीन मग्न ।

गर्काय, वि (अ + फा आव) नलमग्न,
आ स परि, प्लुत २ अति, लीन निरत
—व्यापृत आसक्त ।

गर्की, सं स्त्री (अ) सज्ज्व, आप्लाव ।
२ निमज्जन, जले तिरोधान ३ दे 'लिंगोटी' ।

गर्गी, स पु (स) ऋषिदिशेष २ वृषभ ।

गर्गर, स पु (स) दे 'गगरा' २ ३ वाय
मत्स्य, मेद ।

गर्गरी, स स्त्री (स) मथनी, मथनपात्रम्
२ दे 'गगरी' ।

गर्ज, स स्त्री, दे 'गरज' ।

गर्ज, स स्त्री, दे 'गरज' ।

गर्जन, स पु (स न) दे 'गरज' ।

गर्ज, स पु (स) दे 'गदहा' २ दे 'दरार'
३ जलाशय ४ नरकविशेष ।

गर्द, स स्त्री (फा) धूली लि (स्त्री), रणु,
पास, पाशु, क्षाद, रजस् (न) ।

गर्दन, म स्त्री (फा) ग्रीवा, कथर रा, शिरो
धरा शिरोभि, कवि (पु) २ पायकठ ।

—की अकञ्चन, स स्त्री, ग्रीवाधात ।

—तोड सुमार, स पु शीर्षावरणप्रदाइ,
मसिगन्धकेशेक्यज्वर ।

—हिलाना, कि स, शिर मस्तक चल्-वप्
(त्रे) ।

—उठाना, मु, अभिट्टह (दि प अ, द्वितीया
दे साध) न्युत्था (म्वा वा अ) हुर्
(चतुर्थी के साथ) ।

—उठाना या काटना, मु, शिर श्च (तु
प से) छिद् (क प अ) ।

—उठाना, मु, वश या इ (दोनों अ प अ) ।

—पर सचार होना, मु, दे 'विवश करना' ।

—मरोटना, मु गलहस्तयति (ना धा),
गलनिष्पीडनेन व्यापद् (त्रे) गल निष्पीड
(चु) ।

—मारना, मु, दे 'उठाना या काटना' ।

—में हाथ देना या डालना, मु, अर्धवद
वत्त्वा निष्कम् (प्र) ।

गर्दभ, स पु (म) दे 'गदहा' (स न)
श्वेतकुमुदम् ।

गर्दभी, म स्त्री (स) दे 'गदही' ।

गर्दा, स पु, दे 'गर्द' ।

गर्दिश, स स्त्री (फा) परिवर्तन, घूर्णन,
परिभ्रमण, चक्र २ आपद् विपद् (स्त्री) ।

—करना, कि अ परिवृत् (म्वा वा से),
दे 'धृमना' ।

गर्भ, स पु (म) भ्रूण, पिंड कलन ल,
उदरस्थशिशु (पु) २ दे 'गर्भाशय'
३ अभ्यन्तर, अंतर्भाग ।

—गिरना, कि अ, गर्भे स्तु (म्वा प अ)
पत् (म्वा प से) ।

—रहना या होना, कि स, गर्भे धृ (चु)
आधा (जु स अ) गर्भवती अतर्वती भू ।

—पात, —छाव, स पु (स) गर्भे भ्रूण, स्तुनि
(स्त्री) पतनम् ।

—दास, सं पु (स) दासी जेगी मुनिष्या
पुत्र ।

गर्भवती, स स्त्री (सं), गर्भिणी, सगर्मा,
सत्त्वा ।

गर्भस्थ, वि (स) गर्भाशयस्थ, उदरस्थ ।

गर्भाक, म पु (स) अकल्पाक (सा),
दृश्यम् ।

गर्भागार, स पु (स न) गर्भ-आशय कोष
२ प्रसूतिगृहम् ३ गर्भगृहम्, ४ शयनागारा
म् ।

गर्भाधान, स पु (स न) सस्कारभेद, निषे
कसंस्कार २ शेर, निषेक ३ गर्भधारणम् ।

गर्भाशय, स पु (स) गर्भकोश प, योनि
(पु स्त्री) ।

गर्भिणी, स स्त्री (स) गर्भवती, अतर्वती,
सगर्मा, समत्वा, धृत-रुद गृहीत, गर्मा ।

गर्मित, वि (स) सगर्भ, गर्भयुक्त २ पूर्ण,
पूरित, न्यास ।

गर्म, दे 'गरम' ।

गर्माहट, स स्त्री, दे 'गरमी' ।

गर्व, म पु (स) (उचित) अभिमान
० (अनुचित) अहकार, दर्प, मद, माद,
आगेप, अड, मान ओदर्य, अवलेप, उत्तेक,
रम्य ।

—करना, क्रि अ गर्व (स्वा प से),
प्रश्म (स्वा आ से), वृष (दि प वे) ।
२ अभिमन् (दि आ अ) ।

गर्वित, वि (स) (उचित) अभिमानी
० (अनुचित) दृप्त सदर्प, मार्ग, अवलित,
उत्तिक, उद्वन, उत्तेकिन्, साटोप, साहकार ।

गर्वी, वि (स गर्विन्) } दे
गर्वीला, वि (स गर्व >) } 'गर्वित' ।

गर्हणीय, वि (स) गर्हं निन्द्य अथम ।

गर्हा, स स्त्री (स) निन्दा, गर्हण, आक्षेप,
निर्मर्त्तना ।

गर्हित, वि (स) निन्दित, आक्षिप्त, उगालव्य ।

गर्ह्य, वि (स) दे 'गर्हणीय' ।

गर्ल, स स (स) कठ, कृक, निगरण
२ दे 'ग्रीवा' ३ ४ मस्य वाय, भेद ।

—गर्ल, स पु (स) कंठपिट, श्वयथु-शोथ ।
० गर्लु (पु) ।

—गर्ही, स स्त्री (स गर्ल + हिं वाह)
आलिन, परिरभ, परिष्वग ।

—माल, स स्त्री (स) माला, माल्य,
देशर, हार, सञ् (स्त्री) ।

—गुडी, स स्त्री (स) गलगुटिका, दटिका,
गलरोगभेद ।

गलतक्रिया, स पु (स गर्ल + क्रा) गन्धो
पधान, कपोलापवर्ह ।

गलफडा, स पु (स गर्ल + हिं फटना)
बलजन्तूना आसेद्रियम् ।

गलफूला, वि (स गर्ल + हिं फूलना)
स्थूलाय, पीनवदन ।

गलमुच्छे, स स्त्री [स गर्लमश्रुति (न
बहु)] गदलोमानि (न बहु) ।

गलगल, स स्त्री (देश) वृहस्प, जवी(मी)र
अमफलम् । २, ३ पश्चि-भूर्लप, भेद ।

गलत, वि (अ) अशुद्ध, भ्रात, सदोष,
वितथ । २ असत्य, अनृत, भिष्या ।

—फहमी, स स्त्री (अ + फा) भ्रम,
भ्राति (स्त्री), मिथ्यावोध ।

गलतस, स पु (स गलितवद्) सनान
अपय-हीन-रहित, निस्मान, निरपत्य ।

गलती, वि (+ फा) वि, आकुल, व्यग्र,
उद्विग्न ।

गलती, स स्त्री (अ) रसलित, दोष,
प्रमाद, अपराध २ भ्रम, भ्राति (स्त्री),
व्या, मोह ।

—करना, क्रि अ, अपराध् (दि स्वा प अ),
विभ्रग् (स्वा दि प से) स्खल् (स्वा प
से), प्रमद् (दि प से) ।

गलतुलभाम, स पु (अ) अशुद्धोपि प्रचलित
प्रयोग (व्या) ।

गलना, क्रि अ (स गलन) वि, द्रु (स्वा
प अ), विली (क प अ, दि आ अ)

गलक्षर (स्वा प से) द्रवी आर्द्रो भू ।
२ पच (कर्म), सिध (दि प अ)

३ पूर्नोभू, विगल, ४ परिक्षि परिद्धा अपचि
(कर्म) । स पु, गलन विद्रव-वण, विलयन,

क्षरण पचन परिक्षय इ ।

गलने योग्य, गलितव्य, विद्रवणीय पचनीय इ ।

गलने वाला, वि, द्रान्य, विलेय, विलाप्य द्रवाह ।

गला हुआ, वि, वि द्रुत, गलित, द्रवीभूत इ ।

गलवा, स पु (अ) वि, जय २ प्राबल्यम्,
प्रमुत्तम् ।

गला, स पु (स गर्ल) कठ, कृक, निगरण
२ ग्रीवा, कथरा, शिरोधि, कधि ।

—की सोजिश, स स्त्री कण्ठ, प्रदाह-शोथ ।

—काटना, मु, कथरा ह्य (तु प से)
२ अजीव पीद् (तु) ।

—घोटना, मु, गर्ल निष्पीद् (तु), गलहस्तयति
(ना धा) ।

द्वाना, मु, कठ निष्पीक्य अथवा श्वास निरुध्य
शृ (पे) ।

—घैटना, मु, कठ रूक्ष अथवा कर्कश भू ।

गले पटना, मु अपरिहार्य (वि) भू ।

गले लगाना, मु, आलिंग (स्वा प से),
आक्षिप् (दि प अ), परिष्वञ् (स्वा
आ अ), उपशुद् (स्वा उ वे) ।

गलाऊ, वि (हिं गलना) वि, द्रान्य,
विलाप्य ।

गलाना, क्रि स, 'गलना' के प्रे रूप ।
 गलाव, स पु (हि गलना) दे 'गलना' ।
 गलावट, स पु स पु २ द्रावक द्रावण ।
 गलित, वि (स) द्रवीभूत, वि हृत, २ तीर्ण,
 शीर्ण ३ नष्ट, भ्रष्ट, ४ परि, पत्र पुष्ट ५ पतित,
 च्युत ।
 —कुष्ठ म पु (स न) गल-कुष्ठम् ।
 —यौवना, स स्त्री (स) क्षीण विगत यौवना ।
 गली, स स्त्री (स गल >) वीधी वि (स्त्री),
 सकट मन्दाप, पथ मार्ग ।
 —कृचा, स पु, (हि + फा) सकीर्णमार्ग ।
 —गली मारे मारे फिरना, मु व्यर्थनितरनत
 परिभ्रम् (भ्वा दि प से) २ आजीविका
 -वेषणाय सर्वत्र पर्यट् (भ्वा प से) ३ सर्वत्र
 उपलभ् (कर्म) ।
 गलीचा, स पु (फा गलीचा, तु कालीन से)
 तीरस्क, कुप-आस्तरणम् ।
 गलीज, वि (अ) मलिन, आविल २ अपवित्र ।
 गल्प, स स्त्री (स कल्प >) आख्यायिका,
 उपारवान्, उपकथा ।
 गल्ल, स पु (स) कपोल, गट ।
 गल्ला, स पु (फा) ब्रज, निवह, यूथ, वृद्ध,
 पाशवम् । (यह शब्द पशुओं के लिए ही
 प्रयुक्त होता है) ।
 —वान, स पु (फा) अवि, भेष, पाल
 गोपाल ।
 गल्ला, स पु (अ) अन्न, धान्य २ शरयम् ।
 —फरोश, स पु (अ + फा) अन्न धान्य,
 विक्रेतृ (पु) ।
 गनय, स पु (स) गवालुक, बलमद्र,
 मद्भाग्य, वनगो (पुं) ।
 गवयी, स स्त्री (स) वनधेनु (स्त्री)
 भिल्लगवी ।
 गवनमेंट, स स्त्री (अ) शासन, पद्धति
 (स्त्री)-प्राणाली २ शासक, मण्डल-वर्ग ।
 गवर्नर, स पुं (अ) मीनपति (पुं) प्राता
 पक्ष, राज्यपाल २ शासक, शासितृ ।
 —जनरल, स पुं (अं) राष्ट्राध्यक्ष ।
 गवर्नरी, स स्त्री (अ गवर्नर >) प्राताध्यक्षता,
 राज्यपालत्वम् । वि राज्यपाल प्राताध्यक्ष,
 सम्बन्धिन् ।
 गवाण, स पुं (स) वातायन, जाल रकम् ।

गवाना, क्रि स, 'गाना' के प्रे रूप ।
 गवारा, वि (फा) अनुसूत, अभीष्ट ।
 —करना, क्रि स, सह् (भ्वा आ से) ।
 गवाह, स पुं (फा) सागिन् (पु) ।
 चरमदीद—, स पु (फा) प्रत्यक्ष साक्षिन्
 दर्शन दर्शिम्, देख्य । प्रत्यक्षिन् ।
 गवाही, म स्त्री (फा गवाह) साक्ष्य,
 प्रमाण, प्रामाण्य, निदर्शनम् ।
 —देना, क्रि स, साक्षी भू, साक्ष्य दा
 २ क्रियापाद (धर्म) ।
 गवीश, स पु (स) गो, पति स्वामिन् ।
 २ गोप, पाल पालक, आनीर ३ वृषभ
 वृषन् ।
 गवेषणा, स स्त्री (स) दे 'घोष' ।
 गवैया, स पु (पू हि गवना) गायक,
 गायन, गातृ (पु), गायक, गेषु गय ।
 गव्य, वि (स) गवसवधिन् (दुग्धगोमयादि) ।
 गव्युति, स स्त्री (स) कौशयुगल, द्विरुस
 धनुस (न) ।
 गवा, स पु (अ गशी) मूर्च्छा, मोह ।
 —आना, क्रि अ, मूर्त् (भ्वा प से) मुह
 (दि प वे) प्र वि-न्या ।
 गवाी, स स्त्री (अ) दे 'गश' ।
 गवत, स पु (फा) भ्रमण, पर्यटनम् ।
 —लगागर, क्रि अ, रक्षाये परिभ्रम् (भ्वा
 दि प से) ।
 गवती, वि (फा) पर्यटन-परिभ्रमण-शील ।
 स स्त्री, कुलटा व्यभिचारिणी, स्वैरिणी ।
 गहगहाना, क्रि अ (अनु गहगह) प्रसद
 (भ्वा प अ), प्रहृप् (दि प से) २ दे
 रहलहाना' ।
 गह्वर, वि (स) ग (ग) भीर, लगाप, दे
 'गहरा २ दुर्गम, दुर्गच्छ ३ दुर्गोप, बटिन
 ४ वन, निवि (वि) ष । स पुं (स न)
 गानीधी २ दुर्गोत्तरधान ३ वन ४ गह्वर
 ५ दुर्ग ३ जम्म् ।
 गह्वर, स पुं (स प्रहण) आदान २ उपराग,
 प्रहपीटन ३ कश्क ४ विपत्ति (स्त्री)
 ५ न्यास, बंधक ।
 गह्वना, स पुं (स प्रहण >) अलकार, वि
 आ, भूषण, आमरण, मंडनम् २ न्यास,
 निक्षेप । क्रि स, दे 'पकड़ना' ।

गहरा, वि (स गमीर) गमीर, निम्न, अगाध,
अतन्मपदा २ उत्पथिक, घोर (नीदादि)
३ दृढ कठिन ४ गाढ, घन ।

—अमामो, म पु (हि+अ) सपत्र,
धनिन् (पु) ।

गहरे लोन् म पु (बहु) विनक्षणा इवदग्धा

गहराइ म स्त्री । (हि गहरा) गभीर्य,

गहराव म पु निन्नत्व, अगाधना ।

गहवारा, स पु (फा) (शिमु) प्रेक्षा-लोला ।

गह्वर, म पु (स न) गुहा, (अकृत्रिम)

विल नेवखान (कृत्रिम) दरी कदर रा

० तम पूग शुद्ध्याम ३ छिद्र विपर

४ दुर्मेधा तपम-स्थान ५ शुक्ल म क्षुप

६ वन ७ दम ८ रोहन ० अनेकार्थ वतय

१० जटिलविषय ११ जल । (स पु) लगागृह

निकुन वि दुर्गम २ शुष्ण ।

गाग, वि (अ) गगा, सन्निधिन्-विषयक ।

म पु मौष्म २ कानिकैय ३ सुवर्ण,

हिरण्यम् ४ भस्तर, शिवप्रिय ।

गागोय, स पु (स) मौष्म ।

गाँजा, गाँजा, स पु (सं गजा) मादिनी,

मोहिनी हर्षिणी ।

गाट, म स्त्री (स ग्रथि पु) ग्रथिका बध

धन गड २ सधि (पु) पवन् (न),

आस्थ ग्रथि-भधि ३ पोटलिका, मार

४ आर्द्रक खड-ड ५ विघ्न ६ भ्राति (स्त्री)

७ कूपरभूषणमैद ।

—खोलना, कि स ग्रथि-बध लसुच (प्र)

मोम (जु), उद्ग्रथ (क्र प से) । (मु)

धन कोष मल्लिका शिथिलयति (ना धा)

द्वेष दुराकृ ।

—दैन्या, बौधना या एगाना, क स, ग्रथि

दा अधना बध (क्र प अ) । (मु) रतु

(भ्वा प अ) ।

—पढना, कि अ, मशिलय (दि प अ) ग्रथ

(कम ग्रथ्यते) । (मु) विद्वेप उत्पद् (कर्म) ।

—कट, स पु, ग्रथिलेदक, चौर ।

—गोभी, स स्त्री, दे 'गोभी के नीचे ।

—दार, वि ग्रथिल, ग्रथि पव मय (भवती स्त्री) ।

—वाटना, मु, ग्रथि छित्वा अपहृ (भ्वा प

अ), ग्रथि छिद् (क प अ) ।

—का पूरा, मु, सपत्र, धनाढ्य ।

—जोड़ना, मु, वैवाहिक-औदाहिक ग्रथि बध
(क्र प अ) ।

—से, मु, स्वीय स्वकीय, धनात् ।

गाँटना, कि स (स ग्रथन) ग्रथ (क्र प से),

ग्रथि बध (क्र प अ) दा २ सुजुज (क उ

अ लु), सधा समाधा (जु उ अ) सदिलय

(प्र) ३ ससिब (दि प से) ४ अनुसुल

यात (ना धा) स्वपक्षपातिन विधा (जु

उ अ) ५ आत्मसात कृ, वशनी (भ्वा उ अ) ।

गाडीव, स पु (स पु न) गाडि (शी) व व,

अजुनधनुस (न) ।

गाडीवी, स पु (स विन् पु) अजुन,

गाडीवधर २ अजुनशूक ।

गाधर्व, वि (स) गधर्व, विषयक-भवधिन्

जातीय । स पु (स न) गान । (स पु)

दे गधर्व ।

—वेद, स पु (स) सामवेदरयोपवेद

२ सगौनम् ।

गाधार, स पु (स) भारतवर्षस्वीत्तरादिशि

दशविशेष २ तृतीयस्वर (मगीत) । (स न)

गधरस ।

गाधारि, सं पु (स) दुर्पोषणमातुल शकुनि,

सौवलक ।

गाधारि, स स्त्री (स) दुर्पोषणजननी ।

गाधारिय, स पु (स) दुर्पोषण, धृतराष्ट्र

ज्येष्ठपुत्र ।

गाधी, स पु (स गाधिन्) गधवणिल गध विक्र

दिन्-उपजाधिन्-वणिज-आजीव २ गुनरप्राने

वैद्योपजातिवशेष ३ महात्मन गाधिन् ।

गाभीर्य, स पु (स न) दे 'गभीरता' ।

गाँव, स पु (स ग्राम) नि स, वसथ, दृष्टादि

श-यवसति (स्त्री) ।

गास, स स्त्री (हि गाँसना) नियत्रण,

बधन, प्रतिरोध २ दध, मनोमालिय ३

रहस्य, गुप्तवार्ता ४ ग्रन्थि (पु) ५ शस्त्राय

६ अवेक्षा, पयवेक्षणम् ।

गाँसना, कि स (स ग्रथन > ?) व्यध (दि

प अ), निर्भिद् (क प अ) २ सनि यम्

(भ्वा प अ), दम्, (प्रे दम्भवति) ३

वशीकृ ४ अतिशयेन-अत्यधिक पूर (प्रे) ।

गाइड, स पु (अ) पथ मार्ग-अध्व, प्रदर्शक

प्रदादिन् (पु) उपदेशक २ नायक, नेतृ (पु) २ निर्देशकग्रन्थ ।

शाठन, स पु (अ) कञ्चुक ।

शागर, स स्त्री (सं गर्गर >) दे 'गगरा' ।

शागरी, स स्त्री (स गर्गरी >) दे गगरी ।

शाज, स स्त्री (स गर्ज) दे 'गरज' २ वज्र पानध्वनि (पु), वज्रनिर्घोष ३ वज्र-ज्र, अशनि (पु स्त्री), छादिनी ।

—मारा, वि, वज्राहत, अशनितादित ।

शाजर, स स्त्री (स न) गजर, पीतकद, पीतमूलक सुपीत, सुमूलकम् ।

—मूली, स स्त्री, शाजरमूलक, तुच्छवस्तु (न) ।

शाजी, स पु (अ) धर्मवीर (इस्लाम), वीर, योध ।

शाङ्गना, कि स (हि गाड = गडहा) निखन् (स्वा प से), (इमशाने=पृथिव्या) निधा (जु उ अ), निगुह (स्वा उ वे) २ ऋ (प्रे रोपयति) स्था (प्र स्थापयति) निविश (प्रे) ३ गुप् (स्वा प वे गोपयति), तिरोधा-अन्तर्धा (जु उ अ) ।

स पु, निखनन, इमशाने स्थापन, रोपण, निवेशन गोपनम् ।

शांड, स पु (अ) इस्वर, परमात्मन् २ देव, सुर ।

शांडर, स स्त्री (स गट्टरी) भेषो, प्लहा ।

शाब्दी, स स्त्री. (स गार्त = गथ) शकट-ट, शकटिका, यान, वाहन, प्रवहण, रथ २ वाण्य शकटी, लोहाध्वजप्रो ।

—जोतना, कि स, शकटे अर्धं वृषभं युन् (प्रे) ।

—वान, स पु (हि गाटी) सारथि (पु), सूत, यत् (पु), शकटिक ।

शाड, वि (स) अधिक, प्रचुर, श्नु २ इड, प्रवृत् ३ गम्भीर, अगाध ४ दुःख, विकट ।

स पु, (स न) आपत्ति (स्त्री) ।

शाङ्गा, वि (स गाड) बठिन, स्कूल, सघात वत्, सु, महत् २ घन ३ (मिधादि) अभिश्र हृदय, इड ४ सबल ५ बठिन ।

स पु, स्थूलवस्त्रभेद ।

गाड वा कर्माई, सु, घोरपतिमोपाजित धनम् ।

गाड दिन सु, दुर्दिनानि, कुसमय ।

शाणपत्य, स पु (स) गणपति-गणेश, पूबक

भक्त २ गणेश पूजा मक्ति (स्त्री) ३ गणना यकत्वम् ।

शाणेश, स पु (सं) गणेश, भक्त पूजक ।

शाण, स पु, दे 'गात्र' ।

शाण्य, वि (सं) गय, गानाई ।

शाता, स पु (स-तु) गायक, गायन, ग्यु ।

शाती, स स्त्री (स गात्र >) गात्रीय, गल वस्त्रभेद ।

शात्र, स पु (स न), तनु नू (स्त्री), देह, काय, दे 'शरीर' २ अंग, अवयव ।

शाथक, स पु (स) गात् (पुं), गायक २ पुराणकथक । (गाथिवा स्त्री) ।

शाथ्या, स स्त्री (स) स्तुति-स्तुति (स्त्री) २ शोक, पथ २ पालिमिश्रितसस्त्रनमाषा ४ गीत ५ कथा, वृत्तान्त ६ पारसीकधर्म ग्रन्थभेद ।

शाद्, स स्त्री (सं गाथ >) दे 'तलछट' ।

शाध, वि (स) सुसोत्तरीय, गाभीर्यरहित, उत्तान २ न्यून, अल्प ।

म पु (स न) स्थान, २ गाभीर्यरह्यो जलप्रदेश ३ लिप्सा, लोम ४ वृत् ५ तल, अधोभाग ।

शाण, स पु (स न) गीत, गीतिवा, गेय २ सस्वर, पठन-उच्चारण, वीर्तनम् ।

—श्रिद्या, स स्त्री (स) सगीत, सगीत-वाद्य, शास्त्र विद्या ।

शाणा, कि अ (स गान) गै (स्वा प अ), सस्वर उच्चर (प्रे), समचुर आल् (स्वा प से) २ (पक्षियों का) वृत् (स्वा प से) ३ वर्ण (जु) ४ स्तु (अ प अ), जु (अ प से) ।

स पुं, गीत, गीति-तिवा (स्त्री) गान २ सस्वर, आल्पन-उच्चारणम् ।

शाने शाला म पु, गण-गु, गायक, गायन, गात् (पुं) । (-शाली=गायिका गात्री, गायत्री) ।

—बजाना, स पु, गानवादन, सगीत, सगीत विद्या, शास्त्रम् ।

शाठिल, वि (अ) अनवधान, अनवहित, प्रमादिन्, उपेक्षक ।

गाभ, स स्त्री (सं गर्भ) पशुगर्भ २ अरु, प्ररोह ।
 गामा, स पु (स गर्भ >) किस(श)ल्य ५, पल्लव-५, प्ररोह २ शस्यम् ।
 गाभिन, स स्त्री (म गर्भिणी) गभवता, (केवल पशुगर्भों के लिये) ।
 गामिनी, वि स्त्री (स) चलित्री, गत्री ।
 गामी, वि (स गामिन्) गृह धारु ।
 गाय, स स्त्री (स गौ स्त्री) धनु (स्त्री), मातृ (स्त्री), शृङ्गिणी, अध्या-दोग्धी, मद्रा, अनहुहा, अनहवाही, कल्याणी, पावनी, गौरी, सुरभि (स्त्री) २, सरल ऋजु मनुष्य ।
 गायक, स पु (स) दे 'गाने वाला' ।
 गायत्री, स स्त्री (स) वैदिक छन्दोभेद २ वैदिक मन्त्रविशेष (तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धामहि । धियो यो न प्रचोदयात् । ऋग ३।६।१०) सावित्री ३ गगा ४ तुर्गा ।
 गायन, स पु (स) दे 'गानेवाला' २ गान, सम्भारालपन २ गीत गीतिका ।
 गायव, वि (अ) लुप्त, अर्धरतिरो, हित, २ अदृष्ट, भाविन्, भविष्यत् ।
 —करमा, कि म, चुर (चु), तिरो धा (जु उ अ) ।
 —होमा, कि अ, तिरोभू, अट्ठव्य (वि) + भू, अन्तर तिरो, धा (कर्म) ।
 गायिका, स स्त्री (स) गायनी, गात्री ।
 गार, स पु (अ) गुहा, कदरा २ विवरम् ।
 गारत, वि (अ) नष्ट, फ्वस्त ।
 गारद, स स्त्री (अ गार्डे) रक्षक रक्षि, वर्ग गण २ अगारक्षक ३ रक्षा, गुप्ति (स्त्री) ।
 गारना, कि स, (स गालन >) दे 'निचोहना' ।
 गारा, स पु (हि गारना) कर्म, पङ्क, उत्त-उत्तर, मृद् (स्त्री)-मृत्तिका, लेप ।
 गारुड, म पु (स न) विषमत्र २ सुवर्ण ३ गरुडपुराणम् ।
 गारुडी, स पु (स हिन्) विषवैद्य, गारुडिक आणुलिक २ मोहिध (पु), कुहवकार ३ प्रतिविषविकेत् (पु) ।
 गार्गी, स स्त्री (स) काचिच्च महावादिनी विदुषी नारी (उपनिषद्) ।
 गार्डे, स पु (अ) रक्षक, रक्षिन् (पु) २ वाष्पशकटया रक्षक ।

गाडी—, स पु (अ) शरीर भग, रक्षक ।
 गार्डेन, स पु (अ) उद्यान, आराम ।
 —पार्टी, स स्त्री (अ) उद्यान-आराम, भोज ।
 गार्हपत्य, स पु (स न) गृहपति, पद प्रतिष्ठा ।
 —अग्नि, म पु (सं) यज्ञाग्निभेद ।
 गार्हमेध, स पु (स) पंचमहावशा (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ, भूतयज्ञ) ।
 गार्हस्थ्य, स पु (स न) गृहस्थाश्रम २ गृह स्थवृत्त्यानि ३ पञ्चमहावशा ।
 गाल, स पु (स गल) कपोल गड २ मुखम् ।
 —पर गाल चढ़ना, मु, पनीभू, आच्छै (भ्वा आ से) ।
 —पिचकना, मु कृशीभू, विशू क्षि (कर्म) ।
 —फुलाना, मु, कुप (दि प से), कुध् (दि प अ) ।
 —बजाना या मारना, मु, आत्मान श्लाप् विक्रथ (भ्वा आ से) ।
 गालव, म पु (स) गन्धमुनिपुत्र (विश्वा भिनशिष्यविशेष) २ लोच, लोभ ३ पाणि निपूर्ववर्ती वैदाकरणविशेष ।
 गाला, स पु (हि गाल) धूतकपांसपिंड ह, २ हिममूलम्, हिम-नुपार, पिण्डम् ३ चक्रीक्षिप्त मुष्टिमात्रमन्त्रन् ४ घ्रास, कवल ।
 गालिबन, कि वि (अ) समवन, प्राय, प्रायेण, प्रायश्च, स्यात्, किल, नाम (सत्र अन्व) ।
 गाली, स स्त्री (स गालि स्त्री) आक्रोश, अपवाद, अपभाषण, अधिक्षप, परबोक्ति (स्त्री) ।
 —खाना, कि, अ, आ-अधि क्षिप (कर्म), अप भाष अभिशाप्-अपवद् (कर्म) ।
 —द्वेना, कि स, अधि आ क्षिप (लृ प अ), अभिशाप् (भ्वा उ अ), अभिशाप-अपवद् (भ्वा प से) ।
 —गलीज, स स्त्री, परस्पर, अधिक्षेप-अपभा षण गालिदानम् ।
 गालीचा, स पु, दे 'गलीचा' ।
 गाव, सं पु (गौ, पु स्त्री, फा गाव) दे 'गाय' २ दे 'द्वैल' ।

- कुशी, स स्त्री (फा) गो, घात वष हत्या ।
 —घष, स स्त्री, छलेन अपहार उपयोग, प्रसनम् ।
 —घष कराना, कि स, कपटेन आ ममात् ४ ।
 —ज्वान, म स्त्री (फा) गोजिह्वा, अध पुष्पी, स्वरपत्री ।
 —तक्रिया, स पु (फा) महोपवर्ह, वृद्ध पधानम् ।
 —दी, म पु (फा + मं भी >) जट, मूर्त् ।
 —दुम, वि (फा) गोपुच्छाकार, शुद्धावृत्ति । मूच्याकार, धारावृत्ति ।
 गाहक, म पु (स ग्राहक) केतु, क्रयिन् २ गुणप्रदीष्ट (पु), गुण्ड ।
 गाह्वरी, स स्त्री (हि गाहक) ग्राहकत्व, कर्तृत्व २ गुणज्ञता ।
 गाहन, म पु (स न) वि-अव-गाहनम्, निमज्जन, स्नान २ विलोचनम् ।
 गाहना, कि स (स गाहन) अव वि गाह् (भ्वा आ से), निमज्ज् (तु प अ) २ मध्, मध् (भ्वा प से), विलोड् (मे) ० निस्तु पीठ्, पू (क् उ से) २ पादाभ्यां पीठ् (चु) -ष्ट् (क प से) ४ दे 'द्योचना' । म पु (स न) अव वि-गाहन विलोचन, मदन, निस्तुषोकरण अन्वेपणम् ।
 गिह्वरी, स स्त्री, दे 'रह्वरी' ।
 गिचचिच, गिचिरपिचिर, वि (अनु) अवाच्य, अयक्ताक्षर ० अस्पष्ट, अविशद ३ अक्षर, अन्त-यस्त ।
 गिज्ञा, स स्त्री (अ) राघ, भद्र, अश्र, भाजनम् ।
 गिटपिट, स स्त्री (अनु) अपार्थक निरर्थक व्यर्थ, बचन-शब्द ।
 —करना, कि स, आग्लभाषायां वद् (भ्वा प से) ।
 गिदगिद्वाना, कि अ (अनु) अतिमप्रतया अभि प्र अर्थे (चु आ से), कृपणतया ह्यद् तथा दाच (भ्वा उ से) ।
 गिदगिद्वहट, म स्त्री (हि गिटगिद्वाना) अतिमप्रार्थना, दीनवद् दाचनम् ।
 गिद्ध, म पु (स गृभ) दूरदर्शन, वज्रनुह, दाधाय ।

- गिनती, स स्त्री (हि गिनना) गणन, सरयान २ मर्या, गणना ३ अकमाला ।
 —के, मु, कतिचिद्, स्तोका ।
 गिनना, कि स (स गणन) गण्-मक्ल् (चु), परि, मर्या (अ प अ) २ मन् (दि आ अ), गण । स पु, गणन सरयान, सकलनम् ।
 गिननेयोग्य, वि, गणनीय, सख्येय ।
 गिनने वाञ्छा, वि, गणक, सरयात् ।
 गिना हुआ, वि, गणित, सरयात् ।
 दिन—, मु, यथाकथंचिद् काल या (प्रे वाप यति) ।
 गिनवाना, कि प्रे, व 'गिनना' के धातुओं गिनाना, के प्रे रूप ।
 गिनी, स स्त्री (अ) आग्लदेशीया स्वर्णमुद्रा, गिनी ।
 गिरगिट, स पु (देश अथवा स गल गति > ?) सरट्ट ड, कुक (कु) लार, म, प्रतिसूर्य यंक ।
 —की सरह रग बदलना, मु, सत्वर स्व-सिद्धतात् परिष्ट् (प्र) ।
 गिरजा, स पु (पुनै शमिजिया) खिरटधर्म मंदिरम् ।
 गिरना, कि अ (स गलन) नि अव पद् (भ्वा प से) रत्न-गल् (भ्वा प से), छत् (भ्वा आ से), च्यु (भ्वा आ अ) २ हि दू (कर्म), हस (भ्वा प से) ह्यल्य, ह या (अ प अ) ३ अधिकारात् अपष्ट् (कर्म), अवरह (भ्वा प अ), लचुभू । ४ युद्धे इन् (कर्म) ५ अक्षरमात् यद्-उया घट् (भ्वा आ से) अपवा भा-म पद् । स पु, पतन, च्यवन, गलन, अवरोहण, पद, भ्रम च्युति (स्त्री) ।
 —घाला, वि, पतवालु, पतन पात, उमुत्त, पातिन्, पातुक, पिपतिपु ।
 गिरा हुआ, वि, पतित, च्युत, छस्त, गलित ।
 गिरते पढने, मु, यथाकथंचिद्, येन येन प्रकारेण ।
 गिरप्रत, स स्त्री (फा) दे 'पकट' ।
 गिरप्रतार, वि (फा) गृहीत, धृग, षट्, निरुद्ध ।

- करना, कि सं, निरुष् (र उ अ),
आसिष (म्वा प से), ग्रह् (क् प से) ।
- होना, कि अ निग्रइ-शृ वष निरुष् (कर्म) ।
- गिरफ्तारी, सं स्त्री (फा) आनेष, वधन,
निग्रइण, धरण, निरोध ।
- गिरमित, सं पु (अ एघोमेट), दे 'इकरार
नामा' ।
- गिरमिटिया, स पु (अ एघोमेट >) प्रतिशा
वद अनुवद, कर्मकर अ मक ।
- गिरवाना, कि प्रे, व 'गिरना' के प्रे रूप ।
- गिरवी, वि (फा) आधो-न्यासी, कृत, निश्चित,
आहित ।
- रखना, कि स, -यस (दि प से), निश्चिप
(तु प अ), न्यासा आधी, -कृ ।
- दार, म पु (फा) आधि यास-वधक,
माहिन् (पु) -ग्राहक ।
- रखने वाला, स पु, निक्षेप्ट, आधातृ ।
- गिरह, स स्त्री (फा) दे 'गौठ' (१-३)
२ दे 'जेव' ३ दे 'उल्टबाजी' ४ गजारय
मानस्य षोडशाश ।
- बीधना, कि स, दे 'गौठ देना' ।
- कट, स पु, दे 'गौठक' ।
- दार, वि, दे 'गाठदार' ।
- गिरा, स स्त्री (स) वाकशक्ति गिर वाच
(स्त्री), बाणी २ सररवनी, भारता, वाग्देवी
३ जिह्वा, रसना ४ वचन, वक्ति. (स्त्री) ।
- गिराना, कि स, व 'गिरना' के प्रे रूप ।
- गिरानी, स स्त्री (फा) महापता, बहुमूल्यता
२ दुमिष्ठ, दुष्काल ३ गुरुत्व, भारवत्त्व
४ अजोर्णम् ।
- गिराघट, स स्त्री (हि गिरना) पतन, च्यवन
अवरोहण, अवमति (स्त्री) ।
- गिरि, सं पु (स) पर्वत, शैल, अचल, नग
२ परित्राजकोपाधि (पु) ।
- धर, सं पु (स) } श्रीकृष्णचन्द्र ।
—धारी, स पु (स धारिन्) }
- नन्दिनी, स स्त्री (स) पार्वती, उमा ।
- नाथ, सं पु (सं) शिव, शङ्कर ।
- राज, स पु (स) हिमालय २ गोवर्धन
पर्वत ।
- सुता, स स्त्री (स) पार्वती ।
- गिरिजा, स स्त्री (स) पार्वती, गौरी ।

- गिरिन्द्र, स पु (सं) महापर्वत २ हिमालय
३ शिव ।
- गिरी, स स्त्री (हि गरी) अष्टि (स्त्री),
अष्टोला, बीन, गर्भ, फल-बीज, गर्भ । (२-३)
दे 'गिरि' तथा 'गिरी' ।
- गिरीश, स पु (स) शिव, महेश २ हिमालय
३ कैलाश ४ महापर्वत ।
- गिरो, वि (फा) दे 'गिरवी' ।
- गिर्द, अय (फा) अभित, परित, सर्वत,
समन्तत, समाताद (सर्व अन्य) ।
- गिर्द— } अन्य (फा) दे 'गिर्द' ।
गिर्दागिर्द, }
- गिर्दाबर, स पु (फा) पर्यटक, परिभ्रामक ।
- गिल, स स्त्री (फा) मृत्ति (स्त्री), मृत्तिका,
शुदा, शूद (स्त्री) २ उष्ट-उष्ट, मृत्ति ।
- कार, स पु, मृत्तपक, लेपकर, सुधा
जीविन् ।
- कारी, स स्त्री मृत्पे ।
- गिलगिला, वि (फा गिल = गारा) पक्किल,
स्थान ।
- गिलट, सं पु (अ गिल्ड) सुवर्णरजन, हेम
च्छद २ गिलटारयो धातुविशेष ।
- करना, कि स, सुवर्णयति (ना धा),
इम, रसेन द्रवेण लिप (तु प अ) ।
- गिलटी, स स्त्री (स ग्रन्थि पु) मास, पिट,
अधिमाम २ वि, स्फोट टक, शोथ, श्वयु,
व्रण ण, मासाहुदम् ।
- गिलना, कि स (स गिरण) दे 'निगलना' ।
- गिलघिलाना, कि स (अनु) अल्पष्ट गद्गद
वाना वद (म्वा प से) ।
- गिलहरी, स स्त्री (स गिरि (स्त्री) =
सुहिया) काष्ठ-विडाल माज्जार, चरमपुच्छ,
वृक्षशादिका ।
- गिला ह्या, स पु (फा) दे 'उपालम्भ' ।
- गिलाई, गिलाय, स स्त्री, दे 'गिलहरी' ।
- गिलाफ, स पु (अ) उपधान-उपवर्ह, कोष श
२ तुला-तुलिका, कोष ३ कोष, पुट, आवेष्टन
४ असिकोष ।
- गिलास, स पु (अ ग्लास) फस, कुन्डल,
गल्बक, पानपात्रम् । २ बदराकार आल्ल
फलम् ।
- गिल्ली-छी, स स्त्री, दे 'गुली' ।

गिलो, गिलोय, स स्त्री (फा) गुह(ड)वी, अमृता, अमृत सोम, वती रता बहारी, रस यनी ।

गिलोला, स पु (फा गुलला) मृद, -वटिका गुदिलिजा ।

गिलौरी, स स्त्री (देश) दे 'पान का बीडा' ।

गिल्टी, स स्त्री दे 'गिल्टी' ।

गिल्लद, स पु (स गल >) गलगण्ड, गण्डु ।

गीत, स पु (स न) गीति (स्त्री), गीतिका, गान, गेय २ यशस (न), महिमन् (पु) ।

—गाना, सु, प्रसस (भ्वा प से) स्तु (अ प अ) ।

गीता, स स्त्री (स) श्रीमद्भगवद्गीता २ ज्ञान मयोपदेश २ वृत्तान ३ छन्दोभेद ।

गीती, स स्त्री (स) ३ दे 'गीत' २ छन्दो गीतिका, स स्त्री (स) १ भेद ।

गीदक, स पु (स गृध्र-लालची अथवा फा गाधो भीरु) कोटा, फेरु, शिवाडु, गोमायु (पु) श्व(स)गाल, जम्बु(द)क फेरव, श्वगधूर्यक, भूरिमाष, चच(चु)क १ वि, कानर, भीरु ।

—भवङ्गी, स स्त्री, विमीषिका ।

—घोलना, सु अपसङ्गुन नभू २ निर्जनीभू ।

गीदङ्गी, स स्त्री (हि गीदल) शिवा, श्याली, कोट्टी ।

गीध, स पु, दे 'गिद्ध' ।

गीला, वि (फा गिल = गारा) आर्द्र उष, उन्न डिभ्र स्तिमित, जलसिक्त । (गीली (स्त्री) = आर्द्रा इ) ।

—करना, कि स, उद् (क प से), हिद् (प्र), आर्द्राङ्क ।

—पन, स पु (हि गीला) आर्द्रता, उन्नता ।

गुचा, स पु (अ) मुकुल-ल, कोरक-व, बलिका २ विहार, ३ मगीतम् ।

गुज, स स्त्री (स गुज) गुजन, गुजिन, गुनगुनध्वनि (पु) शकार, कहरव । 'आन दध्वनि (पु) ३ दे 'गुजा' ४ दे 'गुज' ।

गुजन, स पु (स न), दे 'गुज(१)' ।

गुजना, कि अ (स गुजन), गुज, मधुर ध्वन्, अस्पष्ट निस्वन् (सर भ्वा प से) ।

गुजरना, कि अ, दे 'गुजना' २ दे 'गरजना' ।

गुजा, स स्त्री (स) रक्षिका, रक्षा, वन्या, २ गुजागीज इ ।

गुजाह्वश, स स्त्री (फा) अवकाश, स्थान, धारण ग्रहण, शक्ति (स्त्री) सामर्थ्य २ लाभ ३ योग्यता ।

गुजान, वि (फा) पन निविच, गाढ ।

गुजायमान, वि (स गुज् >) गुजत्, मधुर ध्वनत् (शत्रत्) ।

गुजार, स पु दे 'गुज(१)' ।

गुजारना, कि अ, दे 'गुजना' ।

गुडा, वि (स गुण्डक = मैला >) दुर्दत्त, दुराचारिन् (पु), व्यसनिन्, लपट २ रूप गवित, छेक, बेवाभिमानीन् । (गुडी स्त्री) ।

—पन, स पु, दुराचार, स्वैरिता, रपन्ता ।

गुंधना, कि अ (हि गूधना) ग्रन्थ-सृष्टम् सूत्र् पु (पु) फ (कर्म) ।

गुंधवाना, कि प्रे, व 'गूधना' के प्रे रूप ।

गुंधन, कि अ (स गुध् = शीडा करना >) (इस्ताभ्या) मृद सपीड् (कर्म) २ दे 'गुंधना' ।

गुंधवाना, कि प्रे, व 'गूधना' के प्रे रूप ।

गुंधार्द, गुंधावद, स स्त्री (हि गूधना) १ करान्या मदन २ मर्दनवेतन ३ प्रयन ४ प्रयन, वृत्ति (स्त्री)-भृत्या ।

गुफ, स पु (स) सकुलता, व्यतिकर, मकर २ गु-छ च्छक ३ रमधु (न), ओष्ठलोमन् (न) ४ कुर्वन् ।

गुफन, स पु (स न) समयनम्, सदभंगम्, ससूत्रगम् ।

गुफित, वि (स) स परि आदिल्ट, स-आ सक्त २ प्रथित, सूत्रित ३ उत, उत ।

गुवज, स पु दे 'गुवद' ।

गुवद, स पु (फा) गोल, पटल छदि (स्त्री) ।

गुह्या, स पु तथा स्त्री (हि गोहन साय >) १ सहचर, सगिन् (पु), सति (पु) २ सहचरी, सती ।

गुगुल, स (स) गुगुलु, कालविर्पास, देवधूप, रुद्राधक ।

गुघ्नी, स स्त्री (अनु) गुली-द-कीटार्थ भूविबर, *लानि (स्त्री) ।

गुच्छ गुच्छक, स पु (स) म्बव, स्तवकः शरस सक २ मयूरगुच्छ ३ द्राक्षिणद् यद्विहार ।

गुच्छा, स पु (स गुच्छ दे) २ आभूषण भेद ।
 गुच्छेदार, वि (ह + फा) गुच्छिन्, सगुच्छ ।
 गुच्छी, स स्त्री (सं गुच्छ >) अरिष्ट, माल्य, गुच्छफल २ व्यजनोपकुपुष्पभेद, *गुच्छी ।
 गुञ्जर, सं पु (फा) उप अभि-गम, उपसर्पण प्रवेश २ निर्गम, गति (स्त्री) ३ निर्वाह, जीवनम् ।
 —ज्ञाना, मु, दे 'मरना' ।
 गुञ्जरना, क्रि अ (फा गुजर) इ या (अ प अ), गम् २ अति-व्यति, इ अति कम् (भ्वा प से) ३ भू, घट (भ्वा आ से) ४ वृ (तु आ अ), प्राणान् मुच (तु उ अ) ।
 गुजरात, स पु (स गुजरात्) भारत वर्षस्य प्रान्तविशेष, गुजरात्प्रान्त ।
 गुजराती, वि (हि गुजरात) गुर्जरराष्ट्रीय, गुर्जरराष्ट्र, वासिन-सवधिन् २ गुर्जरराष्ट्रीय भाषा ।
 गुञ्जरान, स पु (फा गुजर) निर्वाह, कालक्षप ।
 गुञ्जरता, वि (फा) -व्यतीत, गत, अतिक्रात ।
 गुञ्जरना, क्रि स (हि गुजरना) गम् या (प्र) ।
 गुञ्जारा, स पु (फा) निर्वाह, कालक्षेप २ जीवन, प्राणधारण ३ वृत्ति-श्रुति (स्त्री) ४ तार्य, तरपण्यम् ।
 गुञ्जारिश, स स्त्री (फा) निवेदन, प्रार्थना ।
 गुटकना, क्रि अ (अनु) कपोतवद कृज (भ्वा प से) २ दे 'निगलना' ।
 गुटका, म पु (मं गुटिका >) लघु, मय्य पुस्तकम् २ दे 'गुटिका' ।
 गुटरगुं, स स्त्री (अनु) कपोतकूजिन, पारावनरुनम् ।
 गुटिका, स स्त्री (स) गुल्फिका, वटिका, वटि (स्त्री) ।
 गुट्ट, स पु (स गोष्ठ >) समूह, दलम् ।
 गुट्टा, स प (देश) खर्व, वामन २ दे 'गोटी' ।
 गुट्टल, वि (हि गुट्टली) स्थूलादि, सुन वद २ नदमति, जळ ३ अष्टौलाकार । स पु ग्रथि (पु) २ मासपिंड-वम् ।

गुट्टली, सं स्त्री (स गुट्टिका >) अष्टि (स्त्री), अष्टौला, फलबीजम् ।
 गुट्टया, स पु (स गुट्टाय) ।
 गुट्ट, स पु (स) शकुसार, रसज, खडज, मधुर, मोदक, शिशुप्रिय, गुल, स्वादु ।
 गुट्टगुट्ट, स स्त्री (अनु) गुट्टगुट्ट, शब्द ध्वनि (पु) धूमपानयंत्रस्य ।
 गुट्टगुट्टाना, क्रि अ (अनु) गुट्टगुट्टायते (ना था) गुट्टगुट्ट, ध्वनि शब्द कृ ।
 गुट्टगुट्टी, स स्त्री (हि गुट्टगुट्टाना) लघु धूमपानयंत्रम् ।
 गुट्टच, स स्त्री (स गुट्टची) दे 'गिलो' ।
 गुट्टधनिया, गुट्टधानी, (स गुट्टधाना स्त्री वटु) ।
 गुट्टाकृ-न्व, स पु (म गुट्ट + तमासु >) गुट्टतमासु ।
 गुट्टाकश, स पु (स) शिव २ अर्जुन ।
 गुट्टिया, स स्त्री (स गुट्टिका) पुत्रलिका, पुत्रिका, कुन्दी, पानालिका ।
 गुट्टियों का खेल, मु, मुकर कार्यम् ।
 गुट्टच, स स्त्री, दे 'गिलो' ।
 गुट्टची, स स्त्री (स) दे 'गिलो' ।
 गुट्टु, स पु (स गुट्ट) गुट्टक पुत्रक, गुट्टल ।
 गुट्टी, स स्त्री (गुट्टिका >) विहासदृश पत्रक्रीडनक, चित्रमाम २ दे 'गुट्टिया' ।
 गुण, स पु (स) धर्म, स्वभाव, विशेष २ सत्त्व, रजस् (न), तमस् (न), गुण त्रयी ३ रूपरसगंधस्पर्शादिय द्रव्यधर्मा (वै) ४ चातुर्य, दक्षता ५ प्रभाव, फल ६ शील, सत्स्वभाव ७ लक्षण, विशेषता ८ वि' इति सरथा ९ सधिविश्रयानासनसक्षयद्वैधीभावा (राजनीति) १० प्रवृत्ति (स्त्री) (छान्दोग्य) ११ 'अ, ए, ओ'-वर्णा (-या) १२ सूत्र, रज्जु (स्त्री) १३ उया, मीवी १४ मायु यौन प्रसादा (काव्य) १५ आकृतिस्त्वक् प्रत्यय (उ द्विगुण इ) ।
 —कर, वि (स) हितकर, उपयोगिन् (गुण करी स्त्री) ।
 —कारक, वि (स) हित, उपकर्तृ । (कारिका स्त्री) ।

—कारी, वि (स, रिच्) उपयुक्त, उपकारिन्
(-कारिणी स्त्री) ।

—ग्वान, वि, (स खानी) बहुगुण, उपेत
अन्वित सपञ्च ।

—गान, स पु (स न) स्तुति नृति (स्त्री)
प्रशसा ।

—गौरी, स स्त्री (सं) पतिव्रता, सती,
एकपत्नी = सधवा, समर्तुका ।

—ग्राहक, वि (स) गुणवेदिन्, गुणग्राहिन्
= दे 'गुणज्ञ' ।

—दायक, वि (स) दे 'गुणकर' ।

—दोष, स पु (स) गुणावगुणौ दानि
लाभौ (द्वि) ।

—निधान, वि (स) गुण, राशि निधि

—सागर, वि (स) (पु) ।

—हीन, वि (स) अगुण, निर्गुण, सामान्य,
साधारण ।

गुणक, म पु (स) गुणकाक ।

गुणज्ञ, वि (स) गुण ग्राहिन् ग्राहक, परमज्ञ ।

गुणज्ञता, स स्त्री (म) गुणग्राहकत्व, परमज्ञता ।

गुणन, स पु (स न) आधान, हनन,
अभ्यास २ गणन, भाख्यानम् ।

गुणमय, वि (स) दे० 'गुणी'

गुणवत, वि (स वत्) गुण, मदी वती स्त्री ।

गुणवान, वि (स वत्) गुण, मदी वती स्त्री ।

गुणाक, स पु (स) गुण्य गुणवाक ।

गुणा, स पु (स गुण) (समासात् त में,
व दो गुणा द्विगुण इ) दे 'गुणन' ।

—करना, गुणयति (ना धा), आनि, हन्
(अ प अ अथवा में घातयति), पूर, (चु) ।

गुणातीत, वि (स) सत्त्वादिगुणप्रभावशून्य,
निर्लभ, शुद्ध । स पु, ईश्वर ।

गुणानुवाद, म पु (स) प्रशसा, स्तुति (स्त्री) ।

गुणित, वि (स) गुणीकृत, आहत, पूरित ।

गुणी, वि (स गुणिन्) गुणवत्, गुण, सपञ्च
उपत-आद्य-युक्त निधि सागर । २ दक्ष, कुशल
३ पुण्य, शील आत्मन् ।

गुणीभूत, वि (स) मुख्यार्थरहित २ गौणी
भूत ।

—व्यय, स पु (स न) अप्रधानव्ययार्थ
वाक्यभेद ।

गुणेश्वर, सं पु (सं) परमेश्वर २ चित्रकूट
पर्वत ।

गुण्य, स पु (स) गुण्याक, गुणाक ।

गुण्यमगुण्या, स पु (हि गुयना) सधित्वा,
सकुलता २ बाहु बाहुवाहवि, युक्त, ददम् ।

गुय्यी, स स्त्री (हि गुयना) दे 'उल्लङ्घन' ।

गुयना, क्रि अ, (स गुण्=परिवेष्टन अथवा
ग्रथ्) (वेणीरूपेण-) ग्रथ् (कर्म), वेणीकृ
(कर्म) । २ गु(र्)ष्ट सद्यम् (कर्म)-स
ग्रथ (कर्म) ३ बाहुवाहवि युथ (दि आ अ) ।

गुयवाना, क्रि प्रे, व 'गुयना' के प्रे ह्य ।

गुथ(थु)र्वी, वि (हि गुथना >) (वेणी
रूपेण) प्रायिन युक्ति ।

गुद, स स्त्री (स न) अपान, पायु
(पु) गुह्यम् ।

—अक्षर, —कील, स पु (स) दे 'बवानोर' ।

—ग्रह, स पु (स) दे 'कञ्ज' ।

गुदगुदा, वि (हि गुदा) मानल, मेरुरिन्
३ गुद, सुरस्पर्श, कोमल ।

गुदगुदाना, क्रि स (हि गुदगुदा) कुत
कृतयति कृदयति (ना धा), कृद् नन् (प्रे),
मनोविनोदाय क्षुम् (प्रे) ।

गुदगुदाहट, गुदगुदी, स स्त्री (हि गुद
गुदाना) कुतकृत कृदिति (स्त्री) ।

गुदकी, म स्त्री (हि गुयना) वधा,
स्थूलकण्ठ, ३ जीर्णशीर्ण वस्त्रम् ।

—मैं लाल, सु, चोरे रत्न (सु) ।

—का लाल, सु, चोरे रत्न (सु) ।

गुदा, स स्त्री दे 'गुद' ।

गुदाज्ञ वि (फा) गुद, कोमल, सुरस्पर्श ।

—दिल, वि हृदयदायक, मासिक मर्म
स्पर्शिन ।

गुनगुना, वि (अनु) कोष्ण, कटुणा ककोष्ण
२ नासनादिन् ।

गुनगुनावा, क्रि, अ (अनु) गुणगुणावते
(ना धा) २ नासिकया वद (भ्वा प से)
३ अस्पृष्ट मै (भ्वा प अ) ४ असतोषाद
परिदेव् (लु वा से) ५ दे 'गुजना' ।

गुन(ना)ह्वार, वि (फा) पापिन्, पातकिन
२ अपराधिन्, दोषिन् ।

गुना, स पु, दे 'गुण' ।

गुनाह, स पु (फा) पाप २ अपराध ।

गुनिया, सं पु (सं कोण >) कौणिक, साधन, लक्षकोपकरणभेद (१) ।
 गुपबुप, कि वि (स गुप्त+बुप>) निमूत, झगूढ, रहसि, मौन (सद अन्य) । स स्त्री, (१-३) मिष्टान्न-वाल्मीक्य-त्रोचनक, भेद ।
 गुप्त, वि (स) गूढ, निमृत्, निलीन, प्रच्छन्न, अव्यक्त, अप्रकट २ दुर्बोध ३ रक्षित ४ अदृश्य । स पु, वेदयोपाधि २ प्राचीन राजवदाविशेष ।
 —होना, कि अ, अतर्भा निली (कर्म) ।
 —चर, स पु (स) अपसरं, च(वा)र, प्रस्थि ।
 —दान, सं पु (स न) दातनामनिर्देश विना दान ।
 गुप्ता, स स्त्री (स) परकीयाभेद २ उप-पत्नी-भार्या ३ वर्णसूत्रयोपाधि (पु), गुप्त ।
 गुप्ति, स स्त्री (स) गूह्य, गोपन, मवरण, प्रच्छादन २ रक्षण ३ कारागार ४ गुहा ५ यमा (योग) ।
 गुप्ती, स स्त्री (स गुप्त>) गुप्तासि (पु), खन्यति (स्त्री), *गुप्ति (स्त्री) ।
 गुफा, स स्त्री (स गुहा) कदर-रा, गहर, गरी, विवर-रम् ।
 गुफ्तगू, स स्त्री (फा) बान्नालाप, आलाप, सलाप ।
 गुडरैला, स पु (हि गोबर) गोमयल, गोमयकीर्ण ।
 गुघार, स पु (अ) धूलि (स्त्री), २ प्रच्छन्न वैरादिकम् ।
 गुघ्वारा, स पु (हि दुग्धा) विमान, स व्योम-यान २ विमानाकार, अभिक्रीडनकम् ।
 गुप्त, वि (फा) दुप्त, भ्रष्ट, नष्ट, व्युत्त २ गुप्त, छन्न ३ अविल्याप्त ।
 —करना, कि सं, विद्युत्विहा परिहा (कर्म, तृतीया वे साय) २ दे 'छियाना' ।
 —होना, कि अ, नस (दि प वे), प्रचर (म्वा अ से दि प से) ।
 —नाम, वि (फा) अप्रसिद्ध, अविकित ।
 —राह, वि (फा) प्रभष्ट नष्ट, पथ, विपथ उन्मार्ग, गामिन्, पथभ्रष्ट, भ्रान्त ।
 —राही, स स्त्री (फा) भ्रान्ति (स्त्री), भ्रम २ कुमार्ग ।

गुमटी, सं स्त्री (फा गुबद) (सोपानादीनां) लच्छदि- (स्त्री) ।
 गुमहा, सं पु (फा गुबद) गह शोष, शोफ ।
 गुमरी, सं स्त्री, दे 'गुमरी' ।
 गुमान, सं पु (फा) अनुमान २ दर्प ।
 गुमानी, वि (फा) दृप्त, गदित, सदर्थ ।
 गुमास्ता, सं पु (फा) प्रतिनिधि (पु) प्रतिहस्त रत्नक, नियोगिन् (पु), नियुक्त, प्रतिपुरुष ।
 —गीरी, स स्त्री (फा) नियोगि प्रतिनिधि, पद कार्य २ प्रतिनिध्य, नियुक्तत्वम् ।
 गुम्मट, स पु (फा गुबद दे) ।
 गुर, स पु (से गुरुमत्र >) सूत्र, मूलमन्त्र, मार, सक्रियविधि (पु) ।
 गुरगा, स पु (स उरग) शिष्य २ सेवक ३ गुप्त, चर ।
 गुरगाधी, दे 'गुरावी' ।
 गुरिया, स स्त्री (स गुलिया) गुली, गुटका ।
 गुरु, स पु (स) इहस्पति, देवगुरु २ बृहस्पतिवद् ३ पुण्यनक्षत्र ४ मन्त्रोपदेशक ५ आचार्य ६ अध्यापक, शिक्षक ७ पुरोहित ८ दिमात्रिकवर्ण (हन्द्) ९ बन् विधादिपु स्वतोऽधिक ।
 वि, बृहद्, महत्, विद्वान्, विपुल विरतीर्ण, २ भातरव ३ दुर्जित, दुष्पक्ष, गरिष्ठ ४ पूज्य, मान्य ।
 —आई, स स्त्री, गुरता, गुरुधर्म २ गुरुकृत्, भवोपदेश २ धूर्तता ।
 —कुल, स पु (स न) आचार्यकुल, विद्यालय, शिक्षालय ।
 —घटाल, स पु, धूर्त वचक शठ क्लिप्त, राज ।
 —जन, स पु (स) पूज्य बृहद्, जन ।
 —दक्षिणा, स स्त्री (स) आचार्योपायनम् ।
 —द्वारा, स पु (स गुरुद्वार >) दिव्यमत मंदिर, उरुद्वारम् ।
 —भाई, स पु (—+हि भाई) समीप्यं, भगुरव, सध, पाठिन्-अध्यापिन् ।
 —मुत्त, वि (म >) शीघ्रित ।
 —मुखी, स स्त्री लिपिविशेष, गुरुमुखी ।
 —वार, सं पु (सं) गुरु-बृहस्पति, वार-वासर ।

गुरुच, स स्त्री, दे 'गिलो' ।
 गुरत्तर, वि (स) महत्तर, आवदयकतर
 २ भारवत्तर, गरीयस ३ पूव्यतर ।
 गुरुता, स स्त्री (स) । भार
 गुरुच, स पु (स न) । तोल, मान २ महत्ता,
 गौरव, गरिमन् (पु) ।
 —आकर्षण स पु (म न) भारवत्त्व, आकृष्टि
 पातुक्त्वम् ।
 गुरुवाहन, स स्त्री (म गुरु >) गुरु, आचार्य
 पत्नी आचार्यानी, गुर्वी २ उपाध्यायानी,
 उपाध्यायी ३ उपदेशिका, अध्यापिका,
 शिक्षिका ।
 गुरु, स पु, दे 'गुरु' ।
 गुर्गा, स पु (स गुरुग) शिष्य, अनुगामिन्
 २ सेवक, अनुग ३ गुप्तचर ।
 गुर्गावी, स स्त्री (फा) पादू (स्त्री),
 पादुका ।
 गुर्ज, स पु (फा) गदा, शस्त्रभेद ।
 गुर्जर, सं पु (स) गुर्जराष्ट्र, गुर्जरप्रात
 २ गुर्जरवासिन् ३ जातिविशेष ।
 गुर्दा, स पु (फा) बुक का क, बुक का क
 गुड, गुद, वृक्ष । २ शौर्य, साहसम् ।
 —का दर्द, स पु शुकशूलम्
 —की पथरी, स स्त्री वृक्षारमरी ।
 गुर्गीना, कि अ (अनु) गुर्गुरायते (ना धा),
 गुर्गुध्वनि कृ २ गर्ज (भ्वा प से) ।
 गुर्विणी, स स्त्री (स) दे 'गर्विणी' ।
 गुर्वी, स स्त्री (स) दे 'गर्विणी' २ गुरुपत्नी,
 आचार्यानी ३ गौरवयुक्ता ४ गायत्री ।
 गुल, स पु (फा) ओट्ट-जपा जवा, पुष्प
 २ पुष्प ३ दग्धवर्ती ति (स्त्री) ४ शुक्ल,
 नेत्ररोगभेद ५ तसलोहाइ ।
 —अभ्यास, स पु, कृष्ण कलि (स्त्री)-
 बेलि (स्त्री) ।
 —कंद, स पु (फा) •फुल-जपा, खड ।
 —कारी, स स्त्री (फा) फुल काई, कर्मन् ।
 —तुरी, स पु सिद्ध, आरुच्य नाथ इश्वर ।
 —दास्ता, स पु (फा) फुलशरस, कुसुम
 पुप, गुच्छ स्तम्भक ।
 —दान, स पु (फा) फुल, धानधानी ।
 —दुपहरिया, स पु, सूर्यभक्तक, भवैकेश्वर,
 माध्याह्निक, ब-पुजीवक ।

—परी, स स्त्री सुपुष्पा, शखोदरी, बर्हपुष्पा ।
 —चदन, स पु (फा) कौशेयवस्त्रभेद ।
 —चूटा, स पु, दे 'गुल्कारी' ।
 —मखमल, स पु, स्थूलपुष्पा, झण्डक ।
 —करना, सु, दे 'बुझना' ।
 —होना, सु, दे 'बुझना' ।
 —गिलना, सु, अतकिन् अद्भुत पद् (भ्वा
 आ से) अथवा आ-स पत् (भ्वा प से)
 २ उपद्रव उत्पद् (दि आ अ) ।
 —खिलाना, सु, व 'गुलखिलना' के प्रे रूप ।
 गल, स पु (फा) कोलाइल, फलकल
 ध्वनि (पु) ।
 —गपाका, स पु, दे 'गुल' ।
 गुलगुला, वि (हि गुदगुदा) कोमल,
 गुदल ।
 गुलगुला, स पु (हि गोल + गोल) गोल
 गोल मिष्टान्न पक्वान्न भेद २ गड, कणपट्टी ।
 गुलचला, स पु (हि गोल + चलाना)
 दे 'तोपची' ।
 गुलखुरा, स पु (फा गुल + अनु) आनन्द,
 भोद, २ विलास, भोग ।
 —(रं) उद्याना, सु, स्वच्छन्द रम्
 (भ्वा आ अ) ।
 गुलझार, स पु (फा) उद्यान, वाटिका ।
 वि, शोभन, अभिराम ।
 गुलझट टी बी, स स्त्री (म गोल + झट =
 उलझना) सूत्रसंश्लेष, •गोलझटम् । २ वसी
 कि (स्त्री) ।
 गुलझन, स पु (फा) उद्यान, वाटिका ।
 गुलाब, स (फा) चारुकेमरा, लाडुपुष्पा,
 तरुणी, प्रतपत्री, भृङ्गेष्टा, गंधारुवा, जवा,
 जवा २ जपाजलम् ।
 —जल, स पु, जपा-जवा, जलम् ।
 —जामुन, स पु, विलाट, जडु (न)-जावव ।
 २ वृक्षभेद । ३ तत्पलम् ।
 —दान, स स्त्री, •जपाधानी ।
 गुलाबी, वि (फा) पाटल, जपावर्ण २ लपु,
 अत्यन्त ३ कौशिक, आइ । स स्त्री, (१-३)
 पानपात्र पग मिष्टान्न, भेद । ४ जपादग ।
 गुलाम, स पु (अ) कीन, दास २ सेवक
 ३ दासाकारयुत क्रीडापत्र, दास ।

गुलामी, सं स्त्री (अ गुलाम) दासत्व
२ सेवा ३ परतंत्रता ।

गुलाल, स पु } (फा गुलाल) दे 'अदौर' ।
गुलाली, वि }

गुलिस्ताँ, स पु (फा) उद्यान, उपवनम् ।

गुल्लबद, स पु (फा) गल्लबध २ ध्रैवेय-यकम् ।

गुले(लै)ल, स स्त्री (फा गिल्ल) वटिका
क्षेपणी, गुलिकास ।

गुलेला, स पु (फा गुल्ला) गुलिका, वटिका
२ दे 'गुनल' ।

गुल्फ, म पु (स) घुटिक, घुट घुप्य,
चरणप्रथि (पु) ।

गुल्म, म पु (स) उदररोगभेद २ सेना
विभागभेद (- ९ हाथी ९ रथ, २७ घोडा
४५ पैदल) ३ व्रीहा ४ नाटो धमनी शोथ,
४ रथम्, क्षुप गुल्म-मन् ।

गुल्मी वि (स भिन्) गुल्मरोगपीडित ।

गुल्ला, स पु (म गोल >, दे 'गुलेला' ।

गुल्लाहा, स पु (फा गुलेला) रक्तपुष्प
भेद, लालाफुलम् ।

गुल्ली, स स्त्री (स गुली >) फल, गर्भ-बीज,
२ गुलादहक्रीडाया लघुकाष्ठसण्ड, *गुली,
बीग ३ शागणी ४ सारिकापक्षिभेद,
५ इक्षुसण्ड ६ अश्व, पादाक ।

गुसल, स पु, दे 'गुस्त' ।

गुसाई, स पु दे 'गोस्वामा' ।

गुस्ताइ, वि (फा) भृष्ट, वियात अदिष्ट ।

गुस्ताइरी, स स्त्री (फा) धार्ज, वैचार्य,
अदिष्टता ।

—करना, क्रि अ, धाटवी इउ (प्रे) अदिष्ट
वत् व्यवह (म्वा उ अ) ।

गुस्त, स पु (अ) खान, अवगाहनम् ।

—करना, क्रि अ, ख (अ प अ) ।

—ज्ञाना, स पु (अ + फा) खानागार,
अवगाहनत्वानम् ।

गुस्ता, स पु (अ) कोप रोष, द 'कोष' ।

—आना, करना चढ़ना या होना, क्रि अ,
रु-रूप (दि प से), कु- (दि प अ) ।

—उतरना, मु, कोष शम् (दि प से,
शाम्यति) ।

गुस्तीला, गुस्मैल, वि (अ गुस्ता) कोपन,
क्रोधन, रोषण, अमर्षण ।

गुह^१, स पु (सं) कार्तिकेय २ अश्व
३ शुरा ४ रागसुहृद (पु) ५ हृदयम् ।

गुह^२, स पु (स गूध) दे 'गूह' ।

गुहोजनी, स स्त्री (स गुध + अजन >)
पक्ष्म, पिटिका-चचिका ।

गुहा, स स्त्री (स) दे 'गुफा' ।

गुहार, स स्त्री, दे 'गोहार' ।

गुहिन, सं पु (स न) वन, काननम्,
अरण्यम् ।

गुद्य, वि (स) गुप्त, अतद्विह २ गोपनीय,
सवरणीय ३ दुर्बोध गूढ ।

स पु, छल २ कूर्म ३ गुहाग ४ विष्णु
५ शिव ।

गुद्यक, स पु (स) यद्यभेद ।

—पति, स पु (स) कुवेर ।

गूंगा, वि (फा गुग) मूक, वाग् रहित हीन,
अवाच ।

गूग का गुड मु, अवर्षवाता ।

गूज, स स्त्री (स गुज) दे 'गुज'(१) २ प्रति,
नाद ध्वनि (पु) -शब्द -रव मर्न श्रुति
(स्त्री) ३ अनु रसित-नाद ।

गूजना, क्रि अ (स गुजन) दे 'गुजना'
२ प्रति, नद ध्वन् स्वन् रस (सव म्वा प से)
३ अनु, नद-रम, प्रतिशब्द कृ इ ।

गूयना, क्रि स (स ग्रथन) वेणारूपेण ग्रथ
(क प से) वेणी कृ २ सग्रथ, सट्टम्
(जु उ से), गु(गु/रु-ट्टम् (त्र प से),
सूत्र (जु) ३ सिव (दि प से), (सूच्या)
सक्षिप (प्रे) ।

गूयना, क्रि स (स गोभन क्रीडा करना >)
(जलन मिश्रयित्वा इस्ताम्या) मृद (क प
से अथवा प्रे) -सम्पीड (जु) २ ३ दे
'गूयना' (१, २) ।

गूग(गु)ल, स पु, दे 'गुगुल' ।

गूजर, स पु (स गुजर) गोप, गोपाल,
आभीर २ जानिविदेश ।

गूजरी, स स्त्री (स गुजरी) ऽपी, गोपपत्नी
२ चरणाभरणभेद ३ रागिणीविद्युष ।

गूड, वि (स) दुर्बोध, कठिन २ गुप्त, प्रच्छन्न
३ गभीर, सारगमित ।

—पुरुष, स पु (म) दे 'गुप्तवर'

गूढता, सं स्त्री (सं) दुर्बोधता, गम्भीरता, प्रच्छन्नता ।

गूढाग, स पु (सं) कच्छप, कमठ, कूर्म ।

गूढाग्नि, स पु (सं) अहि, सर्प, उरग, पन्नग ।

गूथ स पु (म पु न) दे 'गूह' ।

गूथना, कि स, दे 'गूथना' ।

गूढह स पु (हि गूथना) कर्पट, नीम वसन २ अवस्वर मल ३ तूला, तूलिका ।

गूढही, न स्त्री (हि गूढ) (मिथुकस्य) तूला २ पोडूली लिका ।

गूढा, स पु (सं गौर) मस्तिष्क, गौर, मन्वस्वरोह २ फल, सार मज्जा वसा ३ बीज, सार-गम ४ सारमाग ।

गूथना, कि स दे 'गूथना' ।

गूढ, स स्त्री (स गुण) नौकर्णरवजु (स्त्री) ।

गूमडा, म पु (सं गुम् म >) दि, स्फोट, पिन्व २ शाय शोक ।

गूमड़ी स स्त्री (हि गूमडा) पिदिवा धुद्र त्रण रक्तवती ।

गूढ, स पु, उदुम्बर, यथाग, जनुफल, हेमडुग्धक पुपशय ।

—का क्रीडा, सु कूपमदृक् अनुभवहीन ।

—का फूल, सु, दुर्लभवस्तु (न) ।

गूह, म पु (सं गूथ थ) पुरीष, मल उच्चार, विद्या, अप(व)स्कर, विष् (स्त्री) ।

गूध स पु (सं) दे 'गिड' ।

गूढ, स पु (सं न) गृहा (पु बटु) गह, ह, वेदमन् सदमन् (न) निवेत तन, सदन भवन अ(आ)भार, मंदिर, निन्व, आर्य, शाला, स-आ ति अधि, वास, आवमव, उद्वसित, निकाल्य २ परिवार, कुटुम्ब, गृह ।

—पति, स पु (सं) गृहिन्, गेहिन्, कुडुम्बिन् २ कुडुड ३ अग्नि ।

—पत्नी, स स्त्री (म) शालिना, गृहिणी, गहिनी, कुडुम्बिनी ।

—पुत्र, स पु (सं न) जनप्रकीर्ष, प्रहृति शोभ, २ कौटुम्बिकत्व ।

—लक्ष्मी, स स्त्री (म) सुगृहिणी, सुशील गृहपती ।

गूहस्थ, स पु (सं) गूहमेधिन्, ज्येष्ठा अग्निन्, दे 'गूहपति' ।

—आश्रम, स पु (सं) वैवाहिकनीवनं २ द्विनीयाश्रम ।

गूहस्थी, स स्त्री (सं गूहस्थ >) गूहस्थ, आश्रम कर्तव्यानि (न बहु) २ गूहव्यवस्था ३ कुटुम्ब, परिवार ४ गूह, उपस्कार सामग्री ५ गूहवाचकुशलता ।

गृहिणी, स स्त्री (सं) शालिनी, दे 'गृह पती' ।

गृही, स पु (सं गृहिन्) गृहस्थ, दे 'गृहपति' ।

गुंडली, स स्त्री (सं कुडली >) मटल आवेष्टन-यावतनम् ।

—मारना, कि स, मल्ली पुटी वल्ली, ह-यावृत् (प्रे) ।

गुंडुरी, स स्त्री, दे 'इडुरी' ।

गुँद स पु (सं गुँद) कडुक, गेण्डु (इ) व, गान्ध, गोल लाल २ मडल, बहुल, गोल लम् ।

—बच्चा, स पु, गुँदकपट्ट, पट्टेन्दुगम्, आग्नेलीयक्रीडाभेद ।

गुँदुआ, म पु (सं गुँदु >) (गोल) उपवह उपधातम् ।

गुँदा, स पु (सं गुँदु) वृद्ध, बहुक गोलक २ पुपभेद ।

गुरना, कि स, दे 'गिराना' दग 'उडलना' ।

गुरु, स स्त्री (सं गवेरु) गैरिक रक्तगिरि, भातु (पु) रत्नोपल, गिरिन, गिरि-लोहित, गुस्तिरा, वनालकम् ।

गुर्या, वि (हि गह) गवेररग्नित २ गिरिनवर्ण ।

गुह, स पु (सं पु न) दे 'गूह' ।

गुहान, स पु (हि गूह) गोधूम, पणिभेद ।

गुहूँ, म पु (सं गोधूम) सुमनम (पु), बहुदुग्ध, यवन, श्रेष्ठभोजन, सिताशिक, निस्तुष, क्षीरिन्, आपू, रसान २ नागरग ।

गुहूँआ, वि (हि गूह) गोधूम, वर्णरग, २ गोधूममय, गोधूम(समास में) २ घाम भेद ।

गैंडा, स पु (स गड) गडक, खड्गिन्, वत्रचर्मेन् (पु), गुग-कोडी, गुखा, वार्मी (श्री) गस, खड्गमृग ।

गैन-ती, स स्त्री (देश) दे 'कुदाल' ।

गैज़, स पु (अ) कति कोप कोष-रोष ।

गैंद, स पु (अ) परोक्ष तिरो हिन, पदार्थ । वि गुप्त, तिरोहित ।

—गैं, वि, परोक्षविद, सर्वज्ञ

गेयर, म पु (स गजवर) गजोत्तम, त्रिन्द्र करीन्द्र ।

गैंची, वि (अ गैंद) उप्त, प्रच्छन्न, अज्ञान ।

गैया म स्त्री दे 'गाय' ।

गैर, वि (०) अय इतर, पर, अपर २ भिन्न, व्यतिरिक्त । स पु आगत्यक लन्त्यागन ।

—गाराद, वि, निर्गन, नमतिशय्य ।

—मनकूला, वि, स्थिर स्थावर, अचर ३

—मामूली, वि विशिष्ट, आसाधारण विशेष ।

—मुनासिब, —वाजिय, वि, अनुचिन, अयोग्य ।

—मुमकिन, वि, असंभव अशक्य ।

—शरस, स पु पर, अनामीय ।

—हाज़िर, वि, अनुपस्थित, अविद्यमान ।

—हाज़िरी, वि, अनुपस्थिति (स्त्री) अविद्य मानता ।

गैरत, स स्त्री (अ) लज्जा व्रथा ।

गैरिक, स पु (स न) दे 'गुरू' ।

गैरीयत, म स्त्री (अ) अन्यता, परता इतरता, अपरता ।

गल, स स्त्री, द 'गली' ।

गैलन, स पु (अ) गैलनम्, द्रवद्रव्यपरिमाण भेद, अङ्क प्रस्थ ।

गैस स स्त्री (अ) वाति (स्त्री), वायु ।

गोंडा, स पु (म गोष्ठ) ब्रह्म, अवरो- शाळा २ ग्राम ३ विष्णोयमा ४ अजिरन्

गोंद, स पु (म गुण), अथवा हिं गूना) नियाम ।

—दानी, स स्त्री निर्यासधानी ।

गोंदीला, वि (हिं गोंद) निर्याम, मय तुल्य, माद्र, श्यान ।

गो, स स्त्री (स) दे 'गाय' २ किरण ३ इन्द्रिय ४ वाक् (स्त्री) ५ सरस्वती ६ नेत्र ७ विद्युत् (स्त्री) ८ पक्षा ९ दिशा १० जननी

११ निहा । स पु (म) वृषभ २ नदीगण ३ घोका ४ सूर्य ५ चंद्र ६ बाण ७ गायक ८ आकाश ९ ९ स्वर्ग १० नल ११ लोमन् (न) १२ शब्द १३ जनाव ।

—कर्ण, स पु (स) धेनुश्रवण २ शैवतीर्थ विशेष । ३ अक्षर ४ सफेद ५ किङ्क वित्तिलि (पु स्त्री) (हिं विष्ठा) ५ गृह भेद । वि, लवकर्ण ।

—कुल, स पु (स न) गोतमुदाय २ गोष्ठ ३ ग्रामविशेष ।

—भास, स पु (सं) गो, चदल (-ल) पिंड ।

—घात, म पु (स) गो हत्या-वध-भारण्ण ।

—घातक, म पु (स) गोघातिन्, गोघ्न ।

—चर, वि (स इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियगण्य । स पु स्नात्रिनिपथा २ शाब्द, वृणष्ट भूमि (स्त्री) ३ प्राण देश ।

—चरी, स स्त्री (स चर >) निष्चरुति (स्त्री) ।

—ऽनीत वि, अगोचर अतीन्द्रिय इन्द्रियनीत, इन्द्रियागोचर ।

—दान, स पु (स न) धनु-गो, विमर्जन त्याग ।

—धू(ली)लि, स स्त्री (स) सध्या-साय काल समय-वेला ।

—धेनु स स्त्री (स) दुग्धवती गौ (स्त्री) ।

—पाल, म पु (स) गोप, गोपालक । २ श्रीकृष्ण ।

—मय, स पु (स न) गो, मय पुरीष विष्ठा ।

—गुरू, स पु (म न) धेनुवदन २ शरभेद । ३ दे नरसिंहा ४ गोमुनी, नममालाकोष । ५ चरहृण कुल्यग्रम् ।

—मूत्र स पु (स न) गो-रस प्रस्रा-द्रव निष्यद ।

—मेद-मेदक, स पु (स) राहुरल, पुष्परण, पीतादमन् (पु) ।

—मेघ, स पु (म) यक्षभेद ।

—रम, म पु (स) दुग्ध २ दधि (न) ३ तक्त ४ इन्द्रियसुलन् ।

—रोचन, स पु (स-चना) शुभा, शोभा, शोभना, रोचनी, सिवा, भगला, पीता, रोचना ।

—लोह, सं पु (स) श्रीकृष्णस्य नित्यव्यामन्
(न) ।

—वर्द्धन, स पु (सं) व्रजभूमी पर्वतविशेष ।

—वर्द्धनधर, सं पु (सं) गोवर्द्धनधारिन्
श्रीकृष्ण ।

—विद, सं पु (सं) श्रीकृष्ण ।

—शाला, सं स्त्री (सं) गोष्ठ, गोमृदु, व्रज ।

—साई, सं पु, दे 'गोस्वामी' ।

—स्वामी, सं पु (सं मिन) गोपति २ प्रभु ।

—हत्या, सं स्त्री (स) दे 'गोधत' ।

गो^२, गो कि, अन्य (फा) अपि, यद्यपि ।

गोका, स स्त्री (सं) लघु, गो धेनु

(दोनो स्त्रा) २ वनधेनु (स्त्री), मिल्हगवी ।

गोररुह, स पु (सं गोक्षुर) त्रिकट टक,

गोज्ज टक (१५पविशेष) २ नस्य कटक

३ कटक कल्प, प्रवर ।

गोचरना, गोचनी, स पु म स्त्री (हिं गोहृ +

चरना) गोभूमचयणम्, गोचण षणी ।

गोज, स पु (फा) अपानवायु, पर्द ।

गोजर, सं पु दे 'कनमनुरा' ।

गोजरा, स पु (हिं गेहृ + जव) गोभूमदवा ।

गोशा, सं पु (स शुष्क) १ पक्वभेद ।

२ वशकाष्ठ, बोल ३ दे 'नेव' ४ घामभेद ।

गोट^१, सं स्त्री (गोष्ठ > ?) वसनय दशा

(स्त्री बहु), वसनप्रान्त ।

गोट^२, सं स्त्री (सं गुटिका) शार, शारि

(पु), खलनी ।

गोटा, सं पु (हिं गोत्) सुवर्णरजत, जाला

भरण-वस्त्राभरणम् ।

गोटी, सं स्त्री (गुटिका) पापागरट

ट, शंकरा २ दे 'गो' ३ मसूरी रिवा,

शीतलरोग ।

गोट, स स्त्री (स गाड) गोशाला २ पर्यटन,

भ्रमण ३ श्राद्धभेद ।

गोदना, कि स दे 'गोदना' ।

गोदा, सं पु दे 'धुटना' ।

गोणी, स स्त्री (स) शाल, कोप पु, र्यू

(र्यो) न, प्रवेव २ द्रोणीपरिमाणम् ।

गोत, सं पु (सं गोव) दे 'गोत' २ गण,

समूह ।

गोता, स पु (अ) निमज्जन, अवगह ।

—देना, कि. म., व 'गोता मारना' के प्रे
रूप ।

—भारता, कि अ वि-अन-गाद् (स्वा आ
वे) निमज्ज (तु प अ) ।

—ज्वोर, सं पु (अ + फा) अवगाहक,
निमज्ज (पु) ।

गोत्र, सं पु (सं न) कुल, वश, अन्य

२ समूह ३ सपत्ति (स्त्री) ४ वन्धु

५ जातिविभाग ।

—भिद, सं पु (सं) इन्द्र, देवराज ।

गोदत, सं पु (स न) हरितालम् ।

गोद, सं स्त्री (स क्रोड) अर्ध, उत्तम ।

—लेना, सु, पुत्रोक्त, (पुत्रावेन) परियह

(रूप से) ।

गोदना, कि स (हिं गोदना) सूच्या त्वच

रज्ज (प्रे), त्वचमनुविध्य पत्रेस्ता निविश (प्रे)

२ गोदीन निविश (प्रे) ३ सूच्येण व्यध्

(दि प अ) ४ असत्त्वं प्रणुद् प्रवृत्त (प्रे) ।

सं पु, त्वचि सूचीलातम् कृष्णचिद्रम् ।

गोदनी, सं स्त्री (हिं गोदन) वेधनी,

सूचि-त्री (स्त्री) ।

गोदाम, सं पु (अ गोटाजन) पण्य-अगार

आधान, भाण्डागारम् ।

गोदावरी, सं स्त्री (स) गोदा, गौतमी ।

गोदी, स स्त्री, दे 'गोद' ।

गोधा, सं स्त्री (स) तला, तल, ज्वाघातवारण

२ गोधिका, निहाका ।

गोधुम, गोधूम, सं पु (स) दे 'गिह'

२ नागरम् ।

गोन, सं स्त्री, दे 'गोणी' ।

गोनिधा, सं पु, दे 'गुनिधा' ।

गोप, स पु (सं) अमोर, गोपाल, २ नृप

३ उपकारक ।

गोपन, सं पु (स न) गूहन, गोहनं, प्रच्छा

दन, सवरणम् ।

गोपनीय, वि (स) शुद्ध, सवरणीय, रहस्य,

गोप्य ।

गोपिका, सं स्त्री (स) दे गोपी ।

गोपी, स स्त्री (स) गोधिका, गोपपत्नी,

गोपिणी, गोपालिका ।

गोपन-ना, स पुं (सं गोपना) स्य,

मिदि(र)पात् ।

गोबर, स पुं (स गोमय) दे 'गोमय' ।
 —गणे(ने)न, वि, कुदशन, कुरूप । स पुं,
 मूर्त्त, जड ।
 गोबरी, स स्त्री (हि गोबर) गोमयलेप ।
 —करा, कि स, गोमयेन लिप् (तु प अ) ।
 गोबरैला, स पु (हि गोबर) दे
 गोबरौदा, 'गुबरैला' ।
 गोभी, स स्त्री (स गोभी = घासविशेष >)
 गोभी ।
 गांठ—, अथिगोभी ।
 पान—, } सुकुल पत्र, गोभी ।
 बर—, }
 फूल—, मध्यपुष्पा बृहद्दला पुष्पगोभी ।
 गोषा, कि वि (फा) इव, यथा, मन्ये
 (दि ना अ) ।
 गोरस्यघा, स पु (हि गोरस्य + घा)
 गहनजटिल-कार्य २ कूट, प्रहेलिका ३
 अक्षयनिर्गम प्रदेश ।
 गोरसा, स पु (स गोरस्यक) नयपालदेशे
 प्रातर्विदेश २ तत्प्रान्तवासिन् ।
 गोरखाली, स स्त्री (सं हि गोरसा)
 नयपालदेशस्य जातिविशेष, *गोरशाली २
 गोरशाणोजातेर्भाषा, *गोरशाली ।
 गौरा, वि (स गौर) शुद्ध, श्वेत, सित,
 विशुद्ध । स पुं, गौर, 'गुड', श्वेत, सित,
 २ सुरोपादिवासिन्, गौर ।
 गौराई, स स्त्री (हि गौरा) गौरवा, शुद्धता,
 श्वेतता, सितता ।
 गौरिष्ठा, स पु (अन्वी) वानरभेद,
 वनमानुषप्रकार ।
 गौरी, स स्त्री (स गौरी) गौरा, गुहा, श्वेता,
 सुरूपिणी, गुन्दरी ।
 गोलदाज, स पुं (फा) शनष्नीचालक,
 गोलक्षेत्रक ।
 गोल, वि (स) वर्तुल, निस्तल, वृत्त, वृत्तमंडल
 चक्र-वलय अकार-आकृति रूप २ अस्पष्ट,
 सादृश्य, अनिश्चित । स पुं, पत्र २ मूर्त्त ।
 —गप्पा, स पु (+ अनु गण) *गोलगप्पा ।
 —मटोल, वि, पीनवामन, सर्वस्थूल ।
 —मिर्च, स स्त्री [स गोलमरि(री)च]
 मरिच कोल, कोलकम् ।
 —माल, मु, अस्त्वन्मनसा, कममंग ।

—माल करना, मु, छलेन आरमसाद क
 २ व्यक्त्वा नरा (प्रे) ।
 गोल, स पुं (अ) गा, समुदाय ।
 गोलक, सं पु (स) पिण्ड-सपु-मज्जया,
 प्रनारभेद २ निष्कर्षणी (हि दराज)
 ३ पक्षौ शृते अरजपुत्र ४ बटुक ५ महत्पु
 त्पात्र ६ कनीनिका ७ नेपगोल ८ निधि,
 राशि ९ टक्केटिका ।
 गोला, स पु (स गोल) गोला-रु, वर्तुल-रु
 २ चक्र, मण्डल, वृत्त ३ अग्यरु, गोल,
 बक-न ४ नारिकेल रु ५ वातुगोल उदर
 रोगभेद ६ धान्य, हट्ट विपणी ७ पशुवृद
 ८ तैतुपथ ९ धायकुम् ।
 —भारना, वि स गौलै बदै ध्वस (प्र)
 चूर्त् (चु) ।
 गोलाई, स स्त्री (स गोल >) वृत्तता, वर्तुलता,
 गोलत्व, मडलत्वन् ।
 गोलाकार, वि (स) दे 'गोल' ।
 गोलाई, स पुं (स न) अर्द्धगोल ।
 गोली, स स्त्री (१६ गोला) लघुगोल,
 गोलक २ सीसरगुलिका ३ गुटिका, बटिका,
 गुलिका ४ कान-मर्मरौपल, गुलिका ।
 —भारना, कि स, गुलिकाश्रयेण हन् (अ
 प अ)-क्षण (त उ से) ।
 गोल्ड, स पु (अ) सुवर्ण, स्वर्ण, कनकम् ।
 गोल्डन, वि (अ) दे 'गुनइला' ।
 गोविद, स पु (स) शोका ।
 गोशा, स पु (फा) घोषा २ दिशा ३ रह
 स्थान, विविकम् ।
 गोशत, स पुं (फा) मास, आमिषम् ।
 —खोर, स पुं, मांस-आमिष, मशिन आद-
 भक्षन- ।
 गोष्ट, स पु (स पुं न) गो, स्थान शाला
 गुद, मज २ वृद, समूह ३ विमर्श, मन्त्रणा ।
 गोष्ठी, स स्त्री (स) गोष्ठि समिति (स्त्री),
 सभा, समाज, २ वार्तालाप ३ विमर्श ।
 गोस्तना-नी, (स) द्राक्षा, शृटीका ।
 गोह, स स्त्री (स गोषा) गोषिका, निद्राका
 २ (गोह का बच्चा) गौषार, गौधेरा, गौधेय ।
 गोहरा, सं पुं (स गोहल्ल >) दे 'उपला' ।
 गोहूँ, स पुं, दे 'गिहूँ' ।
 गोष्ठुर, सं पुं दे 'गोष्ठरु' ।

गौ, स स्त्री (स गम >) प्रयोजन, अर्थ, कार्य २ अवसर, कार्यकाल, अवकाश ।

गौ, स स्त्री, दे गाय' तथा 'गो' ।

गौगा, स पु (अ) कोलाइल २ जनशुक्ति (स्त्री) ।

गौड, स पु (स) वगप्रानरय भागविशेष २ ३ माह्य-कायस्व, भेद ४ गौडवासिन् ।

गौण, वि (स) अप्रधान, द्वितीय, अवर २ सहायक । (गौणी स्त्री) ।

गौतम, स पु (म) ऋषिविशेष २ बुद्ध ।

गौतमी, स स्त्री (स) अहल्या २ कृपाचार्य पत्नी ३ गोदावरी ४ दुर्गा ।

गौनहार, स स्त्री (हि गौन) नरोदासह्या मिनी ।

गौनहारी, म स्त्री (हि गाना) गायत्री, गायत्री, गायिका, गायकी ।

गौना, स पु (स गमन >) द्विरागमन वधा पतिवृद्धे गमनम् ।

गौर, वि (म) दे 'गौरा' (वि) । स पु १ २ रक्त पीत रंग ३ चंद्र ४ सुवर्ण ५ वृकुमम् ।

गौर, स पु (अ) विचार, चिन्तन, ध्यानम् ।

—करना, कि स विचार (म्रै), चिन्त (लु)

गौरव, स पु (स न) महत्त्व महिमन् (पु) २ गुरुता, भारवत् ३ आदर, सम्मान ४ अभ्युत्थानम् ।

गौरवावित, वि (स) गौरवित, सगौरव सम्मानित आदृत ।

गौराग, स पु (स) विष्णु २ कृष्ण ३ चैतन्यदेव । वि सित, श्वेत गुड २ यूरोपीय ।

—महाप्रभु, स पु (स) चैतन्यदेव ।

गौरी, स स्त्री (स) पार्वती, गौरा, गिरिजा = ३ शुभ (नारी अथवा गौ) ।

—शकर, म पु (स) शिब २ हिमालयस्य उच्चतम शिखरम् ।

गौहर, स पुं (फा) दे 'मोनी' ।

ग्यान, स पु, दे ज्ञान' ।

ग्यारह, वि (स ष्वादश) । स पु, उक्ता सत्या तद्वती (११) च ।

ग्यारहवा, वि, ष्वात् (पुं), ष्वादश (न) (वीं स्त्री) = ष्वादशी ।

ग्रथ, स पु (स) पुस्तक, शाल २ ग्रथन ३ धनम् ।

—जुयन, स पु (स न) क्षिप्र त्वरित, पठन अध्वयन, शीघ्रपाठ ।

—सधि, स स्त्री (स पु) अध्याय परिच्छेद ।

—साहय, स पु, शिष्यमतधर्मग्रथ ।

—कार, स पु (स) पुस्तक ग्रथ लेखन सपादक वर्तुं पणवृ ।

ग्रथन, स पु (स न) ग्रथन पुपन २ प्रणयन, निबन्धनम् ।

ग्रथि, स स्त्री (स पु) दे 'गौठ' ।

—यथन, स पु (स न) दे 'गौठ चोडना' ग्रथित, वि (स) ग्रथित शु (शु) फित २ ग्रथिमत्, ग्रथिल ।

ग्रसन, स पु (स न) मधुण, निगलन, २ ग्रहण, धरण ३ सूयंदि ग्रहण, उपराग ।

ग्रसना, कि स (स ग्रसन) (हस्तेन) ध्रु (भ्वा उ अ, लु) ग्रम्-अबल्व् (भ्वा आ से) ग्रह् (क् प से) ।

ग्रसित, } वि (स ग्रस्त) धृत गृहीत उपात्त
ग्रस्त, } २ पीडित ३ मक्षित, निर्गोण ।

ग्रह, स पुं (स) नक्षत्रभेद ।

ग्रहण, स पुं (स न) उपराग, ग्रह, ग्राम, ग्रहणीन २ आदान, अंगीकरणम् ।

ग्रफ, स पु (अ) विदुरैराचिकम् ।

ग्राम, स पु (स) दे 'गाव' ।

ग्रामीण, स पु (स) ग्रामिक ग्रामिन्, ग्रामवासिन् ।

ग्रामोक्तो, स पु (अ) अध्वनिशेखनवापम् ।

ग्राम्य, वि (स) ग्रामीण, ग्रामिक ग्रामीय २ अस्मभ्य अग्निष ।

ग्रस, स पुं (स) कवल पिंड ।

ग्राह, स पु (स) अवहार, जल्दस्तिन् ।

ग्राहक, स पु (स) कर्त (पुं) कथिन्, कथिक ।

ग्राह्य, वि (स) उपादेय, स्वीकार्य, २ देय ।

ग्रीषा, स स्त्री (स) दे गर्हन' ।

ग्रीम, स पुं (स) ग्रीष्म समय-बाल, निदाघ, उष्ण ऋतु, साधन, उष्ण, उपगम आगम-बाल ।

ग्रीस स पुं (अं) यवनदेश ।

प्रेटविटेन, सं पु (अ) आन्तदीपसमूह ।
 प्रेविटी, सं स्त्री (अ) स्वावृष्टि (स्त्री) ।
 स्पेसिफिक—, आपेक्षिकमार ।
 प्रेविटेन, सं पु (अ) गुह्यवाक्यवर्णम् ।
 प्रैट्ट, स पु (अ) स्नातक ।
 ग्लाइडोचन, सं पु (अ) शर्कराजनम् ।
 ग्लानि, स स्त्री (सं) विषाद, अवसाद,

ग्लानि (स्त्री) वेद ।
 ग्लोज्ज सं पु (अ) द्राक्षीजम् ।
 ग्लोच, सं पु (अ) गोलम् ।
 ग्लान् ग्लान्, सं पु (सं) गोपाल) गोप,
 आमीर ।
 ग्लानि, सं स्त्री (हि ग्लान्) गोपी,
 गोपिका, आमीरी ।

घ

घ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्था न्यूनवर्ण,
 षकार ।
 घगोलना, घघोरना, घघोरना, कि म,
 (हि घना+घोलना) विली (प्रे विलाप
 यति ते), विट्ट (प्रे) २ आविली कतुषी, कृ ।
 घट, सं पु (स घ) कुम्भ ।
 घंटा, घटा, स पु (सं घण्टा) कार्यानिमित्त
 वाद्यभेद २ घटा, शब्द-रय ३ होरा,
 नाटिका, अहोरात्रस्य चतुर्विंशतिमो भाग
 ४ महावर्ग ।
 —घर, सं पु, गदालय, घटागृहम् ।
 घटिका स स्त्री (स) क्षुद्रवर्ग २ किकि(क)गी ।
 घटी, स स्त्री (हि घटा) घर्षरा, घर्षरिका,
 दुग्धना, घटिका, २ घटिकाशब्द ३ त्रिकिणी
 गीका ४ नूपुर ५ कृकाय, स्वरयन्त्रम्
 ६ अलिङ्गिता, लम्बिका ।
 घंटा, सं पु (स) ताप, दाह, २ प्रकाश,
 आग्निक, ३ यन्त्रग ।
 घघरा, स पु (अनु) घृहचचटापव कम् ।
 घघर, स स्त्री (हि घघरा) चलनी, छद्म,
 चण्णव-क, घर्षरी ।
 घघाघच, म स्त्री (अनु) घघचच, श-द
 घ्वनि (पु) । वि, स्थूल, पीन ।
 घट, स पु (सं) कुम्भ, कलश ३ (स स्त्री),
 पुम्ब्रोव, पगी, कलशी, कुट्ट, २ नप
 २ शरीर ३ हृदयम् ।
 घट, स स्त्री (हि घटना) न्यूनता, अल्पता ।
 —घट, सं स्त्री, न्यूनताधिकता ।
 घटक, स पु (सं) मध्यस्थ, माध्यमिक,
 मध्यवर्तिन् २ कुलाचार्य २ योजक ४ घट
 ५ परविवाहसाधक ।
 घटका, सं पु (अनु) मरणोन्मुक्तस्य कृच्छ्र,
 श्वास-धसिन् श्वासप्रशासनम् ।

घटती, सं स्त्री (हि घटना) न्यूनता,
 अवनति (स्त्री), क्षीणता २ अनादर,
 मानहानि (स्त्री) ।
 घटन, सं पु (स न) उपस्थिति (स्त्री),
 उपाम २ रचन, निर्माणम् ।
 घटना, कि अ (सं घटन) घट्ट घृष्ट (म्वा
 आ से), उपस्था (म्वा उ अ), समापद्
 (दि आ अ), उपनम् (म्वा प अ)
 २ युज् (कर्म), उपपद् (दि आ अ) ।
 स स्त्री (स) प्रसंग, वृत्त, वृत्तात्, व्यति
 कर । ३ दुर्घटना ।
 घटना, कि अ (हि कटना) परिशि अपचि
 (कर्म) हम् (म्वा प से), न्यूनी अल्पी, भू ।
 घटनावली, सं स्त्री (सं) वृत्तावली, घटना
 समूह ।
 घटवद्, सं स्त्री (हि घटना+वडना)
 न्यूनत धिकते, अपचयोपचयो, हानिलाभौ (सप
 दि) । वि न्यूनाधिक, हीनातिरिक्त ।
 घटवार ल, सं पु (हि घाटवाला) तरपण्य
 तार्थ, ग्राहिन् २ नायिक, औजुषिण, घट्ट
 जीविन् ।
 घटा, स स्त्री (सं >) काद्विनी, मेघमाला,
 घटपटली २ समूह, धृदम् ।
 घटाटोप, सं पु (सं. >) दे 'घटा' (१)
 २ शिविकाच्छादन ३ शकटावरणम् ।
 घटाना, कि स, (हि घटना) न्यूनी अल्पी,
 कृ, ऊन् (सु), हम् (प्रे), लघुकृ, अपचि
 (स्वा उ अ) २ विद्युज् विद्युज्-व्यवकल्
 (सु) ३ गर्व ह- (म्वा प अ), अपकृ
 (म्वा प अ) ।
 घटाव, सं पु (हि घटना) न्यूनता, अल्पता,
 हीनता ३ अवनति (स्त्री), अपचय ।

घटवाना, कि प्र (हि घटना) व घटना
के प्रे रूप ।

घटिका, स स्त्री (स) शुद्ध-कुम् २
२ कालमानयत्र, यामनाली घटी ३ चतुर्वि
शतिकात्मक काल, मुद्रातंडम् ।

घटित, वि (स) निर्मित, रचित, मपादित ।

घटिया, वि (हि घटना) अवर अवर नि
अप रूप तथा २ सुखम अल्पमूल्य ।

घटी, स स्त्री (स) दे घटिका १ ३ ।

घटन, स स्त्री दे 'गठन' ।

घटना, कि स, दे गठना

घटा, स पु (स घट) दे 'घ' (२) ।

घटाई, स स्त्री दे गटाई ।

घटाना, कि प्रे दे 'गठाना' ।

घटिया, (स घटिया >) नैजमावर्तनी, मू
(मु)षापी २ मधुकोश करद ३ गर्भा
शय ४ मृच्छाक ।

घटियाल, स पु, दे 'पटा' (१) ।

घटियाल, स पु, दे 'ग्राह' ।

घड़ी, स स्त्री (स घरी) घटिकायामनाली
कालमानयन्त्र २ दे 'घटिका' (३) ३ दे
'घटिका' (२) ४ समय ।

—घड़ी, कि वि मुद्रासुद्ध, पुन पुन असुद्ध
(सब अर्थ) ।

—दिवा स पु (हि घनी + दिवा) ७ घटी
दीप, मृत्क रतिविशय ।

—भर, कि वि, सुदूर्त भग, क्षण सुदूर्त, मावम् ।

—साज्ञ, स पु (हि + का) घरी घटिका,
कार ।

घटिया, म पु (स घात >) दे 'घानी' ।

घन, स पु (स) मेघ, जल्द, पयोद
२ लोहमुद्गर, अयोपन, ३ दे 'घटा' (१)
४ सनातीयाकवस्य पूरण (गणित, उ
२ ५ २ ५ २ - ८ घन) ५ समूह ६ शरीरम् ।
वि माद्र, निविह २ कठिन, सद्ग, रणुल,
३ अधिक, प्रचुर ।

—घाज, स स्त्री (+ हि) गन्धित, स्तनित
२ शुद्धार्वा-भोष, भेद ।

—घार, वि (सं) अति-माद्र निविह
२ भीषण, अयावहः स पु मीषण, रव-ध्वनि
२ स्तनित, गन्धितम् ।

—घोर घटा, सं स्त्री (स) अविरल जन्दावली,
नीर-धवाद्भिवनी ।

—चक्रर, स पु (स घनचक्र >) चचल
अस्थिर, मति-बुद्धि २ मूर्ख ३ परिभ्रमिन्,
यथेच्छ-विहारिन् ४ कृच्छ सन्तम् ।

—नाद, स पु (स) दे 'घनगर' ।

—फल, स पु (स न) दे 'घन' (४) ।

—मूल, स पु (स न) पूरितसनातीयाक
त्रययाथाङ्क, घनपद (उ आठ वा घन
मूल दो) ।

—श्याम, वि (स) जल्दनील, मेघमेचक ।
स पु, श्रीकृष्ण ।

—सार, स पु (म) कर्पूर २ पाट ।

घनता, स स्त्री (स) साद्रता निविहता ।

घनच, म पु (म न) स्यूना सदति (स्त्री)
२ पदार्थस्य आयामविरतारस्वरूपानि (बहु) ।
घना, वि (स घन) साद्र, निविह, मद्दत,
नीर-भ २ गाढ, निवृत्तवर्तिन् ३ अत्यधिक,
अतिशय ।

घनाचरी, स स्त्री (स) दृढकवृत्त कवितार्य
छन्द (छन्द) ।

घनिष्ट, वि (स) अत्यन्त अति, साद्र
निविह घन २ प्रगाढ, अतिनिष्ठस्थ ३ अत्य
धिक, अतिशय ।

घनेरा, वि (हि घना) अत्यधिक अतिशय
(बहु, घनेरे = अभाय, अनेक) ।

घनीदय, स पु (स) मेघागम, वर्षा
कालारम्भ ।

घनोपल, दे 'श्रीला' ।

घपला, स पु (अनु) छन्द, कपट २ (मन्थान)
रत्नलित, भ्रान्ति (स्त्री) ३ क्रममा ४ संकुल,
प्र-म, कीर्णकम् ।

घवरा (दा) ना, कि अ तथा कि स दे
'घववाना' ।

घवराहट, स स्त्री (हि घवराना) व्या
आ-कुल्ला, अशानि (स्त्री), उदेग
२ व्यामोह, विवर्तव्यमूढता, विस्मयिषेप
३ स्वरा, वृत्ति (स्त्री) सरम-न) सभ्रम ।

घमट, स पु (स गर् १) अहवार, गर्ई,
दप, आटोप, मद, अवलप ।

—घरमा, कि अ, गर्ई (फा प से), प्रगल्भ
(म्ना आ से) इप् (दि प से) ।

- घमही, वि (हिं घमह) अगलित्त, दृप्त, गर्विन्, अहमानिन्, अङ्कारिन्, अस्तिक् ।
- घमघमाना, क्रि अ (अनु) घमघमायते (ना ध), गभार स्वन् (भ्वा प से) ।
क्रि म (मुञ्चिभि) वट (जु०) ।
- घमम, म क्वा } (म घन् >) दे 'उमम ।
घममा, म पु }
- घममान, म पु (अनु) घोर-दाहा-कूर्, लुड मगाम-रत्त समर ।
- घमाणा, स पु (अनु घम) घमिति शब्द घ्वनि (पु) प्रहारज शब्द ।
- घमाघम, म पु (अनु) घमघमघ्वनि (पु), घम-मदित, घमघमाशब्द ० लोहमुद्र घन, शब्द ३ अहवर, श्री (स्त्री), शोभा ।
- घमासान, स पु द 'घमसान ।
- घर, स पु (स गृह) द 'गृह' ० कन, भूमि (स्त्री) स्थान ० कुल, वस ४ कायात्प ५ कोष, आगर ६ काव, आवेष्टन ७ मूल, वरा ८ गृहनि-उद ९ छिद्र, विलन् ।
- आवाद करना, मु, वि-उद-वह (भ्वा उ अ), परिणी (भ्वा प अ) ।
- करना, मु, वन् (भ्वा प अ) २ स्थिरीभू ।
- का आदमी, मु, विश्वन्नीयननुष्य २ सवधिन् ।
- का न घाट का, मु, निर्गुण, निरर्थक, कुत्सित, अधम २ अस्थिरवास ।
- कूक तमासा देखना, मु अभोदप्रनादपु स्वधन अनन्द (जु) ।
- कोडना, मु, गृहकह (प्र) ।
- चमाना, मु, दे 'आकद करना' ।
- चारी, मु, गृहस्थ, गृहिन् ।
- में डाकना, मु, उपपत्तयेन पाद्वन् (र उ से) ।
- में पढना, मु, उपरत्नी भू ।
- घाला, मु, पति २ गृहिन् ।
- घाली, मु, पत्नी २ गृहिणी ।
- सिर पर उठाना, मु, कोणाहल कृ ।
- घँच—, मु, वच्च मु-उत्, सवध ।
- घवा—, मु, सद्द-सपन्न आत्, कुत् ० वारा गन् ।
- घरह, स पु (स) घरहक २ पेशी-चकी ।
- घरणी, नी, स स्त्री (सं गृहिणी) गृहपत्नी, मादां, कन्वन् ।
- घरफोरी, सं स्त्री (हि, घर+फोडना) गृहभेदिनी वदविनाशिना ।
- घराट, स पु, द 'घरह' ।
- घराती, स पु (हिं घर) 'दराती' का अनुकरा (विवाह) वधू-कन्या पश्रीय मन्वधिन् ।
- घराना, म पु (हिं घर) वद कुल, कन्वन् ।
- घरेह, वि (हिं घर) गृह गृह, निम्नि मवधिन् २ नैज, कानोद ० दे 'पाल्पू' ।
- घर्घर, (स पु) गद्गाद घर्घर, शब्द स्वन् ।
- घर्घराना, क्रि अ (स घर्घर >) घर्घरव ह, गद्गाद नद (भ्वा प से), घर्घरायने (ना ध) ।
- घर्घराहट, स स्त्री (हिं घर्घराना) दे 'घदर' ।
- घर्म म पु (स) सूर्य, आतप आलोक २ वग्ना, दाह, ताप ३ धौम्य ४ प्रन्वेद ।
वि, रत्त, उग ।
- घर्घाटा, स पु (अनु) घर्घर, घर्घरव ।
- घर्षण, स पु (स न), अभ्यवन, मवहन २ सगृह, समानाद ।
- घसना, क्रि अ तथा क्रि स, दे 'घिम्ना' ।
- घसियारा, स पु (स घस >) दास हार-ग्नि, घामविकेट (पु) २ घस वृ, छेदक-लावक । (रिन् (स्त्री) -घा-हारी रिणी इ) ।
- घसीट, स स्त्री (हिं घसीना) शीन द्रुव तरित, ल (लि) शन ३ द्रुव शीन-तरित लेल लेहन ० (भूमो) कदन् ।
- घसीटना, क्रि स (स घृष्ट) आ विकृप् (भ्वा प अ) वगद ह (भ्वा उ अ) ० शीप्र-सत्वग्, लिट (तु प से) ६ वगद समाधिर (द्वे) ।
- घस्मा, म पु, दे 'घिस्मा' ।
- घहर(रा)ना, क्रि अ (अनु) दे 'रजना' ।
- घाई, स स्त्री (स गमस्ति >) अगुणी माध, गमस्ति-कोः २ काद्यगामिनि ।
- घाई, स स्त्री (हिं घाव) आधाव, प्रहार ० छन्, कपटन् ।

धाऊचप, वि (हि षाऊ + चनु) औदरिक,
घनमर, गृधु २ गृधुचिह्न, युक्तभाव ।

धाघ, धाघ, वि (एक प्रसिद्ध अनुभवो पुरुष
था) बहुदशिन अत्यनुभविन् (नो स्त्री), बहु
दृशन (वरो स्त्री) २ माधाविन्, गणपटिक
(वी स्त्री) सं पु, जट, बुद्ध ।

धाघरा, म पु, (म धरं) १ सरयूवद्री
२ द 'धररा' ।

घाट, म पु (सं घाट) घट्ट, पट्टी, तर,
तर तरण, खान २ तीर्थ, अवतार ४ पर्वत
५ डिशा ६ विधि (पु) प्रकार ७ असिगरा ।

—घाट का पानी पीना, मु जातीविकार्य हत
मन भ्रम (स्वा प से) ६ अनुभववति
शर प्राप् (स्वा प अ) ।

—मारना, मु, प्रतिविडभावादि आ, नी ह
(स्वा उ अ) ।

घाण, म पु (हि घटना) हानि शक्ति
(स्वा), क्षय, अपचय, अत्यय ।

—उठाना या पढ़ना, मु, विद्युन्निहा
परिहा (कर्म) ।

—भरना, धानि सम' प्रतिममा, धा (जु उ अ),
हानि म वि परि पुष् (प्रे) ।

घाटिया, स पु (हि घाट) ग्यापुत्र, तीर्थ
पुगेदिन ।

घाटी, मं स्त्री (हि घाट) मकट मधाय,
पथ ना २ शरी, द्रोण, उपर्यरा ।

घात, म पु (म) आ अभि निर, पान,
प्रहार २ बध, हत्या ३ अहित, अमंगल
४ पुनःफल (गणित) । स स्त्री, सुयोग,
सद्वचन, सुवेला २ निष्प्रावशक्ति
(स्वा) ३ छल वृत्तपाथ ।

—में बैठना, मु, (वधाय उठनाय वा) मार्गे
निष्ठ प्रतीक (स्वा आ से), पथि अव
स्वद (स्वा प अ) ।

घातय, सं पु (सं) उकारिन्, नारय,
मारयिन् हृत् (पु) २ शत्रु, अरि, ३ बधक,
दह्याधिक । वि, प्राणहर, अकर ।

घातिनी, स स्त्री (मं) शत्रो, घातिका,
मारयिनी ।

घाती, सं पु (म घातिन्) दे 'घातय' ।

घाती, वि (हि घात) विश्वमारयिन्,
अमरदमप २ माधाविन् ।

घानुक, वि (मं.) नाशक, हिसक, मारक ।
(घानुकी स्त्री) ।

घाय, वि (सं) हननीय, हनन्य, मारणीय,
वधाई ।

घान, } सं पु । (सं घन) ।
घानी, } सं स्त्री । श्यालीचक्रादिपु सट्टे
पणीया मात्रा ।

घाम, सं पु (सं घर्म) सूर्य, आप-आलोक
२ सूर्य, ताप दाह ।

घामद, वि (हि घाय) मूर्त, अघ, मूढ,
२ अरुम, कर्मनिमुस ३ घर्म आनप, पीडित
(पत्नी) ।

घायल, वि (सं घान >) क्षन, वणित,
निद्र, भिन्नदेह, आहत, प्रहत ।

—करना, क्रि सं, वण् (जु०), आ-अभि
हृन् (अ प अ), क्षण् (त उ से), तुद्
(तु उ अ) ।

—होना, क्रि अ, व उपसृत् घातुओं दे कर्म
रूप ।

घार, सं पु (सं) अनेक प्रोक्षणम्, वण
निरणम् ।

घाल, स पु (म घार >) श्वार, प्राहकाय
मूल्य विना दत्त वस्तु (न) ।

घालक, स पु (हि घालना) घातक,
मारक, २ नाशक, ध्वंसक ।

घाय, स पु (सं घात) क्षन ति (स्त्री),
वण, आगत, प्रहार, ईर्ष, अहस् (न) ।

—करना, क्रि म, दे 'घायल करना' ।

—गाना, क्रि अ, दे 'घायल होना' ।

—भरना, क्रि अ, वण, रुह् (स्वा प अ) ।

घास, सं स्त्री (मं पु) द(च)वस, यव (वा)
स, शाद, वृणम् ।

—पान, स पु (सं घासयत्र) वृणयत्र २ दे
'वृडा-करवट' ।

—घूस, स पु, पला-रु २ दे 'वृडा-करवट' ।

—काटना या खोदना, मु, -वर्षे सुदृ तुच्छ,
वार्थक ।

धिग्वी, सं स्त्री (अनु) हिका, हिष्मा
२ गदगदवाच् (स्त्री), रत्नदवाच्य, रत्नभग ।

—वध जाना, क्रि अ, (भयश्रीवाग्नि)
दिवक् (स्वा उ से), सगदगद वद (स्वा
प से) ।

धिधियाना, क्रि अ (हि धिग्वी) कर्ण

प्राथं (चु आ से), सत्वाप निविद् (प्रे),
दे 'गिह्मिडाना' ।

धिचपिच, स स्त्री (स घृणपिष्ट अथवा
अनु०) स्थानमदीणता, अवकाशास्पृश्यम् ।
वि०, सकुल, वैशल्यान्, अस्पष्ट ।

धिन, म स्त्री, (स घृणा दे) ।

धिनाना, कि अ, दे 'घृणा करना' ।

धिनावना, धिनौना, वि (हि धिन)
घृणाद्, गहिंन, गहणीय, बीमत्त, अर्चिकर,
कुत्तित्त, उद्रेगन्तर (-री स्त्री) ।

धिया, स पु दे 'बद्ध' ।

—कदा, स पु दे 'बद्धकदा' ।

—तोरी, स स्त्री, मद्दाकोशातवी, इति-घोषा
मद्दापन्ना, घोषक, इतिपन्ना ।

धिरना, कि अ (स ग्रहण >) परि, वृक्षिप्
गम् वेष्स् (कर्म) २ एकत्र मिद् (तु प
से), सनिपत् (स्वा प से) ।

धिरनी, सं स्त्री (न धूर्ति) २ धूर्ति (स्त्री),
धूर्त्न, अ-भ्रा)मर २ परिभ्राना, परिवर्त्न
३ रज्जुव्यावर्तनकर ४ दे 'गङ्गारी' ।

धिसन्धिस, स स्त्री (हि धिसना) माय,
दीर्घमूला, कार्यनडता, कालक्षेप ।

धिसना, कि अ (म धर्षण) चञ्चरीभू, जू (दि
प से), (सतर्षणेन) अचि क्षि (कर्म), सघृष्
(स्वा प से), सघट (स्वा आ से) ।
कि स, घृ (प्रे), घृद् (क प से वा प्र)
अभि, अच् (र प से), लिप् (तु प अ) ।
स पु, धर्षण, मर्दन, अभ्यञ्जनम् ।

धिमवाना, धिसाना, कि प्र व 'धिसना'
(कि म) के प्रे रूप ।

धिसाद्, स स्त्री (हि धिसना) धर्षण,
मर्दन २ धर्षणमर्दन, मृत्यामृति (स्त्री) ।

धिसाव, स पु (हि धिसना) मधर्ष, पर
धिसावत्, स स्त्री (हि धिसना) मधर्ष,
धिसावत्, स स्त्री (हि धिसना) मधर्ष,
धिसावत्, स स्त्री (हि धिसना) मधर्ष ।

धिससा, सं पु (हि धिसना) धर्ष, मघट्ट,
ममर्द २ प्रसारण, प्रचोदना ३ बालक्रीडा
शेद ।

धी, सं पु (स घृण त) आज्य, आ, आनुम्
सपिस् (न), पवित्र, अमृत, अभिघार,
होम्य, तैजस, नवनीतकम् ।

—के चिराम या दिये जलना, सु, मफलमनो
रथ पूर्णकाम-कृत्तव्य, (वि) + भू ।

—स्त्रिचद्दी होना, सु, प्रगाठ पनिष्ठ, मैत्री
अनुराग भू ।

पौचो उँगलियो धी में होना, सु, उरमव
धृत् (स्वा आ से), स'धा समृद्ध (वि)
अग (अ प) ।

धीकृत्तार, स पु (स घृणकुमारी) कुमारी,
तरुणी, गृह, कथा वन्यका, अनरा, अनरा ।

धुँदूर्यो, स स्त्री (देश) दे 'कचाल' ।

धुँच(ग)ची, स स्त्री, (स गुजा) गुञ्जिका,
रत्निवा, रक्ता, कृणला, काक, विचिका न्या
नित्ता । २ गुणा-रत्ता, नान इ ।

धुँचवी, स स्त्री (अनु) मञ्जित्प्रचणकादि ।

धुँचारे ले, वि, दे 'धुँचरवाल' ।

धुँचरु, स पु (अनु धुन) धर्षरा रिवा,
धुद्र, घटा पटिका, धुद्रिका, चवणी, षोका,
किचिगी २ मजीर २, पुनुर-र । ३ मरणा
सन्नत्य बडे धर्षरशब्द ।

धुडी, सं स्त्री (स ग्रथि पु) १ दे 'गाठ' ।
२ बलमय, गड-कुडुप ।

धुग्धी, स स्त्री (देश) दे 'पडुक' २ विनोण
रूपेण व्यावर्तित कवल् ।

धुग्धु, धुग्धुआ, स पु (सं धूक) दे 'उल्क' ।

धुग्धुआना, कि अ (अनु) धुग्धु शब्द कृ ।
उल्ककवद् धूकयद् रु (अ प से)-कृद् (स्वा
प अ) ।

धुग्ग्ना, कि स (अनु) अल्पश पा
(स्वा प अ) २ द निगलना ।

धुग्ग्ना, स पु (स धुग्-ट्टुग्ना >) धानु
(न) अरु, पर्न् (न) सधि (पु), अधीवत्
(पु न), चक्रिका ।

धुग्ग्ना, कि अ (हि धूँटना) कठ-श्रास
रुध् (कर्म) ।

धुग्ग्ना, कि अ (हि धोग्ना) चूर्ण पिष्
(कर्म) २ सम्बन्ध पच (कर्म) ३ श्युगी भू
४ सरय जम् (दि आ से) ५ किम्बालाये
व्याध् (तु आ अ) ६ केशा मूलन मुन्
धुर् (कर्म) ७ अभ्यस् (कर्म) ।

धुग्ग्ना, सु धूर्त्, दक्ष, विचक्षण ।

धुग्ग्ना, सं पु (स धुग् >) धुग्ग्नाइ,
पादायाम ।

घुटाई, स स्त्री (हि घोटना) चूर्णन, पेषण, मर्दन = श्लेष्मीकरण ३ चूर्णन श्लेष्मीकरण, मूत्या ५ क्षीर, मुदन ५ आवर्तन, अभ्यास ।

घुट्टी, सं स्त्री, दे घुँटी ।

घुङ्ग, म पु (स घोङ्) घोटक ।

—चढ़ा, स पु, दे 'घुङ्गसवार' ।

—चढ़ी, स स्त्री, अधारुद्धा (नारी) २ अक्षा रोटण वैवाहिकरीतिभेद ३ दातप्रीभेद ।

—दूढ़ स स्त्री, अश्वघोटक चर्षा धावन २ जपाथ जवन, धावन, द्यतभेद ३ अर्थाभूमि (स्त्री) ।

—वदल, स पु, घोषक रथ स्वदन ।

—सवार, स पु सादिन्, तुरगिन्, इय तुरग-अश्व आरुढ रथ ।

—सवारी, म स्त्री, अश्व रोहण-कौशल विद्या ।

—माल, स स्त्री (स घोटनात्) मडुरा, वाजि अश्व शाला ।

घुङ्कना, कि स (स घुङ्) मत्सं (जु आ से) वाचा दड (जु), अव अधि क्षिप् (जु उ अ) ।

घुङ्की, स स्त्री (हि घुङ्कना) अधिभव, क्षय, वाग्दण्ड, मर्दन ना ।

घुणाचर, म पु (सं) घुणलिपि (स्त्री), घुणत्वन्तीकादिभि पत्रमहादिपु कृता रेखा ।

घुन, स पु (स घुण) काष्ठ, वैषक हीट लेगक

—लगाना, कि अ, जुगै अद (कर्म) ।

घुनघुना, स पु (अनु) दे 'घुनघुना' ।

घुचा, वि (अनु घुनघुनाना) तूष्णीक, गूढ सवृत्त, मार (घुभी स्त्री) ।

घुप, वि (स रूप >) निविड सूचीभेद (अथकार) ।

घुमहना, कि अ (हि घूमन्-स अटन >) मेरा आकाश आच्छद (जु) ।

घुमरी, स स्त्री (हि घूमना) अ(भ्रा)मर, भूमि धूमि, (स्त्री) ।

घुमाना, कि स (हि घूमना) व 'घूमना' के प्रे रूप ।

घुमाव, स पु (हि (घूमना) परि, भ्रम, धूमि (स्त्री), न्या-परि आ-वनं ।

घुरघुराना, कि अ (अनु) घुरघुरावने (ना था), घुर (तु प से) ।

घुलना, कि अ (सं घूर्णन >) वि प्र, ली (दि आ अ), द्रवीभू, क्षर गल् (भ्वा प से), विट (भ्वा प अ) २ पूतीभू, दुर्गंध (वि) भू, विगल् ३ कृश क्षीणमांस (वि) भू अग्रे परिहा (कर्म) । स पु, विलयन, द्रवीभाव, पूतीभवन, क्षय इ ।

घुलने योग्य, वि, विलेय, क्षरण विलयन, गील, विद्राव्य ।

घुलवाना, कि प्र } व 'घुलना' के प्रे रूप ।
घुलाना, कि स }

घुलाव, स पु } दे 'घुलना' स पु ।
घुलावट, स स्त्री }

घुपित, घुष्ट, वि (स) प्रकाशित, प्रकटीकृत, आ-उद् वि, घोषित, प्रत्यापित ।

घुसडना, कि अ, दे 'घुसना' ।

घुसना, कि अ (स कोसन या परंपण > ?) (बलात्) आ प्र, विश् (तु प अ), (अत) पद कृ अथवा निधा (जु उ अ), आगम् २ निर, मिद (क प अ), व्यध् (दि प अ) । स पु, प्रवेश, आगमन, निर्भेदन इ ।

घुसना, } कि स, व 'घुसना' के प्रे रूप ।
घुमेहना, }

घुँघट, स पु (स घुठन >) अवगुठन ठिका, मुखारक-कम् ।

—काइना, या भारना, कि स, अवगुट् (जु) मुसमाच्छद् (जु) ।

—वाली, स स्त्री, अवगुठनवती ।

घुँघर, स पु (हि घुमरना) अलक, कुरल, चूर्णकुतल ।

—वाले, वि आकुचिन जिह्वावती, भूत, कुनलादीर्ण, कुरलिन् (प्राय देशी के लिए) ।

घुँट, स पु (अनु घुट घुट) गडूधमात्रं पिय, चतु, च(जु) हुक ।

—लेना या पीना, कि स, आचम् (भ्वा प से) चपरह्य (तु, प अ), अरदा इष्य पा (भ्वा प अ) ।

घुँटना, कि स, दे 'घुँट लेना' ।

घुँटी, स स्त्री (हि घुँट) शिशुभेदन, बालीकधम् ।

घुँस, स स्त्री, दे 'घुँस' ।

धूसमधूस, सं पु (हि धुँसा) मुष्टीमुष्टि (अव्य), मुष्टियुद, बाहुराह्वि (अव्य) ।

धूसा, स पु (हि धिरसा) मुष्टि (पु स्त्री),
मुष्ठी, बद्धमुष्टि २ मुष्टि, धान प्रहार ।

—एगाना या मारना, क्रि स, मुष्टिना प्रह
(म्वा उ अ)-तड (चु) ।

धूभा, स पु (देश) काशशरकाण्डादीना
पुष्पम् २ कर्दमत्थकीर्भेद ३ खन्वाधिद्रम् ।

धूक, सं पु (स) दे 'उल्लु' । (धूवी स्त्री)
धूघ, स पु, दे 'रोद' ।

धूधू, स पु (स धूक) दे 'उल्लु' २ जन्,
मदमति ।

धूम, स स्त्री, दे 'धुमात्र' ।

धूमना, क्रि भ (स धूमन्) परि भ्रम्-अ
(म्वा प से), स वि-वर (म्वा प से)

० वि-या आ परि वृत् (म्वा आ से),
चक्रवत् भ्रम्, वि परि धूर्ण (तु प से)

३ नि प्रतिनि प्रत्या वृत्, पुनर्, या इ
(अ प अ) । स पु, परि भ्रमन्-अग्न,

परिवर्तन, धूर्णन, प्रतिनिवर्तन, चक्र, आवर्त
गति (स्त्री) ।

धूमने वात्ता, वि, पर्यन् भ्रमा शील, चक्रा
वनिन्, चक्रगति, परिवर्तिन्, परिभ्रमिन् ।

धूमधूमला, वि (हि धूम धूम) दे
'धूमनेवात्ता' ।

धूरना, क्रि स (स धूर्णन् >) नटाक्षेप तिर्यक
साचि ईभ (म्वा आ से)-इग (म्वा प अ)

२ सन्नोपनिमित्तेष अवलोक (म्वा आ
से चु) ।

धूराधारी, स स्त्री (हि धूरना) कणाश्रु,
कटाप, अवेश्वा, दर्शनन्, अपाग, बीष्मन्

अवलोकनम् ।
धूस, स स्त्री (हि धुसना या धूसा) उ-लोच,
उपायनम् ।

—खोर, स पु (हि न-फा) उल्कोचघ्राहिन् ।
धूगा, स स्त्री (स) अरुचि, बुत्ता, गर्हा,
जुउप्ता, वि, देश निर्वेद ।

धूमित, वि (स) अरुचिकर-उदग्धर (—धरो
स्त्री) २ दुस्सित, र्धन्, बीभत्स ।

धृत्, स पु (स न) दे 'धो' ।
धेरना, क्रि स (ग्रहा >) परिवेष्ट (म्वा
आ से, प्रे), परिवृ (रवा उ से म),

पार इ (अ प अ) २ अव-उप, रुध् (रु
उ अ) । स पु, परिवेष्टन, परिवारण, उप
रोध इ ।

धेरने वाला, स पु, परिवेष्टक, उपरोधक ।

धेरा, स पु (हि धेरना) परिधि (पु),
परि, वेध वेधा-याइ, मण्डल २ प्राचीर,

प्राकार, वेष्टन, वरण ३ परिवृत्तरथान
४ मण्डल ५ अव उप, रोध ।

—हालना, मु, परिवेष्ट (प्रे , दे)
'धेरना' (२) ।

धेवर, स पु (स धृत्वर) धृतूर, धार्तिक ।
धैया, स स्त्री (हि धी) स्मननिर्गन्-दुग्धधारा

२ प्रत्यप्र-दुग्धनवनीनम् ।
धौघा, स पु (देश) शुशु (वृ क, कोप

कवच-न्य, कीर्भेद ० शुक्ति (स्त्री) ।
वि, नड, स्थूलदुद्धि ।

धौटना, क्रि स, दे 'धोटना' ।
धौपना, क्रि स (अनु धुप) प्र नि विद्

(प्र) निभिद्-व्यथ (प्रे) ।
धौसला, स पु (म कुनालय अथवा हिं

धुसना) कुलाय, नीट-र, रणालय,
पमिगृहम् ।

धोख(क)ना, क्रि म (स धोषण >) कठस्थ
(वि) कृ, स्मृतिपथ नी (म्वा उ अ),

अभ्यस (दि उ से) ।
धोट, धोटक, स पु (स) दे 'धोडा' ।

धोटना, क्रि स (स धोटन >) धुदधिप्
(रु प अ), चूर्ण-खण्ड (चु), शूद्र (क

प से) २ मुष्ट (चु), धूर् (तु प से)
३ धर्षान स्त्रीक ४ गल-रसयति (ना

धा), गल निष्पीड्य-यापद् (प्रे), कठ
निष्पीड (चु) ५ दे 'धोटना' ।

स पु पेषा, मदन, मुण्डन, स्त्रीकरण इ ।
२ मुम (श) ल ल, (पेषा) दड ।

धोटनी, स स्त्री (हि धोटना) मर्दनी,
मुसलकम् ।

धोटवाना, क्रि प्र, व, 'धोटना' के प्र रूप ।
धोटा, स पु (हि धोटना) माजक, धर्षक

२ माजितवस्त्र ३ धर्षण ४ मुसल, दड
५ पेषा ६ स्त्री, केशवपनम् ।

धोटाला, स पु (देश) दे 'गडवड' स पु ।
धोदसाल, स पु (स धोदाला) दे

'धुद के नीचे 'धुदमाल' ।
धोडा, स पु (स धोन्) धोक्, धुरा, धुराग,

गम, अध, वाइ, ह्य, वधिन्, अर्धन् (पु),

सैधव, सति (पु), १ धर्म, जवन । ०
चतुरंग शार शारि (पु) ३ अन्नचक्रोत्त ।
—गाड़ी, स खा, अथ ह्य, रय-शक ।
घोट देव कर सोना, सु गाढ निद्रा स्वप् (अ
प अ)-श्री (अ आ, से,)-मविद्य (तु
प अ) ।

घोडिया, स स्त्री (हि घोडा) घोष, अरवक,
लु अरव घो २ नागदंत, ननक ।

घोडी, स स्त्री (स घोगे) अथा, बहवा,
गुरगी नातिनी वामिना, घोटिका २ बहवा
रोहण देवादिहरोनिभेद ३ विवाहगीतिका ।

—चंद्रना, सु, धरो चटवामान्ना वधुगृह गम् ।

—टप्पा, स पु बाल्यलभेद, घोनीलपनम् ।

घोणा, स स्त्री (स) नामा, नासिका, गन्ध
बहा । २ शकर अद्व प्रलवमुसलाम्बास्वम् ।
३ छिका धुन-आवह बाल्यलभेद ।

घोणी, म पु (म गिन्) शूर, वराह,
रोमश ।

घोर, वि (स) मयूर, भीषण, भीम २ दुर्गम,
गरन निदिष्ट ३ पन्थ, वरुण, ४ गाढ, दृढ
५ निवृष्ट, अधम ६ अत्यन्त, अत्यधिक ।

—निद्रा, सं स्त्री (सं) गाढनिद्रा, सुनिद्रा ।
घोलघुमाव, सं पु, दे 'घाल्मटोल' ।

घोलना, क्रि सं (हि घुलना) विद्रु विली
गल (प्रे) ।

घोलमेल, सं पु (हि घुलना + स डेल >)
मिश्रण, ससर्ग, सम्पर्क ।

घोष, सं पु (सं) शब्द, नाद, रव, स्वन,
ध्वनि (पु) ० गजित, स्तनिग ३, आमीर

वसति (स्त्री) ४ आमीर, गोष ५ गोष्ठ,
गोशाला ६ तट ट-टी ७ पाण्डप्रयत्नभेद
(व्या) ।

घोषणा, म स्त्री (स) प्रत्याहन, शापन,
प्रकाशन २ घोष, वण, उल्लो 'नं ३ नाद,
ध्वनि, शब्द ।

—पत्र, स पु (स न) विशक्ति (स्त्री),
सूचनापत्रम् ।

घोसी, म पु (स घोष >) यन्त्र, गोष
आमीर ।

घ्राण, स पु (सं न) नासिका, नासा, नसा
२ अंग्राण, गन्धग्रहण ३ आघ्राणशक्ति (स्त्री) ।

—दृन्द्रिय, सं स्त्री (म न) दे, 'घ्राण' (१३)

ट

ढ, देवनागरीवर्णमात्राया पञ्चमो व्यञ्जनश्च ।

उकार ।

च

च देवनागरीवर्णमात्राया षष्ठा व्यञ्जनवर्ण,
चरार ।

चक्रमण, म पु (स न) चक्रम-मा, परि, भ्रमण
जन्मम्, विहरणम्, विचरणम् । शनै शनै
मन्दगत्यावागमनम् ।

चगा, म स्त्री (च) हिहिमप्रवार, चग
२ नय स नय ३ ३ गनीषा क्रीलाया
रभेद ।

चग, स स्त्री (स च चैद + गम् >) दे
'जुनी (१) ।

—पर चक्राना, सु, अनुकूल्यति (ना धा)
२ अभिमानिन विधा (जु उ अ) ।

चगा वि (स चग) सुग्ध, स्वस्थ, नीरोग,
निरामय २ शोभन, सुदर ३ निर्मल, शुद्ध ।

—करना, क्रि स, व्यापि मुच् (प्रे), चम्
(प्रे श्मवति) ।

मला वि, कुशलिन्, नीरुज २ भद्र, अष्ट ।

चगुल, स पु (हि चो = चार + अगुल)
नय स नय २, ३ धरण, ग्रहण, हरणग्रह ।

चगोर शी, म स्त्री (स चारिका) रथालकार
करण २ फुलकण्डो, पुष्पकर ३
३ भाजन, आवार ४ चमपु, द्वि (पु)
५ हिदोल, दोल ।

चगोली, स स्त्री, दे 'चगरी' ।

चंचरीक, सं पु (स) भ्रमर, ४२५ ।

चचल, वि (स) चल्, चलावल्, चल, चल, चल,
लो, प (पा) रिचल्, चटुल, २ व्या पर्या
समा, कुल, अद्यान्त, अनिर्वृत ३ कपीर, कश्चि,
चञ्चित, लोलकुदि ४ विनोदिन्, क्षीणपर ।
स पु, वायु २ कामुक ।

चचलता, स स्त्री (स) चापत्य, चाचत्य,

लील्य, चञ्चलता, तरलता २ कुचेष्टा छिन,
मलोलत्व, लीलापरता ।

चञ्चला, स स्त्री (सं) लक्ष्मी (स्त्री),
शुद्धिदा २ विद्युत् (स्त्री), सौदामिनी । वि,
स्त्री, अज्ञाना, चञ्चलित्वा ।

चञ्चलाहट, सं स्त्री, दे 'चञ्चलता' ।

चञ्चु, सं स्त्री (सं) चञ्चुका, चञ्चु (स्त्री),
श्रोतः ।

चञ्च, वि (सं चण्ड >) चतुर, दक्ष २ धूर्त,
मायाविन् ।

चञ्च, वि (स) कुर, रौद्र (-द्री स्त्री), दाहण,
भैरव, (-त्री स्त्री), भीषण, उग्र २ कोपिन्
क्रोधिन्, सरभिन्, अमविन् ३ परष प्रखर,
नेत्र, नीक्षण, घोर ४. क्लवन्, दुर्दमनीर
५ कठिन, कठोर ।

—रुर, सं पु (सं) मूर्ख, चण्डाशु ।

—कौशिक, सं पु (सं) (१३) मुनि-
नाटक मर्ष, विशेष ।

चञ्चता, सं स्त्री (सं) टत्रता, भीषणता,
क्रूरता २ तीक्ष्णता, प्रखरता, तीव्रता ।

चञ्चा, सं स्त्री (सं) रुद्राणी, चञ्चा, दुर्गा,
२ नायिनादेर ३ शतपुत्रा, मधुरा । वि
स्त्री (म) निधुरा, कर्कशा, उद्या, कठोरा ।

चञ्चार, सं पु (स) चाटाल, माण्य,
दिवासीति (पु) निपाद, श्रपच च (पु),
पुस्तक-श ५ । वि कर-पाप, कर्मन्
२ दुष्कुल्येन, हीन, जाति वर्ण ।

—चौकडी, सं स्त्री, चञ्चलचतुर्भुज
चतुष्टयम् ।

चञ्चालिन, चञ्चालिनी, चञ्चाली, स स्त्री
(स चञ्चाली) चानाली, मातङ्गी, निपादी
२ पादिनी, दुष्टा ।

चञ्चिका, स स्त्री (स) दुर्गा २ विनादशीला
नारी ३ गयनीदेवी ।

चञ्चै, चञ्चा, स स्त्री (सं) पारंगी २ क्रोधिनी
नारी ३ कलहप्रिया कामिनी ।

चञ्चु, स पु (स चञ्च तीक्ष्ण >) अहिषेन
निमित्तमादकद्रव्यभेद, चञ्चु (पु) ।

—छाना, सं पु (हि + फा) चञ्चु, गृह-शाला ।

—चाञ्च, सं पु (हि + फा) चञ्चुप,
चञ्च, पायिन्-सेविन् ।

चञ्चुल, सं पु (देश) म(भा)रदाज, मारय,
व्यागात् ।

चञ्चु, सं पु (सं चञ्च) दे 'चञ्च' । २
हिंदी-विशेष ।

—मुग्धा, सं स्त्री (सं चञ्चमुखी) शशिवदनी,
चञ्चानना ।

चञ्चु, वि (फा) दे 'कुष्ठ' ।

चञ्चन, स पु (स पु न) मलयन, शीतल,
गंधसार, सुगंध, सर्पावाम, शीतल, श्याम्य,
शीतगंध । २ चदनकाष्ठ ३ चदनलेप ।

—राल, रत्न-जु, चदन, रत्न पत्रागम् ।

—सक्रेट, नैलपगिन्, श्वेतचदनम् ।

चञ्चला, वि पु (हि चाद = लोपडी)
सन्नाट, विशेष (-शी स्त्री) ।

चञ्चवा, स पु (हि चञ्च) लोच,
वितान आच्छादन, विधानम् ।

चञ्चवा, सं पु (सं चञ्चक) बहनेन मैत्रक
२ वज्रुल्लवमराड ड ३ मत्स्यभेद ।

चञ्चाम पु (फा चञ्च) धनमहायना,
आत्मिमाहाय २ धनमाग अर्थश ।
२ स्वाश, उदार ।

—ररना, कि म, अर्थश ममर (क् प से) ।

—देना, स्वम्वाश दा (जु उ अ) ।

चञ्चिया, सं स्त्री (हि चाद) शार्पशिरो
मग्नक, अग्र, सुट २ कपाल ल, दिरो स्थि
(न) ३ (अय-) रोटिका ।

चञ्चिर, सं पु (स) चञ्च सुवाशु २ तन
द्विप ३ कर्पूर २, धनसार ।

चञ्च, स पु (म) साम, शशाक, शशिन,
विद्यु रजना निशा शर्वरी श्वा, वर नाव
पनि, मृगक, कलानिधि (पु), मूर्त्ति (पु),
हिम शीत गुण श्वा, अशु दीपति (पु),
इडु (पु), चदमम् (पु), शम्भर ।
२ चल ३ सुवर्ण ४ कर्पूर ५ 'एक' इति
मर्यादा चदम्, बहनेनम् ।

वि, आह्लाक, आनन्दप्रद २ सुदर ।

—आनन, वि (स) दे 'चदमुस' ।

—कला, सं स्त्री (सं) चञ्च, रेखा लला ।

—कान्त, सं पु (सं) चञ्च, मणि (पु)-
रत्न-चपल ।

—किरण, सं पु (सं) चदपाद, शशिकर ।

—ग्रहण, सं पु (सं न), विधु इन्दु-चद्र,
ग्रहण ग्रह ग्राम-उपराग ।
—प्रभा, स स्त्री (स) दे 'चद्रिका' ।
—विदु, स पु (स) अनुनासिकचिह्नम् (~) ।
—भागा, पु स्त्री (स) चद्रभागी, चद्रिका,
पवनदम्राणे नदीविशेष ।
—मुख, रि (स) चद्रानन, विधु शशि,
वदन । (मुखी स्त्री) = चद्रमुखा, चद्र शशि
विधु वदना वदनी आनना आननी) ।
—रे(ले)प्ता, स स्त्री (स) दे 'चद्रकला' ।
—वशा, स पु (स) सोमकुलम् ।
—शाला, स स्त्री, शिरोमृद्, वधनी ।
—शेखर, स पु (स) चद्र, मौलि (पु)-
भूषण धर, शिव ।
—हार, स पु (स) वर्तुलस्वर्णशङ्खहार ।
चद्रक, म पु (सं) ३ 'चद्र' २ चद्रिका,
कौमुदी ३ कर्पूर ४ वहनेन, चद्रिका
५ मण-खम् ।
चद्रमा, सं पु [स चद्रमम् (पु)] दे 'चद्र' ।
चद्रहास, स पु (स) अमि, सन्धा
२ रावणखण्डम् ।
चद्रातप, स पु (सं) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना
कौमुदी २ दे 'चैदवा' ।
चद्रिका, स स्त्री (स) ज्योत्स्ना, शशि चद्र,
प्रभा-काति (स्त्री) कौमुदी, चद्र-आलोक
प्रकाश २ चद्रक, वहनेन (३४) स्थूल
सूक्ष्म, पला ।
—उत्सव, स पु (स) शरत्पूर्णिमोत्सव ।
चद्रोदय, म पु (स) चद्र सोम, उदय
उत्तम-उद्रमनम् ।
चपद्, वि (हि चपा) चपक पीत, वर्ण-रग ।
चपक, स पु (स) (पीषा) चापेय, दीप
स्वर्ण रिधर पीत, पुष्प पुष्पक, शीतल,
सुमग, मृद्मोहिन् वनदीप । (फूल)
हेमपुष्प, चपक इ । (म न) कदलीफलभेद ।
चपा, स पु (म 'चपक' दे) ।
—चली, स स्त्री, म चपककालिका, चपक
कोरक २ बटामणभेद, चपकचण्डी ।
चपत, वि (स चप्) तिरो अन्त्, दित, वृत्त,
गूढ अपमृत ।
चप्, स पु (म स्त्री) गपपथमय काव्यम् ।
चपली, स स्त्री, दे 'चनेली' ।

चमच, स पु, दे 'चमचा ।
चैवर, सं पु (सं चमर्) चाभरम् ।
चक, सं पु (म चक) वृद्धक्षेत्र, महाभूरुह ट
२ ग्रामटिका, लज्जाम ३ रथाग, मडल, चक्र
४ पट्ट, पट्टोलिका, भूमिकरग्रहणव्यवस्थापक
पत्रभेद ।
चकई, स स्त्री, दे 'चकनी' ।
चकई, स स्त्री (हि, चक) •चक्रको,
कीटनकभेद । वि, गोल, वर्तुल ।
चकचौध, स स्त्री, दे 'चकाचौध' ।
चकचौधना, कि अ, दे 'चुंधियाना' ।
चककूँदी, स स्त्री, दे 'छकूँदर' ।
चकती, सं स्त्री (स चकती >) वख-चर्म,
खट-खट शकल-शकलम् ।
दादल मै-लगाना मु, असभव साध् (र्ना प
अ) ।
चकत्ता, स पु (स चकवर्त्त >) त्वकिलक क,
चर्म, लाट्टी चिह्न । २ दतक्षनम् ।
—भरना या मारना, मु, दद् (भ्वा प अ) ।
चकनाचूर, वि, (हि चिवना + स चूर्णं ली <)
सुचूर्णित, शकली चूर्णी, वृत्त भूत, सूक्ष्मखण्ड
कुन २ अर्थिगत, अति, क्रात आद्यम् ।
—करना, कि स, चूर्ण् (चु) खट्ट मज
(रु प, अ)-कुट् (चु आ से) ।
—होना, कि, अ, अणुश बुट-चूर्ण् भञ्
(कर्म) ।
चकपरु, वि (स चक >) चकित, विरिमत
२ सभान्त, न्यामूढ ।
चक्रपकाना, कि अ (हि चकपक) दे 'चौकना ।
चक्रम(मा)रु, स पु (तु) अग्निप्रावर्ण (पु)
पावकप्रस्तर ।
चक्रमा, स पु, दे 'धोस्ता' ।
चक्राना, कि अ, (म चक्र >) (शीर्ष)
भ्रम् (भ्रा दि प से), चूर्ण् (भ्रा आ
से तु प से) २ न्यासुर् (दि प य),
आकुली भू ३ चकित (वि) + भू । कि स,
चकित (वि) + कृ ।
चक्रशानी, स स्त्री (फा चावर) सेविका,
परिचारिका ।
चकरी, स स्त्री (स चरी) वेणो, वेणव,
यत्र चक्र २ चनी, पट्ट-पट्ट ३ दे 'चवर' ।
चकला, स पु (स चर्त्त >) चक्रक

वेद्यावीधी, गणिकाइष्ट ३ दे 'जिला' । वि,
विस्तीर्ण, परिणाइवन् ।
चकलाना, कि-स प्रष्ट विस्त् (मे०), प्रथ (चु) ।
चकली, सं स्त्री (हि चकला) चकी दे
'गराडी' २ चक्री, चक्रिका, गोलपट्टिका,
घर्षणी ।
चकलस, सं स्त्री (अनु० चक) कलइ,
विवाद २ परिहाम, विनोद, कौतुकम् ।
चकवा, स पु (स चकवाफ) कोक, चक्र,
रथाग-आड्य नामक, द्रदवारिन्, कामिन्,
कामुक ।
चक्वी, स स्त्री (हि चकवा) चकवाकी,
कोकी, चकी, रथागनाम्नी इ ।
चकाचक, स स्त्री (अनु) दे 'घचापच' वि,
(स चक् = एति) सम्यक सिक्त, परिपूर्ण ।
कि वि, भृश, भूरि प्रचुर (सब अव्य) ।
चकाचौघ, स स्त्री (स चक् = चमकना,
चौ = चारों तरफ, अघ >) चाकचक्वेन
नेत्रनेत्र प्रतिघात, अतिशयदीप्त्याद्दृष्टेरस्यैयम् ।
चक्वि, वि (स) विरिमत, आश्रयान्वित,
विस्मयाकुल, साश्रयै, विरमय, उपहत-अन्वित ।
२ सभात, व्यामूढ, न्याकुल, ३ सशंक, वस्त ।
चकोटना, कि स, (हि चिकोटी) अहुल्य
अण पीड (चु) ।
चकोतरात्रा, स पु (स चक्र >) (धृक्ष)
मधुकर्कटी, मातुलङ्ग, सुगन्धा, सदाफल,
महाजमीर । (फल) मधुकर्कटिक,
मातुलुगम् इ ।
चकोर, स पु (स) कौमुदीगीवन,
चद्रिकापायिन् ।
चकोरी, स स्त्री (स) चद्रिकापायिनी ।
चक्कर, स पु (स चक्र) रथाग, मटल
२ गोल ल वृत्त बलय य ३ वात-अ वरुं
भ्रम, वाय्या ४ जल आवर्त, अलघुलम् ।
५ उभयसम्भव, विकल्प ६ सभ्रम, व्यामोह
७ कुच्छ, सफट ८ कौटिल्य, वक्रव ९
पर्यंगन, वि-आ वर्त १० भ्रमि घृणि (स्त्री),
भ्रामरम् ।
—ताना, मु, परिभ्रम् (भ्वा दि प से),
घूर्ण (तु प से) ।
—भारना, मु, विवरु पर्वट (भ्वा प से) ।

—में आना, मु, कुच्छे पट (भ्वा प से),
सकटे मरन (तु प अ) ।
—में डालना, मु, कुच्छे-सकटे, पट मरुत् (प्रे) ।
चक्का, स पु (स चक्र) दे 'चकर' (१, २) ।
३ बृहदवर्तुलखट ४ ५ इष्टक प्रस्तर,
राशि (पु) ।
चक्की, स स्त्री (स चकी) यन्त्रपेषणी, दे
'चकरी' (१-२) ३ जानुफलकम् ।
—पीसना, कि स, चक्या पिष् (रु प अ)-
शुद (रु उ अ) चूर्ण (चु) । मु, घोर
अत्यधिक परिश्रम् (दि प से)-उद्यम्
(भ्वा प अ) ।
चक्कू, स पु दे 'बाकू' ।
चक्र, स पु (स न) दे 'चक्कर' (१-४) ।
५ तैलपेषणी ६ कुलाल-कुम्भकार, चक्र पट्ट
७ अस्त्रभेद ८ गण, समूह ।
—धर, स पु (स)
—धारी स पु (स रिन्) } विष्णु, चक्रश्रु ।
—पाणि, स पु (स) }
—वर्ती,—स पु (स तिन्) राजाधिराज,
मलेश्वर, सभ्राम् (पु), अधि, राज ईश्वर ।
—वाक, सं पु (स) दे 'चकवा' ।
—वृद्धि, स स्त्री (म) चक्रवाद्भवम् ।
—व्यूह, स स (स) मल्लाकार सैन्य
सन्निवेश ।
—हस्त, स पु (स) विष्णु ।
चक्राक स पु (स) (भुजादिपु) चक्र,
चिह्न-लक्षणम्-अभिधानम् ।
चक्राकित, वि (स) चक्रचिह्नयुक्त, सचक्र
चिह्न । स पु वैष्णवसम्प्रदायभेद ।
चक्राकार, स पु (स) गोल, मडलाकृति ।
चक्री, स पु (स क्तिन्) चक्र, धर धारिन्
२ विष्णु ३ कुलाल ४ गुप्तचर ५ तैलिक,
तैलिन् ६ सर्प ७ चक्रवाक ८ चक्रवर्तिन् ।
चक्ष, स पु [सं चक्षुस् (न)] ज्ञेय,
नयनम् ।
चक्षना, कि स (स चषण) आ, त्वाद्
(भ्वा आ से) चप् (भ्वा उ से), रस्
(चु) रस परीम (भ्वा आ से), रसनया
स्थु (तु प अ) ।
स पु, आस्वादनं, चषण, रसन, रंषदशनम् ।

चखाना, कि प्रे, व 'चखना' के प्रे रूप ।
 चगलना, कि स (अनु चग > अथवा चवंग
 + गिलन >) क्षुधा विना मध् (चु) ।
 चचा, सं पु दे 'चाचा' ।
 चची, स स्त्री, दे 'चाची' ।
 चचेरा, वि (हि चचा) पितृव्यसवधिन् ।
 —भाई, स पु, पितृव्यपुत्र, पितृव्यज ।
 चचेरी बहिन, स स्त्री, पितृव्यपुत्री, पितृयया ।
 चचोड़ना, कि स (अनु) दत्त निषीध्य
 आ, चूष (भ्वा प से), बलवत् स्तय धे
 (भ्वा प अ) ।
 चट, कि वि (स झटिति) क्षणन, क्षण
 चटपट, ,, } निमेष, मानेण, सपदि, द्रक्,
 चटसे ,, } अजसा, क्षणात् सद्य, एव,
 तःक्षण-ग-गन ।
 —करना, मु, अशेष निगल् (भ्वा प से)
 २ परद्रव्यमात्मसात् कृ ।
 —पट करना, कि अ, त्वर् (भ्वा प से),
 आशु कृ ।
 चटक, स स्त्री (स चटुल >) शोभा, शो
 काति युति-दोषि (स्त्री) ।
 —मटक, स स्त्री, प्रसाधन, अलकरण, मडन
 २ हावभावना, विलसित, विलास ।
 चटक(ख)ना, कि अ (अनु चट) स्फुट्
 (तु प से), दृ भज्भिद् (कर्म)
 वि, दल् (भ्वा प से) । स पु, चपेट टिका ।
 चटकनी, स स्त्री (अनु चट) कौल ल,
 अर्ल, तौलकम् ।
 चटकाना, कि स (हि चटकना) व
 'चटकना' के प्र रूप २ अगुणो स्फुट् (प्रे) ।
 जूतिया—मु, व्यर्थ दारिद्र्येण वा भ्रम्
 (भ्वा दि प से) ।
 चटकरा वि दे 'चटवीला' २ चपल, चचल ।
 चटकीला, वि (हि चटक) भासुर, उज्ज्वल
 प्रभावत् २ चित्र, नानावर्ण ३ दे 'चटपना' ।
 चटनी, स स्त्री (हि चटना) अबनेह,
 उप-अव, दश, व्यजन, उपस्कर ।
 चटपटा, वि (हि चाट) स्वादु, मुरस,
 सरस, रुच्य, रुचिकर २ तीक्ष्ण तिक्त ।
 चट(टा)पटी, स स्त्री (हि चटपट) खटा,
 दुग्धि (स्त्री), शीघ्रता, शिघ्रता । २ उमुक्तता
 आकुलता ।

चटरपी, स पुं (व) चट्टोपाध्याय, वग्रा
 तीयनाक्षणभेद ।
 चटवाना, कि प्रे, व 'चाटना' के प्रे रूप ।
 चटशाल, चटसार-ल, स स्त्री, (हि चट्टा =
 वेता + स शाल) पाठशाला, विद्यालय ।
 चटाई, स स्त्री (स कट ?) किलिजक,
 किलज, सुगुली, पादपाशी, आस्तर ।
 चटाक, चटाका-खा, स पु (अनु) विराट्,
 सशब्द, भग स्फोटन, परुषस्वन, चटाक,
 शब्द ध्वनि (पु) ।
 चटाचट, स स्त्री (अनु) चटपटा, शब्द
 नाद, चञ्चटायित, चटपटाय्, कार-ट्टि
 (स्त्री) कृणम् ।
 चटाना, कि प्रे, व 'चाटना' के प्रे रूप ।
 चटुल, वि (स) चचल, चपक, लोल
 २ सुदर ।
 चटोर रा, वि (हि चाटना) अमर, परस्पर,
 अत्याहारिन्, बहुभोजिन् २ स्वादरस मिव
 लोतुप, जिह्वालोल ।
 चटोरपन, स पु (हि चटोर) घस्मरता,
 औदरिकता २ स्वादलोतुपता, जिह्वालौच्यम् ।
 चट्टा, स पु (स चट्ट >) छात्र, शिष्य ।
 —चट्टा, स पु (हि चट्ट + बट्टा) क्रीड
 नवसमूह ।
 एक ही धैरी के चट्ट बट्टे, मु समरवभाता
 तु-वशीला मानवा ।
 चट्टान, स स्त्री (हि चट्टा = चक्का)
 शिलोच्चय, स्थूलशिला, शैल, महाप्रस्तर ।
 चट्टी, स स्त्री (अनु चटपट) पादप्र,
 पादुका, पादू (स्त्री) ।
 चट्टी, स स्त्री (हि चोटा) हानि-क्षति
 (स्त्री) २ दह, अपकार-गुञ्जि क्षतिनिष्कृति
 (स्त्री) ।
 चट्टू, स पु (हि अनु चट) पाषाणमय
 बृहदुद् (स्त्री) खलम् ।
 चट्टा, स पु (देश) जयामूल कर्मधि
 (पुं) विदूषक । वि मद्रुष्टि, मूर्ख ।
 चदना, कि, अ (स उच्चान) उदि-उषा
 (अ प अ), उपरि उद्, गम्, अधि-आ रह्,
 (भ्वा प अ), अधिकम् (भ्वा प से),
 भ्वा आ अ) २ उत्पा (भ्वा प अ),
 समुत्था (भ्वा आ अ) ३ सं, च्छु (दि

प से), उप प्र-वी (कर्म) ४ आक्रम, अभिद्रु-अवस्कद (भ्वा प ज) ५ उत्पद (भ्वा प से), उड्डी (भ्वा आ से) ६ उपहारी-उपायनी, कृ (कर्म), उपद निवप् (कर्म) ७ प्रवृत् (भ्वा आ से) । सं पु उदयन, उद्गमन, अधिरोहण, उत्थान, आक्रमण, उड्डयन इ ।

चदने योग्य, वि उदेतन्व, आरोहणीय आक्रमणीय ।

चदने वाला, सं पु उदेत्-अधिरोहृ-अभिद्रावक ।

चदा हुआ, वि, उदित, उद्गत, अधिरूढ, आक्रान्त ।

चदवाना, क्रि प्रे, व 'चदना' के प्रे रूप ।

चदाई, स स्त्री (हि चदना) उद्गमन, आरोहण २ उद्गम, उदय ३ आरोह ४ आक्रम, अवस्कद ।

चदाउतरी, स स्त्री (हि चदना + उतरना) असहृत् आरोहणावरोहण-श ।

चदाउपरी, स स्त्री (हि चदना + ऊपर) प्रतिपदा, अहपूर्विका ।

चदा चढ़ी, स स्त्री (हि चदना) दे 'चदा उपरी' ।

चदवाना, क्रि स, व 'चदना' के प्रे रूप ।

चदाव, स पु (हि चदना) आरोह, उद्गम, उत्थान २ उद्दि (क्षा), उपचय ।

—उतार, स पु आरोहावरोही, उद्गमान गमो ।

चदावा, स पु (हि चदना) उपहार, उपायन, उत्सर्ग, बल (पु) २ दे 'वदावा' ।

चदैत, स पु (हि चदना) आ अधि रोहिन् रोहक-रोहृ ।

चैता, स पु, (हि चदना) हय-अथ-आरोह आरोहिन्, मादिन्, तुरगिन् ।

चणक, स पु (म) दे 'चना' ।

चतु शाय, स पु (स न) शरीर, देह, काय, तनु-न् (स्त्री)

चतुरग, स पु (स न) अक्षक्रीणन्द २ चत्वारि सेनागानि (हस्त्यथरथपदानय) इति ३ चतुरगिणी सेना । वि, अगचतुष्टयवत् ।

चतुरगिणी, स स्त्री (स) हस्त्यथरथपदानि रूपिणी सेना । वि स्त्री, अगचतुष्टयवती ।

चतुर, वि (सं) निपुण, दक्ष, प्रवीण, कुशल, विचक्षण, विशारद २ धीमत्, बुद्धिमत्, प्रज्ञ, प्राज्ञ ३ कापटिक-छात्रिक [क्री (स्त्री)] कितव, धूर्त ।

चतुरता, सं स्त्री (सं) गैपुण्य, दास्य, कौशल, प्रावीण्य २ बुद्धिमत्त्व, माझता ३ कैतव, कापट्य इ० ।

चतुराई, सं स्त्री, दे 'चतुरता' ।

चतुरानन, स पु (सं) चतुर्मुख, ब्रह्मन् (पु) ।

चतुर्थ, वि (स) तुर्य, तुरीय ।

चतुर्थी, वि स्त्री (सं) तुर्या, तुरीया २ पञ्चम्य तुरीया तिथि ३ दे 'चौथा' ।

चतुर्दिक, स पु, दे 'चतुर्दिश' ।

चतुर्दिश, सं पु (स न) दिक्चतुष्टयन्, चतुर्दिकसमूह । क्रि वि, चतुर्दिक्षु, सर्वत, समतत, विश्वत, समताद, सर्वत्र (सर्व अन्व्य) ।

चतुर्भुज, वि (स) चतुर्बाहु, चतुर्हस्त २ चतुष्कोण, चतुरस्र । स पु (सं) विष्णु २ चतुष्कोण, चतुरस्र-स ३ चतुर्भुज, वर्ग, सम, चतुर्भुज चतुरस्र ।

चतुर्मुख, स पु (स) दे 'चतुरानन' ।

क्रि वि, सर्वत, परित, समताद (सर्व अन्व्य) ।

चतुर्भुग, स पु (स न) युग, चतुष्क चतुष्टयम् ।

चतुर्भुगी, स स्त्री (सं) दे 'चतुर्भुग' ।

चतुर्वर्ग, स पु (सं) धर्मार्थकाममोक्षा ।

चतुर्वर्ण, सं पु (स) ब्राह्मणशूद्रवैश्यशूद्रा, चतुर्वर्ण्य, वर्ण, चतुष्टय चतुष्कम् ।

चतुष्कोण, वि (स) चतुरस्र, चतुरस्र, चतुर्भुज २ सम, चतुर्भुज-चतुरस्र । स पु (मम-) चतुर्भुज-चतुरस्र ।

चतुष्टय, स पु (स न) चतु सख्या, चतुष्क, चतुर्भुजसमूह, चतुष्कम् ।

चतुष्पथ, स पु (स पु न) दे 'च राहा' ।

चतुष्पद, स पु तथा वि (सं) दे 'चौपाया' ।

चहर, स स्त्री (फा चहर) शदनाम्तरण शय्याच्छादन, प्रच्छद, पट वस्त्र प्रच्छद उत्तरच्छद २ (धतका) फलक क, पत्रम् ।

चना, स पु (स चंग) हरि, मध मथक मथज, सुमथ, दान्भोभ्य, वाजिमथ्य, कनुकिन्, कृष्णचतुक ।

नाहो चने चदवाना, मु, अत्यन्त परि-त्तप् (प्रे) । लाइ का चना, मु, दुष्कर कर्मन् (न) ।

चनात्र, स स्त्री (सं चन्द्रमाणा) चान्द्र चन्द्र
माणा भागी ।

चपन्न, स पु (हि चिपकना) कचुक
उत्तरीय, भेद ।

चपकना, दे 'चिपकना' ।

चपकलश, स स्त्री (तु) खड्गाभित्-कृपण,
सुद्धम् २ बल्ह, उपद्रव ।

चपटा, वि, दे 'चिपटा' ।

चपङ्चपङ्ग, सं स्त्री (अनु) चपङ्चपट
ध्वनि (पु) ।

चपङ्ग, स पु (हि चपटा) अलक-क्तक,
रा(ला)क्षा २ लाक्षा-अलक, पत्र ३ रक्तकीट
भेद ।

चपट, स पु (स चपट) चपेट टिका, चपट
करतल, आघात प्रहार २ क्षति हानि (स्त्री) ।

चपनी, स स्त्री (स चपन = दवाना >) पुट
टटी, छद्र, छदन, पिधान २ शराव,
वर्धमानक ३ जानुकलकम् ।

चपरास, स स्त्री (फा चप = वायाँ + रास =
दायाँ) • प्रेभ्य, पङ् पङ्क ।

चपरामी, स पु (हि चपरास) प्रेभ्य,
भूय, नियोज्य, विकर, चोलकिन् ।

चपल, वि (स) दे 'चचल' (१-४) ५ क्षणिक,
अचिरभाविन् ६ शीघ्र आशु कारिन्, अवि
लविन् ७ शीघ्र, तुण, क्षिप्र, द्रुत ८ मायाविन्,
समाय ९ चतुर, अवसरस १० धृष्ट, निर्लज्ज ।

चपलता, स स्त्री (स) दे 'चचलता'
(१-२) ३ धृष्टता, पाष्टर्व, वैयात्यम् ।

चपला, स स्त्री (स) लक्ष्मी (स्त्री), कमला
= विदुद (स्त्री), चचला ३ जिह्वा ४ पुँक्षली,
कुल्या । वि स्त्री, चंचला २ शीघ्रकारिणी ।

चपली, स स्त्री (हि० चपटी) पत्रदा, पत्रभी ।

चपानी, स स्त्री (स चपटी) पाली, पोलिका,
रोगी (ट) षा ।

चपेट, स स्त्री (स चपेट) दे 'चपन'
(१ २) ३ आघात, प्रहार ।

चप्पन, स पु दे 'चपनी' (१) ।

चप्पल, स पु (हि चपटा) पादू (स्त्री),
पादुका बोशीभी ।

चप्पा, स पु (स चतुष्पाद्-द >) चतुर्थांश
तुर्थांशतरीय, माग, २ अगुलीचतुष्टयपरिमाण
३ किन्तु (पु स्त्री), वितरित (पु)
४ अस्तास ।

चप्पी, स स्त्री (स चप = दवाना >) स,
वाह वाहनं वाहना, चरणमेवा ।

चप्पू, सं पु (हि चाँपना) नौकानौ,
दट, क्षेपणीणि (स्त्री) ।

—मारना, कि स, क्षेपण्या चल्-चह (प्रे) ।

चपवाना, कि प्रे व 'चवाना' के प्रे रूप ।

चवाना, कि स (स चर्वण) चर्वू (भ्वा प
से), सदद् (भ्वा प अ), दने निष्पिप्
(रु प अ) । स पु, चर्वण, दने निष्पेपण
सदशनम् ।

चवा चवा कर वात करना, मु, मद सस्वर च
वद् (भ्वा प से) ।

चवे को चवाना, मु, पिष्टपेपण, चविणचर्वणम् ।

चयूतरा, स पु (स चत्वरम् >) वैशि
(स्त्री) -दिका, वितदि (स्त्री) दीं दिका, उत्तर
स्थली २ दे 'कोतवाली' ।

चयेना, स पु (हि चवाना), भृष्ट भष्ट,
अन्न धान्य, चर्वणम् ।

चयेनी, स स्त्री (हि० चवेना) मृष्टाशोष
हार २ जलपानसामग्री ।

चभक, स पु (अनु) निमज्जन ध्वनि
शब्द ।

चमक, स स्त्री (हि चमकना) वाति
दीप्ति-श्रुति रुचि (स्त्री), आमा, प्रमा
२ आलोक, प्रकाश ३ कटि शोणी, पीडा ।

—दमक, स स्त्री, अतिशय, शोभा शी-कानि
दीप्ति-श्रुति विभूति (स्त्री) ।

—दार, वि उज्ज्वल, मासुर, मास्वर, अनि
महा, तेजस शोभन-दीप्तिमत् प्रथम ।

चमकना, कि अ (स चमकरण) प्रकाश
विपुत्र भान शुम् भ्राज् भ्राश भ्लाश (भ्वा आ
से), प्र, भा (अ प अ) चरास (अ प
से) दीप् (दि आ से), विलम् (भ्वा
प से) २ समृद्धि-वृद्ध या (अ प अ),
स, अर्थ (दि तथा र्वा प से) ३ अक
रमात् कर्-रपद् (भ्वा आ मे) सप्रत्य-
मयचकित (वि) भू ।

स पु, प्रकाशन, विचोलन, विलम्बन, समृद्धि
(स्त्री), प्र-उप-चय, सहसा रपदन-कननम् ।

चमकाना, कि प्रे, व 'चमकना' के प्रे रूप ।

चमकारा, सं पु (हि चमक) कानि-दीप्ति

लुति (स्त्री) २ भाकचक्रय, तीव्र, आलोक प्रकाश ।

चमकी, स स्त्री (हि चमक) आपातरमणीय वस्तु (न) ।

चमकीला, वि (हि चमक) दे 'चमकदार' ।

चमकी, स स्त्री (हि चमकना) कुलटा, पुक्षली २ कन्ह-कलिकारी-कारिणी प्रिया ।

चमचिदी, स स्त्री	} (स चर्मचर्णी) चर्मचट(टि)का, चतु(त्)का, जतुनी चर्मपत्रा, अजिनपत्रिका चाग्नि (स्त्री) ।
चमगा(शी)दह, म पु	
चमगिदडी, स स्त्री	

चमचम, स स्त्री (देश) चमचमारय मिष्टा प्रभेद । वि, दे 'चमकदार' ।

चमचमाना, कि अ, दे 'चमकना' (१) ।

चमचमाहट, स स्त्री, दे 'चमक' (१-२) ।

चमाच, स पु (स चमस-स) कण वि (स्त्री), सज, खनाफा । (लकड़ी का) दारु हस्ताक, तर्तुं तर्तुं (स्त्री) ।

—भर, कि वि, चमस मात्र परिमाणम् ।

चमचिचद, वि (हि चाम + चिचदी) अत्याग्रदिन्, प्रतिनिविष्ट, अत्याग्रशील ।

चमदा, स पु [स चर्मन् (न)] त्वन्-रोमभूमि (स्त्री) त्वच-चा, असुग, धरा वरा, छली ली । (मृत प्राणी का) अजिन, कुत्ति-इति (स्त्री) ।

—उधेदना, कि स, निरसवचीकृ, त्वच-चर्म अपनी निर्हं (भ्वा प अ) ।

चमडी, स स्त्री (हि चमडा) दे 'चमडा' ।

चमकार, स पु (स) विरमय, आश्चर्य, अद्भुत चमत्कृति (स्त्री) २ अलौकिक-अति मात्स्य-दासोच्छ-कर्षण (न) ।

चमकारक, वि (स) आश्चर्य विरमय, अनक उत्पादक, अतिमानुष (भी स्त्री), दिव्य विलक्षण अद्भुत, आश्चर्य, चमत्करिन् ।

चमकृत, वि (स) आश्चर्य विरमय, अविश्रुत आपन-उपहत विरिमय ।

चमन, स पु (फा) कुसुनावर, पुष्प, जन वाट वाटिका ।

चमर, स पु (स) चमरगौ (पु) धेनुग, शालिप्रिय, वन्ध, व्यवनिन् २ च(चा)मरम् ।

चमरस, स पु (स चर्मरस >) चर्मपादुका जनिन चरणव्रण, *चर्मरस ।

चमरी, स स्त्री (स) चमरगौ, गिरिप्रिया, दीर्घवाला २ च(चा)मर ३ मञ्जरी ।

चमरीट, स पु (हि चमार) शस्ये चर्म कारभाग ।

चमस, स पु (सं पु न) दे 'चमचा' ।

चमार, स पु (स चर्मकार) चर्मकृत्, चर्मर (पु) २ पादू पादुका-इद कार ३ पादुकासथाव (पु) । [चमारी रिन (स्त्री) = चर्मकारी इ]

चमेली, स स्त्री [स चम्पकवेहि (स्त्री)] (पौधा) मनोहरा, मनोशा, जानी, मालती, सुकुमारा, सुरभि हृद्य, गधा २ (फूल) जाती मालती, पुष्पम् ।

चमोटा, स पु } (हि चाम) धुरतेजनी,
चमोटी, स स्त्री } चर्मपट्टी ।

चय, स पु (सं) समूह गण, राशि (पु) २ सृष्टिकाचय, ध्रुवपर्वत ३ दुर्ग ४ प्रकार, व्रत प्र ५ वेदी दिका ६ चरण पाद, पीठ पीठ ७ गृह-भित्ति, मूल, पोट ।

चयन, स पु (स न) सम्राहण, समाहरण, राशी-एकत्र, करणम् ।

चर, स पु (सं) चार, रपण, प्रलिधि (पु) गूढपुरुष २ मगलग्रह, कुण्ड ३ ह्यपन ४ कपर्दक ।

वि अरिहर, जगम, चल २ प्राणिन्, चेतन, सजीव ।

—अचर, वि, चलाचल, अहङ्गम, स्थावरजगम २ जडचेतन, सजीवनिर्जीव, सप्राणनिष्प्राण ।

चर, स पु (अनु) वल्हादिविदरणध्वनि (पु) चरितिशब्द ।

चरक, स पु (स) सुनिश्चिद २ तत्कृत वैद्यग्रन्थ ३ दे 'चर' (१) । ४ अश्वग, यात्रिन् ५ मिथुन ।

चरकटा, स पु (हि चारा + कारना) यवस पास-कर्क-हेदक । २ धुद्र, नीच, जालम् ।

चरका, स पु (फा चरक) इत्यतः धुद्र, व्रण व्रण २ हानि (स्त्री) ३ छलम् ।

चरित्रा, स पु (फा चर्च) तातवचक, चक्र २ आवापनम् ।

—कातना, कि स, तदूर् वृत् (क प से)-
सञ् (तु प अ), तादवचक्रचलभ्रम् (प्रे) ।
चरञ्जी, स खी (हि चरना) लुचक,
चकी, चकिका ३ ४ दे 'गन्ारी' तथा 'बेलन' ।
चरचर, स (खी) चरचराइन्द,
चरचरायिन २ अर्थ अनर्थक, आलाप,
प्रजल्प पनम् ।
चरचराहट, स खी, दे 'चरचर' ।
चरट, दे 'खनन' ।
चरण, स पु (स पु न) पाद, पद-द,
'पद पाद (पु), वि-क्रम, क्रमण, चलन,
अग्नि (पु) । २ चरण, पद (छन्द)
३ चतुर्थांश ४ गमन, चलन ५ आचार
६ (लृण-) महण ७ अनुष्ठान ८ विहरण
९ स्थल १० सूर्यादि किरण १० क्रम ।
—चिह्न, स पु (सै न) पाद पद, मुद्रा
चिह्न लक्षणम् ।
—दासी, स खी (स) माया, पनी २ उपा
नइ (खी), पादुका ।
—सेवा, स खी (सं) परि-उप, चर्या, शुश्रूषा ।
—छाना, मु, पादयो पत् (भ्वा प से)
चरणौ स्तृश् (तु प अ) ।
चरणामृत, स पु (स न) चरणोदक, पादो
दकम् ।
—लेना, मु, चरणामृत आचम् [भ्वा प से,
आच वा)मति] ।
चरना, कि स (स चरण) यवस लृण दाद
(भ्वा प से)-मक्ष (तु)-मुञ् (क
आ अ), चर् (भ्वा प से) । २ पर्यट्
भ्रम् (भ्वा प से) ।
चरनी, स खी (हि चरना) दे 'नौद' (२)
२ गो-चर प्रचार ।
चरपट, स पु दे 'चपट' ।
चरपरा, वि (अनु) निक, उष्ण, तीव्र, तीक्ष्ण ।
चरवी, स खी (पा) मास, सार-स्नेह,
वपा, वशा सा, मेदस (न) ।
—की शिखी, स खी, (१ २) गर्भ-अत्र,
आवेष्टनम् ।
—चड़ना, मु, दे 'मोटा होना' ।

—छाना, मु, मदाध अतिगर्वित (वि) भू ।
चरम, वि (स) अन्तिम, अन्त्य, परिचम,
अवम ।
—काल, सं पु (सं) निधन मृत्यु, समय
काल ।
—सीमा, सं खी (स) परिनिष्ठा, परमा
वधि (पु) ।
चरवाई, सं खी (हि चरवाना) पशुचारण
मृत्या वेतन २ पशुचारण, गोपालनम् ।
चरवाना, कि प्रे, व 'चरना' के प्रे रूप ।
चरवाहा, सं पु (हि चरना) पशु-गा
चारक पालक पाल रक्षक ।
चरस, स पु (स चर्मन् >) २ चर्म, द्रोणी
सेचनी २ चर्ममय महा, पुट-कोष ३ गज
निर्वास, मादकद्रव्यभेद ।
चरसा, स पु (हि चरस) गोमहिषादे चर्मन्
(न), २ ३ दे 'चरस' (१ २) ।
चरसी, स पु (हि चरस) चरस प
पायिन २ चर्म, सेचक सेकु (पु) ।
चराई, स खी (हि चरना) चरण, यव
लृण, महण २ ३ दे 'चरवाई' (१ २) ।
चराग, दे 'चिराग' ।
चरागान, स पु (फा) दोपोस्तव ।
चरागाह, स खी (फा) गोप्रच(चार) यव
सक्षेत्र, शादल, लृणाइतभूमि (खी) ।
चराचर, वि (स) दे 'चर' के नीचे ।
चराना, कि, प्रे (हि चरना) व 'चरना'
के प्रे रूप २ मुद्बन् (प्रे), प्र-वि-नुम् (प्रे) ।
चरिदा, स पु (फा) लृणमक्षक यवसाद, पशु ।
चरित, स पु (स न) दे 'चरित्र' ।
चरितार्थ, वि (स) कृतार्थ, कृतकृत्य, पूर्ण
मनोरथ, सफल २ उच्यत, योग्य, अनुरूप ।
चरित्र, स पु (स न) आचार, आचरण,
चरित, वृत्त, वृत्ति (खी) चारि-य, शील,
सौजन्य २ स्वभाव, प्रवृत्ति (खी)
३ कार्य, कर्मन् (न), चेहित ४ जीवन-
चरित चरित्र, जीवनी ।
—नायक, सं पु (स) प्रधानपुरुष, चरित्र
नायक ।

चरित्रवान्, वि (सं , वत्) सदाचार, रिन् ,
आचारवत् ।

चरी, स स्त्री (हि चरना) गास, यवस,
स, जवस -स, तुगादिकम् ।

चर्च, स पु (अ) दे 'गिरजा' २ सप्रदाय ।

चर्चरी, स स्त्री (स) गीति भेद २ होलि
कीमव ३ करतलध्वनि (पु) ४ आमोद
प्रमोदा ५ वाद्यभेद ।

चर्चा, स स्त्री (स) चर्च, अभिधान,
आख्यान, कथन, कीर्तन, निर्येश, वर्णन
२ वार्ता, आलाप, स, भाषण कथा, कथाप्रसंग
३ किंवदन्ती, जनप्रवाद, ४ लेपन,
अभ्यञ्जनम् ।

—करना, क्रि स, समाच (भ्वा अ से),
सवद् (भ्वा प से)

चर्चित, वि (स) अभ्यक्त, लिप्त २ विचारित ।

चर्म, स पु (स चर्मन्) दे 'चमटा' ।

—कार, स पु (स) दे 'चमार' ।

—दड पु पु (स) दे 'चाडुक' ।

चर्मी, वि (स चर्मिन्) चर्म, मय निर्मित
मश्विन्, चर्मण्य । स पु चर्मधारि फलकभृद्
शेष ।

चर्च्य, वि (स) गमनीय, गन्तव्य (स्थानादि)
२ आचरणीय, करणीय ।

चर्च्या, स स्त्री (स) कृत्यानुष्ठान, कर्म-यपालन
२ चलन, गमन, ३ आचार, आचरण
४ सेवा ५ आजीविका, वृत्ति (स्त्री) ।

चर्चाना, क्रि अ (भ्लु) चरचरायते (ना धा)
चरचरशब्द कृ २ तप (कर्म), व्यथ् (भ्वा
आ से) ३ अत्यन्त अभिलष् (भ्वा उ से) ।

चर्वण, सं पु (स न) सदशन, दत्ते निष्ये
षण २ चयपदार्थ ३ दे 'चवेना' ।

चर्वणा, स स्त्री (स) चर्वण, दन्तै निष्येषण,
सदशनम् २ रसास्वादन, रमानुभूति (स्त्री)
३ चर्वण दत्त -रद ।

चर्विन्, वि (स) दत्तनिष्यष्ट, सदष्ट ।

चर्व्य, वि (स) चर्वणीय, दन्तै निष्येषणीय ।

स पु (स न) मृष्ट, अत्र धायन् ।

चर्स, स पु, दे 'चरस' ।

चल, वि (स) चर, चरिष्णु, जगम, गमन
शील २ चल, अस्थिर, अधीर । स पु,
शिव २ विष्णु ३ पारद, रस ।

—चलाय, स पु, यात्रा, प्रस्थान, २ महा
प्रस्थान, मृत्यु (पु) ।

—चित्त, वि (स) लोल-अस्थिर चचल,
गति-शुद्धि चित्त ।

—विचल, वि (स) अन्ववस्थित, अक्रम ।

चलता, वि (हि चलना) चलत्-गच्छत्
चरत् (शत्रुत) गतिमत् २ प्रचलित, सर्व
समत ३ समर्थ, शक्तिमत् ४ व्यवहारकुशल,
कार्यशुद्धः [चलती (स्त्री) = चलती, प्रच-
लित इ] ।

चलती, स स्त्री (हि चलना) प्रभाव,
अधिकार ।

चलन, स पु (स चलन) गति (स्त्री),
गमन, यान, प्रस्थान २ रीति (स्त्री), क्रम,
अनुसार ३ व्यवहार, उपयोग, प्रचार ।

—सार, वि निर, स्थायिन्, दीर्घ चिर, काल
स्थायिन् २ प्रचलि (रि) त ।

चलना, क्रि अ (सं चलन) चल-चर्-त्रज
(भ्वा प से), याह (अ प अ), गम्,
२ सक्रिय-सचेष्ट-सगतिक (वि) भू, स्फु-
(तु प से), कप् (भ्वा आ से)
३ सप्त (भ्वा प अ) ४ (पदार्था
पादाभ्यां) चल-चर्-गम् या, परि क्रम् (भ्वा
प से, भ्वा आ अ) ५ प्र, वद् (भ्वा
उ अ), प्र, सु (भ्वा प अ) ६ वा (अ
प अ) वद् ७ प्रवृत् (भ्वा आ से),
स्था (भ्वा प अ) ८ उपयुत्-व्यवह
(कर्म) ९ कलहायते (नर धा), विवद्
(भ्वा आ से) १० सफलीभू, कृतार्थ
कृतकृत्य (वि) भू । सं प, चलन, चरण,
गमन, प्रस्थान, स्फुरण वहन इ ।

चलने बाला, स पु, चलित्-गत् यात् (पु) इ ।

चल पन्ना, सु, प्र, स्था (भ्वा आ अ),
चल-या ।

चल बसना, सु, मृ (तु आ अ), पचव या ।

चले चलना, सु चल-गम् ।

चलनी, स स्त्री, दे 'चलनी' ।

चलवाना, क्रि प्रे, व 'चलना' के प्रे रूप ।

चला, स स्त्री (स) पृथिवी २ दामिनी
३ लक्ष्मी (स्त्री) ।

चलाऊ, वि (हि चलना) दीर्घ चिर,
कालस्थायिन्, इड, स्थिर ।

चलाचल, वि (सं) चपल, चचल, लोळ
२ जडचेतन ३ स्थावरजगम ।

चलाचली, स स्त्री (हि, चलना) प्रस्थान
प्रयाण-त्वा-सभ्रम २ प्रस्थान, प्रयाण, भ्रम,
दान गम ३ प्रस्थान, काल समय ४ प्रया
णोपकल्पनम् ।

च(चा)लान, सं स्त्री पु (हि चलना)
प्रचलन, प्रस्थान, प्रयाण, भ्रम, दान गम
गमन २ प्रचालन, प्रस्थापन, प्रपणणा, प्रया
ण ३ अभियोग्य, अभियुक्त्य अभिभूते
प्रपणम् ।

चलाना, कि स, व 'चलना' के प्रे रूप ।
२ (गोली आदि) लोह, गोलान् गुलिका प्रक्षिप्
विस्तृ (तु प भ) ३ प्रारम्भ (भ्वा आ
अ), प्रवृत्त (प्रे) ।

चलायमान, वि (हि चलना) चल
गच्छत्-सर्पत् (शशत) २ चचल, भरिषट् ।

चलाव, स पु (हि चलना) प्रस्थान, प्रयाण
२ यात्रा ३ रीति (स्त्री), कम ।

चलित, वि (सं) दे 'चलायमान' (१-२)
३ प्रचलित ।

चवली, सं स्त्री [हि चौ (= चार) + आना]
चतुराणी, रुच्य ।

चवर्ग, सं पु (सं) चकारादय पचवर्गा ।

चवाई, स पु (हि औ + वार = इवा)
निदक, भ्रम परि, वादक २ पिशुन, कर्ण
जप ।

चवालीस, वि (स चतुश्चवारिंशत्) । स पु
वक्ता सख्या, तदङ्को (४४) च ।

चवालिसवा, वि, (हि चवालीस) चतुर्थ
वारिंशत्तम (मी मम्) ।

चवम, स स्त्री (फा) नेत्र, नयनम् ।

—दीद, वि (फा) इष्ट, अवलोकित, प्रवक्ष ।

—दीद गवाह, स पु (फा) प्रत्यक्ष, साक्षिन्
दक्षिन् प्रयक्षिन् देव्य ।

चवभा, स पु (फा) दे 'चैनक २ उल्ल,
निर्जर, प्रवर्ण, सोनस् (न) ३ कुष्ठद,
नदी सरित् (स्त्री) ।

चपक, सं पु (सं पु न) मद्यपानपात्रम्,
अनुसर्षण, सरक, गवर्क २ मयु (न) ।

चपण, स पु (सं न) भक्षण, खादनम्
२ हननं, मारणम् ।

चसक, स स्त्री (देश) दे 'कमक' ।

चसकना, कि अ दे 'कसकना' ।

चसका, स पु (सं चपक >) भा, स्वाद,
रस, प्रवृत्ति (स्त्री) अभि, रुचि (स्त्री) ।
डुरा—, व्यसनम् ।

चरपी, वि (फा) लग्न, सरिल्ल ।

चहक, स स्त्री (हि चहकना) वृजन,
भूषित, कलरव, चुकार, रग, विरत विराव ।

चहकना, कि अ (अनु) कृच् (भ्वा प
से), विह (अ प से) ।

चहचहा, सं पु, दे 'चहक' ।

चहचहाना, कि अ (अनु) दे 'चहकना' ।

चहचहाहट, सं स्त्री दे 'चहक' ।

चहचहा, स पु (फा चाह = कृप + हि
वचा) कृपक, जल, कुट भाष्य ।

चहल, स स्त्री (अनु चहचह) आनन्दोत्सव ।

चहलकदमी, सं स्त्री (हि चहल + फा
कदम) विचरणं, विहार, परि, कमर्ण भ्रमण
भटनम् ।

चहल पहल, सं स्त्री (अनु) आनन्द,
उत्सव, उहास, प्र मोद इषं ।

चहारदीवारी, सं स्त्री दे 'चारदीवारी' ।

चौई, वि (देश चई = रुक् जाति) अपह
रणशील, चौर्यवृत्ति । धूर्त, छलिन ।

चौचक्य, स पु (सं न) दे 'चवल्ता' ।

चौटा, सं पु (अनु चट) दे 'चपत' ।

चौटाल, स पु (स) दे 'चटाल' ।

चौटाली, स स्त्री (स) दे 'चटाली' ।

चौद, स पु (स चद) दे 'चद' २ चन्द्र
कलाकार आभूषणभेद, •चद्र ३ मास
४ रुच्य छ, शरव्य । स स्त्री, शिरोऽर्ध,
कपालशिखरं २ शिरोस्थि (न),
कपाल लम् ।

—मारी, स पु, रुच्यवेध, शरव्यनिर्भेद ।

चौदना, स पु (हि चौद) आलोक, प्रकाश
२ दे 'चक्रिना' ।

—पाग, स पु पूत्रेभ्युत्पन्नसित, पद्य ।

चौदनी, स पु (हि चौदना) दे
'चक्रिका' २ दवेतसित, प्रच्छद । ३ गुडो
होव ४ तगराज्य पुष्पम् ।

—चौक, स पु (हि + स चतुष्क) मुख्य
मार्ग, प्रधानदृष्ट, २ दिल्लीनगरस्य प्रधान
दृष्ट, • चक्रिकाचतुष्कम् ।

—रात, स स्त्री, ज्योतिष्मती, ज्योत्स्नी ।
 चौदी, स स्त्री, (हि चाँद) रजत, रूप्य,
 दुवर्ण, श्वेत, कलपीतम् । २ धन, वित्त
 ३ आधिक्यम् ४ दे 'चाँद', (स स्त्री) ।
 —का, वि, रात्र-सौम्य [-तो, -प्यी (स्त्री)]
 रजन-रूप्य, निर्मित-रचित, रजन ।
 —सा, वि, रूप्योपम, रजतवर्ण, अतिधवल ।
 —का जूता, सु, दे 'पूस' ।
 चाँद, वि (स) चाँदमस [-सी (स्त्री)]
 देव [-वी (स्त्री)] चंद्र, सोम ।
 —मास, स पु (स) चंद्र सोम-विषु, मास ।
 —वसर, स पु (स) सौम्य चांद्रिक चाँद
 मस, वर्ष अन्ध-हायन ।
 चाँदमस, वि (स) चाँद, चांद्रिक सौम्य,
 सौमिक (स्त्री चाँदी, चाँद्रीकी, सौम्या,
 सौमिकी) ।
 चाँदायण, स पु (स न) व्रतभेद, इद्रव्रतम् ।
 चौप, स स्त्री (हि चपना) नि, पीठन,
 निर्वह, अतिमार २ प्ररण-गा, प्रबोदना
 ३ लोदनाडी-अग्यल, -हालक ४ चरण
 पाद, शुद्ध ।
 चौपना, क्रि स दे 'दशाना' ।
 चौप्ये चाप्ये चौप्ये चौप्ये, स स्त्री (अनु)
 प्रलाप, प्रलपित, प्रज्वल पित, बाल, भालाप
 भाषणम् ।
 चाक, स पु (फा) विदर, रध, भेद ।
 —करना, क्रि स, विदू (प्रे), छिद्र
 (र प अ) ।
 चाक, स पु (अ) खनी, खटिका, कठिनी ।
 चाक, वि (तु) सबल, स्वस्थ, दृढतनु ।
 —चौबद, वि, दृष्टपुष्ट, पुष्टाग [गी (स्त्री)]
 २ अतद्र, क्षिप्रकारिन्, लघु ।
 चाक स पु (स चक्र) कुलाल-कुम्भकार
 चक्रि-चक्र २ रथाग, मडल इ द 'गडारी
 ४ पथगचक्र, पेशणीपाषाण ५ शाग-नी ।
 चारुचक्र, वि (तु चाक) सुदृढ, सुरक्षित,
 दुग्म ।
 चाचक्य, स स्त्री (स न) भामा, प्रभा,
 दृति कान्ति (स्त्री) २ सौन्दर्य, शोभा ।
 चाकना, क्रि स (हि चाक) रेखाभि-परिवृ
 परिवेष्ट (प्रे)
 चाकर, स पु (फा) किकर, दास, सेवक ।

चाकरानी, सं स्त्री (फा चाकर) दासो,
 सेविका ।
 चाकरी, स स्त्री (फा चाकर) सेवा,
 परिचर्या ।
 चाकसू, स पु (स चक्षुष्या) कुलाली,
 (अरण्य) कुलथिका, लोचनहिता, दूक
 प्रसादा । २ चक्षुष्यावीजम् ।
 चाकी, स स्त्री (हि पाक) दे 'चकी' ।
 चाकू, स पु (फा) दुरिका, कृपाणिका अस्ति,
 पुत्रिका, धेनुका, शस्त्री, शस्त्रिका ।
 चाक्षुष, वि (स) नेत्र-संबधिन् विषयक
 २ चक्षुर-नेत्र-ग्राह्य ।
 चाचर, स पु (स चचरी) चचरीका,
 चाचरि, स स्त्री (राग-गीति-भेद) २ होलि
 कोत्सव ३ आमोदप्रमोदा ४ उपद्रव,
 क्षोभ, कलह ।
 चाचा, स पु (स तात >) पितृय, पितृ
 सोदर २ (छोटा) सुततान ।
 चाची, स स्त्री (हि चाचा) पितृया,
 पितृव्यपत्नी ।
 चाट, स स्त्री (हि चाटना) स्वादलोत्पन्ना,
 रसलालसा २ दे 'चसका' २ लात्सा,
 उत्कटाभिलाष ४ दे 'भादत' ५ अव-उप,
 दश, -यजनम् ।
 —लेना, दे 'चाटना' ।
 चाटना, क्रि स (अनु चपट) अव-भा
 परिस, लिहू (अ उ अ) २ अस-लत्
 (भ्वा आ से) ।
 चाणी, स स्त्री (देश) मथनी, गारो, दधि
 मथनपाषम् ।
 चाट्ट, स पु (सं पु न,) चाट्टिकि (स्त्री),
 चाट्टवाद, प्रिय मधुर-वचन, मिथ्या, प्रशंसा
 सस्ताव-स्तव-स्तुति (स्त्री), उपहासनम् ।
 —कार, स पु (स) मिथ्याप्रकारक, चाट्ट
 वादिन् ।
 —कारी, स स्त्री (स चाटकार >) चाट्ट
 वादिन्व, सात्ववादित्व, दे 'चाट्ट' ।
 चाणक्य, स पु (स) कोटिल्य, विष्णुगुप्त,
 द्रोमिण, अनुल, चंद्रगुप्तमौर्यैरदामात्य,
 चणकात्मज ।
 घातक, स पु (स) नेप-नीवन, गोचक,
 स्तोत्रक, सा(शा)र्य ।

चानकानन्दन, स पु (स) मेष, जलद,
वारिद ° प्रावृष (स्त्री) मेवागम,
वर्णकाल ।

चातुरी, स स्त्री (स) दे 'चतुरता' ।

चातुर्य, स पु (म न) दे 'चतुरता' ।

चादर, स स्त्री (फा) दे 'चदर' ।

चाप, स पु (स) धनुष् (न), इन्वास
२ अर्द्धवृत्तम् (गणित) ।

चाप, स स्त्री दे 'चाप' (१, ४) ।

चापट, स स्त्री (स चपट >) कठिन
कोकस भूमि (स्त्री) । वि, समतल सपाट ।

चापना, कि स, दे 'दवाना' ।

चापलम्, स पु (फा) दे 'चाडुकार' ।

चापलूसी, स स्त्री (फा) दे 'चाडुकारी' ।

चापना, कि स, दे 'चवाना' ।

चाषी भी, स स्त्री (हि चाप - दवाय)
माषारणी, कूचिका, तालिका, ताली, कुचिका,
अकृष्ट, उद्घाटक ।

—चैना, कि स, कुचिका आ परि वृत् (प्रे)
कुचकुच (भ्वा प से) ।

चावुक, स पु (फा) अश्वनाटनी कशा पा,
प्रतिष्कश ष, प्रतोद ।

—मारना, कि स कशया तट जुद्धद्व(सु) ।

—सवार, स पु, वागिबिनेत (पु), अश्व
शिक्षक ।

चाम, स पु [स चमन् (न)] दे 'चमटा' ।

चामर, स पु (स पु न) चमर, चामरा री ।

चामीकर, स पु (स न) सुवर्ण २ धुस्तर ।

चाय, स स्त्री (चीनी चा), चा, चविका ।

—पानी, पु स्त्री जलपान, भ्वापान, अल्प
स्लोक आहार कल्पवर्त ।

चार, वि (स चतुर) [सदा बहु चत्वार
(पु) चतस्र (स्त्री) चत्वारि (न)] ।
२ अनेक बहु ३ कतिपय । स पु, उक्ता
मरया तदबोधको अत्र (४) च ।

—रा समूह, चतुष्टय यी, चतुश्चम् ।

—कोना, वि चतुष्कोण, चतुरस्र ष ।

—खाना, वि विभ, वगित । स पु, वगित
चित्रिन वक्षम् ।

—गुना, वि, चतुर्गुण गित ।

—दीवारी, स स्त्री, नम्र प्र, वरण, प्राकार ।

—प्रकार से, कि वि, चतुर्धा, प्रकारचतुष्टयेन ।

—वार, कि वि, चतु (अव्य), चतुर्वारम् ।

—औख, मु समागम, समिलनम् ।

—आदमी, मु, जन ना, लोक का ।

—दिन की चौदनी, मु क्षणिकमुखम्, नभरा
नन्द ।

चारज, स पु (अ चानं) कार्यभार, उतर
दायित्व, २ रक्षण, अवेषा ।

चारजामा, स पु (फा) दे 'जोन' ।

चारण, स पु (स) च(व)दिन्, मागध,
वैतालिक, स्तुतिपाठक, सस्तावक ।

चारपाई, स स्त्री (स चतुष्पाद >) खटवा,
मचिका, पर्यकिका ।

—पर पड़ना, मु, व्याधित-रोगग्रस्त(वि)
भू ।

चारवाक, स पु (स चारवां) अनीश्वर
वादी आचार्यविशेष ।

चारा, सं पु (हि चरना) दे 'चरी' ।

चारा, स पु (फा) उपचार उपाय, प्रति
(टी) कार ।

—जोई, स स्त्री (फा) अभियोग, व्यवहार ।

—जोई करना, कि स, राजकुले निविद्
(प्रे), अभियुज (रु आ अ चु) ।

चारित्र, स पु (स न) चारित्र्यम्, चरित्रम्,
वृत्त, चरित्रम्, दे 'चरित्र' ।

चारु, वि (स) सुदर, मनो-हर रम, रुचिकर ।

चारों तरफ, कि वि, चतुर्दिश, समताद,
समतत, परित, सर्वत्र ।

चाल, स स्त्री (स चाल >) गमन, चलन,
स्पन्दन, स्फुरण, सरण २ प्र, गति (स्त्री),

चार, गमनप्रकार ३ आचार, व्यवहार
४ उपाय, युक्ति (स्त्री) ५ छल, कपट

६ विधि (पु), प्रकार ७ रीति (स्त्री),
सप्रदाय ८ पर्याय, वार, परिश्रुति (स्त्री) ।

—चलन, स पु, चरित्र, आचरण, वृत्त,
आचार ।

—वाल, स स्त्री, आचार, चरित्रम् ।

—बाज़, वि (हि न फा) मायाविन्, वाप
टिक ।

—बाज़ी, स स्त्री, कपट, माया, वचन ना ।

—चलना, मु, वच् (लु), व्यासुद् (प्रे) ।

—में आना, मु, वच्-व्यासुद्, विप्रम् (कर्म) ।

चालना, कि स, दे 'छानना' ।

चालनी, स स्त्री (स) दे 'छलनी' ।

चाला, स पु (स चाल >) प्रस्थान, गमन
२ यात्रामुहूर्त नवोदाया प्रथमवार पतिगृहे
तत पितृगृहे वा गमनम् ।

चालाक, वि (फा) धूर्त, मायिक २ निपुण,
दक्ष ।

चालाकी, स स्त्री (फा) धूर्तता, कापट्य
२ नैपुण्य, चातुर्यम् ।

चालान, स पु दे, 'चलान' ।

चालीस, वि (स चत्वारिंशत्) । स पु-
उत्ता सरया, तद्व्योषकावकी (४०) च ।

चालीसवां, वि (हिं चालीस) चत्वारिंश
[शी (स्त्री)] चत्वारिंशत्तम [मी (स्त्री)] ।

चालीसा, सं पु (हिं चालीस) चत्वारिं
शत्पदार्थसमूह २ चत्वारिंशद् दिवसा
वर्षाणि वा ३ चत्वारिंशत्पद्यात्मकग्रन्थ ।

चाव, स पु (हिं चाव) अभिलाष, लालसा,
उन्मत्तच्छा २ अनुराग, प्रेमन् (पु न)
३ अभिरुचि (स्त्री) ४ उरसाह ५ लालनम् ।
—चोचला, स पु, उप, लालन, परिष्कार ।

—निकालना, मु, अभिलाष इच्छा पूर (बु)
निवृत् (प्रे)

चावही, स स्त्री दे 'पटाव' ।

चावल, स पु (स तडुल) धान्यास्थि (न),
पाच्य शालि, सार दे 'धान', 'मात' २
गुणाया अष्टमभागमित तोल ।

—का धोवन, स पु, तण्डुलोदकम्, तण्डु
लोदकम् ।

चाशनी, स स्त्री (फा) गुह-सिता शर्करा,
रस २ दे 'चसका' ।

चाह, स स्त्री (स इच्छा) दे 'चाव' (१ २) ।
३ भादर, प्रतिष्ठा ४ आवश्यकता, प्रयो
जनम् ।

चाहता, वि (हिं चाह) दयित, प्रिय, कात ।

चाहना, क्रि स (हिं चाह) अभिलष (भ्वा
दि प से), इप् (तु प से), इच्-कम्
(भ्वा आ से, कामयते), (सप्रत या
'-काम' से भी अनुवाद करते हैं, उ वृद् जाना
चाहता है - स गतुकाम अथवा जिगमिषति)
२ छिह (दि प से), अनुरज् (कर्म),
अनुरागवद्-भोहित (वि) भू ३ प्र, यत्
(भ्वा आ से,) ४ दे 'हूँदना' ।

स स्त्री, अभिलाष, इच्छा, अनुराग, स्नेह,
आवश्यकता इ ।

चाहनेयोग्य, वि, अभिलषितव्य, स्पृणोय,
दयित, प्रिय इ ।

चाहनेवाला, वि, इच्छु-च्छुक, अभिलाषिन्,
अनुरागिन्, स्नेहिन् ।

चाहिप, अव्य (हिं-चाहना) उचित,
व्ययुक्त, न्याय्य । (तय, अनीय, प्यत् आदि
से भी इसका अनुवाद करते हैं, उ करना
चाहिए-कर्तव्य करणीय, कार्य इ) ।

चाही, वि (फा चाह) कूप, सिक सवधिन् ।

चाहे, अव्य (इह चाहना) यथाकाम, यथा
भिलाष, स्वैर, स्वच्छद २ वा, अथवा, यदा ।

चिउँटा, स पु (हिं चिमटना) पिपीलक,
पीलक ।

चिउँटी, स स्त्री (हिं चिउँटा) (पु) पिपील,
पीलक, पिपीलिक । [पिपीली, पिपीलका
(स्त्री)] ।

—की चाल, मु, मद-मपर, गति (स्त्री) ।

—के पर निकलना, मु, आसन्नमृत्यु, निधनो
न्मुत् ।

चिघाह, सं स्त्री (स चीत्कार) वृहित
२ महानाद, तुमुलध्वनि (पु) ।

चिघाहना, क्रि अ (हिं चिघाड) वृद्-
(भ्वा प से), २ उच्चै नद (भ्वा प से) ।

चिघा, स स्त्री (स) अभिलका, चित्ति (डी)
का २ अभिलका चिघा, फलम् ३ रक्ता, गुजा ।

चिंतक, वि (स) विचारक, विवेचक, ध्यातु ।
स पु (स) तत्त्वज्ञ, दार्शनिक ।

चिंतन, स पु (स न) चिन्तना, ध्यान,
स्मरण २ विचारण, विवेचनम् ।

चिन्तनीय, वि (हिं) चिन्ताप्रद, उद्देगकर
(स्त्री स्त्री), २ ध्येय, भावनीय ३ विचार्य,
विवेचनीय ।

चिन्ता, स स्त्री (स) उद्देग, औत्सुक्य,
व्यग्रता, रणरणक, आकुलता, उत्कर्षिका,
मनस्ताप २ आ, ध्यान चिन्तनम् ।

—आतुर, वि (स) सचिन्, चिन्तित, चिन्ता
मग्न, उद्विग्न, व्याकुल ।

—जनक, वि, चिन्ता-आकुलता, प्रद-उद्गावक ।

—मणि, स पुं (स) स्वर्णमणि ।

चितित, वि (स) दे 'चितातुर' २ विचारित, ध्यात ।

चिरय, वि (स) दे 'चिननीय' (२३)

चिद्दी, स स्त्री (देश) दृष्ट, लव ।

चिपात्री, सं पु (अ) मकीकामहाद्रीपरय वनमानुषभेद ।

चिक, स स्त्री (तु चिक) तिरस्कारिणी, प्रतिसीर, व्यवधा, व्यवधान, आवरण, मासिक, विशसिद्ध, शौ (सौ) निक ।

चिक, स पु (अ चिक) देवादेश ।

चिक, सं स्त्री (अनु) आकाशिकी कटि व्यथा ।

चिकन, स पु (फा) कामिकवस्त्रभेद, चिकणम् ।

चिकना, वि (स चिकण) तैलमय (—यो स्त्री), तैलाक्त, तैल, युक्त वच् २ स्निग्ध, मसुण, शृङ्गा ३ परिष्कृत, सस्कृत ४ पिच्छिल, मेदुर ५ सम, सपाट । [चिकनी (स्त्री) चिकणा ३] ।

—घडा, स पु, निर्लज्ज अपत्रप, मनुष्य ।

—मिठी, स स्त्री, श्रुतिका, मृद (स्त्री) ।

—नुपदी घातें करना, मु, चाडुवादै वच् (नु)—प्रतृ (प्रे) ।

चिकनाई, स स्त्री (हि चिकना) चिकणता, स्निग्धता, शृङ्गता २ समता, सपाटना ३ घृतादय स्निग्धपदार्था ।

चिकनापन, सं पु } (हि चिकना) दे
चिकनाहट म स्त्री } चिकनाइ (१२) ।

चिकित्सक, सं पु (स) वैद्य, पक, रोग, हृत् हारिन् (पु), अगदवार, भिषज् (पु) ।

चिकित्सा, स स्त्री (स) औषध, उपचार, उपक्रम, रोगप्रतीकार २ वैद्यक ३ औषध, भेषजम् ।

चाकरसालय, स पुं (स) आतुरालय ।

चिकुटी, स स्त्री, दे 'चुटकी' ।

चिकुर, स पु (स) वेना, मूर्धज, शिरसिज २ पर्वत ३ बाह्यमार्ग, दे 'गिल्हरी' ।

चिक्कण, वि (स) दे 'चिकना' ।

चिक्कुरी, स स्त्री (स चिकुर >), 'गिल्हरी' ।

चिक्की, स स्त्री (देश) पशुयुका, वोटभेद ।

चिक्किदा, स स्त्री (स चिक्कि) अक्षिपला, दोषपला, सुदीर्घ, गृहदलव ।

चिट, स स्त्री (स चित्र >) पत्रखट्ट २ वखदाकल लम् ।

—मधोस, स पु (हि + फा) लेखक, काय स्थ, लिपिकर ।

चिटकना, कि अ (अनु) स्फुट् (तु प सु) दृभजभिद् (कर्म) २ सचिटचिटशब्द ज्वल् (भ्वा प से) ३ दे 'खोशना' ।

चिटकाना, कि स, व 'चिटकना' के प्रे रूप ।

चिट्टा, वि (स सित) दवेत, शुद्ध, धवल २ दे 'रुपवा' ।

चिट्टा, सं पु (हि चिन्) आयव्यय देवा देय, षजि (स्त्री)—पञ्जीपजिका, दे 'बही खाना' २ न्ययसूची ३ सूची ४ लाभालाभ हानिलाभ, पत्रम् ।

वच्चा—, स पु, गुह्य गुप्त, वृत्तान्त ।

चिट्टी, स स्त्री (हि चिट्टा), (सदेश—) पत्र, लख रय २ लिखित पत्रखट्ट ३ प्रमा पत्र ४ ५ आडा निमत्रण, पत्रम् ।

—पत्री, स स्त्री, पत्रव्यहार, पत्र, विनिमय सवाद ।

—रसो, स पु (हि + फा) पत्रवाह इक, लेखहार रक ।

चिद्, स स्त्री दे 'चिद' ।

चिदचिदा, वि (हि चिदचिदाना) शीघ्र कोपिन्, सुलभकोप, कोपन, कोपन ।

चिदचिदाना, कि अ (अनु) शब्द कुप् रूप् (दि प से)—कृष (दि प अ), सतपूडिश् (कर्म) ।

चिदचिदाहट, स स्त्री (हि चिदचिदाना) सुलभकोपता, दुर्मेतापित, कोपनता ।

चिदवा, स पुं (स चिपिद) चिपन्, पशुक, चिपि (पु) ट्ट टक ।

चिदा, स पु (स चटक) कल्बिक ग, गृहनीक, चित्रदृष्ट, कामुक ।

चिद्धिपा, स स्त्री (हि चिदा) पक्षिन्, रत्न, २ क्रीडापशरभेद ३ दे 'चिद्दी' ।

—घर, स पु, अन्वागार, प्राणिशाला २ पक्षि शाला, पजरम् ।

चिद्दी, स स्त्री (हि चिदा) चट(टि)त्रा, चटववा, कल्बिको-नी २ ३ दे 'चिद्धिपा' (१२) ।

—का चरचा, सं पु, चाटवैर ।

- की बच्ची, सं स्त्री, नन्का ।
 —मार, स पुं, जालिक, शाकुनिक, लुम्भक, पक्षिमाहक ।
 चिद, म स्त्री (हि रिडचिदाना) घृणा, अहनि (स्त्री), जुगुप्सा, विद्वेष ।
 चिदना, कि अ, दे 'रिडचिदाना' ।
 चिदाना, कि स, व 'रिडचिदाना' केप्रे रूप ।
 चित्त, स पुं (स चित्त) मानसम् ।
 —चोर, स पु, मनोहर रिताकर्षक
 > प्रिय, दयित, वां ।
 —टना या लगाना, मु, अवहित (वि) भू, अवधा (जु उ अ) ।
 —म उतरना, मु, रिमृ (कर्म) द 'भूटना' ।
 चित्त, वि (स चित्त >) उत्तान, उत्तान अववृष्ट, शय शायिन् ।
 —करना, मु, (शशु महनुद) अववृष्टशायिन्
 वृ विजि (स्वा आ अ) ।
 —होना, मु, मूर्च्छ (स्वा प से) ।
 चित्त, वि (म >) उत्तान, ऊर्ध्वास्यशयित ।
 चित्तस्वरा, रि (स चित्त + कर्तुर >) चित्त, कर्तुर, चित्रविचित्र, कर्तुरित, चित्त, शबल, चित्रांग (गी स्त्री) ।
 चित्त्या, रि दे 'चित्तस्वरा' ।
 चित्तयन, स स्त्री (हि चेतना) दृक् नयन दृष्टि, पात, भावोक्ति, वीक्षित, २ वटाशु, अर्पांगदृष्टि (स्त्री), नयनापांत सात्रि, विद्या कितम् ।
 चित्ता, म स्त्री (म) चित्त्या, चित्तीति (स्त्री), चित्त्य, चेत्य, चित्ताचूर्णक, वाद्यमठी ।
 —भूमि, सं स्त्री (म) दमशान, चित् वन काननम् ।
 —साधन, म पु (म न) दमशाने मयानुष्ठानम् ।
 चित्ताना, कि स (हि चेतना) (पूर्व प्रार) प्रदुर् (प्रे) अनुगाम् (अ प स), उप दिशु (तु प अ) > अनु, स्मृ (प्रे), उद् अनु-उप् (प्रे) ।
 चित्तावनी, स स्त्री, दे 'चेतावनी' ।
 चित्तेरा, स पुं [स चित्रक(कार)] चित्रक, रत्नवीरक, रंजक, मत्सार, चित्र, लयक कुर (पुं), भाषेसक, तौलिक ।

- चित्तेरी रिन्, स स्त्री (हि चित्तेरा) चित्र, करी-लभिका, तौलिकी २ चित्रकारपत्नी ।
 चित्त, स पुं (स न) अत-करण, चेतन मनस् इद (न), हृदय, मानस २ धी बुद्धि मति (स्त्री), प्रज्ञा, शेषुषी ३ अवधान, मनोयोग, अवेशा ४ स्मृति (स्त्री), धारणा ।
 —उद्वेक, स पुं (स) गर्व, दर्प, मद, अहंकार, अहमान ।
 —चित्तेप, स पुं (स) मनश्चांचस्य, मन द्योम ।
 —विध्वंस, स पुं (स) चित्तन्यामोह, मनोभ्रान्ति (स्त्री) २ उन्माद ।
 —वृत्ति, स स्त्री (स) मनो-गति वृत्ति (स्त्री), चित्तारथा ।
 —करना, मु, अभिलप् (स्वा प से), इप (तु प से) ।
 चित्त, स स्त्री (स) बुद्धि (स्त्री) प्रज्ञा २ चित्तनम् ३ स्याति (स्त्री) ४ कर्मन् (न) ५ मक्ति (स्त्री) ६ प्रयोजनम् ।
 चित्ती, स स्त्री (स चित्र <) विदु (पुं), अज, चिद २ चित्रा, चित्रसर्व ३ ह्यन, चिद-अंक्र ।
 —दर, वि (हि + दा) विदुचिदित, चित्र ।
 चित्र, स पुं (सं न) प्रति-वृत्ति (स्त्री) -उदर च्याया-रूप, आलय्य, प्रतिमा । वि, कर्तुर, शबल, विप्रियवर्ण ।
 —कला, स स्त्री दे 'चित्रकारी' ।
 —कार, स पुं (स) दे 'चित्तेरा' ।
 —कारी, स स्त्री (स चित्रकार <) चित्र, कला क्रिया कर्मन् (न) विद्या २ आपिन, लयनम् ।
 —मय, वि (सं) सचित्र, चित्रशुल, चित्राविन ।
 —वत्, वि (स) चित्र आलय्य, तुल्य मम सदृश २ चित्रात्, स्तम्भ, स्थिर ।
 —विचित्र, वि (स) शक्य, कर्तुर, बहुरंग ।
 —शाया, स स्त्री (स) आलेख्य, शाला भवनम् ।
 चित्रक, स पुं (स) चित्र, वाय, स्यात्, मृगान्तक, धुद्रशार्दूल, उपव्याय, २ दे 'चित्तेरा' ।
 चित्रशूट, सं पुं (सं) पर्वतविशेष ।

चित्रगुप्त, स पु (स) यमल्लेखक ।
 चित्रा, स स्त्री (स) चतुर्दशमक्षत्र । वि,
 कर्तुर, शबल ।
 चिथदा, स पु (हि चीथना) चीर,
 चीवर कर्पट, नक्तक ।
 चिनक, स स्त्री (हि चिनगी) सदाहा पीडा
 २ मूत्रनाड्या पीडा ।
 चिनगारी, स स्त्री (स चूर्ण + अगार >)
 क्षुद्रागार २ अग्नि ज्वलन, कण-कणिका,
 वि, स्फुलिंग-गंगा ।
 चिनगी, स स्त्री (हि चिनगारी) दे 'चिन
 गारी चपलबाल ।
 चिनाई, स स्त्री (हि चिनना) इष्टका
 चयन । २ ३ भित्ति गृह, निर्माणम् ।
 चिन्मय, वि (स) ज्ञानमय । स पु परमे
 श्वर ।
 चिन्ह, स पु दे 'चिह्न' ।
 चिन्हित, वि, दे 'चिह्नित' ।
 चिपकना, कि अ (अनु चिपचिप) सडिलष्
 (द्वि प अ), सल्गु (भ्वा प से)
 अनु आ म-सज (कर्म) ।
 चिपकना, कि स, व, 'चिपकना' के प्रे रूप ।
 चिपचिप, स स्त्री (अनु) चिपचिपशब्द ।
 चिपचिपा, वि (अनु) श्यान, सांद्र, मलम्र
 शील ।
 चिपचिपाना, कि अ (अनु चिपचिप)
 सल्गुशील सांद्र(वि)भू २ दे 'चिपकना' ।
 चिपचिपाहट, स स्त्री (हि चिपचिपाना)
 मलम्रशीलता, श्यानता सांद्रता ।
 चिपटना, कि अ (स चिपिट) दे, 'चिप
 कना' २ आलिंग (भ्वा प से) परि
 स्वन (भ्वा आ अ) ।
 चिपटा, वि (स चिपिट <) अनुग्रह, समरेख,
 सम समस्थ, सपाट ।
 चिपटाना वि स, व 'चिपटना' के प्र रूप ।
 चिबुक, स पु (स चितु(बु)क) दे 'ठीठी' ।
 चिमटना, कि अ (हि चिपटना) दे 'चिप
 टना' (१२) ।
 चिमटा, स पु (हि चिमटना) सद्दश
 शक, वक मुद्रा बदनम् ।
 चिमटाना, कि स, व 'चिपटना' के प्र रूप ।

चिमटी, स स्त्री (हि चिमटा) सदशिका,
 लघु, ककमुख खम् ।
 चिमड़ा, वि, दे 'लचीला' ।
 चिमनी, स स्त्री (भं) धूम, नाली-रश्म
 २ अग्निकुण्ड, चुट्टी फिल (स्त्री) ।
 चिरजीव, वि (स) दीर्घ-चिर, जीविन्
 आयुम् = दीर्घायु मव ।
 चिरत्तन, वि (स) चिरत्तन [-नी (स्त्री)],
 पुरातन [-नी (स्त्री)] प्राचीन, प्राक्तन
 [-नी (स्त्री)] ।
 चिर, वि (स) दीर्घ-चिर, कालिक-कालेन
 २ चिरकाल-दीर्घकाल, स्थायिन् ३ दे 'चिर
 तन' ।
 —काल, स पु (स) दीर्घसमय, महान्
 काल ।
 —कालिक, —कालीन, वि (स) दे
 'चिरतन' । (रोग) अविसर्गिन्, कालिक,
 दीर्घस्थायिन् ।
 —जीवी, वि (स-विन्) दे 'चिरजीव' ।
 —स्थायी, वि (स-विन्) दीर्घकाल, भुव,
 स्थिर, अशीघ्रनाशिन् ।
 चिरकना, कि अ (अनु०) अल्प-रतोक्त इद
 (भ्वा आ अ) २ अमहत् अ-पमल लम्पुन्
 (तु प अ) ।
 चिरकुट, (स चीरम्) दे 'चिथटा' ।
 चिरचिरा, वि, दे 'चिह्नचिडा' ।
 चिरत्त, वि (स) पुराण, पुरातन, प्रान,
 प्रल ।
 चिरना, कि अ (स चीर्ण >) स्फुट (तु
 प से), विदू विभिद भज् (कर्म) ।
 चिरवाई, स स्त्री (हि चिरवाना) विद्वलन,
 विदारण, विपाग्न, २ विग्नरण वेतन मृदा ।
 चिरवाना, कि प्र, व 'चीरना' के प्रे रूप ।
 चिराहता, स पु, दे 'चिरायता' ।
 चिराई, स स्त्री (हि चिराना) दे 'चिरवाई' ।
 चिराग, स पु (का चिराग) दीप, दीपक ।
 —दान, स पु, दीप आधार वृक्ष ।
 चिराना वि प्रे, व 'चीरना' के प्रे रूप ।
 चिरायँध, स स्त्री (स चर्म ध) चर्मसादि
 ज्वलनगण, दुर पूति-नाथ ।
 चिरायता, स पु (स चिरानिक) भूनिव,
 सु, निषक, विरायक ।

चिरायु, वि (सं चिरायुस्) दे 'चिरजीव'
(१)।

चिरौंजी, सं स्त्री (सं चारवीज >) (वृश्च)
चार, चारक, खरस्कप, बहुवक्त्रक, प्रियाल
२ तस्य फल ३ सद्बीजगर्भ ।

चिलक, स स्त्री, दे १ 'चमक' २ 'टीस' ।

चिलकना, कि आ, दे 'चमकना' २ दे
'टीस मारना' ।

चिलगोज्ञा, स पु (फा) जलगोजक, निको
चक, चारुफल, सकोचम् ।

चिलम, स स्त्री (फा) धूमपानचषक ।

चिलमची, स स्त्री (फा) हस्तधावनी कर
छालनी ।

चिलमन, स स्त्री (फा) दे 'चिक' (१) ।

चिल्लपो, स स्त्री (हिं चिल्लाना + अनु)
कोलाहल, उक्रोश, वि रात्र, कलकल ।

चिल्ला, स पु (फा) चत्वारिंशदिवसात्मक
काल २ चत्वारिंशदिवसत्रयम् ।

चिल्ला, स पु (देश) ज्या, मौर्वी, प्रत्येचा,
धनुर्गुण ।

—चदाना, कि म, चाप अभिज्य कृ, धनुवि
मौर्वी आरुह (प्रे आरोपयति) ।

चिल्लाना, कि अ (अनु चिलचिल) कल
कल मोनाहल कृ, वि, क (अ प से),
उत्क्रुम् (म्वा प से) २ शीत्वार कृ, उच्चै
आक्रद् (म्वा आ से) ३ दे 'रोना' ।

चिल्लाहट, स स्त्री (हिं चिल्लाना) दे
'चिल्लपो' ।

चिल्लिका, स स्त्री (स) चिल्ली, शिल्ली,
शुद्धारी २ शाकराज, रावशाक ३ विद्युत्
तडित् (स्त्री) ।

चिह्न स पु (स न.) लक्षण, लाञ्छन,
लिग अभिधान, अक ।

चिह्नित, वि (स) अकित, स, चिह्न लक्षण
लाञ्छन ।

चींगा, स पु, दे 'चिउटा' ।

चीटी, स स्त्री, दे 'चिउटी' ।

चीकट, स स्त्री (हिं कीचट) तैलमल, दे
'तलछट' । वि, तैलमय [यी (स्त्री)] ।

चीर, स स्त्री (स चीकार) उक्रोश,
आक्रदित, उच्च-कक्रश, रव-रात्र ।

चीखना, कि स (सं चषण) दे 'चषना' ।

चीखना, कि अ (सं ची करण) दे 'चिलाना' ।

(२) उच्चै बदलप (म्वा प से) ।

चीज, स स्त्री (फा) वस्तु (न), द्रव्य,
पदार्थ ।

—वस्तु, स स्त्री (फा + सं) वस्तुनात,
सामग्री २ गृहोपस्कर २ आभूषणादिकम् ।

चीङ्ग, स पु (स चीज) दारुभा,
महस्या, भूतमारी, गन्धद्रव्यभेद २ चीरपर्ण
शाल, सर्ज, दीर्घशाख (वृश्च) ।

चीतल, वि, (स चित्रल) दे 'नितकवरा' ।

स पु, चित्रमृग २ चित्रसर्प, अजगरभेद ।

चीता, स पु (स चित्रक) दे 'चित्रक' ।

चीता, वि (हिं चेतना) विचारित, चिंतित ।

चीत्कार, स पु (स) दे 'चीत' २ दे
'चिल्लपो' ।

चीथडा, स पु, दे 'चिथला' ।

चीथना, कि स (स चांग >) दे 'काटना'
तथा 'पीसना' ।

चीन, स पु (स) देशविशेष २ अबुशभेद
३ मृगभेद ।

चीनी, वि (स चीन) चीन, वामिन्
सवधिन्, चैन । स स्त्री, मिना, गुहा ।

चीपड, स पु (अनु चिप) दूषो वि (स्त्री),
दूषिका, पिचोडक, पिज(जे)ट नेत्रमलम् ।

चीफ, स पु (अ) पुरोग, प्रधानपुरुष,
नायक, अध्यक्ष : वि, प्रधान, मुख्य, अष्ट,
विशिष्ट ।

—एडिटर, स पु (अ) मुख्य प्रधान,
सम्पादक ।

—कमिश्नर, स पु (अ) मुख्ययुक्त ।

—कोर्ट, स पु (अ) मुख्य-वायालय ।

—जज, स पु (अ) मुख्य-वायाधीश ।

—जस्टिस, स पु (अ) मुख्य-वायाधिपति ।

चीमड, वि (हिं चमडा) दे 'लचीला' ।

चीर, स पु (स न) जीर्णवस्त्रकट्टी,
कर्पट, नक्तन, चीवर २ वसन, बख ३ वृष
त्वन् (स्त्री) ४ मुनि, भिष्ठ वक्त्रम् ।

चीर, स पु (हिं चीरना) दीर्घ, छद भेद
स्फोट मिदा ।

—काद, स स्त्री, अगच्छेद, च्यच्छेद ।

चीरना, कि स (स चीर्णं) क्लृप्तेन छिद्
(रू प अ)-द् (क प से, प्र)-पट (जु)
२ विशु (क प से) रद् (जु), मिद्
(रू प अ) । स पुं, विदारण, छेदन,
भेदन, स्फोटनम् ।

चीरने वाला, स पु, विदारक, छेदक इ ।
चीरा हुआ, वि, विदारित, छेदित, भेदित,
चोर्ण विदीर्ण ।

—फाड़ना, स पु, अगच्छेदन, भ्यवच्छेदनम् ।

चीरा, स पु (हिं चीरना) शब्द, उप
चार-उपाय कर्मन् (न)-क्रिया २ ङण, णम् ।

—देना, कि स, श्लेषेण उपचर (भा प
से)-साध (प्रे) ।

चीरां, स पु (स चीर >) चिशोभीष ष,
चीरम् ।

चीर्ण, वि (स) विदारित, छेदित, दीर्ण
२ अनुष्ठित-कृत, सम्पारित ।

—पर्ण, स पु (स) खजूर, डरारोहा,
यवनेष्टा २ निम्ब, अरिष्ट, तिक्तक ।

चीट, स स्त्री (स चिट्) चिक्ला, आतापित्,
शकुनि (पुं), कंठनीडक, चिरभण,
सकाण्ड ।

—का मूत, सु, दुर्लभ-अप्राप्य, वस्तु (न) ।

चीबर, स पु (स न) दे 'चीर' (१, २ ५) ।

चीस, स स्त्री, दे 'टीस' ।

चुराल, स पु दे 'चगुल' ।

चुरी, स स्त्री (हिं चुगल) नगर, चर
दुक्क ष २ किंचिमात्र-अल्पपरिमाणं वस्तु
(न) ।

—खाना, स पु, शुचशाला ।

चुचुना, स पुं, दे 'चुनचुना' ।

चुंधला, स पु (हिं चुंधलना) निमेषक,
निर्मालक ।

चुंधलाना, कि अ (हिं चो चार + स अथ >)
चाकचन्देन अल्पद मद् ईषद इश् (भा प
अ), इण (भा आ से), नेत्रनेत्र प्रतिहृन्
(कर्म) ।

चुधा, वि (हिं चो + स अथ >) ईषदथ, मद्
इष्टि २ चिट्, पिह ३ दे 'चुंधला' ५ क्षुद्र
मयन ।

चुधियाना, कि अ, दे 'चुंधलाना' ।

चुंधक, स पुं (स) निसक, चुवित् निसित्
[-त्री (स्त्री)] २ कामुक, लपट ३ धूर्त
४ चुंबक, प्रस्तर मणि (पु) लोह, कांत
चुम्बक, अयस्कांत, अयोमणि ।

चुंधन, स पुं (स न) चुम्बना २ निसम,
अधरपानम् ।

चुंधा, स स्त्री (स) दे 'चुम्बन' ।

चुंधित, वि (स) निसित, ओष्ठसृष्ट २ ललित
३ सृष्ट ।

चुंधी, वि (स चुवित्) चुम्बक, निसक
२ स्पर्शक, स्पर्शित् । (प्राय समाप्तानि मे,
उ गगनचुम्बी इ) ।

चुकदर, स पुं (फा) क दभेद ।

चुकता, वि (हिं चुकना) समाप्त, निशेष ।

चुकती, स स्त्री (हिं चुकना) समाप्ति अव
सिति (स्त्री) ।

चुकना, कि अ (स च्युत् + कृ >) पूर समाप्
अवसो (कर्म अवसाययते), अतः-समाप्ति गम्,
निष् सपद (दि भा अ) । २ दे 'चूकना' ।

चुकाना, कि स (हिं चुकना) ऋण दा
शुष् (प्रे) २ (विवाद) प्र शम् (प्रे, शम
यति), स समाधा (जु उ अ) इ स
निष् पद (प्रे), सपूर (जु) अवसो (प्रे,
अवसाययति) ।

चुकौता, स पु (हिं चुपना) ऋण परि
शोध शुद्धि (स्त्री) २ सं समा धान
३ निर्धारण, णा, निश्चय ।

चुक, स पु (स न) तित्ठीक, वृष्टाम्,
महाम्ल, चुक्क २ दे 'काजी' इ अम्लता ।

चुगना, कि स (स चयन) चच्चा आदा
(जु आ अ) > ग्रह (क प से) मध (जु)
२ चच्चा प्रह (भा प अ) > अभिहृन् (अ
प अ) । स पुं, चच्चा आदान ग्रहणं
गुडेन प्रहरणम् ।

चुगलखोर, स पु (फा) पिपुन, पृथमासा,
परोक्षे निद्रक-परिवाहपर, कर्णेजप ।

चुगलखोरी, स स्त्री (फा) चुगलखोर) वैश्याय,
पिपुनना, परोक्ष, निद्रा परिवाद, उपजाप ।

चुगली, स स्त्री (फा) दे 'चुगलखोरी' ।
करना या खाना, कि स, परोक्षे पृष्ठत
निद्र अथवा अप-परि-वद (दोनो भा प
से) > अधि-आ शिप् (हु प अ) ।

चुगवाना, कि प्रे, व 'जुगना' के प्रे रूप ।
 चुगा, चुग्गा, स पु (हि चुगना) खग,
 पक्षि भक्ष्य-वृद्धन् ।
 चुगारं, स स्त्री (हि चुगाना) चव्वा
 आदापन-आप्राह २ तस्य भृत्या वेतन वा ।
 चुगाना, कि सन्, व 'जुगना' के प्रे रूप ।
 पश्चिम्य अन्नकगान् विकृ (तु प से) ।
 चुचाना, कि अ दे 'त्यचना' ।
 चुटकला, स पु दे 'चुटकल' ।
 चुटकी, स स्त्री (अनु चुट चुट) छोटिका,
 मु(त्)जुगी २ अगुणीपीठन २ चरणांगुलीयकम् ।
 —बजाना, मु, छोटिकां कृ अथवा दा ।
 —बजाते, मुन्, आगु, द्राक, सपदि, सघ
 (सब अथ) ।
 —भर, मु अत्यल्प किञ्चिन्मादन् ।
 —भरना, मु, छोटिकया पीठ (चु) ।
 चुटकियों में उठाना, मु, सुकर-माधारण
 परिहाममिव मन् (दि आ अ) ।
 —लेना, मु, अव-उप हस (म्वा प से) ।
 चुटकुला, म पु (हि चुटकी) नर्मन् (न),
 परिहाम-नर्म-वाच्य-उक्ति (स्त्री)-आला-
 मापण २ अमोघ विद्विष्ट योग-वक्ष्य ।
 चुटिया, स स्त्री, दे 'बोगे' ।
 चुट्टीला, } वि (हि चोट) आहन, मणित,
 चुट्टेला, } शत ।
 चुडिहारा, स पु (हि चूडी) चूडाहार,
 बल्दविकायन् २ चूडा-वक्षण कार ।
 चुडैल स स्त्री (स चूडा >) पिराचो चिका,
 शकिनी, शकिनी, भूतमायां, प्रेवपत्नी,
 २ कुरुपिणी, अरती, स्यविरा ३ चडी,
 बोपनी करा (नारी) ।
 चुनचुना, स पु । (हि चुनचुनाना) विट
 चुनचुनी, स स्त्री । उदर-भूमि-गुणकीटक ।
 चुनचुनाना, कि अ (अनु) तीक्ष्णव्यथा
 अनुभू व्यप (म्वा आ से), तप (कर्म) ।
 चुनट-त, } स स्त्री (स चूग >) वल, मा पुट-
 चुनन, } भगी गि (स्त्री), कर्मि (स्त्री) ।
 चुनना, कि स (स जुण् तथा चि) (पूजादि)
 जुण् (तु प से), वि (स्वा उ अ), आदा
 (जु आ अ), उदृष्ट समाह (म्वा प
 अ), छिद् (रु प अ) २ पृथक् कृ, उदृष्ट

(क प से) उदृष्ट । ३ वृ (स्वा उ से),
 नियुज् (रु आ अ चु), निरूप् (चु),
 निधृ ४ यथाक्रम रच (चु)-स्था (चु स्थाप
 यति) ५ अलकृ, मड (चु) ६ (दीवारादि)
 निर्मा (जु आ अ, प्रे निर्मापयति),
 विरच (चु) । स पु, चयन, उद्वरण, पृथक्
 करण, वरण, यथास्थान स्थापन, अलकरण,
 निर्मा १ । दे 'जुनाह' ।
 चुनने योग्य, वि, चैय, ममाहार्य, उदग्राह्य वर-
 णीय स्थाप्य, अलकार्य, निर्मेय १ ।
 चुनने बाला, स पु, चैव, समाहर्तृ, वरित्,
 पृथक्कर्तृ १ (सब पु) ।
 चुना हुआ, वि, चित, समाहित, श्रुत, रचित
 २ श्रेष्ठ उत्तम ।
 चुनरी, स स्त्री (स चूग >) चित्र-शुद्ध
 कर्तु-वखन् ।
 चुनवीं, वि (हि चुनना) श्रुत, अभीष्ट चित
 २ उत्तम, श्रेष्ठ ।
 चुनवाना, चुनाना, कि प्रे, व 'जुनना' के
 प्रे रूप ।
 चुनाई, स स्त्री (हि चुनना) दे 'जुनना'
 स पु २ कुब्ज-मिष्टि, निर्मा ३ चयन,
 वेतन-भृत्या ।
 चुनाव, स पु (हि चुनना) चिति-समाहृति
 (स्त्री), उदग्राह, उकार (२) श्रुति-व्यक्
 कृति (स्त्री), निर्धारणम् ।
 चुनावट, स स्त्री, दे 'जुनट' ।
 चुनिदा, वि (फा चुनीदा) दे 'जुनवीं' ।
 चुनौटी, स स्त्री (हि चूना) चूर्णपुत्र ।
 चुनौती, स स्त्री (हि चुनना) समर,
 आह्वान, अभिग्रह २ उच्छेदन उदीपन,
 उत्थापनम् ।
 चुष्टत-त म, स स्त्री, दे 'जुन' ।
 चुडी, स स्त्री (स चूर्ण >) शुद्ध, माणिक्य
 पद्मराग २ रत्न, रत्न-लव, रत्नक ३ अत्र,
 वण-वर्णिका ४ काष्ठचूर्णम् ।
 चुडी, स स्त्री, दे 'जुनरी' ।
 चुप, वि (स जुप् निश्चन्द रमन् >)
 अवाक, निश्चन्द, नीरव, मौनिन्, तूष्णीक,
 अनालापिन् । स स्त्री, नीरवता, दे 'जुप्ती'
 २ नित्यव्यथा ।

—करना या होना, कि अ, वाचयम् (भ्वा प अ) निरर्थ (क उ अ) मौन आकल् (चु) भज (भ्वा उ अ) ।

—रहना, कि अ, मौन तूष्णीं गोप भास् (अ आ से) रथा (भ्वा प अ) ।

—चाप, कि, वि, जोष, तूष्णीं, निशब्द, मौन २ गुप्त गूह, निश्चत, प्रच्छन्नम् ।

सुपका, वि (हिं सुप) दे 'सुप' (वि) ।

सुपके से, कि वि, दे 'सुपचाप' ।

सुपकी, स स्त्री (हिं सुप) दे 'सुप्पी' ।

सुपहना, कि स (अनु चिपचिप) अज (क प से), उप, दिह (ज प अ) लिप (तु प अ), अनु आ वि २ दोष गृह् (भ्वा उ से)-प्रच्छद् (चु) ३ दे 'सुशामद करना' । स पु, अजन, उपदेहन, लेपनम् ६ ।

सुपदा, वि (हिं सुपहना) (घृतादिभि) उपलिप्त, अभ्यक्त, दिग्घ ।

सुप्पा, वि (हिं सुप) वाचयम्, अल्प मित, भाषित वाच्यत ।

सुप्पी, स स्त्री (हिं सुप) नि शब्दता, नीरवता, मौन, तूष्णींभाव २ नि स्तम्भता, निश्चलता, निश्चेष्टता ।

सुभकी, स स्त्री दे 'डुवकी' ।

सुभना, कि अ (अनु) सलग् (भ्वा प से), सञ् (कर्म), अनु आ स, सलग्नी-ससत्तीभू, व्यध् निमित् (कर्म) ।

सुभना, सुभोना, कि स (हिं सुभना) व्यध् (वि प अ), निमित् (क प अ), तुद् (तु प अ) नि प्र विश् (प्रे) । स पुं, वेध धन, छेद-दन, निर्भेद दनम् ।

सुभानेवाला, स पुं, वेधक, छेदक, निर्भेदक ६ ।

सुभकार, स स्त्री (हिं सुभना-सं कार >) चुचुकार, चुवनध्वनि (पु) ।

सुभकारना, कि स (हिं सुभकार) सचु चुकार उपल्-उपच्छद् (चु) ।

सुचुता, वि दे 'सुचुरा' ।

सुर(९)त्, सं पु, दे 'सिगात्' ।

सुसुर, सं पु (अनु) सुसुराशब्द ।

सुसुरा, वि (हिं सुसुर) भङ्ग, भिङ्ग, भिदेलिम् ।

सुरवाना, कि प्र, (१-२) व 'सुराना' तथा 'पकाना' के प्रे रूप ।

सुराना, कि स (स चोरण) सुरस्वन् (चु), अपह (भ्वा प अ), मुष (क प से) २ गूह (भ्वा उ से), प्रच्छद् (चु) । स पु, चोरण, मोषण, अपहरण गूहन, प्रच्छदन, दे 'चोरी' ।

सुराने योग्य, वि, चोरयितव्य, मोषणीय ।

सुराने वाला, स पु, दे 'चोर' ।

चिच सुराना, मु, मनो ह (भ्वा प अ), वि परि मुह (प्रे) ।

सुरि, सुरी, स स्त्री (स) धूपक, घातक, लघु, वृष-अवट ।

सुल, स स्त्री, दे 'सुजली' ।

सुलबुल, म स्त्री (अनु) दे 'चवलता' ।

सुलबुला, वि (पूर्व) दे 'चचल्' तथा 'नटगट' ।

सुलबुलाना, कि अ (पूर्व) चपल्-चचल् (वि) भू ।

सुलबुलापन, सं पु } दे 'चचलता' ।
सुलबुलाहट, स स्त्री }

सुलाना, कि स, व 'टपकना' के प्र रूप ।

सुलाव, स पु, अमास निर्मास, -ओदन-नम् ।

सुली, स स्त्री (स) दे 'सुल्हा' २ चिता ।

सुल्ल, स पु (स चुलक) सुहक, अजलि (पु), चटक, गह्वप वा ।

—भर, वि चुलक-चुलक, मात्र, अजलि गह्व, मात्र (जन्नादि) ।

—भर पानी में डूब मरना, मु, अत्यत लज्ज (तु आ से)-ग्रप् (भ्वा आ वे) ।

सुवाना, कि, स, व 'टपकना' के प्रे रूप ।

सुसकी, स स्त्री (हिं सुसना) गह्व, चुलक, चुलक २ ईश्व शनै शनै, पान ३ तमारुधूमकर्म ।

सुसनी, स स्त्री, दे 'सूसनी' ।

सुसवाना, कि प्र, } व 'सूना' के प्रे रूप ।
सुसाना, कि प्रे }

सुस्त, वि (फा) उपगिन्, उपोगिन्, शिपका रिन्, स्फुनिमद २ जागल्क, दक्ष ३ आत्पर्य शैथिल्य, शल्य, सुसहत् ३ शृङ्गा, सरल ।

—चालाक, वि, दशानलस, चतुरालम् ।

सुस्ता, सं पुं (फा) अजमेवशावकानां आमा शय २ मलाशय ३ दे 'सिलवट' ।

बुस्ती, सं स्त्री (फा चुस्न) क्षिप्रकारिता, स्फूर्ति (स्त्री), उद्यम, उद्योग ३ शैथिल्या भाव, सुप्ताहति (स्त्री) ३ दृढता, सत्कल्या ।
 बुहबुहाना, कि अ (अनु) दे 'बुहबुहाना' २ रमवत् दीप् (दि आ से)-प्रकाश (भ्वा आ से) ।
 बुहबुहो, स स्त्री (अनु) पुल्लबुहो, *बुहबुहो, कृष्णचटकामेद- पुल्लशिविनी ।
 बुहल, स स्त्री (अनु बुहबुह >) हास्य, परिहास, विनोद, कौतुक, प्रमोद, विलास, मनोरंजनम् ।
 बुहिया, स स्त्री (हि बूहा) गरिका, बालमूषिका, ध्रुव मूषक आसु (पु) २ दे 'बूही' ।
 बुहुटना, कि. अ, तथा वि दे 'चिपकना' तथा 'चिपचिदा' ।
 चूँ, स पु (अनु) चुकार, चुकति (स्त्री) ।
 —चा, सं पु दे 'चूंचरा' ।
 —करना, सु, किमपि वद् (भ्वा प से) २ विरुद्ध वद् अथवा प्रतिवद् ।
 चूँकी, अन्य (फा) यत्, यत्, यत्मात्, हि ।
 चूँगी, स स्त्री, दे 'चुणी' ।
 चूँचरा, स पु (फा) प्रतिवाद प्रत्यास्थान, विरोध २ आपत्ति (स्त्री), अपवाद ३ व्याज, मिषम् ।
 चूँचूँ, सं स्त्री, (अनु) चुकार, चुकति (स्त्री), चाटकेरशब्द २ कलरव, विरुद्ध ३ चूँचूँ शब्द ४ कौटनकमेद ।
 चूक, सं स्त्री (हि चुकना) अपराध, स्खलित, दोष, प्रमाद २ मार्गभ्रम, अति क्रम ।
 चूक, स पु (स चुक) अम्ल २ अम्ल द्रव्यमेद ३ चुकक चुकिका, अम्लशाकमेद । वि, अस्थम्ल, अतिशुक्त ।
 चूकना, कि अ (स च्युत् क >) अपराध (दि, स्व प अ), स्खल (भ्वा प से), प्रमाद (दि प से, प्रमाद्यति) २ लक्ष्णात् सत्पथात् भ्रम (भ्वा आ से)-भ्रम (दि प से) ३ सदवसर या (प्रे थापयति)-अतिवह (प्रे) ।
 चूका, सं पु, दे 'चुक' (३) ।
 चूको, सं स्त्री (सं चूको) चुचुक, चुचुक,

कुचाय, कुचानन, स्तनवृत्त २ स्तन, कुच, पयोपर ।
 —पीना, सु लन स्तन्य पा (भ्वा प से) ।
 चूजा, स पु (फा) कुकुटशाव बक । वि, अल्पवयस्क ।
 चूडात, सं पु (सं) चरम, सोमा-अवधि (पु) अ, अत्यधिक, अत्यन्त वि, परम, गाल, डकरट ।
 चूडा, स स्त्री (सं) शिखा, जु (जू) टिका, केशपाशी २ मयूरशिखा ३ शिपर, भय ४ कूप, ५ चूडावरणसंस्कार । सं पु (सं स्त्री) बलय य, ककण २ बलयावली, चूडावली ।
 —करण, स पु (स न) चूडाकर्म मुढन, मस्कार ।
 —मणि, सं पु (सं) शिरोरत्न, शीर्षपुल्लम् । २ प्रधान, अग्रगण्य ३ गुणा ।
 चूडी, स स्त्री (स चूडा) बलय य, कस् भूषण, कौशुकम् ।
 —दार, वि, (हि + फा) पुटीकृत, बलीयुत, मकुचित ।
 चूडिया पहनना, सु, शीव आचर् (भ्वा प से) ।
 चूत, स पु (स) रसाल, आम्र, कोकिलो त्सव २ (स न) अपान न, गुद, च्युति डुलि (स्त्री) । (हि) योनि (स्त्री) मग, नारीयुधम् ।
 चूतक, स पु (सं चूत >) नितब, कटि(टी)-प्रोथ, म्फिच चा (स्त्री), पूल, पूलक, स्थिक ।
 चून, स पु (स चूर्ण) दे 'आटा' तथा 'चूना' ।
 चूनर री, स स्त्री, दे 'चुनरी' ।
 चूना, स पु (स चूर्ण णं) चूर्णकम् ।
 चूने का पानी, सं पु चूर्णकजल, चूर्णोदकम् ।
 —दानी, स स्त्री, चूर्णोदानी, चूर्णोदक ।
 अनुचा—, अशान्तचूर्णकम् ।
 बुसा—, शान्तचूर्णकम् ।
 चूने की मट्टी, स स्त्री, चूर्ण, आपाक पाकपुटी ।
 चूना, कि अ (स च्यवन) दे 'टपकना' । वि, सच्छिद्र, खुदित, सरभ्र ।
 चूनी, स स्त्री (स चूर्णिका) धान्य-अन्न, कण पी गिका २ रत्न मणि, कण-कणिका ।
 चूम्ना, कि स (सं चुबन) (मुख) चुब् (भ्वा प से), निस् (अ आ से) २ ओष्ठा-

भ्यां स्तृस् (तु प अ) ३ (भोट) अथर
अथररसे पा (भ्वा प अ) ४ (सिर) शिर
आ-उपा समा प्रा (भ्वा प अ) । सं पु,
चुवन, निसन, अथरपान, शीर्षाणम् ।

चूमने योग्य, वि, चुवनीय, निसितव्य ।

चूमने चाला, सं पु, चुंक्क, चुबिन्, निसक,
निसितृ (पु) ।

चूमा हुआ, वि दे 'चुम्बिन ।

—चाटना, सु, ल्प, लल् (चु) चुव ।

चूमा, सं पु, चुवन, चुव-वा ।

—चाटी, स स्त्री, विलास, विदार, कीडा ।

चूर, स पु (स चूर्णं णं) क्षोद, पिष्टं, रज्जम
(न), कणा-कणिका अणव ल्ना (बहु) ।

वि, मत्त, लीन, परायण, अभिनि नि, विष्ट
२ मत्त, क्षीब, मदीन्मत्त ३ श्रांत, सिध्र,
क्षाल ।

—चूर, वि, चूर्णित, पिष्ट, धुण्ण ।

चूरन, स पु (स चूर्णं णं) दे 'चूर्ण' २ चूर्ण,
अभिवर्द्धक पात्रक, चूर्णम् ।

चूरमा, स पु (स चूर्णं णं) मिष्टान्नभेद,
मिष्टचूर्णं ।

चूरा, सं पु (स चूर्णं णं) क्षोद, पिष्ट । दे
'चूर' (स पु) ।

—करना, कि सं, चूर्ण (चु), चूर्णीक, पिप
क्षुद् (र प अ) ।

चूर्ण, सं पु (स पु न) क्षोद, पिष्ट २ दे
'चूरन' ३ रज्जम् (न), धूलि- (स्त्री) ।

—कुंतल, सं पु (सं) अलक, कुरल ।

चूर्णक, सं पु (स) श्टपिष्टान्नम् २ सक्तुक,
श्टपयचूर्णम् । (स न) सुगन्धि-सुगन्धित,
चूर्णम् २ कट्टवर्णरहितम् अल्पसमासयुक्त
गद्यम् ।

—चूर्णन स पु (म न) वेपण, मर्दनं,
रबनम् ।

चूर्णित, वि (सं) पिष्ट, धुण्ण, चूर्णीभूत ।

चूल्, सं पु (स चूल्) वेश, शिखा ।

चूल्, म स्त्री (देव) दिवर्तनकील २ बाहायम् ।

चूल् दीली होना, मु, अत्यत हम्-आयम्
(भ्वा दि प से)-खिद् (दि आ अ)-
धम् (दि प से) ।

चूल्हा, सं पु [स-चुल्ही हि (स्त्री)]
अति (दि) का, अधिश्रयणी,
चूल्ही, स स्त्री उदधान, उष्मान, अदमन,
अदमतक-कम् ।

चूसना, कि स (स चूपण) आ, चूप (भ्वा
प से), पा (भ्वा प अ) २ उच्छुप् (प्रे),
आ-नी पा (भ्वा प अ) । स पु, चोषणं,
चोष, उच्छोषणम् ।

चूसने योग्य, वि, चूप्य, चोष्य, उच्छोष्य ।
चूसनी, सं स्त्री (हि चूसना) चोषणी,
कीटनकभेद २ चूचुकवती काचकूपी २ चोष
णयष्टि (स्त्री) ।

चूल्हा, स पु, दे 'भगी' ।

चूल्ही, स स्त्री, दे 'भगन' ।

चूहा, स पु (अनु चू) आरु उद(द्रोह
(पु), पनक, विलेशय, मूप (पि, शी) क,
मूष, मूषिकार ।

—दन्ती, सं स्त्री, नकणभेद, मूषदती ।

—दान, —दानी, सं पु, सं स्त्री, मूषपिजर,
मूषकपजर रम् ।

—मार, स पु, मूषमार ५ श्येन, लगानक ।
चूही, सं स्त्री (हि चूहा) मूषा, मूषिका ।
२ दे 'चुहिया' ।

चेंचला, स पु (अनु चेंचें) पक्षिशाव-वक ।
चेंचें, स स्त्री, दे (अनु) चुवार, चुवति
(स्त्री) २ प्र, जल्प जल्पितम् ।

चेंवर, स पु (अ) कीष्ट, वक्षा, शाला
२ समागृहम् २ परिषद (स्त्री) ।

चेंवर, स स्त्री (अ) दे 'जुसी' ।

—मेन मेन, स पु (अं) प्रधान, समा,
पति अघ्यस ।

चेक, स पु (अ) देयादेश २ दे 'जगराना' ।
चेचक, स स्त्री (का) मसूरी रिका, वसतरोग,
शीतला स्त्री ।

चेट, सं पु (स) दास, सेवक २, पति, मर्ह ।
२ भट विदूषक ।

चेटक, सं स (स) चेट, दास २ जार,
जपति ३ इन्द्रनाल, माया २ सदेहर,
दूत ५ दे 'चसका' ।

चेटी, सं स्त्री (सं) दासी, सेविना, परिचारिका ।

चेत, स पु [सं चेतम् (न)] चेतना, चैन-य,
सशावेदन २ चान, बोध ३ अवधान, साध
धानता ४ स्मरण, स्मृति (स्त्री) ५ चित्तम् ।

चेतन, सं पु (स) आत्मन् (पु), जीव
२ मनुष्य ३ प्राणिन्, जीवधारिन् ४ परमे-
श्वर ५ मनस् (न), चित्त्त्वं । वि, चेतनावद्,
चेनोमद्, प्राण, धारिन् मृद्, जीविन्, सजीव ।
चेतनता, स स्त्री, (स) सजीवता, चेनोमत्ता,
दे 'चेतना' ।

चेतना, स स्त्री (स) मद्या, चैनन्य २ ज्ञान,
बोध ३ स्मृति (स्त्री) ४ मनोवृत्ति (स्त्री) ।
कि अ, सजा-चेतना लभ् (स्वा आ अ)
आ प्रति पद् (दि आ अ), प्रकृति आपद्,
प्रकृतिस्य (वि) भू २ सावधान अवहित
(वि) भू ।

चेतावनी, स स्त्री (हि चेतना) प्राक्-पूर्व,
मूचना प्रतिबोध उपदेश ।

चेप, स पु (अनु चिपचिप) निर्यास, रस
२ श्यान साद्र, वस्तु (न) ३ दूष्य, पूष-य,
पूर्यत्, कुम्भन् ।

—दार, वि (हि + क्रा) निर्यासमय [-यी
(स्त्री)] २ श्यान, साद्र ३ सपूय ।

चेला, स पु (सं चैक >) शिष्य, अन्ते
वासिन्, छात्र, विद्यार्थिन् २ अनुयायिन् ।

—मूँदना, मु, वनी (स्वा प अ), दीक्ष
(स्वा आ से) दीक्षा दा (ञु उ अ) ।

चेलिन्, चेली, स स्त्री (हि चेल) शिष्या,
अन्तेवासिनी, छात्रा, विद्यार्थिनी २ अनु-
यायिनी ।

चेष्टा, स स्त्री (स) कायिकव्यापार, चेष्टित,
हस्तादिचालन, शक्ति, अगविक्षेप २ उद्योग,
प्रयत्न ३ कार्य, कर्मन् (न) ४ परिश्रम ।

चेस, स पु (अ) दे 'जगरज' ।

चेहरा, स पु (फा) आनन, मुख, वदन
२ पुरो-अङ्ग, भाग ३ कष्ट हस्त, सुख-वदनन् ।

—माहरा, स पु, आकार, आकृति (स्त्री),
रूपन् ।

—उतरना, मु, मुख-वदन, मलानि (स्त्री) -
म्लानता-वान्तिशय-विवर्णता ।

—विगादना, मु, अत्यधिक नष्ट (चु) -प्रद
(स्वा प अ) ।

—(रे) पर हवाह्वयो उदना, मु मयादिभि-
वैषम्ये विवर्णता ।

चैक, स पु, दे 'चैक' ।

चैन, सं पु (सं चैत्र) चैत्र (वि) क्र, चैत्रि-
(पु) चैत्रिन्, मधु (पु) २ चैत्रशस्यन् ।
चेतन्य, स पु (स न) आत्मन् (पु),
जीवार्मन् २ ज्ञान, बोध ३ परमेश्वर
४ प्रकृति (स्त्री) । वि, चेतनावद्, सजीव
५ सावधान, अवहित ।

चेत्य, स पु (स न) गृह, मवन, समन्
(न) २ मन्दिर ३ यज्ञशाला । (सं पु)
शुद्ध २ शुद्धमूर्ति (स्त्री) ३ अव्यत्यवृष्ट
४ बौद्धमिथु (पु) ५ मिथुविहार ।

चैत्र, म पु (स) दे 'चैत' २ बौद्धमिथुक
३ यज्ञभूमि (स्त्री) ४ मन्दिरन् । वि, चित्रा,
सवधिन् विषयक

चैन, स पु (स गयन >) सुप्त, सौर्य,
सुस्थता, आनन्द, मोद, विश्राम, निर्वृति
(स्त्री) ।

—उद्वाना या करना, मु, सानन्द-सुख जीव
(स्वा प से), मु (स्वा आ से), नद
(स्वा प से) ।

—पदना, मु, सुख-निर्वृति लभ् (स्वा आ-
अ) ।

चौंच, स स्त्री [स चचु-चु (स्त्री)] त्रयो टि-
(स्त्री), शुद्ध, चचुका, सपाटिका । २ मुखन् ।
चौंचला, स पु, दे 'चौंचल' ।

चोभा, सं पु (हि जुआना) गध, गार्धिक,
गधद्रव्यन् ।

चौकर, स पु (हि चून = आटा + करारं =
छिलका) कडगर, तुष, धान्यत्वच् (स्त्री),
पुमन् ।

चोखा, वि (स चोख) शुद्ध, केवल, पवित्र
२ शुचि शुद्धात्मन् ३ तीक्ष्ण, निश्चित ४ दे-
'भरता' ५ उत्कृष्ट, उत्तम ।

चोगा, स पु (हि जुगना) खगखाद्य,
पश्चिमस्य, विहगाशनन् ।

चोगा, स पु (गु) चचुक, प्रावार-रक ।

चोचला, स पु (हि चौंच) विभ्रम,
विडास, ललितामिनय, लोला, हाव ।

चोज, स पु (हि चौंच) सुमाषिन्,
वैदग्ध्य, नर्मात्मा २ हास्य, परिहास ।

घोट, स स्त्री (स जुट = काटना >) अग्नि आ-
निर्-धात, प्रहार, आहति (स्त्री), ताडन
पात । २ मण प, क्षन ३ ज्ञानि-शक्तिः

(स्त्री) ४ वेदना, मनोव्यथा ५ निग्रम
विषाम-पात भग ६ सत्यग्यो विवाद ।
—करना, कि स, प्रहृ (भ्वा प अ), शि
(स्वा प अ), तुद् (तु प अ) आहन्
(अ प अ) ।
—खाना, कि अ, आहन् प्रहृ तुद् (कर्म) ।
—पर चोट, मु, सतताघाता, प्रहारपरपरा,
२ कत्र त्वपत्, परपरा ।
चोटा, स पु (हि चोआ) मत्स्यखोरस ।
चोटी, स स्त्री (स चूडा) जु(ज)टिका,
शिखा, शिखट-चक २ शिखर, शृग, सानु
(पु, न) अग्र शिखा मूर्धन् (पु)
३ शिखट, शिखर ४ वेणीबधनसूत्र ५ वेणी,
रज्जु (स्त्री) ।
—का मु, अग्रय, अग्रगण्य, उत्तम श्रेष्ठ ।
चोटीदार, वि (हि + फा) शिखावत्, सानुमद
२ सूच्याकार, शकाकृति ।
चोहा, स पु, दे 'चोर' ।
चोव, स स्त्री (फा) पटमडप स्थानु स्थूणा
२ यष्टि (स्त्री) दट ।
—चीनी, स स्त्री, काठीषधभेद ।
—दार, स पु (फा) वेद-दट यष्टि धर
पाणि (पु)-हस्त २ दावारिह, दटपाशुल
३ रक्ष-दट, पुरुष ।
चोया, स पु, दे 'चोआ' ।
चोर, स पु (स) चौर, कुभीर(ल)क,
कुभीर, कैागारिक, दस्कर, दस्तु, प(पा)-
द्वार, परास्कदि (पु), मोषक, स्तेन ।
—खिडकी, स स्त्री, पक्षदार, पक्षकम् ।
—घकार, स पुं, दे 'चोर' ।
दरवाजा, स पु, प्रच्छन्न-अनर गुप्त-गुप्त दारम् ।
—सीढ़ी, स स्त्री, उप-प्रच्छन्न-गुप्त सोपानम् ।
चोरटा, स पु, दे 'चोर' (चोरटी, स्त्री) ।
चोरी, स स्त्री (हि चोर), मोषण, अपह
रण २ चौर्य, चो(चो)टिका, चोरण स्तेय
स्तेय, मोष ।
—करना, कि स, दे 'नुराना' ।
—का माल, स पु, चोरित अपहृत-मुठित,
द्रव्यम् ।
—चोरी, कि वि, अप्रकाश, निवृत्त, रहस
(सत्र अव्य) ।

—यारी, स स्त्री, निदितकर्मन् (न), पापम् ।
—से, कि वि, अलक्षित, प्रच्छन्नम् ।
चोल, स पु (स) दक्षिणपथे प्रातविशष
चोला २ तत्रत्य जन ३ ४ दे 'चोला
चोली' ५ कवच ६ बलकलम् ।
चोला, स पु (स चोल) लव, कुर्पासक
युतक २ दे 'चोली' ३ कचुक, प्रावार
रक ४ नावूलकरक ५ शरीरम् ।
—छोड़ना, मु, तनु त्यन् (भ्वा प अ) ।
—चदलना, मु, देहानर प्राप (स्वा उ अ)
प्रेत्य भू ।
चोली, स स्त्री (स) चोल्क, चोट-की
व(कु)तुली लिका, कचुक, कुर्पासक कम् ।
२ दे 'चोला' (१) ।
—दामन का साथ, मु, प्रगाढ, सरय सौराई
मित्रता प्रणय ।
चोषण, स पु (स न) चूषण, चूषा, चोर
२ स्तन स्तय झीर, पानम् ।
चोष्य, वि (स) चूषणीय, चूष्य ।
चौक, स स्त्री (हि चौ + स कप), (आश्रमिक)
कप पन, साध्वसात्वप, सहसा स्फुरणम् ।
—उठना या पढ़ना, कि अ, सहसा कप
स्पद् (भ्वा आ से)-स्फुर (तु प से) ।
चौकना, कि अ (हि चौक) दे 'चौक
उठना' २ सहसा अवबुध् (दि आ अ)
जागृ (अ प से) ३ वि रिम (भ्वा आ
अ)-आश्रयचकित (वि) भू ।
चौकाना, वि स, व 'चौकना' के प्रे रूप ।
चौतरा, स पु, दे 'चदूतरा' ।
चौतीस, वि (स चतुस्त्रिंशत्) स पु, उका
सरया, तदोधनाकी (१४) च ।
चौती(वि)सठौ, वि, (हि चौतीस) चतुस्त्रिं
शत्तम मीम, चतुस्त्रिंश शी शम् ।
चौध, स स्त्री, दे 'चकाचौध' ।
चौधियाना, कि अ, दे 'चुधलाना' ।
चौर, स पुं (स चामर) चमरम् ।
चौररी, स स्त्री (हि चौर) अवचूक-व
रोमगुच्छ २ दे 'चमरी' ।
चौसठ, वि (स चतुषष्टि स्त्री) स पुं,
उका सरया, तदोधनाकी (६४) च ।
चौसठवाँ, वि (हि चौसठ) चतुषष्टिनम
मीम, चतुषष्ट षोष्ट (पु स्त्री न) ।

चौ—, वि (स चतुर) केवल समास के आदि में ।

—कोना—कोर, वि, दे 'चारकोना' ।

—सूँठ, ष पु, चतुर्दश, दिकचतुष्टय यो २ भूमण्ड, पृथिवी । कि वि, दे 'चारों तरफ' ।

—सूँठ, वि, दे 'चारकोना' ।

—गिर, क्रि वि, दे 'चारों तरफ' ।

—गुना, वि चतुर्गुण गण, चतुर्गुणित ता तम्

—पत, वि चतुर्पु, चतुर आवृत्त आवर्तित

—पहल, वि, चतुर्भुज चतुष्पाद चतुर्बाहु ।

—पहियर वि, चतुश्चक्र । स स्त्री, चतुश्चक्र वाहनम् ।

—नासा, स पु, चतुर्मांस, वर्षा (स्त्री षट्) प्राण्य (स्त्री) ।

—सुरा, वि, चतुर्मुख, चतुरानन । स पु, ब्रह्मन् (पु) ।

—राहा स पु, चतुष्पथ ५, चतुष्कम् ।

—हरी, स स्त्री, सीमाचतुष्टय-यो ।

चौक, स पु (स चतुष्क) प्रवण, चतुष्पथ ५, शगाटक, सस्थान । २ सुरय प्रधान, आपण निगम इष्ट ३ अजिर, अग्न ५, चक्र २ ५ चतुरस्रवेदि (स्त्री) ५ पुरोवर्तिदत्तचतुष्टयम् ।

चौकड़ी, स स्त्री (हि चौ = चार + स कला = अग >) प्लुत नि (स्त्री) बलानम् । २ नरचतुष्टय यो ३ चतुरद्व वाहनम् ।

—भरना, क्रि अ, बल् (स्वा प से), वरप्नु (स्वा आ अ) ।

चढाल—, स स्त्री, चढाल-दुष्ट, चतुर्धो, भूतं, मटल मढली ।

भूलना, मु, विकर्तव्यविमूढ (वि), नन् (णि आ से), आकुली भू ।

चौकना, वि (हि चौ-चार + स कर्ण >) अवहित, सावधान, जागरूक, प्रसादशून्य ।

—रहना, क्रि अ, अवहित-जागरूक (वि) स्या (स्वा प अ) ।

चौकस, वि (हि चौ-चार + कस - कसा हुआ >) दे 'चौकना' = उच्यते, उद्योगिन् ३ पथार्थ, पथानय ।

—रहना, क्रि अ, सावधान-अप्रमत्त (वि) स्या (स्वा प अ) ।

चौकसी, स स्त्री (हि चौकस) जागरूकता, सावधानता, दक्षता ।

चौका, स पु (स चतुष्क) चतुष्टय, वस्त्र चतुष्टयी २ पाक, शाला गूद, महानम, रसननी ३ भोजन, शाला-गूद-अगार ४ अन्नप दत्तचतुष्टय ५ अग्न ५ ६ चतुरस्रशिला ७ शीरेपुल्ल (गहना) ।

चौकी, स स्त्री (स चतुर्धो) आसन, चरण पाद, पीठ पीठ, *चतुर्धो २ दे 'कुसी' ३ निवेशस्थान, दे 'पटाव' ४ हविम (न) ५ रथिनिवात, प्रहरिशाला ६ शीथेयक, कठामुष्पभेद ७ जागरूकत्व, सावधानता ।

—देना, क्रि अ, आगच्छा उपविश (प्रे) २ रष्ट (स्वा प से) ।

—दार, स पु (हि + फा) गूद, ५ पाल, प्रहरिन्, रक्षक २ वैतालिक, वैदोधिक ।

—दारी, स स्त्री, रक्षा, श्रुति (स्त्री), भवेशण, प्रहरित्व २ रक्षा प्रहरित्व, चेतन शुक्लम् ।

चौखट, सं स्त्री (हि चौ-चार + काठ >), *कपालवन, चतुष्काष्ठ २ देहलीलि (स्त्री), दारापिंडी, गूदावग्रहणी ३ दारम् ।

चौखटा, स पु (हि चौखट) *चतुष्काष्ठक, *चित्र-दर्शन, परिवेष्टन-चलनम् ।

चौगान, स पु (फा) पतनामक गलाभेद २ साविदण्डक्रीडाक्षेपम् ।

चौहा, वि (हि चौ + पाट) वरु, परिणाह वट [ती (स्त्री)], घृष्ट, विमाल, विस्तृत, वितन, विस्तीर्ण ।

—करना, क्रि स, प्र वि, तन् (त उ से), प्रष्ट (प्रे), विस्तृ (क् उ से था प्रे), प्रथ (चु) ।

चौहाई, चौदान, स स्त्री (हि चौहा) तयंका त्व, विस्तार, विस्तारता, घृष्टता, पार्थक्य, परिणाह, विस्तीर्णता ।

चौतरा, स पु, दे 'चतुरा' ।

चौताल, वि, (हि चौ + स ताल >) चतु स्ताल । स पु, होलिकानीति (स्त्री) २ चतुस्ताल ।

चौथ, स स्त्री (स चतुर्थी) शुद्धा चतुर्थी २ कृष्णा चतुर्थी ३ चतुर्था ४ करभेद ।

चौथा, वि (स चतुर्थ) तुर्यं, तुरीय । स पु, चतुर्थक, मृतकरोनिभेद ।
 चौथाई स स्त्री (हि चौथा) चतुर्थ-तुर्यं तुरीया अक्ष भाग, पाद, तुर्यं, तुरीय, चतुर्थम् ।
 चौथिया, (हि चौथ) चतुर्थकन्वार २ चतुर्था शाधिकारिन् ।
 चौथी, वि स्त्री (स चतुर्थी) तुर्यां, तुरीया । स स्त्री, वैवाहिकरातिभेद, *चतुर्थी ।
 चौथे, कि वि (हि चौथा) चतुर्थस्थाने ।
 चौदस, स स्त्री (स चतुर्दशी) १ २ शुद्ध-रूप, चतुर्दशी ।
 चौदह, वि (स चतुर्दशन्) स पु, उक्ता सुख्या, तद्द्रोषकाकौ (१४) च ।
 चौदहवीं, वि (हि चौदह) चतुर्दश-शी शम् ।
 चौधराई, स स्त्री (हि चौधरी) मुख्यत्वे नेतृत्व प्रधानत्वम् ।
 चौधरानी, स स्त्री (हि चौधरी) मुख्या, प्रधाना, नेत्री ।
 चौधरी, स पु (स चतुर्धुरीण > अथवा स चतुर = तकिशा + धारिन् >) अग्रणी (पु), नायक, पुरोग, धुरीण ।
 चौपई, स स्त्री (स चतुष्पदी) छन्दोभेद ।
 चौपट, वि (हि चौ = चाम + पट किशाढा) अरक्षित, आवरण-आच्छादन, हीन, प्रकट, अपावृत्त ।
 चौपट, वि (हि चौ = चार + स पाट पौटारं) नष्ट वि, ध्वस्त, क्षाण उच्छिन्न, नाशित ।
 —करना, कि स, उच्छिद् (रु प अ) विध्वंस नाश (प्रे), उत्सद् (प्रे) ।
 चौपद, स स्त्री (स चतुष्पद ४ >) चतुष्पद, अणक्रीडाभेद २ तस्य पट अक्षा च ।
 चौपाई, स स्त्री (स चतुष्पादी >) छन्दोभेद ।
 चौपाद, स पु, दे 'चौपाल' ।
 चौपाया, स पु (स चतुष्पाद) चतुष्पद, चतुष्पाद् (पु) २ पशु (पु) ।
 चौपार ल, स पु (हि चौपार रा) गोष्ठी समा, गृह, आस्थान नी ।
 चौबच्चा, स पु, दे 'चबच्चा' ।
 चौवा, स पु (स चतुर्वेद) ब्राह्मणजाति भेद २ मधुरावासी पुरोहित ।

चौवाहन, स स्त्री (हि चौवा) चतुर्वेद, भार्या पत्नी ।
 चौवारा, स पु (हि चौ + वार = वार) अट्ट, अट्टाल, चद्रशाला, शिरोगृह, चूडा । २ दे 'चौपार' ।
 चौवारा, कि वि (हि चौ + वार = वार) चतुर्वारम् ।
 चौबीस, वि [सं चतुर्विंशति (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता सरया तदकौ (२४) च ।
 चौबीसवीं, वि (हि चौबीस) चतुर्विंशति समा-मी म, चतुर्विंश-शी शम् ।
 चौबे, स पु दे 'चौना' ।
 चौबोला, स पु (हि चौ + बोल) मात्रिक छन्दोभेद ।
 चौमद, स पु, (हि चौ-दाद) चर्वण-दन्त, दाढा, दाढा ।
 चौमजिला, वि (हि चौ-का मजिल) चतुर्भूमिक ।
 चौमुहानी, स स्त्री, दे 'चौक' (?) ।
 चौर, स पु (स) दे 'चोर' ।
 चौरस, वि (हि चौ + (एक) रस तुल्य) सम, समस्थ, समरेख, सपाट २ चतुर्भुज, वर्गाकार ।
 चौरा, स पु, दे 'चूरनरा' ।
 चौरानवे, वि [स चतुर्नवति (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता सरया तदकौ (१४) च ।
 चौरासी, वि [स चतुर्शीति (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता मुख्या, तदकौ (८४) च । स स्त्री, चतुर्शीतिलक्षयोनय (बहु) ।
 चौरैठा, स पु ह (हि चावल् + पीढा) पिष्ट चूर्णित-नडुल धान्याभ्य (म) ।
 चौर्य, स पु (स न) स्वयं, स्वैन्य, चोरिका, चोरणम् ।
 —रत, स पु (स न) युक्त, मैथुन रति (स्त्री) ।
 चौलकर्म, स पु (स-र्मन् न) चौड, चौट, मुण्डन चूडाकरण, सस्कार ।
 चौलका, वि (हि चौ + लक) चत सूत्र, चतुर्भुज (शार ह) ।
 चौला, स पु, दे 'लौबिया' ।
 चौला(रा)ई, सं स्त्री, तटुलीय, सुपय्य शाक, बहुवीर्य, मेघनाद ।

चौवन, वि [स चतु षचाशद् (नित्य स्त्री)] ।
 स पु, उक्ता सरया, तदकौ (५४) च ।
 चौसठ, वि [स चतु षष्टि (नित्य स्त्री)] ।
 स पु, उक्ता सरया, तदकौ (६४) च ।
 चौसर, स पु (स चतुस्सारि) दे 'चौषढ' ।
 चौहट्टा, स पु (हि चौ + स हट्ट) दे
 'चौक' (१२) ।
 चौहत्तर, वि [स चतुःसप्तति (नित्य स्त्री)] ।
 स पु, उक्ता सरया, तदकौ (७४) च ।

चौहरा, वि (हि चौ) चतुर्गुण-गित २ चतु
 ष्यु, चतुराष्टस, चतुरावर्तित ।
 च्यवन, स पु (स) ऋषिविशेष । (स न)
 क्षरण, स्रवणम् ।
 —प्रास, स पु (स) अवलेहभेद (आयुर्वेद) ।
 च्युत, वि (स) स्तन, क्षरित २ पतित, भ्रष्ट
 ३ विमुख, पराङ्मुख ४ पदभ्रष्ट, अधिकारभ्रष्ट ।
 च्युति, स स्त्री (स) पतन, स्थलन २ अपि
 कारभ्रष्ट, पदहानि (स्त्री) ३ दोष,
 स्थलिनम् ।

छ

छ, देवनागरीवर्णमालाया सप्तमो व्यञ्जनवर्ण,
 चकार ।
 छगा, छगुरा, वि (हि छ + अगुरी) षष्ठ
 गुण, षष्ठगुरि ।
 छँगुलिया, छँगुली, स स्त्री, दे 'छिगुनी' ।
 छटना, क्रि अ (हि छोटना) वृ-उद्गृह्ण चि
 उद्ग्रह (कम), २ चट् छिद् (कर्म)
 ३ अप-इ (अ प अ), प्रयग्-भू ४ क्षि-विशृ
 (कम), कृशो भू ।
 छंटा हुआ, सु, भूत्, चतुर, दक्ष, निपुण ।
 छंटवाना, क्रि प्रे, व 'छॉटना' के प्रेर रूप ।
 छँटाई, स स्त्री (हि छॉटना) वरण,
 उद्ग्रहण, चदन २ अवच्छेत्, निवृत्तन
 ३ पृथक्करण ४ अवच्छेदन पृथक्करण, चेतन
 मृति (स्त्री) ।
 छन्द, स पु [स छदस (न)] वृत् २ वेद,
 छुनि (स्त्री) ३ छन्दशास्त्र ४ अमिलाष,
 कामना ५ स्वच्छदता, स्वैरिता ६ कपट,
 लज्ज ७ सुक्ति (स्त्री), उपाय ८ अभिप्राय
 ९ पथ, श्लोक ।
 —शास्त्र, स पु, छन्दशास्त्र, वृत्तविज्ञानम् ।
 छ, छ, वि [स षट् (वि)] । स पु- उक्ता
 मत्स्या, तदक (६) च ।
 छई, स स्त्री, दे 'क्षयी' ।
 छक्रबा, स पु (स छक्र ७) प्रवहण, पान,
 वाहन, शक्तिका २ वृषमवाहन, शरीवर्दशकट,
 यन्त्रा ।
 छकना, क्रि अ (स चकन) चक् (भ्वा उ
 से), वृष् (दि प अ), परि-स-वृष् (दि प

अ) २ क्षीव् (भ्वा दि प से), मद्
 (दि प से, माघनि) ।
 छकना, क्रि अ (स चक >) विस्मि (भ्वा
 आ अ), चकित विस्मित (वि) भू २ वच्
 प्रतार (कर्म) ।
 छकालुक, वि (हि छकना) वृक्ष, गुह्य २ परि
 पूर्ण ३ क्षीव, मत्त ।
 छकाना, क्रि, स, व 'छवना' (१, २) के
 प्र रूप ।
 छक्का, स पु (स षक्) विदुषट्कनुन कीटा
 पत्र २ षट्कस्तुसमूह ३४. अक्षकपर्द,
 भेद ५ दूत, कश्कीटा, देवन ६ रक्षा,
 चैतन्यम् ।
 —पजा, सु, कृटोपाया, कपटप्रवधा ।
 —पजा करना, सु प्रतृ (प्रे), वच् (जु) ।
 छके छटना, सु, पैर्ब सुप् (गु उ अ),
 अधीर मग्नोत्साह (वि) भू ।
 छगड़ा, स पु (स छागळ) अज, शुभ ।
 छगन, स पु (म छग >) शिशु, स्तनधय ।
 —मगन, स पु (वङ्) स्तनधया, शिराव
 (दोनों वङ्) ।
 छगुनी, स स्त्री, दे 'छिगुनी' ।
 छगुन्दर, सं स्त्री (स छगुन्दर-री) ग्ध
 सुती, दिवायिका, दीर्घतुही २ अग्निजीवनक
 भेद ।
 छजना, क्रि अ, दे 'फवना' ।
 छञ्जा, स पु (हि छावन) नीम, पटलप्रात
 पट, चाल, नीम, श्लोक ४ २ प्रधीव, वरह,
 विवर्दी दि (स्त्री) ।

छटपटाना, कि अ (अनु) दे 'तटफटाना'
२ अनिर्भूत अशात 'याकुल (वि) भू ३ अरथत
अभिलप (भ्वा ङ से) ।

छटपटी, स स्त्री (हि छटपटाना) अथी
रता, आकुलता २ लालसा, तीव्रोत्कंठा ।

छट्टोक, स स्त्री (स षट्क) सेटक-सेर
षोडशश ।

छटा, स स्त्री (स) काति-दीप्ति धुनि (स्त्री)
प्रभा २ चारुता शोभा सौन्दर्य रूप
२ दामिनी, विद्युत् (स्त्री) ।

छटा, वि दे छटा ।

छटा, वि (स षष्ठ षष्ठी छम्) ।

छटी, स स्त्री (स षष्ठी) जन्मत षष्ठे दिवसे
षष्ठी-नीपूना ।

—का दूध याद दिलाना, सु, अनुशास्त्र
(अ प से) दड (जु) ।

छड, स स्त्री पु (स शर >) (१ २) धातु
काष्ठ दड २ लव, यष्टि (स्त्री)-ल्युट ।

छडा, स पु (हि छड) पादभूषणभेद ।

छडा, वि (हि छडना) एक, एककिन्,
असहाय, अद्वितीय एकल ।

छडिया, स पु (हि छडी) द्वारपाल,
दीवारिक ।

छडी स स्त्री (हि छड) यष्टि (स्त्री)
दण्ड २ वेत्र वत्रयष्टि

छट, स स्त्री (स छत्र >) छदिस (न),
छदि (स्त्री) पटल २ अल-पटल, अनच्छा
दन, पटल ३ वितान लञ्चोच ।

छतरी, स स्त्री (स छत्र) शनशलाका,
आतपत्र, आतपवारण, छायामित्र, पटोत्तम
२ मण्डप प ३ कपोताना वेशुच्छत्रम् ।

छतीसा, वि (हि छषोस) धूर्त मायिक
मायिन्, छलिन्, वापटिक ।

छतीसी वि स्त्री (हि छतीसा) छलिनी,
मायिन्, वापटिकी, २ कुलटा, पुरचली ।

छत्ता, स पु (स छत्र) करब, मधुकोश,
चपान्, छत्रक २ गण, समूह ३ छत्र,
आतपत्रम् ।

छत्तीस, वि [स षट्त्रिंशत् (नित्य स्त्री)]
स पु उक्ता सख्या, हत्की (३६) च ।

छत्तीसवीं, वि (हि छत्तीस) षट्त्रिंशत्तम
मी ३ षट्त्रिंशत्ती ३६

छत्र, स पु (स न) दे 'छतरी' २ राजच्छत्र
३ वृद्धच्छत्र ४ (सुमी) छत्रक-कम् ।

—छोह, स स्त्री, छत्रच्छाया, शरण, आश्रय ।

—धारी,—पति, स पु, नृप, भूप ।

छत्री, स पु, दे, 'क्षत्रिय', २ दे 'छतरी' ।

छदाम, स पु (हि छ+दाम) पणवतुर्ध,
दे दमडी' ।

छद्म, स पु [स छमन् (न)] छल, कपट
२ गापन गूहन ३ न्याज, मिषम् ।

छन, स पु (अनु) छगिति, शब्द ध्वनि
(पु) सौत्कार २ वणिग, निजितम् ।

छन, स पु, दे 'क्षण' ।

छनक, स स्त्री (अनु) छणछण वणक्षण
शब्द निन्द, छणछणायित, क्षणक्षणायित,
दे 'छन्' (१ २) ।

छनकना, कि अ (अनु छनछन) छण
छणायते क्षणक्षणायते (ना धा), छणछण
शब्द क, वण (भ्वा प से), शिञ् (अ
आ से) २ सौत्कार क ।

छनकमनक, स स्त्री (अनु) शिजित, रणित
२ दे 'साजवाज' ।

छनकाना, कि स, व 'छनकना' के प्र रूप ।

छनछनाना, कि अ स, दे 'छनकना',
छनकाना ।

छनना, कि अ (स छरण) तितठना शुध्
(दि प अ), निर्गल्क्षर् (भ्वा प से)
२ क्षतविक्षत (वि) भू ।

छनयाना, छनाना, कि मे, व छानना' के
प्रे रूप ।

छनाक-का, स पु (अनु) दे 'छनक' ।

छन्न, वि (स) आ प्र-समा, छत्र आ प्र म,
वृत्, निर्गूढ, विदित २ उन्न, तिरोदत्त, अदृष्ट ।

छप, स स्त्री (अनु) आस्फालन, ध्वनि (पु)-
शब्द २ आस्फालन, विक्षेप ।

छपका, स पु (अनु) जल-आस्फाल विक्षेप
२ पिटकपिधानम् ।

छपछपाना, कि अ (अनु) छपछपायते
(ना धा), छपछपशब्द क २ शब्द नृ
(भ्वा प से) ।

छपना, कि अ (हि चपना = दबना)
अर्कलछ (कर्म), मुद्रावित चिह्नित (वि)
छ ३ चप (कर्म) चपना ३ चपना ३

दुपरस(स)ट, स स्त्री (हि दुपर + सट)
 *मशहरीखट्वा ।
 दुपवाना, कि प्रे, व 'दुपाना' के प्रे रूप ।
 दुपाई, स स्त्री (हि दुपाना) (मुद्राघरै)
 अकन, मुद्रण २ अकन-मुद्रण, प्रकार ।
 दुपाका, स पु (अनु) जलारकालनशब्द
 २ होयाफाल ।
 दुप्पन, वि [स षट्पचाशब् (नित्य स्त्री)]
 स पु उक्ता सरया, तदकौ (५६) च ।
 दुप्पय, स पु (सी षट्पद) हिंदां छन्दोभेत् ।
 दुप्पर स पु (हि दुपना) तुण, छदि
 (स्त्री) षटल २ उटज अ, कुटीर ।
 —रट, स स्त्री दे 'दुपरसट' ।
 —द्वाना वा डालना, कि स, तुणादिभि
 ञ्जा छट् (नु) ।
 दुषद्वा, स्त्री स पु स्त्री (देश) दे 'दोकरा-री' ।
 दुषत्रि, स स्त्री, दे 'दुवि' ।
 दुषीला, वि (हि दुष) सुदर [-री (स्त्री)]
 शोमन [-नी (स्त्री)] रूपवद्-वातिमद्
 [-नी (स्त्री)] ।
 दुष्वीस, वि [स षट्विंशति (नित्य स्त्री)] ।
 स पु, उक्ता सरया, तदकौ (२६) च ।
 दुष्वीमर्षी, वि (हि दुष्वीस) षट्विंशति
 तम मी मम्, षट्विंश शी शम् ।
 दुमड, स पु (स) मातृपितृ-जनक, हीन
 बालक, अनाथ ।
 दुमक, स स्त्री (अनु) दे 'ठसक' ।
 दुमकना, कि अ, (अनु० छम) दे छम
 छमाना ।
 दुमछम, स स्त्री (अनु) धारासार धारासपात,
 शब्द २ छमछम, रणित निनद, छमछमा
 पित, छणत्कार, शणत्कार । कि वि, सछण
 (म) कारम् ।
 दुमछमाना, कि अ (अनु) छमछमायते
 (ना धा) छमछमनिनद कृ २ दे 'चमचमाना' ।
 दुमा, दे 'क्षमा' ।
 दुमादुम, स स्त्री (अनु) दे 'छमछम' ।
 दुवरना, कि अ (अनु छर) सछरछरशब्द
 विशिष् विकृ (कर्म), छरछरायते (ना धा) ।
 दुवरना, कि अ (स क्षरण) दे 'दुपवना' ।
 दुवररा, वि (हि छट) वृश, तनु, कुशाग
 [-नी (स्त्री)] २ उचमिन्, उषोगिन् ।

दुर्दन, स पु (स न) प्र, छदि(दी) का,
 वम मि (स्त्री), वमन, वमधु (पु), वाति
 (स्त्री), उद्गार, उक्तासिका ।
 दुर्दा, स पु (अनु छर) लोद-सीसक,
 गुलिका २ दे 'वक्की' ३ वेगक्षित जलकण
 समूह ।
 दुर्ल, स पु (स पु न) कूट, कपट, कैतव,
 छमन् (न), प्रतारणा, प्र, वचना अतिसथान
 २ न्याज, मिष ३ चतुदश पदार्थ (न्या) ।
 —बल, स पु, कूट, उपाय कल्पना प्रवध ।
 —कपट, स पु, दे 'दुल' (१२) ।
 —छिद्र, स पु, दे दुल (१) ।
 दुर्लक, स स्त्री (हि दुलकना) परिवाह,
 उपरिस्त्राव ।
 दुर्लकना, कि अ (अनु दुल) उपरि सु
 परिवह् (भ्वा प अ), उत्तिष्ठ (कर्म),
 प्रथु (भ्वा आ से), स्त्रीत-वृद्ध, अल (वि)
 भू ।
 दुर्लकाना, कि स, व 'दुलकना' के प्रे रूप ।
 दुर्लदुलाना, कि अ (अनु) दुलदुलायते,
 (ना धा), सदुलदुलशब्द सु (भ्वा
 प अ) ।
 दुर्लना, कि स (स दुलन) दुल्यति(ना धा),
 अति अभि, सथा (नृ उ अ), प्रतृ सृद् (मे),
 वच् (नु) । स स्त्री, दे 'दुल' १ ।
 दुर्लनी, स स्त्री (स्त्री चालनी) नितउ ।
 —करना, सु, अनेकवद्विद् निभिद् (क प अ)-
 षथ (दि प अ) ।
 दुर्लौग, स स्त्री (हि उदुल + स अग) प्लव,
 प्लवन, प्लुत ति (स्त्री), शप शपा, वलितम् ।
 दुर्लौ—, स स्त्री, उद्, प्लव प्लुति (स्त्री)-
 पतन इ ।
 दुर्लौ—, स स्त्री, प्र, प्लव प्लुति इ ।
 —भारना, कि स, (दुर्लौ) उ-पत् (भ्वा प स),
 उ-प्लु (भ्वा आ अ) । आगे (आगे) वल् (भ्वा
 प से), प्लु । (नीचे) अवप्लु ।
 दुर्लया, स पु (स दुल >) मिथ्वा, अनल
 अग्नि (पु)-दीप्ति (स्त्री), दीप्याभास,
 २ मायादृश्य, इद्रजालम् ।
 दुर्लित, वि (स) विप्रलम्भ, वचित,
 प्रनारित ।
 दुर्लिया, वि दे 'दुलो' ।

द्विचुला, वि, (हि चुला) अल्प-गाथ, जल,
गा(गा)भीर्यशय, वृत्तान, गाथ ।

द्विचुलाई, सं स्त्री (हि द्विचुला) गाथना,
गभीरताऽभाव ।

द्विचुली, सं स्त्री (हि द्विचुला) घटदाक
लनारण, बालक्रीडाभेद ।

द्विचोरा, वि (हि द्विचुला) क्षुद्र, अवग,
अधम, तुच्छ, गभीर्यशय्य ।

द्विचोर(रा)पन, स पु (हि द्विचोरा)
क्षुद्रता, गभीरताऽभाव, अधमता, तुच्छता ।

द्विटकना, कि अ, (सं क्षिप्त >) अवा-आ प्र
वि-वृ (कर्म), विक्षिप (कर्म), प्र-वृ
(भ्वा, प अ) २ प्रकार विपुत (भ्वा
आ से) ।

चौदनी वा—, स पु कौमुदीप्रसार, ज्योत्सना
विस्तार ।

द्विटकाना, कि स, व 'द्विटकना' के सकर्मक
रूप ।

द्विटकना, कि स (हि द्विटकना)
२ अवा भानि, सिच (तु प अ) अभि
प्र-उञ्ज (भ्वा प से), विदून्-वपान्
विक्षिप् (तु प अ)-विकृ (तु प से) ।

द्विटकवाना, द्विटकाना, व 'द्विटकना' के
प्रे रूप ।

द्विटकाव, सं पु (हि द्विटकना) अवा भा,
सेक, प्रोक्षणम् ।

द्विटना, कि अ (हि द्विटना) आ प्र रम्
(कर्म), उप प्र क्रम् (कर्म) ।

द्वितरना, कि अ, दे 'वितरना' ।

द्वित्ति, स स्त्री (स) द्वेदन, लवन, कुन्तनं,
ब्रधनम् ।

द्विटना, कि अ, व 'द्विटना' के कर्म रूप ।

द्विटरा, वि (स द्विट >) विरल, सच्छिद्र
पेलव, तनु २ जीर्ण शीर्ण ।

द्विटाना, कि प्र व 'द्विटना' के प्रे रूप ।

द्विटि, स स्त्री (स) कुठार, परशु ।
२ वज्र-ज, कुलिश, पवि ।

द्विट, स पु (स न) विवर, सुविर, रभ,
भिल २ दोष, वैकल्प, न्यूनता ।

द्विद्वान्वेषण, सं पु (सं न) पुरोभागित्व,
दोषग्रहित्व, निदकत्वम् ।

द्विद्वान्वेषी, वि (सं विन्) पुरोभागिन्,
दोषवृश (पु), दोषमाहिन् निदक ।

द्विद्वित, वि (सं) सच्छिद्र, सरभ, सविवर,
२ विद्र ।

द्विन, स पुं दे 'क्षण' ।

द्विनना, कि अ, व 'टीनना' के कर्म रूप ।

द्विनरा, वि पु, (हि द्विनरी) व्यभिचारिन्,
परदारगामिन् ।

द्विनरी, वि स्त्री (स छिन्न+नारी >)
कुलटा, व्यभिचारिणी ।

द्विनवाना, द्विनाना, कि प्रे, व 'टीनना' के
प्रे रूप ।

द्विनाल, स स्त्री, दे 'कुलटा' ।

द्विष, वि (स) कृत्, लृत्, दात्, दित, घात्,
छिन्, वृषण ।

—भिष, वि (सं) अवा आ प्र वि, कीर्ण,
गिरस्त २ लृत्, कृत्, गदित इ ३ अस्त
व्यस्त ।

द्विषवती, द्विषवी, सं स्त्री (हि चिषवती)
गृहगोषा यिका, ज्येष्ठा षो, मुषली, गृहालिवा,
कुल्यमन्स्य २ तवी (नारी) इ वर्णभूषण
भेद ।

द्विषटी, स स्त्री (स चिषिट >) तट एट
शकलम् ।

द्वि(छु)पना, कि अ, [स क्षिप् = (परदा
आदि) डालना] तिरोभू, अतर् इ (अ, प
अ) ली (दि आ अ), अतर्-तिरो, भा
(कर्म) अदृश्य प्रच्छन्न-अपवारित (वि) भू ।

द्विषा, वि (हि द्विषना) अतरित, तिरो,
हित भूत ।

द्विषा रस्तम, वि पु, अज्ञान अप्रसिद्ध-अवि
ख्यात-गुणिन् ।

द्विषे द्विषे, कि वि गुं, गुप्त, निभृत्, प्रच्छन्नम् ।

द्विषाना, कि स, हि (द्विषना) अतर्
तिरो, भा (जु उ अ), अपवृ (प्रे),
गुट् (भ्वा उ से), प्रच्छद् (प्रे) ।

स पु, अनर्थान्, तिरोधान, गू (गो) हनं,
गोपन, मवरणम् ।

द्विषाव, स पु (हि द्विषाना) दे 'द्विषाना'
सं पु ।

द्वियानवे, वि तथा स पुं, दे, 'छानवे' ।

द्विपालिस, वि [स षट्चत्वारिंशत् (नित्य स्त्री)] । स पु, उक्ता सरया, तदकौ (४६) च ।

द्विपास्त, वि [स षष्ठी (नित्य स्त्री)] । स पु उक्ता सरया, तदकौ (६६) च ।

द्विपासी, वि, [स षडशीति (नित्य स्त्री)] । स पु उक्ता सरया, तदकौ (८६) च ।

द्विलका, स पु (स शल्क) (फलादि का) त्वच (स्त्री) २ बल्क ल्क, बल्क ल ३ तुष, वुष, वुसम् ।

—उतारना, कि स, दे 'छाल उतारना' ।

द्विलना, कि अ, व 'दोलना' के कर्म रूप ।

द्विलयाना, द्विलयाना, कि प्र, व 'छीन्ना' क प्र रूप ।

द्विहत्तर, वि [स षट्सप्तति (नित्य स्त्री)] । स पु, उक्ता सरया, तदकौ (७६) च ।

द्वीक, स स्त्री (स टिका) क्षुत्ना, क्षव, क्षवयु (पु) क्षुत्ति (स्त्री) ।

द्वीकना, कि अ (हिं द्वीक) क्षु (अ प से), क्षुत् क्षव टिका कृ ।

द्वीट, स स्त्री (स क्षिप्त >) (जलादिका) कन शिक्का, बिदु (पु), शीकर, पृषत > बलभेद, चित्रवक्षम् ।

द्वीटा, स पु (हिं द्वीट) दे 'द्वीट' २ शीकरवर्ष, पृषतपाल २ जल, आस्फाल विक्षेप ४ अक, श्वाछन ५ लघ्वाक्षेप ।

—देना या मारना, कि स, पृषतै शीकरै किल्द (प्रे)-आर्द्रयति (ना था) ।

द्वी, अय, दे 'द्वि' ।

—द्वी करना, मु, धुप् (पथनी के साथ सनत रूप, जुगुप्सते), कुम्, (चु आ से), गद (चु उ से) ।

द्वीका, स पु (स शिन्व्या) शिक्वम् ।

द्वीद्वालेदर, स स्त्री (अनु द्वी द्वी) इदशा, दुग्ि (स्त्री) ।

द्वीज, स स्त्री (स क्षय) अपचय, हास ।

द्वीजना, कि अ (स क्षयम्) क्षि विशु (कर्म), हस् (भ्वा प से) ।

द्वीट, स स्त्री दे 'द्वीट' ।

द्वीनना, कि स, (स द्विन् >) आच्छिद् (क् प अ), क्षयति कृ (भ्वा प अ),

आक्षिप्य ग्रह् (क् प से)-इ (भ्वा प अ) आच्छिद्य-बलात् अपह् ग्रह् ।

द्वीपी, स पु (हिं छापना) वसनमुद्रक वम्चिजक ।

द्वीर, स पु दे 'द्वीर' ।

द्वीलना, कि स (हिं छाल) दे 'छाल उतारना' २ तनु कृ, त्वक्ष-तभ (भ्वा प से) ३ अप-व्या-मृज (अ प वे चु) विलुप् (प्रे)

द्विआहृत, स स्त्री (हिं ह्वना) अस्पश्य स्पश अनुचिमसर्ग २ स्पृश्यास्पृशविचार ।

द्विर्मुई, स स्त्री दे 'लज्जावती' ।

द्विद्वर, स पु, दे 'द्विद्वर' ।

द्विद्वारा, (हिं ह्वना) (द्विआदि से) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री) मोचन २ वर्जन, रहितत्व ३ निश्चिन्ता निर्वृत्ति (स्त्री) ।

—पाना, कि अ, वि-मिर-मुच (कर्म), मोक्ष उद्भू विस्त्र (कर्म) ।

द्विटी, स स्त्री (हिं ह्वना) द 'द्विद्वारा' २ अवकाश, क्षण, कार्यनिवृत्ति (स्त्री) ३ अनध्याय अनध्यायदिवस, विश्रामदिवस ४ विश्राम, काल-समय ।

द्विचाना, द्विजाना, कि प्रे, व 'द्वीटना' के प्रे रूप ।

द्विद, वि, दे 'द्विद' ।

द्विधा, स स्त्री, दे 'द्विधा' ।

द्विपना, द्विपाना, कर्म कि अ तथा कि स, दे 'द्विपना' तथा 'द्विपाना' ।

द्विपरा, स पु (स द्विपरा) कृपाण, वृह-द्विपरी रिका ।

द्विपरी, स स्त्री (स) द्विपरी, द्विपरीका, कृपाणी शिक्का, अस्ति धनुका पुत्रिका ।

—मारना, कि स, द्विपरीकया न्यथ (दि प अ), द्विप (तु प से), द्विप (त प से) ।

द्विवा(ला)ना, कि प्रे, व 'द्विवा' के प्रे रूप ।

द्विवाहारा, स पु (स द्विध + हार >) खर्जूर भेद, द्विवाहारा २ विद्विखर्जूरफल, गोस्नानाकार पिंड, खर्जूरी, खर्जूरी ।

द्वि, स स्त्री (अनु) मन्त्रपाठानवर-द्विद्वार फूलकार ।

—भतर होना, मु, क्षयति तितोम् ।

छुछा, वि (स चुच्छ) नि सार, असार
२ रिक्त शून्य, शून्यगर्भ ३ निर्धन ।

छुट, सं स्त्री (हि छूटना) दे 'छुटकारा'
(१, २) ३ अक्काश, क्षण ४ ऋगनीश
५ स्वातन्त्र्य स्वच्छन्दता ६ प्रमाद, स्वलितम् ।

छुटना, कि अ (स छोटन = काटना >)
वि, मुच (कर्म), धैर्य (कर्म), दे 'छुट
कारा पाना' २ (पदाद्य) च्यु (भ्वा आ
अ)-अपास् (कर्म) ३ विमुञ् (कर्म),
किंश्चि (दि प अ) । ४ प्रचल् (भ्वा प
से), प्रस्था (भ्वा आ अ) ५ (प्रमादाद्य)
न अनुष्ठा विधा (कर्म) ।

शरीर—, मु, दे 'मरना' ।

छूत, सं स्त्री (हि छूना) न, स्पर्श, ससर्ग,
सपर्क २ अस्पर्श, स्पर्श ससर्ग ३ मालिन्य,
दूषण, अशीचन् ।

—का रोग, स पु, सस्पर्शज-सासगिक सका-
मक, रोग ।

छूना, कि, स (छोपन) छुप्-स्पृश पराश्रय
(तु, प अ), हस्तेन आलम् (भ्वा आ अ) ।
स स, सपर्क, ससर्ग, स, स्पर्श, स्पृष्टि
(स्त्री), परामर्श, आलमनन् ।

छूने योग्य, वि, स्वयं, छोपनीय, परामर्शार्ह ।
छूनेवाचा सं पु, स, स्पर्शक, स्पर्ष्ट स्पर्ष्ट (पु) ।
छुआ छुआ, वि, स्पृष्ट, ससृष्ट, आलम्ब, छुधि,
परानृष्ट ।

आकाश—, मु, गगन लुब (भ्वा प से) नश्च
स्पृष्ट, अत्युच्च (वि) वृत् (भ्वा आ से) ।

छूँक, छूँकाव, स पु, दे 'जम्ती' ।

छूँकना, कि स (स छो = काटना >) निर्य
(रु उ अ), निवार (चु) २ आच्छद्
(चु), व्याप् (स्ना उ अ) ३ निश्च
(वि) इ, सर्वस्व दट (चु)-आच्छिद्
(रु प अ) ४ परिच्छि (प्रे), परि, बेट (प्रे) ।
५ अव-विल्ल (प्रे) निर्य अस (दि प से),

छूँक, सं पु (स छेक >) विवर, विवर, छिद्र
२ छेद, भेद ३ वि, भाग ।

—अनुप्रास, स पु (स) अनुप्रासात्कारभेद,
वर्णना सद्गदावृत्ति (स्त्री) (उ० पावन
पवन)

छेद, स स्त्री (हि छेदना) क्रोधोदीपन,
प्रकोपन २ परिहास व्यस्योक्ति (स्त्री)

३ लीला, विलास, हाव ४ बल्ह, कलि
(पु) ।

—छाव, सं स्त्री, दे 'छेद' (१, ४) ।

छेदना, कि स (हि छेदना) कुप् कुप् रूप
(प्र) २ दे 'छूना' ३ आप्र-रम् (भ्वा
आ अ), उपप्र-कन् (भ्वा आ अ) ४ अर्द्-
आयस् (प्रे), उपरुष् (रु उ अ) ५ अव
परिहस (भ्वा प से) ६ कल्ह कृ । सं
पु, 'छेद' ।

छेत्ता, वि (स-त्) छेदक, लावक, छेदकर,
छिद् । सं पु, वनच्छिद्, काष्ठच्छिद् ।

छेत्त्र, सं पु, दे 'क्षेत्र' ।

छेद्, सं पु (स) छिद्र, बिल, विवर, रभ,
सुशि (वि) रं, कुहर, रोक, निर्व्यंथन, वपा,
सुधि (स्त्री) २ वि, नाश, वि, ध्वंस
३ दोष, न्यूनता ४. वि, भावक (गणित) ।

छेदक, वि (सं) वेधक, भेदक, छेत्, भेत्,
वेधिन् २ नाशक, ध्वंसकर ३ विभाजक ।
स पु, वेधनी ।

छेदन, स पु (सं न) वेध, वेधन छिद्रवरण
२ वि, नाशन ध्वसन, वि, नाश ३ कर्तन,
भेदन, लवनम् ।

छेदना, कि स (स छेदन >) व्यथ् (दि प
अ), छिद्र विधा (जु उ अ)-कृ, छिद्रवति
(ना भा), निभिद् (रु प अ), उन्
समुत्-कृ (तु प से) । स पु, दे 'छेदन' ।

छेदने योग्य, वि, छेत्तय, छेदनीय, वेध्य ।

छेदनेवाला, दे 'छेदक' ।

छेदा छुआ, वि, छिद्रित, छिद्र, विद्, निमित्त ।

छेदा, सं पु (हि छेदना) पुण काष्ठवीट
२ छिद्र, रन्ध्रम् ३ पुण अन्नच्छेद ।

छेदी, वि (सं रिन्) दे 'छेदक' ।

छेना, सं पु (स छेदन >) मिष्टान्नभेद
-छिद्रम् ।

छेनी, स स्त्री (स छेदनी) तक्षणी, टंक,
मथन २ दिलाभेद ।

छेम, स पु, दे 'क्षेम' ।

छेरी, सं स्त्री, दे 'खरी' ।

छेष, स पु (स छेद) आपात, प्रहार
२ मण-ण ३ आगामिविपद् (स्त्री) ४ काष्ठ-
सङ्घ ।

छैल ला, स पुं (स छवि >) सुमगमन्य ,
रेय, रूपगवित, सुदेशमानिन्, वेपाभि
मानिन् ।

—चिकनिया, स पु, दे 'छैल' ।

छोकरा-दा, स पु (स शावक >) कुमार
रव, दारव बाल लक, मगव वव ।

छोकरापन, स पु (हि छोकरा) वात्य,
बोम र २ चचलता, मौख्यम् ।

छोकरा-दी, स स्त्री (हि छोकरा) कुमारी रिया,
बाला लिका, बन्या, दारिका, माणविका ।

छोटा, वि (स धुद्र) अगु, तनु, लघु महत्
गौरव, रहित २ अल्प धुद्र, सतु शरीर ३ अगु
गमन्, कनीयत् यवीयन् ४ अवरपद
मान, अरर ।

—यदा, वि, विविध, बहुविध २ उद्यावच,
लघुगुरु, अगुमहत् ३ वनिष्ठज्येष्ठ ।

छोटाई, स स्त्री (हि छोटा) अगुता, लघुता
लानन, अणिमन् लपिमन् (पु), २ धुद्रता,
नीचता ।

छोटापन, स पुं, दे 'छोटार' ।

छोडना, कि स (स छोरण) उच्चि, सञ्
निर्मुञ् (तु प अ), उच्च (तु प से), रयञ्
(भ्वा प अ), हा (जु प अ), परिह
(भ्वा प अ), रद् (जु) २ क्षम्
सह् (भ्वा आ से), क्षम् मृष् (दि प
से), क्षाम्यति, तिञ् (सन्नत = तितशते)
३ क्षिप् (तु प अ), अम् (दि प से)

४ प्रमादात् न कृ अथवा अनु स्था (भ्वा प
अ) ५ मोक्ष मुच (प्रे) । सं पुं, वि उच्च
सर्जन, रयजनं, उच्चान, परिहरणं, उत्तमं
त्याग, परिहार इ ।

छोडने योग्य, वि, त्याज्य, उत्तम्य, परिहार्यं ।
छोडनेवाला, स पु, विसृष्ट स्वप्न परिहर्तृ
(पु) ।

छोडा हुआ, वि, उच्च वि-सृष्ट, त्यक्त इ ।

छो(छु)डाना, छोडवाना, कि प्रे, व 'छोडना'
के प्र रूप ।

छोत, स स्त्री, दे 'छूत' ।

छोप, स पुं, दे 'छेप' ।

छोभ, स पुं, दे 'क्षोभ' ।

छौर, स पुं (हि ओर वा अनु) उपात,
प्रात, पर्वत, समत, परिसर, सीमन् (पुं),
सीमा २ तट टीटम् ।

छोलदारी, स स्त्री (देश) धुद्रपदवास, लघु
दृश्यध्य, पटगृहकम् ।

छोला, स पु (हि छोलना = छीलना) हरित,
चण-चणक ।

छोह, सं पुं (सं क्षोभ >) स्नेह, प्रेमन
(पुं), २ दया, कृपा ।

छौक, छौकन, सं स्त्री (अगु) दे 'बपार' ।

छौकना, कि स, दे 'बपारना' ।

छौना, स पुं (स शाव) शाव, शावक,
टिम, पोत, अर्भव ।

छौर, स पुं, दे 'क्षौर' ।

ज

ज, देवनगरीवर्णमालाया अष्टमो व्यंजनवर्ण,
जकार ।

जकना, स पुं (अं) संयोजन, लोहपथ
मगम ।

जग, स स्त्री (का) युद्ध, सग्राम ।

जग, स पु (का) अयोमन् ल, अयोरस,
महूर, विष्ट, सिदाणम् ।

—रगना, कि अ, सविद्ध समहूर (वि)
भू । मण्डूरेण दुष् (दि प अ) ।

जगम, वि (स) चर, चल, चरिष्णु, चलन
गमन, शील २ भेदन, प्राणिन्, सजीव ।

जगल, स पु (स न) अटवी वि (स्त्री),
अरण्य, कानन, वन, विपिनं, पानार २,
गहन २ गहस्थल, गरु (पुं) ।

जंगला, स पुं (पुर्न जंगला) काष्ठ लोह
शलाकावृत्ति (स्त्री), काष्ठ-लोह गोवोलि
(पु), काष्ठ अयो, जाल २ गवाय्य, जालम् ।

जंगली, वि (स जगल) आरण्यक, अरण्यज,
वच, वनोद्भव, जंगल [स्त्री (स्त्री)], अरण्य,
वन २ अर, हिंस्र ३ असभ्य, अशिष्ट,
दु शील । स पु, वनवासिन्, वनेचर, वनोवम्
(पुं), आटविक, आरण्यक ।

जगार ल, स पु (फा र) ताम्र विद्रुमलम् ।
जगी, वि (फा) साम्यामिक सामरिक [वी
(स्त्री)] युद्ध रण-सवधिन् २ क्षात्र (वी स्त्री)
आनुषिक (की स्त्री)

—जहाज, स पु रणपोत ।

—जुगार, स पु समरज्वर ।

जघा, स स्त्री (स) प्रसूता टकिका टका क
२ ऊह (पु) सन्धि (न)

जघाल, वि (स) शीघ्र द्रुत-गामिन् वाचिन्
चालक । स पु (स) द्रुत, स-देशवाहक
२ मृग ।

जघिल, वि (स) प्रचविन्, प्रधावक द्रुत
गामिन् ।

जचना, क्रि अ (इ जौचना) निरोक्ष परोक्ष
(कर्म) २ दृश (कर्म) ३ उचिन (वि)
प्रति ३ (कर्म) ।

जचवैया, स पु (हि जौचना) दे आदिदर

जंजाल, स पु (स जगत् + जाल >) कुच्छ
कष्ट सबट दुरा दाधाध २ यामोह
चित्तविक्षेप सभ्रम ३ आवन जलगुल्म
४ बृहज्जालम् ।

जजाटी, वि (हि जजाल) उपद्रविन्
कलहप्रिय ।

जजीर, स स्त्री (फा) शृङ्खला ल, निगल
पाश बन्धन २ अर्गल लला ली ।

जतर, स पु, दे 'यत्र' ।

जंतु, स पु (स) प्राणिन्, जीव जन्तु, भूत
२ पशु, चरि, मोक ।

जत्र, स पु, दे 'यत्र' ।

जैत्री, स स्त्री (हि जत्र) *यत्री *तारकर्षणी
२ पचांग, तिथिपत्रम् ।

जद, स पु (फा नद स छदस >) पारसी
काना धर्मग्रन्थविशेष २ तरय भाषा ।

जधीर, जंघीरीनीवू, स पु (स जम्बीर) जम्म
जमल, जम्बीर दत्त कक्क ह्पक् ह्पण ।

जडु, स पु (स स्त्री) (शृङ्ख) जन्-डु (स्त्री) ।
(फल) जडु (वृ) फल आवनम् ।

जजुक, स पु (स) शृङ्खाल > 'श्री' ४
२ नीच अपसद, जावम ।

जजुद्धीप, स पु (स) भूमे सप्तद्वीपध्वजतम ।

जजू, स स्त्री (सं) दे 'जु' २ काम्मीरदेशे
नगरविशेष ।

जभ, स पु (स) द्रुत (पु स्त्री) २ राक्षस
विशेष ३ दे 'जभा' ।

जभारि, स पु (स) इद्र, सुरपति २ इद्र
वज्र ज, ३ अग्नि ।

जभाई, स स्त्री (हि नभाना) जभा, जम्बा
नृमग्न जर्मिका जम्म भा, जृम्भित
हाकिमा ।

जभाना, क्रि अ (स जम्भन) ज (ज) भू
(भ्वा आ से) वि नृम्भ (भ्वा आ से) ।

जई, स स्त्री (हि नी) यवसदृसदृशोभ्रभेद,
*यवी २ यवाकुर ।

जईफ, वि (अ) दे वृदा ।

जईफी, स स्त्री (अ) दे बुदापा' ।

जक, स स्त्री (फा) पराजय २ हानि (स्त्री)
३ लज्जा ।

जकदना, क्रि स, (स युक्त + करण >)
गाढ दृढ बध (क् प अ) द्रढयति (ना
धा) इडीकृ ।

जकात, स स्त्री (अ) दान त्याग, २ कर,
शुल्क-कम् ।

जकीरा, स पु (अ) कौष निधि, भण्डार
२ सम्य सचय समार ३ बुक्षमवर्धन
स्थानम् ।

जम्मि, स पु (फा) दे धाव ।

—ताज्ञा या हरा होना, मु, अतीत कथं पुन
आवृत् (भ्वा आ से) रभृ (कर्म) ।

जग्मी, वि, दे वादल' ।

जग', स पु [स जगत् (न)] जगती
ससार २ लोका जना ।

जग', स पु, (स यज) याग, मरु कतु ।

जगण, स पु (स) छन्द शारते गणभेद
शुरुमध्यग' गण (७० महेद्य) ।

जगत, स पु [स जगत् (न)] भुवन,
ब्रह्माट चराचरं विश्व जगती, संसार सृष्टि
(स्त्री) निविष्टप, लोक २ वायु (पु)
३ शिव ।

जगती, पु स्त्री (स) ब्रह्माट विद्व २ पृथिवी
२ वैश्विच्छंदोभेद ।

—तल, स पु (स न) भूलल पृथिवी ।

जगर्दया धिका, स स्त्री (स) दुर्गा ममा,
पार्वती ।

जगदाधार, स पु (स) ईश्वर २ पवन ।

जगदीश, स पु (म) परमेश्वर, जगन्नाथ, जगन्पति (पु) २ विष्णु ।
 जगदीश्वर, स पु (म) दे 'जगदीश' (२) ।
 जगद्गुरु स पु (म) ईश्वर २ शिव ३ नारद ४ सुवृज्यपुरुष ५ उपाधिभेद ।
 जगद्दीप, म पु (म) परमेश्वर परमात्मन् २ सूर्य रवि ।
 जगन्ना, कि अ (हि जगन्ना) दे 'जगन्ना २ अवहित सावधान (वि) भू ३ सवेग उदभू ४ ३ 'चमकना ।
 जगन्नाथ, स पु (स) जगदीश २ विष्णु ३ पुष्य विष्णुमूर्ति (स्त्री) ४ पुरीनामक तीर्थम् ।
 जगन्मगमा, वि (अनु) प्रकाशित २ दोषितम् ।
 जगन्मगाना, कि अ (अनु) दे 'चमकना' (२) ।
 जगन्मगाहट, स स्त्री, दे 'चमक' (१२) ।
 जगह, स स्त्री (फा जायगाह) स्थान, स्थल, प्रदेश २ अवकाश प्रसर, अन्तर ३ अवसर, समय ४ पद, पदवी वि (स्त्री) ।
 जगाना, कि स, व 'जगना' के रूपे रु ।
 जघन, स पु (स न) खौकट्या पुरोमाग २ सितव ।
 —कूपक, स पु (स) कुकुदर, ककुदरम् ।
 जघन्य, वि (स) अन्त्य, अन्तिम, चरम २ गर्स, त्याग्य ३ शुद्र, निरुद्ध, अपम ।
 जचना, कि अ, दे 'जचना' ।
 जञ्चा, स स्त्री (फा) प्रमृतास्तिका ज्ञाता पर्या, प्रगता ।
 —जाना, स पु (फा) अरिष्ट, मूर्ति-सूतिका, गृहम् ।
 जजमान, स पु, दे 'जजमान' ।
 जन, म पु (अ) न्यायाधीश, धर्मन्याय, अर्थरक्ष अ (भा) अकारणिक, धर्माधिकारिभू, निर्णेतु २ परीणक, विवेकिन् ।
 जजिया, स पु (अ) कर-राजस्व-भेद (इस्लाम) ।
 जज्जीरा, स पु (अ) दे 'दीप' ।
 जजा, स स्त्री (स) शटाष्ट, जटी-टि (स्त्री), जू, जूक २ जटाभासी, जटिला, लोमशा, जटाला (सुगन्धितद्रव्यम्) ।

—जूट, सं पु (सं) जगत्समूह २ शिवजटा ।
 —घारी, वि (स रिन्) जगधर, सजूट २ शिव ३ गुह्यभेद ।
 —मासी, सं स्त्री, दे 'जटा' (२) ।
 जटानु, स पु (सं) दशरथसख, जटायुस (पु) ।
 जटाल, वि (स) जटा, धर पारिन् ।
 जटित, वि (सं) अनुविद्ध, खचित, प्रस्तुत, प्रणिहित ।
 जटिल, वि (स) जटालक, अटिक, जटाधर, जटिन् २ अस्पष्टार्थ, दुर्बोध, गहन, गूढ, कठिन, क्लिष्ट ३ क्रूर, हिंस्र । (स पु) सिंह २ अज, छाग ३ शिव ४ ब्रह्मचारिन् ५ परित्राजक ।
 जटिलता, स स्त्री (स) दुर्बोधता, गहनता, गूढता, कठिनता ।
 जगी, वि (स टिन्) दे 'जटिल १' । सं पु, शिव २ ब्रह्म ।
 जठर, स पु (सं पु न) उदर, कुक्षि (पु), तुदर २ अन्न-आम पत्र, आशय, कौष्ठ, पिच्छ २ उदररोगभेद ३ शरीरम् । वि, बृद्ध २ कठिन ।
 —अग्नि, स पु (स) जठरानल ।
 —आमय, स पु (सं) जलोदररोग २ अती (ति) साररोग ।
 जड, वि (सं) अवि, चैतन, निर्जीव, प्राण-हीन निष्प्राण २ स्तब्ध, निश्चेत, इतैन्द्रिय २ मद्बुद्धि, मूर्ख ३ हिमयस्त ४ शीतल ५ मूक ६ बधिर ७ अनभिज्ञ, अवोध ८ मूढ, मोहयस्त । स पु (स न) जल २ सौप्तकम् ।
 जड, स स्त्री (स जग) मूल, अग्नि (पु), बुद्ध, ब्रह्म २ आधार, उपष्टम मूल ३ कारण, हेतु (पु) ।
 —उखाङ्गना, उत्पत्त वमूल (जु), वरान् । (म्वा प से), व्यपहरह (प्रे) समूलवद्द (म्वा प अ) उच्छिद् (रु प अ) ।
 —जमना, कि अ, इष्टमूल-वद्धमूल (वि) भू, मूल बध् (रु प अ) ।
 जडता, स स्त्री (स) अचेतनता, निर्जीवता, जडत्व, स पु (स न) निष्प्राणता २ मूर्खता,

अशता ३ अचलता, सन्धता, ४ द्विमयस्तता, शीतलता ।

जडना, कि स (सं जटन) जट् (प्रे), अनुव्यध् (दि प अ), उत्पद्य् (जु), प्रणिधा (जु ष अ), प्रतिवध् (क प अ) २ आनिधा, अवर्ह् निविश (प्रे) ३ प्रह (ष्वा प अ), आहन् (अ प अ) ३ परोक्षे आ-अधि क्षिप (तु प अ) । स पु, जटन, उत्पन्न, अवरोपण प्रहरण इ । जडने योग्य, वि जाटयितव्य, उत्तरचनीय इ । जडनेवाला, स पु, रत्न अनुबोधक, मणि, प्रणिधायक, जाटयित् ।

जडवाना, जडाना, कि प्रे, व 'जटना' के प्रे रूप ।

जडार्द्र, स स्त्री (हि जडना) जटन, वेदन चृति (स्त्री) २ दे 'जडना' सं पु ।

जडाऊ, वि (हि जडना) रत्न, राक्षित-जटित अनुबिद ।

जडावर, सं पु (हि जाडा) उष्ण ऊर्णमय और्ण, वस्त्राणि-वाससि (न बहु) ।

जदिमा, सं स्त्री (सं मन् पु) दे 'जडता' ।

जदिया, सं पु (हि जडना) २ रत्न मणि, कार १ रत्न, बादक-खचक । दे 'जडने वाला' ।

जदी, सं स्त्री (हि जड >) ओषधी-औषध, मूत्रं, काष्ठौषधम् ।

—यूती, सं स्त्री, ओषधी धि (स्त्री), रोगहर हरितक, आरण्यौषधम् ।

जनन, स पु, दे 'यत्न' ।

जनछाना, जताना, कि स (स शात >) वि, शा (प्रे शापयति), लुध-अवगम् (प्रे) २ (पूर्व) अनु प्रबुध (प्रे), उपदिश (तु प अ) ।

जती, स पु (स यतिन्) यति, जितेन्द्रिय, मन्यासिन् ।

जतु, म पु (स न) जतुक-वा रात्ताश्र ।

जया, म पु (म मूष) गग, मय, समूह ।

जतु, स पु (स न) जतुक, श्रीवास्थि (न) ।

जदीद, वि (अ) मय, नवीन ।

जन, स पु (सं) मानव, मनुय ० लोका, जना १ प्रजा ४ सेवक ५ समूह ६ भवन ७ ८ लोक-न्याहनि, विशेष ।

जनक, सं पु (स) जन्मद, जनयित्, उत्पादक २ पितृ जनित्, (पु), तान, बीजित्, वन्त् (पु) ३ मिथिलारजवशोपाधि (पु) ४ सीरध्वजो जनक ।

—पुर, स पु (स न) मिथिलाया राजधानी ।

—नदिनी, स स्त्री (स) सीता, नैदेही ।

जनता, सं स्त्री (स) जन ना, लोक का, प्रजा-जा, प्रकृतय (बहु) ।

—वाद, सं पु (स) किंवदन्ती जन, प्रवा ।

—वास, म पु (स स) वरयाश्रमम् ।

—श्रुति, स स्त्री (स) दे 'जनवाद' ।

—सरया, स स्त्री (स) मनुष्य प्रजा लोक, सरया ।

जनना, कि स (म जनन) प्रम् (अ आ से), उत्पद् (प्रे), जन् (प्र जनयति) ।

जननी, स स्त्री (स) दे 'माता' २ उत्पत्तिका ।

जननेन्द्रिय, स स्त्री (स न) लिङ्ग, मेढ २ योनि (स्त्री), भग ।

जनपद, स पु (सं) देश २ लोका ।

जनम, स पु, दे 'जन्म' ।

जनमना, कि, अ, दे 'जन्म लेना' ।

जनयिता, वि (सं तु) जन्मद, उत्पादक । स पु (सं) तान, पितृ, बीजित्, जनक ।

जनयित्री, स स्त्री (स) जननी, मातृ (स्त्री), दे 'माता' ।

जनरत्न, स पु (अ) मेनानायक । वि, सामाय, साधारण ।

जनवरी, स स्त्री (अ जेनुअरी) पौषमाघ, आश्विनवर्षस्य प्रथममास ।

जनातिक, अय, (स वन्) रगमये अभिनेतु रदस्य वग कथनम् (मा०) अपवार्य (अन्य) ।

जनाई, स स्त्री (हि जनाना) मायिना, दे दाह २ गर्भमोचनचृति (स्त्री) ।

जनाज्ञा, स पु (अ) दे 'अरथी' २ शुभ ।

जनानजाना, स पु (फा) अत पुर, अवरोध ।

जनाना, कि म (हि जानाना) दे 'जतजाना' ।

जनाना, कि प्रे (हि जनना) ३ 'अना' । के प्रे रूप ।

जनाना, वि (फा) खैण, खीनातीय । सं पु,
अत पुर २ नारी ३ पत्नी ।
जनानी, वि खी (फा) खैणी, खीमादृशी ।
म खी, नारी २ पत्नी ।
जनाय, म पु (अ) महाशय, महोदय,
श्रीमत् पु ।
—जाली, स पु (अ) भायवर, महाशय
महोदय ।
—मन, म पु अ+फा) प्रियमहाशय ।
जनित, वि स उत्पादित २ जात, उत्पन्न ।
जनिता म पु स जनित् जनयित् जनक,
पितृ पु
जनित्री, स खी म जनयित्री, जननी ।
जनी^१नि, स खी स) नारी २ मातृ (खी)
३ पुत्रवधु खी ४ जननम् ।
जनी^२, स खी (स जन दासी, सेविका
२ पुनी । वि खी, जनिता उत्पादिता ।
जनेउ, म पु, दे 'यज्ञोपवीत' ।
जनेस, म खी (स जन) बरबाधा ।
जन्म, म पु [स जन्मन् (न)] उद्भव, समव,
जनि (खी), जनी, जनिता, उत्पत्ति प्रमृति
(खी), जन्तु (खी) । २ जीवन् ।
—जतर, स पु (स न) अन्य अपर पुनर्,
जन्मन् (न) ।
—जय, वि (म) जात्यथ, अनुपाथ ।
—जष्टमी, स खी (स) श्रौङ्गजन्मदिवस,
भाद्रपदमासस्य कृष्णष्टमी तिथि (खी) ।
—दाता, सं पु (स-दात्) पितृ (पु)
२ इश्वर ।
—दिन, स पु (सं न) जन्म जनि जन्,
दिवस ।
—पत्र, स पु (सं न) } जन्म, पत्रिका-योगपत्रम् ।
—पत्री, म खी (सं) }
—भूमि, स खी (स) जन्मदेश, स्व-देश
राष्ट्र-विषय ।
—रोगी, वि, (स विन्) सदारोगिन् ।
—स्थान, स पु (स न) जन्म-जनि, भूमि
(स्था) ।
जनी, स पु (म मिन्) प्राणिन्, जीव ।
जन्मी, वि (म जन्मन् >) सहज, स्वभाव,
स्वभाविक नैसर्गिक [जी (खी)] ।

जन्मेजय, सं पु (सं जनमेजय) विश्व
२ ३ नृप-नाग, विशेष ।
जन्मोत्सव, सं पु (सं) जनि जन्म-पर्यन्त
(न)-क्षण ।
जन्म, स पु (सं) पितृ (पु), जनक
२ वरपक्षीय ३ साधारणो जन ४ किव
दती । (स न) जन्मन् (न) २ उत्पन्न
वस्तु (न) ३ वेद ४ इष्ट ५ सुद
६ निद्रा ७ राष्ट्र ८ जाति (खी) ९ लोका,
प्रजा । वि, जात, उद्भूत, उत्पन्न २ जन
विषयक लौकिक ३ देशीय, राष्ट्रीय (श्रि) य,
जातीय ४ जनविषयमाण ।
जन्या, स खी (स) जननीमखी २ वधुसखी
३ आनन्द, मोद ४ प्रीति (खी), स्नेह ।
जप, स पु (म) मुहुर्मुहुर्मन्त्रोच्चारणम् ।
—तप, स पु [स तपतप् (न)] धर्मक्रिया,
उपासन-ना, सिध्वावदनम् ।
जपना, कि स (स तपन) जप् (स्वा प
से), आप कृ, मुहुर्मुहुर्मन्त्र उच्चार (ज्ञे) ।
जपनी, सं खी (हि तपना) जपमाला,
• तपनी २ • तपनीकोष, गौमुखी ।
जपी, स पु (स जपिन्) जपक, जपितृ
(पु) ।
—तपी, स पु (स जपतपस >) उपासक,
मक्त, पूजक ।
जपा, स खी (फा) दे 'अत्याचार' ।
—कदा, वि (फा) सहिष्णु, सहनशील
२ परिश्रमिन् ।
जब, कि वि (सं यावत् >) यदा, यस्मिन्
काल ।
—कभी, यदाकदाचित्, यदापि ।
—कि, यदा, यावत् ।
—जब, यदा यदा ।
—तक, —तलक, यावत्, यदापर्यन्तम् ।
—तक तन्तरु, यावत् तावत् ।
—तव, यदा तदा, काले काले, कदापि,
कदाचित् ।
—देखो तब, सदा, सर्वदा ।
—से, यदा प्रवृत्ति, यस्मात् कालात् ।
—होता है तब, प्राय, प्रायश, प्रायेण ।
जब(भ)डा, स पु (स जभ) हन् (पु,
खी), हन् (खी) ।

निचला—, कुन, चिडु (पु) पीचम् ।
 जवर, वि (फा) वळिन्, शक्तिमत २ दृढ ।
 —दस्त, वि (फा) दे 'जवर' ।
 —दस्ती, स स्त्री (फा) अत्याचार, अभ्याय । कि वि, बलात्, हटात्, प्रमभ, प्रसह ।
 —दस्ती करना, कि स, पीढ (चु), अद् (प्रे) वाद् (म्वा आ से) ।
 जवरन्, कि वि (अ जमन्) दे 'जवरदस्ती' कि वि ।
 जवह, स पु (अ) हिंसा, हत्या, घान ।
 —करना, कि स, विशस (म्वा प से), हन् (अ प अ), व्यापद् (प्रे) ।
 जवान, स स्त्री (फा) जिहा, रसज्ञा, रसना २ शब्द, वाक्य २ प्रतिज्ञा ४ भाषा ।
 —दराज्ञ, वि, जल्प (पा) क, वाक्दूक ।
 —दराजी, स स्त्री, जल्पकता, वाक्दूकता ।
 —चदी, स स्त्री, मौन, वाग्यम २ भाषण निरोध ३ जिहासतम (रोगभेद) ।
 —का मीठा, सु, मपुरभाविन्, मधुजिह्व ।
 —को मुँह में रखना, सु, जोष-तूणी स्या (म्वा प अ), मौन भञ् (म्वा उ अ) ।
 —देना या हारना, सु, दे 'प्रतिज्ञा करना' ।
 —पकड़ना, सु भाषणात् निष्ठुर (प्रे) नि विनि-इ (प्रे) ।
 —बद करना, सु, मौन लम् (प्रे), लमयति) २ निरुचरी कृ ।
 —बद होना, वक्तु न पाद् (चु), तूणी स्या ।
 जवानी, वि (फा नवान) शब्द [खी (स्त्री)], शाब्दिक [की (स्त्री)], वाचिक वाचनिक मौखिक [की (स्त्री)] । कि वि, स्मृत्या-वाचा (चु एक) शब्दत, अर्थ खिनम् ।
 —पढ़ना, कि स, सृष्टया पठ् (म्वा प से) उचर्त् (प्रे) ।
 —जमा खर्च, सु, प्र, जल्प-पन, निरर्थक वचनानि (बहु) ।
 जवून, वि (फा) निष्ठुर, गर्ह, निच २ अवल, निदल ।
 जन्त, स पु (अ) निग्रह, निरोध, सयम २ दृढरूपेण अपहनं ३ राजसात्करणम् ।

—करना, कि स, राजसात् कृ, दृढरूपेण अपह (म्वा प अ) ।
 —होना, कि अ, राजसात् भू, दृढरूपेण अपह (कर्म) ।
 जव्ती, स स्त्री (अ जवन्) सर्वत्र, अप हार-दृढ, दे 'जवन्' (२) ।
 जज, स पु (अ) कौर्य, वैश्टुय, अत्याचार ।
 —करना, कि स, अद् (प्रे), पीढ (चु) ।
 जमन, जमिया, कि वि, दे 'जवरन्' ।
 जमी, वि (अ) बलात् कारित, अनिवार्य ।
 जम, स पु, दे 'यम' ।
 जमघट, स पु (हि जमना + घट्) जनेष, जन्समर्द, सकुल, लोकमय ।
 जम-जम, अन्त्य (स जमन् >) मदा, सर्वदा, नित्यम् ।
 जम-जम, स पु (अ) वावासमीपस्थ पूर विशेष ।
 जमना, कि अ [स जमन् (न) >] प्ररुद् (म्वा प अ), उद्दिद् (कर्म) २ जन् (दि आ से), उत्पद् (दि आ अ) ।
 जमना, कि अ (स यमन जकरना >) धनी पिढी शीनी, भू, सहन् (कर्म) द्यै (म्वा आ अ) २ समिल् (तु प से), सामागम् (म्वा प अ) ३ अनुषक्त समर्द (वि) भू, सलन् (म्वा प से) ४ स्वरम्, निवास स्थिरोट् ५ प्रतिष्ठित बद् मूल- (वि) भू ६ उपषद्-युच् (कर्म) सुमगत वि) भू ७ निर्दिष्टेन वद् (म्वा प से) । स पु, धनी-शीनी पिढी, भाव समेत्न सस ति (स्त्री) रिधरीभाव ३ ।
 जमना, स स्त्री (स यमुना) वाळिन्दी ।
 जमराज, स पु, दे 'यमराज' ।
 जमा, वि (अ) सगृहीत, सचित समहन २ निश्चित, न्यस्त, निश्चित । स स्त्री, मूल, मूल, द्रव्य धन २ धन, सपद् (स्त्री) ३ भूमि-वर ४ दोग, पिढ, सक्-रन (गणित) ४ बहुवचन (व्या) ।
 —करना, कि स, सचि (स्वा, व अ), सगद् (क् प से) २ निधा (जु उ अ), निष्प (तु प अ) ३ दे 'जोदना' (२) ।
 —होना, कि अ, सचि-अगद् (कर्म) २ निधा निष्पिप्यस् (कर्म) ।
 —खर्च, स पु (फा) आय ययी २ आय व्ययलेख ।

—जपा, सं स्त्री, सचिन, धन द्रव्यम् ।

—जमाई, स पु [स जामात (पु)] इदिव
पुत्री, पति ।

जमात, स स्त्री (अ जमाअन) कथा, श्रेणी
२ जनौष, जनसमर्द्ध ३ गण सध ।

जमादार, स पु (फा) नायक, रक्षिमुत्पत् ।

जमानत, स स्त्री (अ) (द्रव्य) आधि
(पु) निक्षेप, न्यास, प्रातिमाव्य । (पुरुष)
प्रतिभू (पु) बधक, लग्नक ।

—देना, कि स, निक्षेप लग्नक दा अथवा
दत्त्वा मुच (प्र) ।

—नामा, स पु (अ + फा) प्रातिमाव्यपत्रम्
जमानती, वि (अ जमानत >) निक्षेपाह,
प्रातिमायाह २ प्रतभू (पु) लग्नक
बधक ।

जमाना, स पु (फा न) समय, काल
२ विरकाल, सुशोधसमय २ तयत् (न) ।

—साज्ञ, वि (फा) कालानुवतिन्, समया
नुरोधिन् ।

—साज्ञी, स स्त्री (फा) कालानुवर्तन,
स्वार्धपरता ।

जमाना, कि स, व 'जमना' के प्रे रूप ।

जमाल, स पु (अ) सौन्दर्य, सुषमा मनो
दया लावण्यम् ।

जमालगोटा, स पु (स जयपाल + गोगा >)
(इष) जयपाल सारक, रचक २ (बीज)
जयपाल-कर्मो-यग गोपनी, बीज, बीजलेखनम् ।

जमाव, स पु (हि जमना) जनौष जनस
मर्द्ध २ दे 'जमना' स पु ।

जर्मीदार, स पु (फा) क्षत्रपति (पु),
भूस्वामिन् ।

जर्मीदारी, स स्त्री (फा) भूमि (स्त्री),
भूमिरिक्थ क्षुत्र २ क्षेत्रपतिवत् भूस्वामित्वम् ।

जर्मीदोज, वि (फा) आत्मौघ (मी स्त्री),
भूगर्भजनिन्, भूगू ।

जर्मीन, स स्त्री (फा) भूमि (स्त्री),
पृथिवी श्वी २ भू-भूखी-तल ३ बरुपत्रादे
तल २ क्षेत्र भूमिरिक्थम् ।

—आसमान एक करना, मु, अत्यधिक
परिश्रम् (दि प से) ।

—आसमान का फर्क, मु महदतर, महदवै
षय सम्भेद ।

—आसमान के कुलावे मिलाना, मु, अत्यु
क्त्वा वार् (चु) प्रतिपद् (प्रे) ।

जमुना, स स्त्री, दे 'यमुना' ।

जमीमा, स पु (अ) अतिरिक्त-कोठ, पत्रम् ।

जमुर्द, स पु (फा) दे 'पत्ता' ।

जमेयत, स स्त्री (अ) जन, समुदाय सन्ध
२ परिषद् (स्त्री) समा ।

जयत, स पु (स) इद्रपुत्र २ कार्तिकेय ।

वि [स तयत् (शत्रुत)] विनयिन् जैत्र
(त्रीस) निष्पु, जेतु जिरवर [-री स्त्री]
२ दे 'बदुरुपिया' ।

जयती, स स्त्री (स) जेतन, जेतु (पु),
ध्वन २ दुर्गा ३ तमो-सब ४ स्थापना
दिवसोत्सव ।

जय, स स्त्री (स पु) वि, तय, विजिति
(स्त्री) ।

जय (जय जय) कार, स पु (स) तय,
ध्वनि (पु) नाद-स्वन शब्द ।

जयजयकार करना, कि स जयध्वनि क,
जयत्येति नद् (भ्वा प से) ।

—पत्र, स पु (स न) विजित, पत्र-लेख
२ आधिकारिकस्य मुद्रितनिर्णयपत्रम् (धर्म) ।

—माल, स स्त्री (स-ला) तय विनय, माला
सज (स्त्री)-माख्यम् ।

—स्तभ, स पु (स) विजयस्थूणा ।

जयमा (घा) न, जयवत्, जयी, वि, दे
'तदन' वि ।

ज्जर, स पु (फा) सुवर्ण, काचन, २ धन,
विचन् ।

—खरीद, वि (फा) विचक्रीत ।

—खेज़, वि (फा) उवर, शस्यद, फलप्रद ।

—खेज़ी, स स्त्री (फा) उर्वरता, फलप्रदता ।

—दार, वि (फा) घनिक, घनान् ।

—दोज, स पु (फा) कामिकवल्कल (पु),
सूचीकर्मोपनीविन् ।

—दोजी, स स्त्री (फा) शिल्प मूचीकमन (न) ।

जरनेल, स पु (अ) दैनिक वृत्तपत्र-समाचार
पत्रम् २ पत्रिका ३ आव्यव्यय पत्रो परि- (स्त्री) ।

जननलिप्त, स पु (अ) पत्रकारिता पत्रकार
न्दवसाव ।

जरनलिस्ट, स पु (अ) पत्रकार ।

जरनेल, स पु, दे 'जनरल स पु ।

जरव, सं स्त्री (अ) आघात, प्रहार, २ जगण
३ अभ्यास, आघान, गुणन, इनन ५ अक,
मुद्राचिह्नम् ।

—देना, कि स, गुणयति (ना धा), आ
नि, इन् (अ प अ, या प्रे, पातयति),
पुर (जु) । मु, प्रह (भा प अ) तड् (जु) ।

जरर, स पु (अ) क्षति हानि (स्त्री)
० प्रहार ३ आपत्ति (स्त्री) ।

जरस, स पु (अ) घटा, घनम् ।

जरा, वि (अ जरं) अल्प, न्यून । कि वि,
विचिद्, ईषत् ।

जरा, स स्त्री (स) दे वार्द्धक्यम् ।

—प्रस्त, जौर्ण, वि (स) वृद्ध, जठ ।

जराअत, स स्त्री (अ) वृद्धि (स्त्री) कर्षण,
इलभृति (स्त्री) ।

—पेशा, वि, कर्षक, वृषिनीविन्, क्षत्रिक ।

जरातुर, वि (स) वृद्ध, नरठ, स्थविर,
पलित, जीर्ण ।

जराथु, स पु (स) उच्च कलल, २ गर्भाशय ।

जराथुज, वि (स) गर्भाशयजात (मनुष्य,
गो आदि) ।

जरामघ, स पु (स) चद्रवशीयनृपविशेष,
कसश्चुर ।

जरिया, स पु (अ) दे 'साधन' ।

जरी, स स्त्री (फा) दाशरथ वस्त्र ० सौवर्ण
कार्मिकवस्त्रम् ।

जरीक वि (अ) पिनोद परिहाम, शील, प्रिय ।

जरीव, स स्त्री (फा) पचपवाशदग्नात्मक
क्षेत्रमानभेद, जरीव २ यष्टि (स्त्री) ।

—कश, स पु (फा) भू क्षेत्र, मापक ।

—कशी, स स्त्री भू क्षेत्र मापनम् ।

जरूर, कि वि (अ) ज्वरप, अपरिहार्यतया,
निश्चयेन, नि सदेह, नि सशयम् ।

जरूरत, स स्त्री (अ) आरद्रयवता, प्रयो
जनम् ।

जरूरी, वि (फा) अपेक्षित, आवाञ्छित
२ आवश्यक [-की (स्त्री)], अपरिहार्य
अनिवार्य, अवश्यकरणीय ।

जरुं वर्क, वि (फा) उज्ज्वल, मासुर, भास
मान ।

जरुंर, जरुंरित, वि (स) नीर्ण शोर्ण,
सम्पिष्ट २ भग्न, सञ्चित ३ वृद्ध ।

जुर्द, वि (फा) पीत, दे 'पीला' ।

जुर्दी, सं स्त्री (फा) पीतिमन् (पु) दे
'पीलाई' २ अटपीतिमन् (पु) ।

जुर्म, सं पु (अ) जीवाणु, रोगकीटाणु ।

जुर्रा, स पु (अ) अणु, परमाणु ० अणुक,
यणुक ३, वण णीजिका, लव ।

जुर्राह, स पु (अ) दान्यचिकित्सक,
शुश्रूषैव ।

जुर्राही, स स्त्री (अ) शक्य, शास्त्र चिकित्सा ।

जलधर, स पु, दे 'जलोदर' ।

जल, स पु (स न) पानीय, आप (स्त्री,
नित्य बहु) । पयस अमल-अबु वारि (न),
सलिल, अमृत, जीवन, उदक, तोय, नीर,
घनरस ।

—कूपी, स स्त्री (स) कूपगतं, पुष्करिणी ।

—क्रीडा, स स्त्री (स) वर, पात्र, परिवा,
व्यात्युक्षी, नलविहार ।

—चर, वि (सं) वारिचर, नलधारिन् ।

—जतु, स पु (स) वादम् (न) जलनीव ।

—जात, स पु (स न) कमल, पद्मम् ।

—तरग, स पु (स) वायुभेद २, लहरी ।

—धर, स पु (स) मेघ, जलद २ समुद्र ।

—धारा, स स्त्री (स) वारिप्रवाह ।

—पक्षी, स पु (स छिन्) जलशुद्धन ।

—पान, स पु (स न) उपाहार, लघु
भोजनम् ।

—प्रपात, स पु (स) निर्वा ।

—प्लावन, स पु, (स न) जलोपप्लव,
तोयविप्लव ।

—माजारी, स पु (स) उद, नलनकुल,
जलविटाल ।

—यान, स पु (म न) नीवा, पौद,
वाष्पपोत्र ।

—शायी, स पु (स यिन्) वरण ।

—सना, स स्त्री (स) नी समुद्र, सेना मैद्यम् ।

जलज, स पु (स न) कमल, वारिजम् ।

जलजला, स पु (फा) भूक्ष्म, भूचाल ।

जलजमसमध्य, स पु (स न) समुद्रधुनी ।

जलज, स पु (स) मेघ, वारिद ।

जलधि, स पु (स) अग्नि (पु), सागर ।

जलन, स स्त्री (स उक्लनं) ताप, दाह,
२ पाक (चिकित्सा, उ नेत्रपाप), ३ इर्ण

ध्यां, सापत्न्य, मात्सर्यं ४ गाश्रदाह (रोग भेद) ।

जलना, कि अ (सं ज्वलन) ज्वल (भ्वा प से) तप दह् (कर्म) दीप (दि आ से) २ असूयति (ना धा) ईश्वर (भ्वा प से) परोत्कर्षे न सह (भ्वा आ से) मृष (दि प से चु) । स पु, ताप, ज्वलन, दहन, दाह, प्लोष इ ।

जले पर मोन छिद्यना, मु क्षने क्षार क्षिप (तु प अ) ।

जलरुह, स पु (सं न) जलरुह (पु), इमन्म् ।

जलवा, स पु (फा शी (स्त्री) प्रमा शोमा ।

जलमा, म पु (अ) उत्सव, महोत्सव ममेलन शुद्धिबिदान २ मगौतोत्सव २ समोजनम् ।

जलाजलि, म स्त्री (सं पु) अजलि-करपु-मात्र जलम् २, तर्पणम्, प्रेततर्पणश्रमम् ।

जलाकर, स पु (सं) समुद्र, सागर २ जल तोय-राशि ३ कूप ४ निरंतर, उत्स ।

जलासु, सं पु (सं) दे 'कदबिलाव' ।

जलातंक, स पु (स) अलकांभिमव, आलकं, जलप्रासारयो रोग (हि इलक) ।

जलाल्यय, स पु (स) शरद्वृत्तु, वर्षा वसान, मेघात् ।

जलाना, कि स (हि जलना) उप (भ्वा प से), ज्वल (प्रे ज्वलयति), तप (भ्वा प अ, प्रे) । दह (भ्वा प अ), दीप (प्रे), प्लुप् (भ्वा प से) २ ईश्वर-अमूया मात्सर्यं जन् (प्रे), ३ पीठ (प्रे) तुद (तु प अ) । स पु, दहन तापन, प्लोषण, दीपन इ ।

जलाने योग्य, वि, ज्वलयितव्य, दग्धव्य, शोष नीय, तपनीय ।

जलानेवात्ता स पु, तापक, दाहक इ ।

जलाया हुआ, दग्ध, ज्वलित, दीपित ।

जला भुना वि, कुपित, क्रुद्ध, क्रुद्ध, शील, दुःप्रवृत्ति ।

जलाभ्रं, वि (स) टिण, उष्ण, उग्र ।

जलाभ्रतन, वि (अ) निर्वासित, विवासित ।

जलावतनी, सं स्त्री (अ) निरुवि, वासनम् ।

जलाशय, सै पु (सं) जल तोय, आधार, तडाग-ग, बापी ।

जलील, वि (अ) नीच, क्षुद्र, जघन्य । (२) अपमानित, तिरस्कृत ।

—करना, कि स, अपकृप (भ्वा, प अ), लघूक ।

जलम्, सं पु (अ) उत्सव, यात्रा, सप्र चलनम् ।

जलेरी, स स्त्री (दिश) जुण्डली, मिष्टान्नभेद ।

जलोका, सं स्त्री (सं) दे 'जौक' ।

जलोद्गर, स पु (सं न) जठरामय ।

जलद, कि वि (अ) अचिरात्, अचिरेण, झटिति, द्राक, अविलंब, आशु, शीघ्र २ जवेन, वेगेन, सत्वरम् ।

—बाज, वि (अ + फा) अविमृदय असमीक्ष्य-भिन्न-कारिन्, साहसिन् ।

—वाजी, सं स्त्री, अविमृदय-असमी-य, कारिता-कारित्व, साहसन् ।

जवदी, स स्त्री (अ) शीघ्रता, त्वरा, क्षिप्रता ।

—करना, कि अ, त्वर (भ्वा आ से), आशु शीघ्र त्वरित कृ अथवा चल (भ्वा प से) ।

जवप, स पु (सं) कथन, वदन २ प्रणव्य, प्र, नल्पित, वृथा, आलाप-कथा, व्यर्थवाता ३ वादभेद (न्या०) ।

जवपक, वि (म) जलपक, वाचाट, वाचाल, बावदक ।

जलाद, स पु (अ) घातक, दृष्टपाशिक, मातंग, वधाधिकृत । वि, क्रूर, निर्दय ।

जलसा, स पु, दे 'जलसा' ।

जव, म पु (स) वेग, त्वरा रहम् (न) ।

जवन, स पु, दे 'यवन' ।

जवनिका, म स्त्री, दे 'यवनिका' ।

जवोमर्द, वि (फा) वीर, शूर, पराक्रमिन् ।

जवोमर्दी, स स्त्री (फा) वीरता, शूरता ।

जवासार, म पु (स यवसार) यवाह, यवनात् ।

जवान, वि (फा) युवन्, तरुण, अभिनव यवस्क, कुमार २ वीर, शूर । स पु, पुण्य, मनुष्य सैनिक ३ वीर ।

जवानी, स खी (जा) बीमार, तास्थ्य,
 यौवन, अभिनव-पूर्व प्रथम वयस (न) ।
 जवाब, स पु (अ) उत्तर, प्रति, वचन वाच्
 (खी), प्रत्युक्ति (खी) प्रत्युत्तर २ प्रति
 क्रिया, प्रतीकार, ३ कारभ्रसादेश, ४ पद
 च्युति (खी), अधिकारभ्रश ।
 —दावा, स पु (अ) उत्तरम्, उत्तर, पक्ष
 पाद ।
 —देह, वि (अ + फा) उत्तर, दातृ दायिन्,
 अनुयोग्य प्रष्टव्य ।
 —देही, स खी (अ + फा) उत्तरादावित्त्व,
 प्रष्टव्यता, नार ।
 —सवाल, स पु प्रश्नोत्तराणि (बहु), वद
 विवादी (दि) ।
 —देना, सु, पदाद भवरुह च्यु (प्रे) । कि
 स, दे उत्तर देना ।
 —मिलना, सु, अधिकारात् च्यु (भ्र आ
 अ), पदभ्रष्ट (वि) भू ।
 जवाबी, वि (अ) उत्तरापेक्षिन् ।
 —काई, स पु, उत्तरापेक्षि-उत्तरणीय, पञ्चम् ।
 —तार, स पु, उत्तरापेक्षी तद्विस्तरेण ।
 जवार, स पु, दे 'जवार' ।
 जवारा, सं पु (हि जव) यव, अकुर प्ररोह ।
 जवाल, स पु (अ) क्षय, हासं २ विपद्
 (खी) ।
 जवाम-सा, स पु (स यवास) यास,
 दु स्पर्श, रोदनो, दुरालमा ।
 जवाह(हि)र, स पु (अ) रत्न, मणि ।
 जवाह(हि)रात, स पु (अ, बहु) रत्नानि
 मणय (बहु) ।
 जवान, स पु (फा) धार्मिकोत्सव २ उत्सव,
 क्षण ३ आनन्द, दर्प ४ सगीतोत्सव ।
 जसामत, स खी (अ) स्थूलता पीनता,
 पीवरता ।
 जमीम, वि (अ) पीन, पीवर, स्थूल ।
 जस्तिम्ब, स पु (अ) उच्च-वापाल्यस्य धर्म
 अधिकारिन्-अध्यक्ष, २ न्याय, दहयोग ।
 जस्त, जस्ता, स पु (म यस्त) कुषातु (न) ।
 जहन्नुम, स पु (अ) नरक, निरय
 २ तीव्रपीडास्थानम् ।
 जहमन, स खी (अ) बह, अपाद (खी),
 २ ध्यानोद्, चित्तविशेष ।

जहर, स पु (फा 'जह) गरल, विष पद् ।
 वि, घातक, प्राणहर २ अतिहानिकर [री
 (खी)] ।
 जहरदार, वि (फा) विपाक्त, गरलद्रिग्ध ।
 जहरवाद, स पु (फा) विसर्प ।
 जहरमोहरा, स पु (फा जहरमुहरा) विषघ्न
 प्रस्तरभेद ।
 जहरीला, वि (फा जहर) दे 'जहरदार' ।
 जहाँ, कि वि (स यत्) यरिमन् देशे स्थाने ।
 —कहाँ, कि वि, यत्रकुत्र चित् अपि, यत्र
 यत्र ।
 —का तहाँ, कि वि, सधैव, पूर्वरिमन्नेव स्थले ।
 —तक, कि वि, यावत् ।
 —तहाँ, कि वि, इत्यस्तत्र, अत्र तत्र २ सर्वत्र ।
 —से, कि वि, यत्, यस्मात् स्थानात् ।
 जहाँ, स पु (फा) जगत्, सत्सार ।
 —दीद, —दीदा, वि (फा) अनुभविन् ।
 —पनाह, स पु (फा) जगद्रक्षक, प्रभु
 २ प्रभुचरणा, देवपादा ।
 जहाज, सं पु (अ) तरावु (पु) बृहन्नौवा,
 पोत य, होड ।
 जहाज़ी, वि (अ जहाज) । स पु, नाविक,
 नौ पोत, वाद्, समुद्रग ।
 —हाऊ, स पु, सागरतस्कर, समुद्रदस्यु
 (पु) ।
 —बेहा, स पु (रण) पोतगण ।
 जहान, स पु (फा) जगत् (न),
 सृष्टि (खी) ।
 जहालत, स खी (अ) अज्ञानम्, मूर्खता ।
 जहान, वि (अ) कुशामबुद्धि २ भेषाविन् ।
 जहूर, सं पु (अ) आविर्भाव प्रकाश ।
 जहेज़, स पु (अ) शुक, यौवन, बाह्यनिक,
 स्त्रीधनम् ।
 जहूँ, स पु (स) गुणविशेष, सुहोत्रपुत्र ।
 —कन्या—तनया, स खी (स) गंगा ।
 जागल्ट ली, वि (स जागल्ट) आरण्यक, वाय,
 २ अशिश, क्रूर ।
 जौध, स खी (स जधा) ऊरु (पु),
 सन्धि (न) ।
 जौधिया, स पु (हि जौध) न्यायिक,
 •ऊरुच्छद दे 'काष्ठा' ।

जौंच, म स्त्री (हि जौंचना) परीक्षण का, विचरण गा २ अनुसंधान, गवेषणा ।

जौंचना, कि स (स याचन >) परीक्ष (म्वा आ से), विमृश (तु प अ), भा पर्या लोच (चु), अनुसंधा (जु उ अ), निरूप (चु) विचर् (प्र) ।

जायूनद, स पु (स न) सुवर्ण, कायन, हिरण्यम् ।

जा, स स्त्री (फा) स्थान प्रदेश वि, उचिन, योग्य समन

—यजा, कि वि, मत्त

—वेचा, वि उचिनानुचिन लथ्यालप्य ।

जाई, स स्त्री (स जा = जाता) पुत्री दुहित (स्त्री) ।

जाग, स पु (स यद्य) मत्त, मत्त ।

जाग, स स्त्री (हि जागना) जागरण प्ररात्रि जागर ।

जागना कि अ (स जागरण) जागृ (अ प से) प्र वि-नुष (दि आ अ) स पु, दे जागरण' ।

जागनेवाला, स पु, जागरक, जागरित (पु) । अवहित जागरक ।

जागरण, स पु (स न) प्र जागर, य, कोष धन निद्रास्वार अभाव २ अवधान दक्षता ।

जागरित, वि (स) उन्निद्र, विनिद्र, प्रबुद्ध । २ जागरक सावधान । स पु, (स न) दे 'जागरण' ।

जागरक, वि (स) जागरित् जागरक जागरित् २ अवहित, दक्ष, सावधान ।

जागति, स स्त्री (स) जागर्ता, जागिया, निद्राभाव प्रकोष २ दक्षता ।

जागीर, स स्त्री (फा) अग्रहार २ भूमिपद (स्त्री) ।

—दार, स पु (फा) अग्रहारिन् २ भूस्वामिन् ।

जाग्रत, वि (स जाग्रत) दे 'जागरक' ।

जाग्रति, जागृति, स स्त्री, दे 'जागर्ति' ।

जागरर, स पु (फा जा + अ) दे 'जागर्ता' ।

जागिम, स स्त्री (तु जागिम) चिञ्चितास्तरण, तलाच्छादनम् ।

जाज्वल्यमान, वि (स) प्रज्वलत्, दक्षमान २ तेजस्विन्, कातिमत् ।

जाट, स पु (स जट) आर्येण जातिविशेष २ जड, मूढ २ आमीण, ग्रामीय, ग्रामिन् ।

जाट, स पु [स यष्टि (स्त्री)] तैल श्लु, पेषणीयहि

जाठर, वि (स) जठर-उदर, सम्बन्धिन् विष पक, औदर, जठर, न स्थित-वर्तिन् । स पु, जठराग्नि २ बाल ।

—अग्नि, म पु (स) जठरानल, जठराग्नि ।

जाडा, स पु (स जाड्य) शीतता, शीतलता, शैत्य २ शिशिर, शीतकाल, हिमागम, शीतर्तु (पु) ।

जाड्य, स पु (स न) जटला मूलता, मूढता २ मदता, मथरता ।

जात, वि (स) उत्पन्न, प्रभूत, मभूत २ प्रकट, व्यक्त ३ अच्छ, प्रसरन ४ नव-जात

जात, स स्त्री, दे 'जाति' ।

जात, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री), स्वभाव २ देह ३ व्यक्ति (स्त्री) ।

जातक, स पु (स) वस्त्र, बाल २ शिशु नवजात (पु) ३ भिक्षु (पु) याचक ४ बुद्धस्य पूर्वज-मकथा (स्त्री बहु) ।

जातकर्म, स पु (स भर्त्स) आतकिया, सत्कारभेद (धर्म) ।

जातर्षोत्, स स्त्री, दे 'जातिर्षोत्' ।

जाता, स स्त्री (स) बाला, कन्या, कुमारी २ पुत्री, सुता तनुजा ।

जाति, स स्त्री (स) वर्ण २ कुल, वंश ३ वंशावली, गोत्र ४ भेद, प्रकार ५ वर्ष, धणी ६ ७ समाज, जनसमूह ८ सामा'य ९ जातिफल १० मालती ।

—स पारित्य करना, कि स, जाते समानाद बहिष्क या च्यु भर्त् (ने) ।

—च्युत, वि (स) जातिहीन, अपाक्त्य, बहिष्कृत ।

—पाति, स स्त्री, चालुपचारी (स्त्री दि) ।

—स्वभाव, स पु (स) सद्गुण, प्रकृति (स्त्री)-स्वभाव ।

जाती, वि (अ जात) वैयक्तिक २ स्वीय, नैज ।

जाती, स स्त्री (स) सुरभिगधा, सुरभिया, चेतकी, मालती ।

—पत्री, स स्त्री (स) जातिकोपी, मालनी पत्रिका ।

—फल स पु (सं न) जाति(ली)कोश श प वन् ।

—रस्व, स पु (स न) दोल ।

जातीय, वि (स) जातिभक्, जानिमवधिन् २ राष्ट्रीय, देशीय ३ सामाजिक ।

जातीयता, स स्त्री (स) जाति, प्रेमन् (पु) अनुराग २ राष्ट्रीयता ३ सामाजिकता ।

जातुधान, स पु (स) निशाचार, राक्षस ।

जादू, स पु (फा) अभिचार, इन्द्रनाल कार्मण, कुसृति (स्त्री) कुहक-क माया, मोह, मन्त्रयोग ।

—करना, कि स, अभिचर (प्रे), मन्त्री वशीक वा मुह (प्रे), मार्ग कृ ।

जादूगर, स पु (मा) कौसृतिक सौभिक, वै (इ) द्रजातिक, कुहवाचोविन्, मायाकार ।

जादूगरी, सं स्त्री (फा) ऐन्द्रनालिकता, दे 'जादू' ।

जान, स स्त्री (स ज्ञान) बोध, उपलब्धि (स्त्री), विचार २ अनुमान, ऊह, तर्क ।

—कार, वि, ज्ञान, ज्ञानिन्, वेत्तृ क, अभिज्ञ (समासार्ज में) २ दण्ड, कुशल ।

—कारी, स स्त्री, परिचय, अभिज्ञता २ नैपुण्य, दाह्यम् ।

—वृक्ष कर, कि वि, कामत, ज्ञान बुद्धि विचार, पूर्वकम् ।

—पट्टिचान, स स्त्री, परिचय परिचिति (स्त्री) ।

जान, स स्त्री (फा) प्राण, जीव वन थास २ वन, सामर्थ्य ३ भार, उत्तमोश ४ प्रिय, प्रिया ।

—जोर्तो, स स्त्री, प्राण, मकट मशय भयम् ।

—दार, वि (फा) प्राणिन, सप्राण ।

—किदानी, स स्त्री (फा) परमोयोग, पौरपरिचय ।

—किसी पर दना, मु आवय रिनहू (पि प से, सप्तमी के योग में) ।

—गाना, मु, डु (स्वा प अ), बाध (भ्वा अ से) ।

—छुडाना, मु, अपसु अपसुप् (भ्वा प अ) ।

—मं जान भाना, मु, अ समा-असु (अ प से), सुस्थ निर्वृत्त (वि) भू ।

जानकी, स स्त्री (स) सीता, वैदेही, जनकतनया ।

जानना, कि स (स ज्ञान) दा (कृ उ अ), अवह (अ प से) अत्रगम्, वृष् (भ्वा उ से), विद् (अ प से) २ मन् (दि आ अ), क्हु (भ्वा आ से) विनक (जु) । स पु, दे 'ज्ञान' ।

जानने योग्य, वि, दे 'ज्ञान-य' ।

जाननेवाला, स पु दे 'ज्ञाना' ।

जानपद, स पु (स) ग्रामवासिन, ग्रामिन ग्रामीण, ग्राम्यचन २ जनपदप्राप्तकर वि जनपदग्राम सम्बन्धिन् ।

जानवर, स पु (फा) जीव प्राणिन्, चर, चेतन २ पशु, जतु (पु) । वि, नह, मूर्ख ।

जानशीन, स पु (फा) उत्तराधिकारिन् ।

जाना कि अ (स दान) वाह (अ प अ), गन् (भ्वा प अ), चर चल वृत् (भ्वा प से) पद् (दि आ अ), ऋ (भ्वा जु प अ) २ प्रस्था (भ्वा आ अ) प्रया, प्रचल, निर्गम् । स पु, गमन, यान, वजन, प्रस्थान, प्रवर्तन इ ।

जाने योग्य, वि, गन्व्य, यान-य ।

जानेवाला स पु, गन् यात, चलित् (पु) इ १ गया हुआ, वि, गत, यान, इत, चलित इ ।

जाने देना, मु, दे 'क्षमा करना' ।

जानी, वि (फा जान) प्राणमवधिन् । स स्त्री, प्रिया, दयिता ।

—दोस्त, स पु, अभिन्नदर मुद६ (पु) ।

—दुरमन, म पु अनवर प्राणहर शत्रु (पु) ।

जानु, म पु (स न) ऊतपरंज (न), अष्टीवद (पु न), तामुमधि (पु), चक्रिका ।

जाने अनजाने, कि वि (दि जानना) ज्ञाननो-ज्ञाननो वा, कामनो कामनो वा, मुदि पूर्वमनुद्विपूर् वा ।

जानो, अञ्य, दे, 'मानो' ।
जाप, स पु (सं) दे 'जप' ।
जापक, सं पु (सं) दे 'जपी' ।
जापत, मं स्त्री (अ विवापत) सह-म,
मोननम् ।
जापरान, मं पु (अ) दे 'केसर' ।
जापरानी, वि (अ) दे 'वेसरिया' ।
जाप, सं पु (अ) कर्मन् (न), कार्यम्
२ वैतनिक-कार्यम् कर्मन् ।
जापना, म पु (अ) नियम, व्यवस्था, विधि
(पु) ।
—दीवानी, स पु, व्यवहारसहिता ।
—फौजदारी, म पु, दण्डसहिता ।
वेजाणा, वि नियम विधि, विरुद्ध, अवैध ।
वजाअगी, मं स्त्री, अनिमय, उरसूत्रवा ।
जाम्, स पु (स याम) दे 'पहर' ।
जाम्, स पु (फा) चपक कम् ।
जामदग्न्य, म पु (स) नामदग्निपुत्र परशु
राम ।
जामन, सं पु (हि जमाना) द्र (द्रा) प्त,
७ (द्र) प्त्यम् ।
जामन, म पु दे 'जामुन' ।
जामा, स पु (फा) वसन, वस्त्र २ कनुक,
प्रावारक ।
जामे से बाहर होना, मु, अत्यन्त क्रुध् (दि
प अ) ।
जामे में फूला नृसमाना, मु, शृश हृष् (दि
प से) ।
जामाता, सं पु दे 'जमात' ।
जामिन, सं पु (अ) प्रतिभू (पु) वधक,
लक्षक ।
जामिनी, स स्त्री, दे 'जमान' (द्रव्य) ।
जामिनी, सं स्त्री, (मं यामिनी) दे रात्री
त्रि (स्त्री), निशा ।
जामुन, स पु (सं-जम्बु) (वृक्ष) जम्बू
पु (स्त्री) । (फल) जम्बु (न), जम्बु
जम्बू (स्त्री), जवुफल, जाम्बवम् ।
जायका, सं पु (अ) आ, स्वाद, रस ।
जायवेदार, वि (अ + फा) स्वादु, सरस,
रसवद् ।
जायज, वि (अ) लचिन, सुक्त, सगन ।

जायदाद, सं स्त्री (फा) रिक्थ, दाय, भूमि
मपत्ति (स्त्री) ।
जायफल, सं पु [मं जाति (ती) फल]
जाति-कोष सार-शास्त्र, कोश (प) म्, पपुदम् ।
जाया, सं स्त्री (सं) परनी, भार्या, पाणि-
गृहीती ।
—पनी, सं पु (सं) दम्पती जम्पनी,
(पु दि) ।
जाया, मं पु (स जात) पुत्र, सुत । वि,
उत्पन्न, जान ।
जाया, वि (फा) नष्ट, निरश्क ।
जार, म पु (सं) उपपत्ति, परदारलुपट ।
—ज, स पु (सं) उपपत्तिसतान ।
जारिणी, मं स्त्री (सं) कुलग पुच्छली,
अधनचपला ।
जारी, वि (अ) प्रवृद्ध, प्रवाहिन २ वर्त
मान, प्रचलत्, प्रचलित ।
जालजर, स पु (स) (१४) नगर नृप
मुनि दैत्य, विशेष ।
जाल, सं पु (सं न) जालक, पाश,
आनाय, बागुरा २ समूह, निकर ३ लता
लुतिका, आलम् ।
जाल, सं पु (अ जमल) छल, कपट,
माया ।
—साज, सं पु (अ + फा) धूर्त, शठ,
मायिक ।
—साजी, सं स्त्री, धूर्तता, कापट्य, शाल्यम् ।
जाला, स पु (सं जाल) लता लुतिका, जाल
२ जालदुष्टि (स्त्री) नेत्ररोगभेद ३ वासा
दिवन्मनार्थ जालम् ।
जालिक, स पु (सं) धावर केवर्त्त २ ऐन्द्र
जालिक, कुहककार ३ उर्ग ततु, नाम ।
जालिम, वि (अ) गोर, कूरकर्मन्, आन
तायिन्, पापिष्ठ ।
जालिया, दे 'जालसान' ।
जाली, सं स्त्री (सं जाल >) छिद्रप्राय
वस्त्र, जालिका २ काष्ठादिपट्टेषु छिद्रसमूह
३ सूचीकर्मभेद जालिकाकर्मम् ।
जाली, वि (अ जमल) कुनिम, कृतक ।
जावा, सं पु (सं यवद्वीप प) द्वीपविशेष ।

जिह्वत, स स्त्री (अ) अपमान अवस्था,
निरस्कार, अनादर २ दुर्मति (स्त्री)
दुर्ज्ञा ।
निस, सर्व (स य >) यत् ।
जिस्म, स पु (फा) शरीर, देह ।
जिहन स पु (अ) बुद्धि-मति (स्त्री) ।
जिहाद् स पु (अ) धर्मयुद्धम् ।
जिह्वा, स स्त्री (स) रसना, रसज्ञा दे
‘जीभ’
जी, स पु (म जीव >) चित्त मानस
चेतन-मनस (न) २ माहस, पौरुष
३ मकल्प विचार ।
—आना (किसी पर), अनुराग बन्ध (क्र
प अ) लिह् (दि प से सप्तमी के साथ) ।
—करना मु इध (तु प से) ।
—का बुझार निकलना, मु रोदनजल्पना
दिभि मनोवेगा शम् (दि प से) ।
—खट्टा होना, मु, निर्विद् (दि आ अ
तृतीया के साथ) विरक्त (वि) भू ।
—खोल कर, मु, निस्मकोच > यथेच्छम् ।
—चुराना, मु, परिह् (भ्वा प अ, द्वितीया
के योग में) ।
—छोटा करना, मु, विषद् (भ्वा प अ)
२ औदार्य हा (जु प अ) ।
—बहलना, मु, मनोविनोद जन् (दि आ
से) ।
—विगडना, मु, नम् (सन्नत, विवमिपति),
वमनेच्छा नन् ।
—भरना, मु, तृन् (दि प अ) ।
—भर कर, मु, यथेच्छ, यथाकामम् ।
—मचलाना या—मतलाना, मु, दे ‘जी
विगडना’ ।
—में आना, मु बाच्छ (भ्वा प से) ।
—लगाना, मु, दे ‘जी आना’ ।
जीजा, स पु (हि जीजी) भगिनीपति,
आवृत्त ।
जीजी, स स्त्री (अनु) जीजी (ज्यायनी)
भगिनी, स्वस्र (स्त्री) ।
जीत, स स्त्री (स पितम्) नय, विनय
२ लाम ३ साफल्य, व्रतकार्यता ।
—हार, स स्त्री, नयायौ, जयपराजयौ ।

जीतना, क्रि स (हि जीत) नि (भ्वा
प अ), वि परानि (भ्वा आ अ) अभि
पराभू ३ वशीकृ, दन् (प्रे) ३ स्वायत्ती-
आत्मसाध कृ । स पु, दे ‘जीत’ स स्त्री ।
—योग्य, वि, वि, जेय, जेन्य, जयनीय,
अभि परा-भवनीय दमनीय वशीकार्य इ ।
—वाला, स पु, वि, नैत् अभिभावित्, अभि
भाव (तु) क ।
जीना, वि (हि जीना) जीवित, सजीव,
जीवोपेत समाण ।
जीतेजी मु यावज्जीव, जीवनपर्यन्त, जीवना
वधि (न) ।
जीन स पु (फा) पश्ययन, पर्याणम् ।
जीनत, स स्त्री (फा) शोभा छवि (स्त्री),
आभा ।
जीना, क्रि अ (स जीवन) जीव् (भ्वा प
से) प्र भन् (अ प से), अस (अ प
से) । स पु जीवन, प्राणधारणम् ।
जीना, स पु (फा) सोपान, आरोहण,
अधिरोहि (ह) णी ।
जीभ, स स्त्री (स जिह्वा) रसा, लोला,
रसज्ञा, लुभासवा, रसिका, रसाका, रसना ।
—चाटना, मु, गृष् (दि प से), अभिलष
(भ्वा प से), छुम् (दि प से) ।
जीभी, स स्त्री (हि जीभ) जिह्वा रसना,
मार्जनी शोषनी २ जिह्वा रसना मार्जन
शोषनम् ३ लघु जिह्वा रसा-रसला ४ कल
मायम्, लेखनीचक्षु (स्त्री) ५ पशुरोगभेद ।
जीमना, क्रि स (स जेमन) अद् (अ प
अ), खाद् (भ्वा प से) ।
जीमूत, स पु (स) मेघ, वारिवाह, अभ्र
२ पर्वत, नग ।
—वाहन, स पु (स) इद्र, वज्रिन् (पु) ।
जीरा, सं पु (स जीर) दीपक, दीप्य,
जीरक, जरण ।
जीर्ण, वि (स) शीर्ण, गलित २ परिपक,
परिणमिष ।
—र्णा, वि (स) वृद्धा, स्थविरा, पलिता,
पाल्नी ।
जीर्णोद्धार, सं पु (स) नवीकरण, सभान,
वद्धार ।

जीवत, वि (स जीवत्) सप्राण, जीवित,
सजीव, जीवोपेत ।
जीव, स पु (स) । जीव, आत्मन् (पु),
शरारिन्, देहिन् ।
—दान, स पु (स न) प्राणदान, जीवन्
रक्षणम् ।
—दण्ड, स पु (स) प्राणदण्ड, मृत्युदण्ड
२ वय मारण हननम् ।
जीवक, स पु (स) प्राणिन् जीवधारिन्
२ मेवक दाम ३ अ(आ) हितुष्टिव
कालप्राशिन् ४ कुसीद-दक वाद्धुषिन्,
कुमीदिन् ।
जीवन, स पु (स न) प्राणधारण, जैन य
मप्राणता ।
—चरित, स पु (स न) जीवन, चर्या
वृत्तान्त-चरित्रम् ।
जीवनवृत्त, वृत्तान्त, स पु (स) दे 'जीवन
चरित' ।
जीवनवृत्ति, स स्त्री (स) आनीतिका
दवसाय, उपजीविका, जीवनीपाय, जीवन
साधनम् ।
जीवाम्ना, स पु (स स्त्र्) दे 'जीव' ।
जीविका, स स्त्री (स) दे 'जीवनवृत्ति' ।
जीवित, वि (स) दे 'जीव' ।
जुआ, स पु (स स्त्र्) पण पणन-देवन ना,
यून अश्व, क्रीडा ।
—खेलना, कि अ, दिव् (दि प से) (अक्षे)
श्रीष्ट (भ्वा प से) ।
जुआरी, स पु (हि, जुआ) पतवार,
किन्व, अश्वदेविन्, देविन् ।
जुआम, स पु (अ) प्रतिदयाय, दनेम
ज्ञाव ।
जुग, म पु (स युग) कालमानभेद २ युगल,
द्वन्द्वम् ।
जुगन्, स पु (हि जुगजुगाना) सशोत,
व्योमि रिहण, शठिन्धु प्रमाकौट, उप
सूर्यक, तमोमणि ।
जुगत्, स पु (स युगल) दे 'युगल' वा
'युग (२) ।
जुगालना, कि अ (स अङ्गिणम् >) रोमय
३, रोम-यावठे (ना धा) ।

जुगाली, स स्त्री (हि जुगालना) रोमय
पुनश्चर्षणम् ।
जुगुप्सा, स स्त्री (स) बोमत्स, घृणा गर्हा,
अरुचि (स्त्री) ।
जुग्ना, जुडना, कि, अ (स युक्त) स जुन
(वर्म) सखिलप (दि प अ) समिल (तु
प से) ।
जुटाना, जुटाना, कि प्रे, व 'जुटना' के
प्र रूप ।
जुतना, वि अ (स युक्त >) युग योक्त्र वह्
(भ्वा उ अ) ।
जुदा, वि (फा) पृथक, मित्र ।
—करना, वि स वियुन (रुध उ अ)
पृथक्क ।
—होना, कि अ, पृथग्भू, विदिलिप् (जि
प अ) ।
जुदाई, स स्त्री (फा) वियोग पार्थक्यम् ।
जुद्ध, स पु (स युद्ध) सग्राम ।
जुमा, स पु (अ) शुक्र-शुक्र, नार-वासर ।
जुरअत, स स्त्री (फा) माहसिन्ध, साहम,
वसाइ ।
जुरमाना, स पु (फा) दम, अर्धदण्ड ।
जुम, स पु (अ) अपराध, दोष ।
जुर्माना, स पु (फा) दे 'जुरमाना' ।
—करना, कि अ, दण्ट् (चु दिक्मक) ।
—देना, कि स, दण्ड-दम दद् (भ्वा उ अ) ।
—मुआफ करना, कि स, दण्ट-दम हम्
(भ्वा आ से) ।
जुलाय, स पु (अ जुलाव) रेचन, विरचन
उदरशोधन २ रेचक-क, विरचक-कम् ।
—दना, कि स, विरिक् (प्रे) ।
—लेना, कि अ (उदर) विरिच (रु प अ) ।
जुलाहा, स पु (फा नौलाह) तनुवाय,
वय, बुविन्द, तत्रवाप, पटकार ।
जुलम, स पु (अ) दे 'जुलम' ।
जुल्फ, स स्त्री (फा) मुटिल-चूर्ण-कुत्तल
अलव २ दिफालवदा चिकुरा ।
जुद्धम, स पु (अ) अत्यचार, क्रूर धीर,
वर्मन् (न) ।
जुद्धमत, स स्त्री (अ) अथकार विमिर,
तमस् (न) २ विमिर-अथकार, कालिमन्
(पु)-वृष्णिमन् (पु)-दयामता ।

जुवमी, वि (अ जुव्म >) पापिष्ठ, आतता
 यिन, अस्याचारिन, क्रूर ।
 जुवा, म पु (हि जुआ) दे 'जुआ' ।
 जुवारी, वि (हि जुवारी) दे० 'जुवारी' ।
 जुघ, वि (स) मुक्तशिट्ठ, वच्छिट्ठ २ प्रिय
 इष्ट प्रीत प्रेष्ठ ३ युक्त, अन्विन युत
 ४ सेनित ।
 जुस्तजू, म ली (फा) अवेष्टा गवेषणा
 नागा ।
 जुही, स स्त्री (स यूही) (मफेद) यूथिका,
 बालपुत्री, वामनी, (पीली) पीत सुवर्ण
 यूथी ह्रमयूथिका, वनकप्रभा, हनपुथिका
 जू, म स्त्री (स यूवा) वैशटः वैशकीट,
 स्वेदसमवा यूक-का, प-पद-री ।
 जूआ, स पु (स जु-ग) योक्त्र धुर्वी, प्रासग
 श्यानभन, धुर (स्त्री) ।
 जुआ, स पु, दे 'जुआ' ।
 जू-जून, स स्त्री (हि जूठा) मुक्तशय,
 वच्छिट्ठ, अवशिष्टम् ।
 जूठा, वि (स जुष्ट) वच्छिट्ठ, मुक्तशेष ।
 जूहा, स पु (स जूट) यूक वैशवध,
 जगप्रन्धि ।
 जूत-जूता, स पु (स युक्त >) पादत्राण,
 उपानह (स्त्री) ।
 —मारना, सु, पादत्राणेन तद (जु)
 २ तिरस्कृत ।
 —खाना, सु, तिरस्कार लम् (म्वा भा अ) ।
 जूती, स स्त्री, दे 'जूता' ।
 जूय, स पु, दे 'जूय' ।
 जूनीयर, वि (इ) अवर, अघर, अवरपदगान् ।
 जूही, म स्त्री, दे 'जूही' ।
 जूम्भा, स स्त्री (स) जू-म, जू-मण, जू-मिका,
 जमा, जमका ।
 जूठ, स पु, दे 'जूष्ठ' ।
 जूठा, स पु (स जूष्ठ) प्रथमज, अग्रज ।
 जूठानी, स स्त्री, दे 'जूठानी' ।
 जूव, स पु (फा) (जोलककुकादीना) जोश ५ ।
 —कतरा, स पु, चिहाम, श्रविच्छेदक ।
 जेर, स स्त्री (स 'ररापु') ठल, कल्ल ।
 जेल, स पु (अ) कारा, गृह-आगार, वन्दि,
 गृह-शाला ।
 —जाना, सं पु (अ जा) दे 'जेल' ।

जेघर, स पु (फा) वि-आ, भूषण, आमरण,
 अलकार, अलकरणम् ।
 जेहन, स पु (अ) दे 'जिहन' ।
 जैन, स पु (स) जैनमतावलम्बिन् २ जैन,
 मन-मम्प्रदाय ।
 जैनी, स पु (स जैन) दे 'जैन' (१) ।
 जैसा, वि (स याइश) याइश(श), यत्प्रकारक
 [जैसी (स्त्री) = याइशी] ।
 —का तैसा, सु, पूर्ववत्, यथापूर्वम् ।
 —चाहिण्, सु, यथोचिन, यथाई, यथायोग्यम् ।
 जो, सर्व (स य) य (पु) या (स्त्री),
 यत् (न) ।
 —कुछ्, यत्किञ्चिद् ।
 —कोई, य' कश्चित्-वश्चन कोऽपि ।
 जोक, जोक, स स्त्री (स जलौका) जलुका,
 रक्त, पा पायिनी, नलाका, जलजन्तुका ।
 जोखी, स स्त्री, मकट, विपद (स्त्री) ।
 जोग, स पु (स योगक्षेम ?) दे 'योग' ।
 जोगिया, वि (हि जोगी) परित्राणक,
 योगिसम्बन्धिन्, २ गैरकरागुक्त, गैरकाक्त,
 गैरिक्वर्ण ।
 जोगी, स पु (स योगिन्) दे 'योगी' ।
 जोगिन, स स्त्री, दे 'योगिनी' ।
 जोजन, स पु (स योजन) दे 'योजन' ।
 जोड़, स पु (स जोट) बधन, मेलन
 २ योग, सकल, परिसख्या, पिंड । ३ अग
 सन्धि, अगप्रन्धि ।
 जोड़ना, क्रि स (स जोटन) एकत्र कृ,
 ममिल् (प्रे) जुट (म्वा तु प से) युज्
 (रुष व अ), सरिल् (प्रे) २ सकल
 (जु), परिसरया (अ प अ) ।
 जोडा, स पु (हि जोडना) युगल, युग्म
 २ इन्द्र, अमयुज ३ उपानदयुगल ४ वेष दा ।
 जोड़ी, स स्त्री (हि जोडा) दे 'जोडा' (१ २) ।
 जोत, स स्त्री [स ज्योतिस् (न)] प्रकाश,
 आभा, धृति ।
 जोत, स स्त्री (हि जोतना) चर्मपट्ट,
 बरवा, वधी ।
 जोतना, क्रि स (स युक्त >) योक्त्रयति
 (ना धा), जुब् (जु) २ कृप् (म्वा प अ),
 हल् (म्वा प से) ।
 जोतिष, सं पु, दे 'ज्योतिष' ।

जोतिषी, स पु, दे 'ज्योतिषी' ।
 जोधा, स पु (स योद्धृ) योध, भट ।
 जोफ, स पु (अ) दुर्बलता निबलता ।
 जोवन, स पु (स यौवन) तारुण्यम् ।
 जोम, स पु (अ) गव, दर्प अहमान, अह
 कार ।
 जोर, स पु (फा) बल, शक्ति २ वश,
 अधिकार ३ वृद्धि-समृद्धि (स्त्री)
 ४ वेग, आवेश ५ आश्रय ६ परिश्रम
 ७ व्यायाम ।
 जोरदार, वि (फा) बलिष्ठ शक्तिशालिन् ।
 जोरदार, वि (फा) प्रबल, बलवत् २ अवात्प,
 अलण्ड्य ।
 जोराजोरी, अय (फा जोर >) बलात्,
 हठात्, प्रसभ, प्रसन्न (सब अ य०) ।
 जोरू, स स्त्री (हि जोडा) मार्या, पत्नी,
 नेहिनी ।
 जोलाहा, स पु, दे 'जुलाहा' ।
 जोश, स पु (फा) उत्तनना उत्साह,
 व्यग्रता, चण्डता, मनोवेग, आवेश ।
 —देना, कि स, प्रोत्साह (प्रे), उत्तिज
 (प्रे) २ पच (भ्वा प अ), कथ्
 (भ्वा प से) ।
 जोशदा, स पु (फा) काय, कषाय, नि
 यास ।
 जोशीला, वि, व्यग्र ह्य उत्साहिन्, उत्साह
 वत्, प्रचण्ड ।
 जोहड़, स पु (देश) जलाशय छद्म, पक्कलम् ।
 जो, स पु (स यव) प्रवेष्ट दीर्घं सित, शक,
 अशप्रिय, महाहुस ।
 जोहर, स पु (अ) रत्न, मणि (पु, कमी
 स्त्री) २ सार, तत्त्वम् ।
 जोहरी, स पु (फा) मणिकार, रत्नकार
 २ रत्नपरीक्षक ।
 ज्ञातव्य, वि (स) वेद्य, अवगत य, बोद्धव्य ।
 ज्ञाता, वि (स ज्ञात्) वेत्तु शानिन्, बोद्धृ ।
 ज्ञाति, स पु (स) सगोत्र, बन्धु, बाधव
 रव, स्वजन, सङ्गृह्य, अशक, दायाद ।
 ज्ञान, स पु (सै न) बोध, प्रतीति (स्त्री) ।

ज्या, स स्त्री (स) मौर्वी, शिखिनी, गुण ।
 ज्यादती, स स्त्री (फा) आधिनय, प्राचुर्य,
 अधिकता २, अत्याचार ।
 ज्यादा, वि (फा) अधिक, महत्, बटु ।
 —तर, वि बहुसरदाक, अधिकतर, भूयत् ।
 ज्येष्ठ स पु (स) अग्रज, प्रथमज २ भर्तुं
 व्यायान् भावृ ३ ज्येष्ठ (मास) । वि, वृद्ध
 २ श्रेष्ठ ।
 ज्यो, कि वि (स य + हव यथा,) येन प्रकारेण ।
 —का ल्यो, सु, यथापूर्वम् ।
 —ल्यो, सु, यथा तथा ।
 ज्योति, स स्त्री [स ज्योतिस् (न)] प्रकाश,
 प्रभा, घृति (स्त्री) ।
 ज्योतिष, स पु (स न) ज्योतिर्विद्या,
 ज्योति शास्त्र, नभस्त्रविद्या ।
 ज्योतिषी, स पु (स ज्योतिषिन्) देवज्ञ,
 ज्योतिषिद, ज्योतिषिक ।
 ज्योत्स्ना, स स्त्री (स) र्चा देवा, कौमुदी ।
 ज्वर, स पु (स) ज्वरि, ज्वरा जूर्ति (स्त्री),
 महागद, तापक ।
 जोहो जोही देर बाद होनेवाला —, स्वल्पविरा
 मज्वर ।
 जोरेवाला —, पीन पुनिकज्वर ।
 प्रतिदिन होनेवाला —, अन्येषु ज्वर ।
 रुक रुककर होनेवाला —, सविरामज्वर ।
 सडा —, रक्तदुष्टि (स्त्री) ।
 हर तीसरे दिन होनेवाला —, तृतीयज्वर ।
 हर चौथे दिन होनेवाला —, चतुर्थज्वर ।
 ज्वलत्, वि (स ज्वलत्) उदीप्त, प्रकाशित ।
 ज्वलन्, स पु (स न) दाह, ताप २, अग्नि
 ३ ज्वाला ।
 ज्वार, स स्त्री (स यावनाल) अन्नविशेष,
 घृततण्डुल, क्षेत्रेणु ।
 ज्वार, स पु (देश) वेलावृद्धि (स्त्री) ।
 —भाटा, स पु, वेलाया वृद्धिद्वी (दि) ।
 ज्वाला, स स्त्री (स) शिखा, अग्नि
 (न) ।
 —मुखी, स पु (स) अग्निपर्वत ।

झ

झ, देवनागरीवर्णमालाया नवमो व्यन्तवर्णः,
झकार ।

झ, झकार, म पु स्त्री (अनु) झणत्कार,
धणत्तध्वनि शिञ्जितम् ।

झगडा, म पु (हि 'झा' का अनु) बट
मुख्य म कर्मन्त्व ।

झगट, स स्त्री, (अनु) कृच्छम्, आयास
केश वैपम्यम् ।

झझनाना, कि अ (अनु) झणझणायते (ना
धा) झणझणध्वनि उत्पत् (प्रे) ।

झझनाहट, स स्त्री (अनु) दे 'झवार' ।

झझा, स स्त्री (स) शशावान्, सञ्चिको वात ।
झझोदना कि स (स शानम्) शुभ (प्र),
सरभम रूप (प्र) ।

झड, स पु (हि गडा) शिरो अमुठिता
वेशा, सहज-जन्मन, केशा-कवा (पु बटु) ।

झडा, स पु (हि झण्डी) ध्वज, केशु,
केतनम् ।

—झरदार, स पु पताभिन्, ध्वजिन्, वैजय
निक, स्वजपनाका धारिन् वाहिन् ।

—झाड़ना, मु, स्वार्थे आद्यसाङ्क, अभि
परा, भू ।

झडी, स स्त्री (म जयती) वैजयती, पताका,
दे 'जडा' ।

झडूला, वि (हि नड) अमुहित, अनुस-अरुप्त
अच्छिन्न, वेग मूर्धज ।

झप, स पु स) जपा प्लुन-ति (स्त्री)
२ अश्वगल्भूषणम् ।

झरु, स स्त्री (अनु) आवेश, अभिनिवेश,
आग्रह, निर्वेष २ प्रलाप अन्वद्वभाषण,
प्रजल्प ।

—झारना, कि स, प्रलप् प्रनल्प (भ्वा प से),
निर्विवेक भाव (भ्वा आ से) ।

झरझक, स स्त्री (अनु) दे 'शक' ।

झकना, कि अ, प्रलप् प्रनल्प (भ्वा प से),
विवत् (भ्वा आ से) ।

झकरी, स पु (हि शक) वावदूक, प्र,
नरपक्ष, वाचाल २ इडाग्रहिन् ।

झर, स स्त्री (अनु) दे 'शक' ।

झगड़ना, कि अ (हि झकझक) विवद
(भ्वा आ से) विप्रलप् (भ्वा प से),
कलह कृ, कलहायते (ना धा) ।

झगडा, स पु (हि झगडना) वाग्मुद्ध,
कलि, कलह, विवाद ।

झगडालुद्ध, वि (हि झगडा) विवादिन्,
कलहप्रिव ।

झट, कि वि (स ह्यिति) तक्षण, अनुपद,
शोभम् ।

—पट, कि वि, तत्वालमेव, सत्वरम् ।

झटकना, कि स (हि झट) (सहसा)
वेप-कप (प्रे) २ छलेन बलेन वा अपह
(भ्वा प अ) ।

झटका, स पु (हि झटकना) इत्यादिकेन
प्रचालन भरण प्रणोदन, श्वय, आघात प्रहार
२ सहसा वध इननम् ।

झड़, स स्त्री (हि झडना) दे 'झडी' ।

झड़झडाना, कि स (अनु) दे 'झझोदना' ।

झड़ना, कि अ (स झरणम् >) पत् झर्
(भ्वा प से) शृ (कर्म) २ धाव् निर्णिज्
(कर्म) ।

झरप, स स्त्री (अनु) कलह २ क्रोध
२ आवेश ।

झड़वेरी, स स्त्री (हि झाड + वेरी), (पल)
वन्यवदरम् (वृश्) भूवदरी, वयवदर,
श्वराहार ।

झडी, सं स्त्री (हि झडना) सतत झरण
पतन २ सततवृष्टि (स्त्री) ।

झड़वाना, कि स (झाटना) शुभ्-चृन्
(प्रे) २ अपवह (प्र) न 'झाडना के
(प्रे) रूप ।

झड़ाना, कि स (झाडना) दे 'झड़वाना' ।

झपक, स स्त्री (हि झपकना) नेत्रनिमीलन,
परममकोच, निमेष, तारा, ईषत्रिद्रा २ पल,
झण-गम् ।

झपकना, कि स (अनु झप्) निमील् (भ्वा
प से) नत्र सकुच (भ्वा प से), निमिप्
(टु प से) । कि अ, निमील्, निमिप्

२ अल्प निद्रा (अ प अ)-स्वप् (अ प अ) ।

शपकाना, कि स, दे 'शपकना' कि स ।

शपट, सं स्त्री (हि शपटना) आच्छेद आवरिमकशङ्ख २ सहसाकमग, आवरिमक प्रहार ।

शपटना, कि स अ (स शप >) आच्छिद्र (र प अ), सहसा आकृष (भ्वा प अ) २ आक्रम (दि प से) ।

शपट्टा, स पु, } दे 'शपट' ।
शपेट, स स्त्री, }

शयरा, वि (अनु) सघनकेश, लोमश दीर्घलोमन् ।

शयरीला, वि, दे 'शयरा' ।

शमक, स स्त्री (हि चमक) पुति (स्त्री) आभा, कान्ति (स्त्री) ।

शमस्तम, } स स्त्री (अनु) धारासार,
शमास्तम } धारापात, शक्षा २ क्षणत्कार, क्षणक्षणशब्द ।

शमेला, स पु (अनु शव) दे 'क्षयट' ।

शरना, कि अ (स शरण >) क्षर (भ्वा प से), सु (भ्वा प अ), प्रपद्य (भ्वा प से) ।

स पु, प्रपात, स्रोतस (न) निशर, उस ।

शरोला, सं पु (अनु शरशर + हि गोला) गवाक्ष, वातायनम् ।

शलक, स स्त्री (स शलिका) आभा, पुनि (स्त्री), प्रकाश २ प्रतिबिम्ब व, प्रतिच्छाया, प्रतिफलम् ।

शलङ्गना, कि अ (हि शलक) प्रकाश विपुल (भ्वा आ से) २ प्रतिफल (भ्वा प से) सक्रान्त प्रतिबिम्बित प्रतिफलित (वि) भू, प्रतिभा (अ प अ) ।

शलकाना, कि स, व 'शलकाना' के प्र रूप ।

शलदलाना, कि अ, दे 'चमकाना' कि स, दे 'चमकाना' ।

शलदलदलदल, स स्त्री, दे 'चमक' ।

शलना, कि स (हि शलना) बीज (लु), व्यञ्जन भूषण (प्रे) ।

शलमलाना, कि अ (अनु शलमल) सवम्प प्रकाश (भ्वा आ से) ।

शलवाना, कि प्रे, व 'शलना' के प्रे रूप ।

शलकाना, कि अ (हि शल = कोष) प्रकुप् (दि प से), कृष (दि प अ) । कि स, व उक्त धातुओं के प्रे रूप ।

शप, स पु (स) मारत्य, मीन ।

—केतु, स पु (स) काम, मार, रति पनि, मनोज ।

शाई, स स्त्री (स छाया) प्रतिबिम्ब-व, प्रति-च्छाया फल-रूप २ अथवार २ छलम् ।

शांकना, कि अ (स शप अथवा अथयक्ष) आलमार्गेण दृश (भ्वा प अ) २ अनू-निरूप (लु) ।

शाकी, स स्त्री (हि शाकना) ईषद अति-व्यक्ति (स्त्री) २ ईक्षण, निरूपण २ दृश्य ४ गवाक्ष ।

शाक्ष, स स्त्री (अनु शनशान) शङ्क, शङ्करी, कांश्यकरतालकम् ।

शौशन, स स्त्री (अनु) नूपुर-रत्न ।

शौशरी, स स्त्री दे शौच तथा शौचन ।

शावा, स पु (स शामकम्) दग्धेका २ कोष ३ कुचेष्टा ।

शासा, स पु (स अध्यास >) छल कपट, प्रतारणा ।

—द्वेना, शासना, कि स, वच (लु), प्रवृ (प्रे), छलयति (ना पा) ।

शाक, स पु (स शाव) विपुल, शाव क्षुपभेद ।

शाग स पु (हि गाग) केन, हिंदीर, अम्बुक्फ, मड डम् ।

शाब, स पु (स शाट >) अटुल्य म-वेत्सन्व । (थाडी स्त्री) ।

—शम्बाद, स पु, गोक्षर, शम्कगुल्म ।

शब, स पु, गुल्मगहन, निरिस्तम्ब ।

—पौष्ट, स स्त्री, मानन, शोचनम् ।

—फानूस, स पु, वाचदीपिका ।

—पूँक, स स्त्री यक्षमयम्, मन्त्रयोग

शाबन, स पु (हि शाबना) नक्तक, मार्जनपट ।

शाबना, कि स (हि शबना) रेणु अपमृज (अ प वे), निर्धूलक ।

—पौष्टना, कि स, प्रौष्ठ (भ्वा प से) ।

शाबु, सं पु (हि शाटना) वस्त्र-वसन, अन्वेष्टना-निरीक्षा २ गृह-थ, मल, पुरीषम् ।

शब्द, स स्त्री (हि शब्दा) समार्थनी, शोधना ।
 —श्रेया क्रि स, समृद्ध (अ प वे) शुभ (प) ।
 श्रामा, स पु (स शानक) दम्पेष्टका ।
 शालर, स स्त्री (स शाली) दशा (स्त्री बहु), वस्त्र (स्त्री पु बहु) वस्त्रप्रान्त ।
 —शार, वि, शरीरजुक्त प्रान्तोदेव ।
 शिबक, स स्त्री (हि शिबकना) आरुका, विबल्य सन्देह ।
 शिबकना क्रि अ (अनु) आरुक-विकरप (म्वा प से), दोलादने-चिरायते (ना धा) संगे (अ आ से) ।
 शिबक स स्त्री (हि शिबकना) मत्स्यं आक्रोश अधिभय ।
 शिबकना क्रि स (अनु) आरुक् (म्वा प अ) अधिभिप् (तु प अ) निर्मल (तु आ से) ।
 शिबकी, स स्त्री (हि शिबकना) दे शिबक ।
 शिलमिल, स स्त्री (अनु) प्रकपमान प्रकाय ।
 शिष्टी, स स्त्री (स) चिनी, शिरो, शिरिका, शिरिका, गृहारी ।
 शिष्टी, स स्त्री (स वैल >) सूक्ष्म त्व (स्त्री) चन्द्र (न) २ अराजु, वस्त्र ।
 शीकना, शीखना, क्रि अ (हि शीखना) अनुशुच (म्वा प से), अनुतप् (दि आ अ), पश्चात्प क । स पु, पश्चात्प, विप्रतीकार, अनुपाप, अनुपाप ।
 शीगुर, स पु (अनु-ली-वी) दे ५ मनी (१) ।
 शीना, वि (स शीना >) सूक्ष्म, विरल, तनु ।
 शील, स स्त्री (स शीर >) शरीर, तन् शय सगती सरस (न) ।
 शीवर, स पु (स शीवर) नाविक, औडुपिक २ शैवर्ष, मत्स्यशोच ।
 शुकलाना, क्रि अ (अनु) कुप (दि प से), कुप (दि प अ) ।
 शुकलाहट, स स्त्री (हि शुकलाना) शोच, शोच, शोच, अमर्ष ।
 शुक, स पु (स) अकल्पवृक्ष, कद्रकाहट ।
 शुक, स पु (स शुक >) सलदाय, सगुर, गम, शुक, कद्रक ।

शुकना, क्रि अ (स शुक >) अय, नम् (म्वा प अ), नग्रीभू २ वक्रोभू ।
 शुकाना, क्रि स (हि शुकना) नम् (प्रे), वक्रो कृ ।
 शुकवाना, क्रि प्रे (हि शुकना) दे 'शुकाना' ।
 शुकाव, स पु (हि शुकना) प्रवृत्ता, नति (स्त्री) २ वक्रता २ प्रवृत्ति (स्त्री) ।
 शुकघट, स स्त्री (हि शुकना) दे 'शुकाव' ।
 शुकपुगा, स प (अनु शुकपुट) मणिकाल, अशोराशमयोगसमय सध्या ।
 शुकलाना, क्रि स (हि शुक) निष्पा शुकलाना, वादित्व प्रमापति (ना धा), शुकाना, निराक, प्रत्याप्या (अ प अ) ।
 शुकार्थ, स स्त्री (हि शुक) मत्स्यता, शुकत्व, अलीकता, निष्पातन् ।
 शुकशुन, स स्त्री (अनु) शुककार, शुककार, वाप-शुनि (पु) ।
 शुकशुना, स पु (अनु) शुकशुका ।
 शुकशुनी, स स्त्री (अनु) शुकशुनी, शुक शुकानुभूति (स्त्री) ।
 शुकका, स पु (हि शुकना) तरुपवम् ।
 शुरमट, स पु (स शुक >) सलदाय, शुरमुट, सगुर २ सन्ध, शुकन ।
 शुरी, (हि शुराना) वली-शि (स्त्री), चर्मसकोच २ पुट, भय ।
 शुरसना, क्रि अ (स शुकन) शैव दह शुक (कर्म) ।
 शुरसाना, क्रि स, शैव दह (म्वा प अ), शुक (म्वा प से) ।
 शुकलाना, क्रि स (हि शुकना) प्रैल (प्रे) इतस्तत चल (प्रे) ।
 शुक, स पु (स शुक) अस्तय, अतृते, अलीक निष्पावचने, अस्तयमाशय । वि, शुक, निष्पा-शुका- (समासके आदिने) अस्तय, अस्तय, विउष ।
 शुक, स वि (हि शुक) निष्पा अस्तय, शुक, अस्तयवादिन् निष्पावाशिन ।
 शुक, स स्त्री (हि शुकना) तन्त्रा, अस्तय २ आन्दोलन, प्रैलान् ।
 शुकना, क्रि अ (स शुक) अस्तय 'शुकना' (अनु) इतस्तत चल (म्वा प से) ।
 शुक, स स्त्री (हि शुकना) कुप-शुका, प्रवेणी- (स्त्री), परिस्तेम, सध्या ।

शुद्धना, कि अ (सं दोलने)दोलायते(ना धा),
प्रेस् (भ्वा प से) ।

शुद्धा, सं पु (स दोलाय लिका)प्रेसा,
हिंदोल, आन्दोल ।

शैलना, कि स (स श्वेतन >) सह् (भ्वा
आ से), कृष् (दि उ से) ।

शौकना, कि स (हि युक्ता) अक्षौ क्षिप
(तु उ अ) २ प्रेर (सु) प्रमुद (प्रे) ।

शौक देना, कि स, दे 'शौकना' (२) ।

शौका, सं पु (हि शौकना,) बाजुवे, पवनप्रहार, वातगुल्म ।

शौपका, स पु (हि छोपना ?) उष्ण अ,
कुटीर र कुटी, कुटीरक; पर्णशाला ।

शौल, स पु (हि शूलना) शैथिल्य, सकोष
२ सवरण, व्यवधान ३ रञ्जनं, लेपनम् ।

—प्रेरना, लिप् (तु उ अ), रज (प्रे) ।

शौला, स पु (हि शूलना) पुष्प-ट, प्रमेव
कोष (शौली ली = लघुपुष्प इ) ।

ज

ज, देवनागरीवर्णमालाया दशमो व्यञ्जनवर्ण, ।

जकार ।

ट

ट, देवनागरीवर्णमालाया एकादशो व्यञ्जनवर्ण,
टकार ।

टक, स पु (स) प्रावदारण, पाषाणभेदन
२ व्रक्षण, तक्षणी ३ परशु, कुटार
४ खड्ग ५ चतुर्मासकामक चतुर्विंशतिरक्ति-
कामको वा तोलभेद ६ क्रोध ७ अभिमान
८ जघा ९ अग्नि १० क्रोध, निधि
११ मुद्रा, नाणकम् ।

टैकना, कि अ (स टकण) व 'टैकना' के
कर्म के रूप ।

टकवाई, सं स्त्री (हि टकवाना) १-३
टकन-सौवन-लेखन, भृत्या-भृति (स्त्री) ।

टकवाना, कि प्रे, व 'टैकना' के प्रे रूप ।

टका, सं स्त्री (सं) जघा, प्रसूया ।

टैकाई, स स्त्री (हि टैकना) दे 'टकवाई' ।

टैकाना, कि प्रे, दे 'टकवाना' ।

टकार, स स्त्री (सं पुं) ज्या-भौवी, शीघ्र-
शब्द, सिञ्जिनौञ्जित २ टणत्कार, रमिति
३ हण हण, रणित-निन्द ।

टकारना, कि स (स टंकार >) ज्यां पुष्
(सु), भौवीं आस्फल् (प्रे) टकारदति
(ना धा) ।

टकी, सं स्त्री (अं टैक) तोदाधार, वापिका
० द्रोणी-णि (स्त्री) ।

टग, स पुं (सं पुं न) प्रावदारण, पाषाण
भेदन २ परशु ३ चतुर्मासकामक तोलभेद
४ दे 'रंग' ।

टंगना, कि अ, दे 'टकवना' ।

टटा, सं पु (क्तु टन टन) उपद्रव, कलह
२ प्रपञ्च, आटवर ।

टक, स स्त्री (स टक - बंधना >) अनिमेव
बद्ध-स्थिर, दृष्टि (स्त्री) ।

—बंधना, मु, अनिनि(मे)वनपन (वि) इ
(भ्वा प अ) ।

—लगाना, मु प्रतीक्ष् (भ्वा आ से) ।

टकटकी, स स्त्री, दे 'टक' ।

—बंधना, मु, बद्ध-स्थिर, दृष्ट्या अवलोक
(सु) ।

टकराना, कि अ (हि टकर) सयष्ट् (भ्वा
आ से), अग्नि-आ प्रति, इन् (अ प अ),
अग्नि-स-पत् (भ्वा प से) कि. स उक्त
धातुओं के प्रे रूप ।

टकसाल, स स्त्री (स टकशाला), मुद्रावण
शाला ।

टकसाली लिया, स पुं (हि टकमाल) टक
अध्यक्ष पति (पु), मैथिकः । वि, टक
शालासबन्धिन् २ शुद्ध, निर्दोष ३ सर्वममृत
४ प्रायोगिक, परीक्षित ।

टका, स पु (स टक >) अर्द्धी पण्युगतं
२ रूप्य प्यवं, काविक, टक ३ धनम् ।

—सा जघाव देना, मु, पठिति नि प्रति-विष्
(भ्वा. प से)-प्रस्ताव्या (अ प अ) ।

—सा मुँह लेकर बह जाना, मु, त्रप् (भ्वा
आ से), लम् (पु आ से) ।

टकोर, सं स्त्री (स टकारः) दे 'टकार' (२),
२ आपान, प्रहार ३ पट्टप्रहार ४ दुग्धि-

पट्ट, ध्वनि (पु) ५ प्र, स्वेदन, (उष्ण-
नलादिना) सेव ।
टकोरना, कि स (हि टकोर) भेरीं आइन्
(अ प अ) २ प्रट्ट (भ्वा प अ)
३ (उष्णजलादिभि) मिच (तु प अ),
लिप् (तु प अ), प्र, रिचद (प्रे) ।
टकर, सं स्त्री (अनु टक) मयट्ट, समदं,
ममा प्रति, घान २ विग्रह, समाम, सप्रहार
३ हानि (स्त्री) ४ मस्तक शीर्ष, आघात ।
—का, सु, सम, समान, तुल्य ।
—राना, सु, दे 'टकराना' कि अ ।
—भारना, सु, व 'टकराना' के प्रे रूप
२ विरघ (रु उ अ) ३ यत् (भ्वा आ
मे) ।
टखना, सं पु (सं टक = दाग >) गुल्क,
घुटिक, घुगी, घुण्ट, सुदक ।
टटोल, सं स्त्री (हि टटोलना) स्पर्श, सम्पर्क,
परामर्श, स्पर्शो बोध ।
टटोलना, कि स (स त्वक् + टोलन >)
स्पर्शेन परीक्ष (भ्वा आ से) निरूप (जु),
सृष्ट परामृश (तु प अ) २ अथकारे अन्विष
(दि प से) निरूप परामृश ।
टट्टी, सं स्त्री (सं स्थात्री ?) (वशावृणादि
रचिन) कपा (वा) ट टट्टी, २ प्रतिसीरा,
तिरस्करिणी ३ सूक्ष्ममिचि (स्त्री) ४ शौच
कूप, मलालय ५ मल, उच्चार ।
—जाना, सु, पुरीषोत्सर्गाय गम् ।
—की आइ (या ओट) से शिकार खेलना,
सु, प्रच्छन्न प्रह (भ्वा प अ), निम्न पाप
माचर् (भ्वा प से) ।
टट्ट, सं पु (अनु) धुद्रपोटक अथशावक ।
टन, सं पु (अनु) घटाध्वनि (पु), टण
स्कार, टणिति ।
—टन, सं पु, टणटण, निनद रणित, टणटण
त्कार कृति (स्त्री) ।
टन, स पु (अ) अष्टाविंशतिमणकल्प, तोल
भेद, *नम् ।
टनकना, कि अ (अनु) टणटणायते (ना
पा), टणकार कृ २ घर्मेण शिर पीड्
(कर्म) ।
टनटनाना, कि स (अनु) घटा नद-वद
(प्रे) । कि अ, दे 'टनकना' ।

टनाटन, सं स्त्री (अनु) निरन्तर टणटण
त्कार ।
टप, स पु (हि तोपना = ढाँकना) प्रवदना
दीनाम् आच्छादन-आवरण-छत्रम् ।
टप, सं पु (अ टव) द्रोणी णि (स्त्री) ।
टप, स स्त्री (अनु) विंदुपातध्वनि (पु),
टप इति शब्द ।
—से, सु इति, आशु, शीघ्रम् ।
टपक, स स्त्री, दे 'टपकाव' ।
टपकना, कि अ (अनु टप) कणश विंदु
कमेण क्षर् ग्ल् (भ्वा प से) -सु (भ्वा प
अ) -स्यद् (भ्वा आ से) २ (फलादि)
इति नि-अव पत् (भ्वा प से) ३ परिशु,
क्षर् ४ दे 'टीसना' ।
टपका, स पु (हि टपकना) स्वय पतित
पक्फलम् ।
—टपकी, स स्त्री, शीकर, वर्षं पात २ सतत
फलपात ।
टपकाना, कि स, व 'टपकना' के प्रे रूप ।
टपकाव, स पु (हि टपकना), (कणश)
क्षरण-गन्त-स्यन्दन-साव ।
टपना, कि, अ, दे 'कूदना' ।
टपाटप, कि वि (अनु) सतत, निरतर,
अनिरतम् ।
टप्पा, सं पु (अनु) प्लव, प्लवन, प्लुत ति
(स्त्री), क्षप पा २ गीतिकाभेद ।
—खाना, कि अ, उदपत् (भ्वा प से),
उत्प्लु (भ्वा आ अ) ।
टव, सं पु (अ) दे 'टप' ।
टव्वर, स पु, दे 'कुटम्ब' ।
टमकी, सं स्त्री (अनु० टमक) डिडिम,
लपुपट्ट ।
टमटम, सं स्त्री (अ टैडम) अश्वपालभेद,
*टमटमम् ।
टमाटर, सं पु (अ टमैटो) आग्लोय-रक्त,
वृन्ताकम् ।
टर, स स्त्री (अनु) टरशब्द, अभ्रिय-कर्कश
कर्णकट्ट, शब्द २ मेकरव ३ दपोक्ति (स्त्री)
४ दुराग्रह, प्रतीपता ५ तुच्छवचनम् ।
—टर, सं स्त्री, वृथालाप, प्र-जल्प पित
२ मेकरतम् ।
—टर करना, कि अ, दे 'टरराना' ।

टरकना, कि अ, दे 'टलना' तथा 'टरटराना'।
 टरकाना, कि स, दे 'टलना'।

टरटराना, कि अ (अनु टरटर) प्रलप्
 प्रजल् (म्वा प से) २ अविनयेन भू (अ
 उ से) टरटराचने (ना धा)।

टरा, वि (अनु टरटर) वावदूक, वाचाल इ
 २ धृष्ट, निर्भीह।

टराना, कि अ (अनु टर) साभिमान
 वद् (म्वा प से) धार्ष्ट्येन भू (अ उ से),
 कटु वद्।

टलना, कि अ (स टलन >) विचल (म्वा
 प से), अपसृ (म्वा प अ) २ स्वाना
 न्तर या (अ प अ) प्रस्था (म्वा आ
 अ) ३ वि, नम् (दि प वे), लुप् (दि
 प अ) ४ व्याक्षिप् (कर्म), विलब (म्वा
 आ से) ५ अन्यथा भू ६ (समय) व्यति
 इ (अ प अ), गम्।

टस, स स्त्री (अनु) गुरुद्रव्यसरणशब्द,
 टस् इति शब्द।

—से मस न होमा, सु, ईषदपि न विचल।
 टसक, सं स्त्री (हि टसकना) दे 'टीस'।
 टसकना, कि अ (हि टस) अप, गम् सू
 (म्वा प अ), अपया (अ प अ) २ दे
 'टीसना'।

टसकाना, कि स, न 'टसकना' के प्रे रूप।
 टसर, स पु (स तसर >) झौमभेद,
 *टसरम्।

टसरभसर, स पु (हि टस + मस) विलंब,
 व्याक्षेप।

टसुभा, स पु (हि अंसुभा) मिथ्याशु (न),
 वितयवाप्य।

टहना, स पु (स तनु >) विटप, शाखा।

टहनी, सं स्त्री (हि टहना) तनु-सूक्ष्म,
 विटप-शाखा।

टहल, स स्त्री, दे 'सेवा'।

टहलना, कि अ (सं तद + चलन ?) परि,
 अट् भम् (म्वा प से), विहृ (म्वा प अ),
 इतसात् चर् (म्वा प से), परिकम्
 (म्वा प से, म्वा अ, अ)।

टहलनी, सं स्त्री, दे 'नौकरानी'।
 टहलाना, कि स, न 'टहलना' के प्रे रूप।

टहलुआ-वा, स पु, दे 'नौकर'।
 टहलु, स स्त्री, दे 'नौकरानी'।

टौक, सं स्त्री (स टक) चतुर्माषकात्क
 तोलभेद २ अर्धगणना, मूल्यनिरूपणम्।

टौक, स स्त्री (हि टौकना) लेख, लिखन,
 लिपि (स्त्री) २ दे 'निव'।

टौकना, कि स (स टनन) टैक् (म्वा प
 से, चु), बीलादिभि सथा (जु उ अ)-
 सयुज् (र उ अ) २ सिव (दि प से),
 वे (म्वा उ अ) ३ पादुका सथा ४ मशिष
 (प्रे) सयुज् ५ पत्रिकादियु लिख (तु प से)
 ६ शिलादीनि दत्तुरयति (ना धा)।

टौका, स पु (हि टौकना) मधायक-भयो
 जक, बील शकु २ सी (से) वन, अंश
 भाग ३ सी (से) वन, स्थिति (स्त्री)
 ४ पट वस्त्र, खड ५ टवन, सभायक, पातु
 ६ प्रणसेवनम्।

टौकी, सं स्त्री (सं टक) तसुणी, ब्रधन
 २ खर्वजादियु कृत छिद्र इ दे 'टौका'।

टाग, स स्त्री (स टगा) टक क-वा जया,
 प्रसृता, पाद।

—अक्षाना, सु, परकार्याणि चंच (तु प से,
 चु आ से) -निरूप (चु)।

—तले से निकलना, सु, स्वपराजय स्वीकृ।

—पसार कर सोना, सु, नि शक निर्भय स्वप्
 (अ प अ) -दे (अ आ से) २ मानद
 जीवन या (प्र)।

टौगना, कि स, दे, 'लटकाना'।

टागा, स पु (हि टौगना) अश्ववाहनभेद।

टांगी, स स्त्री, दे 'कुहाडी'।

टौच, सं स्त्री (हि टौची) कार्यवापक, उक्ति,
 (स्त्री) -वचनम्।

टौचता, कि स, दे 'टौकना'।

टौह, स स्त्री [स स्वायु (पु) >] मच
 २ दे 'परछची'।

टौयटौय, स स्त्री (अनु) कर्मश कटु, शब्द
 ध्वनि (पु) २ प्रहाप, प्र, लक्ष्य।

—फिस, सु, निष्कल भाटवर, व्यर्थ
 प्रयास।

टाहप, सं पु (अं) मुद्राक्षरं २. टंकणयत्रम्।

- टाइफस बुधवार, स पु (अ+अ) मोहज्वर',
•दूकाज्वर ।
- टाट, स पु (स नतु >) शाण पर वरु
शाग वराशि सि (पु) ।
- टाप स छी (अनु) अथ-सुरा धुर शफ
इफन् २ अथपादशब्द ।
- टापना, कि अ (हि टाप) सुरेण अमिह्न
(अ प अ) -विलिख (तु प से) २ अधीर
व्यग्र (वि) भू ३ व्यथ परिभन् (स्वा प
से) ४ दे कूटना' ।
- टापू, स पु, दे 'दीप' ।
- टारना, कि म, दे 'टारना' ।
- टारपीडो, स पु (अ) अन्तर्जलाभिनालिका
अखभेद, •तारपीडु' ।
- टाचें, स छी (अ) विद्युच्चिन्तनी ।
- टाल, स छी (स अडाल >) चय, राशि
(पु), वलिर, चिति (छी) २ (काष्ठा
दीना) इहद-आपण विपणि (छी) ।
- टाल, स छी (हि टालना) अप-व्यप, देश,
छलेन परिहरण, निहव ।
- टाल, } स छी, अपनि, हुव
—मटा(ट्ट टो)ल, } अप-व्यप-देश, विलव, व्याप्तेप ।
- करना, कि अ, अनिपश (प्र) विलव
(तु प अ) व्याक्षिप (तु प अ) ।
- टालना, कि स (हि टालना) वकोकथा
शाठ्येन परिहृ (स्वा प अ), अप-व्यप
दिग (तु प अ), अपनि हु (अ आ अ)
२ व 'टालना' (१६) के प्र रूप ।
- टायर, स पु (अ) (चक—) बल्प यन् ।
- टिचर, स पु (अ टिकचर) कषाय, नियांस,
फाट ।
- टिहा, स पु (स टिदिश) रोमशफल,
निदिश, डिदिश ।
- टिकट, स पु (अ) अनुशा निर्देश प्रवेश,
पत्रकम् ।
- टिकटिकी, स छी, दे 'टकटकी' ।
- टिकटिकी, स छी, दे 'टिकठी' ।
- टिकठी, स छी (हि तीन+काठ) त्रिकाठी,
२ त्रिपादी ।
- टिकना, कि अ (सं स्विप्त+कू >) वत् स्या
(स्वा प अ), इए (स्वा आ. से)
- २ विरन् (स्वा प अ) अवस्था (स्वा
आ अ) ।
- टिकली स छी (हि टीका) धातुनारा
चक्रकम् ।
- टिकस, स पु (अ टैक्स) वर रातस्व,
गुल्क-क बलि (पु) ।
- टिकस, स पु, दे 'टिकट' ।
- टिकाऊ, वि (हि टिकना) चिर स्थायिन्,
वृद्ध, भुव, स्थिर, अक्षय ।
- टिकाना, कि स व टिकना' के प्रे रूप ।
- टिकाव, स पु (हि टिकना) स्थिरता,
चिरस्थायिता २ स्थिति (छी) विराम
३ दे 'पढाव' ।
- टिकिया, स छी (स वटिका) चक्रिका बदी,
२ अपूप, पप, पिष्टक ।
- टिकुली, स छी, दे 'टिकली' ।
- टिकैत, स पु (हि टीका) दे 'सुवरान' ।
- टिकक, स पु (हि टिकिया) स्थूल इहए,
पूप ।
- टिका, स पु (देश) दे 'टीका' ।
- टिकी, स छी, दे 'टिकिया' ।
- टिघलना, कि अ, दे 'पिघलना' ।
- टिचन, वि (अ अटेशन) सज्ज, सत्रद्ध,
उद्युक्त २ सिद्ध, उपन्यस्त, आयोजित ।
- टिठकारना, कि स (अनु) (अथादीन्)
सटिकाटिष्यशब्द प्रोत्सह प्रणुद (प्रे) ।
- टिटिह, हा, हरा, स पु (स टिटुम)
टिट्टिमक, टोटिमक, टटिम- ।
- टिटिहरी, स छी (हि टिटिहरी) गिटि(ट्टि)-
मी, टिट्टिमकी ।
- टिट्टा, स पु (स टिट्टिम >) शर(ल)म,
पतग ।
- टिट्टी, स छी (हि टिट्टा) शिरि (पु),
शर(ल)म ।
- दल, मु, विपुलवृद्ध, असंख्यसमूह ।
- टिपटिप, स छी (अनु) विदुषानध्वनि
(पु) टिपटिपशब्द ।
- टिपणी नी, स छी (स) टीका, भाष्य,
वृष्टि (छी), व्याख्या ।
- टिप्पस, स छी (देश) गषाय, युक्ति
(छी) ।
- टिन्वा, स पु, दे 'टीला' ।

टिमटिमाना, कि अ (स निम्-ठला होना >)
स्फुर (तु प से) तरल मद सवप दीप्
(दि आ से) शुल् प्रकाश (भ्वा आ से)
प्रभा (अ प अ) २ आसन्नमृत्यु (वि)
शुल् (भ्वा आ से)।

टिमटिमाहट, स खी (हिं टिमटिमाना)
तरल प्रभा, ज्योतिम (न), स्फुरण रितम्।
टीका, स पु (स तिलक-क) चित्रक, विदे
षक-क, पुण्ड-टक, तमालपत्र २ तिलक,
औद्वाहिकरोतिविशेष ३ अन्त, क्षावण प्रवे
शन ४ (रोगनिवारणाद्य) रोगद्रव्यनिवेशन
५ गन्धद्रव्यसकामण ६ प्रधान, मुख्य,
७ शुक्लरात्र < राजस्व, चिह्न लक्षण
९ राज्य, अभिवेक १० बिंदु (पु), ला-छन,
चिह्नम् ११ ललाटिका, मस्तकभूषणभेद।

—करना, कि स, (रोगनिवारणार्थ) रोगद्रव्य
निवेशनसकम् (प्रे) २ गन्धद्रव्य निवेश
नसकम् (प्र)।

—करनेवाला, स पु, गन्ध रोग द्रव्य
निवेशक।

—भोजना, कि स, औद्वाहिकोपहारान् प्रेष
(प्रे)।

—लगाना, कि स तिलकक अथवा विधा
(जु उ अ)।

टीका, सं खी (स) व्याख्या, वृत्ति (खी),
माध्य, त्रिपिणी नी।

—कार, स पु (स) टीका भाष्य व्याख्या
वृत्ति, चार कृत् (पु)।

टीन, स पु (अ टिन) रंग, वाग, कस्तूर, त्रपु
(न) रंगलिप्त लौहतनुफलकम्।

टीप, स खी (हिं टीपना), (हस्तेन) आपी
टन २ शनै प्रहरण ३ शक्यासधिपु सुधापूति
रेखा ४ (समय-) लेख पत्र ५ जन्म, पत्र
पत्रिका।

—करना, कि स, शक्यासधिपु सुधा पूर
(जु)।

—टाप, स खी, आढवर वैभव २ सस्कार,
परिष्कार, भूषा, अलकरणम्।

—टाप करना, कि स, अल् परिष्, कृ, मद्
(जु)।

टीपना, कि स (सं टेपन = फेंकना) आपीह
(जु), सकोष् (भ्वा प से) २ क्लिप्त (तु

प से) ३ शनै प्रह (भ्वा प अ) ४ उच्चे
गै (भ्वा प अ)।

टीम, स खी (अ) क्लीष्टकमव २ गण, ग्रां।
टीमटाम, स खी (देश) दे 'टीपटाप'।

टीरा, स पु (स टेर) टेरक केकर, वेदर,
उपर, बलिर।

टीला, स पु (स अष्टीला >) उन्नतभूभाग
२ क्षुद्रपर्वत ३ मृत्तिकाचय बल्मीक कम।

टीस, स खी (अनु) विध्वद् स्फुरद, व्यथा
वेदना यातना।

टीसना, कि अ, (हिं टीस) सुदुसुद् व्यथ
(भ्वा आ से), सपद पीद् (कर्म)।

टुच, वि, दे 'टुच्चा'।

टुल, स पु (सं तुल >) छिन्नो हस्त २ छिन्न
शास्त्र तर, रथानु (पु न), भुव, शकु
(पु)।

टुहा, वि (हिं टुह) अहस्त, छिन्नहस्त
२ शाखाहीन ३ एकशृंग।

टुही, स खी [स तुहि (खी)], नामि
(खी)।

टुक, कि वि (सं स्तोक) क्षण, कचित्कालम्।
वि, किंचिद्, अल्प, क्षुद्र।

टुकडा, सं पु (हिं टुक) खड द, शकल
ल, लव, वि, भाग, अश, वि, दल २ ग्राम,
कवल, पिट।

टुकडे करना, कि स., मन् (ह प अ),
खट् (जु), शकली कृ २ विच्छिद् विभिद्
(ह प अ), विभज् (भ्वा उ अ)।

टुकडे टुकडे करना, सु, पूर्ण् (जु) खडश
मन्, मृद् (क् प से)।

टुकडे मंगना, मु, मिश्र (भ्वा आ से),
भिद्यो याच् (भ्वा आ से)।

टुकही, स खी (हिं टुकहा) दे 'टुकहा (१)
२ समूह, गण ३ सैयदल, गुल्म मन्।

टुच्चा, वि (स तुच्छ) क्षुद्र, नीच हीनजाति।
टुटपुंजिया, वि (हिं टुटी + पूजी) परि
क्षीण, निर्धन, अल्प, धन मूल, दरिद्र।

टुही, स खी, दे 'टुही'।

टुकका, स पु, दे 'टुकका'।

टुटना, कि अ (सं तुट्) दृ मज्जिद्
(कर्म), कुट् (दि तथा तु प से), दह्
(भ्वा प से), स्फुट् (तु प से)

२ विरन् (म्वा प अ), विच्छिद् (कर्म),
निवृत् (म्वा आ से) ३ वियुन (कर्म),
पृथक् भू ४ निर्बली भू ५ दरिद्र (वि)
जन् (दि आ मे) ६ आक्रन् (म्वा
प से), अभिट्टु (म्वा प अ) । सं पु,
भजन, भग, विराम, विच्छेद, निवृत्ति
(स्त्री) ।

दृष्टनेवाला, सं पु, भिदुर, भगुर, सुभग ।

दृष्टा, वि, भग्न, दीर्घ, कुटित, स्फुटित, विच्छिन्न,
निवृत्त इ ।

—पृटा, वि, शक्यी सडश, कुत, सडित,
विदीर्घ ।

दूर्नामेट, सं स्त्री (अ) पुरस्काराविना
कीडा सेला, कीडाप्रतियोगिता ।

दृल, स पु (अ) उपकरण, साधनम् ।

देंट टी, स स्त्री (देश) शाणीपुत्र-ट्याटिका
व्यावृत्ति (स्त्री) २ दे 'करील' (वृक्ष
नथा फल) ।

देंटुआ, स पु (देश) आसनालिका, कठ, गल ।

देंट, स स्त्री (अनु) शुकशब्द, कीरराव,
देंट इति ध्वनि (पु) २ प्रलाप, व्यर्थ
वचनम् ।

—करना, निर्विवेक माप (म्वा आ से),
उल्प (म्वा प से) ।

देंपेचर, सं पु (अ) ताप, ऊष्मन् (पु) ।

टेक, स स्त्री (हि टिकना) स्थूणा, उपरनम,
उत्तम, अवष्टम, उपग्र २ आश्रय, अव
लव ३ वेदी ४ आग्रह, अभिनिवेश
५ धुद्रपर्वत ६ प्रतिष्ठा ७ स्थायिन् (सगीत)
८ अभ्यास, नियन्ववहार ।

टेकन, स पु, दे 'टेक' १ २ ।

टेकना, कि स (हि टेक) अव-आ, लन् (म्वा
आ से), अवष्टम् (क् प से), धृ (म्वा
प अ, चु) ।

माथा—, कि स, प्रणन् (म्वा प अ), पादयो
पद (म्वा प से), वद (म्वा आ से) ।

टेकी, वि (हि टेक) सरयस-ध, दृढप्रतिष्ठा
२ आग्रहिन्, अभिनिवेशिन् ।

टेनेस, स पु (अ) धनुर्वात, प्रतान (मय
कररोग) ।

टेदा, वि (स तिरस् >) अराल, कुटिल,
जिह्वा, वक्र, आ, न (ना) मित, आमुग्र, न्युम्ब,

आकुञ्चिन, विपम, तिर्यक् २ कठिन, दुष्कर
३ उदत, अशिष्ट, दुःशील ।

—करना, कि स, आर्द्र (तु), वक्षी-कुटिली
वृ, अव-आ, नन् [प्रे न (ना भयति),
आ वि, मुन् (तु प से) ।

—मेडा, वि, वक्र, वदाकार, कुटिल ।

—होना, सु, कुद्द रष्ट (वि) भू ।

टेदापन, स पु (हि टेदा) कुटिलता,
जिह्वाता, वक्रता, अरालता इ ।

टेदी, वि स्त्री (हि टेदा) वक्रा, कुटिला,
निह्वा इ ।

—खीर, सु, दुष्कर कार्यम् ।

—चितघन, सु, वटाश, साचिविलोकित,
अपागृष्टि (स्त्री) ।

टेदे, कि वि (हि टेदा) तिर, तिर्यक्,
वक्र साचि (सब अय्य) ।

टेना, कि स (देश), दे 'सान देना २ दे
'मूँछ पर ताव देना' ।

टेनिस, सं स (अ) वटुककीडाभेद ।

टेब(बु)ल, सं पु (अ) पादफलक वम् ।

—झाध, स पु (अ) पादफलक, बसन, आ
च्छादनम् ।

टेर, स स्त्री (सं तार) तारध्वनि, उच्च
स्वर २ आह्वान, सरोधन, आह्वानशब्द ।

टेरना, कि स (हि टेर) उच्चै गै (म्वा
प अ) २ आकृ (प्रे), आ० (म्वा
प अ) ।

टेराकोटा, स पु (अ) पञ्चगुन्मूर्ति (स्त्री),
तप्तमृ-प्रतिमा २ पक्व तप्त, मृत्तिका मृद्
(स्त्री) ।

टेलीग्राम, स पु (अ) तद्विद्व विद्युत्-भेदश ।

टेलीपैथी, सं स्त्री (अ) अन्वयिचि शानम्,
भाव-विचार, शक्यन्ति (स्त्री) ।

टेलीप्रिटर, सं पु (अ) • दूरमुद्रकम् ।

टेलीफोटोग्राफी, स स्त्री (अ) • दूरच्छाया
चित्रणम् ।

टेलीफोन, पु पुं (अ) दूर, माध ध्वनम् ।

टेलीविज़न, सं पुं (अ) • दूरदर्शनम् ।

टेलीस्कोप, स पु (अ) दे 'दूरबीन' ।

टेव, सं स्त्री (हि टेक) दे 'आदत' ।

टेवा, सं पुं (सं टिप्पन >) अन्मपत्रिका ।

देसू, स पु (हि देसू) विशुक्, पलाश, रक्तपुष्पक, शशिय २ किशुककुसुमम् ।
 देस्टटयूष, स स्त्री (अ) परीक्षणनालिका ।
 टोंटी, स स्त्री (सं तुह >) नाप्ती, नालिका ।
 टोक, स स्त्री (हि 'रोक' का अनु) अनुराय उपरोध विना, वचन वाच्य २ कुदृष्टि (स्त्री) ३ कुदृष्टिप्रभाव ।
 —टाक या टोका टाकी, स स्त्री, निषेध पृच्छा व्याधित, वचनानि (न बहु) ।
 टोकना, कि स (हि टोक), नि-विनि, घृ (प्रे) भव नि प्रदि, रुध (क प अ), (प्रनी) वाष् (स्वा आ से, निविध (स्वा प से) ।
 टोकनेवाला, स पु, विप्लकर, निवारक, प्रतिवधक ।
 टोकरा, स पु (?) बडोल, करट ।
 टोकरा, स स्त्री (हि टोकरा) बरही, बडोलक ।
 टोटका स पु (स चोटक >) गान्ध, मग २ रसास्त्ररुड ।
 टोटल, स पु (अ) योग, पिंड, मकल, परिसरया ।
 टोटा, स पु (हि टूटना) हानि क्षति (स्त्री) २ अभाव, न्यूनता ३ सह-ह, शकल लम् ।

टोडी, सं स्त्री (स चोटकी) रागिणीभेद ।
 टोडी, सं पु (अ) श्वसि, च्वाटुपट्ट, प्रभा स्वदश, शत्रु श्रोहिन ।
 टोमा, स पु (स तत्र) अभिचार, मत्र, अभिचार, कुहक, बशकिया, मोह, योग २ नीतिभेद ।
 टोनेवाज़, स पु, कुहक, अभिचारिन्, कौस्तिक ।
 टोप, स पु (हि तापना = ढोकरना) *टोप, आग्लीध गुरुद, शिरस्क २ शिरस्त्राण । ३ कोश प, वेष्टनम् ।
 टोपी, सं स्त्री (हि टोप) । शीर्षण्य, शिरस्क *टोपी ।
 टोला, सं पु (सं प्रतोलिका) नगण पुट, विभाग २ वर्ग, गण ।
 टोली, स स्त्री (हि टोला) गण, सप, वर्ग, समूह ।
 टोह, स स्त्री, दे 'सोज' ।
 टोहना, कि स, दे 'खोजना' तथा 'टोहना' ।
 टूक, स पु (अ) लोह आयस, पिटक पेटिका समुद्रगक ।
 टूम, स स्त्री (अ) विपुच्छकटिका, दामात्य यानम् ।
 टूहमार्क, स पु (अ) पण्यमुद्रा ।
 ट्रेन, स स्त्री (अ) बाष्पशकटी ।

ठ

ट, देवनागरीवर्णनालायाः द्वादशो व्यञ्जनवर्ण, टकार ।
 ठठ, वि, दे 'ठूठ' ।
 ठठठ, स स्त्री (हि ठठा) शील, शीतता, शैत्य हिम, हिमता, शीतलता ।
 ठठ(ठ)क, सं स्त्री (हि ठठा) दे 'ठट' २ दृष्टि (स्त्री), सनेष ३ उपद्रव-रोग, शक्ति (स्त्री) ।
 ठठा, वि (स लब्ध) शीत, शीतल, उष्णता रहित, आर्द्र, हिम, शिशिर २ शीत, प्रशीत ३ लृप्त, सजुष्ट ४ मृत, दिवगत ५ निर्वाण, निर्वाणित ।
 —करना, कि स, आर्द्र-शीतो, क, आर्द्रवति (ना था), ताप ह (स्वा प अ) । मु०

ठुप प्रसद प्रशम् (प्रे), सात्वं (तु) २ निर्वा (प्रे निर्वापयति) ।
 —होना, कि अ, शीतो शीतलो भू, शीतता यते (ना था) । मु, दे 'मरना' ।
 ऋदी सांस, स स्त्री, दीर्घ, आस-निधाम, नि(नि)धाम, उच्छ्वास ।
 —पडना, मु, उप प्रशम् (दि प से), इस् (स्वा प से), शि (कर्म) ।
 बलेजा—होना, मु, धेर, निर्यातम-साधन श्रुति (स्त्री) जन (दि आ से) २ प्रसद (स्वा प अ) ।
 ठठा (डा) ई, सं स्त्री (हि ठठा) शीतपेय, तापहरण २ भगापेयम् ।

ठडे-ठडे, अ-य० (हिं ठडा) प्रात साय वा, ।
भातपामावे २ समुखन्, मानन्दम् ३ शान्त,
समौनम् (दोसो अख्य०) ।

ठक, स खी (अनु) अभिधान पात्र प्रहार,
शब्द, ठक इतिध्वनि (पु) ।

—ठक, स खी (अनु) ठकठकायिन, ठक
ठकध्वनि २ कलह, कलि । वि स्तम्भ
चकित, निक्षेप ।

ठकठकाना, कि स (अनु) ठकठकायते
(ना धा), मद्र अभि आ हन् (अ प अ)
अथवा प्रह (म्वा प अ) २ लघु प्रह या
तट (जु) ।

ठकठकिया, वि (अनु ठकठक) विवादिन्,
कलह कलि प्रिय ।

ठकुरसुहाती, स खी (हिं ठकुर + सुहाता)
दे 'सुहागद' ।

ठाकुराई(य)न, स खी (हिं ठाकुर) ठकुरी,
ठकुरभार्या (२) नापिती, धुरिणी २ स्वा
मिनी, ईश्वरी ।

ठाकुराई, स खी (हिं ठाकुर) प्रभुत्व, अधि
पत्य, स्वामित्व २ अधिकार, शासन
३ महत्त्वम् ।

ठकरायत, स खी (हिं ठाकुर) दे 'ठकुराई' ।

ठग, स पु (स स्थान) कितव, दाभिन,
धूर्त, प्रतारक, वचक ।

—ठाजी, स खी, कौनव, कपट, दम, प्रतारण,
स्थान्त्व अति-अभि, सधान, वचनम् ।

ठगना, कि स (स स्थान) अति-अभि,
सथा (जु उ अ), प्रवृ-मुह (प्रे), वचुरठ
(जु), विप्रलम् (म्वा आ अ) । स पु,
दे 'ठगवनी' ।

ठग(नि)नी, स खी (हिं ठग) अविद्या,
प्रतारिका, दाभिकी कपटिनी ।

ठगी, स खी, दे 'ठावाजी' ।

ठगाना, कि प्रे, व 'ठगाना' के प्रे रूप ।

ठट, स पु, दे 'ठठ' ।

ठट(ठ)री, स खी (हिं ठाट) शवयान, सान
दी २ कंकाल, अस्थिपजर ३ घास पलाल,
जाल ४ इशमनुष्य ।

ठडा, स पु (पु अट्टहास या अनु) हास्य,
परि(री)हास, झेला-लिका प्रहसन, नर्मन्

(न) नर्म-विनोद परिहास, आलाप-उक्ति
(खी) वचन २ अपहास ।

—करना, कि स, परिहम् (म्वा प स)
विनोदवचन उदीर (प्रे) २ अव-उप वि, हम,
उपशासारपदी कृ, अवशा (क उ अ) ।

ठट्टेबाज, सं पु, (हिं + षा) विनोदरील,
हास्यप्रिय, वैहासिक, भट्ट ।

ठट्टेबाजी, स खी विनोद, कारिता शीलना,
वैहासिकता ।

ठठ, स पु (स स्थान >) समूह, समुदाय,
जन, नमर्द भोग

ठठेरा री, स पु (अनु ठन ठन) कान्य
तात्र, कार ।

ठठेरिन, स खी (हिं ठठेरा) काव्य-नात्र,
कारो ।

ठठेल, स पु (हिं ठठा) दे 'ठट्टेबाज' ।

ठठोली, स खी (हिं ठठेल) दे 'ठठठवानी' ।

ठनक, स खी (हिं ठनकना) ठगिति, ठग
स्वार, शिवा, वान, सात्कार, सृदनादीना
ध्वनि (पु) २ दे 'गीम' ।

ठनकना, कि अ (अनु ठन ठन) कण (म्वा
प स), गिज (अ आ से) । ठपठगायते
(ना धा), ठगिति कृ ।

ठनकाना, कि म, व 'ठनकना' के प्रे रूप ।

ठनठन, स खी (अनु) दे 'ठनक' ।

—गोपाल, स पु, दरिद्र, निर्धन २ निरस्तार
वस्तु ।

ठाना, कि अ, (हिं ठानना) निर्ध
अधवसो (कर्म) ।

ठानाका, स पु, दे 'ठनक' ।

ठानाठन, कि वि (अनु ठनठन) सठगाकार,
सात्कारम् ।

ठपा, स पु (स स्थान) मुद्रा, मुद्रायक,
२ आकर-मत्कार, साधन ३ अक, चिह्न,
मुद्रा, न्याम ।

—लगाना, कि स, मुद्रपति चिह्नपति (ना
धा), कक (जु०), लाष्ट (म्वा प से) ।

ठरना, कि अ, दे 'ठिठुरना' ।

ठर्रा, स पु (देश) निरुद्धकरा २ स्थूलनूत्र
३ कर्दपवेष्टका ।

ठस, वि (स स्थास्तु >) धन, दृढसधि, सुदृढ,
कठिन, स्थूल, सुनसत २ दे 'गक' ३ गुरु,

भारवत् ४ अलस, मथर १ (सिका) कूट
कपट वृत्तिम- (समासारम में) ६ यनाञ्च
७ कृष्ण ८ अत्याग्रहिन् ९ ठसिति
शब्द, वस्तुभगध्वनि (पु) ।

उत्सक स स्त्री (हिं ठस) हाव, भाव,
विभ्रम २ दर्प, गर्व ।

उत्सका, स पु (अनु ठस) शुष्क अक्फ,
कांत क्षब्ध २ आपात, समर्प ३ पाश,
बाणुरा ।

उत्सनी, स स्त्री (हिं ठस) अयोधन,
मुद्गर ।

उत्साहस, वि (हिं ठस) परिभ्रम पूर्ण, आ स
कीर्ण, आनुल, सतुल, समानुल ।

उत्समा, स पु (दिश) अष्टकार, दर्प २ हाव
भावा ३ आडवर ।

उत्हरना, कि अ (स स्थिर) रथा (भवा प
अ), अवस्था (भवा आ अ), निश्चल
रुद्रपतिस्थिर स्तम्भ (वि) भू २ वम
(भवा प अ) ३ निविश (तु प अ),
प्रयाणभगा वृ ४ विश्रन् (दि प से),
विरन् (भवा प अ) ५ निक्षि निर्गी
(कर्म) ६ प्रनीष (भवा आ से) ।
स पु अव स्थिति (स्त्री) स्थान, निश्चलता,
स्तम्भता नास, विश्रम ३ ।

उत्हरनेवाला, स पु, अव, स्थात् (पु) ।

उत्हराना, कि, स, व 'उत्हरना' के प्रे रूप ।

उत्हराव, स पु (हिं उत्हरना) अव, स्थिति
(स्त्री), निवेश २ निर्धारण, निक्षय ।

उत्हरौनी, स स्त्री (हिं उत्हराना) विवाहे
सुतकादिनिश्चय ।

उत्हाका, स पु (अनु) सशब्द, स्फोटन भग
२ अति प्र-अट्ट-उच्चैर, हाम ।

उत्थैव, स पु (स स्थान) स्थल, प्रदेश
२ निवास, वसति (स्त्री) ।

उत्थसना, कि, स, दे 'उत्थसना' ।

उत्कुर, स पु (स उत्कुर) परमेश्वर, जगदाश
२ पूज्य, मान्य (मानव) ३ नायक,
अधिष्ठात् (पु) ४ द्यामिष्ठ, भूस्वामिन्
५ क्षत्रियोपाधि (पु) ६ प्रभु, स्वामिन्
७ नापित ८ देव, देवता ९ देवप्रतिमा ।

—द्वारा, स पु } देव, मन्दिर-स्थान आलय,
—वाही, स स्त्री } मन्दिरम् ।

उत्कुरी, स स्त्री, दे 'उत्कुराई' ।

उट, स पु (स स्थात्) तुग, पटल छदि
(स्त्री) २ दे 'उटोच' ३ अलक्रिया, वेग
४ आडवर, रोमा, वैभव ५ सुरा, मोद
६ रीति (स्त्री), शैली ७ आयोजन
समारम्भ ८ सामग्री, परिच्छद ९ युक्ति
(स्त्री), उपाय १० आधिष्ठ, प्राञ्जय
११ समूह, वृद्धम् ।

—वाट, स पु, आडवर, श्री (स्त्री), रोमा,
पेशवर्ष, वैभव, प्रताप ।

—बदलना, सु, आकार भाव परिवृत् (प्र) ।
टाठ, स पु, दे 'टाट' ।

टाढा, वि (स स्थात्) उच्छिद्यत, उन्नत, लब्ध,
दृढवत् उत्थित, उत्थान २ जात, बदपत्र
३ समस्त, समय, अपिष्ट ।

ठानना, कि, स (स अनुष्ठान) अष्टव व्यव
स्रो (दि प अ, अध्यवस्यति), निक्षि (स्वा
उ अ), सक्तम् (प्रे), निर्गी (भवा प
अ) २ साग्रह प्रारम्भ (भवा अ. अ),
अध्यवसायेन अनुस्था (भवा प अ) ।

ठार, स पु (स) हिम, तुहिन, तुषार
२ अतिशीत, शैत्यतिशय ।

ठाळा, स पु (हिं निठला) कार्य-जीविना
व्यवसाय, अभाव ।

ठाळी, वि, दे 'निठहा' ।

ठिंगना, वि (हिं हेठन-अग) सर्व, उत्सव,
पामन, हस्तकाय ।

टिकाना, स पु (हिं टिकान) स्थल-स्त्री,
स्थान, प्रदेश, भू-भूमि (स्त्री) २ आ
नि, वास, आनि, लय ३ आश्रय निर्वाह,
स्थान ४ वायास्वी, प्रामाण्य ५ आयोजन,
मरिथा, प्रवच ६ अत, सीमा ७ नामधाम
परिचय ८ निदिष्ट-मन्त्र, स्थानम् ।

टिकाने लगना, सु, इन् हिम् (कर्म) २ समाप्
(कर्म) ।

टिकाने लगाना, सु, इन् (अ उ अ), हिस्
(र प से) २ निदिष्टस्थान नी (भवा प
अ) ३ सम्यक् उपयुज् (अ उ अ)
४ कार्य समाप् (स्वा उ अ) ५ सफली कृ ।

टिटकाना, कि अ (सं स्थित-न-करण) >
अकरमात्-अकटि विरन् (भवा प अ)-रुप्
(कर्म) स्तम्भ निश्चेष्ट शब्दगति (वि) भू ।

टिठ(टु)रना, कि अ (स ठार >) शीती
जड़ी भू, स्तभ (वर्म) २ शीतेन वप
(भ्वा आ से)।

टि(टु)नक, स स्त्री (अनु) गदगद, पु
(पू)कार।

टि(टु)नकना, कि अ (अनु) सगदगद
ऋद् (भ्वा प से) हद् (अ प से),
शिशुवत् वद्।

टिरना, कि अ, दे 'टिठरना'।

ठीक, वि (हि ठिकाना) अवितथ, तथ्य,
स्वय यथार्थ २ उचित, न्याय्य, धर्म्य, समजस
३ शुद्ध, निर्जोत, निर्दोष ४ सुस्थ, अविकृत
५ यथार्थ, यथायोग्य, अनुरूप ६ नम्र,
विनीत ७ अन्यूनाधिक, निर्दिष्ट ८ नियत
९ पूर्ण, समाप्त। कि वि, यथावत्, यथातथ,
सम्यक, साधु तत्त्वतः, पूर्णतया।

—भाना, कि अ, उपपद-युज्जिह्व (कर्म),
सुदिलष्ट सुसगत (वि) भू २ तुल्य-अनुरूप
(वि) भू।

—करना, कि स, निर्दोषी-कृ, परि वि-स
शुध् (प्रे) २ सुदिलष्ट सुसगत कृ।

—ठाक, वि, सिद्ध, सज्ज, उपस्थित, उपकृतस।

—ठीक, कि वि, दे 'ठाक' कि वि।

ठीकरा, स पु (हि ठुकरा) घट-शकल खट,
मिन्नमृत्पात्र, क(स)पौर, २ भिक्षा, भाजनं
पात्र ३ जोर्णपात्रम्।

ठीकरी, स स्त्री (हि ठीकरा) शुद्धवत्खड
२ तुच्छनिरर्थक वस्तु (न)।

ठीका, स पु (हि ठीक) अभ्युपगम, नियम,
पण, समय, सविद् (स्त्री) २ पट्टोलिका।

—देना, कि स, पणसविदं कृ, प्रतिपद्
(दोनो प्रे)।

—लेना, कि स, पणसविद समय कृ, प्रतिपद्
(दि आ अ), सविद् (अ आ से)।

ठीकदार, स पु पणकर्तृ, कृतसमय, नियम
कृत् (पु)।

ठीठी, स स्त्री (अनु) हास्यध्वनि (पु),
अट्टहास।

ठीहा, स पु (सं स्थित >) भूमिजातकाष्ठ-
खड टम् २ उच्छ्रयानम् ३ वेदिका-वेदि
(स्त्री) ४ आसनम् ५ सीमा।

ठुठ, स पु, दे 'ठूठ'।

ठुकना, कि अ (अनु ठुक ठुक) आहन्-
ताड् प्रह (कर्म) २ अयोधनेन वियनेन
आहन् ताड (वर्म) ३ परा, भूजि (कम)

ठुकराना, कि स (हि ठोकर) पादेन प्रह
(भ्वा प अ)-नड (सु)-आहन् (अ प
अ) २ प्रत्यारया (अ प अ), अवमन्
(दि आ अ) धिकृठ।

ठुकवाना, कि प्रे, व 'ठोकना' के प्रे रूप।
ठुठ्ठी, स स्त्री, दे 'ठोठी'।

ठुनकाना, कि स (अनु) अगुत्वा इस्तेन वा
मन्द मन्द आहन् (अ प अ)।

ठुन ठुन, स स्त्री (अनु) ठुणठुणकार,
ठुणठुणायित, धातुपात्रवणित २ शिशुकदन
ध्वनि (पु), ठुणठुणशब्द।

ठुमक, स स्त्री (अनु) खेल विलास गति
(स्त्री)।

—ठुमक, कि वि, खेल विलास-गत्या सरल
सविलाम (शिशु चलनम्)।

ठुमकना, कि अ, (हि, ठुमक) सरल सवि
लास चल (स्वा प से)।

ठुमका, वि (हि ठुमक) वामन, खर्व, हत्व।

ठुमरी, स स्त्री (देश) गीतक तिका।

ठुसकना, कि अ (अनु) दे 'ठिनकना'।

ठुसना, कि अ (ठूसना) अत्यत पूर
(सर्म), २, बलाद् निविश (तु प अ)।

ठुसयाना, ठुसाना, कि प्रे, व 'ठूसना' के प्रे
रूप।

ठूंग, स स्त्री। (स तुल्) च्चु च् [दोनो
ठूंगा, स पु] (स्त्री) २ च्चुप्रहार।

—गारना, कि स, च्चवा प्रह (भ्वा प अ)।
सु, न्यून तुल् (सु)।

ठूँ, स पु (स स्याणु) शुष्कवृक्ष, पत्र विटप,
हीनतरु (पु) २ छिन्नो हस्त, निवृत्त वर।

ठूँठा, वि (हि ठूँठ) अपन्न, अदास, शुष्क
(वृथ) २ छिन्नहस्त, निवृत्तकर।

ठूँ(ठूँ)सना, कि स (हि टस) अत्यधिक
पूर (सु), भ्रष्ट पू (प्रे) २ बलाद् नि प्र
विश (प्र) ३ अतिमात्र खाद् (भ्वा प से)।

ठूँगाना, वि, दे 'ठिनगाना'।

ठूँगा, स पु (हि अँगूठा) अंगुष्ठ २ दह,
यष्टि (स्त्री), लघुट ३ मेदुम्।

ठेका, स पु, दे 'ठीका'।

टेका, स पु (हि टेक) अच् आ, लव लवन, अवष्टम, उपघ्न २ निवेशस्थान, विश्रामस्थल ३ पट्टवादनप्रचारभेद ४ कौवा लीनामकस्तालभेद ५ स्खलन ६ वाममृदंग ७ दे 'टीका' ।

टेठ, वि (दे) विशुद्ध, मिश्रणरहित, स्वच्छ २ क्षेत्र, मात्र (समासात् में) ।

टलना, कि स, दे 'बदलना' ।

टला, स पु (इ टला) दे 'धका' । २ जनौष, जनसमर्द्ध ३ हस्त, शकट शकटम् । टस, स स्त्री (हि, टस), प्रहार आ-अभि, घात, नाशन, पात, आहति (स्त्री) ।

टसना, कि स दे 'टूसना' ।

टोकना, कि स (अनु ठक ठक) अयोधनेन मुद्गरण तड (चु)-प्रह (भ्वा प अ) २ बलन दावनेन प्रविश (प्रे) ३ अभि आहन् (अ प अ), तड (चु), प्रह । ४ अभियुज् (न आ अ) शत्रुकुले निविद् (प्रे), ५ हस्तेन लघुप्रह आहन्, करेण रक्ष परामृश (तु प अ) ।

टोक बजाकर, मु, निपुण परीक्ष्य, सम्यक पर्यालोच्य निरूप्य ।

टोंग, स स्त्री (स तुटन्) चचू-तु (स्त्री) २ चचु प्रहार ३ अगुलीप्रहार ।

टोंसना, कि स (स तुट >) तुडेन, चचुपुटेन अभिहन् (अ प अ)-प्रह (भ्वा प अ), चचुप्रहार क ।

टोंगा, स पु (हि टोंग) पत्र पुट्टिका कोष ।

टोंसना, कि स, दे 'टूसना' ।

टोकना, कि स, दे 'टोकना' ।

टोकर, स स्त्री (हि टोकना) स्खलन, स्खलित, आपात, आहति (स्त्री) २ पाद लप्ता, आघात, प्रहार ३ कट्वनुभव ।

—खाना, कि अ, प्र, रखल (भ्वा प स), पद विषमो भू । मु, हानि शति-कष्ट सद् (भ्वा वा से) ३ वच् प्रतार् (वा') ४ जीविकार्थमितस्तत भ्रम् (भ्वा प से) ।

—भारना, कि स, लक्ष्या पादेन प्रह (भ्वा प अ)-आहन् (अ प अ)-तद् (चु), पादप्रहार क ।

—लगना, कि अ, दे 'टोकर खाना' ।

टोड़ी डी, स स्त्री (स तुट >) चिबुक, हनु (पु स्त्री) ।

टोर, स पु (देश) पञ्चभेद, टोर । २ चचु, चू (स्त्री) ।

टोला स पु (देश) रगाहारशराव २ अगुलि, सधि-शधि पर्वन् (न) ।

—भारना, कि स, अगुलिपर्वणा प्रह (भ्वा प अ) ।

—रखना, मु, हन् (अ प अ), मृ (प्र) ।

टोस, वि (हि टस) साद्र, मु, सहत, कठिन, मध्यावद, धन २ पूर्णगर्भ, छिद्ररहित, सगर्भ ।

टोसाई, स स्त्री (हि टोस) धनता, काठिन्य, निश्छिद्रता ।

टौर, स स (हि टौव) स्थान, स्थली, प्रदेश २ अदमर, सुयोग, योग्यता ।

कुटीर, मु, दुःखद-अनिष्ट, स्थाने स्थले ।

ठिकाना, स पु, वास्तस्थान, आनि-वास ।

ड

ड, देवनागरवर्णमालायास्योत्थो व्यञ्जनवर्ण, टकार ।

डक, स पु (स दश) कटक, दशचचू (स्त्री), डकु (पु), (विच्छू वा) अल २ दशमण ण ३ दे, 'निव' ।

—भारना, कि स, दश् (भ्वा प अ) २ मर्माणि निद् (र प अ) ।

—वाला, वि सदश, दशिनू-दशक ।

डंका, स पु (सं डका) यद्द पट्ट, विनय मद्द, डन्डुभि, विदिमा ।

—घजाना, मु, प्र, शान् (अ प से), तश् (चु) ।

—घजाना, मु, विप्रत विरयात् (वि) भू । डके की चेटे कहना, मु, प्रकाश उद्भूत (तु) ।

डगर, सं पु (स दशग(क)रीय) पशु, शृग, चतुष्पद, पशुपाद (पु) ।

डठल, स पु (स दड) काठ, रई, माल्शी ३ २ हन, प्रसन्नवचनम् ।

डद, स पु (सं दण्ड) लघुद, यष्टि (स्त्री) २. बाड़ा (पु), मुज्जा ३ अर्धघन, दद

४ निग्रह शामन ५ हानि क्षति (स्त्री)
 ६ -यायामप्रकार साष्टाङ्ग दण्ड, -यायामः ।
 —दंश, कि स, दण्ड (चु) शस (अ प से), दोनों द्विकर्मक, दम् (प्रे दमयति), निग्रह (क प से) ।
 —पेलना, कि अ, (दण्डवत्) -यायाम् (भ्वा प अ) -यायाम कृ ।
 —भरना, कि अ, अर्धदण्ड परि, शुभ (प्रे) ।
 —लेना, कि स, अर्धदण्ड दा (प्रे दापयति) ।
 —पेल, स पु मल, मलयोदधु (पु), न्यायामिन्, दृढांग, वज्रदेह ।
 दण्डवत्, स स्त्री दे 'दण्डवत्' ।
 दडा, स पु (सं दण्ड) काष्ठ, काष्ठखण्ड, लघुद, यष्टि (स्त्री, वेत्र वेत्रयाष्ट । २ प्राचीर, प्राकार, वरण ।
 दडिया, स पु (हि डाड) करोद्ग्राहक, शुक्लमग्राहक ।
 दडी, स स्त्री (हि दडा) सूक्ष्म तनु, दण्ड यष्टि (स्त्री) २ तुलायष्टी ३ मुष्टि (स्त्री), वारग ४ काण्ड द, नाल ल ५ पर्वतीय वाइनभेद । स पु, दण्डधारिन्, सन्यासिन् ।
 पग—, स स्त्री, चरण पाद, पय, पदति (स्त्री), पया, पदवी ।
 दडौत, स पु स्त्री, दे 'दण्डवत्' ।
 दकरना, कि अ (अनु) हमारव कृ, रेम (भ्वा आ से), नि, नद (भ्वा प से) ।
 दकराना, कि अ, दे 'दकरना' ।
 दकार, स पु (सं दकार) उद्गिरण, उदम, उदमन २ गर्जन, गर्जित, निनाद ।
 —लेना, कि अ, दे 'दकारना' ।
 —जाना या—घटना, मु, छलेन आत्मसात् कृ, ग्रन (भ्वा आ से) ।
 दकारना, कि अ (हि दकार) उद्गृ (चु प से), उदम् (भ्वा प से) २ द 'दकरना' २ दे 'दकार जाना' ।
 दकैत, स पु, दे 'दाकू' ।
 दकैती, स स्त्री, दे 'दाका' ।
 दकौत—तिया, स पु (देश) मिथ्यामौहूर्तिक, ज्योतिर्विदामास २ जातिविशेष ।
 दग, स पु (हि डौवना) दीर्घ, विक्रम, पाद-यास ।

—भरना, कि अ, विक्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ) दीर्घपादान् विचम (दि प से) निक्षिप (तु प अ) ।
 दगमग, वि (हि दग+मग) प्ररत्नलत्, विचलत् कपमान, वेपमान । अय०, सकम्पम्, सवेपथु ।
 दगमगाना, कि अ (हि दग+मग) प्र, कृपेव (भ्वा आ से) वेह (भ्वा प से) २ प्ररत्नल विचल (भ्वा प से) ३ विशक विकल्प (भ्वा आ से), चित्त दोलायते (ना धा) ।
 दगमगाहट, सं स्त्री (हि दगमगाना) प्रकप, वेपथु २ प्ररत्नलन, विचलन ३ विक्षोभ, चित्तवैकल्य, धृतिनाश ।
 दगर, सं स्त्री (हि दग) दे 'मार्ग' ।
 दटना, कि अ (हि डाटा) दृढ स्थिर निश्चल रथा (भ्वा प अ), अवस्था (भ्वा आ अ), वृत् (भ्वा आ से) ।
 दटा, सं पु (हि डाटना) कृपोद्धिद्र पिधान, अवधम, रोध ।
 —लगाना, कि स, रोधेन अवष्टम्भेन अपि पि, धा (जु उ अ)-स आ वृ (स्वा उ से) ।
 दडियल, वि (हि डाडी) कूर्चधर, लवकूर्च, हस्तुल, सस्मथु ।
 दपट, सं स्त्री (सं दर्प) निर्भर्तमना, वाग्दण्ड ।
 दपटना, कि स (हि दपट) तर्ज (भ्वा प से चु आ से), वाचा दट् (चु), निर्भर्तस् (चु आ से) ।
 दपोरसंख, स पु (अनु दपोर=वडा+सं शख) आत्मशायिन्, पिकात्पनशील २ बालबुद्धि (पु) ।
 दफ, दफला, स पु (अ दफ) डिडिमभेद •टफम् ।
 दफली, स स्त्री (हि दफला) लघु, डिडिम दफम् ।
 दफाली, स पु (हि दफला) दफ डिडिम, वादक ।
 दवडवाना, कि अ (अनु) सास सवाष्प सञ्चलनयन साष्ट (वि) भू ।
 दवडवार्द ओखों से, कि वि, सास, साष्ट, सवाष्प, पर्युथु ।

डयोना, कि स, दे 'डुयोना'
 डड्या, स पु (स डिव >) सपुट, सपुटक,
 करटक, समुद्रक । २ (रेणगाडी का)
 शक-रम् ।
 डमरू, स पु (स रू) क्षीणमथ्यो गुटिका
 द्वययुक्तो वायवेद ।
 —मथ्य, स पु (स न) विशालभूभागद्वय
 योजक सवाभभूजड ।
 जलडमरूमथ्य, स पु (म न) सामुद्रधुनी ।
 डर, स पु (स दर र) स, त्रास, भी भोति
 (स्त्री), भय, साधस २ श्वा, विना ।
 डरना, कि अ (हि डर) भो (जु प अ),
 विसत्रस् (भ्वा दि प से) उदिञ् (तु
 प अ), मयात्तत्रन (वि) भू २ आवि,
 शक (भ्वा आ से) ।
 डरपोक, वि (हि डरना + पोक्ना) भौत,
 मोह, समय, ससाधस २ साशक, शकिल ।
 डराना, कि स, व 'डरना' के प्र रूप ।
 डरावना, वि (हि डर) भीम, भीषण, भयकर ।
 डल, स स्त्री (स तल) तगक क (ग ग),
 सरोवर ।
 डलना, कि अ (हि डालना) न्यस्निधिप्
 (कर्म २ नि, सिच् (कर्म) स्तु (भ्वा प अ) ।
 डलवाना, कि प्रे, व 'डालना' के प्रे रूप ।
 डला, स पु (स दल ल) सब ड, स्थूल,
 अश भाग २ विड व पन, गड, युग्म ।
 डला, स पु [स डल(ल)क] दे 'टोकरा' ।
 डलिया, स स्त्री (हि डला) दे 'टोकरा' ।
 डली, स स्त्री (हि डला) पिठक-क,
 सुद्रगड २ शकल लसट ड ३ दे 'सुपारी' ।
 डसन, स पु (स दशनम्) दश २ दश
 दशन रीति (स्त्री) ।
 डसना, कि स (स दशन) दश् (भ्वा प
 अ), काटवेन ऽवथ (दि प अ) २
 मर्माणि मिद् (रू प अ) ।
 डसनेवाला, म पु, दशक २ अन्नपुर,
 ममस्थ ।
 डहडहा, वि (अनु) हरित, रसवज्, सरस,
 विकसित, विकच २ अभिनव, प्रत्यय
 २ प्रसन्न, आनन्दित ।
 डहडहाना, कि अ (हि डहडह) प्रपुल्

विक्रम (भ्वा प से), हरिती भू २ सन् क्रथ
 (दि प से) सत्रिष् (भ्वा आ से)
 ० मुन् (भ्वा आ से) ।
 डौकना, कि स, दे 'लौपना' कि अ, दे
 'कै करना'
 डोग, स स्त्री (स दटक) लगुट र ल,
 स्थूल बुद्ध दड ।
 डौट, स स्त्री (स दाति >) तर्जन, तर्नित,
 निर-, भ सनना, वाचदड ।
 —दपट, स स्त्री भ्रमणेन तर्जन, आक्रोश,
 विभीषिका अयदर्शन, अरवारगिर् (स्त्री) ।
 डौटना कि स (हि डौट) विर् भस्त्
 (जु आ से), भय इश् (प्रे), भी (प्र),
 तज (भ्वा से, जु आ से) ।
 डौटने योग्य, वि, तनीय, निभमनीय
 वादडाई ।
 डौटनेवाला, स पु, तर्जक निर्भर्त्सर्न ।
 डौड, स पु (स दड) ५ टि (स्त्री),
 लगुट २ क्षेपणी, नौदड ३ पृष्ठवश कशेरका
 ४ धन अथ दड निमड, शासन, दड
 ६ सम सरल, रेखा ७ सीमा ।
 डौडना, कि स (स डहन) अर्ध धन दद्
 (जु) ।
 डौडा, स पु (हि डौड) दे 'मैंड' ।
 डौडी, स स्त्री (हि डौड) दे 'टडी' (१ ४) ।
 डौडौडोल, वि (हि डौडला) अस्थिर,
 चवल, तरल, लोल, कम्पमान (मनुष्य)
 अस्थिरबुद्धि, चलबिच, चचलमानम ।
 डौस, स पु (म दस) दशक, अरण्य
 गो वन, मशिका, पांगुर, सुद्रिका ।
 डौस, स पु (अ) नृत्यम्, दे 'नाच' ।
 डौहन, स स्त्री, (स डाकिनी) दे 'दा
 विन' ।
 डौहानामाइट, सं पु (अ) विध्वमवम्, •
 विस्फोटकम् ।
 डौह, म स्त्री (हि डौहना-फौदना) ।
 प्रेष्य पत्राणि-पत्रिका (बहु) २ पत्रवाहन,
 ऽवस्था सरथा ।
 —गाना, स पु (हि + गा) (प्रेष्य)
 पत्र, स्थान गृह-कार्यालय ।
 —गाडी, स स्त्री, पत्रवाहनी ।

- घर, सं पु, दे. 'दावराना' ।
 —वैगला, सं पु (हि + अ) विश्राम
 विश्रान्ति, गृहम् ।
 —महसुल, स पु (हि + अ) पत्रवाहन
 —व्यय, स पु (हि + स) शुकम् ।
 डाका, सं पु (हि डाकना) प्रसन्न चौर्यम्,
 लुठि (स्त्री) टी, लुठनम् ।
 —जनी, सं स्त्री (हि + फा) दे 'डाका' ।
 —डालना, या मारना, कि स, लुट-लुठ
 (स्त्रा प से, चु), प्रसन्न अपहृ (स्त्रा
 प अ) ।
 —पढ़ना, कि अ, लुठकै अवस्वद्-आक्रम
 (कर्म) ।
 डाकिन, नी, सं स्त्री (सं नी) कुहकिनी,
 अभिचारिणी, योगिनी, मायाविनी, बालीगण
 भेद । २ स्वविरा, वृद्धा इ कुर्या नारी ।
 डाकिया, सं पु (हि डाक) पत्रवाहक ।
 डाकू, सं पु (हि डाकना कूटना) दस्तू,
 महासाहसिक, लुठक, लुटा (डा) क,
 माचल, प्रसन्नचौर, चिह्नम् ।
 डाट, स स्त्री (सं दाति >) तोरण णं २ दे
 'ड्या' इ दे 'डॉ' ।
 —लगाना, कि स, वृत्तजनकृत्या तोरण
 रूपेण निर्मां (जु आ अ) ।
 डाटना, कि स (हि डाट) अत्यन्त
 पूर (चु) २ अत्यधिक भक्ष (चु)
 इ सावन्धेप वस्त्रादिक परिधा (जु उ अ)
 ४ दे 'डॉटना' ।
 डाढ़, सं स्त्री (सं दाडा) चर्वणदत, —भ,
 दष्ट ।
 डाढ़ी, स स्त्री दे 'दाडी' ।
 डाघ, स स्त्री, दे 'डाम' ।
 डाघर, सं पु (सं दघ्न =सागा >) अनूप
 पच्छ, भू (स्त्री) देश २ पल्लव ल इ
 आविल्लव ४ दे 'चिलमची' ।
 डाम, स पु (दर्भ) कुश-श २ आच
 मन्त्री इ अपवन्तारिवेल र ।
 डामर, वि (स) मोषण, भयावह २ उपद्र
 विव, कलि-बलह, प्रिय इ सरूप, अनुरूप,
 सद्गुण । स पु (स) उपद्रव, बल २
 वल्लगम, प्रमोद ।
 डामल, स पु (अ० दायमुल हम्स) थावजी

- बिक वारावास, आमरणान्तिक रोध निरोध
 आशेष प्रग्रह ।
 डायन, सं स्त्री (दे डाकिनी) ।
 डायनामो, सं पु (अ) विपुञ्जनक लघुपत्रम् ।
 डायरी, सं स्त्री (अ डैनदिनी दैनिकी) ।
 डायरेक्ट स्पीच, सं स्त्री (अ) प्रत्यक्षवर्णनम् ।
 डायर्की, सं स्त्री (अ) दे० 'डुराम' ।
 डायल, सं पु (अ) घटीमुख २ सूयघटी ।
 डायस, स पु (अ) उवासन, मच ।
 डार, स स्त्री [सं दार (न)] विटप, शाखा,
 २ पक्ति-तति (स्त्री), भेणी ।
 डाल, स स्त्री [सं दार (न)] विटप, शाखा
 २ भस्ति, धारा पत्र फलम् ।
 डालना, कि स (स तलन) प्र, अस (दि प
 से), प्र, क्षिप (तु प अ), पत्र (प्रे)
 २ प्र, सृ (प्रे), नि, सिच् (तु प अ)
 ३ परिधा (जु उ अ), वस् (अ आ
 अ), घृ (चु) ४ नि प निश (प्रे), निधा
 (जु उ अ) ५ विस्मृपरित्यज (स्त्रा प
 अ) ६ मिश्र (चु), सम्बिल् (प्र) ७ उप
 पत्नीत्वेन अवहृ (रु उ अ) ।
 डालर, स पु (अ) रौप्यमुद्राभेद, डालरम् ।
 डाली, सं स्त्री (हि. डाल) शाखा, विटप ।
 डाली, स स्त्री (हि डाला) दे 'टोकरी'
 २ उपहार, उपायनम् ।
 डाह, स पु (सं दाह) ईर्ष्या, अभि,
 असूया, मत्सर, मात्सर्य, परोत्कर्षद्वेष,
 २ द्वेष, द्रोह ।
 डिगल, वि (सं डिगर) दुष्ट, दुर्वृत्त २ धुद्र,
 नीच । स स्त्री, राजस्थानस्य भाषाविशेष ।
 डिडिम, सं पु (स) लघु, पट्टइ-दुडुभि (पु) ।
 डिभ, सं पु (सं) द्वि, शिशु, पृथुक,
 कलम, पीत-नक, श्वाव-वक्र, क्षमक,
 अपत्य, पृथुक २ मूर्त जड ।
 डिक्टेटर, स पु (अ) एक—अधिपति—
 सर्वाधिकारसम्पन्न, शासक—शासितृ ।
 डिक्टेशन, स स्त्री (अ) दे 'इन्ला' ।
 डिक्शनरी, सं स्त्री (अ) (शब्द)-कोश प,
 अभिधानम् ।
 डिगना, कि अ (हि डग) अप, उत्-गन्
 (स्त्रा प अ), प्र वि उत् (स्त्रा प अ)
 २. विचल् (स्त्रा प से), पराङ्मुखी-विमुखी

भू, अति व्यनि-इ (अ प अ), अति व्यनि-
चर (स्वा प से) इ दे 'गिरना' ।

डिगरी, स स्त्री [अ उपाधि (पु)], उपपद
२ अश, बला, मात्रा, समशोषय नवतो
(हेतु भाग) ।

डिगरी, स स्त्री (अ डिग्री) स्वत्वप्रापक,
आधिकरणनिर्णय, राजाशा, व्यवस्था ।

—देना, कि स, स्वत्वप्रापणमव निर्णय हे,
व्यवस्था (प्रे) ।

डिडौना, स पु (हि डीठ) बुद्धिनिवारक
वज्रलतिलकम् ।

डिपनी, स पु (अ डिपुटि) प्रति, निधि
पुरुष इस्त इस्तक, निशोगिन्, नियुक्त ।

—कमिशनर, स पु (अ) उपायुक्त ।

डिपार्टेमेंट, सं पुं (अ) विभाग, शाखा ।

डिपो, स पु (अ) मोबागार, आलय, शाला ।

डिप्लोमा, स पु (अ) प्रमाणपत्र, अधिवारपत्रम् ।

डिफथीरिया, स पु (अ) रोहिणी ।

डिविद्या, स स्त्री (हि दिव्या) कोषक, सपुटक ।

डिड्या, स पु, दे 'ड-ना' ।

डिम्मिस, वि (अ) अधिकारच्युत, अष्टाधिकार ।

—करना, कि स, अधिकारान् पदात् च्यु भ्रम्
अवह (प्रे) ।

डिमिनपेक्टेट, वि (अ) रोगाणुनाशक ।

डिस्टिन्क्शन, स पु (अ) भासकनम् ।

डींग, स स्त्री (सं डीन <) आत्मश्लाघा, स्व
प्रशमा, विकरयनम् ।

—मारना या हर्किना, आत्मान श्लाघ् विकत्य
(स्वा आ से) ।

डींगिया, वि (हि धाग) आत्मश्लाघिन्,
विकरयनशील, सिद्धीशूर ।

डीठ, स स्त्री, दे 'दृष्टि' ।

डील, स पु (देण) (देद्) प्र परि, माण,
आवार, आहृति (स्त्री), कायमानम् ।

—डील, सं पु, मूर्ति (स्त्री), सखान,
आकारमानम् ।

डुगडुगी म स्त्री (अनु) डिडिम, लघुपदक ।

—पीटना, मु, (सुडिडिमनाद) उद् वि धुम्
(चु), प्ररया प्ररयापयति) ।

डुग्नी, स स्त्री, दे 'डुगडुगी' ।

डुधकी, सं स्त्री (इह दुधना) अदगाह,
आप्लव निमज्जयु (पु) ।

—लगारा, कि अ, दाड-अवगाह (स्वा, आ
से), आप्लु (स्वा आ अ), निमरज
(तु प अ) ।

डुधाना, कि म, व 'डुधना' के प्रे रूप ।

डुधाव स पु (हि दुधना) अगाधता, गामीवन् ।

डुधोना, कि स, व 'डुधना' के प्रे रूप ।

डुलाना, कि स, व 'डोधना' के प्रे रूप ।

डुंगर, स पु, (स तुग >) पर्वतक, धुद्रपर्वत
२ उचभू (स्त्री) मृचय ।

डुंगरी, स स्त्री (हि डुंगर) अनिद्रुद्रपर्वत
२ धुद्रमृचय ।

डुंडा, वि (देश०) एक अ-ग विषाण कृणिक ।
स पु एकशय एकविषाण-वृष वृषम ।

डुधना, कि अ, (हि वूधना का विपर्यय,
अथवा अनु डुव डुव) निमरज (तु प अ),

निमज्जेन मृ (तु आ अ)-व्यापद (दि
आ अ) २ अस्त इ-या (अ प अ),

अस्ताचल अस्तशिखर अवलद (स्वा आ से),
प्राप् (स्वा प अ) ३ नष्ट ध्वस्त निर्मूल (वि)

भू, नश (दि प वे), ध्वस् (स्वा आ से),
परिक्षि (कर्म), प्र वि शी (दि अ अ) ४ निध्वै

(स्वा प अ), सतत आलोच चिद् (चु),
चिताकुल (वि) भू ५ निमज्जेनिरत आसक्त

-वापृत (वि) भू । स पु, निमज्जन, आप्लाव,
प्लावन, निमज्जेन मरण, अस्त, अस्तमन,
नाश, ध्वस्त, सततचिन्तन, कार्यासिद्धि (स्त्री) ।

डुहा, स पु (अ) योनिशालनम् ।

डुंगू खुवार, स पु (अ + अ) दण्डक अरिष
भजन, ज्वर ।

डेह, वि (सं अभ्यर्ज) सार्द्धक ।

—डेट की मसजिद् जुदी धनाना, मु (दर्पा
दित) कार्यमसभूयैव क ।

डेपुनेशन, स पु (अ) प्रतिनिधिवर्ग, शिष्ट
मठम्, नियुक्तनम् ।

हेरा, स पु (हि ठहरना) पटवल्, गृह
कुटी मठप वेदमन् (न), दूष्यदय २, गृह,
आलय, आवास ३ विश्राम, अस्थिरवास
४ क्षिप्रि, निवेश ।

—डालना मु, सै य निविश् (तु प अ)
समावम (म्वा प अ) ।

हेला स पु (यू अ) नदीमुखपुलिन-नम् ।

हेलिये, स पु (अ) नियोगिन् प्रतिनिधि (पुं) ।

हेनडा, वि (हि डेट) अर्धदंशुण । स पु
अर्धदंशुणसूची ।

हेवड़ी, स स्त्री, दे 'होदी' ।

हेसिमल, स पु (अ) दशमलव २
दशसंयक ।

हेस्क, स पु (अ) लेखन पीठिका फलकम् ।

होंगा, स पु (स द्रोण <) वेडा, वारिरध
नो (स्त्री), तरौ ।

होंगी, स स्त्री (स द्रोणी) उडुप, नौका,
वेटी, वेडा, तारिका ।

होंडी-हों, स स्त्री, दे 'होली' ।

होडी, म स्त्री (स तुड) बीजकोष, पुट-टम् ।

होवा, स पु (हि, हुवा) निमज्जसु (पु),
निमज्जन अवगाह इम आप्लव ।

—देना, कि स, (रणे) नि, मिस्त्र (प्र
मज्जवणि), अवगाह (अ) २ किस् (प्रे),
आरी क ।

होम, स पु (म) लौक, अस्तूरयजातिभेद
१ दे 'भीराती' ।

होर, स स्त्री (स पु न) शुक्ल-रुक्, शुक्ला
त्वो, वराट-टक, रञ्जु (स्त्री), गुण, वट
टटी ।

होरा, स पु (स डोर र) डोरक-क, सूत्र
ततु (पु), गुण २ रयाणा, लेता ३ अमि,
धारा ४ चमसभेद ५ स्नेहसूत्र, प्रेमवधन
६ कज्जलेक्षा ७ मुरवे ग्रीवागतिभेद ।

—डालना, मु अनुरज्-मुद् (प्रे) ।

होरिया म पु (हि होरा) •होरीय, सरैलौ
ऽपुकभेद ।

होरी, स स्त्री, दे, 'होर' ।

होल, स पु (स दोल <) •होल, लोहसेचनम् ।
वि, अस्तिर, लोल ।

होलची, म स्त्री (हि डोल) •होलक
लघुमेचनी ।

होलना, कि अ (स दोलन) स-सुप (म्वा
प अ) चल (म्वा प से) २ अम्-पर्यट
(म्वा प से) ३ अप, इया (अ प अ)
४ (चित्त) विचल्, चचल भू ५ दोलायने

(ना पा), प्रेस (म्वा प से) । स पु,
दोलन, प्रेसण इ ।

होलनेवाला, सं पु, सर्पणशील पर्यटक,
अपयान् (पु), चलचित्र, प्रेसक ।

होला, स पु (स दोला) दयनं, दोलिका,
शिविया ।

—देना, मु, नृपादिभ्य स्वक-यामुपह (म्वा
प अ)

होली, स स्त्री (हि होला) दे 'होला' ।

होड़ी-हो, स स्त्री (स टिटिम) पट्ट,
दुदमि २ (सल्लिडिमनाद) घोष वणा
३ रयापन, व कीर्तनम् ।

—देना या पीटना, कि स, दे 'हुगहुगो
पीटना' ।

हौल, स पु (हि डोल) आकार, सस्थान,
आकृति (स्त्री), रूप २ प्रकार, विधा
(समासार्थ में) ३ युक्ति (स्त्री) उपाय
४ लक्षण, चिह्नम् ।

हाल, स पु, उपाय, युक्ति (स्त्री) ।

—दार, वि, सुदर, रम्य २ पुष्ट, स्वस्थ ।

हयूटी, स स्त्री (अ) कर्तव्य, कार्य कृत्यम्,
-याय्य स्व, कर्मन् वार्यम् ।

हयोडा, वि तथा स पु, दे 'डेवडा' ।

हयोदी, स स्त्री (स देहली) गृहव्यवहण,
द्वार, पिंडी पिठिका २ उपशाला, द्वाारागण,
द्वारकोष्ठ ।

—दार, } स पु, दीवारिक, द्वारपाल ।
—दान, }

ह्राइद्, स स्त्री (अ) •रेखाचित्रणम् ।

—रूम, दर्शन उपवेशन, कोष्ठ शाला कक्ष, चि
त्रशाला ।

ह्राइवर, स पु (अ) वाहक, चालक ।

ह्रापर, स पु (अ) विदुषातकम् ।

ह्राफ्ट स पु (अ) प्रारूपम् २ धनार्पणा
देश, डाफ्टम् ।

—टेवल, स पु (अ) शृंगारफलकम् ।

ह्राफ्टसमनं, स पु (अ) आलेख्य चित्र,
कर-कार इय ।

ड्राम, स पु (अ) ड्रामगात्र, माधवदात्म
कस्तोकोभेद ।

ड्रामा, स पु (अ) रूपक, नाटकम् ।

द्वाभर, सं पु (अ) चल, कोष्ठ सपुट ।
 द्वेस, स स्त्री (अ) देश प, परिधानम् ।
 द्वैसिग, स स्त्री लेप, उप, नाह देह । अ
 २ शृंगार, मण्डनम् ।

ड्रिल, स स्त्री (अ) -वायाम, अल दख,
 शिक्षा अभ्यास ।
 -मारटर, स पु (अ) -वायाम, छल,
 शिक्षक ।

ढ

ढ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्दशो व्यञ्जनवर्ण,
 ढकार ।

ढग, स पु (स त् + गति > ?) शैली, रीति
 पद्धति (स्त्री) प्रणाली २ प्रकार, जाति
 (स्त्री), भेद, विधा (समानता में) ३
 रचना, घटन, निर्माण ४ युक्ति (स्त्री),
 उपाय ५ व्यवहार, आचरण ६ व्याज,
 मिय ७ लक्षण, विद्व ८ रिपति (स्त्री),
 दशा ।

ढगी, वि (हि ङ) चतुर, विदग्ध, धूर्त ।
 ढङोरा, स पुं (अनु ढढ) दे 'ढाँडी' ।
 ढङोरिया, सं पु (हि ढङोरा) उद् घोषक,
 प्रत्यापक ।

ढई, स स्त्री (हि ढना) दे 'धरना' सं पु ।
 ढकना, स पु, दे 'ढकन' । कि स, दे
 'ढाँकना' । कि अ, आ-छाद् आच् पिधा
 (कर्म) ।

ढकनी, सं स्त्री, दे 'ढकन' ।
 ढकवाना, कि प्रे, ३ 'ढाँकना' के प्रे रूप ।
 ढकैल, स पु दे 'धकैल' ।

ढकैलना, कि स, दे 'धकैलना' ।
 ढकोसला, सं पु (हि ढग + स कौशलम्)
 दम, आडवर, पापट ट, वापट्य, छात्रिकता ।
 ढकरन, सं पु (स ढक = छिपना)
 पिधान, पुट ट टी, छद, छदन, आवरणम् ।

ढचर, स पु (हि ढौचा) परि-छद, उप
 कारणसामग्री २ आधार, उपलभ ३ कलह,
 विवाद ४ व्यवसाय, वृत्ति (स्त्री) ५ आ
 हम्बर ६ जरठ ।

ढप, स पु, दे 'ढक' ।
 ढपना, स पु (हि ढौपना) दे 'ढकन' ।
 कि अ, दे 'डपना' कि अ ।
 ढय, स पु, दे 'ढक' ।

ढमढम, सं पु (अनु) पटह मेरी, नाद,
 दमदमधनि (पु), दमदमाधिनम् ।
 ढरका, स पु [हि ढर(ल वना) चि(च)लता,

पिहता, नेत्रस्नान, अभिरय(भ्य द २ पशुना
 मौषधपाननल ।

ढरकी, सं स्त्री [हि ढर(ल वना) त(त्र सर,
 मलिक ।
 ढर्रां, सं पुं (हि ढरना) मार्ग, पथिन्
 २ शैली, पद्धति (स्त्री) ३ उपाय, युक्ति
 (स्त्री) ४ आचार, आचरणम् ।

ढलकना, कि अ (हि ढाल) प्र परि, मु
 (भ्वा प अ), पर (भ्वा प से) प्रस्यद्
 इच्छुद् (भ्वा आ से) २ 'लुढवना' ।
 सं पुं, स(स्त्रा) व, इच्छोत, अवपान ।

ढलका, स पु, दे 'ढरका' (१) ।
 ढलकाना, कि स, ३ 'ढलकना' के प्रे रूप ।
 ढलना, कि अ (हि ढाल) विलाप्य सधा
 घट रच वलप (कर्म) २ दे 'ढलवना' ।

३ व्यति भति, इ (अ प अ), व्यतिक्रम्
 (भ्वा प से) ४ दे 'लुढकना ५ प्री
 (दि आ अ), अनुकूली भू ५ अस्तगम् ।
 साँचे में ढला, मु, अनि, सु-दर सुभग
 शोभन ।

ढलमल, वि, दे 'ढीला' ।
 ढलवीं, वि (हि ढालना) विलाप्य पटिन
 रचित वस्त २ अवसपिन, प्रवण ।

ढलवाना, कि प्रे, ३ 'ढालना' के प्रे रूप ।
 ढलाई, सं स्त्री (हि ढालना) विलाप्य घटन
 रचन कल्पन २ द्रावण विलापन, घृति (स्त्री) ।

ढहना, कि अ (म ध्वसन) ध्वत अवसत्
 (भ्वा आ से), अवपत् (भ्वा प से)
 २ वि, नश् (दि प वे) ।

ढहपाना, कि प्रे, ३ 'ढहाना' के प्रे रूप ।
 ढहाना, कि स (स ध्वसन) अवसत् ध्वत्
 अवपत् उ-मूल् उपपट् उच्छिद् छासद् (प्र)
 २ विनश् (प्रे) । स पुं, प्र वि ध्वस,
 वापाटन, उ-मूलन, छासादन इ ।

ढहाने योग्य, रि, विध्वसनीय, उ-मूल
 यिनव्य इ ।

ढहानेवाला, स पु, विध्वंसक, उत्पाक ।
 ढौकना, कि स (स ढक = ढिपाना) आ
 प्रसमाच्छद् (जु), आप्रसवृ (स्वा ढ
 से), यवधि, धा (जु ढ अ), अवगुठ
 (जु), अनगुह (म्वा ढ से), निगुहतिन्ते
 २ आ, नृ (स्वा ढ अ) ह् (क ढ से) ।
 स पु, आप्रसमा, च्छादन आगन्तरण,
 पिधान अबुठन, वेहन आस्तरण इ
 ढौकनेवाला, स पु, आच्छादक, आवरक,
 पिधायक ।
 ढौका हुआ, वि, आच्छादित आवृत,
 विहित इ ।
 ढौचा, स पु (स स्याता >) आकार, आधार,
 उपष्टम, स्थान, प्रारम्भिक रूप-आधार ।
 ढौपना, कि स, दे 'ढौकना' ।
 ढाई, वि (म अर्द्धिनीय >) सार्द्धि ।
 ढाक, म पु (सं आषाढक) पलाश, किमुक,
 पर्ण यक्षिण, रक्तपुष्पक, वातहर, समि
 हर ।
 —के तीन पात, मु, सदादरिद्रता निरंतर
 निर्धनता ।
 ढाह, म स्त्री (अनु) चीत्कार, आक्रन्द,
 उक्रोध २ गणित, गर्जन-भा, महा-भीर,
 नाद ।
 —मारना, मु, सचीत्कार सावद्र रद् (अ
 प से) ।
 ढाहस, स पु (स इह >) धीरता, धैर्य, चित्त
 र्थैय, शांत (स्त्री) २ सम्, आषास सन,
 सालन ना ३ साहम, चित्तदान् ।
 —देना या वौधाना, मु, आसमा-धन (प्रे)
 शां (सं) व (जु), विनुद् (प्रे) २ प्रोत्सह
 (प्रे) ।
 ढाना, कि स, दे 'ढहाना' ।
 ढावा, स पु (देश) भोजन, गृह शाखा
 २ दे 'परच्छी' । ३ कुडुट, कडोल करड
 ३ डालन्, पादा ।
 ढारस, स पु, दे 'ढाहस' ।
 ढाल, स स्त्री (स न) चर्मन (न), फलक
 व, पन्म ।
 ढाल, स स्त्री (स धार >) कमरा निम्नता
 प्रावय, प्रवर्णा-त्व २ निम्न, प्रवा, प्रवा
 अवसधि, भूमि (स्त्री) ३ पर्वत, उरस्य,

कटक क, नितक ४ प्रकार, विधि (पु),
 गति (स्त्री) ।
 ढालना, कि म (हि ढाल) विलाप्य रच्
 घट् क्प (प्रे) निर्मा० (जु आ अ)
 २ (मद) पा (म्वा प अ) ३ दे
 'ढेडेलना' ।
 ढालर्षी, वि (हि ढाल) दे 'ढाल्नी' (१२) ।
 ढालिया, स पु (हि ढाल्ना) पात्रकार २
 सुवर्णकार ।
 ढाली, स पु (स लिन्) ढाल चर्म फलक, धा
 रिन् २ सैनिक, योध ।
 ढासना, स पु (स धा-धारण + आसन >)
 पृष्ठासन (पृष्ठ-) अवष्टम अवलम्बन आधार
 २ उपधान, उपरह ।
 ढिंढोरा, स पु (अनु टम + स ढोल >) दे
 'ढौढी' (१२) ।
 ढिग, कि वि (स दिश >) समीप पे ।
 स स्त्री, समीप्य, नैक्य २ अत, प्राप्त ।
 ढिठाई, स स्त्री (हि ढीठ) धाट्टैय, प्राग
 स्य, वैवात्य, अग्निनय, आश्रय, धृष्टता ।
 ढिबरी, स स्त्री (हि ढिब्बा) मृत्तलदोष-पिका ।
 ढिबरी, स स्त्री (हि ढपना) नलयकील
 करोधनी ।
 ढिमका, सर्व (हि अमका का अनु) अनुक ।
 ढिलढिला, वि (सं दिथिल) कोमल, क्षिण्व
 मेदुर, अकठिन ।
 ढिह्वद, वि (हि ढीला) मद, मथर, बलस ।
 ढीठ, वि (स पृष्ट) अशिष्ट, प्रगल्भ, विद्यात,
 कुडु, शील, विनयविहीन ।
 ढील, स स्त्री (हि ढीला) काल, अतिपात
 क्षय यापन-हरण, विलंब, व्याधुन २ आरस्य,
 मथरता ३ दिथिलता, दैथिन्य, दल्यता ।
 —करना, कि अ, काल क्षिप् (पु प अ),
 विलम्ब (म्वा आ से) ।
 —देना, मु, यष्टेमाधरितु अनुमन् (दि आ
 अ) अनुशा (क ढ अ) २ दिथिनी क,
 दल्य (जु) ।
 ढीला, वि (स दिथिल) प्र, दल्य, विगणित,
 सस्य, अह्व, अनमस्य, २ अन्स, तद्रिल,
 तद्राहु, मद, मथर ३ काल, अतिपातिन्
 क्षेयक ।
 ढीलापन, सं पु, दे, 'ढील' ।

दीह, स पु, दे दीहा ।
 हुँदवाना, कि प्रे, व 'हुँदना' के प्रे रूप ।
 हुडि, पु (स) गणश, गणपति ।
 हुँदो, स स्त्री, (स हुदो) १ तुद दि (स्त्री)
 नाभि (पु स्त्री) २ बाहु, भुज जी
 हुक्ना, कि अ (देश) प्रविश (तु प अ)
 २ सहमा अभिद्रु (भ्वा प अ) आकम्
 (भ्वा प से, भ्वा आ अ) ।
 हुलकना, कि अ, दे लुडकना ।
 हुलकाना, कि स, दे 'लुडकाना' ।
 हुलना, कि अ, दे 'हुलकना' २ दे 'लुडकना'
 ३ धी (दि आ अ) अनुग्रह (क प से),
 द्य अनुकप (भ्वा आ से) ।
 हुलघाई, हुलाई, स स्त्री (हि हुलवाना)
 वाहन, नयन, हरण, भरण २ वाहनवेगन,
 प्राणनिर्देश ।
 हुलवाना, कि प्रे, व 'दोना तथा 'हुलना' के
 प्रे रूप ।
 हुलाना, कि प्रे, व हुलना तथा 'दोना' के
 प्रे रूप ।
 हुँद, स स्त्री (हि हुँदना) दे 'सोज' ।
 हुँदना, कि क (स हुदन) दे 'सोजना' ।
 हुह-हा, स पु (स स्तुप) राशि (पु)
 चय २ वामखर, ध्रुवपर्वत ।
 हुँकली, स स्त्री (हि हुँक) जलकर्मणयत्र
 २ भायकुशुनी ३ वक्रतुष्टयत्र (अर्कें उत्तारने
 का यत्र) ४ दे 'कलवाजी' ।
 डेर, स पु (हि भग्ना > ?) राशि (पु),
 निवर, चिति (स्त्री), नि स, चय, स्तोम,
 पुत्र, समार । वि, प्रचुर प्रभूत, बहुल, भूरे,
 विपुल, पर्याप्त ।

—लगाना, कि स, राशी क, सचि (खा व
 अ) ।
 —करना, पु, व्यापदृ (प्र) ।
 डेरी, स स्त्री (हि डेर) धुदरादि (पु),
 दे 'देर' ।
 डेला, स पु (हि डला) लोग, मृद, खड
 पिट, लोष्ट छ, दरिणि (पु स्त्री) लोष्ट;
 २ पिष्ट, खड-ख ३ धान्यभेद ।
 डैया, स पु (हि डारै) साहसिमेरकारमक
 लोल २ साहसिगुणनसूची ।
 डोंग, स पु (हि ढग) आडवर, दम,
 पाप-ख, कपट, छमन् (न), वचना, प्रतारणा ।
 डोंगी-गिया, वि (हि डोंग) दामिक, वचक,
 प्रतारक, कापटिक छाधिक, पापदिन् ।
 डोटा, स पु (हि डोटी) पुत्र २ बालक ।
 डोट्टा, स स्त्री (स डुडिच) पुत्री २ बालिका ।
 डोना, कि स (स डोट वा लड, विपर्वय से
 टोव) वहुनी (भ्वा उ अ) (उपाय्य) ह
 (भ्वा उ अ) । स पुं, वहन, नयन, हरणम् ।
 डोनेघाला, सं पुं भार, वाहक द्वार ।
 डोर, स पुं, दे, 'पशु' ।
 डोल, स पु (स) अगक, पट्ट ह, ढका
 २ कर्णदुदुभि (पु) ।
 डोलक-झी, स स्त्री (स डोलक) नेरी रि
 (स्त्री), दुदुभि (पु) ।
 डोलकिया, स पु (स डोलक >) डोलक
 वादक, पट्टाढक ।
 डौंचा, स पु (स अर्द्ध + हि चार) सार्द्धचतु
 गुणनसूची ।

ण

ण देवनागरीवर्णमालया पचदशो व्यजनवर्ण, |

णकार ।

त

त, देवनागरीवर्णम लाया षोडशो व्यजनवर्ण,
 तकार ।
 तक, स पुं (स) भय भीति (स्त्री) प्राप्त
 २ कष्टमय डेहमय, जीवनम् ३ विदोगदु लम्
 ४ टक, तयणी ।
 तग, वि (फा) दृढ, शैथिल्यशून्य, ससक,

सुमहत गाढ २ अर्द्धित, उद्दिप्त, संतप्त, पीडित,
 विकल ३ विस्तारविरहित, सनाथ, मन्ड, सकु
 (को) चित्त, सकीर्ण । स पुं वक्ष्या, नभी,
 वरथा ।

—दस्त, वि (फा) निर्धन, दरिद्र ।

—दस्ती, स स्त्री (फा) अकिंचनता, दारिद्र्यम् ।

—दिल, वि (फा) कश्यं, कृपण, मितपच ।

—आना, या होना, सु, खिद् (दि रु आ अ), सतप (कर्म) ।

—करना, सु, खिद्-यथ सतप (प्रे) ।

हाय लग होना, सु, दरिद्रा (अ प से) निर्धन (वि) भू ।

तगी, स स्त्री (फा) मकोच, सकीर्णता, विस्तारामात्र, सवाधना २ इदता, सहति शुनमक्ति (स्त्री), गाडता ३ उद, इ ख ४ निधनता, दरिद्रता ५ -यूनता ।

तड्डल, स पु (स) दे 'चावल' ।

तति, स स्त्री (स) रज्जु (स्त्री), गुण, बगे रशना २ पक्ति (स्त्री), श्रेणी पि (स्त्री) ।

—पाल, ता पु, गोरक्षक (२) अज्ञातवासे सहदेवस्य सखा (महा०) ।

तत, स पु (स) सूत्र, तत्र, गुण २ सतान ।

—प्य, स पु, दे 'जुलाहा' ।

तत्र, स पु (स न) ततु (पु), सूत्र २ ततु, वाय-वाप, कुविद, पटकार ३ पट निर्माणपरिच्छद ४ सपत्ति (स्त्री) ५ अधीनता, पराश्रय ६ शासन, शासनपद्धति (स्त्री) ७ कारण ८ काय ९ परिवार १० सेना ११ गारुह, मत्र १२ औषध १३ राज्य १४ शास्त्रभेद ।

तत्री, स स्त्री (स) तवि (स्त्री), बीणादीनां गुण २ गुण, रज्जु (स्त्री) ३ बीणा, सत्त्रीच वाद्य ४ देहशिरा । स पु (स तत्रिन्) बीणावादक २ गायक ३ सैनिक ।

तदुरस्त, वि (फा) स्वस्थ, नीराग ।

तदुरस्ती, स स्त्री (फा) स्वास्थ्य, नीरोगता ।

तदूर, स पु (फा तनूर) आपाक, उरवा, वड्ड (पु स्त्री) ।

तदेही, स स्त्री (फा तदिही) परिश्रम, प्रयत्न ।

तदा, स स्त्री (स) निद्रा, आलस्य, निद्रा उदा, शयाजता, तदाजता ।

तद्राष्ट्र, वि (स) तद्विल, निद्राज, निद्रा, पर-वश, शुपुष्ट, शयाज ।

तवाक्, स पु, दे 'तमाक्' ।

तबीह, सं स्त्री (अ) शिक्षा, अनुशासन, उपदेश ।

तवू, स पु (हि तनना) पट, कुंगी मडप गृह, दृश्यव्य, कोणिका, मलन, स्थूलम् ।

शाही—, स पु, सपकार्या ।

तवूर, स पु (फा) पट, पणव, सुरत ।

तवूर, स पु (स तुवर) *तानपूरक, बीणाभेद ।

तवोल्, स पु (स तावूल >) *नावूल, *वर शुल्क क (पनाव) २ *वरयात्रिव्यय *नावूल (बुदेलखड) ।

तवोली, म पु (हि तवोल्) तावूलिक, तावूलविकर (पु) ।

तअशुव, स पु (अ) आश्चर्य, विस्मय ।

तअममुल्, स पु (अ) धैर्य, शक्ति (स्त्री) ।

तअल्लुक, स पु (अ) भूमि (स्त्री), क्षत्र २ प्रदेश, प्रान्ताग, मडलम् ।

—दार, स पु, भू-क्षेत्र, स्वामिन्, क्षवपति ।

तअल्लुक, स पु (अ) सवध, ससर्ग ।

तअरमुव, स पु (अ) धार्मिक नातीय, पमपात ।

तई, प्रत्य (प्रा हुनो) प्रति, अर्थम् ।

(इतका अनुवाद प्रायः द्वितीया या चतुर्थी के रूपों से करते हैं) ।

तक, अव्य (सं अत + हि क) यात्र, पर्यंत आ (समास में या पञ्चमीयुक्त) । आमरण, आमरणात्, मरण यावत्, मरणपर्यंतम् इ ।

तकडा, वि (हि तन + कडा) बलवत्, सबल, पुष्ट [तकडी (स्त्री) बलवती, सबला] ।

तकडी, स स्त्री (देश) गुला, मापन, धट, तील्म् ।

सकदीर, स स्त्री, (अ) मास्य, दैवम् ।

सकरार स स्त्री (अ) कल्ह, विवाद ।

तकरीर, स स्त्री (अ) माषा, व्याख्यानम् ।

तलका, स पु [स तर्कु (पु स्त्री)] तर्कुट, कार्पासनासिका ।

तकली, स स्त्री (हि तकला) तर्कुटी क्षुद्रतर्कु (पु स्त्री) २ आवापन, ततुकील ।

तकलीप, स स्त्री (अ) वष्ट, क्लेश, आपद् (स्त्री) ।

तकल्लुफ, स पु (अ) शिक्षाचार, नैयमित्ता ।

—करना, शिक्षवत् आचर् (म्वा प से), शिक्षाचार इश (प्र) ।

वेनक्लुफ, वि, सरल, ऋजु ।
 तवधीयत, स स्त्री (अ०) पुष्टि शक्ति
 (स्त्री) वल्गु । २ सान्त्वयनना, आश्रयस,
 आश्रयनम् ।
 तवहीन, स स्त्री (अ) अज्ञान, विभाग,
 विभागपरिवर्तन २ वदन, सप्रविभाग ।
 —करना, क्रि स, भ्वा विभञ् (भ्वा उ अ)
 २ दट् व्यञ् (जु) ।
 तवहीर, स स्त्री (अ) अपराध, दोष ।
 तवजा, स पु (अ) (ऋणशोधनार्थं)
 अनुरोध, प्रेरणा ।
 —करना, ऋणशोधनार्थं सनिर्बंध प्रार्थं (जु
 आ से) २ अनुरुध् (रु प अ) ।
 तवजी, स स्त्री (अ) वृषवेभ्यो बीजाद्यर्थं
 वत्तृणम् ।
 तक्रिया, स पु (फा) उपधान, उपवर्द्ध
 २ आश्रय, अवलम्ब ३ यवनभिमुखकूटी ।
 —कलाम, स पु (फा + अ) *वागाश्रय,
 *सद्गजवाक्यम् ।
 तकुजा, स पु, दे 'तकला' ।
 तक्र, स पु (स न) पादाहुसस्युत दधि (न),
 मथितम् ।
 तक्क, स पु (स न) रवक्षण, तनूकरण,
 काष्ठस्य समीकरण २ उद्विकरण, उत्कीर्ण
 मूर्तिनिर्माणम् ।
 तक्कण, स पु (सं) पातालस्थो ज्ञानविशेष
 २ सप, अहि (पु) ।
 तक्कमीना स पु (अ) अनुमान २ मूल्य
 निरूपणम् ।
 तक्कत, सं पु (फा) नृपासन, सिंहासन,
 भद्रासन २ फलक क, मन्व ।
 —महीन, वि (फा) सिंहासन, आसन-आरूढ ।
 —पीडा, स पु (फा) मन्वाच्छादन, फलक
 प्रच्छद २ फलक क, मन्व ३ दे 'चौकी' ।
 तक्कता, स पु (फा) काष्ठ-दारु, फलक
 फलक २ पट्ट ट इ पीठ, मन्व ४ शय,
 फलक यान ५ दे 'पीठी' ।
 तक्कती, स स्त्री (फा तक्कता) धुदफलक,
 पीठिका २ (काष्ठ) पट्टी पट्टिका ।
 तक्कदा, वि, दे 'तक्कदा' ।
 तक्कण, स पु (स) छन्द शाले गणभेद,
 अन्तरङ्गण । (उ० तूफान, तैत्तिरीय)

तगर, स पु (सं न) वक्र, कुटिल, जिह्न,
 दीपनम् ।
 तगाद्, सै पु (सं तदाग गम् >) सुधाकर्द
 मादिमिश्रणार्थं जुटम्, नटाग ।
 तगादा, सं पु, दे 'तकाजा' ।
 तगज, सं पु (स रवच) वहुगण, मुखरोधन,
 उत्कट, रथवल्गु, सिंहलम् ।
 तगज्जिरा, स पु (अ) वर्णन, चर्चा २ जीव
 नचरितम् ।
 तगजर(रु)वा, सं पु (अ) सपरीक्षा, प्रयोग,
 परीक्षा क्षण, २ अनुमन, परीक्षालम्ब-अनुमन
 ज्ञानित, ज्ञान, बुद्धिपरिपाक ।
 —कार, सं पु (फा) अनुमतिन, रहुदक्षिन् ।
 —करना, क्रि स, अनुभू २ परीक्षा (भ्वा
 आ से), प्रयुञ् (जु) ।
 तगज्जीज, स स्त्री (अ) मत्त, मति (स्त्री),
 तर्क २ निर्णय ३ उपाय, युक्ति (स्त्री) ।
 तट, स पु (स तट ट) तटोटा, कूल, तीर,
 रोधम् (न) । क्रि वि, समीपये ।
 तटस्थ, वि (स) तीरस्थ, कूलस्थ २ निष्प
 क्षपात, उदासीन, उभयसामान्य, सम,
 भाव दृष्टि ।
 तट्, स पु (सं नट >) पक्ष, दल लम् ।
 तट्, स पु (अनु) प्रहारज शब्द, तटकार ।
 तट्कना, क्रि अ (अनु तट) वि, दल (भ्वा
 प से), रपुट (तु प से) दृग्भूमिद
 (कर्म) २ कृध (दि प अ) ।
 तट्कना, सं पु (हि तट्कना) प्रभात, विभात,
 वषस (स्त्री न), प्रयुञ्, अहमुत्सन् ।
 तट्के, क्रि वि, प्रयुञ्, प्रमाने ।
 तटप, स स्त्री (हि तटपना) वप, रपद,
 स्फुरित २ सक्षोभ, उद्वल्लव, आकुलत्वम् ।
 तटपना, क्रि आ (अनु) धुम् (दि, क
 प से, भ्वा आ से) आकुली धुम्भो विह्वली
 भू २ अत्यधिक अमिल्लप (भ्वा उ से) ।
 तटपाना, क्रि स, उद्विज् (प्रे) प्रविसं
 धुम् (प्रे), आकुली इ ।
 तटपना, } क्रि अ, दे 'तटपना' ।
 तटपना, }
 तट्काक वा, सं पु (अनु) ताटनध्वनि (पु)
 २ श्रोतन भग, उच्छद विराव ।
 तट्काक, स पु (सं पु न) दे 'तालाव' ।

तदा तद्, किं वि, (अनु) सतद्वत्तद्वचनम् ।
सहित्, सं स्त्री (स) विद्यन् (स्त्री) चपला,
चचला, शपा ।

—पति, स पु (स) मेघ, नीरद ।

तद्गी, स स्त्री (अनु०) चपेट, चपेटिका,
चपेट-करतल, प्रहार ।

सति, स स्त्री (म) पकि श्रेणी (स्त्री),
२ समूह ३ विस्तार ।

ततैया, स स्त्री (स तप्त >) वरट ग टी
श्याचिका गधोली, बरल बरोल विष,
शुक -शुगी ।

तत्काल, किं वि (स क) तशणात् अचि
रादेव, सम ए, आगु द्राक, हायिति, तत्काले ।

तत्कालीन, वि (स) तात्कालिक [कौ
(स्त्री)] तदानानन [-नी (स्त्री)] ।

तत्क्षण, किं वि (स तक्षण) दे तत्काल ।

तत्त्व, स पु (स न) तथ्य, याथार्थ्य,
सत्य, मयता वास्तविकता २ पचभूतानि
३ मूलकारण ४ सार, सार-अश-वस्तु (न)
५ ब्रह्मन् (न) ।

—अवधान, स पु (स न) निरीक्षण
अवेक्षणम् ।

—ज्ञान, स पु (स न) परमार्थ ब्रह्म-ज्ञानम् ।

—ज्ञानी, स पु (स निन्) । तत्त्वज्ञ २

—दर्शी स पु (स सिन्) । दार्शनिक ।

—बादी, स पु (स दिन्) तत्त्वकष्ट (पु)
२ यथार्थ-स्पष्ट वादिन् ।

वित्, स पु (स विद्) दे 'तत्त्वज्ञानी' ।

—विद्या, स स्त्री (स) दर्शनशास्त्रम् ।

—वेत्ता, स पु (स वैत्) दे 'तत्त्वज्ञानी' ।

तत्पर, वि (स) आसक्त, निरत, न्यायन
समाहित, अभिनि नि, विष्ट, व्यध २ पकाय,
सुसमाहित, सावधान ३ सनद्ध, सज्ज, सज्जी
भूत, उपकल्प ।

तत्परता, स स्त्री (स) अभिनिवेश आसक्ति
(स्त्री), मनोयोग, एकाग्रता, एकनिष्ठता,
अन्यविचिन्ता ।

तत्पुरय, स पु (स) परमेश्वर २ समा
सभित् (व्या) ।

तत्र, अय (स) तस्मिन् स्थल-स्थाने ।

तथा, अव्य (स) च, (इन्द्र समास से मी,

उ राम तथा इयाम = रामश्यामी इ) २
तादृश, तत्सम, तत्सुख्य ।

तथापि, अय (स) तदपि, तत्रापि, एव
गत्वपि ।

तथास्तु, अय (स) एव अस्तु भवतु ।

तथ्य, स पु (स न) यथार्थता, सत्य,
मत्पता ।

तदन्तर } किं वि (स तदनन्तर) तन्तु,
तदनन्तर } तत्पश्चात्, तत, अथ, अनन्तरम् ।

तन्तुरूप, वि (स) तद्वत्सदृश, तत्सुख्य,
तदाकार ।

तदनुसार, वि (स) तदनुकूल, तन्तुरूप ।

तदधीर, स स्त्री (अ) साधन, उपाय-युक्ति
(स्त्री) ।

तदा, किं वि (स) तस्मिन् काले समये ।

तदाकार, वि (स) तद्रूप २ तन्मय ।

तदीय, सर्व (स) तन्मयभिन्, तस्य ।

तदुपरात, किं वि, दे 'तदनन्तर' ।

तद्वित्, स पु (स) प्रत्ययभेद (व्या)
२ तद्वित्तात्तद्वत् ।

तद्रूप, वि (स) स्पष्टशब्द [शी स्त्री (स्त्री)],
तदाकार ।

तद्वत्, अय (स) तत्सदृश, तत्सुख्यम् ।

तन, स पु [फा । मि, स तनु (स्त्री)]

देह, शरीर, वपुन (न), गात्रम् ।

—मन, स पु, तनुमनसी देहदेहिनी (दि) ।

—मन मारना, मु, कामान् अवनिम्न रध्
(रु उ अ) ।

—मन से, मु, सावधान, अत्यवृत्त्या सर्वा
त्मना एकाग्रचित्तेन (रु एक) ।

तनरवाद्, स स्त्री (फ) दे 'वेतन' ।

तनना, किं अ (स तनन >) प्रवि-तन्
(कर्म), प्र, लव (न्वा आ से), प्रस
(न्वा प अ) विस्तृ (कर्म) २ लच्छिन
उत्तान उन्नन (वि) स्था (भा प अ)
३ रूप (दि प से तु) ।

तनय, स पु (स) पुत्र, सूनु (पु),
आत्मज ।

तनया, स स्त्री (स) पुत्री, दुहितृ (स्त्री),
आत्मजा ।

तनहा, वि (फ) फल, एकाकिन्, अस-
हाय । किं वि, एव, केवलम् ।

तनहाई स स्त्री (फा) विचनना, विचिन्ता
२ विचन विचिक ३ एकाकिता, अमहापना ।

तनाजा, स पु (अ) बलह कलि (पु)
२ वैमनस्य शत्रुता ।

तनिक वि (स तनुक) अन्त, स्तोत्र, अणु ।
कि वि किचिन्, स्तोत्र, ईषत्, मनाक
(सव अ य) ।

तनी, स स्त्री (हि तानना) बध, बधन,
बधनी ।

तनु, स स्त्री । स) तनू (स्त्री) देह
काय, वपुः (न) २ त्वच (स्त्री) ३ नारी ।
वि, कृश दुर्बल, क्षाणकाय २ अल्प, दध्र
३ कोमल पेल्व ४ सुदर उच्छ्रु ।

—कूप, स पु (स) रो (स्त्री) म, वृष रघम् ।

—धारी, वि (स रिन्) देहिन्, शरीरिन्,
प्राणिन् ।

तनुज, स पु (स) पुत्र आत्मज, सूनु ।
तनुजा, स स्त्री (स) पुत्री, आत्मजा, तनया ।

तनू स पु (स स्त्री) देह, काय ।

—उद्भव, स पु (स) पुत्र, तनुज ।

—उद्भवा, स स्त्री (स) पुत्री, तनुजा ।

तनूर, दे 'तदूर' ।

तन्मनस्क, वि (स) तद्गीन, तामय ।

तन्मात्रा, स स्त्री (स त्रम्) सूक्ष्ममूत्तत्त्वम्
(उ शब्द, स्पर्श, रूप रस, गन्ध) ।

तन्मय, वि (स) नि, मग्न, दत्तचित्त, अव
हित आसक्त, लीन, निरत, पर परायण ।

तन्वी, स स्त्री (स) तन्वी, कोमलांगी,
वृदांगी ।

तप, स पु [स तपस (न)] तपस्या,
तप, ब्रह्मदान नियमस्थिति (स्त्री), परि
श्रव्या प्रतत्त्वा ।

—करना, कि अ, तपस्यति (ना थ), तप
तप् (दि आ आ) या आचर (भ्वा प से) ।

तप, स पु (स) ताप, दाह, उष्ण,
कामन् (पु) २ शीघ्र ३ श्वर ।

तपक, स स्त्री (हि तपकना) आकस्मिक,
प्रकृ-भ्रुरण-आशय ।

तपकना, कि अ (हि तपकना) स्फुर (तु
प अ), अकस्मात् वप स्फट (भ्वा आ से) ।

तपन, स पु (स न) ताप, उष्णन् (पु),

दाह, तप २ सूर्य ३ सूर्यकारण
४ शीघ्र ।

तपना, कि अ (स तपन) तप (भ्वा प
अ), दीप् (दि आ से), उष्णी भू
२ सप्तकिल्बिषीह (कम) यप् (भ्वा
आ से) ।

तपश्रव्या, } स स्त्री (स) दे 'तप' ।
तपश्रवा, }

तपस्विनी, स स्त्री (स) तारसी, तपोधना
२ प्रतिग्रहा ३ दोना ।

तपस्वी, स पु (स त्विन्) तपस, तपोधन,
पारि (र) काक्षिन्, पारिकाशक, यति (पु)
२ दीन, दरिद्र ।

तपाक, सं पु (फा) आवेश आवेश,
२ शीघ्रता ।

तपाता, कि स, व 'तपना के प्र रूप ।

तपी, स पु (दि तप) दे तपस्वी ।

तपेदिक, स प (फा तप + अ दिक)
क्षयरोग, राजवह्मन् (पु) ।

तपोधन, स पु (स) तपो निष्ठ निधि राशि
(पु), तपरिवन् ।

तपोबल, स पु (स न) तपस्याशक्ति (स्त्री) ।

तपोभूमि, स स्त्री (स) तपस्यास्थानम् ।

तपोवन, स पु (स न) तपस्यारण्यम् ।

तप्त, वि (स) उष्ण, तापिन, दे 'गर्भ'
२ दुहित, पीडित, क्लेशित ।

तफरीक, स स्त्री (अ) व्यवकलन विवर्जन,
उद्धार ।

—करना कि स, -यवल् विष्णु-कन् (तु),
उद्वृ (भ्वा प अ) ।

तफरीह, स स्त्री (अ) प्रसन्नता, मोद २
विनोद, परिहास ३ भ्रमणम् ।

तफसील स स्त्री (अ) विवरण विस्तार
२ विस्तृतवर्णन ३ टीका, व्याख्या ४ मूर्त्ती ।

तथ, कि वि (स तदा) तदानीं, तस्मिन्
काले २ तथ तत्काल, तदनु, तदनन्तरं,
तत पर ३ अत, अनेन कारणेन इति हेतु ।

—तक कि वि, तावत्, तावत् पाल् पर्यं तम् ।

—भी, कि वि, तदापि २ तथापि, तदपि, एव
साद्यपि ।

—से, कि वि, तत नदा, प्रवृत्ति आरम्भ ।

—ही, कि वि, तदैव, तत्काल, तत्क्षणं, द्राक् ।

तयदील वि (अ) परिवर्तित, अ यथाकृत ।

—वरणा, कि स परिशुद्ध (प्रे) ।

सत्रदीली, स स्त्री (अ) परिवर्त, नन, परिशुद्धि (स्त्री), विषय २ विचार, विवृति (स्त्री) ।

तयलधी स पु (अ तयल) • तयलकवादक ।

तयला, स पु (अ तयल • तयलकी (द्वि) वाधने ।

तवाशी(री)र, स पु (स तवक्षीर) यत्र यवोद्भव, पयक्षीर, गोधूमज २ वशरोचना, तवक्षीरा री, वशी, वैषवी ।

तवाह, वि (फा) ध्वस्त, नष्ट उ'सत्र ।

तवाही, स स्त्री (फा) प्रवि, ध्वस्त, वि, नाश

तवि(वी)धत्त स स्त्री (अ) चित्त मानस, चेतस मनस् (न) • तकरण, हृदय, स्वात २ प्रवृत्ति (स्त्री), स्वभाव ।

—आना, सु लिङ् (दि प से) अनुरज् (कर्म) ।

—विगङ्गना, सु, रण (वि) भू विवमिषति (सन्नत) ।

तवीय, स पुं (अ) वैध चिकित्सक, भिषज्(पु) ।

तवेला, स पु (अ) मदुरा, अश्व बाजि, शाला ।

तभी, कि वि (द्वि तव + ही) तक्षण त'काल, तदैव २ तेनैव कारणत, इति हेतो ।

—से, कि वि, तदारभ्य तत प्रभृति ।

तमंचा, स पु (फा) दे 'पिस्तौ' ।

तम, स पु [स तमम (न)] अधकार, तिमिर, ध्वात, तमिस्र स्त्रा २ प्रकृतेरतृतीयो गुण (सारय) ३ क्रोध ४ अज्ञान, अविद्या ५ कालिमन् (पु), श्यामता ६ मोह ७ पाप ८ नरक कर्म ।

तमभ, स्त्री (अ) इच्छा २ लोभ ।

तमक, स स्त्री (द्वि तमकना) आवेश, उद्वेग २ क्षिप्रता, त्वरा ३ क्रोध, बोध ४ दर्प, अभिमान ५ (कोपादिभ्य) अरणा ननता ।

तमकना, कि अ (अनु) (कोपादिभ्य) अरणानन लोहितवदन (वि) भू २ अरयत कुप् (दि प से) ।

तमगा, स पुं (तु) पदक, कीर्ति प्रतिष्ठा मुद्रा ।

तमघर, पुं (स तमीचर) राक्षस, निशा चर, विशाच २ सल्लू, मूक, कौशिक ।

तमचुर, चूरचोर, सं पु (स तामचूह)

कुट्ट कालश, चरगायुध ।

तमलमाना, कि अ (स तम्र >) (क्रोधात पादिभ्यो मुरा) अरणी रची भू, अरणानन लहितमुल (वि) जम् (दि आ से) ।

तमतमाहट स स्त्री (द्वि तमतमाना) (क्रोधादिजा) अरणप्रदन्ता लोहिताननता ।

तमसा, स स्त्री (फा) अभिलाष, आकांक्षा ।

तमस, स पु दे तम' ।

तमस्सुक, स पु (अ) ऋणपण समयलेख, आधिकरणवपत्रम् ।

तमा, स स्त्री (अ तमभ) लोभ वित्तहा ।

तमाक्षू-यू, स पु (पुर्न टवैको) ताम्रकूट, तमासु वज्रभृगी, कुमिर्नी, ६ म्रपत्रिका क्षार पत्र, शरती ।

—पीना, कि स, धूम पा (म्वा प अ), धूमपान कृ ।

तमाचा, स पु (फा) दे 'चपत' ।

तमाम, वि (अ) समस्त, समग्र, सम्पूर्ण २ समाप्त, अवसित ।

काम तमाम करना, सु, व्यापदृ (प्रे) ।

तमाल, स पु (स) कालस्वन्ध, काल-नील, ताल, महाबल ।

तमाशवीन, स पु (अ तमाश + फा वीन) दर्शक, प्रेक्षक २ पार्श्वसमीप, स्थ ३ सामाजिक, पारिषद्य ४ वेदस्यागमिन् ।

तमाशवीनी, स स्त्री (अ + फा) वेद्या गामित्वम् ।

तमाशा, स पु (अ) नाटक २ रूपक कौतुक चमत्कार, इन्द्रय ३ अदभुत विलक्षण, व्यापार ।

—करना, कि स, नट निरूप प्रयुज (जु), अभिनी (म्वा प अ) ।

—करनेवाला, स पु, नट, अभिनेतृ (पुं) ।

—गाह, स स्त्री, रण, शाला भूमि (स्त्री), नाटकगृहम् ।

तमाशाई, दे 'तमाशवीन' ।

तमीज, स स्त्री (अ) विवेक, परिच्छेद, विवेचनशक्ति (स्त्री) २ ज्ञान, बोध ३ सभ्यता, शिष्टाचार, विनय ।

तमोगुण, स पु (स) प्रकृतेरतृतीय (अथम) गुण ।

तमोगुणी, वि (सं गिन्) अथमवृत्तिक, तमो गुणप्रधान ।
 तमोली, स पु दे 'तम्बोली' ।
 तय, वि (अ) मगात्, अवसित २ निश्चित, नियत २ निर्गोत ।
 तरग, स स्त्री (सं पु) भग, भगो गि (स्त्री)
 वोची वि (स्त्री), ऊनी मि (स्त्री) लहरी
 रि (स्त्री) कनोल, जलता, उत्कृष्टिका
 २ स्वरलहरी ३ मानसलहरी, चित्ततरग,
 छन्द, छन्दस (न) ।
 तरगित, वि (सं) कलोलमय [यो (स्त्री)],
 नतोन्नत भगिमत् [ली (स्त्री)] ।
 तरगी, वि स—गिन् सभग, कमिमत्,
 कलोलवत् २ स्वैर, स्वैरिन्, कामचारिन्,
 स्वच्छन्द ।
 तर, वि (फा) आर्द्र, छिन्न २ शीतल ३
 हरित, तरस ४ रिन्ध, चिकण ५ सशुद्ध,
 धनाद्य ।
 तरयण, स पु (फा) श्पुधि (पु), निषग,
 तूणोर-न्म् ।
 तरकारी, स स्त्री (फा तर-शाक) शाक ४,
 शिपु (पु), हरितक २ पत्रशाक क, व्यजन
 ३ मांसम् (पजाब) ।
 तरकी, स स्त्री [स टाट(ड)क] कर्ण, दर्पण
 मुकुट, कणिका, कर्णभूषणभेद ।
 तरकीव, सं स्त्री (अ) युक्ति (स्त्री),
 उपाय, प्रयोग २ रचनाप्रणाली, निर्माण-
 विधि (पु) ।
 तरखी, स स्त्री (अ) उन्नति वृद्धि (स्त्री) ।
 तरखान, स पु (स तक्षन्) वर्द्धनिन् विन्
 तक्षन्, स्वष्ट, छाद ।
 तराथ, स स्त्री (अ) प्रेरणा, उत्तजना,
 प्रोत्साहनम् ।
 —देना, कि स, प्रेर प्रोत्साह उत्तिज प्रवृत् (प्रे) ।
 तरवाह, स्त्री (अ) अधिमान, अधिव, रुचि
 (स्त्री) अनुराग मान, हृति (स्त्री) बरता ।
 तरजुमा, स पु (अ) दे 'अनुवाद' ।
 तरजुमान, स पु (अ) अनुवादक, भाषा-
 नरकार ।
 तरण, स पु (स न) पारगमन, प्लवनपूर्वक
 देशांतरगमन, सतरणम् ।

तरणि, सं स्त्री (सं) तरणी, नौका । स पु-
 सूर्यं २ क्षिरण ।
 —तनूजा, सं स्त्री (सं) यमुना ।
 तरणी, स स्त्री (सं) दे 'नाव' ।
 तरतीय, स स्त्री (अ) अनु, क्रम, वियास,
 व्यवस्था, यथास्थान स्थिति (स्त्री) ।
 —वार, कि वि, यथाक्रम, क्रमशः, क्रमेण ।
 तरदीद, स स्त्री (अ) प्रयागवान्, सण्डन,
 निरास, निराकरणम् ।
 तरना, कि स (सं तरण) दे 'तैरना' (२),
 मोक्ष मुक्ति-नि देयस अधिगम् ।
 तरफ, स स्त्री (अ) दिश (स्त्री), दिशा,
 आशा काष्ठा, ककुम् हरिद (स्त्री) २ पार्यं
 दर्द, पक्ष । कि वि, अभि, प्रति, अभिमुख,
 उद्दिश्य, दिशि, दिशावान् ।
 —दार, स पु, पक्षपातिन्, पक्ष्य, पक्षीय,
 पार्यं (दिव) ४ ।
 —दारी, स स्त्री, पक्ष, पान अवलम्बन-ग्रहणम् ।
 —दारी करना, कि स, पक्ष अवलम्ब (म्वा
 आ से) प्रश् (क प से) ।
 दोनो—कि वि, उभयत, उभयत्र ।
 सब—या चारो—, कि, वि, समन्तात्,
 समन्तन, चतुर्दिक्षु, सर्वत्र, विश्वत, परित,
 अभित ।
 तरकैत, स पु (अ) उभौ पक्षौ, अधिप्रत्ययिनौ ।
 तरचूज, स पु (स तरचुज) मि प्रा तर्चुज)
 कार्त्तिक भोडुव, सेड, (न), मासफलम् ।
 तरमीम, स स्त्री (अ) सशोषनं, विन्दुदि-
 (स्त्री) ।
 तरल, वि (सं) चचल, कम्प, नपन २
 अनिष्टय, क्षणिक ३ द्रव, प्रवाहिन् ४ भासुर,
 भास्वर ।
 तरला, स स्त्री (सं) यवागू, आणा, वणिका
 २ दुरा ३ मधुमक्षिका ।
 तरधन, स पु, दे, 'तरको' २ दे 'कर्णकूल' ।
 तरवर, स पु (सं तरवत्) महावृक्ष २
 पादप ।
 तरस, सं पु (सं प्रस >) श्पा, अनुकम्पा,
 वरुणा ।
 —दाना, कि स, दप् (म्वा आ से, पक्षी के
 साथ), अनुकम्प (म्वा आ से), दवां कृ
 (सतमी के साथ) ।
 तरसना, कि अ (सं तर्पण) श्प (दि प

से,) अत्यन्त अभिलष (भ्वा दि प से)
 स्पृष्ट (जु, चतुर्थी के साथ)-काक्ष-वाङ् (दोनों
 भ्वा प से), लब्धु आकुलीभू ।

तरसना, कि स, न 'तरसना' के प्रे रूप ।

तरसों, कि वि (स लृणीय + श्वम्) लृणीयो
 गन आगामी वा दिवस, *इतरश्च (अव्य) ।

तरह, स स्त्री (अ) जाति (स्त्री), प्रकार,

भेद-विधा (समासात्त में) २ रचनाप्रकार,

घटन ३ शैली, रीति (स्त्री) प्रणाली ४

युक्ति (स्त्री), उपाय ५ वस्त्र इव तुल्य, उपम ।

अच्छो—, कि वि, सम्यक, साधु, सुदृ (सव

व्य), सु (समासादि में) ।

इम—, कि वि, इय एव, अनया रीत्या ।

उस—, कि वि, तथा, तथा रीत्या ।

विम—, कि वि, यथ, येन प्रकारेण ।

जिस—, कि वि, यथा, येन प्रकारेण ।

बुरी—, कि वि, कु, दुर्, असम्यक इ ।

हर—, कि वि सर्वथा, सर्वप्रकारेण ।

—देना, सु उपेक्ष क्षम् (भ्वा आ से) ।

तराई, स स्त्री (स तल >) उपत्यका, पर्व

तासत्रभू (स्त्री) ।

तराज़, सं पु स्त्री (फा) तुला, मापन,

घा, तुलायत्र, तौलम् ।

—की रस्मी, स स्त्री, शिष्या ।

तराबोर, वि (फा तर + हि बोरना) अति,

सिद्ध क्लृप्त ।

तरावट, स स्त्री (फा तर) आर्द्रता,

क्लिन्नता २ शीतलता ३ क्लृप्तिद्व पदार्थ

४ स्निग्धभोजनम् ।

तराशना, कि. स (फा) दे 'काटना',

'बतरना' ।

तरी, स स्त्री (स) तरि (स्त्री), नौका ।

तरी, स स्त्री (फा) आर्द्रता, क्लिन्नता

२ शीतलता ३ उपत्यका ४ कष्ट कष्टम् ।

तरीका, सं पु (अ) रीति (स्त्री), प्रकार,

शैली २ आचार, व्यवहार, अनुसार

३ उपाय, युक्ति (स्त्री) ।

तर, स पु (स) पादप, द्रुम, दे 'वृक्ष' ।

तरंग, वि तथा स पु (स) युवक, दे

'जवान' ।

तरगाई, स स्त्री (स तरुण >) यौवनम्,

दे 'जवानी'

तरणी, वि स्त्री तथा स स्त्री (सं) युवति
 (स्त्री) दे 'युवती' ।

तरेरना, कि स, (सं तिर्यक + हि हेरना)

तिर्यक वक्र साचि (सव अव्य०) इश (भ्वा

प अ) २ तर्पणवर्नानार्थ वक्र ईशु (भ्वा

आ से)

तरौई, स स्त्री, दे 'तुरइ' ।

तरौना, स पु, दे 'तरकी' २ दे 'कर्णमूल'

तर्क, स पु (स) हेतु (पु), युक्ति

उपपत्ति (स्त्री) २ आन्वीक्षिकी, न्याय,

ऊहापोह ३ विदग्धोक्ति (स्त्री) ४ -व्यग्यम् ।

—विनर्क, सं पु (स) वादविवाद, वाद

प्रतिवाद, हेतुवाद २ सशय, सदेह,

विकल्प, आ परि वि शका ।

—विद्या, स स्त्री (स) तर्क-न्याय, शास्त्र

विद्या तर्क, न्याय ।

तक, स पु (अ) त्याग, विसर्जनम् ।

तर्कश, स पु, दे 'तरकश' ।

तर्ज़, सं स्त्री (अ) रीति (स्त्री), शैली,

प्रकार २ रचनाप्रकार, घटनम् ।

तर्ज़न, स पु (स न) तर्ज़ना, मयप्रदर्शन,

भर्त्सनम्, दे 'ढोंडपट' ।

तर्ज़ना, कि स (स तर्ज़न) दे 'ढोंडना' ।

तर्ज़नी, स स्त्री (सं) प्रदेशिनी, अग्र

समीपागुली ।

तर्पण, सं पु (स न) वृत्ति (स्त्री),

प्रीणन, सनापण २ पित्रादिभ्यो जलदान

(धर्म) ।

तल, सं पु (सं पु न) मूल, अधोभाग,

२ बुध्न, उपष्टम्भ ३ पाद-चरण, तर्ल

४ करतल ल, प्रहरत । ४ चपेट, चपेट

नरक पानाल, विशेष ।

तलक, अव्य, दे 'तक' ।

तल्ल, वि (फा) कट्ट कटुक २ अप्रिय,

अनिष्ट ।

तल्लट्ट, स स्त्री (सं तल + हि छंटना)

तलमल, विष्क, किट्ट, खल, मल ल, शेष प,

उ-छट्ट, अव स, कर, भसार ।

तलना, कि स (सं तलन), (घृणनैकादिपु)

भ्रस् (तु व अ भृञ्जति, जु भर्जयति)-

पच (भ्वा प अ)-भृञ् (भ्वा आ से,

भर्जते), तल् (भ्वा, प से, पाकराजेश्वर) ।

सं पु, (घृतादिपु) मर्जन पवनम् ।
 तला हुआ वि, अष्ट, भजिन, घृतपत्र इ ।
 तलफना, कि अ, दे 'तलपना' ।
 तलफा, स स्त्री (फा) ध्वस, विनाश र
 क्षति हानि (स्त्री) ।
 तलफफुज, स पु (अ) उच्चारणम्, भाषण
 विधि (पु) ।
 तलव, स स्त्री (अ) वेतन, भृति (स्त्री)
 र अ वारण, आधान इ लिप्ता ।
 तलवगार, वि (वा) इच्छुक र प्राथिन ।
 तलवाना, स पु (वा) आकारण आधान,
 शुल्क क र साध्यशुल्क कम् ।
 तलवी, स स्त्री (अ) आकारण वा, आह्वानम् ।
 तलवा, स पु (पु तल ल) चरण पाद, तलम् ।
 —चाटना,
 —तले हाथ रखना, } मु, दे 'खुशामद करना'
 —सहलाना,
 —तलघार, स स्त्री [स तरवारि (पुं)]
 खट्ग अस्ति निस्त्रिश, चद्रहास, कौशेयक,
 करवा(पा)ल, कृपाण जी, ऋ(रि)ष्टि (पु),
 शीगम, विजय, दुरामद, धर्मपाल ।
 —खीचना, कि स, अस्ति कोशात् उद्ध
 निष्कृप् (म्वा प अ) ।
 —चलाना, कि स, खट्ग चल (त्रे),
 अस्तिमा प्रह (म्वा प अ) ।
 —चलानेवाला, स पु, आसिक, खट्गधर,
 खट्गिन ।
 तला, स पु (स तल ल) अधोभाग, बुध्न
 र उपानक्षलम् ।
 तलाक, स पु (अ) विवाह दापत्य उच्छेद -
 निराकरण, त्याग ।
 तलाश, स स्त्री (तु) अ वेपण, मार्गणम् ।
 तलाशी, स स्त्री (फा) देह गेह परिच्छद,
 अन्वेषणा निरीक्षा ।
 —लेना, कि स, देह गेह परिच्छद अन्विप्
 (दि प से)-निरूप (तु)-निरीम् (म्वा
 आ से) ।
 तली, स स्त्री, दे 'तल' तथा 'तला' ।
 तलुआ, स पु, दे 'तलवा' ।
 तले, कि वि (स तल >) अथ, अपस्ताद,
 नीचे (सव अ-थ) ।
 —ऊपर या ऊपर तले, कि वि, अन्योयस्य

अथ, अपस्ताद, उपरि, उपरिष्ठात् वा
 र अक्रम, विपर्ययन, सकीर्ण, अन्वयस्थितम् ।
 तलैया, सं स्त्री (हि ताल) छुद्र लघु, तडाग
 कासार मरम (न),
 तल्प, स पु (म पु न) आस्तर, आस्त
 रणम् विस्तर र पत्नी, भार्या ।
 —कीट, स पु (स) ओवण, मत्तुण,
 उद्वह ।
 —ज, स पु (स) नियोगन पुत्र सुत,
 श्लेषज ।
 तल्ला, स पु (स तल लम्) उपानक्षलम् ।
 > दे 'मनिल' ।
 तयर्ग, स पु (स) तकारादिवर्णपञ्चकम् ।
 तवा, स पु (हि तवना) तप्तकम् ।
 तवाजा, स स्त्री (अ) सल, -कार-कृति
 (स्त्री) क्रिया, अतिवि, तीव्र सत्कार, आनिध्य
 र निमग्नणम् ।
 तवारीख, स स्त्री (अ, तारीख का बहु) दे.
 'इतिहास' ।
 तवी, स स्त्री (हि तवा) ऋची(जी)षम् ।
 तशस्त्रीस, सं स्त्री (अ) रोग, निर्णय निदानम् ।
 तशरीफ, स स्त्री (अ) महत्त्व, गुरुत्व, प्रतिष्ठा ।
 —रञ्जना, मु उपविश (तु प अ), विरान्
 (म्वा आ से)
 —लाना, मु, आगम्, आया (अ प अ) ।
 —ले जाना, मु, प्रस्था (म्वा. आ अ), प्रया
 (उक्त दोनों मुद्दावरों में आदरार्थ बहुवचन का
 प्रयोग करना चाहिए । उ आप तशरीक
 रक्षिण = उपविश तु शीमल इ) ।
 तशतरी, स स्त्री (फा) शराविद्या, शस्त्रालकम् ।
 तसकीन, स स्त्री (अ) आसमत्, आस
 आसन, धैर्यम् ।
 तसदीक, स स्त्री (अ) सत्यापन, सत्याकार ।
 —करना, कि स, सत्यापयति (ना धा),
 प्रमाणी कृ ।
 तसवीह, स स्त्री (अ) जपमाला, माला ।
 तसमा, स पु (फा) चर्म, पट्ट बध, वस्त्री,
 नश्री र उपानद्वय ।
 तमला, सं पु (फा तदन) ऋचीवम् ।
 तसलीम, स स्त्री (अ) नमस्ते, नमस्कार,
 प्रामाण्य र अभ्युपगम, अगी स्वी, नार ।

तमल्ली, स स्त्री (अ) मावना, आधमन
२ शानि (स्त्री), धैर्यम् ।

तसवीर, स स्त्री (अ) चित्र आन्तरयम् ।

तस्कर, स पु (स) चौर २ चोर्यु ।

तस्सु, स पु (स विभक्त >) पञ्चाङ्गुलानम् ।

तह, म स्त्री (का) तल, अपसक्त अधोम-
मूल २ बुध्न, उपग्रह ३ तल पृष्ठ पृष्ठभाग
४ स्तर ५ व्यावृत्ति (स्त्री) व्यापन
पु २ भग ६ तत्त्व, सार ।

—करना, कि स, पुटयति (ना ध
व्याहृत् (प्रे) पुगी पुगी ३ ।

—तक पहुँचना, मु, तत्त्व अवगम् रहस्य
विद् (अ प से) ।

तहङ्गीडात, स स्त्री (अ तहङ्गाङ्क का वडु)
अनुसधान, अन्वेषण, गवेषणा ।

तहङ्गाना, म पु (फा) भूमिगृह तल्लूह
पुति (स्त्री), आतर्भासकोष्ठ ।

तहङ्गीब, म स्त्री (अ) सम्यगा, सिद्धावर ।

तहमत, म स्त्री (का तहवद) •पुत्रवध,
•धौतिका ।

तहरीर, स स्त्री (अ) देह, निमित्त
२ लेखनी ३ विप्र, बंध ४ प्रमाणपत्रम् ।

तहलका, म पु (अ) दे 'साल्वला ।

तहस-नहम्, वि (दिश) वि, नष्ट प्रवि, घ्वस्त ।

तहमील, स स्त्री (अ) बरान्द्राह, राज
स्वसग्रह, ममाहरण २ रातम्ब, अय
आगम, उदय ३ उपमन्त्र ४ उपमन्त्रे
शरकापाल्य ।

—दार, स पु, उपमन्त्रेश-शर ।

—दारी, स स्त्री उपमन्त्रेशर, सार्यपदम् ।

नायक तहमीलदार, स पु (फा + अ + ङ)
उपमन्त्रेशरमहायक ।

तहाँ, कि वि (म त् >) तत्र तस्मिन्
स्थाने, तत्स्थने ।

तांगा, म पु, दे 'थागा' ।

ताडव, म पु (म न) पुष्पनृत्य २ उडन
नृत्य ३ शिवनृत्य ४ तुंगभेद ।

तात, म स्त्री (म त्तु) आज्ञा-मन्त्रयुग
२ मौला प्रत्यग्भा, अनुयुग ३ मन्त्र, युग
४ वीणात्रयी ।

ताता, म पु [म तति (स्त्री)] एति
(स्त्री), धेनीति (स्त्री) ।

ताँती, म स्त्री (हिं ताता) आवली लि (स्त्री)
एक्ति (स्त्री) २ मन्त्रि (स्त्री) ।

ताँती, स पु (हिं तात) तनुवाय पे,
पन्नार ।

तात्रिक म पु (म) गजशास्त्रविद् (पु),
२ मोहिन् कुक्कवर । वि तत्रमबधिन् ।

ताँबा, स प (म तात्र) तात्रक श्लेषमुक्त,
रवि-श्लेष प्रिय मुनिपित्तल लाहितायम् ।

ताडूल, म पु (म न) फाँ नावल्लीदल,
दे गान २ पणवानी टिका (स्त्री) ३
पुग पुगपन्त्रम् ।

ताई, म स्त्री (हिं ताया) ज्येष्ठपितृव्या ।

ताई, स स्त्री दे लवी ।

ताईद स स्त्री (अ) ममथन अनुमोदनी,
पुष्टि (स्त्री) द्वा-वरण-वार उपोद्गतम् ।

ताऊ, स पु दे तया ।

बटिया के ताऊ, मु बलावद २ मूल ।

ताऊन, स पु (अ) दे प्ला ।

ताऊम्, म पु (अ) मयूर शिखन्त्रि २
मयूराकारो वाचभेद ।

तरन ताऊम म पु मयूरामन २ शाहजहा
नस्य मयूरामिहभनम् ।

ताऊ, म पु (अ) कुन्तविवर भित्तिगत
त आलय २ कुन्त, पल्पक ३ अमम
विषम, गस्या-भक्त । वि अनुपम, अद्वितीय,
निपुण ।

—तुफ्त, म पु (अ + का) ममविषमक्राडा,
चतुभेद ।

—पर रखना, मु, परित्यज (स्वा प अ)
उत्थ (तु प मे) ।

ताऊ, म स्त्री (हिं तावना) अवलोकना,
भाष दर्शनम् २ अनिमिषट्टि (स्त्री)
३ अवसरतीथा ४ अन्वेषणम् ।

—ताऊ, म स्त्री, अमन्त्रवलाहन २ निभूत
वीणा ३ निराश्रय ४ अन्वेषणम् ।

ताऊत, म स्त्री (अ) बल शक्ति, (स्त्री) ।

—थर, वि (अ + फा) बलवत्, शक्तिम् ।

ताऊना, कि म (म त् >) अनिमि(मि)
प दश (स्वा प अ) -बलोकू (तु) २
निभूत (त्रिप्रेण) इम (स्वा आ मे) ३
अव निर, अ ४ हतु निभूत रथा (स्वा-
प अ) ।

ताकि, अव्य (का) तथा यथा, यथा ।
 ताकीद, सं स्त्री (अ) प्रवल्गुतोष, दृढा
 देश, पुन रमारणम् ।
 —करना, कि म (म तावण) तत् (चु),
 अनु मा (नु आ अ), क् (भ्वा आ मे) ।
 तागा, म पु (म तावव >) तत् (पु),
 होर, शृण, चुल्कम् ।
 तागाही, म स्त्री, दे 'वरपती' ।
 ताज, म पु (अ) राज म (मु) कुट,
 किराज् ।
 —योशी, म स्त्री (अ + का) राज्याभिषेक,
 मुकुटपरिषापनम् ।
 ताजगी, म स्त्री (का) हरितल ० प्रजुजता
 ३ नवीनता ।
 ताजा, वि (का) हरित, सप्त, ० नव,
 नून, प्रत्यय ३ आनिशून्य, मज्ज ।
 मोटा—, वि, दृढाण, बलिष्ठ, सख्य ।
 ताजियाना, मं पु (का) अथवाग्नी, वशा
 षा, प्रवाद ।
 ताजी, स पु (का) अरवाथ २ मृगया
 कुक्कुर, विशकट (पु) । वि, अरवदेशाय ।
 ताजीम, म स्त्री (अ) मत्वार समानता ।
 ताजीर, स स्त्री (अ) दल, अयं दल, नियह ।
 ताजीराते हिन्दु, स स्त्री, भारतीयदण्डमहिता ।
 ताजनुव, म पु, (अ तत्रानुव) आश्वय
 विम्बव ।
 ताङ्क, म पु (म ताङ्) दीपकन्ध, ध्वज
 द्रुम, तारुण, महात्रत, लम्बयत्र २
 ताटन, प्रहार ३ महा, रव ध्वनि (पु) ।
 ताङ्का, म स्त्री (म) राक्षसीविशेष, मुके
 तुकन्या ।
 ताङ्गन, म पुं (म न) प्रहरण, आह्वान,
 आवाण, प्रहार ० सान ३ दण, शायन
 ४ गुणम् ।
 ताङ्गना, कि म (म ताटन) तद् (चु),
 अभिदृष्ट (अ प अ), आह्व (अ प अ),
 तुद् (तु उ अ), प्रह (भ्वा प अ),
 २ दल (चु), गाम (अ प मे) ३ नन्
 निभन्म् (चु आ मे) । म स्त्री, ६
 'ताटन' (३ ३) ।
 ताङ्गे दोष, वि, ताङ्गीय, आटन्य, दल्य,
 भवनीय ३ ।

ताटनेवाला, म स्त्री, ताङ्क, दन्विन् ताङ्क ।
 ताटा हुआ, वि, ताटित, अभिदृष्ट, दलित, दलित ।
 ताङ्गना, कि म (म तवण) तद् (चु),
 अनु मा (नु आ अ), क् (भ्वा आ मे) ।
 ताङ्गी, म स्त्री (स ताङ्गी) ताङ्गी, ताल,
 रस आमव मय, ताङ्गी ।
 तात, म पु (म) ईष्ट (पु), नव ०
 पूज्य, गुण (पु) ३ (यत् एते के णि
 मवोऽन मे) दत्त, प्रिय, अय ।
 तातार, म पु (दा) दे 'तूरान' ।
 तातील, सं स्त्री (अ) अवकाश, अन वाय
 विश्राम, दिवस ।
 तात्कालिक, वि (म) तत्कालम् ० मम
 कालीन, यौगपदिम् ।
 तात्त्रिक, वि (म) वास्तविक, यथाथ,
 परमार्थ ।
 तापर्ये, मं पु (मं न) अथ, आशय
 अभिप्राय, भाव ० तत्परता तत्परता ।
 ताड्याक्य, म पु (म न) अमेद, अभिप्राय,
 मायुष्यम्, तदपना ।
 तादाद, म स्त्री (अ तत्रदाद) मन्वा, गणना ।
 तादृश, वि (मं) तादृश, नय, मद्य-तु-
 ममान, तथाविध ।
 तान, स स्त्री (म) गानाविशेष, आलाप,
 लयविस्तार ० विस्तृति-रति (स्त्री),
 विस्तार ।
 —पूरा, म पु (म तुवरी) गानपूर, वीणा ।
 तानना, कि म (मं ताननं) प्रविन् (व
 उ मे), आयत् (भ्वा प अ) दापी इ
 विम्बु विम्बु (प्रे) लंब प्रम् (प्रे) ।
 तानकर, सु वन्त, पूणात्तना ।
 तानकर माना, सु, निश्चिन् स्वप (अ प अ) ।
 तानना, म पुं (हि तानना) तानवम्, प्रना
 नाहर्तव (पुं वटु) ।
 —दाना, अन्वानाह्नियभर्तव (पुं वटु),
 तानवीर (पुं वटु) ।
 ताना, मं पुं (अ) व्यंग्य-वक्त्र-लेखनी,
 वचन-वाक्त्र-रति (स्त्री), वगणाभय ।
 ताना, कि म (मं ताननं) दे 'तानना' ।
 —मारना, कि म, मय-व्यंग्य-वचन-आपिप
 (तु प अ), वगणाभय-कटाक्षण उप-यम
 (दि प म)-आह (भ्वा प अ) ।

तानाशाह, स पु (डि+का) एक अधिपति
 शासक, अधिनायक ।
 तानाशाही, सं स्त्री अधिनायकत्वं देशधि
 पत्यम् ।
 ताप, सं पु (स) उ(ऊ)भन् (पु) उष्णता,
 उष्ण, उदपरिमं, ताप, दाह २ ज्वर ३
 दुःख, कष्ट ४ वेदना, मानसकलेश ।
 —तिल्ली, सं स्त्री, प्लीहाभिवृद्धि (स्त्री)
 प्लीहोदरम् ।
 तापना, कि अ (सं तापनं) पावक मृदांतपं
 आनिसेव (भ्वा आ से) । कि म दे
 'तपाना' ।
 तापमान, सं पु (सं न) कथ्यमानम् ।
 —यत्र, स पु (सं न) १-२ तापज्वर
 मापकम् ।
 तापस, सं पु (सं) दे तपस्वी ।
 ताप्य, सं स्त्री (फा । मि सं ताप) कथ्य,
 उष्णता २ दीप्ति (स्त्री), आभा ३ मामर्थ्य,
 ग्राह्यम् ।
 तापइतोड, कि वि (अनु) अनवरतं,
 अविश्रान्त, सततं, अजबच्छिन्नम् ।
 तापूत, सं पु (अ) शब पेटक सपुट ।
 ताप्रे, वि (अ) अधीन, दशवर्तिन् ।
 ताप्येदार, वि (अ+का) आड्या, पालक
 कारिन् ।
 ताम्रज्ञान, स पु (हि यामना+म यान)
 शिविकाभेद ।
 ताम्रस, सं पु (सं न) रक्तोपलं, कीरुनद,
 २ सुवर्णं ३ ताम्रम् ।
 ताम्रस, वि (सं) तमोगुणिन्, तमोगुणयुक्त
 २ काल, कृष्ण ३ अश ४ दुष्ट । स पु, सपं
 २ उल्लूक ३ क्रोध ४ बंधकार ।
 ताम्रमिक्त, वि दे 'ताम्रम' वि ।
 तामिल, सं स्त्री (देश) द्रविडजातिभेद
 २ भाषाविशेष ।
 तामिस्र, सं पु (सं) नरकविशेष २ कृष्ण
 पद्म ३ क्रोध ४ द्वेष ।
 तामील, सं स्त्री (अ) आङ्गालान्नं २ निष्प
 ति मिद्धि (स्त्री) ।
 ताम्र, सं पु (सं न) ताम्रसं, मुनिपितृकम् ।
 —कार, सं पु (सं) ताम्र, कुष्ठ उपवाविन् ।
 —चूड, सं पु (सं) कुष्ठुट ।

—पत्र, स पु (सं न) ताम्रपत्र-दृ २
 ताम्रपत्रक कम् ।
 ताम्या, स पु (सं तात >) ज्येष्ठ तात, ज्येष्ठ
 पितृव्य पितुरग्रज ।
 तार, सं पु (सं न) रूप, रजतं २ तार,
 धातु, ततु- (पु)-युञ्ज ३ तडिद विद्युत्,
 संदेश-वार्ता ४ मूर्ध, पुण, ततु (पु)
 १ सततकर्म परंपरा ६ नक्षत्रं, तारा, ग्रह
 ७ सप्तक्रमेद (संगीत) । वि, उच्च, महत्
 (ध्वनि आदि) २ भासुर ३ निर्मल, स्वच्छ ।
 —देना, कि स विद्युत्प्रदेश प्रेष (प्रे)-प्रहि
 (स्वा प अ) ।
 —कश, सं पु (हि+का) तारकर्ष पंक ।
 —घर, स पु, तारयुद्धम् ।
 —तार, वि जीर्णं, विदीर्णं ।
 —बर्की, म स्त्री, ताव विद्युत्, तार ।
 —तार करना, मु, (बलादिक) तातुसा विद्
 (प्रे)-दृष्ट (चु) ।
 —टूटना, मु, क्रम परम्परा भ्रू (दि प से) ।
 —बांधना, मु, निरन्तरं विधा (जु उ अ)-कृ ।
 तारक, स पु (सं) तार र-ता, म, नक्षत्र
 २ नेत्रं ३ कनीनिका, नवनतारा ४ मोचक,
 मुक्तिद ५ कणधार ।
 तारका, सं स्त्री (सं) नक्षत्र, उडु २ कनी
 निका, विविनी ३ बालिपानी ।
 तारकेश्वर, सं पु (सं) शिव, महेश ।
 तारकोल, सं पु (अ कोलदा दे)
 तारण, म पु (सं न) पारनयन, उत्तारणं,
 मंनारण २ मोचनं, उद्धारण, निस्तारणम् । स
 पु, तारक उद्धारक, भवभयमोचक २ विष्णु ।
 तारतम्य, स पु (सं न) न्यूनाधिकता,
 उत्कृष्टापर्या २ अन्तर, भेद ।
 तारना, कि म (हि तरना) पार नी (भ्वा,
 प अ), उत्तम, तू (प्रे) उत्, लप (प्रे)
 २ मोच (चु), निरतू (प्रे), उद् दृ-दृ
 (भ्वा प अ) (परिभ्य, भवभयान्)
 मुच (प्रे) ।
 तारनेवाला, म पु, मोक्षक, मोचक, निम्ना
 रक, उद्धारक, मुक्तिद ।
 तारपीन, सं पु (अं टरपैटाहन) सरल
 चीरपर्णं, सैलं, सरल, द्रव रम न्यन्द, शीतल,
 श्री, वास वेष्ट ।

तारल्य, सं पु (मं न) तरल्य, तरलता, द्रवत्व, प्रवाहिता २ कास्युक्ता, लपटना, कामान्धता ।

तारा, स पु (मं स्त्री) तार र, तारका उडु (पुं) नक्षत्र, क्रोध भ, ज्योतिष (न) २ कनीनिका त्रिविधे ३ भाग्य, विवति (स्त्री) । स स्त्री, वलिपत्नी २ बृहस्पति भार्या ।

—टटना, कि अ, नक्षत्रज्ज्ञा पत्र (स्वा प से) ।

—अधिप, म पुं (म) चद्र २ बालि (पु) ।

—मंडल, म पु (स न) उडु मनक्षत्र, गण ।

—होना, मु नभ जुव (स्वा प से), गगन ल्यस (लु प अ) ।

तारीक, वि (फा) काल, कृष्ण २ मर्निभिः, निष्प्रभ ।

तारीकी, स स्त्री (फा) कृष्णता २ अथकार, निमिरम् ।

तारीख, स स्त्री (फा) तिथि (पुं स्त्री), दिवस २ नियततिथि ।

तारीफ, सं स्त्री (अ) लक्षण परिभाषा २ स्तुति नुति (स्त्री) ३ वणनं ४ गुण, विनिष्टता ।

तारण्य, स पुं (मं न) यौवनं, कौमारम् ।

तारेश, स पु (स) विधु, तुभाशु, चद्र ।

तार्किक, म पु (सं) तन्त्रशास्त्रविद् (पु) २ तत्त्वज्ञ, दार्शनिक ।

तार्क्य, स पुं (सं) गरुड, वैनय, विष्णु रय २ अरुण ३ अथ ४ सप ५ पग ।

ताल^१, सं पु (सं तल्ल) दे तालाव^१ । २ करतल च, प्रहस्त ३ ताली, वरतलध्वनि (पु), करताल लक ४ संगीत बाल क्रिया, मानं ५ मल्लपुढे करतलन बाहुजघयोराग्रा लन ६ दे 'शील' ।

ताल^२, सं प (म) तृतरान, मधुरम आमबदु (पु) ।

—से येताल होना, मु, विताल (वि) भू । तालमयाना, सं पु (हि ताल+मयवन) कोशिलाथ, पावेषु वाटेषु, इधुर ।

तालव्य, वि (सं) बाहुदन्तु, मर्दधिन् ।

—वर्ण, सं पु (सं) तालव्यवर्णो । (इ इ चवर्ण, य, श) ।

ताली, स पु (सं ताल्) ताल, ताल द्वार यंत्रम् ।

—लगाता, कि स, ताल्येन निरुध (* उ अ) पिधा (लु उ अ)-वध (र् ए अ) ।

तालाव, स पु (हि ताल+वा आव) तटा (टा) ग नं, कासार रं, सरस (न), पुष्करिणी ।

तालिका, स स्त्री (मं) दे 'तानी' २ सूनी चि (स्त्री), अनुकमणी गिरा, नामावली लि (स्त्री) ।

तालित्र, स पु (अ) अन्वेषक, अनुसंधान (पु) २ इच्छुक, अभिलाषिन् ।

—इरम, स पु (अ) विद्याधिन्, पात्र ।

ताली^१, स स्त्री (मं) तालिका, कुनिका, कृषिना, अकुट, उद्घातनी, माधारणी ।

ताली^२, स स्त्री (मं तालिका) करताल लकं, करतल, शब्द ध्वनि (पु) ।

—बजाना, कि स, करताल बद् (प्रे)-रा, वरतलध्वनि जन् (प्रे) ।

तालीम, स स्त्री (अ) शिक्षा विद्या ।

तालारापत्र, म पु (मं न) तानीश नील, धानीपत्रम् ।

तालु, म पु [म तालु (न)] बाहुद, ताडुकम् ।

—मूल, सं पु (सं तालुमूलम्) कालुदमूलम् २ गलगन्धि ।

तालुक, स पुं (अ तालुड) मन्व-म, संसन ।

ताड, म पु (म तप) डाढ, उ (ऊ) भम ध्मन् (पु), उष्ण ण २ अ तवैंग, आवश ३ स्वरा ४ व्यावहन मोहन, आकुचनम् ।

ताडान, म पु (फा) दण, अर मन, दण, निष्कृति (स्त्री), निस्तार ।

—देना, कि म, नि कृति दा, निगू (प्रे) ।

तावीज, सं प (अ तमवाप) यंत्र, वचन, हार २ यंत्रसुपु ।

ताश, म पु (अ ताम) ब्रीचान धाणि (न बहु), ब्रीचानवाली २ पत्र, जीटानेला उ दे 'वरवपन' ।

तामीर, म स्त्री (अ) गुण, प्रभाव ।

तास्सुव, स पु (अ तअस्सुव) धार्मिक
 नार्तीय, पशुपान, २ पशुपात ३ मनाब्धता ।
 ताहम, अव्य (फा) दे 'तथापि' ।
 तिको, म पु (त्रिकोण) त्रिभुज, 'यक्ष्म' ।
 तिकोना निया, नि (हि तिको) त्रिकोण,
 'यक्ष, त्रिकोण त्रिभुज, आधार ।
 तिफ, म पु (म) रमभेद । वि, निच
 रमस्वा, ताश्ण, तीक्ष्ण ।
 तिखूँट, म स्त्री (हि नीन+खूँट) दे 'तिरोन' ।
 —नाप, म स्त्री त्रिकोणमिति (स्त्री) ।
 तिखूँटा वि, द 'तिकोना ।
 तिगुना, वि (म त्रिगुण) त्रिगुणित विराट् च
 त्रिगुणीकृत ।
 —करना, त्रि स, त्रिगुणीकृ, त्रि आवृत्(प्रे) ।
 तिजारत, म स्त्री (अ) वाणिज्य, वयवि
 प्रयी (दि) ।
 तिचारी, म स्त्री (म त्रि+ज्वर) वृत्तीयक
 ज्वर ।
 तितरश्चितर, वि (हि तिपर+अनु)
 आ प्रवि, शोण विशिष्ट २ अव्यवस्थित,
 क्रमरहित, अर-नव्यर ।
 नितली, म स्त्री (हि तीतर अथवा म तिल)
 चित्रपत्र, *तिचिरी ।
 तितिक्षा, म स्त्री (म) महिष्णुता, महन
 २ क्षमा, क्षानि (स्त्री) ।
 नितिक्षु, वि (म) सहनशान, महिष्णु
 २ क्षान, क्षमाशील ।
 तिधि, स स्त्री (स पु खा) मिति (स्त्री),
 मामश्च, दिन दिवस, चांद्रदिवस ।
 तिनकना, कि अ, दे 'चिन्चिदाना' ।
 तिनका, स पु (सं तृण), नालक, पल,
 पलकल, विण, स्य, सेण्ट, हरित, ताडक,
 अनुनन् ।
 —दातो में दवाना या लेना, मु, दे 'गिड
 गिजना' ।
 तिनके का सहारा, मु, इपत् माहाव्यम् ।
 तिनक को पहाड समझना, मु, तिले ताल
 पश्यति ।
 तिपाई, म स्त्री (म त्रिपादिका) त्रिपादिका,
 त्रिपदन् ।
 तिरारा, कि वि (स त्रिवार) त्रि (अव्य) ।
 तिच्य, स्त्री (अ) त्रिभिन्नाभिधानम्, २ यवन
 चिन्ताशास्त्रम् ।

तिच्यत, स पु (म त्रिवि (पि) टप >)
 त्रिविष्टपम् ।
 तिच्यती, वि त्रैविष्टप, त्रिविष्टप, सम्बन्धि
 विषयक । स पु, त्रिविष्टपीय, त्रिविष्टप,
 वाछिन-नास्तव्य । म स्त्री त्रिविष्टपभाषा,
 *त्रिविष्टपी ।
 तिमजिला, वि (स त्रि+अ मजिल)
 त्रिभूमिक ।
 तिमिर, स पु (म न) अधकार, तमम्(न) ।
 तिरछा, वि (म निर्धन्) अनसपिन्, प्रवण,
 निरक्षीन, वक्र, कुण्डिल, २ वेषाभिमानिन् ।
 —देखना, कि अ निर्धक्-वक्र वीक्ष
 (भ्वा आ से) ।
 तिरछी चितवन या नज़र, मु, त्रियग-वक्र,
 दृष्टि (स्त्री) २ वटाक्ष-अपाग-नयनोपात,
 बोधन-बोधित, कटाक्ष, भविलाम ।
 तिरछापन, म पु (हि तिरछा) प्रवणता,
 तिरक्षीनता, वक्रता, कुण्डिलता ।
 तिरछे कि वि (हि तिरछा) तिर, माचि,
 जिह्म (सद अव्य) ।
 तिरपन, वि [स त्रिपञ्चाशत् (नित्य स्त्री)] ।
 म पु, उक्ता मर्या, तदकी (५३) च ।
 तिरपाई, म स्त्री (स त्रिपादिका) त्रिपादिका,
 त्रिपदम् ।
 तिरपाल, म पु (अ टारपालिन) तिदुल्लिप्तपट ।
 तिरसठ, वि [स त्रिपष्टि (नित्य स्त्री)] ।
 स पु, उक्ता मर्या, तदकी (६३) च ।
 तिरस्कार, स पु (रु) अनादर, अपमान,
 निहृति (स्त्री), न्यक्कार, अवज्ञा, अवमा
 नना, तिरस्त्रिया, मानभग २ भर्त्सना, तर्जन
 ३ मापमान त्याग ।
 तिरस्कृत, वि (स) न्यक्कृत, अन दृत, अप
 अय, मत-मानित, अवज्ञात इ २ मापमान
 त्यक्त ३ आण-गरित ।
 तिरहुत, स पु (म तीर्युक्ति >) मिथिला
 प्रदेश ।
 तिरहुतिया, वि (हि तिरहुत) मैथिल,
 मिथिला सम्बन्धिन् । स पु, मैथिल, मिथिला
 वासिन् । स स्त्री, मिथिलाभाषा, मैथिली ।
 तिरानवे, वि [स त्रिणवति (नित्य स्त्री)] ।
 त्रयोणवति । स पु, उक्ता मर्या, तदकी
 (९३) च ।

तिरासी, वि [स व्यतीति (नित्य स्त्री)] ।
 स पु, उक्ता सख्या, तद्वी (८३) च ।
 तिराहा, म पु (मं त्रि + फा राह) त्रिपथम् ।
 तिरिया, स स्त्री (म स्त्री) नारी, रामा ।
 —चरित्तर, स पु (स स्त्रीचरित्र) रामार
 हस्य, वामावेदग्य, नारीचरितम् ।
 तिरोधान, स पु (स न) अदर्शन, अतर्धान,
 गोपन, गूहन, मवरणम् ।
 तिरोभाव, स पु (स) दे 'तिरोधान' ।
 तिरोभूत, वि (म) अदृष्ट, अतर्हित, लुप्त ।
 तिरोहित, वि (म) गूढ, निलीन, आच्छादित,
 सङ्गत, निभूत, गुप्त ।
 तिर्यंघी, स स्त्री (स) तिरश्ची, पशु-मग,
 योषा अग्न -वधू (स्त्री) ।
 तिर्यंक्, अन् (स) वक्र, कुण्डिल, विरस्,
 जिह्व, असरलम् (सद अन्य) ।
 तिलंगाना, स पु (म तैलग) प्रदेशविशेष ।
 तिलगी, वि (म तिलगाना >) तैलग
 देशीय ।
 तिल, स पु (स) पवित्र पितृनर्पण,
 पूत होम, धान्य, पापघ्न, स्नेहफल । २ ति
 ल्क, काल्क, जड़ (डु), ल, पिण्ड (पु) ।
 ३ क्षण ण, पल ४ तारा रक, वनीनिका ।
 —का तेल, स पु, तिल, तैल रम स्नेह ।
 —किट्ट, स पु (स न) तिल, खली चूर्णम् ।
 —कुट्ट, स स्त्री, तिलकुट्टम् ।
 —चट्टा, स पु, रक्तवर्णीकभेद ।
 —भुग्गा, सं पु, तिलमुक्तम् ।
 —पपड़ी शकरी, स स्त्री, तिलपट्टी, *तिल
 शकरी । तिल की ओट पहाड, मु, * विन्दी
 सिन्धु, * तिले गिरि ।
 तिल का ताड करना, मु, तिले ताल पदयति ।
 तिल निल, मु, अल्पाल्प, विनिर्दिष्टविद ।
 तिल भरने की जगह न होना, मु, रथानाभाव ।
 तिलभर, मु, रंषदिव, विचिदिव ।
 तिलक, म पु (म पुं न) दे 'टीका'
 (१ २ ६ ८ ९ ११) ।
 —लगाना, क्रि, स, दे 'टीका' लगाना ।
 तिलहा, म पु } (स त्रि + हि ल्क) त्रिमयो
 तिलही, म स्त्री } हार ।
 तिलवा, म पु (सं तिल >) *तिलमोदक ।

तिलहन, (हि तेल + धान्य) म पु तेल
 स्नेह, वीन बीजक रोहि ।
 तिला, स पु (का । मि स तेल) मर्दनीसर्ष
 = कियलेप ।
 तिलक, म पु, दे 'तलाक' ।
 तिलि (ल) स्म, स पु (वू टेलिस्मा) दे
 'इ द्रताल' ।
 तिल्ली, म स्त्री (स तिलक >) प्लीहन (पु),
 प्लीहा, गुल्म २ दे 'तिल' १ ।
 ताप—, स स्त्री, दे 'ताप' के तीने ।
 तिवारी, स पु (स त्रिपाठी), दे 'त्रिवेदी' ।
 तिस, सर्व, दे, 'उस' ।
 तिहत्तर, वि [स त्रिमसति (नित्य स्त्री)] ।
 स पु, उक्ता सख्या, तद्वी (७३) च ।
 तिहरा, वि दे 'तेहरा' ।
 तिहराना, क्रि म (हि तिहरा) त्रि क,
 तृतीय वार विधा (जु उ अ) ।
 तिहवार, स पु (म तिथिवार) । पर्वन (न),
 उत्तर, उद्धर्ष, उद्धव, क्षण, मह ।
 तिहाई, म स्त्री (स त्रिभाग >) तृतीय, अश
 माग ।
 तिहारा, मर्व, दे 'तुम्हारा' ।
 तीक्ष्ण, वि (स) नि, ज्ञात शित, तीव्र, प्र,
 खर, सूक्ष्म, तीक्ष्ण क्षि, धार २ (उक्ति)
 कुमाय, सूक्ष्म शीघ्र, माहित, सुस्म, तीव्र ३
 उग्र, प्रचट ४ दे 'चरपरा' ५ (शब्द) वर्ण
 कड, अप्रिय ६ उद्यमिन्, अत्र, त्रिप्रमर्न
 ७ अमहा, दु मह ।
 तीक्ष्णता, स स्त्री (स) तीव्रता, प्रसरता,
 प्रचटता १ ।
 तीषा, वि, दे 'तीक्ष्ण' ।
 तीसुर, स पु, दे 'तनाशीर' ।
 तीज, म स्त्री (सं तृतीया) कृष्णा शुक्ला वा
 तृतीया तिथि (स्त्री) २ श्रावण मास, शुक्ल
 तृतीया ।
 तीत वा, वि (मं तिक) दे 'निक' २ वट्ट ।
 तीतर, म पु (म तिचर) त्रि (चि) रि
 (पु) तैतिर, बाजुघोटर ।
 तीन, वि [मं त्रीणि (न वट्ट)] त्रय
 (पु), तिस्र (स्त्री), त्रीणि (न) । मं
 पु, उक्ता सख्या, तद्व (३) च ।

—तेरह करना, तु, विदु (प्रे), अवा-आ प्र वि-ट् (तु प से) ।

—पौत्र करना, तु, बल्दावने (ना था) वि-ट् (स्था आ म) ।

न तीन में न तेरह में, तु, सामान्य, साधारण ।

तीमार, स पु (फा) मवा, परिचर्या ।

—दार, स पु, रावि-रुग्ण-मेव-परि चारक ।

—दारी, म स्त्री, रोषि-रुग्ण-परिचर्यामिवा ।

तीय, म स्त्री दे 'स्त्री' ।

तीर, म पु (म न) तप-रुदी ।

तीर, स पु (फा) बाण, 'गर', इपु (पु) सायक ।

—कडा, म पु (फा) इपुमि (पु), दे 'तरकण' ।

—छलना या झारना, त्रि म, इपुप्र, सुप्र वि-ट् (तु प अ) ।

तीरदाह, म पु [+अदाह (फा)] इपु धनुर, अर, धवि-ट् (पु) धानुष्क ।

तीरदाही, म स्त्री, धनुर, विवावेद, शराम्बाम ।

तीर्थ, म पु (स तीर्थ) पुण्यभक्ति, स्थान ० पट्ट ३ पट्टमासानयथ, अरुणार ४ उपा ध्यार गुरु (पु) ५ ब्राह्मण ६ परिव्रान कोषारि (पु) ७ तारक, मोक्षक ८ इधर ९ जननीजननी १० अतिथि (पु) ।

—यात्रा, स स्त्री (म) तीर्थजन्य ।

—राज, म पु (स) प्रवाग ।

तीर्थिक, म पु (स) तीर्थपुरोहित २ तीर्थर ३ तीर्थयात्रिन् ।

तीला, म पु (फा तीर) दे 'तिन्का' ।

तीला, म स्त्री (हि तीला) लघुगुण ० धरुवाद इन्द्रमुष्मन्तार ।

तीक्ष्ण, त्रि (म) अत्यधिक, अत्यन्त, अतिशय ० दे 'तीक्ष्ण (१)' । ३ मृतम, अत्युष्ण ४ अग्नि, अमिन ५ बड ६ डुमक ७ प्र ८ निक ० वेगवद, गीन १० नार, उच (म्बर) ।

तीक्ष्णता, म स्त्री (म) अत्यधिकता, बाहुल्य, अत्युष्णता, अमद्यता, प्रकण्टा, निस्तता इ ।

तीम्, त्रि [म विशद् (नित्य स्त्री)] । म पु, उचा मन्वा, तदनी (३०) च ।

—मार खाँ, तु, वीराधगी (पु), शरशिरौ मणि (पु) (व्यस्य) ।

तीमो न्नि, तु, मदा, सर्वदा ।

तीमरा, त्रि पु (हि तीम) वृतीय [या (स्त्री)] । म पु, मयस्थ, तदस्थ ।

—पडर, स पु, वृतीयपडर अपराक, पराक, विवाक ।

तीसरे, त्रि त्रि (हि तीमरा) वृतीयस्थाने, वृतीय, वृतीय (अय्य) ।

तीमवाँ, त्रि (हि तीम) विश्राम मनी, निश शशी (पु न स्त्री) ।

तुम, त्रि (म) दे 'जैवा' ० चड, उग्र ।

तुड, म पु (म न) मुग, आम्ब, वदन ० चचू-न्तु (स्त्री) ।

तुडि, म स्त्री (स पु) दे 'हुट' (१२) । (स स्त्री) नाभि ।

तुद, म पु (म न) उदर, तुन्दि (न), तुन्दि (स्त्री) ।

तुवा, म पु (स) अलाड (पु स्त्री) नू (स्त्री) २ अलाड (न), अलाडप्रायम् ।

तुबिया, स स्त्री (सं तुबिरा >) धुदालाड (न), धुदालाडप्रायम् ।

तुपी, म स्त्री (म) तुपि (स्त्री) अलाड (पु स्त्री) ० दे 'तुवा' (०) ।

तुभर, स पु (म तुवरी) आडकी, दे 'अरहर' ।

तुक, स स्त्री (हि टुक) अत्यातुप्राम, अशरथेरी २ फांश ३ पादानवर्ण ।

वेतुरी, त्रि, अम्लक, अमपन ।

—जोड़ना, तु, कुकविना कृ अथवा रच् (तु) ।

तुम्, म पु (अ) दे 'बीज' ।

तुच्छ, त्रि (स) नीव, हीन, अधम, छुद्र, हीन, निष्ट ० अमार, लक्ष्यक, अनर्भक ।

तुडवाना, तुडवाना, त्रि प्रे, न 'तीवना' के प्रे रूप ।

तुतला (रा) ना, त्रि अ (अन) अम्ल निशुवद माप (स्था आ से) ।

तुपक, स स्त्री (तु तीप) श्वान्तिरा २ नालाखम् ।

तुफग, म स्त्री (तु तीप) वापव्य नालाखम् ।

तुम, मर्ब (म त्वम्) त्व (एक), मूर्ब (बहु) (तुम की' आदि के लिए 'तुमद्' की द्वितीया आदि व रूप बनेंगे) ।

तुमडी, म स्त्री (म तुम्बा >) शुभकतुलनात्सु
(पु स्त्री) २ दे तुमा(२)।

तुमाई, म स्त्री (हि तुमाना) वापामादि
प्रसाधनभक्ति (स्त्री)।

तुमाना, कि प्रे, व 'तुमना' के प्रे रूप।

तुमुल, वि (स) घोररव तल्लल-कोलाहल
मय-पूर्ण-युत। स पु (स पु न) भीषण-
घोर-शुद्ध-समान २ कोलाहल, कल्लल।

तुम्हारा, सब (हि तुम) शुभाक्त तव (त्रिभिन्ग)
शुभदीय, त्वरीय, तावक, योभाक्त शीघ्र।

तुम्हीं, सर्व० (हि तुम + ही) स्वमव युवामेन,
युयमेव।

तुम्ह, सब (हि तुम) (कर्म) त्वाम् त्वा
यव म, वाम युमान् व (सप्रदान) तुभ्य,
ते, युवाभ्या, वा, युष्मन्-भम्, व।

तु ग, तुरगम, म पु (म) अथ, वोटक।

तुरत, कि वि (म) शक्ति, आशु, मय
सर्पदि, तत्क्षणणे।

तुरई, म स्त्री (म तूर >) मृदगी, राव,
नोशानरी, जालनी, कननेषना, सु पीन पुषा
राजिमत्कला (पिया तुरई, देरौ 'निजुआ')।

तुरक, स पु (स तुरक) तुरुक् २ यवन
३ सैनिक ४५ टकी हुारस्तान, वामिन्।

तुरकी, वि (हि तुरक) तुरुक्देशीय
२ तुम्हकभाषा।

तुरग, म पु (स) अथ, वाणिन् (पु)।

तुरत, कि वि, दे 'तुरत'।

तुरही, तुरी, स स्त्री (स तूर) त्व-र्थ
काहल-ला, शृगवाचम्।

तुरीय, वि (म) तुर्य, नतुर्य।

—भवस्था, म स्त्री (म) नि श्रेयस, मुक्ति
(स्त्री)।

तुरुक्क, स पु (स) दे 'तुरर'।

तुर्य, वि दे 'तुरीय'।

तुरी, म पु (अ) उणाष आलव श्रेयस
२ चू। मौलि (पु), शिला, शेरस
३ अलव, चूर्णकुनल, भ्रमरन्, कुरल।

४ वि, विभिन्न, अदमुन।

तुर्या, वि (फा) दे 'तुरा'।

तुलना, म स्त्री (स) उपमा, समता, साम्य
मादृश्य २ नारतम्य, न्युनाधिरता।

तुलना, कि अ (हि तुलना) तुलन्-तुल्

(कर्म, तोलने, तुल्यते), तुलया मा (कर्म
मीथने)।

विशी काम पर तुला हुआ, सु, कार्यविशेष कर्तु
उचत त्रुतिनक्षय विहितमकल्प।

तुलनात्मक, वि (म) तुलनायुक्त, अन्या
पेक्षक, अन्यमापेक्ष, सापेक्ष, साम्यवैषम्य, चूर्ण
दर्शक।

तुलवाना, कि प्रे, व 'तोलना' के प्रे रूप।

तुलमी, स स्त्री (स) सुभगा, पवनी, भूतानी,
विशुक्लभा, वृन्दा, पुष्पा, वैष्णवी।

—दल, म पु (म न) वृन्दापत्रम्।

—दास, स पु (स) भक्तविशेष, रामचरित
मानसादिरचयितृ (पु)।

तुला, म स्त्री (म) दे 'तुलडी' २ तुलना,
सादृश्य ३ राशिविशेष (ज्यो)।

—दान, म पु (सं न) देहभारसम
सुवणादिदानम्। वि, तोलित, तुलित।

तुल्य, वि (स) समम, तोल भार परिमाण
२ सम, ममान, सदृश, सदृश।

तुल्यता, स स्त्री (म) सम, तोलता परिमाणता
२ सादृश्य, साम्य, समत्वम्।

तुम, म पु (स) तुम, तुषस, बडगर,
धान्यत्वन् (स्त्री)।

तुपानल, स पु (म) कुट्ट, तुषाग्नि (पु)।

तुपार, म पु (म) तुहिन, हिम, प्रालेय,
म(मि)हिवा, अवस्थाव, नोहार। वि,
हिम तुपार, तुपार हिम, वद।

तुष्ट, वि (म) तुष्ट, तपित, पूर्णकाम २ प्रमत्त,
सुरित।

तुष्टि, म स्त्री (सं) तुष्टता, तुष्टि (स्त्री),
मतीप २ दृष्ट, प्रसजता।

तुहमत, म स्त्री, दे 'तोहमत'।

तुहिन, सं पु (स न) दे 'तुपार' २ चंद्रिवा,
कौमुदी ३ शीतलता, हिमता।

तुंवा, म पु दे 'तुवा'।

तुंबी, म स्त्री, दे 'तुंबी'।

तू, सब (म ल)।

—तडाक, —तुकार या-तू-तू मैं म करना, सु,
अशिष्टभाषाया कलहायते (ना था)।

तूण वि, सं पु (सं)

तूणी, म स्त्री (म) } दे 'तरतर'।

तूणीर, म पु (सं पु न)

तृत, सं पु (का) मि स तृत) ब्रह्म, वाह
दाह (न), सुरूप, सुपुत्रम् ।
तृतिया, म पु, दे 'नीलायोधा' ।
तृती, स स्त्री (का) शुकभेद ० कनेरी
चटका ३ चक्रामेद ४ मुखवायो वाद्यभेद,
दे 'तुरही' ।
—बोलना, मु, प्रभू, अधिष्ठा (स्वा प अ) ।
नकारसाने मे-की आवाज, मु, अरण्यकदितम् ।
तृदा, म पु (का) चय, राशि (पु)
२ सीमाचिह्नम् ।
तून, स पु (म तुत्र) नदीवृक्ष, तृणि
(णी) क ।
तूफान, स पु (अ) झझावात अति चट
महा-वात, बाल्या, प्रमजन प्ररूपन
२ तोय-जल, ओष वृद्धि (स्त्री)-उपप्लव
विप्लव प्रलय, मप्लव ३ उपद्रव, मक्षीभ
विप्लव ४ आपद्-आपत्ति (स्त्री) ५ दे
'तोहमन' ।
—उठाना या मचाना, पु, तुमुल क, सक्षोभ
जपद् (प्रे) ।
तूफानी, वि (का) उपद्रविन्, कलहोत्पादक
२ उग्र, प्रचल ३ विशुन, अभ्यसूपक ।
तूमडी, म स्त्री (हिं तूवा) दे 'तुवी'
२ तुम्बोनिमित्त आहितुण्डिकाना ब'धभेद ।
तूमना, क्रि स. (म स्तोम >) उर्णातूल
मृत्न (अ प वे, तु) वृन् (स्वा प मे)-
निदिच्छ (प्रे) ।
तूरान, म पु (का) तातार-तूरान, -देश ।
तूरानी, वि (का) तातार-तूरान, -देशीय
सम्बन्धिन् । स पु, तातार-तूरान-वासिन
(पु) ।
तूल, स पु (म पु न) दे 'रुद' २ दे
'तूल' ।
तूल, स पु (य) दे 'लवार' ।
तूलका, म स्त्री (स) इ (ई) धीका, तुलि
(स्त्री), तूली, ईषिका ।
तूली, स स्त्री (स) दे 'शूलिका' २ नाली
३ कलि (स्त्री) ।
तूण, म पु (म न.) दे 'तिनका' ।
तूणपत्त, वि (म) तूण, तुल्य-मम, तुच्छ,
धुद २ अग्राह्य, त्याज्य ।
तूतीय, वि (स) दे 'तीमरा' ।

तृत, वि (स) तृत, पूर्णकाम ० प्रहृष्ट,
प्रमुदित ।
तृसि, स स्त्री (न) मनोप, सौन्दर्य, तर्पण,
प्रीणनम् ० आनन्द, हर्ष ।
तृपा, म स्त्री (स) पिपासा, तृष्णा, उदन्या
० लोभ ३ इच्छा ।
तृपित, वि (म.) पिपामित, तर्पित सतृप
२ इच्छुः ३ तुम्भ ।
तृष्णा, न स्त्री (म) दे 'तृपा' (१३) ।
तें, प्रत्य [म तम (प्रत्य)] दे 'से' ।
तेंतालीस, वि [स त्रित्त्वारिंशत् (नित्य स्त्री)]
त्रयश्चत्वारिंशत् । म पु, उक्ता सरया, तदनी
(४३) च ।
तेंतालीसवों, वि (हिं तेंतालीस) त्रि
(त्रयश्च) चत्वारिंशत्तम मीम, वि (त्रयश्च)
चत्वारिंश शीश (पु स्त्री न) ।
तेंतीस, वि (त्रयस्त्रिंशत् (नित्य स्त्री)]
म पु, उक्ता सरया, तदनी (३३) च ।
तेंतीसवों, वि (हिं तेंतीस) त्रयस्त्रिंशत्तम
मीम, त्रयस्त्रिंश शीश (पु स्त्री न) ।
तेंदुआ, स पु (देग) चित्रम चित्रकव्याप्त,
भेद ।
तेंदू, म पु (म त्रिदुः) गाल्म्ब, त्रिदुल
० त्रिदुल, त्रिदुलफलम् ।
ते, सर्व (म पु तद् का बहु) दे 'दे' ।
तेईस, वि [म त्रयोविंशति (नित्य स्त्री)]
म पु, उक्ता सरया, तदनी (२३) च ।
तेईसवों, वि (हिं तेईस) त्रयोविंशतितम
मीम त्रयोविंश शीश (पु स्त्री न) ।
तेग, स स्त्री (फा) दे 'तलवार' ।
तेज, स पु [स तेजम् (न)] कानि-श्रीति
(स्त्री), आभा, प्रभा २ पराक्रम, वीर्य, बल
३ प्रताप, अनुभाव, अभिरथा ४ ताप
ऋम्भन् (पु) ५ उग्रता, प्रचटता ६ अग्नि
(पु) ।
तेज, वि (फा) दे 'तीक्ष्ण' (२) ० आशु
शीघ्रगामिन, जवन, महावग ३ क्षिप्र, वर्मन्
करिन् ४ दे 'चरपरा ५ उग्र प्रचट
६ महाहैर्ष्य, बहु-महा, मूल्य ७ वृशा
अनुद्धि ८ अतिचञ्चल ९ (विपादि) घोर,
घातक ।

तेजपत्र, स पु (म न.) पत्र पत्रक, गण
जातम् ।

तेजपात, स पु, दे 'तेजपत्र' ।

तेजशूल, स पु (सं तेजवती) तेजनी,
तेजवती ।

तेजस्वी, वि (स विन्) तेजोवन्, तेजस्वत्
ओजस्विन्, वचस्विन्, सुप्रम, कानिमत् २
प्रनापिन् प्रतापवन् ३ वीर्यवत् बलवन् ।

तेजाव, स पु (फा) अम्, द्रावकम् ।

तेजी म स्त्री (फा), निशित्तव, तीक्ष्णधारता,
प्रखरता २ उग्रता, चरता ३ शक्तिता, त्वरा
४ महाधैर्यत्व, बहुमूल्यत्व ५ ।

तेता, वि, दे 'उतना' ।

तेरस, स स्त्री (म त्रयोदशी) शुक्लकृष्ण
पक्षयो त्रयोदशी तिथि (स्त्री) ।

तेरह, वि (स त्रयोदश) । स पु, उक्ता
सख्या, तदको (१३) च ।

तेरहवाँ, वि (हिं तेरह) त्रयोदश शी श
(पु स्त्री न) ।

तेरा, सर्व (स तव) तावक, [-की (स्त्री)],
तावकी, त्वत्, स्वदीय, त्वम् ।

तेल, स पु (स तैल) स्नेह, ब्रक्षण, अभ्य
ञ्जनम् ।

—मलना या लगाना, कि स, तैलेन अच्
(र प क्षे)-दिह (अ उ अ)-न्धि (तु
प अ) ।

—निक्कलना, कि म, स्नेह निःकृत (भ्वा
प अ) ।

—चड़ाना, मु, विवाहात्म र वरवधो तैल
भ्यञ्जनम् ।

बलती पर—डालना, मु, बलह वृध (प्रे) ।

तेलगू, स स्त्री (स तैलग >) तैलग्रात
आन्ध्रप्रान्त, भाषा, तैलगू (स्त्री) ।

तेलहन, सं स्त्री, दे 'तिलहन' ।

तेलिन, स स्त्री (हिं तेली) तैलिनी तैलिनी,
तैल, वरीवारिणी, चात्रिकी ।

तेलिया, वि (हिं तेल) तैल, गिण्ण कृष्ण
भातुर । स पु, कृष्ण, रग रग वर्ण ।

२ कृष्णत्व ३ कर्मनाम, गरल (विषभेद) ।

तेली, स पु (स तैलिन) तैलवार तैलिन,
चात्रिक, धूमर ।

तेवर, स पु (हिं तेह=बोध) मवीप मत्रीर,
हृ इधि (स्त्री) २ झू (स्त्री), झूला ।

—बदलना, मु, भ्रूग क, भ्रुकुटि नच् (क
प अ)-रच् (चु) ।

तेवरी ही, म स्त्री, 'र्योरी' ।

तेव(त्यो)हार, स पु, दे 'निहवार' ।

तेहरा, वि (हि तीन) त्रि, गुण युजित,
त्रिरावृत्त, निरावतित ।

तैयार, वि (फा) (मनुष्य) उपत, उद्युत्,
सञ्ज सिद्ध, मनद्ध २ (वरहु) सञ्जी, कृत
भूत, जायोजित, उपस्थित, उप, बलुप्त-वर्णित,
सञ्ज, सिद्ध ३ पीन, दृष्टपुष्ट ।

—तरना, कि स, सञ्जीक, मत्रह (प्रे),
उप परि-कल्प (प्रे), उपस्था (प्रे) ।

—होना, कि अ, सञ्जीभू, मत्रह (दि उ
अ) उद्यत्-सत्रद्ध (वि) भू ।

तैयारी, म स्त्री (फा तैयार) सञ्जता,
सत्रद्धता, उद्यतता २ सिद्धि-उपस्थिति (स्त्री)
३ आग्रम्बर, श्री, शोभा ।

तैरना, कि स (म तरण) पार गम् (भ्वा
प अ), म, तू (भ्वा प से, द्वितीया के
साथ) । कि अ, तू, ष्ट (भ्वा जा अ) ।

तैराक, स पु (हिं तैरना) तारव, तरिह,
तरण प्लवन, हृत् (पु) ।

तैराकी, स पु (हिं तैराक) तर, तरण,
प्लव, प्लवनम् ।

तैल, म पु (स न) दे 'तेल' ।

तैश, स पु (अ) कोष, कोष ।

तैसा, वि (स तादृश) दे 'वैसा' ।

तौद, म स्त्री (म तुद) पिनिष्ट, लम्बोदरम् ।

—निक्कलना, स पु, तुदप्रमार, तुदिवता,
तुन्दिलता ।

तौद(द्वै)ल, वि (हिं तौद) तुदिक, तुदित,
तुदिभ तुदिल, तुदिन, विचिडिल, लम्बोदर ।

तोदी, म स्त्री [स तुदि (स्त्री)] तुद-
दी, दे 'नाभि' ।

तो, तौ, अव्य (म तद् >) तत्त्वा दशावा-
न्विनी (सप्तमी), तहिं, तश, तगनीम् ।

—भी, अव्य, दे 'तथापि' ।

तोटना, कि स (सं तौटन) तुट (प्रे) सच्
(चु), भन् (र प अ) २ मिट्टिद (ह
प अ), दूगू (म प से) ३ अवर्म, रि
(स्वा उ अ), आदा (जु आ अ), ग्रह
(म प म) ४ नदध्वम (प्रे) ५ स्वपथ
मह (प्रे) स्वपथपानि विधा (जु उ अ)

६ नागमणि परिवृष्ट (प्रे) *वृष्ट (प्रे) ।
 स पु, शौन, भजन, भेदन, अव-म, चवन,
 नाग, ध्वम इ ।

तोडनेवाला, म पु, शौन, भञ्ज, भेदक,
 अवचायक, नाशक इ ।

ट्या ट्या, वि, वृष्टि, भग्न, भिन्न, घस्त इ ।

तोडा, स पु (हि तोन्ना) नापकमुद्रा,
 कौश-कौष २ धन-कौष ग्रन्थि (पु)
 ३ सुवर्णरत्न, अन्दु-अन्दु (दोनों स्त्री)
 ४ त-स्टी ५ हानि (स्त्री), अपचन
 ६ रज्जु-खण्ड इम् ।

तोतलाना, कि अ, दे 'तुतलाना' ।

तोता, स पु (फा) कौर, सुभ, वक्र, पुण्ड
 वंशु (पु) किन्निरा । (स्त्री, कौरी
 चुकी इ) ।

—चदम, स पु (फा) विशामपातक, अप्र
 स्पदिन्, अविशामिन् ।

—चदमी, स स्त्री (फा) अविशाम,
 अप्रत्यय ।

तोने की सी अँत फेरना, मु, निनान उनेस्
 (भ्वा वा से)-उराम् (अ वा से) ।

हायो के तोने उज जाना, मु, अत्याहुली मदी
 मू, म-व्या-मुह (दि प वे) ।

तोप, स स्त्री (तु) शठणी, अग्नस्त्र,
 *नोपम् ।

—स्त्राना, स स्त्री (तु + फा) शननीराला
 २ अग्नस्त्र शनघ्नी, ममूह ।

तोपची, स पु (तु तोप) दे 'फोन्दाज' ।

तोवडा, स पु [फा लो (तु) वरा] *अभय
 भस्वा ।

तोवा, स स्त्री (अ तीव) पपानावृष्टिप्रतिज्ञा,
 पथाज्ञाप ।

तोम, म पु (म त्मोम) चय, निवर,
 पुत्र, ममर ।

तोमर, म पु (म पु न) भल्लतदस
 प्राचीनात्मन् २३ द्वादशमात्रा-नवका,
 *उन्दम (न)-वृष्टम् ४ राखपुत्रवसविरोप ।

तोय, स पु (स न) जप, पानोदम् ।

—हर्म, म पु (म भंन) तर्पणम् दे० ।

—त्रीडा, म स्त्री (म) जलश्रीण ।

—द, म पु (म) जल, नौरद, अभोद ।

—धि, विधि, स पु (स) जलधि, वरिधि,
 ममुद्र ।

तोर्ई, म स्त्री, दे 'तुर्इ' ।

तोरण, स पु (स पु न) बहिर्द्वार २
 बदनमाला २ ग्रीवा ।

तोल, स पु (स) भार, मुक्त्व २ भार
 मान, मान, मात्र, परिमाण ३ तोलन, भार
 मान, मस्ति (स्त्री) ।

तोलन, म पु (स न) तुल्या भार, गण
 नान २ उत्पादनम् ।

तोलना, कि म (म तोलन) तुल् (तु),
 तूल (भ्वा प से), तुलाया धृ (तु) ।
 स पु, ३ 'तोल' ।

तोलनेवाला, म पु, तोलक, भारमातृ (पु) ।

तोलनाना, कि प्रे, न 'तोलना' के प्रे रूप ।

तोला, म प (स तोल) तोलक, पण,
 परिपरिमाण, कोक, बक, कर्पाईम् ।

तोलाक, स स्त्री (तु) तूला, तुलिका ।

तोप, स प (स) लुभि-लुभि (स्त्री), मनीष
 २ प्रसन्नता, आनन्द ।

तोहफा, स पु (अ) उपहार, उपायन, उपदा,
 उपग्रहम् । वि, उत्कृष्ट, उत्तम ।

तोहमत, स स्त्री (अ) मिथ्या-मिथीला, मृष
 दोषारोप ।

—रगाना, कि स मिथ्या दुष (प्रे वृषवति),
 मृषा अभियुज (२ वा अ तु) ।

तौर, स पु (अ) आचार, व्यवहार २ दशा,
 अवस्था ३ प्रकार विधा (समामान में) ।

—तरीका, स पु (अ) शिक्षाचार २
 आचरणम् ।

तौल, म पु, दे 'तोल' ।

तौलना, कि स, दे 'तोल्ना' ।

तौलिया, स पु (अ टाले) माजनवस्त्र,
 परणम् ।

तौहीन, म स्त्री (अ) अमान, निरादर,
 अवमानना, अवज्ञा ।

त्यक्त, वि (म) विसृष्ट, उन्मिन्न, अप्रभ्त ।

त्याग, म पु (म) उत्सर्ग, शौचन, अपामन,
 उन्मत्त, हान २ विरक्ति (स्त्री), बैराग्य,
 मन्थाम ३ दे 'तत्क' ।

—पत्र, स पु (म न) उत्सर्गश्च ।

त्यागाना, कि स (स त्याग) त्यन् (भ्वा

वैकल्य २ स्तलिन, आनि (स्त्री) ३ सदेह मराय ।
 त्रेता, स पु (म) त्रेता द्वितीय, युगम् ।
 त्वचा, स स्त्री (म) त्वर् (स्त्री), चर्मन् (न) त्विम् (स्त्री), सगदनी, असुम्भरा

० कल्प-क, कल्पक ल, ३ त्वर्गि-ट्रय ४ (माप वा) अनुक, निर्मोत्र ।
 त्वरा, स स्त्री (स) त्रीप्रता, दे 'नल्दी' ।
 त्वरित, वि (म) त्रीप्र, दे 'तेन' ।

थ

थ, देवनागरीवर्णमालाय मसदशी व्यवनवग प्रकार ।
 थंभ भ, स पु, दे भ्यम्भ
 थई, स स्त्री (म स्थान) स्थल ० रति (पु), चय ।
 थकना, क्रि अ (स्थग >) परि प्रन् (दि प मे), कल्म् (भ्वा दि प से) आयस् (भ्वा दि प से) ० निवद् (दि आ अ) ।
 थकान, स स्त्री (हि थरना) आयाम, कलम, खेद, थम, कल्याणि (स्त्री), दीधिल्यन् ।
 थकाना, क्रि रा, व 'थरना' के प्रे रूप ।
 थकामोदा, वि, परि, श्रान, क्लान, पित्त, स्थान ।
 थकावट, स स्त्री, दे 'थरान' ।
 थकित, वि, दे 'थकामोदा' ।
 थडा, स पु (म म्बल) वदिका, विनदी दि (स्त्री) ० आपणिकामन, पण्यानीव पीठ ठम् ।
 थन, स पु (स स्तन) कुच, पयाधर ।
 थनेली, स स्त्री (हि थन) मनन-कुच, गण्ट पिन्व ।
 थपकना, क्रि स (अनु थपथर) करतलेन पर मृशन्मृश (तु प अ), स्नेहन आहन् (अ प अ)-लु प्रह (भ्वा प अ)-तड (तु) ।
 थपकी, स स्त्री (हि थपकना) करन्ल परामर्श, मृदुलपु प्रेम, आपान प्रहार चपे ।
 थपड़ी, स स्त्री (अनु०) दे० 'ताला' ।
 थपेडा, स पु (अनु थप) तमग-कल्लो जाम नीची थपट् अगई अभिप न ० दे 'थपड' ।
 थपव्, स पु (अनु थप) चपे टिका, तल चपट-आवाप प्रहार ।
 —भारना, क्रि स, चपे टा, चपटिकना त- (तु)-प्रह (भ्वा प अ)-आहन् (अ प अ) ।

थम, स पु दे 'स्तम' ।
 थमना, क्रि ज (स स्तमन) विरम् (भ्वा प अ), उपप्रगम् (दि प से), रुद्धगति (वि) भू २ विश्रान, (दि प से), निवृद् (भ्वा आ से) । स पु, उपप्र, शम, विराम विरति (स्त्री) २ निवृत्ति विश्राति (स्त्री), विच्छेद ।
 थरथराना, क्रि ज (अनु) (भवेन) क्प् वेप (भ्वा आ से) २ म्पुर (तु प से), स्पद् (भ्वा आ से) ।
 थरथराहट, } स स्त्री (हि थरथराना)
 थरथरी, } वेपन, वेपथु (पु), प्र, कप रूपन ० म्पुरण, स्पदनम् ।
 थर्ममीटर, स पु (अ) दे 'तापमानयत्र' ।
 थरना, क्रि ज (अनु) दे 'थरथराना' ।
 थल, स पु, दे 'स्थल' ।
 थलथलाना, क्रि अ (अनु थल-दल >) अभीष्ट विचल् (भ्वा प से), थलथलायते (ना था) ।
 थवई, स पु (म थपति) पलगाट, मुधा जीविन्, लैपक, गृह, कारक-मवेग्रफ ।
 थाडरायडग्लेड, स पु (अं) चुविशायति ।
 थाक, स पु (म था >) ग्रामसीमा ० राशि (पु), चय ।
 थाती, स स्त्री (म स्थान् >) दे 'अमान' ० दे 'पूजा' ।
 थान, स पु (म स्थान) थर, प्रदेश ० आल्य, गृह ३ देवालय, मन्दि ४ पशु, शाला स्थान ५ (पत्नीना) *यावर्त ।
 थानक, स पु (म स्थानकम्) स्थान, स्थलम् ० नगरम् ३ पन ४ आलवाल् ।
 थाना, स पु (म स्थान >) गुम, रमा रक्षि, स्थानम् ।
 थानेदार, स पु (दि+का) रक्षास्थाना ध्वश, *गुन्मनिरीक्षर, रक्षणीपदार्थ ।

याप, म स्त्री (म स्थान) > मृद गदिरायतो घनि (पु) वा २ चपट टिका ३ भव, चिह्न ४ प्रतिष्ठा, भमान ५ शपथ ६ म्नु मृदु पहार अगत ७ स्थिति (स्त्री) ।
 यापना, कि स (म स्थान) रया (प्रे स्था पयति), आनिधा (लु उ अ), न्यम (दि प मे), अवहृ निविश (प्रे) हृ ।
 म स्त्री, स्थानना, आनि, धान, यापना, रोपन, > मूर्त्वादीना स्थपना प्रतिष्ठापना ।
 यापा, मं पु (कि यपना) कराव, पचागुली चिह्न ।
 यापी, स स्त्री (हि थापना) १ > मृत्तिका बुद्धि, नाननुदगर ३ दे 'यापी' ।
 याम, म स्त्री (हि यामना) आ अव, लम्बनम्, धरणा, उपम, स्नाननम् २ अधार, आम्ब, अणम्, आश्रय ।
 यामना, कि स (मं स्नयन) अव उन्-उप संस्त्रंम (क् प से या प्रे), अवन्त्र अन्व दा, अव आम्ब (स्वा आ स) > अव, म्या (प्रे), वि, स्त्रम, स्थ (क उ अ), विरम् (प्रे) ३ माहाय्य दा ४ निम्ब ।
 याल, म पु (३ स्थान) धनुमदभावनेद ।
 याला, म पु (हि याल) आ (अ) लवाल, अवाल, अवार ।
 याली, म स्त्री (हि याल) स्थालक, लु स्थालम् ।
 याह, म स्त्री (म स्था) > (नवादीना) नन्-अधामान २ गाथ ३ गामीर्दानुमान ४ अंत, भीमा ।
 —जेना, कि म (लन्वव) पराण (स्वा आ मे) निरूप (च) मा (लु आ अ) ।
 यिण्टर, म पु (अ) नाग्य ग्यनाक, गाल्-गृहं मन्दिर मूमि (स्त्री) ।
 यिगली, म स्त्री (हि यिनी) पर, स्वट शक ।
 यन्त्र मे—लगाना, मु, अन्मव विरीपति (मन्त्र) ।
 यियोमोशी, म स्त्री (अ) ब्रह्मविना > मन्त्रदायविद्येय ।
 यिर, वि, दे 'यिर' ।
 यिरकना, कि अ (अनु यिर) नृप्य चरणी निलन्तं वन्वेन् (स्वा आ मे) ।

यिरता, म स्त्री, दे 'यिरता' ।
 युद्धी, म स्त्री (अनु) धिक, शान्ति, अवनानुत्सा-गवा अवहला, शब्द ।
 —युद्धी करना, मु०, अव शा (वया प से), द 'यिकरना' ।
 —युद्धी होना, मु० व० 'यिकारना' व कर्म० व रूप ।
 युधनी, म स्त्री, दे 'युधनी' ।
 यूक, म स्त्री (हि यूकना) मुलसाव, लाला, छोवन, नि, प्रयत्नम् ।
 —ही मिली, म स्त्री, लालायधि (पु) ।
 —कर चटिना, मु, प्रतिशामत्र (क् प अ), वचन व्यनिक्रम (स्वा प से) ।
 यूकना, कि म (अनु यू) नि, छिव (स्वा दि प से), छोवति, छीयति, लाला नि मु (प्रे), म पु, नि, छोव-वन, निष्ठयति (स्त्री) ।
 यूयनी, म स्त्री (दश यूयन) प्रन्वमुत्त, लवाम्यम् ।
 यूनी, स स्त्री (म यूया) म्याणु (पु), स्नम, अवणम् ।
 यूहर, स पु (म यूया) नेवारि (पु), निष्किणविका, म्नुदा-हि (स्त्री), वत्रिन, वत्र, ट्टम-वण्टक, मिह्नुण्ट, माहुण्ट ।
 येवा, म पुं (देय) दे 'नमीना' ।
 येला, म पु (म स्थान) > प्रसव, स्तन-न, पुत्र-उ, स्योत न, धीनकट ।
 येली, म स्त्री (हि येना) प्रसेवक, म्नु(म्बो)-तव, पुत्रक ।
 थोक, मं पु (मे स्तवक) राशि (पुं), चय २ मव, गण ।
 —त्रिरोम, दार, म पुं (दि + ग) चव म्नु, विक्रियम् ।
 थोडा, वि (म म्नाक) म्नुन्, अन्व, म्नुय, अनुक-अ-मुट-म्नु, गरिमा-माव, इपर ।
 —करना, कि म, लयति (ना था) अगा न्नी हृ, कम् (प्रे) ।
 —होना, कि अ, अग्री-म्नुनी म्नु म्नु, छि अयि (कर्म) । कि वि, म्नाक, मनक, ईश्वर, यद्, किंविम् ।
 —थोडा, कि, वि, अयण, अगन्तं, म्नाक ।
 —युद्ध, वि, न्नुनाधिक ।
 —या, कि वि, दे 'थोटा' कि वि ।

थोडे से, वि, वनिन्ति, कतिपया, स्तोका ।
 थोधा, वि (देश) रिक्त शून्य, गर्भे मध्य-उदर,
 सुपिर २ कुठित, अनिशित ३ नि मार, निरुण
 ४ निरर्थक, निष्प्रयोजन ।

थोपना, वि म (स स्थापन) अनु प्र वि लिप्
 (तु प अ), दिह् (अ उ अ) २ राशी
 पिंडी कृ, समाक्षिप (तु प अ) ३ दुप
 (प्रे), दीष आरुह (प्रे आरोपयति) क्षिप् ।

द

द, देवनागरीवर्णमालया अष्टादशो व्यन्तवर्ण,
 दकार ।

दग वि (फा) चकित, विस्मित, स्तम्भ ।
 दगई, वि (हि दगा) उपद्रविन्, कल्हप्रिय
 २ उग्र प्रचंड ।

दगल, म पु (फा) मल्ल-भाद्रु हस्ताहस्मिन्,
 युद्ध मल्लक्रीडा ० मल्ल भू भूमि (दोनों स्त्री)
 ३ जनीष, लोकसमूह ।

दगा, स पु (फा दगल) कलह, उपद्रव
 २ कल्कल, कोलाहल ।

दड, स पु (स) दे 'डड' ।

दडधर, स पु (म) यमराज, दृष्टपाणि
 २ नृप, शासक ३ परिव्राजक, सन्न्यासिन् ।
 दडनीय, वि (म) दटय, दडयितव्य,
 दमनीय ।

दडवन्, स पु स्त्री (म अव्य) साष्टाग,
 प्रणाम नमस्कार ।

दडी, म पु (स टिन्) दडधर परिव्राजक
 २ यम ३ नृप ४ दौवारिक ५ दडधारी
 मनुष्य ६ संस्कृतकविशेष ।

दद, स पु (स) दशन, रद, रदन,
 दे 'दाति' ।

—कथा, म स्त्री (स) लोक पारपरीय, कथा,
 पारपर्य्य, लोक जन, धृति (स्त्री) ।

—च्छद, म पु (स) ओष्ठ, रदनच्छद ।

—धावन, म पु (म न) दत्त, काष्ठ मार्जनम् ।

दंती, म स्त्री (स) परदपत्रिका, रेचनी,
 विशोषनी ।

दंती, म पु (म निन्) गज, द्विप ।

दंतुला, वि (म दतुल) दतुर, दतुरित,
 उन्नतदत्त ।

दंतोष्ठ्य, वि (म) दन्तीश्चैश्चार्यवर्ण
 (उ, व) ।

दंत्य, वि (स) रदनविषयक २ दंतोश्चार्य
 (तवर्गादि) ।

दंदनाना, क्रि अ (अनु) दनदनायते (ना धा),
 रन् (म्वा आ अ), नद् (म्वा प से) ।

ददान, स पु (फा) दन्त, दशन, रदन ।

—साज्ञ, स पु, दन्तकार, दन्तचिकित्सक ।

ददाना, स पु (फा) दत्त, छेद ।

ददानेदार, वि (फा) दतुर, दतुरित,
 अनुक्रकच ।

दपती—ति, स पु (स र्पनी पु रि) ज
 जया भार्या, पती (पु रि) ।

दभ, स पु (स) कपट ट, कापट, आर्ष
 रूपता, लिंगवृत्ति (स्त्री), आडबर, वक्रव्रत,
 धर्मोपधा शक्तिता, छात्रिकता २ अभि
 मान, दर्प ।

दभी, वि (स भिन्) कपटिन्, कापटिक
 छात्रिक शक्ति [को (स्त्री)], कपट, छत्र
 २ अभिमानिन्, साडबर ।

दभोलि, म पु (र) इन्द्रवज्र जम् २
 हीर रम् ।

दश, स पु (स) दे 'डॉम' २ दे
 'डक' (१२) ३ दत्त, रदन ।

दई, म पु (स दैव) ईश्वर २ अदृष्ट, भाग्यम् ।

—मारा, वि, मद हत, भाग्य ।

दकीका, स पु (अ) युक्ति (स्त्री), उपाय ।
 कीद—बाकी न रचना, मु सर्वोपायान् ममस्त
 युक्ती प्रयुज (रु आ अ, चु) ।

दक्खिन, म पु, दे 'दक्षिण' ।

दक्ष, वि (स) कुशल, निपुण, चतुर, प्रवीण,
 विदग्ध, विशेषज्ञ । म पु, मक्षपुत्र, शिव
 श्वशुर, सनीषित् ।

दक्षता, म स्त्री (म) कौशल, नैपुण्य, चातुर्य,
 प्रावीण्य, वैदग्ध्य, पाटवम् ।

दक्षिण, वि (म) अपमव्य, सव्येतर, वामेतर
 ० दक्ष निपुण । म पु, दक्षिणं प्राशा
 दिशा दिश (स्त्री), दक्षिणा, वैदग्धनी, यामी,
 अवाची २ दक्षिणापथ, दक्षिण ण ३ दक्षिण,
 पार्श्व-र्ष ४ नायकमेद ।

—पूर्व, स पु, आग्नेयी, दक्षिणपूर्वा । वि,
 आग्नेय, दक्षिणपूर्व ।

—पश्चिम, स पु, जैर्हती, दक्षिणपश्चिमा ।
वि जैर्हती, दक्षिणपश्चिम ।

दक्षिणा, स स्त्री (स) यथादिविधिदान
गोरोत्थियशुल्क क० दान, त्याग उत्स० ।

दक्षिणाघन, स पु (स न) भानोक्षिणा
गनि (स्त्री) ।

—सूर्य, स प (म) मकरसक्रान्ति (स्त्री) ।
दक्षिणी, वि (स दक्षिण >) द (दा) क्षिण,
द्राक्षिणात्य अवाचीन, अवाच्य, याम्य,
अगम्य ।

द्वज्जल स पु (अ) अधिहार, स्वामित्व २
हस्तक्षेप परकार्यचर्चा ३ प्रदेश, उपगम ।

—देना, कि स, परकायाणि निरूप (जु)
चर्च (जु आ से), परकर्मसु व्यापृ (जु
आ अ) मध्ये पत्र (भ्वा प से) ।

दगना, कि य, व 'दागना' के कर्म के रूप ।
दगा, म स्त्री (अ) छल, कपट, वचन,
प्रतारणा २ विश्रामघात ।

—करना या देना, कि स, प्रतृ प्रलभ् प्रम्
मुह (प्रे), वच (जु) ।

—दार, -बाज़, वि (अ न फा) कितव,
प्रतारक वचक शठ, विश्रामघातिन्
लडिन्, कापटिक ।

—बाज़ी, म स्त्री (फा) वचकता, वैतव
० विश्रामघातकता ।

दग्ध, वि (म) ज्वलित, भग्नीभूत, भरममाल
कृत २ दुहित, व्यथित ।

ददियल, वि, दे 'ददियल' ।

दतवन, दत्तौन, म स्त्री, दे 'दत्तुन' ।

दत्त, वि (म) विमष्ट, विश्राणित, आपत ।

दत्तरु म पु (म) कृतर पुत्र, दत्तिय
सुत, दत्तकपुत्र ।

दत्तचित्त, वि (म) अर्वाहित, समाहित
अभिनिर्निष्ट एकाग्र अनन्यवृत्ति ।

ददिताल, म पु (हि दादा न स आलय)
पितामहालय २ प्रतामह, तुलवश ।

ददु, म पु (म) ददु - दू, ददु, ददुगी,
मन्त्रुदुग्धम् ।

दधि, म पु (म न) दे 'दही' ।

—चात, म प (म) चद्र, मोम ।

दधीचि, स पु (म) मुनिविशेष ।

ददनाना, कि अ (अनु) दे 'ददाना' ।

दनादन, कि वि (अनु) सदनदनाशब्द
२ अनुक्रमेण, यथाक्रमम् ।

दनुव, स पु (म) अगुर, राक्षस ।

दफती, स स्त्री (अ दफतीन) दे 'गता' ।

दफन, स पु (अ) निरसन ० दमशाने
स्थापनम् ।

—करना, कि म, दमशाने प्रेतभूमौ निधा
(जु उ अ) म्वा (प्रे) निक्षिण (जु प
अ) २ निलन (भ्वा प मे), निगुह
(भ्वा उ से) ।

उका, स स्त्री (अ दफभ) दे 'वार'
२ विधान, धारा । वि, अपसारित, दूरीकृत,
निष्कासित, वि, चालित ।

दफतर, स पु (फा) कार्यालय २ शृङ्खल
३ सविस्तरवृत्तात् ।

दफतरी, म पु (फा) पत्रसंयोजक २ दे
'जिरदफत' । वि, कार्यालयसंबन्धिन् ।

दवग, वि (हि दवाना) प्रभाव, वद शालिन,
अनुभावपद, प्रतापिन्, प्रबल ।

द्वकना, कि अ (हि दवाना) (मयेन)
गुप्तगुह (कर्म), गुप्तनिलीन (वि) भू
निलो (हि आ अ) २ परावस्कन्दनार्थ
निभूत स्वा (भ्वा प अ) ३ देह नम्
(प्रे), नक्षीभू ।

दवकाना, कि स व 'दवकना' के प्रे रूप
२ दे 'टाँटना' ।

दवदवा, स पु (अ) आतक प्रताप,
अनुभाव, प्रभाव, तेजस (न), प्रीति
(स्त्री) ।

दवना, कि अ (म दमन >) [म (भा) रेण]
अय आनम् (भ्वा प अ) अववा नक्षो-
वक्री, भू २ सकुच-सर्पिष्ट मंड (कर्म) ३
पीट् किलश (कर्म) ४ निरद्व निगुह (कर्म)
५ प्रच्छन्न गुप्तनिलीन (वि) भू ६ वश
इया (अ प अ), वशीभू ७ आवम् निशिप्
मष्ट (कर्म) ८ यो (जु प अ), वय
(दि प से) ।

दवे पाँव (चलना), मु, अपादशब्द नील
निभूत चल् (भ्वा प मे) ।

दवाना, कि स, व 'दवना' के प्रे रूप ।
दवा केना, मु, अन्यथेन प्रह् (क् प मे)
आत्ममाहृ ।

दवाव, स पु (हि दवाना) अनिभार ,
निर्बंध, पीडन ० अनुभव, प्रताप ।

दबैल, वि (हि दबना) कातर, भीरु, समा
ध्वम व्रत्न ।

दबोचना, क्रि म (हि दवाना) बलेन सदसा
अभिद्र (भ्वा प अ) अक्रम् (भ्वा प
से आ अ)-प्रव (ऋ प से)-ट्ट (चु) ।
स पु महमा प्रका धरण-अक्रमण ६ ।

दबैनी, स स्त्री (हि दवाना) *पत्रदमनी
२ कात्यकराणामुपकरणभेद ।

दध्न, वि (म) स्वल्प, स्तोक २ सूक्ष्म कृश ।
स पु समुद्र ।

दम, स पु (म) अल्पमयम, श्चिद्रिय, अय
निग्रह, दानि (स्त्री), दमथ यु (पु)
२ दड शानन, निग्रह ३ गृह ४ कर्दन ।

दम, स पु (फा), प्रवि, श्वास, उच्चास,
उच्छ्वसित २ अनव प्राण (पु बडु),
जीवन, जीविन ३ फुत्कार, फुल्लन, धूमाकर्ष
४ पण, क्षण निनि (से) प ५ व्यक्तित्व ६
अभिमान, दर्प ७ छल, कपट ८ वापेण
पाचनम् ।

—दिलासा, स पु, मोरासा, मालन,
आधामनम् ।

—बदम, क्रि वि अनु प्रति, क्षण-पल-निनिर्ष,
क्षणे क्षणे, पले पले ।

—चड़ना, मु, कष्टेन-सत्वर श्चम (अ प से)
कृच्छ्रेष-दीर्घे नि-श्चम ।

—निकलना, मु, दे 'गरना' ।

—भर म, मु, क्षणेन, क्षण-निमेष, मात्रेण, श्चि
नि, सप एव ।

—मे दम आना, मु, चेतना-सहा लभ (भ्वा
आ अ) ।

—लगाना, मु तमाशु-धम पा (भ्वा प अ) ।

—लेना, मु, विभम् (दि प से), उद्योगात्
विरम् (भ्वा प अ) ।

—साधना, मु, प्राणात् एष (रु प अ) ।

—नाक मे आना, पत्यन्त तप-क्लि-श्वीट
(वर्म) भविद् (दि आ अ) ।

दमक, स स्त्री (हि वमक ना अनु) दे
'चमक' ।

दमकना, क्रि अ, दे 'चमकना' ।

दमकल, स स्त्री (हि दम+कल) *धामयत्रम्
० अग्नियत्र (फ यर इषन) ३ तलोत्तोलन
यत्रम् ।

दमकला, स पु (हि दमकल) *अपासेचनी ।

दमडी, स स्त्री (स दम्भन् >) बाकिनी पी,
ककिणिका बोधी पण-पाद-अष्टमभाग ।

दमदमा स पु (फा) निरनिल-प्रसेव-पुष्टि
(स्त्री) (हि मोरचा) ।

दमन, स पु (म न) अभिभव, वि, तय
निरोधन नियमन, वशा-स्वायत्ती, करण, (२ ३)
दे 'दम' (१-२) ।

दमनीय वि (स) वदय द्या-दयन्,
निग्रहणीय या-यन् सयमनीय-या-यन् ।

दमयती, स स्त्री (स) भैमी, बँदभी,
न-पत्नी ।

दमा, स पु (फा) श्चामरोग, कृच्छ्रेच्छवास,
तमक तमकधाम ।

दमादम, क्रि वि (अनु०) मदम-दमशब्दन्
० निरन्तर, सवनम् ।

दमामा, स पु (फा) दे 'नकारा' ।

दमित, वि (स०) सयमित-ना-तम्,
नियमित-ना-तम्, शानित-ना-तम्, निरुद्ध
शब्दम् ।

दया, स स्त्री (सं) अनुकरा, अनुग्रह, कृपा,
प्रमद, करुणा, हितेच्छा ।

—निधान } वि, परमदयालु, परमकृपालु,
—निधि } परमकारुणिक, स पु, ईश्वर ।

—मय }
—यात्र, वि (मं न) दयनीय, अनुकष्य,
वरुणात् ।

दयानतदार, वि (अ दयानत+फा दार)
शुचि, सरल, श्चञ्ज शुक्लतन्म, निष्कप,
अर्धशुचि ।

दयानतदारी, स स्त्री (अ +फा) शुचिता,
अर्धशीन, आर्जव, मर्यादा, निष्कपयता ।

दयालु, वि (मं) दयितु, दयाशील, दयार्द्र,
कृपालु कारुणिक, अनुकष्यक, सदाय, दयावत् ।

दयालुता, स स्त्री (म) दयालुता दया
शीलता, दे 'दया' ।

दर, स स्त्री पु, दे 'नित' ।

दर, स पु (फा) द्वारं, द्वार (स्त्री), प्रति
(स्त्री) द्वार ।

—बदर, कि वि, गृहार्द्र गृह, द्वारे द्वारे, अनुदारम् ।

—बदर फिरना, मु०, दारिद्र्येण परित्रम (न्या प से) ।

दरकना, कि अ (स दर >) मज बिट्टू विभिद् (कर्म), स्फुट (तु प से) विदल (न्या प से) ।

दरकाना, कि स, व 'दरकना' के प्रे रूप ।

दरकार, वि (फा) अपेक्षित, आकाशित, आवश्यक ।

दरकानार, कि वि, (फा) इरे अस्ताम पृथक निष्ठतु, का कथा ।

दरस्त, म पु (फा) वृक्ष, तह ।

दरवास्त, स स्त्री (फा) निवेदन = निवेदनपत्रम् ।

दरगाह, म स्त्री (फा) देशली = न्याया च ३ (मृत्पत्र) समाधि (पु) ४ मंदिर, देशालय ।

दरज, स स्त्री, दे 'दरार' ।

दरद, स पु, दे 'दरद' ।

दरदरा, वि (म दरण >) अर्द्धचूणित, सामिपिठ ।

दरवा, स पु (फा दर) विटक, कपोत पालिका २ कपोतविल्म् ।

दरवान, स पु (फा । मि स, द्वारवान्) द्वारपाल, दौवारिक ।

दरवानी, म स्त्री (फा) दौवारिकता, द्वारधरता ।

दरवार, स पु (फा) रात, सभाकुल, आन्वान नी २ अधिकरण, न्यायधर्म, सभा, व्यवहारमन्त्र ।

दरवारी, म पु (फा) रातमभागम् (पु), मध्य, सभित, राजवल्गम, अस्थानचर ।

दरमियान, स पु तथा कि वि, दे 'मध्य' ।

दरमियानी, वि (फा) दे 'मध्यम' ।

दरवापत, वि, दे 'दरियाफ्त' ।

दरवाजा, म पु (फा) दे 'दर' २ दे 'विवाड' ।

दरवेश, म पु (फा) साधु (पु), मन्था मिन्, मिथु (पु) ।

दरम, म पु (म दर्ज) दर्शन, वीक्षण = स, आगत मिलन ३ सौन्दर्यम् ।

दर्रांती, म स्त्री (म दारं) लक्षित, शम्भ कर्तनी, मण्डगीकम् ।

दराज्ञ, स स्त्री (अ ज्ञाहर) चलमपुट, निष्कर्षणी ।

दराज्ञ, वि (फा) दीर्घ, लम्ब ।

दराह, स स्त्री (स दर र) छेद, भेद, स्फोट, निद्रा, भग ।

दरिद्रा, स पु (फा) दवापद, हिल गालुक विशितास, पशु (पुं)-जीव ।

दरिद्रि द्वी, वि (म दरिद्र) अधन, निर्धन जङ्गलन, मि स्व, अर्धधन द्रव्य विभव, हीन, दीन, दुर्गत ।

दरिद्रता, म स्त्री (म) दारिद्र्य, निधनता, अक्रियता, दुर्गति (स्त्री) इ ।

दरिया, म पु (फा) नदी, सरित (स्त्री) २ सागर ।

—दिल, वि (फा) उदार, दानशील, वदान्य २ महानुभाव, उदारप्रेतम् ।

दरियाई घोडा, स पु (फा + हि) करिया दम (न), नदीघोटा टक ।

दरियाफ्त, वि (फा) ज्ञान, विदित । स स्त्री, जाविष्कार ।

दरी, म स्त्री (म) दे 'गुफा' ।

दरी, स स्त्री (म स्वर >) कुप या, आस्रण, परिस्त्रोम ।

दरीचा, म पु (फा) वातायन २ द्वारकम् ।

दरीबा, म पु, (फा) ताम्बूलपत्र, ताम्बूल पर्णद्वय, = इट्ट, विष्णीणि (स्त्री) ।

दरैग, स पु (फा) अरुचि (स्त्री), विमुत्तता ।

दर्जे, वि (फा) नितिन, लेख्ये निवेशित ।

—करना, कि स, लिम (तु प से), लेख्ये निवेश (द्वे) ।

दर्जम, म पु (अ टनन) द्वादशक, द्वादश समूह ।

दर्जा, म पु (अ) श्रेणी (स्त्री), वर्ग, छात्रगण २ वींति (स्त्री), काष्ठा ३ पत्र, पदवी वि (स्त्री) ४ क्रम, परम्परा ५ भूमि (स्त्री) (मकान की मजिल) । वि वि, गुण, वार, मुणितम् ।

—य दर्जा, कि वि, क्रमश, क्रमण, शनै शनै ।

दर्जिन, म स्त्री (फा दर्जा) तुत्रवापी, (मी) चित्री, मुनिकर्मोपजीविनी ।

दर्जी, म पु (फा) तुत्रवाप, सू (मी) पिक, बन्धमेव, मुनिकर्मोपजीविन ।

दृदं, म पु (का) पीना, व्यथा, दुःखा, वेदना, अ (आ) ति (स्त्री) बालना, जनेश, जष्ट कृच्छ्र २ वरणा, दया, महाभूमि (स्त्री) ३ हानिनाश-दुरम ।

—दृदां, म पु (का) वृक (का) वेदना, पुर शल मन् ।

—नाक, वि (का) दुःपाद कष्टपद, कनेड वर [री (स्त्री)] मत्पाक ।

—मर, म पु (का) दीर्घ, शूल पीना-व्यग शिरोवेदना ।

दृदंमद, वि (का) पीणित, व्यथित, दुःखित २ दयालु दयावन् ।

दृदंशी, म स्त्री (दिश) शृभसी (ऊरुगोमेद) ।

दृदं, वि (का दृदं) दे 'दृदंमद' ।

दृषं, म पु (म) अभिमान, मान, स्मय विरोधनि (स्त्री), गर्व, अहङ्कार, अवलेप २ उच्छ्वासा, उद्धतता ।

दृषं, म पु (म) इप्त, अहङ्कारित्, गर्वित, अवन्तित, उद्धत ।

दृषं, म पु (म पु न) सुदुर, अदृश, आत्मदय, कक, ककर, दर्शनम् ।

दृषित, वि (म) गर्वित मान, इप्त-मान, अवन्तित मानम् ।

दृषं, म पु (म) कुशभेद २ कुश ३ तल पत्तण, काशा ।

दृषं, म पु (का) मकट-मवाध, पथ मार्ग, दुर्गमचर, गिरिशारम् ।

दृशं, म पु (म) शृ (पु), प्रेशक, वीशक, दग्निन् २ (मभा आदि के) शार्पद, पारिषय, सामाजिक ३ प्रशाशक, प्रदर्शक ।

दृशनं, म पु (म न) वि-आ भव, मोहन, वि, श्चण, माभस्तरण, चाद्युपदान, निर्वाण, निभान्न २ म, भिन्न, ममागम, मगात (स्त्री) ३ तल, विद्या गान्ध शान ४ नेत्र ५ दर्पण ।

दृशीनीय, वि (स) अशक्ति, लोकीय, श्छणीय, निभालनीय २ मनोहर, अमिराम ।

दृशीनी हुडी, म स्त्री, सय गोप्य धनार्णव देनपत्रम् ।

दृल, स पु (स पु न) सेना, सैन्य २ मय, गण, समूह ३ पत्र, पलाश, एनी, छट, छदन् ४ अर्द्धाण्ड-ट ५ चक्र, माण्डली ।

—पति, स पु (स) सेना, नी (पु) नायक, चमूपति (पु) २ अग्रणी (पु), अध्यक्ष, प्रमुस, नायक ।

दृलकना, क्रि अ, दे 'दृलकना' २ दे 'दृराना' ।
दृलदृल, स स्त्री (स दलाक्य) कर्म, पक ४ जवाल ल २ अनूप, कच्छ, भू भूमि (स्त्री), वच्छ ।

दृलदृली, वि (स्ति दृलदृल) पकृद्विभ, पकिल, मकृदय, कर्मप्रय [नी (स्त्री)] २ आनूप, [पी (स्त्री)] ३ तल आडा पूर्ण-मव ।

दृलन, म पु (म न) पिपण, सन्त, चूर्णन, निष्प, मदन २ वि, नरा ध्वस, सहार ।

दृलना, क्रि स (स दलन) स्थूलस्थूल पिषु सुद (रु प अ) मृद (क् प मै) -चूर्ण-गण्ट (लु), निर्दल (म्वा प मै) २ समीड (नु), पादतलेन मृद ३ पिपण्यादिभि), दिधा गण्ट (लु) -गकरीह ४ नग ध्वम (प्रे) । स पु दे 'दृलन' ।

दृलनेवाला, म पु, स्थूल, पिपण मर्दक-चूर्णक ।
दृलबादल, स पु (स दल + हि बादल) मेरमाळा, काद्विनी, घनपत्नी २ मल्ली चम् (स्त्री) ३ वृहत्पत्रमटप ।

दृलवाना, क्रि प्रे, व 'दृलना' के प्रे रूप ।

दृलहन, सं पु (हि दाल) दाली दिदल-वैदल, मूलान्-अप्युक्तात्रम् ।

दृलहरी, म पु (हि दाल) दाली वैदल, विक्रेत विक्रित् विक्रायक ।

दृलादली, म स्त्री (स दल-ल >) दल गण मध-वर्ग, स्पष्टा विजागोपा प्रतियोगिता ।

दृलाळ, स पु (अ) परार्थे क्रयविक्रयायो नक, क्रयविक्रयमहायक, मध्यस्थ ।

दृलाली, म स्त्री (अ दलाळ) क्रयविक्रय महायकत्व २ क्रयविक्रयमहायकत्ववेदनम् ।

दृलित, वि (मं) राहित, चूर्णित, प्रदित, शकलीकृत २ जवन (ना) मिन, जयपीणित ३ अशुद्ध, अत्यज ४ नाशित, ध्वसित । म पु, अशुद्ध, नीन, अत्यज, हारितन ।

—उद्धार, म पु (स) अशुद्ध अत्यज हारितन, उज्ज्वि (स्त्री) उज्ज्वन-उद्धार ।

—दृरं, म पु (स) अशुद्ध-अनधन-नीन, वर्ग-अमुदाय ।

दलिया, स पु (हि दलना) *दलितम्,
दलित सति मदित, अन्नम् ।

दलील, स स्त्री (अ) तक, दुक्ति (स्त्री),
हेतु (पु) = वाद, वाद, मवाद विवाद,
शास्त्रार्थ ।

दण, स पु (म) दे 'दावानल' ।

दवा, स स्त्री (फा) औषधि (स्त्री),
औषध भेषज = उपचार, (विक्रमा ३ प्रति
(ती) कार, प्रतिविधानम् ।

—द्वाना, स पु (फा) औषधालय, भेष
जालय ।

—दारु, स स्त्री (फा + म) उपक्रम,
उपचार चिकित्सा ।

दवाग्नि, स स्त्री } स पु, दे 'दावानल' ।
दवानल, स पु }

दवात, स स्त्री (अ दावात) ममी, वृषी
धानी धान पात्र भाजन, मेला, नद-जडा
अधुन ।

दवामी बटोरस्त, स पु (का) भूमि-रस्य
स्वादिप्रवर ।

दश, वि दे 'दस' ।

—भानन, —भास्य, —कठ, —कधर,
—घोष, —मुग्ध, स पु, (म) रावण ।

दशन, स पु (म पु न) दे 'दति' ।

दशम, वि (म) दे 'दसता' ।

दशमलव, स पु (म) दशमविन्दु (नीच
गणित) ।

दशमी, स स्त्री (म) चाद्रमामस्य शुक्ला
कृष्णा वा दशमी तिथि (पु, स्त्री) = मरणा
वस्था ३ विमुक्तवस्था ।

दशमूल, स पु (म न) पापानभेद (वैद्यक) ।

दशरथ, स पु (म) अववेशो नृपविशेष,
श्रीरामनन्दस्य पिता ।

दशहरा, स पु (म स्त्री) गगा, भागीरथी
= गगाया अवतरणतिथि, ज्येष्ठशुक्लदशमी
३ उक्ततिथौ गगावतरणो-मव ४ त्रिकया
दशमी, रावणवधतिथि (पु, स्त्री), आश्विन
शुक्लदशमी ।

दशांश, स पु (मं दशांश >) दशम, अंश
भाग ।

दशा, स स्त्री (मं) अवस्था, स्थिति वृत्ति
गति (स्त्री), भाव ।

दस, वि (म दशन्) । स पु, उक्ता सख्या,
तन्की (१०) च ।

—गुना, वि, दस, गुणगुणित ।

—प्रकार सै, कि वि, दशधा (अव्य) ।

—वार, कि वि, दशवृत्त (अव्य) ।

दसवर्षी, वि (म, दशम भी मम्) ।

दस्तंदात्री, स स्त्री (फा) हस्तक्षेप, पर
कार्यचर्चा ।

दस्त, स पु (फा) अति(ती)मार, द्रवमर्
२ हस्त, कर ।

आव-ल्हू वाले—, स पु, आमरक्तानिमार ।

आंवाल्—, स पु, आमनिमार ।

ल्हूवाले—, स पु, रक्तानिमार ।

—कार, स पु (फा) शिल्पिन, शिल्पकार ।

—कारी, स स्त्री (फा) शिल्प, शिल्पविद्या,
हस्त, शिल्प कमन् (न) क्रिया ।

—दात, स पु (फा) नाम हस्त, अक्षरम् ।

—द्वत करना, कि म, स्वनामन् (न)
लिव् (तु प से), हस्तक्षर कृ ।

—यस्ता, कि वि (का) माञ्जलि, अजलि
बद्ध्या ।

दस्तक, स स्त्री (का) द्वार, आपान-तापान
प्रहार ।

दस्तरदान, स पु (का) मञ्जवस्त्र, पत्र
वप ।

दस्ता, स पु (फा दस्त) मुष्टि (स्त्री),
वारण । (सट्ग का) मरु-स्तर (पु)

= मुमल-ल् ३ पत्रवस्तुविशति (स्त्री)
४ मैत्रिकमथ ५ दे 'गुल्दस्ता' ।

दस्ताना, स पु (का) *दस्ताना, कल्पाद् ।

दस्तावर, वि (फा) वि, ऐचकदेवन,
गोधन, मारक ।

दस्तावेज, स स्त्री (फा) व्यवहार-समय,
पत्र लेख ।

दस्तौ, वि (फा दस्त) हस्त, वर, हस्त
२ वाग्यक, ल्पुमुष्टि (स्त्री) ।

दस्तूर, स पु (फा) प्रधा, रीति, (स्त्री)
= नियम, विधि (पु) ।

दस्तूरी, सं स्त्री, (फा दस्तूर >) (वणि
भिर्भनिकदासैभ्यो देव) प्रधाशुल्कम् ।

दस्यु, सं पु (मं) चौर, लुट्फ, = अनाथ,
स्तेन ।

दह, म पु (म हर >) •भरिद्गर्न ० ७८
३ जलावन ।

दहक, म स्त्री दे 'धधक' ।

दहकना, कि अ (स दह्) दे 'धधकना' ।

दहकाना, स पु (फा) कृषाण, कृष (पि)
क, कृषावन । वि, अश, मूढ, अशिष्ट ।

दहकाना, कि म (हि दहकना) दे
'धधकाना' ।

दहन, म पु (म न) ज्वलन, दाह, प्लोष
० (म पु) अग्नि (पु) ।

दहलना, कि अ (म दर डर >) भयेन क्प्
वेप् (भ्वा आ से), वि, वम् (भ्वा दि
प से) ।

दहलाना, कि प्रे, व 'दहलना' के प्रे रूप ।

दहलीज, म स्त्री (फा) देहली, गृहाव
ग्रहणी ।

दहनात, स स्त्री (फा) व्राम, आतक,
भोनि (स्त्री) ।

दहसेरी, म स्त्री (म दशमेरी) दशमेरी ।

दहाई, स स्त्री (फा दह) दशरथ ०. दगक,
दशनि (स्त्री) ३ अकगगनाया द्वितीयस्थान
४ दशमाश ।

दहाड, स स्त्री (अनु) गर्जित, गर्जनना,
महत्-दीर्गगभीर, नाद शब्द ० आ वि,
क्रोध आर्तनाद ।

दहाडना, कि अ (हि दहाड) गज्-रस्-नद्
नर्द् (भ्वा प से) ०. आ-उद् विव्या,
कुश (भ्वा प अ), सचीत्कार रुद्
(अ प से) ।

दहाना, स पु (फा) विस्तीर्णमुख ० द्वार
३ गन्धामुग ४ नदीमुखम् ।

दहिना, वि (म दक्षिण) अपसम्ब, वामेतर,
सव्येतर २ दृष्ट, वृषाणु ।

दहिने, कि वि (हि दहिना) दक्षिणेन,
दक्षिणत, दक्षिणा गन्ध्यादि ।

दही, म पु [स दधि (न)] क्षीरन,
विरल, मगन्व, पयस्य, द्रव्य-स, शीघ्रम् ।

दहेज, म पु (अ जहेत) युक्त, यौतुक,
स्त्रीधन, शुक्क, वाहनिकम् ।

दाँ, म पु, (स-दा) -वार, कृत्व (दोनों
अव्य) । (फा) वि, (समागान् म) -श,
(हिसावर्दा=गणित इ) ।

दाँपू चाँपू, कि वि (स दक्षिण+वाम >))
दक्षिणतो वामतश्च, दक्षिणवामपार्श्वयो, इत
रन, अत्र तत्र ।

दाँत, स पु (म दत) दशन, रदन,
सादन, रद, दिन, सरु (पु), दश ।

(नामने के आठ=द्वैदक-कतनक, दन्ता, माध
के चार=भेदक रदनर, दन्ता, उनमें पिठले
आठ=अग्रचवणरदन्ता, पिठले बारह=चर्व
णरदन्ता) ।

—उगना, कि अ, दत्ता उद्गाम (भ्वा प
अ) -उद् (कम) । स पु, दतोद्गम ।

—क्रिचिचाना, } कि अ, (कीयेन) दतैर्दतान्

—क्रिक्रिचाना, } शृष (भ्वा प से) -निष्पिप्

—चवाना, } (र प अ) -विषद् (प्रे) ।

—रीसना, } म पु, दत, पर्वण-निषेप ।

—का दर्द, स पु, दत, पीडा शूलम् ।

—का पेस्ट, स पु, *दतयेप ।

—का बुरदा, स पु, दतकूर्चक, कम ।

—का मजन, म पु, निश्चुक्त्तणम्, दतमा
जन्, रदक्षीर ।

—खोदनी, म स्त्री, दतोन्नेरानी, दतशोधनी ।

—वनानेवाला, स पु, दत, वैद्य चिन्तितम् ।

—खट्टे करना या तोडना, मु, वि परा जि
(भ्वा आ अ), अभि पराभू (भ्वा प से) ।

—तले उँगली दवाना, मु, जल्पर्थे विमि
(भ्वा आ अ), विदितन चकित (वि) भू ।

—निकालना, मु, हम (भ्वा प से))
२ स्वायायता प्रकाश (प्रे) ।

—रखना, लगाना या होना, मु, अत्यत
अभिरुप्वात् (भ्वा प से) ।

दाँता, म पु (हि दाँर) दे 'ददाना' ।

—क्रिक्रिट, } स स्त्री, कल्ह, वाग्मुद्

—क्रिलक्रिल, } २ दे 'गालीगलीत' ।

दाँती, स स्त्री, दे 'दरौती' ।

दापत्य, वि (म) पनिपत्नी जायापनि विषयक,
वैवाहिक, जात्य । स पु (म न) दान्यत्य,
मक्थ-व्यवहार, जात्यम् ।

दाभिक, वि (म) दे 'दभा' ।

दाइजना, स पु, दे 'दहेज' ।

दाई, वि स्त्री, दे 'दहिनी' ।

दाई, म स्त्री, (स धापी, फा दाव्य) मातृना,

उपमात् (स्त्री), अकपाली २ माविका, प्रसवधारिणी ।

—गीरी, म स्त्री, गर्भमोचनविद्या, प्रभव मूर्ति, कार्यकमन् (न) ।

—से पेट त्रिपाना, मु, रहस्यविदो रहस्य गुह (भ्वा उ वे) ।

दाऊ, म पु, (म देव >) अग्रन, ज्येष्ठभ्रातृ २ बल देव गम, श्रीकृणाग्रज ।

दाक्षाघण म पु (म) दक्षप्रनापतिकृतयज्ञ ० सुवग्मं ३ आभूषणम् । वि दक्षगोत्रीय ।

दाक्षाघणी, म स्त्री (म) अश्विन दिनश्चक्रम् २ मूर्ती ३ दुर्गा ४ अदिभि (स्त्री) ५ दक्षगोत्रन्या ।

—गति, स पु (स) शिव २ चन्द्र ।

दाक्षिणात्य, म पु (स) दक्षिणप्रदेश, निवा मिन-वास्तव्य २ नारिकेल अर्ध-वीशिर, फलम् । वि दक्षिण-मर्मा धनु प्रदेशीय ।

दास्य, म स्त्री (स द्राक्षा) गोमन्ती, स्वदा, मृदासा, रसाव्या, गुच्छफला २ शुद्धद्राक्षा ३ दे 'मुनका' ।

दाक्षिण, वि (फा) प्रविष्ट, निविष्ट ० समि लित, समाविष्ट ३ न्यस्त, निक्षिप्त ।

—द्वारिज, स पु (फा) म्वत्वम्बामित्य, परिवत ।

—दुष्तर, वि (फा) हेमगारे निक्षिप्त ।

दाक्षिणा, स पु (फा) प्रवेदा जनम् ।

दाग, म पु (फा) अत्र, निह २ कल्प, लान, दोष ३ तप्तलोहमुद्रात् ४ विदु (पु), निलय म् ।

—दार, वि (फा) अग्नि, निहित ० मन् लक, विदुमन् वदुर ३ दृपित, कल्पित ।

—लग्ना, वि अ, कल्पित दृपित-लाटि (वि) भू २ तप्तलोहमुद्रात् (वि) भू ।

—लग्ना, वि स, दुप (प्रे), कल्पयति (ना धा) ० (तप्तलोहमुद्रया) अवयति निहयति (ना धा) ।

दागना, वि म (फा दाग) दे 'दाग लगाना २ लाहदिगोत्त प्रक्षिप (तु प अ)-प्राग (वि प म) ।

दागी, वि (फा दाग) दे 'दागदार' ।

दाघ म पु (म) ताप, दाह, उ मन् (प) ।

दादिभ, म पु (स) दे 'अना' ।

दाह, स स्त्री, (स दाहा) द्रष्टा, जम, चर्वणदत् ।

दाह, म स्त्री (अनु) गर्भित, गर्भना २ नीत्वार ।

दाही, म स्त्री (दाहिवा) कृच चै, इमशु (न), व्यजन, कोट ।

—जार, म पु, दग्ध-कूर्च इमशु (मालीभेद) ।

—वनवाना या मुङ्गना, वि प्रे, कूर्च मुड (चु)-भावप (प्रे) ।

दाता, स पु (म दात्) दानकर्तृ (पु) वदान्य, दानशील, दात् (पु), मुनिर । [दात्री (स्त्री) = दानकर्त्री] ।

दानु(सौ)न, म स्त्री (हि दात्) पत्-वाष्ट धावनम् ।

दाद, म स्त्री, दे 'ददु' ।

दाद्, म स्त्री, (फा) न्याय, न्यायता ।

—देना, वि म, गुणावगुणान् विविध्व प्रशन (भ्वा ष मे) ।

दादा, म पु (म तात >) पितामह, विदु जनन ० अग्रन ।

दादी, म स्त्री (हि दादा) पितामही पितृ जननी ।

दादुर, म पु, (स ददुर) मद्दु, भेव ।

दान, म पु (म न) त्याग, उन्वि, मर्ननं सग, विभ्रानन, विवरण, भिन्नादान ० प्रदान ददन, दत्ति (स्त्री), अविमर्नन ३ गजमद ।

—करना या देना, वि म, मत्कार्येषु पुण्यार्थे वित्त विसृत् (तु प अ)-व्यय् (चु, भ्वा उ म) ।

—मर्म, स पु (म) भिक्षा, दान, (पुण्यार्थे) त्याग ।

—पत्र, म पु (म न) दानलेप ।

—पात्र, म पु (म न) दान, भाजन मञ्जा २ दानग्रहणपरिहारिन् ।

—पुण्य, म पु (म न) दे 'दानमर्म' ।

—दाल, वि (म) उदार, स्वगिन्, वदान्य, त्यागशील, दानशील ।

दानव, म पु (म) राक्षस, रक्षन् (न) ।

—दन्द्र, म (पु) वणि ।

दानवी, वि (म) दानवीय, दानव-उचित मन्वन्धिन् । म स्त्री (मं) दानव, पत्नी भाया ।

दाना, म पु (फा दानद्) अग्रण पिना

० अन्न, भान्य ३ गुल्मिका ४ पिम्बिक, रक्तवर्गी, स्फोटक ।

—पानी, स पु (का + हि) अन्नजल, जलाभ्रम्, मध्यपेयम् ।

—पानी उठना, मु, व्यवसाय-आजीविका, समाप्ति (स्था) अवसानम् ।

—(ने) दाने को तरसना, मु, क्षुभया उभुक्षया घृ (तु आ ज) ।

दाना^२, वि (का) प्राह, बुद्धिमत् ।

दानाई, स स्त्री (का) बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता ।

दानी, वि (म-निन्) दे 'दानशील' तथा 'दाता' ।

दानेदार, वि, कण शकिका, भय [-यी (स्त्री)] ।

दाव, स स्त्री, दे 'दवान' ।

दावना, कि स, दे 'दवाना' ।

दाम^१, स पु (म दामन् न स्त्री) रज्जु (स्त्री), युग, सदान २ माला, हार ३ समूह ४ समाह ।

दाम^२, स पु (का) मि म 'दाम^१' पाश, जाल, बागुरा ।

दाम^३, स पु (हि दाम्नी) पणचतुर्विंशभाग २ मूल्य, अर्घ, परल ३ धन ४ दाननीति (स्त्री, राजनीति) ।

दामन, स पु (का) बोलादीना निम्नभाग, बरवाचल, बमनान २ उपत्यका ।

—यकडना, मु, शरण प्रपद (दि आ अ), आ उपास, श्रि (श्वा उ मे) ।

—फैलाना, मु, याच् (श्वा उ से) ।

दामाद, स पु (का) आमाह (पु), पुत्री पति (पु), बन्धावेदिन, दुहितृध्व ।

दामिनी, स स्त्री (स) नटिद-विपुद (स्त्री), चञ्चला ।

दामोदर, स पु (म) श्रीकृष्णचन्द्र २ विष्णु ।

दाय, स पु (स) पैतृक, पैतृक, रिक्थ धन, मोक्षधन २ बौतुर्कारिदेवधनम् ।

—भाग, स पु (स) दाय-रिक्थ, विभाग वटन-व्यसनम् ।

दायक, स पु (स) दे 'दाता' [दानिका (स्त्री)] ।

दायजा, स पु (स दाय >) दे 'दहेज' ।

दायर, वि (का) चलत् (रात्रत), वतमान ।

दावा—वरना, कि स, अभियुत् (र आ अ,

तु), राजकुले निविद् (प्रे), अभियोग प्रवृत् (प्रे) ।

दायरा, स पु (अ) चक्र, मडल, वृत्तम् ।

दायाँ, वि (स दक्षिण) दे 'दहिना' ।

दायित्व, स पु (स न) उत्तरदायित्व २ दानुत्पन् ।

दायें, कि वि (हि दाया) दे 'दहिने' ।

दार, स स्त्री [म दारा (नित्य पु बहु)] कलत्र पत्नी, भार्या ।

—कर्म, स पु [म-भर (न)] विवह, पाणि ग्रहणम् ।

दारक, स पु (म) शिशु (पु), बाल, बालक २ पुत्र तनय ।

दार(ल)चानी, स स्त्री (स दार+नीन = देशविशेष) दे 'तन' ।

दारग, स स्त्री, दे 'दार' ।

दारिद्र, द्र, द्रव्य, स पु (स दारिद्र्य) निर्धनता, अकिंचनता, दरिद्रता ।

दारु, स पु (म न, कहीं-कहीं पु) काष्ठ २ देवदारु (पु न) ।

दारुण, वि (स) घोर, विषम, विकट, दु मह, कठोर, २ भीष्म, भयङ्कर ।

दारुहलारी, स स्त्री (स दारुहारी) दावों, पीना, पीनिका ।

दारु, स स्त्री (का) औषध, भेषज २ गय, सुरा ३ दे 'वारुद' ।

—दरपन, } स स्त्री, निमित्ता, उपचार ।

—दवा, } स स्त्री, निमित्ता, उपचार ।

दारोगा, स पु (का) अध्यक्ष, अधिकाय (पु) निरीक्षक २ दे 'धनेदार' ।

दार्शनिक, स पु (स) तत्त्व, विद्-वेत्तृ ष (सर्व पु), दशनशास्त्रपण्डित ।

दाल, स स्त्री (स दाल = कोशों >) दाना, द्विरलाल, वैदल, शिवा-विका, हरेणु (प), हरेणु, शमी-शिम्बी, भान्यम् ।

—दुलिया, मु, स्थाभोजनम् ।

—न गलना, मु, अममथ-अशक (वि) स्था (श्वा प अ) ।

—मैं काला, मु, सारिध्वार्ता २ कुरहस्थ ३ बुल्डगम् ।

—रोटी, स स्त्री, मामान्याहार ।

दालचीनी, स स्त्री, दे 'तज' ।

दालन, स पु (म दलन >) दन्तरोगभेद, दंतक्षय ।

दालमोठ, स स्त्री (हि दाल + मोठ) स्नेह भञ्जितदाली, मन्त्रकण ।

दालान, स पु (फा) दे 'बरामदा' ।

दालिम, म पु (स दालि (हि) म भा) (वृक्ष) कुचफल, शुक्रबलम्भ । (फल) कुचफल, रक्तबीज, दालि (टि) मम् ।

दावे, म पु (स प्रत्य दा >, उ ष्कदा) पयाय, परिवृत्त (स्त्री), वार २ अवसर, बेला, वायवालय प्रमग ३ उपाय, युक्ति (स्त्री) ४ छल, ऋषट ५ मल्लयुद्धकृत्युक्ति (स्त्री) ६ निमृतावस्थिति (स्त्री) ।

—पर लगाना, मु, पण् (भ्वा आ से, पष्ठी के साथ, उ 'रुष्यन्स्य पणने') ।

—लगाना, मु, अवसर लम (कर्म) ।

दाव, म पु (म) वन २ दावानल ३ अग्नि (पु) ४ दाह ताप ।

दावत, स स्त्री (अ) भीषण, निमन्त्रण २ विशिष्टभोजनम् ।

दावा, स पु (अ) स्वत्वप्रतिपादन, स्वा मित्वप्रकाशन २ स्वत्व, अधिकार ३ अभि योग भाषा, पत्र ४ अभियोग, पूर्वपक्ष, भाषा, भाषापाद ५ प्रस्ताव, प्रमुख्य ६ दृढोक्ति (स्त्री) ७ प्रतिज्ञा पक्ष, पूर्वपक्ष ।

पूर्वपक्ष स्मृत पादो, द्विपादश्रोत्तर स्मृत । त्रिपादादस्तथा चान्य चतुर्थो निगद्य स्मृत ॥

—करना, क्रि स, अभियुक्त (रु आ अ, चु) दे 'दायर' के नीचे ० स्वत्व प्रतिपद (प्रे) ।

—द्वारिज करना, क्रि स, अभियोग अपाम् (दि प से) निराकृत ।

—गौर,] म पु (अ + फा) अभियोग्य

—दार,] (पु), अधिन्, वादिन्, अभियो गिन्, सूचक, वायाधिन् २ स्वत्वप्रतिपादन, स्वामित्वप्रकाशक ।

दावानल, स पु (म) दा(द)वाग्नि (पु), वनवह्नि (पु), द(दा)व ।

दास, स पु (स) मित्र, भृत्य, भुजिष्य, दामिय, दामिर, दे 'नीरर' ।

दाम्ता, स स्त्री (म) दाम्तर, दाम, भाव वृत्ति (स्त्री) ।

दासानुदास, म पु (त) अनिघ्न मित्र, तुच्छमेवम् ।

दासी, म स्त्री (स) चेनी, भुजिष्या, दे 'नीररानी' ।

दासेय, स पु (म), दाम्नीपुत्र २ दास ।

दास्तान, म स्त्री (फा) कथा २ वृत्तान्त ३ वर्णनम् ।

दाम्ब, स पु (स न) दे 'दासता' ।

दाह, स पु (म) दाहन, ज्वालन, भस्मी करण २ शब्दाह, अन्त्येष्टि स्मृत, मन्वार क्रिया ३ ताप, प्लेष, शोथ, मन्ताप ४ ईर्ष्यां वा ।

—कर्म, म पु [म मन्द (न)] दे 'दाह'(२) ।

दाहक, वि (म) तापन, दीपक, प्लेषन ।

दाहना, क्रि म दे 'नलाना' ।

दाहिना, वि, दे, 'दहिना' ।

दाहिने, क्रि वि, दे 'दहिने' ।

दिक्, म स्त्री [स दिश (स्त्री)] दिशा ।

—पाल, स पु (म) आशापात्र, इन्द्रादयो दश देवा ।

टिक्, स पु (अ) क्षयरोग । वि, व्यदित, मन पित २ अम्बस्व, रुग्ण ।

—करना, क्रि म, तप्-व्यथ् (प्रे), पीट् (सु), बाध (भ्वा आ से) ।

अर्तो का—, म पु, अत्रक्षय ।

दिक्त, म स्त्री (अ) काठिन्य, बाधा, षष्टम् ।

दिखलाना, क्रि स, व 'दिदाना' के प्रे रूप ।

दिखलाना, स पु, दे 'दिपावा' ।

दिखाई, म स्त्री (हि दिराना) प्रदर्शनं, व्यजन, निर्देशन, प्रकाशन, प्रस्टी-व्यक्तो-करण २ प्रदर्शन-अर्थ-मूल्यम् । (हि दैराना) अव-आवि, लोकन, वि, इवण, निमालन २ अवलोचन, शूलन-कर्म ।

—देना, क्रि अ, रुद्-इद् (कर्म), अवगाम् (भ्वा आ मे) प्रतिभा (अ प अ) ।

दिराना, क्रि प्रे, व 'देगना' के प्रे रूप ।

दिग्वावट, स स्त्री (हि दिराना) दे 'दिराव मे 'प्रदर्शनं' इ २ आन्तर, वाद्य शोभा प्री (स्त्री) ।

दिरावटी, वि (हि दिगाव) दृष्टिगारिन्, सुभगालोच, इतर, रविम, अनुपवीगिन्, मान्वर ।

दिखावा, म पु (हि दिग्वा) ञटवर, दम, आपातरमणायना, बाह्यशोभा ।
 दिगंत, म पु (स) दिशात, दिक्मीमा २ क्षितिज, दिक्-तट चक्र-मण्डल ३ चतस्रो दश वा दिश ।
 दिगतर, म पु (म न) अन्या दिशा २ दिग्मध्य दिक्छोम ३ आनाश श, अन्तरिक्ष ४ विदेश ।
 दिग्गंबर, स स्त्री (म पु) जैनमप्रदायविशेष ० शिव । वि, नग्न, अवसन ।
 दिग्गज, म पु (स) दिग्धरिन् २ ऐरावतादयोऽत्र दिग्गजा गजा ।
 दिग्दर्शक यत्र, स पु (म न) दिङ्निरूपक यन्त्रम्, दिग्दर्शनम् ।
 दिग्दर्शन, म पु (म न) सामान्य माधारण, परिचय यानम् ० दिग्ज्ञापन, दिशातिर्देश ३ दिग्दर्शनयन्त्रम् ।
 दिग्बिजय, स स्त्री (म पु) विषया युद्धेन वा जगज्जय ।
 दिट्टीना, स पु (हि दाठ) *कुट्टिनिवारण (कञ्जलविट्टु) ।
 दिति, स स्त्री (स) कश्यपपत्नी, दैत्यजननी ।
 दिन, म पु (म न) अह्न (न) दिवस, वार, वामर पक्ष, अशक, दिव (स्त्री), यु (न) २ समय, बाल ।
 —चडना या निकलना, कि अ, रजनी प्रभा (अ प अ), अरुण-भूय उद् ३ (अ प अ), प्रभात विभात अरुणोदय जन् (दि आ मे) ।
 —दलना, कि अ, दिन दिवस परिणम् अथवा आ-अव-नम् (भ्वा प अ), अपराद्धो वृत् (भ्वा आ से) ।
 —दुबना, कि अ, स्य दिवस अस्त, -गम् (भ्वा प अ) अवचब (भ्वा आ से) ।
 —कर, }
 —नाथ, }
 —पति, } म पु (स) दिनेश, दे 'मृयं' ।
 —मनि, }
 —राज, }
 —चदे, कि वि, उदिते सूर्ये, प्रात (अव्य) ।
 —चर्यां, म स्त्री (स) आहिक २ नित्य वर्मन् (न) ।
 —उले, कि वि, (अ) पराद्धे, दिवस्य सुनीययाते ।

—दिन, कि वि, दिने दिने, अनु-सति, दिन दिवसम् ।
 —दहाडे, कि वि, दिन, काले समये एव, दिवैव ।
 —बादिन, कि वि, अन्वह, प्रत्यह, प्रतिदिनम् ।
 —भर, कि वि, सर्व दिवसम् ।
 —मे, कि वि, दिवा, दिवसे ।
 —रात्र, कि वि, अहान्तक, दिवान्तर, अन्तरात्र, रात्रि नक्त, दिवम् ।
 अगले—, कि वि, परेषु, परस्मिन् दिने ।
 दूसरे—, कि वि, अन्येषु, पराहे ।
 पहले वा पिछले—, कि वि, पूर्वेषु, पूर्वस्मिन् दिने ।
 —काटना, मु, यथा-अधित-कृच्छ्रेण जीवन या (प्रे) थापयति ।
 —दूना रात चांगुना होना, मु, अहनिश सम्य (दि प से)-अ-उप, वि (कर्म) ।
 —फिरना, मु, भाग्य उद् ३ (अ प अ) ।
 दिनेश, म पु (म) सूर्य, भानु (पु) ।
 दिनौधी, स स्त्री (स दिनाध >) दिनाधता, दिवाधता, नेत्ररोगभेद ।
 दिमाग, स पु (अ) मस्तकस्नेह, मस्तिष्क, मग्नु, छ्वा उद्भक्त (—ग, गकी), गोर्दे २ मति धी बुद्धि (स्त्री) ३ दर्प, अभिमान ।
 —चट, म पु, वाचाल, वाचाट, बहुभाषिन् ।
 —दार, वि (अ + फा) धीमत्, बुद्धिमत् २ दृप्त, अभिमानिन् ।
 —आस्मान पर होना वा चडना, मु, अति शक्तेन दृप्त अवलिप्त (वि) वृद्ध (भ्वा आ से) ।
 —में खरल होना, मु, विशिप्त-वातुल प्रीति वित्त (वि) विद् (दि आ अ) ।
 —सातवें आस्मान पर होना, मु, अति-दृप्त-द्विपित-गर्वित म् ।
 दिमागी, वि (अ) मानसिक, बौद्धिक, मस्तिष्कसम्बन्धिन् २ ३ दे 'दिमागदार' (१ २) ।
 दिया, म पु (म दीप) दीपक, प्रदीप, स्नेहाश, वज्जलध्वज, गृहमणि (पु) दीपा स्थ, दीपविलक, नयनोत्तम ।
 —सलाई, स स्त्री, दीपशालना ।
 दिये वा बानल, म पु, दीप, वज्जल किट्ट-ध्वज ।
 दिये की ज्वाला, म स्त्री, दीप, बलिवा-शिखा ।

दिये की बत्ती, स स्त्री, दीप बलि (स्त्री)
खोरी-शुषी, विदाहिवा ।

दिव्यानतदार, वि, दे, 'दिवानतदार' ।

दिल, स पु (का) हृदय, हृद (न), अग्र
नाम बुका बुकाग्रमास । २ मन्म चेतनम्
(न) मानस चित्त, अत करण हृदय,
स्वान् आत्मन् अतरात्मन् (पु) ३ माहम्,
शार्थ ४ प्रवृत्ति (स्त्री), इच्छा ।

—गीर्ग, वि (क) सिन्धु, विषण्ण, दुःखिन ।

—चस्प वि (का) रोचक, र्चकङ्ग, मनोहर ।

—चस्पी, स स्त्री (का) मृषि (स्त्री)
२ मनोरजनम् ।

—चोर, वि (का + हि) वायुर्वायु
*रभचोर ।

—जमई, स स्त्री (का + अ जम +) मनीष
निर्भयत्व, शकाभाव ।

—दरिया, वि, दे 'दरिया दिल' ।

—दार, स पु (का) दयित, बल्लभ, प्रिय
प्रेम स्नेह प्रीति, भाजनम् ।

—पसद, वि (का) चित्तवर्षक, रचिष्ण, इष्ट ।

—बर्, स पु (का) दे 'दिलदार' २ वाप
भेद (डि दिल के बहुत से मुद्द-बिरे 'भलेना'
और 'जी' के नीचे मिले, कु- वहाँ दिये
जाते हैं) ।

—रवा, (स पु (का) दे 'दिलदार' ।)

—का कमल (वा बली) खिलना, सु,
आनन्द (भ्वा प से), प्रसद (भ्वा प अ),
मुद (भ्वा आ से) ।

—तोडना, पु, उरताह भङ् (रु प अ) इन्
अ प अ), माहम् धैर्य ध्वम (प्रे), अव
वि-सद (प्रे) ।

—मे रखना, सु, गोच्य रहस्य गुह (भ्वा
उ से)-उद (चु) ।

—रखना, सु प्री (क प अ, चु प्रीणवति),
गुप प्रसद अनुरत् (प्रे) ।

—ही दिल मे, सु तूणी, नि शब्, प्रीन,
गोपम् ।

दिलवाना, दिलाना, वि प्रे, व 'देना' व
प्रे रूप ।

दिलानर, वि (का) शूर, वीर २ माहमिन् ।

दिलावरी, स स्त्री (का) शौर्य, वीरता,
पराक्रम, विजयम् ।

दिलामा, स पु (का दिल) धैर्य, आसमा,
शामनम् ।

दिली, वि (का दिल) हादिक, मानसिक
२ अभिन्नहृदय, हृदयगम ।

दिलेर, वि (का) दे 'दिलावर' ।

दिलेरी, स स्त्री (का) शौर्य, वीरता,
साहसम् ।

दिल्लगी, स स्त्री (का दिल + हि लगना)
परि (री) हास, हास्य, गर्माण्य, परिहा
सोक्ति (स्त्री) ।

—बाज़, स पु, विनोद परिहास, शी-
वैहासिन् ।

दिल्ली, स स्त्री (हि दिल्ली) इन्द्रप्रस्थ,
भारत राजधानी, दिल्ली ।

—याल, वि, इन्द्रप्रस्थ—दिल्ली, न्वाभिन्
सम्बन्धिन् ।

दिवगत, वि (म) प्रेत्, मृत, स्वर्ग, स्वगत,
स्वर्गात् ।

दिवम्, स पु (स) दे 'दिन' ।

दिवाध, वि (स) दिनाध । स पु, उल्लू
२ दिनाधता ।

दिवाकर, स पु (स) दे 'दिनकर' ।

दिवाला, स पु (हि दीया + बालना) कण
शोधनासामर्थ्य, कणदानाक्षमता ।

—निकलना कि अ, परिशि (कम), कण
शोधनाक्षमत्व ख्या (प्रे) ।

दिवाल्या, वि (हि दिवाला) कणशोधना
मध्य, कणदानाक्षम, क्षीणमवस्व, परिक्षीण ।

दिवाली, स स्त्री, दे 'दीवाली' ।

दिव्य, वि (स) देव (बी स्त्री), अमानुष
(पी स्त्री), ऐश्वर (री स्त्री), अपराधक
(बी स्त्री), अलौकिक (बी स्त्री), स्वर्गात्
२ भास्वर, प्रवृत्तमान ३ अवि, स्वर्ग-मुदर
मनोदर ।

—चक्षु, स पु [स धुम (न)] भविरूपेय
अलौकिक-दृष्टि (स्त्री) २ अथ ३ उपनेत्रम् ।

—ज्ञान, स पु (स न) अतिमानुष प्रवीर
पेय, मानुषानि, शानम् ।

दिशा, स स्त्री (सं) आशा, वाछा, पदुभ
हृत्तिदिम् (स्त्री), उतुभा ।

—शूल, स पु (स न) दिग्बिदो गमने
निषिद्धवारा (पु) ।

—जाना या फिरना, पु, पुरोपमुत्सङ्ग या (अ प अ) मशोल्मर्गाय गम् ।
 दिसावर, म पु (म देशपर) विपरदेश, देशानरम् ।
 दिसावरी, वि (दि दिसावर) वैदेशिक, वि परदेशीय, दे विदेशी ।
 दिहात, स स्त्री है 'देहात' ।
 दीक्षक, म ण (म) मयोपदेशक गुण (प), आनाप
 दीक्षात, स पु (म) अवभृथयश्च ।
 दीक्षा, म स्त्री (म) मुख्यतया यथाविधि मन्त्रग्रहण २ यान पूजन ३ प्रथम-उपदेश शिक्षा, उपनय, विद्याप्रवेश ।
 दीक्षित, वि (म) उपनीत, यथाविधि उपदिष्ट, मन्वारानन्तर प्रवेशित ।
 दीक्षता, वि अ दे 'स्व्याद देना' ।
 दीढ, म स्त्री (म दृष्टि, दे) ।
 दीदा, म पु (फा) दृष्टि (स्त्री) २ अव लोचन ३ नेत्र ४ धृष्टता ।
 —दानिस्ता, कि वि, दान-शुद्धि मनि, पूर्वक, कामद (अव्य) ।
 दीदार, म पु (फा) दान, माभास्वार ।
 दीदी, म स्त्री (वि ददा) अग्रजा, ज्योत्सना, भगिनी ।
 दीधिति, म स्त्री (स पु) विरण, मधुस, अशु मरीचि ।
 दीन, वि (म) दरिद्र, निधन २ गिन्न, विषण्ण ३ अति नम्र विनीत ४ मग्न, दुःखित ।
 —दयाल, वि (म लु) दरिद्रवत्कर्म । म पु, ईश्वर ।
 —द्यु, वि (म) दरिद्रमित्र, दीनानुचरिन् । म पु, परमेश्वर ।
 —दीन, म पु (अ) धर्म ।
 दार, वि (अ + फा) धामन, पुण्यात्मन् ।
 —दुनिया, म पु (अ) लोपरलोनी (दि) ।
 दीनता, म स्त्री (म) दरिद्रता, निधनता, अस्विनता २ आर्लता, कातरता ३ वेद, विषाद ४ अति-नम्रत्व विनय ।
 दीनानाथ, म पु (म दीन + नाथ) दीन-दयालु-वत्कर्म-पु, परमेश्वर ।
 दीनार, म पु (म) स्वर्णमुद्रा २ स्वर्णभूषण ३ निष्क-सौंभार ।

दीप, स पु (स) दीपन, दे 'दिया' ।
 —माला, म स्त्री (स) दीप, आलि (स्त्री) आली श्रवली-उत्पन्न मालिका २ दीपपत्ति (स्त्री) ।
 —शिखा, स स्त्री (म) दीप-कल्पा ज्वाला ।
 दीपक, स पु (स) प्र-दीप, दे 'दिया' २ ४ अर्थात्कार राग ताल, भेद ५ अग्नि कीटनकभेद । वि, प्रकाशक, दीपितर २ पाठक, अग्निवद्भक्त ३ उत्तैजक ।
 दीपन, म पु (य न) प्रकाशन, ज्वालन २ जठराग्निवहन, क्षुधोत्पादन ३ उत्तेजन ना, आवेगजननम् ।
 दीपावलि-स्त्री, स स्त्री (म) दे 'दीपमाला' ।
 दीप्त, वि (म) प्रकाशित, प्रमाशमान २ प्र ज्वलित, प्रज्वलत् (गत) ।
 दीप्ति, म स्त्री (स) भास्वर, प्रकाश २ आभा, प्रभा, दृष्टि (स्त्री) ३ कानि (स्त्री), शोभा ।
 दीपक, म स्त्री (फा) उप-दीका-देहिनी ।
 —लगना, कि अ, उपदेहिनीमि मक्षु निष्कुष् (कर्म) ।
 दीया, दे 'दिया' ।
 दीर्घ, वि (म) लव, भायन, आयामवत् ।
 —काल, स पु (स) सुमहान् ममय ।
 —जघ, स पु (स) उष्ट्र २ वव । वि, लवण्य ।
 —जीवी, वि (स विन्) दीर्घविर, आयु आयुस् आयुष्य जीविन्, आयुष्मत् ।
 —दीक्षिता, स स्त्री (स) दे 'दूरदीक्षिता' ।
 —दशी, वि (स शिन्) दे, 'दूरदशी' ।
 —निद्रा, म स्त्री (म) लवस्वाप २ मृत्यु (पु) ।
 —सूत्री, वि (स त्रिन्) दीर्घसूत्र, विरक्रिय, विश्विन् ।
 दीर्घायु, म स्त्री (स न) विर-दीर्घ जीवन आयुम् (न) । वि, दे 'दीर्घजीवी' ।
 दीर्घायुध, म पु (स न) भल्ल —लग्, कुन्त, प्राण २ श्वर, ब्राह्म, कोल ३ राव, क्षैर । वि दीर्घ-लम्ब वृहद्, —अस्व-आयुध ।
 दीवट, म स्त्री (हि दीवा) दीप-दीपक, ध्वज-रूप आभार, शिखातर ।

दीवान, म प (अ) राजमन्त्रा, आम्बाननी,
राजकुल २ अमात्य, मन्त्रि ३ रविनामग्रह ।

—आम, म पु (अ) *नामान्धस्थानम् ।

—ग्राम, स पु (अ) *विशेषस्थानम् ।

दीवाना, वि (फा) उमादिन, विभिन्न दे
'पाल' ।

दीवार, म स्त्री (का) कुट्टव, भित्ति (स्त्री) ।

—गीर, म स्त्री (फा) भित्तिदीप ० भित्ति
स्थो दीराधार ।

दीवाली, म स्त्री (म दीपाली) दे 'दीपमाला' ।

दुदुम, म पु } म पु दे 'नकरा'

दुदुभि म स्त्री }

दुबा, स पु (फा दुबाल) गोण्णु डो
मेघ-मेढ ।

दुख, म प (स न) कष्ट, क्लेश, पीना,
बाधा, व्यथा, अ (आ) ति (स्त्री), दुःख,
वेदना, परि-स, ताप २ आपद् विपद् (स्त्री),
सकट ३ रोग, न्याधि (पु) ।

—उठाना या पाना, कि अ, दुसयति
(ना धा), दुख सह् (भ्वा आ से) -
अनुभू-उपभुन (रु आ अ)-प्राप (स्वा
उ अ) ।

—द्रेना या पहुँचाना, कि स, दुसयति
(ना धा), तप-व्यथ अर्द् (प्रे), पीट
(जु), क्लेश (क् प से) ।

—दाई, वि (स-दायिन्) दुय-वष्ट-क्लेश
कर-द-दान्-दायक प्रद अनक-उत्पारक ।

—मय, वि (स) क्लेशमय, दु उपूर्ण ।

—हृत्ता, वि (म-र्त्) दु ख-क्लेश-वष्ट-नाशक
निवारक-हरिन् ।

दुःखित, वि (म) क्लेशित, पीनित, व्यथित,
दु खमान, दून, तापित, रु परि-नास, दु ग,
आर्त्त, क्लेशान्, सन्वथ, दु खिन् ।

दुःखिनी, वि स्त्री (रु) विपन्ना, पीनता,
व्यथिता, म परि-नासा, आता ।

दुःखी, वि (म खिन्) दे 'दुःखिन' (दुःखिनी
स्त्री) ।

दुःशासन, वि (म) उच्छृङ्खल, उदाम, दुःखिग्रह ।
म पु, धृतराष्ट्रस्य पुत्रविशेष २ कुनामनम् ।

दुःशील, वि (म) दुःस्वभाव, कुशील,
दुःस्वभाव, दुःप्रवृत्ति, दुःवृत्त ० धृष्ट, उद्वेग ।

दुध्रव, वि (म) कर्ण श्रुति, मृद्ध । म पु,
दुध्रव-श्रुति-कृत्, दोष (सा०) ।

दुःसग, म पु (म) कुना, कु-दुम, मगति
(स्त्री) ।

दुःसाध्य, वि (म) कठिन, दुष्कर, बह्मसाध्य
२ असाध्य, दुष्प्रचार, अशमनीय, अविनि-
त्य, निरुपाय ।

दुभा, म स्त्री (अ) प्रार्थना २ आशीर्वाद ।

दुभावा, म पु (फा) दे 'दोभावा ।

दुकडा, स पु (स द्विक) द्वय, द्वितय, युग,
युगल, २ दे 'दुदाम' ।

दुकान, म स्त्री (फा) पण्य, शाल-अगार,
आपण, विपणि (स्त्री), निपणा, *दुष्टी ।

—द्वार, म पु (फा) आपणिक, पण्यबोध,
विपण्य, कर्षकथिक, वणिज (प) ।

—बडाना, सु, पण्यशाला (अ) विधा
(जु उ अ) ।

दुखडा, स पु (म दुख) दुखवृत्तान,
वरुणकथा २ कष्ट, विपद् (स्त्री) ।

दुखना, कि अ (म दुःख >) पीड-विल्ला
तप (कर्म)-व्यथ (भ्वा आ से) ।

दुखाना, कि स (हि दुखना) पीड-अर्द्
(जु), व्यथ् (प्रे), ड (स्वा व अ),

विल्ला (क् प से), उपपरिम, तप् (प्रे) ।

दुखिया-यारा, वि (स दुख >) दे 'दुखिन' ।

दुगता, वि (स क्षिण) क्षिणित ।

दुग्ध, म पु (स न) क्षीर, पयस (न) ।

—फेन, स पु (म) क्षीर-मिटि (क्षी) र,
शाकर ।

दुचित्ता, वि (स द्विविध) दोषायमान,
मशयान, मदेहिन, सरिग्ध, दुःखि-मति ।

दुचित्ती, म स्त्री (हि दुचित्ता) दोषावृत्ति
(स्त्री), द्वेषोभाव, निश्चयभाव, सशय ।

दुत, अन्य (अनु) अपमर अपेहि (लो) ।

—कार, स स्त्री (अनु + स कार) धिक्कार,
निरन्वार, भ्रमना, वाग्दड २ अपमारणम् ।

दुत्कारना, वि म (हि दुत्कार) धिक्-निरम
दृ, निर, भ्रम् (जु आ से) २ मापमान
निम् अप-म् (प्रे) ।

दुत्तरना, वि (फा दो + अ तरफ) द्वि (द्वे) -
पथ, द्वि (द्वे) प्रार्थ, द्वि, पश्य पत्नीय ।

दुधार, वि (हि दुध) क्षीरिणी, दुग्धवती,
पयसवती, पीनाध्नी (गौ इ) ।

दुधारा, वि (म द्विभार) उगमय तीक्ष्ण
निशिन । स पु, मटगमेद, *द्विभार ।
दुनिया, म स्त्री (अ-या) नाव (न),
ममार २ लोक, जनता ३ नगरप्रपञ्च ।
—दार, म पु (अ + का) गृहस्थ, गृहिन,
समारिन, २ व्यवहार, कुशल पद ।
—दारी, म स्त्री (अ + का) ऐत्थिकता-त्व,
प्रपवानुराग, समारामसि (स्त्री) २ लोक,
आचार भाग, रुदि (स्त्री) ३ व्यवहार
बौशलम् ।
दुनियासी, वि (अ) नीतिर मामारिक
ऐहिक ।
दुपट्टा, म पु (हि दो + म पट्ट >) द्विपट्ट,
द्विपत् २ जगोप पम् ।
दुपहर, म स्त्री, दे 'दोपहर' ।
दुपहरिया, म स्त्री (हि दुपहर) बहु (धू)
क, रक्तक, बहुवीक २ दे 'दोपहर' ।
दुब(वि)धा, म स्त्री (स द्विविधा >) सदाय,
मदेह २ निर्णय निश्चय, अभाव ३ सकीच
४ आशुका, विविक्तिम् ।
दुबला, वि (म दुर्बल दे) ।
दुबलापन, म पु, दे 'दुर्बला' ।
दुबारा, क्रि वि, दे 'दोबारा' ।
दुबे, म पु (म द्विवेदिन) द्विवेद, ब्राह्मणमेद ।
दुभाषिया, म पु (स द्विभाषिन्) भाषा
यत्र, द्विभाषविद् (पु) २ व्याख्यात,
अर्थबोधक ।
दुमजिला, वि (का) दि, भूम भूमिक
(प्रामाद इ) ।
दुम, स स्त्री (का) पुच्छ रुद्र, लागु (गू)
ल, नम २ अनुशयिन्, अनुग ३ अग्नि
भाग ।
—दार, वि (का) मपुच्छ, लागुजिन् ।
—दार मितारा, म पु, उल्का, धूमकेतु (पु),
उत्पान, वेतु (पु) । वि, मपुच्छ लागुजिन् ।
—दुवाकर भागना, मु, कापुरुषवत्-मकान्तर्प
पत्न्या (भ्वा भा से)-विद् (भ्वा प अ)-
अवभास (भ्वा प से), कादिगीक (वि) भू ।
दुमन, वि (म दुमनम) स्त्रिय, विपण्य,
म्लान, अवमन्न ।
दुरगा, वि, दे दो के 'नीचे' ।
दुरव, वि (स) दुष्परिणाम, कुफल, दुष्फल,

दुग्गमान २ दुर्गम, दुरतिक्रम ३ प्रनड, उग्र
४ दुर्गेव, दुर्बोध ।
दुर, अव्य (हि दर) अपसर-अपेहि (लोट) ।
—दुर करना, मु, मन्यकृत् अपस (प्रे) ।
दुराग्रह, स पु (स) दे 'हठ' ।
दुराग्रही, वि (म-हित) दे 'हठो' ।
दुराचरण, म पु (स न) दे 'दुराचार' ।
दुराचार, म पु (म) कद-आचार आचरण,
दुग्, वृत्त-व्यवहार आचरण, दुम, चरित
नेष्टि चारित्र्य शील, अनायत्वम् ।
दुराचारी वि (स रित्) दुष्ट, दुरात्मन्,
पापात्मन्, पापकर्मन्, दुष्ट, दुश्चरित्र, अथा
मिक पाप, मल, शठ, लपट, विषयामक ।
दुराज, स पु (स द्विराज्य) द्विराजन्,
द्विराजन्ता ।
दुरात्मा, वि (म-त्मन्) दुष्, पापात्मन्,
दे 'दुराचारी' ।
दुरूत, वि (का) दे 'ठीक' ।
दुरूह, वि (ग) दुर्बोध, दुर्सेव, गूढार्थ, गहन,
निलष्ट ।
दुर्गंध, म पु (स) पूति (स्त्री), पूतिगंध,
कु-दुर्-वान ।
—युक्त, वि (स) दुर पूति, गधि, दुर-कुत्सित,
पूति, गंध ।
दुर्ग, म पु (म न) कोर् टि (स्त्री), दे
'किला' । वि दे 'दुग्ग' (१) ।
अग्म्य, गहन, विषमन्, दुर्ग २ दुर्बोध
३ विकट ।
—अधिपति, म पु (म) दुर्ग, पति पाल इश
अध्यक्ष ।
दुर्गति, म स्त्री (स) दुर्दशा, दुस्वस्था,
२ नरक-वास भोग ।
दुर्गम, वि (म) दुष्प्राप, दुरामद, दुरारोह ।
दुर्गा, म स्त्री (म) रुद्राणी, चटी, दे 'पार्वती' ।
दुर्गुण, म पु (म) अवगुण, दोष, व्यमन,
दुलक्षण, कुलक्षणम् ।
दुर्घट, वि (म) दुश्चर, दुष्माध्य ।
दुर्घटना, म स्त्री (म) अनुभ-अन्यमल, उन्ना
आपात ममापसि (स्त्री) २ विषद्-आपद् (स्त्री) ।
दुर्जन, म पु (म) छल, पाप, शठ, व
'दुराचारी' के पर्यायो के पु रूप ।
दुर्जनता, स स्त्री (म) दुष्टता, खलता, शठता ।

दुर्जय, वि (स) अधृष्य अजय्य, अदम्य,
दुराएद, अदुर् जय ।

दुर्जेय, वि (स) दे 'दुर्ह' ।

दुर्दमनीय, वि (स) दुर्दम्य, दुर्दाना, उदय्य,
दे 'दुर्जय' ।

दुर्दशा, स स्त्री (स) दुर्दि (स्त्री), दुर्दम्या ।

दुर्दिन, स पु (स न) मेरु चक्रो दिनम्
२ कृतिपत्रं ताल, क्रममय ममय ।

दुर्देव, म पु (स न) दे 'दुर्भाग' ।

दुर्धर्म, वि (स) दे दुर्जय २ उग्र, प्रचट ।

दुर्नीति, स स्त्री (स) दुर्नीति (स्त्री)
अ-प्राय, अनाचार ।

दुर्बल, वि (स) अचल निर्बल, अदक्त, क्षीण
अल्प, बलशक्ति, निम्, तेजस्सत्त्व २ वृद्धा,
क्षाम, क्षीण, अमान, छात, शान ।

दुर्बलता, स स्त्री (स) निबलता, अशक्तता,
अबलता २ वृशता, क्षामता ।

दुर्बुद्धि, स स्त्री (स) दुर्भुति नदधी (स्त्री) ।
वि, अह, मूर्ख, मदमति ।

दुर्बोध, वि (स) दे 'दुर्ह' ।

दुर्भाग्य, म पु (स न) दुर्देव, दीर्भद, नाग्य,
दुर्जात, दुर्गति (स्त्री), देव, दुर्विपाक विपयथ
विपर्याय ।

दुर्भचना, स स्त्री (स) दुर्भाव, दुष्ट, बुद्धि
भाव, अग्या, मोह, द्वेष, दीरत्वम् ।

दुर्भिक्ष, म पु (स न) अहाल, दुष्काल,
अनशन, प्रयाम, आहारभाव, नीवाक ।

दुर्मट, स पु (स न) दुर्ग-मट = कृता) *भृजुटन,
*दुर्मुटम् ।

दुर्मति, स स्त्री तथा वि (स) दे 'दुर्बुद्धि' ।

दुर्मुख, वि (स) अदुर्भाषिन् २ दुर्शन, कुरूप ।

दुर्योध, वि (स) अनेय, अपथ्य, अग्य,
अदम्य ।

दुर्योधन, म पु (स) धृतराष्ट्रस्य ज्येष्ठपुत्र ।

दुर्यानि, वि (स) हीन-नीच, -जानि-कण-
कुल ।

दुरी, म पु (अ०), दे० 'भीरी' ।

दुर्लभ्य, वि (स) दुर्गतर, दुर्गनाय, दुर्लभ
नीय, दुरागम ।

दुर्लभ, वि (स) अप्राप्य, दुर्ग्राप, विरल,
दुरागम २ अत्युत्तम, अत्युत्कृष्ट ।

दुर्चन, स पु (स) दे 'गाली' ।

दुर्चिनीत, वि (स) अचिनय, अनिनीत, उदत,
धृष्ट, अशिष्ट, असभ्य, वियान ।

दुर्विपाक, स पु (स) कुपरिणास, कुफलम् ।

दुर्वृत्त, वि (स) दे 'दुराचारी' ।

दुर्व्यवस्था, स स्त्री (स) दुर्व्यवस्था, कुनीति
(स्त्री), दुर्णय, कुप्रणयन, कुप्रबंध, दुर्निर्वाह ।

दुर्व्यवहार, म पु (स) दुर्वृत्ति (स्त्री),
अनव्यवहार, अप, वार क्रिडा, कुचेष्टित,
कुचरितम् ।

दुर्व्यसन, म पु (स न) दुर्गुण, दोष,
*रदानक्ति (स्त्री) ।

दुर्व्यसनी, वि (स) निन् (स) दुर्गुण, दोषिन,
दुराचारिन्, पाप ।

दुल्की, स स्त्री (हि दलकता) धो (धौ)-
रितनकम् ।

—चलना, कि अ, धोरितेन गम् ।

दुल्की, स स्त्री (हि दो+सं च्त्ता>)(पशुना)
दिल्लता द्विपुर द्विपाद, आधात प्रहार श्लेष ।

—मारना, कि स, लत्ताभ्या प्रह (भा प अ)
आहन (अ प अ) ।

दुल्ह (हि)न, स स्त्री (हि दुल्हा) नव
वधू (स्त्री), वधूटी, नवीडा, नवपरिणाना ।

दुल्हा, स पु, दे 'दुल्हा' ।

दुल्हाई, म स्त्री (हि तुलार) दे 'रजार' ।

दुलार, स पु (हि दुलारना) उप, लानन,
चुवन, आलिंगनम् ।

दुलारना, कि म (स दुलारन>) उप, लन्
(चु), आलिंग (भा प से), स्नेहेन
परामृश (दु प अ) ।

दुलारित प्र, म पु (स न) दे 'दुराचार' ।
वि, दे 'दुराचारी' ।

दुलारा, वि (हि दुलार) दे 'लान्ना' ।

दुशाटा, म पु (फा) दिशाट ।

दुसमन, स पु (फा) शड, अरि (पु) ।

दुसमनी, म स्त्री (फा) शडता, वीर्य ।

दुष्कर, वि (स) दुर्माय, कठिन, विकट,
वष्टमाप्य ।

दुष्कर्म, स पु [म नन् (न)] कु, नार्थ
कृत्य, पाप, अपमं, दुष्कृति (स्त्री) ।

दुष्काल, म पु (स) कु, काल ममय २ दे
'दुभिक्ष' ।

- दुष्कल, म पु (म न) नीच हीन-कु, कुल वश ।
दुष्कृत, म पु (म न) दे 'दुष्कर्म' ।
दुष्ट, वि (स) खल, शठ, पाप, दुःखान् अमर,
नीच, दुष्ट, दे 'दुरानारी' ।
दुष्ठा, म स्त्री (म) दौर्ब्य दौरत्य,
कुचेष्टा पाप, दुर्वृत्त दे 'दुरागर' ।
दुष्प्रकृति, म स्त्री (म) दुस्स्वभाव दुःशीलम् ।
वि, दुःशील दुष्टस्वभाव ।
दुष्प्राप्य वि (म) दे 'दुष्म' ।
दुष्यन्, म पु (म) पुण्यशीयन्पवित्रोप
शक्तुत्पत्ति ।
दुस्तर, वि (म) दुःतरं दुर्लभनीय ० कठिन
दुष्कर विग्रह ।
दुस्मह, वि (म) दुःपह अमय अमहनीय ।
दुस्माप्य वि (स), दे 'दुस्माप्य' ।
दुहना, कि स (म दोहन) दे 'दोहना' ।
दुहरा, वि, दे 'दोहरा' ।
दुहाई, स स्त्री (हिं दुहना) दोहन, भृति
(स्त्री) -भृत्या ।
दुहाई, स स्त्री (स द्वि+आह्वय >) दे
'डोडो' २ आत्मनागार्थ आत्मान-आकारण
सबोधन ३ शपथ ।
—देना, मु, स्वरक्षार्थ आह्वे (भ्वा प अ)
आ-कृ (प्रे) ।
दुहाना, कि प्रे, व 'दोहना' के प्रे रूप ।
दुहित्वा, सं स्त्री [स दुहित्वा (स्त्री)] दे
'पुत्री' ।
दूकान, म स्त्री, दे 'दुकान' ।
दूज, म स्त्री (म द्विर्नधा) शुक्ला कृष्णा वा
द्वितीया भिवि (स्त्री) ।
—का चाँद, मु, दिवाप्रदीप, दुर्लभदर्शन ।
दूत, स पु (सं) वार्ता मदेश, हर, सदिष्ट
कथन, राज-दूत प्रतिनिधि २ भणिवि,
च (चा) र, गृहदूत ।
दूती, म स्त्री (म) मचारिका, दूति (नी) का,
शमलौ, बुष्ट (द्वि) नी, सारिका २ वार्ता
संदेश, हरी ।
दूध, सं पु (म दुग्ध) क्षीर, पवन
(न), स्तन्य, ऊषम्य, उषन्य, बाउनीवन
० वृष-क्षीर-रस ३ (गौ का) गौ-दुग्ध
रस, गव्यम् ।
- का पानी, स पु, आमिक्षामस्तु (न),
मीरट ।
—की जग, स स्त्री, दुग्धपेन, शार्कर,
शार्कर ।
—पिलाई, स स्त्री, दे 'दाई' ।
—पूरा, स पु, मपस्तनी भगमनानी (द्वि) ।
—रतन, म स्त्री, *सस्तन्या, धात्रीपुत्री,
धात्रेयी स्तनधयी ।
—भाई, म पु *मस्तन्य, धात्रीपुत्र, धात्रेय ।
—मुँहा, वि पु स्तनधय, शिशु ।
स्तन-शाय, यथिय प [—मुँही (स्त्री)] ।
—उगलना या डालना, मु, (शिशु) दुग्ध
उत्था (तु प मे)-उत्थन (भ्वा प से) ।
—का दूध, पानी का पानी, मु, न्याय,
नर धम ।
—की मस्त्री को तरह निकाल फेंकना, मु,
दुग्धमङ्गिकावत् निस्त (प्रे), अविमृश्यैव
निकम् (प्रे) ।
—क दोस्त न टटना, मु, सैशवे वतमान ।
—लुडाना या बडाना, मु, स्तय हा (प्रे,
हापरानि)-त्यन् (प्रे) ।
दूधो नहाना गूनी फलना, मु, धनमताने कर्षं
(भ्वा आ से) ।
—पिलाना, मु, स्तन-स्तन्य पा धे (प्रे, पाय
यति, धापयति) दा ।
—फटना, मु, (अम्लादियोगेन) दुग्ध विहृ
(कर्म) जथवा नीरक्षीरे वि विलय (दि प अ) ।
दूधिया, वि (हिं दूध) शुक्ल, श्वेत,
दुग्धवर्ण ।
—पत्थर, म पु (स) *दोग्धप्रस्तर, श्वेत
गन्तरभेद ।
दूना, वि (स द्विगुण) द्विगुणित ।
दूत, म स्त्री (मं दूर्ता) भागनी, हरिता,
अनगा ।
दूवदू, कि वि, (स्ति दो वा का स्वरु)
मुखागुणित (अव्य), समुखम् ।
दूने, सं पु, दे 'दूवे' ।
दूमर, वि (स दुमर >) कठिन, दुस्माप्य ।
दूरदेश, वि (फा) दे 'दूरदर्शी' ।
दूरदर्शी, म स्त्री (फा) 'दूरदागला' ।
दूर, कि वि (म दर) दूरे, आरात् (अव्य),

वि, दूरत । वि, दूर दूरस्थ, विप्रकृष्ट, अंतर
वर्तिन, दवीयस् ।

—दुराज, वि (का) सु-अनि दूर दूरस्थ ।

—दुरांक, वि (स) दे 'दूरदर्शी' ।

—दुरांन, स पु (सं) पण्डित, भीमव,
बुद्धिमत्, प्राज्ञ २ गृध्र, बज्रतुट ३ दूरवी
क्षण, दूर-दशन-बन्धम् ।

—दुरांशिता, म स्त्री, (सं) दूर-दीर्घ, दृष्टि (स्त्री)
दक्षिण, बुद्धिमत्ता, अग्रनिरूपण, दूरदर्शनम् ।

—दुरांशिता, वि (स शिन्) दूर दोष-अग्र, दृष्टि
दक्षिण-दशक, बुद्धिमत् ।

—दृष्टि, म स्त्री (स) दे 'दूरदर्शिता' ।

—दूरी, स स्त्री (का) दूरवीक्षण, दूरदश
कयत्रम् ।

—दूरता, वि (म तिच्) दे 'दूर' वि ।

—दूरी, वि (म मिन्) दूरदेशीय २ विदे
शीय ।

—दूरी, म पु (म न) दे 'दूरवीन' ।

—दूर्य, वि (स) दे 'दूर' वि ।

—करना, मु, दूरी-शुभ्र २ पदात्-अधिका
रात् अवर्द्धन्तु अन् (प्रे) ।

—भागना या रहना, मु, दूरी-शुभ्र २ स्था (भ्वा
प अ), सगति परिहृ (भ्वा प अ) ।

—दूरी, अव्य ओहि-अपगच्छ (लोट्) ।

—दूरी, मु, दूरी-शुभ्र २ नश (दि प वे) ।

दूरी, म स्त्री (म दूर >) दूरता-स्व, विप्रकर्ष,
दूर २ (स्थान) अंतर, अंतराल, अप्चन्
(पु) भूमि (स्त्री) ।

दूरी, सं स्त्री, दे 'दूर' ।

दूरदा, म, पु (स दुर्लभ >) वर, परिणेत,
पाणिमाहक, परिग्रहोत् (पु) ।

—दूरहन, म पु, वधूरी (डि) ।

दूरक, म पु (रु) अपवादक, परिवारक,
अभियोगिन, अभियोगवृ, श्लेषागपक २ दृष्ट,
दुष्ट । वि दोष-पाप-जनक ० अपराधिन्,
दोषिन् ३ निश्च, कुम्पित ।

दूरण, म पु (म न) दोष, अवगुण, दुर्ब
मन (म पु) रावगभ्रानुविनेय ।

दूरित, वि (म) मदीय, दोषिन्, कल्पवन्
० (मिथ्या) निरितकलित-अभियुक्त ।

दूरिता, वि (हि दा) द्वितीय [-या (स्त्री)]
२ अन्य, पर, अपर, अपरिचित ।

दूरी दिने, मि वि, पराहे, परेषु अन्येषु
(अव्य) ।

दूसरी माँ, सं स्त्री, विमातृ (स्त्री) ।

दृक्, दृग, सं स्त्री (स दृश) दे 'आँव' २
दृष्टि (स्त्री) ।

दृग्निप, म पु (सं) विधाक्त, नेत्र नयन,
भर्षभेद ।

दृग्नुत्, म पु (म न) क्षितिन्, दिगन्त ।

दृष्ट, वि (म) प्रगल्भ, दीक्षित्यद्वय ० कर्कर,
कीरन, कर्कर ३ मबल, बलवन् ४ स्थापिन,
स्विर ५ प्रुव, अविचल ६ आयहिन्, सनिर्वैध ।

—प्रतिज्ञ, वि (म) प्रतिज्ञपालक, स्विरप्रतिज्ञ,
मत्य, मंध अभित्तमगर ।

—मुष्टि, वि (स) कृपण, मितपत्र ।

दृढता, सं स्त्री (सं) प्रगाढता, दीक्षित्याभाव
० मूर्ध्व, अवलम्ब, स्थिरता ३ आयह
निर्वैध ।

दृढाग, वि (सं) बलवन्, शक्तिमन्, दृढरेह,
दृष्टपुष्ट । [-गी (स्त्री) =शक्तिमती] ।

दृश्य, वि (सं) दृग्गोर, नेत्र-दृष्टि, विषय
माह २ दर्शनीय, अवलोकनीय, सुंदर । स
पु (म न) दृष्टि, गान्धर पथ विषय
० रूपक, नाटक ३ दे 'तमाना' ।

दृश्यमान, वि (सं) दृश्यमाण अवलोक्यमान ।

दृष्ट, वि (स) वि-अव, लोहित, वि, ईक्षित,
निरूपित, लक्षित २ ज्ञात, प्रकट ।

दृष्टान, म पु (सं) उदाहरण, निदर्शन २
अर्थोद्धारमेद ।

दृष्टि, म स्त्री (म) दृकशक्ति (स्त्री), नेत्र,
नयन, ज्योतिम् (न) २ दृकपात, अवलो
चन ३ आशा ४ विचार ५ आशय, अभि
प्राय ।

—दृष्ट, म पु (म दृष्टदृष्ट) प्रदृष्टिका
० गृदाधकविना ।

द्वेषना, कि मं (म दृग) दृग
(भ्वा प अ) वि-प्र, दृग् (भ्वा आ
मे), अव आ वि श्लोक (भ्वा आ म, सु),
आलोच (भ्वा आ स, लु), निरूप
निवर्ण-लभ् (लु), भन् (लु आ मे),
२ अव-निर्-परि दृष्ट ३ अन्विष (दि प म),
४ गृह् (भ्वा प मे), रक्षा कृ ५ विचर्
(प्रे) ६ अनुम् ७ पद् (भ्वा प मे)

८ मनुष्य (म्रे) । सं पु, दर्शन, विवेचन, वीक्षण, निरूपण इ ।

—भालना, सु, निरीक्षण, परीक्षण, निभालन निर्वाणनम् ।

—सूचना, सु, बोधन, वेदन परि विज्ञानम् । देखते देखते, सु, सम्पक्षे २ सर्पा इति ।

देखने में, मु, आपात, ब हान, प्रत्यक्षत २ आकृत्या, आवारेण ।

देखने योग्य, वि, दे० 'दर्शनीय' ।

देखनेवाला, स पु, दर्शन, द्रष्ट (पुं), वीक्षण निरूपण इ ।

देखभाल, देखभाली, सं स्त्री (हि देखन + भालना) कार्यदर्शन, अवैक्षणं निरीक्षणं पयवैक्षणं २ दर्शन, साक्षात्कार ।

देखरेख, सं स्त्री (हि देखना + स प्रेक्षण >) दे 'देखभाल' (१) ।

देखादेखी, स स्त्री (हि देखना) दर्शन, विलोकनम् । कि वि, अनुकृत्या, अनुसृत्या, गतानुगतिकतया (सब तृतीया प्रकवचन) ।

देखा हुआ, वि, दृष्ट, निरूपित, निर्वाणन, निभाषित ।

देख, सं स्त्री (फा) पिठर २, बृहत्स्थाली ।

देखचा, स पु (फा) स्थाली, पिठरक इम् ।

देखची, स स्त्री (फा देखना) उरवा, पिठरी, लघुरथाली ।

देखीप्यमान, वि (स) अत्यत मत्त भाम मान-भ्रान्तमान-घोषमान, अनि, -तोऽस्त्विन्-भासुर ।

देन, स स्त्री (हि देना) दान, वितरण २ प्रीति, दानं, उपहार, उपायन, प्रदत्तवस्तु(न) ।

—दार, सं पु (हि + फा) दे 'जणी' ।

—लेन, सं पु, कुमीर, वीमीष, वृद्धिजीवन २ दानादान ने (रि) ।

देना, वि स (मं दान) दा (जु उ अ), दा (भ्वा प अ, यञ्जि), उपवि-स्य (तु प अ) विश्रण् (चु), दद (भ्वा आ मे) ऋ (म्रे, अर्पयति) २ (धाप अदि) प्रह (भ्वा प अ), चाहन् (अ प अ) ३ (क्तिवाड आदि) (अ) पिधा (जु उ अ) । सं पु, अर्पण, प्रविषादन, विसा णनं, ददनं, उर वि मर्जनं, दे 'दान' (१०) ।

देने योग्य, वि, देव, दानीय, दातव्य, विश्राण नीय, अर्पणीय, दानार्ह ।

देनेवाला, सं पुं, दात (पु), त्यागित्, द, प्रद-दायन-दायित् (उ सुप्त, द-दाय ३) २ दे 'दाना' ।

दिया हुआ, वि, दत्त, अर्पित, विसृष्ट, विश्राणित ।

दे मारना, मु, दे 'पटरना' ।

देय, वि (मं) दे 'देने योग्य' ।

देर, स स्त्री (फा) विलम्ब, अनिकाल, काल-अतिपात-क्षेप-यापन-व्याक्षेप २ समय, काल ।

—करना या लगाना, वि अ, वि-लम्ब (भ्वा आ मे), काल अतिपत् (म्रे)-व्याक्षिप् (तु प अ) ।

—तक, कि वि, चिराय, चिर यावत्, चिर कालान्तम् ।

—से, कि वि, चिरात्, चिरेण, विलम्बेन, विलम्बात्, चिर, कालेन-कालात् ।

—होना, कि अ, विलंब-व्याक्षिप् (कर्म) बला अनिकम् (भ्वा प से), विलयी जन् (रि आ मे) ।

देरी, स स्त्री, दे 'देर' (१-२) ।

देव, स पु (फा) दैत्य, दानव, राक्षस ।

देव, सं पु (स) देवता, दैवत, अमर, अमल्यं, सुर, अस्वप्न, दिविषद् दिवीकम् (पुं) निर्जर, विबुध, बृन्दारक, सुमनम् (पु) २ ईश्वर ३ मिश्र, आर्ष, पूज्यपुरुष ४ मेघ ५ शानेद्रिय ६ ब्राह्मण ।

—गिरि, स पु (स) रैवतकपर्वत २ नगर विशेष ।

—दार, सं पु, (स पु न) दे 'दियार' ।

—दाम्नी, स स्त्री (स) बस्या, वेशवनिता २ मन्दिर-देव, नर्तरी ।

—देव, सं पु (स) ईश्वर २ इन्द्र ।

—नागरी, स स्त्री (से) लिपिविशेष ('अ' मे 'ट' तक अक्षर) ।

—पूना, स स्त्री (स) प्रतिमापूजनं २ ईश्वरार्चनम् ।

—भूमि, स स्त्री (म) स्वर्ग, नाक ।

—मन्दिर, सं पु (स न.) देव, गृह भवर्न-स्थान आलय ।

—लोक, स पु (स) स्वर्ग ।
 —चाणी, स स्त्री (स) देवभाषा, मस्कृतम् ।
 देवकी, स स्त्री (म) श्रीकृष्णचन्द्रचननी,
 देवकात्मजा ।
 —नन्दन, स पु (म) श्रीकृष्ण ।
 देवता, स पु (स स्त्री) दे देव' (१३, ५, ६) ।
 देवत्व, स पु (स) सुरत्व, अमरत्व ।
 देवन, स पु (स) अक्ष सार, शार,
 पाशक । (स न) कान्ति दीप्ति (स्त्री)
 २ अक्षयत व्रीडा ३ व्रीडा, वितोद ४
 प्रमोदवादिनी ।
 देवना, स स्त्री (स) द्यून् २ व्रीडा ३
 शौर ।
 देवर, म पु (स) देव (पु), देवल, देवार,
 देवान, तुगागाव, पत्युरतुज २ पतिभ्रातृ
 (पु छोटा या बटा) ।
 देवरानी, स स्त्री (स देवर >) यातृ (स्त्री),
 देवरपत्नी, जा ।
 देवल, म पु (म) देवापीव, देवपूजोप
 जीविन् २ नाटक ३ रक्षितारमुनिविशेष ।
 हि, देवालय मन्दिरम् ।
 देवागना, स स्त्री (स) दे 'अमरागना' ।
 देवालय, स पु (म) स्वर्ग २ मन्दिरम् ।
 देवी, स स्त्री (म) देवपत्नी सुरागना
 २ दुर्गा, पार्वती ३ मातापती ४ पतिव्रता
 ५ पट्ट, महिषी राक्षी ।
 देश, म पु (स) जनपद, विषय, भूभाग,
 नीच्य, उपवर्तन, प्रदेश २ राष्ट्र ३ स्वानं,
 स्थल ४ रागभेद ।
 —निशाला, स पु, (स्वदेशात्) प्रनिर वि,
 वामनेनाम, प्रनाननम् ।
 —भाषा, स स्त्री (म) उपप्राप्त्ये प्रादेशिन,
 भाषा ।
 देशान्तर, म पु (स न) अन्यविपर, देश
 २ लम्बाश, देशान्तर (तुलकब्द) ।
 देशाचार, म पु (म) देश, धर्म व्यवहार -
 रीति (स्त्री) ।
 देशाटन, म पु (म न) भू-यात्रा भ्रमण-
 पर्यटनम् ।
 देशी, स स्त्री (म) देशीय) देश्य, देशिव
 स्वराग ३ उत्तर ।

देस, देसी स पु तथा वि, दे 'देश' तथा
 देशी' ।
 देसावर, म पु, दे 'दिमावर' ।
 देह, स पु (स) काय, दे 'शरीर' २ अव
 यव, अंग ३ जीवनम् ।
 —पात, स पु (स) मृत्यु (पु) ।
 देहरा, स पु (म देव + हि धर) देवालय,
 मन्दिरम् ।
 देहली, स स्त्री (स) दे 'दहली' २ इह
 प्रथं, देहली, दिल्ली ।
 देहस्त, देहवान्, वि (म देहवन्) दे 'देही' ।
 देहात, स पु (स) मृत्यु (पु) निधनं,
 मरणम् ।
 देहात, स पु (फा) दे 'ग्राम' ।
 देहाती, वि (फा देहात) दे 'ग्रामीण' ।
 देही, वि (म देहिन्) प्राणिन्, देहवन्,
 शरीरिन्, तनु धारिन् भूत् । म पु, (म)
 जीव, आत्मन् (पु), जीव, प्रत्यगात्मन् (पु) ।
 दैन्य, स पु (म) राक्षस, गान्ध, निशाचर ।
 —गुह, म पु (स) शुक्राचाय ।
 —पति, म पु (म) विरप्यकनिपु ।
 —माता, म पु (स तु) दिनि (स्त्री) ।
 दैव्यारि, म पु (म) विष्णु २ देव ।
 दैनिक, वि (स) प्रात्यहिक आहिन [-नी
 (स्त्री)], दिनदिन [-नी (स्त्री)]
 २ नैत्यक नैत्यक [-की (स्त्री)] । स पु,
 दे 'दैनिकी' ।
 दैनिकी, स स्त्री (म) दिन-नेतनं भूति
 (स्त्री) ।
 दैव, म पु (स न) भाग्यं, अदृष्टं, नियति
 (स्त्री), भाग्येयं, भवितव्यता, दिष्ट, प्रचन,
 विधि (पु), प्रारब्ध २ ईश्वर ३ आशाश
 यम् । वि, दिव्य, सौर, अमानुष, अपौरुष,
 एश्वर, अलौकिक (स्त्री, दे 'देवी') ।
 —गति, स स्त्री (म) दैवपटना, भाग्यकार
 २ ३ 'दैव' (१) ।
 —दुर्निपाक, स पु (स) देवनेप, शैवा
 स्योदय ।
 —योग, स पु (म) यदृच्छा, दैव, गति
 (स्त्री) -पटना ।
 —वश, वि वि (म श) देवान्, देववशात्
 दैवयोगात्, अस्मत्पु, यदृच्छया ।

देवी, वि स्त्री (म) चाकस्मिन्की, यद्दि-की
अन्वैकिकी भ्रमानुषी, नश्वरी अपाधिबी ।
देहिक, वि (म) शारीरिक कायिक-वैद्यहिक
[-नी (स्त्री)] ।
दो, वि (म द्वि) द्वौ (पु) द्वे (स्त्री , न)
द्वयं, द्वितय-युग्म (उ दो माम मामद्वय इ) ।
—अञ्जी, म स्त्री, इनाणी ।
—अर्था, वि द्वयथ द्वयथरु शिष्ट २ सद्विथ ।
—आव मं पु (फा) *द्रवापम् ।
—गला, म पु (फा) मकरज मिश्रण,
विनात मासिक, वपमर ।
—चद्र, वि (फा) द्विगुण द्विगुणित ।
—चित्ता, वि दे 'दुचित्ता' ।
—नल्ला, वि दे 'दुमनिला' ।
—नारा, मं पु *द्वितार वपभेत् ।
—धारा, वि दे 'दुधारा' ।
—नार्ली, वि, द्विनार्ली (मुमुनी आदि) ।
—पहर, न स्त्री मध्याह्न मध्याह्नकात्र,
मध्य (ध्य) दिन, उदिन ।
—पत्त, वि, द्विराहृत, द्विरावन्ति, द्विगुण,
द्विगुणित ।
—पहर का, वि, माध्याह्निक [-की (स्त्री)]
माध्यदिन [-नी (स्त्री)] ।
—पहर पहिले, क्रि वि, अर्वाह मध्याह्नार
(अ म = A M) प्राणे, पूवाणे ।
—पहर ढले, क्रि, वि, पश्चान्माध्याह्नार (प म
= P M), अपराह्णे, विहले ।
—पाया, वि, द्विप(पा)द, द्विपाद(पु) (मनुष्य) ।
—बारा, क्रि वि (फा) द्वि, द्विवार, पुन
(सत्र अव्य) ।
—भापिया, म पु, दे 'दुभापिया' ।
—महाला, मन्त्रिला, वि, दे 'दुमन्त्रिला' ।
—मानी वि, दे 'दोअर्था' ।
—मुहा, वि, द्विमुप, द्विदत्त, २ छलित्,
दाभक्त । म पु, द्विमुप मर्प, मपभेद ।
—रगा, वि, द्विरग, द्विवर्ण २ दाभिक ।
—रगो, म स्त्री दम्भ, द्वैध, प्रगायणा ।
—राहा, म पु, द्विपथ, चारुपथ ।
—ठडा, म पु, *द्विमूत्रक ।
—साला, वि, द्विवापिक द्वैवापिक (-को स्त्री)
द्विवापिक, द्विवाप ।
—सूती, म स्त्री, *द्विसूती ।

—सेरी, म स्त्री, द्विमैका द्विसेरी ।
—हृत्थड, म प, करवुगलापाल, द्विहस्तप्रहार ।
—हृत्था, क्रि वि कराभ्या हस्तद्वयेन (तु) ।
—एरु, -चार, मु, वीपथ, वनि, चित चन ।
—करना, मु, दिवा द्विमैनी कृ समागद्वयेन
वि मन (भ्वा प अ) ।
—कौडी को चीज, मु, तुच्छ मुद्र अल्पमूत्र्य
पदार्थ ।
—उडो मु, कञ्चित्-वाल गमय अप्पममय
यावत् ।
दोजग, म पु (फा) न(ना)क निरय ।
दोजग्वी, वि (फ) नारविष्, नारकीन,
नारकिर-नारक [-की (स्त्री)] ।
दोना, म पु (म द्रोग >) *द्रोग, पत्र पर्ण,
पुट पुटक ।
दोनों, वि (द्वि दो) उभौ (पु) उभे (स्त्री
न), उभय (प्राय एक या बहु में,
कगी द्विवचन मे गी), द्वौ अपि (पु), द्वे
अपि (स्त्री न) ।
दोला, म स्त्री (म) दोली, हिदोला, प्रेंल
ल-या ।
—यत्र, म पु (मं न) दे 'दोला' २ वक
मथान, यन्त्रम् ।
—युद्ध, म पु, (स न) सद्विग्ध परिणाम
युद्धम् ।
दोलायमान, वि (स) इतन्त विचलत्
(शकत्), प्रेंलत् (शकन्त) ।
दोष, स पु (म) न्यूनता, विकलता, त्रि,
विकार २ पाप, पातक ३ लाठन, कलक,
अभियोग ४ अपराध, दोष ५ रमदोषादय
कान्यदोषा (सा) ६ प्रदोष, रतनीमुपम् ।
—लगाना, क्रि स दुष (प्रे, दूषयति),
अभियुज (ग आ अ, चु), कल्कयति
(ना धा), दोष क्षिप (तु प अ)-आरुह
(प्रे, आरोपयति), निद्र (भ्वा प मे) ।
—कर, वि (म) अनिष्ट अहित हानि, कर
कारिन्-कार ।
—घ्राही, वि (म द्विन्) दुष्ट, रक्त, दुचन ।
—न, म पु (म न) वातपित्तकफनाशक
मौषधम् ।
—ज्ञ, वि (म) प्राध, विद्वम् ।
—त्रय, स पु (स न.) वातपित्तकफदोषा,
दोष-वित्र त्रयी ।

—दृष्टि, वि (स) दोषी कृत्वा, निरुक्त, पुरो भागिन, उत्रान्नेपिन् ।

दोषी, वि (स दोषिन) स्तोत्र, दोषवत्, अपराधिन्, प्रमादिन् २ पाप, धापिन् ३ जमि युक्त, दण्ड कृत्वापराध ४ व्यनक्ति कुमार्ग गामिन् ।

दोस्त, म पु (का) मति (ए), दे मित्र ।
दोस्ताना, स पु (का) मक्ति, दे दोस्ती, म स्त्री 'मित्रता' ।

दोहता, म पु, दे 'दोहिट्री' ।

दोहती, स स्त्री, दे 'दोहिट्री' ।

दोहद, स पु (म पु न) गामिण्यमित्यप, लात्सा, शब्दा, दोहद, दोहदम् ।

—उती, सं स्त्री, लात्सावती गामिणी, भद्रात् (स्त्री) ।

दोहन, म पु (म न) स्तन्य-उद्यस्य उधन्य नि स्नायन निष्पन्न (निष्कारण ० दे 'दोहनी' ।

दोहना, क्रि स (स दोहन) दुह (अ प अ, द्विरमत्र) स्तन्य निस्सृ-सु (प्रे) । म पु, दे 'दोहन' ।

दोहनी, स स्त्री (स) दोहन-दुग्ध, पात्र, दोहन, दोह, पारी, लेपनम् ।

दोहने योग्य, वि दोष्य, दोष ।

दोहनेवाला, म पु, दोहृ (पु), दोहक ।

दोहर, म स्त्री (हि दो) *द्विरसौ ।

दोहरा, वि पु (हि दो) द्विराहुत, द्विरागत २ द्विगुण, द्विगुणित ।

—करना, क्रि स, द्विपुटी कृति व्याहृत (प्रे), द्विगुण्यनि (ना धा) २ द्विगुणी कृ, द्विगुण यनि (ना धा) ।

दोहराना, क्रि स (हि दोहरा) पुन द्वि क्व (चु)-मन्-वत् (भ्वा प से)-यात् (भ्वा प अ) २ मुट् द्वि कृ या श्चुम्ब्या (भ्वा प अ) आ-पर (भ्वा प म), अभ्यम् (दि प से) ३ पुन द्वि रूप (भ्वा आ से) क्विन् (प्रे), सञ्चर (प्रे) ।

दोहराव, म पु (हि दोहराना) पुनरीक्षण, मशानन ० पुनक्ति (स्त्री), पीतकल्प, पुनर्-वचन-वाद ।

दोहा, म पु (हि दो) हिदी-भेदे ।

दोह, सं स्त्री (हि दो-ना) धावनं पनायन, दवण, विद्व, इत, गमनं-गि (स्त्री), २ आत्रमण (३) गति उद्योग-वृद्धि, नीमा ।

—धूप, स स्त्री, धोर कठोर, प्रथम परिश्रम उद्योग-उद्यम ।

—धूप करना, मु, अत्यत आयम परिश्रम (दि प से) प्र-यत् (भ्वा आ से) ।

दोहना, क्रि अ (स धोरण) धोर (भ्वा प से) दु (भ्वा प अ) धाव् (भ्वा प से) दूत मवेग शीघ्र गम् २ सतत-अत्याधिक प्रवृत् (भ्वा आ से) परि-श्रम् (दि प से) ३ महत्ता प्रवृत् (भ्वा आ से) ४ पलाय (भ्वा आ से) । स पु, दे 'दोह' ।

दोहनेवाला, म पु, धावक, धोरण, शीघ्र गामिन् ।

दोहाना, क्रि स, अ 'दोहना' के प्रे रूप ।

दोहर दोहरा, म पु (अ-हि) आधिपत्य, शासन, प्रभुत्व, स्वामित्व, इष्टत्व वश शम् ।

दोहरा, म पु (अ दीर) पयन्, परिश्रमण २ प्रवृत्त अन्त-व्रमण-गमन ३ अधिका रिणो निरीक्षणार्थे भ्रमण ४ रोगादे आहुति आर्जनं सामयिकारुमणम् ।

—करना, क्रि अ परिश्रम-पयत् (भ्वा प से), स्वमन्-निरीक्षितु परिश्रम् ।

—सुपुंद् करना, मु, अभियोग ददापिकरणिर् पात्व प्रेप् (प्रे) ।

दोहक्य, म पु (सं न) दुष्टता, गन्त्वम् ।

दोहने, म पु (म न) दुपन्ता, दुष्पा ।

दोहने, म पु (म न) दुर्बलता, क्षामता ।

दोहने, म पु (म न) दे 'दुर्भाग्य' ।

दोहल, म स्त्री (अ) धन, मयद (स्त्री) ।

—गाना, म पु (अ-फा) गृह आ नि-श्रम ।

—मद, वि (अ-फा) गिन, मयत्र ।

—मदो, म स्त्री (अ-फा) धना-भना, मयत्रि (स्त्री) ।

दोहरा, म पु (म) दे 'दोहरा' ।

दोहरा, क्रि (म) शीघ्र-नी-गुद, वृत्त वर्ण-वर्णीय ।

दोह्य, म पु (म न) दुष्पा गन्ता, दुपन्ता ।

दोहयति, सं पु (म) दुष्पन्तुरा भवत ।

दोहिट्री, म पु (म) दुहित, पुत्र-जनय ।

दोहिट्री, म स्त्री (म) ददित, पुत्री वनदा

दु, स पु (म न) दिन २ आवाज स
 ३ स्पर्श । स पु, अग्नि ।
 —लोक, स पु (म) स्पर्श ।
 दुनि, स स्त्री (स) कानि-शीपि (स्त्री),
 आभा, प्रभा ३ लाक्षण्य, सौन्दर्य, शोभा
 गवे (स्त्री) ३ किरण, रश्मि (पु) ।
 दुनिमन्त, वि (म-मन्) कानिमन् दीसिमन्,
 भासुर, भास्वर ।
 दूत, म पु (म पु न) अज्ञपती, वैतक, पण ।
 —कर, म पु (म) कितव, धूत दुरादर
 अज्ञदेविन्, दूतकृत् ।
 —कार, म पु (स) नभि (स्त्री) न २ दे
 'दूतकर' ।
 द्योतक, वि (म) प्रकाशक द्योतार, उद्भा
 मन् २ शायक, श्यापक ।
 द्रव, म पु (स) द्रवण, स्ववण, क्षरण, गलन,
 वहन, अभिनि, स्य (ध्व) दन २ स्र (स्त्री)
 व, प्रवाह, प्रभव, धार रा ३ धावन,
 पलायन ४ वेग, नव ५ आमव ६ रम
 ७ परिवाह ८ द्रवत्व ९ द्रव, द्रव्य पदार्थ ।
 वि, तरल, द्रव, प्रवाहिन, २ आर्द्र, विउन्न,
 उन्न, ३ विलीन, विद्रुत, द्रवीकृत ।
 द्रवीभूत, वि (स) दयादिभि आर्द्राभूत
 अभिपदित, दयाकु, कृपाहु । २ विलीन,
 विद्रुत ।
 द्रवव, म पु (म न) द्रवता, द्रवभाव,
 प्रवाहधर्म, रमता, तरलत्वम् ।
 द्रव्य, स. पु (स न) पदार्थ, वस्तु (न)
 २ भूम्पादयो नव पदार्था ३ उपादानकारण,
 सामग्री ४ धन, वित्तम् ।
 —संचर, मं पुं (मं) धनमपक ।
 द्रव्यार्जन, मं पु (स) धनोपाजन, वित्तार्जनम् ।
 द्राक्षा, स स्त्री (स) रमाळा, मियाळा,
 गुच्छला, दे 'दाय' ।
 द्रुत, वि (म) विलीन, विद्रुत, द्रवी हुन
 भूत, अवदाणं २ शीघ्र, मित्र, त्वरित, सत्वर
 ३ पलायित । वि वि, आशु, क्षणिति ।
 —गामी, वि (स निन्) आशुग, शीघ्रग
 गिन्, द्रुतगति ।
 द्रुम, स पु (म) पादप, तर (पु), वृक्ष ।
 द्रोण, म पु (म पु न) प्राचीनपरिमाण
 मेर (४ सेर, १६ सेर वा ३२ सेर) पट,

कल्श, उन्मान, अर्चन, उत्सव । स पु
 द्रोणाचार्य २ वाष्टकल्श ३ द्रुममयो रथ
 ४ काशक, कृष्णद्रोण-वृक्ष, काक ५ दे
 दोना' ६ जीरा ।
 द्रोह, स पु (म) अहित-अनिष्ट, रितन
 वेर, वि, द्वेष, अपचित्रीया विधामा, द्रव्य
 वर, अहित-अनर्थ, इच्छा ।
 द्रोही, वि (म द्रोहिन्) अहित अनिष्ट-अनर्थ,
 नितक चिकीषक, मत्सरिन, अभ्यसुषक ।
 द्रुद, म पु. (म न) मिथुनम् ।
 द्रुं, द्रुं, म पु (स द्रुं) द्वय, द्वितय, युगल,
 युग्म, युग, यगन्, युत्त २ मिथुन, जाया
 पत्नी, दपनी ३ परस्परविरोधिपदाधौ (उ.
 शीत-उष्ण, सुरन्दु गह) ८ रहस्य ९ कल्ह,
 उपद्रव ६ द्रुद्रुद ७ सशय ८ सश्रम,
 ममोह ९ वष्ट । स पु, सामामभेद (स्त्री) ।
 —चारी, स पु (स चारिन्) दे 'चकवा' ।
 —युद्ध, स पु (म न) मल्ल-द्वयार,
 युद्धम् ।
 द्वादशी, म स्त्री (म) शुक्ला कृष्णा वा
 द्वादशी तिथि (स्त्री) ।
 द्वापर, स पु (स पु न) एतावद्युग
 (८६४००० वर्ष) २ मदेह ।
 द्वार, स पु (स न) द्वार (स्त्री) प्रति
 (स्त्री) द्वार २ उपाय, साधनम् ।
 —चार, म पु (म द्वाराचार) वधुगृहद्वारे
 करणीया विशिष्टरीति (स्त्री) ।
 —पाल, स पु (म) द्वा(स्व), द्वारस्व,
 द्वारिक, द्वैवारिक, प्रति(स्त्री)द्वार (—री स्त्री) ।
 द्वार(रि)का, म स्त्री (म) द्वारा(र)वनी,
 तापविशेष ।
 द्वारा, अव्य (स) द्वारेण, माधनेन, कारणेन,
 हेतुना । (हि प्राय इमका अनुवाद एताया
 ने करते हे) ।
 द्वि, वि (म) दे 'दो' ।
 —कार, म पु (स) काक, वायस
 २ कोर, चक्र ।
 —गुण, वि (म) द्विगुणित ।
 —पद, वि (म) द्विपद, द्विवरण ।
 द्विज, वि (म) द्विजात, द्विरुत्पन्न, द्विजन्मन् ।
 म पु, बाह्यपञ्चनियवैश्या २ एग, अज्ञ
 ३ दत्त ४ प्राज्ञण ५ चद्र ।

—नाम, म पु (म) इद २० ।
 —पनि, म प (म) ब्राह्मण ० गण्ट
 ३ चद ।
 —प्रिया, म स्त्री (स) सोमन्ता ।
 —बपु, स पु (स) कर्महीनो दिन ।
 —रात्र, म पु (म) ब्राह्मण २ चद ।
 द्वितीय, वि (स) द्वितीय यथा (पु न
 स्त्री) ० गौण अवर ।
 द्वितीया, स स्त्री (म) शुक्ला कृष्णा वा
 द्वितीया विधि (स्त्री) ।
 द्विधा, अव्य (म) प्रसारद्वयेन, द्विप्रकार
 २ द्विभागश (अव्य), द्विराग्यो (मतमी) ।
 द्विविध, वि (स) द्विप्रकार्क । वि वि दे
 'द्विधा' ।
 द्वीप, म पु (म पु न) नलपठितभूमि
 (स्त्री) ।

द्वेष, म पु (स) वैर, शत्रुता मापन्त्य,
 विरोध, द्वेषभाव ।
 द्वेषी, वि (म विन्) विरोधिन्, वैरिण
 अर्थात्, विपक्ष । म पु, अरि, शत्रु, रिपु
 देह ।
 द्वैत, म पु (म न) द्वित्वं, द्विता, द्वैत, द्वैत
 २ द्वैतवाद (दर्शन) ३ वेदभाष्य ।
 —वाद, स पु (म) नीकमक्षयत्ववाद
 २ देहदेहिपृथक्त्वनिदान ।
 —वादी, स पु (म दिन्) द्वैतिन् ।
 द्वैधीभाव, म पु (म) मशय निश्चय
 मत २ दम ३ उपायविशेष (रात्रनीति) ।
 द्वेषयन, म पु (म) श्रोत्रेदन्त्याम् ।
 द्वयणुक, म पु (न) परमाणुद्रव्यामर
 द्रव्यम् ।

घ

घ, देवनागरीरूपमालयाणोन्निशो व्यवनर्ण
 प्रकार ।
 घघला, म पु (हिं घग) दम, कपट, माया ।
 घंघा, म पु (स घनघान्य >) आनीव,
 आ-उप नीविना, जीवभावन, वृत्ति (स्त्री)
 २ उच्यते, व्यवसाय ।
 वाम—, म पु, दे 'धधा' ।
 गोघर—, म पु, मोहर आतिजनन,
 व्यापार ।
 घँसना, वि अ (म दशन >) आग्र विश्
 (तु प अ) निविश (तु आ अ), निर,
 भिद् (रु प ज), व्यभू (दि प अ),
 दे 'गन्ता' ।
 घँसना, वि स, व 'धंसना' के प्रे रूप ।
 घँसाव, म पु (हिं घँसना) नि प्रवेग
 वेशन, वेध धनम् ।
 घक, म स्त्री (अनु) इद्वयइद्वय-प,
 र्थद स्फुरण ० हस्तघशब्द ।
 घक, म स्त्री (देश) इहान्-शा लुपुका ।
 घकधराना, वि अ (अनु) द 'धकराना' ।
 घकेलना, वि म (हिं घका) (वरार्थिनि)
 प्रणुदप्रेरप्रमन् प्रमृ (प्रे) प्रनु (तु) ।
 घकेलू, म पु (हिं घकान्ना) प्रणोत्त्र,
 प्रसादक, प्रेत्क, प्रचलन, अपप्र-सारण ।

धकमप्रका, म पु (हिं धका) अन्योन्यपर
 स्पर्, ममन्, समागत-मरपण, अभिमपान ।
 धका, म पु (अनु धक अवका म धक=नाश
 करना >) अपमारणणा, प्रचालनना,
 प्रेणा, प्रचोत्तना, मरपं, आपान, ममन्
 ० मनाप, क्लेश ३ आपन् विपद (स्त्री) ।
 —गना, वि अ, अपमार् प्रे प्रमन् प्ररोद
 (उर्म) ।
 —देना, वि म दे 'धकेलना' ।
 —लगा, मु, विपदा अभि-उप-हृत् (कर्म) ।
 धक्का, म पु (अनु) लुपु प्रहा आपान,
 दे 'धका' ।
 धज, म स्त्री (स धज >) अल्पिया,
 म ना, भूषा ० आहार, आरुति (स्त्री),
 छदि (स्त्री) ३ हात्रभाषी (दि) ४ वतर्न,
 हीन् ।
 धनीला, वि (दि धन) दे 'धनीया' ।
 धनी, म स्त्री (म धनी) पञ्चम्य-गन् पडी
 ० पञ्चमर्, चीरम् ।
 —धन्विषो उहाना, मु गिद् (प्र), मंन्
 (तु) ० निर्दय निष्ठुर वीर प्र (भ्वा प
 अ) हन् (म प अ) ।
 धडग, वि (हिं धक+ग) नग्न, दे 'नग' ।

धड, स पु (म धर >) कवच, अपूर्ण
बल्बर, अक्षीषशरीर २ आकृतिप्रोव शरीरम् ।
घडक-कन, स स्त्री (अनु धड) हृदय हृद,
स्वदन-स्युरण-कन २ हृत्पदध्वनि (पु)
३ अश्का, भयम् ।

—धे उडक, क्रि. वि, निश्क, निर्भय, निस्म
कोचम् ।

घडकना, क्रि. अ (हि धडक) कपूर्वेप-स्वद्
(भ्वा आ मे) स्युर (तु प से) ।

घडका, स पु, दे 'धडकन' ।

घडकाना, क्रि. म व 'धडकना' क प्रे रूप ।

घडधड, म स्त्री (अनु) धडधड्य कर
हृति हृत् । क्रि. वि, मधडधडशब्द
२ निमकीनम् ।

—जलना, क्रि. अ, अत्युग्रप्रचण ज्वल
(भ्वा प मे)-दह् (कर्म)-दीप (रि आ से) ।

घडधडाना, क्रि. अ (अनु धडधड) मधधडा
यते (ना धा) धधधधशब्द जन् (प्रे) ।

घडलला, स पु (अनु धड) बडधडालार
२ पनमनम् ।

घडल्लेदार, वि (अनु + का) निभय,
निमकीच ।

घडल्ले से, मु, निभय, निस्मकोचम् ।

घडवाड़े, स पु (हि धडा) तोष्क, *धधध ।

घडा, स पु (स धर) तुला २ तोल, भर
३ पश, दलम् ।

घडाका, स पु (अनु०) धडाक् इति शब्द -
ख-ध्वनि (पु) गुरद्रव्यपतनध्वनि ।

घडाधड, क्रि. वि (अनु धड) सतन, निरतर,
अविच्छिन्न, अनवच्छिन्न २ निरतर मधट
धधधशब्द न ।

घडाम से, स पु (अनु) सधधम् ।

घडी, म स्त्री (म धर >) धी, चतु
मेरी-मन्त्री, पन, मेरी-मेन्त्री ।

घडेबडी, म स्त्री (हि का) दलवध, पश,
पन-ग्रहण-अवधवनम् ।

घट, स स्त्री, दे 'लत' ।

घटकारना, क्रि. स (अनु धर) दे 'दुनकारना' ।

घटा, म पु (अनु धर) निस्मारित, अपगत ।

—घटाना, मु, छेन अप-निम्-स (प्रे),
संघान परिह (भ्वा प अ) ।

धतूरिया, म पु (हि धूरा) धतूर-मोहन,
प्रानकीवचन ।

धत्तु (सू) रा, म पु (स. धत्तु) धुम्तूर,
रिचप्रिन, मोहन, वनक ।

धधक, स स्त्री (अनु) ज्वाला, झरका,
अचम् (न) ।

धधकना, क्रि. अ, (हि धधक) उद्-प्र-म
दाप (रि आ अ) उद्-प्र-ज्वल (भ्वा प
से), प्रपट दह (कर्म) ।

धधकाना, क्रि. म, व 'धधकना' के प्रे रूप ।

धनाय म पु (म) अजुन २ अग्नि ।

धन, म पु (म न) वित्त, द्रव्य क्य(रि)कथ,
वनु (न) अथ, शिरण्य, द्रविण, विभव,
श्रा-लक्ष्मी (स्त्री), भाग्य, मग्य-सम्पत्ति
(स्त्री) वाचन, १ (पु, रा, रायौ, राय)
२ रोधन ३ प्रेनपत्र ४ योचिह (+, गणि)
५ मूलद्रव्यम् ।

—कुबेर, स पु (म) लक्षपति (पु),
बोनीरा, सुममृद्धान ।

—धान्य, म पु (म न) धनधान्ये, अर्थाज-त्रे ।

—पति, म पु (स) कुबेर, दे ।

—हीन, वि (स) दरिद्र, अकिंचन ।

धनक, म पु (स) धनाया, धनीया ।

धनद्र, वि (म) दानशील, वदान्य । स पु
(म), कुबेर ।

धनाच्य, वि (स) अर्धधन वित्तद्रव्य-वत् ।
धनिन्, धनिक, स-वदु-महा, धन, वित्त-विभव
धन, शान्ति, सपश, ममृद्, श्रीमत्,
लक्ष्माश, धनेधर ।

धनार्जन, स पु (म न) वित्तोपार्जन, धन
सम्पद ।

धनिक, वि (स) दे 'धनाच्य' ।

धनिया, म पु (स धनिका) धन्या, वित्तुत्रक,
सुगधि (न) कुस्तुम्बरी ।

धनिष्ठा, स स्त्री (म) अविष्ठा, नक्षत्रविशेष ।

धनी वि (म-निन्) दे 'धनाच्य' २ दक्ष,
दुरात् । म पु, स्वनिन्, अधिपति २ पति
(पु) धनाच्य ।

—मानी, वि (स धनिमानिन्) धनमान,
वदुत्त ।

धन क—, वि, प्रतिशापक, स्थिर-दृढ,
प्रतिद, मत्स्य, मार-मधत्र ।

धनु, म पु (स) दे धनुष' ।
 धनुभा, स पु [स धन्व (वैर म)] दे
 'धनुष' २ दे 'धुनरी' ।
 धनुक, स पु (स धनुस् न) धनु, धन्
 (स्त्री), धनु (न) १-४, -चाप-नाभुध-
 धनस (न) ।
 धनुकी, स स्त्री, दे 'धुनरी' ।
 धनुधारी, स पु (स रिन्) धनुर्धर, धविन्,
 इषुधर, धानुष, निपगिन्, धनुर्भूत धनुष्मत्
 (पु), तुगिन् ।
 धनुर्विद्या, स स्त्री (म) शराभ्यास, इषु
 क्षिप्ति (स्त्री) ।
 धनुर्वेद, स पुं (म) धनुर्विचाररूपशास्त्रम् ।
 धनुष, म पु [स धनुस् (न)] चाप प
 दवास, आस, कामुक, कौदण्य, शरासन
 शरय, धन् (स्तो) ।
 धनेश श्वर, म पु (म) धनपति २ बुवैर
 ३ रगमेद ।
 धनेपणा, स स्त्री (म) वित्तपणा, धनाया ।
 धनेयी, वि (स-पिन्) धनेच्छुक, विता
 धिन् (पुं)
 धन्ना, स पु दे 'धरता' स पु ६ ।
 धन्य, वि (स) सौ, भाग्यवत्, पुण्य, वत्
 भाग, सु, कृतिन्, सु भग भाग्य, महाभाग २
 श्लाघ्य, स्तुत्य । वि वि साधु सुप्र, सम्भक ।
 —वाद, स पु (स) कृतकता, दशन प्रकाशन,
 उपकारप्रशम्भा २ सधुवाद, प्रशमावचनानि
 (बहु), श्लाघा ।
 धन्वन्तरि, स पु (स) सुरचिरिल्मक,
 सुश्रुतार ।
 धन्वन्, स पु (म धन्वन्) धनुस् (न)
 चाप २ मत् ३ रथम् ।
 धन्वी, स पु (म विन्) दे 'धनुधारी' ।
 धष्पा, स पु (अनु धप) न्येरे ट्वा
 २ क्षति-हानि (स्त्री) ।
 धवा, स पु (देह) दे 'दाग' ।
 धम, स स्त्री (अनु) पतनशब्द, धमिति
 ध्वनि (पु) ।
 —धे, वि रि धमितिशब्देन मह २ अस्मान् ।
 धमत्, म स्त्री (अनु) अवपतन आगत, -
 शब्द, धमिति ध्वनि (पु) २ पाल्याय
 शब्द ३ आपाल, प्रहार ४ धम्प ।

धमकला, क्रि अ (हि धमत्) धमिति शब्देन
 मह पत् (भ्वा प मे) २ न्यथ (भ्वा आ मे) ।
 धम, सु, अस्मान् महमा आया (भ
 प अ) ।
 धमकाना, क्रि म (हि धमत्ता) भी (प्रे
 भायर्था, भापयते, भीषयते), धस (प्रे)
 २ निर, भर्त्स (चु आ से), तर्त् (भ्वा
 प मे, चु आ से) ।
 धमकी, म स्त्री (हि धमत्) विभीषिता
 नयदर्शन २ तपना, भर्त्सना, अपकारि
 (स्त्री) ।
 —मे आता, सु, विभीषिकाप्रभावेण कार्यं कृ ।
 धमधमाना, क्रि अ (अनु) धमधमायने
 (ना था), धमधमशब्द च्नु (प्रे) ।
 धमनी, स स्त्री (स) धमनि (स्त्री), रत्
 व हिन्ती नाटी ।
 धमाना, म पु (अनु) धुंशुत्पादिशब्द,
 मटाशब्द, धमिति ध्वनि (पु) २ पतन
 कृत्तन, शब्द ।
 धमाचाराङ्गी, म स्त्री (अनु धम+हि चीनङी)
 कर्मण, कोणाहल, तुमुल-ल, डमर,
 भूशोम, विष्णव ।
 धमाधम, क्रि वि (अनु धम) सधमधम
 शब्दम् ।
 स स्त्री, धमधमध्वनि (पुं) २ आषा
 प्रणिमाती, उपद्रव, उन्नात ।
 धर, वि (मं) धारक धारिन्, धर्तृ, महीवृ ।
 (प्राय ममाप्तान मे, उ चक्रधर इ) ।
 धरणिणी, स स्त्री (म) धरा, भूमि (स्त्री)
 दे 'पृथिवी' ।
 —धर, स पु (म) पतन २ वक्रवृत्त ३
 दीपनाय ४ विष्णु (पु) ५ शिव ।
 —सुता, म स्त्री (सं) सीता, जानकी ।
 धरती, म स्त्री (सं धरित्री) दे 'धरणि' ।
 धरणा, क्रि स (स धरण) आनिधा (तु
 उ ल), स्था (प्रे), न्यन् (रि प म),
 गि विष् (तु प अ), आ-रूह (प्रे आरोपयति),
 धृ (च) २ ग्रह (क प म) (हस्तन)
 अव-लम् (भ्वा आ म) धृ ३ परिधा (तु
 उ अ), वम् (अ आ म) । म पु,
 धरणं, आनि, दानं यमन २ ग्रहण ३ परि
 धान ४ माग्रह उपवेश श्लाघा वा ।

—देना, पु. (उद्देश्यमिदये) माग्रह एवा
(भ्वा प अ) ।

धरवाना, क्रि प्रे, व 'धरना' के प्रे रूप ।

धरहरा, स पु (छि पुर+पर) गतोपान
गृहशिपर २ अत सोपान स्तम्भ ।

धरा, म स्त्री (स) भू भूमि (स्त्री) ।

—सल, स पु (म न) भूतल, पृथिवीतल
२ भूमि (स्त्री) ।

—धर, म पु (म) दे 'धरणीवर' ।

धराऊ, वि (१६ धरना) महार्थ, बहुमूल्य २
विशिष्ट, उत्कृष्ट ।

धरात्मज, स पु (स) मंगलग्रह २
नरवासुर ।

धराधिप, स पु (म) धरा, अधिपति अधीश,
नृप ।

धरामर, स पु (स) विप्र, ब्राह्मण, भूसुर ।

धरित्री, स स्त्री (स) पृथिवी, दे ।

धरोहर, स स्त्री (हि धरना) निक्षेप, न्याय,
दे 'अमानत' ।

धर्ता, स पु (स धर्तुं) धारक, धारयितृ २
ग्राहक ।

धर्म, सं पु (स) अभ्युदयनि श्रेयससाधने
गुणसंसमूह (अहिमा, मत्स्य, अग्निहोत्रदि)
२ इश्वर, निष्ठा-सेवा भक्ति (स्त्री), भास्तिक्य
बुद्धि (स्त्री) ३ पुण्य, परोपकार ४ सदा
चार, साधुता, मुकुन, सत्कर्मन् (न) ५ नय,
न्याय, नीति (स्त्री), न्यायिता, ऋजुता
६ पक्षपातरहित्व, समदर्शित्व ७ श्रद्धा,
भक्ति, निष्ठा ८ मत, सम्पदाय, पथिन् (पु)
९ शास्त्रविहित, कर्तव्य-कृत्य १० आचार,
व्यवहार ११ रीति-रूढि (स्त्री) १२
प्रवृत्ति (स्त्री), स्वभाव, नित्यगुण १३
विधि (पु), व्यवस्था, राजशा, कायाकार्य
नियम ।

—अप्यक्ष, स पु (स) प्राण्विवाक, अक्ष
दर्शन, धर्माधिकारिन्, न्यायाधीश, धर्माधि
कारिन् ।

—अनुसार, क्रि वि (म र) यथाधर्म, धर्मो
क्तरीत्या, धमपूर्वकम् ।

—अर्थ, क्रि वि, (स र्थ) धर्माय, पुण्याय ।

—अन्तार, म पु (न) धममूर्त (पु),
अधिधर्मात्मन् (पु), धामष्ठ, पुण्यात्मन् (पु) ।

—आत्मा, वि (म-त्मन्) धार्मिक, धर्मशील,
धर्मवत्, पुण्यात्मन्, धर्म पर परायण ।

—उपदेश, स पु (स) धर्म, शिवा अनु
शामनम् ।

—उपदेशक, म पु (म) धर्म, शिञ्ज -
अनुशामक ।

—कर्म, स पु [स र्मन् (न)] शस्त्रोप-
करणम् ।

—क्षेत्र, स पु (म न) कुक्षेत्र २ भारतकर्षम् ।

—ध्वजो, स पु (स जित्) धमध्वज, पाषट,
लिगन्ध-वृत्ति (पु, स्त्री), वक्र-वैताल,
व्रत, आय-रूप-निमित्त, दम्भधार्मिक,
मिथ्याचार ।

—करना, क्रि स, धर्म चर (भ्वा प मे),
पुण्य कृ ।

—निष्ठा, वि (म) धार्मिक, धम, पर-परायण ।

—रत्नी, स स्त्री (म) यथाशान्त्र विवाहित
नारी २ नार्या, नारी, दारा (पु बहु),
वल्गुन ।

—पुत्र, म पु (स) युनिष्ठिर २ धर्मत
कृत पुत्र ३ नरनारायणमुनी (द्वि) ।

—भ्रष्ट करना, क्रि स, धम भ्रश्नन् (प्र)-
हन् (अ प अ) २ सनीत्व ह (भ्वा प अ) ।

—राज, म पु (र) धमात्मा नृप, २ युधि
ष्ठिर ३ यम ४ जिन ।

—दाला, स स्त्री (म) *यात्रिनगृह, *नीर्थ
सेविनिवास ३ गुरुद्वार, सिन्धुसंप्रदाय
देवालय ।

—शास्त्र, म पु (म न) धर्मरहिता,
स्मृति (स्त्री) ।

—शील, वि (म) धार्मिक, धर्मात्मन् ।

—सभा, स स्त्री (स) व्यवहारमण्डप,
न्यायमभा ।

धर्मिष्ठ, वि (रु) दे 'धर्मात्तार' ।

धर्मी, वि (स मित्) पुण्यात्मन् २ मतानु
याचिन् ।

धन्, स पु (स) पति, भर्तृ २ पुत्र, नर
३ पिशाचवृक्ष ।

धवल, वि (म) श्वेत, शुक्ल २ भासुर ३
मुन्दर ।

धवला, म स्त्री (स) १-२ श्वेत शुक्ल
गौर, नारीनी (स्त्री) । वि स्त्री (स)

धुवण, गौरी, मिता । वि पु (हि) द्येत,
गौर, शुक्ल । म पु, गौर इवत्, नृप-नृपस ।

धसकना, } क्रि अ, दे 'धंसना' ।
धसना, }

धस्सर, म स्त्री, दे 'स्वारल्पिना' ।

धौधल, स स्त्री (देश धाधना) क्षीम,
विप्लव, उपद्रव २ वपट, गाथा ३ धरा,
सम्भ्रम ।

धौधली, वि (हि धाधल) उपद्रविन्, उत्सा
निन्, कुचेष्टाप्रिय २ मायिन्, वपटिन् ।
स स्त्री, दे 'धाधल' ।

धौध धौध, स स्त्री (अनु) शतनी, शब्द-
ध्वनि (पु) २ प्रवृत्तलक्ष्यनि ।

धाक, स स्त्री (सं धक् >) प्रभाव, आन,
प्रताप, शामन २ स्थिति प्रमिद्धि (स्त्री) ।

—धैधना, सु, आन प्रताप प्रवृ (स्वा प
अ) २ प्रख्यात (वि) भू ।

धागा, म पु (हि तागा) घन, शुण, त-सु (पु) ।

धाद्, स स्त्री (सं धाद् >) लुटनम्, लुटि
(स्त्री), लुठवाक्रमणम् २ निनाप, वन्दन,
रोदनम् ३ दल, गण ।

—धारना, सु, उच्चे रद् (अ प से),
आवन्द, (स्वा प से) ।

धादस, सं पु, दे 'दादस' ।

धात, सं स्त्री, दे 'धातु' ।

धाता, म पु (सं धातु) ब्रह्मन्, चतुर्भुज,
सष्ट (पु), ० विष्णु (पु) ३ शिव ।
वि, पालक २ रक्षक ३ धारक ।

धातु, म स्त्री (सं पु) अदमविकार (वैरि
वादि) २ यन्त्रिजम् (मुक्तादि) ३
शरीरभाक् पदार्थ (रसरक्तमामादि) ४
शुभ्र, बीर्यम् । सं पु (म) भूत, तत्त्वं
(पृथिव्यादि) २ शब्दमूल (भू, वृ, आदि)
३ आत्मन् ४ परमात्मन् (पु) ।

धात्री, म स्त्री (सं) अकपाली, निक्ता, उपमातृ
मातृरा, धारिणी, प्रतिपात्रिका ० जननी ३
पृथ्वी ।

—विद्या, म स्त्री (म) विदुष्यान्निष्ठा
२ मूर्तिमन् (न) गर्भमो रनिष्ठा ।

धान, स पु (सं धान्य) ब्रीहि शक्ति स्तम्भ
वरि (पु) ० (वीदा) वनम्, नीवार ।

धाना, म स्त्री [सं धाना (स्त्री वट्ट)]

भृष्टयवा २ भृष्टतण्डुला, लाजा (पु वट्ट)
३ दे 'धनिषा' ।

धानी, वि (हि धान) रूपादहरितवर्णः ।

धानी, म स्त्री (सं धाना >) भृष्ट, यवा-
गोधूमा तण्डुला २ ब्रीहिभेद ।

धान्य, स पु (सं न) अन्न, अद्य, भोग्य,
भोगार्ह, जीवसाधन २ ब्रीहि शक्ति स्तम्भ
वरि (पु) ३ चतुस्ति परिमाण ४ धन्या,
वितुन्नम् ।

—उत्तम, स पु (सं) तण्डुल ।

—राज, स पु (सं) यव ।

धाभाई, म पु (हि धाय + भार) धार्य,
धानीपुत्र ।

धाम, म पु [सं धामन् (न)] गृह,
गृह, त्र(आ)गार ० शरीर ३ स्वान् ४ पुण्य
देव, स्वानम् ।

धायन्ती, म स्त्री (सं धात्री, दे) ।

धार, सं पु (सं) वेगान् वर्ष, धारा,
आसार मपात ० भ्रमण ३ प्रदेश ।

धार, स स्त्री, (सं धारा) प्रवाह, ओज,
मदाज, धोतम् (न), प्रवाह, रय, वेला,
वेग ० उत्स, निर्गार ३ अग्नि, वीटि,
पालीनि, अणीगि (सं स्त्री), अम्रम् ।
४ दिशाश (स्त्री) ५ रेखाया ।

—दार, वि (हि + धा) तीक्ष्ण, निरिक्त,
शितधार ।

—मारना, सु, मूच् (लु), मिद् (स्वा प अ) ।

धारक, सं पु (सं) धारयित्, धर्तृ २ धणित्,
अधमर्ण ।

धारण, सं पु (सं, न) धरण, ब्रह्म हण,
अवलक-वन, वरेण ब्रह्मण धरण २ परिधान
यमन ३ स्वी भंगी, वरण ४ पालन, पोषण,
भरणम् ।

—हरना, वि स, दे 'धारना' ।

धारणक, स पु (सं) धणित्, अधमर्ण ।

धारणा, सं स्त्री (सं) धृति-व्यवस्थापति
(स्त्री) २ धारणाशक्ति, मेधा, धारणावनी
धी (स्त्री), ब्रह्मण्यमार्थ्य ३ धारण, ब्रह्मण
४ निश्चय, निणय, दृढमन-प ४ बुद्धि
(स्त्री) ५ मर्दाना, स्थिति (स्त्री) ६ योगाग
विद्या, ध्यये विद्यया स्थिरवचनं ७ मति
(स्त्री), मतम् ।

धारना, वि म (सं धारण) धृ (भ्वा उ अ, चु), गह (क प से), आदा (जु आ अ), अवल्ब (भ्वा आ मे) २ परिधा (जु उ अ) बम् (अ आ मे) धृ (चु) ४ अव-उन्-उप-म-स्तभ (क प से) अव हव-आलवत् ।

धारा, सं स्त्री (म) दे धार' सं स्त्री (१-५) । ६ परिच्छेद, विभाग, अधि कारणम् ।

—यत्र, म प (म न) दे 'पुहारा' ।

धारी सं स्त्री (म धारा) रेया, लेया रेया ।

—धार, वि (हि +फा) रे(ले)धाकित, मरेय ।

—धारी२, वि (रिन्)धर, धारक (उ दृधर इ) [-धरिणी (स्त्री)] ।

धार्मिक, वि (म) दे धर्मता' ।

धावन, स पु (म न) धोरण, द्रुतगमन

० शोधन, मार्जन ३ शोधनसाधनम् ।

धावा, सं पु (सं धावन) आक्रमण, अभि द्रव, अवहन, आपात, उपप्लव ।

—करना या मारना या बोलना, वि स आक्रम (भ्वा दि प मे), अभिद्रु (भ्वा प अ) अवन्प (भ्वा प अ) ।

धाह, म स्त्री (अनु) दे 'दाट' ।

धिक, अन्व (स धिक) (प्राय द्वितीया परन्तु कर्मा पदा वे माथ) निदा ० निभत्सना ।

धिहार, स पु (म) न्यकनिनी, वार, निरस्कार, भर्त्सना, गहा, निद्रा, परि(री)वाद, अधिशेष ।

धिहारना, वि स (सं धिकरण) तिरम् धिर कृ, अपपरिबद्ध (भ्वा प मे) (तीज) निद् (भ्वा प से), अधि आक्षिप (हु प अ) ।

धिन्द्र, स पु (स) दे 'धिकार' ।

धिपणा, सं स्त्री (म) बुद्धि, धी (दोनों स्त्री), प्रज्ञा २ स्तुति-मुनि (स्त्री) ३ वाणी ४ पृथिवी ५ दे 'ध्यानी' ।

धीगा, म पु (म टिगर) दुष्ट मल शठ, पाप ।

धींगी, म स्त्री, शठता, शाठ्य, दौष्य, उपद्रव ३ बलात्कार, अन्याय ।

—मुदती, म स्त्री, क्रुद्धा, उपद्रव, मन्ता २. बाह्याहवि-मुष्टीमुधि (अन्व)

धी', सं स्त्री (स दुहितृ) पुत्री ।

धी, म स्त्री (सं) बुद्धि मति (स्त्री), प्रज्ञा ।

धीमा, वि (म मध्यम) मधर, मद, गति गामिन्, २ लघु, तीव्रता-उग्रता-वृष्टता, शून्य ।

—पडना, क्रि अ, -यूनी भू, हस (भ्वा प से), शि (कर्म), उपप्रशम् (दि प से) ।

धीमान्, वि (स-मान्) बुद्धिमत्, प्राज्ञ [धीमती (स्त्री) = बुद्धिमती] ।

धीमे धीमे, क्रि वि, मद मद, शनै शनै २ अचट, वतीव ३ मृदु, यथामुत्तम ।

धीर, वि (म) धृतिमत्, शान, धैर्यावित, महन-श्रमा, शील, सहिष्णु, क्षमिन् २ नम्र, विनीत ३ म(ग)भीर चापल्यशून्य ।

धीरज, स पु (स धैय) } ३ 'धीर्य' ।

धीरता, म पु (स) }

धीवर, स पु (स) कैवत, जालिक, मत्स्य आजीव-उपज विन, मात्स्यिक, दाश-स, [धीवरी (स्त्री) = कैवरी] ।

धुध, सं स्त्री (स धूमाध >) धूमदृष्टि (स्त्री) २ कुञ्जटिका, धूमिया, कुहेटिका ।

धुधका, स पु (हि धुध) धूम-अग्निवाह, छिद्र-विवरम् ।

धुंधला, वि (हि धुध) अस्पष्ट, अव्यक्त, मद, युति प्रभ, दुरालोक २ धूम, ईषत्कृष्ण, धूमवर्ण ।

—पन, स पु, अस्पष्टता, दुरालोकता, अव्य क्ता, मदप्रभता ।

धुधौ, सं पु (स धूम) अग्नि-महद, वाह, लतमाल, शिखिध्वज, तरी ।

—कृत, स पु (हि +फा) अग्निपोत ।

—धार, वि धूममय, मधूम २ धूम, धूमवर्ण ३ घोर, प्रचट । क्रि वि, सवेग, अत्यधिक, प्रबलम् ।

धुधौसा, म पु (हि धुधौ) कज्जल, ममी मि (स्त्री) ।

धुकधुकी, म स्त्री (अनु धुकधुक) हृदय, हृद (न), अग्रमाम २ हृत्-वप-स्पर्द २ त्रास, भय ४ उरोभूषणभेद ।

धुन, म स्त्री (हि धुनना) अभिनिवेश, दृढाग्रह, आमक्ति-अनिवार्यप्रवृत्ति (स्त्री)

उत्कटेऽत्र लालना २ चिता, विचार
३ वामचार, लहरी ।

धुन, स स्त्री [स ध्वनि (पु)] स्वर,
गानप्रकार २ रागभेद ।

धुनकना, वि स, दे 'धुनना' ।

धुनकी, स स्त्री [धनुम (न) >] विनन
नी, विहनन तल्लोचनकामुक, धुनरी ।

धुनना, क्रि स (हि धुनवी) (पित्रनेन)
तूल शुभ (प्रे) पु (स्वा उ अ) २ भूत
तट (चु) ३ अमकृत क् (चु) ४ सत
त कृ ।

धुनि^१, स स्त्री (स) नदी, धुनी ।

धुनि^२, स स्त्री [स ध्वनि (पु)] शब्द,
ख ।

धुनिया, स पु (हि धुनना >) पिताशोधन,
*पित्र २, *तूलावन ।

धुरधर, वि (स) धूर्वह, धुर्य २ भारवाह
३ श्रेष्ठ, प्रधान, प्रकाट, मुख्य ।

धुर, स पु [स धुर (स्त्री)] अक्ष, धुन
२ भार ३ आरभ ४ युग-न (जूना) ।
अव्य, सपूर्णतय, अशेषतया, सविन्येन ।

धुरपद, स पु (स धुरपद) गीतभेद ।

धुरा, स पु [स धुर (स्त्री)] अक्ष, धुव ।

धुरी, स स्त्री (हि धुरा) अक्षक, धुवन ।

धुलवाना, क्रि प्रे, व 'धोना' के प्रे रूप ।

धुलाई, स स्त्री (हि धुलाना) धावन, प्र
क्षालन २ धावन, प्रक्षालन, मृत्ति (स्त्री)

धुवाँ, स पु, दे 'धुआ' ।

धुवाँरा, स पु (हि धुवाँ) बटल-दि
धूमच्छिद्रम् ।

धुमस्त, स पु (स ध्वस >) मृत्तिका
चय, मृदराशि (पु), छुटपर्वत, २ वप्र,
चय ।

धुस्मा, स पु (स डिशाट >) प्रावेण्य
णि (स्त्री) ।

धुआँ, स पु, दे 'धुआ' ।

धूत^१, वि (स धूर्) वचन वपत्तिन्, लन्ति
पापत्तिन् ।

धूत^२, वि (स) नास्तित, वपित २ त्यक्त,
उत्सृष्ट, भास्वित, विरहित ।

धूता, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या ।

धूनी, स स्त्री (स धूम >) धूप, सुगधि
धूम २ मिथुकानल, तपोरहि (पु) ।

—देना, मु, धूप (चु), धूप प्रा (प्रे प्रापयति) ।

—रमाना या लगाना, मु, पत्रिज (भ्वा प
से), मिथुको भू २ तप तप (दि आ
अ), तपस्यति (ना धा) ३ तपोरहि
ज्वल् (प्रे) ।

धूप^१, स स्त्री (सं धूप-उमकता >) आतप,
मूय, आलोर प्रवाहा ।

—टोह, स स्त्री, * धूपच्छाया, दिवर्णो
वस्त्रभेद ।

—दिग्गाना, मु, आतप प्रस (पे) ।

—सेकना, मु, आतप मेव (भ्वा आ से) ।

धूप, स पु स्त्री (स पु) पावन, यावन,
तुम्ब पिठक, सिंह, नृण, मेरुक, २ गध
पिशाचिका, धूप, धूपधूम ३ धूपवर्ति (स्त्री) ।

—दान, स पु, }

—दानी, स स्त्री, } धूपधान-नी, धूपपात्रम् ।

धूम^१, स पु (स) मत्तमाल, गिलिध्वन, दे
'धुआँ' २ वा(व)-प धम् ।

—केतु, स पु (स) उल्हा, सोन्वा
२ अग्नि (पु) ।

—यान, स पु (स न) तमासुधूमपानम् ।

—योत, स पु (स) अग्निवाण पात ।

धूम, स स्त्री (सं धूम >) ख्याति प्रमिदि
(स्त्री) २ बोधाहल, कलकल ३ समारोह
आटवर, शोभा ४ उपद्रव, शोभ, विप्लव ।

—धाम, स स्त्री, आटवर, शोभा, श्री
(स्त्री) बृहदायोजन, वैभवम् ।

धूमर, धूमला, धूमिल, वि (स धूमल)
धूम, धूमवर्ण, कृणलोहित ।

धूर ति, स स्त्री, दे 'धूल' ।

धूर्त, वि (स) वचक, मादिन्, वपदिन्,
वापदिन्, विप्रलभ्य वचनशील, प्रताप ।
स पु, चूतहर (पु) अदेविन् नितव
२ वचक, प्रताप इ ।

धूर्तता, स स्त्री (स) वचकता, माया,
प्रतापणा, वपन्, रैवम् ।

धूल, स स्त्री [स धूति (पु स्त्री)] धूनी,
रजम (न), पांशु पु (पु), रेणु, मिनि
वण, महीद्वय, वाग नभ, केतु (पु), चूर्ण,
शोद २ तुच्छवस्तु (न) ।

- आडना, कि म, धूलि-लीं पु (स्वा उ अ) ।
 —उडना, मु, (स्थान की) ध्वम् (भ्वा आ से) धूलीमात् भू । (मनुष्य को) निरु जधिधिष इध् (वर्म) ।
 —उडाना, मु, दुष (प्रे दृषयति) अधिक्षिद् (तु प थ) २ उपहस (भ्वा प मे) ।
 —चाडना, मु, पादयो पतित्वा पाच (भ्वा आ से) अभ्यर्ध् (तु था से) ।
 —ग्राडना, मु, मोघ ब्रम (भ्वा प से) ।
 —मै मिलना, मु, धूलीमात् भू नदा (दि प व) ।
 —समझना, मु, नृत् नृण्य मन् (दि आ अ) अवगण (तु) ।
 धूलि, म स्त्री (म पु स्त्री) दे धूल' ।
 धूमर, वि (स) अरपन्, पाडु, पाडु धूलि वर्ण ० पाडु (शु) ल, धूलिधूमर, रेणु दूषित रूख ।
 धूमरित, वि (म) दे 'धूमर' ।
 धूहा, म पु (हि दूह) रागविभीषिका ।
 धृत, वि (म) धारित, अवलंबित, २ आदत्त, गृहीत ३ स्थिरीकृत, निश्चित ।
 धृतराष्ट्र, म पु (म) दुर्योधनजनक, नृप विशेष ।
 धृति, म स्त्री (म) दे 'धैर्य' ।
 धृष्ट, वि (म) निर्लज्ज वियात, प्रगल्भ, दे 'दीठ' ।
 धृष्टता, म स्त्री (म) प्रागल्भ्य, वैयात्य, दे 'डिठा' ।
 धेनु, म स्त्री (म) नवम् (प्रम्) निका (गी) ० गी (स्त्री), दे ।
 धेला, म पु दे 'अधेला' ।
 धेली, म स्त्री, दे 'अधेली' ।
 धैर्य, म पु (म न) धीरत्व, धीरता, धृति (स्त्री), मन स्थैर्य, मस्त, द्रष्टिम् (पु), दृढता, शोभराहित्यम् ।
 धवत्, म पु (म) पठ स्वर (मगीन०) ।
 धोना का, म पु (म धूक>) छल, कप, धुकता, पतारणा, वगना, २ मोट, भ्रम, ज्ञानि (स्त्री) अमन् मिथ्या प्रतीति (स्त्री) ३ मया, इटनाल, विवर्न ४ अज्ञान, अदीध ५ मशय, मदेह ६ प्रमद, धुति (स्त्री) ।
 —गाना, म, वच् विप्रल्भ्-अभिमा प्रतार (म) ।

- देना, मु, प्रत (प्रे) वच् कल् (तु), अनि अभिमथा (जु उ अ), मुद् (प्रे) ।
 —गोखे की टट्टी, मु मोहजनक मायामय, वस्त (न) ।
 धोखेवाज, वि, (हि + फा) कार्पाक, टासिक, मायाविन् ।
 धोखेवाजी, म स्त्री (हि धोखेवाज) कार्पाकता, कप, पात्रिकता ।
 धोनी, म स्त्री । (म धीन>) शाटिका, धोनावर *धीना ।
 —ढीली होना, मु भयात् पलाय् (भ्वा था से) ।
 धोना, क्र म (स धावन) धाव् (भ्वा प से) प्र क्षल् (तु) निर निज (जु उ अ), प्रमृन् (अ प वे) २ दूरी क, अपस (प्रे) । स पु धावन, प्र, क्षालन, निर्णेक, माजनम् ।
 धोने योग्य, वि, धावनीय, प्र, क्षालयितव्य, निर्णेक्य ।
 धोनेवाला, स पु, धावर, प्र, क्षालक, क्षारक ।
 धोबिन, म स्त्री (हि धोवो) रत्नकीका ० रत्नपत्नी, धावरुभार्या ।
 धोनी, म प (हि धोना) धावर, रत्नक, निर्णेक, क्षारक, रजोन् ।
 —घाट, म पु धावरुघट्ट ।
 —का कुत्ता, मु अकिंचित्कर, गुण मार हीन (जन) ।
 —का हला, मु, परपदार्थ, परवन्तु, दूत गर्बित ।
 धोया हुआ, वि धीन, धावित, माजित, प्रक्षिन् निर्णेक ० ।
 धोवन, म स्त्री (हि धोना) धावन, प्र, क्षालन ० धवनावशिष्ट जलम् ।
 धौकना, क्रि म (म भ्मा>) मन्वया ध्मा (भ्वा प अ, धमनि), इत्या वनि प्रज्वल् (प्रे) ।
 धौकनी, म स्त्री (हि धौकना) भन्वा, भन्वा, भन्विका, दृनि (स्त्री) चर्म, प्रसेविका प्रमेवरु ।
 धौम, म स्त्री (म ध्वम>) तर्पना, विभीषिका, भवदर्शन ० प्रमुत्य, अधिकार ३ छल, कपन् ।
 —पट्टी, स स्त्री मिथ्याऽऽज्ञा, मिथ्या मात्वना ।

- धौसा, म पु (अनु) दे 'टका' ।
 धौसिया, म पु (१६ धौसा) टिटिम-उका,
 बादर नाटन ।
 धौसिया, म पु (हि धाम) भयदगंठ,
 त्रिभिपक २ बचर, कपटिन ।
 धौत, वि (स) दे 'धोया हुआ' २ स्वच्छ
 ३ रनात ।
 धौति ती, म स्त्री (म) योगप्रक्रियाभेद ।
 धौरा-ला, वि (म धवल) श्वेद, शुक्ल
 सित । म प धवल स्वपभवर ।
 धौरैय, वि (म) भार वाहन-वाहिन । म
 पु (म) शम्भवाहयवृष २ अध ३ सुट्य,
 नायक ।
 धौल, म स्त्री (अनु) चपेट टिका, करतया
 घान २ क्षति हानि (स्त्री) ।
 —धप्पा, म पु, दुष्टीदुष्टि दाहूवाहवि (न) ।
 ध्यान, स पु (स न) ऐकाग्र्य, समाधि
 (पु) अन्तर्ध्यान, चित्तस्थैर्य २ स्मृति (स्त्री),
 धारणा ३ धी बुद्धि (स्त्री) ४ अवधान,
 मनोयोग ५ चित्त, मनस (न) ६ चिन्ता,
 मनन ७ भावना, मति (स्त्री) ८ मानस
 प्रत्यक्षम् ।
 —आना, मु, स्मृ (भ्वा प अ), अनुचित
 (चु) ।
 —दिलाना, मु, अनु-स्मृ (प्रे) ।
 —देना, मु, अवधा (जु उ अ) मन
 चुन (चु) ।
 —बटाना, मु, भित्त ध्यान अपकृष (भ्वा
 प अ) ।
 —म न लाना, मु, अवगण अवधीर (चु) ।
 —मै मग्न होना या डूबना, मु, विचार ध्यान,
 मग्न (वि) स्था (भ्वा प अ) ।

- रचना, मु, न विस्मृ (भ्वा प अ) मनसि कृ ।
 —लगाना, मु नि ध्वै (भ्वा प अ), समाधा
 (जु उ अ), विचित्र (चु) ।
 —से उतरना, मु विस्मृ (वर्म) ।
 ध्यानस्थ, वि (स) ध्यान गितन विचार,
 मग्न लीन ।
 ध्यानी, वि (स निन्) ध्यान गितन, शील
 पराधन पर, विचारवत् ।
 ध्येय, वि (स) ध्यानव्य गितनीय । म पु
 (म न) लक्ष्य, लक्ष्य, उद्देश इत्यम् ।
 ध्रुपद, स पु, दे 'धुरपद' ।
 ध्रुय, वि (स) अचल, अविचल, निश्चल,
 स्थिर २ नित्य, निश्चकार, अव्यय ३ निश्चल,
 नियत, अमरिन्ध । स पु (स) ध्रुवतारा,
 नक्षत्रनेमि (पु), उत्तानपादज, ज्योतीरथ ।
 ध्वम्, म पु (स) प्रवि, ध्वस, वि, नाश,
 अवसाद उच्छेद, क्षय, निपात, सहार ।
 ध्वजा, म स्त्री (म ध्वज) पताका, वैजयन्ती,
 वेतु (पु) वेतनम् ।
 ध्वजी, स पु (म जिन्) पताकिन, ध्वज,
 वाहक धारिन् ।
 ध्वनि, स स्त्री (मं पु) नि, नाद, शब्द,
 र(रा)व, स्वर, घोष, ध्वान, निम्, स्व(स्वा)
 न, निहाद २ शब्दश्लो ३ व्यंग्यार्थ
 प्रधानं काव्य ४ गूढार्थ, गुप्ताज्ञय ।
 ध्वनित, वि (म) स्वनित क्वणित, नादित,
 शब्दित, रसित २ भग्या सुवित, घोषित,
 उपलक्षित, व्यञ्जित, विवक्षित ३ वादिन ।
 ध्वस्त, वि (म) प्रवि, ध्वस्त, वि, नाष्ट, अव
 सन्न, उच्छिन्न, क्षीण, निपातित, सण्डित, भग्न
 २ पराजित ।
 ध्वाक्ष, म पु (मं) वाक ।
 ध्वान, मं पुं (मं) शब्द, दे 'ध्वनि' ।

न देवनागरीवर्णमालाया विनो व्यञ्जनवर्ण,
 नकार ।

नंग, मं पु (हि नंगा), नग्ननास्व दिगम्ब
 रनास्व २ गन्धात्र, गुधम् ।

—धडङ्ग, वि } दे नगा (१) ।

—सुनंगा, वि }
 नंगा, वि (मं नग्न) अनिर् वि, नग्नधमन

न

नामम, दिग्, अम्बर-वर्णन २ भनाष्टन, मा
 वरण आच्छादन, रदिन ३ निम्बर, नि १ ।

—करना, वि म, नानी विवर्ण विवर्ण । कृ ।

—जुवा या वूचा, वि, दग्धि, आंगना ।

—मादरङ्गाद, वि (ज) दिगतर, दिग्गमन ।

—लुचा, वि, दुष्ट, मर, दुष्टन ।

नगे पाँच, वि, नग्ननाट, नाटनीन ।

नगे मिर, वि, नग्नशिरस्क निरुणीष ।
 नङ्ग, म पु (स) आनन्द, मोद २ पुत्र
 ३ श्रीकृष्णस्य धर्मनात प्रतिपालक ४ मगधे
 शरविशेष ।
 —किशोर, कुमार, नन्दन, स पु (म) श्री
 कृष्ण वासुदेव ।
 नद, म स्त्री दे नन्द' ।
 नदक, वि (स) हर्ष प्रद तनक आनन्द
 दायक । म पु श्रीकृष्णराज्य ।
 नदन, म पु (स न) 'इद्वनम्' । स पु
 पुत्र २ मेघ । वि हर्षक मोरक ।
 —वन म पु (म न) गक्रोधनम् ।
 नदना, म स्त्री (म) पुत्री तनया ।
 नदनी, म स्त्री दे नदिनी' ।
 नदि, म पु (म) अनन्त हर्ष २ शिव
 दौबदिव वृषभ, नन्दिकेश्वर ।
 नदिकेश्वर, म पु (म) नदिदेश, शिव
 वृष २ शिव ३ उपपुराणविशेष ।
 नदिनी, म स्त्री (म) पुत्री दुहितृ (स्त्री),
 तनया २ ननाइ-ननइ (स्त्री) ३ पत्नी, भार्या
 ४ दुगा ।
 नदी, स पु (म नन्दिन्) शिवगणभेद
 २ शिवद्वारपाल वृषभ ।
 —ईश्वर, स पु (म) शिव ।
 नदोई, नदोमी, म पु (हि नन्द) ननाइ
 पति, बौतूल ।
 नवर, म पु (अ) सरदा, गणना, अक
 २ विह, लान्न ३ पथाय, परिवृत्ति (स्त्री),
 वार ।
 —दार, म पु (अ + फा) भूकरो-ग्राहक ।
 —दार, क्रि वि (अ + फा) यथाक्रम,
 क्रमश षडैक्य (सर अल्य) पययिण
 क्रमेण (तृ) ।
 नचरिग मशीन, म स्त्री (अ) अकनयनम् ।
 नचरी, वि (अ नवर) अकिन, अकयुन, माक
 २ विद्यान, विद्युत ।
 —सेर, म पु, आग्नी-मेख-मेर ।
 न, अल्य (म) न, नदि, नो २ (मन) मा,
 मा मा अन् (नृनीया अथवा क्त्वा (या ल्यप)
 के योग में) ।
 —न, मा मैव, मा तावत् ।
 न न, न च नवा, न न वा न च न
 च, न न (उ न रामो गनो न वा कृष्ण) ।

नक, म स्त्री, (म नका) नासा, नासिका ।
 —क्या, वि छिन्न-नाम-न सिक २ विल्य,
 विग्र अविगत, नामिक ३ निर्ज, अपव्रप ।
 —कृती, म स्त्री, नामाच्छेद २ अवमानना,
 मानह नि (स्त्री) ।
 —धिम्नो, स स्त्री भूमौ नामिकापपण
 २ दैय विदाय ।
 —चन्, वि दुष्प्रकृति कुन्तु शील ।
 —छिकनी, म स्त्री छिकनी, छिकिका, उग्रा,
 तिला ।
 —फूल, म प लवग प्रण भूषाभेद ।
 —वेसर, म पु नाथक ।
 नकड, म पु (अ) टफ-क नाणक, मुद्रा,
 मुद्राधनन । वि, प्रस्तुत (धनारि) ।
 नकडी, स स्त्री दे नकड' स पु ।
 नकपुडी, म स्त्री, दे 'नधना' ।
 नकस स स्त्री (अ) दे 'मैध' ।
 नकल, म स्त्री (अ) अनु प्रति-लिपि (स्त्री)-
 लेख २ अनुकृति अनुवृत्ति (स्त्री) ३ अनु,
 कारण-मरण ३ सोपहाम अनुकरण विड्वनम् ।
 —करना, क्रि स, अनु प्रति, लिपि कृ या लिख
 (तु प मे) २ अनुकृ ३ विन्व (तु) ।
 —नवीस, म पु (अ + फा) अनु प्रति, लेखक,
 प्रतिलिपिक (का) र ।
 नकली, वि (अ) कृतक, कृत्रिम २ कापटिक,
 छथिक, कण, कूट, छत्र ।
 नकमीर, म स्त्री (हि नक + स क्षीर = बल)
 नामारक्तवाव ।
 —फूना, क्रि अ, नासाया रत्न लु (म्वा
 प अ) ।
 नकाव, म स्त्री पु (अ) वणक, बर्णिका
 २ अवगुठन, आवरक-कम् ।
 —पोश, वि बर्णिका-उत्तरिन, अवगुठनवत् ।
 नकार, स पु (म) निषधकवाक्य २ प्रत्या
 रवान, नि प्रति पेष ३ 'न' इत्यध्वरम् ।
 नकारना, क्रि अ (स नकार >) प्रतिनि,
 निध (म्वा प वे) ।
 नकीच, म पु (अ०) चारण, बन्दिन् ।
 नकुल, म पु (म) मपारि, वधु २ पाहु
 राग्य गनुधपुत्र ३ पुत्र ।
 नकेल, म स्त्री (हि नाक) नामिकारज्जु
 (स्त्री) ।

नकारप्राना, म पु (फा) डिडिमालय, शदभिगृहम् ।

—नकारप्राने म सूती की आजाज़, मु, अरुण्यनदिनम् ।

नकारघी, म पु (फा) दुदुभिवाटय, पट्ट हाडय ।

नकारा, स पु (फा) आनक डिडिम, दुदभि (पु), पट्ट, भेरी ।

नकारल, स पु (अ) अनुनरिन्, विन्न्न्न्न्न्, विन्न्न्न्न् २ भट, विदपक, वैहामिक ३ भट, कुशील्व, रगाजीव ।

नकाराश्री, म पु (अ) उत्तरक ।

नकाराश्री, म स्त्री (अ) उत्तरिणम् ।

नक्री, म स्त्री (स नका) अक्षे क्रीणापो वा ष्वकिन्दुनिहम् ।

—दुआ, स पु, अक्षक्रीणाभेद ।

—सूठ, म स्त्री, चूनभेद ।

नककू, वि (हि नाक) कुन्त्यानिमन्, कुप्रमिद्ध, दुनीमन् ।

नकतंचर, मं पु (म) राक्षम, निशाचर २ ऊर्ध्व, घृष्ट ३ नीर, स्तेन ।

नकतदिन, अन्ध (स नकतदिनम्) नकतदिव, अहोरात्र, अहनिशम् । दिवारात्रम् (सब अन्ध) ।

नक्त, म पु (सं न) रात्रीनि (स्त्री), निशा ।

नक्त, म प (म) दे 'मगरमच्छम्' ।

नक्तो, म पु (अ) आलेख्य, चित्र, प्रतिकृति (स्त्री) २ मुद्रा, अंक, चिह्न ३ क्षण, आज्ञा (स्त्री) ।

—करना, क्रि स, अरु मद्र विह (न) २ निविश (प्रे) न्यम (दि प से) ।

नक्त्या, म पु (अ) मान प्रदंभ, चित्र, देशा चरुं २ आत्मा प्रति मानं रूप ३ रूप देगाल्भयम् ।

नक्तन, म पु (सं न) नगर, नारका, न्दु (पु) २ राशि (पु), गजिनक्षत्र ३ भगण, नागममृत् ।

—नाथ, —पति, —रत्न, म पु (सं) नट ।

नक्त, म पु (सं पु न) दे 'नायन' ।

—शिव्य, सं प (सं न) मवाणि अमानि, मवावधवा, गावाणि (मव बहु) २ मवां मवर्षणम् ।

—शिव से, मु, आपादरीर्षी, पूर्णतया, साम सयेन ।

नक्षरा, सं पु (फा) विभ्रम, विलास, लीला हव, २ चाप य ३ व्यान, कथम् ।

नक्षरेवाज़, वि, (फा) मविभ्रम, लीलामय (स्त्री लीलावती, विलामिनी) ।

नक्षरेवाजी, म स्त्री (फा) ललिताभिनय, लीला ।

—करना या बघारना, क्रि स, विलम (स्वा प मे), ललिताभिनय कृ २ कपट न्नं व्याज कृ ।

नस्त्री, म पु (स नस्तिन्) सिंह २ चिबुर । वि, सनय, नयवत् ।

नग^१, म पु (सं) पवन, गिरि (पु) २ वृक्ष ३ 'सप्तन्' इति सप्त्या ४ सर्प ५ मय । वि, अचल, स्थिर ।

—पति, म पु (स) शिव २ हिमालय । नग^२, म पु, (फा नगीनह) दे 'नगीना' २, मल्वा ।

नगण, म पु (स) त्रिलुगण, छन्द शारत्रे गणभेद (३० नमन, चलन ३०) ।

नगण्य, वि (स अगण्य) क्षुद्र, तुच्छ, साधारण, मामान्य ।

नगट, म पु, दे 'नगद' ।

नगनी, म स्त्री (सं नग्निना) नग्ना, निवन्धा, विवन्धा २ अपुण्या, रजोरहिना कन्या ३ निलज्जा, स्वैरिणी ।

नगमा, म पु (अ) सुमधुर, स्वर स्वन २ गीत, गीतिका ३ राग ।

नगर, सं पु (म न) पुर (स्त्री), पुरं, पुरां, नगरी, पत्तन, पट्टनं नी, पट्ट, विषय ।

—कीर्तन म पु (म न) यात्रागगानम् ।

—नाशी, म स्त्री (म) नगरनाथिना, नश्या ।

—न्यासी, म पु (म निन्) पीर, पीर, जल लोच ।

नगरी, म स्त्री (सं) दे 'नगर' ।

नगाव्हा, —रा, सं पु दे 'नकारा' ।

नगीना, म पु (फा) रत्न, मणि (र) २ देगीयत्वभेद ।

नग्न, वि (म) २ 'नगा' ।

नग्नता, म स्त्री (म) दे 'नग' ।

नचवाना, नचाना, क्रि प्रे, व 'नाचना' के प्रे रूप ।

नजदोक, वि (फा) सत्रिहित, समीप, निकट ।
नजदीकी, स स्त्री (फा) मात्रिथ्य, सामीप्य ।
नज्जम, स स्त्री (अ नज्जम) कविता पद्य, छंदम (न) ।

नजर, स स्त्री (अ) दृस्, दृक्शक्ति, दृष्टि (सव स्त्री) २ दयादृष्टि (स्त्री) परि, अवेश्ण अवेश्ण ३ निरीक्षण ४ दे 'नउराना' ५ कु-दुर, दृष्टि ।

—अदाज, वि (अ + फा) अवधीरित, निराकृत, उपेक्षित ।

—आना या पढना, क्रि अ, दृस् ईश्व-अव लोक् (कम) ।

—डालना, क्रि स, दृरा (श्वा प अ), इश् (श्वा आ से) ।

—चद, वि (अ + फा) निरुद्ध ।

—बर्दी, स स्त्री (अ + फा) (निश्चिनस्थाने) निरोध ।

—बाज, स पु (अ + फा) बटाक्षवीक्षक, भ्रुविलासक, *पापदृष्टि ।

—सानी, स स्त्री (अ) पुनरीक्षण, सशोधनम् ।

—लगाना, मु, वृद्धया पीड् (कम) ।

—से गिरना, मु, अप-अव-भग् (प्रे), कल्क यति (ना धा) ।

नज्जराना, स पु (अ) उपहार, उपायनम् ।

नज्जरा, स पु (अ) बफ, इत्थेपन् (पु) २ आभ्युद, प्रतिश्याय, नामालाव ।

नज्जाकत, स स्त्री (फा) लालित्य, सुकुमारता, कोमलता ।

नज्जात, स स्त्री (अ) मुक्ति (स्त्री), अपवग ।

नजारा, स पु (अ) दृश्य, दृग्गोचरस्थान २ दृष्टि (स्त्री) ३ वटक्ष ।

नज्जौर, स स्त्री (अ) उदाहरण, दृष्टात ।

नज्जूम, स पु (अ) ज्योतिष, नक्षत्रविद्या ।

नज्जुमी, स पु (अ) ज्योतिषिक, ज्योतिषिक (पु) ।

नज्जुल, पु (अ) राज-नुप शासक भूमि (स्त्री) ।

नट, स पु (स) शैल्य, जायानीव, भरत, अभिनेट, भरतपुत्रक, रग, शीव-अवतारक, सर्वेश्वरिण, नट, नम्र २ रज्जुनतक ३ व्यायामिन् ४ व्रातिविशेष ।

—चर, स पु (स) श्रीकृष्ण ।

नटखट, वि (म नट + अनु सट) चपल, चचल, कुचटक २ धूत, मायाविन् ।

नटखगी, स स्त्री (हि नटसट) चपलता २ धूतता ।

नटनी, स स्त्री, दे 'नटी' ।

नटी, स स्त्री (म) शैल्यिषी, अभिनेत्री, सर्वेश्विनी २ नतकी ३ नटपत्नी ४ वेदया ५ नट-गतेनारी ।

नतीजा, स पु (अ) परिणाम, फल २ अध, पाक ।

नथी, स स्त्री (हि नाथना) नहन, मद्यधन २ नहनमूत्र ३ लेख्यश्रेणी ।

नथ, स स्त्री (म नाथ = नाक की रस्मी) नाथ, नासावलय ।

नथना, स पु (स नत्न = नाक) । नामा नासिका, रत्न रत्न-विवर २ नासापुत्र पुत्रम् ।

क्रि अ, व्यर्थ-उद (कम) २ मग्रथ-मतह (कम) ।

—चढ़ाना या फुलाना मु, वृध (दि प अ) ।

नथनी, स स्त्री (हि नथ) *नाथक ।

नद, स पु (म) उच भिष, मरस्व (पु) ।

—राज, स पु (स) समुद्र ।

नदारद, वि (फा) अनुपस्थित, दुस्त, अदृष्ट ।

नदीश, स पु (स) समुद्र, गन्धि (पु) ।

नदिया, स स्त्री (म नदिवा) धुद्र-सरित्-नदी ।

नदी, स स्त्री (म) तटिनी, तरंगिणी, शैबलिनी, सोनखिनी, वाहिनी सरित् (स्त्री) ह (फा) दिनी, धुनी, निम्नता, आ (अ) पगा, मिषु (पु), रोधो, सोनसू-वती, तुलवती, स्रवती ।

—फात, स पु (म) मगर, उलधि (पु) ।

—तीर, स पु (म न) सरित्-नदी, कूल तटम् ।

नदीन, स पु (म) समुद्र, मगर २ वरण ।

नदीश, स पु (स) अर्ध-उलधि (पु) ।

नद, वि (स) बद्ध, योनिन, मद्देशिन ।

नदधी, स स्त्री (स) चन, रज्जु (स्त्री) -कस्या ।

नधना, क्रि अ (स नद्ध) नि, वध (कम) स्युन (कर्म) २ दे 'जुतना' ३ प्रारम्भ (कम) ।

ननद, ननद-द्वी, स स्त्री [स ननद (स्त्री)] ।

- ननाट्ट (स्त्री), भर्तृभगिनी, नदिनी, नदा, पतिम्बसु (स्त्री) ।
- ननिहाल, स पु (हिं नानो + म आल्य) मानामहालय, मातृकुलम् ।
- नन्हा, वि (म न्यन्व्) जणिलु, छुद्र, अल्पशुद्र, तनु, प्रतनु । स पु, शिशु, स्तन धय ।
- नपुमक, म पु (म) कर्णिक, तृतीय प्रकृति (पु) षट्, पोगट, श (प) ड-ड (म न), कर्णिकलिंग (व्या) । वि, भीरु, कातर । सपुंसकता, स स्त्री (म) कर्णिकता, षट्ता, शठता २ भीरुता, कातरता ।
- नफरत, म स्त्री (अ) दे 'घृणा' ।
- नफा, म पु (अ) लाभ, आय, उदय, फल, वृद्धि (स्त्री) ।
- नफीस, वि (अ) उत्कृष्ट, उत्तम, विशिष्ट २ चारु, शोभन, सुदर ३ उज्ज्वल, विमल । नवी, म पु (अ) मित्र, ईशदूत, भाविकप्रक । नवेडना, क्रि स, (म निवृत्त >) दे 'निपटाना' ।
- नवेडा, स पु (हिं नवेडनी) न्याय, निर्णय । नज्ज, म स्त्री (अ) नाटी (स्त्री) ।
- देखना, क्रि म, नाटि 'परीक्ष' (भ्वा आ से) । नभ, म पु [म नभम् (न)] दे 'आकाश' ।
- चर, म पु (म नभश्चर) रग, शेचर । नम, अव्य (म) प्रगति (स्त्री), प्रणाम, अभिवादन, नमस्कार, नमस्क्रिया ।
- नम, वि (का) जाट, उत्र ।
- नमक, म पु (का) लवण २ लवण्यं, विशिष्ट-मौन्दर्य ३ पिण्ड । (नमक के सेद, दे 'नोन') ।
- रवार, म पु (का) पराश्रित, परायत्त, सेवक ।
- दान, म पु (का) लवणधानी ।
- कासेजाय, म पु, उदनीरिवन्, लवणाम् ।
- हराम, वि (का + अ) दृष्टान्तव्य, अष्टव-दिग्, दृष्टान, (स्त्री स्त्री) ।
- हरामा, म स्त्री 'दृष्टान्त', दृष्टानता ।
- हलाल, वि (का + अ) अनुरक्त, भक्त, सानुराग ।
- हलाली, म स्त्री, भक्ति 'अनुरक्ति (स्त्री) दृष्टानता ।
- खाना, सु, परायत्त सुत् (ह आ अ), पराश्रय मेव (भ्वा आ से) ।
- मिर्च लगाना, सु, जल्युक्त्या वण् (लु) । कटे पर—लगाना अथवा धाव पर—टिठवना, सु क्षते क्षार क्षिप् (लु प अ) ।
- नमकीन, वि (फा) लवण, लवण शार, सुक्त मय-गुणविशिष्ट धर्मक २ लवणित, मलवण, लवणमसृष्ट ३ अभिराम, मनोप । म पु, लवणपक्वान्न (ममोमा आदि) ।
- नमदा, म पु (फा) नमत्तम् ।
- नमन, म पु (म न) नमस्कार, प्रणति (स्त्री) २ अवगमन, नति (स्त्री) ।
- नमनीय, वि (म) पूज्य, वन्दनीय ।
- नमस्कार, स पु (स) दे 'नम' ।
- नमस्ते, वाक्य, (म) नमस्तुभ्य, नमामि त्वाम् । म स्त्री, प्रणाम, प्रणति (स्त्री), नमस्कार ।
- नमाज़, म स्त्री (फा) ईश, प्राधना-वन्दना (इस्लाम) ।
- नमित, वि (म) जाभुग्, नमित, प्रवण, प्रह ।
- नमी, म स्त्री (फा) शत्रुता, क्लिप्तता ।
- नमूदार, वि० (फा) उदित, प्रवट, दृग्गोचर ।
- नमूना, म पु (फा) आदर्श, प्रतिमा, प्रति रूप २ उपमान, प्रतिमानम् ।
- नम्र, वि (म) निर, अभिमान अहंकार, विनय, विनीत, विनयित्, विनयशील, भूमि मान गव-दर्श, रहित-पुत्र्य हीन, नम्रवेदन २ नत, प्रवण ।
- नम्रता, म स्त्री (म) प्रथम-यग, विनय, विनयिता, निरभिमानता, सौम्यता ।
- नय, म पु (म) नय, नीति (स्त्री) ।
- नागर, वि (मं) नय नीति, निपुण-कोविदश्च विद्-विशारदश्च ।
- नयन, म पु (म न) नेत्र, दे 'आँस' २ अपनयन, अपनयनम् ।
- गोचर, वि (म) दृग्गोचर, दृष्टिगोचर ।
- उद्, म पु (म) नेत्र नयन च्चद पद ।
- उल, म पु (न) नयन, परि (न) मन्त्रि नम् ।
- नया, वि (म नर) अज्ञान-इदानीतन [—नी (स्त्री)] जाभुनिक [—नी (स्त्री)],

अर्वांगत ० अभिनन्द, नवीन, नूतन, प्रत्यय
 ३ अमृत-अदृष्ट, पूव ४ अनाभ्यस्त, अपरिचित ।
 —पन, स पु (स) नवीनता, नूतनता, अपूर्वता ।
 नये सिरे से, कि वि, पुन, पुनरपि अभि
 नवम् ।
 नर, म पु (स) पु (पू) रूप, नृपुम (पु),
 २ मनु न, मनुष्य, मानुष, मानव, मत्य ।
 वि, पुतातीय, नर, पु, पुरुष-उ, पुन्यात्र ।
 —देव, स पु (स) नृप २ ब्राह्मण ।
 —नाथ, स पु (स) नरपति, भूप ।
 —नारायण, म पु [स नी (द्वि)] ऋषि
 विशेष ।
 —पिशाच, स पु (स) महादुष्ट, महाक्रूर ।
 —भक्षी, स पु (स-श्चिन्) राक्षस, पिशाच ।
 —लोक, म पु (स) पृथिवी, मत्स्यलोक ।
 —मिथ, स पु, दे 'नृमिह' ।
 —मिह, म प (म) दे 'नृमिह' ।
 नरक, म पु (म पु न) दुर्गति (स्त्री),
 नारक, निर - अतिमलिनस्थान ३ दुःख
 पृथस्थानम् ।
 —कुड, म पु (म न) निरथ नरक, कूप
 कुण्डम् ।
 नरकट, म पु (म जल) धमन, न
 गात्र, बीचन, कुक्षिरथ ।
 नरक(कु)ल, नरकम्, म पु, दे 'नरकट' ।
 नरकेश(म, हे)री, म पु, दे 'नृमिह' ।
 नरकुरा, स स्त्री (देश) कठ, र २ पाण
 नरखरा, स पु । श्वस, माग-जात्रिना ।
 नरगिस, म पु (का) पुणभेद, *नरगिनम् ।
 नरद, म स्त्री (का नर) शारि (पु),
 शारिना, श रिफलम् ।
 नरभो, स स्त्री, दे 'नमा' ।
 नरमिघा, म पु (ग नर (=वप) + म्घ >)
 वायभेद, *नरमघ, कटल-म् ।
 नरसो, वि वि, दे 'अनरसो' ।
 नराच, स पु (स नराच) वाग, दर ।
 नराचम म प (म) न, प, पापिष्ठ,
 मोच ।
 नराधिर, न पु (म) नृप, भूप ।
 नरेन्द्र, नरेश, नरेश्वर, न पु (न) नृप,
 नृपति, राजन् (पु) ।
 नर्वर, स पु (म) ह्यात्म, नृत्व, नर

कारिन् २ दे 'नट' (१) ३ वदित्, वैतास्त्रिक
 ४ दे 'नरकट' ।
 नर्वरी, स स्त्री (स) ल्यपुत्री, नृय, वरी
 कारिणी, लासिका २ दे 'नटी' (१) ।
 नर्वन, स पु (म न) नृत्यम् । (पुरषो
 वा-) ताण्डव-दम् । (स्त्रियो का-) लास्यम् ।
 नर्वदा, स स्त्री (म नर्मदा) रेवा, मेरुल
 कन्या, सोमसुता ।
 नर्म, स पु [स नर्मन् (न)] परि(री)-
 हाम, विनोद ।
 नर्म, वि (का) (स्वभाव) बोधल, मृदुल,
 सुकुमार, सौम्य, २ (पदार्थ) मत्स्य, सिन्ध,
 श्लक्ष्ण, सुपरपश, ३ (ध्वनि) मधुर, मज्जुल ।
 नर्माना, कि अ (का नर्म) मृदू भू २ दयात्री
 भू प्र शम् (रि प से) । कि स, मृदू क
 २ दयात्री क, प्र, शम् (प्रे शमयति) ।
 नर्मा, म स्त्री (का नम) बोमलता, मृदुता,
 सौम्यता २ मत्स्यता, श्लक्ष्णता ।
 नल, म पु (स) नृपविशेष, दमयन्ती
 पति (पु) ।
 नल, म पु (स) दे 'नरक' ।
 नल, म पु (स न) पश, कम् ।
 नल, म पु (स नाल) नाडी-लो, नाटि -
 लि (स्त्री) प्रणाल-स्त्री ।
 नाली का नल, स पु प्रणालिका, मातंगि
 (न), नन्नाली ।
 नला, म पु (हि नल) मूत्र, मार्ग-नाली ।
 नलिन, म पु (म न) कमल, सरोतम् ।
 नलिनी, म स्त्री, (म) अलुन, कमल ० पश
 मसू ३ पद्माकर, पुष्करिणी ४ (लता)
 बमलिनी पद्मिनी, मृणालिनी ५ नदी ।
 नल, म स्त्री (हि नल) मूत्र-शुद्ध-नाली
 नाम दे 'नल' (१) २ दे 'नरखरा' ३ अ
 ग्न्यस्त्रनाली-स्त्री ४ अनुनयाधि (न)
 ५ मयवेचन, व्रमर ।
 नर, वि (म) नवीन, नूतन, दे 'नमा' ।
 —युवक, स पु, नव-युवन् (पु), न, न
 जन-किसोर ।
 —युवता, म स्त्री (म) नवयुवति (स्त्री)-
 ता नवयुती, नली, नयुती लक्ष्मी ।
 —वृ, म स्त्री (स) नवीना, वृ (स्त्री),
 नवरगिप्रणा, नवरिका ।

नव^२, वि तथा सं पु (स नवन्) दे 'नी' ।
—ग्रह, स पु [स हा (बहु)] स्यादय
नव ग्रहा ।

—द्वार, वि (स) नवद्वारयुक्त २ नवच्छिद्र
(शरीरम्) ।

—निधि, स स्त्री (स पु) नवरत्नयुत कुबेरकोष ।

—रत्न, स पु (स न) नवप्रकारमण्य
(मोती, माणिक्य आदि) २ विक्रमादित्यस्य
राजसभायाः कालिदासादयो नव पटिता
३ नवविभरत्नयुत हार केयूर वा ।

—रात्र, स पु (स न) आश्विनयुज्यप्रतिप
दादिनवमीपर्यन्तकृत्यदुर्गाव्रतविशेष ।

—सत सौजना, सु, षोडशशृंगारे अल्कृ ।

नवक, स पु (स न) नववस्तुसमूह ।

नवधा, अव्य (न) नवप्रकारे, नव
खण्डेषु ।

—भक्ति, सं स्त्री (स) नवप्रकारा भक्ति
(श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अचन,
वन्दन, दास्य, सस्य, आत्मनिवेदनम्) ।

नवनी, नवनीत, स स्त्री, स पु, (म) दे
'नवदान' ।

नवम, वि (स) नवम ममी (पु न स्त्री) ।

नवमी, स स्त्री (स) चाद्रमनस्य कृष्णा
शुक्ला वा नवमी तिथि (स्त्री) ।

नवल, वि (स) नवीन, नव्य, भूतन ० सुदर
३ सुवन् (पु) ४ उज्ज्वल, स्वच्छ ।

नवला, स स्त्री (स) तरुणी, युवती वि (स्त्री) ।

नवो, वि, दे 'नोवा' ।

नवाना, वि स, दे 'शुक्राना' ।

नवाघ्न, स पु (स न) नूतनाघ्न ० आहभेद
३ सघ्नपञ्चमज्ञम् ।

नवाव, म पु (अ नवाव) रात्रप्रतिनिधि
(पु) २ उपाधिभेद ३ प्रातःव्यथ । वि,
अतिव्यथिन्, अर्थनाशिन् २ आशयन, शासक ।

—ज्ञादा, स पु (का) राजप्रतिनिधि ३ प्राजा
पक्ष पुत्र २ विद्यामित्र, सम्परायण ।

नवात्री, म स्त्री (अ नवात्र) रात्र, प्रतिनि
धित्वा प्रतिनिध्य २ अज्ञात्र, शासन, स्वाभ्य
३ सुयोगभोग, विद्यासितम् ।

नवासा, म पु (का) दीक्षित, पुत्रीदुहितृ,
पुत्र । नवामी (स्त्री = दीक्षित्री) ।

नवामी, वि [सं नवादीति (नित्य स्त्री)] ।
सं पु, उक्ता मख्या, तद्री (८९) ७ ।

नवीन, वि (स) दे 'नवा' ।

नवीनता, स स्त्री (म) दे 'नवापन' ।

नव्य, वि (म) दे 'नवा' ।

नव्य, वि [स नवति (नित्य स्त्री)] स
पु, उक्ता मख्या, तद्री (९०) ७ ।

नशा, स पु (का) क्षीवता, मत्ता, मद,
माद, शोडना २ मादकरव्य ३ भनविषादीना
अवलेप गर्व दण ।

—उत्तरना, सु, मदी व्यपगम् ।

—उत्तरना, सु, दर्पे ह (भ्वा प अ),
अभिमान चूर्ण (चु) ।

—प्लोर, म पु (का) मयप मधुप,
पान, रत शोड ।

—चदना, सु मद (भ्वा आ मे) क्षीव मत्त.
(वि) भू ।

—पानी, स पु, मादकनाममी ।

नशीला, वि (का नशा) मादक, उन्मादक,
मदीलादक २ मदमत्त ।

नशोवाज, म पु (का) दे 'नशाखोर' ।

नश्वर, म पु (का) वैद्यशूरिना ।

—शगाना, सु द्युक्त्या श्लोक् उद् (न प.
अ), शस्त्रेण उपवर् (भ्वा प से) ।

नश्वर, वि (म) क्षयिन्, क्षयिणु, भण्ड,
अनित्य, अस्थिर, वि, व्यभिन् ।

नश्वरता, स स्त्री (स) क्षय नाश, शीला,
अनित्यता, अस्थिरता, भण्डरता ।

नष्ट, वि (स) अदृष्ट, दृष्ट, व्युत्त श्र
० ध्वस्त, क्षीण प्र वि, चीन, उन्मत्त, उत्सन्न ।

नय, स स्त्री (म स्नमा) स्नायु (स्त्री)
वस्त्रमा २ धमनी, नाडी ।

नसर, स स्त्री (अ) गय, छद्दीनप्रवध ।

नसल, म स्त्री (अ) वस, पुत्र, पति (स्त्री) ।

नस्यार, स स्त्री दे 'नाम' ।

नया, म स्त्री (म) नमित्री, नमोद्विषम् ।

नयिष्यथा, म पु (अ) दे 'भगव' ।

—जगना, सु, पुण्य उद् (अ प अ) ।

नयीहृत, म स्त्री (अ) उपरिण, गिष्ठा ।

—देना, वि स, उपदिन् (तु प अ),
अनुशाम् (अ प मे), ० निभल्म्
(चु आ मे) ।

नस्य, म पु (स न) नस्त, लक्षण
० नमिक्य, ननामपरि ।

नम्या, म स्त्री (म) नामा नामिका, नका
२ नामिकारक्तु (स्त्री) ।

नहट्ट, म पु (म नवशौर >) वैवहिकरीणि
भेद ।

नहर, म स्त्री (फा) बुल्य प्राली, महो-
राम भूति (स्त्री) ।

नहरनी, नहर्नी, म स्त्री म नवरणी ।
नर नन्दनानारण ।

नहला, म पु (हिं ना) नवारुन कीन
पनन ।

नहलाई म स्त्री (नहलाना) स्तनन
स्तन प्रधवन २ स्तन-शूलन प्रधवन
भति (स्त्री) भला गरिश्रमिन् ।

नहलाना कि म व नहलाना के प्र रूप ।

नहाना कि अ (म स्तन स्ना (अ प र)
अविति (न्वा आ मे दिवया दे
यामे), मन्त्र (त प अ स्तनो के यो
न) सुर (भ्वा प मे) गुव (दि उ मे) ।
म पु २ 'स्तान' ।

नहान योग्य, वि, स्तनीय अवाहनाय ।

नहानेवाला, म पु, स्तन अवाचक ।

नहाया हुआ, वि, स्तन भन्निचित, कृत्स्नन ।

नहार वि (फा) निराहार, अकृतप्रानरण ।

—सुह, सु, स्त्रीदेर, निराहारम् ।

नहारी म स्त्री (फ नहर) प्रताप, कल्प
वन् २ अथना पुत्रवन् ।

नहीं अल्प (म नहि) न ना मा दे 'न' ।

—नो, अथ अन्ध, इतरथा २ एतदिना,
न(नो) चैव ३ वा, अथवा ।

नहुप म पु (म) मोमवशाधनूपविशेष
२ वैदिकविशेष ३ नागविशेष ४ कुशिक
वशीयो विप्रनृप ।

नहूसल, म स्त्री (म) अनुभ, अनाल
२ दैव्य, विन्ता ।

नाँद, म स्त्री (म नदिक वा >) मृद
मृत्तिका श्रेणी श्रेणी (स्त्री) ।

नादी, - स्त्री (स) मगलचरण, नगरारभे
श्रेयस्विशान्नादावद २ अभ्युदय नमृदि
(स्त्री) २ अन्द ।

ना, अथ (म फा) न, नो, ना ।

—इत्तिकाकी, स स्त्री (फ) विरोध,
विनवद, वैमत्यम् ।

—उग्मेद, वि (फा) निरास, भग्नाय ।

—उग्मेदो, स स्त्री (फा) निरास, आशा
अव ।

—जाविल, वि (फा + अ) अयोय, अममर्ष ।

—कारा, वि (फा) निप्रयोगम्, अनुपयो
न्, निरथक ।

—खुन, वि (फा) तिन विरग्या ।

—गावार, वि (फ) अक्षय २ अप्रिय ।

—चात्र, वि (फा) पुट, धुद्र । स स्त्री,
निरथरवस्तु ।

—नायज, वि (फ) अनुचित, निदनविरुद्ध ।

—स्तनकार, वि (फा) अनुभवहीन, अप
गिनबुद्धि ।

—पम- वि (फा) अप्रिय अरुचिर ।

—पाक वि (फा) अगुद, अरुचि २ मलिन ।

—बालिग, वि (फा) अत्रतवयस्क, अप्राप्त
व्यनगर ।

—माकूल, वि (फा + अ) निर्वोध, निर्विवेक
२ अमान अनुचित ।

—मालूम, वि (फा + अ) अज्ञान, अविदित ।

—मुनांसव, वि (फा) अनुचित, अयुक्त ।

—मुमकिन, वि (फा + अ) असम्भव, अशक्य ।

—मुयाफिक, वि (फ + अ) अपय्य, अहि
तरकर ।

—याव, वि (फा) अत्राय, दुष्प्राय, दुर्लभ ।

—लायक, (फा + अ) अयोग्य, मूर्ख ।

—वाडिक, वि (फा + अ) अनाभिष्ट,
अरिचित ।

—शायस्ता, वि (फ) अन्वय, अशिष्ट ।

—समस, वि (म + णि) निवृद्धि, मूर्ख,
अवोध ।

—समसी, स स्त्री (णि नमसस) अकृता,
मूलना ।

—साज, वि (फा) अस्वस्थ, रण्य ।

नाइरोचन, स स्त्री (अ) भूयानि (स्त्री),
नवगन् ।

नाई, (न न्याय) मृदु, मनान, तुल्य ।

नाई, } स पु (स नरिन) धुरिन,

नाउन, } मुनि, प्ररनादन, अनावसा-

निय, दिवकीति (पु), शौरिक, चडिल,

नरकुट्ट, मुट ।

नाक, म स्त्री (स नका) नामा, नामिका,
घ्रां, घाग, गधवदा, निर्दिगी, नत्स्या, नाति

क्य, गधनाली २ (नाक का मल) शिष्या

- णक, शिघणी, मिटान ३ प्रधान-मुख्य, वस्तु (न) ४ प्रतिष्ठा, मान ।
- वर्टा, स स्त्री भानहानि (स्त्री), प्रतिष्ठान्श ।
- का बाल, म पु प्रिय प्रीतिभाजन, सहचर ।
- का फिसी, म स्त्री नासापिटिका ।
- की रसोली, म स्त्री नामाबुद दम् ।
- धिमनी, स स्त्री, काण्य, दैन्येन वाचनम् ।
- बहना, क्रि अ, नामा बहु (स्था उ अ) अथवा प्र-सु (भ्वा प अ) ।
- सिनकना, क्रि स, नासा शुभ्र (प्रे) या निर्मली कृ ।
- कटना, सु, अपमन् अवशा (कर्म), अनादृत (वि) भू ।
- धिसना या रगडना, सु, पादयो पनित्वा अभि प्र-अर्थ (सु), दैन्येन यात् (भ्वा उ मे) ।
- चढ़ाना, सु, क्रोध घृणा वा प्रवृत्तयनि (ना था) ।
- पर मक्की न बठने देना, सु, दोषलशामपि न सह (भ्वा आ से) २ विमल-ज्वलत् (वि) स्था (भ्वा प ज) ।
- दोलना, सु, नाम (भ्वा अ मे) धर्ष राखते (ना था), धधरव कृ ।
- भौ चढ़ाना या सिकोड़ना, सु, अर्चि अप्रीति वा प्रकटी कृ ।
- मे दम करना, सु, अत्यर्थ-क्लिष्ट (क प से) बाध (भ्वा आ मे) ।
- रथना, सु, समान रथ (भ्वा प ने), अपमानात् त्रै (भ्वा आ अ) ।
- सिकोड़ना, सु, अर्चि घृणा वा दृश (प्रे) । नाकौ च्चे चत्रवाना, सु, अर्द्ध-ज्यथ (प्रे), परि-भनात् (प्रे) ।
- नाक^२, स पु (स) स्वर्ग २ आकाश इन्द्र ।
- नाकडा, म पु (हि नाक) नामापात्र २ दीर्घनामिका ।
- नाका^३, स पु (हि नाकना = लंगना) रथ्यात, मागावधि (पु) २ बीधी, जगर्द ३ नगरादीना प्रवेशद्वार ४ नगरपाल पुर रक्षक-स्थान ५ सूची-पत्रम् ।
- वर्टा, स स्त्री, (पुररक्षकै) मागावरोध बीधीप्रतिबन्ध ।
- नाका^२, स पु (म नक) कुभीर ।

- नाकिम्, वि (अ) सशेष, विकल ।
- नावेश, म पु (स) इन्द्र, देवराज ।
- नाखुदा, स पु (फा) पौत नौरा, अथ्यप्र, वणधार ।
- नापुता, म पु (फा) अर्म मर्म, नेत्ररोगभेद ।
- नापुन, म पु (का नापुन) नप-ख, नलर २, बर, न अद्यत अदेश-कल्प कह, पुनर, -व नव ।
- नापुना, स पु (फा) दे 'मोतियाविद' । २ अधनेनेपु रक्तेरणा (स्त्री) ३ मूल कौण्ड ।
- नाग, म पुं (म) मर्द, पद्म ० गज, हस्ति ३ निर्दय, क्रूरचारि ४ देवभेद ५ नागेश्वर ६ पुत्राग ।
- केस(श)र, स पु (म) नागर्ण-व्य, नागीय, पद्म-रणि, केस(श)र ।
- पचमी, म स्त्री (म) श्रावणशुक्ल-पचमी, एकभेद ।
- फनी, म स्त्री (स नालपण-) कन्दारी, दुर्धर्षा, दुष्प्रवेसा, ती-शक्यता ।
- फौस, म स्त्री (म नागपाल) वरणासुध २ साङ्गदयाकनैनात्मज पादाभेद ३ ५ धन प्रकार ।
- बेल, स स्त्री (स नागवल्ली) ताम्बी, ताब्ल बली, नागलता, पूर्णा ।
- नागर, वि (स) दक्षिण, चतुर विदग्ध, सन्ध ० पौर, नागरिक । म पु, नगर पौर, पत्र, पौर, नागरिक ।
- नागरक, म पु (म) शिल्पिन्, शिल्पनर ० नगर प्रबन्ध ३ चौर । वि, दे 'नागर' ।
- नागरमोथा, म पुं (स नागरमुस्ता) चनाना, चूटाल, कच्छकृष्ट, नारैयी ।
- नागरिक, वि कथा म पु, दे० 'नार' (१२) ।
- नागरिकता, म स्त्री (म) नागलता, पौरता ० दक्षिण्य, विदग्धता, सन्धता ।
- नागरी, म स्त्री (म) पुर नगर-नामिनी २ चतुरा, प्रवीणा (नारी) ३ देवनागरा लिपि (स्त्री) ।
- नागहानी, वि स्त्री (फा) आनन्दिनी । यादुन्दिनी ।
- नागा, म पुं (म नग) नग्नभिधु ।

नागा, स पु (अ) अनुपस्थिति (स्त्री),
अनुपस्थिति (पु), कायपरंपराभंग, अवकाश ।
नागिन, स्त्री, स स्त्री (स नागी) सांपणी,
उष्ण सुखी, सुखार्थी ।
नागेश(स)र, स पु, दे 'नागेश्वर' ।
नागेश(स)री, वि (दि नागेश(स)र) पीन,
दे 'बाल' ।
नागोद, स पु (स नागाश्वर) उरम्
वक्षम् -नाग, आश्रमा, उरदे ।
नागोट्टिका, स स्त्री (स) वरहस्तवाणि
श्रागम् ।
नाथ, स पु [स नृप, नृत्ति (स्त्री)]
नान, लृत्, २ (मीमांसा) लस लस्यन्थक
इ (उद्गत) लडव ४ नदन, नाट, नाट्यम् ।
—धर, स पु, नृत्य, नागस्थानम् ।
—मडल, स पु, नृत्य, नागस्थानम् ।
—रङ्ग, स पु, आमोदप्रमोदा, उल्लास,
विनाद, वीतुकम् ।
—नचाना, सु, अर्द्धशुभ (प्रे), ड (स्वा
प अ) ।
नाचना, क्रि अ (स नचन) नृर (दि प
से) नट (स्वा प मे), नृत्य कृ। स पु,
दे 'नाच' ।
नाचनेवाला, स पु, दे 'नचन' ।
नाज्ञ, स पु (का) दे 'नचन' ।
—अदा, —नचन, स पु, हावभावी, विभ्रम,
विदास ।
—बदर, स पु, चाङ्कार, निश्वाप्रशमक ।
नाज्ञनी, स स्त्री (का) सुन्दरी, वामा ।
नाज्ञिर, स पु (अ) निरोक्षक २ आमोदघृ
(पु) ग्रहक ।
नालुक, वि (का) कीमल, मुकुमार, मृदुल
२ प्रतल, सुक्ष्म ३ अशुर, भिदुर ४ मयवर,
भयावह ।
—बदन, वि (का) कोमलानन्दवग (—नी,
तन्वा स्त्री) ।
—मिज्ञाज, वि (का+अ) मोदलप्रवृत्ति,
मृदुत्वभाव ।
नाटक, स पु (स न) दृश्यराय, अभिनय
ग्रन्थ, महारूपक २ अभिनय, नाट्यम् ।
—कार, स पु (सं) नाटक-रूपक,कार
प्रोक्त (पु) ।

—शाला, स स्त्री (स) रागात् ।
नाटकीय, वि (स) गान्धर्व, विपरीत-वधिम् ।
नाटना, अ अ, दे 'नचनकार करना' ।
नाटा, वि (स नत) उष, वामन, रन्ध्र,
हृत्स्वरात् ।
नाटय, स प (स न) तीव्रिण नृत्यगत
वाद्य २ अभिनय २ विन्धन, अनुकम् ।
—शाला, स स्त्री (स) रगन्ध्र मडिर
शाला ।
नाडा, स पु (स नाट) नावा वि (स्त्री),
वनीवस्ववध नावा ।
नाडी, स स्त्री [स नाडी (स्त्री)] दे
'नचन' २ नाड नचनिका प्रणाल स्त्री
३ धमनी रक्तवाहिनी ४ शि(मि)रा, रक्त
वाहिनी ५ (रक्त की अति सूक्ष्म नाडी Cap
illary) वैशिकनाडी ६ चालकनाडी
(Motor nerve) ७ मानेदानवनाडी
(Sensory nerve)
—चलना, क्रि अ, नची स्फुर (तु प मे)
स्पर् (स्वा आ से) ।
—मडल, स पु (स न) नाडी-वाल, मस्थानम् ।
—रूना, सु, दे 'भरना' तथा 'मूछन होना' ।
नाणक, स पु (स न) टक-क, मुद्रा ।
नाता, स पु (स ज्ञानि) मवध, बधुना,
सगोत्रका, सन्तानिता, मषिचना ।
नातिन, स स्त्री (दि नाती) दौहिनी २
पौत्री ।
नाती, स पु [स मृत् (पु)] दौहिनी २
पौत्र ।
नाते, क्रि वि (वि नाता) मबंधन (तु) ।
—दार, स पु, ज्ञानि बन्धु-बाधव, मग-वग
जन ।
—दारी, स स्त्री, दे 'नाता' ।
नाथ, स पु (स) अधिपति (पु), प्रहृ
स्वामिन् २ पति, अर्द्ध ३ नाथ, पशुनामा
रञ्ज (स्त्री) ४ वीरिनामुपाधिभेद ५ अ
(आ)दितुन्त्रि, चालमाहिन् ।
नाथना, क्रि स (स नाथन) नाथ
(स्वा प मे), वशी कृ, अभिभू (स्वा प मे)
२ नाथा व्यध् (दि प अ) नाथाया चिद्र ३ ।
नाद, स पु (मं) शब्द, ध्वनि (पु), गव
२ गीत, गीतिका ३ गन्धन, गानन ४ प्ररतन
भेद (स्वा) ५ अर्द्धवद, नर्द्ध (पु) (व्या)

—विद्या, स स्त्री (स) मगीतशास्त्रम् ।
 नादान, वि (फा) जज्ञ, भूम, चट ।
 नादानी, स, स्त्री, (फा) अज्ञान, मौख्य,
 'नाटयम् ।
 नादित, वि (स) वादित, ध्यान, ववणित,
 ध्वनित ।
 नाद्रिम, वि (अ) लज्जित, हाण ।
 नाद्रि, वि (फा) अन्धुन, विचित्र ।
 नाद्रिराहा, स स्त्री (फा नाद्रिराहा)
 निप्रदाशन नृगंसता, क्रूरहृत्थम् । वि,
 धोर नृगम ।
 नायना, क्रि म (म नङ=वङ) योक्त्र
 यति (ना धा) युन चु) २ आरम्भ
 (स्वा आ अ) ।
 नान, म स्त्री (फा) मूलराटिन ।
 नानसनाई, स स्त्री (फा) मिष्टानभेद,
 *नानसनायी ।
 नानराई, स पु (फा नानरा) आपूपिक,
 वादवित्र ।
 नाना, स पु (देश) माताग्रह, मातु पितृ
 (पु), जननीजनक ।
 नाना, वि (स) विविध, बहुविध २ अनेक,
 बहु ।
 —भोति, वि, अनेकप्रकार, नानाजातीय ।
 —रूप, वि, (स) अनेकबहु, रूप ।
 —वर्ण, वि (म) अनेकबहु, वर्ण रंग ।
 —विध, क्रि वि (मं धं) अनेकधा, बहुधा ।
 नानार्थ, वि (म) अनेकार्थ, बहुर्थ २
 अनेकत्र बहुत्र, उपयुक्त ।
 नानिहाल, स पु दे 'ननिहाल' ।
 नानी, स स्त्री (देश) माताग्रही, मातु
 मातृ (स्त्री), जननीजननी ।
 * नर जाना, मु, हनोन्माह गनमाहम (वि)
 भू ।
 नाप, स स्त्री (मं मावन) प्रपरि, मार्गमिति
 (स्त्री) मानं २ मानदण्ड, मापनमाधन,
 मानम् ।
 —ताल, स स्त्री, मापन-जोखन दे (न) ।
 नापना, क्रि म (म मापन) मा (दि आ
 अ, चु आ अ, अ प अ), मानं निरूप
 (चु), ३ 'मापना' ।
 नापित, स पु (म) दे 'नाप' ।

नाफा, स पु (फा) कस्तूरी मृगमद, कोठ
 कोष ।
 नाभि, स स्त्री (सं पु स्त्री) नामी, सुन्द
 कृपी, उदरावर्ध, हुँद-दीदि (स्त्री), तुदिका
 २ चक्रमर्थ ३ कस्तूरी ।
 नाम, स पु [मं नामत्र (न)] अभिधा,
 अभिधानं, अभिषेय, आहा, आह्वय, आख्या,
 मशा २ यशम (न) रयाति (स्त्री) ।
 —ररना या धरना, वि म, नाम-सहा क,
 अभिधा (जु उ अ) ।
 —करण, सं पु (मं न) सत्कारभेद
 (वर्म) २ नामदानम् ।
 —कमाना, —करना, —पाना य—होना,
 मु, विव्यान विश्रुत-महायज्ञस्क (वि) भू ।
 —दुयोना, मु, यश मलिनी क, ख्याति नञ्
 (प्रे), कीर्ति कर्कयति (ना भा) ।
 —पर ध-वा लगाना, मु, दे 'नाम दुयोना' ।
 नामक, वि (म) नामध रिन्, आस्व, संज्ञक ।
 नामर्द, वि (फा) नपुंसक २ भीरु ।
 नामो, वि (म नामन्) नामक, नामधेय
 २ विरयान, विश्रुत ।
 —गिरामी, वि (फा, मि मं नानप्रामिन्)
 यशस्विन् प्रसिद्ध ।
 नायक, स पु (सं) नेत्र-अग्रणी (पु),
 सुग्य, प्रमुख २ स्वामिन्, प्रभु, अधिपति
 ३ नरव्याघ्र, जननायक ४ कवापुरप
 (सा०) ५ मर्गतकुशल ६ सेनापति ।
 नायका, स स्त्री (सं भायिना) द
 'नायिका' २ वेद्याजदनी ३ दूता, कुट्टिनी,
 शमली ।
 नाय(ङ)न, स स्त्री (हि नाई) नायिनी,
 धुरिणी, मुण्डनी, क्षैरिणी ।
 नायक, सं पुं (अ) प्रति, -निधि (पुं)
 हस्तक पुरुष २ सहाय-वक्, महकारिन्
 उप- (उ उरमविद) ।
 —तहस्वीलदार, सं पुं, उपमण्डलेश-श्वर ।
 नायिका, स स्त्री (सं) शृंगाररमालम्बन
 भूता नारी २ सुन्दरी रूपिणी ३ कान्ता,
 दयिता ।
 नारंगी, स स्त्री (सं नारग) (वृक्ष) नाग
 रग, नारंग, नागर, पेशवन, त्वग्गन्ध,
 (फल) नारंग, नारगक, नारगकम् ३ । वि,

विच्छिन्न, कौमुभ [-भी (स्त्री)], धीन
लोहित ।

नार-रि, म स्त्री, दे 'नारी' तथा 'नाल' ।

नारकी, वि (रु मिन्) नारकिक, नारकीय,
पाणिन् ।

नारद, म पु (म) दैतयिविशेष ।

नारमल, वि (अ) सामान्य, साधारण, यथाह ।

नारा, म पु, दे 'नारा' ।

नाराज, वि (फा) अप्रसन्न रश्च ।

—होना, क्रि अ, तुष (दि प मे), ऋ
(वि) भू ।

नारायण, स पु (म) विष्णु, चक्रिन्, इश्वर ।

नारायणी, म स्त्री (स) लक्ष्मी २ दुर्गा
३ सुदधान्मुने पत्नी ३ दुर्वाधनाय दत्ता
कृष्णमेना ।

नारियल, स पु (म नारिकेल स्त्री) (वृष)
मदारम-दृढम्ब, फल, तुण, उच्च, ममत्व
(फल) अफक, कौशिकफल, नारिकेल क ।

नारियली, स स्त्री (हि नारियल) नागिरेण
२ अफक-नारिकेल, रस ३ नारिकेलमार ।

नारी, म स्त्री (म) स्त्री, यामिनी, यो(जो)
या, यो(जो)विद् (स्त्री), अवला, बामा,
बनिता, महिला, गमा, प्रिया, तनी नि (स्त्री),
सुभ्र-वधू (स्त्री), यो(जो)विता ।

—दूषण, म पु, (म न) सुरापानदुर्जन
ममगाद्व छीरीपा ।

—रत्न, म पु, (म न) श्रेष्ठ-उत्तम रूपगुण
शील्वनी, नारी ।

नाल^१, म स्त्री (म नाल) नाल-ली निहा,
ममलादीना दृष्ट २ दे 'नाल' ३ अन्यत्र
नाली-स्त्री ४ मूत्रवेष्टन, वमर ५ दे 'आक-
नाल' ।

नाल^२, स पु (अ) मुरख, सुरत्रण २, लोह
बलय-वग् ।

—वट, म पु (अ + फा) सुरव, वधक
योजन ।

—पट्टी, म स्त्री (अ + फा) सुरवधधनम् ।

—लगाना, क्रि म, सुरव वधू (क् प अ),
सुरत्रेण मनाथी क ।

नालकी, म स्त्री (स नाल) शिकामेद,
नालकी ।

नाला, स पु (स नाल) अपक-सु-सुद, नरी
सति (स्त्री) २ दे 'नादा' ।

नालिश, म स्त्री (या) अभियोग, माया,
मायापाठ ।

—करना या दागना, क्रि म, अभियुक्त
(ह आ अ च) रापुल निविद् (प्रे) ।

नाली, म स्त्री (म) नाल, नालि (स्त्री),
प्रणाल लो जलमार्ग, परि(री)वाह २ नाटी,
धमनी, शिरा ३ धात्वदिनालोटी ।

नाव, म स्त्री [स नौ (स्त्री)] तरणी गि
(स्त्री), तरी रि (स्त्री), तरिका, तरल ।
(लोके) नौका, उडुप, कोल, प्लव ।

—चलाया, क्रि स, नौवा प्रे-वह चल् (प्रे) ।

नावरू, म पु (फा) धुद्रवाणभेद २ मधु
मनिरादश ।

नाविक, म पु (म) ओडुपिण, नौ-तरणी
वह २ वणधार, सुरवन-कि ।

नाश, म पु (म) प्रणाश, विनाश, प्रवि
ध्वम र्च्छेद, क्षय, सहार ३ अदर्शन,
लोप, निरोधान ३ मृत्यु (पु) ।

—करना, क्रि म, प्रवि, नश्र-ध्वम् (प्रे)
उत्-अव मद् (प्रे), क्षै-विधुम् (प्रे), उच्छिन्न
(रु प अ) २ दे 'मारना' ।

—होना, क्रि अ, प्रवि, नश (दि प वे)
प्राव, ध्वस् (स्वा आ मे), प्रविनी
(दि आ अ), क्षय इ-या (अ प अ) ।

नाशक, म पु (म) प्रवि, ध्वसक, क्षयकर
[री (स्त्री)], उच्छेदक सहारक २ धातुक,
अनवर [री (स्त्री)], नाशकारिन् ।

नाशपाती, स स्त्री (वु) अमृत रत्न, फल,
अमृताहम् ।

नाशवान्, वि (स-वन्) क्षयिन्, क्षयिष्णु,
क्षय नाश, शील, वि, नशर [री (स्त्री)]
अनित्य, अशुभ ।

नाशी, वि (स-शिन्) दे 'नाशक' २ दे
'नाशवान्' ।

नास्ता, म पु (फा) कवयवर्ता, प्रास्ता,
वप-व्यु, आहार, नलपानम् ।

नास, म स्त्री (स नस्य) मुक्ती, नासाधूर्णम् ।

—दान, म पु, नस्य-गत-नी ।

नासपाक, म पु (फा) अपक-वाडिमत्व
(स्त्री) २ अपक-वाडिमम् ।

नासा, म स्त्री (स-दे 'नाक') (१) तथा नगना' ।

नामिका, म स्त्री (म) दे 'नाक' (१-२) ।

नासूर, स पु (अ) नावीजग. णम् ।

नास्तिक, सं पु (स) अनीश्वरवादिन्, निरीश्वर, श्वरातिशयिन् ।
 नास्तिकता, म स्त्री (म) अनीश्वरवाद, श्वरातिशय, नास्तिक्यम् ।
 नाह, म पु, दे 'नाह' ।
 नाहक, त्रि वि (का) वृथा, व्यर्थं मुधा, निरर्थक, निरुत्कम् ।
 नाहर (र), म पु (स नरहरि >) निह २ व्याप्त ।
 निदक, स पु (स) अभिदापक, अभ्यमुख्य, अप परि-वारक जाशेपक पिशुन ।
 निदनीय, वि (म) निच, उपास्य, गहणीय, वाच्य गह्य > अमर, अनुभ, कुत्सिन ।
 निदा, म स्त्री (म) अप परि-वाद, आ अधि-क्षय, अव अप-उप, मोक्ष, कुत्सा गह्य, गहण, कुत्सन, भक्तन ना ।
 —करना, त्रि म, निद (भ्वा ष म) गह (सु भ्वा आ म) जधि-आ क्षिप (तु ष ज), अप परि-वृद (भ्वा ष से) आनुश (भ्वा ष अ), निभक्तम् (सु आ से) ।
 —होना, क्रि अ, उक्त धातुओं के कम रूप ।
 निद्राम्ना, वि (दि नीद) निद्राञ्ज तद्रिल, निद्रान्म ।
 निद्रित, वि (स) अधि आ, शित, गहिन, आक्रुष्ट, निभालन > कुत्सिन, गहिन ।
 निच, वि (म) दे 'निदनीय' ।
 निच, सं पु (म) अरिष्ट, सवतोमर, निक्षय, शीत ।
 निचरीरी, म स्त्री (म निच >) दे 'निचरी' ।
 निचू, म पु [म निच(वृ)क] (वृक्ष) जन्तु चवीर, दानान्त, राजन, शोधन, तदु मारिन, निचू (स्त्री) । (क) चवीर, चवीरक इ ।
 निक्षक, वि (म) अमय, निभय, ज्ञान, निर्भीक २ नि मञ्जोच, नि मरुह । त्रि वि, निभय, नि मञ्जोचम् ।
 नि शब्द, वि (म) नीरव, विराव, मूढ, मौनिन् ।
 नि शेष, वि (म) अशेष, अनिष्ट, समग्र, समस्त > समत, अवमित, सपूर्ण ।
 नि श्रेयस, म पु (म न) अपवत्, मुनि (स्त्री), मोक्ष, २ वचाय, मगलम् ।
 नि श्रान्त, स पु (सं) बहिमुत्प्राप्त, श्रान्त,

अपान, पान > उच्छ्वास, उच्छ्वमित, दीर्घ (नि)शाम इ ।
 नि मञ्जोच, क्रि वि (म-ञ्) निर्वैज्य, नि मशय, नि शक २ निभय, निष्कामम् ।
 नि मग, वि (म) अमग, गत-वीन, मग > नित्य ३ नि स्वाथ ।
 नि मत्तान, वि (म) अनपत्य, निरपत्य, निरन्वय, निर्वैद्य, अयुन । (स्त्री =वध्या, जतिश्री, अनपत्या) ।
 नि मरुह, त्रि वि (म इ) नि शक, नि म शय, अमशय, शरा मरुह, विना । वि, निवि कल्प, नि मशय, असाथ नि शक ।
 नि मशय, वि तथा क्रि वि, द नि मरुह ।
 नि सार, वि (स) नीरम विरम, नि मत्त २ तुच्छ, क्षुद्र ३ अमार, तस्वीन ।
 नि-सोम, वि (म) अनत, अमित, अपरिमित, निरवधि ।
 नि सूत, वि (म) निगत, नियात, निष्कान्त ।
 नि सूद, वि (म) निष्काम, अराम, निरिच्छ २ निर्लोभ, सतुष्ट ।
 नि स्वार्थ, वि (म) स्वात्मवहित स्वार्थ हीन विमुक्त, परोपकारिन् ।
 निष्कामत, म स्त्री (अ नेत्रमत) अलभ्य दुर्लभ, वस्तु (न) > स्वादुवस्तु ३ धनम् ।
 निष्कट, वि (स) आमत्र, समीप, सन्निकृष्ट सन्निकृष्ट, दे 'समीप' ।
 —चर्ती, वि (स लिन्) निष्कट्य, समीपवत् ।
 निष्कृता, म स्त्री (स) समीपता' दे ।
 निष्कम्मा, वि (म निष्कम्भ) वृत्तिहीन, निष्वापार २ अल्प, आत्मव्यशील, निरुपम ३ निरुत्थ, मोन, अनुपयोगिन् ।
 निष्कर, म पु (स) गण, समूह २ राशि (पु) ३ निधि (पु) ।
 निष्करक, वि (म निष्करक) निर्लोभ, निष्पाप, अनर, दीप-माप, रहित, शुद्ध, पवित्र ।
 निष्करकी, म पु (म वकि) विष्णा दशमावतार । वि (दि निष्कर दे०) ।
 निष्कर, म स्त्री (अ) धातुभेद, निर्दिष्टम् ।
 निष्करना, क्रि अ (दि निष्करना) निगम, शिवा तथा अप- (दाओं अ ष अ), नि म् (भ्वा ष अ), निष्कम् (भ्वा ष म), पृथग् मू २ अतिकम्, उद-मं, मृ (भ्वा ष मे), अनि इ, उद-म् (भ्वा आ से) ।

३ साफली-उत्तीर्ण भू ४ गन्, या, व्रत्
(भ्वा प मे) ५ उद्, उद्गम्, उद्ग्य
(भ्वा आ मे) ६ च्नु (दि आ न)
प्रादुर्भू, उत्पद् (दि जा अ) ७ तिष्
म-मद्, तिष् (दि प अ) ८ (मबाल
आदि) उन्-र लभ प्राप् (कर्म) ९ प्रवृद्
(भ्वा आ मे) प्र-वर्-वल् (भ्वा प मे)
१० विनिर्, न्नु-र (कर्म) ११ आविष्क
(कर्म) १२ स्थापित प्रमणित (वि) भू,
निष् १३ अप-न्-स्युष (भ्वा प अ),
पन्नाय (भ्वा आ न) १४ आप, लभ
(कर्म) १५ (ममवादि) व्यति ६, अतिक्रम
न् । स पु दे 'निगम' ।

निकलनेवाला, म पु निर्वात् निर्वात् ६ ।
निकलाना, क्रि प्रे, व 'निवटना' के प्रे रूप ।
निकप, म पु (म) दे 'कमीर्ण' ।

निक्रपा, स स्त्री (म) रावणदिराक्षमना
मातृ (स्त्री) । अव्य०, समीप पे, अन्तिज-के,
दे० 'समीप' ।

निक्रपोपल, म पु (म) दे 'कमीर्ण' १ ।
निकाई, स स्त्री (म निक = स्वच्छ >)
भद्रता, प्रशमना ० सुदरता, मनोगता ।

निकाम, वि (म) पयात्, अल (चतुर्थी के
माथ), आवश्यकनानुरूप । २ अभीष्ट, स्पष्ट
३ विपुल, बहुल ४ इच्छुक, अभिलाषिण,
आकांक्षिण ।

अव्य० अत्यन्त, अत्यधिक, बहू, भृश, भूरी
(मव अव्य०) ।

निकाय, म पु (म) गण, सघ २ चय,
रशि (पु) ३ गृह, सदन (न)
४ ईश्वर ।

निकाल, स पु (हि निकलना) दे 'निकाम' ।
निकालना, क्रि म (स निष्कालन) ४
'निकलना' के प्रे रूप ।

निकाला, म पु (हि निनालना) निर्-वि,
वामन, अपमारण, निष्कामन, प्रवृत्तन्म् ।

निकाम, म पु (म निष्काम) अप-न्-रि,
गम, अप-निष्-कर्म क्रमण, २ निष्कामन,
निष्कालन ३ द्वार, द्वार (स्त्री) ४ क्षेत्र,
मनभूमि (स्त्री) ५ उद्गम, प्रभव ६ रक्षी
पाय ७ आपोनाय ८ आय, अध्यात्म ।

निकामी, स स्त्री (हि निकन) प्रस्थान,

निर्गम २ आय अर्थलाभ ३ विक्रय,
विनिर्वा, निर्गमशुल्क-कर्म ।

निकाह, म पु (अ-विवाह इत्याम) ।
निकुन, म पु (म पु न) कुन-उ, लना
मटप, पर्णशाला ।

निकृति, म स्त्री (म) निरस्कार, अपमान
२ शठता, नीचता ।

निकृष्ट, वि (म) अधम, अवर, अपकृष्ट, धुट,
गद्य, निच, नीच, होन, जघन्य ।

निकृष्टता, म स्त्री (म) अधमता, छुद्रता,
हीनता, गद्यता, जघन्यता, नीचता इ ।

निकेत, म पु (म) निदेत, निदेतन, गृह,
स्थान, स्थानम् ।

निकित, वि (म) प्र, अल्प शिष्य, जब नि
पणित २ त्यक्त, विसृष्ट ३ अधिष्ट, न्यम्न ।

निक्षेप, म प (स) नि प्र श्लेष-श्लेषण,
प्रामन, प्रेरण निपाण २ त्याग, विमर्ग,
उद्वि-मग, विसृजन ३ आधि-उपनिधि
(पु), व्याम ।

निखग, स पु, दे 'तरकस' ।
निखट्ट, वि (हि नि = नदी + सटना =
कमाना) उद्यम-उद्यो-व्यवसाय, विमुक्त, अन्स ।

निखरना, क्रि अ (स निखरण >) निर्मली
स्वच्छी भू, शुष् (दि प अ) प्र-म-मृत्
(कर्म) २ सुदरतर (वि) जन् (दि आ से) ।
निखरवाना, निखराना, क्रि प्रे, ६ 'निखरना'
के प्रे रूप ।

निखरी, म स्त्री (हि निखरना) पक्व घृतनक्व,
भोजनम् ।

निखर्व, स पु (स निखर्व-र्व) दशउपमस्या
दशसहस्रकीर्णयो वा, तद्वरी । वि, वामन,
हन्वराय ।

निखार, म पु (हि निखरना) निमलता,
स्वच्छता २ शृङ्गार ।

निखारना, क्रि म, ४ 'निखरना' के प्रे रूप ।
निखिल, वि (म) अखिल, समन्व, मपूर्णा ।

निखोट, वि (हि नि + घोट) निर्दोष, शुद्ध ।
निगदना, क्रि म (फा निगद = यावन)
तूला निव (दि प मे) ।

निगड, स स्त्री (म पु न) भद्रक, अधु ।
२ श्वखल-खल, वधनम् ।

निगम, म पु (स) वेद, श्रुति (स्त्री)

० मार्ग ३ आपण, विपणीणि (स्त्री)
 ४ मेल, मेलक ५ बाधिज्यम् ।
 निगमन, न प (स न) प्रत्याम्नाय (भ्या) ।
 निगरण, न पु (स न) मक्षण, रावन
 ० कठ, गल ।
 निगरानी, न स्त्री (ता) निरीक्षण, पयवेक्षणम् ।
 निगलना, क्रि म (स निगलन) निगल्
 (भ्वा प से) निगू (तु प से), ग्रम्
 (भ्वा जा मे) ० हे 'जाना' ।
 निगह, स स्त्री दे निगाह' ।
 —गत, न पु (का) रक्षक, परिचाता ।
 —वानी, न स्त्री, रक्षा, प्राणम् ।
 निगाली, न स्त्री (देश निगाल = वाम का
 प्रकार) धूमपानयंत्राली ।
 निगाह, स स्त्री (का) दृष्टि (स्त्री) दृक्
 शक्ति (स्त्री) २ दशन, वाक्षण, विलोकन
 ३ कृपा दया, दृष्टि ४ विचार, मति (स्त्री)
 ५ विवेक ।
 —रडाना, सु, कटाक्षेण अवलोक (सु) चाम्
 (भ्वा आ से) ।
 निगूढ, वि (स) निर्लून, प्रच्छन्न, निभूत ।
 निगोडा, वि (हि निगुटा) दुष्ट, खल,
 ० ग्रथन, नीच ३ मद्दहत, भाग्य, दुर्दैव ।
 —नाडा, म, पु, बहुहोन निर्वास, अविवाहित ।
 निग्रह, म पु (स) अवनि, रोध, नियन्त्रण
 ना, वाधा, प्रति, बध रोध २ दम, दमन
 ३ दंड ४ पीटन, मनापन ५ नियन्त्रण, बधन
 ६ मत्तन ना ।
 —स्थान, स पु (स न) वादे पराजयस्थान
 (न्या) ।
 निग्रह, स पु (स) शाप २ दंड ।
 निघट्ट, म पु (स) वैदिकबीपविशेष
 २ शब्दसंग्रह ।
 निघर्ष, म पु (स) दे 'निमाव' २ पेषण,
 चूणन, मर्दनम् ।
 निघात, म पु (स) प्रहार, आपात
 ० अनुदात्तस्वर (न्या०) ।
 निघाती, वि (स-तिर) प्रहृष्ट, आहृष्ट,
 प्रहार, आपातक २ घातक, मारक, प्राणहर ।
 निचय, म पु (स) समूह, राशि, गण,
 निर ० निश्चय ३ मलय, समूह ।
 निजगा, वि (हि नीचे) अर्वाच, अध स्थ,
 अवर, अधस्तन, नीचस्थ, अध (उ अयोदेश) ।

निचला, वि (स निश्चल) अचल, स्तम्भ
 २ शान्त, गम्भीर ।
 निचाई, स स्त्री (हि नीचा) अपकर्,
 हीनता, निम्नता ० अधमता, नीचता, गद्यता
 ३ निम्न, देग भूमि (स्त्री) ।
 निचान, स स्त्री (हि नीचा) अवसर्पि प्रवण,
 भूमि (स्त्री), ० प्रावण्य, व्रगश निम्नता ।
 निचिंत, वि, दे 'निश्चित' ।
 निचुड़ना, क्रि ज (स निच्यवन) च्यु
 (भ्वा आ अ), च्युव (भ्वा प से), क्षर
 निगल् (भ्वा प से), स्र (भ्वा प अ),
 २ निषमपीट (कर्म), निहृष्ट-उदह
 (कर्म) ३ दुःखीभू ।
 निचोड, स पु (हि निचोड़ना) मूल, मूलवस्तु
 (न), नियाम, सार २ २ तात्पर्य, निष्प,
 भाव, निर्गलित निहृष्ट पिणित, अर्थ ।
 निचोड़ना, क्रि म (हि निचुड़ना) निष्-स
 पीट (चु), उद् निहृ ह (भ्वा प अ),
 निहृष्ट (भ्वा प अ), निगल् (प्रे)
 २ सर्वस्व ह, निरनी ह । म पु, निष्-म
 पीटन, निष्करण, निगालन, मवस्वहरणम् ।
 निछात्र, म पु (स न्यासावर्त मि अ
 निमार >) (पी-कदेवमावनादे) अर्पण,
 उपनयन, उपहरण, उत्सजन २ उत्सर्ग, दान,
 बलि (पु), उपायनम् ।
 —करगा, सु, उत्सृज (तु प अ), त्यज्
 (भ्वा प अ) ।
 —होना, सु, कर्मचित प्राणान् त्यज् ।
 निज, वि (स) आत्मीय स्त्रीय, स्वरीय,
 स्वर, आत्म, स्व २ व्यक्तिगत, वैयक्तिक
 ३ मुरय, प्रधान ।
 —का या निजी, वि, दे 'निज' २ ।
 निठल्ला ह्लू, वि (हि नि+टल्ल = वाम)
 क्षीण निर, वृष्टि, वृष्टिहीन, निर्व्यापार
 २ अलस, कायविमुग्ध । स पु, वानतायण ।
 निठाला, स पु (हि नि+टल्ल) अवगारा,
 निर्व्यापारता ।
 निडर, वि, दे 'निडुर' ।
 निडुराई, स स्त्री (हि निडुर) दे 'निडुरता' ।
 निडर, वि (स निरंर) अभय, अभीन,
 निर्भीर, विदर २ माहमिग, माहमिन् ३ घृष्ट ।
 —पन पना, म पु, निर्भयता, निर्भीरता ३ ।

निडाल, वि (हि नि+डाल = निरा हुआ)
आन, कान, शिथिल, अशक्त २ अलम,
निरुत्पह ।

नितय, स पु (म) दे 'चूतड' २ स्कथ
३ सट-टम् ।

नितप्रिनी, म स्त्री (स) सुनितवाची नारी
२ सुन्दरी ।

नित, क्रि वि दे 'नित्य' क्रि वि ।

—नित, क्रि वि दे 'नित्य' क्रि वि (१) ।

नितरा, अ श (म) पूणतया, सामरत्येन,
२ अनिदोनेन अत्यत ३ सदा ४ निश्चयेन ।

नितान, वि (म) अत्यधिक, सानिश्य,
निरनिशय, अत्यत । क्रि वि, मवथा, पूणतया,
अत्यन्तम् ।

नित्य, वि (स) शाश्वत [नो (स्त्री)] अन
शर, अविनाशित, धन, सनन, अनाद्य
नन, अमर २ अहिक्रि प्रात्यहिक [स्त्री
(स्त्री)] । क्रि वि अनु प्रति, दिन, दिने
दिने प्रत्यह, अन्वह २ सदा, सर्वदा,
३ सतत, अविच्छिन्नम् ।

—कर्म, स पु [स मन् (न)] प्रात्यहिक
दैनदिन, कार्य, अद्विज, नित्य, क्रिया-कृत्यम् ।

—प्रति, क्रि वि, दे 'नित्य' क्रि वि (१) ।
नित्यता, म स्त्री (म) नित्यत्व, अमरता,
ध्रुवता, शाश्वतता ।

नित्यानित्य, वि (स) भ्रुवाभ्रुव, शाश्वता
शाश्वत ।

निधरना, क्रि अ (म नि+न्धिर >) स्थैर्येण
निर्मलीभू (जलादि) । म पु, निकण्ठन,
*निपदनम् ।

निधार, म पु (हि निधरना) निर्मलजल
२ नलाध स्थित मलम् ।

निधारना, क्रि म (हि निधरना) स्थैर्येण
निर्मली कृ अवावा शुध (प्रे) ।

निदर्शक, वि (स) प्रदर्शक, दर्शयितृ
२ कथक, कथित, अपयापक, शापक ।

निदर्शन, म पु (म न) उदाहरण, दृष्टान
२ प्रदर्शन, प्रदर्शरणम् ।

निदर्शना, स स्त्री (म) काव्यालंकारभेद ।

निदाघ, स पु (म) शोम, शोष्, काल
ममय ऋतु (पु) २ आतप, सर्वालोक
३ दाह, ताप ।

निदान, म पु (म न) रोगनिर्णय रोग
हेतु (पु) २ आदि-मूल-कारण ३ कारण
४ अत, अवमान ५ शुद्धि (स्त्री) ।
क्रि वि, अतत, अति, अततो गत्वा, चरमत ।
वि निकृष्ट, अधम ।

निदारण, वि (म) कठोर, घोर, दु मह,
अमह्य १ निर्दय, निष्करण ।

निदिध्यासन, म पु (स न) निदिध्याम,
मनन-निरन्तर अनवरत, चिन्तन-स्मरण ध्यानम् ।

निदेश, वि (स) आज्ञा, आदेश २ कथन
३ मामीष्यम् ४ पात्रम् ।

निद्रा, स स्त्री (म) स्वप्न स्वपन, स्वाप,
सुप्ति (स्त्री) शयन, मवेश ।

—भग, स पु (स) जागरणम् ।

—वृक्ष, म पु (स) अन्धकार ।

निद्रायमान, वि (स निद्रायमाण) शयान,
निद्राय, निद्रित, शयित ।

निद्रालु, वि (म) तद्रालु, निद्राशील, शयालु ।

निद्रित, वि (म) शयित, सुप्त, निद्रागत ।

निधटक, वि (हि नि+धटक) नि राकोच,
निर्भय नि शक । क्रि वि, निर्भय, नि सकोच,
नि शक, विश्रम्भम् ।

निधन, म पु (म पु न) मृत्यु २ नाश ।

निधन, वि (स) दे 'निर्धन' ।

निधान, म पु (स न) आधार, आश्रय,
२ निधि, कोष ३ स्थापनम् ।

निधि, म पु (स) कोष ष, द्रव्य-राशि
(पु) सग्रह-मन्त्र, निधान, शे(मि)धि
(पु) २ आधार, आश्रय ।

निनाड, स पु (म) ध्वनि, रव, शब्द ।

निनानवे, वि [स नवनवति (नित्य स्त्री)]
एकानशतम् । म पु, उक्ता मर्या, तदको
(९९) च ।

—के फेर में पडना, मु वित्तोपायनवर (वि)
भू, मन्त्रात्मना धन मवि, (म्वा उ अ) ।

निपट, वि (देश) अत्यत, अत्यधिक, निनात ।

निपटना, क्रि अ, दे 'निवटना' ।

निपटाना, क्रि स, दे 'निवटना' ।

निपटा(टि)रा, म पु, दे 'निवटेरा' ।

निपटावा, स पु, दे 'निवटाव' ।

निपात, स पु (स) अध नि-पनन २ प्र,
ध्वम ३ मृत्यु (पु) निधन ४ व्याकरण
लक्षणासुत्र पदम् (व्या.) ।

निपातन, स पु (स न) अवपातन, अव
भननं अकृतन २ वि, नाशन ध्वस्तन,
हननं, मारणम् ।

निपान, म पु (स) तटाग-नी, जल-तोय,
आहार आशय २ आद्याव, निपानक
३ दोहनपात्र दे, 'दोहनी' ४ आचमन, पान,
पीति (स्त्री) ।

निपीडन, स पु (स न) अर्दनं, सतापनं,
नि-अप विप्र-करणं २ मर्दनं, दलन ३ निर्ह
रणं, निष्कर्षणं, निष्पीडनम् । ।

निपुण, वि (स) प्रवीण, निष्णात, कुशल,
चतुर, दक्ष, विद्व, कृतिन्, विचक्षण, विदग्ध,
प्रौढ, कुशलम् ।

निपुणता, स स्त्री (म) प्रावीण्यं, वैदग्ध्यं,
दाक्ष्यं, कुशलता, दक्षता इ ।

निपूता, वि (स निपुत्र) अपुत्र, पुत्रहीन
२ दे 'नि सतान' ।

निष्काक, स पु (अ) द्रोह, वैर २ विच्छेद,
विभेद, विघटनम् ।

निघ्न, स पु (स) बधन, नियमन, दृढी
करण २ प्रस्ताव, लेख, प्रबन्ध ।

निघ्न, स स्त्री (अ) छेपनीचतु (स्त्री),
कल्पाग्रम् ।

निघटना, क्रि अ (म निवत्तनं) निवृत्त
रम्भावकाश-कृतकार्यं (वि) भू, निघ्न (भ्वा
आ से) २ समाप् (कर्म), निपमं पद
(दि आ अ) ३ निर्णी (कम), व्यवमो
(कर्म) व्यवमोयते ।

निघटना, वि म, द 'निघटना' क प्रे रूप ।

निघटाव, निघटेरा, स पु (हि निघटना)
अवराज, कायनिवृत्ति (स्त्री), क्षण, पिधाम
२ मनासि, निष्पत्ति (स्त्री) ३ निर्णय
कलहान्त ।

निघटना, क्रि अ, दे निघटना' ।

निघ्न, वि (म) पित्तघ्न, बद्ध, निघ्नित २
विघ्न, शून्यित ३ स प्रथितमृत्तित ४
निघ्नित मयित ५ मवद्ध ।

निघटना, क्रि अ (हि निघटना) दे 'निघ
टना' (१३) २ विघ्नित विद्युत् (कर्म),
व्यप इ (अ प अ) ३ विरिण्य (दि प
अ) ४ वि-मुत् (कर्म), वैर-ह् (कर्म) ।
निघ्न, वि, दे 'निघ्न' ।

निघटना, क्रि अ, (निवहणम्) दे 'निघना' ।

निघाह, म पु (स निवाह) जीवनयापन,
कालक्षेप, निर्वहण २ धारण, रक्षणं ३ त्राणो
पाय, रक्षामाधन ४ निवृत्ति-स्माप्ति (स्त्री) ।

निघाहना, क्रि म (स निवाहण) निर्वह
(भ्वा उ अ, प्रे) रक्ष (भ्वा प से),
प्रवृत् (प्रे), न विच्छिद् (रु प अ)
२ (बचन) प्रतिज्ञा निवह् शुभ (प्रे) भा
(प्र पाल्यति) अपवृद् (जु) ३ निवृत्
निष्पद्-साप् (प्रे), समाप् (स्वा उ अ)
४ निरतरं कृ वा विधा (जु उ अ) ।
स पु, दे 'निवाह' ।

निघाहनेवाला, स पु, निवाहय, मपादक,
साधक, पूरयित् (पु) ।

निघिद्, वि (स) घन, सान्द्र २ दृढिन ।

निघेड(र)ना, क्रि स (हि निघेड(र)ना)
समाप् (स्वा उ अ), अवसो (प्रे अवसाय
यति), साध-सपद् (प्रे) २ विमृत्-निमुच्
(तु प अ प्रे), मोम् (चु), ३ विरिण्य
(प्रे) श्थक् कं, विद्युत् (रु प अ) ४ निर्णी
(भ्वा प अ), व्यवन्वा (प्रे), अवनिर्
धु (जु) ।

निघेडारा, स पु (हि निघेडना) मुक्ति
(स्त्री), मोचन, मोक्षण २ रक्षा, त्राणं, उद्धार
३ वरण, धृति (स्त्री) ३ विरलप, पृथक्
कृति (स्त्री) ४ निर्णय, व्यवस्था ।

निघोरी-स्त्री, स स्त्री (म निघ) निघ अरिष्ट-
पत्न-स्त्रीत्वम् ।

निभ, वि (म) तुल्य, ममान । (म पु न)
ध्यान, मिव २ प्रभा, आभा ।

निभना, क्रि अ (हि निवहना) निवह् (कर्म
निरहते), निवादी भू २ निपमं पद (दि
आ अ) समाप् (कर्म) ३ निरतरं कृ
विधा (कर्म) ।

निभारा, वि, (निभारय) अनारय, मन्द
भाग्य भाग्य प्रारम्भ हीन ।

निभाना, क्रि स दे निवहना' ।

निभार, म पु, दे निवह' ।

निभन्न, क्रि (न) ३ निभन्न, निभन्न ३ ग
पित २ शुभ, अनन्तित ३ अन्तानुन ४
बन्ध ५ प्रवत् ६ पूज ७ निर्णय, दृश्य ८
नोरव, नि गच्छ ९ मन्द १० पिहित ११
धीर ।

निमत्रण, म पु (म न) अभ्यधन-ना,
आमत्रण, आवाहन, आह्वान = भौननाय
अभ्यधनम् ।

—देना, क्रि म, अति-आनि-मन् (चु आ
मे), अभ्यर्थ (चु आ से) आममाहे
(भ्वा प अ) आहू आवह् (प्रे) ।

—पत्र, म पु (स न) अभ्यर्थन-आमत्रण,
पत्रम् ।

निमत्रित, वि (स) आमत्रित, आहूत ।

निमक, स पु, दे 'नमक' ।

निमित्त, म पु (म न) कारण, हेतु (पु)
२ विह, लक्ष्य ३ शकुनम् । क्रि वि,
उत्थि, अमिलक्ष्य ।

निमिष, स पु (स) दे 'निमेष' ।

निमीलन, स पु (स न) पश्मकोचन,
निमेष ।

निमीलित, वि (स) मुद्रित, पिहित, मचन ।

निमेष, म पु (म) निमिष, पश्मसरोच,
२ क्षण, पलम् ।

निमोनिया, स पु (अ) कुम्भुमप्रदाह,
श्वसनरज्वर ।

निम्न, वि (स) ग(ग)भीर, गहन २ नन,
नोच, अध स्थ ।

—लिखित, वि (म) अधो लिखित-बर्णन ।

नियता, स पु (स नियत्) व्यवस्थापक,
स्वाय-विधि, प्रवक्त २ विधायक, वायमवा
रूक ३ शामक, शान्ति (पु) ४ अध
शिष्य, ५ अक्षय, अपिधान्, इश
६ मारुति (पु) ।

नियत्रण, स (म न) निग्रह, निरोध
प्रतिबध ।

नियत्रित, वि (स) नियमित, नियमवद्ध,
प्रतिबद्ध, निरुद्ध ।

नियत, वि (म) मयत प्रतिबद्ध गत वशी
कृत २ निश्चिन्, स्थिरीकृत, पूर्वनिर्णीत ३
प्रतिष्ठापित, नियोजित, नियुक्त ।

नियति, स स्त्री (म) नय, दैव, नचिन
व्यता ।

नियतेन्द्रिय, वि (म) तिर्द्रिय, मनसिन् ।

नियम, म पु (न) विधि (पु) व्यवस्था,
सूत्र, स्थिति-व्यवधि (स्त्री), मनादा, अ नि
देश, नियोग २ प्रतिबध, नियन्त्रण ३ रीति

(स्त्री), परपरा ४ प्रतिष्ठा, दृढमन्त्र
५ दे 'शन' ।

—धर्म, स पु (स-र्मा) मदाचार, सद्
वृत्तम् ।

—वद्ध, वि (स) नियमाधीन, नियमिन्,
नियमित, नियत्रित, सनियम ।

नियमन, म पु (स न) वशीकरण अनु,
शामन, नियन्त्रणम् २ दमन, निग्रह,
निग्रहणम् ।

नियमित वि (स) दे 'नियमवद्ध' ।

नियम्य, वि (स) वशीकर, अनु, शास
नीय, नियत्रणीय २ दमनीय, निग्रहणीय ।

नियान, म पु (फा) इच्छा २ प्रार्थना
३ दशनम्, मायात्कार ।

—मद, वि, इच्छुक २ प्रार्थिन्, ३ दशनाधिन्
दिदुष्टु ।

—हामिल करना मु, दशन क परिचय
प्राप (स्वा उ अ) ।

नियामक, स पु (स) व्यवस्थापक, विधा
यक प्रतिबधक २ निरोधक, प्रतिबधक ३
नाविक ।

नियामत, स स्त्री, दे 'निआमन' ।

नियुक्त, वि (म) आयुक्त, नियोजित, व्याप
रित २ निश्चित, नियत, स्थिरीकृत ।

नियुक्ति, स स्त्री (म) नियोजन, नियोग,
व्यापारण, स्थापनम् ।

नियुत, म पु (स न) लभ, लभदशकवा ।

नियाग, म पु (म) नियोजन, नियुक्ति
(स्त्री), व्यापारण २ प्रेरण ग ३ अवधारण,
निश्चय । ४ देवरात्रिभि अपुत्राना पुत्रोत्पादन
(धन) ५ आरा ।

नियोजन, स पु (स न) दे 'नियुक्ति'
२ प्ररणणा ।

नियोजित, वि (म) दे 'नियुक्त' (?) ।

निरकुश, वि (म) स्वेर म्दराणि स्वेरिन्,
काम-वृत्ति चारिन् ।

निरनुन, वि (म) पून विशुद्ध, पवित्र,
निर्लेप । २ नरन्तल । म पु इक्षर २
शिव ।

निरक्षर, वि (म) अत्रि-क्षर-क्षरिन्, स
(म) नन अन र अभ्यवहित । क्रि वि, मदा,
सना निरक्षर, नित्य अनवरत जवमानम् ।
निरक्षर, वि (म) ननक्षर, अड, अगमिव गूळ ।

निरखना, क्रि स (म निरीक्षण)दे देखना ।
 निरपराध, वि (म) अनिर, न्नीप, अनवध,
 दोषहीन, अनय, निरापय ।
 निरपेक्ष, वि (म), निरीह, अनाम, नि
 विगत, स्पष्ट, विरक्त, तटस्थ ।
 निरर्थक, वि (स) अर्थशून्य, अनर्थक २
 निप-अ वि, फल, मोय, बध्य, अनुपयुक्त ।
 निरम, वि (स) दे 'नोरम' ।
 निरख, वि (स) अक्षय, निरायुध ।
 निरहकार, वि (म) निरभिमान, नम्र,
 विनोत ।
 निरा, वि (म निराण्य) विद्युद्, मिश्रण
 रहित, अमसृष्ट २ कवल, पव, मात्र
 ३ अत्यन्त, अत्यधिक ।
 निराकार, वि (स) अदेह, अनाय, जशरीर,
 अमूर्त, अरूप । स पु, दशर २ जाकाश शम् ।
 निरादर, स पु (स) अनादर, अवज्ञा,
 अव-अप, मान, अवधीरण-णा, निरम्हार,
 परिभ्रम ।
 निराधार, वि (मं) निरवल्व, निराश्रय
 २ अयुक्त, मिथ्या ३ निराहार ।
 निरामिय, वि (म) निर्मास मासरहित
 २ शान्ताहारित ।
 निरायुध, वि (स) दे 'निरख' ।
 निरायल, वि (म निराण्य) अदमुत्,
 विचित्र, विलक्षण, विशिष्ट २ अनुपम, अतुल्य,
 अपूर्व ३ विनिर, चन्द्र । स पु, निमृत्स्नानम् ।
 निराश, वि (स) भग्नाश, हताश, त्यचाश,
 आशाहीन, निरपेक्ष ।
 निराशा, स स्त्री (म) नैराश्य, निराशता,
 आशाहीनता ।
 निराश्रय, वि (म) अनाश्रय, अशरण, अन
 हाय, आश्रयहीन ।
 निराहार, वि (स) निरन, अनाहार, उन्नी
 धित, कृतोपवास ।
 निराक्षण, स पु (स न) दशनं, वीक्षण,
 अवलोकन २ अवेशन, निरूपण, वार्थदशनम् ।
 निरीक्षित, वि (स) दृष्ट, आलोकित २
 अवेशित, निरूपित ।
 निरक्त, स पु (स न) वेदरागविशेष २
 यास्कमुनिप्रणं तो ग्रथविशेष ।
 निरक्ति, स स्त्री (म) निवचन, व्युत्पत्ति
 दर्शना व्याख्या ।

निरुत्तर, वि (म) अनुत्तर, बद्ध रुद्ध, मुक्त ।
 निरुपम, वि (स) अनुपम, अतुल्य-स्व, अम
 द्भरा [-शी (स्त्री)], दे 'अनुपम' ।
 निरूपण, स पु (स न) अव निर, धारण,
 निर्णय-अन, निश्चय २ अवलोकन ३ निद
 शनम् ।
 निरूपित, वि (स) व्याख्यान, निबन्धित
 सम्यक्त वर्णित २ निधारित, निर्णीत ३ अव
 लोकिन, इक्षित ।
 निरूप्य, वि (स) व्याख्यानव्य, विवचनीय,
 वर्णनीय २ निर्धारणीय, निर्णेतव्य ३ अव
 लोच्य, इक्षणीय, अन्वेषणीय ।
 निरूहण, स पु (म न) तर्कण, विवेचन,
 निवारणम् २ निर्धारण, निर्णयनम् ।
 निरोग-गी, वि, दे 'नीरोग' ।
 निरोध, स पु (स) अवरोध, प्रतिबन्ध
 २ नाश ।
 निरोधक, वि (सं) निवारक, प्रतिबन्धक,
 प्रतिषेध, बधक ।
 निर्य, स पु (फा) जय, मूल्यम् ।
 —नामा, स पु (फा) अर्पण-शी, मूल्यपत्रम् ।
 निर्यात, वि (म) निर्यात, प्रस्थित, निष्क्रान्त ।
 निर्गम, स पु (म) बहिर्गमनं, प्रस्थान २-
 द्वार, निर्गमनमार्ग ।
 निर्गुडी, स स्त्री (सं) शेफाली लिङ्ग, मिधुवार ।
 निर्गुण, वि (मं) निर्गुणार्त्त २ मूर्त्त, गुणहीन ।
 स पु, परमेधर ।
 निर्जन, वि (स) विचन, प्रकान्त, विविक्त ।
 निर्जर, वि (स) जराहीन । स पु, देवता ।
 निर्जल, वि (स) जलगू-न्, शुध्य ।
 निर्जोष, वि (म) अचेतन, नष्ट, प्राणहीन ।
 निर्णय, सं पु (म) आधर्षण, निर्णयपाद,
 व्यवस्था, दृष्टाञ्जा २ निश्चय, परिच्छेद,
 विवेक, अव निर, धारण धारणा ।
 निर्णाल, वि (म) निश्चित, अव निर, धारित ।
 निर्दय-शी, वि (म निर्दय) निरूप, निष्कण्य,
 कर, निष्ठुर, निष्ठुण, नृत्तम, कठोर ।
 निर्दिष्ट, वि (स) उक्त, बधित, वर्णित २-
 निश्चित, नियत, मन्त्रेणित ३ आदिष्ट ।
 निर्देश, स पु (स) वर्णन, कथनं, विशणपनं,
 मनेन २ निश्चय, निर्णय ३ आद्या, आदेश-
 य-नामद् (न), मंवा ।

निर्दोष, वि (म) दे 'निरपराध' ।
 निर्द्वन्द्व, वि (म निर्द्वन्द्व) शत्रु प्रविद्धन्दि, रहित
 ० द्वन्द्वान्त, विरक्त ३ स्वैर, स्वैर्यानि ।
 निर्घन, वि (स) अकिंचन, दरिद्र, अपन,
 नि स्व, अर्थ द्रव्य धन वित्त, हीन, दुगत, दीन ।
 निर्घनता, म स्त्री (म) दारिद्र्य, अकिंचनता,
 दुगति (स्त्री), दानता ।
 निर्धार, म पु (म) । निश्चय, परिच्छेद,
 निर्धारण, स पु (म न) । विवेक अवधारणा
 निर्धारित, वि (म) निश्चित, कृतनिश्चय,
 परिच्छिन्न ।
 निर्निमेष, वि (म) अनिभिष, पक्षपातरहित ।
 किं वि, अनिनि(नि)ष, निनमे(मि)षम् ।
 निर्बन्ध, म पु (स) आग्रह, अभिनिवेश
 २ विन, अन्तराय ।
 निर्बल, वि (म) अजल, अशक्त, दुर्बल,
 निम्नेत्रस, निवाय, अल्प शीण, नल शक्ति,
 नि मत्त ।
 निर्बलता, स स्त्री (स) बल-शक्ति, शून्यता,
 बल शक्ति मत्त, क्षय-नाश-हानि (स्त्री) ।
 निर्बुद्धि, वि (स) मूर्ख, जड ।
 निर्बोध, वि (स) अज्ञान, अवोध ।
 निर्भय, वि (स) अभय, अमीन, अकुतोभय,
 निर्भाक, निर्भक ० प्रारम्भ, साहसिन् ।
 निर्भयता, स स्त्री (स) निर्भाक्ता, अभय,
 अर्भाति (स्त्री), नि शयता २ प्राण्य,
 साहसम् ।
 निर्भोक्त, वि (स) दे 'निर्भय' ।
 निर्भोक्ता, स स्त्री (म) दे 'निभयता' ।
 निर्भम, वि (स) विरक्त, वैराग्यवत् २ नि
 स्वार्थ, निरिच्छ ३ उदासीन, तटस्थ ।
 निर्मल, वि (स) अनल, विमल, स्वच्छ,
 शुभ्र २ अपाप, पवित्र ३ निश्चक, निर्दोष ।
 निर्मलता, म स्त्री (म) विमलता, स्वच्छता
 ० पवित्रता २, निष्कलङ्का इ ।
 निर्मली, स स्त्री (म निर्मल) अशुभसाद,
 कान्त, निरुपरिच ० कनकवीन ३ दे
 'रोटा' ।
 निर्मण, म पु (स न) निर्मणि (स्त्री),
 रत्नना, विधान, मगन, धन, कल्पन
 साधन, सपारन, सृष्टि (स्त्री) ।
 निर्माता, म पु [स-वृ] रचयितृ-सृष्ट(पु) ।

निर्मल्य, म पु (म न) देवोच्छिष्टद्रव्य,
 देवापेनवस्तु (न) ।
 निर्मित, वि (स) रचित, वरित, कल्पित,
 सृष्ट ।
 निर्मूल, वि (म) अमूलक, निमूलक, निरा
 धार ० उमूलित, उत्पातिन ।
 निर्मोक्ष, वि (म निर्मोह) निमम, ममत्व
 शून्य, रूक्ष २ निद्रय, पाषाणहृदय ।
 निर्मोज, वि (म) अप-निम्, त्रप, निर्, म्रौट
 हीक, त्रपा-लज्जा, हीन, धृष्ट, विद्यान ।
 निर्मोभ, वि (स) परि-म, सुष्ट, वृष, नि स्पृह,
 विवृष्ण, अलोत्प, अगृध्नु ।
 निवाण, स पु (म न) मोक्ष, मुक्ति
 (स्त्री), अपवग ।
 निर्वात, वि (म) अपवन, निर्वात्य, वातवो
 शून्य (प्रदेशादि) ।
 निर्वाह, स पु (स) दे 'निवाह' ।
 निर्विकार, वि (स) विकृति विकार परिवर्तन,
 रहित, अविकारिन्, अपरिवातम् ।
 निर्विघ्न, वि (स) निरतराय, निर्व्यापात,
 विघ्नरहित । किं वि, निर्विघ्न, गत्या (वृ.)
 निरुपद्रवम् ।
 निर्विद्वेक, वि (म) निबुद्धि, अविवेकिन् ।
 निर्वीर्य, वि (म) निस्तेजस्, नि मत्त, निबल ।
 निवार, स स्त्री (फ्रा नवार) पर्येषपट्टिका,
 *निवारम् ।
 निवारक, वि (म) रोधक २ अपमारक,
 नाशक ।
 निवारण, स पु (म) नि, रोध-रोधन
 ० अपसारण, दूरीकरण ३ निवृत्ति (स्त्री) ।
 निवाला, म पु (फ्रा) दे 'घ्रास' ।
 निवास, स पु (मं) वसति स्थिति (स्त्री)
 ० गृह, निवेन आ(अ)गार, आवसथ,
 आ-नि, ल्य २ वाम, गृह-स्थानम् ।
 —करता, किं अ, अधि-आ नि प्रवि-वस
 (भ्वा प अ) ।
 निवासी, स पु (म-यिन्) वासकृत् (पु),
 वासिन्, स्थ, वर्तिन् ।
 निवृत्त, वि (म) वि, मुक्त, विरत, लक्ष्माव
 काश, वृत्तकार्य ० विरक्त, पृथग्भूत ।
 निवृत्ति, स स्त्री (स) उपरम, प्रवृत्त्यभाव,
 अप-उप वि, रति (स्त्री), मुक्ति (स्त्री) ।

निवेदन, न पु (म न) निवेदन, प्रार्थन-ना,
अभ्यथना, याज्ञा याचना, विज्ञापना विज्ञप्ति
(स्त्री) ।

—करना, नि स, अनि-विद् (प्रे) विद्या
(प्रे, विज्ञापयति) अभिप्रार्थ (तु आ से),
याव् (भ्दा उ से) ।

—पत्र, म पु (स न) आवेदन प्रार्थना,
पत्रम् ।

निशाक, वि, दे 'नि शक' ।

निशाच, वि (स) राक्षस, दोषाच ।

निशा, स स्त्री (म) रात्रि (स्त्री), शर्वरी ।

—कर, —गन्ध, —पति, स पु (सं) चन्द्र,
सोम ।

निशाचर, स पु (स) राक्षस, रक्षस् (न),
निशाच ० चौर, दुष्टक ३ नक्तचर ।
(उल्ल आदि) ।

निशात, वि (म) निशित तान्त, तेजित,
शित, शून्य २ परिष्कृत नक्त, उज्वलित ।

निशाद, म पु (म) निशादन, नक्तभोगिन्
२ राक्षस निशाच ३ धूरु ।

निशादि, म पु (स) मायम्, (अव्य)
मन्था ।

निशान, स पु (फा) अभिज्ञान, चिह्न,
अक, लक्षण, लान्न, लिा, व्यञ्जन-
० प्रमाण, साधन ३ विण, क्षत, अक चिह्न
५ लक्ष्य, शून्य ५ अधिकार प्रतिष्ठा, चिह्न
६ ध्वज, वैचर्य न भी ।

—करना या लगाना, क्रि स, अक (पु),
विह्वलि मुदयति (ना था) ।

—दार, वि (फा) विहिन, अकित २ ध्वज
वाहक ।

—बदार, म पु (फा) वैजयन्तिक, एताकिन्
२ अग्नेमर, पुरोग ।

नाम—, चिह्न, लक्षण २ अहितत्वलेश ।

निशानचा, मं पु (फा निशान) दे
'निशानवदार' २ लक्ष्यवेधक ।

निशाना, स पु (फा) लक्ष्यक्षी, शरव्यम् ।

—बाँधना, सु, लक्षीक्षी क, संधा (तु
उ अ) ।

—भारना या लगाना, पु, लक्ष्य प्रति शिप्
(तु प ल) अम् (दि प से) ।

निशानो, सं स्त्री (फा) दे 'निशान'

२ स्-ह भिगन् स्मृति स्मरण, दान २ अभि
दान, स्मारकम् ।

निशातरान, सं पु (म न) निशा, अनि
त्रय स्वयं, प्रन (अव्य) ।

निशीथ, म पु (म) अद्ध-मध्य, रात्र,
रात्रि निशा, मध्य २ रात्रि (स्त्री) ।

निश्चय, न पु (र) निश्चयता, निश्चित,
ध्रुवत् ० विधाय, शिथम ३ निर्णय ५
दृढ-मात्र्य, अध्ववमाय ।

निश्चल, वि (स) अचल, अविचल, धीर,
दृढ धृतिमत् ० स्थिर, ति स्वस्थ निश्चेष्ट ।

निश्चिन, वि (म) वीथ मुक्त चित्त, शाव,
निना रणारणक, रदिग ।

निश्चित, वि (मं) नदेह मग्य शून्य, अ
निस, साराय, नियत, दृढ २ निर्गोत, निर्ध
रित ।

निश्चास, म पु (स) दे 'नि चान' ।

निषध, न पु (म निषधा बट्ट) विष्याच
लभ्य देगविशेष ० 'यमाक्ष प्रदेश ३ निष
धवन्ति ।

—पति, मं पु (म) नत् ।

निषाद, मं पु (मं पु) अनावृत्तिविरोध
० चाणल, हीन ३ सप्तमस्वर (मगीत) ।

निषिद्ध, वि (सं) प्रतिषिद्ध, प्रत्यादिष्ट,
निवारित २ दृषित, गर्भ, निष ।

निषूदन, वि (म) मारक, मारयितृ, हृष्ट,
प्रणटर, अन्तकर, घातक ।

निषेक, म पु (सं) अव आ, मैव मैचन,
अनि, स्वर्ण उक्षणम् ० गर्भाधान ३ गर्भाधान
संस्कार ५ धवन-जन् ५ मन्त्रित्तल ६
वीर्यागुद्धि (स्त्री) ।

निषेचन, म पु (स न) दे 'निषेच' १ ।

निषेध, मं पु (मं) प्रतिषेध, विरोध,
निवारणम्, निषिद्धि (स्त्री) ।

निषेधक, वि (मं) प्रतिषेधर, निवारक,
प्रतिषेष्ट, बाधर, निरोधक ।

निषट्क, वि (नं) नि वन्त निशान, निरतराय
० नि शून्य, अवस्थित ।

निष्करट, वि (मं) क्तु, मरत्, अमाय,
निराल, निगुद्ध ।

निष्काम, वि (मं) निरिच्छ, निरीह,
निस्पृह ।

निष्कारण, वि (म) अकारण, निनिमित्त ।
 किं वि अकारण, अहेतुवत् ।
 निष्कमण, म पु (म न) बहिर्गमन, निर्गमन
 ० मस्कारभेद (धर्म) ।
 निष्ठा, म स्त्री (म) प्रत्यय, विश्रम, विश्वास
 २ भक्ति (स्त्री), श्रद्धा ।
 निष्ठुर, वि (ग) क्रूर, क्रूरकण्ठ, निर्दय,
 निर्धृग, निष्करुण, वृत्तास, कठोरहृदय ।
 निष्ठुरता, म स्त्री (म) क्रूरता, निद्रयता
 वृत्तासता ।
 निष्पत्ति, म स्त्री (म) अन, समाप्ति (स्त्री)
 २ परिपाक, मिद्धि (स्त्री) ।
 निष्पन्न, वि (स) समाप्त, अवधि २ निष्क,
 परिगत, मपन्न ।
 निष्पादन, स पु (म न) साधन, निवृत्तन
 विधन २ समापन, संपूरणम् ।
 निष्पाप, वि (म) अपाप, अनप, अकल्मष,
 अदिग्विष, पपरहित, पुण्यात्मन् ।
 निष्प्रयोजन, वि (स) निस्स्वार्थ, निष्काम
 ० अकारण, निष्कारण ३ अनर्थक, व्यर्थ । किं
 वि, व्यर्थ, मुधा ।
 निष्फल, वि (म) निरर्थक, अनुपयोगिन,
 मोघ, विकल्प, निष्प्रयोजन, मुधा, मुधा ।
 निस्सन्न, स स्त्री (अ) सधन, अनुषा
 २ वाग्दान, वाक्प्रदान ३ तुलना, माहृश्यम् ।
 किं वि, अपेक्षया तुलनया-औपम्येन (तुलाया) ।
 निस्सर्ग, मं पु (म) स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) ।
 निस्सार, स पु (अ) दे 'निटावर' ।
 निस्त्वध, वि (स) जडी-निष्पत्ती, भूत,
 अवन्त, अटुल्य, निश्चेष्ट २ अनात्मविष,
 मौनिय, तूष्णीक ।
 निस्त्वधता, मं स्त्री (म) निष्पत्ता,
 निस्त्वधता, नटता, निश्चेष्टता ० नीरवता,
 मौनम् ।
 निस्तार, स पु (स) अपवर्ग, मुक्ति (स्त्री)
 ० उदार, प्राणम् ।
 निस्तारा, स पु (स. निस्तार) निर्णय,
 निर्धारण २ दे 'निस्तार' ।
 निस्तेज, वि (म निस्तेजम्) अन्न, निष्प्रम,
 मन्त्रि, हेतोदीन २ निस्त्व, निर्बन्ध,
 निरत्नम् ।
 निस्पद्, वि (स) निष्पद्, अस्प, अचल,
 स्थिर, गतिशून्य, निस्पन्द, निस्पन्द ।

निस्पृह, वि, दे 'नि स्पृह' ।
 निस्फ, वि (अ) दे 'आधा' ।
 निस्फकोच, वि (म) दे 'नि मकोच' ।
 निस्फतान, वि (म) दे 'नि मतान' ।
 निस्फदेह, वि (म) दे 'नि मदेह' ।
 निस्फार, वि (स) दे 'नि मार' ।
 निस्फीम, वि (म) दे 'नि सीम' ।
 निस्स्वार्थ, वि (म) दे 'नि स्वार्थ' ।
 निष्ण, वि (सं नि मग) एकल, प्नाकिन्,
 ० महाचारिण ३ गन्ध ४ निर्लज्ज ।
 निष्णथा, वि (म निष्णत्) निरख, नि शख,
 निरायुध, अख शख, हीन २ निर्धन ।
 निष्णै, म स्त्री (स निधाति >) शर्म मी,
 स्थूणा ।
 निष्णयत, वि (अ) अत्यत, अत्यधिक ।
 निष्णरता, किं म (म निष्णत्) दे
 'श्रेयता' ।
 निष्णल, वि (फा) सतुष्ट, पूर्णकाम, प्रमन्न ।
 —करता, किं स, प्रमद् आनद् ह्यु (द्वे) ।
 निष्णित, वि (म) स्थापित, न्यस्त, निश्चित ।
 निष्णोरा, म पु (स मनोहार >) अनुग्रह,
 कृप, उपकार २ कृपशता, कृपवेदिता
 ३ प्रार्थन-ना, निवेदन ४ आश्रय, आधार ।
 किं वि, द्वारा-कारणेन (अव्य) ।
 —मानना, किं अ, उपकार स्तु (भ्वा. प.
 अ) कृत्वा (क्, उ अ) ।
 नीद, सं स्त्री (स. निद्रा) स्वपन, सवेदाः, दे
 'निद्रा' ।
 —आना, किं अ स्वप (सन्नत, उ, सुपु
 प्पति) निद्रया पराभू (कर्म) ।
 —उचाट होना, किं अ, विभग्न, निद्र
 (वि) भू ।
 —न आना, सं पु. निद्रा, लोप-नाश ।
 —भर मोना, सु, वषेष्ट स्वप् (अ. प. अ) ।
 नीदू, वि (हिं नीद) दे 'निद्राटु' ।
 नीदू, म पुं, दे 'निवू' ।
 नीक-का, वि (स निक >) अच्छ, सुन्दर,
 उत्तम, भद्र, उत्कृष्ट ।
 नीच, वि (म) पथम, अवर, भानि, कृष्ट,
 पुद, मन्, गच्छ, नयन्, तुच्छ, फामर ।
 म पु, जमर, जम्न, दुष्ट, धृत्, न,
 ० हान, गानि-वां-कुल, अन्यजातीय,
 नीच, कुल-वशप्रसूत ।

—ऊँच, सु, भद्राभद्रे (न) २ गुणावगुणौ,
३ हानिलाभौ ४ सुस्पदु ये (न) ५ मपद्
विपदी (स्त्री) ६ उल्हापाकपौ ।

नीचता, सं स्त्री (म) अधमता, क्षुद्रता,
तुच्छता पामरता, २ अन्त्यजता, हीनबुद्धता ।
नीचा, वि (स नीच) अध स्थ, अधस्तन
(-नो स्त्री), नन, निम्न, नीचरथ, अवाच
२ दे 'नीच' ।

—ऊँधा, वि, नतोप्रत, विषम, भ्रम, २ दे
'नीच-ऊँच' ।

—दिखाना, सु, परानि (भ्वा आ अ),
पराम् २ ही (प्रे हेपरानि), लृप् कृ, ब्रौङ्
(प्रे) ।

नीचाई, स स्त्री (हि नीचा) नीचता, निम्नता,
अध स्थता ।

नीचे, कि वि [स नीचे (अव्य)] अध,
अधोभागे, अधस्तात् तले २ अधोनताया,
बन्ने ३ न्यून, अवर ।

—ऊपर, कि वि, अन्योन्यस्योपरि, इतरेन
रस्योर्ध्वम् । २ अस्तव्यस्त, सकीर्णतया ।
नीढ, स पु (म पुं न) दे 'धौमला' ।

नीति, स स्त्री (म) उपाय, युक्ति-नीति
(स्त्री), प्रयोग २ राजराज्यशासन, नीति
नय-नाय मर्मा, नय नीति प्रम मार्ग
३ सदाचार, सद्ब्यवहार, सुमत् चरित
४ नीति, विद्या शास्त्रम् ।

नीतिज्ञ, वि (म) नयन, नीतिशास्त्रज्ञ ।

नीतिमान्, वि (स-मद्) नयपर सदाचा
रित् [-मती (स्त्री)] ।

नीप, स पु (सं) वदव विषयन, मदिरा
गण ।

नीव, स पुं (म निवृत्) दे 'निवृ' ।

—निघोड, वि, अल्पदायिन् बहुग्राहिन्, अल्प
दातु बहुमणीत, अल्पद बहुग्रहक ।

नीम, स पु, दे 'नव' ।

नीम, वि (का, नि स नेम) दे 'अधा' ।

—हकीम, स प वैद्यमानिन् वैद्यमन्य,
निष्या-कु टध, वैद्यविदितक ।

—हकीम इतरे जान, सु, वैद्यमन्यात् प्रया
सकटम्, छद्मवेषेण सकगवह ।

नीयत, स स्त्री (स्त्री) आशय, उद्देश, भाव,
इत्या, लक्ष्यम् ।

—वदल जाना, सु पाप प्रति प्रवृत् (भ्वा आ
म), धर्म त्यज (भ्वा ष अ) ।

नेच—, वि, मदाशय, मुम्बन्व ।

वद—, वि, दुराशय, कुर्मरूप ।

नीर, स पु, (म न) तीव्र, दे 'पल' ।

नीरज, सं पु (म न) पद्म, दे 'कमल' ।

नीरद, स पु (स) जलद, दे 'मर' ।

नीरम, वि (म) अरस, विरस, अ वि, द्रव,
शुष्क ० अम्बादु, रसहीन, अरुचिकर ।

नीरोग, वि (म) सुस्थ, कल्प, वास्तं, दे
'स्वस्थ' ।

नीरोगता, म स्त्री (म) आरोग्य, दे
'स्वास्थ्य' ।

नील, स पु (स नील) (पीडा) बाला,

नीलो, नीलिनो, रजनी, २ (द्रव्य) नील, नील

वण ३ प्रहारन, नीलविद्ध, नीला ४ लाउन

५ बानरविशेष ६ इन्द्रनीलमणि, नीलोपल

(पु) ७ मर्याविशेष (दस हजार अरब

अथवा सौ अरब) । वि, दे 'नीला' ।

—बठ, स पु (स) चप, विनीरि(दी)वि
(पु) ० शिव ३ मयूर ।

—कमल, स पु (मं न) नील, पद्मन्
अव्य इति(दी)वर, इन्दीवार ।

—का टीसा, सु, कलक, जयगाम् (न) ।

—गाय, स स्त्री, दे 'गव्य' ।

नीलम, स पु [का, म नीलमणि (प)]

नील, नीलाप, महा द्र, नील ।

नीलाप, स पु (म न) गान्धीपवत्र

२ तालीपत्रम् । स पु, बलदेव २ राजम ।

नीलोत्तर, स पुं (का नि स नीलाप)

कुमुद, कैरव २ इदी(रि)वर, नील,

अव्य रमन् ।

नीला, वि (म नील) दयाम, मेघक, नीलवण ।

—रग, स पु, नील, नीलवा, नीलिम्ब
(पु) ।

—पीला होमा, सु, वृष (दि प अ) दुप
(दि प मे) ।

नीलाई, स स्त्री (हि नीला) नीलत्व,

नीलिम्ब (पु) ।

नीलाधोषा, स पु (हि नीला ० म तुष)

हेममार, तुष, नालाभन, नाभगर्भ, मयूर

प्रीव, नील विजुष, मयूरम ।

पुर, मर, मुख्य २ प्रभु, स्वामिन् ३ निर्वा
हक, प्रवर्तक [नेत्री (स्त्री)] ।

नेती, स स्त्री (स नेत्र) नयनरज्जु (स्त्री),
मध्यगुण ।

—घोती, स स्त्री, दीपपट्टिकया अप्रसाधन
(हठयोग) ।

नेत्र, स पु (स न) नयन, चक्षुम (न)
दे 'अर्ध' २ दे 'नेता' ३ बन्दिशाला ।

—रत्न, स पु (स न) वज्ररत्नम् ।

नेत्र्य, वि (स) नयन नत्र, विषयक सवधिन्
२ नयन नेत्र, हितकर ।

नेदिष्ट, वि (स) निरुत्तम २ अरिहतम
३ निपुण ।

नेनुआ वा, स पु (?) घोष पत्र, आदाना,
देवदानी, ऐमी, महाफल ।

नेपचून, स पु (अ) नेपचून, ग्रहविरोध ।

नेपथ्य, स पु (स न) देश प, परिधान,
वस्त्र, आभरण, अलंकार ० (रंगशालाया)
वेदभान, अलंकारकोष्ठ ३ रंग, भूमि
(स्त्री) शाला ।

नेपाल, स पु (स) भारतोत्तरवान देश
विशेष । (सं न) दे 'ताता' ।

—जा, स स्त्री (म) नेपालजाना दे
मैनिमिल ।

नेव्यूला, स पु (अ) नौहारिका ।

नेमि, स स्त्री (स) नेमी, प्रथि चक्रपरिधि
(त्र) २ कूपानिन्ममन्थक ३ कूपमभीपे
रज्जुधारणार्थं त्रिदाम्बव, त्रिका ।

नेवता, सं पु, दे 'निमरण' ।

नेवर, स पु (म नूपुर) दे 'नूपुर' २ अथ
षादक्षतम् ।

नेवला, स पु (म नदुल) पिण्ड, मूची
बदन, लोहितानन, जगूष, वश ।

नेवार, स पु, दे 'निवार' ।

नेस्त्र, वि (का) नष्ट, लुप्त ।

—नाबूद, वि (का) नष्टव्य, उच्छिन्न ।

नेस्ती, स स्त्री (का) अनस्तित्व, जमीन
२ आलस्य ३ नाश ।

नेह, स पु (स स्नेह) प्रेमन् (पु), द्रीनि
(स्त्री) २ दूत, तैलम् ।

नैतिक, वि. (सं) नीति, विषयक शास्त्रीय ।

नैत्य, वि (स) नैत्यक नैत्यक[नी (स्त्री)],
नित्य सवधिन्-करणिय ।

नैन ना, स पु (म नयन) दे 'अयि' ।

नेपुण्य, स पु (म न) कौशल, दाइय,
पाठवम् ।

नमिस्तिक, वि (म) निमित्त, न व त्पत्र,
अनैत्यिक ।

नैया, म स्त्री, दे 'नाव' ।

नयायिक, स पु (स) न्याय तत्र, शास्त्र,
न्यायवि (पु), नार्थिक ।

नेरादय, स पु (म न) दे 'निराशा' ।

नेर्हत्त, स स्त्री (स नेरती) नेरधरोण,
अवाची प्रताच्छोम पा दिन् (स्त्री) ।

नेरेय, स पु (म न) देव-वलि (पु)
भोजन, भोग ।

नेसगिक, वि (सं) प्रवृत्तिक साह्यिन्,
स्वाभाविक मासिद्विग [ती (स्त्री)], प्रवृत्ति
स्वभाव, सिद्ध ।

नेहर, स पु, दे 'मानना' ।

नेक, स स्त्री (का) अथ, अग्रभाग, जणि
(पु स्त्री) प्रात मुक्त शिगर चतु
(स्त्री) ० उदग्र-निर्विन्दे, दाण अथ ।

—नेक, स स्त्री, नम, शाला भासिन् परि
(ती) हान, अग्र्यम् ।

—दार, वि, दे 'नुरीला' ।

नोरीला, वि, दे 'नुरीला' ।

नोच, स स्त्री (द्वि नाचना) लुच, लुचनं
२ आकस्मिक आच्छेद, लुटन ३ परितो
यचनम् ।

नोचना, वि म (न लुचन) लुच् (स्वा
प से), उत्पन् (पु), अन्ति (र प
अ) २ वि लु (इ प म) ३ अपनी
निर्ह-व्यपह (स्त्री उ अ) ४ अव किन्द्
(द्वे), नि-न्द् (र प अ), लुर् (उ
प म) ।

नोट, स पु (अ) स्मृत्यर्थे लय लयन लिननं,
० स्मरण, स्मरणसिद्ध, जमिनं ० पत्र,
परिजा ४ लिप्यनापी, टारा ५ धनपत्रं,
नाणकपत्रम् ।

—करना, वि म, लि (तु प म),
अं (उ) ।

—कर्ता, स पु [म र्त् (पु)] दे 'न्यायाधीश' ।
 —सभा, मं स्त्री (म) दे 'न्ययालय' ।
 न्यायाधीश, म पु (स) न्याय धर्म, अध्यक्ष, जातिपरगिन निर्णेतृ-व्यवहारद्वय (पु) प्राविवाह, समाधिपरगिन, दृष्ट नायक पर ।
 न्यायालय, म पु (मं) धर्म न्याय, सभा, व्यवहारमदप, अधिकरणम् ।
 न्यायी, वि (स दिन) न्याय, पर परायण-शील, न्यायवर्तिन् ।
 न्याय्य, वि (मं) उचित, धर्म्य, युक्त, योग्य, तथ्य ।
 न्यारा, वि (म निर + आरात् >) दूरस्थ, दूरवर्तिन् २ विद्विष्ट, पृथक् स्थित ३ अन्य, अपर भिन्न ४ विद्विष्ट, विद्विष्ट[न्यारी(स्त्री)] ।
 न्यारिया, म पु (हि न्यारा) टावर, बहुल ।

न्यारे, कि वि (हि न्यारा) दूर, दूरे, आरात् २ पृथक्, विद्विष्ट ।
 न्याय, स पु (स) निधान, स्थापन, न्ययन निक्षेपण २ उपनिधि (पु), निक्षेप ३ अण, त्याग ।
 न्युकिलयम्, म पु (अं) नाभिरण ।
 न्यून, वि (सं) अल्पतर, अन्पीयम्, क्षीदीयम्, लघीयस्, ऊन २ अवर, अधर ३ सुद, नीच ।
 न्यूनता, स स्त्री (सं) ऊनता, अल्पता, अपूर्णता, पर्याप्तताभाव २ हीनता, अभाव ।
 न्योटावर, स स्त्री, दे 'निटावर' ।
 न्योतहरी, स पु (हि न्योता) निमत्रितजन ।
 न्योता, म पु, दे 'निमत्रण' ।
 न्योला, सं पु, दे 'नेवला' ।
 न्योली, स स्त्री (सं नली) हठयोगक्रियाभेद ।

प

प, देवनागरीवर्णमालाया एकविंशो व्यञ्जनवर्ण, पकार ।
 पक, म पु (स पुं न) कर्म, चिकित्, दे 'कोवट' ।
 पकच, म पु (स न) पत्र, मराज, दे 'कमल' ।
 पकचासन, स पु (म) चतुर्भुज मङ्गल (पु) ।
 पकिल, वि (म) सपक, सक्कम, सचिक्लि ।
 पक्ति, म स्त्री (म) देवावा, लजा २ तति, रात्रीनि श्रेणीणि आवलीनि (मत्र स्त्री) ।
 —प्युत, वि (म) नातिवृत्त ।
 —दूपक, वि (म) दीन, नीच, कुनाति ।
 —पावन, म पु (म) निप्रवर, भाद्रपणश्रेष्ठ, दिवातम ।
 पव, म पु (म पध) बाज, गरुड, पध, पत्र, छद तन्महम् ।
 पवडी, मं स्त्री [म पधमन् (न)] पुण्यदलम् ।
 पवरा, म पु (हि पव) व्यञ्जन, बीजन, तावृन्दम् ।
 —शालना, कि म, बीन् (जु) ।
 पवन् वा—, प्राणावर्त ।
 चमन् वा—, धवित्रम् ।
 पवरी, म स्त्री (हि पवरा) व्यञ्जन-बीजनवम् ।
 पवी, स पु, दे 'पवी' ।

पगतति, म स्त्री (म पक्ति) दे 'पक्ति' (१ २) २ सभा, समान ।
 पनु, वि (म) श्रौण, गन, खोल-ड ।
 पच, वि (स पचन्) । मं पु, उक्ता मन्था, तत्र (२) च २ लोक, जनप्र ३ निर्णेतुमभा, मध्यस्था ।
 —तच, स पुं, (म न) पचभूतम् (शुधिवी पलानलानिलाकाशानि) ।
 —गद, स पु (सं) पचनदीयुत प्रातनिक्षेप, *पञ्चाप ।
 —नामा, मं पु (मं + का) *पचनिष्पन्नम् ।
 —प्राण, स पु (म प्राणा) प्राणपचवन् (प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान) ।
 —भूत, मं पु (मं न) पंचतत्त्वं, पंच, तत्त्वानि भूतानि ।
 —महायज्ञ, मं पु (सं यणा) मन्-देव विद्व वलिवैश्वदेव गृथका ।
 —रत्न, मं प (स न) वनरहीरकनील मणिपमराभंतिरातीनि पचरत्नानि ।
 पचक, मं प (म न) पचवस्तुममुदाय ।
 पचख, म पु (म न) मरण, निधन, मृत्यु, पचन् ।
 पंचम, वि (सं पंचम-मीमं) २ सुदर ३ दृश । सं पुं, पंचमस्वर (सगीत) ।
 पंचमी, सं स्त्री (सं) शुक्ला कृष्णा वा पंचमी

पञ्चवाङ्, म स्त्री (हि पञ्चवाना) पाचन, मूल्यभूमि (स्त्री) ।

पञ्चान, म पु (स पञ्चदा दे) ।

पञ्चार्द्ध, म स्त्री दे पञ्चत्र ० पाचन पञ्च, दे पञ्च ।

पञ्चान्ता, स्त्रि स् (हि पञ्चान्ता) पञ्च (श्वा प अ) श्री (क उ अ) श्रा (अ प अ, नु अर्धपदि) (अन्) मन्त्र अथवा मिथ (द्वे माधयति)

पञ्चाने योग्य, वि पञ्चाने, श्रातज्ज, श्रेतञ् ।

पञ्चानेवाला म पु पाचक, मूत्र वल्लव ।

पञ्चगया हुआ, वि पञ्च, पाचिन्, मायिन्, मस्कृन्, आण ।

पञ्चाव, म पु (हि पञ्च) पचन, पञ्च २ (त्रगादीन्) मपूयत्, परि, पञ्च ।

पञ्चा हुआ, वि, पञ्च निद्र, श्राण, शृणु ।

पञ्चो(काँ)डा, म पु (हि पञ्चो) पञ्च षोड ।

पञ्चो(काँ)डी, स स्त्री (म पञ्चवटी) पञ्च वटिना ।

पञ्चा, वि (म पञ्च) सु परि, पञ्च, परिणत, पञ्चताभाषन ० श्रोत्र, निद्र, परि-पूर्वा ४ सस्कृन्, मशोधिन ४ पञ्च, श्राण, शृणु ५ अद्भुभविन्, बहुव्रीहिन् ६ दक्ष, निपुण ७ दृढ, स्थिर ८ निरिबन्ध, भ्रुव ९ प्रमागिन, प्रमाणमिद्र ।

पञ्च, वि (स) दे 'पञ्चा' (१, ३ ४) ।

पञ्चान, म पु (म न) मस्कृन्निद्र शृणु, अत्रन् ।

पञ्चादाय, म पु (म) नात्यर्थोभाष, लव वारमित्री भाग ।

पञ्च, म पु (म) पार्थ-श्वे, पञ्चपार्थ, भाग, दुनि (पु) ० दे 'पञ्च' ३ दन् गण, मप ४ अद्वैताम, मामार्द्ध ५ मदायन, मनि (पु) ६ गृह ७ मन, विनर ।

उत्तर—, म पु (म) सिद्धान्त, कृतान्त, समाधि (पु) ।

पूर्व—, म पु (म) शान्तीप्रदन्, सिद्धान्त विरहवोर्ति (स्त्री), शीघ्र, देव्य, ककिना ।

पञ्चक, म पु (म) गुणचौर, द्वारद्वार (स्त्री) २ पादव दर्श, पञ्चभाग ३ सहाय सहायक ।

पञ्चति, म स्त्री (स) पञ्चवान, मूल्य, शुक्ला प्रथमपिथि (स्त्री), प्रतिपदा, प्रति पटी ।

पञ्चगत, म पु (म) पञ्चपानित, अमन, दृष्टि दुष्टि (स्त्री), अनमता ।

पञ्चरात्री, म पु (मं तिन्) पञ्च, पञ्चपट पञ्चवल्लिन, मपञ्च, पाचिन् ।

पञ्चात, म पु (म) अमान्या २ पूर्णिमा ।

पञ्चाघात, म पु (म) पञ्चपट, जाडप मम, माद्र ।

पक्षिणो, म स्त्री (न) पक्षिणी, पक्षिणी, गम्भीरी वणिन्, नो-पञ्च, नीलोडवा ।

पक्षा, म पु (म पक्षिन्) विहा, विहा गम, दा, शकुन नि (पु), शकुन नि (पु) द्विप, पक्षिन्, पक्षिन्, अडन, वनिन् वि (पु), पक्षि (पु), गम्भीर (पु), पण, पना गम ० पञ्च, पञ्च पादिन् ।

पञ्च, म पु (म पञ्च >) वन्द, विवाद्र ० दोष, दुष्टि (स्त्री) ३ विन प्रतिवध ।

पञ्चवारडा, म पु (म पञ्च + वार >) वृत्त मुञ्चोवा पञ्च २ अद्वैताम, ममाद्धे ।

पञ्चारना, क्रि स (म प्रश्नान्) दे 'शीता' ।

पञ्चवज्र, स स्त्री (म पञ्चवाघ >) दृढ, भेद, श्वश्व पञ्च ।

पञ्चैरु, म पु [म पञ्चात (पु)] दे 'पञ्ची' ।

पञ्चैराडा, म पु (न पञ्च >) अमाधि (न) मुचम्भमधि (पु) ।

पञ्च, म पु (म पञ्च) पद, पद, चरण १ २ पद, क्रम ३ पादायन, चरणान ।

—डडी, म स्त्री, पद, उग्रादीधि (स्त्री) । पथिमागं, तपनी ।

पञ्चडी, म स्त्री (म पञ्च) श्लीप प, गिनेष्टन, वदन्, वेष्टक, वेगल्लक ।

—दोषना, क्रि स, उग्राप परिधा (पु २ अ) वध (कृ प अ) ।

—उच्छालना, पु, लू क, अप अत्र मन् (द्वे) ।

—उत्तरना, मु, द 'पार्थ उग्रापना' २ उदृठ (श्वा प म), धन अपद्र (श्वा उ अ) ।

—वदलना, मु, सीहार्द स्था (द्वे म्भपयति) ।

पगना, क्रि अ (मं पञ्च >) रनन मनु

पटाडना, क्रि म (हि पटाड) जननि पट
(प्र) ० (गवु) परानि (स्वा आ अ) ।

पटाडी, स स्त्री दे मिठाडी ।

पटाया, स प (का) श्छयापाय ।

पट', स पु (म) वस्त्र, वसन, सुखलव ०
निरस्तरिणी व्यवधान प्रतिमारा ३ चित्रपट
४ धातुमय पत्र पट्ट पट्टिया ।

—खोलना, क्रि स निरस्तरिणी अपस
विकल । (प्रे)

—मडप—गास, स पु (म) दे 'तवू' ।

पट', क्रि वि (च्च का अनु) झटिति, मपदि ।

पट (अनु) पतन-नाटन, ध्वनि (पु),
पतिनि ।

पट', स पु (देश) ऊरु (पु) । वि, अधो
मुग, जधरीतर, अवमूर्द्धक्षय ।

पट, स पु (म पट्ट) कपा(ला)ट-डी ट
द्वार, द्वार (स्त्री) ।

—खोलना—बद्ध करना, क्रि स, दे 'द्वार' ।

पटकना, क्रि स (अनु पटक) उत्थाप्य भूमौ
रमसा नि-अव पत (प्रे) २ बाहुयुद्धे प्रति
द्वदिन जि (स्वा प अ) ।

पटकनी, स स्त्री (हि पटकना) रमसा अध
नि अव पात पतनम् ।

—देना, क्रि म, दे 'पटकना' ।

पट(ट्ट)का, स पु (स पट्ट >) परिकर,
वणि, वधनी-वलयम् ।

—बाँधना, मु परिवर वष् (क्र प अ),
उपन-मन्त्रद (वि) भू ।

पटकार, स पु (म) चीर, स्तेन । न,
नाणवस्त्रम् ।

पटकारा, स पु (म पट्ट-ट्ट) काष्ठदार,-
फलक फलय ० काष्ठ-दार, पीठम् ।

—कर देना, मु, निर्बली नि मत्वी कृ ० अव
ज्ज-मद् (प्रे) उक्तिद् (रु प अ) ।

पट्ठीरी, स स्त्री (हि पट्टारा) पट्टक-व
० पट्टिका ३ पत्ता, चरण्यादि (स्त्री),
पाद चरणपथ ।

पटना, सं पुं (सं पट्टन >) कुमुदपुरं, पुष्प
पुर, पाटलिपुत्रम् ।

पटना, क्रि अ (हि पट = भूमि की सतह के
बराबर) आ-ममा षाद् (वम), आ सं वृ
(वर्म) २ व्याप् आत्तु (वर्म) ३ वृ प

(वर्म) जाप्रमपूर् (वर्म) ४ मिच
(वम) ५ समर (णि आ अ), एरचिती
मू ६ जगद् मुन (वर्म) ।

पटपट, स स्त्री (अनु) पटपटाशब्द, पटपट
ध्वनि (पु) णि दि, मपटपटाशब्दम् ।

पटगानी, स स्त्री (म पट्टगानी) पट्ट, देवी
महिषी राव, महिषी ।

पटल, स प (म न) "दिम् (न) छदि
(स्त्री) २ प्रावरण, आनन्दन ३ निरस्तरि
णि, व्यवधान ४ आ, स्तर, फलक-क ५
दृष्टेरावरण ६ हनुद, पटली ७ अध्याय,
परिच्छेद ८ चद, राशि (पु) ९ परि
च्छद १० तिलक-क ११ दे 'मोतिवादिद' ।

पटगा, स पु (म पट्ट + हि वाहा) *पट्टवाह,
*पट्टहार ।

पटवाना, क्रि प्रे, व 'णज' के प्रे रूप ।

पटवारगरी, स स्त्री (हि पटवारी + का
गरी) ग्रामभूलेखत्वं २ ग्रामभूलेखपदम् ।

पटवारी, सं पु (सं पट्ट + हि वार) *ग्राम
भूलेखन ।

पटसन, स पु (म पाट + शण >) शण,
जतमी, ममणी ।

पट्ट, स पु (स) दुडुभि (पु), भेरी,
पणव ।

पट्टहार, स पु, दे 'पटना' ।

पटा, स पु (स पट्ट इ) काष्ठ पट्टपीठ
२ मिथ्यातन्त्र ३ लघुट, दट ।

पटाई, स स्त्री (हि पटना) पटलन आच्छा
दनम् २ पटलाच्छादनभूति (स्त्री) ।

पटाक, स स्त्री (अनु) तारध्वनि (पु),
महा, शब्द नाद ।

पटाका पार, स पु (अनु पटाक) अग्निपीठ
मन्मद, *पट्ट ।

पटाक्षेप, स पु (म) यवनिका नवनिका २
अपनी निपात अवपात ।

पटाना, क्रि म, २ 'पटना' के प्रे रूप ।

पटापट, क्रि वि (अनु पट) मपटपटाशब्दम् ।
स स्त्री, पटपट शब्द ।

पट्ट, वि (सं) कुशल स्थ निपुण, प्रवीण,
निष्णात, विगारद, विदग्ध ।

पटुता, स स्त्री (सं) कौशल-व्य, दक्षता,

नेपुण्यंण, प्रावीण्य, वैचक्षण्य, पटुत्व, वैद
रूपम् ।

पट्टेबाज, म पु (हि + का) सन्नाभ्यानिन्,
'मथ्यामिवोष ।

पट्टेल, म पु (हि पट्टा) ग्रामणी (पु),
ग्रामाध्यक्ष ० दक्षिणभारतवर्षे उपाधिभेद ।

पट्टोर-ल, म पु (म पट्टोल) लता राज
अमृत(ता)-कट्टु नाम, फल, कुष्ठारि (पु),
रागमदन ।

पट्ट, स पु (म पु न) पीठ ठी, उप ग्रामन
२ पट्टिका ३ धातुमय, पत्र पट्टिका ४ चर्मन्
(न) फलक ५ पणपापाण, शिला
६ उष्णीष ७ ज्ञण, बन्धन आवेष्टन ८
उत्तरीय ९ नार १० चतुःपथ-थ, श्रृंगारक
११ राज, मिहासन १२ कौरीय १३ शण
१४ दे 'पट्टा' ।

पट्टन, म पु (म न) पत्तनं, पुर, नगर
० महानगरम् ।

पट्टा, म पु (म पट्ट) पट्टोर्लिना, आविहित
कालत्र भूभ्यभिरारपन २ (कुक्कुरादीना)
श्रव श्रवणपट ३ वेदा, पाठ-कल्प ४ पाठ
५ चर्मनय-कट्टिबधना परिकर ६ दे 'चप
राम' ७ राटगभेद ८ अधिकारपत्रम् ।

पट्टे पर दाने कि म, आविहितभवात्
निरूपितमूल्येन दा अथवा रिम्न (तु
प अ) ।

पट्टी, स स्त्री (सं पट्टिका) वाष्ठ, पट्टिका
० पाठ, प्रपाठन, ३ शिक्षा, उपदेश
४ वचनारामकोपदेश, ५ (वस्त्रादिदस्य)
दीर्घ, शकल ६ ज्ञण, बन्धन आवेष्टन ७
० नपावेष्टने ८ और्गपत्रभेद, पट्टी ९ पक्ति
नति (स्त्री) १० प्रमाथिता वेश ११
रिक्त्यभाग १२ मन्त्रवया पत्र, वाष्ठ-शक
१३ निष्ट व्रभेद ।

—थौपना, कि स, पट्टिका वध (क् प अ)
जग आण्ट (तु) ।

—दार, म पु (हि + का) अशिन, भाग
द्राहिन् ।

—दारा, स स्त्री (हि + का) अशित्,
भागद्राहित्वम् ।

पट्टी, स स्त्री (स) अश्वशोभनमण्डपु (स्त्री),
कड्या, नट्टी २ लण्डभूषा ३ यत्रकम् ।

पट्ट, म पु (हि पट्टी) और्गपत्रभेद,
नाशार ।

पट्ट, म पु (स पुष्ट) तम्ण, युवक,
युवन्, कुमारक २ शब, पोत, डिभ
३ मल्ल, वाटुयोष भिन् ४ दीपशूलपत्र
५ रगता, र्नायु (स्त्री), पेरी ।

पट्टक, म पु (सं) पाठन, वाचक ।

पठन, म पु (म न) अध्ययनं, पाठ,
अधीति (स्त्री), वाचन २ शबर्ण, उच्चारणम् ।

—पाठन, स पु (म न) अध्ययनाध्या
पनभे (द्वि) ।

पठनीय, वि (स) पठितव्य, अध्येतव्य,
पाठ्य, वाचनीय, पठन अध्ययन-अर्ह ।

पठान, म पु (पश्तो पुखाना) यवनजाति-
भेद, *रङ्गल *पठान ।

पठानी, स स्त्री (हि पठान) पञ्चनी,
पठानी २ पठानत्व, परतूनत्वम् ।

पठार, स पु (स प्रसार >) अहित्यका,
० प्रसार ।

पठावनी, स स्त्री (स प्रस्थापनम्) प्रपण,
प्रतिनि (स्त्री) ० प्रस्थापनभूमि । (स्त्री) ।

पठित, (वि स) अधान, काशित २ आवित
३ साक्षर, विद्यावत्, विदम् ।

पडछती (त्री), सं स्त्री दे 'परछती' ।

पडताल, म स्त्री (स पठितोत्पन्न >) अनु-
मथान, आवेषण २ अन्वीक्षण, विमश,
निरूपणम् ।

—करना, कि स, अनुमथा (जु उ अ),
अन्विष् (दि प से) २ विमृश (तु प
अ), निरूप (जु), अनु परि रक्ष (भ्वा
आ से) ।

पडतालना, कि म, दे 'पडताल करना' ।

पडती, म स्त्री (हि पडना) अकृण अहल्व,
भूमि (स्त्री) ।

पडदादा, म पु (स प्र + दाद >) प्रथिता
मह ।

पडदादा, म स्त्री (हि पडदादा) प्रथिता
मही ।

पडना, कि अ (स पनव) अदनि, पव
(भ्वा प मे), अदा-भस् (भ्वा आ से),
श्यु (भ्वा आ अ) २ पट्ट-श्रु (भ्वा आ-
से) आसपव प्रमण (कर्म) सश्रु, स

ममाप (दि जा अ) ३ मविश (तु प अ), विशम् (दि प से) शी (अ जा स), स्वप् (ज प अ) ४ रुग्ण (वि) वृद् रोगेण अभिभू (कर्म) ५ प्रविश (तु प अ) ।

क्या पटा है मु, जोय, कि प्रयोक्तव्यम् ।

पङ्गाना, स पु (सं प्र-दे नाना) प्रमाता मह ।

पङ्गानी, स स्त्री (हि पङ्गाना) प्रमाता महा ।

पङ्ग(र)वा म स्त्री, दे 'प्रतिपदा' ।

पङ्गवाल, म पु, दे परवाल' ।

पङ्गाव, म पु (हि पङ्गना) प्रयाणभग, निवेश अवस्थिति (स्त्री) २ निवेश विश्राम, स्थानम् ।

पङ्गोम, म पु (स प्रतिवास या प्रतिवेश) निरुत्तममीप-मनिहित, देश, मनिधि (पु), २ सान्निध्य प्रातिवेशम् ।

पङ्गोसी, म पु (हि पङ्गोम) प्रतिवेश स्व शिन्, प्रतिवामिन्, प्रतिवशिक, [पङ्गो सिन् (स्त्री) -प्रति, वैशिनी-वामिनी र] ।

पङ्गना, कि स (स पठन) पट्ट (भ्वा प से), अरिद (अ जा ज), (अपने आप पङ्गना) अनुवच् (प्रे) २ वच् (प्रे), उच्च् (प्रे) २ अभ्यस् (दि प से), आवृच् (प्रे) । म पु तथा भाव, पाठ, पठन, अध्ययन, वाचन, उच्चारण, अभ्यसन, अभ्यास, आवर्तन, श्रावणम् ।

—लिखना, म पु, पाठलेखी पठनलक्षणे, विषयभ्याम्, शिक्षा ।

पङ्गनेयोय, वि, दे 'पठनीय' ।

पङ्गनेवाला, म पु, अत्येवृ पठित (पु) वाचक, पाठक, अधीयान [अत्येत्री, पठित्री, पाठिरा (स्त्री)] ।

पङ्गा हुआ, वि, दे 'पठित' ।

पङ्गवाना, कि प्रे, व 'पङ्गना' के प्रे रूप ।

पङ्गा, वि (स पठित, दे) ।

—लिखा, वि, विद्म, उपालविद्य, मशर, शिक्षण, व्युत्पन्न ।

पङ्गाई, म स्त्री (हि पङ्गना) दे 'पङ्गना' सं पु । २ 'आपन, पाठन, शिक्षण ३ अध्या

पन, शैली राति (स्त्री) ४ अध्ययन अध्यापन, शुक-वेतनम् ।

पङ्गाना, कि म (हि पङ्गना) पठशिभू (प्रे), अधि र (प्रे अध्यापयति), शाम (अ प से), उपदिश (तु प अ) । स पु तथा भाव, अध्यापन, उपदेश, शिक्षा क्षण, पाठनम् ।

पङ्गानेवाला, स पु, अध्यापन, शिक्षण, गुर, उपदेष्टृ शान्त (पु) ।

पण, म पु (स) चत, देवन, दुरोदर, कैतव २ गल्ह (शर्मा) ३ भूल्य, निर्वेदा ४ मुक्क ल्क, प्रतिफल ५ धन, दिक्थ ६ पणितव्य, विक्रेयवस्तु (न) ७ व्यवसाय, व्यवहार ८ स्तुति (स्त्री) ९ मुष्टिमग्न १० (पैसा) ताश्चमुद्राभेद, पणमुद्रा ।

पतगा, स पु (स >) पत्रचिह्न ना, चिह्ना भाम, *पतग २ मूर्ध ३ रग ४ शलम । —उडाना, कि स, पत्रचिह्न पतग उडटी (प्रे उडुययति) ।

—वाङ्ग, स पु, पतगोड्डाङ्क ।

—वाङ्गी, स स्त्री, पतगङ्गी ।

पतगा, स पु (स पतग) शलम २ स्फुलिग, अग्निवण ।

पतजलि, म पु (सं) बीगद्रसनकारकपि विशेष २ महाभाष्यकारो मुनिविशेष ।

पत, म पु (स पति) भर्तृ, धव २ प्रभु, स्वामिन् ।

पत, म स्त्री (स प्रत्यय >) प्रतिष्ठा, गौरव, मान, यशम (न) कीर्ति (स्त्री) ।

—उत्तरना वा लेना, मु, अप अव मन् (प्र), रुप (प्रे दृषयति) ।

—रटना, कि स, गौरव रक्ष (भ्वा प से) ।

पतझड़, सं स्त्री (स पत्र+हि झटना) शिशिर, शिशिरर्तु (पु) (माघफाल्गुन म-सी) २ अवनतिमान्, मरुटमय समय ।

पतव्यकर्ष, म पु (स) काव्यदोषभेद (सा०) ।

पतत्र, स पु (स न) पत्र, वान, पत्र २ वान, बहन, पुरय, बाड ।

पतत्रि, म पु (स) पठित्, पत्रिद, पत्रिद, रग, विहग ।

पतन, म पु (स न) अव नि-अप, पान,

पत्र म पु (म न) पर्ण छद्म, पलाश,
दल ल उद (पुष्पनादीना) पत्र, पर्ण,
पृष्ठ ३ समाचार-वृत्त पत्र ४ मदेश, पत्र,
लेखक ५ लेखपत्र ६ (धातुवादे पठ्ट ६,
पलक श्रम)

—वार, म पु (स) वृत्तपत्र लेखक सपादक ।

—वाहक, म पु (स) लेखहार, सदेशहर ।

—ध्वजहार, म पु (सं) पत्रविनिमय,
लेखकवहार ।

पत्राचन, सं पु (स न) मशीनी-सी, मशि,
वि मि (सव (स्त्री) ।

पत्रा, स पु (स पत्र >) पत्राग, पत्रिका
२ पृष्ठ, पर्ण, पत्रम् ।

पत्राचार, स पु (स), पत्र-ध्वजहार
विनिमय ।

पत्रावलि, सं स्त्री (स) पर्ण-दल उद-श्रेणी
राजी-आवली २ पत्रभग ।

पत्रिका, स स्त्री (स) सदेश पत्र २ साम-
यिक, पुस्तक ग्रन्थ ३, समाचार वृत्त, पत्र
४ लघुलेख ।

पत्री, म स्त्री (सं) लिपिपत्रिका, लघुलेख
२ मदेश, पत्रम् ।

पत्रम्—, सं स्त्री (स) जन्मपत्रिका ।

पथ, सं पु (स) पथिक (पु), मार्ग,
अध्वज (पु), धर्मन् (न), पदवीति
(स्त्री) २ रीति (स्त्री), विपालम् ।

—गामी, स पु दे 'पथिक' ।

—(प्र)दर्शक, म पु (सं) मार्ग-दर्शक उप-
देशक, नेत्र, नाथक ।

पथरी, स स्त्री (हि पत्थर) प्रस्तर म्योरा-
रिका २ अश्मरी, अश्मरी रं ३ अष्टीना
(स्त्री बटु), पापागनकला (पु बटु)
४ दे 'अश्मक' ५ पश्चिमठर ६ श मर-
शाणी ।

पथरीला, वि (हि पत्थर) प्रस्तर उपल,
मनुष्य आशीर्ष-बहुल ।

पथिक, म पु (सं) अध्वज, अध्वनीन,
अध्वज, पाथ, पथिक, साधिवि(वृ)क,
यादु-गुरु (पु), पथक ।

पथ्य, सं पु (स न) उपयुक्ताहार ।
२ मंगलम् । वि, स्वास्थ्यनर, आरोग्यावह ।

पद, स पु (सं न) पाद, चरण, अट्टि

(पु) २ पाद पत्र निह मृग ३ पत्र, पद
पाद-याम विक्रम, वि, जम, ४ स्थान,
स्थिति (स्त्री), पदनी ५ वृत्ति (स्त्री),
व्यवसाय ५ पद्य, छद्म (न) ६ पद्यपाद,
छद्मचरण ७ उपाधि (पु) मानपद
८ सुतिङ्गन प्रातिपदिक, सर्वभक्तिक शब्द
(व्या) ९ भक्तिगीति (स्त्री) १० नि श्रे-
यम, मुक्ति (स्त्री) ।

—चर, म पु (सं) पदग, पदानि-
ति (पु) ।

—च्छेद, म पु (सं) मधिमामयुक्तवाक्य
स्य पदाना विभाग (व्या) ।

—च्युत, वि (सं) अष्टाधिकार, अधि-
कारच्युत ।

—उल्लिख, वि (सं) पादपद, आत्रान
मादन २ अपरापत, अवशीर्षित ।

पदक, सं पु (सं न) शीति प्रतिष्ठा, मुद्रा ।

पदनी, म स्त्री (सं) पद, वृत्ति स्थिति,
(स्त्री) स्थान २ उपाधि (पु), उपमान,
पद, कीर्तनिक ३ मार्ग ४ रीति (स्त्री) ।

पदाति, म पु (सं) प(पा)दातिक, पदिक,
पत्ति (पु) प(पा)दग, प(पा)दात् (पु),
पादात् ।

पदाना, कि म व 'पदाना' के प्रे रूप ।

पदार्थ, म पु (सं) मूल, द्रव्य, वस्तु (न),
अथ २ शब्दाथ ३ धर्मार्थनाममोषा
४ द्रव्यगुणरमादय प्रमेयविषया (दशन) ।

—विज्ञान म पु (सं न) विज्ञान भौतिक
शास्त्रम् ।

पदार्पण, म पु (सं न) उरणापण, पादन्य
मन, शुभापणनम् ।

पदावला, म स्त्री (सं) शब्दश्रेणी २ गीत
मथर ।

पद्वति, म स्त्री (सं) मार्ग, पथ, पथिक
२ पत्ति पति (स्त्री) ३ रीति (स्त्री),
परिपाटी टि (स्त्री) ४ प्रसार, विधा ५
सम्भारविनिदेशो ग्रन्थ ।

पद्विरी, म स्त्री (सं पद्विरी) मादिरमन
भेद (मा०) प्रतिचरण १६ मात्रा, अन्त म
गण, उ० तम रीति मयन तममय विज्ञान ।
पद अट्टन वक्त्र दमनात् ।]

पद्य, म पु (सं न) सरान, पुत्रीय, दे

'कमल' २ विष्णोगुणविशेष ३ पोट्टशब्दा
निनी मर्या (१ ००००००००००००००००) ।
—कद्द, म पु (म पु न) शङ्ख (छ) न,
जलकुम्भ, पद्ममूलम् ।
—नाभ भि, सं पु (स) दे 'विष्णु' ।
—पाणि, स पु (म) ब्रह्मव (पु) २ मय
३ बुद्ध ।
—योनि, स पु (म) दे ब्रह्मा ।
—राग स पु (स) ब्राह्मिक, लोहित,
शोभारत्न, कुम्भिकम् ।
पद्मा, स स्त्री (म) द लक्ष्मी ।
पद्माकर, स पु (स) नभू डा ऋ सरो
वर, सरसी, सरम (न), सरकम् ।
पद्माक्ष, म स्त्री (म) विष्णु २ मय ३
पद्मवीजम् । वि (म) कणाक्ष कमलनयन,
कमलनेत्र ।
पद्मालया, म स्त्री (स) कमल, पद्मा, श्री,
इन्दिरा, रमा ।
पद्मासन, स पु (म न) यागामनविशेष ।
० (स पु) दे 'ब्रह्मा' ।
पद्मिनी, स स्त्री (स) कमलिनी नन्दिनी,
विमिनी २ दे 'पद्माकर' ३ स्त्रीभेदविशेष,
(जो वामबायी सुनीला, सुनीली तथा पद्मिनी
हो) ४ इन्दिरा ५ ३ मद्रो ।
—वल्लभ, म पु (म) मय ।
पद्य, म पु (स न) छन्दस (न), श्लोक
२ काव्य, कविता ।
—मद्य, वि (म) पद्य, रूप-आत्मक, मन्दी
वद्ध ।
पद्धारना, म प (हिं पद्म + धरना) गभन,
प्रस्थान ० उष, आगमन, प्राप्ताम् ।
पद्म, स पु (स षा) शनिष्ठा, वृद्धमूल्य ।
पद्म, म पु [स पद्म (न) >] आयुषो
चतुर्थभाग ।
पद्म, प्रत्यय (ङ) त्व, ना (उ बालपन
बालत्व-ना ।
पद्मघट, म पु (हिं पानी + घाट) घट्ट-ट्टी ।
पद्मचक्र, म स्त्री (हिं पानी + चक्र) जल,
चक्री पपणी-यत्रम् ।
पद्मदुग्धा, म पु (हिं पाना + दुग्धा) निमल
(पु), अवगाह्य २ मगभेद ३ मन्त्रकुण्ड ।

पद्मदुग्धी, स स्त्री (पूर्ण) *जलमग्ना (नीरा) ।
पद्मपना, कि अ (स पर्ण) पुन पद्मवित
हरित (वि) भू २ पुन स्वास्थ्य लम् (स्वा
जा अ) अथवा पुष (दि प अ) ।
पद्मपाना, कि म, व 'पद्मपना' के प्रे रूप ।
पद्मवाडी, स स्त्री (हिं पान + वाडी) *पर्ण
वापीडिना वावूलोवापिका ।
पद्मवाडी, स पु (हिं पान) दे 'तमोली' ।
पद्मस, स पु (स) (वृक्ष) क-कणिक, फल,
स्थूल, मृदाफल (फल) पद्मस, दे 'कटहल' ।
पद्मसारो, म पु दे 'प्यारी' ।
पद्मसाल म स्त्री (स पानीय साला) प्रपा,
दे मवील ।
पद्महा, स पु (म परिणाह) दे 'चौटाद'
२ गूढाशय, मर्मन् (न) ।
पद्महारा स पु (म पानीयहार) जल, वाहक
बोद्ध (पु) ।
पद्महारिन स्त्री, स स्त्री (हिं पद्महारा) जल
वापिका-बोद्धी ।
पद्माती, म पु [म प्रनष्ट (पु)] प्रपौत्र
० प्रदोहित ।
पद्मारा-रक्षा, स पु, दे 'परनाला' ।
पद्माह, म स्त्री (षा) परि, प्राण, रक्षा २
रक्षाधान, आश्रय ।
पद्मीर, म पु (षा) कृन्दिता २ निर्मल
दधि (न) ।
पद्मीरी, म स्त्री (म पर्ण >) पर्णवीजानि
(न बहु) ।
पद्मग, म पु (स) दे 'साँप' ।
पद्मा, स पु (म पर्ण >) पुस्तक, पत्र पृष्ठ
० धातुपट्ट-ट्ट ३ मरकत, हरिमणि (पु),
अदमगमन, मीपर्ण ४ देशीयोपानह उपरि-
भागम् ।
पद्मी, म स्त्री (हिं पद्म) त्रयु पितल, पत्रम् ।
पद्मडा, स पु (म पर्ण >) शुष्ककाष्ठलक्ष-
सड २ रौपिकाया बाध्यभाग ।
पद्मडी, म स्त्री (हिं पद्मडा) बाह्य, पद्म-वेष्टन,
बद्ध, शुष्कत्वम् (स्त्री) २ दे 'सुरट' ३
पर्णिक ४ बल्लल-न्म् ।
पद्मनी, म स्त्री (देश) दे. 'वरीनी' ।

परीहा, स पु (देश) चातक मेघजीवन,
सत्तर, स्तोत्रक ।

परीता, स पु (देश) रघुवीण्ड, महापञ्चा
हुल २ पीपीकर, क्रीडनकभेद ।

परीहा, स पु (अनु) दे 'चानर' ।

परैया, स पु (अनु) चातक २ पीपीकर,
क्रीडनकभेद ३ आश्वक ।

पपोटा, स पु (स प्रपट >) दे 'पलक' ।

पच्छिक, स स्त्री (अ) लोका, जनता,
जना । वि, मार्ग, जनिक ननीन लौकिक ।

—प्रासिक्युटर, स पु (अ) राजकीय
प्राभियोगतु ।

—नक्सं डिपार्टमेंट, स पु (अ) लोक
निर्माणविभाग ।

पच्छिकार, स पु (अ) पुरतव त्रय, प्रवाशक ।
दे 'प्रकाशक' ।

पय, स पु [स पयस (न)] दुग्ध, क्षीर
२ जल ३ अन्नम् ।

पयस्विनी, स स्त्री (स) क्षारिणी दोग्धी,
दुग्धदा, दुधा ।

पयाल, स पु (स पयाल न) निष्कण्ट,
निश्शस्वी धान्यनाम् ।

पयोज, स पु (स न) मरीच, पत्र, दे
'बमल' ।

पयोद, स पु (स) मेघ, दे 'वाटल' ।

पयोधर, स पु (स) कुच, स्त्रीमन
२ ऊषस् (न), आषोत् ३ मर ।

पयोधि, } स पु (स) मागर, समुद्र ।
पयोनिधि, }

परंच, अव्य (स पर+च) अपर च, अपि
च, अथ च २ तथारि, त्रिभु, परतु ।

परतप, वि (स) अरिभवर्द्धन, रिपुमुद्दन ।

परंतु, अव्य (स पर+तु) किंतु, पर,
तथापि ।

परपरा, स स्त्री (स) अनु, क्रम, जानपू
वीर्ष्य, पूर्वोत्तरक्रम > मनान, सतति (स्त्री)
३ परिपाटी (स्त्री) प्रथा ।

—गत, वि (स) परदरीण, माप्रदायित
पौराणिक [स्त्री (स्त्री)], क्रम, आगत प्राप्त ।

पर, वि (स) अपर, आय, इतर, स्वानिरिक्त,
आत्मभक्त २ परधीय, अन्यदीय, अन्य, पर
(समागारभ में), अन्यम्, परम् ३. दर,

दर, शब्दार्थानु, विप्रकृष्ट ४ अपर, उत्तर,
उत्तरकालीन, पाश्चात्य ५ अनिरिक्त, भिन्न
६ उत्तम, मेघ ७ लीन, मग्न, परावण । (उ
स्वार्थपर-स्वार्थमग्न) । स पु (स) शत्रु
अरि (पु) ।

पर, अव्य (स पर) तदनु, तत्र, तत्पश्चात्
> परतु किंतु, तथापि ।

पर, प्रत्य (स उपरि) प्राय सप्तमी विभक्ति
से (उ कुर्मी पर-आमदान्) अधि,
उपरिहात्, ।

पर, स पु (का) पशु, गरुड (पु) वाज ।

—द्वार, वि मपशु, जालिन्, पक्षिन्, गरुडम् ।

—कट जाना, सु, अशक्त प्रमथर्ष (वि) भू ।

—न मारना, सु, गतु न शक (स्वा प अ) ।

—निकलना, सु, दृष (दि प अ), गव्
(स्वा प से) प्रगल्भ (स्वा आ से) ।

परकार, स पु (का) ।

परकीय, वि (सं) दे 'पर' (२) ।

परकीया, स स्त्री (स) नापवाभेद, पर
पुरुषानुरागिणी ।

परकोण, स पु (स परिकृ>) प्राकार,
वप्र प्र, ताल, वरण ।

परस्व, स स्त्री (स परीसा) विमश, मृधम,
निरूपण परीषण-अज्ञान २ विवेक विचारणा
परिच्छेद ।

परखना, कि स (स परावण) परीक्ष
(स्वा आ से) विमृश (स प अ)
> विविच (ह उ अ), विच-विच (पु
उ अ), परिच्छिद् (रु प न) । स पु,
द 'परल' ।

परखनेवाला, स पु, दे 'परीक्ष' ।

परखा हुआ, वि, दे 'परीक्षण' ।

परगना, स पु (का.) जमजलविभाग,
ग्रामसमूह, *परिगण ।

परगदनी, स स्त्री (स प्रमहण >) नृवर्ण
कारणा नालाकार उपकरणभेद, *प्रमृणी ।

परचना, कि अ (स परिवचन) परिचि
(स्वा उ अ), सुपरिवित (वि) भू, रु
वड, मन्व्य-मौहद (वि) भू ।

परचा, स पु (का.) (पराशाया) प्रजन-
पत्र २ संदेश, पत्र ३ पत्रखट-अम् ।

परचान्त, वि म, द 'परचना' के प्र. रूप ।

परचून, स पु (म पर-अन्त्य + चूर्ण-
आडा) प्रतीण विविध, ण्य *परचूर्णम् ।
परचूनिया, म पु (हि परचून) स्तोत्रं
अल्पश विक्रियिन् विवेत्, खडवणिन (पु) ।
परछत्ती, म स्त्री (म प्र+हि छत) *प्र
छदि (स्त्री)-न्निम (न) पटल २ वृण
पत्तल-दि ।

परछन्न, म स्त्री (म परि + भर्त्सन) (वृण
मवधिनाभि वरस्य) पर्यन्तर्न पयर्चा ।

परछाई, म स्त्री (म प्रतिच्छाया) छाया
छायाकृति (स्त्री) २ प्रतिविंब व प्रति,
रूप फल-मूर्ति (स्त्री) ।

परचौट, म पु (हि परजा) *गृहभूमिपर ।

परतत्र वि (म) पराधीन परायत्त पराजित
परवन्, परावलावन, परनिम्न ।

परतत्रता, स स्त्री (म) पराधीनता पराश्रय
पराविन्वन परवशता इ ।

परत, म स्त्री (म पत्र >) अथवा स्ना
तल २ पुत्र भग वति (स्त्री) ३ >
'पयनी (१) ।

परतल, म पु (स पत्तल >) *अथ गौणी
प्रमेव भार ।

—का ट्टू, म प हृष्ट व स्त्रीनिन् ।

परतला, म प (म परि + तल) तटग
क्रपाण, पटिका ।

परती, म स्त्री, > 'पड़ती' ।

परदा, म पु (का) अपनी, निरम्बहिणी
वाण्ट-पर, न(य)वनिक्का, प्रतिमा
(मी)रा २ व्यवधान ३ अवगुण ठिका
४ (नारीणा) एकावाम, परपुम्पाअन
५ स्तर तल ६ व्यवधायककुड ७ पटल,
आवरक ८ आवरण, आच्छादन ९ वाधाना
स्वरोत्पन्नस्थानम् ।

—उठाना या खोलना, सु, २-स्व-उठ-प्र-
यति (ना धा) प्रकाश (प्रे) ।

—करना या रखना, सु, अवगुण्ड (चु),
अनपुरे वम् (भ्वा प अ) ।

—नशीन, वि (का) अवगुण्डनवती अत
पुरवायिनी ।

परदादा, म पु, दे 'पटदा' ।

परदेश, स पु (म परदेश) निदर्श ।

परदेश, स पु (म परदेशीय) विदेशीय,
पारदेशिक, वैदेशिक ! वि, अन्य २, देशीय ।

परदाता, स पु, दे 'पड़ना' ।

परनाला, स पु (म) प्रणाल ।

परनाली, स स्त्री (रा प्रणाली) परि(री)-
वाह, सरणि (स्त्री) निगम जलनिस्सरण
माग जलोच्छ्वास ।

पर(ड)पोता, स पु (म प्रपौत्र) पुत्रपौत्र,
पौत्रपुत्र ।

पर(ड)पोती, म स्त्री (स प्रपौत्री) पुत्रपौत्री,
पौत्रपुत्री ।

परब्रह्म, स पु (स न) परमेश्वर, निगुणो
जगदीश्वर ।

परभृत, म स्त्री (स पु) क्रीविल, पिक ।

परम, वि (म) उत्तम, श्रेष्ठ २ आदिम,
प्रथम ३ प्रधान, ४ रय ३ अत्यधिर अत्यन ।

—गति, स स्त्री (स) } मोक्ष, मुक्ति
(स्त्री),

—धाम, म पु [म-भन्(न)] } अपवर्ग,
नि श्रेयसम् ।

—पद, म पु (स न)

—ज्ञान, म पु (म न) ब्रह्मज्ञानम् ।

—नृत्त, स पु (म न) मूलसत्ता २ ईश्वर ।

—पिता, स पु [स नृ(पु)] } परमेश्वर
सच्चिदा

—पुरुष, म पु (म) } नदी जग

—ब्रह्म, स पु [म-भन्(न)] } दीश्वर-।

—हम्, स पु (म) सन्यासिभेद २ ईश्वर ।

परमानन्द, वि (अ) शिबर, स्थायिन् ।

परमाक्षर, म पु (म न) औद्धार, प्रगव ।

परमाणु म पु (म) भूवल्गानलानिलाना
सूक्ष्मममो लव ।

—जाद, म पु (म) परमाणुभ्यो जगद्रचना-
इति न्यायवैशेषिकमिदान ।

परमात्मा, म पु (म त्मन्) परमेश्वर,
परमेश्वर (न) जगदीश्वर, वि, अन्त (पु)
चोम् (अन्व) सच्चिदानम् ।

परमानन्द, म पु (स) अत्यतसुख २ ब्रह्म
मातृग्यसुख ३ आनन्दस्वरूप ब्रह्मन (न) ।

परमात्र, म पु (म न) पायम-म, श्रीरिक्ता ।

परमायु, म स्त्री [म-युम्(न)] अत्रिका
धिक युम (न), जीवनमौमा (यह मनुष्यो
की १२० वष है) ।

परमार्थ, म पु (स) उच्छेदवस्तु (न)
२ यथार्थतत्त्व ३ मोक्ष ४ सुखम् ।

परमार्थी वि (स विन्) तत्त्वज्ञानामिलापिन
२ सुसुष्ठु, मोक्षेच्छुक ।

परमेश्वर, स पु (स) दे 'परमात्मा'
२ विष्णु ३ शिव ।

परला, वि (स पर) पर, परस्थ, परवर्तिन्,
२ अन्तर निरन्तराल ३ दूर, दूर-स्थवर्तिन् ।

परलोक, स पु (स) लोकान्तर २ देहांतर
प्राप्ति (स्त्री), प्रेत्यभाव, पुनज मन् (न) ।

—गमन, स पु (स न) मृत्यु (पु) निधनम् ।

—वासी, वि (स सिन्) मृत, विपन्न,
दिवगत स्वर्गिन् ।

—सिधारना, सु, दिव-स्वर्ग पत्रत्व गम् ।

परवरदिगार, स पु (का) पालक २ ईश्वर ।

परवरिण, स स्त्री (का) पालन, पोषण
भरणम् ।

—करना, कि म, परि प्रति पा (प्रे पाल
यति) स्वृष परिपुष (प्रे) ।

परवल, स पुं (म पटोल) दे 'पणेर' ।

परवश इय, वि (स) दे परवश' ।

परवदाता, स स्त्री (स) दे परवन्ता' ।

परवा^२, स स्त्री (क) आशया चिन्ता,
व्यग्रता, उद्वेग २ आशय, अवलव ।

परवा^३, स स्त्री (स प्रतिपदा' दे०)

परवाङ्ग, स स्त्री (का) उट्-यन, उपवन,
सै क्रिसपण्य २ गव, अवलेप ।

परवानगी, सं स्त्री (का) अनुमति (स्त्री),
अनुज्ञा ।

परवाना, सं पु (का) आज्ञा नामन अनुज्ञा
पत्र २ पतण शालभ, दीपगञ्जु (पु) ।

—राहदारी, म पु दे 'पारपात्र' ।

परवाल, म पु (म पर+वाल >) प०म
प्रकोप ।

परशु, सं पुं (स) पशु (पु) परश्वर
पथं कुठार ।

—नाम, सं पु (म) भागव, जामदग्न्य,
पशुनाम ।

परसा, सं पु, दे 'परशु' ।

परसाल, स पु (स पर+का साल)
(पिछल) गन्वर्ष परशु (अभ्य) २ (आगामी)
उत्तर-पर-आगामि-वर्षम् । कि वि, पश्य,
गन्वर्ष २ आगामि, वत्परे-वर्षे ।

परसौ, कि वि [स परथ (अभ्य)] म
परदिन २ ह्य पूर्वदिनम् ।

परस्पर, कि वि (स परस्पर) अन्योन्य,
इतरेतर, मिथ (मत्र अभ्य) ।

—का, वि, परस्परस्य अन्योन्यस्य इतरेतरस्य
(केवल एववचन मे), परस्पर, अ-शेय,
इतरेतर, मिथ ।

परहित, म पु (मं न) दे 'परोपकार' ।

परहेज, स पु (का) कुपथ्यत्याग,
पथ्य सेवन, मित, अज्ञान पान, आहार-यानाशन,
नियम २ मयम, जितेन्द्रियता, दोष-दुर्गुण,
त्याग ।

—करता, कि स, कुपथ्यं स्वन् (स्वा प
अ), २ दोषान् परि विन्वञ्जं (नु) ।

—गार, स पु (का) कुपथ्यत्यागिन्, सब
ताहार २ मयमिन्, जितेन्द्रिय ।

—गारी, सं स्त्री (का) दे 'परदेव' (१-२) ।

परौटा, स पु (कि पण्डिता ?) *परम घृत्
गर्भ, रोटिका, परो' ।

परात्, स पु (म) मृत्यु, निधनम् ।

—काल, स पु (स) मृत्युमय २ सुसुष्ठुणा
देहत्यागकाल ।

परा^१, म स्त्री (मं) ब्रह्म-उपनिषद्, विद्या ।
वि स्त्री (म) परवर्तिनी दूरथा २ भेदा ।

परा^२, स पु (का पर-पथ ?) पक्ष-तति
(स्त्री) ।

पराकाष्टा, म स्त्री (स) अनिभूमि परा
कोटि (स्त्री), चरमनीमा, परमावधि (पु),
अत्यन्ता ।

पराक्रम, म पु (मं) वीर्य, शीर्ष, विजय,
पौरुष, ओजस्-महत् तरम (न), रणोत्साह ।

पराक्रमी, वि (सं निन्) वीर, शूर, विज
मिन्, विजान, वीर्यविक्रम, गालिन्, माहवित्र
[स्त्री (स्त्री)], तेजस्वित् [स्त्री (स्त्री)] ।

पराग, म पुं (मं) पुष्य-कुसुम इति (स्त्री)-
रजम् (न) -रेणु (पु) २ रजम, पूरि
३ स्थानीयसुगंधिचूर्णं ४ चंदन • वपु-
रजम ।

पराङ्मुख, वि (मं) विमुख, परानीन २
प्रतिकूल, विपरीत, विरक्त [पराङ्मुखो
(स्त्री)] ।

पराजय, सं पु (नं) परामव, शरीरि,
(स्त्री) मंग ।

पराजित, वि (स) हारित, पराभूत, निर्-
वि, जित ।

परात, स स्त्री (म पात्र >) पारीत्रा ।

पराधीन, वि (म) दे 'परतत्र' ।

पराधीनता, स स्त्री (म) 'परतत्रता' ।

पराभव, म पु (स) दे 'पराजय' २ तिर
स्कार, मानहानि (स्त्री) ३ विनाश ।

पराभूत, वि (स) दे 'पराजित' २ तिरस्कृत
३ भ्रम, नष्ट ।

परामर्श, म पु (स) विवेचन विचारणा,
वितक, मंत्रणा २ उपदेश अनुशामनम् ।

पराधण, वि (स) लग्न, मग्न, प्रकृत पर,
निरत (प्राय समाप्तान मे उ धमपरायण=
धर्मपर इ) ।

पराया, वि पु (स पर) दे 'पर' (२) ।

पराय, स पु [स परारि (अव्य)] पूर्वत
वत्पर, गतवृत्तीयवर्ष र्थम् ।

पराद्ध, स पु (म न) शल्ल-य, अष्टादशाक
वती सरया (१०००००००००००००००००००) ।

परात्र, वि (स) पूर्वापर २ निवट्द्वर ३
सर्वात्तम, सर्वश्रेष्ठ ।

परावर्त, स पु (स) (निणयादिवस्य) परा
प्रत्या, वृत्ति (स्त्री) वर्तनम् ।

—व्यवहार, म पु (स) अभियोगस्य निर्ण
यस्य वा पुनर्विचार ।

परावर्तन, स पु (म न) प्रतिनि नि परा-
प्रत्या, वृत्ति (स्त्री) वर्तन, अप, क्रमण-सरण
यानम् ।

परावार, स पु (स) न्यासपितृ ।

पराश्रय, स पु (स) अन्य पर, सश्रय-अव
ल-अवलम्बन २ दे 'परतत्रता' ।

पराश्रित, वि (म) अन्य पर, सश्रित-अव
लम्बन २ दे 'परतत्र' ।

परामु, वि (स) प्रेत-ज्ञान, मृत-ज्ञानम्,
परं नान, निश्रव-ज्ञान, प्रणीत-ज्ञानम् ।

परास्त, वि (स) दे 'पराजित' ।

पराह, म पु (म) अपराह, विकाल ।

परिदा, म पु (फा) पक्षिन्, पत्रिन्, पतत्रिन्,
सग ।

परिकर, म पु (स) परिजन, अनुचरवग
२ वर्तिवध, प्रगाढाङ्घ्रिवानध ३ कुडम्ब
४ समूह ५ अधालकारभेद (सा) ।

परिकल्पित, वि (स) रचित, आविष्कृत २
वल्पित, उद्भावित ३ निश्चित ।

परिक्रमा, स स्त्री (स-म) प्रदक्षिण-णा-ण,
(पूजार्थ) परिभ्रमणम् ।

—करना, कि स, परिकम् (भ्वा प से,
भ्वा आ अ), (पूजार्थ) परिभ्रम् (भ्वा
प से) प्रदक्षिणा कृ ।

परिखा, स स्त्री (स) खात, खेयम् ।

परिख्यात, वि (स) विख्यात, विश्रुत ।

परिगणन, स पु (स न) सख्यान, सम्बन्ध
गणनम् ।

परिगृहीत, वि (स) स्वीकृत, उररीकृत २
प्राप्त, लब्ध २ अतर्भूत, समाविष्ट ।

परिग्रह, स पु (म) अदान, ग्रहण, प्रति
ग्रह ० लब्धि प्राप्ति (स्त्री) ३ धनादि
मयट् ४ स्वी-अगा-नार ५ विवाह ६ पत्नी
७ परिजन, परिवार ८ परिवेष्टनम् ।

परिघ, स पु (स) परिघातन लोहमुसलपुड
२ परि-घात हनन ३ अर्गल-ल-ला-स्त्री
४ मुद्गर ५ शूल ६ कलस ७ भवन
प्रतिवध, बाधा ।

परिचय, स पु (म) परि, गान, अभिज्ञता,
बोध २ प्रमाण, उपपत्ति (स्त्री) ३ अभ्यास ।

परिचर, स पु (स) अनुचर, सेवक, दे
'परिचारक' ।

परिचर्या, स स्त्री (स) सेवा, शुश्रूषापणा,
उपस्थान, उपचार, उपासनम् ।

परिचायक, स पु (स) परिचयदायक,
परि-अभि, शापक २ सूचक, घोतक, बोधक,
निर्देशन, शापक । परिचायिका (स्त्री) ।

परिचारक, स पु (स) सेवक, किकर,
दास, भृत्य, प्रेथ्य, भुजिथ्य, नियोज्य ।

परिचालन, स पु (स न) (कार्य)
निर्वाह सञ्चालन २ प्रचोदना, प्रेरणाणा,
प्रोत्साहनम् ।

परिचिन्त, वि (स) अभि परि ज्ञान, परिचय
विशिष्ट २ ज्ञान, बुद्ध, विदित ।

परिच्छेद, स पु (स) परिधान, बेश ४,
वसन २ आच्छादन ३ राजविज्ञानि (न
बट्ट) ४ रात्रसेवकवग ५ परिजन, परि
वार, कुल ६, उपस्कर, सभार, सामग्री ।

परिच्छेद, म पु (स) अध्याय, प्रकारण,

उल्लाम, उक्त्याम २ विभजन, खटन
३ मीमा, स्वत्ता ४ विवेक ५ निर्णय
६ विभाग, विभाजनम् ।

परिजन, सं पु (स) परिवार, कुटुंब, कुल
२ दाम अनुचर, वर्ग, परिवार ।

परिणत, वि (म) विकृत, रूपान्तर विकार
प्राप्त, सविकार २ पक्व ३ जीर्ण, जठराग्नी
पक्व ४ पुष्ट, प्रौढ ।

परिणय, सं पु (म) विवाह, दारपरिग्रह ।

परिणाम, सं पु (स) फल २ अन्त, पार,
उदय ३ विकार, विक्रिया, रूपान्तर-अवस्था
तर, प्राप्ति (स्त्री), दशापरिवर्तनम् ।

परिताप, सं पु (स) दुःख, क्लेश, व्यथा
२ सन्तप, क्षोभ २ अनुपश्राव, ताप ।

परितोष, सं पु (स) दुःखि (स्त्री), सन्तोष
२ हृष, मोद ।

परित्याग, सं पु (म) सर्वथा त्याग-वर्जन
उत्सर्ग २ निष्कामन, बहिष्करणम् ।

परित्राण, सं पु (म न) रक्षा, रक्षण, पालन
२ हस्तधारण, मारणोपहतस्य निवारणम् ।

परिधान, सं पु (स न) वस्त्र, वस्त्र, वासस
(न), परिच्छेद, नेपथ्य, वेश ४ २ वस्त्रे
आवेष्टन-आच्छादन, वस्त्रधारणम् ।

परिधि, सं स्त्री (स पु) परिणाह, परिवेश,
मंडल २ सूयचद्रसमीपमंडल, ३ प्राचीर,
वृत्ति (स्त्री) ४ नियतमार्ग ।

परिधेय, वि (स) धार्य, वसनीय, धारणीय,
परिधान्य ।

परिनिर्वाण, सं पु (स न) मुक्ति परि
निवृत्ति (स्त्री), मोक्ष ।

परिनिष्ठा, सं स्त्री (स) चरममीमा, परमा
वधि (पु), परावासा, पार रम् ।

परिनिष्ठित, वि (म) पारगत, क्षुत्पुण,
सुदस, विश्व ।

परिपक्व, वि (स) सम्यक्, सिद्ध-सकृत-पक्व
२ (जठरे) सुष्ठु, जीण पक्व परिणत ३ प्रौढ,
मुविकसित, पुष्ट ४ अनुभवित्, बहुदर्शन
५ कुशल, प्रबोध ।

परिपक्वता, सं स्त्री (स) दे 'परिपाव' ।

परिपाक, सं पु (स) (जठरे) पचन, पाचन
परणाम २ प्रौढता, पूणत ३ अनुभव,

बहुदर्शिता ४ नैपुण्य, प्रावीण्य ५ परिणाम,
फल ६ वर्म, विपाक फलम् ।

परिपाटी, सं स्त्री (म) अनु, क्रम, परिपाटि
(स्त्री), परपरा, आनुपूर्वी-व्यं २ शैली,
प्रणाली, विधि (पु) ३ रीति पद्धति (स्त्री),
सपदाय ।

परिपालन, सं पु (स न) रक्षण, पालन
२ रक्षा, धामम् ।

परिपूर्ण, वि (म) व्याप्त, सम्भूत, सपूर्ण, पूरित,
निभर २ अनिच्छत, मतापित, २ अवनिन,
समाप्त ।

परिभ(भा)व, सं पु (म) तिरस्कार, अप
अव-मान, अनादर ।

परिभाषा, सं स्त्री (स) लक्षण, निर्वचन,
निर्देश, परिच्छेद, प्रशक्ति, समयकार २ ग्रथ
मध्येपरिनिर्वाहार्थं संकेतमया विशेष ३ परि
कृतभाषण ४ निंदा ।

परिभूत, वि (स) पराजित २ तिरस्कृत ।

परिभ्रमण, सं पु (म न) पर्यटन, विारण
२ घूर्णन-जा ३ दे 'परिधि' ।

परिमल, सं पु (म) आमोद, मोरभ,
सुवास, सुगंध २ मैथुनम् ।

परिमाण, सं पु (म न) मान, प्रमाण,
प्रपरि, मिति (स्त्री) २ मात्रा, भार
३ विन्तार, स्वत्ता ४ परिधि (पु) ।

परिमाजन, सं पु (स न) परिधावन, परि
शोधन, परिष्करणम् ।

परिमाजित, वि (सं) परि धीत धावित,
परिष्कृत परिशोधित ।

परिमित, वि (स) परिच्छिन्न, सावधिव,
समीम, समर्थाद, दित, २ अरप, न्यून ।

परिरभ, सं पु (स) उपगृहण, परि
परिरभण, सं पु (स न) ध्वग, आलिंगनम् ।

परिवर्त, सं पु (म) विभा-वर्तन आकृति
(स्त्री), घूर्णन २ विनिमय, परिवृत्ति (स्त्री) ।

परिवर्तन, सं पु (म न) विवार, विवृत्ति
(स्त्री), विक्रिया, रूपान्तर, दशान्तर २ विनि
मय, परिदान, नैमय, व्यति(ती)हार,
परावर्त, विमय, वैमय ३ आवतन, घूर्णन
४ बाल युग-समप्ति (स्त्री) ।

—वर्तना, वि म, परिवृत् (प्रे), परिवर्तन

अन्यथा कृ २ प्रतिदा (जु उ अ) विनि
निमे (भ्वा आ अ) ।

—होना, क्रि अ, परिच्यु (भ्वा आ से),
विकृ (कर्म), विषयम (ि प से) २ व्यतिह
—प्रतिदा-विनिमे (कम) ।

परिवर्तित, वि (स) विकृत, रूपानरित,
दशानर प्राप्त २ विनिमित्त, व्यतिहृत विनि
मयेन प्राप्त ।

परिवर्द्धन, स पु (स न) परिवृद्धि (स्त्री),
वृ ष्ण, स्फूर्ति (स्त्री) ।

परिवर्द्धित, वि (स) विस्तृत विस्तीर्णं प्र
वि न्त, उपबित २ विशालीकृत वृद्धि भीत
अप र्दिन ।

परिवा, म स्त्री, दे 'प्रतिपदा' ।

परिवाद, म पु (स) निदा, अपवाद,
दोषकथन २ वीणावादनबलय (मित्राव) ।

परिवादक, स पु (स) निदक, अपवादक
दोषकथक २ अभियोजक (पु) अर्थेन
वादिन् ३ वीणावादक ।

परिवार, स पु (सं >) कुटुंब, पुत्रकुला
दीनि, गृहजन, परि(री)वार ।

—निरोधजन, स पु (स न) परिवार
कुटुम्ब-निगन्धन-निरोध, सन्नि-म-तान
निरोध ।

परिवाह, स पु (स) पलोच्छ्वास तीव्रप्लाव ।

परिवृत्त, वि (स) परिवर्द्धित, परिगत,
परिनिप्त २ अच्छवादित, आवृत ।

परिवृत्त, वि (स) 'परिवर्तित (२) २ परिवे
हित, परिगत ३ समाप्त ।

परिवेषण, स पु (स न) भोजनपात्रे भोजन
निधान २ परिधि (पु), वेष्टन ३ परि
वश प ।

परिवेषन, स पु (स न) सवलन, परिक्षेपण,
परिवाण २ अच्छादन, आवरण पुट,
वेष्टन, कश प ३ परिधि (पु) ।

परिव्रज्या, म स्त्री (स) सन्यास, वैराग्य
चतुर्थाश्रम २, परिभ्रमणम् ।

परिव्राजक, स पु (स) } भिक्षु,

परिव्राज्, म पु (म ब्राज्) } दे 'सन्यासी' ।

परिशिष्ट, म पु (स न) परिशेष, पूरण
उत्तरागत, शेषप्रथ स्थितम् । वि, अव शिष्ट
शेष, उद्धृत ।

परिशौलन, स पु (स न) गभीर-समनन,
अध्ययन पठन २ स्पर्शनम् ।

परिशीलित, वि (स) सम्यक्-शुद्ध, अधीत
पठित ।

परिशुद्ध, वि (स) पूर्ण, शुद्ध अमल-निर्दोष
पूत २ कारा-कारावास, मुक्त ।

परिशुद्धि, स स्त्री (स) पूर्णं शुद्धि (स्त्री)
पवित्रता निर्दोषता २ नारागार-मुक्ति (स्त्री) ।

परिशेष, स पु, (म) अत, समाप्ति (स्त्री),
दे 'परिशिष्ट' स पु तथा वि ।

परिशोधन, स पु (स न) परिमार्जन,
परिधावन, २ ऋण, शोधन शुद्धि (स्त्री) ।

परिश्रम, स पु (स) आप्र-यास, श्रम,
उद्यम, उद्योग प्र यत्न २ क्लम, क्लानि
श्राति क्लानि (स्त्री), खेद ।

—करना, क्रि अ, आयत् परिश्रम् (दि प
से), उद्यम् (भ्वा प अ), व्यन-सो
(दि प अ) ।

परिश्रमी, वि (म मिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन्,
लघम-उद्योग-परिश्रम, शील, आयसिन् ।

परिश्रात, वि (स) क्लान्त, म्लान, सिद्ध,
आयस्त ।

परिषद्, स स्त्री (स पद्) सभा, समाज,
समिति (स्त्री) २ जनसमूह ।

परिषद्, स पु (स) सदस्य, समासद् (पु) ।
२ राज-बल्लभ, अभ्यासद् ।

परिष्कार, स पु (म) शौच शुद्धि (स्त्री),
शुचिता, सत्कार २ निमलत्व, स्वच्छता
३ आभूषण, अलंकार ३ मदन, प्रसाधनम् ।

परिष्कृत, वि (स) मार्जित, धावित, धीत
२ मटित, प्रसाधित, अलंकृत ३ सस्कृत,
शोधित ।

परिसर्या, स स्त्री (स) सख्या, गणना
२ अर्थालंकारभेद (सा) ।

परिस्तान, स पु (फा) अप्सरोलोक
२ सुदरीग्यानम् ।

परिहरण, स पु (स न) बलाद् ग्रहण
अपहरण २ परि, त्याग, उत्सर्ग ३ दोषादीना
निवारण, निराकरणम् ।

परिहार, स पु (स) (दोषादे) निवारण,
निराकरण २ उपचार, उपाय ३ त्याग,
परिवनन ४ गोप्रचर, प्रचारभूमि (स्त्री)

५ युद्धाग्नि धन, विजितद्रव्य ६ (करार)
मोचन, वर्जन ७ प्रत्याख्यान, खटन ८ अवस्था,
अपमान ९ उपेक्षा ।

परिहार्य, वि (स) परिवर्जनीय, प्रोज्झनीय,
हेय, त्यक्तव्य ।

परि(री)हास, स पु (स) नर्मन् (न),
नर्मोन्नाय, प्रहसन, हास्य, विनोद, उक्ति
(स्त्री) भाषणम् ।

परी, स स्त्री (का) अप्सरस (स्त्री),
योगिनी, यक्षिणी, विवापरी २ सुदरी ।

—**ज्ञाद**, वि (का) अतिमुदर, परमशोभन ।

परीक्षक, स पु (स) प्रादिनक, अनुशोचक
परीक्षित (पु) २ विचारक निरूपण
३ समालोचक, ममीक्षक ।

परीक्षा, स स्त्री (स) पराक्षण, प्रश्न,
अनुयोग २ समालोचना, समीक्षा,
३ निरीक्षा, अवेशा, आलोचन, निरूपण
४ दिव्य ५ प्रयोग, अनुभव ।

परीक्षित, वि (स) नृपादिनाय, अभिग यु
पुन २ प्रदिनत, अनुयुक्त, हनपरीक्ष ३ समा
लोचित, समीक्षित ४ अनुभूत, प्रयुक्त ।

परप, वि (स) क्रूर, निर्दय, निर्भृण,
२ अशिव, कड ।

परे, क्रि वि (स पर) दूर, दूरे, दूरत, २
पृथक, बहिस् ३ तन्पु, तन, तदनन्तर ४
उपरि, उच्चै (सब अव्य) ।

—**परे** करना, सु परिद्र (भ्वा प अ), अप,
वृत् (सु), न संगम् (भ्वा आ अ) ।

परेवा, स पु (स) पारावन (दे 'वदतर') ।

परेशान, वि (का) उद्दिग्न्, ध्यञ्, ब्याहु २ ।

परेशानी, स स्त्री (का) उद्दिग्न्ता, व्याहुता ।

परोक्ष, वि (स) अदृश्य, अल्प्य, अवाधुष
२ युक्त, गूढ । स पु (म न) अनुपरिवर्ति
(स्त्री), अविद्यमानता ।

परोपकार, स पु (स) परोपवर्ति (स्त्री)
परहित, लोकसाहाय्य, उदारता ।

—**करना**, क्रि स, परापरार् कृ, परहित
सपद (प्रे) परमाहाय्य विधा (जु उ अ)
उपकृ ।

परोसना, क्रि म (स परिवेषण) मध्याग्नि
पात्रे स्वा (प्रे स्वापवति), परिवेष (प्रे) ।
सं पुं, परि(री)भय षणम् ।

परोसनेवाला, म पु, परिवेषक, परिवेष
(पु) ।

परोसा हुआ, वि, परिवेषित, पात्रे निहित ।

पर्चा, स पु, दे 'परचा' ।

पर्जन्य, मं पु (स) जलद, दे 'मघ' ।

पर्ण, स पु (सं न) दे 'पत्र' (२) २
साबुली नभगलता, दल, तावृल्म ।

—**लता**, स स्त्री (म) पुत्रागवल्ली, नागलता ।

—**शाला**, म स्त्री (स) पर्णकृती, उद्वज जम् ।

पर्णाद, म पु (म), पत्र पर्ण, अशन आहार
भक्ष्य (त्रिनिन्) २ कविनिर्देश ।

पर्णाशन, म पु (म) दे 'पर्णाद' ।

पर्णाहार, स पु (स) दे 'पर्णाद' ।

पर्ण, म पु (स पण्डित) वृक्ष, तर, पारप,
त्रिप पित्र ।

पर्त, म स्त्री, दे, 'परत' ।

पर्दा, म पु, दे 'परदा' ।

पर्यङ्क, स पु (म) पञ्च, अवसतिधरा,
पर्यन्तिता, परिवार ।

पर्यटन, स पु (म न) २ भ्रमण ।

पर्यंत, अव्य (स परन्त) यावत्, आ, पूर्वत
(उ, श्च्युपपैत, श्च्यु यावत्, आश्रुतो,
मरणपर्यन्तम्) ।

पर्याप्त, वि (सं) प्रभूत, प्रचुर, पूर्ण, यथेष्ट,
उपयुक्त, अल (गतुर्था के माध) २ समन्,
शक्त ।

पर्याय, म पु (स) तुल्यार्थममार्थ, शब्द
२ क्रम, परपरा, आनुपूर्व्यवी ३ अथालवार
नद ४ अवसर, उचितसमय ।

—**ग्राची**, वि (म विच) पर्यायवाचक, मम
समान तुल्य अर्थक ।

पर्व, म पु [स पर्वन् (न)] उत्सव,
उद्घन, उद्घण, धुण, मह २ धनपत्राणि
(चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णमा,
रविस्त्राति) ३ प्रथपरिन्देद, पत्र २,
४ मधि (पु) ग्रधि (पु) । मन्
ट, भाग ।

पर्वत, म पु (म) अद्रि गिरि (पु), नील,
धरणीशीलक, सानुमन् श्मन्मूर्तिरित्यग्नि
(पु), अरु, भूपर, लग, नग, कु
धरा अबनी मदी धरणी, भ धर, भूति
मूर् (पु) २ चय, राति (पु) ।

—**निदिनी** म स्त्री (म) द 'पावनी ।

—राज, स पु (स) दे 'हिमालय' ।
 —वासी, स पु (स सिन्) गिरि शैल-वासिन्,
 पर्वत [नी (स्त्री)], पर्वतीय [थी (स्त्री)] ।
 वि, पान्, पर्वतीय इ ।
 पर्वतीय, वि (स) सपर्वत, नगप्राय, शैल
 अद्रि, मय [मयी (स्त्री)]
 पलग, स पु, दे 'पर्यव' ।
 —पौश, म पु (हि + फा) पर्यक प्रच्छद् ।
 पल, स पु (स) विषयिन्, धनिकाया पष्टि
 तमी भाग पष्टिविपलात्मन काल (—२४
 सेकट) २ क्षण, सुहृत्, निमि (मे) प ।
 —भर मे या—मारते, मु, क्षणेन, क्षणात्,
 निमेष पल, मात्रेण ।
 पलक, म स्त्री (म पल) दे 'पल' २ नव
 नयन, छद् ।
 —मारना, त्रि अ निमील (भ्वा प मे),
 निमिष् (तु प से) ० चक्षुषा मन्वेत वा ।
 —मारते या जपन्ते, मु, दे 'पल भर मे' ।
 पलटन, म स्त्री (अ प्लटून), मैनिमाना
 दिशनी, मय, रत्न-गण ।
 पलटना, क्रि अ (रा प्रलोठन) नि प्रतिनि
 प्रत्या, वृत् (भ्वा आ से) प्रत्या, गम्
 (भ्वा प अ)-या (अ प अ) २ पर्यम्
 (कर्म), अधोमुखी अपरोक्षरीभू, परिक्र्वा ।
 ३ (दशा) परिवृत्त, अवस्थानर जन् (दि
 आ से) ४ परिपरा, वृत् । क्रिः स, ब
 पलटना' के प्रे रूप । म पु, नि प्रत्या,
 वर्तन, वि, पर्यास परिवतनम् ।
 पलटा, स पु (हि पलटना) नि प्रत्या, वृत्ति
 (स्त्री), दे 'पलटना' स पु २ प्रतिकल,
 कर्मविपाद ३ स्वरपरावृत्ति (मगोन) ४
 लपात्, उत्कल ५ व्यनिहार, विनिमय
 ६ परिवर्तन, (भाजनप्रेद) ७ दे 'बदला' ।
 पलटाना, क्रि म, दे 'लैगना' ।
 पलटा हुआ, वि, प्रतिनिवृत्त विपर्यय परि
 वृत्, परावृत्त ।
 पलटा, स पु (म पलट) तुला, फल
 फलवन् ।
 पलथी, स स्त्री (म पर्यत्त) स्वस्तिना
 सनम् ।
 —मारना, क्रि अ, स्वस्तिनामनेन उपविश
 (तु प अ) ।

पलना, क्रि अ (म पालन >) पाल पोष
 समृ (कर्म) २ परि, पुष (कर्म) प्यात्
 (भ्वा आ से), पुट-पीन (वि) भू ।
 पलनाना, क्रि प्रे, व 'पालना' के प्रे रूप ।
 पलस्तर, म पु (अ प्लास्टर) *पलस्तर,
 लेप, सुधा २ उपनाह, प्रलेपपट्टिका ।
 —करना, क्रि म, सुभया लिप (तु प अ)
 ० उपनह (दि प अ) ।
 —डीला होना या बिगडना, मु, अत्यत
 क्लिन्न पीड मिर (कर्म) ।
 पलाडु, स पु (स) दे, 'प्याज' ।
 पलाद, स पु (स) पलादन, पलाश,
 राक्षम । वि, माम, मक्षर आहारिन् ।
 पलान, म पु (स पल्ययन) पर्याण, पर्य
 यण, दे 'जीन' ।
 पलाश, म पु (म न) दे 'पुलाव' ।
 पलायक, म पु (म) वि-प्र-, पलायिन,
 युद्ध-विमुख, पराङ्मुख-स्वार्थिन् ।
 पलायन, म पु (स न) वि, द्रव, लद्
 राप्रति, द्रवि, चक्रम, श्यालिका, अय,
 क्रम गानम् ।
 पलायमान, वि (स) प्रवि, द्रवत्, अप,
 धावत् क्रामत्, परायत् (सव शनत्) ।
 पलाश, म पु (स) निशुक्, याञ्छिक,
 त्रिपण, मल्लक्ष्ण, पूतद् (पु), (स न)
 पन, पर्याम् ।
 पलाशी, म पु (स-शिन्) वृष, तरु २
 क्षीरवृक्ष (शूलर पीपल, बागद, महुआ इ०)
 ३ राक्षस । वि सपत्र, पत्रवत् २ भास
 भक्षक ।
 पलित, वि (स) वृद्ध, दे 'बूढा' २ पक्व,
 धवल, श्वेत, मित, (केश) । स पु (सं
 न) केशपाद ।
 पली, स स्त्री (स पलिघ >) *स्नेहनिष्का
 सनी, पक्षिना ।
 पलीता, सं पु (फा) भूतवशात्किञ्च वर्तिता
 वात्तं (स्त्री) २ दहनवात्तं (वि कोपावुल,
 सरथ २ शिपिगामिन्) ।
 पलीद, वि (फा) मलिन, मलीमस, अपवित्र
 २ नीच, खल ।
 पल्लेयन, म पु (स पारितरण >) (गोधू
 मादीना) शुष्य-चूर्ण, *रौटिकापरितरणम् ।
 —निकालना, क्रि म, पल्लेय (तु) ।

पलौठा, वि (हिं पडला) *प्रथमज (पलौठा-प्रथमजा) ।

पल्लव, स पु (स पु न) विम(श)लय य प्रवाल, नवपत्र, किम(नि)ल २ प्र, शाता विटप ३ नवपत्रस्तव ।

पल्लवित, वि (म) सपल्लव, मन्मिन्मलय २ तत्र विस्तृत ३ रोमांचित ।

पल्ला, कि वि (स पर या परि >) दूर, दूरे, दूरत । स खरे, दूरता, विप्रकष ।

पल्ला पल्ल, म पु (स पटाञ्जल) वननात, वस्, अचल २ पार्थे अधिरारे ३ दिशा ।

—शुडाना, सु, आत्मान उदह (स्वा प अ) मुच (मे), अनिष्ट त्यज (भ्वा प अ) अपात (दि प से) ।

—पलारिना, सु, दाच (भ्वा आ से) ।

पल्ले पडना, मु, लभ् अधिगम् (क्म) ।

पल्ला, स पु, दे 'पलटा' ।

पल्ली, स स्त्री (म) ग्रामक, ग्रामदिता २ ग्राम ३ कुटी ४ गृहगोथिका ।

पवन, म पु (स) अर्जक, वात, दे 'वायु' ।

—चह्नी, न स्त्री, वायुपेपणी, *पवनचक्री ।

—चक्र, म पु (म न) वातचक्र, चक्रवात ।

—पुन, स पु (स) हनुमत् २ भीमसेन ।

पवनाशन, स पु (स) पवनाश, सर्प ।

पवि, म पु (स) मत्र अ, कुलिश, अशनि (पु स्त्री) ।

पवित्र, वि (स) वि, शुद्ध शुचि, स्वच्छ, विशद, निर्मल २ पुण्य, निष्पाप, अनघ, अश-मघ ।

पवित्रता, स स्त्री (स) शुचिता, शौच, वि, शुद्धि (स्त्री), शुद्धता २ स्वच्छता, वैशय, निर्मलता ३ पुण्यता, निष्पापता ।

पवित्रामा, वि [स-स्मन् (पु)] विमल शुद्ध-आत्मन् (पु), शुद्ध, मति हृदय ।

पवित्री, म स्त्री (म पवित्र) पवित्रक, पुशाश्लीयवम् ।

पशम, स स्त्री (का पशम) उत्तमोर्णा, मूर्णा २ वपस्थलोमन् (न) ३ अतितुच्छवरतु (न) ।

पशमीना, स पु (का पशमीनद्) दे 'पशम' २ उत्तमोर्णा, वस्त्र पट ।

पशु, स पु (स) लोमलाग्लवज्जीव (सिंह-वाधगोमहिषादय), ऋतु (पु), सुता का, मृग २ प्राणिन्, शिवमात्रम् ।

—पति, स पु (म) शिव २ पशुप्रभु ।

—पल्ल, म पु (स) पशु गो, रक्षक पालक ।

—राज, स पु (म) मृगेन्द्र, सिंह ।

पशुता, स स्त्री (स) पशुत्व, पशु, भव धर्म २ मौर्त्य, औद्भत्य, जाड्यम् ।

पशुत्व, म पु (स न) दे 'पशुता' ।

पश्वान्, अव्य (स) तत, तदनन्तर, तत्पश्चात्, तदनु, तत्र, पर ऊर्ध्वम् ।

पश्चात्ताप, म पु (स) अनु, ताप शय शोक, पापक्षुब्धन, खेद, विप्रतीसार ।

—करना, कि, अ, दे 'पञ्जाना' ।

पश्चिम, स पु (स पश्चिमा) प्रतीची, वारुणी, पश्चिम, दिशा आशा । वि, पश्चात् उत्पन्न, २ अत्य, अंतिम ।

पश्चिमा, स स्त्री (स) दे 'पश्चिम' ।

पश्चिमी, वि (म पश्चिमा >) प्रतीच्य, याश्चात्त्व, पश्चिमाद्यासंबन्धिन् ।

पश्चिमोत्तर, स पु (स पश्चिमोत्तरा) उत्तर यन्मिमा वायवी । वि, वायव, वायुदिवस्थ ।

पश्मो, म स्त्री (देश) पश्चिमोत्तरसीमाप्रा तस्य भाषाविशेष ।

पश्यती, स स्त्री (स) वेश्या, गणिका, क्षुद्रा, रूपाश्रीका २ वाणीभेद, वायुमयोगात् नाभिज शब्द ।

पसद्, स स्त्री (का) अभि, रुचि (स्त्री), मनोवध । वि, मनोनीन, रुचिर, स-अभि, मन, प्रिय ।

—करना, कच् (भ्वा आ से चतुर्थी के साथ) अभि प्रति, नद् (भ्वा प से) अनुमुद् (भ्वा आ से) २ दे 'चुनना' ।

पसदीदा, वि (का) अभीष्ट, वृत्त, रुचिर, रोगक, उत्तम ।

पस, स पु (अ), पूष-य, क्षतत्र, मलज, कुणपम् ।

पस, अव्य (का) तदनु, तत्पश्चात्, तदनन्तरम् ।

—(सो) पेश, पु मिथ, भ्वाज, उत्तम ।

पसहना, कि अ (सं प्रमरण) प्रस (भ्वा प अ) प्रवित्त (कर्म) २ विस्तृ (कर्म), वृष् (भ्वा आ से) ३ करचरणान् प्रमावर्त्त दे (अ आ से) ।

पसली, म स्त्री (म पशुवा) पाश्चात्थि (न), पार्श्वम् ।

—का रोग, स पु, शसनक ।
 हट्टी—तोडना, मु, भृशं तद् (जु) ।
 पसाना, कि स (स प्रधाविण), मठ प्रसू (प्रे) २ अतिरिक्तजलाश अवपत (प्रे) ।
 पसारना, स पु, दे 'प्रसार' ।
 पसारना, कि स (स प्रसारण) व 'पसरना' के प्रे रूप । दे 'फैलाना' ।
 पराव, स प (स प्रसाव >) प्रसव, पठ-ह, दे 'भाह' ।
 पसीजना, कि अ (स प्रस्वेदन) (शनै) शर्गल (स्वा प से) मु (स्वा प अ) प्रस्तु (अ प से) २ दयार्द्र-वस्त्रादि (वि) मू, अनुकप-द्वय (स्वा आ से) ।
 पसीना, स पु (हि पसीजना >) प्र, स्वेद, घर्म, घम-भ्वेद, उदक-जल-विदु (पु) अम वारि (न) ।
 —आना, कि अ, प्र, स्विद् (दि प अ) स्वेद सृ-निस्त्य (स्वा प अ) ।
 पसोपेश, स पु (का) विरि-गिल्ना, विनर्क, सशय आ परि-वि, शवा २ परिणाम, हानिलाभी ।
 —करना, कि अ, दोलायते (ना धा) विलव-वित्रलप् (स्वा आ से) ।
 पस्त, वि (फा) पराश्रित, विणित २ परि श्राव, क्लान्त ।
 —वृद्ध, वि (फा) सामन, खव ।
 —द्विम्बत, वि (का) माल, वानर ।
 पहचान, स स्त्री (स परिचयन वा प्रत्य निश्चान (प्रति, अभिज्ञा-अभिज्ञान, २ विवेक, विचारणया, परिच्छेद २ लक्षण, धिक् ४ परिषद, परि, श्रानम् ।
 पहचानना, कि म (हि पहचान) प्रति, अभिज्ञा (क उ अ) अनुस्मृ (स्वा प अ) परिच्छिद् (र प अ), सविद् (अ प से) २ विच् (जु उ अ), विशिप् (क प अ), परिच्छिद् ३ अव गम् शा (क उ अ), बुध (स्वा प से), विद् (अ प से) । स पु, दे 'पहचान' ।
 पहचाननेवाला, स पु, प्रति, अभिज्ञातृ (पु), परिच्छेदक, विवेकिन्, माल, वीद् (पु) ।
 पहचाना हुआ, वि, विविक, परिच्छिन्न, प्रति, अभिज्ञात, बुद्ध, विदित ।

पह(हि)नना, कि स (स परिधान) परिधा (जु उ अ), वस् (अ आ से), धृ (स्वा प अ, चु), भृ (जु उ अ) ।
 स पु, परिधान, ध(धा)रण, भरण, वसनम् ।
 पहनने योग्य, वि, परिधेय, धार्य, वसनीय ।
 पहननेवाला, स पु, परि, धावृ (पु) धायक, धर्तु-धारयितृ (पु) ।
 पहनवाना, कि प्रे } व 'पहनना'
 पहनाना, कि स } के प्रे रूप ।
 पहनावा, स पु (हि पहनना) वेश प, परिधान वस्त्राभिवसनान (न बहु), नेपथ्य, परिच्छद ।
 पहना हुआ, वि, परिहित, धृ, धारित, वसित इ ।
 पहर, स पु (म प्रहर) वाम, होरावृत्त-श्री २ बाल युग, समय ।
 पहरना, कि म दे 'पहनना' ।
 पहरा, स पु (हि पहर) रक्षा, रक्षण, नाग ग्ण, निरूपण, अनेक्षण-क्षा, योवन, युति (स्त्री) २ रक्षक, रथिन्, रक्षापुरव, रथि वर्ग, प्रहरिन्, वैवोधिक ३ रक्षणकाल, प्रहर ४ प्रहरि, अरण पयेटन ५ प्रहरिपरिवर्तन इ प्रहरिघात ।
 —देना, कि अ, रथायै-नागृ (अ प से) परि, अन् अद् (स्वा प से) ।
 पहरेदार, स पु (हि + फा) दे 'पहरा' (२) ।
 पहरावनी, स स्त्री (हि पहरना) २ *परिधा पनी, *परितोपवेप ।
 पहरी, पहरुआ, पहरु, स पु दे 'पहरा' (२) ।
 परल, स स्त्री (हि पहला) उपक्रम, प्र, आरम्भ २ अनि-आ, क्रम, प्रथमापारार ।
 पहलवान, स पु (फा) गज, बाहु, शीघ्र-वीरवृ (पु)-वीरिचिन् २ वृद्धाग, वज्रदेह ।
 पहलवानों, स स्त्री (फा) मज्ज-नाड, सुद्धः ।
 पह(हि)ला, वि (स प्रथम) दे 'प्रथम' ।
 पहलू, स पु (फा) पक्ष, पार्श्व-र्ष (सव अर्थो मे) २ पञ्च पार्ष्व, भाग, कृत्वाधोभाग ३ विचायविषयस्य अव-भाग, विशेष ४ गुडाशय ५ व्यग्याय ।
 —चचाना, मु, सप्तद परिह (स्वा प अ) ।
 —में बैठना, मु, अतिमगीप-ये उपविश (तु प अ)-निषद (स्वा प अ) ।

पहले, अन्य (हि पहला) पूर्व, प्रथम, आदी, प्राक, आरम्भे २ पूर्व, पुरा, पूर्वप्रानोन, वाले ।

—पहल, अन्व, सर्वप्रथम प्रथमवारे, आदी ।

पहाक, म पु (स पापाण >) दे 'पवत' (१०) ३ दुस्माभ्य-दुप्वर, कार्यम् ।

पहाडा, म पु (स पत्तार >) गुणनस्वी ।

पहाडिया, वि (हि पहाड) दे 'पवतवासी' ।

पहाडी, स स्त्री (हि पहाड) पवतव, लु गिरि (पु) २ वल्मीर क, वामलर ।

पहिया, म पु (न परिधि) चक्र, रथाग्रम् ।

पहिलेठा, वि, दे 'पलेठा' ।

पहुँच, स स्त्री (म प्रभूद >) उपमर्षण, अभि उप, नाम प्रवश २ गनिमीमा ३ प्राप्ति (स्त्री), प्राप्तिमूचना, अभिशतामीमा, परि चय ४ आगमन, उपस्थिति (स्त्री) ।

पहुँचना, कि अ (हि पहुँच) आ, गम्-मद् (भ्वा प अ) समा मद् प्र-म आप (स्वा प अ), प्रपद् (दि आ अ) २ विस्तृ (वम) ३ प्रविश (तु प अ) ४ लभ् प्राप् (वम) । स स्त्री, दे 'पहुँच' ।

पहुँचनवाला, स पु, आगत उपस्थान (पु), लभप्रवेश, सहायक ।

पहुँचा, स पु, दे 'कलाह' ।

पहुँचाना, वि स, व 'पहुँचना' के प्रे रूप ।

पहुँचा हुआ, वि, आगत, उपस्थित, प्राप्त, प्रपन्न, प्रविष्ट, लभ, अधिगत, निद्र ।

पहुँची, स स्त्री (हि पहुँचा) आवापण, गणि बन्धवक ।

पहुनाई, स स्त्री (हि पाहुना) प्रातुग अतिथि, सेवा स्त्वार । २ अतिथित्व, प्रातुगता ।

पहेली, स स्त्री [स प्रहेलीलि (स्त्री)] प्रहेलिदा मदनद्वी, प्रवहो लि (स्त्री) - लिवा २ ममस्या, गूढार्थव्यापार ।

पहवी, म स्त्री (म पहव >) पारसीव देशस्थ प्राचीन भाषा, पहवी ।

पाँच, वि (स पञ्च) । म पु, उक्ता मरया तद्व (५) २ ।

—भौतिक, वि (स) पनभूर्तर्नामत (शरी रादि) ।

पाँचों उँगलियों की मं होना, मु, सर्वथा प्र उपरि (वग) मृष्ट (दि प मे) ।

पाँचवों, वि (हि पाँच) पचम-मयी (पु न स्त्री) ।

पाचाल, म पु (स) पचाल । वि पचाल देशोद्भव ।

पाचाली, म स्त्री (स) शालभजीतिका, पुत्रिका, पचालिका २ रीतिविशेष (सा) ३ द्रौपदी, कृष्णा, यज्ञसेनी ।

पाडव, स पु (स) पाडुनन्दन, पच पाटवा ।

पाडिय, स पु (स न) बुद्धिधी, मत्त, व्युत्पत्ति (स्त्री), विद्वत्ता, विद्वत्त्व, ध्यान, प्राज्ञता ।

पाडु, म पु (म) नृपविशेष २ मितपोत-वर्ण, हरिण, पाँ(डु)र ३ रक्तपीतवर्ण ४ श्वेतवर्ण ५ दे 'पाडुरोग' ।

—रोग, स पु (म) वामल-ना, पाडु (पु) ।

पाडुर, वि (स) मितपोतवर्ण, पाडु २ पीन ३ शुनल । स न (स) शिखरोग । स पु (न) दे 'पाडुरोग' ।

पाडुलिपि, स स्त्री (म) पाडुलप, शोध नीदलेप ।

पाडे, } स पु (स पडित) द्विज
पाडेय, } कायस्थ, मेद ३ प्राज्ञ, विश् (पु) ४ शिक्षक, अध्यापक ५ पाचक, छद ।

पाँत, पाँति, स स्त्री, दे 'पक्ति' ।

पाथ, स पु (स) पथिव, यात्रिन् २ प्रना मिन् ३ विद्योगिन् ४ भातु ।

—निवास, स पु (स) पाथशाला, यात्रिव गृहम्, धर्मशाला ।

पाँव, स पु (स पाद) पद, चरण ण, अग्नि (पु) २ जघा ३ मूल, आधार, उपष्टम्भ ४ धीर्ष, स्थैर्यम् ।

—का अगृष्टा स पु, पादागुष्ठ ।

—का सोना, स पु, पादहप (रोग) ।

—की अँगुली, म स्त्री, पादागुष्ठी लि (स्त्री) ।

—अङ्गाना, मु, दे 'दाग अटाना' ।

—उत्पन्नता, मु, पराति (वम), पलाय (भ्वा आ मे) ।

—उटाना, मु, निष्क्रम (भ्वा प से) २ मत्वर चन् (भ्वा प मे) ।

—जमाना, मु, निदन् दृढ स्था (भ्वा प अ) ।

—तले की मिट्टी निकल जाना, मु, जवी
निपटरी भू, विस्मयेन उपहन (कर्म) ।
—पटना, मु, चरणयो अवपद (भ्वा प मे),
अतिनमनया याच् (भ्वा आ से) ।
—पसारना, मु प्रसृते प्रसृ (प्रे) सुत्त स्वप
(अ प अ) २ दे 'मरत' ।
—पाँव, मु, पादचारी भूत्वा, पद्म बामेव चलत्
(शर्त्त) ।
—पूचना, मु चरणौ चुच् (भ्वा प से)—
—सेव (भ्वा आ से) ।
—फटना, मु, पाशौ शीतेन स्पुट् (त प से) ।
—हूँक-हूँक कर रखना, मु, नवधान प्रसृप
(भ्वा आ से) कार्येषु ।
—फैला कर सोना, मु निर्दिचत स्वप (अ
प अ) ।
—भारी होना, मु, गर्भे आधा (जु उ अ)—
पु (जु) ।
दबे—आना, मु, निमूल भया (अ प अ) ।
धरती पर—न रखना, मु, नितरा इप्
(दि प अ), गव (भ्वा प से) ।
पाँवड़ा, म पु (हि पाँव) पादचरान्तरणम् ।
पाँवड़ी, म स्त्री (हि पाँव) दे 'पनाज' तथा
'जुता' ।
—पादा (स) न, वि (स) दृषक, कलक
जनक ।
पाशु, म स्त्री (स पु) पाशु (पु), घृत्नी
लि (स्त्री), रस (न) ।
पाशुल, वि (स) रेणु-द्विपित रूक्ष, धूम्रधूमर ।
पाँसा, स पु (स पाशक) अक्ष, देवन,
सार, शार ।
—उलटना, मु, यत्नो विपरीतकलो जन् (दि
आ से) ।
पा, स पु (क्रा) पाद, पर, चाण म् ।
—अंदाज, स पु पद-पद, धषण प्रोत्पन्नम् ।
पाइभोरिया, म पु (अ) दन्तदूषम् ।
पाई, स स्त्री (स पाद >) पादिका २
चतुर्थांशसुत्रिका ऊर्ध्वरेखा (उ षा-भवा
चार) ३ आकारमात्रा (१) ४ पूणविराम
चिह्नम् (१) ।
पाउड, म पु (अ) निष्क, दीनार २ नौण्ड,
अद्भुतारमको द्वैतीय आंग्लनोलभेद ।

पाउडर, म पु (अ) पिष्ट, क्षोद, चूर्ण २
पक्वसक, पिष्टातक, पिष्टाप ।
पाक, स प (म) पचन, पाचन, आनि
(स्त्री), अतिश्रयण, पना, रपन (सात
प्रकार का पाक—
भर्जन तन्म स्वेद पचन वचपन तथा ।
ता'रं पुटपक्वश्च पाक मपविधौ मत ॥)
२ पक्व-सिद्ध, अन्न ३ परिणिनि (स्त्री) ४
बोधधमेद ५ जठरे आहारपचन ६ दैत्य
विशेष ।
—शाला, म स्त्री (स) महानस-सम् ।
—शास्त्र, म प (म) दे 'इन्द्र' ।
पाक, वि (क्रा) पवित्र, वि शुद्ध २, निष्पाप,
निष्कलमप ३ मत्तम् ।
—दामन, वि (क्रा) परिग्रहा, मनी ।
—साक, वि (क्रा+अ) स्वच्छ, निमल ।
पाकेट, स पु (अ) दे 'नेत्र' ।
पाक्षिक, वि (स) अद्भुतानिक, मासादिक
२ पक्षपादिन् ।
पाखड, स पु (स पापड-ड) दम्भ, दाभि
कता, छान्निता, आयरूपता, कपटधर्म,
वुट्ट हिा, वृत्ति (स्त्री) वाप्यम् ।
पाखडी, वि (स पापडिन्) पापड-डक,
दभिन्, दाभिक कपटिन्, कापटिक, आर्य,
रूप विगिन्, छत्र-वपट, वशिन् ।
पाख, म पु (स पक्ष) दे 'पखतारा' ।
पाखर, स स्त्री (म प्रखर) प्रखर, अश्वनाज,
सहाह ।
पाखा (पा) न, म पु (म पापाण)
प्रमत्ता शिला, अश्मन्, भावन् (पु) ।
पाखाना, स पु (क्रा) शौच-रूप न्थान
२ उच्चार, गूथ-थ, मन् च, पुरोध, विष
(स्त्री) विष्ठा, शकुन् (न), समलम् ।
—निखलना, मु, नितरा भा (जु प अ),
वसु (दि प से) ।
पाखाने जाना, मु, शौचरूप या (अ प अ)
पुरोध उत्सृज (तु प अ) ।
पाग, म स्त्री (हि पा) दे 'पगड़ी' ।
पाग, म पु (म पाक >) मधुमर्कटा,—
कनाथ २ मधुक्वाथपक्वकल्मसीष वा ।
पागना, कि स (म पाग >) गुड-निता,
रमे निमस्ज (प्रे) ।
पागल, स पु (देश) उन्मत्त, वातुल,

अन्व २ मन्व, मन्वक ३ रूपञ्जिनम् ४ उद्वन्धनपट्ट टम् ५ कुडयमोणपट्ट टम् ।

पाधि, स पु (म) कर हस्त ।

—प्रहण, स पु (म न) उद्वह, दे 'विवाह' ।

—ग्राहक, म पु (स) भर्तृ (पु), दे पति ।

पाणिनि, स पु (म) अष्टाध्यायीप्रणेता वैयाकरणविशेष ।

पात^१, स पु (स पत्र) दे 'पत्ता' ।

पात^२, स पु (म) अध नि, पानन, स्वमन, च्युनि (स्त्री) २ पानन, ३ वि नाश ध्वम ४ मृत्यु (पु), अधोनयनम् ।

पातक, स पु (स न) दे 'पाप' ।

पातकी, (म किन्) दे 'पापी' ।

पाताल, स प (स) अधो भुवन लोक, नागलोक ० विहर, बिल ३ भुवनविशेष ।

पातित्रत, स पु (म न) पातित्रत्य-समीपम् ।

पानुर, स स्त्री (स पातली >) दे 'वेश्या' ।

पात्र, स पु (म न) भाजन, अमत्र, भाट कोश शी, कोष शी, कोषि(शि)का पात्री २ नट, अभिनेतृ (पु) ३ तीरद्वयानर (हि पात्र) ४ रानमित्रिण ५ सुवादीनि यणोपकरणानि ६ *नाट्यस्य कथापुरष (नायकादि) ७ सथात्र, गुणास्पदम् । वि, योग्य, उचिन, अहं ।

पात्रता, म स्त्री (म) विद्य तपस्याचारयुक्ता, पात्रत्व, योग्यता, अहंता, गुण ।

पाथ^१, म पु (म पाथ) पाथम् (न), नन्म् ।

पाथ^२, म पु (स पथ) माग, अध्वन् (पु) ।

पाथना, कि स (हि थापना) गोमयाजि र्न् (जु)-निर्मा (जु आ अ) ० तट (जु) ।

पाथय, स पु (स न) स(श)वज् पथि उपभोक्तव्य द्रव्यम् ।

पाथोधि, म पु (म) सागर ।

पाद^१, म पु (म) पद, चण-ण, पद (पु), अहि-अत्रि (पु) २ मन्त्रलोकादीना चरण ३ चतुर्भाग ४ अथभाग ५ गिरिवृक्षादीना मूलम् ।

—टीका, म स्त्री (म) पृष्ठतल पद, पिण्णी ।

—प्राण, सं पु (म न) दे 'पिण्डुका' ।

—पीठ, म पु (म ने) पदासनम् ।

—प्रहार, स पु (म) चरणाधान, दे 'ठोकर' ।

पाद^२, म प (म पर्द) अपान अधो, वायु (पु) ।

—भारना, कि अ, दे 'पादना' ।

पादना, कि अ (मं पददन) पदद् (भ्वा आ मे), अपानवायु उत्सृज (लु प अ) ।

पादप, म पु (स) तरु, दे 'वृक्ष' ।

पादरी, म पु (पुर्त पैरे) विन्तमन, पुरो हित उपदेशक ।

पादविक, म पु (स) पथिक, पाथ, यात्रिन् ।

पादागुली, स स्त्री (स) } दे 'पाँव' के

पादागुल, म प (स) } नीचे ।

पादात, स पु (म) पादपद चरण, अग्र अग्रभाग २ पद्य-चरण-वसानम् (म०) ।

पादुका, स स्त्री (स) पादू (स्त्री), पाद, त्रयाण पादरभिजा, कौपी । २ दे 'जूना' तथा 'वृट' ।

पाद्य, स पु (म न) पादप्रक्षालनजलम् ।

पाद्या, स पु (स उपाध्याय) गुरु (पु), आचार्य, शिक्षक २ पठित, विद्वान् (पु) ।

पान^१, म प (स न) पीनि (स्त्री), आच मन, धवन, द्रवद्रव्यस्य गलाध करण ० मद्य सुरा, पान ३ पेयद्रव्य ४ मद्य ५ जलम् ।

—करना, कि स, दे 'पीना' ।

—पात्र, म पु (म न) पान, चषक, मरक, पानभाजम् ।

पान^२, म पु (म पर्ण) तावूली, तावूलवती, नाग, न्यता-वल्ली २ तावूल, पर्ण, नागवल्ली दल ३ क्रीडापत्ररगमेद ४ पत्र, किमलय ।

—गोष्ठी, स स्त्री (स) आपान, मद्यपान, चक्रमभा ।

—टान, म पु (हि+फा) *पर्णपान, तावूल करक ।

पानक, म पु (सं न) *मधुराम्लपेयम् ।

पाना, कि म (मं प्रापण) प्र, आप (स्ता उ अ), लभ (भ्वा आ अ), विद् (लु उ वे), समा धिद् (प्रे) आपनि पद् (दि आ अ) अधिगम्, आदा (जु आ अ), प्रद् (क्क प से), ० (सुरादि) अनुभू, मुन् (रु आ अ) ३ बुध् (भ्वा उ मे)-विद् (अ प मे) ४ तुल्य-सदृश (वि) भू

५ ग्राह (भ्वा प मे) ६ सट् (भ्वा आ से) । म पु, प्राण, लब्ध (स्त्री), अधिगमन, आदान, अनुभव, बोध, भुक्ति इ ।
 पानेवाला, म पु, प्राण, अभिगृ-आदात् प्रकीट (पु) इ ।
 पाने योग्य, वि, प्राप्त्व लभ्य, अदेय, ग्राह्य इ
 पाया हुआ, वि, प्राप्त, अधिगत, लब्ध गृहीत इ ।
 पानिप, मं पुं (हि पानी) घृति कृति (स्त्री) = दे 'पानी' ।
 पानी, स पु (म पानीय) वारि-अभय (न), द 'नल' २ कति घृति (स्त्री) ३ प्रतिष्ठा, समान ४ वृष्टि (स्त्री) ५ पीकप, बीज ७ वानवपादिसामग्री, *नल्लवातु (न) ७ राम ८ शीतलवस्तु (न) ० समय, अवसर १० परिस्थिति (स्त्री) ।
 —डार, वि (हि + का) वानिमन्, भासुर २ मान्य ३ आतमाभिमानिन् ।
 —देवा, स पु, तर्पण, पिण्ड २ पुत्र ३ स्वर्गीय ।
 —फल, सं पु, दे 'मिषाना' ।
 —से डरना, स पुं, आत्कं, नल, आतन मराम ।
 —कर देना, मु, क्रोध अपनी (भ्वा प अ) शम् (प्रे, शमयति) ।
 —का तुलतुला, मु, क्षणगंयुर, अमार, नश्वर ।
 —की तरफ बहाना, मु, अपभ्यय् (तु), अमित व्यय, मुभा धे (प्रे, भवति) ।
 —के मोल, मु, स्वप्नमूचन, अत्यपारण ।
 —देना, मु, (पितृन्) उदान वृष् (प्रे) २ उरर् पत् (प्रे) निषिर् (तु प अ) ।
 —पढ़ना, मु, वृष् (भ्वा प मे) ।
 —पानी होना, मु, अनीव ल्-लम्न् (तु आ मे) ।
 —पी पी कर कोसना, मु निरा प्राप्नु-श (भ्वा प अ)-अभिभम (भ्वा प मे) ।
 —भरना, मु, (तुलनादा) तुल (वि) प्रतीयते ।
 —में आग लगाना, मु, गीग वल्ह पुन वजीद् (प्रे)-नवीह ।
 —लगाना, मु, प्रतिवृत्तल्लवायुनाऽप्यस्य (वि) म् ।

—ना पतला, मु, पलरूप, जलबहुल, जल विरल ।
 अत्र वा—, मं पु, आर्द्रकडलम् ।
 पारा—, स पु, क्षारत्वम् ।
 पानीय, वि (न) पेय, पालय्य । सं पु (म (न) द 'नल' ।
 पाप, मं पुं (मं न) अधर्म, पाप्मन् (पुं) पाप, भिन्नप, वानप, वृत्तिन, अर्थ, अङ्ग, एनम् (न), दुरितं, दुष्टन, पातक, शल्य २ अपराध, दोष इ वच ४ पापपुष्टि (स्त्री) ५ अनिष्ट, अहितम् ।
 —कटना, क्रि अ, पापभ्य मुच् (कर्म) पाप नश् (दि प वे) ।
 —करना, क्रि म, पापं कृ अथवा आत् (भ्वा प से) २ अपराध (दि म्वा प अ) ।
 —नाशी, वि (मं शिन्) पापघ्न, अयनाशन, पापहर ।
 —बुद्धि, वि (मं) पाप कु डर्, मति-बुद्धि ।
 —रोग, मं पुं (सं) रनिचरोल (प्रमेहादि) ।
 —लोक, स पु (मं) दे 'नर' ।
 पापक, वि (सं) दुर्जन, दुष्ट, पापिन् । स पु, दुर्जन, पाप, पापिन् २ कुकृत्य, पापम् ।
 पापद, मं पु (मं पपट) मापयोनि, शिरीष, वैदल्पिष्ठम् । वि, तनु २ शुष्य ।
 —बेलना, मु, धीरं परिश्रम (दि प मे) २ दुर्त जीव् (भ्वा प म) ।
 पापदा, म पुं (मं पपट) अर, वर, प्रगथ, मुक्ति २ द 'पितपापदा' ।
 —घार, म पुं (मं पपट) *गन्धीघार ।
 पापर, मं पुं (सं) दक्षि, अक्रियन्, निर्धन ।
 पापाचार, मं पु (मं) दुराचार, दुर्जनम् ।
 पापाम्ना, वि (मं-शान्) दे 'पापी' ।
 पापिन नी, वि स्त्री (मं) पापिनी, दुष्टा, दुराचरिणी, पाप-करी-कारिणी, एनम्बिनी-२ अपराधिनी, दोषिणी ।
 पापिष्ठ, वि, (ली) पाप (पि ण, दृष्टतम [पापिष्ठा (स्त्री) = पापतमा, दुष्टतमा] ।
 पापी, वि (मं शिन्) पापिन्, पाप, पाप कर, पु पाप-दुष्ट-दुष्ट, नर्नद, एनम्बिन्, विधि पित्, पाप, निरल-बुद्धिमति, पापहृन् पापात्मन् २ अपरापिन्, दोषिन् ।

पापोश, स स्त्री (क) दे 'जूता' ।
 पायद्, वि (का) णि, बद्ध, परतन्त्र, निरुद्ध
 सयत्, नियन्त्रित ।
 पायद्दी, सं स्त्री (का) बध्, संभन, निय
 वर्णना २ विवदाता, बाधना ।
 पाम, सं पु (मं पामन्) पामा, विनिर्दिना,
 सञ्ज—बहुनि (स्त्री) ।
 —पन्, सं पु, (म) पामारि, गन्धक
 सौमन्धिर ।
 पामन, वि (सं) पाप पामा-सञ्ज् पीडित प्रसन्न ।
 पामर, वि (स) दुष्ट राल, दुष्टत २ नीच
 अधम ३ मूर्ख, जट ।
 पाम्माल, वि (का) पदा णि, पदरहित
 पादशुष्का, अमम-मोदित २ वि, ध्वस्त-नष्ट ।
 पार्यैचा, स पु (का) *पादायामन्वेया ।
 पार्यैता, स पुं (हि पार्यै) सटनया *पद्मान,
 *पदनान ।
 पार्यैती, सं स्त्री, दे 'पार्यैता' ।
 पार्यैदास, सं पु (का) *पादपर्यगन् ।
 पाय, सं पु (सं पद) दे 'पर्व' ।
 पायदाना, स पु, दे 'पारताना' ।
 पायजामा, स पु दे 'पाजामा' ।
 पायजेय, स स्त्री, दे 'पाजेव' ।
 पायदार, वि (क) विर, रथाधि, दृढ ।
 पायदारी, सं स्त्री (का) निररथायिता, दृढता ।
 पायमाल, वि (का) दे 'पामाल' ।
 पायल, स स्त्री (हि पाय) दे 'पाजेव'
 २ वशति श्रेणी ३ शीपयामिनी हस्तिनी ।
 पायस, स पु (स पु न) परमान्न, दे
 'सीर' २ भीराम, दे 'तारपीन' ।
 पाया, सं पु (सं पाद) (पर्यैगादीनां)
 पाद, जपा, टगा, २ स्तम्भ, रथूपा, रथाणु
 (पु) ३ प, पदवी वि (स्त्री), स्थिति
 (स्त्री) ४ सोपात, पथ-मार्ग, परम्परा ।
 पायु, सं पु (म) दे 'शुदा' ।
 पारगत, वि (म) पारग, परतीर पाद-गत,
 २ शीघ्रगन्, अधीनिर्, सुविद्वान्, शाल्व
 मर्मज्ञ ।
 पार, सं पु (सं पु न) पर, तीर तट
 २ अ यत्र तट ३ पर अभिमुखा पार्थ दिग्भा
 ४ अत्र, पर्यैत, सीमा ५ गर्ल, अधोभाग ।
 अभ्य, पारि, दूरे, अग्रे, परत ।

—करना, नि स, स-उद, नृ (भ्वा प से),
 उद, रूप (भ्वा आ से, नु), अति ३
 (अ प अ), अतिवृत्त (भ्वा प से) ।
 २ ममाप (स्वा उ अ) सपूर (नु),
 निर्द्वन्द्व (प्रे) दे 'वीथना' ।
 —दशांक, वि (स) स्वच्छ, विरलभवात्,
 भेद ।
 —दर्शी, वि (मं शिन्) दूरदर्शिन, भविष्य
 दासिन् ।
 —पाना, मु, सम्भय् कुष (भ्वा प से),
 आपत या (अ प अ) अभवा सपूर (नु) ।
 आर—, सं पु पारापार, पारावारन् । वि वि,
 अवारपारम् ।
 बार—, स पुं, दे 'आरपार' ।
 पारस्वी, सं पु (हि परस्व) परीक्षन्, गुण
 दोषविद (पुं) ।
 पारग, पारगत, वि (सं) दे 'पारगत' ।
 पारण, सं पुं (सं न) पारणा, उपवासान्
 न्तर प्राथमिकभोजन २ तर्पण ३ समाप्ति
 (स्त्री) ।
 पारतन्त्र्य, स पु (सं न) दे 'परतन्त्र' ।
 पारद्, स पु (सं) दे 'पारा' ।
 पारदेशिक स्त्री, वि, दे 'परदेशी' ।
 पारधी, सं पुं, दे 'शिकारी' ।
 पारलौकिक, वि (सं) अनुभिक, परलोक,
 सबन्धि नियम, अपाधिब ।
 पारस, सं पुं (सं स्वर्ण >) स्वर्ण, मणि
 उपर २ अतिलाभद पदार्थ ।
 पारसाल, सं पुं (सं + पार + का साल) गत
 वर्ष, परस्व (अश्व) । कि वि, गताम्बे, परस्व ।
 पारसी, वि (का) पारसवासिन् २ भारतस्था
 पारसीया ३ 'फारसी' ।
 पारसीक, सं पु (सं) पारसदेश, पारसिक
 २ पारसवासिन् ३ पारसभोज्य, बान्नायुज ।
 पारम्परिक, वि (सं) दे 'परपर व' ।
 पारा, सं पु (स पार) महा-दिश्व, रस,
 रस, राज नाम उत्तम इन्द्र, चपल, पारद्,
 शिवबीज, मित्रभातु ।
 पारायण, सं पु (स न) समापनं, समाप्ति
 (स्त्री) २ आप तपाठ ।
 पारावत, स पुं (स) पपीत, २ वधि
 ३ पर्वत ।

पारावार, स पु (म) समुद्र । (म न) तटद्वय २ सीमा पर्यन्त, अर्वाधि ।

पारिजात, स पु (स) धुर-देव-कल्प, तरु वृक्ष, मदार ।

पारिजातक, म पु (स) देवतरुषु अन्यतम २ ह्यश्रुगार ३ काचनाल, कीविदार ४ पारिभद्र देववृक्षविशेष ।

पारितोषिक, स पु (स न) मिद्धिपाल, नयलाम, दे 'इनाम' ।

पारिपथिक, स पु (स) परिपथिन्, लुंड (टा ठा) क, मागतस्कर ।

पारिभाषिक, वि (न) साकेतिय, परिभाषा सक्तेन, मवधिन् ।

पारिपद्, स पु (म) मभामद् (पु), सभ्य, पारिषद्य २ गण, अनुचरवर्ग ।

पारी, स स्त्री, दे 'वार' ।

पार्थक्य, स पु (स न) वृथरुता, मित्रता २ वियोग, विरह, विश्लेष ।

पार्थिव, वि (स) मृण्मय (यी स्त्री), मातक (की स्त्री) २ भीम, पृथिवीसवधिन् ३ लौकिक, ऐहिक (की स्त्री) । म पु, नृप २ कुज ।

पालियामेंट, स स्त्री (अ) व्यवस्थापिना सभा ।

पार्वती, स स्त्री (म) उमा, अदिजा, अविना, गौरी, नदा, भवानी महादेवी, शिवा, रुद्राणी, मती, सिद्धादिनी, क्रिमाद्रिननया, हैमवती ।

—नन्दन, स पु (स) कार्तिकेय ।

पार्श्व, स पु (स पु न) वक्षोभोग, पार्श्व पक्ष, भाग, कुक्षि २ पक्ष, पार्श्व-र्ष, समीप निकट, स्वान ३ पार्श्वस्थि (न), पार्श्वम् ।

—वर्ती, स पु (स निन्) ममीपक्ष निकटस्थ, जन ।

—शूल, म पु (म पु, न) शूलरोगभेद ।

पाल, म पु (स) पालक, पोषक २ पतद्ग्रह, दे 'शीकरान' ।

पाल, म पु (हिं पालना) पालकाव्य पालनान्तरणम् ।

पाल, स पु (स पट वा पाट >) नौ, * वातपट २ पट, मंजुप-गृह ३ शकटाच्छादनम् ।

पाल, म स्त्री [मं पालि (स्त्री)] सेतु, धरण, वप्रवध २ उच्च, नीर-कुल, दे 'वगार' ।

पालक, म पु (मं) पोषक, रक्षक, पालन

कर्तृपालयित् २ अश्व, पाल रक्ष ३ दत्तक पुत्र ४ चित्रकवृक्ष ।

पालक, स पु (स पालक) पालकी, सुग्निध, पत्रा, मधुरा, धुरपत्रिका, प्रामीणा ।

पालकी, स स्त्री (स पत्यक >) शिरस्त्रा, डयन, शिविका, *पत्यनी, रथगर्भक, याप्य यानम् ।

—गाढी, स स्त्री, *पत्यकी शकटी ।

पालत्, वि (म पालित) गृह, बधित पोषित, गृह्य, छेक, गृह, ग्राम ।

पालथी, स स्त्री, दे 'पलथी' ।

पालन, म पु (म न) भरण, पोषण, स, वर्धन, अन्नवमनै रक्षण २ निर्वाह, अनुकूल चरण, अनुवचन, साधन, पूरणम् ।

पालना, किं म (स पालन) परि, पा (प्रे पालयति), परि, पुष् (भ्वा क् प से तथा प्रे), सवृष् (प्रे), सं, मृ (भ्वा जु प अ) २ (पशुविहगान) विनी (भ्वा प अ), दम् (प्रे), गृहे पुष् मवृष् (प्रे) ३ अनुकूल आचर (भ्वा प से), निवह (प्रे) मपूर साध (प्रे) । म पु, दे 'पालन' २ (शिशु) प्रेसा दोर्वा ।

पालने योग्य, वि, परि, पालनीय पोषणीय, भरणाय, विनेय, निर्वाह, इ ।

—वाला, म पु, दे 'पालक' (१) २ विनेट, गृहे पोषक ३ निर्वाहक, साधक ।

पाला, स पु (स प्रालेय) तुषार, नोहार, कुञ्जटिका, मिदिका, तुहिन, २ घनजल, चल घन, तुषारमपाल, हिम ३ शीत, शैत्य, हिम ।

—भार जाना, मु, नोहारेण नश् (दि प वे), तुषारेण ध्वस् (भ्वा आ से) ।

पाला, स पु (हिं पाला) व्यवहारावतर, सवध ।

—पदना, मु, व्यवहार सवध-त्वावै जन् (दि आ से) ।

पाले पदना, मु, वशाभू, अधीन (वि) जन् ।

पाला, म पु (म पट >) प्रधातरान, मुरयकावालय २ विभाजनरेणा ३ क्षेत्रमीमा ४ अन्नार्थे वृद्धत्यान ५ मज्जपुडभूमि (स्त्री), व्यायामशाश ।

पालागन, म स्त्री (हिं पॉय+लगना) चरणचुवन, पादप्रणति (स्त्री), प्रणाम, वदना, भवस्कार ।

पाला हुआ, वि, परि पालित, पोषित, स
भृत, गृहे संवर्धित, सपूरित, रक्षित, इ ।
पालित, वि (स) दे 'पाला हुआ' ।
पालिदा, स स्त्री (अ) प्रमाजंम्, *मानित्री ।
पालिसी, स स्त्री (अ) नीति (स्त्री) नय
२ राजनीति शासनरीति (स्त्री) ३ उपाय,
शुक्ति (स्त्री) ४ आयनिरक्षणममयलेख
समाख्यहानिरक्षण पत्रम् आश्वासिका ।
—होल्डर, म, पु आध्यात्मिकाधारक ।
पाली^१, स स्त्री (म पालि-पक्ति >) भारत
वर्षस्य प्राचीनभाषाविशेष (प्रायः बौद्ध धर्म
ग्रन्थ इमी मे है) ।
पाली^२, वि (स लिच्) पालव पोषक २ रक्षक ।
पाली^३, म स्त्री (स पालि स्थान >) कुक्कु
शुद्ध भूमि (स्त्री) ।
पाव, स पु, दे 'पाव' ।
पाव, स पु (म पाद) चतुर्थ, अश भा,
तुर्व, तुरीय २ (चार गिरह) गन्तुर्व, हस्ताई
३ मेर, पाद, षट्कचतुष्कम् ।
पावक, स पु (स) अनल, अग्नि २ ताप
३ सूर्य । वि, पावन, शोधक, मार्जक ।
पावन, वि (सं) शुद्ध, पूत पवित्र, शुचि
२ दे 'पावक' । वि [पावनी (स्त्री)] ।
पावस, स स्त्री (म प्रावृष) दे 'बरसात'
(मौसिम) ।
पावा, म पु, दे 'पावा' (२) ।
पाश, स पुं (सं) शस्त्रभेद, बधन, २ पाल,
भृगुबधनी, पातली, बासुरा ३ 'पाँसा' ।
पाश्चात्य, वि (म) पश्चिमदेश, प्रनीच्य
२ उत्तर, उत्तरगामिन् ३ पश्चिम, चरम,
अपर, अवर ।
पापड, सं पुं, दे 'पापड' ।
पापडी, वि, दे 'पापडी' ।
पापाण, स पु (स) दे 'पापर' ।
पासग, सं पु (का) प्रतितीक तुलापूरकम् ।
पास^१, स पु (स पार्श्व-र्थ) पक्ष, दिशा
२ अधिकार, आधिपत्य (अव्य), निकटे,
समीप ये, अतिक-के, आराध, उपकठ, निकषा,
समया, मविधे (सब अव्य) ।
—पाटोम, सं पु, समीप-मन्त्रिण, देश, प्रति
वेश २ प्रातिवेश्या प्रतिवामिन (पु बहु) ।
आन—, कि वि, रक्षण अभिन, परित
२ दे 'रगभर' ।

पास, स पु (अ) *अनुपापत्रम् ।
वि उरीग, सकल, सकलीभूत २ रवीकृत,
उरीकृत ।
—पोट, म पु (अ) पार निष्क्रम पत्रम् ।
—बुक, स स्त्री (अ) धनागारपुस्तकम् ।
पामा, सं पु (स पाशक) दे 'पाँसा' २ दे
'चौमर' ।
—फेंकना, मु, भाग्य परीक्ष (भ्वा आ से)
२ अभै विव (दि प से) ।
पाहुना, म पु (म प्राहुण) प्राहुण(गि)म्,
प्राहुणक, अनिधि २ नामात् दे दामाद' ।
पाहुनी, सं स्त्री (हि पाहुना) प्राहुणिका-स्त्री,
प्रघ्राणक्री २ आनिध्य, अनिध-सत्कार ।
पिग, वि (म) आश्रय पीत २ कपिल,
पिगल, पिडा ३ आश्रय पिगल-कपिल ।
पिगल, स पुं (स) छद्र शूकरो मुनि
विशेष २ (पिगलरचिन) छद्र शास्त्र ३ कपि
४ उल्लूक ५ अग्नि । वि, दे 'पिग' ।
—शास्त्र, स पु (स न) छन्दो, विद्या
विज्ञानम् ।
पिगला, स स्त्री (स) शरीर नाटीभेद ।
पिगी, सं स्त्री (स) शमी, शिवा, भद्रा २
२ मूषा मूषिका ३ छुद्र मूषक-आसु ।
पिन्डा रा, स पु (स पिंजर) पञ्जर-र, वि
(वी) नस ।
पिन्जर, स पु (म न) कार्यास्थिवृद्धककाल,
अस्थिपन्जर २ स्वर्ण ३ दे 'पिंजडा' ।
वि, शंख पीत २ सुवर्णाम ३ कपिल, पिगल ।
पिड, म पु (स पु न) गोल-ल, बतुंलद्रव्य
२ लोष्ठ ठ, मृद-खड पिट, द्रव्यखड-ड,
गट, धन ३ चय, राशि, ४ निवाप,
आद्योपयोर्भिन्नकारिणो ५ आहार ६
शरार, देह ।
—खजूर, सं स्त्री (स पिंखजूर) राजगव्
(स्त्री), स्थूलपिन्डा, पिंखजूरी, दीप्या,
फलपुष्पा, हयमशा ।
—दान, म पु (स न) पिच्छिर्वाप ।
—ट्रोडना, मु, न वाध (भ्वा आ से) ।
पिडली, स स्त्री (म पिंडी) न्यापिन्,
पिञ्जिका पिंङि (स्त्री), पिञ्जिका ।
पिडा, स पु (म पिंङ-ड) दे पिण्ड' (२,
२, ४, ६) ।
—पानी देना, मु, पिदम्य पिंडोरक दा ।

पिडालू, स पु (पिडाल) रोमाल, रोम
पिड, कद्र, रोमश ।

पिडिका, स स्त्री (स) क्षुद्रपिड-ड २ लोष्ठक
३ दे 'पिडली' ४ चक्रनामि (स्त्री) ५ प्रति
मावेदिका ।

पिडित, वि (स) पिडी-वनी, भूत २ गणित
३ गुणित ।

पिडी, म स्त्री (स) दे 'पिडिका' (१, ३, ४) ।
२ अलावू (स्त्री) ३ पिडरगूर ४ वलि
वेदी ५ मृगगोल-लग् ।

पिड, वि (स प्रिय) बल्लभ, वात, दयित ।
स पु, पति, मर्त ।

पिक, मं पु (स) कोकिल, दे 'कोयल' ।

—पैतु, म पु (स) पिक, राग-बल्लभ,
आश्रवृक्ष ।

—पैनी, स स्त्री, कोकिल-कठा-ली, सु-मधु,
कठा-ठी ।

पिकानन्द, स पु (म) पिकवान्धव, वमन्त,
अनुराग ।

पिघलना, कि अ (स प्रवरणम्) गल्-क्षर
(भ्वा प से), वि, द्रु (भ्वा प अ),
द्रवीभू, वि, ली (दि आ अ) २ करुणादी
दयादीभू, कल्पया द्रु, दय (भ्वा आ से) ।
स पु क्षरण, गलन, विलयन, द्रवण २ दयादी
भाव, दयनं, अनुस्मरणम् ।

पिघलनेवाला, वि, वि, लिय, द्रवणाय, गलनाई ।

पिघलाना, कि स, व 'पिघलना' (१२) के
प्रे रूप । म पु, वि, द्रावण-स्वानन,
द्रवीकरणम् ।

पिघलनेवाला, स पु, विद्रावक, विलयनकृत् ।

पिघला हुआ, वि, वि, स्त्रीन, वि, द्रुत, गलित ।

पिघलाया हुआ, वि, वि, द्रावित-स्वापित,
क्षारित, गलित ।

पिघालविदु, म पु (दि + स) द्रावाइ,
द्रवण, अडव विदु ।

पिच (चि) ड, स पु (स पुं न) उदर,
पडर, फट ।

पिचकना, कि अ, व 'पिचकाना' के कर्म
के रूप ।

पिचकाना, कि स (अनु पिच) आनिस-
पीट (चु), मष्ट (क् प से), आम-कुच
(भ्वा प मे) । मं पुं, मंपीडनं, संमर्दनं,
मंकीचनम् ।

पिचकानेवाला, स पु, सपीडक, मंमर्दक १ ।

पिचकाया हुआ, वि, सपीडित, सकींचित १ ।

पिचकारी, स स्त्री (अनु पिच) रेचन
यन्त्र, शूक, शूकक, वस्ति (पुं स्त्री) ।

—डोडना या मारना, मु, शूकेण क्षिप (तु
प अ), नरलक्ष्म्यं सवेग प्रास (दि प से) ।

पिचपिचा, (हि पिचपिचाना) उन्न, क्लिन्न,
श्यान, साद्र ।

पिचपिचाना, कि अ (अनु पिचपिच))

पिचपिचायने (ना धा), शनै क्षर
(भ्वा प से), प्र-स्तु (अ प से) ।

पिचुका, स पुं, दे 'पिचकारी' २ दे 'गोल
गप्पा' ।

पिच्छ, स पु (स न) पुच्छ, पक्ष-वाज
२ मयूरपुच्छ, बहई ई, शिरपड, कलाप
३ शरपक्ष, पुरल रम् ४ पक्ष, वाज ५
शिवा, शैपरम् ।

पिच्छल, वि (स) विकल्प-गणम्, मेरु
रान्ग, श्लक्ष्ण श्णा-क्ष्णम् ।

पिच्छना, कि अ (हि पिछाडी) मंद चल
(भ्वा प से), मदायते निरयति (ना धा),
पश्चात् वृत् (भ्वा आ से) ।

पिच्छनेवाला, स पु, मद, मथर मद
गामिन् ।

पिच्छला, पिच्छलग्, स पु (हि पीछे +
लगना) अनुवायिन्, अनुगामिन्, अनुवतिन्,
शिष्य २ सेवक ३ आश्रित ।

पिच्छला, वि (हि पीछा) पृष्ठस्थ, पश्चिम,
पृष्ठय, पक्ष, पश्चात्, २ उत्तर, उत्तरकान्तीन,
अपर, पर, पश्चात् ३ अन्त्य, अन्तिम, उत्तर
४ गत, अतीत, पुराण ।

पिच्छवाड़ा, म पु (हि पीछा) गृहस्थ

पिच्छवाड़ी, सं स्त्री } पृष्ठ, पृष्ठभाग २ पृष्ठ
पश्चात्, भाग ३ गृहपृष्ठवादिभूमि (स्त्री) ।

पिछाड़ी, स स्त्री (हि पीछा) पृष्ठ, पृष्ठपश्चात्,
भाग-देश २ (अश्वादीना) पृष्ठापरगु
(स्त्री) ।

पिछना, कि अ (हि पीछा) ताट् आहन्
(कर्म) ।

पिछवाना, कि प्रे, व 'पिछना' के प्रे रूप ।

पिछाई, सं स्त्री (हि पीछा) ताटनं, प्रहरणं,
आहनन २ ताटनमृति (स्त्री) ।

पितारा, सं पु (स पिट) पेट, करड, कडोल ।

पितारी, सं स्त्री (हि. पितारा) पिटक-क, पे(ग)क, पेडा, मजूषा, पेन्डि(डि)का, तरी रि (स्त्री) ।

पिटठू, म पु (हि पीठ) अनुगामिन, अनु यागिन २ सहाय, साहाय्यकारिन ।

पित, न स्त्री (स पित्त) धर्मचर्चिका, धर्मपत्रक ।

पितपापडा, स पु (स पपट) अरक, बरक, सु, गिक, चरक, शीन, प्रगथ ।

पितर, स पु (स 'पितृ'का बहु) पिट स्वधा श्राद्ध, मुन भाज, पिडाश (मव बहु) ।

पित्राई, न स्त्री (हि पीतल) पित्तल-भाज, रिट्ट-मल-म्वाद, दे 'कमाव' ।

पिता, म पु (स पितृ) ताल, तनक, बप्ट, प्रसपिट, तनपिट, तनित, जमद, बीनिन् ।

—मह, स पु (स) दे 'दादा' ।

—मही, स स्त्री (म) दे 'दादी' ।

पितृ, स पु (स) दे 'पिता' २ दिवगता पूर्वदुस्था २ देवविशेषा ।

—ऋण, स पु (स न) जावमानस्य ऋण भेद (अपना पुत्र उत्पन्न होने पर मनुष्य पितृ ऋण से मुक्त होता है । धर्म) ।

—कर्म, स पु [स-र्भन् (न)] श्राद्धनर्प षादिक्रिया ।

—मृह, स पु (स न) इमशान २ दे 'मायका' ।

—तर्पण, स पु (स न) नि निर्, चाप, निवपन, निवंपण २ दे 'तिल' ।

—तिथि, स स्त्री (स पु स्त्री) अमाव (वा)स्या ।

—तीर्थ, स पु (स न) गया २ बाराण स्वादितीर्थस्थानानि ३ तर्पण्यगुष्ठयोमध्यम् ।

—पस, स पु (स) आधिनकृष्णपक्ष २ पितृमवधिन (बहु) ।

—यज्ञ, सं पु (स) पितृवर्षणम् ।

—लोक, सं पु (स) पितृमुवनम् ।

पितृक, वि (स) दे 'पैरु' ।

पितृव्य, स पु (म) दे 'चावा' ।

पित्त, स पु (स न) मालु, पत्ज्वल, निरुपहत ।

—ज, वि (स) पित्त-मालु, हर-नाशक ।

—ज्वर, स पु (स) पैत्तिक-मालुन, ज्वर ।

—की घैली, स स्त्री, पित्तकोप (gall-bladder) ।

—पथरी, स स्त्री, पिनाइमरी ।

—पापडा, स पु, दे 'पितपापडा' ।

—प्रकृति, वि (म) मालुप्रकृति २ क्रोधिन् ।

—प्रकोप, स पु (स) पित्त-मालु, प्रकोप-आधिक्य विकार ।

—हर, वि (म) दे 'पित्तधन' ।

पित्तल, म पु (स न) आरकूट, -र, जार, धुद-सुवर्ण, रीनी नि (स्त्री), पीतलक, पानक, पिगललोहम् ।

—का, वि, पित्तन पीनक, मय (स्त्री) ।

पित्ता, स पु (म पित्त) दे 'पित्ताशय' २ साहम, वीर्य, शौर्य ३ कोप, क्रोध ।

—खौलना, सु, अत्यन्त क्रुध् (दि प अ) ।

—निकालना, सु, निगरा परिश्रम (प्रे) ।

—पानी करना, सु, सुतरा परिश्रम (दि प ने) ।

—मारना, सु, क्रोध नि नियम् (म्वा प अ) ।

पित्ताशय, स पु (स) पित्त-मालु, क्रोध ।

पित्ती, स स्त्री (स पित्त) शीतपित्तन, पित्तविकारन त्वयोगभेद, २ दे 'पित' ।

पिठ्य, वि (सं) दे 'पैरु' । स पु, (म) अग्रन २ माषमास ३ मधानक्षत्रम् ४ यपु (न) ५ माष, मामल ।

पिठ्या, स स्त्री (स) अमावस्या २ पूर्णिमा ।

पिदही, स स्त्री, दे, 'पिही' ।

पिहा, स पु (अनु पिद)

पिही, स स्त्री (चटकभेद २ तुच्छ, जीव पदार्थ) ।

पिधान, स पु (स न) आच्छादन, आवरण, क्रोध २ छद, छदन, पुट्ट-ट्टी ३ अस्ति क्रोध ।

पिधायक, वि (स) आ प्रच्छादक, आवरण ।

पिन, स स्त्री (अ) *धातुकट्टक, अन्ध सूची ।

पिनकना, क्रि अ (अनु) (अहिफेनमदेन) श्वप निद्रा-स्वप् (अ प अ) ।

पिनाक, स पु (स पु न) (शियस्य) चाप, धनुस् (न) २ विशालम् ।

पिनाकी, म पु (स किन्) शिव, महादेव ।
 पिना, स पु (स पिन्-ड) तैलविट्ट पिण्याक,
 पिन्-ड २ मूत्र-गोल विट ।
 पिन्नी, म स्त्री (स पिन्नी) पिन्डिया, पिन्डि
 (स्त्री) कादक, मिष्टान्न भेद २ दे पिन्डली ।
 पिपरमित, म पु (अ) पुदीनजातीय क्षुप,
 *पिपरमित २ *पिपरमित् ।
 पिपरामूल, स पु (स पिन्लीमूल) बोल
 बड्ड, मूल, शक्ति, सर्व पट-बड्ड शक्ति (न) ।
 पिपली, म स्त्री (म पिन्ली) पिन्पलि
 (स्त्री) श्यामा कृष्णा, मागधी, उ(ऊ)पणा,
 कोला, दतफला ।
 पिपासा, स स्त्री (म) तृषा, दे 'प्यासा' ।
 पिपासित, वि (मं) तृपित, दे 'प्यासा' ।
 पिपासु, वि (स) तृपित, दे 'प्यासा' ।
 पिपीलिक, स पु (स) पिपील, पिपीलिक,
 पीलिक, दे 'चीटा' ।
 पिपीलिका, स स्त्री (स) पिपी(पि)ली, हीरा,
 दे 'चींगी' ।
 पिप्पल, स पु (स) अश्वत्थ, दे 'पीपल' ।
 पिप्पलाद, म पु (म) श्रुपिषिदोष ।
 पिप्पली, स स्त्री (स) दे 'पिपली' ।
 —मूल, स पु, दे 'पिपरामूल' ।
 पिय, पिया, वि (म पिय) बल्लभ, वान,
 दयित । स पु, पति भर्तृ ।
 पियानो, म पु (अ) आम्बवाद्यभेद,
 *प्रियध्यान ।
 पिरिच, स पु (देज) दे 'तरतरी' ।
 पिरोना, कि स (स प्रोन् >) सञ् (जु),
 गु(गु)क (तु प से) स, पद (कूपस),
 स, इम् (जु, स्वा, तु प से) । म पु,
 सुश्रणं, सुश्रन, श्रयन, रुद्रभणम् ।
 पिरोने योग्य, वि, मूत्रवित्तव्य गुणनीय इ ।
 पिरोनेवाला, म पु, गुणक, श्रयन,
 सुश्रित इ ।
 पिरोया हुआ, वि, मूत्रित, गुणित, म(मं)श्रित,
 मद्रुग्ण इ ।
 पिल, म स्त्री (अं) गुणिका, गुणिका, वणिका ।
 पिलना, कि अ (म पेलन् >) सहमा
 प्रविष्ट (तु प अ) २ मवर्ग अभिद्रु
 (भ्वा प अ)-आपद् (भ्वा प म)
 ३. सोत्साह प्रवृत्त (भ्वा आ मे) अत्यन्त

परिश्रम (दि प से) ४ तिष्णीङ्निर्गुप्
 (कर्म) ।
 पिलपिला, वि (अनु पिलपिल) शिबिल,
 अतिपक्व, अतिष्टुड ।
 पिलाना, कि प्रे (हि पीना) पा (प्रे पाव
 यति), धे (प्रे, भाषयति), चम् (प्रे, चाम
 यति), २ शन्य-मनन पा धे (प्रे) ।
 पिल्ला, स पु (तामिल) श्व, रावक शिशु ।
 पिशग, वि (म) कपिल, पिगल ।
 पिशाच, स पु (स) भूत, प्रेत, राक्षस,
 बेताल, असुर, दानव, दैत्य, निशाचर ।
 पिशाचनी, म स्त्री (म पिशाची) पिशाचिका,
 निशाचरी, राक्षस ।
 पिशुन, म पु (म) दिनिह, मूलक,
 कर्णनप २ परोक्षानिदक, परिवाररत
 ३ दुर्जन, सल, नीच, गर्ह्य ।
 पिशुनता, म स्त्री (स) पैशुन्य, पिशुनत्व,
 दिनिहता २ परोक्ष, निदा परि(री)वाद
 ३ दुपनता ।
 पिष्ट, वि (स) चूर्णित, चूर्णीकृत, क्षुण्ण ।
 म पु, दे 'पीठी' ।
 —पेपण, स पु (म न) चूर्णितचूर्णनं,
 क्षुण्णक्षोदन २ पुनर्गति (स्त्री), पौनरुच्य,
 पुनर, वचनवाद ।
 पामनहारी, स स्त्री, (हि पीमना) *पेपण
 वारी ।
 पिसना, कि अ, व 'पीमना' के कर्म के
 रूप ।
 पिसाई, म स्त्री (हि पीसना) पेपणं, चूर्णनं,
 विदलन, क्षोदन २ पेपण-चूर्णन, मृति (स्त्री)-
 मृत्या ३ घोरपरिश्रम ।
 पिसान, म पु (हि पिसान+मं अन्नम्)
 दे 'आटा' ।
 पिमा(सवा)ना, कि प्रे, व 'पीमना' के प्रे
 रूप ।
 पिसौनी, म स्त्री, पेपण, चूर्णनम् २ अन्न
 चूषण-व्यवसाय ३ अतिपरिश्रम ।
 पिस्ता, स पु (पा) मुकुलम् ।
 पिस्ताल, म पु (अ पिस्ताल) गुणिकास,
 लघ्वन्वयम् ।
 पिस्सू, म पु (का पदशब्द=मच्छर) *कुटरी,
 देदिना, कुट ।

पिहित, वि (स.) निरोद्धि, गुप्त २ अर्थात् कारभेद (सा) ।
 पीजना, क्रि स (म पिजन्=धुनकी >)
 *पिन (द्वे पिजयति) दे 'धुनना' ।
 पी, म पु (म प्रिय) धान, दधिन, वसुभ, २ पनि, अर्ध, प्राणेश्वर ।
 पीक, म स्त्री (अनु पिच) पण्डित, ताबूतलाल ।
 —पान, म पु (हि + का) पतद्रुह, प्रति ग्रह, *शलाघान, निधीवनपात्रम् ।
 पीच, म स्त्री (स पिच्छा) पिच्छल-र-ला, भक्तमठ ट, दे 'माट' ।
 पीठा, म पु (म पश्चात् >) पृष्ठ, पृष्ठ पश्च पश्चाद् भग देश २ अनु, गमन-मरण-धावन २ अन्येषाम् ।
 —करना, मु, अनु, श्या (अ प अ) अनु, गम्-न् (भ्वा प अ), अनु गाव व्रज् (भ्वा प से) २ माग्रह प्रार्थ (चु आ से) ।
 —छुडाना, मु, परिहृ (भ्वा प अ), वि परि-न् (चु), आत्मानं रश् (भ्वा प से)-त्रे (भ्वा आ अ) ।
 —छोडना, मु, न वार् (भ्वा आ से)-व्यस्मान् (प्रे) ।
 पीछे, क्रि वि (हि पीठा) अनु (द्वितीया के साथ), पृष्ठ, पश्चात्, पश्चाद्-पृष्ठ, भागे-देशे २ अनतर, ऊर्ध्व, पर, पश्चात् (मय अव्य) ३ अनुपस्थितौ, अमात्रे, परोक्षे ४ निध नानतर ५ हेतौ, कारणत्, निमित्तात् ६ अर्थ, अर्थ, कृते (षष्ठी के साथ) ७ अन्त, अन्ति, परिणामे ।
 —आना, मु, विलिन या कालभतिकम्ब आया (अ प अ) ।
 —छूटना या रहना, मु, अतिक्रम-अनिच्छ (कर्म) मद् चत् (भ्वा प से) मदायते (ना धा) ।
 —चलना, मु, अनु, श्या (अ प अ), अनु, व्रज् (भ्वा प से)-न् (भ्वा प अ)-कृ ।
 —पडना, मु, साग्रह प्रार्थ (चु आ से) २ सन-वध (भ्वा आ से)-अर्ध-व्यथ् (प्रे) ।
 —लगना, मु इष्टमिदये सनन अनुगम, २ रोगादिभि निगतरं पीड (कर्म) ।
 पीटना, क्रि रा (स पीटन् >) अभि-व्य प्र, हन् (अ प अ), आहन् (अ उ अ),

प्रह (भ्वा प अ, मसमी के साथ) २ तद् (चु), छुद् (छु प अ), प्रह, आहन्, अर्ध, पीठ (चु) ३ दद् (चु), निग्रह (क् प से) ।
 म पु, आहनि (स्त्री), आपान, प्रहार, तानन, प्रहरण, पीडन, दटन, निग्रह, शृत्तु, शौर, आपद-विपद् (स्त्री) ।
 पीटने योग्य, वि, आहननीय, प्रहरणीय, ताडनीय, दटयितव्य ।
 पीटने वाला, म पु, आ अभि, दट, प्रहर्त्, ताडयित्, पीडक, दटयित् ।
 पीटा हुआ, वि, आहत, प्रहन, नात्ति, दडित् इ ।
 पीठ^१, स स्त्री (स पृठ) पश्चिमा, तट्ट चरम २ पश्चाद् पृष्ठ, भाग-देश ।
 —धारपाई से लगना, मु, निगरा क्षि (भ्वा प अ)-कृषी भू ।
 —डोंकना, मु, उत्ति प्रोत्सह (प्रे) ।
 —दिखाना या देना, मु, पलाय् (भ्वा आ से) अपधाव (भ्वा प से) २ परित्वा (भ्वा प अ) ।
 —पर हाथ फेरना, मु, दे 'पीठ डोंकना' २ पृष्ठ परावृत् (तु प अ) ।
 —पीछे, मु, अनुपस्थितौ, परोक्षे ।
 —पीछे कहना, मु परोक्षे निद् (भ्वा प से) ।
 —फेरना, मु, प्रस्था (भ्वा आ अ) २ प्राड्मुखी भू (३४) दे 'पीठ दिखाना' ।
 —लगाना, मु, मल्लयुद्धे उत्तानो निपत् (भ्वा प से) २ सर्वथा परानि (कर्म) ।
 —लगाना, मु, मल्लयुद्धे उत्तान निपत् (प्रे) ३ सर्वथा विनि (भ्वा आ अ) ।
 पीठ^२, स पु (स न) काष्ठपाषाणधातवा दिनिर्मित) आमन, पीठी २ (व्रतिना) कुशासन, विष्णु ३ प्रतिमापार ४ अग्नि धान, आवाम ५ सिंहासन ६ वेदी-दिवा ७ प्रदेश, प्राण ।
 पीठक, स.पु, दे 'पीठ' २ १ २ दिविकामेद ।
 पीठा, स पु, (स पिठ >) भोज्यभेद । पिठ ।
 पीठिका, स स्त्री (म) दे 'पीठ' (२) । २ (लभादीना) अपार, पाद ३ ग्रथमाय ।
 पीठी, स स्त्री (म पिठिका), पिष्टाटदाली लि (स्त्री), पिष्टाटदाल ।

पीडक, स पु (स) दुःख, द-नायक द्रायिन्, क्लेशकर, पीटावह ।

पीडन, स पु (स न) अर्दन, बाधन, उपमदन, क्लेशन २. दे 'दवाना' ।

पीडा, स स्त्री (स) वेदना व्यथा, दुःख, मन (स्त्री) रुना, अ(आ)दि (स्त्री), क्लेश, बाध या वातना, कष्ट, क्लृप्, परि स ताप ।

—कर, वि (स) दुःख स्तब्धधा, कर भावह प्रद इ [—करी (स्त्री) = दुःखदा] ।

मानसिक—, स स्त्री (सं) आदि, मनोव्यथा, चित्तोद्वेग ।

शारीरिक्—, स स्त्री (स) व्याधि, रोग ।

पीडित, वि (स) दुःखित, व्यथित, क्लेशित, संव्यथ, सरन, क्लृप्तगत ।

पीडा, स पु (म पीठ) दे 'पीठ' (१) ।

पीठी, म स्त्री (स पीठी) पीठक क (वाष्ठा विनिर्मित) उपासना, शुद्रामनम् ।

पीठी, स स्त्री (स पीठी) वशपरम्पराया वितृपितामहपुत्रवीनादीना पूजापरस्थान, *मन निक्रम ।

पीत, वि (स) हरिद्राम, दे 'पीला' ।

पीतल, म पु, दे 'पित्तल' ।

पीतावर, स पु (म न) हरिद्रामवस्त्र २ श्रीकृष्णवस्त्र । वि, पीनवस्त्रधारिन् ।

पीडही, म स्त्री, दे 'पिरी' ।

पीन, वि (स) पीवर, स्तब्ध, पुष्ट, मानल ।

पीनक, म स्त्री (हि पिनकना) अफेननद्रा, अहिफेननिद्रा ।

पीनता, म स्त्री (स) पीवस्ता, स्तब्धता, पुष्टता ।

पीनस, स पु (स) अपीनस, नामिका मय, प्राणशक्तिराहित्यम् ।

पीनस, स स्त्री (का पीनस) दे 'पालगी' ।

पीना, क्रि म (म पान) पाथे (भ्वा प अ), चम् (भ्वा प म), पान क २ मद् (भ्वा आ स) ३ (त्रोभादीन्) निर्मन्थम् (भ्वा प अ), प्र, शम् (प्रे) ४ मद्य पा, सुरापान क ५ उर्, शुर् (प्रे) ६ धूम पा, धूमपान क । म पु, धय, पान, आचमन, पीति (स्त्री) ।

पीने बौग्य, वि पेय, पानीय, चमनीय, धेय ।

पीनेवाला, म पु धय पादिन्, पाठ २ पान, आमक्त रत शीट, मषप ।

पीया हुआ, वि, पीत, धीत, चात ।

पीनोष्णी, स स्त्री (स) पीवरस्तनी गौ ।

पीपव, म स्त्री (स पूय-य) क्षतन, मलय, प्रमित, पूयन, कुणपम् ।

—पडना, क्रि अ, पूव (भ्वा आ से) ।

पीपल, म पु (स पिप्पल) अश्वत्थ, क्षीरशुचिबोधि, द्रुम, चर, दल पत्र, कुण राशन ।

पीपल, स स्त्री, दे 'पिपली' ।

पीपलामूल, स पु, दे 'विपरामूल' ।

पीपा, स पु (देख) *पट्टहपानम् ।

पीयु, स पु (म) काक, वायस २ स्य ३ अग्नि (पु) ४ उलूक ५ समन ६ सुवर्णम् ।

पीयूष, स पु (स पु न) सुधा, अमृत २ (नवप्रमूलाया यो) दुग्धम् ।

—उर्पी, वि (म इव्) सुधाम्यन्तिन्, सुमपुर ।

पीर, म स्त्री (स पीठा) दे 'पीठा' २ सहा मुभूति (स्त्री) ३ प्रमवपीठा ।

पीर, वि (का) वृद्ध, जरठ २ धूर्त्त । म पु, धर्मगुरु, सिद्ध (मुमलमान) ।

पीरी, म स्त्री (का) जरा, वाधक्यम् ।

पीलू, स पु (का) पत्र, द्विप ।

—पाव, स पु (का + हि) इलीपद, शिरी पदम् ।

पीला, वि (स पीन) पीतल, हरिद्राम, सुवर्णं कुकुम, वर्ण २ निस्तेजस्क, कानिहीन । (पीली (स्त्री) = पीना, हरिद्रामा) ।

—तुखार, स पु, पीनन्वर ।

—पडना या होना, मु, पाडुच्छाय (वि) भू, गतश्रीर नीरक्त (वि) जन् (दि आ से) ।

पीलिया, सं पं (हि पीला) दे 'पांडुलेण' ।

पीलू, मं पुं (मं पीलू) शुद्धकल, शीतमह, विरेचन, श्याम, करमवल्लभ २ इमि, बीर ३ रागभेद ।

पीव, म पुं, दे० 'पी' । सं त्वा, दे० 'पीप' ।

पीवर, वि (स) दे 'पीन' ।

पीसना, क्रि म (स पेण) पिप्पुद् (रु प अ), शूर्ण (जु), चूर्णा क, मृद (म् प से) २ मज्ज पिप् इ ३ विरट

परिश्रु (दि प से) । म पु, पेपण, चूर्णन, मदन, मडन २ पक्कीपपदाथ ।

पीसने योग्य, वि, पेपणीय, चूर्णयितव्य इ ।

पीमने वाला, म पु पेपक, चूर्णयितृ मरक ।

पीसा हुआ, वि, पिष्ट, चूर्णन, मारत ।

—पीसना, मु, मनन धीर न परिधम् ।

पीहर, स पु (म पितृगृह >) नारीणां वि वेगमन् (न) ।

पुगव, म प (म) वृष वृषभ । वि श्रेष्ठ उत्तम (उ नरपुगव = मानवोत्तम) ।

पुन, म पु (म) उत्कर, राशि, चय ।

पुड, म पु (स) पुड, दे 'निलक' ।

पुडरीक, म प (स न) शुक्लपत्र शतपत्र, महापत्र, मित, अत्रुन-अमोन २ कमल ३ मिह ४ व्याघ्र ५ निलक ६ श्वेतच्छत्र ७ दाकरा ८ तीर्थविशेष ९ कुष्ठभेद ।

पुडरीकाक्ष, स पु (म) विष्णु । वि, कमल नयन (नयनीना स्त्री) ।

पुड, स पु (स) दे 'पुडक' (१) २ दे 'पु' रीक' (२) ३ दे 'पुड' ।

पुडूक, म पु (स) रमाल-श्री, इक्षु-जाटी योनि (स्त्री), रमद्रालिका, करकशालि, इक्षुभेद । २ माधवी लता ३ निलक ४ चित्रकवृक्ष ।

पुलिग, म पु (म न) पुष्पविह २ दिनन ३ (प्राय) पुरुषवाचकशब्द (व्या) ।

पुश्रली, म स्त्री (स) कुल्या, व्यभिचारिणी, वपारदा, स्वैरिणी ।

पुमवन, स पु (म न) मस्वारभेद (धर्म) ।

पुस्व, म पु (म न) पीरुष, पुस्वत्व, मैथुनसामर्थ्य २ शुक्ल, शीर्ष ३ तेजस, ओजस् (न) ।

पुभा, स पु (स पूष) अपूप, पिष्टक ।

पुभाल, म पु, दे 'पयाल' ।

पुकार, स स्त्री (हि पुकारना) आह्वयन, आह्वान, आह्वान, अह्व(ह्व)ति (स्त्री), आका (क) रण-णा, मवाधन २ परिदेवन, दुःख निवेदन ३ प्रबलप्रार्थना, उच्चस्वरेण वाचना ४ चीत्कार, उत्क्रोश ।

पुकारना, कि म (म प्लुनकरण >) आ ह्वं (भ्वा प अ) आह्वमपुष् (प्रे) २ उच्चै वध (जु), उद्घुष (प्रे) ३ तार

स्वरेण वाच (भ्वा आ से)-प्रार्थ (जु आ से) ४ रक्षार्थं आविमुञ्च (भ्वा प अ) ५ (प्रतिकारार्थं) परिदेव (भ्वा आ से, जु) दुःख निवेद (जु) ६ नाम कृ, अभिधा (जु उ अ) । म पु, दे 'पुकार' ।

पुकारने योग्य, वि, आह्वेय आकार्य, संबोधनीय ।

पुकारने वाला, म पु आह्वयन, आकारक इ ।

पुकारा हुआ, वि, आह्वत अपारित इ ।

पुक्कश, पुक्कस, स पु (म) निषादाद शूद्राया जानो मनुष्य वर्णमकरभेद । वि अधम नीच (-श्री-स्त्री स्त्री) ।

पुखराज, स पु (स पुंभराज) पुंभराज, पीन, पीन स्फटिक-मणि-अरमन् (पु), मजुमणि ।

पुस्ता, वि (का-नद्) मबल, प्राल २ दृढ, कठिन ३ स्थापित ४ पक्वेष्टवानिमित्त ५ अभिगु ६ अनुभवित् ७ निश्चित ।

पुचकार री, स स्त्री (हि पुचकारना) पुच, कार-करण-कृति (स्त्री) ।

पुचकारना, कि स (अनु पुच) पुचपुचायते (ना धा), पुचिनि शब्द कृ ।

पुचारना, कि म, दे 'पोगना' ।

पुच्छ, म स्त्री (स पु न) दे 'पूँछ' ।

पुच्छल, वि (स पुच्छ >) पुच्छित्, सपुच्छ, लागूलित्, लागूलवत् ।

—तारा, स पु, धूम, केतु, उल्का, उषात ।

पुठल्ला, स पु (हि पूछ) दीगपुच्छ-च्छं, लव-लागूल २ चाङ्गार, मिथ्याशक्त ३ परिहायत्वगिन् ।

पुचना, कि अ (हि पूजना) पून-अभ्यर्च (कर्म) ।

पुजवाना, पुजाना, कि प्रे, व 'पूजना' के प्र रूप ।

पुनापा, स पु (स पूजापत्र) पूना, प्रमेव पुन २ पूजासामग्री, देव-उपायन-उपहार, नैवेद्यम् ।

पुजारी, स पु (स पूजाकारिन्) प्रतिमा, पूजक, देव-लोक २ भक्त, उपामक ।

पुट, म पु (अनु) शीकरासेक २ आ ईषद्, रचन ३ आ ईषत्, मिश्रण-संपर्क ।

पुट^३, स पु (म पु न) आच्छादन, आवरण, शेष, सिधान्त, वेष्टन २ पर्णपुट-ट, पत्र, श्लोक ३ श्लोकाकारपदार्थ (उ, अल्पपुट) ४ औषधपात्राद्य पात्रभेद ।

—पाक, म पु (म) पुनर्धोषधपचन (वैद्यक) ।

पुटकी, म स्त्री (म पुटकी>) दे 'पोखली' ।
पुटित, वि (स) चूणित, पिष्ट २ विदारित, क्षेदित ३ सकुचिन, आद्रुचिन ।

पुट्टा, म पु (मं पृष्ठ>) नितम्ब, चघन, कटिप्रोक्ष, २ अपादीना नितम्ब ३ ३ ग्रथा वल्कपृष्ठम् ।

पुट्टी, स स्त्री (हि पुट्टा>) शरणाग्नेमी भाग ।

पुट्टा, स पु (सं पुट्ट-ट) पत्रयोरा २ दे 'पुट्टी' ।

पुट्टिया, स स्त्री (सं पुट्टिका) पत्र, पुट्टिका २ औषधपुट्टिका ।

पुट्टी, स स्त्री (मं पुट्टी>) दे 'पुट्टिया' २ पट्टच्चर्मन् (न) ।

पुण्य, स पु (स न) शुभाद्दृष्ट, सुकृत, धर्म सुभद्र, दृष्ट्य, धर्म, वृष, श्रेयम् (न) । वि, सुभ, मंगल, पवित्र, भद्र, शाश्व धर्म, विहित ।

—भूमि, म स्त्री (म) भारत, भ(भा)रतवर्ष, आषावत ।

—लोक, म पु (म) स्वर्ग, नाक, सुर लोक ।

—वान्, वि (म-वत्) } दे 'पुण्यात्मा' ।
—शील, वि (म) }

—श्लोक, वि (स) मञ्जरि, आर्षकृत ।

—स्थान, म पु (स न) पवित्रस्थल २ तीर्थस्थानम् ।

पुण्यात्मा, वि (स-न्मन्) पुण्यवत्, पुण्य शील, धर्मशील, धार्मिक, धर्मात्मन् ।

पुण्योदय, म पु (स) सीमाशोधय, पूर्वं सुकृतफलम् ।

पुत्तला, म पु (म पुत्तलक) दे 'पुनली' (१) (श्रुतिशालस्वादिनिमिता) प्रतिमूर्ति प्रति कृति (स्त्री) ।

अफल का—, वि, चतुर, दक्ष ।

साक का—, सं पुं, मानव, मनुष्यशरीरम् ।

पुत्तली, स स्त्री (मं पुत्तली) पुत्रिका, पुत्र

रिशा, कुस्ती, पाचालीलिका, शालभजिका २ कनीनिका, तारा, तारका ३ तन्वी, कुशाग्री ४ बन्धव ५ भेनाकारमधुरमामम् ।

—का तमाशा, मं पु, पुत्तली, कौतुकनृत्यम् ।

—घर, स पु, बन्धवत्रालय ।

—पिरता, सु, कर्नानिके स्तम्भ (कर्म, मृत्यु निह) २ दृष (दि प अ) ।

पुताई, स स्त्री (हि पोतना) लेप, लेपन २ लेपन, भृति (स्त्री) भृत्या ३ मुधालेप ।

पुतारा, म पु, (हि पोतना) उपदेहत्, प्रलेपनम् २ लेपन उपदे न, पट-वस्त्रम् ।

पुत्तलिरा, म स्त्री (मं) दे 'पुनली' (१) ।

पुत्तिका, स स्त्री (स) पतयिका, मधुमशिका विदीप । २ दे 'दीमक' ।

पुत्र, स पु (म) पुत्र, आत्मन, तनय, सुन, सुतु, तनु(न्)व, पुसतान, दावाद, नदन, अत्मजन्मन् (पु), अगन, कुमार दारक ।

—कदा, स स्त्री, (स) लक्ष्मणाकन्दा, पुत्रद ओषधिभेद ।

—पत्नी, स स्त्री, गर्भनाशकयोनिरोषभेद ।

—वती, वि स्त्री (म) सपुत्रा, सुतवती ।

—वधू, स स्त्री (सं) स्तुपा, वधू (स्त्री), जनी, पुत्रपत्नी ।

पुत्रिरा, स स्त्री (सं) दे 'पुत्री' २ दे 'पुनली' ३ कनीनिका, तारा ।

पुत्री, म स्त्री (स) कन्या, आत्मजा, दुहित (स्त्री), तनुजा, सुता, तनया, स्वजा, नदिनी ।

पुत्रेष्टि, स स्त्री (स) पुत्रनिमित्तक-यज्ञभेद ।

पुद्दीना, स पु (का पोदीनह) पुद्दीन, व्यञ्जन, मुगधिपत्र, वातहारिन्, अजीर्णहर, रुचिष्य ।

पुन, अव्य (स पुनर्) भूय (अव्य) ।

—पुन, अव्य (स) भूयोभूय, वारंवारं, रेण, अनेशवार, मुहु, अमकृत, पीन पुन्येन ।

पुनरावृत्ति, म स्त्री (म) पुन पाठ, पुन रच्ययनं २ आवृत्ति प्रत्यावृत्ति (स्त्री) ३ पुन, विधान संपादनं वर्णनं ४ पुनरीक्षण, मशोधनम् ।

पुनरक्ति, मं स्त्री (स) पीनरक्त्य, पुन र्वचनम् ।

पुनर्जन्म, मं पु [म-वमन् (न)] पुन

भंव, पुनरत्पत्ति (स्त्री), प्रेत्यभाव, देहा
तरप्राप्ति (स्त्री) ।

पुनभू, स स्त्री (स) दिरूढा, दिधिषू
(स्त्री) ।

पुनरंशू, स पु (म द्वि) यामनी, आदित्वी
(द्वि) ।

पुनीत, वि (म) पूत, पवित्र शुद्ध, निर्दोष ।

पुन्य, स पु, दे 'पुण्य' ।

पुमान्, स पु (म पुस) नर पु (पू)
रप, वृ (पु) ।

पुरदर, म पु (स) दे 'दर' २ नगरमनक
३ नीर ।

पुरध्री, म स्त्री (म) पुरधि (स्त्री),
कुटुंबिनी २ नारी ।

पुर, अव्य (स पुरम्) अग्रे, अग्रन, मसुरे,
पुरत, पुरस्नात, ममक्ष (सब अव्य षष्ठी के
साथ) २ पूर्व, प्राक्, अवाङ् (सब अव्य
पञ्चमी के साथ) ३ प्राच्या दिशि ।

पुर, म पु (स न) नगर री, पुर् (स्त्री)
पुरा, पत्तन, स्थानीय २ शरीर ३ दुर्ग ।
४ गृह ५ लोक, भुवनम् ।

—द्वार, स पु (स न) नगर, द्वारम् ।

—वासी, म पु (स मिन्) पौर, नागरिक,
पुर-नगर (जन) ।

अन —, म पु (स न) अवराध, शुद्धान

पुरखा, स पु (स पुरुष >) पूर्वजा, पूर्व
पुरुषा, पिता, वंशकरा (प्राय बहु भे) ।
पुरजा, म पु (जा) (पत्रवत्प्रादानाम्) सड
ट, शकल-रु २ अवयव, अङ्गम् ।

चलता—, सु, चलुर ३ उद्योगिन् ।

पुरवा^१, म पु (म पुर >) लघुग्राम, ग्रामटिका ।

पुरवा^२, स पु (म पूर्ववात्) प्राचीपवन ।

पुरधरण, म पु (म न) पुरतिक्रिया, पूर्वा
नुष्ठानम् ।

पुरस्कार, म पु (म) पारितोषिक, उपायन,
प्रतिफल २ आदर, ममान, पूना ।

पुरस्कृत, वि (म) आहृत, ममानित २
प्राप्तोपायन, लब्धपारितोषिक ।

पुरा^१, अव्य (स) पूर्व प्राचीन पुरातन, काले ।
वि, अतीत, प्राचीन (उ. पुरावृत्त) ।

पुरा^२, स पु (म पुर >) ग्राम ।

—कल्प, म पु (स) पूर्वकल्प २ प्राचीन
काल ।

पुराण, वि (म) प्राचीन, पुरातन । न पु
(म न) प्राचीन, कथा आरयान २ हिंदू
नामष्टादश आरयानग्रथा (ब्रह्मविष्णुशिव
पुराणादि) ।

पुरातन, वि (म) पुराण, प्रतन, प्रत्न,
विरतन, चिरतन, प्राचीन । (पुरातनी स्त्री) ।

पुराना, वि (म पुराण) दे पुरानन २ जीर्ण,
शीघ्र, ३ अनुभवित्, सानुभव ।

—सुरोट, सु, वृद्ध, जरठ २ अत्यनुभवित् ।

पुरी, म स्त्री (स) नगरी, नृपावास,
दे पुर' ।

पुरीय, स पु (स न) विद्या, दे 'पाखाना'
२ जलम् ।

पुरु, स पु (म) नृपविशेष, ययाते कनिष्ठ
पुत्र । वि, प्रचुर, बहु ।

पुरुष, म पु (म) मनुज, मानुष, दे
'मनुष्य' २ नर, नृ, पुम ३ परमेश्वर
४ अत्मन् ५ पूर्वन्, पूर्वपुरुष, ६ पति
७ क्रियासर्वनामादीना रूपभेद (व्या)
८ शरीरम् ।

—कार, स पु (स) उद्योग, पुरुपार्थ ।

—घ्नी, स स्त्री (स) पतिघानिनी नारी ।

—धर्म, स पु (म) मनुष्यमात्रधर्म धर्म ।

—धैरियक, म पु (स) नरपथ नरपुणव ।

—पुर, म पु (स न) गाधारदेशराजधानी
(वर्तमान पिशावर) ।

—मेघ, स पु (म) यज्ञभेद, नरमेघ ।

—वार, स पु (म) रविमगल वृहस्पति
शनि, वार-वासर ।

—सूक्त, स पु (स न) ऋग्वेदस्य यजुर्वेदस्य
च सूक्तविशेष (यद् 'सहस्रशीर्षा' से आरभ
होता है) ।

महा—, स पु (म) महानन, नरकुम्भर,
महात्मन् २ दुष्ट, दुरात्मन् ।

पुरुषत्व, म पु (स न) पौरुष, कीर्ष,
साहम २ पुरुत्व, नरत्वम् ।

पुरुपार्थ, स पु (म) उद्यम, प्रयत्न, उद्योग,
परिश्रम, पौरुष, पराक्रम, पर्यकार
२ परथ, प्रयोजन-रह्य (धमार्थकाममोक्षा)
२ शक्ति (स्त्री), बलम् ।

पुरुपार्थी, वि (स थिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन्,
परिश्रमिन्, उद्योग-उद्यम परिश्रम, शील-पर
२ समर्थ, बलवत् ।

पुरपोत्तम, स पु (म) पुष्पधर्म, नरकुन्द, मनुजभ्रष्ट ० विष्णु इ श्रीकृष्ण ।

पुरोहित, म पु (न) पुरोधन (पु), मौखिक धर्ममादिवाग्बिदु याज्ञिक, यानक कृत्वि ।

पुरोहिताई, म स्त्री (म पुरोहित >) पौरोहित्य, पुरोहितकर्म (न) ० पुरोहित दमिणा ।

पुरोहितानी, सं स्त्री (स पुरोहित >) पुरोहित, परनी भार्या ।

पुल, स पु (फा) मेलु, वारण सवर ।
—घोषना, सेतु बध् (क् प अ) निर्मा (जु आ अ) ।

पुलक, म पु (स) रोमाच राम, उद्गम ह्य विकार-उद्भेद, त्वकपुष्प, त्वगदुर २ रत्नभेद ।

पुलकावली, स स्त्री (सं) पुल्कावलि (स्त्री), हर्षोन्मुक्तरोमाणि (न इट्) ।

पुलकित, वि (स) रोमाचिन, रोमाकिन, पुलकिन, नानपुलक, मपुलक, कटकित २ प्रहृष्ट, प्रसन्न ।

—करना, क्रि म, रोमाचयति (ना धा), रोमाणि उद् ह्य (प्रे) ।

—होना, क्रि अ, रोमाणि उद्गम (भ्वा प अ) ह्य (दि प से) ।

पुलपुला, वि (अनु) दे 'पिलपिला' ।
पुलाव, म पु (फा) मामौदन, भक्तानिषम, पलातम् ।

पुलिङ्ग, मं पु (स) बजालभेद, प्राचीन चार्निविरोध ।

पुलिदा, स पु (हि पूला) कुर्न, भार, घोड़नी ।

पुलिन, मं पु (स पु न) तोयोत्थितनट टटी ० कूल, तीर, तट, इ सैवन, सिकता मय तम् ।

पुलिम्, म स्त्री (अ) नगररक्षका, पुरपाला, रक्षापुण्या (बहु) रक्षिण ।

—इन्स्पेक्टर, म पुं (अ) रक्षक-रक्षि, निरापन्न ।

—मैन, म पु (अ) रक्षक, दहधर, रक्षक रक्षान्धि, पुरुष, नगरपाल, राजपुरष ।

—मव इन्स्पेक्टर, स पु (अ) रक्षको निरीक्षण, दे 'मानेदार' ।

—सुपरिस्टेण्डेंट, स पु (अ) रक्षकाध्यक्ष ।
पुवाल, स स्त्री, दे 'पमाल' ।

पुस्त, स स्त्री (फा) दे 'पीठ' २ दे 'पीठी' ।

—दर पुस्त, क्रि वि, 'वशापरपरया' ।
पुस्तैनी, वि (फा पुस्त >) कुलक्रम-वशा परपरा, आगत प्राप्त, परपरीय, परपरीण ।

पुष्कर, स पुं (स न) कमल, पद्म २ जल ३ नडाग-न ४ गणशुनाम ५ तीर्थविरोध ।

पुष्करिणी, म स्त्री (स) कासार र, तगण क, सरनी, मरोवर ।

पुष्कल, वि (स) अधिक, बहु, प्रचुर, प्रभूत, बहुल, विपुल २ पर्याप्त, पूर्ण ।

पुष्प, वि (स) पालित स, बाधित, पोषित, भूत २ बलिष्ठ, पीन, पीवर इ बल, प्रद बधक ४ दृढ ।

पुष्टई, म स्त्री (सं पुष्ट >) पुष्टिकर भक्ष्य मौषध वा, रसायनम् ।

पुष्टता, म स्त्री (म) पीनता, पीवरता, दृढागता ।

पुष्टि, सं स्त्री (स) भरण, पोषण, स, वर्धन ० बलिष्ठता, दृढागता, पीवरता इ दृढता ४ समर्धन, अनुगोदन, दृढीकरण, उपो द्रलनम् ।

—कारक, वि (सं) पुष्टि-कर-दायक, बल बोध-बधक ।

पुष्प, स पु (मं न) कुसुम, प्रखल, मणी चक, सुम, मूल, सुमन, प्रमव, सुमनस् (स्त्री न, क्वबल बहुवचन में) २ आर्तव, अतुल्यत्व, रज ह्राव इ नेत्ररोगभेद (हि पूला) ४ कुदैरविमानम् ।

—करड, —डक, सं पु (सं) उज्जविन्वा प्राचीनशिबोदानम् २ कुसुमकटो ।

—काल, स पु (स) वसत, अतुराज । २ नारीणा आर्तव-रज, समय ।

—कीट, स पु (म) भ्रमर, पटपट २ कुसुमरोट ।

—न, सं पुं (सं) मकरन्द, भ्रामरम्, पुष्परम ।

—प्यन, —बाण, —शर, —पुर, स पु (सं) पुष्पधन्वत् (पुं) मदन, दे 'वामदेव' ।

—पुर, स पुं (म न) दे 'पन्ता' ।

—रम, म पु (म) पुष्पासक, झामर, मकरद ।

—राज, म पु (म) दे 'पुखराज' ।

—रेणु, स पु (म) पराग, पुष्पधूलि (स्त्री) ।

—वाटिका, स स्त्री (स) पुष्प-कुसुम-वाटी उद्यानम् ।

—वृष्टि, म स्त्री (म) पुष्प-कुसुम-आसार वृष्टि ।

पुष्पक, म स्त्री (स पु न) कुबेरविमान २ पुष्प ३ चक्षुरोगमेद ४ पित्तभस्मम् (न) ।

पुष्पित, वि (म) कुमुभित, कुसुमपुष्प, त्रिदिष्ट-युक्त ।

पुष्पोद्यान, स पु (स न) द्वे 'पुष्पवाटिका' ('पुष्प' के नीचे) ।

पुष्प, स पु (स) सिध्य, तिष्य, (अष्टम नक्षत्र) २ पीपमान ।

पुस्तक, स पु (स पु न) ग्रथ, पुस्त-नी ।

पुस्तकालय, स पु (स) ग्रथ, आलय अगार शाला ।

पूँड, स स्त्री (म पुच्छ च्छ) लागू(गु)ल, लम्. (बालोंवाली पूँड) बालधि, बालहस्त २ पृष्ठपश्चाद्भाग ३ दे पिठलगा ।

पूँची, स स्त्री (स पुन >) मूल, देव्य धन, मूल २ संवितसर्पाति (स्त्री) धन, पुन रास ।

—पति, म पु, द्रव्यत्व, धर्मि, कीर्तिशर, धनाढ्य ।

पूआ, स पु (म पूय) अपूप, पिष्टक ।

पूग, स पु (स) गु(गु)वान, क्रमु, क्रमुक २ ममुदाय, समूह ३ (स न) क्रमुक गु(गु) वाच, फलम् ।

—फल, पूगीफल, स पु, (म पूगफल) पूग, त्रिका कण-कणा, उद्वेगम् ।

पूडा, स स्त्री (हि पूना) पूछा, प्रच्छना, अनुयोग, प्रमन, निशामा २ आदर समान, प्रतिष्ठा ३ आवश्यकता, प्रयोग ४ अन्वेषण णा, गवेषण णा ।

—गाछ, } म स्त्री, दे 'पूछ'(१) ।

—ताड, }

पूडना, कि स (म पू(प्र)च्छन) प्रच्छ (तु प अ), प्रदनयति (ना धा), अनुयुत् (रु आ अ) २ आट्ट (तु आ अ)

ममन् (प्रे) । म पु, प्रच्छन-ना, पूछा, अनुयोग, निशामा ।

पूडने योग्य, वि, प्रष्टव्य, निशासितव्य, अनु योक्तव्य ।

पूडनेवाला, स पु प्रष्ट, अनुयोक्त, निशासु ।

पूडा हुआ, वि, पू, अनुयुक्त, निशामित इ । वात न—, मु, न आट्ट (तु आ अ) न ममन् (प्रे) ।

पूचक, म पु (स) पूचयित्, अर्चक, उपा मरु, आगधर भक्त ।

पूजन, म पु (म न) पूजा, अभि, अर्चन ना अर्चा, आराधन-ना, सपर्या, उपासन-ना २ समानन, सत्करण ३ वदन-ना ।

पूजना, कि स (म पूजन) पून् (तु), अभि, अर्च (म्वा प ने, तु), उपान् (अ आ से), आराध (स्वा प अ), मा (म्वा उ अ) २ समर (प्रे), आट्ट (तु आ अ) ३ वद् (म्वा आ से), नमस्यति (ना धा) ४ उत्तोज दा । म पु, दे 'पूजन' ।

पूजनीय, वि (स) दे 'पूज्य' ।

पूजा, स स्त्री (म) दे 'पूजन' ।

पूजाहं, वि (स) दे 'पूज्य' ।

पूजने योग्य, वि, दे 'पूज्य' ।

पूजनेवाला, स पु, दे 'पूचक' ।

पूजा हुआ, वि, दे 'पूजित' ।

पूजित, वि (म) अभि, अर्चित, आराधित, उपामित २ समानित, आहृत, गच्छन ३ वदित, नमस्कृत ।

पूज्य, वि (म) पूजनीय, पूजयितव्य, पूजाहं, अभि, अर्चनीय, आराधनीय, भजनीय २ अदरणीय, माननीय, सत्कार्य, वदनीय ।

—पाड, वि (स) परम-अत्यंत, पूजनीय आराध्य ।

—पूना, म स्त्री (स) सत्कार्यमत्कार, अर्चनीय पूजनीय, वन्दना-समादर ।

पूडा, म पु (स पूप) अपूप, पिष्टक ।

पूडी, म स्त्री दे 'पूरी' ।

पूत, वि (सं) दे 'पवित्र' ।

पूत, म पु, दे 'पुत्र' ।

पूतडा, म पु (हि पूत) शिशु-नाल्क, आस्तर-विस्तर ।

—(डो) का अमोर, सु परपरागत वामागत परपरीण, धनिक धनाढ्य ।

पूतना, स स्त्री (म) राक्षसीविशेष २ बाल रोगभेद ।

पूति, स स्त्री (स) दे 'पवित्रता' ।

पूनी, स स्त्री (म पू >) पिजिरा, तुल, नालिका वार्तिका ।

पूप, स पु (म) अपूप विष्टव ।

पूर, स पु (म) नल्लविष्टव वृहण २ व्रण संशुद्धि (स्त्री) ।

पूरक, वि (स) पूरयित्, पूरणकत् २ मौलिक परिशिष्टात्मक । म पु, बीजपूर, मानुसुग, सुफल २ गुणवाक (गणित) ३ प्राणा वामभेद ।

पूरण, म पु (म न) भरण, निचयन, मकुलीकरण व्यापन २ निर्वहन, निष्पादन, समापन, म्पादन ३ अकगुणनम् । वि, पूरक, पूरयित् ।

पूरना, क्रि स (म पूरण) पूर् (जु) पूभू (जु उ अ) २ आच्छद् (जु) ३ मपद् माभू (प्रे) ४ ध्मा (भ्वा प अ), (बालुना) पूर् (न) ५ दे 'वटना' ।

पूरव, स पु, दे 'पूर्व' ।

पूरवी, वि, दे 'पूर्वी' ।

पूर, वि (स पूण) पूरित, व्याप्त, सरीर्ण, आसममा, कुल, आविष्ट, निचिन, समूह २ समग्र, समस्त, सख्य, ३ अविकल, निर्दोष ४ दशेष्ट, पर्वोत्त ५ सपत्र, म्पादित, वृत्त ।

—करना, क्रि म समाप (स्वा उ अ) निर्धुं (प्रे), नि शिष (प्रे), अत गम् (प्रे), मपूर (जु) ।

—होना, क्रि अ, समाप (वर्म), अत गम् (भ्वा प अ), नि शेवी भू, मपद् (दि आ अ) ।

—उत्तरना, सु, यथोचित वृत् (भ्वा आ से) २ मपत्नी भू ।

—होना, सु, स्वर्ग दिव गम्, वृ (तु आ अ) ।

पूरित, वि (म) दे 'पूरा' (१) । २ श्रम, सुष्ट ३ गुणित, आनि हत ।

पूरी, सं स्त्री (म) पू(षो)लिका, पूषिका ।

पूतना—, वृष्टुली ।

पूणं, वि (स) दे 'पूरा' (१५) ।

—काम, वि (स) आतकाम, सफलमनोरथ २ निष्काम, अकाम, निरिच्छ ।

—चंद्र, स पु (स) पूर्णेन्दु ।

—विराम, स पु (स) वाक्यपूर्णताच्छिद्रम् ।

पूर्णतया, } क्रि वि (म) अशेषन, सर्वथा,

पूर्णत, } साकल्येन, सामग्र्येण, मामस्त्येन, निरवशेषम् ।

पूर्णाता, स स्त्री (स) ममग्रता, माकल्य २ सिद्धि, समाप्ति (स्त्री) ३ अविच्छेदता, निर्दोषता ४ पूरितत्व, समृतता ।

पूर्णमासी, स स्त्री (स) दे 'पूणमा' ।

पूर्णाहुति, स स्त्री (म) यागताहुति (स्त्री) २ अनुष्ठानावमानकृत्यम् ।

पूर्णमा, स स्त्री (म) पूणमा, पौर्णमासा, राका, पिण्या, चाद्री सिता, शुभमती, ज्योत्स्नी ।

पूर्त्त, स पु (स न) पालनं २ बापीकूप तटाकादिनिर्माणम् ।

पूति, स स्त्री (म) (आरव्यस्य) समाप्ति निवृत्ति सिद्धि निष्पत्ति (स्त्री) २ पूणता, ममग्रता ३ पूरण ४ गुणन ५ अपक्षितद्रव्यो पन्थापनम् ।

पूर्व, स पु (म पूर्वा) प्राची, पूर्व, दिशा दिश (स्त्री) आशा, ऐश्री २ पूर्वदेश, वीरमत्यजन पद । वि, अग्रग, पूर्वेग, अग्र पूर्व गामिन् वानिन् २ पुराण, प्राचीन ३ दे 'रिच्छन्' । क्रि नि, प्राक्, अर्वाक् (दोनों अव्य) ।

—काय, सं पु (स) (पञ्चाना) देहायभाग २ (नराणा) देहोर्ध्वभाग ।

—वाल, स पु (म) प्राग् पूर्व प्राचीन, मनय काल ज्ञेय ।

—कालिक, वि (म) पुराण, प्राचीन, प्राग्

—कालीन, वि (म) कालीन, पुरातन, प्राक्तन ।

—रत्त, वि (स) प्राग्बिहित २ पूर्ववमहत् ।

—तम, स पु [स तमन् (न)] प्राग्बनि (स्त्री) ।

—दिशा, स स्त्री (म) दे. 'पूर्व' स पु (१) ।

—पक्ष, स पु (म) प्राग्भीय, प्रदन गता, चोप, देश्य, पवित्रा २ वृणणम् ३ दे 'पूर्ववाद' ।

—पक्षी, स पु (सं-क्षिन्) वार्दित्, सिद्धांत विरोधित् ।

—मीमांसा, स स्त्री (म) तैमिनिमुनिप्रणीत
दशमग्रथविशेष ।
—वत्, क्रि वि (म) यथापूर्व, पूर्वमङ्गम् ।
—वर्ती, वि (स निन्) प्राक्वर्तिन्, पूर्व-अग्र,
गामिन् ।
—चाद्, म पु (स) भाषा, भाषापाद पूर्व,
पक्ष, प्रतिष्ठा, अभियोग दे 'नालिश' ।
—वाश्री, म पु (स दिन्) अभियोगवृ
त्तिन्, वादिन् शिरोवर्तिन्, दे 'मुद्गर' ।
पूर्वच, स पु (स) पूर्वपुरुषा, पितर (बहु)
२ अग्रज, स्व्यायान् भ्रातृ । वि, प्रागुत्पन्न ।
पूर्वत, अव्य (स) प्रथम, प्रथमत २ पुरत
अग्रज (मत्र अव्य) ।
पूर्वतन, वि (स) पुरातन, प्राचीन, प्रतन,
प्रत्न ।
पूर्वापर, वि (म) अग्रिमपश्चिम पूर्वपरवर्तिन् ।
म पु प्राचीनप्रतीची (दि) २ हानिलाग्यो
(दि) ।
पूर्वाभिमुख, (वि स) प्राङ्मुख (स्त्री स्त्री) ।
पूर्वाङ्ग, म पु (स) त्रिधा विभक्तदिवमस्य
प्रथमभाग, प्राङ्, प्रातरङ्ग ।
पूर्वा, वि (म पूर्वीय) प्राञ्च, पौरस्थ्य, पूर्व
देशीय, पूर्वदिक्स्थ, प्राच् [ची (स्त्री)] ।
स स्त्री, पूर्वीयभाषाविशेष २ रागिणीभेद ।
पूर्वीय, वि (स) दे 'पूर्वी' वि ।
पूला, म पु (म पूल) पूलक ।
पूप, पूय, स पु, दे 'पौय' ।
पृथक्, वि (स) भिन्न, व्यतिरिक्त, विदिल्ल
विभक्त, अमलग्न । अव्य, विना, क्ते, अत
रेण (मत्र अव्य) ।
—पृथक्, अव्य, वि, वि, भिन्नम् ।
पृथक्ता, स स्त्री (म) पृथक्त्व, पृथग्भाव,
पार्थक्य, भिन्नता, विरलेष, विभेद ।
पृथा, स स्त्री (म) कुन्ती, पाण्डुपत्नी,
सुभिष्ठिरादिजननी ।
—तनय, स पु (य) सुभिष्ठिर, भीम,
अर्जुन, (प्राय अर्जुन, पार्थ) ।
—पति, म पु (म) पाण्डुनृप, कुन्तीपति ।
पृथिवी, म स्त्री (म) पृथ्वी, पृथिवि (स्त्री),
क्षिति भू भूमि (स्त्री), धरा, धरित्री, क्षोणी,
वसुधा, वसुमती, वसुधरा, अवनी नि (स्त्री),
मेरिनी, धरणी-नी (स्त्री), मटी हि (स्त्री),
अचलशैला, अचला, स्थिरा, इडा ।

—तल, म पु (स न) भू धरणी, तल २
समार ।
—नाथ, स पु (स) भू, पति पाल ।
पृथु, वि (म) विलीर्ण, विस्तृत, विशाल,
२ बहु, प्रभूत इ विशिष्ट ।
—कीर्ति, वि (स) अतिशयस्विन् । सं
स्त्री, वसुदेवभगिनी ।
—दर्शी, वि, (स) दूरदर्शिन्, प्राज्ञ ।
—लोचन, वि, विशाल, नेत्र-नयन ।
—शेखर, म पु, (म) गिरि, पर्वत ।
—स्कन्ध, म पु (स) शूकर, कोल ।
पृष्ट, वि (स) अनुयुक्त, प्रशिनत, विधामित ।
पृष्ट, म पु (स न) दे 'पीठ' (१२) ।
२ पुस्तक, पत्र पर्गै इ पुस्तकपृष्ठम् ।
—पोषक, म पु (स) सहाय यक, उपकर्तृ ।
पँग, म स्त्री (म प्रेंया >) दोलन, प्रेंक्षण,
दोलाति (स्त्री) ।
—चडाना या चडाना, सु, सवेग प्रेंक् (प्रें),
उच्चै प्रेंखोलयति (ना भा) ।
पेंदा, स पु (म पिंड-ड >) तल, अधोभाग,
दुष्ण ।
पेंसिल, स स्त्री (अ) अङ्गुली, स्वयत्सेखनी,
वाँका, वगमातृ (स्त्री) ।
पेच, म पु (फा) व्यावर्तन, मोटन, आ कुचन
२ विन, विगत प्रत्युह इ धूर्तता, शास्त्र
४ उष्णीप-व्यावर्तन ५ यत्र ६ यत्रावयव
७ वलयकालक ८ पतगच्छसमग्रन ९ (मङ्ग
युद्धादीना) वपगोपाय, युक्ति (स्त्री)
१० उष्णीपादेरलकार ११ दे 'पेचिश्च' ।
—रुश, स पु (फा) *वलयवीर्णार्थ २
*विधानकर्ष ।
—खाना, क्रि अ, मडली-वर्तुली भू ।
—डालना, क्रि स, पतगच्छत्राणि मिथ सदिल्ल
(प्रे) ।
—ताप, म पु (फा) अत, कोप कोध ।
—द्वार, वि (फा) आकुचित, व्यावर्तित
२ गहन, कठिन, दुर्बोध इ सदिल्ल, मग्रथित ।
—पडना, क्रि अ, पतगच्छत्राणि परस्पर मदिल्ल
(दि प अ) ।
—वान, म पु (फा) बृहद्भूमपानयन्त्र
२ भूमपानयन्त्रस्य बृहन्नाली ।
पेचक, स स्त्री (फा) स्रज-तन्तु, गोल्-गोल्म् ।

पेचिना, स स्त्री (फा) प्रवाहिका आमरक्तम्
२ उदरवेदनाभेद ।

पेचीदगी, स स्त्री (फा) शैथिल्य, वक्रत्व
२ दुर्बोधता क्लिष्टत्व, गहनत्वम् ।

पेचीदा, वि (फा) } दे 'पचदार' ।
पेचीला, वि (फा पेच) }

पेज, स पु (अ) पुस्तक, पृष्ठम् ।

पेट, स पु, (स पेट >) उदर, पटर र
कुक्षि, फंटा, मलुक २ गर्भ ३ आमाशय
४ अंग तरण ५ अवनाश ६ विस्तार
७ जीवन, प्राणधारणम् ।

—काटना, सु, धनसचयय अल्पं साद्र (भ्वा
प से) ।

—का घधा, सु, चीवनोपाय, आनीविका
माधनम् ।

—का पदा, सु, अजावरणम् ।

—का हलका, सु, छद्रप्रकृति, तुच्छ, प्राकृत ।

—की आग, सु, मृधा, इमुक्षा ।

—की आग बुझाना, —सु, धुधा निवृत्त (प्रे) ।

—गिरना, सु, गर्भ पत्र (भ्वा प से) सु
(भ्वा प अ) ।

—गुढगुडाना या बोलना, सु, कर्दन अन्
(दि आ मे) कद् (भ्वा प से) ।

—दिराना, सु, निगक्षारिद्र य प्रकटयति (ना
धा) ।

—पालना, सु, कृच्छ्रेण वीव् (भ्वा प से),
यथाकथञ्चिन् उदरं पृ (जु प से) ।

—पीठ एक होना, सु अत्यंत सि (भ्वा प
अ), वृशीभू ।

—फटना, सु, क्षीर (वि) भू, धैर्यं मुच्
(तु प अ) ।

—फूलना, सु, हासातिशयेन उदर रफग (भ्वा
आ से) निव (भ्वा प से) ।

—भर, सु, उदरपूत यावत् २ यथेष्टम् ।

—भरना, सु, म परितुष् (दि प अ),
परि, तुष् (दि प अ) २ उदर पूर (र्भ्रम्) ।

—मे चूहे कूटना या दौड़ना, सु, निररा धुष
(दि प अ), अत्यन्त अशनायति (ना धा) ।

—रहना, } सु गर्भं धृ (चु), अन्नवती

—से होना, } भू ।

—वाली, सु, गर्भिणी, गर्भवती, अन्नवती ।

—से पाँव निकालना, सु सग्न कुमार्गे
प्रवृत् (भ्वा आ मे) ।

पेटा, स पु (हि पेट) मध्य, मध्यभाग २
विस्तृतविवरण इ दे 'पिंगरा' ४ मीमा
५ परिनि ६ मरिप्रवाहमार्ग ७ नदी विस्तार
८ पश्च ९ *पतगमुत्रशिक्षिभ्यम् ।

पेटो, स स्त्री (र्भ्रं) पेटिका, लुपु पेट के
पेग, मजूषा, समुद्रग २ नापितकोष प ।

पेटी, स स्त्री (हि पेट) कटि-मूत्रवध,
मेगला, वाची २ दुलुगुल्लिम्भम् ।

पेटीकोट, स पु (अ) चोरी, पटवान् ।

पेटू, वि (हि पेट) औदरिक, उदर-क्षुधि
भरि, अग्र, वस्त्र ।

पेटेट, वि (अ) विशिष्टाधिभाररक्षिता भवरचना ।

पेटन, स पु (अ) मरुतक दे ।

पेटोल, स पु (अ) *प्रन्नरलीकम् ।

पेटा, स पु (देश) (मक्रेद) पीनपुष्प,
कुमाद, पीनपुष्प, पुष्प दृष्ट, क्ल (पांन
पेटा-दे 'कुम्हवा') ।

पेट, स पु (स पिट ट >) दे 'वृम' ।

पेटा, स पु (स पिट) निलागपिट-ट २
अर्द्धचूर्णम् ।

पेटो, स स्त्री (हि पेट) तरु, स्कन्ध प्रकार
२ ववन्ध ३ नागवल्लीदलभेद ४ सट्टब्जो
नीनीपुष ।

पेटू, र्भ्रं पु (हि पेट) वस्ति (पुं स्त्री)
२ गर्भाशय ।

पेटवी, स स्त्री, दे 'पिदी' ।

पेन्धान, स स्त्री (अ) वार्द्धक्य-भूवसेना,
वृति (स्त्री) ।

पेन्धानर, स पु (अ) पूवमेवावृत्तिभोजिन् ।

पेन्मिल, स स्त्री (अ) दे 'पैमिल' ।

पेपर, स पु (अ) पत्र, दे रागत्र २ लेख,
लेखपत्रं ३ वृत्त ममानार, पत्रम् ।

पेय, वि (म) पानाय, पानार्ह, धेय । स पु,
पत्नीययाश्च २ च्च इ दुग्धम् ।

पेयूस्, स पु (म पे(वी)पुष प) मत्त व्रम
भृताया गो शीर २ अमृत ३ अभिनवकृतम् ।

पेरना, वि स (सं पीनन) (रानैरादिन्)
निपाट् (सु), नि'ट्टु (भ्वा प अ)

२ निररा पीट् (सु)-अद् (स्व प सु) ।
पेलना, कि स (स पीटर्न) सहमा निविद्

(प्रे) बन्ना अन प्रविश (प्रे) २ (हस्ता
दिक्तेन) प्रविचल (प्रे), प्रगुद प्रवृत् (प्रे)
३ उपेक्ष (भ्वा आ से) अवाण (चु)
४ त्यन् (भ्वा प अ), प्राम (दि प
से) ५ बल प्रयुन् (ह आ अ) ६ ७
दे पेना (१२)।

पेलवाना, कि प्रे व 'पेलना' के प्र रूप।
पेला, म पु (हिं पेलना) कलह, वगुद
२ अपराध, दोष ३ आक्रमण ४ (बन्ध)
अपनारण नचलनम्।

पेश, कि वि (फ) अग्रे पुर, पुरत,
समुख (सत्र अन्व)।

—आना, मु, व्यवह (भ्वा प अ), आवर्
(भ्वा प से) २ गृह्य (भ्वा आ से)।

—करना, मु पुरत स्था (प्र स्थापयति)
दृन् (प्रे) २ उपह (भ्वा प अ), क
(प्रे अर्पयति)।

—चलना या जाना, मु, प्रमुख वृत्।

—होना, मु, उपस्था (भ्वा आ अ), पुरत
स्था (भ्वा प अ)।

पेशगी, म स्त्री (फा) प्राग्दपमूल्य, *अमर्थ।

पेश (प, स) ला, वि (म) स्रकुमार,
मृदु, मृदुल २ तनु क्षीण ३ सुन्दर, मनोस
४ विग, दक्ष ५ छलिन्, मायिन्।

पेशवा, स पु (फा) नेतृ, नायक, अमगी
० पुरोहित ३ महाराष्ट्रमायोपाधि।

पेशवाई, स स्त्री (फा) प्रत्युदगमन, दे
अगवानी २ नेष्ट्वम्।

पेशा, म पु (फा) व्यनसाय, उपनीविका,
वृत्ति (स्त्री)।

—कमाना वा करना, मु वेदयवृत्त्या
निवाह क।

पेशानी, म स्त्री (फा) मन्त्र ० अन्व
३ अमभाग।

—पर बल आना वा पडना, मु, द्युष (दि प
अ), दुरूप (दि प मे)।

पेशान, म पु (फा, मि० म प्रसव) मूत्रम्।

—की अधिकता, स स्त्री, मूत्र, मोह
आधिक्यम्।

—ज्ञाना, स पु (फा) मूलरूप, मेहनशाला,
प्रसन्नवागारम्।

—बल कर आना, स पु, मूत्रवृत्तम्।

—रकना, स पु, मूत्र, रोष लग्न।

पेशावर, म पु (फा) व्यवमानिन्,
उपजीविन्।

पेशावर, स पु (फा पेश + अवर >)
पुरषपुरन।

पेशी, स स्त्री (फा) व्यवहारदहन, विचार
२ उपपुर, स्थान स्थिति (स्त्री), *पुरोभाव।

पेशी, म स्त्री (स) (देहस्था) माम पिनी
ग्रथि (पु) ० वज्र ३ अन्-उ ४ अंसि
कोश प ५. गभाविष्टनचममयरोष।

पेशानगोड़े, म स्त्री (फा) भविष्यद्वाद,
अनागतवधनम्।

पेषण, स. पु (म न) चूान, मर्दन खानम्।

पेषणी, स स्त्री (स) पेषणशाला, पेषणि
(स्त्री), पट्ट गृहात्मन् (पु)।

पैजन् नी, स स्त्री (हिं पायै + अनु. क्षन >)
पादागद, नूपुर-र, मजीर-रम्।

पैठ, म स्त्री (स पट्टस्थान) दे 'बाजार'
२ दे 'दुकान'।

पैड, स पु (स पाददट >) पदन्वयन,
चरणभान, क्रमण २ पद, क्रम ३ मार्ग।

पैडा, म पु (हिं पैड) गय, पथ, पयिन्
२ मदुरा, वातिशाला ३ रीति (स्त्री),
प्रणली।

पैताना, म पु. (दि पायै) सचन
पदधान, *गदतान।

पतालस, वि [स पचचत्तरिंशत् (नित्य
स्त्री)]। म पु, उक्ता मख्या, तदनी
(४-) च।

पैतीस, वि [स पचत्रिंशत् (नित्य स्त्री.)]।
स पु, उक्ता संख्या, तदनी (३-) च।

पसट, वि [स पचपष्टि (नित्य स्त्री)]।
स पु, उक्ता मख्या, तदनी (६-) च।

प, अन्व (म पर) परता स्थि, पर ० जन
तर, तदनु ३ निश्चयेन, अवश्यम्।

पौ—, यदि।

पौ—, तदा।

पै, अन्व (हिं पास वा म प्रति) मसीपये,
निकट-डे २ प्रति, दिशि।

पै, प्रत्य (स उपरि) अधि, प्राय सप्तमी
विभक्ति मे = दाग, प्राय तृतीया विभक्ति मे ।
पुकेट, म पुं (अ) लघुकृत् २ पत्रकीश ।
पेगावर, मं पु (का) दशहृत, धर्मप्रवक्तक ।
पेगाम, म पु (का) मदेश बार्ता ।
पेट, स स्त्री (म प्रविष्ट >) प्रवेश, प्रविष्टि
(स्त्री.) २ गति प्राप्ति (स्त्री), गतागतम् ।
पेट, म पु (अ) पत्रालय ।
पैडी, म स्त्री (हि पैर) ३ 'भीडी' ।
पतरा, म पु (स पदान्त >) युद्धे पादन्वयस
प्रकार ।
—बदलना, सु पादन्वयस परिवृत् (प्रे) ।
पैतृक, वि (म) विदु भवविद्वि विषयक, पित्र्य,
पैत्र [पैतृकी, पैत्री, (स्त्री)] ।
पैत्त, वि (म) पैत्तिक, पित्तप्रकोपज, पित्त,
रुग्नि उद्भूत ।
पत्तल, वि (स) पीतलक पीतक-पित्तल,
मय निर्मित-सम्बन्धिन ।
पत्र, वि (म) दे० 'पैतृक' ।
पटल, क्रि वि (स पाद >) पादचारी भूत्वा,
पद्भ्यामेव, यान विन्दा । वि, पाद चारिन्
गमिन् । मं पु, पदिक, पादय, पादगामिन्,
पदान नि, पदानिक, पदय, पति, पदय
२ पत्तय, पदानय, पदानिका (सद बहु) ।
पैदा, वि (का) जल, उत्पन्न २ प्रवृत्ति,
आविर्भूत ३ आजन्त, प्राप्त ।
पैदाइश, म स्त्री (का) उत्पत्ति (स्त्री),
जन्मन् (न) ।
पैदाइशी, वि (का) महान्, औत्पत्तिक
२ स्वाभ विर, प्राहुतिर, नैमागिक ।
पट्टावार, म स्त्री (का) दृष्टिपाल, शस्य
२ भाय, अवायम ।
पैना, वि (म पैण >) तीक्ष्ण, जिज्ञि(शा)न,
तेजिन, क्षुण्ण । म पु, कृपाण, मोक्ष-वैशुक्रम ।
पमाइश, म स्त्री (का) मानं, प्रपरिमाणं,
माननम् ।
—करना, क्रि स, दे 'मापना' ।
देमाना, म पु (का) मानं, मान, दट श्ल
३, प्रपरि, माणम् ।
पैर, म पु, दे 'पर्व' ।
—गादी, स स्त्री, द्विचकी क्रिका, पादयानम् ।
पैरना, क्रि अ (सं प्लवनं) दे 'पैरना' ।

पैरवी, स स्त्री (का) अनु-भगमनं मरण,
२ जाशरपालन ३ पक्ष, मंडन-समर्थन ४
उद्यम, प्रयत्न ।
पारा, पैराभाफ, सं पु (अं) (पस्त्रावादिबस्य)
मट, भाग, अनु परि, च्छेद ।
पैराक, म पु, दे 'तैराक' ।
पैराव, सं पु, दे 'हुवव' ।
पैराशूट, सं पु (अ) *उत्पन्न उत्र, *परिष्कृतम् ।
पैरोकार, सं पु (का पैरवीकार) अनु
यायिन् गामिन् २ पक्षसमर्थन, सहायक ।
पैरोल, स पुं (अं) प्रतिष्ठा, सगर ।
—पर, वि, प्रतिष्ठा-संगर, बद्ध ।
पैवंद, स पु (का) पटलट ट, छपित
शकल २ वृक्षानरनिवेशित, प्ररोह शाखा,
दे 'कलम' ।
—लगाना, क्रि स, वृक्षान्ते निवेश (प्रे)
२ पटलटै सिव (दि प से)-स्था
(जु उ अ) ।
पैवंदी, वि (का) दे 'कलमी' ।
पैशाचिक, वि (स) पैशाच, आसुर, भीत
२ घोर, बोभत्य, क्रूर, निर्दय ।
पैशाची, स स्त्री (सं) प्राकृतभाषाविशेष ।
पैशुन्य, सं पुं (स न) दे 'पिशुनता' ।
पैसा, सं पु (स पणाश >) पण, पणक
२ धन, वित्तम् ।
पैसेवाला, सु, धनिक, धनाढ्य २ पणार्थ ।
पोगा, म पु (मं पुटक >) कीचकपर्जन
(न), अन्न शून्यबेणुनाली । वि, शून्यगर्भ,
शून्योदर २ जन्, अण ।
पोगी, स स्त्री (इह पोगा) > 'बांसुरी' ।
पौंउमा, क्रि म (म प्रौंउम) प्रौंउ (भ्वा
प से) मृत् (अ प से, जु), निघृथ
शुध् (प्र) निघृप् (भ्वा प से) । सं पु,
प्रौंउम, मार्जन, निर्घर्षणम् ।
पौंउने शोय, वि, प्रौंउनीय, निर्घृथ,
शोपनीय ।
—बाला, सं पुं, प्रौंयक, मार्जर ।
पौंला हुआ, वि, प्रौंउत्ति, निर्घृथ, शोपित ।
पेगवर रा, म पुं (मं पुध्वर) दे 'तल्लर' ।
पोट, सं स्त्री (मं पोट >) पोहृत्नी-रिवा
२ राशि ।
पोटला, सं पुं (हिं पोटली) शूर्चं चं, भार-

पोटली, स स्त्री (स मीटली) पोटीका,
लु-कूर्च भर ।

पोटा, स पु (स पुट >) उदर, नडर,
उदराणय २ माहस, शौर्य ३ सामर्थ्य
४ अगुल्यग्र ५ अगुलीनर्वन् (न) ।

पोटाशियम, स पु (अ) दहातु (न),
पोगसम् ।

पोथ, स पु (स) पोथ, पाहित्य, प्रवदण,
होड महानौना २ दाव-वत्र, अभरु,
पोत्रक, पुत्रुक, लिभ ३ वम्ब ४ दश
वर्षो गज ।

पोतडा रा, स पु (हि पोतना) *पोतन
(शिद्युमल) *पोतन ।

पोतना, कि म (म पोतन >) (मुधा
श्रुत्तिवादिभि) लिप (तु प अ) - अण
(रु प से) दिह (अ उ अ) । म पु,
लेपनवन्म् ।

पोता, म पु (म पौत्र) पुत्रपुत्र, न्त् ३ ।

पर—, स पु (म प्रपौत्र) पुत्रपौत्र पात्रपुत्र ।

पोता, म पु (हि पानना) लेपनवन्त्र
२ लेपनकूर्चीविना ३ (लेपनाय) अर्द्ध
श्रुत्तिका ।

—केरना, मु, सवस्व लठ (तु) २ मुधा
श्रुत्तिवादिभि लिप (तु प अ) ।

पोतार्द्ध, स स्त्री दे 'पुतार' ।

पोती, म स्त्री (स पौरी) पुत्रपुत्री, न्त्री ।

पर—म स्त्री (म प्रपौत्री) पुत्रपौत्री, पौत्रपुत्री ।

पोत्या, स स्त्री (स) पोतमम्, नोका
पक्ति (स्त्री) ।

पोथा, म पु (म पुन्त्र) इतर पुन्त्रप्रथ ।

पोथी, स, स्त्री (म पुन्त्री) पुन्त्रक प्रथ ।

पोथीना, स पु, दे 'पुथाना' ।

पोना, कि म, (हि पूआ-ना) उग्रचूर्ण
रोकि रन् (तु) २ राना पन् (म्वा
प अ) ३ दे 'पिरोना' ।

पोप, स पु (अ) रोनीयम, अल्पश
अधिपति ।

—लीला, म स्त्री (अ + स) प्रमा-न्वरविहार ।

पोपला, वि (हि पुल्पुला) दत-दगन-द्वन
विहीन-रहित ।

पोर, सं स्त्री [म पर्वन् (न)] अगुली,
अधि-सधि पवन् २ अगुलीप्रथ्वी मध्यभाग
पर्वन् ३ शरीरवादिप्रथ्वीमध्यभाग, पर्वन् ।

—पोर में, कि वि, पवणि पवणि, सर्वपवसु ।

पोरी, स स्त्री (हि पोर) दे 'पोर' (३) ।

पोल, म प (हि पोला) अवकाश, शून्य
स्थान २ मारहीनता, निस्सारता, शून्यगर्भता,
निगुणता, अनर्पता ।

—खुलना, तु, पाप प्रकटीभू, रोष विहृ(कर्म) ।

पोला, वि (म पोल >) अत शून्य, रिक्त-
शून्य-गण्य-गम-उदर २ निस्सार, तत्त्वहीन
३ दे 'पुल्पुला' [पोली (स्त्री)] ।

पोलिटिक्ल, वि (अ) राजनीतिक, राज-
शासन, विषयक ।

—पुजट, म पु (अ) राजनैतिकप्रतिनिधि ।

पोलो, स पु (अ) दे 'बीगान' ।

पोशाक, म स्त्री (फा पोश) वेश-क, परि-
धान, वस्त्राण (बहु) ।

पोशीदा, वि (फा) युध, प्रच्छत्र ।

पोपक, वि (मं) पालक, पालयित्, पोप
यित्तु सवदक पोष्ट २ सहायक ।

पोपण, म पु (म न) पालनं, भरण, सवर्द्धन
२ पुष्टि (स्त्री) ३ माहाय्यम् ।

पोपित, वि (म) पालित, सवर्द्धित ।

पोप्य, वि (म) पालनीय, सवर्द्धनीय ।

—पुत्र, म पु. (म) दत्तक ।

पोमना, कि म (म पोपण) दे 'पालना'
(१२) ।

पोस्ट, म स्त्री (न) पद, अधिकार २. पत्र-
वाहनस्थान ३ दे 'टाक' ।

—आक्रिम, म पु (अ) पत्रालय ।

—कार्ड, म पु (अ) पत्रम् ।

—मार्टम, म प (अ) शवपरीक्षणम् ।

—मास्टर, म पु (अ) पत्रालयाध्यक्ष ।

—मैन, म पु (अ) पत्रवाहक ।

पोस्टन, म स्त्री (अ) पत्रशुल्कम् ।

पोस्त, सं पु (फा) स्वसिन्धुस्त्वस फल
२ स्वस्वनवृषक ३ त्वच (स्त्री) ४, वल्कल
ल, वल्क-वन् ।

पोस्ती, म पु (फा) स्वस्वनफलमेविन्
२ अलम, मधर ।

पोस्तीन, म पु (फा) *चर्मचुक ।

पोचा, स पु (हि पाच) सार्द्धपचपुनसूची ।

पौंड, स पु (अ.) निष्क, स्वामुद्रा(१)
अर्द्धसेर देहीय आणलतोल् ।

पौंडा, स पु (स पौंड) पौंडम् ।
 इक्षुमेर ।
 पौ,^१ स स्त्री (स पाल >) मित्रण रदिम,
 ज्योतिम् (न) अहमुंस, उषा ।
 —फटना, मु, विप्र, भात जन (दि आ मे)
 अलग उत्तर (अ प अ) ।
 पौ,^२ स स्त्री (स पद >) अक्षपातभद्र ।
 —बारह होना, मु, जि (स्वा उ अ)
 २ भाष्य उत्तर (अ प अ) ।
 पौंडर, सं पु (अ) क्षां कूर् २ पटवामक
 पिछान ।
 पौड़ना, क्रि अ, दे 'लेटना' ।
 पौत्र, स पु (स) दे 'पोता' ।
 पौत्री, स स्त्री (सं) दे 'पोती' ।
 पौद, स स्त्री (स पोत >) बालवृक्ष वृक्षक,
 २ स्थानातरे आरोपणीय उद्भिज्ज ३ मनान,
 वंश ।
 पौंदा, पौधा, स पु (स पोत >) क्षुद्रपादप,
 वृक्षक, उद्भिज्ज, बालरु २ धुप, गुल्म ।
 पौन,^१ वि (स पादोन) त्रिचतुद, त्रितुय,
 त्रिपाद [पौनी (स्त्री)] ।
 पौन,^२ स पु स्त्री दे 'पवन' ।
 पौना, सं पु (स पादोन) पादोनगुणनपौनी ।
 वि, दे 'पौन' ।
 पौने, वि (स पादोन) दे 'पौन' ।
 —सोलह आने, मु, प्राय सार-पन-मानस्त्वेन
 सामक्षयेण ।
 पौर, वि (स) नागरिक पुं नगर मन
 धिन् जन ।
 —वन्या, स स्त्री (सं) पौरनगर पुर
 नगर-वन्या कुमारी २ नागरी पागाना ।
 —जन, स पु (स) पौर न नागर
 नागरिक, पीर, पुर, पुरनगर-व सिन् ।
 —मुख्य, स पु (स) पौरवृद्ध मदापी ।
 —रथ, स पु (स न) मद्रनागरिकता ।
 पौराणिक, वि (स) पुराणमन्त्रिन् २ पुराण,
 वेत्तु पाठक २ प्राचीन ३ कार्यान्तिक ।
 पौरिया स पु (दि पीरि) द्वारपत्त दा स्व ।
 पौरी सि-र्य, स स्त्री (सं प्रती । >) (नगर
 दुर्गादिना) द्वार २ दे 'उडोरी' ।
 पौरप, स पु (सं न) पुरुषत्व, पुंत्व २ पुं
 पार्थ, उद्यम, उद्योग ३ साहमय पगात्रम ।
 वि, पुरुषसंबन्ध, मानुष, मानव ।

पौरुषेय, वि (स १) पौरुष, मानराय, ज्ञानव
 मनु-य, रचित ।
 पौर्णमासी, स स्त्री (स) दे 'पौर्णमा' ।
 पौना, स पु (स पाद) (सर) पाद
 २ पादमानपात्रम् ।
 पौप, स पु (स) निष्य, तीष, पीपिक,
 हैमन महस्य ।
 पौष्टिक, वि (स) पुष्टि, कर मारन, बल-वीर्य,
 बद्ध ।
 पौसर-ला, पौंसाला, स स्त्री (स पय श ला)
 प्रपा, दे 'सबोल्' ।
 प्याऊ, स पु (स प्रपा) पय श ला,
 दे 'सरील्' ।
 प्याङ्ग, स पु (का) पलाहु, मुसद्रूपण,
 उष्ण शूद्रप्रिय, कुमिन्, देवन, बहुपन,
 रोचन, भुस्यमन ।
 प्याङ्गी, वि (का प्याङ्ग) पलाण्डुवर्ण ।
 प्यादा, स पु (का) पादग, पाङ्ग, पत्ति,
 पशानि २ दूत, मदेसाहर ३ शारिभेद ।
 प्यार, स पु (दि प्यारा १ प्रीति (स्त्री),
 प्रेमन् (पु न), स्नेह, अनु, राग, भाव,
 प्रणय, अभिनिवेश २ लालन, सुम्भन
 आलिंगन इ ।
 —करना, क्रि स, भाव अनुराग वध् (इ
 प अ) कम् (स्वा आ से) स्निह (दि
 प स मत्तमी व माथ) २ लल् (पु),
 आर्ति (स्वा प से), परिभ (स्वा
 आ अ) पुन (स्वा प से) ।
 प्याग, वि (सं प्रिय) दयित वचन, वान,
 प्रेमपन २ हृष, रन्ध, मनोस, रसिरा,
 रन्ध [प्यारी (स्त्री) = प्रिया, बल्लभा, उरिता
 २ कर्माङ्गी, हृषा इ] ।
 प्याला, सं पु (का) चपक न, शरान ।
 प्यालर, स स्त्री (का) शरारत, लुचपद ।
 प्यास, स स्त्री (सं शियामा) शृष (स्त्री) ।
 कृष्णा, कृषा, तप, उदया, सुविहा २ लालन,
 प्रसल्लम् ।
 —सुज्ञाना, सु, कृषा शम् (प्रे) अपनी
 (स्वा प अ) ।
 —उद्यम, मु, उदम्यति (ना धा), विपामवि
 (सक्षन्) शृष् (दि प म) ।
 प्यासा, वि (दि प्यास) विपालु, कृषार्त्,
 कृषित, लपुल्, तपित ।

प्रत्यय, स पु (म) वेपथु, रात्र्यु, दे 'चक्रवी' ।
 प्रकट, वि (म) स्पष्ट, व्यक्त, स्पुट, उल्लग
 वक्रिक २ आविर्गन्, दृष्ट ।
 —करना, क्रि न, प्रकल्पयि (ना धा),
 प्रकरो कृ, प्रकल्प (प्रे) ।
 —होना, क्रि अ, आविर् प्रकटा, भू, प्रकाश
 (भ्वा आ से) ।
 प्रकटित, वि (म) प्रादुर आविर् प्रकटी भूत,
 २ अविप प्रकटी, कृत ।
 प्रकरण, न पु (म न) रीवापर्य, पूर्वावर
 मवध, प्रसंग २ अध्याय, पत्रिच्छेद ३
 पृथक्स्थानभेद ।
 प्रकर्ष, न पु (म) उल्लय श्रेष्ठत्व उत्तमता
 २ आविर्गन्, प्राच्युष्यम् ।
 प्रकाट म पु (म प न) स्वध, दत्, वा
 २ शास्त्र ३ वृत्त । वि, सुमहत् सुवि
 रूत, सुविशाल ।
 प्रकाश, म पु (म) भेद, वा नति (स्त्री)
 २ रीति (स्त्री), सारणी, विधि ३ सादृश्यम् ।
 प्रकाश, स पु (स) आलोक, उज्वला,
 आभा, आभाम, क्युनि युनि श्रुति त्विष्-
 भान् (म्व स्त्री), भागमन्वोसिन्नेनका (न),
 आ, शीत, प्रभा २ आनप, सयालोक, धर्म
 ३ अभिव्यक्ति (स्त्री), आविर्भाव ४ प्रसिद्धि
 (स्त्री) ५ अध्याय ।
 प्रकाशक, म पु (म) चोत्क, दासिन्, उद्गाप
 २ ख्यापक, प्रकाशयित् ।
 प्रकाशन, म पु (म न) प्रकटी आविष्, -
 कर्ण २ प्रत्यापन, प्रचारण (पुस्तकादि वा) ।
 प्रकाशमान, वि (म) भागमान, चोतमान,
 भादुर २ प्रसिद्ध, विश्रुत ।
 प्रकाशित, वि (म) दे 'प्रकाशमान' २
 उद्गासित, आगन्ति ३ प्रचारित, प्रख्यापित,
 प्रकट ।
 प्रकाश्य, वि (म) प्रकाशनीय, प्रत्यापनीय,
 प्रचारणीय ।
 प्रकीर्ण, वि (म) अवि, र्णा, व्यस्त, विभ्रित,
 विरिष्ण ।
 प्रकीर्णक, वि (म) दे 'प्रकीर्ण' । म पु
 (स पु न) चमर, चामरन् । स पु (स)
 चो, अध । म पु (स न) नाना
 विविध-बहुविध-बहुसंज्ञा २ प्रकरण, अध्याय
 ३ विविधविषयस्थान ।

प्रकृषित, वि (स) अनि, कुषित-कुड-सरब्ध ।
 प्रकृत, वि (म) बालाविक-सात्त्विक [-की
 (स्त्री)] तथ्य, अवितथ, यथार्थ २ सविशेष
 कृत-रचित विहित ।
 प्रकृति, म स्त्री (म) स्वभाव, वृत्ति (स्त्री),
 शील, स्वरूप, धर्म, गुण २ दे 'तामीर' ३
 प्रधान माया, जगत उपादानकारण, पृथ्व्यादि-
 परमाणव (बहु) ।
 —च, वि (स) सहन, स्वाभाविक, सह
 नान, नैसर्गिक ।
 —सङ्ग, स पु (म न) राष्ट्र, राज्य, देश ।
 —मिद्ध, वि (स) सहन, स्वाभाविक, नैम
 तिन्, ओत्पत्तिक ।
 —स्थ, वि (म) स्वस्थ, शान्त, विकार
 क्षोभ रहित ।
 प्रकोप, म पु (म) अत्यत, क्रोध-क्रोध
 मरुत क्रम २ (रोगादीना) प्रमार,
 आभिन्त्य ३ देहधातुविकार ।
 प्रकोष्ठ, स पु (स) कफोर्गोमोमिदन्ध
 पयनो हस्तभाग २ बहिर्द्वारपर्यन्त कोष्ठ
 ३ विशालागम्य ।
 प्रक्षालन, म पु (स न) धावन, मार्जनम् ।
 प्रक्षालित, वि (म) धीन माणित, जलशोधित ।
 प्रक्षिप्त, वि (स) प्राप्त, अपास्त, निरस्त
 २ कालान्तरे मिश्रित योजित ।
 प्रक्षेप, म पु (स) प्रानन, निरस्तन, प्रक्षेपण,
 अपानन २ विकिरण ३ पश्चात् मिश्रणम् ।
 प्रखर, वि (स) उग्र, प्र, चड, प्रबल, तत्र
 २ निशि(शा)न, तीक्ष्णप्र, दे 'तेज' ।
 प्रत्यात्, वि (म) दे 'प्रसिद्ध' ।
 प्रत्याप्ति, स स्त्री (स) दे 'प्रसिद्धि' ।
 प्रगट, वि, दे 'प्रकृ' ।
 प्रगल्भ, वि (स) चतुर, दक्ष, कुशल, प्रवीण
 २ प्रत्युत्पन्नमि, प्रतिभाशालिन् ३ उत्साहिन्,
 साहसिन् ४ निर्भय, अभय ५ वावदूक,
 प्रालम्ब ६ गम्भीर, प्रौढ ७ प्रधान, सुरेण
 ८ धृष्ट, निर्लज्ज, अपयथ ९ उद्धत, विनय
 शून्य १० अभिमानिन्, दृढ ११ पुष्ट १२
 ममथ, शक्त ।
 प्रगल्भता, स स्त्री (म) दास्य, कौशल,
 प्रावाण्य २ प्रतिभा ३ निर्भयता ४ उत्साह
 ५ वाक्चतुर्वे, प्रत्युत्पन्नमित्त्व ६ गम्भीर्य
 ७ प्रधानता ८ धार्थ्य, निर्लज्जता ९ शौद्ध्य,

वैवात्य १० अभिमान ११ पुष्टत्व १२ प्रन
व्य, बावदूकता १३ सामध्यम् ।

प्रगाढ़, वि (स) अत्यन्त अत्यधिक प्रभूत,
प्रचुर २ अनिग(ग)भीर अनिगहन ३ वीर्यम्,
कठिन धन ।

प्रग्रह, म पु (म) ग्रहण धारण २ अथा
दीना रश्मि ३ किरण ४ (तुला) सूत्र
५ बाहु ६ इन्द्रियनिग्रह ।

प्रचड, वि (स) तीव्र, उग्र गौर, प्र मर,
२ प्रबल, बलवत् ३ भीषण, भयङ्कर ४
कठिन, कठोर ५ अत्यन्त, दुस्मह ६ बृहत्
महत् ७ पुष्ट, पीन ८ प्रतप्त ९ प्रतापिन् ।

प्रचडता, स स्त्री (म) उग्रता, तीव्रता,
प्रसरता, २ भीषणता भयङ्करता ।

प्रचलन, स पु (स न) दे प्रचार' ।

प्रचलित, वि (स) प्रचरित, संचारिन्
प्रसिद्ध, लोकसिद्ध, वर्तमान, विद्यमान ।

प्रचार, सं पु (म) प्रचलन, प्रसार, सज्जोप
योग, निरन्तरव्यवहार ।

—करना, क्रि स प्रचर्-प्रचल् प्रवृ (प्रे) ।

प्रचारक, वि (स) प्रसारक, प्रचालक, विस्ता
रक । [प्रचारिका (स्त्री)] ।

प्रचुर, वि (म) विपुल, बहुल, अघोर, प्रभूत,
प्राज्य, बहु, भूयिष्ठ, भूरी ।

प्रचुरता, सं स्त्री (म) बाहुल्य, आधिक्य,
वैपुल्य, भूयिष्ठत्वम् ।

प्रच्छन्न, वि (स) गुप्त, गूढ अदृष्ट, तिरो
भूत २ आच्छादित अरोपित ।

प्रजा, स स्त्री (स) सत्तान, संतति (स्त्री)
२ प्रकृतय शासितजना राज्यनिवासिन (मव
बहु) ।

—स्य, स पु (म न) जनतप्रशासन, प्रजा
सत्तासं राज्य, जनताप्रभुत्वम् ।

—नाथ, स पु (म) नृप २ प्रह्वन्
३ मनु ४ दक्ष ।

—पति, स पु (स) सृष्टि जगत्, चतुर्दश
वितृ-स्वप्न, २ प्रह्वन् ३ मनु ४ नृप ५ सूर्य
६ अर्नि ७ पितृ ८ सृष्टपति ।

प्रजापती, स स्त्री (म) भानुनाया, दे
'मातृ' २ अद्यकपती ३ गर्भवती ४ मता
नवती ।

प्रज्ञ, म पु (म) प्राज्ञ, बुद्धिमत् विद्वन्,
पति ।

प्रजा, म स्त्री (म) बुद्धि (स्त्री) ज्ञान
२ सरस्वती ३ पञ्चप्रता ।

—चक्षु, म पु (म क्षुम) धृतराष्ट्र २ अध
(व्यय) ३ बुद्धिनेत्रम् ४ प्राण ।

—पारमिता, म स्त्री (म) पूर्णज्ञान, सर्व
ज्ञता (वीद०) ।

—वाद, सं पु (म) पालित्य विद्वत्ता पूर्णोक्ति
(स्त्री) ।

—ह्रीन्, वि (म) मूर्ख, पा, अज्ञ ।
प्रज्वलित, वि (म) देवीप्यमान, ददृक्षमान,
जाज्वलमान प्रदीप्त, २ सुरपण, स्वच्छ ।

प्रण^१, म पु (म ण >) व्रत, इष्टमदस्य,
प्रतिज्ञा, दापय, वास ।

—करना, मत्पथ प्रतिज्ञा (क् आ अ),
प्रतिक्षु (त्वा प अ) ।

प्रण^२, वि (म) पुराण, प्राचीन ।

प्रणत, वि (म) प्रबोधन २ बदमान ३ नम
४ निधन ।

प्रणति, स स्त्री (स) प्रणाम, प्रणिपान,
नमस्कार, नमस्क्रिया, वदना २ नम्रता
३ निवेदनम् ।

प्रणय, स पु (स) दे 'प्यार' २ सरस्वद-
प्राथनम् ।

प्रणयन, सं पु (म) लगन, रचन, निमाण,
विधान, वरणम् ।

प्रणयिनी, म स्त्री (म) प्रिया, बल्लभा दयिता
२ पत्नी माया ।

प्रणयी, स पु (म यिन्) रमण, बल्लभ
कान दयित २ पति, भर्तृ ।

प्रणव, म पु (म) अकार २ परमेश्वर ।

प्रणाम, स पु (म) दे 'प्रणति' (चतुर्वध
अष्टाग, पञ्चाग अभिवादन, वगशिर
मयोग) ।

—करना, क्रि म, नमस्कृ, प्रणम् (भ्वा प
अ) अभिवद् (तु आ स) बद् (भ्वा
आ मे) ।

प्रणाली, सं स्त्री (न) पञ्चागाम परि
वाह, मरणि (स्त्री) २ प्रथा, परिपाठ,
परंपरा, रात्रि (स्त्री) ३ युक्ति पद्धति (स्त्री) ।

प्रणिधान, म पु (न न) सम निवेदन
२ भक्ति वर्णन ३ उर्मपञ्चाग ४ रितीना
प्रणम् ५ प्रथना ६ व्यवहार ।

प्रणिधि, म पु (म) दे 'गुप्तर' ।

प्रणिपात, स पु. (स) दे 'प्रणवि' ।
 प्रणीत, वि (स) लिखित, रचित, निर्मित,
 कृत, लिखित २ संस्कृत, संशोधित ३ आनीत
 ४ प्रेषित ।
 प्रणेता, स पु (स प्रणेत्) हृत्क, रचयित्,
 कर्त्तृ, निनात् ।
 प्रतप्त, वि (म) तापित, अत्युष्णी, कृत भूत ।
 प्रताप, म पु (स) तेनस्-ओत्तम् (न),
 अनुभाव, अभिरथा, गौरव, ऐश्वर्य, महिम्न
 (पु) २ पौरुष, वीर्य, शौर्य ३ ताप,
 उष्णता, धम ।
 प्रतापी, वि (स-पिन्) प्रतापवद् तेनन्विन्,
 ओत्तस्विन्, अनुभाववद् २ वीर, शूर ।
 प्रतारणा, म स्त्री (स) बचन ना, कपट,
 प्रतारण २ धूर्तता, कैतवम् ।
 प्रति, स स्त्री (स प्रति >) प्रति-अनु-लिपि
 (स्वा), प्रतिलिख । (उपमग) समग्र,
 सम्मुख तुलनाया २ प्रति (दिनीया के साथ,
 सप्तमी विभक्ति से भी, उ, भगवान् के प्रति
 श्रद्धा = भगवत् प्रति अथवा भावनि श्रद्धा)
 ३ दिशि (सप्तमी) ।
 प्रति(ती)कार, स पु (म) प्रतिभूति (स्त्री),
 प्रतिक्रिया, नियंत्रण, शमनोपाय २ चिकित्सा,
 उपचार ।
 प्रतिकूल, वि (स) विपरीत, विरुद्ध, प्रतीप,
 विपम ।
 प्रतिकूलता, म स्त्री (स) वैपरीत्य, विरोध ।
 प्रतिकृति, स स्त्री (स) प्रतिमूर्ति (स्त्री),
 प्रतिमा २ चित्र, आलेख्य ३ छाया, प्रतिबिंब
 ४ प्रतिक्रिया, प्रति(ती)कार ।
 प्रतिक्रिया, म स्त्री (स) प्रति(ती)कार,
 प्रतिभूति (स्त्री) २ प्रतिपात, प्रत्याघात
 ३ निवारण शमन, उपाय ।
 प्रतिक्षण, त्रि वि (स-क्षण) अनुक्षण, क्षणे
 क्षणे, प्रति-अन, पलम् ।
 प्रतिग्रह, म पु (स) स्त्री-अयो-कार, आ
 दान, ग्रहण २ विवाह, पाणिग्रहणम् ।
 प्रतिघात, म पु (म) प्रतिग्रहार्, प्रत्याघात,
 प्रतिहति (स्त्री) ३ विघ्न, बाधा ।
 प्रतिच्छाया, म स्त्री (स.) प्रतिबिंब, छाया,
 प्रतिफल, प्रतिक्रिया २ चित्र ३ मूर्ति (स्त्री) ।
 प्रतिज्ञा, स स्त्री (स) प्रतिश्रव, सगर,

समय, सविद्-आगू (स्त्री), वचन, वाचा
 शपथ, वृद्धमरूप २ साध्यनिर्देश (न्या) ।
 —करना, क्रि म, आप्रति-म-श्रु (भ्वा प
 अ), प्रतिज्ञा (क्र आ अ) । 1. अ,
 प्रतिज्ञा कृ, वचन दा ।
 —तोडना, क्रि म, प्रातशाभन् (क प अ),
 उल्लब्ध (चु), विमवद् (भ्वा प मे) ।
 —पालना, क्रि म वचन पा (प्रे पालयति)
 शुभ (प्रे) ।
 —पत्र, स पु (मं न) समय प्रतिना पत्र
 लेख्यम् ।
 —पालन, म पु (म न) प्रतिज्ञानवाह,
 सगरशोधनम् ।
 —भग, स पु (म) वचनव्यतिक्रम प्रविणो
 रूपन, विसबाद ।
 —विवाहित, वि (स) वाग्दत्त तात्तन,
 प्रदत्त तात्तन, प्रप तात्तन ।
 प्रतिज्ञात, वि (म) प्रातश्रुत, मश्रुत, आश्रुत ।
 स पु (स न) प्रतिज्ञा, वृद्धसत्त्व ।
 प्रतिद्वन्द्व, वि (म) दु शाल-न्या-ल, घृष्ट रूपा
 घृष्टम्, आशालपिन्, अननुवर्तिन् ।
 प्रतिदान, स पु (म न) प्रत्यपण २ विनिमय ।
 प्रतिदिन, क्रि वि (स दिन) अनु, दिन प्विभम्,
 प्रत्यह अन्वह, दिने दिने ।
 प्रतिद्विदिता, स स्त्री (स) शत्रुता, वैर,
 विरोध २ प्रतिस्पर्धा, प्रत्यर्थिता ।
 प्रतिद्विही, स पु (स दिन) अरि, शत्रु,
 विरोधिन् २ प्रत्यर्थिन्, प्रतिस्पर्धिन् ।
 प्रतिध्वनि, स स्त्री (स पु) प्रति, ध्वनि
 नाद शब्द-श्रुति (स्त्री) ।
 —उठना या होना, क्रि अ, प्रति, ध्वन्-नद्
 (भ्वा प से) ।
 प्रतिनिधि, म पु (म) प्रतिपुरुष, प्रतिहन्त
 स्तन २ प्रवगा, प्रतिमान (स्त्री) ।
 प्रतिपक्षी, स पु (स-पिन्) विपलिन्, प्रति
 वादिन् २ विरोधन्, प्रतिद्विदिन् ३ शत्रु,
 वैरिन् ।
 प्रतिपत्ति, म स्त्री (म) प्राप्ति-उपलब्धि (स्त्री)
 अधिगमन २ ज्ञान ३ अनुमान ४ दान,
 अपण ५ निरूपण, प्रतिपादन ६ प्रवृत्ति
 (स्त्री) ७ निश्चय ८ परिणाम ९ गौरव
 १० प्रतिज्ञा, सत्कार ११ स्वीकृति (स्त्री)
 १२ सप्रमाण प्रदर्शनम् ।

प्रतिपदा, म स्त्री (सं) प्रतिपद (स्त्री)
पुंनि (स्त्री) शुक्ला प्रथमतिथि (स्त्री),
प्रतिपदी ।

प्रतिपक्ष, वि (म) हान, अवबुद्ध अधिगत
० स्त्री अंगी कृत ३ निर्धारित, निश्चित
४ शरणागत ५ ममानित ६ प्राप्त ७ प्रबुद्ध ।

प्रतिपादक, वि (म) दातृ, दायन, ० निरू-
पक, व्याख्यातृ ३ उक्तायक ४ निष्पादक ।

प्रतिपादन, म पु (म न) निरूपण, सप्र-
माण बधन साधन स्थापन २ सम्यग ज्ञापन
अवबोधन ३ दान, अर्पणम् ।

प्रतिपादिन, वि (म) सम्यग अवबोधित
ज्योति २ निर्धारित निश्चित ३ दत्त ।

प्रतिपाद्य, वि (म) निरूपणीय, अवबोधीय
० देय ।

प्रतिपालन, स पु (म न) पालन, पायण,
सुखन २ रक्षण, रक्षण ३ निरु-वाह-वहणम् ।

प्रतिफल, म पु (म न) दे 'प्रतिच्छाया' (१)
२ परिणाम, फल ३ प्रत्युपकार ४ प्रत्यप-
वार, निवृत्ति (स्त्री) ।

प्रतिवध, मं पु (म) विघ्न, बाधा, अनुराग
० प्रतिरोध, व्याघात ३ दे 'प्रवध' ।

प्रतिबिम्ब, म पु (स न) दे 'प्रतिच्छाया' ।

प्रतिबिम्बित, वि (स) प्रतिफलित, प्रतिरूपित ।

प्रतिभा, म स्त्री (म) नवनवो मेघशालिनी
प्रज्ञा, नमस्कारिणी बुद्धि (स्त्री), भविप्रसव
२ बुद्धि मति धी (स्त्री) ३ वैदग्ध्य, बुद्धि-
चातुर्य ४ दासि (स्त्री) ।

प्रतिभाशाली, वि (म णिन्) प्रतिभाकर,
प्रतिभास्वित, सप्रतिम २ धीमन्, बुद्धिमन् ।

प्रतिभू, म पु (म) लग्नक, दे 'कमिन' ।

प्रतिभा, म स्त्री (म) अनुवृत्ति मूर्ति (स्त्री),
चित्र, प्रति, मूर्ति (स्त्री) मान रूप चन्द्रक
० प्रति, वि, छाया ३ भाट, मात्र, सोन-
भार, मान ४ जलवातभेद (सा) ।

प्रतिशोभिता, स स्त्री (म) प्रतिद्विदिता,
प्रतिस्पर्धा, अहमहमिमा, विनिर्गोषा २ विरोध,
राधुना ।

प्रतिशोभा, म पु (म णिन्) प्रतिद्विदिन्,
प्रतिस्पर्धा, विनिर्गोष २ राधु, वैरिन्
३ मयायन ३ अशिन, अशमान् ।

प्रतिस्पर्ध, मं पु (म न) मूर्ति (स्त्री),
प्रतिभा २ चित्र, आलेप ३ प्रतिनिधि ।

प्रतिरोध, म पु (स) विरोध, प्रानिवृत्त्यं,
वैपरीत्य २ बाध भा, व्याघात, प्रतिबध ।

प्रतिलिपि, म स्त्री (स) अनुलिपि (स्त्री),
प्रतिलेख ।

प्रतिलोम, वि (म) प्रतिकूल, विपरीत,
विरुद्ध २ तुच्छ, नीच ३ विनोम, विपर्यय,
न्यत्यस्त ।

प्रतिलोमज, म पु (स) वर्णमकर २ उत्तम
वर्णाया नाया अपमवर्णान् पुरुषात् जात ।

प्रतिवचन, स पु (म न) उत्तर, प्रतिवचस
(न) ० प्रतिध्वनि ।

प्रतिवन्ध, अव्य (म) प्रति-अनु, न्यर्ष-वत्सर्
अन्य वर्षे-वर्षे, वत्सरे-वत्सरे ।

प्रतिवनिता, स स्त्री (स) सपत्नी, मभायां,
समानपतिवत् ।

प्रतिवस्तु, स स्त्री (स) मनुष्य-मान तुल्य,
वस्तु (न), पदार्थ २ प्रतिवस्तुपदार्थ ३
उपमानम् ।

प्रतिवस्तूपमा, स स्त्री (म) अर्थात्कारभेद ।

प्रतिवाद, स पु (स) प्रत्याख्यान, निरा-
करण, निराम, दे 'खटन' २ विवाद ३
उत्तरम् ।

प्रतिवादी, स पु (म णिन्) प्रत्याधिन्, अभि-
युक्त २ विपक्षिन्, प्रतिपक्षिन्, प्रत्याख्यात् ।

प्रतिवासी, म पु (सं सिन्) दे 'पहोमी' ।

प्रतिवेशी, स पु (स णिन्) दे 'पहोमी' ।

प्रतिशोध, स पु (स >) निर्यातन, प्रति,
अपहार द्रोह ।

प्रतिशयाय, म पु (म) दे 'जुगम' २ पीन
सरोज ।

प्रतिषिद्ध, वि (म) दे 'निषिद्ध' ।

प्रतिषेध, स पु (म) दे 'निषेध' २ राडनं,
निरमन ३ अर्थात्कारभेद (सा) ।

प्रतिष्ठा, म स्त्री (स) मन्वार, अहंता, सं,
मान, आदर, गौरवं २ यशम् (न),
वाच विख्याति प्रतिष्ठा (स्त्री) ३ स्थापनं
सं निधानम् ।

प्रतिष्ठित, वि (स) सन्कृत, म, मानित,
अभ्यर्चित २ शिक्षित, प्रतिष्ठ, विख्यात २ स्था-
पित, प्रतिष्ठापित ।

प्रतिस्पर्द्धा, स स्त्री (मं) प्रत्यर्थिता, प्रति-
द्विदिता, विनिर्गोषा, अहमहमिमा २ वल्ल ३

प्रतिस्पर्धी, म पु (म द्विन्) प्रत्ययिन, प्रति
द्विन्, विविगीषु ।

प्रतिहत, वि (म) अव प्रति, म्बद प्रतिवापिन
२ पराशुत्र, परावर्तिन ३ अपम्न, क्षिप्त ४
पतिन ५ निराश ६ पराजिन, परस्त ।

प्रति(नी)हार, म पु (स) द्वार (स्त्री))
द्वारं २ द्वारपाल, द्वात्य ।

प्रति(ती)हारी, म पु (म रिन्) द्वारपाल,
द्वात्य, दौकारिक । म स्त्री (म) द्वार
पालिका ।

प्रतिहिंसा, म स्त्री (स) प्रत्यपकार प्रत्यप
क्रिया, प्रतिद्रोह, प्रति,नियाननम् ।

प्रतीक, स पु (स न) प्रतिमा, मूत्र ०
मुत्र, आनन ३ अग्र अग्रभाग ४ इत्येकादे
प्रथमशब्द ५ अग, अवयव ६ विह्व, लक्षण
७ अन्तार, रूप ८ प्रतिरूप, स्थानपत्र
वस्तु (न) ।

प्रतीकार, म पु (म) दे 'प्रतिकार' ।

प्रतीक्षा, म स्त्री (म) प्रतीक्षण, उदीक्षा,
प्रत्यक्षा, अपेक्षा ।

—करना, कि अ, अव उद् प्रति श्श (न्वा
आ मे) अनु प्रति पा (प्रे पत्यति) ।

प्रतीक्षा, म स्त्री (स) दे 'पश्चिम' ।

प्रतीत, वि (स) छाद, विदित, अवगत, उद्
० प्रतिज्ञ ३ प्रमत्त ।

—होना, कि अ, झा-अवगमन्तुध् प्रती (=प्रति
इ) (सव कर्म) ।

प्रतीति, म स्त्री (म) ज्ञान, बोध, अवगम
० ख्याति (स्त्री) ३ विशाम ४ आनन्द
५ आदर ।

प्रतीप, वि (म) विम्ब, विपरोत, प्रतिकूल ।

प्रतीहार, म पु (म) दे 'प्रतिहार' ।

प्रत्यक्षा, म स्त्री (म) मौर्वा, शिशिनी, ज्या,
धनुगुण ।

प्रत्यक्ष, वि (म) दृश्य, दृग्गोचर, पुर स्थित
० इन्द्रियग्रन्थ, इन्द्रियगोचर, णट्रियक ३
प्रकट, स्पष्ट । म पु (म न) प्रमाणभेद
(न्याय), अनुभवभेद । कि वि, नयनयो
पुरत २ स्पष्ट व्यक्तम् ।

—दर्शी, म पु (सं शिन्) (प्रत्यक्ष)
साक्षिन् ।

—प्रमाण, स पु (म न) प्रमाणभेद
(न्या) ।

प्रत्यय, म पु (म) विशाम, विधन
० शब्दापरभाग, प्रवृत्त्युत्तर चत्वमान,

आगम (सुप्र तिड अदि, न्या) २ प्रमाण,
माधन ४ ज्ञान ५ विचार ६ व्याख्या
७ कारण ८ तावदयकता ९ प्रतिदि
(स्त्री) १० विह्व ११ निर्णय १२ मम्मनि
(स्त्री) १३ महायक १४ स्वाद ।

प्रत्यारपान, म पु (सं न) निराकरण,
निरामन, पटनम् ।

प्रत्याशा, म स्त्री (म) आशा, आशम्,
आशाशा ० उदीक्षा, प्रतीक्षा, अपेक्षा ।

प्रत्याशी, वि (स शिन्) परीक्षाधिक्य २
पदान्वेषिन् ३ आशावत्, आशान्वित ।

प्रत्याहार, म पु (म) प्रत्याहरण, उपादान,
इन्द्रियनिग्रह ० अलोप इहूना ग्रहण
(३ पत्र-मत्र स्वरवर्ण, व्या) (

प्रत्युक्ति, न स्त्री (स) उत्तर, प्रतिवचनम् ।

प्रत्युत, य य (म) दे 'बलिक' ।

प्रत्युत्तर, न पु (म न) उत्तरस्वोत्तर,
उत्तरप्रतिवचनम् ।

प्रत्युधान, म पु (स न) स्वागतार्थम्
उत्थान अभ्युत्थानम् २ शत्रुनाम्मुत्थार्थम्
उर्ध्वनि (स्त्री) ३ वायविशेषाय सञ्जी भू,
मज्ज (दि उ अ) ।

प्रत्युपपन्न, वि (स) पुनरुत्पन्न २ स्वात्मरे
उत्पन्न ।

—मति, वि (म) तत्कालधी, कुशाग्रधीय
मति, म्मदक्षिन् २ प्रतिभान्वित । म स्त्री
(म) तत्कालधी (स्त्री), कुशाग्रबुद्धि
(स्त्री) २ प्रतिभा ।

प्रत्युद्गमन, म पु (म न) प्रत्युत्थानम्,
प्रत्युद्गम ।

प्रत्युपकार, म पु (स) प्रति, उपहृति
(स्त्री)-नाहाव्यम् ।

प्रत्येक, वि (म) एकैक, सब, सरुल ।

प्रथन, म पु (म न) विस्तार, विदति
न्वति (स्त्री) ० यज्ञ प्रसरण प्रसारणम् ३
क्षणम् ४ प्रदानम् ।

प्रथम, वि (म) आद्य, आदिम, अग्रिम २
श्रेष्ठ, उत्तम ३ प्रधान, मुख्य । कि वि (सं
न) अमे, आशी, पूर्वं, प्रथमम् ।

—रूप, म पु (म) सर्वोत्तम, उपाय
युक्ति (स्त्री) २ मुख्यनियम ।

—पुरुष, म पु (म) अन्यपुरुष (व्या०) ।
 —वय, म पु (म-यम् न) धीवन् ताग्यम्,
 नववयम् (न) ।
 प्रथमा, म स्त्री (म) विभक्तिविशेष (व्या)
 २ मरिता ।
 प्रथा, सं स्त्री (म) रीति-रूढि (स्त्री),
 अनुसार, आचार, व्यवहार २ दे 'प्रमिद्धि' ।
 प्रथित, वि (स) २ 'प्रमिद्ध' ।
 प्रदक्षिणा, म स्त्री (स) प्रदक्षिण णं,
 परिक्रम ।
 प्रदत्त, वि (मं) अपित, विश्राणित, उच्च वि
 सुष्ट, सन्नामित ।
 प्रदर, म पु (म) नासीरोगभेद, असुन्दर
 (द्वी भेदी-रुचैतप्रदर रक्तप्रदर) ।
 प्रदर्शक, म पु (म) प्र दशयित्, दशनसार
 विवृ २ दशरू, दृष्ट, प्रेक्षर ३ गुरु ।
 प्रदर्शन, म पु (स न) प्रदशन, प्रकाशन,
 व्यनन, विनृम्भण, प्रकटी भाविष्-करण २ दे
 'नुमादश' ।
 प्रदर्शनी, स स्त्री (स) दे 'नुमादश' ।
 प्रदर्शित, वि (स) प्रकटीकृत, प्रकटित,
 प्रकाशित ।
 प्रदान, म पु (सं न) दानं, विश्राणन,
 अर्पणं, मकामण २ विवाद ।
 प्रदिशा, म स्त्री (सं) प्रदिशु विदिश
 (स्त्री) विदिशा, दिक्कोण ।
 प्रदीप, म पु (स) दीप, कान्तावन,
 नयनोत्पन्न दीपस्य २ प्रकाश ।
 प्रदीपन, म पु (म न) उद्-म-दीपन,
 प्रवचन २ प्र, धीनन, प्रकाशन, ३ उत्तेजन,
 प्रालम्बाहनम् ।
 प्रदीप्त, वि (म) प्रज्वलित, उद्-म-दान,
 ममिद्ध २ प्रकाशित, प्रकाशमान ३ उज्ज्वल,
 भासुर ।
 प्रद्वन, म पु (स) चक्र, मन्त्र, प्रात,
 दशविभाग, भूभाग २ स्थान, स्थल ३ मन्द,
 अवयव ।
 प्रदीप, म पु (स) मन्थामय, म दा,
 सार्वभार, रितावमान, रत्नीमुग् २ मन्था
 प्रकार ।
 प्रधान, वि (मं) मुख्य, श्रेष्ठ, अमूर्ध, अधिन,
 परम, उत्तम, प्रमुख, विशिष्ट । मं १,

नेव, नायक, पुण्ये, अग्रणी २ मन्त्रिव,
 मन्त्रि ३ प्रवृत्ति (स्त्री), नगल उपादान
 कारण, प्रधान ४ मभा, पति-अल्प
 ५ इश्वर ।
 —मन्त्री, स पु (सं त्रिव) महामन्त्रिव,
 प्रधान, अमात्य सचिव ।
 प्रधानता, म स्त्री (मं) उत्तमता, श्रेष्ठता,
 मुख्यता २ नेतृत्व, नायकत्व ३ अग्र्यता,
 मभापतित्व ४ मन्त्रिपद, मन्त्रित्वम् ।
 प्रज्वल, मं पु (मं) वि नाश, प्रणाश,
 विध्वंस, उज्ज्वल सहर ।
 प्रपच, म पु (म) सृष्टि (स्त्री), मन्त्र,
 पञ्चाङ्ग २ विम्वर, विस्तार, ३ छल,
 अन्वर, कपट ४ दे 'वनेण' ।
 प्रपची, वि (म त्रिव) कापतिक, मायाविव,
 र्गन्ध २ चतुर, धूर्त ३ कल्हयिष ।
 प्रपन्न, वि (मं) प्राप्त, आगन २ शरणागत ।
 प्रपत्त, स पु (म) दे 'मरता' २ अत्त,
 मृग, निरवल्व पवतादिशाय ३ अव, शत-
 पतनम् ।
 प्रपितामह, म पु (मं) दे 'पददादा' ।
 प्रपितामही, म स्त्री (म) दे 'पददादी' ।
 प्रपौत्र, म पु (स) दे 'परपोता' ।
 प्रपौत्री, मं स्त्री (म) दे 'परपोती' ।
 प्रफुल्ल, वि (म) विरमित, सुगुण, उद्-म
 पुत्र, प्रबुद्ध, भिन्न, विरच २ कुसुमित,
 पुणित ३ उमीलित, उमिणित (नेत्र)
 ४ मिन, आरदित ।
 —नयन, वि (स) विशचनत्र [श शी
 (स्त्री)] ।
 —चदन, वि (म) मिनानन, प्रनब्रमुग
 [नी (स्त्री)] = मिनानना नी प्रसङ्गमुग्
 स्त्री] ।
 प्रफुल्लित, वि (म) दे प्रफुल्ल ।
 प्रपत्त, म पु (म) मविधा, उपाय, आया
 त्त, प्रपत्त, पुनित (स्त्री) २ अत्र उपाय,
 निवाह हण, प्रवचन, अभिधानं, व्यवस्थापन,
 गानन, व्यवस्था ३ निबंध, हण, प्रस्ताव
 ४ महाराज्यं, मंत्रयितवतिता ।
 —कृत, मं पु (म-तृ) प्रबंध, आया
 त्त, व्यवस्थापन, निवाह, चाल २
 ० यत्, अविष्टान, अवसुर ।

—कल्पना, स स्त्री (स) स्नेहमत्या
कल्पनावहूला कथा ।
—कारिणी, स स्त्री (स) प्रबधकव्यवस्था,
कर्त्री सनिधि (स्त्री) ।
—कान्त, मं पु (स न) कनकवक्राव्यन्,
अभ्यकाव्यभेद (सा०) ।
प्रबधक, स पु (स) दे 'प्रबधकर्ता' ।
प्रबल, वि (स) बलवत् मवल बन्निन्,
शक्तिमत्, ऊजस्विन् प्रभविष्णु २ उग्र, घोर,
तीव्र, प्र चड ।
प्रबुद्ध, वि (स) जागरित, उत्तिद्र जाग्रद
(शपन) ० विक्रमिन् ३ ज्ञानिन् ।
प्रबोध, स पु (स) नागरण, प्रबोधन निद्रा,
भग स्वार्ण २ यथाय पूग-ज्ञान ३ मालिनना
४ विक्राम ५ पूर्वनिवेदनं ६ जेननाजाम्,
मूत्राभा ।
प्रबोधन, म पु (स न) (निद्रान) उत्थान,
निद्राभजन २ आगरण ३ उन्नोध, उपदेश,
ज्ञान ४ सात्वतन्म् ।
प्रभजन, स पु (स) वपु, पवन २ वत्या,
शशावान, प्रकपन । (स न) उत्पन्न,
उन्मूलन, वि, नाशनम् ।
प्रभव, स पु (स) उन्मडेलु (पु) उत्पत्ति
कारण २ उत्पत्तिस्थान, आकर ३ सृष्टि (स्त्री)
४ (मयादोमा) उद्यम, उन्नव, मूलम् ।
प्रभा, म स्त्री (स) दीप्ति-लुपि-कानि-रुधि
दीप्ति (स्त्री) आभा, विभा प्रकाश, विभा ।
—कीट, स पु (स) स्वरोन, दे 'जुगु' ।
प्रभाकर, स पु (स) दिवाकर, दे 'सुय' ।
प्रभात, सं पु (स न) विभात, प्रन-काल,
उषा, उषा, उप, ऊष, अहर्मुख, काकाव्य,
शुभ्र, प्रसु(सु)य १, अरुणोदय, विद्वन्-जन,
उपम (स्त्री) ।
प्रभाव, म पु (स) नामधेय, शक्ति (स्त्री), बल
२ माहात्म्य, मान्त्वं ३ वग ४ प्रबध्य
५ परिणाम, फलम् ।
प्रभु, म पु (स) वन्द्योत्तरमेधर
२ स्वमिन् सन् ३ अधिपति, नायक
३ श्रेष्ठजनोपाधि ।
—भक्त, वि (स) स्वनिभक्त, कल्पपर,
सत्त्वैक २ प्रभुत्वक, भावदूत ।
प्रभुत्व, स स्त्री (स) महत्त्व, महत्त्व

२ शानकता, अधिकारित्व ३ वैभव ४ स्वा
मित्य, प्रभुत्वम् ।
प्रभूत, वि (स) दे 'प्रभुर' २ उत्पन्न,
उद्भूत, उद्गत ।
प्रभृति, क्रि वि (स) तदारभ्य, ततोऽनन्तर,
आदि, इत्यादि । स स्त्री, आरभ ।
प्रभेद, मं पु (स) प्रकार, वर्ग, नाति
(स्त्री) २ अन्तर, भेद, भिदा ।
प्रभक्त, वि (स) उन्मत्, मदीन्मत्त, मत्त,
श्रीय २ उन्मत्, वातुल, उन्मादिन् ।
प्रभयन, स पु (स न) विनोडन २ वक्तनं
३ हननम् ।
प्रमद, स पु (स) आनन्द, हर्षं २ श्रुवना ३
वि शीय ।
प्रमदा, स स्त्री (स) सुदरा, उत्तममोविष्ट (स्त्री) ।
प्रमा, स स्त्री (स) यथार्थज्ञान, शुद्धबोध
२ दे 'मान' ।
प्रमाण, स पु (स न) निदर्शन, साधन,
उपपत्ति (स्त्री) मुख्यहेतु २ साध्य, प्रामाण्य
३ मत्पता ४ श्रयता, निर्दिष्टपरिमाण ५
शास्त्रम् । वि, मत्प, मिद्र २ मान्य, स्वीकार ।
—पत्र, स पु (स न) आत्म-निर्देश
निदर्शन, पत्रम् ।
प्रमाणित, वि (स) साधित, उपपादित,
स्थापित, प्रमाणी-मत्या, कृत, सत्यापित ।
प्रमाता, स पु (स न) प्रमानी शत्रु-भोदु ३
प्रमातामह, स पु (स) मनामहविष्ट ।
प्रमातामही, म स्त्री (स) प्रमातामहवती ।
प्रमाद, सं पु (स) अनवधान-जना, उपेक्षा,
सावधानता-भाव २ भ्राति क्षुति (स्त्री),

प्रमुख, वि (म) प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य २ प्रथम, अदिम ३ प्रतिष्ठित, मान्य ।
 प्रमुदित, वि (म) प्रहृष्ट, प्रसन्न आनन्दित ।
 प्रमेह, म पु (म) मेह मूत्रदोष, बहुमूत्रता ।
 प्रमोद, सं पु (म) हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता २ हृष्टम् ।
 प्रयत्न, म पु (म) उद्यम, अध्यवसाय, आयाम्, चेष्टा, क्लेशित २ तीव्रव्यापार (न्या) ।
 —शील, वि (म) प्रयत्नवान्, मयत्न, उद्यमिन्, अध्यवसायिन्, मत्वेष्ट ।
 प्रयाग, म पु (स) तीर्थविशेष २ महायज्ञ ।
 प्रदान, म पु (स न) प्रदान, गमन, प्रत्या, यात्रा २ युद्धयात्रा ।
 —काल, म पु (म) गमनकाल २ मृत्युममय ।
 प्रधाम्, स पु (म) उद्योग, प्रयत्न, परिश्रम ।
 प्रयुक्त, वि (म) व्यवहृत व्यापृत, उपयुक्त, सेवित, उपयुक्त ।
 प्रयोग, म पु (म) उपयोग, उपभोग, सेवन, व्यवहार २ अनुष्ठान, साधन ३ प्रक्रिया, विधान ४ तादिकोपचार ५ अभिनय ६ कुमीदाय ऋणदानम् ।
 —करना, उपप्रयुज् (क आ अ), व्याप्त (प्रे), सेव (भ्वा आ से), उपयुज् (क आ अ) ।
 प्रयोजक, स पु (स) अनुष्ठान्, उपयोजक २ प्रेरक ३ व्यवस्थापक ।
 प्रयोजन, स पु (स न) अर्थ, कार्य २ उद्देश्य, अभिप्राय, आशय ।
 प्रत्येकर, वि (म) प्रत्येकविनाशार्थहार, कर्त्तारिन् ।
 प्रत्ये, सं पु (म) कृपात, प्रतिमन्त्रय, ब्रह्माटनाश, विलय, मन्थय ।
 प्रत्या, स पु (म) निरधरत्वचनानि (बहु), प्र, चल्-वत्पनम् ।
 प्रलोभन, म पु (म न) विलोभन, लोभेन प्रवर्तन २ प्रलोभनपदाथ, विरारहत् ।
 प्रवचना, म स्त्री (म) धूर्तता, कृतवत्त्वम् ।
 प्रवचन, म पु (म न) व्याख्यान, विवरण, प्रसारण, स्पष्टीकरण २ व्याख्या ३ वदाम् ।
 प्रवर, वि (म) श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य (म न) गावम् । (मं पु) सन्नि (स्त्री) २ गावप्रवर्तननिव्यावर्तनी मुनिगण ।

प्रवर्तक, म पु (स) आरम्भक, सम्वापन, प्रवर्तयितृ २ मन्त्रक, निर्वाहक ३ प्रेरक, निवर्तक ४ उत्तेजक ५ आविष्कारक ।
 प्रवर्तन, म पु (म न) कार्यापन्नता, ० कथं-संवाहननिर्वहण ३ प्रचार्ज ४ उत्तेजनम् ।
 प्रवाद, स पु (स) जनश्रुति (स्त्री), विवरणी, लोको-वाद-वादा २ अपवाद, मिथ्यामन्त्र ।
 प्रवाल, म पु (म पु न) विद्रुम ० विश (म) लय ३ वीणादण्ड ।
 प्रवाय, म पु (स) विदेशवास २ विदेश ।
 प्रवासी, वि (स म्नि) प्रोषित, विदेशरत्न, विदेशवाग्निन् ।
 प्रवाह, म न (स) सव, सवण, क्षुति (स्त्री), स्नात २ (चल्) धारा, वग, ओष सोलम् (न) ३ कायनिवाह ४ व्यवहार ५ प्रवृत्ति (स्त्री) ६ क्रम, सततगति (स्त्री) ।
 प्रविष्ट, वि (स) वृत्तप्रवेश, भ्रमणन ।
 प्रवीण, वि (स) निपुण, कुशल, दक्ष, पंड, चतुर, निष्णान, वित ० वाणावाहनकुशल ।
 प्रवीणता, स स्त्री (स) त्रैपुण्य, दाक्ष्य, बीराल, पातृत्व, चातुर्यम् ।
 प्रवृत्त, वि (सं) रत, मग्न, पर, परायण ० उद्यत ३ नियुक्त ।
 —करना, क्रि स, प्रवृत् (प्रे), नि उद्-स्युत् (चु) प्रवृत्ती कृ, प्रे (प्रे) ।
 —होना, क्रि अ, प्रवृत् (भ्वा आ से), रत मग्न नत्पर (वि) भू ।
 प्रवृत्ति, म स्त्री (म) रुचि (स्त्री) छंद, अभिलाष, भाव २ वृत्तान ३ वायनिवाह ४ विप्रशामग ५ उत्पत्ति (स्त्री) ।
 प्रवेदा, म पु (स) अनर्, विगाहन-गमन २ गति (स्त्री), उपगम ३ बोध, शान्, परिचय ।
 —पत्र, म पु (सं न) प्रविष्टि, पत्र पत्रम् ।
 —शुल्क, म पु (म) प्रविष्टि, शुल्क रम् ।
 प्रवेदिक्क, म स्त्री (म) परीक्षण ० प्रवेदी ।
 प्रयोजित, वि (सं) मन्व्यामिन्, चतुया भिमिन्, परिप्राजक ।

प्रज्ञया, म स्त्री (म) *मन्त्र्यास, वैराग्यम्, कृत्याग्रम् ।
 प्रज्ञाकर, न पु (म) लोच, स्नाकर, नवक, शक्यक २ चाङ्गकार ।
 प्रज्ञासनीय, वि (म) प्रज्ञान, शक्य, स्तुत्यं नुत्यं प्रज्ञासार्ह ।
 प्रज्ञासा, म स्त्री (म) शक्या, स्तुति-स्तुति नु (स्त्री), स्तव, कीर्तन इत्यादि ।
 —करना, कि स, प्रज्ञा (स्वा प म) शक्य (स्वा आ ने), नु (अ प म), नु (अ प अ) इत्यादि (अ आ से) ।
 —होना, कि अ, प्रज्ञा-स्तु-नु इत्यादि (अ न) ।
 प्रज्ञामित, वि (म) दे प्रज्ञाम् ।
 प्रज्ञामन, स पु (स न) शनन, गानि (स्त्री) ० गानन ३ मन्त्र ४ वसिष्ठरथम् ।
 प्रज्ञान्त, वि (म) नुन, भूत, स्तुत, शक्यित, प्रज्ञानित २ दे प्रज्ञासनीय ३ उत्तम श्रेष्ठ ।
 —वाड, स पु (म) दशनाचारविशेष ।
 प्रज्ञास्ति, स स्त्री (सि) दे 'प्रज्ञा' २ पत्ररत्न प्रज्ञासाक्य ३ राजा बं नितैल ४ प्राचीन यथाना केषुकादिपरिचायकानि अद्यन

प्रज्ञाकर, वि (म) मन्त्र, महिल्ल २ आन्त ३ प्रज्ञारित ।
 प्रज्ञाज, वि (म) म, लुप्त, प्र, हृष्ट, सानद, आन्तदित, प्र, मुदित, प्रकुद २ विमल ।
 —करना, कि स, अनद आह्लाद-स्तुत्-प्रज्ञा प्रनुद प्रवृत् (मे) ।
 —होना, कि अ, प्रज्ञा (स्वा प अ), आह्लाद-प्रनुद (स्वा आ ने), प्र, हृष्ट (दि प से) ।
 प्रज्ञाकरता, म स्त्री (म) आनद, आह्लाद, श, प, म-नीय, प्र, मोद उल्लस २ अनुमह ३ स्वच्छता ।
 प्रज्ञाव, म पु (म) अनन प्रवृत्ति (स्त्री), गमनोत्त २ नम्न (न), उत्तति (स्त्री) ३ सवान ४ प ५ कुसुमन ।
 प्रज्ञाविनी, वि (स्त्री) उत्तदविनी, अनविनी, प्रमविनी ।
 प्रज्ञाद्, म पु (म) हृग, दया, अनुप ० प्रज्ञा ३ स्वच्छता ४ वाक्य-प्राविरोधः (सा) ५ देव-धरशिष्टप्रदार्थ, रोष ६ नीजन ७ नैवेद्य, वायन-नकर ।

प्रसून, स पु (सं न) कुसुम, पुष्प २ फलम् ।
वि, जान, उत्पन्न ।

—वर्ष, स पु (स) पुष्पवृष्टि (स्त्री) ।

—वाण, स पु (स) पुष्प, शर-वाण,
काम, मदन ।

प्रसृत, वि (स) प्रगत, प्रचलित २ वितरित,
विस्तीर्ण ३ लव, दीर्घ, आयत ४ व्यस्त,
सल्लभ ५ सुशील, विनम्र ६ गत, यत्न ७
रघुतिमम् ।

प्रसूता, म स्त्री (स) जघा, टविकला ।

प्रसैक, स पु (स) आ अव, सैक सैचनम्,
अभिव्यण, अभ्युक्षण, प्रोक्षणम् क्षरण, गलनं,
सवणम् ३ वमन, वय, वयि (स्त्री) ४
दावका, कटोरिका अग्रभाग ।

प्रस्तर, सं पु (स) शिला, पाषाण,
दे 'पत्थर' ।

प्रस्ताव, स प (म) अवसर, उचितफल
२ प्रसंग, विषय ३ प्रकरण ४ उपक्षेप,
उपन्यास ५ प्रति, वध, लेख ६ दे
'प्रस्तावना' ।

प्रस्तावना, स स्त्री (म) भूमिका, उपोद्धान,
प्राक्वचन, आमुख्य, अवतरणिका २ आरम्भ,
उपक्रम ।

प्रस्तुत, वि (स) जु(दू)त, दलायित ।
२ उक्त, कथित ३ प्रामाणिक, प्रमगप्राप्त
४ उपरिधन, प्रतिपन्न ५ उद्यत, सत
६ निष्पन्न, संपादित ।

प्रस्थान, स पु (सं न) प्रयाण, जइक्रम,
गमन, यात्रा २ विनिगीपुमेनाया प्रयाणम् ।

प्रस्वेद, स पु (म) दे 'स्नीना' ।

प्रहर, स पु (म) याम दे 'पहर' ।

प्रहरी, वि (म रिन्) दे 'पहरा' स पु २ ।

प्रहसन, स पु (सं न) रूपरनाटक, भेद,
= परिहास, विनोद ३ अव-उप, हास ।

प्रहार, स पु (म) आघात, ताट,
निघान, हथ ।

—करना वि स अहन् (अ प अ),

प्रह (स्वा प अ), ताट (लु), प्रहारकृ ।

प्रहृष्ट, वि (सं) प्रसुदित, सुप्रसन्न, अत्यानन्दित ।

प्रहेलिका, स स्त्री (म) प्रदन्तृती, दे 'पहेली' ।

प्राण, स पु (सं न) अक्षिर, अंगन, चत्वारम् ।

प्राण, वि (स) मरु, कज्जु, २ मत्स्य,
यथायं ३. सम, समप्रद ।

प्रात, सं पु (स) देशभाग, राष्ट्रविभाग
२ भूपट, प्रदेश ३ सीमा, समत ४ अग्र,
कोटि (स्त्री) ५ दिश (स्त्री) ।

प्रातीय, वि (स) प्रातिक, प्रात, मन्विविद
विषयक ।

प्राड्वेट, वि (अं) हरीय, आत्मीय
२ विशिष्ट, असाद्वनिक ३ गुप्त, सवरणीय ।

—सेक्रेटरी, स पुं (अ) *स्वरीयमचिव ।

प्राकार, स पु (म) वप प्र, शा(मा)ल,
वरण ।

प्राकृत, वि (स) प्रकृतिज्ञ, प्राकृतिज्ञ
२ स्वाभाविक, नैसर्गिक ३ साधारण ४ लौ
किक ५ शुद्ध, नीच ६ नीतिर । स स्त्री
(स न) व्यवहारभाषा २ प्राचीन
भाषाविशेष ।

प्राकृतिक, वि (स) दे 'प्राकृत' ।

प्राची, स स्त्री (सं) पूर्वदिशा, पूर्वदिश
(स्त्री) २ पूज्यपूज्ययो पुरोवर्तिदिशा ।

प्राचीन, वि (म) पुराण, प्राक्तन, पुरातन,
पूर्व, प्राक्कालीन २ पूर्वदेशीय, प्राच्य,
पौरस्त्य, पूर्वदिक्स्थ, प्राच् ।

प्राचीनता, स स्त्री (सं) पुराणता, पुरात
नता ३ ।

प्राचोर, स पु (म भ) प्रातनो वृत्ति
(स्त्री) प्रावर, प्रावृत्ति (स्त्री), दे 'प्रवार' ।

प्राचुर्य, स पु (म न) 'प्रचुरता' ।

प्राच्य, वि (स) दे 'प्राचीन' (१२) ।

प्राज्ञ, वि तथा स पुं (सं) पटिन(),
विन(), धीमन्, बुद्धिमन्, विद्वन् ।

प्राज्ञी, स स्त्री तथा वि (म) पत्नि, बुद्धि
मनो विदुषी (नारी) ।

प्राण, स पु (स प्राण बहु) भगव (बहु)
हृत्कारण २ श्वास, उच्छ्वास, श्वासा,
३ पवन, अनिल ४ वल्, शक्ति (स्त्री)
५ जीवन, जैत य ६ अरमन् ७ प्रियो
मनुष्य पदार्थो वा ।

—न्याग, सं पु (म) मृत्यु, निधन २ आत्म,
हत्या-भात ।

—दृष्ट, सं पु (सं) देह मृत्यु-दृष्ट, उत्तम
साहसम् ।

—धारण, सं पु (सं न) जीवन्, प्राणन,
देहधारणम् ।

प्रारब्ध, म स्त्री (स न) भाय, दैव, अवृष्ट, प्रालम्ब, नियति (स्त्री) । वि, कृता रभ, उपजात ।

प्रार्थना, स स्त्री (स) याचना याचना, अभि शक्ति (स्त्री), आनि, वदन, अनि, अथना ।
—करना, त्रि स अभिप्र, अध (नु आ मे), याच (भ्वा उ से), मविनय आनि विद् (प्रे) ।

—पत्र, स पु (स) आवेदनपत्रम् ।

प्रार्थनीय, वि (स) याचनीय, अभ्यथनीय ।

प्रार्थित, वि (म) वाचित, अ-थित, निवेदित ।

प्रार्थी, स पु (स थिन्) प्राथवित्, याचन निवेदक ।

प्रालम्ब, स स्त्री, दे प्रारब्ध' म स्त्री ।

प्रासंगिक, वि (स) प्रमग, आगतप्राप्त उचित, अनुरूप प्रस्तुत, प्रास्ताविक [-वी (स्त्री) = प्रास्ताविकी] ।

प्रासाद, स पु (स) राज-नृप गृह भवन नदिर हर्म्ये सीध धम् ।

प्रियम्, म पु (अ) निपादवराच ।

प्रिय, वि (स) दे 'प्यार' ० मनोर, अभिराम । सं पु, पति २ वान, दवित ३ जामाद् ४ हितम् ।

—सम, वि (स) प्रेष्ठ, प्राण प्रिय । म पु, पति, भवृ । २ बल्लभ, वान ।

—समा, वि (म) प्रेष्ठा, प्राणप्रिया । म स्त्री, पत्नी ० वीता ।

—दर्शन, वि (स) सुशुभ, दर्शन, नृशुभ्य स्वरूप, शोभन, सुदर ।

—भाषी, वि (म थिन्) मधुरभाषिन्, प्रिय, वादिन्-वचन ।

—वर, वि (म) प्रेष्ठ, प्रियतम ।

प्रिया, म स्त्री (स) नारी, रमणी २ पत्नी, भार्या ३ प्रेयसी, प्रेमवती, वीता ।

प्रीतम्, म पु, दे 'प्रियतम' ।

प्रीत, } सं स्त्री [म प्रीति (स्त्री)] दे प्रीति, } 'प्यार' २ वृत्ति (स्त्री) ३ आनन्द, हर्ष ।

—पूर्वक, वि वि (स-क) प्रेष्ठा, ग्न्हेन ।

—भोज, सं पु (सं-भोग) प्रीतिभोजन, भोजनोत्सव ।

प्रेक्षक, स पु (स) दर्शक, द्रष्टृ २ (नाद वादि मे) पार्यद, सामाजिक ।

प्रेक्षण, म पु (स न) नेत्र ० अपलोमनं, दर्शनम् ।

प्रेत, स पु (स) नरकस्थप्राणिन् २ भूत भेद, वेनात् ३ मृतमानव, शव ।

—कर्म, स पु [स-कर्मन् (न)] प्रेत, कार्यं क्रियाकृत्य, आभृत्यो सपिंडीकरणपर्यंत क्रियावत्प्राप ।

—गृह, स पु (सं न) प्रेतभूमि (स्त्री) इमशानम् ।

—दाह, स पु (सं) अत्वेष्टि मृतन, मन्थार ।

—पक्ष, स पु (सं) पितृपक्ष, गीण चाद्राधिन कृष्णपक्ष ।

—पति, स पु (स) यमराज ।

प्रेतनी, स स्त्री (स प्रेत) पिशाची चिरा, प्रेतपत्नी ।

प्रेम, म पु [स प्रेमन् (पु न)] स्नेह, अनु, राग प्रणय, दे 'प्यार' २ काम, शृङ्गार, रति (स्त्री) ३ ईश्वरभक्ति (स्त्री) ।

—कहानी, स स्त्री प्रेमकथा, शृंगारारथाविका ।

—पात्र, स पु (म न) स्नेहभाजन (मानव वा पदार्थ) ।

—पाश, म पु (स) स्नेह-अनुराग प्रेम, बन्धन रज्जु (स्त्री) शृङ्खला-जालम् ।

—पुत्तलिका, स स्त्री (स) फनी, नाया, कल्पत्रम् ।

—वारि, म पु (सं न) प्रेमाशु (न), स्नेहात्मम् ।

प्रेमालाप, स पु (सं) स्नेहसंभाषण ३ शृंगर मवात् ।

प्रेमाशु, म पु (स न) प्रेम, कल्प वारि(न), अनुरागवात्पत्रम् ।

प्रेमिक, म पु दे 'प्रेमी' ।

प्रेमिका, स स्त्री, दे 'प्रेयसी' ।

प्रेमी, स पु (सं मिन्) प्रणयिन, अनुरा गिन्, स्नेहिन, अनुराग प्रणय, वर २ यामिन, कामुक, रमण, बल्लभ । वि, प्रिय, आमन्त निरत, मवी (व, मंगील वा प्रेमी = सगीन, प्रिय-आसक्त इ) ।

प्रेम, वि (सं प्रेयम्) प्रियतर, अभिप्रिय

२ हौत्रिक-सामाजिक-सुखनि भोगा ३ अल-
कारभेद (सा०) ।
प्रेयसी, स. स्त्री (स) प्रेमवता, प्रमिगी,
प्रिया, पत्न्या, वाना, दमिता ।
प्रेरक, म पु (स) प्रचारयित्, प्रवर्णयित्
प्रोत्साहन, उत्तेजक ।
प्रेरणा, म स्त्री (स) प्रचादना, प्रोत्साह-
ना, उत्तेजन-ला, प्रवर्णन ० दे 'पक्षा' ।
—करना, क्रि म, उत्तन् प्रवृत् प्रेर प्रवृत्-
प्रोत्साह (प्रे) ।
प्रेरित, वि (स) प्रचोदित, प्रोत्साहित, उत्त-
नित, प्रवर्णित ।
प्रेम, म पु (अ) मपीनयत्र ० मुद्रणयत्र
३ मूद्रणयत्र ।
प्रेमिडेट, म पु (अ) सभा, पति प्रवृद्ध
प्रधान ।
प्रेम्यम, म पु (अ) काम्यम ० कार्य
क्रमयत्रम् ।
प्रेमीन, म पु (अ) प्रोभूतिन, भावनयत्र
मे ।
प्रेत, वि (म) त्रित, निम्न ० मृत,
प्रथित, पुषित ।
प्रेमाह्न, म पु (स न) धैर्य-उत्साह, वृद्धन,
उत्तेजन, आधमनम् ।
प्रेमाहित, वि (अ) उत्तेजित, आश्वासित,
वृद्धोत्साह, प्रेरित ।
प्रेम्य, वि (न) विश्रुत, प्रवर्णन ० प्रचलित,
प्रथित ३ स्थपित, स्थिरीकृत (स पु न)
१० अध, नन नानारभन् ३ शूकर
लक्ष्यम् ।
प्रेमक, वि (स) उत्त जा शर्द ० निर्मल,
निर्गल, सुत् ।
प्रेमोट, म पु (अ) जगन्निस्तारमणिष्णैस,
कणयत्रम् ।
प्रेमगोडा, म पु (स) प्रचर, प्रचरकायम् ।
प्रेमिडेट, म पु (अ) स्वामिन्, प्रभु, शन ।
प्रेमसर, म पु (अ) (महाविद्यालयस्य विश्व
विद्यालयस्य वा) उपध्याय ।

प्रेषित, वि (स) विदेशस्थ, प्रवासित् ।
—पतिष्ठा, स स्त्री (सं) प्रेषितभर्तृका,
नायिकाभेद ।
प्रेष्ठ, वि (स) प्रवृद्ध, पथित, प्रोपचित २.
स परि-पूर्ण, भयत्र, मिद्ध ३ परिणत, परिपक्व
४ पुष्ट, वृद्ध ५ निपुण, चतुर ।
प्रेष्ठता, म स्त्री (सं) प्रौढत्व, प्रवृद्धि (स्त्री)
२ परिपूयता ३ परिपक्वता ४ पुष्टि (स्त्री)
५ निपुणता ।
प्रेष्ठा, स स्त्री (सं) चिरिटी, श्यामा, सुव्या-
वृष्टरता (स्त्री एक) (३० से ५५ वर्ष तक
की नारी) २ नायिकाभेद । वि , पुष्टा, परि-
पक्वा, वृष्टा ।
प्लग, स पु (अ) निगम् ।
प्लग, म पु (म) कवि, वानर २ हरिण
३ महक ।
प्लवन, म प (म न) वृद्धन २ तरणम् ।
प्लाटिनम, म पु (अ) महाशु ।
प्लावन, म पु (म न) महाप्रवाह, नल,
प्रत्य-वृष्णावप्लव ।
प्लावित, वि (म) नलमग्न ।
प्लास्टर, स पु (अ) दे 'पलस्तर' ।
—भाव पेरित, म पु, दम्भाचूर्णम्, परिम
प्रलेप ।
प्लोहा, स स्त्री (स) प्ला(सि)इन् (पु),
गुल्म, शिवा ।
प्लुत, स पु (स) विमात्रवर्ण । वि , जगति
युत ० प्लवित ३ तिक ४ विमात्र ।
प्लुरिमी, म स्त्री (अ) पुष्पुमवेशनपत्र,
पुष्पुमात्रपत्रदाह ।
प्लेग, म पु (अ) महा-भारी, भारिका
० मूषिकरोग अग्निरोहिणी ।
प्लेट, म स्त्री (अ) दे 'तदनी' २ (धत्वा
दिवन्त्य) पट्ट, पलक-म् ।
—फार्म, म पु (अ) वेदी, वेदिका, मन्त्र,
पीठिका ।

फ

फ, देवगरीवर्गनाया द्वविंशतितमो व्यन्
नवर्ण, फकार ।
फका, स पु (हि फांक्ता) मुष्टि (पु स्त्री),
२६

अवलि (पु), मुष्टि-अवलि, माध अश्रुदिक
० लड-ड, शकल-म् ।
फकी, स स्त्री (हि फता) चूर्ण, चूर्णयत्रम् ।

फट, म पु (म वष) वषन ० दे फटा
 ३ छल, वष ४ रक्षस्य, गूलाज ५ दुग्म ।
 फटा, स पु (म वष) पश बन्धन, वाटुरा,
 पानिनी, मृगवधना ० जाल ३ दुग्म वष ४ ।
 —लगाना, मु, झल (जु) विप्रलभ (भा
 आ अ) वचप्रः (प्रे) ० नात्र निक्षिप्
 (तु प अ) निष्ठा (जु उ अ) ।
 फट्टे म पडना, मु, पाशे वध् घट्ट (कर्म),
 वशी भू, २ विप्रलभ प्रतार (वर्म) ।
 फमना, कि अ (हि फामना) सम्यग् मदिल्प
 स्वध् (कर्म), आकुली-सकीर्णी भू, मशक
 सलग्न-मदिल्ल (वि) भू २ जाले पादा वा
 ध्-वध (कर्म) तालवद्ध (वि) भू ।
 फमवाना, कि प्रे, व 'फसाना' वं प्रे रूप ।
 फम्याना, कि स (हि फसना) सादल्प (प्रे),
 सम्यग् (क् प से), आकुला सलग्नी-सकीर्णी
 कृ २ पाशेन वध (क् प अ) जाल ध् (जु),
 पाशे पत् (प्र) ।
 फमाव, स पु } (हि फमना) सदिल्लना,
 फसावट, म स्त्री } अधिल्ल २ सकुल्ला,
 व्यतिर, समर ।
 फम्, वि (अ फक) इति, शुभ, स्व-
 २ विवर्ण, मदप्रभ ।
 रग—होना वा पट जाना मु पाडु=उप
 विवर्ण (वि) भू, मद-म्लान मलिन, प्रभ (वि)
 बन् (दि आ से) २ जाडुली भू, मुट
 (दि प मे) ।
 फकत, वि (अ) अत्र, पयांत ० एरानि र ।
 कि वि, वेवल्लम् ।
 फकीर, म पु (अ) मित्र, मित्र ० मधु,
 मन्वागिन् ३ निधन ।
 फकीरनी, म स्त्री (अ फकीर) मित्रुनी,
 मिश्रोप-नीयिनी, मिश्राणी ० परिमिना,
 सन्वाभिनी, वैगिणी ।
 फकीरा, म स्त्री (अ फकीरी) मिश्रुना,
 यागन ० मन्वाग ३ इतिरान् ।
 फकड, वि (अ फकीर) निधन ० निरन,
 ३ निर्वाणदिष्टि । स पु, गाणा, नदना
 वरन, अदीप साम्य भगव्य, वरन ०
 मिथ्याव रान् ।
 —वाच, स पु, अराध्यगार अदीप
 भापिन् २ मिथ्याभापिन् ।

—याज्ञी, म स्त्री, अदालभाविना, अवाप
 वाचरता ।
 फकिना, म स्त्री (म) उत्पनिवाधमुपरवा
 पित पूर्वाप ० झल, मपन्, दम ।
 फरर, स पु (फा फर्) गन, जमिनान ।
 फगुभार, म पु (हि फागुन) होलि-सोमव
 २ होलि-सोमिनि (न बहु) ।
 फङ्गीलत, म स्त्री (अ), गौरव, महत्ता ।
 —की पगडी, मु, विदसाप्रमाणम्, वैदुष्यो
 णीपम् ।
 फङ्गीहत, म स्त्री (अ) दुगति (स्त्री) दुदश,
 २ वल्लह ।
 फङ्गल, वि (अ) निरधन, व्यध ।
 —झर्च, वि (अ + फा) मुक्तहन्त, अप
 व्यर्थ, व्यविन् ।
 —झर्चा, स स्त्री, अनि अप अदित, व्यय,
 मुक्तहन्ता ।
 फङ्गल, स पु (अ) कृपा, अनुग्रह ।
 फट, स स्त्री (अनु) परिनि शब्द ध्वनि ।
 —फट, म स्त्री, फट फटाशब्द ० प्र ३ प ।
 —से, कि वि, इतिनि, सपदि ।
 फटक, स पु दे 'एटि' ।
 फटक, कि वि (अनु) तदक्षणे, इतिनि ।
 फटकन, स स्त्री (हि फटका) गुपम,
 गुप, अमारद्वयम् ।
 फटनना, कि म, (अनु फट) प्रम्पुट (प्रे),
 प्रस्तानेन शरणेन विशुध् (प्रे) २ द 'पीपना'
 ३ दे 'फटफाना' । ४ रेणु अपमृज (अ प
 से), निघृणी कृ ५ शिप् (जु प अ), अम्
 (दि प से) । कि अ, वा (अ प अ),
 गन् २ दूरी पृथग् भू ३ 'तटफडाना' ४ अम्
 (दि प से) ।
 फटरी, स स्त्री, दे 'एटि' ।
 फटार, स स्त्री (अनु फट + सं मार)
 निर्मलता, वादट, उपाय, निग,
 आशोश, गहा ।
 फटारना, वि म (पूर्व) शिगया आत्व
 आहत्व क्पाणि प्रशब् (जु) ० दूरी पृथग्,
 कृ ३ निर्मल-नर् (जु आ मे) वागादट
 (जु), निद् (भा प मे) ४ मपटप
 शब्द एत्त्वप् (प्रे) ।
 फटकारने योग्य, वि, निर्म-र्मनीय, नर्मनीय ।

फटकारने वाला, स पु, निभस्मक, तर्क ।
फटकी, स स्त्री (हि फट् >) शाकुनि-
पार-रम् ।

फटना, क्रि अ (हि फा-ना) विट्ट विभद्
वि (कर्म) २ स्फुट (तु प से), दल
(भ्वा प से) ३ खन्दी भिद् (कम)
शक्ली भू ४ अपवि कृ (तु प से) इतस्तत
विद् (भ्वा प अ) ५ अत्यत व्यथ (भ्वा
आ से) ६ अन्ली भू ।

फट पड़ना, मु सहसा आपद (भ्वा प से) -
उपस्था (भ्वा आ अ) ।

छानी—, (शोकानिश्चयेन) हृदय विद् दिधा
भिद् (कर्म) ।

फटफटाना, क्रि स (अनु फटफट) प्र,
ग्ल्य (भ्वा प से) अपाधकवद् (भ्वा प से)
२ दे 'फडफडाना' ३ प्रयस् परिभ्रम्
(दि प से) ४ फटफटायते (ना धा),
फटफटाशब्द कृ ५ आजीविकायै मृश चेट
(भ्वा आ से) ।

फटा, वि (हि फटना) विदीर्ण, विशीर्ण
२ स्फुटित, विदलित ३ शकलीभूत । स पु,
छिद्र, छेद, भेद ।

—दूध, स पु, अन्लीभूत क्षीरम् ।

—पुराना, स पु, चीर, चीकर, कर्ण ।

फटे में पाँव देना, मु- अन्वापारेषु व्यापार कृ,
परकार्येषु व्यपृ (तु आ अ) ।

फटिक, स पु दे 'स्फटिक' ।

फट्टा, म पु (हि फटना >) विदी-विशुद्ध ।

फड, स स्त्री (स पा) ग्लह २ घृत,
शाल-उभ ३ क्रयविक्रयस्थान ४ पक्ति
(स्त्री), समूह ।

—वाङ्ग, स पु (हि + फा) स्मिक्, वृत्
कारक २ वाचान्, वावदूक ।

फडक, स स्त्री (अनु) प्र, स्पर्, स्फुरण,
कथ २ पशु-चालन-अस्फालनम् ।

—उठना, मु, प्रमद (दि प अ) ।

—जाना, मु, अनुरज् (कम), त्तिह् (दि प से) ।

फडकना, क्रि अ (पूव) स्फुर (तु प से),
वैष्कृप्-स्पर्द (भ्वा आ से) २ ध्रुम्
(दि प से), आकुली भू २ पशा विचल्
(भ्वा प से), विधू (कर्म) ।

फडकाना, क्रि स, व 'फडकना' के प्रे रूप ।

फडफडाना, क्रि स (अनु फटफट >) फ
फटायते (ना धा), फफगशब्द नन् (प्रे)
२ पशु विधू (स्वा उ से, कृ उ से,
भ्वा उ ने, तु), आस्फन्-विचल (प्रे),
दे 'फफाना' । क्रि अ, ध्रुम (दि प से),
अकुली भू २ उत्तुक् वृत् (भ्वा आ से) ।

फडफडाहट, स स्त्री (हि फटफडाना)
पक्ष, आस्फालन विधुवन विचानन २ स्फुरण,
स्पर्दन, विक्रप ३ आकुलता, विच, वेग भ्रन,
म श्लोम ४ प्रयास, अनि प्र-यत्न, चेष्टिनम् ।

फडवाना, } क्रि प्रे, व 'फाडना' के प्र रूप ।
फडाना, }

फडिया, स प (हि फड) घृत्कारक,
मभिक २ दे 'परचूनिवा' ।

फण, स पु (म) फणा, फण, कट, -टा-टी,
स्फट-टा, भोग, स्फुट-टा, दवी-दवि (स्त्री) ।

—कर, स पु (स) सर्प, वहि ।

—घर, स पु (स) नाग, सर्प २ शिव ।

—मणि, स स्त्री (स पु) सर्प-मणि-रत्नम् ।

फणा, स स्त्री (स) दे 'फण' ।

फणी, स पु (म-णिन्) फणाघर, फाकर,
दे 'सर्प' ।

फणीन्द्र, } स पु (स) अनत, शेष,
फणीश, } मुनगेश, सपराज ।

फ्रतवा, स पु (अ) व्यवस्था, निर्णय
(इत्थम्) ।

फ्रतह, स स्त्री (अ) विनय २ साफल्यम् ।

—मद, —याव, (अ + फा) विनायन्,
विनेत् ।

फतिगा, स पु (म पता) शल्भ, पतगम् ।

फतुर, म पु (अ) दोष, विकार, २ हानि
(स्त्री) ३ विन ४ उपद्रव ।

फन, स पु, दे 'फा' ।

फन, स पु (फा) युग, वैशिष्ट्य २ विद्या,
ज्ञान ३ कलावैद्यन्, शिल्प ४ व्याज,
छन्नन् (न) ।

फना, स स्त्री (अ) प्रत्य, वि, नास,
प्र, ध्वस ।

फनी, स पु, दे 'फनी' ।

फफोला, स पु (स प्रस्फोट) त्वक्, स्फोट,
शोक । दे 'छाल' ।

दिल के पीछे फोटना, मु, वैद-साधन

शोधननियानन कृ (ना धा), प्रतिदिम् (र प स), क्रोध प्रगटयति (ना धा), फव, स स्त्री, दे 'फवन' ।

फवती, स स्त्री (हि फवता) क्ष्वेला लिका, नमन् (न), नमोक्ति (स्त्री), व्यववचन २ ममशोधनयुक्ति (स्त्री) ।

—उड़ाना, मु अव-उप इस (भ्वा प से), वशोकया आक्षिप (तु प अ) ।

—बहना, मु, सहास्य उगालभ (भ्वा आ अ) महान व्यववचन प्रयुज (ह ग अ) ।

फवन, म स्त्री (हि फवता) शोभ, धवि (स्त्री), सौन्दर्य २ मदन प्रसाधन, परिभार ।

फवना, मि अ, (म प्रभवन् >) शुम् (भ्वा आ मे) युन (क्म) उपपद् (दि आ न), उचित उपपन्न अनुरूप युक्त सट्टा (वि) इत् (भ्वा आ से) ।

फवनेवाला, वि, शोभन, उचित, युक्त, अनु रूप, मद्दरा ।

फवनीला, वि (हि फव) शोभन, सुन्दर, २ उचित अनुरूप ।

फरफ, फरफन, म स्त्री, दे 'फटक' ।

फरफ, म पु, दे 'फट' ।

फरफना, कि अ, दे 'फड़ना' ।

फरफद, म पु (फा) पुत्र, तनुन ।

फरफी, म पु, दे 'फड़ी' ।

फरद, म स्त्री, दे 'फर' ।

फरफद, म पु (अनु फर + हि. फदा) माया, कपट, छल, छद्मन्, (न), व्याज २ भाव, हाव ।

फरफद, म पु (अनु) पभ, गुरुरण आम्फा लनम् । कि वि मवेर्ग शीन, दुन २ नप्रतिष्ठनम् ।

फरफराना, कि म, कि अ, दे 'फड़फड़ाना' ।

फरफा, सं पु (अ फेम) घटना, रचना २ दे 'बाल्बून' ३ आकारमाधनम् ।

फरफा, सं पु (अ फाम) सकृमुद्रणार्थं पूरणम् ।

फरफान, सं पु (फा) राजरीय आणयत्र, अनुशामनपत्र २ आला, आदेश ।

फरफाना, कि म (फा) भाषा (प्रे), आदिश् (तु प अ) शाम् (अ प म.) २ क् (चु) ।

फरफाद् सं स्त्री (फा) दुग्निवेदन २ प्रार्थना, अभ्यर्चना ३ अभियोग ।

फरफादी, स पु (फा) दुग्निवेदक २ अभियोक्तु २ प्रार्थिन् ।

फरफाग, स पु (अ) क्रोशस् ५ षोडशो भाग, अध्वमानमेद ।

फरफो, म स्त्री (अं) सार्द्धवेदनो दीर्घव काश, अवकाशमेद ।

फरफरी, स स्त्री (अं फेनुअरी) आग्लम्व त्तरस्थ द्वितीयो मास ।

फरफा, म पु (सं परशु) दे 'कुल्हाटा' ।

फरफग, स पु (फा) क्रीड प, अभिधानं, शब्दमग्रह २ टीका, कुचिका, व्याख्या ।

फरफहत्, सं स्त्री (अ) मोद, ह्य, प्रसक्तता ।

फरफरा, स पु (हि फहराना) पनाका, केतु ।

फरफव, वि (फा) आयन, विरनुन, विशाल ।

—दिल, वि (फा) विशालहृदय उदार ।

फरफगत, स स्त्री (अ) व्यवसाय विश्राम, उद्योगविश्रान्ति (स्त्री), अवकाश ।

२ निश्चिन्ता ३ मन्त्याग ।

फरफमोश, वि (फा) विस्मृत ।

फरफमोशी, सं स्त्री (फा), विस्मृति (स्त्री), विस्मरणम् २ सजलनं, स्वलितम् ।

फरफर, वि (अ) (दडभवात्) पलायिन, अपमान ।

फरफिता, सं पु (फा, मि स प्रेरित) दिव्य इश, दूत २ देवता ।

फरीफ, सं पु (अ) प्रतिद्विन्द, विपश्चिन् २ वादिन्, अधिन्, प्रतिवादिन्, प्रत्यधिन् ३ पक्ष, प्रतिपक्ष ४ पक्ष्य, सपक्ष ५ श्रेणी, वर्ग ।

—मानो, (सं पु अ) प्रतिवादिन् ।

फरीफैन, सं पु (अ) (व्यवहारे) पक्ष प्रतिपक्षी, वादिप्रतिवादिनी, अभियोग्य मिशुक्ती ।

फरफा, सं पु, दे 'फावफा' ।

फरफेदा, सं पु (सं फल्गु) राजमहा, ५, नद ।

फरेय, सं पु (फा) छल, कपट, प्रतारणा ।

फरेली, वि (फा) छलिन, कपटिक, प्रतारक ।

फरोत्त, स स्त्री (फा) विक्रय-यणम् ।
 फङ्, स पु (अ) पृथग्ता-त्व, भिन्नत्व,
 इतरत्व २ अतर, भेद, विशेष ३ दूरता-त्व,
 अतर ४ न्यूनता, विकलता ।
 फङ्ग, स पु (अ) धामककृत्य (इस्लाम)
 २ कर्तव्यकमन्द (न) ३ गल्पना
 ४ उत्तरदायित्वम् ।
 —करना, क्रि अ कल्प (प्रे), उत्प्रेभ
 (भ्वा आ से) (प्रभाष विना) सिद्ध मन्
 (दि आ प्र) ।
 फर्जी, सं पु (का) कल्पित, काल्पनिक,
 २ मत्ताहीन विनय ।
 फर्द, स स्त्री (अ) मुचीवि (स्त्री)
 नामबला (स्त्री), अनुकर्मिका
 २ पृथग्स्थित पत्रवल्गादिरा २ प्रच्छदपत्र
 स्यो वपु । वि अनुपम, अतुल्य ।
 फर्याद, स स्त्री, दे फर्याद ।
 फरटा, स पु (अनु) त्वरा, वेग २ दे
 'वराग' ।
 फर्दा, स पु (अ) कुपप्रसारक २ विवर ।
 फर्दा, स पु (अ) कुट्टिम स, शिलास्तर
 २ गृहभूमि (स्त्री) आस्तरण, कुश-आ,
 नमत, परिस्त्रोम ।
 फल, सं पु (म न) शम्य, प्रसव, उत्पन्न
 २ लाभ, प्राप्ति (स्त्री) ३ परिणाम,
 ४ गुण, प्रभाव ५ वनभोग ६ प्रतिफल,
 प्रतीकार ७ धारा, पत्र, फल (खडगादिकस्य)
 ८ फल, कुशा, कृपक ९ फलक
 १० दाल, फर, चर्मन् (न) ११ उद्देश्यसिद्धि
 (स्त्री) १२ गुण्य (गति) १३ गणित
 क्रियापरिणाम (उ योगगुणन, फल)
 १४ क्षेत्रफल १५ ग्रहयोगपरिणामि (ज्यो)
 १६ प्रयोजन, अथ १७ वृद्धि (स्त्री),
 दे 'वृद'
 —जाना, या लगना, क्रि अ, फल् (भ्वा प
 से), सफलीभू, फलवत् नन् (दि आ से),
 फलित (वि) भू ।
 —दार, वि (सं + फा) फलवत्, फलदायक,
 फलद, फलप्रद, फलित, फलित्, सफल
 २ अनौन, अवध्य ।
 —पाक, सं पु (म) कर्मार्थक २ नला
 मलक ३ फलपरिणति (स्त्री) ।

—पाना, क्रि स, (स्वकमगाम्) फल भुत्
 (रु आ अ)-लम् (भ्वा आ अ) प्राप्
 (त्वा प अ) ।
 —प्राप्ति, स स्त्री (स) कृतकार्यता, मनो
 रथमिद्धि (स्त्री) ।
 —भोग, स पु (म) उद्वतानुभव, परि
 षामोपभोग ।
 —रात्र, स पु (स) दे तरवृत् २ दे
 'खरवृत्' ।
 फलक, स पु (स पु न) (काष्ठादिकस्य)
 पट्ट २ शिला ३ दाल, चर्मन् (न)
 ४ रत्नपट्ट ५ आस्तरण ६ पत्र, पृष्ठ ७ हस्त
 नल ८ फल ९ पीठ, पीठिका ।
 फलक, स पु (अ) आकाश २, गगन २
 स्वा ।
 फलत, अव्य (स) परिणामत, अत, शनि
 हनो, अस्मात् वाराणात् ।
 फलद, वि (म) फल-दायक प्रद ननक ।
 फलना, क्रि अ (म फलन) दे फल आना
 ('फल्' के नीचे) २ फल आवट (भ्वा प
 अ), लाभ जव (प्रे) ।
 —फूलना, मु, मृश्व (दि प से), सधुष
 (भ्वा आ से), उत्सर्ष या (अ प अ) ।
 फलसफी, स पु (अ) दशनशास्त्र, तक,
 विधाशास्त्र ।
 फलसफा, सं पु (अ) दार्शनिक, तत्त्वज्ञ,
 दर्शनशास्त्र ।
 फला, वि (फा) अनुक ।
 —फला, वि अनुकामुक, विशिष्ट, निरिष्ट ।
 फलाग, स स्त्री, दे 'कृदान' ।
 फलागना, क्रि अ (स प्रलघनन्) दे
 'कृदाना' ।
 फलाकाशी, वि (स धिन्) फलच्छुक्, फला
 भिलाषिन् ।
 फलाना, वि, दे 'फला' ।
 फलार्थी, वि (स-धिन्) फलेच्छुक, फलाभि
 लाषिन् २ परिणामोत्सुक ।
 फलाहार, स पु (स) फलभक्षण, फलनिर्ब
 हणम् ।
 फलाहारी, वि (स-रिन्) फलभक्षक ।
 फलित, वि (स) फलवत्, फलित्, प्राप्तफल
 २ सवत्, पूर्ण ।

—ज्योतिष, म पु (म न) देवशविवा ।
 फली, स स्त्री (हि फल) बीजपुट, बीजकोष ।
 फलोत्ता, म पु (अ फलीलृ) वनिका, वनि
 (स्त्री) २ नालाकारवनि फली ।
 फलीभूत, वि (स >) मफल, फलप्रद ।
 फलोदय स पु (स) फलोत्पत्ति (स्त्री)
 ० लाभ ३ ह्य ४ स्वयं ।
 फमल म स्त्री (अ फल) शल्प, धान्य,
 अन्नम् ० गद ३ वात् ।
 फसाद, स पु (अ) मन्थोम विप्लव
 ० कल्ह उपद्रव २ विहार, विक्रिया ।
 फसादी, वि (फा) विद्रोहिन् विप्लवकारिन्
 ० उपद्रविन् कल्ह प्रव ।
 फसाना, म पु (फा) आटशायिका, लज्जु,
 कथा ।
 फसाहत, स स्त्री (अ) भाषा मीष्टव
 परिच्छृति (स्त्री) ।
 फमील, म स्त्री (अ) प्रसार, वरण, वप्र,
 वप्रम ।
 फहरना, कि अ (स प्रसरणम्) प्रसृ (भ्वा
 प अ) उल्डी (भ्वा आ से) ।
 फहराना, कि म 'फहराना' के धातुओं के
 प्रेरणायक रूप ।
 फॉक, म स्त्री (म फलकम् >) लण्ण,
 लण्ण २ सुरिका ३ टेपा ।
 फॉकना, कि स (हि फकी) इस्त्रलेन मुये
 निक्षिप (हु प अ) । स पु, चूर्णम् मुये
 निक्षेपणम् ।
 फॉटना, कि अ (स फणन >) कुद् (भ्वा
 आ ने) उल्डु (भ्वा आ अ) २ उल्का
 (भ्वा आ न) । म पु उल्कवन, कूटन,
 उल्कणम् ।
 फॉम, म स्त्री (म फाश) वधनम्, दे
 'फदा' ।
 फॉमना, कि म (हि फॉम) फशयति
 (ना धा) २ वचप्रन (ने) ।
 फॉमी, म स्त्री (हि फॉम) उल्कधनम्
 २ मृत्पुण्ण २ फाश वधनम् ।
 —फेना, कि म, उल्कध ह्य (अ प अ) ।
 फाटल, म स्त्री (अ) परममद २ पत्ति
 (स्त्री) ३ मृत्, गुा ।
 फाका, म पु (अ फाल्) उपवाम, उपोषित,
 लपनम् ।

फाग, स पु (हि फागुन) होलिशोम
 २ रक्तचूणभेद ३ होलिफागीवम् ।
 फागुन, स पु (म फाल्गुन दे) ।
 फाटक, स पु (म फपाट) अगनेहार, उहद,
 डारन २ लौदडारम् ३ दे 'कौनी हौद' ।
 फाडना, कि म (म फाडनम्) प्रश्न (हु
 प ने) भिद्दि (रु प अ), दि
 (अ) २ गण् (लु), भन (रु प अ) ।
 न पु, ज्ञथन, भेदन, छेदन, विचारण, विधान
 २ गण्ण भजनम् ।
 फान्म, म पु (फा) *दीप, कोप पुट ।
 फायदा, स प (अ फादृ) लाभ, फना-
 गम, आय ३ प्रयोजनमिद्धि-दर्शितप्रति
 (स्त्री) ३ सुफल सुपरिणाम ४ नीरोगता ।
 —फट, वि लभदायक, उपहारक ।
 फारखनी, म स्त्री (अ फारिग + खनी)
 दायित्वत्याग ० दायित्वत्यागपत्रम् ।
 फारम, म पु (अ फार्म) प्रपत्रम् ।
 फारमूला, म पु (अ) मूत्रम् ।
 फारस, म पु (फा) पारसि(सी)क ।
 फारसी, म स्त्री (फा) पारसी ।
 —फाँ, वि पारसीविद्, पारसीपटित ।
 फारिग, वि (फा) लम्भावराष्ट्र, निर्वात
 व्यापार, निवृत्त ।
 —होना, मु कार्यमुक्त, लम्भावकाश मू २
 शीचाय गम् ।
 फारन, वि (अ) विदेशीय, परदेशीय, वै
 पार, देशिन ।
 —आफिम, म पु (अ) विदेश परराष्ट्र,
 कायाय ।
 —मेक्रेरा, म पु, विदेश परराष्ट्र, मखिव ।
 फारेनर, म पु (अ) विदेशीय, परदेशीय,
 वैदेशिन, पारदेशिन ।
 फारेनहाइट, म पु, जर्मनवैज्ञानिकविशेष ।
 —थमंमाण्ट, म पु (अ) फारेनहाइट
 तापमापत्रम् ।
 फारेण्ट, म पु (अ) वन, जंगलम् ।
 —डिवायमेंट, म पु (अ) वन जंगल,
 विशाल ।
 फाल, म स्त्री (मं पु न) कुशिल, हृषिना,
 हलापररणम् ।
 फाल्द, वि (हि फाल् = डुफदा) उपयुक्तव

(भ्वा प अ) २ मूढ (दि प से) ।
म ० उत्खनन, नर्तनम् ।

कुनगी, म स्त्री (स स्फुटनम्) शान्ता विष्टप,
अग्रपञ्च-अग्राङ्कुरा (बहु०) ।

कुफुन म पु (म) दे 'फुफडा' ।

कुफडा, पु (अनु) दे 'फुडार' ।

पुफेरा वे, (हि फूफा) पैतृध्वमेव, पि (पे)
तृवकाय ।

फुइदन, म स्त्री (अ) वियोग, विरह ।

फुरना म स्त्री (स स्फूर्ति) शीघ्रता,
क्षिप्रता ।

फुरतीला, वि (हि फुरती) शीघ्रक्षिप्र,
कारिन्, स्फूर्तिमय ।

फुरना, कि अ (स स्फुर) प्रादुर्भू, प्रवृत्तीभू
२ वदनेषु (भ्वा आ से) ३ प्रकाश
(भ्वा आ से) ४ पुरपुरादते (ना धा) ।

फुरस्त, म स्त्री (अ) अवकाश, रिक्तममय
२ अचसर, समय ।

फुलका, स पु (हि फूलना) लघुतनु,
रौन्ति २ विस्फोट, पिरिका ।

फुलसद्दी, म स्त्री (हि फूल + झटना)
पुल्लधारिणी २ क्लृप्तकारिणी वाता ।

फुलवाडी, म स्त्री (सं पुल्लवाटी) पुष्प
वृक्षम, वाटी-वाटिका, उद्यानम् २ वरदाभ्राया
वाल् निर्मिता पुल्लवाटी ३ पुत्ररत्नवादय ।

फुलाना, कि स, व 'फूलना' वे प्रे रूप ।

फुलेल, सं पु (हि फूल + लेल) सुगन्धिफलम् ।

फुल्ल, वि (स) विकसित स्फुटित, उत्थित ।

फुसफुसा, वि (अनु फुस) शिथिल, दन्ध
२ भगुर, भिदुर ३ अशक्त, दुर्बल ।

फुमलाना, कि म (हि फिमलाना) प्रतृ-वच्
(मे), विप्रलम् (भ्वा आ अ) ।

फुहार, स स्त्री (स फूत्कार >) शीघ्रवर्ष,
मन्दवृष्टि (स्त्री) ।

फुहास, सं पु (हि फुहार) नलभारा,
यन्त्र २ जलोत्थेप ।

फूँक, स स्त्री (अनु फूँ) फूत्कार, ध्वानम्
२ सुगन्धक, श्वान ।

—भारना, कि स, फूँ, फ्ना (भ्वा प अ) ।

फूँकना, कि म (हि फूँक) दह् (भ्वा
प अ), भस्ममाद कृ २ फूँकः ।

फूँकनी, सं स्त्री, दे 'फूँकनी' ।

फूँम, म स्त्री (धाममे ० २) पलाल-लै,
पल ० शुष्क, वृण-धाम ।

फूँट, म स्त्री (हि फूँटर) विद्या, मन्त्रा,
चिन्तिता पञ्चा २ विदलय ३ विरोध,
मनभेद ।

—डालना, कि म, विरोध नम् (प्रे) ।

फूँटनम्, कि अ (स स्फुटनम्) भिदृष्टि
विदू (वर्म) स्फुट (तु प से) २ विवम्
फूँट (भ्वा प से) ।

फूँकार, म पु (म) दे 'फुडार' ।

फूँफा, म पु (देश) पितृध्वत्, पति म ।

फूँफी, म स्त्री (हि फूँफा) पितृध्वत् ।

फूँल, म पु (म फूँलम्) बुद्धि, प्रयत्न, पुष्पम् ।

—दान, म पु, बुद्धिमत्मान पुल्लभानम् ।

—दार, वि, पुषित, सपुष्प ।

फूँलना, कि अ (हि फूँल) फुल् विरम
(भ्वा प म) २ प्रमुत् (भ्वा आ मे) ।

म पु विराम, प्रफुल्ल ० प्रमाद, आलाप ।

फूँला, म पु (हि फूँल) शुभ, पुष्पम्,

फूँली, म स्त्री (हि फूँल) शुभ, पुष्पम्,

फूँम, सं पु, दे 'फूम' ।

फूँकड, वि (अनु) वच्, मूढ, मन्दमति २
कदाचार, बुरूप, बुदधान ।

फूँकना, कि स (म फूँकना) विपुञ्चु
(तु प अ) प्रभम् (दि प से) २
प्रम देत पत् (प्रे) ३ सावधान त्यत् (भ्वा
प अ) ४ अत्र-व्य (तु) । म पु, क्षेपा,
प्रामाद, एतन, अपव्यय ।

फूँकने योग्य, वि ध्वनयिष्य, त्यक्तव्य । ०

—चाला, म पु, धार, प्रामाद ।

फूँका हुआ, वि, क्षिप्र, प्राम्, त्यक्त ।

फूँटना, कि म (सं विष्ट) मध् (म् प म),
मध्व-वच् (भ्वा प म) २ त्रीकपक्षानि
मिथ् (तु) ।

फूँटा, म पु (हि फूँटा वा फूँटी) परिम,
वच्, मध्व पत् ० लघुणीष प ।

फूँत, म पु (म) जलदम, अधिपय,
मण्ट ०, लिण्णीर, अनुपय ।

फूँतिल, वि (म) फूँत, पुन अर्द्ध, दन्त ।

फूँनी, म स्त्री (सं फूँनी) परकात्र-म ।

फूँफडा, म पु (म फूँफुम-मम्) पितृध्वं,
करोमं, क्लीभन् (न), पुष्पम-म, रत्नपत्तन ।

केफडी, स स्त्री दे 'पपनीर' ।
 केर, स पु (णि केरना) ब्राम्ना, परिवननम्
 २ भ्राणि (स्त्री), अम २ पुनर (अन्वय) ।
 केरना, क्रि म (म प्रेग्णम्) पूर्ण परिभ्रम्
 (प्रे) २ प्रतिदा प्रत्वृ (प्रे) ३ प्रतिया
 प्रतिनिवृत् (प्र) स पु ध्यान परिभ्रामण,
 प्रतिदान, प्रत्यपणम्, प्रतिपान प्रतिनि
 वर्तनम् ।
 केरफार, स प (हि केरना) परिवनन विप
 याम विषय २ व्याज, कपम् ।
 केरा, स पु (पूव) प्रत्यावनन, प्रत्यागमन
 २ भ्रमणम् परिभ्रमणम् ३ द्विरागमन ।
 केरी, म स्त्री (पूव) परिभ्रमा प्रदक्षिणा
 २ दे 'केरा' ३ दे 'कर' ।
 —बाला, स पु, भाण्वाद् वविर ।
 केर, वि (अ) विप, मोचयत् अनुत्ती ।
 फेकरी, स स्त्री (अ) शिल्पिणी ।
 फेल्ना, क्रि अ (म प्रमराम्) । वन विन्तृ
 (कर्म) २ व्याप् (स्वा प अ) ३ अर्च्यै
 (स्वा आ अ) पीनी भू ४ प्रदान (वि)
 नन (दि था मे) ५ आद्यद् । स पु,
 विन्तार, विनति श्यामि (स्त्री) ।
 फेला हुआ, वि विरुत्न, विन्त्यात्,
 अप्यायित पीन, प्रत्याय, प्रमिद् ।
 फेल्मूफ, स पु (अ फिल्मफ्) बुध,
 प्र २ छलिन्, कपिन् । ३ अप्यविन् ।
 फेल्मूफी, म स्त्री, (अ) बुद्धिमत्ता, प्राप्ता
 २ कल, कपम् ३ अप्यन्वय, सुकहनना ।
 फेल्ना, क्रि म, व फेल्ना' ने प्र रूप ।

फेल्ना, स पु (हि फेल्ना) विन्तार, प्रमार
 २ विनति श्यामि (स्त्री) ।
 फेदान, स पु (अ) रीति, प्रथा २ सौम्य,
 विवि, वैषभूषा ।
 फेसला, स पु (अ ल्ह) निर्णय, सपधारणम्
 फोक, स पु (हि फुँकना) मल लुङ्किट्ट
 शेष, अवसर ।
 फोफ्ट, वि (णि फोक) निस्मार, तत्त्वहीन ।
 फोकस, स पु (अ) रश्मिरेन्द्र ।
 फोटो, स प (अ) छायाचित्र, जगत्कालेयम् ।
 —का कमरा, स पु, छायाचित्रपेज्जा ।
 —ग्राफर, स पु (अ) छायाचित्रक ।
 —ग्राफी, म स्त्री (अ) छायाचित्रणम् ।
 फोडना, क्रि म (म स्कायनम्) स्फुट विट
 यण्ट (प्रे) । स पु, विदारण, स्फोयन,
 सण्टनम् ।
 फोडा, स पु (म स्काय), विन्त, सण्ट,
 विद्रधि ।
 फौज, म स्त्री (अ), जेना, बल, सैन्यम् ।
 —दार, स पु, (फा) सेनापति, सेनाना ।
 —दारी, म स्त्री (फा) दण्डाधिकारणम्
 २ कलह, पत्नि ।
 फाजी, वि (फा) सैनिक, योध । स प,
 सैनिक, योध ।
 फौरन, क्रि वि (अ) नपदि, सद्य सगिति,
 अचिरात् (मव अन्वय) ।
 फौलाद्, स पु (फा फोनाद्) रङ्गमस,
 सारलोह, शकम् ।

व

व, देवनागरीवर्णमालया त्रयाविंशो व्यन्म
 वर्णं वजार ।
 वग, स पु (स वगा वट्ट) नालम्ब प्रात
 विशेष ।
 वेगला, वि (हि वगाल) वाग, वगदेशीय ।
 स स्त्री, वगभाषा ।
 वैगला, स पु (अ वैगली) एर-भूनि भवनम् ।
 वगाल, स पु (स वगा वट्ट) प्रात ।
 वगाली, वि (हि वगाल) वगीय, वगदेशीय ।
 स पु, वगालिन् ।
 वजर, वि (हि वन+ऊवन्) ऊपर, ऊपवद,

अशान्यप्रद । स पु ऊपर-रम्, अनुवरा भू
 (स्त्री) ३ मरस्थलम् ।
 वनारा, स पु (स वगिज्) धन्य, वगिन्
 व्यवसायिन् ।
 वेंटना, क्रि अ (म वटनम्) विभन्वृत् (कर्म) ।
 वेंटवाना, क्रि प्रे, 'वॉटना' के धातुओं के प्रे
 रूप ।
 वडल, स पु (अ) पोडलिका, गुच्छ, पोडला,
 सघात, भार, कूर्च ।
 वडी, स स्त्री (हि बद) कु(क)र्पाख कम् ।
 बद, स पु (फा) बध, बधनम् २ अवरोध,

उपरोध ३, विन । वि, मयन नियमित
 ० अवकट अनरित ३ पिहित मश्रुतमुस
 ४ विरत, ननव ।

—ररना, रि म (जगलन) पिधा (जु उ
 अ) र् (क उ अ) कीलयति (ना
 धा) ० निवृ (प्रे) प्रतिपथ (भ्वा प
 मे) ३ विरम् विरम् (प्रे) स्तम्भ (म प
 म) ४ (रभ्रदिक) पूर (चु) ।

वदूगा, म स्त्री (फा) प्रणम २ सवा
 ० भवापालना ।

वदन्नाद, म प (म वदन्ना) डाग्वा
 पुपपत्रनालि वदन्नालि ।

वदना, म स्त्री (म वदना) प्रणाम
 नमस्कार, वदन्म् । क्रि म, प्रणाम (भ्वा
 प अ), व (भ्वा आ मे) नमस्कृ ।

वदर, र पु (म वानर) वदि मरु,
 शापशु वलीमुग । (स्त्री वलीमुटी,
 मरटी) ।

—वदर, र पु (म वानरक्षनम्) वपि
 मरुट, प्रण भतम् ।

—घुडफा, स स्त्री निस्सार निग्राण, विभी
 विग भयप्रदजनम् ।

—का घाय, मु र्वावि स्थिर, प्रण क्षनम् ।

वदरगाह, म पु (फा) पोताशय ०
 पोताशयपुरम् ।

वदा, स पु (फा) मानव, मनुष्य
 ० मेवक, भूत्य ।

—निग्राज्ञ, वि, दीनदयालु, दीनवत्सल ।

—परवर, वि, अनाथनाथ, दीनवपु ।

वदिसा, म स्त्री (फा) वधन, अवरोध ।

वदी, म पु (म दिन्) मट्ट, तारण, वन्दि
 ० कारागृह मट्ट, वदिन् ।

—गाना, म पु, वारागृह, गुप्त (स्त्री),
 वारा ।

वदूर, म स्त्री (अ) नालाभ्य, गुन्नाभ्य
 अन्वयम् ।

वदूरचा, म पु (फा) नालाभ्यमैनिद ।

वदोयम्भ, म पु (फा) अदेण, मविधा
 ० नृदाविभाष ।

वधर, म पु (मं) न्याम, निधुप, जाधि ।

वधन, म पु (म न) प्रतिबन्ध, जन्मराय
 २ वधन, प्रथि ३ रज्जु (स्त्री), शृङ्गल
 वारा, वन्दिशृङ्गम् ।

वैधना, रि अ, अवकट-वन्म् (वर्म) ।
 वैधनाना, रि प्रे, 'वोधना' के धातुओं व
 प्रे रुद ।

वधु, म पु (म) वा धव, गानि, सन नय,
 समीन ।

वधुय, म पु (स) रत्तर, वधुय, पुष्पमेज ।

वधुता, म स्त्री (म) वधुत्व, समीनत
 मताभावना ० मैना, मित्रता ।

वधेच, स पु दि वाधना) अवरोधोपाय
 २ प्रतिबध ३ नियतज्ञान दयमान्य व
 द्वायम् ।

वध्या, म स्त्री (म) वध्या, प्रसवशुभकारी
 ० वधा, जन्मरक्षिता मी (स्त्री) ।

वध, म स्त्री (अनु) गणसिद्ध, नाद, क्षे
 ० युद्धपट्ट ३ अनिगोदवाच्यम् ।

वधा, म पु (ज मवह्) वन्नालीसा
 चवूफा, म पु (मगावा बवू न ज काट) वग
 शापटम् ।

वधो, म स्त्री (न वधो ० यम) मरणात्
 २ वदमाकृट, वृत्त्य, खोल्ब, वामपूर ।

वधरी, म स्त्री (म वशी) मुरली, वणु,
 वश नालिका ।

वैदही, म स्त्री दे 'वहैगी' ।

वक, म पु (न वर) वक २ अमृतविशेष
 ३ कुवर ।

वकना, रि स (अनु वर) जल्प प्रल्प
 (भ्वा प मे), जवाव्य वद (भ्वा
 प म) ।

मं पु, प्रजन्पन, उ मत्त, प्रलाप ।

वकरा, म पु (म वर) स्तुभ, ट(छा)ग,
 जत, शुभ, टगज (वरती=मता, मव
 मभा गल्मनी) ।

वक्याद, म स्त्री (नु वर न मं वाद >)
 प्रलाप प्रवण । रि अ, दे 'वकना' ।

वक्यादी, वि (हि वक्याद) जल्प, प्रल्प
 विन्, वाचाल ।

वकायन, मं पु (हि वका + नीम) प्रे,
 विरसुगिर, मट्ट निव, वासुग ।

वक्या, म पु (म विदुव >) वृत्त २,
 पाठलि ० सुल्, मराल ।

वकल, मं पु (म) वकल, सुरभि, सिद
 केमर २ शिव ।

बर्झा, वि, दे 'बर्जवादी' ।
 बन्ध, स पु (अ बर्ध) पेटिका, भजूषा
 मयुज, मनुज, पितृ-कर्म ।
 बग्निश्रा, म पु (का) दृढमुख, मीवनभ्युनि
 (स्त्री) ।
 बज्रही कि वि (का) सम्यक्, मातु, सुष्ठ
 (सर्व अर्थ) ।
 बजेडा, म पु (हि विगेना) विपनि
 मरुतम् २ विवात् ३ कठिनता ।
 बलेडिया, वि (हि बरेण) विवात्-कृ
 म् २ श्रिय विवन्ति ।
 बलैरना कि म दे विररान' ।
 ब्रह्म, म पु (का) भाग्य, देव अष्टम
 २ मीभाग्यम् ।
 ब्रह्मावर, वि (का) भाग्यशालिन् सुभग
 नदाभा ।
 ब्रह्मना, कि म (का ब्रह्म) दृष्ट (स्वा
 आ म), विधा (बु), उत्तम् (बु
 प २) ।
 ब्रह्मिशा, म स्त्री (का) दानम् २ दत्त
 वस्तु (न) ३ पुस्कार ३ क्षमा, अनग्रह ।
 बगल, म स्त्री (का) ब्रह्म बटुसेन,
 दामूलम् ।
 ब्रह्मा, म पु (म ब्रह्म) ब्रह्म, दीर्घ, तप
 म दाभिक, तीर्थमेविन्, मीनगानि
 शुक्लवादम् ।
 बगावत, म स्त्री (अ) राजद्रोह, विप्लव
 उपलव ।
 —का भडा बुलद करना मु, राजद्रोह-राज
 विरोध कृ ।
 बगीचा, म पु (का वाचह्) बट जी
 वाग्नि, उपवनम् ।
 बगुगोसा म पु (देश) मनुगोन २
 'नागदाता' ।
 बगुला, म पु (हि वाङ्-गोला) मकवान,
 वातावत वानभ्रम, भूलिचक, वात्या ।
 बगौर, अथ (अ) विना, जनरा, जनरेण,
 विहान, वनयित्वा, श्रेते ।
 बग्नी, म स्त्री (अ बोगी) चतुश्चक्र मपल्लम
 शयानम् ।
 ब्रह्मरना, कि म (म अवधारणम्) अवट्ट
 (स्वा प १, बु, बु प अ, स्वा उ अ)
 अजन नतृतादिकेन सिच् (बु प अ) ।

बघेला, म पु (हि वाप) व्याप, मृगान्त ।
 बचत, म स्त्री (हि बचना) लभ, प्राप्ति
 (स्त्री) २ कल्प, मग्रह ३ सचित-रशिग,
 अवशिष्ट वनम् ।
 बचना, कि अ (म बचनम्) रणनिर्मुक्त
 (रभ) २ अवशिष्ट (कम) ।
 बचपन, म पु (हि बच्चा) बल्य, कौमार,
 बाल्यम् ।
 बचाना, कि म (हि बचना) परित्रै (भवा
 आ अ), रक्ष-गुप (भवा प से) २ अव
 णिप (प्रे) भवि (स्वा उ अ) ।
 बचाव स पु (पूव) रथा जाण, उदार,
 गान कति (स्त्री) ।
 बरसीश, म स्त्री (का शिश) दानम्
 २ पारितोषिकम् ।
 बरसा, म पु (न बर) वस्त्र बाल, बालक,
 शिनु २ शाव शावक ३ अशानिन् ।
 —बर्नी, स स्त्री, गमाशय गर्भकोष ।
 बरसी, म स्त्री (का) वल्मा, बाला, बालिका ।
 बरडा म पु (म वल्म) गोवल्म, गोशावक,
 तण ।
 बरडेडा म पु (हि बरडा) बालाश, अथ
 शावक ।
 बरट, म पु (अ) आयव्यधिकम्, व्यामल ।
 बचना, कि अ (म बदन) कल्प अन्व
 (भवा प स), वाद् (कर्म) ।
 बरराग, वि (म बर्राग) दृढावयव, अशानि
 कठोर ।
 —बर्ली, स पु हनुमद ।
 बरवाना, कि प्रे, व 'बनाना' के प्रे रूप ।
 बरा, वि (का) युक्त, उचित । कि वि,
 मत्यन् ओम् ।
 बराज, म पु (अ बर्राज) वरुविक्रेण ।
 बराना, म पु (का) बरहट्ट ।
 बरानी, स स्त्री (का) वरुविक्रय २ वरु
 निचय ।
 बराना, कि म (हि बरना) वाद् (बु),
 स्वा-वन् (प्रे) । म पु, वारनम् ।
 बरानवाला, स पु, वादन, वादवित् ।
 बराय, अर्थ (का) स्थाने, प्रातिनिधे ।
 बर, म पु (म बर्ज) ऐन्द्राभ्र, अशानि,
 पवि ।
 बर, म पु (म बट) बटि, न्यग्रोध ।

बटखरा, स पु (स बट् >) दे 'बट्' ।
 बटन, स पु (अ) बुटुप, गण् ।
 बटना, क्रि स (म वर्तनम् >) व्यावृत्त (प्रे),
 तन्तु, धूर्णन भ्रमण ।
 बटमार, स पु (हि बट् + मारना) परि-
 पन्थिक, लुण्ठक प्रतिरोधक ।
 बटलोई, म स्त्री (हि बट्) दे 'देवा' ।
 बटपारा, म पु (हि बट् + पारा) भूमिभाग,
 भूमिव्यवस्थानम् = धनविभाग, टापभा ।
 बटा, स पु (हि बट्) मित्र अपूर्णक,
 राशिभाग प्रभाग ।
 बटुभा, स पु (स बटु >) मुद्रा नागव-
 कीर्ष ।
 बटोर, स स्त्री (स बटका) वर्तक, वर्तनी,
 कातका ।
 बटोरन, म स्त्री (हि बटोरना) प्रवन्धर,
 निर्मात्रकमुत्तमूह उच्छिष्टम् ।
 बटोरना, क्रि म (म बटु >) मन्त्रि-
 (स्वा ङ अ) मग्रह (क ङ मे) ।
 बटोही, स प (हि बाट) पन्थ, पथिक ।
 बट्टा, स पु (म बट्टा >) टोप, बल्क ।
 —खाता, म पु, अग्राध्यक्षनरैः ।
 बट्टा, म पु (स बट्ट) पेषणप षण्,
 बुद्धनप्रस्तर २ प्रस्तरादीना बटुल्लण्ट ।
 बट्टा, म पु (स बट्ट) दे 'बट्ट' ।
 बट्टा, वि (हि 'बट्टा' से, समास के आरम्भ
 में ही) दे 'बट्टा' ।
 बट्टपन, म पु (हि बट्ट) श्रेष्ठता, महत्ता,
 गौरवम् = बलशक्ता, प्रीष्टता ।
 बट्टबट्ट, स स्त्री (अनु) प्र, ल्य, व्यथवचनम् ।
 बट्टबट्टाना, क्रि अ (अनु बट्ट) प्र, ल्य
 (स्वा प मे) २ अमताशय नीनै बट्ट
 (स्वा प से) ।
 बट्टबोला, वि (हि बट्ट + बोला) विकल्पन,
 विकल्पनशील ।
 बट्टभागी, वि (हि बट्टा + भाग) महाभाग्य,
 सुभाग्य, भाग्यशालिन् ।
 बट्टबा, स स्त्री (म बट्टका) पौरी, तुर्गी
 २ बट्टवाग्नि ।
 बट्टबानल, स पु (म बट्टवानल) बट्टवाग्नि,
 बट्टवानुत्त ।
 बट्टा, (स बट्ट >) आयत, विस्तृत,

विशाल २ महत्त्व, गुरु ३ बयोवृद्ध, अधिन
 बट्टक ४ उत्तम, श्रेष्ठ ५ अधिक, अतिशान्ति ।
 म पु, धनाढ्य २ महापुरुष ।
 बट्टाई, म स्त्री (हि बट्टा) मान, गौरवम् ।
 महत्ता, प्रतिष्ठा २ वृद्धता, गुरुत्वम् ।
 बट्टी, म स्त्री (स बट्टी) बट्टिया, वैश्व-
 शिवा, बट्टिका ।
 बट्टे, म पु (म बट्टि) तडन, तडन,
 बट्टकिन्, त्वष्ट, छाद ।
 बट्टी, स स्त्री (हि बट्टना) उन्नति वृद्धि
 (स्त्री), उपचय, उत्कर्ष ।
 बट्टना, क्रि अ (स बट्टनम्) वृष्ट् (स्वा
 आ से), उपचि (कर्म), वृद्धि प्राप् (स्वा
 उ अ), ष्ट् स्फाय अप्पाय् (स्वा आ मे),
 वृह (स्वा तु प म) । म पु, दे 'बट्टनी' ।
 बट्टा हुआ, वि, उत्पन्न, वृद्ध, उपचिद, रशी,
 धीन, आस्थान ।
 बट्टाना, क्रि म, व 'बट्टना' के धातुओं के
 प्रे रूप ।
 बट्टिया, वि (हि बट्टना) महार्प, बट्टमूल्य
 २ उत्कृष्ट, गुणवत् ।
 बट्टिक, म पु (म बट्टिन्) पण्डानीय, दे-
 'दन्तिश' ।
 बट्टनी, म स्त्री (हि बट्टनी) बट्टनी
 लप २ विवाद ।
 बट्टन, म स्त्री (अ बट्ट) बट्ट, कादव,
 हसनाताय खगभेद ।
 बट्टलाना, क्रि स (हि बट्ट) क-बण (लु),
 आरया (अ प अ), आवस् (अ आ),
 निविद (प्रे) २ बुधना (प्रे) * निर्दिश
 (तु प अ), प्रदृश (प्रे) । म पु, बधन,
 बधन, निवेदन, आवर्ण, बोधन, क्षान्त, निर्दिश,
 प्रदृशन्म् ।
 बट्टलाने योग्य, वि, बधनीय, वर्णनीय, आरयेय ।
 —बाला, स पु अख्यातु बधक, बर्णविद
 २ बोधर, शापक ३ निर्दिशक, प्रदृश ।
 बट्टलाया हुआ, वि, बधित, बर्णित, आविष्ट,
 बोधित, क्षपित ३ निर्दिष्ट, प्रदृशित ।
 बट्टाना, क्रि म, दे 'बट्टाना' ।
 बट्टाशा, म पु (हि बट्टा) वृत्त मित्रापुरद्वन्द्व,
 बट्टाश ।
 बट्टी, स स्त्री (स बट्ट) बट्टी, बट्टिया,
 वैश्विनी, शिष्टी २ दीप ।

बत्तोस, वि [म द्वात्रिंशत् (नित्य स्त्री)]
 स पु, उक्ता सख्या तद्वै (३०) च ।
 —वौ, वि, द्वात्रिंशत्तम मीम, द्वाि ५
 शी शम् ।
 बत्तोमी, स स्त्री (हिं बत्तोम) द्वात्रिंशत्पदार्थं
 समूह ० मानवदन्तममूह, दशनावलि
 (स्त्री) ।
 बधुआ, स पु (स वास्तुकम्) गारराज,
 राजशाह, शाहश्रेष्ठ ।
 बद्ध, वि, (फा) दुष्ट, पाप, म्ल, नाग ।
 —किरमत, वि, मन्दभाष्य ।
 —चलन, वि, वर्तन, कुपरित ।
 —जवन, वि, कटुभाषिन्, दुभाषिन् ।
 —जात, वि, नीय, छुद्र, निकृष्ट ।
 —तमी न, वि, अशिष्ट, जसभ्य, ग्रान्य ।
 —नीयत, वि, वरम दुराजय ।
 —परहेज, वि, कुपथ्यमेदिन ।
 —परहेजी, स स्त्री, कुपथ्यम ।
 —वू, स स्त्री, दर्पन्थ, दे ।
 —मादा, वि, दुर्धत, दुश्चरित ।
 —शरल, वि, कुरूप, दुर्दर्शन ।
 —हजमी, स स्त्री, अजीर्ण, अग्निमान्द्य,
 अपाक ।
 बदन, स पु (फा) शरीर, देह, कव ।
 —दूटना, सु, अगमधिषु-अवयवव्यधिषु वेदना
 नुभव (ज्वरपूर्वरूपम) ।
 —मे भाग लगाना, सु, अन्यन्त कुप् (दि प
 मे) कृष् (दि प अ) । ० अतीव मन्तत
 (वि) भू ।
 —माँचे मे हला होना, सु, लावण्य मौन्द्य,
 अतिशय-अतिदाग्म्य ।
 —मुख कर काँटा हो जाना, सु, अत्यर्थ
 क्लेश-क्षीण शुक्लाग (वि) भू ।
 बडर, स पु (स) बदरी, बदरिका, बदर,
 बदरीफलम् ।
 बडलना, क्रि अ (अ बदल) स्थानान्तर
 रूपान्तर-अवस्थान्तर गण, अन्यथा भू, विकृ
 (कर्म), परिवृत्त (भ्वा आ से), विपर्यय
 (दि. प मे) । क्रि म, परिवृत्त (प्रे),
 अन्यथा कृ, विकृ, विपर्यय (प्रे), विनिमे
 (भ्वा आ. अ) । सं पु, अवस्थान्तर
 रूपा-न्तर-नन्तर, प्राप्ति (स्त्री), परिवर्तन,

विनिमय, विक्रिया, विपर्याय, परिवृत्ति,
 (स्त्री), विपरिणाम ।
 बदला, स पु (हि बदलना) विनिमय,
 आदानप्रदानम् २ प्रतिशोध, प्रति(स्त्री)-कारः
 ३ परिणाम, फलम् ।
 बदलाना, क्रि म, दे 'बदलना' क्रि स ।
 बदली, सं स्त्री (हि बदलना) परिवृत्ति.
 (स्त्री), परिवर्तनम् ।
 बदावनी, स स्त्री (स वद् >) वैर, द्वेष,
 विरोध २ प्रतिस्पर्धा ।
 बदेलेत, क्रि वि (फा) कृपया, अनुग्रहो
 ० करणेन साधनेन, द्वारा ।
 बद्ध, वि (म) नियमित, बन्धी, कृतभूत,
 मयन ।
 —बोष्ट, स पु (म) मज्जवरोध, विद्वध ।
 बडाइ, सं स्त्री (स बद्धन >) वधापन, वृद्धि
 व न, अभिनन्दनम् ।
 —दना, क्रि म, वधापन दा (जु उ अ) ।
 बधिया, स पु (हि बध-भारन) नपुसकः
 पशु, पण्डाहण चतुष्पाद ।
 बधिर, वि (म) अरुर्ग, ण्ट, श्रोत्रविकृष्ट ।
 बधूटी, स स्त्री (स बधूटी), दे 'बधू' ।
 बन, स पु (स बनम्) अरण्य, कानन,
 नागार ।
 —चर, स पु, अरण्यवानिन्, आगविर ।
 —वाम, स पु, बनवाम, अरण्यनाम ।
 बनजारा, स पु (हि वनज) द्रव्यवभाषिन्,
 व गिज्यनीविन् २ वणिज, दे 'बनिया' ।
 बनना, क्रि अ (स वर्णन >) निर्मा रच-
 तिधा अनुष्ठा (कर्म) ।
 बना हुआ, वि निर्मित, रचित, विक्रित, कृत,
 मष्ट, मपत्र, निष्पन्न ।
 बनमानुस, स पु (सं वनमानुष) वानर
 भेद २. अमन्यमानव ।
 बनवाहूँ, स स्त्री (हि बनवाना) निर्माण-
 मनि (स्त्री)-शुल्क ।
 बनेवाना, क्रि प्रे, व 'बनाना' व प्रे रूप ।
 बनात, सं स्त्री (हि वाना) उत्तमौषणंपटेभेद ।
 बनाना, क्रि म (हि बनना) निर्मा (अ
 प अ, जु आ अ), रच् (ल), कृ,
 कल्पयन्त (प्रे) २ जन् उत्पद् (प्रे)
 ३ सपद्-साध् (प्रे), अनुष्ठा (भ्वा प. अ),

विधा (जु उ ज) ४ अत्र ७५ हम्
(भ्वा प मे) । म पु, रन् वरण,
निमाण क-प-न जनन, उत्पादन, संपादन,
अनुष्ठानम् ।

वनाने योग्य, वि, निमातव्य रचनीय, वर
णीय, विधेय, अनुष्ठेय, ननयितव्य ।

—वाला, म पु, निमातृ, रचयितृ विधायक,
जनयितृ, उत्पादक, अनुष्ठान् ।

वनाया हुआ, वि, निर्मित, रचित, वलित,
बिहित, वनित, उत्पादित, अनुष्ठित, संपादित ।

वनारसी, वि (हि वनारस) काशीस्थ,
वारणसेय ।

वनाव, स पुं (हि वनाना) निमाण, रचना
२ शृंगार, अलकरणम् ।

वनावट, स स्त्री (हि वनाना) रचनना,
रचनाकीशला, घटना २ आटवर ३ वृत्ति
मना ।

वनावटी, वि, (हि वनावट) कृत्रिम,
कृतक, अनैसागिक ।

वनिया, स पु (सं वणिज्) नेगम,
साथबाह, श्रयनित्रायिक, पण्याजीव २ आप
गिक, विपणिम् ।

वनिरवत, अव्य (फा) अपेक्षया, तुलनायाम्
२ उद्दिश्य, अधिष्ठत्य ।

वरर, म पु (फा) वंसरित्, हरि, मिट ।

वबूल, स पु (स वडूर) कण्टाल, तीक्ष्ण
वट्ट, स्वगुण्य, युग्मकटक, कफान्तक ।

घम, सं पु (अ वाक्) अग्निगोत्रकात्म्यम् ।

वया, स पु (सं वयनम् >) वय, पगभेद ।

वयान, स पु (फा) वर्णनं, कथनम्
२ वृत्तात्, उदत्त ।

वयाना, म पु (अ वे) दे वेशमी ।

वयार, स स्त्री (म वायु) पवन, वात् ।

वयारलीय, वि [सं द्वि(दा) चारिशब्द (नित्य
स्त्री)] । म पुं, उक्ता संख्या, तद्वती
(४२ च ।

—घों, वि, द्वि(दा) चत्वारिंशत्तम मी मम्,
द्वि(दा) चत्वारिंश शी शम् ।

वयासी, वि [सं द्वयशीनि (नित्य स्त्री)]
मं पुं, उक्ता संख्या, तद्वती (८२) च ।

वरकम्, सं स्त्री (अ) सम्पत्ति-समृद्धि
विभूति (स्त्री) ।

वरत्रास्त, वि, (फा) विसृष्ट, विमर्षित
२ पदच्युत, अष्टाधिकार ।

—करना, कि म, विसृज् (तु प अ)
२ पदादि च्यु (प्रे) ।

वरगद, स पु, दे 'वर्' ।

वरग, म पु (म मक्ष) कुण, प्राण,
शक्ति (स्त्री) ।

वरजोर, वि (सं वल् + फा जोर) बलवत्,
शक्तिशालिन् । कि वि, बलात्, हठान् ।

वरतन, म पु (१ वर्तन >) पात्र, भागनं,
भाग्यम् ।

वरतना, कि ज (म वर्तनम्) व्यवहृ (भ्वा
प अ), आचर (भ्वा प मे) । कि स,
उपयुज् (प्रे), व्याप्त (प्रे) ।

वरताना, कि स (स वितरणम्) वितृ (भ्वा
प से), विभज् (भ्वा उ अ) । म पु,
विभाजन, वितरणम् ।

वरताय, स पु (हि वर्तना) व्यवहार,
आचरणं, वृत्ति (स्त्री) ।

वरदार, वि (फा) वोट्ट धारयितृ ।

वरदारत, स स्त्री (फा) सहन, मर्षण,
सहिष्णुता ।

—करना, कि अ, मद् (भ्वा आ से) ।

वरफ, स स्त्री (फा वर्फ) हिम, धनवाटि
(न) ।

वरफी, स स्त्री (हि वरफ) *हैमी, पायन-
निष्ठानभेद, मिष्टान्नभेद ।

वरयम्, मि वि (सं वल् + वय >) हठान्,
बलान् २ मुधा, व्यवर्धम् (चारों अव्य) ।

वरवाद, वि (फा) नष्ट, ध्वस्त ।

वरमा, म पु (देश) वैषमी, लघुगोप-
वराभेद ।

वरमा, मं पु (सं) ब्रह्मदेश ।

वरमी, म पु (हि वरमा) ब्रह्मदेशवासिन् ।
मं स्त्री, ब्रह्मदेशभाषा ।

वरवा, मं पु (देश) परगोत्रशक्तिमात्रानर-
शरीभेद, भ्रुव-कुरप, छद्म (न) ।

वरम्, म पु, (सं वर्ष) वत्सर, संवत्सर,
अम् ।

—गाँठ, सं स्त्री, वर्षप्रति, जन्म दिन
दिवस ।

वरसना, कि अ (सं वर्षणं) वृत् (भ्वा प
से) । सं पुं, वृष्टि (स्त्री), वर्षणम् ।

वरमात, वि (हिं वरमना) वप (स्त्री वृ) मन्त्रम्, प्रवृष (स्त्री) वपाकाल ।
 वरमाती, म स्त्री (हिं वरमना) वर्षत्र, वृषिवारिणी ।
 वरसी, म स्त्री (हिं वरम) वार्षिक श्राद्ध, वाषणो मृत्युदिनम् ।
 वराडा, म पु (अ वेगाङ्) प्रघ(वा)ण, अलिङ् पिण्क ।
 वराडो, म स्त्री (अ) सुरम्भार, *मनीवनी सुरा ।
 वरात, स स्त्री (स वरयात्रा) विवाहयात्रा, २ प्रमोद ।
 वराती, स पु (हिं वरात) वर्यात्रिक ।
 वरावर, वि (फा वर) सम, समान, तुल्य ।
 वरावरी, स स्त्री (हिं वरावर) समानता, नाम्बन् ।
 वरामद्, वि (फा) बहिरांग २ लब्ध ।
 वरामदा, म पु (फा) दे 'वरादा' ।
 वरी, वि (फा) मुक्त, विमोचिन ।
 वरोडा, म पु (स दारम >) देहली-कि (स्त्री) ।
 वर(रौ)नी, स स्त्री (स वरण >) पद्मन्, वन्पु (दोनों न) ।
 वरतत्र, स पु, दे 'वरताव' ।
 वरक, स स्त्री, दे 'वरक' ।
 वर्यर, वि (म) नृशम, निर्दय २ असम्ब, अशिष्ट ।
 वरद, वि (फा) उच्च, तु ।
 वर, स पु (स न) सामर्थ्य, शक्ति (स्त्री) २ पराक्रम, शौर्य ३ सेना ४ बलदेव ।
 वरगम, म स्त्री (अ) श्लेषन्, कफ, रोग, वलाग ।
 वरवा, स पु (फा) मशोम, नमद २ रानामिश्रीह प्रशोम ।
 वरवान्, वि (म-वृ) वलिन्, बलशालिन्, मन्वन् वीर ।
 वरवान, वि (म) निबल, दुबल, अवल, अशक्त ।
 वरवा, स स्त्री (अ) भाषति विपत्ति (स्त्री) २ दुःख, वष्टम ३ प्रेनवधा ४ रोग ।
 बलात्, कि वि (म) हठाद, सरभमम् ।
 बलात्कार, म पु (स) साहस, प्रमाथ २ हठमो, प्रमद्वगमनं, धर्षणम्, दूषणम् ।

बलि, म स्त्री (म पु) रा, स्व रर शुल्क २ उ हार, उपादनम् ३ पूजा, सामधी-प वरण ४ धनिवैश्वदेवयज्ञ ५ देवमोज्य- ६ भन्व, अन्नम् ७ नीवेद्यम् ८ देवतावै हत पशु ९ हव्य, गण्डुनि (स्त्री) ।
 —वडाना, मु, देवार्थं हन् (अ प अ) ।
 —पाना, मु, दे 'बलिहारी वना' ।
 बलिदान, म पु (स न) उत्तमं, परित्याग, विनियोग, मनर्षणम् ।
 बलिष्ठ, वि (म) बलवत्तन, शक्तिमत्तम् । स पु, उट्ट ।
 बलिहारी, स स्त्री (स बलिहार >) अत्मी त्मर्गं, अत्मसमर्पण, आत्मनिवेदनम् ।
 —जाना, मु, आत्मान समर्प (प्रे)-उत्सृज (तु प अ) ।
 बली, वि (स-लिन्) मवल, बलवत्, व- शक्ति, शालिन्, महाबल, वीर ।
 बलिक, अव्य (फा) प्रत्युत्, अपि तु, अपि ।
 बल्लम, स पु (स बल्ल=शाखा >) यष्टिः (स्त्री), दड, लघुत् २ सुवर्ण-रत्न, दड ३ कुन्त, प्राप्त ।
 बल्लमटेर, स पु (अ बालियर) स्वयसेवक ।
 बल्ला, स पु (स बल्ल=शाखा >) लघुत्, २ स्थूलदड ३ गौकादड ४ कन्पुकक्रीवापट्ट ।
 बबडर, स पु (स बायुमन्त्र >) चक्रवाल, वातावन, वानभ्रम २ बत्या, लक्ष्मावन ।
 बवासार, स स्त्री (अ) अरास (न), गुदाकुर, गुदकीलक, दुनामकर । (घृनी)- रक्त-शंसू (बादी) वान-शुष्क, अर्जम् (न) ।
 बसत, स पु (स) बसन्त दे ।
 —पञ्चमी, म स्त्री, श्रीपञ्चमी, मातृशुक्ल पञ्चमी ।
 बस, अव्य, वि (फा) अक, पदान् २. वर, अधिकार ३ देवलम् ।
 बसना, कि अ (स वसन >) नि अधि- प्रति, वम (म्वा प अ) रथा (म्वा प अ) २ अधिवस, आध्या । स पुं अति- प्रति नि, वस-वसन-वत्ति (स्त्री) ।
 बसने योग्य, वि, वामोचित ।
 —वाला, म पु, अधि नि, वामिन् ।
 बसा हुआ, वि, अध्युषित, अधिष्ठित ।
 मन मै—, मु, सदा सृष्ट (कर्न) ।

वसना^२, कि अ (हि वाम=गघ) सुगधिन (वि) भू।

वसर, स पु (फा) निर्वाह, कालयापनम्।

वसना, कि स (हि वसना) अधिवस-
निवस (प्रे)।

वसुला, स पु (स वसि पु स्त्री) नक्षत्री।

वसंश, स पु (हि वसना) आवास, निवास
२ वाम, वसति (स्त्री)।

वसना स पु (फा-नह) पीटुलिवा, कूर्च।

वसनी, स स्त्री (स वसति) निवास २
ग्राम, ग्रामटिका।

वसुंगी, स स्त्री (स विहगिमा) वेणुशिम्या,
रूपवाहनी।

—वा छीना, स पु, विहगिकाशिका।

वहन्ना, कि, अ (हि वहना) अतिमघा,
(वर्म), वच् (वम) २ पथभ्रष्ट (वि)
भू ३ लघ्वभ्रष्ट (वि) भू ४ मद् (दि प मे)।

वहन्ना, कि म (दि) 'वहवना' क प्रे
रूप बनाएँ।

वहन्त, वि [सं दिससति (नित्य स्त्री)]
सं पु, उता सन्त्या, तदमी (७२) च।

—वा, वि, दिससतितम-मी सं, दिससत
ती तम्।

वहन, स स्त्री (सं भगिनी) दे 'बहित'।

वहना, कि अ (सं वहनम्) वट् (भ्वा
उ अ), क्षर (भ्वा प से), सृत्
(भ्वा प अ)। स पु, वहनं, क्षरण,
मरण, क्षाव, क्षुति (स्त्री)।

वहनावा, स पु (हि वहन) स्वसत्त्व,
भगिनीत्वम्।

वहनोद्दे, सं पु (हि वहन) आवुत्त,
नगिर, स्वसपति, भगिनीभट्ट।

वहनैता, स पु, दे 'भरजा'।

वहुरा, रि पु (सं बहिर) षट्, अकर्ण,
अधाय।

वहलना, रि अ (हि वहलाना) चित्त
विनोद वच् (दि आ मे)।

वहलाना, कि स (फा वहल) चित्त
रच् विनुद् मन्द (प्रे)।

वहलाव, सं पु (हि वहलना) विनोद,
मनोरजनम्।

वहली, सं स्त्री (सं वहल=वैल) रथ
मदरी रूपशब्दो।

वहस, स स्त्री (अ) वाद, वादप्रतिवाद,
ऊहपोह, प्रश्नोत्तरम्।

—करना, कि अ, वादप्रतिवादं कृ, विवद्
(भ्वा आ मे)।

वहादुर, वि (फा) शूर, वीर, बलिष्ठ,
पराक्रमिन्।

वहादुरी, सं स्त्री (फा) वीर्या, शूर्य,
पराक्रम।

वहाना^१, कि स, व 'वहना' के प्रे रूप।

वहाना^२, स पु (फा नह) भिषं, व्याज
छलम्।

—वरना, कि अ, -वर्पादिदा (तु प अ)।

वहार, स स्त्री (फा) शोभा, धी (स्त्री),
दर्शनीयता २ मधुमान वमन्तम् ३ मनो
विनोद।

वहाल, वि (फा) पूववर्ग स्थित, पदारूढ
२ स्वस्थ ३ प्रसन्न।

वहाव, स पु (हि वहना) प्रवाह, क्षाव
२ धारा, मन्दाक स्रोतम् (न)।

वहित, स स्त्री (स भगिनी) मोदरा,
सहोदरा, स्वसृ, जामि (स्त्री)।

घोरी—, अनुता, बढी—, अगना, अधिका।

बहिर्ग, वि (स) बाह्य, बहिर्भव, बहि
स्थिता।

बहिश्च, सं पु (फा विहिदन्) स्वर्गं, नाव २
२ सुगवावम्।

बहिष्कार, सं पु (सं) अपसाराण २ निष्का
सनम्, विवासनम्।

बहिष्कृत, वि (स) अपमारित २ विवामित,
निष्कामित।

बही, स स्त्री (हि वैधी) आयव्यय, पत्नी
त्रि (स्त्री)।

बहु, वि (सं) अधिर, अनेक २ प्रचुर,
बहुल।

—क्षीरा, सं स्त्री (सं) बहुल प्रचुर, दुग्धा
मन्वा गी (स्त्री)।

—गाथा, सं स्त्री (सं) १ श्रुती, श्रुतिरा,
हेमश्रुतिरा, वनकप्रमा। २ चंपक-वल्गि
कोरव ३ शृण्वापीरव।

—गुण, वि (सं) प्रचुर मत्त २ प्रचुर
विशेष।

—जल्प, वि (सं) वाचाल, गुणर, जल्प
(पा) क।

बहुकर, स स्त्री (म बहुकरी) ममाईनी, शोपनी । वि, परिश्रमिन् ।
 बहुत, वि (स बहुतर) अस्त्रय ० दशेष्ट, पयास ३ प्रचुर, विपुल, मूरि ।
 बहुतायत, स स्त्री (हि बहुत) अतिशय, आधिक्यम् २ पयासना ।
 बहुधा, क्रि वि (स) प्राय, प्रायश (दोनों अर्थ) २, बहुप्रकार ।
 बहुभाषी, वि (स धिन्) वाचाल ।
 बहुमूल्य, वि (स) महाय, दुःक्रय ।
 बहुरगा, वि (म-य) चित्रविचित्र, अनेकवर्ण २ बहुवेश ३ चलचित्र ।
 बहुरूपया, वि (रु बहुरूप) वशानविन्, बहुरूपक ।
 बहु, म स्त्री (स बहु) बहुटा, नवोटा, नववधू ।
 बहुहा, स पु (स विभीतय) वन्दितुम्, भूतवास ।
 बाका, वि पु (स बक >) तियक, बक, कुटिल, २ सुदर, मनोहर ३ वेशभानिन, रूपगावन ।
 बाग, स स्त्री (फा) प्रात बुककुटनाद २ यवनपुरीहातस्य पूजामयसूचकामहानाद ।
 बाह, स स्त्री (स बध्वा द) ।
 बाटना, क्रि स (बटनम्) विभन् (भ्वा उ अ), अश-वट् (जु), परिक्लृप (प्रे), यथाभाष विवृ (भ्वा ष से) । स पु, अशन, बटन, परिवर्धन, विभाजन, वितरणम् ।
 बाटन योग्य, वि, अशनाय, बटनीय, विभाज्य ।
 —वाला, स पु, विभाजक, अशयितृ ।
 बाँटा हुआ, वि, विभक्त, विभाजित, वटित ।
 बाँदी, स स्त्री (फा बदा) दाहा, सविका, परिचारिका ।
 बाँध, स पु (हि बाधना) १५, सट् ।
 बाधना, क्रि स (स बाधनम्) बध् (क् प अ), सनि, यम् (भ्वा ष अ), पिनह् (द्वि ष अ), अष् (क् प म, भ्वा आ से, जु) । स पु, बाधनम्, सनि, यमन, पिनाह, अष् (प्र) धनम् ।
 बाँधा हुआ, वि, बद्ध, नियत, सयत, पिनह, अयित ।

बाधव, स पु (स) अस्त्र, दानाद, सगोर, सपुत्र्य, धाति ।
 बाधव्य, स पु (स न) मगोत्रता, रक्त मन्बन्ध, बन्धुता, बहुत्वम् ।
 बाँधी, बाँधी, स स्त्री (म बन्धी >) परमोर वामकर बन्धी, कूट शैल । २ मर्ष अहि, विवर विलम् ।
 बाँस, स पु (स बस) वेणुदन्, सुगन्धन, वेणु, वीचक, स्त्रकमार, मृत्सुगुण ।
 —पर चटना, मु, अपकीर्ति-दुष्कीर्ति-बाध्यनाम् लभ (भ्वा आ अ) ।
 —पर, चटाना, मु, कुख्याति-नशानि कृ ।
 —बराबर, मु, अनि, दीप भायनन्व ।
 —(सो) उल्लाना, मु, अर्थ मुद् (भ्वा आ से) ।
 बाँह, स स्त्री (रा बाहु पु) शुभ-जा ।
 बाइसकिल, स स्त्री (अ मारक) टिक त्रिका, पादयानम् ।
 बाइँ, स स्त्री (स वायु) वाण, दीप रोग ।
 बाइँ, स स्त्री (हि बाका) कुलवधुनामादर सुलक शब्द, देवी २ वेद्या ।
 बाइँस, वि (स द्वाविंशति नित्य स्त्री) । स पु, उक्ता संख्या, तदकी (२२) व ।
 —बाँ, वि, द्वाविंशतिम-भोम, द्वाविंश शी शम् ।
 बाँ, क्रि वि (हि बायँ) वामन, वाम सन्ध, पारवँ ।
 बाँ, वि (अ) अर्वाशष्ट, उरुत्त । स पु, अव, शेष ।
 बाग, स पु (अ) उपवन, उद्यानम्, आराम ।
 बाग, स स्त्री (म बला) अभीष्ट, प्रग्रह, रश्मि ।
 बागडोर, स स्त्री (स बलान-डोर) दे 'बाग' २ प्रमुख, अधिकार ।
 बागवान, स पु (फा) मालाना, मार्त्त, उद्यानपाल ।
 बागी, वि (अ) विद्रोहिन, रान्द्राहिन ।
 बागीचा, स पु (फा बागचह्) बुसुमीयान, पुष्प, वाटिका ।
 बाघ, स पु (स व्याघ्र) चुपक, भेल्, चन्द्रकिन्, हिनात्, व्याड, सुगन्तक ।

—दाही, स स्त्री, मधुमण्ड ।
 याल्य, स पु (सं न) > 'वरपन' ।
 बावजूद, कि पि (क) एव सत्यपि, इति स्थितेऽपि ।
 बावन, वि [स द्वापचशाप (नित्य स्त्री)] । सं पु, उक्ता संग्या, तदकौ (५०) च ।
 —बाँ, वि, दि (दा) पचाशत्तम मी-मम् ।
 बावरघो, सं पु (क) सुद, पचर ।
 बावला, वि (स वातुन) विशिप्त, उन्मत्त २ मूर्ख ।
 बावली, स स्त्री (स बापी) वषिका, सोपा नकूप ।
 बासिदा, म पु (फा) इति, जामिन्, वस्तव्य ।
 बास, सं स्त्री (स वन) सुगन्ध, सुवास, परिमल, सौरभं > दुर्गन्ध, पूनिगन्ध ।
 बासठ, वि [स द्विपष्टि (नित्य स्त्री)] । म पु उक्ता संख्या, तदको (६९) च ।
 —बाँ, वि., दि (दा) षष्ठितम मी-म, दि (दा) षष्ठ ष्ठीष्टम् ।
 बासन, स पु (सं वामनम्) दे 'वस्तन' ।
 बासमती, स पु (म बासमती >) वाम वदप्रौहि ।
 बासी, वि (स बासिन्) निवासिन्, वासनव्य २ शुष्क, म्लान, पशुपित, शुष्ट ।
 बाहर, कि वि (स बहिम) बाह्य, बहि भवनम् ।
 बाहरी, वि (हि बाहर) बाह्य, बहि स्थ, बहि भव, बहिर्वनिन्, बहिम ।
 बाहु, स स्त्री (स पु) दे बाँह ।
 बाहुल्य, म पु (सं न) दे 'बहुतायत' ।
 बिदा, स स्त्री (सं विद्) इत्यं एव > अंक, विद्यम् इ नित्य-क, विद्याम् ।
 बिदु, स पु (स) वण एव, एषन २ दे 'विदी' १ २ ३ भ्रमध्यम् ।
 बिय, सं पु (म पुं न) प्रतिष्ठाया, प्रति विव-श्रुति (स्त्री) २ मूर्धचन्द्र, मण्डल ३ विवपणम् ।
 बिरना, कि अ (म विप्रयण >) विरो (वर्म) ।
 बिक्राना, कि प्रे (हि विना) विरो (प्रे, विप्रययी) ।
 बिगड, दि (हि विरना) (क्वेय, पण्य, विप्रयणीय ।

बित्री, स स्त्री (म विक्री) पणन, विक्रय, विक्रयणम् ।
 बिररना, कि न (म विरिरणम्) विप्रद (वर्म) २ प्रन्त (स्वा प अ) ।
 बिखरा (खेर) ना, कि म (स विरिरणम्) अत्र वि, कृ (तु प म), अस्तृ (न प सो), विशिप् (तु प ज) । म पु भाव अव वि, किरण, विशप, भास्तरणम् ।
 बिगडना, कि अ (म विररणम्) विरु (वर्म), दुप् (दि प अ), जि (वर्म), दुर्दशा प्राप (स्वा प अ) २ उन्मार्गं गन्, सुपथभ्रष्ट (वि) भू ३ कुप (दि प मे) ४ दुर्दान्त (वि) च्त् (दि आ मे) ।
 बिगडा हुआ, वि, विकृन्, इषित, क्षीण, २ दुर्नालित ३ दुर्दान्त ।
 बिगाडना, नि स (हि बिगटना) दुप (प्रे) आविलयति मलिनदपि-कलुषयति (ना धा) २ सम्माणात् भ्रम (प्रे) ३ अत्यन्त लम् (तु) ।
 बिगुल, सं पु (अ) कारल-ल-ला ।
 बिचकाना, कि अ (अनु) मुख विरूप (तु) आतनं वरीकृ ।
 बिचला, वि (वि बीच) मध्यम, मध्यकोत्तम् ।
 बिचवई, म पु (हि बीच) प्रमणपुरूप, निर्णेत, मध्यस्थ, मध्य वान्त-स्थ यिन्, स-धा यक । सं स्त्री, मध्यस्थता, माध्यम्यम्, निगायरत्वम् ।
 बिच्छू, सं पुं (म वृश्चि) आनि, आलिन, दुण ।
 बिर (शु) वना, नि अ (सं बिलुट् >) बिलुत् विरट् (वर्म), विपट (स्वा आ मे), विरिल् (नि प अ), एषर् भू । म पुं, दे 'विटोना' ।
 बिराना, नि म (म विररणम्) आविरन् (न उ से), आवि, मन् (ल उ से), प्रम् (प्रे) । म पु, आवि, स्नात, प्रमार, प्रमारणम् ।
 बिरानत, म पु द 'विटोना' ।
 बिटिया, म स्त्री (हि वि-टू) पदांगुली भूषणम् ।
 बिद्युभा (रा), म पु (हि विट्टू) दे 'विट्टिया' २ वरारभेद ।

धीमन्म, वि (म) घृणावद् कुस्मित २ क्रूर
३ पापिन् ४ नडावह ।

धीमन्मा, म स्त्री (म) जगुना घृणा ।

धीमन्, स पु (म) द्वे महत्तर ।

धीमन् (फा) भयम् मवटम् ।

धीमा, म प (फा वान-मय >) मन्मा
हाने रक्षणम् २ ममा बहानिपूर्वक मुक्तम् ।

धीमार, वि (फा) रोगिन रण ।

धीमारी, स स्त्री (फा) रोग, व्याधि ।

धीम, वि [म विगति (नित्य स्त्री)] ।

स पु उक्ता मन्मा तदनी (२०) च ।

—धौ, वि, विशानिम मोम, विश शी क्षम ।

धीहड, वि (म विगट) निविट, दुगम
२ विधम, नतोन्नत ।

धुदा, सं पु (म व-व >) वर्णभरणभेद,
लौक्यम् ।

धुक्चा, स पु (तु च) पोडुलीलिका,
दुर्च-चर्म, भार ।

धुकनी, म स्त्री (हि धूना-पीमना)
चूर्ण, क्षोद ।

धुझार, स पु (अ) चर ताप ।

—धुगमा, म पु, जाणैश्वर ।

धुजदिल, वि (फा) भौह, त्रस्तु, वातर,
निन्ताहस ।

धुजुर्ग, वि (फा) वृद्ध, स्वविर । स पु,
पूवज, बदाकर, गुरु ।

धुमना, कि अ (देश) शम् (दि प मे),
निर्वापित (वि) भू २ शीनी भू ३ उत्माहो
नम् (दि प वे) ।

धुमना, कि म (हि धुना) निर्वा (प्रे),
ज्वाला शम् (प्रे) २ शीनी कृ ३ उत्माह
नम् (प्रे) । म प निवाप अग्निनामनम् ।

धुमारत, म स्त्री (हि धुमना) प्रहेलिका,
कृत्रयन ।

धुहडुडाना, वि अ (धनु) चल् (स्वा
व-व-व) ।

धुडडा, वि पु (धुड) द नूदा ।

धुडापा, म पु (दि धू) बद्ध, म-परा
ज्वालि (स्त्री), स्वा-परा ।

धुत, म पु (फा) मूल, प्रतिवृत्ति (स्त्री),
प्रतिमा ।

—परस्त, वि, मूल प्रतिमा, पूरक ।

धुदधुद, म पु, द्वे 'धुदधुला' । (म धुदधुद)
स प (अन्तु) पन, चल्विशार (वदुला
वार), अन्तुको १ २ गभस्थानयवविगैर ।

धुड, वि (म) जानवत् जानव २ बुद्धये,
सुगत, मर्वाविडि मुनी ।

धुद्धि, म स्त्री (म) धी मति (स्त्री),
पण्टा प्रदा मनीव पिरा, विपणा, बुधा, मेरा ।

—मान्, वि (म मद) धीमत्, प्राण, दुध,
मनीपित् पणित्, मेधावित्, रिचक्षण,
विदग्ध विवेकिन्, उत्तर ।

धुध, म पु (म) दुधवागार २ च्चदहन्,
चतुवग्रह ३ मुनिव पटित ४ देव ।

धुनमा, वि म (स वयनम्) वेवप्
(भा उ अ) । म पु भाव, वदन,
वयन, वस्त्रनिमाणम् ।

धुनने योग्य, वि वयनात्, वपनीय, वातव्य ।

—वाल, म पु, न तुनाय, नजवाप, बुध्दि,
पटशर ।

धुना धुधा, वि, उत, न ।

धुनियाद, स स्त्री (फा) वस्तु, वास्तु (न),
गृहमूल, पीठ, भित्तिमूलम् २ वधावना ।

धुरका, स पु (अ) अवत्तम् ।

धुरा, वि (म विरूप >) दृषित दृष्ट, निदृष्ट,
मद, २ अर्तुण, अशुभ ३ गहर्ष, कुस्मित
४ मल, दुष्टत ।

धुराई, म स्त्री (हि धुरा) दुष्टता, नीचता,
निरुष्टता, दुर्दृष्ट, मलत्वम् ।

धुरादा, म पु (फा) वाधचूर्ण, दारुक्षोद ।

धुरय, स पु (अ म्) आनर्पणी, लोममयी
मार्तनी २ तृत्रिया, वानरा ।

धूर्त, म पु (अ) प्रावीर, पावक गृहम् ।

धुल्लुला, म स्त्री (फा) मिशर्माव, धुल्लु,
मगभद ।

धुल्लुला, म पु (सं धुदधु >) च
विशार, पन द धुल्लुला ।

धुलाना, वि म (देश) गृह (प्र),
अष्टे (स्वा प अ), शिमम (इ प
ने) गह (तु) । म पु भय २ ३,
अहर्ष, १ । न, मधाम् ।

धुलगा, म पु (हि धुलगा) द धुल्लाना
मं पु ।

धुल्लेन, मं स्त्री (अ) रागिभूतपत्न्या,
२ रावनाय अधिनायिक विभक्ति (स्त्री) ।

वुप, वुस, म पु (स वुपन्) वुमन्, वुप
 स २ गुणतो, अयन्-पुगिषधिषा ।
 बुहारना, कि म (स वटुरां) नष्ट-
 (अ प व), शुष् (प्र०) ।
 बुहारी, स स्त्री (हि बुहारना) शोषनी,
 दे 'बटुकर' ।
 बूँद, स स्त्री (स विदु) वन्, लव, पृथक्,
 धृषत् (न) विप्रुष (स्त्री) । द्रव्य ।
 बूँदा-बोड़ी, म स्त्री (हि बूँद + अनु) मन्द
 वृष्टि (स्त्री) शीघ्रवध ।
 बूँदी, स स्त्री (हि बूँद) निन्दव (पु बहु),
 निष्ठाभेद २ वृष्टिन्वदिदु ।
 बू, स स्त्री (फा) गध, वाम २ दुग्ध ।
 —उडना वा फलना, ट, वुरयान-अपरयान
 (वि) भू ।
 बूआ, स स्त्री (देश) विवृष्यत् (स्त्री),
 पितृमिनी २ अग्रजा ।
 बूचड, स प (अ पुत्र) शौ(लौ)निर,
 मार्ग्य, रट्टिक, कौटिक ।
 —घ्राणा, स पु, सना, सना ।
 बूझ, स स्त्री (स बुद्धि) बाध, शान, विवेक
 २ प्रहेल्पा ।
 बूझना, कि अ (हि बूज) हा (क् उ अ),
 ग्ध (भ्वा उ से) २ प्रच् (तु प अ) ।
 बूड, स पु (अ) उपानह (स्त्री), पत्रवृत्ती ।
 बूडा, स पु (स विग्प) वृक्षक, बालवृक्ष,
 लता, ओषधि (स्त्री) २ वरा, वरापरपरा ।
 बूटी, स स्त्री (हि बूटा) ओषधि (स्त्री),
 काष्ठीयधन् - भाग ३ बलन्था पत्रपुष्परचना ।
 बूडना, कि अ, दे 'डूवना' ।
 बूटा, स पु (म बूड) चरठ, स्थविर,
 पलिन, चरित । वि, जरठ, चरित-न, जान,
 जीर्ण, धनरुत्, प्रवयस्, वृद्ध, स्थविर, पलिन ।
 —होना, कि अ, ज (दि क्रू प से), ज्या
 (क्रू प अ), परिणन् (भ्वा प अ), वृद्ध
 (वि) भू ।
 —पन, स पु, चरा, परि-नि-ज्यानि-जीर्ण
 (स्त्री), वापक-वच, वृद्धावस्था ।
 बूदी, स स्त्री (हि बूटा) वृद्धा, जरती,
 स्थविरा, पलित, पलिकनी । वि, व 'बूटा'
 वि के का रूप ।
 बूता, स पु (म विरु) बल, शक्ति (स्त्री) ।
 बूरा, म पु (हि भूरा) शर्करा २ सुपिषा,

शुक्रा ३ चूर्ण, श्लो ४ वाडचूर्ण ।
 बूहत्, वि (स) विगल् मन् २ २३,
 व-वत् ३ पयां ४ उच् (स्वरदि) ।
 बूहस्पति, स पु (म) देवताप्रिये, सु-तुर
 गुर, वाचस्पति, व-नीश (इ न) २ म-
 मन्त्य पचमो ग्रह ।
 —गार, म पु (मं) गुर, वार-वमर ।
 बूँच, स स्त्री (य) (वाडदिनिर्दिन) *न
 सन, २ धम-व्यवहार, -मन ३ अफिर
 पिता धमाध्यक्षा (पु बहु) ।
 बूँत, स पु (म वेत्र) वेन, वानार, वतु,
 नीरप्रिय, मप्रपुन । २ वेन-वेन-न्-द
 यधि (स्त्री) ।
 बूँदी, स स्त्री (म दिदु) वतुन्विह २
 निलक-क ३ सून्य, खन् ।
 बूँ, अन्व (स हे) ग्रे, रे, मधि ।
 बूँ, अन्व (फा, मि म वि) अ, जन्, वि,
 निर्, रहित, वानन, जगतिरिक्त, दन्तिन ।
 —अकल, वि (फा + अ) निदुद्धि, मूल ।
 —अकली, स स्त्री, निनुद्धता, मौल्यन् ।
 —अद्व, वि (फा + अ) अविनीन, धृष्ट ।
 —अद्वी, म स्त्री, धृष्टता, दैवत्वन् ।
 —आबरू, वि (फा) निराकृत अवधोरित,
 समानरहित ।
 —आवरूई, म स्त्री, अवधीरणा, अवन्,
 अपमान ।
 —इतिहा, स पु (फा + अ) अनन, अभीन ।
 —इन्साफ, वि (फा + अ) अन्य निय,
 अधानन् ।
 —इन्साफी, म स्त्री, अन्याय, जधन ।
 —इज्जत, वि (फा + अ) दे 'वेअवत्' ।
 —इज्जती, स स्त्री, दे 'वेअवत्' ।
 —इल्म, वि (फा + अ) अविष, निरक्षर ।
 —इमान, वि (फा + अ) वृत्ति, विद्,
 धन-न्याय, विदुत्, कपन्ति, वचक, शठ ।
 —इमानी, स स्त्री, कुम्भिता, वचना, अधर्न ।
 —ओलाद, वि (फा + अ) निरपल्य,
 निस्मान ।
 —कदर, वि (फा) दे 'वेअवत्' ।
 —कदरी, स स्त्री (फा) ३ 'वेअवत्' ।
 —करार, वि (फा) अज्ञान, विकल, व्या-
 —करारी, स स्त्री (फा) अज्ञानि (स्त्री),
 व्याकुलता ।

- कल, वि (काल, व्याकुल, जज्ञात ।
 —कली, म स्त्री, जात्या कुला जगानि
 (म्वा) दुभ्यता ।
 —कम, वि (क) निम्नहाय २ ऋदि
 ३ ताथ मानुषितुनीन ।
 —कमी, म स्त्री, शून्यम्, विद्वान्ता, दीवना ।
 —कानुनी, वि, अवैध, विरि नियम, विरुद्ध
 विपरीत ।
 —काशु, वि (का + अ) मयमशुभ्य, निरश
 २ अशुभ्य, अवश्य ।
 —काम, वि (क + हि) वृत्तिदीन, व्यनमाय
 शून्य २ व्यथ, निरर्थक ।
 —कायदा, वि (का + अ) नियमविच्छेद,
 अवैध अनियमित ।
 —कार, वि (का) द्वे 'वेकाम' (१-२) ।
 क्रि वि, व्यर्थे क्रिप्रयोजनम् ।
 —कारी, म स्त्री नियोगाभाव, वृत्तिराहित्यम् ।
 —कुसुर, वि (का + अ) निरपराध, निर्दोष ।
 —कुटके, क्रि वि (का + हि) नि मरोच,
 नि शय, निर्भयम् ।
 —कुचर, वि (क) अङ्ग, अनरिचित २
 मूल्य, नि मय ।
 —कुचरी, म स्त्री, अङ्गता, प्रमाद २ मूल्य,
 माद, मल्लोप ।
 —कुचक, वि (का) निर्भय, त्रामहीन ।
 —कुचक, वि (क + अ) निरपराध निश्चित ।
 —कुचक, वि (का) निरपराध २ निरपराध ।
 —कुचन, वि (क) विरुद्ध, अज्ञान २ विनिद्र ।
 —कुचनी, म स्त्री व्याकुलता २ विनिद्रता ।
 —कुच, म पु (क्ति + म छदस) अत्यान्तु
 प्रामाण्येन मूल्य (न) जमिनाथर वृत्तम् ।
 —कुचान वि (क) अभाव, मूर २ दीन ।
 —कुच, वि (क) अनुचित, अमगन २
 कुमिन, गय ।
 —कुचान, वि (क) निरपराध, मृत २ निर्बन्ध,
 यज्ञत ।
 —कुचका, वि (का + अ) अवैध, अनेयमित ।
 —कुचक, वि (का + हि) अनुपम २ मण्ड ।
 —कुचकाने, वि (क + हि) मगन, च्युत भ्रम,
 २ निरपराध ३ अमगन ।
 —कुचक, वि (का + हि) कुरूप, कदाचार ।
 —कुचक, वि (का + हि) अनाचारिण,
 दुष्ट २ कुरूप ३ अक्रम, कुभ्यवर्तिन ।

- कुचक वि (का + हि) कदाचार, कुशील,
 २ कुचकान, कुरूप ।
 —कुचकलुक, वि (का + अ) उपचारोपेक्षक,
 निरपराध २ अङ्ग मूल ।
 —कुचकली, म स्त्री, उपचारोपेक्षा, जाचर
 हीनता २ ज्ञान, मरुता ।
 —कुचमी, वि (का + अ) अशिष्ट, अमम्य,
 उद्धृत, विद्यात ।
 —कुचक, क्रि वि (का + अ) अनुचित,
 अशुभने, अमम्यक २ जमाधारण विच्छेद
 मण्ड । वि, अत्यमित ।
 —कुचकी, वि (का + अ) अनुचित, अनेय
 मित । क्रि वि, अनुचितम् ।
 —कुचका क्रि वि (का + अ) अति, चनेन
 वेगेन गीतनया २ ममभ्रम ३ अविचार्य,
 अविमृश्य ।
 —कुचक वि (का) दुर्बल २ विरल ।
 —कुचनी, म स्त्री (का) निर्बलता २
 व्याकुलता ।
 —कुचर, वि (क + म) विचार, तनुहीन ।
 —कुचर का तार, म प *विचारतार, विचारो
 विषयमदिग ।
 —कुचक, वि (का + हि) विषमस्वर, साम
 चम्यहीन २ द्वे 'वेदव' ।
 —कुचक, वि (का) निष्कामिन, निरस्त,
 अपास्त, अविचारभ्रष्ट ।
 —कुचकली, म स्त्री (का) निष्कामिन, अपामर्द
 अधिजागभ्रष्ट ।
 —कुचक, वि (का) मृत, निष्प्राण २ मृतपाय,
 मरणाम्भ ।
 —कुचक, वि (का) निर्भय, निष्प्राण ।
 —कुचक, वि (का) निष्काम, शुद्धाचार
 २ निर्दोष निरपराध ३ स्वच्छ ।
 —कुचक, क्रि वि (का + हि) नि मरोच
 २ निर्भय ३ अविमृश्य । वि, नि मरोच,
 निर्भय, अविमृश्यकारिण ।
 —कुचक, वि (का + अ) अनुपम, अद्वितीय ।
 —कुचक, वि (का + अ) मदद्वय, मय्य ।
 —कुचक, वि (का) अनमृत, निरावरण
 २ नृप ।
 —कुचक, वि (का) निश्चित, धीनचित ।
 २ स्वच्छाचिण्ड ३ उदार ।

- परवाही, स स्त्री, निश्चिन्ता २ स्वेच्छा चर ३ औदार्यम् ।
 —पीर, वि (फा + हि) निर्दय, अरुण ० गानुभूनिष्पन्नम् ।
 —फायदा, वि (फा) निष्फल, निरर्थक ।
 क्रि वि, मोप, निष्फलम् ।
 क्रि, वि (फा) दे वेपरवाह ।
 —फिज़ी, स स्त्री, दे वेपरवही ।
 —यम, वि (स विवश) अदाक्त, अवश निराधिकार २ परवश पराधीन ।
 —बसी, स स्त्री (हि) विवशता, अवशता ० परवशता ।
 —बहुरा, वि, भाग्यहीन २ विवाहीन ।
 —बाक, वि निर्भय घृष्ट ।
 —बाक, वि (फा) निरधारित शोभिन ।
 —बुनियाद, वि (फा) निर्मूल, निराधार ।
 —भाव, वि (फा + हि) अनर्चान, अगणित ।
 —भाव की पडना, मु, मृश ताड (कम) ।
 —मजा, वि (फा) नीरम, विरम, निस्त्वाद ।
 —मतलब, अ०, निप्रयोननम्, व्यर्थम् ।
 —भानी, वि (फा + अ) निरर्थक ।
 —मुरबत, वि (फा) नि मनीब, अविनाश, अदक्षिण कुशील ।
 —मेल, वि अमगन, विषम ।
 —मौका, वि (फा) असामयिक, अम मयोचित ।
 —रहम, वि (फा + अ) निष्ठुर, निर्दय ।
 —रहमी, वि निर्दयता, निष्ठुरता ।
 —रोक, } क्रि वि (फा + हि) निष्प्रति
 —रोक-रोक, } बध, निविज, निर्व्यागानम् ।
 —रोजगार, वि (फा) दे बेकार ।
 —रोजगारी, स स्त्री, दे बेकारी ।
 —रौनक, वि (फा) शोभाहान, नि श्रीक ० निप्रम, कानिहीन ।
 —राम, वि (फा + हि) नि मग, निर्मोह ० निष्पर, निर्व्याग ।
 —बफा, वि (फा + अ) विश्वास, शान्त शान्ति, यत्किञ्चन २ दुःशील ३ कृपण ।
 —बफाई, स स्त्री (फा) विश्वासवात ० दुःशीलता ३ कृपणता ।
 —शऊर, वि (फा + अ) दे 'बेत्मीज' ।

- शक, क्रि वि (फा + अ) अवश्य, नि मदेहम् ।
 —शरम, वि (फा शर्म) निर्लज्ज, अपत्रप ।
 —शरमी, स स्त्री, निर्लज्जता, निर्वाडता ।
 —शुमार, वि (फा) अगणित, अमल्य ।
 —मचर, वि (फा + अ मत) अधीर ० अमनुष्ट ।
 —सघरी, स स्त्री, धंयलोप २ सगोपाभव ।
 —सरो सामान, वि (फा) निष्परिच्छद, टारट, अकिञ्चन ।
 —मुव, वि (फा + हि) मूर्च्छ, नष्टमन, निर्मन ० अज्ञ, नष्ट ।
 —सुमी स स्त्री, मूर्च्छा २ चडता ।
 —सुर—सुरा, वि (स विस्वर) विषमस्वर ० २ श्राव्य, दडुस्वर ३ दे 'बेमौका' ।
 —स्वाद, वि (स विस्वाद) दे 'बेमडा' ।
 —इद वि (फा) असोम, निस्त्रीन, अपरि मित ० अत्यधिक ।
 —हया, वि (फा) दे 'बेशरम' ।
 —हयाडे, स, स्त्री, दे 'बेशरमी' ।
 —हाल, वि (फा + अ) विकल ० दुर्गन ।
 —हाली, स स्त्री, विकलता २ दुर्गा (स्त्री) दारिद्र्यम् ।
 —हिमाव, क्रि वि (फा + अ) अत्यधिक, अपरिमितम् । वि, अत्यत, अगणनीय ।
 —होश, वि (फा) दे 'बेसुध' ।
 —होशी, स स्त्री, दे 'बेसुधी' ।
 बेकल, वि (स विकल) अज्ञान, विकल, दे 'ब्याकुल' ।
 बेकली, स, स्त्री, (हि बेकल) अज्ञान अनिष्टि (खा) दे 'ब्याकुलता' ।
 बेकिग पाउडर, स पु (अ) भर्तनक्षीर ।
 बेस्टीशिया, स पु (अ) क्षीणव (दु बहु) ।
 बेगम, स स्त्री (तु) राप्ती, राणपत्नी २ राशञ्चित्रान्तित्रीडापत्रभेद ।
 बेगाना, वि (फा) अन्वीय अस्वरीय, अनात्मीय पर, अन्य २ अपरिचित, अज्ञान ।
 बेगार, स स्त्री (फा) विधि आज्ञा आजुर (स्त्री) ।
 —टालना, मु, अमनोयोगेन कु, येन केन प्रकारेण विधा (जु उ अ) ।

वेहूदगी

वेहूदगी, म स्त्री (फा) अशिष्टता, अमन्यता ।
 वेहूदा, वि (फा) अशिष्ट, अमन्य
 ० अशिष्टतापुम ।
 —पन, म पु दे वेहूदगी ।
 वगन, म ष (म वान) (पेटा) माम
 वृत्तनी, ण्य, वर्ताही वृत्तन ही वा
 ० (तरनाग) वृत्ताक नगफलम ।
 रंग(न)नी, वि (हि बैंगन) नील, लोहित
 अरुण ।
 र, म स्त्री (अ) विक्रय, विक्रयण,
 मूल्येन दानम् ।
 र्मुष्ट म पु (म वैकृठ) स्वग नाक ।
 र्जती, वैजयती, म स्त्री, ० 'वैजयती' ।
 र्ज, म पु (अ) चिह्न, लक्षण, लक्ष्मन् (न)
 ० दे 'चपराम' ।
 र्गरी, म स्त्री (अ) विमुद्यन् ० *विद्युदी
 मिका, दे 'दाव' ३ दे 'नोपमाना' ।
 र्गक, म स्त्री (हि बैठना) *उपवेश
 कोष्ठ, दशनमृद, समानमोष्ठ २ आमन,
 पीठ ३ अभिवेशन ४ उपवेश शन ५ उरवा
 नोपवेशनात्मको व्यायामभेद ६ सा ।
 र्गकी, म स्त्री (हि बैठक) व्यायामभेद,
 *उपवेशरी ० आमन, पाठम् ३ पादफलक
 प्रदीप ।
 र्गता, क्रि अ (स विष्ट) उपविष्ट
 (तु प अ), निषद (भ्वा प अ), आम्
 (अ आ से) ० गच-अनुव्यथ (कर्म)
 ३ अन्वस्त (वि) भू ४ अथ प्रथवा तल
 गम् ५ नि, मस्ज (तु प अ) ६ मकुच
 (तु भ्वा प मे), मूल्येन घ्न (कर्म),
 द्री (कर्म) ७ लव्य व्यव (वि प अ)
 निष् (दि प अ) ८ अ अरिन् (भ्वा
 प अ) ९ आ, रोप (कर्म) निषा (कर्म),
 प्रति स्थप (कर्म) १० दृढ वम (भ्वा प
 अ) ११ (वनपितृ मह) पनत्येन स्वम
 १२ वृत्तिशय, (वि) वृत् (भ्वा ग से)
 १३ र्तिद्रा भू, परिधि (कर्म) १४ जप,
 नगन् (भ्वा प अ) । म पु उपवेश
 शन, निपन्न अ भिन, पाननित्ति (स्वा) ।
 घटने योग्य, वि, उपवशान, निपदनीय,
 आमिन्य ।
 घटनेवाला, स पु, उपवेशक, उपवेश, उपवे
 शिन, आमक, निषदिन् ।

वेठा दुजा, वि, उपविष्ट, निपण, अनीन ।
 वेठो-उठते, क्रि वि, मटा, प्रतिनाम् ।
 वेठे वेठे, } क्रि वि, निष्करण अहेतुक
 वेठे वेठाण, } ० अग्रे अन्त्यम् ।
 वठाराना, क्रि प्रे, व 'वेठना' ० प्रे रूप ।
 वठाना, } क्रि म व वेठन 'के प्रे रूप ।
 वठालना, }
 येन, म स्त्री (अ) पच, शोण ।
 —वाजी, स स्त्री पद्यगतप्रतियोगिता २
 अन्त्याक्षरी ।
 वैतरनी, म स्त्री ० वैतरणी ।
 वताल, म प, ० वेताल' ।
 वन, म पु (म वान*) अक्षर २ वार्ता
 ३ *परिवेदनपद्यम् (पञ्जव) ।
 वैया, म पु (म वान) वानव, साम्ना
 निक्रमिशात्रम् ।
 वैयामा, स प (अ वै+पा नामम्)
 विक्रयपत्रम् ।
 वैरग, वि (अ *वैशारग) शुल्बापेक्षिन,
 *निस्तार्य ।
 —वैटना, मु, विफल भूतक य (वि) प्रत्य
 धृत् (भ्वा आ मे) ।
 वार, स पु, दे 'वैर' ।
 वैरक, स पु (तु) मीनिर, ध्वज तेलु २,
 सैनिक, आवाग आगार ।
 वैराग, स पु, दे 'वैराग्य' ।
 वैरागी, स पु, दे 'वैरागी' ।
 वैरी, स पु, दे 'वैरी' ।
 वैरोमीटर, स पु (अ) वायुमापनायकम् ।
 वल, म पु [म व(व/स्वीवर्द) वलद, वृष,
 वृषभ, उध्नुन्न अनडुह वृषन् वज्रमद (पु),
 पुाव, शाबर, मौरयेय २ वल्, मूल ।
 —गड्डी, म स्त्री, नन्दगङ्गी वृषभद(माह्वन्) ।
 टनै क—, म पु, शरट, धुरधर, धुरीण,
 धीरेय, प्राग्ग
 डूढा—, स पु, जरद्वय ।
 हल मीरनेकला—, म पु नैरिन्, हल्लिन् ।
 बलून, म प (अ) दे 'गुब्बारा' ।
 बशास, म पु, दे 'बशास' ।
 बमारगी, म स्त्री (स बैशरी) जाग ।
 पवनीय ।
 बमारसी, स स्त्री (म वैशास >) *वैशासी,
 कुक्षियष्टि (स्त्री) ।

बोस, म पु (म बोड्य १) भार, भर, बोधि पथार २ उरुत्व, लील, भार ३ दुष्कार ४ वाय चना ५ वायभार ६ उत्तरदायित्वम् ।

बोस(त्रि)ल, वि (हि नेत्र) रुद्र, नारद, भास्त्र, भस्त्रि दुर्वेद ।

बोटा, म पु (म इत् >) डिङ्गुल्लफ़ल्ल २ खट ३, शाल-लम् ।

बोती, स स्त्री (हि वोग) मानमन्त्र कम् ।
—बोटी वाटना, मु शरीर खण्ड कृत् (तु प मे)-शान्ता ६ देह स्त्रीश्च खट्ट (च) ।

बोतल, म स्त्री (अ बोत्ल) काचकूपी ।

बोदा, वि (म बोधे) दुर्भद्र जट, मति धीबुद्धि मूर्ध २ अलम्, मथर ३ निबल, अशन् ४ श्रित्ति, इल्लथ ।

बोध, म पु (स) उपलब्धि प्रतिपत्ति (स्त्री) गान २ धैर्य, आधामनम् ।

—बोध्य, वि (म) नेत्र, बुद्धिबोध, सुबोध, सुग्म ।

बोधक, म पु (स) अध्यापक, शिक्षक ।
वि, शपर, व्यपक ।

बोधन, म पु (स न) अध्यापन, शिक्षण २ गान, सूचन ३ उत्पादन, निद्राबन्धन ४ उदीपन, प्रचलनम् ।

बोधनीय, वि (स) विज्ञापनीय २ निद्राया उत्थापनाय ।

बोधि, म स्त्री (म पु) समाभिभेद, पूर्ण ज्ञान, प्रज्ञा उपलब्धि (स्त्री) २ बुक्कुर ।
—बुम, म पु (म) बोधि, नर इक्ष, पावन, पिपिल चन्द्रल-सुरराशन ।

—सत्त्व म पु (म) बुद्धन्तोसुरो महात्मन् ।

बोना, मि म (स वपन) आनि, वन् (स्त्री उ अ), (सीजानि) विकृ (तु प मे)-आम्ह (प्रे) । म पु, उक्ति (स्त्री), वपन, वाप, वप वीच, विविरण आरोगम् ।

बोने योग्य, वि, वपनीय, वसव्य, वप्य ।

बोने वाला, म पु, वप, वपर, वप्य, वापिन् ।

बोया हुआ, वि, उक्त, भूमी विरीथे (बी) ।

बोरा, म पु (म पुर = दोना >) स्यूत, म्यान, प्रमेव ।

बोरिक एमिड, म पु (अ) दृढगन्ध ।

बोरिया, म स्त्री (हि बोरा) वृ, शिन् जर २ अन्तर रण, *विष्टर ३ दे 'बेरी' ।

—(अथवा बोेरिया वधना) उठाना, पु, ग्मनप्रस्थान-उपल (वि) भू ।

बोरी, स स्त्री (हि वारा) स्यूत, स्वीतर, प्रमेव ।

बोल्, स पु (हि बोल्ना) वागी, गिर वाच उक्ति वाहनि (स्त्री), वचन (न), शब्द, वाक्य, वचन २ अर्थव्यापार क्षेत्र, उक्ति (स्त्री), दे 'बोली ३ प्रतिपत्ति ४ वाचाना निवचन ५ गीताय ।

—बाल, स स्त्री, सौहार्द, मद्भव, आ-स लप ।

—बाल की भाषा, स स्त्री, माल विज्ञान-व ह रिक, भाषा ।

—बाला होता, मु, वाक्य आह (वर्म) २ भाग्य उद्भ (अ प अ) ३ वरी वृत् (स्त्री आ मे) ।

बोलना, कि अ (म मू) आत्म्याद्भव (भ्वा प से), मू (अ उ अ), वने (आ प अ) २ त्रिलिङ्गियनिन्त (ना धा), कृन् (भ्वा प से) ३ कथ् (तु) ४ नी (स्त्री प अ) । स पु, आत्म्यन, निगदन, भरण, वचन, गदत वधन, कृबनम् ।

बोलने योग्य, वि, आत्मनीय, वचनीय, नेय ।
बोलने वाला, स पु, वाचक, वक्त्र, ज्ञादिन्, कथर, व्याजवाट, गायन ।

बोला हुआ, वि, उक्त, गदिन, कथित, गीत ।

बोली, स स्त्री (हि बोल्ना) गिर-वाच् (स्त्री) गिरा, उदीरणा, वागी २ वचन उक्ति (स्त्री), वच्य, शब्द ३ विष्टर घोषणा ४ भाषा, वणा गिरा ५ उरप्रकृत प्रादेशिक, भाषा ६ वक्त्र-व्यवस्थान क्षेत्र भाषि, उक्ति (स्त्री) भाषिन्, वृत्तक्षेत्र ।

—बोली, म स्त्री, दे 'बोली' (६) ।

—बोली मारना, मु, अन्वया भाषि (तु प अ) वनेकत्या अधिष्ठिन्, व्यानकत्या मूर्ध (तु) ।

बोवा(आ)ना, वि प्रे, व 'बोना व प्रे रूप ।

बोहरी, म स्त्री (स वापन् >) प्रथमविक्रय ।

बौद्धलाना, मि अ (म वापुग्गल्लन् >) ईपद् उमन् (दि प म)-वजुनीभू ।

बौद्धाडर, म स्त्री (स वयुस्तरण) वक्षा, यक्षा, अनिल वात ऋतु (पु) २ आक्षार, धारामपात ३ मन्तनमपात ४ व्यग्योक्ति (स्त्री) ३ वोगा (६) ।

बाह्य, स पु (म) गौमन्वुद्धानुयायन् । वि, बुद्ध, मवधिन् प्रचरित ।

—धर्म, म पु (म) बुद्धप्रवर्तितधर्म, बुद्धमन्तन ।

बाणा, म पु (स वामन) राव, हस्व सञ्चन, गृह्य यच । वि स्वव, हस्व ।

बारा, वि (स वागुल) विक्षिप्त, उन्मत्त । ३ अन मूत्र ।

बाली, म स्त्री (देरा) विक, स्व प्रमृताया गोदुग्धम् ।

व्याज, म पु दे 'मृद' ।

व्याध, म पु, दे 'व्याध' ।

व्याना, कि स (स वीन) नन्-उत्पद् (प्रे), प्रमू (अ आ मे) ।

व्यालू, स पु (म वैकालिक) साध्य भोजन, मन्तकपश । *वैकालिकम् ।

व्याह, स पु (स विवाह) उद्वाह, परि गय, उपयम, पाणि, ग्रह-ग्राह ग्रहण, दार, परिग्रह-अधिगम ।

व्याहता, वि स्त्री (म विवाहिता) ऊडा, परिणीता । स पु, पनि, भर्तु ।

व्याहना, कि स, (स विवहन) (पत्नीग्रहण) उद्-वि-वह् (श्वा प अ), परिणी (श्वा प अ), उपयम् (श्वा आ ज), परि, पनि ग्रह् (ऋ प से) २ (पनि ग्रहणं) पनि विद् (पु उ ने) लभ (श्वा आ अ) अधिगम् (श्वा प अ) हृ (स्वा उ से), भर्ता मयुज (वम) ३ उद्-वह् हृ (प्रे), पाणि ग्रह् (प्रे) विवाहेन-मयुज (प्रे), पाणि ग्रहण मपद् (प्रे) । स पु, दे 'व्याह' म पु ।

व्याहने योग्य, वि, उद् व-वह् वोदध्य, परि देय, विवाहयोग्य ।

व्याहने वाला, स पु, वि-उद्-वोद् परिणेतु परिणायक, पाणि, ग्रह-ग्रहणं ग्राहणम् ।

व्याहा हुआ, वि पु, विवाहन, सपत्नीक, मभार्य, कृन्दार, स्त्रीमय, कुडविन्, उद्, परिणीत । (वि स्त्री) सभट्टा, पतिवत्नी, सधवा, मुवासिनी, परिणीता, ऊडा ।

व्योत, स स्त्री (स व्यवस्था) वृत्त, वृत्तान्त २ काय, विधि प्रालौ लौनी ३ युक्ति (स्त्री), उपाय ४ अद्योतन, उपरल्पन * अक्षर ६ व्यवस्था, प्रबन्ध ७ मन्त्रिनय वक्ष्यन्तम् ।

व्योतना, कि स, दे कतरना ।

व्योपार गी, म पु ३ 'व्यापार गी' ।

व्योरा, स पु (म विवर्णम) विस्त्रुत, वान वृत्तान्त २ उदन्त, वृत्तान्त ३ अन्तरम भेद ।

—(रे)वार, अ० म वानर विम्बरन्, विस्तरपूर्वकम् ।

व्योहार, म पु, दे व्यवहार ।

ग्रन्, म पु, दे 'ग्रन्' ।

ग्रत्, म पु दे 'ग्रन्' ।

ग्रह, स पु [म ब्रह्मन् (न)] परमत्तम्, परमेश्वर, सन्धिदानद गन्तव्यं २ अस्मन्, देहिन् ३ ब्राह्मण (प्राय सनामभ्रमं, उ ब्रह्महत्या) ४ चतुर्मुख, विधि, पद्यामन ५ वेद ६ ब्रह्मा, भुवनवीथ ।

—चर्य, स पु (म न) आश्रमभेद, प्रथम-श्रम २ वीथरक्षा, अष्टागमैशुनप्रतिषेध, यमभेद (योग), ऊर्ध्वरेतस्त्वम् ।

—चारिणी, म स्त्री (म) त्रयाचर्यधारिणी, २ प्रथमाश्रमिणी ३ अनुडा, कुमरी ।

—चारी, स पु (स रिन्) क्रतिन्, लिगिन्, लिङ्गस्थ, ब्रह्मचर्यधारिन् वाग्निन् २ प्रथमाश्रमिन्, अविवाहित ।

—ज्ञान, स पु (स न) परमेश्वरबोध ।

—ज्ञानी, स पु (स-निन्) ब्रह्मवेत्ता २ अद्वैतवदिन् ।

—दिन, स पु (म न) परमश्रिदिवस, सुख्यवधि (= १०० चतुसुधी) ।

—देश, म पु (म) अर्यावर्तस्य भाविक्षेप (कुक्षेत्र च मन्धाश्च पचल शूमेनका) एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादिनन्तर-मनु० २।१९)

—पुराण, स. पु (स न) पुराणविद्येय ।

—बधु, स पु (म) पत्नी विप्र ।

—भोज, स पु (स ज्य) ब्रह्माभोजनम् ।

—मूहूर्त, स पु (स पु न) सूर्योदयात् विचतुरश्रीपूर्ववर्तिनात्, बहाराय ।

—यज्ञ, स पु (म) ब्रह्ममन्त्र, सविधि वेदाध्ययनाध्यापनम् ।

- अध्र, म पु (स न) अय, छिद्रद्वारम् ।
 —रात्रि, स स्त्री (स) अक्षणो निशा, प्रलया
 दधि (- १०० चतसृती) ।
 —अर्चनम्, म पु (न न) नमस्वाध्याय च
 तेजम् (न) ।
 —अचस्त्री, धि (म स्विन्) अक्षवर्चसविशिष्ट ।
 —थादिना, म स्त्री (म) गायत्री । वि,
 वेदापदेशी ।
 —वात्री, वि (म िन्) वेदोपदेशम् ।
 —विद्, वि (म) अक्षवेत् २ वेदार्थज्ञ ।
 —विद्या, म स्त्री (म) उपनिषद्परा, विद्या ।
 —वेत्ता, स पु (म ज्वेत्) अक्षम् ।
 —वैवर्त्त, स पु (म न) पुराणविशेष ।
 —समाज, स पु (स) आरामभेदनरण
 प्रवातेन सप्रदायविशेष ।
 —सूत्र, म पु (म न) द्वे 'यक्षोपवीन'
 २ शरीरविशुद्धम् ।
 —हत्या, स स्त्री (म) शिप्रवध ।
 —हत्यारा, स पु (स + हि) विप्र न
 आक्षयनात्म ।
 अक्षय, स पु (स न) परमेश्वर, स्वता
 २ आक्षयस्वम् ।
 अक्षरि, म पु (स) वमिषादयो मन्त्रद्वय
 अक्षय २ आक्षय ऋषि ।
 अक्षा, म पु (म ण् न पु) चतुर्मुख, अष्ट
 कर्ण, अत्र व, यत्र, कमलपद्म अक्ष,
 योनि, वि, धातु, नाभिज, पद्मासन, पर
 मेष्ठि, पिनामद्, विधि, विरिच चि चन,
 विश्वस्तज, सवतीमुख, खट्व, स्वयम्भू, हस्त
 बाहन, हिरण्यगर्भ (मन्व पु) ।
 अक्षाड, स पु (मं न) सुवनरोप, विश्व
 गोलम्, विश्वं, जगत् (न), जगती, विमुवनम् ।
 अक्षाक्षर, म पु (म न) ओम् इत्यक्षरम्,
 प्रणव ओङ्कार ।
 अक्षाणी, स स्त्री (म) अक्षय परनी, शतस्था,
 गाविनी, मरुत्पत्नी, गायत्री ।

- अक्षानन्द, स पु (स) अक्षदक्षनाहाद ।
 अक्षाभ्यास, म पु (म) वेद, अक्षयन
 स्वाध्याय ।
 अक्षावर्त्त, स पु (स) तपोवत्, सरस्वत
 हृषद्वत्तोमध्वदादिदेश ।
 अक्षायम्, म पु (स न) द्यौं ध्यात्
 आमतम् ।
 अक्षाक्ष, स पु (म न) अक्षस्वरूपमतम्
 २ अमोपास्त्रभेत् ।
 अक्षयण, स पु (स) आयाणामुत्तमो वण
 २ विप्र, ज्येष्ठवर्ण, अय च-मन् पातक ।
 अक्षदेव, द्वि त-मन् पाति, वक्त्रन, द्विज,
 पुट, द्विचोत्तम, पटनर्मन्, अयन् (मन्व पु) ।
 अक्षयण्य, स पु (मं न) द्विचन्द, विप्रत्,
 आक्षयन् ३ ।
 अक्षणी, स स्त्री (म) अक्षयण्यवती २ ज्येष्ठ
 वर्णा, द्विचोत्तमा ३ बुद्धि (स्त्री) ।
 अक्षयमुहूर्त्त, स पु (मं पु न) ज्योतिष
 कालस्व प्रथमदण्डयम् ।
 अक्षी, म स्त्री (स) दुर्गा २ भरतवर्षस्य
 प्राचीनलिपिविशेष ३ (वृटा) लोमवक्षर
 क्षरता, परमेष्ठिना, अक्षयक्या, शारदा
 सरस्वती ।
 अक्षिश, वि (अ) आग्ल ।
 अक्ष, स पु (अ) आक्षणी, लोमययी शीघनी
 मार्जनी २ वृत्तिका ना, तूलिका, वातमा ।
 अक्षी, स स्त्री (अ मयूरी) यवामवनी ।
 अक्षाद्वटस, स पु (अ) आसिनालीमुजप्रदाह ।
 अक्षाक, स पु (अ) अक्षिणपत्न्य क २ चतु
 रक्षी भूमि ३ गृहवर्ग ।
 अक्षीचिग्य पौडर, स पु (अ) अक्षेनक्षोद,
 रगनाशचूर्णम् ।
 अक्षेडर, स पु (अ) मृत्पाशय, बरिन् (पु
 स्त्री) २ पिताशय ३ (पादवदुक्त्य)
 अन्त कोष ।

भ

- भ, देवनागरीवर्णमात्रायाश्चतुर्विंशो व्यञ्जनवण,
 भक्त्वर ।
 भगा, म स्त्री द्वे 'भाग' ।
 अग, म पु (म) भजन, भेदन २ विनाश,
 विश्वम् ३ अतिप्रमर्ष, उन्मथनं ४ तरा,

- कल्लो ७ पराशय ६ गण्ड-३ ७ बाधा,
 विन् ८ वक्त्रा, विदग्धा ९ द्वे 'लज्जा' ।
 भंग, वि (हि भाग) भगाप, भगाप दिन् ।
 भैरवा, म पु (मं भगरान्) वेदय, वक्षरान,
 कुन्तवद्वन ११ तृभिय भृग, वक्षरान ।

भैरवा, स पु (हि भग) शाणप, वराशि मि ।

भगरा, स पु (म भृङ्गरा) पिकाकार सानेद > दे 'भारा' ।

भगिन, म स्त्री (हि भगी) जलपू (स्त्री), सम्मानिका ।

भगिमा, स स्त्री (म भृङ्ग प) नका, कुम्भिका, निहना, अरालना ।

भगा, म प (न नक्त >) रपू (प) मलहारक, मम १२ > सुद्रवनिभृ ।

भगा, वि (ह ना) दे भगा ।

भगी, म स्त्री (नो) भेद (इच्छे) > हि ल्या, वचना २ अर्थनिवेश (न न) ४ लोच लहरा ५ व्याज ६ प्रवृत्ति (स्त्री) ।

भगी, वि (म भगी) भिदुर ननु टना नवनशील २ नक्त भवन, लोच सत्न ।

भगुर, वि (म) भिदुर टना > नवर, श्रुव २ कुम्भ, वक्र ।

भगुर, वि (म) लन्, सत्न, श्रोत्र > उत्तर अनिक्रमयकरिण ।

भगुन, स पु (म न) सत्न, जेन, भेदन, शक्तीकरण २ अनिक्रम-भा, उत्पन्न, भा, व्यादन ३ वि, ध्वमन ४ भग, ध्वम ५ नाराज, लोपनम् । वि, दे भगु (१२) ।

भगुना, क्रि अ (म भगुन) दे 'टुना' ।

भटा, स पु (स वृत्त) दे 'न' ।

भड, म प (स) दे 'भाड' ।

भडा, स पु, दे 'भाटा' ।

भटार, स पु (स भाटार) कोश प निधि, शेषि, निधान > धान्य, कीष्ट, ज(अ)गार २ ३ पाकशाला ४ उदर, गडर ५ भाटा गर ६ 'दे' 'भटारा' ।

भडारा, स पु (हि भटार) दे 'भटार' (१५) २ ममूह, राशि ३ माधुना भो-नोत्प ।

भडारी, स (हि भटार) कीष्टक, अ(आ)-गारक २ कोश प ।

भडारा, म पु (भाटारिन्) कोशा(पा)-भृ, धनाध्यक्ष २ भाग्यारिण, भाग्यारि ३ सुद, पाचन ।

भभीरी, स स्त्री (अनु) रक्तप पनाभेद, *भभीरी २ दे 'तीन्ती' ।

भैर, म पु (स भ्रमरक) चक, आवर्त गुण, भ्रमि (स्त्री) आवर्त, अवपूर्ण, वृत्तुत्क, तानूर २ दे 'भ्रमर' ३ गर्त न, अवर ।

भैरवा, स प, दे 'भ्रमर' ।

भैरवी, म स्त्री (हि भैवर) दे 'भैवर' > शरीरास्थ रोम, ननु मलम् ।

भैवरी, म स्त्री (हि भैवरना, म भ्रमण >) > भावर' > वैवधिना, भावाहस्ता

३ (प्रवर्तपायी अधिकारिणा) पयदन पाभ्रमणम् ।

भज्या, म पु (हि भाड, दे) ।

भक, म स्त्री (अनु) ज्वाला जलना, जनि (पु) ।

भक्त, वि (म) भाक्त, धर्मागन्, पुण्य धन शाल पुण्यत्पन् । स पु, पूज्य, उपानक मेव २ अनुपायिन्, अनुपायिन् ३ पञ्चरतिन्, सत्नक ।

भक्ताई, स स्त्री, दे 'भक्ति' ।

भक्ति, स स्त्री (स) श्वर, सेवा, पूजा-अर्चा उपानना परायणता २ नियम, धाम्यता, धमक्रिया, तपस (न) ३ श्रद्धा, निष्ठा ४ परायणता, निरति (स्त्री), अनुराग, अभिनिवेश ।

भक्त, म पु (स) भोतनम् २ भङ्गम् ।

—भर, म पु (स) साटिक २ पचक ।

भक्षक, वि (स) खदक, जहर, भोक्त, परम, भोक्ति [मक्षिका (स्त्री) = खादिका, भनिना, नीम्बी] ।

भक्षण, ग पु (स न) अशन, आम्बादन, सादन, भोतन, अभ्यवहरण > आहार ।

भक्षित, वि (म) भुक्त, खादित, अशित ।

भक्षा, वि (स क्षिन्) दे 'भक्त' ।

भक्ष्य, वि (स) साध, भोक्ष्य, अभ्यवहार्य ।

भ पु (म न) भोतन, भाहार, साधवस्तु (न), अन्नम् ।

भगदर, म पु (म) अपानदेसे जगरोभेद ।

भग, न पु (म) सुख २ ऐश्वर्य, धन ३ मी महा, नाग्य ४ चद्र ५ वाणि (स्त्री)

६ गुर ७ पूर्वांक लुपानाहत्र ८ धन

९ कानि (स्त्री) १० मोक्ष ११ नागत्य

१२ यत्न ।

भगण, म पु (म) नक्षत्रमगुह २ गणभेद ।
(५१, छद शास्त्र) ।

भगत, स पु तथा वि, दे 'भक्त' ।

भगतानी, सं स्त्री (हि भगत) भक्त भावों
पत्नी २ इश्वर, उपासिका पूजिता मंत्रिका,
धर्मशाला ३ अनुगामिनी ।

भगती, सं स्त्री, दे 'भक्ति' ।

भगद्वर, स स्त्री (हि भाग + दौट) पलायन,
अप, क्रमण दान, विद्राव ।

—पद्मनाय मचना, वि अ, पलाय (भ्वा
आ से), विप्रदु (भ्वा प अ), अपधाव
(भ्वा प से) ।

भगवत्, स पु (स भगवत् >) इश्वर,
भगवत् (पु) ।

भगवती, स स्त्री (म) देवी ० गौरी
३ सरस्वती ४ गंगा ५ दुर्गा ।

—भगवत्, वि (म) श्रीमत्, लक्ष्मीवत्,
एश्वरशासिन् २ पूज्य, मान्य, अर्चनीय ।
म पु (स) परमेश्वर, जगदीश्वर २ विष्णु
३ शिव ५ तिन ६ बुद्ध ।

—गीता, स स्त्री (स) श्रीकृष्णार्जुनसंवाद
त्मको विरयतो धर्मग्रन्थविशेष ।

—पद्मी, स स्त्री (स) गंगा, देवनदी ।

भगवो वा, सं पु, दे 'गेर' । वि, दे 'गेरआ' ।

भगवान्, वि (स भगवत्) दे 'भगवत्'
वि तथा स पु ।

भगाना, कि स, व 'भागना' के प्रे रूप ।

भगिनी, स स्त्री (स) मोदरा, दे 'बहन' ।

भगीरथ, स पु (सं) अवोधापतिविराप ।
वि, सुमहत्, विपुल, अत्यधिक ।

भगोद्द, वि (हि भागना) रणविजुय,
युद्धन्यायिन् २ अपधावित, प्रपलावित
३ भीरु, वानर ।

भगन, वि (स) राटित, छुटित, ध्वस्त ० भिन्न,
वि, दोष ३ पराजित, पराभूत ।

भगान्मोष, स पुं (मं) धमावशेष,
दे 'घटहर' ।

भजन, म पु (सं न) पूजा, अर्पा, सन,
मपठ्या २ जप, सततस्मरण ३ भक्ति
गीतनिरा ।

—करना, कि स, दे 'भजन' ।

भजना, वि स (स भजन) भज् (भ्वा
उ अ), पूज्-समान् (जु), उपास् (अ

आ ने), आराध् (जु), नमस्थति (ना
धा), संव् (भ्वा आ से) २ जप
(भ्वा प से), निरतर रगु (भ्वा प अ)
३ आ, त्रि (भ्वा उ से) । कि अ,
दे 'भागना' । स पु, दे 'भजन' (१२) ।

भजनानन्द, स पु (स) भक्ति-आनन्द-रस
आह्लाद । वि भक्तिपरायण ।

भजनानन्दी, वि (स दिव्) भक्तयन्त्र,
मन लीन परायण ।

भजनीक, स पु (स भजन >) गायक, गायु,
गातृ, गेष्य ।

भजनाय, वि (स) पूज्य, सम्मान्य, संन्य ।

भजने योग्य, वि, भजनीय, उपास्य, संन्य-
त्पाद, आशयणीय ।

भजने वाला, स पु, भक्त, उपासक
आराधक ।

भट, म पु (स) दोष, बोद्ध (सैनिक,
आयुधिक) ० वीर, शूर ३ वर्णसरभेद ।

भट्टटाई, भट्टकटेया, स स्त्री (स भट्ट +
कटर >) दुम्पसा, दुग्धधरिणी, बहुकटा,
त्रिनकुला ।

भट्टना, कि अ (स भ्रान्तक >) मोष पर्यट्
परिभ्रम (भ्वा प से) २ पदग्रह (वि),

इतस्तन या (अ प अ), विपथगत् ३ भ्रम्,
मुह् (दि प से) । स पु, व्यर्थपर्यटन, पथ
भ्रम, उन्मार्ग-गमन, भ्रम, माया, मोह ।

भट्टकाना, कि स, व 'भक्तना' के प्रे रूप ।

भट्टा हुआ, वि, उन्मार्ग विपथ-गामिन, पथ-
भ्रष्ट, भ्रान्त, मूढ़ ।

भट्ट, स स्त्री, (स बधू >) (सम्बोधन में हा'
(हे) सरि ! (हे) आनि ! (हे) वदन्त्य

भट्ट, स पु (म भट्ट) जातिविशेष २ स्तुति
पाठन, दे 'भाट' ।

भट्ट, स पु, दे 'भट' ।

भट्टा, म पुं (स भ्राष्ट >) आपाक, वरु-
(पु स्त्री), पाण्डुटी ।

भट्टी, म स्त्री (हि भट्टा) अश्मन्, उडान,
अग्नि, अग्नि, अग्निशयणी, अग्निपुंठ
२ संधानी, अग्निपवशाला ३ रजजटाह ।

भट्टियारा, म पुं (हि भट्टा) पाषाणार,
अध्यक्ष पति २ मूठहार, भोतृमिष, भजन-
कार-कर्तृ ।

मठियारिन सी, सं स्त्री (हिं मठियारा) पाथा
गाराध्यक्षा २ भवन,कारी-करी, मूढकारी।

मठक, स स्त्री (अनु) औज्ज्वल्य, प्रभा,
भाम् (स्त्री), अति-ब्रह्म, अति-शक्ति (दोनों
स्त्री)-शोभा।

—दार, वि (हिं + दा) मसुर, मासमान,
उज्ज्वल, दीप्तिमत्।

मठकाना, कि अ (हिं मठक) उदप्रज्वल
(स्वा प से), उदप्र-म दीप (दि आ से)
२ सनाध्वस अपस (स्वा प अ)-परवृत्
(स्वा आ से), सहस्राक्ष (स्वा आ से)
३ क्रुप् (दि प अ)।

मठकाना, कि स व, 'मठकना' के प्रे रूप
२ उचित उदाहरण-प्रे)।

मठकीला, वि (हिं भन्व) दे 'भन्वदार'।
मठभङ्गिया, वि (अनु मठमठ) बाबाद,
बागाद, बावड़क, जल्प, बहुभाषण।

मठभूना, स पु (हिं माड भूना)
दे 'मठियाता' (२)।

मठभूजी, -जिन, स स्त्री (हिं मठभूजा)
दे मठियारिन' (२)।

महुआ, म पु, (हिं माँड) भगानीविन्द,
वेश्याचार्य, कुटाशिक, विट।

महुार, म पु (म भद<) धुद्रमासगभेद।

मणित, वि (स) उक्त, कथित, व्याहृत।

मतीजा, स पु (स भन्व) भ्रातृव्य, भ्रात्री
(त्रे)प, भ्रातृपुत्र।

मतीजी, म स्त्री (हिं मतीजा) भ्रातृजा,
भ्रातृव्या भ्रात्रीया, भ्रातृपुत्री, भ्रात्रेयी।

भक्ता, स पु (स भक्त<) *भक्त, भागव्य्य,
यात्रावृत्ति (स्त्री), यत्रिवन्।

भदभद, वि (अनु) अतिस्थू २ कुदरान।

भहा, वि (अनु भद) वदावार, उदशन,
बुरूप, विषमाग २ नैपुण्य-दाक्ष्य शून्य
३ अदलील, अवाच्य।

भद्र, वि (स) सम्य, शिष्ट, सुशिष्टित,
श्रेष्ठ, गुणित, प्रशस्त, सधु, सुवृत्, सुशील
२ मंगल, कल्याण, शुभ ३ उचित, उपयुक्त।

सं पु (स न) कल्याण, धैम, मंगल,
दुशल, हित २ नन्दन ३ गन्तव्यभिदेद

४ सुवर्ण ५ सद्यदि (स्त्री)।

भद्र, स पु (स भद्रावरण) केशकूर्चमधु
मुदन, मुदनम्।

भद्रता, म स्त्री (स) शिष्टता, सम्भवा,
सज्जनता, सुशीलता।

भद्रासन, म पु (स न) नृपासन, सिंहा
सन २ योगामनभेद।

भद्रिका, स स्त्री (सं) मद्रा निधि (द्वितीया,
सप्तमी, द्वादशी) २ वृत्तभेद।

भनक, स स्त्री (स भग्<) मद्र-अस्पष्ट
ध्वनि २ जनप्रवाह, विवदती।

भनभनाना, कि अ (अनु) भगभगायते
(ना पा), गुण (स्वा प से) शकार क।

भनभनाहट, स स्त्री (हिं भनभनाना)
भगभगायित, भगभगध्वनि, गुणन, गुणित,
प्रवार।

भच(भ)का, म पु (हिं भाप) बक-
सधान, यनम्।

भभक, स स्त्री (अनु भक) ज्वालोल्लान,
कीलोद्गति (स स्त्री) २ दे 'उज्जाल'।

—मारना, कि अ, गर् (स्वा प से)।

भभकना, कि अ (हिं भभक) प्रज्वल
(स्वा प से), उदीप (दि आ से)
२ तपानिशयेन स्फुट (तु प से)-भन्
(वर्म) ३ दे 'उद्वटना'।

भभकी, स स्त्री (हिं भभक) विभीषिका,
तर्तना, भस्तना, भयदर्शनम्।

—देना, कि स, निर्, भल्, तर्न् (दोनों
पु आ से)।

गीद—, गु, कपटविगीषिका, निष्ठा तनना।

भभभड, स पु, दे 'भीडभाड'।

भभूका, स पु (हिं भभक) ज्वाला, शिखा,
अचिम (न)।

भभूत, म स्त्री [स विभूति (स्त्री)]
गोमयभक्षण (न) २ वैभवम्।

—रगाना, कि स, विभूत्या विग्रह लिप्
(तु उ अ)। स पु भस्मगुठनम्।

भयकर, वि (सं) त्रास भीति भय, जनकद प्रद
अवह, भीम, भीषण, भयानक, रौद्र, शैरव।

भयकरता, सं स्त्री (म) भीमता, भीषणता,
भयानकता इ।

भय, स पु (स न) भी भोति (स्त्री),

मात्रस, स, प्राप्, दर र, भिया र आतक
३ आधवा ।

—कारक,—प्रद, वि, दे भयकर ।

—राना या लगना, कि अ, मी (जु प
अ), वि म प्रस् (भ्वा दि प से), दे
'राना' ।

—भीत, वि (स) भीत, भयात, ससात्वम,
धम्म मभय, सदर ।

—हीन, वि (स) निर्भय, अभय, निर्भीक,
जकुनोभय दे निर्भय' ।

भयातुर, वि (स) दे 'भयभीत' ।

भयानक, वि (म) दे 'भयकर' ।

भयावना, वि (म भय >) दे 'भयकर' ।

भयावह, वि (म) दे 'भयकर' ।

भर, वि (हि भरना) समस्त, सम्पूर्ण,
ममय, यावत् (ती स्त्री) दावत् (ती स्त्री) ।
कि वि, यावत् (दिताया क साथ) आ
(पचमी के साथ मात्र, मित, परिमित, परिमाण ।

आयु—, कि वि, यावज्जीव, आयुष्यो ।

कोम—, कि वि, कोश यावत्, कोशमात्रम् ।

वास—, वि, वश, मात्र मित परिमाण ।

शक्ति—, कि वि, यथाशक्ति (न), याव
उत्स्य, यावच्छक्ति (अव्य) ।

सर— वि, मेर-मेटरक, मात्र परिमित ।

भरण, म पु (म न) पालन, पोषण,
सवधन, रक्षण, समावहनम् ।

भरणी, म स्त्री (स) नक्षत्रविशेष, दमदेवता
२ धोपकलना । वि स्त्री (म) पालयित्री,
पोषित्री ।

भरत, म पु (न) कैकेयोपुत्र, रामानुज
२ शाकुंतलय, दीप्यनि, सबदमन ३ ऋष
भदेवपुत्र ४ नाट्यशास्त्रलेखको मुनिविशेष
५ नट ।

—खड, म पुं (म न) भारत, भारतवर्ष
पं २ भारतानर्गतकुमारिराज्यम् ।

भरता, स पु (देश) *वृत्ताश्रुत्तम् ।

भरता, भरता, म पुं [म भरता (रट)]
भट्ट, धनि, धन २ स्वामिन, प्रभु ।

भरती, स स्त्री (हि भरना) मीन्द्रप्रवेश
२ प्रवेश ३ भरण, पूरण, पूर्ण (स्त्री) ।

—करता, कि म, मीन्द्रप्रवेशं कृ (प्रे) ।

—डालना, कि स, गर्न पूर (लु) ।

—हीना, कि अ, सेनायां प्रविश (लु प अ) ।

भरना, कि स (म भरण) भृ (भ्वा उ य),
भृ (जु उ अ), पृ (जु प अ), पू (तु
प से) पूर (लु), व्याप् (स्वा प अ)
२ प्रभु पर (प्रे) ३ ऋणादिक शुभ् निन्ट
(प्रे) ४ मद् (भ्वा आ से) ५ उक्ति
प्रभुप (प्रे) ६ लिप् (लु उ अ) । कि
अ, भृपृभ्याप्पूर (कर्म) २ अंत कुप्
(दि प से) ३ ऋणादिक शुभ् (दि प
अ) ४ पुष् (कर्म) । सं पु, भरण, पूरण,
व्यापनं, पूर्ण मृनि (स्त्री) २ ऋण
३ उरकोच ।

भरनी, स स्त्री (हि भरना) मल्लिक, त(व)-
सर, गुरुवेष्ट हर्म २ निर्धकस्तव (पु रट) ।

भरनी, स स्त्री, दे 'भरणी' ।

भरने योग्य, वि, भर्न-य, भरणीय, पूरणीय,
पूरयितव्य २ शोधनीय (ऋणादि) ।

—वाला, स पु, पूरक, भर्त, पूरयित
२ ऋणादिशोधक ।

भरा हुआ, वि, सं, भूत, पूर्ण, पूरित, आम-
कीर्ण, व्याप्त, निश्चित, सकुण, आविष्ट ।

भरपूर, वि (हि भरना + पूरा) स परि,
पूण पूरित भूत मकीर्ण व्याप्त, निश्चित । कि वि,
पूर्णया, अशेषेण २ मम्यद्, माधु ।

भरभराना, कि अ (अनु) आकुल (वि) भू ।

भरम, म पु (सं भ्रम) भ्रान्ति, मिथ्या
मति (दोनों स्त्री), माया, आभ्रम, अविद्या
२ भेद, रहस्यम् ३ प्रतिष्ठा, प्रत्यय ।

भरमार, म स्त्री (हि भरना + मार) बहुलता,
प्रचुरता, विपुलता, भूदिष्टता ।

भरराना, कि अ (अनु) सहसा पद (भ्वा
प से) ९ शुट (दि तथा लु प से) ।

भरवाना, कि प्रे, व 'भरना' के प्रे रूप ।

भरगक, कि वि [हि भर + सक (= शक्ति)]
यथा शक्ति-वत्-साभर्थ्य, पूर्ण, शबरत्या-वलेन ।

भरा, वि (हि भरना) पूर्ण, पूरित, (सं)
भूत, निश्चित, आविष्ट ।

—(री) जगानी, पूर्ण-वीचन-नाकप्यम् ।

—(री) घाली में हान मारना, मु, लाभ
प्रदजीविकां परित्यज् (भ्वा प अ) ।

—पूरा, वि (हि भरना + पूरा) सर्वत्र,
समृद्ध २ परि-सं, पूर्ण ।

भराई, म स्त्री (हि भरना) दे 'भरना'
मं पुं २ भरणं पूरणं, मृनि (स्त्री)—वेचनम् ।

भराना, क्रि प्रे, व 'भराना' के प्र रूप ।

भरी, न स्त्री (हि भर) दत्तामापो ।

भरोमा, म पु (हि भरा + म विश्वाम >)
विश्वाम, प्रत्यय २ आश्रय, अतलव बन,
आश्रय ३ आशा ।

—करना, क्रि अ, आ-अव-लट् (भ्वा आ से)
२ विश्वम (अ प से) ३ आशा वध् (क
प ज) ।

भर्ता, } स पु (स भव्) दे 'भरता' ।
भर्तर, }

भर्ता, स पु, दे 'भरता' ।

भर्ती, स स्त्री, दे 'भरती' ।

भर्तृना, स स्त्री (स) तजना, निर्मर्तना,
अधिपेय, निद्रा, गहा वाग्दड, उपात्म ।

—करना, क्रि म, निर्भन्-त्वन (चु आ
से), गह् (भ्वा आ से), निद्र (भ्वा
प से) ।

भलमनसत, } स स्त्री (हि भला + मानुम)
भलमनसाहृत, } भद्रता, सज्जनता, आयत्व,
भलमनसी, } महानुभावता ।

भला, वि (स भद्र) शुभ, वर, शोभन,
उत्तम, श्रेष्ठ, गुणवत्, निर्दोष, माधु, प्रशम्न,
प्रशम्य, वर सु, मत् २ उत्कृष्ट, विशिष्ट ।
म पु (म न) कल्याण, कुशल, मंगल,
द्वैत २ लाभ, प्राप्ति (स्त्री) । अव्य, भवतु,
अस्तु, तावत् ।

—करना, मु, उपकृ, साहाय्य दा (जु उ अ) ।

—चगा, वि, नीरोग स्वस्थ, निरामय ।

—बुरा, स पु, दुर्-अश्लेष-वचन २ हानि
लाभी ।

—मानुम, स पु, भद्र, आय, सज्जन ।

भले ही, मु, काम, (लोट्, विधिलिट् से भी
अनुवाद किया जाता है) ।

भलाई, स स्त्री (हि भला) मञ्जना,
माधुता, आर्याता २ उपकार, उपकृति (स्त्री),
पन्हितम् ।

भव, म पु (स) समार, तगन् (न)
२ नमन् (न), उत्पत्ति (स्त्री) ३ पुन
ननदुल ४ मत्ता ५ शिव ६ मेघ ।

—यवन, म पु (म न) तगजालम् ।

—भपन, म पु (म) ईश्वर, मुक्तिद ।

—भय, स पु (स न) पुनन्यमवाम ।

—मोचन, वि (स) मोक्षद ।

—सागर, स पु (स) समारपारवार ।

भवदीय, भव (स) भावक, युष्मदीय,
स्वदीय, तावक-यौष्माक [—स्त्री (स्त्री)],
यौष्माकीण ।

भवन, स पु (न न) अ(आ)गार-र, वेदमन्
मन्त्र (न), सदन, निकेतन, मन्दिर, गृह,
मेघ २ प्रामाद, नृपमन्दिरम् ।

भवानी, स स्त्री (स) दे 'पार्वती' ।

भवितव्य, वि (स) अवश्य भाविन्, भवनीय ।

भवितव्यता, स स्त्री (स) नियति (स्त्री),
मात्य, मागधेय, दैवम् ।

भविष्यु, वि (स) भविष्य, भविष्यत्, आगा
मिन्, भूषणु ।

भविष्य, वि (स) आगामिन्, अनागत,
उत्तर, भविष्यत्, श्वस्तन [—स्त्री (स्त्री)] ।

म पु (स न), भविष्यत्-आगामि-भावि
उत्तर-अनागत-काल-समय, अनागत, श्वस्तन,
प्रयेतन, भाविन्-आगामिन् (न), आयति-
(स्त्री), उदकं ।

भविष्यत्, वि तथा स पु, दे 'भविष्य' ।

भविष्य(द्)वक्ता, स पु (म-वक्तु) भविष्यद्
वादिन्, दैवज्ञ ।

भविष्य(द्)वाणी, स स्त्री (स) भवि
कथन-सूचन, भविष्यद्वाद ।

भव्य, वि (स) सर्थाक, शोभायित, दिव्य,
सुप्रभ, शोभन २ शुभ, मंगल ३ सत्य, यथार्थ
४ योग्य ५ भाविन् ६ श्रेष्ठ ७ प्रसन्न
८ महत्, गुरु ।

भव्यता, स स्त्री (स) दिव्यता, शोभा, श्री
(स्त्री), सुदरता इ ।

भपक, स पु (स) कुक्कुर, मारमेय ।

भर्सीड, स स्त्री (देस) मृगाल-लं, शालूक
(विमद ?), निम, जातीयक २ कर्हाट,
कर्कट, शिकाकद ।

भसुड, म पु, दे 'हाथी' ।

भसुर, म पु (हि भसुर का अनु) ज्येष्ठ,
भनुरयत ।

भस्म, म पु [म भस्मन् (न)] भस्मिन्,
वि, भूति (स्त्री) ।

—करना, क्रि म, भस्म (स्त्री) कृ, भस्मनात्
कृ २ दे 'कलाना' ।

भागना, क्रि अ (म भाच्) पलाय
(न्वा आ स), अयध्व् (न्वा प मे),
विभट्ट (न्वा प ज), अयन्तस्य (न्वा
प ज) २ वृज (चु) परिद्ध (न्वा प ज) ।
स पु, पलायन अयधवन, अय, यान इव ।
नरा परिहराम् ।

भाग दौड, म स्त्री, दे 'अयध्व' ।

निर परपैर रखकर भागना, मु, महानवेन
पलाय या अयधव ।

भागनिवाला, म पु दे 'मगोडा' ।

भागवत, स पु (स न) श्रीमद्भागवत,
महपुराणविशेष २ देवीभागवतपुराण ३
गावज्ज्वल । वि, ऐश्वर, वैष्णव ।

भागार्थी, वि (म भिन्) भाग-अंशस्वड,
इच्छुक-मिन् अर्थिन् ।

भागार्ह, वि (स) अशित्, अशभागिन्,
भाग शरित् भागिन् २ विभज्य, अशनाय,
वन्नीन ।

भागिनेय, म पु (स) दे 'भोज' ।

भागी, स पु (म भागिन्) अशित्, अश-
भाग, अशित् हारिन् २ दानद, दायिक,
रिक्थिन् अशक ।

भागीरथ, वि (म) भागीरथ, अन्विन्
विभयक-मृदा ।

भागीरथी, स स्त्री (स) गंगा, गङ्गी
२ गंगाया वावर्तित्वाविशेष ।

भाय, स पु (स न) भाषेय, दिष्ट, अदृष्ट,
दक, निपति (स्त्री) विधि, भवितव्यता,
विपद्, प्राकृतनद ।

—उदय, म पु (स) पुष्पोदय,
दैवानुदयना ।

—चम, म पु (म न) दैव-वि (स्त्री),
अत्यज्ज ।

—वस, —वसान्, क्रि वि नीभचनेन,
सुदनेन दिष्टया दैवद ।

—यान्, वि (न-वत्) भाग्यनाप्तिन्, महा
भाग, सुभग, धन्य, श्रीभाग्यपुण्य, वत्
सुदित्, धीनत् ।

—हीन वि (सं) हत-दुरन्द, नायभा,
दुर्देव, दैवदत्तक ।

भाजक, वि (स) विभाजक, विभेदक,
विच्छेदक, विभाजयित् २ हर, हार, हारक
(गति) दे 'भागफल' मे ।

भाजन, स पु (स न) दे 'पात्र' ।

भाजित, वि (म) विभक्त, विभजित २
पृथक्कृत, विदलेषित ।

भाजी, स स्त्री (स) व्यञ्जन, उपमेचन,
अन्नोपस्कर २ शाक, हरितक, शिशु
३ दे 'भाड' ।

भाज्य, वि (स) भागाह, भागनीय । स पु
(स न) भागाह्वित (गति) दे 'भागफल' मे ।

भाट, स पु (स मट्) वामररत्नविशेष ।
२ चारण, वदिन, बैतालिक, मागध, स्तुति
पाठक, मधुक ३ चाटुमार ४ राजदूत ।

भाटा, म पु (हि भाठना) बेल, परिवर्त
अपचय, क्षोभमाण-अपचीयमान, बेल ।

भाट—, स पु वेत्नेपचयापचयो (पु क्रि) ।

भाड, स पु (स भाट्ट इ) अवरीष,
नन्तापाक ।

—झोंकना, मु, छुदकार्यं कृ २ काल व्ययं वा
(प्रे यापयति) ।

—मे झोंकना वा डालना, मु, नस् (प्रे),
क्षी (प्रे क्षपयति) २ त्यन् (न्वा प अ),
उपस् (न्वा आ से) ।

—म पडे, मु, नदयत्, भस्मसात् यवतु ।

भाडा, स पु (स भाटक क) भाट,
गटि (स्त्री) ।

—भाडे का टट्टू, मु, अस्थिर, अस्थायिन् २
स्वार्थपर, अर्थपर ३ अल्पमूल्य, गुण
सात्, हीन ।

भाट, स पु (स गक्त) बोदन-न, अत्,
अधस (न) कूर, भिस्ता, दीदिवि २ वर
वृषिभोर्मन्त्रभोजनात्मको वैवाहिकरीतिभेद ।

भाया, स पु (स भला) दे 'तरकद' ।

भाट्टो, स पु (स भाट्ट) भाट्टपद, नभस्य,
प्रोष्ठपद ।

भाट्ट, भाट्टपद, स पु (स) दे 'भाट्टो' ।

भाट्टपदी, स स्त्री (स) भाट्टी, भाट्ट भाट्ट
पद, पूषमा ।

भात, स पु (स) प्रकाश, ज्योतिस् (न)
२ ज्ञान ३ आभास, प्रतीति (स्त्री) ।

भातना, स पु, दे 'भाज' ।

भानजी, स स्त्री दे 'भाजो' ।

भानमती, स स्त्री (स भानुमती) ऐन्द्र-
पत्नी, कापिनी ।

—का पिढारा, म पु, विपमरस्तुमग्रह ।
 भाना, क्रि अ, दे 'पमन्द जाना' ।
 भानु, म पु (म) रवि, सूर्य २ चित्रण ।
 भानुजा, } म स्त्री (म) यमुना, गार्जिनी,
 भानुवनया, } भानुयुता ।
 भाप, म स्त्री (म वा(ता)प पम् ।
 —निम्नलना, क्रि अ, वा(ता)पायतं (ना धा)
 बाप उच्छिप् (तु प अ) उद्गृ (तु प से) ।
 —देना, क्रि स, बापण म्बिद् (प्रे) या पच्
 (भ्वा प अ) ।
 —वनना या बनाना, उद्गापण, वापी,
 भवन-करणम् ।
 मामी, स स्त्री (स भ्रातृभार्या) अग्रनपत्नी
 २ भ्रातृ-जाया-पत्नी, प्रजावती ३ जननी ।
 मामा, स स्त्री (म) पत्नी, भार्या २ नारी
 ३ कृदा स्त्री ।
 मामिनी, स स्त्री (म) कोपना स्त्री २ नारी ।
 भार, म पु (सं) दे 'बोझ' ।
 —वाह, स पु (म) मारित्, भारित्,
 भार-हर-हार, वाह(हि)क ।
 —उठाना, मु, प्रथ्व्यानां अगीकृ ।
 —उत्तरना, मु, उत्तरदायित्व हा (तु प अ) ।
 भारत, स पु (म न) भारतवर्ष ई,
 म(भा)रतखण्ड २ महाभारतग्रन्थ ।
 भारती, स स्त्री (म) गिर-वाच् (स्त्री),
 वाणी २ सरस्वती, शास्त्रा ३ वृत्तिभेद (मा) ।
 भारतीय, वि (म) भारत-देशीय-वर्णय ।
 स पु, भारतवाग्निम् ।
 भारी, वि (स रिच्) मारित्, गुल्, दुर्बंद,
 भारवत् २ वरात्, भीषण ३ मद्दत्, रूढत्,
 विशाल ४ अत्यन्त, अत्यधिक ५ अमघ,
 दुर्मर्, दुःख ६ प्रवृत् ७ शून्य, शून्य ८ शान्त,
 ग(ग)भीर ।
 —पन, स पु, भारतस्व, गुणत्व, गरिष्ठता ।
 —भरकम, रि, अति-कृ, भारवत् ।
 पैर भारी होना, मु, गर्भे धृ (चु) ।
 भार्या, स स्त्री (म) दारा (पु वट्),
 द 'पत्नी' ।
 भार, म पु (मं न) लम्ब, अम्बि, गारि
 (पु भी), निग(ि)म्, मूधन् (पु), मग्ग,
 मस्त(म्बि)म्, मग्गन् ।
 —चद्, —नेत्र, —सौचन, म. पु (सं) दिव ।

भाला, मं पु (म भल्ल र्न्) द 'वरण' ।
 —वरदार, म पु (हि + पा) द 'वरण' ।
 भालू, म पु (म भाल्) मन्ड(ल्)म्,
 कृत्, मल्ल, दुर्गाप, दीपक, दुवार,
 भाङ्ग, माल्ङ्ग ।
 भाव, म पु (स) अस्तित्व, सत्ता, विष
 मानता २ मानम मना, विचार-वृत्ति (स्त्री),
 विचार ३ अभिप्राय, आशय ४ मुखाहनि
 (स्त्री) ५ जन्मन् (न) आत्मन् (पु)
 ७ पदार्थ ८ विद्मन् (पु) ९ अतु
 १० वृत्त, त्रिभुनि (स्त्री) । ११ संविपय,
 गीग १२ प्रेमन् (पु न), अनुगण
 १३ समार १४ वपना १५ स्वभाव
 १६ गूढेच्छा १७ नीली-रीति (स्त्री)
 १८ दक्षा १९ भावना २० विशास
 २१ प्रतिष्ठा २२ वस्तु, गुण धर्म २३ उद्देश्य
 २४ मूय, अर्थ, वस्तु, प्रवृत्तय, अर्थ-मूल्य,
 प्रमाण २५ शब्दा, मति (स्त्री) २६ स्वादि
 व्यभिचारिमात्स्विकभावा (काव्य), नादि
 कारिमानमविकारा २७ दाव, दे 'नगरा' ।
 —भाव, म पु, मूय, अर्थ ।
 —वाचक, म स्त्री (म वाचिना) सनाभद
 (व्या, उ श्रेष्ठता) ।
 —वाच्य, म पु (म न) वाच्यभेद (व्या,
 उ इत्यत) ।
 —उत्तरना या गिरना, मु, अर्थ अगधि
 (वम), मूय हम् (भ्वा प म), मदायने
 (ना धा) ।
 —चङ्गा या चङ्गा, मु व्रन्तं चृ (भ्वा
 आ म), अवश्य उपधि (कर्म) ।
 भावक, वि (म) उन्ना-क, मन् २ व-दाग
 वाक ३ उत्प्रेषक ४ वाच्यनिर्ण ।
 भावन्, मं स्त्री (मं भ्रतृवाया) द 'भावना'
 (२) ।
 भावना, वि (दि भावना = अल्प लयना)
 विष, वचिन्, रायन् । म पु, व-क-न विष
 मम, प्रमदायन् ।
 भावन्, रि (म) उन्ना-क, प्रमाणनी म
 पु (म) निनिधायकम् २ मूर्तिवृत् ३
 शिव । (म न) ल्या-कम् २ चि-नन् ३
 व-पना ४ मति-भवना ।
 भावना, म स्त्री (मं) ध्यान, विना, विमन,

विचर २ कामना, वासना, इच्छा ३ स्मृत्य
 तुमवञ्चित्तस्कारभेद ४ सामान्य,
 विचार-वल्पना ५ दे 'पुट' (वैद्यक) । वि,
 शोभन, प्रिय, रोचक । कि अ, दे 'पसद
 आना' ।
 भावनीय, वि (म) चिन्तनीय, वल्पनीय ।
 भावाभाव, स पु [स-वौ (हि)] अस्त्वित्वा
 नस्त्वित्वे (न) २ उत्पत्तिविनाशौ ३ जन्म
 मृत्यु (सब हि) ।
 भावार्थ, स पु (स) तात्पर्यार्थ, आशय,
 तात्पर्य, भाव २ भावप्रधानटीका ।
 भावित, वि (स) विचारित, वितित ।
 भावी, वि (सं विन्) दे 'भविष्य' (वि) । स
 स्त्री, दे 'भविष्य' स पु २ दे 'भविष्यता' ।
 भावुक, वि (सं) रसिक, सरस, रमभूयिष्ठ,
 भावप्रधान २ चिन्तक, विचारक ।
 भाष्य, वि (स) भवितव्य, अवश्यभाविन् ।
 भाषण, स पु (स न) कथन, वचन, उक्ति
 (स्त्री) २ व्याख्यान, प्रवचन, उपदेश ।
 भाषातर, स पु (स न) अनुवाद ।
 —कार, स पु (स) अनुवादक ।
 भाषा, स स्त्री (स) बागी, वाच् गिर (स्त्री),
 भारती, गिरा, उदीरणा २ हिन्दीभाषा
 ३ वचस् (न), वचन, वाच्य, उक्ति (स्त्री),
 व्याहार, निगद, शब्द, भाषित, अलप
 ४ सरस्वती ५ अभियोगपत्र (अर्द्धादावा) ।
 भाषित, वि (स) कथित, उक्त, उदीरित ।
 स पु (म न) कथन, वार्तालाप ।
 भाषी, म पु (स विन्), बादिन्, वन्दु ।
 भाष्य, स पु (सं न) टीका, व्याख्या, वृत्ति
 (स्त्री) विवरणम् ।
 —कार, म पु (स) टीका भाष्यव्याख्या,
 वाग कृत् (पुं) २ महाभाष्यकार, पत्रलि,
 गोनदीय ।
 भाम, म पु (स) सस्कृतभाषाया महत्त्ववि
 विशेष २ कान्ति-दासि (स्त्री) ३ कलना
 ४ गोष्ठ छम् ५ कुचकुट ६ गृध्र ७ पक्षिन् ।
 भामना, कि अ (स भासन) भाम् प्रकाश
 (भ्वा आ से) २ प्रति ३ (कर्म) ३ इश
 (वनं) ।
 भासुर, वि (स) दे 'भास्वर' ।
 भास्वर, स पु (स) सूर्य २ अग्नि, (स
 न) नुवर्ण ३ ज्योतिषग्रन्थकारो भास्कराचार्य ।

भास्वर, वि (म) धुनि कानि शीघ्रि, मन्व,
 उज्ज्वल, भासुर, देदीप्यमान, भ्राजमान ।
 भिडी, म स्त्री (स भिटा) भिन् भिन् २,
 सुशाक, वरपणं, वृत्तबोज, चतुःपुट ।
 भिक्षा, म स्त्री (म) याचना, याचना, अर्चना,
 २ भिक्षाग्न ३ भक्ष्य, दानम् ।
 —पात्र, स पु (म न) भिक्षा-दान, पात्र
 भाजनम् ।
 भिक्षु, म पु (म) परित्राज, परित्राजक,
 व्रतक, (बौद्ध) सन्न्यासिन, मत्सरिन्, प(पा)
 राशरिन् २ दे 'भिक्षारी' ।
 भिक्षुक, सं पु, (स) दे 'भिक्षारी' ।
 भिखमंगा, स पु दे 'भिक्षारी' ।
 भिखारिन्, स स्त्री (हि भिखारी) भिक्षुकी,
 भिक्षाकी, भिक्षाचरी ।
 भिखारी, स पु (हि भील) भिक्षु, भिक्षु
 भिक्षाक, भिक्षाचर, भिक्षारिन्, मार्गण,
 याचक, याचनक, वनीयक, अर्थिन् ।
 भिगोना, कि स (हि भीगना) निवृद्ध (प्रे),
 उद्ध (रु प से), आर्दीकृ ।
 भिनवाना, कि प्रे, व 'भिनना' के प्रे रूप ।
 भिन्नी, स स्त्री (देस) स्तनाग्र, चूचुकम् ।
 भिन्, स स्त्री (हि बरें ?) वरट-दाटी, श्वा
 विका, गधोली, गृहकारिका ।
 भिदना, कि अ (चतु भड ?) सपट्ट (भ्वा
 आ मे) समृद्ध-सहन् (कर्म) उप, या
 (अ प अ), समिल (तु प मे)
 ३ कलहायते (ना या), युध (दि आ अ) ।
 भिडाना, कि स, व 'भिडना' के प्रे रूप ।
 भितल्ला, स पु (हि भीतर-तल) दे
 'अस्तर' । वि आन्तर, आन्धन्तर, दे
 'भीतरी' ।
 भितहली, स स्त्री, (हि भिनला) वेपण्या
 अधस्थ पाषाण ।
 भित्त, म पु (स न) भण, अश २ सग
 ड, शकल-गम् ३ दे 'भित्ति' ।
 भित्ति, स स्त्री (म) कुड्य, कूच्य, कुड्यक,
 भित्तिका २ भित्ति-गृह, भूलम् ३ विवाधार
 ४ छेद, भेद ५ छण्ट शक ६ भग्न
 वस्तु (न) ६ क, किलन, लण्पूनी
 ७ दोष ८ अवसर ।
 भिदना, कि अ (स भिद) विध-व्यध् (कर्म),
 छिद्रित (वि) भू २ आहन् व्रण् (कर्म) ।

भिनकना, } कि अ (अनु भिनभिन)भिण
भिनभिनाना, } भिणायने/ना धा), भिणभिण,
रगित निनद नन् (प्रे) ।

भिनभिनाहट, म स्त्री (हि भिनभिनाना)
भिणभिणायिन, भिणभिण, रगित निनद,
चकार, सुचनम् ।

भिन्न, वि (स) अमरद, अलग्न, पृथग्भूत,
विच्छिष्ट ० अन्य, इतर, अपर । स पु (स
न) अपूर्णा, राशि, भाग ।

—भिन्न, वि, अनेक, विभिन्न र निनाना, विध ।

भिन्नता, म स्त्री (स) भिन्नत्व, पुष्यत्व,
भेद, अतरम् ।

भिलार्वा, स पु (म भद्गातक) भद्गात,
शोषहृद (पु), वीर, अरु वृक्ष, कुमिन,
भूतनाशन, स्फोटवीजक, ब्रगहृद (पु) ।

भी, अव्य (स अपि) च, अपि च ० अवश्य
३ अधिकम् ।

भीष, स स्त्री (म भिक्षा) दे 'भिक्षा' (१३) ।

—भागना, क्रि म, भिक्षु (स्वा आ से),
भिक्षा याच (स्वा आ से) ।

भीग(ज)ना, क्रि अ (म अभ्यजन) >
निष्प्री-आद्री भू, उद (कर्म उद्यते), किलद
(दि प वे) ।

भीगी बिल्ली होना, मु, मयाद नृणां स्था
(स्वा प अ) ।

भीड, स स्त्री (हि भिन्ना) जन, ममुदाय
मयर्द-ओप-मपूह ० आ द् विपद् (स्त्री) ।

—भडक, स पु } सुमहाय जनममद

—भाड, म स्त्री } ३ ।

भीत, वि (स) मयात्, प्रल, मभय ।

ओदे की प्रीत ज्यों बळ की भीत, मु,

* छुटमाय हि नथरम् ।

भीत, म स्त्री, दे 'भिति' ।

भीतर, क्रि वि (म अभ्यतरे) अंत, स्त्री,
नेर, दे 'अदर' । स पु, हृदय, मानस,
अत उरण र अत पुर, अबरोध ।

भीतरी, वि (हि भीतर) आंतर प्रत्यन्तर
[नी (स्त्री)], अन्तर, अन्तर्य, अन्तर्भव
३ सुप्त, गूढ, प्रच्छन्न ।

भीति, स स्त्री (मं) दे 'भय' ।

भीम, सं. पुं (सं) बुविष्ठिरानुच, भीममेन,

दुहोदर । वि, दे भयकर र सुमहद, अति
विशाल ।

—के हाथी, मु, अप्रत्यागमि अप्रत्यागने,
पदार्थ ।

भीरु, वि (स) कानर, चन्नु, भवशील,
भल (सु) क ।

भीरता, स स्त्री (म) कालय, कापुगपल,
करीबाग, वस्तुना ।

भील, स पु (स भित्त) म्बेच्छत्रागिविगेय ।

भीलना, म स्त्री (हि भील) निद्री,
भिन्नारी ।

भीषण, वि (म) दे 'भयकर' ।

भीषणता, म स्त्री (न) दे 'भयकरता' ।

भीष्म, स पु (स) गारोय, देवजन, राजनु
पुत्र र शिव । वि, दे 'भयकर' ।

भुक्खद, वि (हि भूय) वृद्धित्त, सुधर्त
२ औररिच, वृद्धोचित् अमर, पस्मर,
अत्याहारिन् ३ दरिद्र, दीन ।

भुक्त, (स) भक्षित, जग्य र. उपभुक्त,
व्यवहृत ।

—भोष, वि (म) उच्छिष्ट, जुष्ट ।

भुक्ते, म स्त्री (स) भोक्षण, आहार, अन्न
२ विषयोपभोग, लीकिर्षुसुखम् ।

भुखमरा, वि (हि भूय-मरणा) दे 'भुखत्' (२, ३) ।

भुगतना, क्रि म (स भुक्त) > उप, मुत्
(र आ अ), अनुभू, प्राप (स्वा प अ)
२ उपसह (स्वा आ से), मृष्ट (दि
प अ, तु) ३ (कणादिक) शुष (दि
प अ), अपाठ (कर्म) । कि अ, मनाप
(कर्म), पूर (घर्न), निवृत् (स्वा आ
से) अकमो (घर्न) ।

भुगतान, स पुं (दि भुगतना) निवृत्ति
समाप्ति मिदि पूत (स्त्री) २ (कणादि
वस्य) निम्नर, परिपुष्टि, अपनयनम् ।

भुगताना, क्रि प्रे ३ 'भुगतना' क्रि म के
प्रे रूप ।

भुगा, वि मूय, जट, अष्ट, निवृत्ति ।

भुग्न, वि (म) अराण, विद, बर, न्युक्ज,
अ न(ना)भित ।

भुच्च, भुच्चद, वि (म भूत+दि चदना)
जट, अष्ट, मूय, जटमनि ।

भुजंग, } स पु (स) दे 'सर्प' ।
 भुजंगम }
 भुजगी गिनी, म स्त्री, दे 'सर्पणी' ।
 भुज, म पु (स) भुजा, बाहु, दोरद
 = (ज्योमैत्री में) भुज, बाहु, पार्श्व ।
 —डड, म पु (म) दोर-बाहु-दड ।
 —पाग, म पु (म) अङ्गिन, परिवार ।
 —बन्, म पु, अगद, वेयूर, बाहुबन्ध ।
 —मूल, म पु (स न) कक्षा, दोर्मूल, खडिक ।
 भुजना, स पु (हि भूजना) *भृष्टाजम् ।
 भुजा, स स्त्री (म) दे 'मुज' ।
 भुजिया, म स्त्री (हि भूजना) *भोजेया
 गृष्टशुक शक शिमु । स पु क्वथितधान्य
 = क्वथितधान्यतडुल ।
 भुहा, म पु (स भूह) मकायकणिशम् ।
 भुनना, म पु दे 'भूत' (७-९) ।
 भुनगा, स पु (अनु) (१२) की
 पग, भेद ।
 भुनना, कि अ, व 'भूनना' के कर्म रूप
 = व 'भुजना' के कर्म रूप ।
 भुनभुनाना, कि अ (अनु) भुणभुणायते
 (दा धा) अव्यक्त वच (अ प अ) ।
 भुनवाना, कि प्रे, व 'भूनना' के प्रे रूप ।
 = व 'भुनाना' के प्रे रूप ।
 भुनाई, म स्त्री (हि भूनना) भर्जन,
 भूति भाषि (दोनों स्त्री) ।
 भुनाई, स स्त्री (हि भुनाना) नाणकवि
 निमन्भाषि भूति (दोनों स्त्री) ।
 भुनाना, कि प्रे व 'भूनना' के प्रे रूप ।
 भुनाना, कि म (सं भजन) अल्लनाप
 केभ्य बृहज्जापकानि प्रतिदा (लु उ अ)
 नाणानि*भन*भु (प्रे) नाणानि विनि
 मे (म्वा आ अ) ।
 भुरदम्, स पु (अनु भुर) *चूर्ण, श्लेद ।
 —निकाहना, मु, निर्दय तड् (नु) = नश
 चम (प्रे) ।
 भुरता, म पु (अनु भुर) दे 'भरता'
 = चूर्णन निहत, पदार्थ ।
 —भरना, मु, आपटा चूर्ण (नु) निम्
 (र प अ) ।
 भुरभुरा, वि (अनु) भिदुर, मयुर, सुमग
 = वल्लिकानिभ ।

भुलबड, वि (हि भूल्ना) विस्मरणशील,
 मद्रज्य, स्तुति = प्रमादिन, प्रमत्त ।
 भुलाना, वि प्र व 'भूल्ना' के प्रे रूप ।
 भुलाना, म पु (हि भुलाना) प्र, वचना,
 प्रतराग, लन् ।
 —देना, कि स, प्रगृ (प्रे), वच (नु) ।
 भुन, अन्व (म) आनाश, अरिश्च
 लो दिव्यलो = द्वितीयमहाव्या
 हनि (स्व) ।
 भुवन, स पु (म न) वगन् (न), वगी,
 सृष्टि (स्त्री), समार = जल इ जन,
 लो ४ चतुदश-भुवनानि (न बहु)
 लोका ।
 वि—, म पु (स न) विलोरी, लोकरयम् ।
 भुशुडि, स पु (म) वाकमुशुडि । (म
 स्त्री) भुशुडी, अल्लभेद ।
 भुम, म पु, दे 'भूता' ।
 भुमी, म स्त्री, दे 'भूमी' ।
 भूकना, कि अ (अनु) दे 'भूकना' (१२) ।
 भूचाल, (स भूचाल) मही, भूकप प्रकप
 चालन, धमायितम् ।
 भूजनना, कि स, दे 'भूनना' (१२) ।
 भूडोल, स पु दे 'भूचाल' ।
 भू, म स्त्री (स) धरणी, धरा, दे 'पृथिवी'
 = म्थन, स्थलम् ।
 —कप, स पु (म) दे 'भूचाल' ।
 —चाल, } दे 'भूचाल' ।
 —डोल, }
 —तल, स पु (म न) धरतल
 = पृथिवी ।
 भूख, स स्त्री (म भुशुहा) क्षुधा, क्षुध (स्त्री),
 विपत्ता, अदनाया, अदनारित = आवश्यक
 कता इ अभिलाष ।
 —का अभाव, स पु, अरवि (स्त्री),
 भक्त उपयान द्वेष ।
 —प्यास, सं स्त्री, क्षुधापिपासे, क्षुत्क्षुषे ।
 भूर्वा भरना, मु, आहारभावात् मृ (तु आ
 अ) अवमद् (म्वा प अ) नश
 (दि प वे) ।
 —लगाना, कि अ, क्षुप् (दि प अ,
 चतुर्थी के साथ), मुत् (सत्रन, उभुश्रुतिने)
 क्षुधया अर्-पीड (कर्म) ।

भूषा, वि (हि भूष) धुषा आविष्ट
आतुर जात अविनपीत्त, धुषित, जिपत्सु,
बुभुधु, अघाथित् अरनाथित २ इच्छुज
३ ददिद ।

—मगा, वि दीन, ददिद निधन अर्चिन ।

—प्यासा, वि धुषिपामित् धुत्तपात्त ।

भूखे प्यासे, सु अनिरत्रदान अन्नपान
विना ।

भूगर्भ, स पु (म) धरा अतर अभ्यतर-गम ।

—गृह, म पु (म न) भू-नेह गृहन् ।

—शास्त्र, स पु (म न) भूतत्त्व शास्त्र विद्या
विज्ञानम् ।

—शास्त्रवेत्ता, स पु (स न्) भू-चञ्च,
भूगर्भशास्त्रज्ञ ।

भूगोल, म प (स) भूमण्डल भुवनकोष
२ भूगोल, विद्या शास्त्र, भूगुणविद्या ।

—वेत्ता, स पु (स न्) भूगोलशास्त्रज्ञ ।

भूचक्र, म पु (म न) पृथ्वीपरिधि
२ विषुवरेख ३ अयनवृत्त ४ त्रानिवृत्तम् ।

भूचर, स पु (म) स्थलचर २ शिव ।

भूत, स पु (स न) पृथ्व्यप्तेजोवाय्वाकाणा
पचक २ जटचेतनपदाथ, चराचरवस्तु (न)
३ प्राणित्, तीव ४ भूत-अतीत, काल ५
शिव ६ त्रियारूपभेद (स्था) ७ द्रवतु
चरा पिशाचा ८ मृतस्य आत्मन् (पु)
९ पिशाच, प्रेत रक्षम् (न) राक्षस ।
वि (म) गत, वि, अतीत २ युक्त ३ मृदा
४ परिणत (मव प्राण्य समागत मे) ।

—उत्तरना क्रि म, भूतान् निष्कम (प्रे)
अपनुद् (तु प अ)-अपम् (प्रे) ।

—काल, म पु (स) पूर्वभूत अतीत काल
ममय ।

—नाथ, } मं पु (म) शिव ।
—आयन, }

—पूर्व, वि (मं) प्राक्तन पूर्वान, पीचर ।

—रुचार्, म पु (म) भूतवेश ।

—चन्दना या मन्सार ह्रीना, सु, अग्निर्ब्रह्म
अवस्था (स्था अ म) २ अ-यर्थे दुर्
(दि प मे) ।

भूतपरविद्या, म स्त्री (म) दे 'भूगभावपा' ।

भूतान्ना, म पु (मं-रमद्) जीवात्मन्,

देहिन् २ शरीर ३ परमेश्वर ४ त्रिभु
५ शिव ।

भूतानुरूपा, म स्त्री (म) जीवभूतप्रणि,
दया दृषा अनुनम्पा ।

भूताविष्ट, वि (स) पिशाचभूत, ज्ञत्
पीत्ति-आक्रान्त ।

भूतावेश, स पु (म) भूत-मचार जाति
(स्त्री), पिशाचावेश ।

भूनि(त)नी, स स्त्री (दि भूत) शक्तिनी,
टाकिनी, राक्षसी, पिशाची चिक्का ।

भूदेव, म पु (स) ब्राह्मण भूधर ।

भूधर, स पु (म) गिरि, पर्वत ।

भूतना, क्रि स (स भर्त्तन >) भून् (स्था
आ मे), अस्त (तु उ अ), ईपत्तान
प्लव (स्था प से) शुप (प्रे) ।

भूप, म पु (म) भूपति, भूपाल, नृप,
राजन् (पु) ।

भूपति, } स पु (स) नृप, दे 'राजा' ।
भूपाल, }

भूमल, स स्त्री (स भू + हि बन्ता)
उष्ण, अनित भस्मन् (न)-बाहुत ।

भूमण्डल, स पु (स न) पृथिवी, धरा,
परिणी ।

भूमिका, सं स्त्री (म) प्रस्तावना उपोद्घात,
अवनरगिका, आमुख, सुरावध २ वेशांतर
परिमह ।

भूमि, म स्त्री (स) धरा, परिधी, दे-
'पृथिवी' ।

—त, वि (म) भूमिनात ।

—ता, म स्त्री (मं) चान्नी, मीना ।

—पुत्र, मं पु (म) मगलमह, भूमन् ।

—सुता, सं स्त्री (मं) मीता वेष्टी ।

भूय, अव्य (मं भूयम्) पुन, पुनरभि ।

भूय, वि (म वध) भूत्ति मृद, वारग
२ वपित् श, विग, विग- । मं प २-०
बलविगल-वर्ग-रग ३ शरत, मित् ।

भूरि, वि (म) अभि, बहु प्रचुर २ मन्द्,
जुम् ।

भूल, मं स्त्री (हि भूत्ता) सिम्भर्ण सिम्भुति
(स्त्री) २ दाव अपराध ३ अणुदि
(स्त्री), म्बलित् दान्त्नं ० मोह, अम ।

—चूक, स स्त्री, प्रनाद, अनराध, दुष्टि (स्त्री), स्वल्पिनम् ।
 —भुल्यो, स स्त्री, सुगहनस्थान, भ्रान्तिचक्र २ सहाय-भेद, आस्यदम् ।
 भूलना, क्रि स (प्रा मुद्ध) विस्तृ (भ्वा प अ) २ स्पर्ल् (भ्वा प से), प्रमद् (दि प से) ३ त्यन् (भ्वा प अ), हा (जु प अ) । क्रि अ, विस्तृ (कर्म) २ भ्रश-नद् (दि प से), च्यु (भ्वा आ अ) ३ गर्विन् अवलित (वि) भू ४ क्त् (भ्वा आ ने), तिनद् (दि प से, सप्तमी के साथ) । स पुं, विचारण, विस्तृति (स्त्री) २ प्रनाद, स्वल्पित ३ भ्रश, नाश ।
 भूलने योग्य, वि, विस्मर्त्तव्य, विस्मरणीय ।
 भूलनेवाला, स पु, दे 'भुलकड' ।
 भूला भटका, वि, पथ-भाग, भ्रष्ट ।
 भूला हुआ, वि, विस्तृत्, स्मृतिपथ'व अपेन ।
 भूलोक, स पु (स) मर्त्यलोक, भूमि (स्त्री) ।
 भूशापी, वि (स-यिन्) धराशापिन्, मृत, २ भूमिदायन ३ भूमौ पतिन ।
 भूपण, स पु (स न.) आमरण, अलकार, अ-वि, भूषण, दे 'गहना' ।
 भूपणीय, वि (म) भूष्य, अलकार्य, मडनीय ।
 भूपा, स स्त्री (स) अक्रिया, परिष्कार क्रिया, प्रमाणन, नेपथ्यम् ।
 भूपित, वि (म) अलहन, परिष्कृत, प्रमा पित, मण्डित ।
 भूसा, स पु (म हुम >) पाल २, यवन, धान्यतृण, पत् ।
 भूमी, स स्त्री (दि भूमा) दे 'भूना' ० बुध, बुध, तुष-म, क्त्, धन्दत्वच (स्त्री) ।
 भूसुर, स पु (स) विप्र, ब्रह्मा ।
 भूग, स पु (स) भन्तर, पत्पद २ वीभेद ।
 —राज, स पुं (स) पक्षिभेद २ केशर जन, केश्य, हुम्बद्धन, हुम्भेद ।
 भूकुटी, स स्त्री (म) दे 'भा' ।
 भूत, स पु (म) मुनिविशेष ० पत्पुत्रन ।
 —नाथ, स पु (स) परशुराम भूतुराम ।
 भूत, वि (स) पूरित, पूं, निविड २ पतिन, पोषित ।

भूनक, स पु (स) वैतनिक, धर्मकर ।
 भूतकाध्यापक, स पु (म) सवेनन शिक्षक ।
 भूति, स स्त्री (स) वेनन, भूत्या २ कर्म'या, तुडिका, भरण, भर्त्तया ३ भूत्य ४ पूरण, भरण ५ पालन ६ वैतनिकता ।
 भूत्य, स पु (स) सेवक, दे 'नौकर' ।
 भूत्या, स स्त्री (स) सेविका, दानी २ दे 'भूति' ।
 भूया, क्रि वि (म मृच) अत्यत, अत्यधिकम् ।
 भेंगा, वि (देश) केकर, केदर, दे, गार, बन्दि ।
 —पत्, स पु, निर्यग्मृष्टि (स्त्री), देरता २ ।
 भेंड, स स्त्री (स भिद् >) स(सना)गम, समिलन, साश्लकार २ उपहार, उपायन, प्राभूत-नक, प्रदेशनम् ।
 —करना, क्रि स, समिल् (तु प से), अभि-स-मुद्योभू, सद् (अ प अ) २ उत्त्व (तु प अ), उग्रह (भ्वा प अ), उग्रहो (प्रे), ऋ (प्रे अर्पयति) ।
 भेक, स पु (स) दे 'भेंडक' ।
 भेख, स पु दे 'वेप' ।
 भेजना, क्रि स (ग ब्रजन >) स, प्रेष (प्रे), प्रहि (स्वा प अ), प्रस्था (प्रे), विस्तृ (तु प अ), स, प्रे (प्रे) । स पु, स-प्रेण प्रेषण, विमर्जन, प्रस्थापन, प्रहिनि (स्त्री) ।
 भेजने योग्य, वि, प्रेषयितव्य, प्रस्थाप्य, प्रह यणीय ।
 भेजनेवाला, स पु, प्रेषक, प्रहेतु ।
 भेजा हुआ, वि, प्रेषित, विस्तृ, प्रहित ।
 भे(भि)गवाना, क्रि प्रे, व 'भेजना' क प्रे रूप ।
 भेजा, स पु (देश) दे 'ना' ।
 भेड, स स्त्री (स भेड >) भेपी, पत्ना, अविना, उरणी, उरा, कुररी जालिनी, अवि (स्त्री), रजा (पु, दे 'भे') २ सू, मूडपी, ऋजु ।
 भेडना, क्रि स, दे 'द करना' ।
 भेडा, स पु (म भेड) अवि, उरा, उरप्र, कांठु, पटक, मू, हु, रो(लो)मठ, भेड, भेडक ।
 भेडिया, स पु (दि भेड) वृक्ष, बोक, दहागुण ।
 —घमान, स पु, अध, अनुकरा-अनुमर-अनुवर्तनम् ।

भेदी, म स्त्री, दे 'भेद' ।
 भेद, म पु (म) द्वेद दे 'भेदन' = शत्रु
 बशीकरणोपायभेद, उपवास ३ रहस्य,
 गुणधाय ४ अन्तर, विशेष = प्रकार, गति
 (स्त्री) ।
 —खोलनर, क्रि स, रहस्य विवृ (स्वा उ मे) ।
 —पाना, क्रि स, गुण्युध (भ्वा प से) ।
 —बुद्धि, म स्त्री (स) विरलेष, विच्छेद,
 धन्याभाव ।
 —भाव, स पु (स) अन्तर, विशेष ।
 —लेना, क्रि स, गोप्यं चा (मन्त्रत जिज्ञासते) ।
 भेदक, वि (म) भेत्तुं छेत्तुं २ रेचन ।
 भेदन, स पु (स न) विदारण, द्वेदन,
 वेधन व्यध धन, त्रोटनम् । वि, भेदक
 = रेचक ।
 भेदिया, { स पु (सं भेद >) दे 'जासस'
 भेदी, ' } २ रहस्यविद (पु) ।
 भेदी^२, वि (स भेदिन्) द्वेदक, विदारक ।
 भेद्य, वि (म) छेद्य, विदारणीय ।
 —रोग, स पु (स) शल्यचिकित्स्वो रोग ।
 भेरी, म स्त्री (स) भेरि (स्त्री), दुदुभि,
 रिडिम, पन्ह, टका ।
 भेली, सं स्त्री (देवा) गुदपिष्ट-शम् ।
 भेष, म पु, दे 'वेष' ।
 भेषन, स पु (स न) औषधं, अगद,
 भेषज्यम् ।
 भेष्य, स पु, दे 'वेष' ।
 भेष्य, म स्त्री (स महिषी) मद्यगमना, महा
 क्षीरा पयस्विनी वलुषा ।
 भैसा, म पु (स महिष) अश्वारि वलुषा,
 वामर कृष्णशय, गद्गदस्वर, तर र) १,
 यमरथ तुलाप (न), वीरस्वध, सैरिम,
 हेरव ।
 भैया, स पु, दे 'भाद' ।
 भैरव, म पु (म) शकर, शिव २ शिवगण
 न्द ३ रागभेद । वि, भीम, भीषण,
 भयङ्कर ।
 भैरवी, स स्त्री (स) चातुटा, देवीविशेष
 २ रागिणीभेद ।
 भैरो, म पु, दे 'भैरव' ।
 भौकना, क्रि स (अनु भङ्) सहसा शत्रु
 क्रि निद्रिण (प्रे), व्यध (दि प अ)
 २ अकस्मात् आहन् (अ प अ) ।

भौंडा, वि, दे 'भद्रा' ।
 भौदू, वि दे, बुद्धू ।
 भोपा, म पु (अनु भौ) दे 'भोपू' =
 मूत्र, अण ।
 भोपू, म पु (अनु भौ) कइल-कला, मुक्त-
 वाचभेद ।
 भो, अ० (स) हे, अरे, अवि ।
 भोक्तव्य, वि (स) दे० 'भोग्य' ।
 भोक्ता, वि (स भोक्तृ) खादक, भक्षण
 २ विलासिन, विपयिन् ३ प्र-उप-योक्तृ ।
 स पु, पति ।
 भोग, स पु (स) सुपुत्र सादानामनुभव
 २ सुख ३ दुःख ४ रति (स्त्री), सभोग
 ५ सपत्न्य गणा ६ सप ७ धन ८ गृह
 ९ भक्षण १० शरीर ११ परिमाण १२
 विपाक, कर्मफल १३ भुक्ति (स्त्री) (कर्मण)
 १४ नैवेद्य १५ भादक कर्म ।
 —लगाना, क्रि स, देवाय नैवेद्यं च (प्रे
 अर्पयति) २ भक्ष (जु) ।
 —बिलास, स पु (स) आनन्दप्रमोदा (पु
 बहु), सुप हर्ष ।
 भोगना, क्रि मं (स भोग >) दे 'भुगता'
 (१२) ।
 भोगी, वि (संगिन्) भोग-विषय, आमक-
 लपट, विन्यामिन् २ भक्षक ।
 भोग्य, वि (स) उपयोक्तव्य, उपयोगिन्
 २ भोगाह, उपभोक्तव्य ३ मद्य । सं पु
 (स न) धन २ धान्यम् ।
 भोज^१, स पु (स) धारानगरस्थ नृपविशेष ।
 भोज^२, म पु (स भोजन) भक्ष्य, आहार
 २ सह म, भोजनं सग्धि (स्त्री) ।
 भोजन, स पु (स न) भक्षण, स्वादन,
 अदान, आम्वातर्न २ गार्ध, भोज्यं, भक्ष्यम् ।
 —करना, क्रि म, पुत्र (र आ अ),
 भय (जु) ।
 —भट्ट, सं पु (स भोजनभट्ट) अत्याहारिन्,
 अक्षर, धन्य ।
 —शाला, म स्त्री (सं) भोजन आलय
 आगार (र) २ पाकशाला महानम-नम् ।
 भोजनाच्छादन, स पु (स न) अन्नवस्त्र,
 अदानवसनम् ।
 भोजपत्र, सं पु (सं) भूयंभृष्ट, बहुलवल्गल,
 छत्रपत्र, मृद, वट्ट, त्वच् (पुं) ।

भोज्य, वि (म) भक्ष्य, खाद्य, अभ्यवहार्य ।
 म पु, भक्ष्यपदार्थ ।
 भोर, स पु (स विगावरी >) उपा, उपम
 (स्त्री) विप्र, भान, विहान-नम् ।
 मोला, वि (हि भूलना) सरल, ऋजु, निष्क
 प, निरदृष्ट २ मूर्ख, जड ।
 —नाथ, स पु (दि + स) शिव ।
 —पन, स पु आनव, सरलता, निर्व्याजता
 २ मीक्य, अज्ञता ।
 —भाला, वि, निष्कपट, सरल, ऋजु ।
 भौं, स स्त्री, दे 'भौह' ।
 भौकना, क्रि अ (अनु भौं भौं) बुक्क
 (म्वा प से, बु), मप् (म्वा प से)
 २ प्र, बल् (म्वा प से) । स पु, बुक्कन,
 भरण २ नल्प पनम् ।
 भौतुवा, (हि भौना=भूना) तैलिक-लैलकार,
 वृष वृषम । २ कीटभेद ३ हृन्तरीगभेद ।
 भौरि, स पु (स भ्रमर) दे 'भ्रमर' २ नला
 वर्य, भ्रमि (स्त्री) ।
 भौरा, स पु (स भ्रमर) दे 'भ्रमर'
 २ भ्रमरक-क, कीटनकभेद ३ भू, नोह
 गृहम् ।
 भौरि, म स्त्री (म भ्रमरी) वृषपदी, मधुकरि
 २ घोटगदिशरीरस्थ रोम, चक्र-मडल-बतुल
 ३ वैवाहिक-परिक्रम प्रदक्षिणा ४ आवर्त,
 नलगुल्म ।
 भौह, स स्त्री [स न्न (स्त्री)] विविका,
 झूलना, नयनोद्वर्धवति रोमरागी ।
 —चङ्गाना या तानना, सु, कुप (दि प से),
 कुष (दि प अ) २ मू (झू) कुटी वध्
 (क प अ)-रच् (चु) ।
 भौमोलिक, वि (सं) भूगोल, विषयक सम्ब
 न्धम् ।
 भौचक्र, भौचङ्गा, वि (म मवचरित >)
 विस्मयापन्न, विस्मित, मन्माध्यम, भवाभिभूत,
 कम्भित ।
 भौराई, भौजी, स स्त्री (म भ्रातृपया)
 दे 'भानी (२) ।
 भौत, वि (सं) भौतिक, भूतानिगत २ पैशा
 चिन् ३ भूतविष्ट । (स पु) भूतहूल
 २ भूतवध ।
 भौतिक, वि (म) भूतात्मक, भूतमय, आपि

पाच, भौतिक २ पार्थिव ३ शारीरिक, दैहिक,
 दैव्य ।
 भौम, वि (सं) पार्थिव, भौमिक २ भूमिन ।
 स पु, मंगलग्रह, कुज ।
 —वार, स पु (म) मंगलवासर ।
 भौमिक, वि, दे 'भौम' वि । स पु, क्षेत्र,
 पनि-भ्वामिन् ।
 भौमी, म स्त्री (सं) जानरी, सीता, वेदेही ।
 भ्रश, स पु (म) अध अन्न-पतन पात
 २ विनाश = ध्वस्त ३ पलायनम् ।
 अशित, वि (सं) अव पानित २ वचित ।
 अम, स पु (सं) भ्राति (स्त्री), माता,
 मिथ्या-मति (स्त्री) शान, आभाम, अविद्या
 २ सनाय सदेह ३ मूच्छ्रभेद ४ मूर्च्छ
 ५ कुलात्मक ६ भ्रमण ७ भ्रमदवस्तु (न) ।
 अमण, स पु (सं न) पर्यटन, विचरण,
 परिभ्रमण २ गतागत ३ यात्रा ।
 —करना, क्रि अ, पयट विचर (म्वा प से),
 परिकर (म्वा दि प से) ।
 अमात्मक, वि (म) भ्रमोत्पादक २ सद्विष ।
 अमर, म पु (सं) पटपद, दिरेण, मधु,
 कर प-रिह (पु), अग्नि, अलिप्त, मूक,
 शिल्पीमुख, पुष्पधय, चचरीक २ कामुक ।
 अमरी, म स्त्री (सं) पटपदी, मधुकरि,
 शिल्पीमुखी २ जतुकाहता, पुत्रदात्री ३ पावती
 ४ सुवीरोग, भ्रामरम् ।
 अमो, वि (सं-मिन्) भ्रान्त, भ्रमविशिष्ट,
 मिथ्याज्ञानिन् २ चकित, विस्मित ३ शका
 शील, माशक ।
 अष्ट, वि (सं) अथ-अव-मनित, अव, गलित
 सस्त, अ्युन २ विकृत, दूषित, सदोष ३ दुर्वृत्त,
 दुराचारिन् ।
 —करना, क्रि स, अशु-दुष्-आधुष् (प्रे)
 अ्यु (प्रे) २ सतात्व नश (प्रे) ३ मलिनी
 कानुपीकृ ।
 —होना, क्रि अ, अशु (दि प से), अश
 (म्वा आ मे) २ दुष्य (दि प अ),
 विहार आपद (दि आ अ) ३ मलिनी
 कानुपी मू ४ क्षीणवृत्त (वि) मू ।
 अष्टा, स स्त्री (सं) कुलटा, पुष्पणी ।
 अत, वि (म) भ्राति भ्रम, विशिष्ट
 २-आहुत, विह्वल ३ उन्मत्त ४ पथभ्रष्ट
 ५ आवर्तित, चक्रवत् चालिन् ।

म

म, देवनागरीवर्णनाम पञ्चविंशो व्यञ्जनवर्ण,
मकार ।
मगता, म पु (हि माना) दे 'नितरी' ।
मगल, } म स्त्री (हि माना) वादल,
मगनी, }
विवहमनिष्ठा । २ वाष्ला, वाचनना ।
मगल, स पु (म न) बन्दा, दुःख, मद्र,
हित, धेन, भव्य, प्र, दस्त, अरिष्ट, विव, मद्र
३ कर्मणिक्ति (स्त्री) ३ महविदेव, दुःख,
मौन, अकरक, महीपुत्र, बक, लोहिना,
वाचनेप ४ मालवार । वि, (म) शुभ,
पि, मद्र, माल, विव-शुभ, कर, मालिक ।
—काम, वि (म) शुभ-हित-माल, चिन्तक-
इच्छुव-कानिद्र ।
—कामना, म स्त्री (सं) हित-चिन्तन,
शुभ, इच्छा-कामना ।
—कारक, वि (म) बल-म-कारिण
मद्र दे 'माल' वि ।
—कौम, स पु (स न) उत्तरेविक
वैदेवकन ।
—मान, म पु (म) मगल-शुभ, गीत
लक्षि (स्त्री) मानन ।
—वार, म पु (सं) माल-मौन, वसर ।
—सूत्र, म पु (न) हृदिार-विनवैव-हिक
मुन ।
मालाचारण म पु (म न) मगल-माले
कल्याण-मार्गना ।
मालाचार, म पु (स) मालिक, मन्वर
कृत २ आदी-व- ३ स्तव ।
मालामुखी, म स्त्री (स) दे 'वेश्वा' ।
माला, वि (मं माल) अना-विन, बन्दा-
वर (पञ्चि-श्रेणिव) ।
मैजवाना, वि, प्रे, व 'मौजना' के प्रे रूप ।

मगतर, वि (हि माना) वादल ।
मच, मचक, स पु (स) स-वा २ पठिका
३ उच्चानन, इन्द्रकोश-प-पव, वेदिका,
५ रग, रग, भूनि (का) पीठ ६ मच
मद्य ।
मंजव, स पु (स न) दन्धावन-दन्ध, चूर्ण
२ (देस) *दरिष्ट, दंतोदेष ।
मंजवा, वि, प्रे, व 'मौजना' के कर्न के रूप ।
मंजवाना, वि, प्रे, व 'मौजन' के प्रे रूप ।
मजरी, स स्त्री (स) मजरी-वहरी-री (सव
स्त्री), मजरी-वि (स्त्री) मजर, वज्र, बदि
(स्त्री) २ पञ्चव, विमल्य ३ लता ४ मुखा ।
मजिल, मं स्त्री (क) दे 'पञ्चव' २ कोष्ठ,
भूनि (उ दोन-पिला = द्विभूनिव टह)
३ मजव-रि-दिष्ट, स्थानम् ।
मजरी, रा, स पु (स पु न) नूपुर-र
२ सहरि-भेद ।
मजु, } वि (स) सुदर, मनोहर, मनोह,
मजुल, } मनोरम, चाह, रम्य, रचिर, रम्य,
हप ।
मजूर, वि (अ) दे 'स्वीहन' ।
मजुरी, स स्त्री (अ मजूर) स्वीहृति (स्त्री) ।
मजूपा, स स्त्री (सं) पिंक, दे 'नितरी' ।
मैसला, वि पुं, दे 'मजल' ।
मैजा, म पु 'मौज' ।
मैजल, वि, वि, दे 'मजल' ।
मद्र, मं पु (मं) दे 'मौ' ।
मडन, मं पु (म न) मजल, पञ्चकारण,
भूनां प्रमथन २ हृदी पुर्ण करण मजपन,
मजान, प्रमथन-मजपनम् ।
मडय, म पु (म पु न) विन-ज,
उहाव, चर-वद-आतर २ मजपन,

विश्रमगृह ३ (मङ्करदिभ्य) शल,
 पाञ्चदश २ देवान्प्रयोधभाग ।
 मंडराना, कि ञ, दे 'मंडलाना' ।
 मडल, म पु (म न) वृत्त, वतुल, चक्र
 वन्द्य २ गोत्र ३ परिवेश, ४ परिधि,
 उपस्यक ५ निजिब, विक्र, चक्रान्त, दि १
 ५ द्वादशराज्य ६ समाज, समुदाय
 ७ लूहभेद ८ चक्र, दे 'पहिवा' ९ ख्येद
 पचिदेद १० गोत्रविद्य ११ ग्रह, कक्षा-मा
 १२ भूपदेश ।
 मडलाकार, वि (स) गोल, वतुल, चक्राकार
 वृत्त ।
 मंडलाना, कि अ (स मडल >) चक्राकार
 उर्दी (म्वा दि भा से) अथवा खे चर
 (म्वा प से) २ परि, भ्रम, अक्रान्त (म्वा
 प न) । स पु, चक्रवद उद्द्वयन, परि,
 क्रमण भ्रमणम् ।
 मडली, स स्त्री (म) समाज, सभा, समि
 ति (स्त्री), गोष्ठी २ सभ, समुदाय ३ दुर्वा
 ४ गुडची ।
 मडली, स पु (स-लिन्) मर्ष २ सर्पभेद
 ३ मूर्ध ४ विडल ५ मडलाधिप ६ वट,
 उग्रोप ।
 मंडवा, म पु (स मडव, दे) ।
 मडा, म स्त्री (म) सुरा, मद्य २ दे 'अविल' ।
 मडित, वि (न) भूविन, अलकृत, परिकृत ।
 मडी, म स्त्री (स मडप >) मचाइष्ट,
 पण्यार, वृहद् आपा-विषयी ।
 मडूक, स पु (स) दे 'मिडक' ।
 मडूर, म पु (स पु न) लौहजल,
 शिष्या, निदानम् ।
 मतव्य, म पु (स) विचर, मतम् । वि,
 स्वीकार्य, विधमनीय, अभ्युपगतव्य २ मन
 नन, मध्य ।
 मत्र, स पु (स) वेदबन्ध २ वेदाना
 सहिताम् ३ मत्राणा, परामर्श, विचार
 ४ गोत्र, रहस्य, गुण ५ अभिवादनव-नत्र) ।
 यत्र—, मं पु, दे 'जादू योन' ।
 —कार, म पु (स) मत्र, रचयितृ-कर्तृ-द्रष्ट ।
 —गृह, स पु (स न) मत्राभवनम् ।
 —विद्या, स स्त्री, तत्र, तत्रविद्या ।
 मत्रणा, मं स्त्री (स) परामर्श, विचरणा,
 मननि (स्त्री) २ उपदेश, अनुशासनम् ।

मन्त्रित्व, म पु (स न) सावित्र्य, मन्त्रिणा,
 अमन्त्रित्व, मन्त्रिभक्ति, कार्य-परम् ।
 मन्त्री, स पु (म मन्त्रिन्) अनात्य, मन्त्रि,
 धी मन्त्रि-मण, सान्वयिक, राज,
 अनात्य-मन्त्रि ।
 प्रधान—, म पु (स त्रिन्) मुख्य-महा,
 मन्त्रिन्, प्रधान-मन्त्र्य, महामात्र ।
 मथन, स पु (स न) मथन, विलोडन,
 २ अनुमथान, अवाहन, निरुपान
 ३ दे 'मथनी' ।
 मथर, वि (स) मद्य, अल्प २ जड, मद्यमि
 ३ स्थूल, भरवत् ४ अधम । स पु (स)
 दे 'मथनी' २ ज्वरभेद ।
 मद्य, वि (म) अल्प, तद्राज, कार्यविमुख,
 उपोशून्य २ मथर ३ शिथिल ४ मूर्ख
 ५ दुष्ट ।
 —बुद्धि, मति, वि (न) मूढ, मूर्ख, जड
 बन्दि ।
 —भाग्य, वि (स) ह्यभाय, दुर्दैव । स पु
 (स न) दुर्दैव-भाग्यम् ।
 —मद्य, कि वि (मं-द) शनै-शनकै (अव्य)
 मद्य-त्या, शीघ्रतया, गाम्भीर्येण ।
 मद्यता, स स्त्री (म) अल्प २ मथरता
 ३ शीघ्रता ।
 मद्यर, स पु (म) मद्यरौल, पर्वतविशेष
 २ स्वर्ग ३ सुकुर । वि, मद्य, मथर ।
 मँदरा, वि, दे 'वीना' ।
 मडा, वि (न मद्य) मथर, बहल २ शिथिल
 ३ अप, अर्ध-मूल्य, सुल्भ ४ निहृष्ट, हीन
 ५ विहा, भ्रष्ट ।
 मदाकिनी, स स्त्री (स) स्वर्ग-विपद्, गगा,
 स्वारी, सुरराधिका ।
 मदाक्रान्ता, म स्त्री (म) वार्धवृत्तभेद ।
 मदाग्नि, म स्त्री (स पु) अजीर्ण, अपचन
 अपक, अग्निमाद्यम् ।
 मदार, म पु (म) स्वाहृष्टविशेष २ अर्क-
 वृक्ष ३ मरुत्पत्र ४ त्र ५ स्वर्ग ६ दे
 'धत्तरा' ।
 मदिर्, म पु (म न), देवायनन, देव-गृह
 भवन-निवेदन-अल्प २ गृह, गेह, सप्त
 वेदनम् (स) ३ आनि, वन, वसत्यानम् ।
 मदी, म स्त्री (म मर >) मरुत्पत्र, पयस
 रचना, मूल्य-पकर्ष ।

मद्र, म पु (स) गभीरध्वनि (पु) (सगत)
२ मृदगर । वि, मनोहर २ प्रसन्न ३ गभीर
४ मद्र गभीर (शब्दादि) ।

मसा, म स्त्री (अ) दे मसा ।

मसव, स पु (अ) पद, पदवी, स्थान
२ वर्तव्य ३ अधिहार ।

मसा, स स्त्री (अ मसा) इच्छा, कामना
२ मक्त्व ३ आशय ।

मसूत्र, वि (अ) विद्युत्, अपसृष्ट, निरस्त,
निवर्तित, गन्त ।

मसूत्री, स स्त्री (अ मसूत्र) विलोप,
निराम निवर्तन, खंडनम् ।

मसूया, स पु (फा) सन्ध्य, विचार
२ युक्ति (स्त्री), उपाय ।

—बाँधना, मु, निर्ध (स्वा उ अ),
सबलप (त्रे) २ उपाय चिद (चु) ।

मट्ट, स स्त्री (अ मे) आलवपस्य पचमो
मास, वैशाखज्येष्ठम् ।

मकट्ट, म स्त्री (म मकाय) कटिन ।

मकडा, स पु (स मकक >) वृहस्पतिना ।

मकडी, स स्त्री (हि मकडा) लता, ततु,
वाप नाम, उषनाथ, मकट्ट र, जालिन
कोषकार अष्टापद ।

—का जाला, म पु, मकट्टनालम् ।

मकतव, स पु (अ) पाठगाला ।

मकतवा, म पु (अ) पुस्तकालय २
ग्रथविपणि (स्त्री) ।

मकट्टूर, म पु (ज) सामर्थ्य, शक्ति
(स्त्री) ।

मकट्टानीय, स पु (अ) दे चुक्क ।

मकट्टारा, म पु (अ) समाधि (पु),
*मृत्तमदिरम् ।

मकट्टुजा, वि (अ) अधिकृत, हस्तगत ।

मकट्टूल, वि (अ) स्वीकृत मन २ प्रप ।

मकट्ट, स पु (म) मरत् मरत्त, पुत्र,
रम मार स्वैद नियाम निदामर, मपु (अ),
पुत्र २ हिन् विन्क ३ कुदछुप ।

मकर, म पु (म) नक्र श्राह, कुभीर
कवहार जलकुवर २ दशमराणि अमा
र ३ मासमा ४ व्यूहभद ५ दे
'मकली' ।

—ध्वज, म पु (म) मकर, जगु रजद,
वामरव ।

मकर^२, स पु (फा) कपट, छलम् ।

मकरुज, वि (अ) दे 'कृणी' ।

मकरुह, वि (फा) कतुष, मलीमस २ धृणी
त्पादक ।

मकमद, स पु (अ) मन कामना २
अभिप्राय ।

मकान, स पु (फा) अ(आ)गार २, भवन-
वैद्यमन्-मद्यन् (न), सदन, दे 'वर' ।

—क्रियाये पर देना या लेना, क्रि स,
मदन माटकेन दा अथवा आना (जु आ अ) ।

मन्त्रि—, स पु, गृ, सदन-स्वामिन् पति ।

मकोडा, म पु (हि कोडा का अनु०)
भुद्रुटि ।

मकोय, स स्त्री (स काकमादा म विप०)
काकमात्री चिना, कुष्ठस्त्री, वायमी, रसावली,
वट्टुविला, काका, काशिनी २ काकमाची-
पल ३ दे 'रसमरी' ।

मका, स पु, दे मरद ।

मकार, वि (अ) कपटिन्, छलित् ।

मकारा, स स्त्री (अ) कपट, छलम् ।

मकरान, स पु (स म्रक्षा >) नवनीत-
मन्थन, नवीकृत तक तन्सार, दधि, अन्वैह,
पीथ द्वैवर्गीनम् ।

मकरा, स स्त्री (म मनीका) मक्षिका,
माधिरा, मधलीतुषा, भम, पतथिका,
वमनीया, पलकपा, नीला, ववगा २ मधु
मत्रिका ३ *म्रग्न्यममत्रिका ।

—चूम, म पु (न कृपण, भिदपच, कदर्य)
जीवी मक्ली निगलना मु, जानअधि
पापक ।

नाम पर मक्ली न बैठने देना, मु, उपकार
न सह (स्वा आ से) ।

मक्की छोटना और हाथी निगलना, मु, पाप
कानि परित्याज्य मदापपु प्रवृत् (स्वा
आ से) ।

मक्की पर मक्की मारना, मु मक्षिका स्थान
मक्षिका, निवेवेकप्रतिनिधि (स्त्री) ।

मक्की मारना या उलाना, मु, उपागदीन
(वि) रथा (स्वा प अ) ।

मक्षिका, म स्त्री (म), दे 'मक्की' ।

—मल, म पु, दे 'मोय' ।

मरद, स पु (स) यम, जगु ।

मज्जमूल, स पु (स महापमूल >) कृष्ण, कौशेय-कीटसूत्रम् ।

मज्जमल, स स्त्री (अ) *मसमल, इलक्षण वस्त्रभेद ।

मज्जमलो, वि (अ मज्जमल) मसमल, मय निमित्त २ इलक्षण, स्निग्ध ।

मज्जौल, स पु, (दे 'ठटठा') ।

मग, रु पु, दे 'मार्ग' ।

मगज्ज, स पु (अ मग) मस्तिष्क मस्तुलुगव २ बुद्धि-मति (स्त्री) ३ दे 'गिरी' ।

—चट, स पु (अ + हि) वाचाल, वाचाट ।

—चट्टी, स स्त्री, वाचालता, प्रज्वल ।

—पच्छी, स स्त्री (अ + हि) बौद्धिकश्रम ।

—खाना या चाटना, सु वावदन्तया खद (प्रे) ।

—खाली करना या पचाना, सु, प्र, लप (भ्वा प से) २ मस्तिष्क खिद आयस् (प्रे) ।

मगज्जी, स स्त्री, (अ मग) चीरीति (स्त्री), दशा ।

मगध, स पु (स) कीमटदेश, विहार प्रान्तस्य दक्षिणभाग २ चारण, वदिन् ।

मगन, वि, दे 'मग्न' ।

मगर, अव्य (क्रा) कित्तु, पर, परतु ।

मगर, } स पु (स मकर)

मगरमच्छ, } दे 'मकर' (१) २ महा, मत्स्य-मीन ।

मगरिव, स पु (अ) दे 'पश्चिम' ।

—जदा, वि, पाश्चात्यमभ्यतया प्रमाविन, पश्चिम, आकृष्ट प्रेरित प्रवृत्त ।

मगरिवी, वि (अ) दे 'पश्चिमी' ।

—तहज्जीब, स्त्री, पाश्चात्यमभ्यतया ।

मगरूर, वि (अ) दे 'अभिमानि' ।

मगरूरी, स स्त्री (अ मगरूर) दे 'अभिमान' ।

मग्न, वि (स) जलात् प्रविष्ट, निमज्जनेन, मृत-नष्ट २ लीन, निरत, आसक्त, पर, परावण ४ मत्त, क्षीब, मदोदध ४ प्रसन्न, प्रष्ट ।

—होना, क्रि अ, प्र, हृष् (दि प से) २ निरत-लीन-आसक्त (वि) भू ।

मघरा, स पु (स-वन्) *त्र, अलङ्कृत ।

मघा, स स्त्री (सं) नक्षत्रविशेष, मघा (स्त्री बहु भी) २ औषधभेद दे 'विष्पली' ।

मचक, स स्त्री (हि मचकना) भार, पीन २ अस्थिसंधिपीडा ३ कपनम् ।

मचकना, क्रि अ (अनु मच मच >) अस्थिसंधि व्यध (भ्वा आ से) पीड (कर्म) २ भारेण समचमचध्वनि कप् (भ्वा आ से), निमिष (तु प से), निर्मोल् (भ्वा प से) ।

मचकाना, क्रि स (हि मचकना) व मचकना' के प्रे रूप ।

मचकोष्ठ, स स्त्री (हि मचकना) सन्धि, व्यावतन व्याधेप ।

मचना, क्रि अ (अनु मच) कृ-आरम् (कर्म), प्रवृत् (भ्वा आ से) ।

मचलना, क्रि अ (अनु) निर्वधेन व् (भ्वा प से), साग्रह (वि) अवस्था (भ्वा आ अ) ।

मचला, वि (हि मचलना) कपटमूढ, अगलक्षण, भ्यागबड ।

मचलाना, क्रि अ (अनु) वम् (सञ्जत, विविमर्षित), वमनेच्छया पीड (कर्म) ३ दे 'मचलना' ।

मचलापन, स पु (हि मचलना) कपट मूढता, व्याजजलनम् ।

मचलाहट, स स्त्री (हि मचलना) निर्वध, आमह २ विविमर्षा, वमनपाटा ।

मचान, स पु (स मच) मचक उच्चारण, वेदिका, इद्रकोष ।

मचाना, क्रि स (हि मचना) व 'मचना' के प्रे रूप ।

मचिया, स स्त्री (स मच >) मचिया, पीठी, पीठक, छुद्रासनम् ।

मच्छच्छ, सं पु (स मत्स्य >) महा-वृहस्प, मीन-मत्स्य अण् ।

—अवतार, म पु, दे 'मत्स्यावतार' ।

मच्छदर, स पु (सं मग्न) वृजतुष्ट, मश, सूक्ष्मास्य, सूक्ष्ममक्षि, रात्रिनागरदः ।

—दानी, सं स्त्री, मच(चक्र)हरी, चतुष्की, मखरिका, नीशार ।

मच्छर पर तोप लगाना, मु, तुच्छशरी
वृक्षाना ।

मच्छो, म स्त्री (हि मच्छ) दे 'मच्छी' ।

मच्छर, म पु (अ मत्स्ये ड या वदर मे अनु)
कपि बानर २ आलु मूषिक ३ जल,
मूढ ४ मिथ्यावेद्य ५ विदूषक, वैद्यामिक
६ भिक्षुर ।

मच्छरार्थे, स स्त्री (हि मच्छरी + स गण)
मत्स्याध मीनपूनि (स्त्री) ।

मच्छरा, म स्त्री (स मत्स्य) मीन, ज्ञप,
अन्त विमार पृथुरोमन् (पु), शत्रुलिन,
बेमारीण आत्माशिन, निमि, जलपिपक ।
हि शवर मन्वारीन् शिवाजिह, जलुक्षय
२ मत्स्याकारो भूषणभेद ।

—बाला, मं पु, दे मद्युगा' ।

—की तरह लडपना, मु, जलहीनमीनवद
व्याकुलम् ।

मच्छवा, म पु (हि मच्छो) मत्स्यभारिनीका
२ द मद्युगा' ।

मद्युगा वा, म पु (हि मच्छो) मत्स्य,
आनीर यनीदिन्, माल्यक, शीवर, वेवः ।

मज्जदूर, म पुं (फा) भार हर हार वाहन
वाह, भारि, बोह, वाह, वाहक २ काम,
कमिन्, अमजीविन्, कर्म, कर कार ।

मज्जदूरी, म स्त्री (फा) भारवहन, अम,
ज्ञान २ कर्मण्या, मति (स्त्री), भृत्या,
भर्तृगता, भर्तृ, पारिश्रमिकम् ।

मज्जनै, म पु (अ) उन्मत्त, उन्मादिन्,
वापुन् २ लवला-वृक्षम, कैम ३ प्रणयिन्,
प्रेमिन्, वामुन्, वामिन् ४ कृशाग, शुण्णदेह ।

मज्जवृत्त, वि (अ) दृढ, २ स्थिर ३ बन्धव ।

मज्जवृत्ती, म स्त्री (अ मज्जवृत्त) दृढता
२ स्थिरता ३ बन्धवता ४ माहमम् ।

मज्जवृत्त, वि (अ) दे विरह' ।

मज्जवृत्त, वि हि (अ) जन्, बन्धु,
हृष्टार प्रमथा प्रमथम् ।

मज्जवृत्ती, मं स्त्री (अ मज्जवृत्त) विवशता,
अगमिन्ता, अगिहायता ।

मज्जमा, म पु (अ) जन, समर्द्धे मनुदाय ।

मज्जमूआ, मं पुं (अ) मनुदाय, मंगर,
मद्यु ।

मज्जमून्, म पु (अ) प्रमन्व, निबध, लल
२ व्याख्यानस्य विषय ।

—नवास, सं पुं, निवन्ध, कार-लखक ।

मज्जमूम, वि (अ) निन्दित, दुष्ट २ हीन,
वर्णकुल ।

मज्जम्भत, स स्त्री (अ) निन्दा, कुत्सा
२ भलना ।

मज्जरूह, वि (अ) आहत, दे 'घायल' ।

मज्जलिम्, म स्त्री (अ) समा, समाज, गोष्ठी ।
मीर—म पु (फा + अ) समा, यति
अध्यक्ष, प्रधान ।

मज्जलिमी, वि (अ) सामाजिक ।

मज्जहृव, स पु (अ) धर्म, सप्रदाय, मन्म ।

मज्जहवी, वि (अ) धार्मिक, साप्रदायिक ।

मं पु, खन्पू, शिष्य, शिष्य(निष्ठा),
जाति-विशेष ।

मज्ज, म पु (फा) आ, स्वाद, रम २
आनन्द, सुख ३ विनोद, हास्यम् ।

—उड़ाना या लूटना, मु, मुद् (भ्वा आ
मे), र्म (भ्वा आ अ), नद् (भ्वा प से) ।

—द्विगाना या घायाना, मु, दद् (जु,
द्विर्म) २ प्रतिदिम (क प से), प्रत्ययक ।

मजे मे, मु, मानन्द, मद्युल, निर्विन्न् ।

मज्जाक, म पु (अ) दे 'ठठठा' ।

मज्जार, मं पु (अ) मनाधि २ दे 'कम' ।

मज्जात्, म स्त्री (अ) मन्मथ्य, शक्ति स्त्री ।

म(मे)जिस्ट्रेट, मं पुं (अ) दट, नायक
अध्यक्ष अधिनारिन् ।

म(मे)जिस्ट्रेटी, म स्त्री (अ मेजिस्ट्रेट)
दटनादक-दण्डाध्यक्ष, पर-वार्थ २ दटनायक-
मना ।

मजीठ, मं स्त्री (मं मंजिठा) रत्ता, रोहिणी,
रत्तवटिगा, रागाठ्या, अरुणा, रागाणी, वल
भूषणा, विक्रमा, गिगी ।

मजीठी, वि (हि मजीठ) रत्त, अ दिन, अरुण ।

मजीर, मं पु, (म मजीर) मुर, पादा
हृद (न) २-विषमम्, कुटा ।

मजेदार, वि (वा) स्वादु, रुच्य, रविकर
२ ग्लूक, उत्तम ३ आनन्द, दायण प्रद ।

मज्जन, मं पुं (म न) स्वानं, दे 'नहाना'
मं पुं ।

मज्जा, मं स्त्री (मं) सुकर, पीठिक,
अप्य, अनेह-भार-भभव, अविजन् ।

मञ्जुहार, मं स्त्री (मं मञ्जुहारा) नषा

मध्य-केन्द्रीय-मध्यस्थ-मध्यम, -धारा प्रवाह -
 मदाक स्तनम (न) २ कार्य, मध्य मध्यम् ।
 मञ्ज(ओ)ला, वि (स मध्य) मध्यम, मध्य,
 वर्तिन्म्य २ मय्यमाकार, मध्यमपरिमाण ।
 मटक, मटकन, स स्त्री (हि मटकना) हाव,
 विभ्रम, विलस २ गति (स्त्री) सचार ।
 मटकना, कि अ [स म (सौवधातु) =
 अवमाद] विलस (भ्वा प से),
 सविलस चल् (भ्वा प से) विभ्रम् (भ्वा
 दि प से) ।
 मटका, म पु (हि निट्टा) मणिक क, अलिनर ।
 मटकाना, कि स (हि मटकना) सविलस
 अगानि चल् (प्रे) विभ्रम् (प्र) ।
 मटकी, म स्त्री (हि मटका) छुद्र-मणिक
 अलिनर ।
 मटमोला, वि (हि निट्टी+नीला) दे.
 'मटियाला' ।
 मटर, स पु (स मथुर) कल्प, काल
 पूर, मुण्डचक्र, रेणुक, वातुल, सनीत
 (लं), हरेणु, खडिक ।
 मटररान, स पु स्त्री (स मथर+का
 गदा) मुखादन, विहार, विहरण, यथेष्टभ्रमण,
 सुखसचरणम् ।
 मट्टिधामसान } वि दे 'मट्टियामे' ।
 मट्टियामेट }
 मट्टियाला, वि (हि मट्टी+वाला) धूलि रेणु
 प्राणु वर्णनम् ।
 मट्टी, स स्त्री, दे 'मिट्टी' ।
 मट्टा, म पु (स मथिन) अनरोदक-घोल,
 चलनवनीत शूल्य घोलम् ।
 मट्टी, म स्त्री (स मठ) पक्काभेद ।
 मठ, स पु (म पु न) आनि, वाम,
 २ आश्रम, विहार, मुनिवाम ३ धार्मिक-
 विद्यालय ४ मन्दिर, देवालय ।
 —धारी, स पु (स रिन्) मठपति, नाठन् ।
 मठना, कि स (स मन् >) कोटो निविश
 (प्रे), आवेष्ट (भ्वा आ से) २ चमादिभि
 वायुस अचट् (प्रे) ३ बल्द अरुह
 (प्रे), दे 'धीमना' । म पु, आवेष्टन, आच्छा
 दन, आरोपणम् ।
 मठने योग्य, वि, आवेष्टनीय, अच्छादनीय ।
 मठनेवाला, स पु, आवेष्टक, आच्छादक ।

मठयाना, कि प्रे, व 'मठना' के प्रे. रूप ।
 मठा हुआ, वि, आवेष्टित, चमादिभिराच्छादित,
 बल्दारोपित ।
 मटो, स स्त्री (सं मठ >) छुद्रमठ ठ, लघु
 मन्दिर २ कुटो, पर्णशाला ३४ छुद्र, मन्दन-
 मडप ।
 मणि, स स्त्री (स पु स्त्री) रत्न २. नद-
 पुगव कुनर ऋषभ ।
 —काचन योग, सं पु (स) उभयशोभा-
 चक्रसयोग ।
 —द्वीप, स पु (स) दीपोज्ज्वलमणि, रत्न
 दीप २ मणिरत्नजटितद्वीप ।
 —धर, स पु (स) सर्प, अहि ।
 —यध, स पु (स) मणि, पाणिमूल,
 कल्पिका ।
 —माला, म स्त्री (+) रत्नहार २ रमा,
 पद्मा, वमला, इन्दिरा ३ वर्णवृत्तभेद ।
 मतग, स पु (स) गज २. मेघ ३ ऋषि
 विशेष ।
 मतो, स पु (स न) धर्म, सप्रदाय
 २ मति (स्त्री), तर्क ३ आशय, अभिप्राय ।
 वि, पूजित ।
 मत^२, कि वि (स मा) न, नो, ना, अन्
 (स्त्रीया के साथ) ।
 मतलब, स पु (अ) आशय, अभिप्राय,
 तात्पर्य २ शब्द-वाक्य-अर्थ ३ स्वार्थ
 ४ उद्देश, उद्देश्य सब्ध, सपके ।
 —निकालना, मु, स्वार्थ साध् सिध् (प्रे) ।
 ये—कि वि, व्यर्थ, मोघ, निप्रयोजन, निरर्थकम् ।
 मतलबी, वि (अ मतलब) स्वार्थिन्,
 निवहित-स्वार्थ, पर-परायण निरत ।
 मतलाना, कि अ, दे 'मचलाना' (१) ।
 मतली, म स्त्री, दे. 'मचलाहट' (२) ।
 मतवाला, वि (स मत्) मदीद्वत, मदीदम्,
 क्षीव २ उमत्त ३ अभिमानिन् ।
 मताधिकार, स पु (स) मतप्रकाशनाधिकार ।
 मतावलबी, स पु (स-विन्) धर्म-मत, अनु
 गा मन्-अनुपायिन्-अनुवर्तिन् अनुसारिन् ।
 मति, स स्त्री (स) धी (स्त्री), धि(धी)पणा,
 प्रज्ञा, बुद्धि (स्त्री) २ मत्त, तर्क, अभिप्राय
 ३ इच्छा ४ स्मृति (स्त्री) ।
 —मान्, वि (स-मत्) प्राह, चतुर ।

—हीन, वि (स) लृट्, मूढ मूर्ख ।
 मतीरा, म पु, दे 'नरबुद्ध' ।
 मल्लुष, स पु (म) रक्तारविन्, रत्ना,
 मन्त्राप्रदा, उद्गा ।
 मत्त, वि (स) शौच, उत्कृष्ट शीव, उन्नत,
 मदाद्य, समद, मदिरोत्कृष्ट, मद-मत्त-उन्नत
 वक्रत-उदय २ निर्बिबेक ३ वधुत्, उन्नत
 ४ प्रसन्न ।
 —गयद, सं पु (स मत्तगजेन्द्र >)
 मवैयालन्दोभेद । (७ भरण + २ गुरु
 अधर) ।
 मत्था, सं पु, दे 'मत्तक' (२) ।
 मन्वर, स पु (स) मत्तमूर्ख, परोत्कृष्ट, देव,
 अस्या, ईश्या २ क्रोध ।
 मत्स्य, स पु (सं) दे 'मठली' २ मीन
 राशि ३ विराटदेश (दीनाजपुर-रगपुर,
 अथवा प्राचीन पञ्जाब के अन्तर्गत) ४ महा
 पुराणविशेष ५ विष्णोरवतारविशेष, मत्स्या
 वतार ।
 मथन, स पु (स न) दे मथन १२ ।
 मथना, कि स (स मथन) दे 'बिलोना'
 २ ध्वस्त-नदा (प्रे) ३ अन्विष्ट (दि प सं)
 ४ असह्य अनेकवारक । स पु, दे 'मथानी'
 २ मथन, मथ ।
 मथनीनिया, सं स्त्री (स मथनी) मथन
 पत्नी, गर्गरी, मथिनी २ दे 'मथानी' ।
 मथानी, स स्त्री (स मथान) मथ-मथन,
 दन्, मय, मथन, खन, वैशाख, मथि,
 मथिष्ट (पु), तत्राट ।
 मथुरा, स स्त्री (सं) मथुरा-रा ।
 मीद, स पु (सं) मीद, शौडना, शीवता
 २ वतुलता, उमाद, मतिभ्रम ३ दुर्द,
 अभिमान ४ सुता, मय ५ हर्ष, मीद
 ६ वस्तुहीनता, मृग, मीद-नभि ७ गजगन्ध
 वल, मद, मन्त्रादि (न), दान ८ गुर्क,
 कीर्ति ९ अन्ना, प्रमद १० मदन, काम ।
 —माता, वि, दे 'मत्त' (१) २ कर्मार्थ,
 अन्तर्गत ।
 मद्, स स्त्री (अ) विनिवर्त २ म्पानापर
 ३ म्पान् ।
 मद्द, स स्त्री (म मद् >) मद्क मद्क
 म्पभेद ।

मद्द, स स्त्री (अ) दे 'सहानता' ।
 —गार, वि (अ + ग्रा) दे 'मह्यद्व' ।
 मदन, स पु (सं) मन्मथ, कर्षण, अन
 दे 'कामदेव' २ कामज्ज्, मधुन ३ विवृत्
 मुच्यते, कश्चिद् ४ कुसूर ५ भ्रमरः
 ६ सतन ७ दे 'मैना' ।
 —वदन, म पु (स) शिव, मदनहनन ।
 —गोपाल, सं पु (स) मदनमोहन, वृष्ण ।
 —वाण, स पु (स) कामधर, पुत्रभेद ।
 —सदन, स पु (स. न) मदन, मूढ-नन,
 भान् ।
 —महोत्सव, स पु (म) मदनोत्सव, सुव
 सतक, मदनपूजासंगीतराजिजागरणादिबुन-
 च्चैत्रे भव प्राचीनोत्सवभेद ।
 मदनोद्यान, स पु (स न) प्रमोदवनम् ।
 मद्द, स स्त्री (अ) मारु (स्त्री), जननी २
 मद्दरसा, स पु (अ) विशाल्य, पाठशाला ।
 मदाध, वि (म) दे 'मत्त' (१) ।
 मदार, स पु (म मदार) दे 'अक' ।
 मदासी, म पु (अ मदार) दे 'कन्दर'
 २ सौमिक, दे 'जाद्वार' ।
 मदिरा, स स्त्री (सं) सुरा, हल, मधं,
 वाष्पी, कारवरी, हृदिप्रिया, गंधोत्तमा, शरा,
 प्रमत्ता, परिक्षुता, कदव, मधमदनी, मधवी,
 मद्, मत्ता, मद्गधा, मधु, माध्विक, अश्विवा,
 देवसृष्टा, मदन, मृदा, मीरेय, मीधु, महानरा,
 मदनी, मोदिनी, मनोदा, अमृत, अत्तव,
 प्रिया, चदला, मत्ता, कामिनी ।
 मदिराक्ष, वि (सं) मत्तलोचन (नी स्त्री) ।
 मदीय, वि (सं) मामकीन, मानक (निवर्त
 स्त्री), मय ।
 मदीला, वि (म मद् >) दे 'नदीना' ।
 मदीन्मत्त, वि (म) मद्, उत्कृष्ट-उदय-उदत ।
 मद्दि(द्व)म, वि, दे 'मधम' ।
 मय, म पु (सं न) द 'मदिरा' ।
 —प, वि (म) सुगन्ध, दे 'शरासी' ।
 —यान, म पु (म न) सुरापान-यान ।
 —भावन, सं पु (म न) सुगन्ध-भावन ।
 मधु, सं पु (म न) क्षीट मधि धा),
 कुमुदपुत्र, आमव, विन्, रवित्र, मध्वीव,
 मरुष, पुण्यरत्न, उद्वर्धक, मद्दि-वर्दी
 मृद्, वन २ मदिरा ३ दुग्ध ४ उर्ध

५ मरुद, पु० प्रत्न ६ अमृत ७ वमनर्ष
 ८ वैत्रमन ९ दैत्यविशेष । वि, मधुर, स्वादु ।
 —कठ, स प (म) कौकिल, विक ।
 —कर, म प (न) भरर २ कानुद
 ३ भूतराजपुत्र ।
 —करी, म स्त्री (म) पत्रदी, जननी
 २ मिहानपक्वान-भिक्षा ।
 —कर, स पु (स) मधुमक्षिका ।
 —कोप, स पु (म) मधु क्रम चक्रफल
 बोध, कर चपाल ।
 —प, मं पु (म) भरर २ मधुमक्षिका ।
 —पर्क, स पु (स) दधिमधुमिश्र आज्य,
 (अनिध्यादिभ्य) ।
 —मदवी, स स्त्री (म-मक्षिका) मधु, कार
 कारिण सरपा ।
 —मय, वि (म) मधुर, मधुल, मिष्ट, स्वादु,
 रविर ।
 —माम, म पु (म) वैत्र ।
 —मेह, म पु (न) मधुमेह, मूत्ररोमेह ।
 मधुर, वि (स) निष्ठ, मधुर, मधुल, मधुक,
 मधुमय २ रच्य, रचिकर, स्वादु ३ कर्ण
 श्रुति-मधुर, दल, मज्जुल ४ सुदर, मनोह ।
 —भापी, वि (स विन्) प्रियवद, मधुर
 सु-वाच, चारुभाषिन् ।
 मधुरिमा, स स्त्री [स रिमन् (पु)] माधुर्
 २ सौन्दर्यम् ।
 मधुकरो, म स्त्री, दे 'मधुकरो' (२) ।
 मध्य, वि (म) दे 'मध्यम' । कि वि, मध्ये,
 अनरे, अभ्यारे । म पु, मध्य, मध्य-भा
 देश-स्थलस्थान २ र्ग, अभि, अनरन् ।
 —देश, स पु (स) हिमाचल-विध्याचल-कुरु
 क्षेत्रप्रदायानध्वस्थो देश २ मध्यप्रात ।
 —भाग, म प (स) मध्य, स्थलस्थान,
 वेद्रम् ।
 —लोक, म पु (म) भूनि (स्त्री),
 पृथिवी ।
 —वर्ती, वि (म तिन्) वेद्रीय, मध्य,
 मध्यम, मध्य, स्थ स्थित ।
 मध्यम, वि (स) मध्य, मध्य, स्थस्थित
 वतेन २ मध्यपरिमाण ३ सामान्य, साधारण
 ४ व्यवहिन, अनरालम्भ । सं पु (स)
 चतुर्थम्बर (मगील) २ ४ नायक-मृग-नाग,
 भेद ।

—पुरुष, स पु (म) पदविशेष (व्या त्वं
 पचनि इ) ।
 मध्यमा, स स्त्री (त) ज्येष्ठ-पुली-कि
 (स्त्री), मध्य, ज्येष्ठ २ न-पिकाभेद ३
 रत्नत्वला नारी ।
 मध्यस्थ, स पु (म) विर्णेतु प्रमाणपुरुष
 २ उदासीन, निष्पद्य, तन्म्य । वि., दे
 'मध्यम' ।
 मध्यस्थता, स स्त्री (म) माध्यस्थ, निर्णय-
 २ तन्स्थता ।
 मध्याह्न, स पु (स) मध्य(ध्व)दिन, मध्याह्न,
 काल-समय वेला ।
 मध्याह्नोत्तर, स पु (म न) अपराह्न, पराह्न,
 विकाल ।
 मन', स पु [स मनस् (न)] चित्त,
 चेतन (न), हृदय, स्वान, हृद (न), मानस,
 अग, अनगक, अत करण २ अत करणस्य
 मन्वल्पविकल्पत्मकवृत्ति (स्त्री) ३ विचार,
 मन्वल्प ४ दृष्टा, कामना ।
 —गडत, वि, मन कल्पित, काल्पनिक, अवा-
 लविक, मन प्रसूत ।
 —चला, वि, निर्भय २ सङ्घटिक ३ रसिक ।
 —चाहा, -चीत, वि, अभीष्ट, मनोवाञ्छित ।
 —जात, स पु, मनोज, कामदेव ।
 —भावता, भावन, वि, रच्य, रचिकर, प्रिय,
 अभिमत ।
 —मति, वि, स्वच्छन्द, अनियन्त्रित, स्वच्छ-
 चारिन् ।
 —मय, स पु, मन्मथ, कर्षण ।
 —माना, वि, रच्य, रचिकर २ अभिमत,
 मनोनीत ३ यथेष्ट, यथेच्छ, यथेष्टित ।
 कि वि, यथेष्ट, यथामिच्छानम् ।
 —मानी, स स्त्री, यथेष्ट, कार्य-कर्मन् (न) ।
 —मुनाव, स पु, वैमनस्य, वैमत्य, दुष्ट, भव-
 बुद्धि द्वेष ।
 —मोदक, स पु, वाचनिकमुख, मन
 कल्पितानन्द ।
 —मोहन, स पु, शीघ्रम् । वि, मनोहर, हृत् ।
 —मौजी, वि, स्वैरिन्, स्वच्छाचारिन् ।
 —रजन, वि., मनोरजक । स पु, मनोरजनम्,
 चित्तविनोद ।

- हर, } १ व, मनोहर, मनोहर्तृ, मनोहारिन्,
 —हरण, } २ सुहर, मनोहर ३ प्रिय, हृद्य ।
 —हारी, }
 (टिप्पणी—मन के बहुत से योगिक शब्दों
 और मुद्रावर्तों के पर्यायवाची 'नी', 'दिल'
 और 'कलेना' के नाचे मिलेंगे, कुछ बड़ा
 देते हैं) ।
 —अटकना, मु, स्निह् (दि प मे), अनु
 रन् (कर्म) ।
 —करना, मु, अभिलप् वाठ (दि भ्वा
 प से) ।
 —कं लड्डू खाना, मु, यगनतुसुमानि चि
 (स्वा उ अ), मोभाशया हृष् (दि प मे) ।
 —बहलाना, मु, मनो विनुद रन् (प्रे),
 विह् (भ्वा प अ) ।
 —वसना, मु, र्च् (भ्वा आ से), दे
 'मनमाना' ।
 —भर, वि, यथेष्ट, यथेच्छम् । (कि वि),
 यथा हृत्ति, यथाभिलाष, यथेष्टम् ।
 —भरना, मु, परि-म्, ष्प्-त्तुर् (दि प अ) ।
 —भाना, मु, ष्य (मु प से), अभिलप्,
 र्च् ।
 —भाना मुद्रिया हिलाना, मु, मनभि काम
 यमानोर्ध्व शिर उपेन (वाद्यन्त) निदिष्
 (भ्वा प से) ।
 —माने, वि तथा कि वि, दे 'मनभर' ।
 —मानना, मु, मन निग्रह् (क प से)
 २ धैर्येण सह् (भ्वा आ से) ।
 —मिलना, मु मानान ऐकमत्य वृत् (भ्वा
 आ से) ।
 —ललचाना, मु, दुभ (दि प मे) यत्प
 थिक स्थह् (सु, त्तुसी के साथ) ।
 —हरा होना, मु, मुद (भ्वा आ म) ।
 मन, २ स पु (म मग) चत्वारिंशत्परात्मन
 भारमानम् ।
 —भर, वि, मज, मित परिमित-आप्त ।
 मनका, १ स पु (मं भगिन >) अर, गुणिना
 २ जयमाना ।
 मनका २ म स्त्री (म मन्याका) मन्,
 अवट्ट, वृत्तिका, गिर पीठ, घाट-टा ।
 —दकल, मु, मरुणो-मुख-मुर्धु-अभयशुभ्र
 (दि) वृत् (भ्वा आ मे) ।

- मनकृला, वि (अ) चर, यन्, अम्भिर ।
 —गरमनकृला जायदाद, स स्त्री (अ +
 पा) स्थावरत्विक्, श्विरमपद् (स्त्री) ।
 —जायदाद, म स्त्री, (अ + पा) उपर-
 णत्विक्, चरमपद् (स्त्री) ।
 मनन, म पु (स न) अनुचिन्तन, ध्यान,
 आलोचनम् ।
 —शील, वि, विचान, शील-वन् ।
 मननीय, वि (स) विचारणीय, चिन्तनीय,
 विचारारसद, मननाहं ।
 मनवाना, कि प्रे, व 'मानना' के प्रे रूप ।
 मनदा, म स्त्री, दे 'ममा' ।
 मनमव, मं पु (अ) पद, पदवी २ अधि
 कार ३ स्तर ४ सेवा ।
 मनसा' म स्त्री, दे, 'ममा' ।
 मनसा, अ (सं) चित्तेन, हृदयेन । स स्त्री-
 १ जरत्कार पत्नी २ वास्तुकिमणिनी ।
 मनमिज, म पु (सं) कामदेव, पचशर ।
 मनसुत्, वि दे 'मसुत्' ।
 मनसुवा, मं पु, दे 'मसुवा' ।
 मनस्ताप, मं पु (सं) मनोवेदना, आधि-
 २ अनु पश्चात्, नाप ।
 मनस्वी, वि (स विन्) महादाय, महानुभाव
 २ बुद्धिमत्, सुबुद्धि ३ स्वेच्छाचारिन् ।
 मनहुँ, कि वि, दे 'मानो' ।
 मनहूम, वि (अ) अशुभ, अनगल् २ पुरूप,
 दुर्दर्शन ३ अन्तः, मथर ।
 मना, वि (अ) नि प्रति, विद्वा वचिदः ।
 म पु दे 'मनारी' ।
 —करना, वि म, नि प्रति-विष् (भ्वा प
 म), निवृ (प्रे), नि अवन्ध (स्वा उ अ) ।
 मनादी, मं स्त्री (अ मुनादी) उदाहरणा,
 प्रत्यापनम् ।
 —करना, वि म, ञ्-पुष (सु), प्रत्या
 (प्रे, प्रत्यापयति) ।
 मनना, वि स, व 'मानना व प्रे रूप ।
 मनगही, म स्त्री (अ मना) नि प्रति, पथ,
 निराध, निवारण, प्रत्यादश ।
 मनिहार, म पु (म मायना) रत्नहर,
 रत्नानीविद् २ ३ वास्तविक, कार
 विप्रविद् ।
 मनिहारी, मं स्त्री (हि मनिहार) मणि, अथ-व-

साय-नागिज्य, रत्नव्यवहार २ काचद्रव्य
व्यवसाय ।

मनी-आर्डर, म पु (अ) धनादेश ।

—कामे, म पु (अ) धनादेशपत्रम् ।

मनीय, स स्त्री (म) बुद्धि (स्त्री)
२ स्तुति (स्त्री) ।

मनीषी, वि (स विन्) पंडित, बुद्धिमत् ।

मनु, म पु (म) ब्रह्मण पुत्र, धर्मशास्त्र
कारो मुनिविशेष २ मनुष्य ।

मनुज, स पु (स) मनुष्य, मानव ।

मनुष्य, स पु (स) मानुष, मनुज, मानव,
मत्स्य, नगर, द्विपर, मनु, पंचजन, पु(पू)
रथ, पुम्स्-न् (पु), मण, विश् (पु) ।

मनुष्यता, स स्त्री (स) मनुष्यत्व, मानवता
२ सम्मता, शिष्टता ३ दया, मौहादय ।

मनुष्यी, स स्त्री (म) नारी, मानुषी,
मानवी, मत्स्यां, मनुनी, नरी ।

मनुहार, स स्त्री (म मानहार >) प्रसादन,
उपशमन, सात्वन २ विनय, प्रार्थन-ना
३ आदर, मानन-ना ।

मनो, कि वि, दे 'मानो ।

मनो, (म मनस न) दे 'मन' ।

—कामना, म स्त्री (स मन-कामना)
अभिलाष, वाटा ।

—गत, वि (स) इक्ष्यथ, हार्दिक ।

—ज, स पु (स) मदन, कर्षण ।

—ज्ञ, वि (स) सुन्दर, अभिराम ।

—नीत, वि (स) रच्य, रुचिकर, ह्य
२ वृत् ।

—योग, स पु (स) अनन्यमनस्वता, चित्तै
काग्र्य, अवधानम् ।

—रजक, वि (स) चित्ताकादय, सुखकर,
हर्षावह हृदयहारिन्, मनोविनोदक ।

—रजन, स पु (म न) मनाविनोद,
चित्ताकादन-न्, कीर्ण, कौतुकम् ।

—रथ, स पु (स) सृष्टा, वाटा ।

—रथ सफल होना, कि अ, सफलमनोरथ
(वि) भू, अभिलषित अधिगम् ।

—रम, वि (सं) मनोह, सुंदर ।

—वाञ्छित, वि (म) अभिलषित, अभीष्ट ।

—विकार, स पु (म) चित्त, विकृति (स्त्री)
विकार, मनो, धर्म-वृत्ति (स्त्री) वेग ।

—विज्ञान, सं ए (म न) मानमशास्त्रम् ।

—वृत्ति, म स्त्री (म) चित्तवृत्ति (स्त्री),
मनावकांग, मानमी दत्ता ।

—हर, वि (म) मन्द, हृदयहारिन् ।

—ररना, म स्त्री (म) मौन्दय, चित्ताकर्ष
कता, मनाहता ।

मनौती, म स्त्री (हि मानना) दे 'मनुहार' (१)
० दे 'मन्न' ।

मन्नत, स स्त्री (हि मानना) देवपूजा, प्रण
प्रतिष्ठा शपथ ।

—उतारना या बढ़ाना, सु, देवपूजामतिष्ठा
पा (प्रे पालयति) ।

—मानना, सु, अभोष्टतिइये देवपूजा प्रतिष्ठा
(कृ आ अ) ।

मन्वतर, स पु (म न) एकसप्तति चतुष्टु
ग्यात्मन् काल, ब्रह्मरिनस्य चतुर्दशो भाग ।

मपना, कि अ, व 'मापना' के कर्म के रूप ।

मपवाना, मपाना, कि प्रे, व 'मापना के
प्रे रूप ।

मकरूर, वि (स) पलायित, गुप्त, अन्तर्हित,
प्रच्छन्न, व्यपसृत ।

मम, सव (स) दे 'मेरा' ।

ममता, स स्त्री (स) स्वाम्य, स्वामि व,
ममत्व, म पु (स न) अधिहार, स्वत्व,
प्रभुत्व २ रनेह, प्रभव (पु न) ३ वात्सल्य
४ मो ५ लोभ ६ अभिमान, गर्व ।

ममिया, वि, दे 'ममेरा' ।

—समुद्र, म पु, पति पत्नी, मातुल ।

—साम, स स्त्री, पति पत्नी, मातुली ।

ममियौरा, म पु (हि मामा) मातुल्यूहम् ।

ममीरा, स पु (अ मामीरान) नेत्ररोमी
पकारक क्षुपमूलभेद ।

ममेरा, वि (हि मामा) मातुलीय, मातुलिक ।

—भाई, म प मातुलपुत्र, मातुलेय (—स्त्री
स्त्री), दे 'भाई' के नाचे ।

ममोला, स पु, दे 'यवन' ।

मयक, स पु (स मृगान) दे चाँद ।

मयस्सर, वि (अ) प्राप्त, लब्ध २ प्राप्य,
सुलभ ।

मयूख, स पु (स) किरण, रसिम् ।

मयूर, स पु (स) दे 'मोर' ।

मयूरी, स स्त्री (स) दे 'मोरनी' ।

मरक, म पु (म) > मरा ।
 मरकत, म पु (म न) हरिमणि अरुम
 गर्भ मरकत राननीन गररुम् ।
 मरकता, क्रि अ (अन) भारेण भन भिद् द्व
 (कम) ।
 मरघट म प (हि मरन + घाट) शतनर,
 इमगान विनुरानन प्रेनभू (स्त्री) ।
 मरज्ज मं पु (अ मज) रोग -शरि
 २ दुष्यमन कुवृष्टि (स्त्री) ।
 मरज्जिया वि (हि मरना + जीना) मृत्युमुक्त,
 मृतजीवित २ मरण उनुरा आमत्र ३ मृत
 प्रायश्चय । म पु (मुक्त र्थ) निवक्तु
 विगात् ।
 मरण, म पु (म न) मृत्यु निधनम् ।
 —प्रमा वि (म धमन्) मत्त्व, मरणशील ।
 मरतवा, स पु (अ) पद, पदवी २ वार ।
 मरतवान, मं २ दे 'अमृतवान' ।
 मरदूद, वि (अ) निरस्कृत, अपमानित
 २ सुप्र ।
 मरना क्रि अ (म मग्ण) मृ (तु आ अ),
 पत्त्व इया (अ प अ) असून् प्राणान्-
 देह ननु जीवित त्वन (भ्वा प अ) उत्सृज
 (तु प अ) हा (तु प अ), प्रद (अ
 प अ) गतासु परासु (वि) भू, रिपद
 (दि आ अ) प्रमी (कम), २ कौन
 निशय मट (भ्वा आ मे) ३ शुष (रि
 प अ) म्ने (भ्वा प अ) ४ अत्वव
 रज (तु आ मे) -रज (भ्वा आ मे)
 ५ परापरि भू (कर्म) परा वि नि (कम)
 ६ शन (रि प मे) ७ श्रीनातो बहिष्क
 (रम) । म पु मरण निधन, दे मृत्यु ।
 —जीना सु श्रवण मने हृषगोः जी ।
 निमी पर— सु अनुवन् (कम) भव
 अनुगत बध (क प अ) ।
 पानी— सु क्वकित दृषित अपमानित (वि)
 भू ज्वगन् अवमन् (कर्म) ।
 मरकर, मु, अशय मन, अतिरिक्तितया ।
 मरक शचना, म मृत्युमुक्त द मुर (कम)
 मरणामश्रापि पुन स्वल्प्य लभ (भ्वा
 आ अ) ।
 मर मित्रता, मु, धमनिशयेन नन् (दि प मे) ।
 मरने तक्ष का कुर्वत न होना, मु, अनिष्टा
 धन अनवकाश (वि) दूर (भ्वा आ मे) ।

मरने योय, वि, मरणाहं, वर्षनीवित, २
 हतक सन्, दुष्ट ।
 मरनेचाला, म वि, मरिष्यमाण, मरणो मुख,
 आमन्मृत्यु २ मर्त्य, मृत्युवश, नशर ।
 मरा इभा वि, मृत, गतासु पचस्व, गत प्राप्त
 इत प्रेत, परेत, उपरत मस्विन, विरज, प्रमीत,
 विधेनन निष-गत, प्राण ।
 मरभुक्त्वा, वि (हि मरना + भूत्वा) शुभा
 अर्धित-नीरित-आन-अवलप्र २ अर्धिनन,
 तिथन ।
 मरमर, स स्त्री (अनु) मर्मर ध्वनि शब्द,
 मर पत्र-वस्त्र, नवन ।
 मरमर, म पु (म्) चिकणप्रस्तरभेद,
 मरमर ।
 मरमरा वि (अनु) भिदुर, भंगुर, सुभग ।
 मरमराना, क्रि अ (हि मरमर) मर्मर
 र्व कृ मर्मरयते (न था) २ समर्मरशब्द
 अव आनम् (भ्वा प अ) ।
 मरम्मत्त म स्त्री (अ) जीर्ण, उदार, प्रति,
 ममधान सधान, सस्कार, नवीकरण, पूर्वा
 वरप्रप्रापणम् ।
 —करना, क्रि अ, पूर्ववद् नवी, कृ, उद् (भ्वा
 प अ), मंममा प्रतिममा, धा (तु उ अ)
 २ तड् (चु) ।
 मरवाना, क्रि प्रे, व 'मारना' के प्रे रूप ।
 मरसा सं पु (स मारिष) वधर, भाषिक
 (शाकभेद) ।
 मरसिया म पुं (अ) निधनवाच्य, शोक
 मयी बविता ।
 मरहटा ग, म पु (मं महाराष्ट्र >) महा
 राष्ट्रवर्षित, महाराष्ट्रा (बहु) ।
 मरहटा-डी, स स्त्री (म महाराष्ट्री) माहाराष्ट्री ।
 मरहम, म पु (अ) अनु, स्लेप, उपदेह,
 समालभ अभयनम् ।
 —पट्टी, स स्त्री (अ + स) स्लेपट्टी,
 जगोपचार ।
 मरहमन, सं स्त्री (अ) अनुग्रह, कृपा ।
 —करता या प्ररमाना, दे 'देना' ।
 मरहूम, वि (अ) स्वर, गत-याद, दिव
 गत, मृत ।
 मराट, स पुं (सं) राजहस २ वारहस
 ३ अथ ४ गज ५ मेप ।
 मरिच, सं स्त्री (सं न) दे 'मिच' ।

मरियल, वि (हि मना) मृगमय, कृग,
निर्दिष्ट।

मरी, म स्त्री (म मारी) जन मर,
महनरी, मरिका।

मरीचि, म स्त्री (म पु स्त्री) किरण,
रदिष्ट २ कानि (स्त्री) ३ मरुतराचिका।

मरीचि, म पु (म) १-४ रवि-मरुद
दानव-दैत्य, विरोध।

मरीच, वि (अ) रग, रागिन्।

मरीचिका, स स्त्री (स) दे 'मृगतृ'।

मरु, म पु (म) धन्व (पु), मरु-स्थल
स्थली ऊपर २ खिलन्।

—भूमि, म स्त्री (म) } दे मर'।

—स्थल, स पु (स न) } दे मर'।

मरुआ, म पु (स मरु) मध-उपर पत्र
शोणल-वसुवीर्यं (क्षुपभेद)।

मरुज, म पु (स) दे 'वसु'।

मरोड, म पु (हि मरोडना) आकुचन,
व्यावर्तन २ अत्र-उदर, वेदना-शूल पीडा
३ दर्प ४ क्रोध ५ दे 'पविदा'।

—मूला, म स्त्री, मधूलिका, मूर्वा, मूर्वा,
मधुरना, रा-दिव्य, रत्ना।

मरोडना, क्रि स (हि मोडना) कुचकुच
(भ्वा प मे), व्यावृत् (प्रे), कुचि-
वक्राह २ पीड (चु), दुःखवनि (ना
धा) ३ मुष्टिना-मुष्ठा ग्रह (ऋ प मे)
४ (भ्वा प अ)।

मरोडा, म पु, (हि मरोडन) दे. मरोड'
(१०) २ दे 'पविदा'।

मरोडो, म स्त्री (हि मरोडना) दे 'मरोड'(१)
२ कुचि-व्यावर्तन, वस्तु (न) ३ ग्रथि।

मरुं, म पु (स) दे 'वदर'।

मरु, स पु (अ) दे 'मरु'।

मरु, न स्त्री (अ) इच्छा, रचि (स्त्री)
२ प्रमत्तना ३ स्वाहृति (स्त्री), अनुहा।

मरु, म पु (म) मनुष्य, ननव,
२ शरीरन्।

—लोह, म पु (म) भूमि (स्त्री), भूलेह।

मरु, म पु (का) ननव मनुष्य, २ पुम
(पु), पुरुष, नर ३ वीर सहानिव,
योष ४ पति।

—वच्चा, म पु, वीरवल्।

मरु, म पु (म न) पदव्या पीडन
क्षान्-आक्रमा २ अश्वान, मवहन,
मरु, वच्चा ३ ध्वमरु, मरुन ४ पेया,
चूानन्।

मरु नगा म स्त्री (का) 'मृग', वीरग,
पुरुषत्वन्।

मरु ना, वि (का) पुन-उपर मृद, उचित
२ पुन-नर, नदृश उपन विज्ञान, नर पुरुष।

—भेष म पु पुनवेद मरोचिवेष।

मरुदिन वि (म) पुन-पीडन मुष्ठा-आदान
२ सति, चूत ३ नगि।

मरुं, स पु (का) जन, मनुष्य।

—मृग, म पु, नरभक्षक मनुष्य।

—शिनाम, वि, नर-मानव, अभिष्ट।

—शुमारो, स स्त्री (का) जन, मरुपनं
गाना।

मरु, म पु [म मरु (न)] न व, स्वरूप
२ रहस्य, गोपवृत्त ३ मरुस्थान ४ गोव
स्थानन्।

—मृ, वि (स) तत्र, नर्मवेदिन्
२ रहस्यविद (पु)।

—पीडा, म स्त्री (स) हृदय, मनश्रया।

—भेदी, वि (स-दिन्) मरु, भिद (पु)
भेदक वेदक-विदारक।

—स्थान, म पु (स्त्री) मरुस्थल, जीवन
स्थानन्।

मरु, म स्त्री (अनु) दे 'मरु'।

मरु, म स्त्री (स) स्थिति (स्त्री),
धरन्, मरुथा, नियम २ सीमा ३ कूल
४ प्रतिष्ठा, समय ५ सदाचार, मरुवृत्त
६ शैव, प्रतिष्ठा ७ धर्म।

मरु, म पु (का) मरु, दवनमिषुभेद
२ उरुभेद ३ स्वेच्छाचरि।

मरु, म पु (स पु न) अरु, (पु) मरु,
वृत्त व, किष्ट २ वदम, पत्र ३ उदर,
मृथ ४ पुरीष, विप (स्त्री), विडा, रह्य
(न), शनलन्।

मरुना, क्रि म (म मरु) जन (ह प मे),
मि (पु प अ), दि (अ उ अ),
अ (भ्वा प से) २ धृष् (भ्वा प मे),
मृ (ऋ प से, प्रे) ३ परि-प्र-मृ
(अ प मे), नि (उ उ अ) ४ कत

राम्या चूर्ण (चु) । म पु, अजन, लेपन,
घर्षण, मर्दन, मार्जन, चूर्णनम् ।

हाथ—, मु, अनुपश्चार तप् (दि आ अ),
अनुचुच् (म्वा प से) अनुशी
(अ आ से) ।

मलवा, म पु (म मल-व) दे 'मल' १२ ।
२ शकलराशि ।

मलमल, स स्त्री (स मलमलक >) *मल
मलक, सूक्ष्म तूलवस्त्रम् ।

मलमाम, स पु (म) अधिमाम, मलिम्बुच,
असक्रान्तमाम, नपुंसकः ।

मलय, स पु (म) दक्षिणाचल, चन्द्रनाद्रि,
आषाढ, मल्याचल २ तैलपणिक, श्वेतचन्दन
२ नदतपनम् ।

मलयज, स पु (स न) दे 'चन्दनम्' ।

मल्याचल, म पु (स) मलय, अद्रि गिरि
पर्वत ।

मल्यानिल, स पु (म) मलय, पवन ज्ञान
समीर ।

मलवाई, स स्त्री (हिं मलवाना) मर्दन अजन
घर्षण, भूति (स्त्री) ।

मलवाना, मलाना, कि प्रे, व 'मलना' के
प्रे रूप ।

मलहम, स पु, दे 'मरहम' ।

मलाई, स स्त्री (फा बावाई) (दूध भी)
सनाती निजा, शीर, शर, दुग्ध, अग्र तालीय,
शाकंर, शाकन, (दही बी) दे 'शर' (य)
२ शार उत्तमाश्र ।

मलामत, स स्त्री (अ) दे 'पञ्चार' ।

मलार, म पु (म मलार) रागभेद ।

मलाल, म पु (अ) खेद २ ओदामी-न्यम् ।

मलिक, म पु (अ) नृप ० अधीश्वर ।

मलिका, स स्त्री (अ) राणी ० अधीश्वरी ।

मलिन, वि (म) अविल, कटुप मलीमर्ष,
सम, पत्रि मलदम, मलद्वित २ दूषित,
विहृत २ धूलिबर्षा ४ धूमवर्षा ५ पापकर्म,
दुष्ट, पाप ६ विषण्ण, स्थानमुप ।

मलिनत्व, स स्त्री (स) आविलत्व, राहु-
मालिन्य, पत्रिस्त्व इ ।

मलियाभेट, सं सं (हिं मलना + विष्णाना) ।

वि, ध्वंम-ज्ञान, क्षय, उच्छेद ।

—करना, मि, स, उच्छिद (क प अ),

ध्वंमन्त्र (प्रे), विमूल (पु) ।

मलीदा, स पु (फा मालीदा) मर्दन,
स्निग्धमिष्टरोटिराचूर्ण २ अर्णवस्त्रभेद,
मर्दन ।

मलीन, वि, दे 'मलिन' ।

मलेरिया, म पु (अ) विषमज्वर, *मशक-
कुपवन, ज्वर ।

मल्ल, स पु (स) प्राचीनजातिविशेष
२ बाहु, योध योधिन । वि, महाबल, मासल,
स्थूल-महा, काय ।

—भूमि, स स्त्री (स) मल्लशाला ।

—युद्ध, स पु (स न) बाहु नि, युद्ध, दे-
'कुशी' ।

—विद्या, स स्त्री (स) नियुद्धविद्या ।

मल्लाह, स पु (अ) नाविक, नी पोत, बाह-
औदुपिक, मार्गर २ धीवर, कैवर्ष ।

मल्लिका, स स्त्री (म) दे 'मौलिया' २ छन्दो-
भेद ।

मल्ल, स पु (स मल्लक) कश्च, दे 'रीठ'
२ वानर ।

मल्लिकल, म पु (अ मुवकिल) अभि-
भाषननियोजक ।

मवाद्, स प (अ) दे 'पीप' ।

मवेशी, स पु (अ मवाशी) पशव (पुं-
वहु), पशुमूह, गोकुलम् ।

—खाना, स पु (अ + फा) गोष्ठ घ, वन +

मदा(स)क, म पु (स) दे 'मच्छ' ।

मदाक, स स्त्री (फा) नलभन्वा स्त्रिया ।

मदाकूक, वि (अ) सदेह मंशय, आर्यद
पान, मरिग्ध ।

मदाकूर, वि (अ) कृत, * विद्वेदिन,
उपहारण, उपहारमूर्त, आभारिन् ।

मदाकक्त, सं स्त्री (अ) परिश्रम, प्रयास ।

मदाकक्ती, वि (अ) उद्योगिन्, परिश्रविन् ।

मदागला, स पु (अ) कायम्, व्यवसाय,
अर्थ निरा, वृत्ति (स्त्री) ।

मदागल, वि (अ) व्यापन, व्यग्र, कार्यमग्न ।

मदारिन्, स स्त्री (अ) प्राची, दे 'पूव'
(दिशा) ।

मदाविरा, स पु (अ) समव्रणा, परामर्श ।

मदाहूर, वि (अ) विख्यात, प्रसिद्ध ।

—पशान, स पु (म इमशान) दे 'मरपट' ।

मशाल, सं स्त्री (अ) दापिका, सिंघिनी,
अज्ञान, उच्छुर्क, उच्छा ।

—लेकर या जलानर दूटना, सु, मन्पक्
अन्विष (दि प से) ।

मसालची, म पु (अ + का) उन्वाधारिन्,
उत्सुक-शीपिका-वाह्य ।

मशीन, स स्त्री (अ) यत्रम् ।

मशक, स स्त्री (अ) दे 'अभ्याम' ।

मष्ट, वि (म मष्ट) मीन, नि शब्दता ।

—मारना, सु, नृणां स्था (स्वा प अ) भू ।

मसकना, क्रि अ (अनु मन) व 'मस
काना' के वम के रूप । क्रि स दे 'मसकाना' ।

मसकाना, क्रि स (हि मसकना) विदल्-
विष्ट (प्रे), विपट् (चु) ३ मवल मृद
(क्र प मे) निपीड (चु) ।

मसपूररा, स पु (अ) विदूषक, मड,
वैहामिन ।

—पन, स पु, मडना, वैहासिकता, परिहाम,
ध्वेडा ।

मसजिद, स स्त्री (का) *यवनमदिर,
मोहम्मदीयदेवालय ।

मसनद, स स्त्री (अ) च(चो)नुर, चक्रगड,
बुदद्वालिदा महामदूरक २ धनिकामनम् ।

मसल, स स्त्री (अ) आभाणक, लोकोक्ति ।
(स्त्री) ।

ममलन्, क्रि वि (अ) यथा, उदाहरण-
दृष्टान, रूपेण ।

मसलना, क्रि स (हि मलना) हन्नेन पादेन
वा ससृद् (म् प से, प्रे), सर्पाट् (चु)
२ सवल निपाड (चु) ३ दे 'मूथना' ।

ममलहत, स स्त्री (अ) *नावि-सुप्त, शुभ
मगल भद्र, औचल्य, सुकता ।

ममला, स पु (अ) दे ममल २ विषय,
ममत्या ।

ममविदा, म पु (अ सुमविदा) । मत्कार्य
शोधनाय, लय २ ह्यन् अनुद्रित, लेश
३ युक्ति (स्त्री), उपाय ।

—शोधना, सु, उपाय विद (चु) ।

मस(ल)हरी, स स्त्री (स मसहरी) दे
'मच्छदानी' ।

मसा, म पु (म मामरीउ ७) चमरील ७
२ अर्श, नील-कील, मामकीलक चम् ।

मसान, स पु (म समदान) पितृ वन-वानन,
अतशय्या, शतानक, रद्राक्रो, दाह-मरस्
(न) स्थल २ पिशाच ३ राक्षेत्रम् ।

मसाना, म, पु (अ) मूत्राशय, वर्ति
(पु स्त्री) ।

मसाला, स पु (का) वश(प, स)वार, उप
स्कर, उपस्करमामग्री, स्वादन २ उपकरणि,
उपसाधनार्थानि (न बहु), सामग्री ।

—डालना, क्रि स, उपसृष्ट, स्वादूक, अधि-
वास (चु) ।

मसालेदार, वि (का) उपसृष्ट, मोपस्कर,
वेशवारयुक्त, स्वादूकन ।

मसि, स स्त्री (म स्त्री पु) मसिचल,
पत्राजन, मेरु, ममी, रजनी, मशी, काली ।

—दान, स पु } म + का) दे 'मसिपात्र' ।

—दानी, स स्त्री }
—पात्र, म पु (स न) मसि(सी), कूपे-
घटी धान-धानी-आधार ।

मसी, स स्त्री (स) दे 'मसि' ।

मसीह, स पु (अ) दे 'ईसा' २ विश्वत्राट् ।

मसूडा, स पु [स इमधु (न) >] दत्त,
मूल-माम, दत्त-वेष्ट ।

मसूर, म पु [स मसु(स)र] मसु(ध)रा,
मसूरक का, मगल्य-स्था, पृथु गुट-कल्याण,
बोज, म्रीहिहावन ।

मसूरिया, स स्त्री (स मसूरिका) वसत्ररोग,
पापयोग, रजवनी, मसूरी, शीतला-स्त्री,
दे 'त्रिचक' ।

मसूरी, म स्त्री (स) दे 'मसूरिया'
२ दे 'मसूर' ।

मसो(सु)मना, क्रि अ (का अकसोन)
(मनमि) रिष्ट-डु (कर्म), शुच (स्वा प
मे), नप् (दि आ अ) २ मनोवेग र्थ
(रु प ज) शम् (प्रे) ३४ दे 'मरोटना'
तथा 'निचोन्ना' ।

मसौवा, म पु, दे 'मसविदा' ।

मस्त, वि (का) दे म 'मस'(२) २ निश्चिन्,
निरादिन ३ कामुक, कामिन् ४ स्वैरिन्,
स्वेच्छाचारिन् ५ इष्ट, गर्वित ६ प्रहृष्ट, अनि
प्रसन्न ७ उन्मादिन्, वातुल ८ समद, मद
धूमिन् (नेत्रादि) ।

मात्—, वि, वित्तमत्त, धनमूढ ।

मार—, वि, पीनप्रमोदिन् ।

मस्तक, स पु (म पु न) शिरस (न),
उत्तमाग, शीर्ष, मूर्द्धन (पु), मुट, शिर,
वराग, मौलि, कपाल, केशभू (स्त्री)

२ ललाट, अलि(ली)क, भाग, गलाट भाग,
पट्ट, गोधि ।

मन्तगा, - स्त्री (अ मन्तरी) उच्चमनियाम
भेद, *मन्तगी ।

मन्ताना, वि (फा) मत्त तुल्य मृदा = मत्त,
शब्द, मदिरो मत्त ।

मन्तिष्क, म पु (स न) गोत्र, गोर्द,
मन्तकानेह, मन्तुगण (मन्तिष्कभागा -
इत्तमन्तिष्क, लुमुमन्तिष्क सुपुण्याशीपम्) ।

मन्ती, म स्त्री (फा) मत्तता, श्रानता, शानता,
मदाह्यता, उन्मदता, २ सुरतेजरा, रतिनामना
३ अभिमान ४ मद्र, मद्रत्त, दानम् ।

मन्तूल, म पु (पूर्ण) कृपण, गुणवृक्ष-शर,
कृपण ।

मन्सा, म पु, दे 'मसा' ।

महंगा, वि (म महा) महाह, बहुमहा, मूल्य ।

महंगाई, } स स्त्री (हि महंगा) महापता,

महंगा, } बहुमूल्यता = दुर्भित, दुष्काल ।

महत, म पु (स महत् >) महाधीश,
२ साधुत्तम । वि, प्रधान, श्रेष्ठ ।

महती, म स्त्री (हि महत्) महाधीशता
२ साधुनेतृत्वम् ।

महक, स स्त्री (महमह ने अनु) दे 'शुभ' ।

—दार, वि (हि + का) दे 'शुभित' ।

महकना, कि अ (हि महक) सुवास-
कीरम उत्सृत्-सुच् (शु प ज) ।

महकमा, म पु (अ) विभाग ।

महकाना, वि स (हि महकना) अग्नि,
वाग् (बु), सुरभीकृ, धूप (बु भ्वा प, ने),
परिमलवति (ना धा) ।

महकूम, वि (अ) ग्रामित, अधीन २
अ दिष्ट, आशाग्नि ।

महकृ, वि (अ) शुद्ध, सेवक । वि वि, कबल,
एव, माना ।

महकृ, वि (म) गुरु, विशाल, उह्य, रक्षक,
शोध २ उत्तम, श्रेष्ठ ।

महकृ, म पु (स महत् >) ग्रामणी (पु),
अग्रिम, पुराण, नायक २ लयन, वाद्यस्थ ।

महकृत, म पु (का) चंद्र, साम । म स्त्री
(का) चंद्रिका, कौमुदी ।

महकृता, स स्त्री (धा) वनितावाराग्नि
श्रीदम्बशब्द, चन्द्राभा ।

महतारी, म स्त्री दे 'माना' ।

महती, वि स्त्री (म) वृहती, विशाला,
विपुला, प्रचुरा ।

महतो, म पु (स महत् >) ग्रामनायक,
ग्रामणा (पु) ग्रामाध्यक्ष ।

महत्तत्त, म पु (म न) प्रवृत्ते प्रथम
विचार (माग्य), बुद्धितत्त्वम् ।

महत्तम, वि (स) महिष्ठ, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, वशिष्ठ,
गारिष्ठ, विशालतम, प्रथिष्ठ । स पु (स न)
[= आदे आनम (गणित)] ।

महत्तर, वि (सं) वृहत्तर, गुरतर, विशाल
तर, उत्तर ।

महदूद, वि (अ) मित, परिमित, मगीम,
मयादित ।

महद्विल, स स्त्री (अ) मगीमममा, प्रमोद
परिपद् (स्त्री), रगशाला ।

महद्वज्ज, वि (अ) सुरभित, परि, वात वाण ।

महद्व्ये, म पु (अ) प्रिय, वात, दयित ।

महद्व्री, म स्त्री (अ) प्रिया, वाता, दयिता ।

महद्वरा, स पु (सं महत्तर >) दे 'कहार' ।

महद्वराव, स स्त्री, दे 'मेशराव' ।

महद्वरुम, वि (अ) वचित, विरहित, दीन
(प्राय सब ममानाग में) ।

महद्वर्यि, म पु (स) कपीश्वर, श्रुतिश्रेष्ठ
२ रागभेद ।

महद्वल, स पु (अ) प्रासाद, मीथ ध, हर्ष्य,
राज-नृप, कुल-भवन मदिस्म ।

—मरा, स स्त्री (अ + का) अत पुर,
अवरोध ।

महद्वला, म पु (अ) पुरभाग, नगरविभाग ।

महद्वलेदार, स पु (अ + का) पुरभाग
नायक २ सम्पुरभागवासिन् ।

महद्वूर, वि (अ) परिवेष्टित, रक्ष, वाधित,
परिष्टित ।

महद्वूर, स पु (अ) कर, राजस्व, शुभ
क, वलि २ भाग, भाटक ३ दे 'मालगुठारी' ।
—गना, म पु, वारभू (स्त्री) ।

महद्वूर्य, वि (अ) अनुभूत, ज्ञान, उपगत
अवगत, विदित ।

महद्व, वि (मं महत्) अत्यंत, अत्यधिक,
अनिशय, बहुल २ सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, उत्कृष्ट
तम ३ विन्मीर्ण, विशाल, विपुल ।

—काप, वि (सं) विशालदेह ।

—काल, मं. पुं (सं) शिवरूपविशेष ।

- काली, म स्त्री (म) महाकालपत्नी ।
 —काव्य, म पु (म ज) मगवर्ष, काव्य
 मेद ।
 —कृत, म पु (म) मकृत २ शकृत ।
 —दक्ष, म पु (म) शिव ।
 —दक्षी, म स्त्री (म) दुगा २ पट्टराज्या
 उगारि ।
 —द्वीप, म पु (स) मूखड वर्षं पंम् ।
 —धानु, म पु (म) सुवर्गम् ।
 —निद्रा, म स्त्री (म) मृत्यु ।
 —निशा, म स्त्री (म) निशीथ, अर्द्ध
 नथ रात्र रात्रि (स्त्री), महागजम् ।
 —पथ, म पु (म) प्रधान-महा-राज, मार्ग
 २ मृत्यु घण-श्री, पथ, समरण, राज
 वमन् (न) ।
 —पाप, म पु (स न) महापातकम् ।
 —रापी, म पु (स-पितृ) महापातकिन् ।
 —पात्र, म पु (स) मुख्य प्रधान महा,
 मन्त्रिन्-अमात्य-मन्त्रिव ।
 —पुरुर, म पु (म) पुरुषपथ, नरोत्तम
 २ दुष्ट (व्यग्र्य मे) ।
 —प्रभु, म पु (म) पवित्रात्मन्, महात्मन्
 २ नृप ३ विष्णु ४ शिव ५ इन्द्र ।
 —प्रलय, म पु (म) त्रिलोकीनाश, समार
 महान् ।
 —प्रस्थान, म पु (स न) मृत्यु ।
 —प्राण, वि (स) महामन्त्र, महाबल । स
 पु (म) वर्णमालाया अक्षरविशेषा (स्,
 घ्, छ, ज, ङ्, ढ्, ध्, फ्, म्,
 य्, प, म ह) ।
 —बली, वि (म-निन्) बलिष्ठ ।
 —बाहु, वि (ध) दीन-आनन्, बाहु २ बल
 वत् ।
 —ब्राह्मण, म पु (म) गद्यविप्र ।
 —भाग, वि (म) मौमन्वशब्दिन् ।
 —भारत, म पु (म न) व्यम्प्रगान
 दलोकमन इतिहासयथ ।
 —भाष्य, म पु (म न) अष्टाध्यायीपूत्राणा
 पदार्थिकृत इतिभाष्यम् ।
 —मास, म पु (म न) (१८) गानर-
 गन्-श्रीटक महिष-वराह-उष्ट्र-मथ-मासम् ।
 —माई, स स्त्री (स + हि) दुगा २ काली ।

- माया, म स्त्री (म) प्रकृति (स्त्री)
 २ दुगा ३ गगा ४ गौनमनुदाननी ।
 —मारी, म स्त्री (म) मारिका, चनमार ।
 —मुनि, म पु (म) मुनिपुत्र, मुनीन्द्र ।
 —मूल्य, वि (म) महाय, बहुमूल्य ।
 —यज्ञ, म पु (म) इहय्याग २ अर्थ
 प्रत्यह काया पचयणा (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ,
 पितृयज्ञ नृयज्ञ, बलिदैत्यदेवयज्ञ) ।
 —गाम्, म स्त्री (म) मृत्यु ।
 —युग, म पु (स न) चतुर्वर्गी ।
 —रथी मं पु (म महारथ) महायोध ।
 —राना, म पु (म महाराज) रानैधर,
 रात्रे, नृपश्रेष्ठ मन्त्राज (पु), अग्निमज ।
 —राजधिराज, म पु (स) चक्रवर्त-मार्ज-
 मीम-नृप ।
 —रात्रि, स स्त्री (म) महाप्रलयापकार
 २ दे 'महानिशा' ।
 —रानी, म स्त्री (स महाराणी) अधिराणी ।
 —हाम, स पुं (स) अहाम, अति, हाम
 हानितम् ।
 महाजन, म पु (म) नरर्षभ, पुरुषोत्तम
 २ मापु ३ धनिक, धनश्रेष्ठ ४ कुम्भीरिक
 दिन, बाहुपिक पितृ ऋणद ५ वणिक् (पु)
 ६ आय, मनन ।
 महाननी, स स्त्री (स महाजन >) वृद्धि
 जीविका, अर्थप्रयोग, कुम्भीर, कौम्भीय
 २ लिपिशिषेप ।
 महात्म, स पु, दे 'माहात्म्य' ।
 महान्मा, स पु (म-त्मन्) महाशय, महा
 नुभाव, महामनम् (पु), उदारचरित ।
 महान्, वि (म महत्) दे 'महा' (१३) ।
 महाराष्ट्र, स पु (म) दक्षिणापथे प्रातविशेष ।
 महाराष्ट्री, म स्त्री (स) दे 'महट्टी'
 २ प्राकृतभाषाभेद ।
 महावत्, म पु (महाभाज) हस्तिपक,
 हाम्निग गवताव, निषादिन, आपोरण,
 इभ्य ।
 महावर, म पु (स महावर्ण) याव-यावक-
 अन्कन-आहु रम ।
 महावरा, म पु, दे 'मुहावरा' ।
 महाशन, वि (म अर्धर, धम्बर, औदरिक,
 उदरमरि ।
 महाशय, स पु (म) महात्मन्, महामनम्,

सञ्जन, आर्य, उदार, चेतस-मति धी, महा
 नुभाव । (स्त्री महागया) ।
 महास्पद, वि (स) उच्च, पदस्थ अधिरात्स्न
 २ शक्तिशालिन्, सशक्त, शक्तिमत् ।
 महि, म स्त्री (स) दे 'पृथिवी' ।
 —पाल, स पु (स) दे 'राना' ।
 महिमा, स स्त्री [म महिमन् (पु)] महत्त्वं,
 माहात्म्य, गौरव, महत्ता, गरिमन् (पु),
 गुणत्वं २ स्त्री (स्त्री), शोभा, प्रभाव,
 मत्ता, जेज् (न), अन्त, विभूति (स्त्री)
 ३ सिद्धिविशेष (योग) ।
 महिला, सं स्त्री (सं) नारी, रामा, स्त्री,
 ललना, वनिता ।
 महिष, स पु (स) असुरविशेष २ दे 'भैंसा'
 ३ अभिषिक्तो नृप ।
 महिषी, स स्त्री (स) ३ 'भैंस' २ पट्टराशी ।
 मही, स स्त्री (सं) दे 'पृथिवी' ।
 —धर, स पु (स) पर्वत, गिरि २ शेषनाग ।
 —प, पति, सं पु (स) दे 'राजा' ।
 —रह, स पु (सं) वृक्ष, पादप ।
 —सुर, सं पु (स) ब्राह्मण ।
 महीन, वि (महाक्षीण) दे 'वक्ष' तथा
 'बारीक' ।
 महीना, सं पु [स मास, मास (पु), मि
 का माह] दे 'मास' २ मासिवेतनम् ।
 महुआ, स पु (स मधुक) गुटपुष्प, मधु
 द्रम, मधु, मधुक, मधु, पुष्प-श्रेष्ठ खव,
 माधव ।
 महेंद्र, स पु (स) दे 'इन्द्र' २ विष्णु
 ३ पवनविशेष ।
 महैरा, सं पु (सं) शिव २ ईश्वर ।
 महेश्वर, स पु (सं) शिव २ परमेश्वर
 ३ सुवर्णम् ।
 महेश्वरी, सं स्त्री (स) दुर्गा, वावनी ।
 महोत्पव, स पु (सं) महा-सुण-उद्धर्ष-
 पवन् (न) महत् (न) मह ।
 महोदधि, सं पु (सं) महा-सागर-अधि ।
 महोदय, सं पु (सं) महाशय महानुभाव
 (अदरमूर्त्क मवापन) २ ऐश्वर्य, वैभव
 ३ स्वर्ग ४ भोज । (स्त्री महादया)
 महोपाध्याय, सं पु (स) प्राध्यापन,
 पण्डित ।
 महोपय, सं पु (सं न) भूम्यादुप्य २ दुष्टी

३ लघुन ४ वराहोत्तर ५ वत्सनाभ
 ६ विष्णुली ७ अनिविषा ।
 माँ, स स्त्री (स मा) दे 'माता' ।
 मागा, सं स्त्री हि मागना) दे 'मागना' ।
 स पु २ आवस्ववता, वृष्टा, निवृष्टा,
 प्रेम्ण, लिप्ता ३ प्राथनाविषय ।
 माग, सं स्त्री (स मागं ?) सीमत,
 *मूर्द्धजरेखा ।
 —निकालना, कि स, सीमन्वति (नो धा),
 सीमत उज्जी (भ्वा प अ) ।
 —चोटी, सं स्त्री, वेदा, विन्वाम सस्कार ।
 —जली, स स्त्री, विषवा ।
 माँगना, कि अ (स मार्गण >) मिश्र
 (भ्वा आ से) शिक्षादन कृ । कि स,
 याच् (भ्वा आ से), अभिप्र अर्थ (लु
 आ से) २ ऋणं कृ अथवा मद् (क प से) ।
 सं पु, शिक्षण, शिक्षा, शिक्षादन, वाचन-ना,
 यात्रा, अभ्यर्थन ना, प्राथनना ।
 मागने योग्य, वि, याचनीय, अभिप्र-अर्थ-
 नीय, प्राथयितव्य ।
 मांगनेवाला, स पु मिश्र, मिथुक, याचक,
 प्राथक, प्राथिन् इ ।
 मागलिक, वि (स शिप शुभ-वर (स्त्री स्त्री),
 शिव, शुभ, कल्याण (स्त्री स्त्री), भगवत्, भद्र,
 मांगल्य ।
 मागल्य, वि (सं) दे 'मागलिक' । स पु
 (स न) शुभ, भद्र, कल्याण, शिवम् ।
 मागा हुआ, वि, प्राथित, याचित ।
 माँजना, कि स (सं मार्जन) प्रस-मृज्
 (अ प से, लु), प्रक्षल् (लु), धाच्
 (भ्वा प से, लु), अव निर, निन् (लु
 उ अ), पवित्री कृ २ पतनगुणं तीक्ष्णीकृ,
 मृज् (भ्वा प से) । मि अ, अन्वयम्
 (रि प से) । सं पु, मात्रन, प्रशालन,
 धावन, अन्वयनम् ।
 माँजने योग्य, वि, मृज्य, माननीय, प्रशाल
 नीय, धावनीय ।
 माँजनेवाला, सं पु, मात्रन, प्रशालक,
 धावर, पावर, शापर ।
 माँजा हुआ, वि, मानन, मृज, प्रशालित इ ।
 माँझा, सं पु (सं स-प >) पुत्रिन, नदी
 मध्यस्थ, जीव २ वरप्रदत्त मन्त्रोत्तम ३ औदा
 दिव पावनेर ४ प्रताप, रथ ।

माँझा, स पु (स मानन >) *पतगायण
गुञ्जि, *मानन ।

माँझी, म पु (म मध्य >) दे 'महाह' ।

माँड, स प (स मट-ड) भक्तमट, आच प,
पिच्छल-ज्जा, निम्न(मा)त्र, मासर, पिच्छा
उत्त ।

माँडना, क्रि म, दे 'रौदना', 'मसलना'
और 'पूषना' ।

माँडलिक, म पु (स) मंडल, इश्वर-अधीश,
अध्यक्ष ।

माँडव, म पु (स मडप) औदाहिकमटप ।

माँडवी, म स्त्री (म) भरतपरनी बुदाध्वजपुत्री ।

माँडा, स पु (स मडक) पिष्टकभेद ।

माँडी, म स्त्री (स मट >) इवेनमार
मट-डम् ।

माँट्रिक, वि (स) मत्र, मन्वन्विन्द विषयक ।
म पु (स) मत्रविद्, वेदपाठिन् २
अभिचारिन्, माविन् ।

माँट्र, वि (स मट) नि श्रोक, खिन्न, विवग
२ मदनर, निवृष्टनर, मलिनतर ।

माँट्र, म स्त्री (देश) शुष्कगोमयराणि,
शुष्कचय २ (दिसपयना) गुहा, गहर,
विवरम् ।

माँट्रगी, स स्त्री (फा) रोग २ क्लानि
ग्लानि (स्त्री) ।

माँट्रा, वि (फा) श्रात, क्लान्त २ अवशिष्ट
३ रुग्, रोगिन् ।

माँम, स पु (सं न) पिशिन, पल, पल्ल,
तरस, ब्रह्म, आनिष, असन, कीर, जागल्म् ।

—का घी, स पु, माम, मर स्नेह, मैदम
(न) ।

—पेशी, म स्त्री (स) शरीरस्थ मान
निष्क, मामविटी, स्नमा, वरनमा, स्नायु,
स्नाव (ये पुन्य मे ५००, स्त्रियों मे ५००
होनी है) २ द्वितीयसप्ताहे गभरूपम् ।

—भक्षक, स पु (स) मास, अद् (पु)
अ भोविन् भक्षिन्-अहारिन्-आशिन् ।

—भक्षण, म पु (स न) माम भो-न
अशन अदन-आहार ।

—रस, स पु (म) मानमड-ड, दे 'यननी' ।

माँमल, वि (स) पीन, पीवर, मामपूर्ण
२ पुष्ट, दृढाग ३ बलवद्, बलिन् । स पु,
दे 'उड्ड' ।

मा, म स्त्री (म) लक्ष्मी (स्त्री)
२ मातृ (स्त्री) ।

—याप, म पु, दे 'मातापिता' ।

माइकरोमीटर, स पु (अ) अणुनापकम् ।

माई म स्त्री [स मातृ (स्त्री)] दे 'माता'
२ वृद्धा, जरती स्थविरा ।

—का लाल, स पु, उदार, वदान्य
२ वीर शूर ।

माइलू, वि (अ) वधार्थ, न्याय्य, उचित,
युक्त, योग्य २ पर्याप्त ३ उत्तम ।

माखन, मं पु, दे 'मकहन' ।

—चार, म पु, श्रीकृष्ण ।

मागध, स पु (स) मगधवामिन् २ जरा
मध ३ चारण, वदिन् ।

माघ, म पु (स) शिशुपालवधमहाकाव्य
लेखको महाकविविशेष । २ तपम् (पु),
मामविशेष (जनवरी-फरवरी) ।

माजरा, स पु (अ) वृत्त, वृत्तान्त २ घटना ।

माजाया, वि (सं मानान) मोदर, सद्बोदर,
सोदर्य ।

मानू, स पु (फा) मन मायि छिद्रा, फल,
मायिका ।

—फल, स पु (फा+म) माया-मायि
छिद्रा, फल, मायिकम् ।

मानून, म स्त्री (अ) अवलेह, लेह
(औषध) २ भंगामिश्रितावलेह ।

माट, म पु (हि मटका) बृहन्नीलमाड
२ 'मटका' ।

माटी, म स्त्री, दे 'मिट्टी' ।

माणिक, म पु (स माणिक्य) शोग, रत्न
उपल, पञ्चराग, लोहितक, रत्नम् ।

मातग, म प (स) द्विप, गन ।

मात, स स्त्री (अ) परा-अभि परि, भव,
पराजय २ पराजित, परास्त, पराभूत ।

—करना, क्रि म, विवि (स्वा आ अ),
पराभू ।

—डोना, क्रि अ, पराभू (कर्म), विजित
(वि) भू ।

मातग्लि, वि (अ मोटद्रिन्) अनु-जशीन,
मध्यम, मामान्य, मध्यमत्रकृत्तिक ।

मातजर, वि (अ मोनविर) दे 'विषसनीय' ।

मातवरी, स स्त्री (अ+फा) दे 'विषस
नीयता' ।

मातम, म पु (अ) मृतक, शोक दहन,
विलाप परिदेवना।
—प्राणा, म पु, शोकमदनम्।
—पुर्वा, सं स्त्री (अ + का) आत्ममा, आत्मन,
गत्वन्, शोकमन अनुशोचन्म्।
—पुर्वी करना, क्रि म अनुशोक प्रकाश
(प्र) अनुशुच (श्वा प से), मृतकवधुत्
त्माश्रम (प्रे)।
मातमी, वि (का) शोक-मूचक प्रकाशक पूर्ण।
—लिवाम्, स पु (का + अ) शोक-वैश (व)।
मातरिदशा, स पु (म-श्च) वायु दे
वान्, पवन अनिल।
मातलि, स पु (म) इद्रसारणि।
—सूत, म पु (स) सुरेश, शचीपति, इद्र।
मातहत, क्रि (अ) अधीन, आवत्।
मातहती, सं स्त्री (अ मातहत) अधीनता,
आवृत्ता।
माता, सं स्त्री [स मातृ (स्त्री)] जननी,
जनयित्री शुश्रू (स्त्री), जनीनि (स्वा),
नित्री, सवित्री, प्रभु (स्त्री), अका, अवा,
अविका, अवाल्मिका, माता (मदचित्)।
२ वृद्धा, स्थविरा, पूज्यनारी ३ गौ (स्त्री)
४ भूमि (स्त्री) ५ शीतला-स्त्री, दे 'वैचक'
६ मखरीरिका, दे 'खमरा'।
—दलना, क्रि अ, शीतला राम् (रि प से)।
—निकलना, क्रि अ, शीतला आविर्भू।
—पिता, स पु पितरी, मातापितरी, मातर
पितरो, मातानी, अवाजनवी।
—मह, स पु (स) मातुर्नक।
—मही, स स्त्री (सं) मातुजननी।
होत्री—म स्त्री, लघुमखरिका (हि लफडा
काकडा)।
माता, वि, दे 'मत्त' (२)।
मानुल, स पु (स) मानुभ्रातृ, पितृदाल,
मातृ।
मानुली, सं स्त्री (सं) मातुल-जानी,
मातुल-पत्नी।
मातृ, म स्त्री (स) दे 'भाता'।
—भाषा, सं स्त्री (स) जनभाषा।
मातृक, वि (मं) मातृ विषयक-सम्बन्ध।
मं पु (म) दे 'मत्त'।
मातृका, सं स्त्री (मं) दे 'मात' ७ उप
वि, माता, मातृजननी ३ भाषा, भाषा,

अरुपाली ४ अ द्यौत्वादय सप्तदेव्य ५ स्वर
वर्णविहानि, मात्रा (१, ि, इ)।
मात्र, अव्य (स-मात्र) ष्व, केवलम्।
मात्रा, सं स्त्री (स) परिप्र, गाग, मन,
अश, भाग ७ सकृदेव्य जीवभा
३ मायिका, बला, हस्तवर्णोच्चारणोक्ति
काल ४ स्वरवर्णविह (१, ि, इ)।
मातृवर्ष, म पु (म न) दे 'मत्तर'।
माथा, म पु (स मन्तक-क) दे 'मत्तक'
(२) अग्र, अग्र भाग-देश ३ मूर्धन्य (३)-
शिरसम्।
—पञ्ची, } सं स्त्री, दे 'मगतपञ्ची'।
—पिट्टन, }
—टेकना, मु, चरणयो पद (श्वा प से)।
प्रगम् (श्वा प अ)।
—उत्कना, मु, भाविमकट आशक (श्वा
आ से)।
—रगडना, मु, पादयो पतिला वाच
(श्वा आ से)।
मादक, वि (स) मद-कारक-अनक।
मादकता, सं स्त्री (स) मदकारकता।
मादर, सं स्त्री [का, मि स मातर (मातृ
से)] जननी, जनीनी, मातृ (स्त्री)।
—ज्ञाद, वि (का), मि स, मातृजान्
> सहज, स्वाभाविक, नैसर्गिक, जात्याजमना
नमत (अध, वधिर इ) २ रिगंर,
नग्न ३ सोदर, सहोदर।
मादा, सं स्त्री (का) नारी, स्त्री, स्त्रीजानी
दवी जीव।
मादा, सं पुं (अ) प्रहृति (स्त्री) उदा
दानकारण २ योग्यता ३ दे 'धीप'।
माधव, मं पुं (स) विष्णु, नारायण
२ वैराग्य ३ वसन।
माधवी, सं स्त्री (सं) वामनी, सुगंधा,
चंद्रवती, मद्रता, अरिमुक्तक माधविना
२ सुप्रभेद।
माधुरी, म स्त्री (मं) मधुरता २ सुंरता
३ मधम्।
मातुर्य, मं पुं (म न) मधुरता-रह,
मिष्टस्व, स्वादुस्व मधुमयता मिष्टता २ मीन्द्र्य,
लावण्य ३ विचद्रवीभावमयी हृद, वाच्य
सुप्रभेद।

माध्यदिन, वि (म >) मध्य, मध्यम, मध्य
 बर्तित् । स पु, मध्याह, मध्य(ध्वे) दिनन्,
 उदिनम् २ वाजसनेयिसंहिताया शास्त्रविशेष ।
 माध्यम, वि (स) माध्यमक [—मिक्ता
 (स्त्री)], माध्यमिक (—मिकी स्त्री)
 माध्य [—ध्या (स्त्री)], केन्द्रीय, मध्यम ।
 स पु (स न) उपकरण, साधन २ मृद
 सदेशहर ।
 माध्यमिक, वि (स) मध्य, मध्यम, मध्य
 बर्तित् । स पु बौद्धसम्प्रदायविशेष ।
 माध्यस्थ्य, स पु (स न) दे 'मध्यस्थता' ।
 माध्वी, स स्त्री (स) मध्यादिनिमित्तयुता
 २ माधवी, वासन्ती, सुगन्धा ।
 मान, स पु (स) गर्व, अभिमान, दर्प,
 अहकार, अवलेप २ समान, प्रतिष्ठा, आदर,
 समावना, पूजा, प्रश्रय-यण ३ कोप, प्रीति
 प्रसाद-अभाव । (स न) यौतव, पीतव,
 माय्य, दुबय (हि तौल नाप) २ प्र-परि-
 माण, मात्रा ३ इयत्ता, विरगार ४ भार,
 गुस्त्व, तोष् ५ मारभाव, परिमाण, मात्र,
 माड ६ मान, दट-मूत्र ७ साधन, हेतु,
 युक्ति (स्त्री) ।
 —करता, क्रि स, सद-पुरस्, क, सनन्
 (प्रे), पूज्-मद् (जु) । क्रि अ, मान धा
 (जु उ अ), कृष (दि प से) २ इप्
 (दि प अ), गव (भ्वा प मे) ।
 —चित्र, स पु (स न) देशालेख्य, प्रदेश
 चित्र, दे 'नक्शा' ।
 —मंदिर, सं पु (स न) वेधशाला २ कोप
 मवन, मानगृहम् ।
 —मनौती, स स्त्री (सं + हि) दे 'मन्न' २
 पारस्परिकप्रेमम् (पु न) ३ वीरप्रसा
 दनने ।
 —मोचन, स पु (सं न) कोप, उपदानन
 अपनयनं, प्रसादनम् ।
 —रखना, क्रि स, दे 'मान करना' क्रि स
 २ स्वभिमान-आत्मसमान रख (भ्वा प मे) ।
 —हानि, स स्त्री (स) अप-परि-वाद,
 अनभाषा अवधीणा, मानभय, अवन्ननना ।
 मानता, स स्त्री (हि मानना) दे 'मन्न'
 २ समान, प्रतिष्ठा ।
 मानना, क्रि अ (स मनन) क्लृप् (प्रे),

तर्क (जु), उत्प्रेष (भ्वा आ से) २ अगी
 स्त्री, कृ अभ्युपगम, अभ्युप र (अ प अ),
 मन् (दि आ अ) ३ सम्नातामिन् मू ।
 क्रि स, दे 'मानना' क्रि अ २ दक्षप्रवीण
 पूज्य मन् (दि आ अ) ३ श्रद्धा (जु उ
 अ), विशस् (अ प से) ४ दे 'मन्न
 मानना' । स पु, स्वी-अगी, वरण-कार,
 अभ्युपगम-गमन, कल्पन, उत्प्रेक्षा-क्षा,
 विशसनम् ।
 माननीय, वि (स) पूज्य, पूजनीय, सत्काय,
 आदरणीय, सम्मान्य ।
 मानने योग्य, वि, स्वी-अगी, कार्य, महत्त्व,
 अभ्युपेय २ श्रद्धेय, पूज्य, विशसनीय ।
 माननेवाला, स पु, स्वीकर्तृ, मन् २ श्रद्धा
 जु, विशामिन् ।
 मानव, स पु (स) दे 'मनुष्य' ।
 मानवी, स स्त्री (स) मानुषी, स्त्री, नरी ।
 वि, मानव, मानुष, पीरपेय, मनुजोक्ति ।
 मान्य, स पु (स न) मनन चेतस् (न),
 हृदयं, दे 'मन' (१४) । २ वैशानवर्ती
 ऋषिविशेष ३ कामदेव, कदम् । वि,
 माननिक, चैत बौद्धिक, हार्दिक ।
 —शास्त्र, स पु, (स न) मनोविद्वानम् ।
 मानसिक, वि (म) मनोभव, मनस, दे
 'मनन' वि ।
 माना हुआ, वि, स्वी-अगी, कृत, मन २ पूजित
 प्रतिष्ठित, विश्ल ।
 मानिद, वि (का) तुल्य, सदृश, अन् ।
 मानिक, स पु, दे 'मानिक' ।
 मानित, वि (स) आदृत, प्रतिष्ठित, पूजित ।
 मानिनी, स स्त्री (स) रणप्रतिष्ठा । वि,
 मानवती, अभिमानिनी २ रण, प्रतीया,
 दुनिता ।
 मानी, वि (स निन्) अहकारिन्, दृप्त,
 यथन २ समानित, प्रतिष्ठित । स पु, रूढ
 नायक २ सिंह ।
 मानी, स पु (अ) अर्थ, तत्पर्य २ तत्त्व,
 रहस्य ३ प्रवीणम् ।
 मानुष, स पु (स) मनुष्य, नर, दे
 'मनुष्य' २ प्रनाभेद (धस) । वि, मानु
 षि(ष)क, मानुष्यक, मनुष्यमवाधन, मानुष्य,
 मानुषीय ।

मानुषिक, वि (म) दे 'मानुष' वि ।
 मानुष्य, म प (म न) मनुष्यत्वम् । वि,
 दे मानुष वि ।
 माने, म पु > 'मनी' (१३) ।
 मानो, अव्य (हि मानना) इव, (प्राय मद्)
 (दि आ अ) मे अनुवाद करते हैं ।
 मान्य, वि (स) दे 'माननीय' ।
 माप, म स्त्री (हि मापना) (सामान्य)
 मान प्रपरिमाण, यौ (पौ) त्व, पच्य,
 द्रव्य २ (ग्रादि) मान, दृढ सूत्र इ,
 ३ (वट्टा) भारिमान, माड मात्र ४ (पात्र)
 भ्रमीमान, प्रस्थ ५ मान, मापन, माननिरूपण
 ६ परिमाण इयत्ता, दे 'मान' ।
 मापक, म पु (सं) माननिरूपक, माठ (पु)
 २ दे 'मप' (१४) ।
 मापन, मं पु (म न) दे 'मापना' स पु ।
 मापना, कि म (मं मापन) प्रपरिमा
 (अ प अ जु आ अ, दि आ अ)
 मान निरूप (जु) २ तुम् (जु), भारं
 निरूप, दे 'तोडना' । म पु, मन, मान
 निरूपणं मापन मरि (स्त्री), तोडन,
 भारनिरूपणम् ।
 मापने योग्य, वि, परि, नेय, तोल्यित्वम् ।
 मापनेवाला, म पु, दे 'मपक' ।
 मापा हुआ, वि परि भिन्, नानमान, तोलित ।
 माफ, वि दे 'मुआफ' ।
 माफिक, दे 'मुआफिक' ।
 माफी, दे 'मुआफी' ।
 मासना, म स्त्री (स ममता) दे 'ममता'
 (१४) ।
 मामा, स पु, दे 'मातुल' ।
 मामा, स स्त्री (का) मातु (स्त्री) जननी
 = वृद्धा ३ दाम्नी ४ धात्री, मातृता ।
 मामि (म) ला, म पु दे 'मुआमिला' ।
 मामी, म स्त्री दे 'मातुली' ।
 मामू, म पु, दे 'मातुल' ।
 मामूल, वि (अ) दे 'अदत' २ रीति -
 परिपत्री (स्त्री) ।
 मामूली, वि (अ) साधारण, मामाव ।
 मायका, म पु (हि माय) उदय्य विदु -
 मयु गृह्य ।
 मायका, वि (का) जानक, मरुच, प्रवा
 २ भिक्षित ।

माया, सं स्त्री (म) द्रव्यं, धन, सपद् (स्त्री)
 २ अज्ञान, भ्रांति (स्त्री), अविद्या ३ छल,
 कपट ४ प्रवृत्ति (स्त्री), सृष्टे उपादान
 कारण ५ शक्तिशक्ति (स्त्री) ६ इंद्रजाल
 कुहक ७ देव, स्त्रीलासिक (स्त्री) प्रेरणा
 ८ ममता-स्वम् ।

—कार, म पु (सं) मायाजीविन, वेद
 जालिक ।

—जोडना, कि स, धन स वि (स्वा प अ) ।

—मोड, स पु (स) जगज्जाल २ मयता
 स्वम् ।

—रूप, वि (स) मायामय, अलौक, भ्रांति
 मय, मायिक ।

—रती, सं स्त्री (सं) रति (स्त्री), काम
 यत्नी ।

—वाद, म पु (स) भाविवाद, जीवजग
 न्निम्ब्यात्ववाद ।

मायाविनी, स स्त्री (स) मयिनी, कपटिनी,
 वचनशील्य २ ऐंद्रजालिकी ।

मायावी, स पु (स विन्) मायिन् कपटिन्,
 वचक, धूर्त, शठ २ ऐंद्रजालिक, कुहुक
 जीविन्, मायावार ।

मायिक, वि (स) कृतक, कृत्रिम, २ दे
 'मायावी' (२) ।

मायी, वि (म विन्) मायाविन्, धूर्त, वचक,
 कपटिन् ।

मायूस, वि (का) दे 'निराश' ।

मायूसी, म स्त्री (का) दे 'निराशा' ।

मार, म पु (स) वामदेव २ विघ्न
 ३ विष ४ धुम्पूर ।

मार, म स्त्री (सं सु) मारणं, हननं,
 हिंसनं २ पात, वध, हत्या ३ ताडनं, आह
 नन, प्रहरण ४ आपात, प्रहार ५ युद्धम् ।

—का, म स्त्री, युद्ध २ वध, पात, हननं,
 हिंसनम् ।

—घाट, } सं स्त्री, मारता, मारणताडनं,

—पीट, } अभिमर्द, अभिमर्षण ।

—खाना, } सु, गट्ट प्रद (वर्म) ।

—रुइना, } सु, गट्ट प्रद (वर्म) ।

—गिराना, सु, अहत्य निपट (प्रे) ।

—डालना, सु, हन् (अ प अ), गृह्या
 पद् (प्रे) ।

—बैठना, मु, परद्रव्य कपटेन आत्मसात्-कृ ।
 —भगाना, मु, विद्रु (प्रे), पलाव् (प्रे),
 सर्वथा परा जि (भ्वा आ अ) ।
 —मारना, मु, भृश-अत्यर्थं निर्वाय तद् (चु) ।
 —लाना, मु, लुट् (चु), अन्यायेन अपह
 (भ्वा प अ) ।
 —लेना, मु, दे 'मार बैठना' ।
 —हूटाना, मु, बलेन अपस (प्रे)-विद्रु (प्रे) ।
 मारक, वि (म) घातक, हिंसन, महागक,
 नाशक ।
 मारका^१, स पु (अ मार्कं) चिह्न, लक्षण,
 अभिज्ञानम् ।
 मारका^२, स पु (अ) युद्ध, मग्राम २
 विविष्ट, वृक्ष-घटना ।
 मारकीन, स स्त्री (अं नैवकिन्) *मारवाँन,
 स्थूलवस्त्रभेद ।
 मारण, सं पु (स न) हनन, हिंसन,
 व्यापादन २ ताविकप्रयोगभेद ।
 मारतौल, म पु (पुतं० मोटेली) महा-शृङ्खल,
 घन विघन ।
 मारना, क्रि स., (स मारण) शृङ्कापद
 (प्रे), हृत् (अ प अ), हिंस (भ्वा रु
 ष ने) सूद् (चु) २ तड (जु), प्रह
 (भ्वा प अ), आहन् (अप अ) ३ पीड्
 (चु), डु लयति (ना धा) ४ मल्लयुद्ध
 दिपु निपद (प्रे)-पराजि (भ्वा आ अ)
 ५ (विवाहादि) अ पिधा (जु उ अ),
 आ-म-न् (स्वा उ से) ६ मुच प्रक्षिप् (तु
 प अ), आम (दि प से) ७ नियम्
 (क प से) निरप् (रु प अ) ८ नश
 ध्वम (प्रे) ९ (भावादिक) अस्मीकृ
 १० अन्यायेन आत्मसात् कृ ११ अनुन्धा
 (भ्वा प अ) १२ जि (भ्वा प अ)
 १३ ददा (भ्वा प अ) । सं पु, मारण,
 हनन, निपूदन, हिंसन, विद्वसन, व्यापादन,
 प्रमापण २ हत्या, बध, हिंसा, घात
 ३ आह्वनन, ताडन, प्रहरण ४ पीडन
 ५ निपादन ६ पिधान ७ नाशन, ध्वसन
 ८ भस्मीकरण ९ अन्यायेन आत्मसात्करण
 १० दशन, ६ ।
 मारने योग्य, वि, हतव्य, हिंसितव्य, व्यापाद्य
 २ तावयितव्य, जाह्ननीय, ६ ।

मारने-गला, स पु, घातक, हिंसक, ताडक ।
 मारपैच, म स्त्री (हिं मारना + पैच) कैव,
 कपटोपाय ।
 मारवाड, म पु, राजस्थानस्थ भागविशेष ।
 मारवाडी, स पु, मारवाडवासिन् । सं स्त्री
 मारवाडी, मारवाडभाषा ।
 मारव, वि (हिं मारना) दे 'मारा हुआ' (१ २) ।
 —जाना, क्रि अ, हन्-हिंस-भूद् (कर्म) ।
 —मार, स स्त्री, मिथ ताडन, कलि, सपथं ।
 क्रि वि, सत्वर, सवेग, शीघ्रतया ।
 —मार करना, मु, त्वर् (भ्वा आ से),
 शीघ्र या (अ प अ)-कृ ।
 —मारा फिरना, मु, मुधा परिभ्रम् (भ्वा दि
 प से), क्षीणवृत्तिक (वि) पर्यट (भ्वा प से) ।
 —हुआ, वि, हत, व्यापादित, मारित,
 २ ताडित, प्रहृत आहत ।
 मारी, स स्त्री (स) दे 'मरी' ।
 मारत, स पु (स) वाहु, मरुद् (पु),
 मरुत ।
 —तनय, म पु (स) पवन, सुत पुत्र-ज,
 मारति, आजनेय ।
 मारु, स पु (हिं मारना) रागभेद २ रण,
 मेरी-डुडुभि । वि, मारक, हृदयवेषक ।
 मारु, अव्य (हिं मारना) कारणेन-गात्, हेनो ।
 मार्ग, सं पु (सं) अध्वन् पथिन् (पुं), पथ,
 वर्तन् (न) २ चरणपथ, पदवी वि (स्त्री),
 पथा, पदवी ति (स्त्री) ३ प्रतोटी, रात्रपथ,
 रथ्या, वाहनी, श्रीपथ, सरणी-पि (स्त्री)
 ४ बोधी-पि (स्त्री), विशिखा ५ उपाय,
 युक्ति (स्त्री) ।
 मार्गाशीर्ष, स पु (स) आग्रहायणिक,
 मार्गं, मार्गशिर-रस् (पु), सहस् (पु) ।
 मार्जन, म पु (स न) मार्ष्ट-शुद्धि (स्त्री),
 मार्जना, मृजा, प्रक्षालन, धावन, शोधन, पवन,
 निर्मूलोत्तरणम् ।
 मार्जनी, स स्त्री (स) दे 'झाड़ू' ।
 मार्जार, सं पु (स) दे 'बिल्ला' (-री स्त्री) ।
 मार्जित, वि (म) पूत, शोधित, प्रक्षालित, धौन ।
 मार्तंड, म पु (स) सूर्य २ अव्युप
 ३ शकर ।
 मार्दव, म पु (स न) दे 'शुदुता' ।
 मार्कत, अव्य (अ) दे 'दारा' ।

मामिक, वि (स) प्रभावशालिन् हृदयमादिन् ।
माल, स पु (अ) सपद-संपत्ति (स्त्री),
वित्त, अर्थ २ सामग्री, परिच्छेद २ पण्य
आत, पणसा (पुं बहु), कव्यद्रव्याणि (न
बहु) ४ राजस्व, का ५ उत्पन्न प्रसन्न,
पल ६ स्वादुभोजन ७ गोपयु, धनम् ।

—प्राणा, स पुं (का) भादार, पण्यागारम् ।

—गाढी, सं स्त्री (क्रा+हि) द्रव्यशकटी,
दे 'गाढी' ।

—गुजार, स पुं (का) राजस्वदायक,
भूमिकरद ।

—गुजारी, सं स्त्री (का) भूमिक्षेत्र, कर
शुल्क ।

—टाल, स पु, धनं, वित्त, सपद् (स्त्री) ।

—दार, वि (का) धनिक, धनाढ्य ।

—सरत्, वि (का) रिच्छद्वय, धन, यत्किं मत्त ।

माला—, वि, सुसपन्न, सुसमृद्ध ।

मालकंगनी, स स्त्री (हिं माल+न कर्तुनी)
महाज्योतिर्मती, वसुनी, कनकरुभा, सुरलता,
तीव्रा, तेजस्विनी (शताभेद) ।

मालती, स स्त्री (स) सुमना, सुमनसु
(स्त्री, न), जातीनि (स्त्री) २ ज्योत्स्ना
३ रात्री ।

मालदह, स पु (देश०) बिहार राज्यस्य
नगरविशेष ० आश्रमभेद ।

मालपु(पू) आ, सं पु (अ माल+स पूष)
पूष, पिष्टय, दे 'पुआ' ।

मालवा, स पुं (स माल+व) अरविदेश ।

मालवीय, वि (स) मालवसम्बन्धन् । स
पु, मालववासिन २ विप्रभेद ।

माला, स स्त्री (स) मान्-वै, सज् (स्त्री),
माल(लि-ला)ना, अपीड अवतस, अनिनि
(स्त्री) २ पक्ति-आवलि-राजि श्रेणि (स्त्री)
३ समूह, निकर ४ अद्य-जप, माला ५ बंठ
माला, द्वार ।

—कार, स पु (स) दे 'माली' ।

—कैरना, सु, ईश्वरं, भन (भ्वा उ अ),
प्रगर्भं नप (भ्वा ष से) ।

मालामाल वि (अ) समृद्ध, सम्पन्न, धन
धान्यपूज ।

मालिक, सं पुं (अ) परमेश्वर २ स्वामिन्,
प्रभु ३ पति [मालिका (स्त्री)] ।

मालिका, सं स्त्री (मं) पति श्रेणि त्वि

(स्त्री) २ माला ३ कठभूषणभेद ४ द्राक्षा,
मय ५ मालिनी ६ दे 'चमेली' ।

मालिकी, स स्त्री (का मालिक) स्वामित्व,
प्रभुत्व, स्वत्वम् ।

मालिकयुल, स पु (अ) व्यूहाणु, अणु ।

मालिन, स स्त्री (स मालिनी) मालाकारी,
मालिकी ।

मालिन्य, सं पु (स न) दे 'मलिनता'
२ अधकार ।

मालिन्यत, स स्त्री (अ) मूल्य, अर्थ २ धन
३ मूल्यवद्द्रव्यम् ।

मालिया, सं पु, दे 'मालगुजारी' ।

मालिरा, स स्त्री (स) अभ्यजनं, मर्दनं,
धर्षणं, सवाहनम् ।

माली, सं पु (स लिन्) मालाकार,
मालिक, उद्यानपाल २ जातिविशेष ३
मालायादिन् ।

माली, वि (अ माल) आर्थिक, सापत्तिक,
अर्थद्रव्यधन, विषयक ।

मालोद्गोलिया, स पु (मूनाती) विषाद
वायुरोग, दलैभिकोन्माद ।

मालीदा, सं पु (का) दे 'मलीश' ।

मालूम, वि (अ) ज्ञात, दे 'निदित' ।

माल्टाकीचर, स पु (अ) माल्टाचर ।

माल्य, स पु (स न) दे 'माल्या'(२)
२ पुष्प, कुमुमम् ।

मावस, सं स्त्री दे 'अमावस्ता' ।

मावा, स पुं (स मड) दे 'माल' २ किल्ला
३ गोधुमालिकस्य दुग्ध ४ अंड, नार्भं पीतिमद
(पु) ५ तमामु, भासर किण्व ६ सार,
निष्कर्ष ७ सामग्री, उपकरणजानम् ।

माशरी, स पु (का मशर) दुनिहर ।

मासा पर, स पु, दे 'मासा' ।
बल्लभ, प्रिय ।

माशूर, स पुं (अ) वान, दयित, बल्लभ,
प्रिय ।

माशूरा, सं स्त्री (अ) प्रिया, वान, दयिता,
बल्लभा ।

माश, सं पुं (सं) कुरुविन्, धान्यवीर,
शूचर, मागल, बलाश्र, पिश्व, पितृ
भोजन २ दे 'ममा' ३ 'माग' ।

माश, सं पुं (स पु न) वर्षाण, वर्षाह,
गुण्युष्णपद्मधाम्ना वात् विभक्तिगतम्

परिक्षीण-मातृविभव (वि) भू, दुर्देशा अपट (दि आ अ) ।

—मैं मिलना, सु, दे 'मिट्टी पत्नी होना' २ सु (तु आ अ) पचत्व गम् ।

मिट्टी, म स्त्री (स मिट् >) चुरन्, दे 'चूसा' ।

मिट्टू, स पु (म मिट् >) मधुरभाविन् २ शुक्र, वीर । वि मौनिन्, नृणीन्, प्रियवद् ।

अपने मुँह अथ मियां मिट्टू बनना, सु, विरत् (भ्वा आ से), आरमान श्लाघ (भ्वा आ से) ।

मिठाई, सं स्त्री (हिं मीठा) कादव, मिष्टान्, मिष्ट, मोदकजान २ दे 'मिठास' ।

मिठास, स स्त्री (हिं मीठा) मधुरतात्त्व, मधुरिमन् (पुं), मधुर्यै, मिष्टत्वम् ।

मिट (डि) ल, वि (अ) मध्य, मध्यम, मध्यवर्तिन् । स पु मध्यमा वधा (स्त्री) ।

—बी, वि, अल्पशिक्षित (हिरस्कारमन्त्रक) ।

—स्कूल, म पु, मध्यम-विद्यालय ।

मित, वि (सं) परिमित, सीमित, मनीम २ अल्प, स्तोक ।

—भापी, वि (स विन्) मित, वाचक-वध, अल्पवादिन् ।

—ओजी, वि (स जिन्) दे० 'मिताड़ी' ।

—ज्यय, स पु (स) अल्प परिमित

—ज्ययिता, सं स्त्री स्तोक, ज्यय-ज्ययिना, अमुक्तस्तत्वम् ।

—ज्ययी, वि (म-यित्) अमुक्तहस्त, अल्प शोक, ज्ययिन् ।

मिताशन, स पु (म न) परिमितभोजन, ईषदभक्षण, मिताहार २ वि दे मिताशी ।

मिताशी, वि (म शित्) मिताशरित्, परि मित-अप इषद, भोजित् भुज ।

मिनी, सं स्त्री (सं मिनि >) देशी-परिवि (पु स्त्री) २ रिने, रिषम ।

—चार, वि वि, निधिक्रमण, विप्र-वृत्तम् ।

मित्र, म पु (सं न) सुदृढ (पु) मणि (पु), बंध्य २ मङ्गर, मन्त्र

मित्रता, सं स्त्री (सं) मरिचक, मन्त्र, शीघ्र, शीघर, मैत्री, मैत्र, मित्रत्वम् ।

मिथुन, सं पु (सं न) दृढ, दं (२) १ (दि), जायायी, स्त्रीपुंसो युक्त-युगं युग

२ गति (स्त्री), सभोग ३४ राशि-ज्यन्, विशेष (ज्यो) ।

मिथ्या, वि (म अव्य) अनृत, अमत्य, विनय २ कल्पविद्, अदाम्भविन्, मायाप्रय ।

—चादी, वि (स दिन्) अनृत अमत्य-पृष्ठा-विनय, भाषिन् आलम्बिन्-वादिन् ।

मिनिमम, वि (अं) नूनतम, अल्पिष्ठ ।

मिन्नत, स स्त्री [अ, मि स विनति (स्त्री)] प्रार्थना, निवेदनम् ।

मिमियाणा, कि अ (अनु मिमिन् >) मिणमिणावते (ना घा), मे मेशब्द कृ, रेभ् (भ्वा आ से), उ (भ्वा आ अ, अवने) ।

मियाँ, स पु (फा) स्वामिन्, प्रभु २ पति, मर्तु ३ (संबोधनेयद्) महाशय ' महोदय ' (मुमल) ४ अध्याप्य ५ दे 'मुमलमान' ।

—मिट्टू, स पु (फा + हिं) मधुरभाविन्, मधुवाच (पु) २ शुक्र ३ मूर्त्य ।

मियान, सं स्त्री (फा) अपि, बोध ५ २ रत्न, विधानम् ।

मियाणा, वि (फा) मध्यम, मध्याकार ।

मियानी, सं स्त्री (फा मियान) पदाया मस्य मध्यमी वस्तुत्वं २ मध्यमा, मध्य कोष्ठक (पु) ।

मिरगी, म स्त्री (स मृगी) अपरमार, आमरम् ।

मिर्च, म स्त्री [स मरि(री)न्] (काली) कृष्ण, कौ(का)शक, दयाम, ऊ(औ)ष्ण, बहुकं, शाश्वत स्वदिव, धमदत्तनं, वेक्षण, जष विरोधि (न) पवित्रम् । (लज्) बु-रत्त, मरि(री)न्, नीत्रशक्ति (स्त्री), उच्चवला, भनटा, बहु धीरा तीक्ष्णा (मफेद) मित-मरि(री)न् वल्लीच, फवल, बहुलम् । वि, तीक्ष्ण उम, स्वभाव ।

मिर्च, म स्त्री [स मरि(री)न्] (काली) कृष्ण, कौ(का)शक, दयाम, ऊ(औ)ष्ण, बहुकं, शाश्वत स्वदिव, धमदत्तनं, वेक्षण, जष विरोधि (न) पवित्रम् । (लज्) बु-रत्त, मरि(री)न्, नीत्रशक्ति (स्त्री), उच्चवला, भनटा, बहु धीरा तीक्ष्णा (मफेद) मित-मरि(री)न् वल्लीच, फवल, बहुलम् । वि, तीक्ष्ण उम, स्वभाव ।

मिर्च, म स्त्री [स मरि(री)न्] (काली) कृष्ण, कौ(का)शक, दयाम, ऊ(औ)ष्ण, बहुकं, शाश्वत स्वदिव, धमदत्तनं, वेक्षण, जष विरोधि (न) पवित्रम् । (लज्) बु-रत्त, मरि(री)न्, नीत्रशक्ति (स्त्री), उच्चवला, भनटा, बहु धीरा तीक्ष्णा (मफेद) मित-मरि(री)न् वल्लीच, फवल, बहुलम् । वि, तीक्ष्ण उम, स्वभाव ।

मिर्च, म स्त्री [स मरि(री)न्] (काली) कृष्ण, कौ(का)शक, दयाम, ऊ(औ)ष्ण, बहुकं, शाश्वत स्वदिव, धमदत्तनं, वेक्षण, जष विरोधि (न) पवित्रम् । (लज्) बु-रत्त, मरि(री)न्, नीत्रशक्ति (स्त्री), उच्चवला, भनटा, बहु धीरा तीक्ष्णा (मफेद) मित-मरि(री)न् वल्लीच, फवल, बहुलम् । वि, तीक्ष्ण उम, स्वभाव ।

मिर्च, म स्त्री [स मरि(री)न्] (काली) कृष्ण, कौ(का)शक, दयाम, ऊ(औ)ष्ण, बहुकं, शाश्वत स्वदिव, धमदत्तनं, वेक्षण, जष विरोधि (न) पवित्रम् । (लज्) बु-रत्त, मरि(री)न्, नीत्रशक्ति (स्त्री), उच्चवला, भनटा, बहु धीरा तीक्ष्णा (मफेद) मित-मरि(री)न् वल्लीच, फवल, बहुलम् । वि, तीक्ष्ण उम, स्वभाव ।

मिर्च, म स्त्री [स मरि(री)न्] (काली) कृष्ण, कौ(का)शक, दयाम, ऊ(औ)ष्ण, बहुकं, शाश्वत स्वदिव, धमदत्तनं, वेक्षण, जष विरोधि (न) पवित्रम् । (लज्) बु-रत्त, मरि(री)न्, नीत्रशक्ति (स्त्री), उच्चवला, भनटा, बहु धीरा तीक्ष्णा (मफेद) मित-मरि(री)न् वल्लीच, फवल, बहुलम् । वि, तीक्ष्ण उम, स्वभाव ।

मिर्च, म स्त्री [स मरि(री)न्] (काली) कृष्ण, कौ(का)शक, दयाम, ऊ(औ)ष्ण, बहुकं, शाश्वत स्वदिव, धमदत्तनं, वेक्षण, जष विरोधि (न) पवित्रम् । (लज्) बु-रत्त, मरि(री)न्, नीत्रशक्ति (स्त्री), उच्चवला, भनटा, बहु धीरा तीक्ष्णा (मफेद) मित-मरि(री)न् वल्लीच, फवल, बहुलम् । वि, तीक्ष्ण उम, स्वभाव ।

मिर्च, म स्त्री [स मरि(री)न्] (काली) कृष्ण, कौ(का)शक, दयाम, ऊ(औ)ष्ण, बहुकं, शाश्वत स्वदिव, धमदत्तनं, वेक्षण, जष विरोधि (न) पवित्रम् । (लज्) बु-रत्त, मरि(री)न्, नीत्रशक्ति (स्त्री), उच्चवला, भनटा, बहु धीरा तीक्ष्णा (मफेद) मित-मरि(री)न् वल्लीच, फवल, बहुलम् । वि, तीक्ष्ण उम, स्वभाव ।

मिर्च, म स्त्री [स मरि(री)न्] (काली) कृष्ण, कौ(का)शक, दयाम, ऊ(औ)ष्ण, बहुकं, शाश्वत स्वदिव, धमदत्तनं, वेक्षण, जष विरोधि (न) पवित्रम् । (लज्) बु-रत्त, मरि(री)न्, नीत्रशक्ति (स्त्री), उच्चवला, भनटा, बहु धीरा तीक्ष्णा (मफेद) मित-मरि(री)न् वल्लीच, फवल, बहुलम् । वि, तीक्ष्ण उम, स्वभाव ।

मिर्च, म स्त्री [स मरि(री)न्] (काली) कृष्ण, कौ(का)शक, दयाम, ऊ(औ)ष्ण, बहुकं, शाश्वत स्वदिव, धमदत्तनं, वेक्षण, जष विरोधि (न) पवित्रम् । (लज्) बु-रत्त, मरि(री)न्, नीत्रशक्ति (स्त्री), उच्चवला, भनटा, बहु धीरा तीक्ष्णा (मफेद) मित-मरि(री)न् वल्लीच, फवल, बहुलम् । वि, तीक्ष्ण उम, स्वभाव ।

२ समिल् (तु प से), सइ (अ प अ),
सगम् (भ्वा आ अ), आसमा-मद् (भ्वा
प अ), आसमा-गम्, अभिमुत्ती-ममुत्ती
भू, नयन, पथ विषयं या (अ प अ)
३ तुल्य-सम-सदृश (वि) वृद् (भ्वा आ
से) सवद् (भ्वा प मे) ४ आङ्गि
(भ्वा प से), परिभ (भ्वा आ
अ) ५ यम् (भ्वा प अ), सुरन आन
(त प से) ६ लभ (भ्वा आ अ)
अधिगम ७ एक-सम-स्वर (वि) भू
(सितारादि) । स पु, दे 'मिलन'
(१२) । ३ सादृश्य, साम्य ४ आङ्गिन
५ मैथुन ६ लाभ ७ समस्वरता, ३ ।

मिलनी, सं स्त्री (हिं मिलना) औदाहिक
मि(ने)लनम् ।

मिलवाना, कि प्रे, व 'मिलना' के प्रे रूप ।

मिला-जुला वि, मिश्रित २ समिलित ।

मिलान, सं पु (हिं मिलाना) समेलन,
समिश्रण २ समी-सदृशी-करण, तुलना
३ सत्यापन, प्रामाण्यपरीक्षा ।

मिलाना, कि स, व 'मिलना' के प्रे रूप ।

मिलाप, स पु (हिं मिलना) दे 'मिलन' (१)
२ सौहार्द चं, मैत्री ३ संयोग, रति (स्त्री) ।

मिलावट, स स्त्री (हिं मिलाना) अपद्रव्येण
मिश्रण-मेलनम् ।

—करना, कि स, (अपद्रव्येण) समिश्र (तु) ।

मिला हुआ, वि, मिश्र, मिश्रित, सपूक, मसृष्ट
२ सगत, समिलित, ममुत्तीभूत ३ लब्ध, प्राप्त ।

मिलिद्, सं पु (स) भ्रमर, षण्पद ।

मिलिटरी, वि (अ) सामाजिक सामरिक,
सैनिक । स स्त्री, सेना, मैन्, वाहिनी ।

मिल्क, स पु (अ) दुग्ध, पयम (न),
शीरम् ।

मिल्कियत, स स्त्री (अ) भूमि (स्त्री)
रि(ऋ)क्थ २ द्रव्य, सर्पित (स्त्री), दाप ।

मिल्लत, स स्त्री (हिं मिलना) मैत्री
२ मित्रनशीलता ।

मिल्लत, सं स्त्री (अ) धम, संप्रदाय,
मनम् ।

मिल्लग्राम, स पु (अ) सहस्रिधान्यम् ।

मिल्लिमीटर, स पु (अं) सहस्रिमा २ इर
मुक्तभूमि ।

मिगन, स पु (अ) उद्देश्य, लक्ष्यम् २
प्रचारकमण्डलम् ३ प्रतिनिधिमण्डलम् ।

मिशनरी, स पु (अ) विप्रधम, प्रचारक
२ दे 'पादरी' ।

मिश्र, स पु (स) द्विप्रोपाधिभेद २ मिश्रित,
मिश्रितद्रव्य, योग मरर मनिपात । वि,
मिश्रित, मिश्रापन, स-सृष्ट-मिश्र-मिलित
३ श्रेष्ठ ।

मिश्रण, स पु (म न) संयोजन, समेलन,
समिश्रण, एवी एकत्र-करण, ममर्जन २ नाना
द्रव्यसमुदाय, दे 'मिश्र' (२) । ३ योग, संक
लन, दे 'जमा' (गणित) ।

मिश्रित, वि (स) ससृष्ट, समिश्र, दे 'मिश्र'
(वि) ।

मिष, स पु (स न) छल, कपट २ व्यप
देश, व्याज, कृतकहेतु ।

मिष्ट, स पु (स) मधुररस । वि, दे
'मीठा' (१) ।

—भाषी, वि (स विन्) मधुरभाषिन्, प्रियं
वद ।

मिष्टान्न, स पु (स न) दे 'मिठाई' (१) ।

मिम, स पु, दे 'मिष' (२) ।

मिस, स स्त्री (अ) कुमारी, वन्या, अश्रुता ।

मिसरा, म पु (अ) पचपाद, दलोकचरण ।

मिसाल, स स्त्री (अ) उपमा २ उदाहरण,
वृत्तान्त ३ लोकोक्ति (स्त्री), आभाषक ।

मिसिल, स स्त्री (अ) लेख, पत्रिका ।

मिस्कीन, स पु (अ) नि सहाय, निराश्रय
२ दरिद्र, अकिंचन ३ सरल, सुशील ।

मिस्तर, म पु (अ) मिश्र, महाशय महोदय ।

मिस्त्ररी, स पु (अ मास्टर) कुशल-
शिल्पन् शिल्पकार ।

मिस्त्र, म पु (अ = नगर) मिश्रदेश ।

मिस्वी, स पु (अ मिस्त्र) मिश्रदेशव सिन् ।
स स्त्री, मिश्रदेशभाषा ।

मिस्ती, स स्त्री, (अ) सण्ड, मोदक शर्करा,
शकरजा, शर्करा, सान्ध, मितोपला, निता
सट, सण्डक ।

मिस्त्र, वि (अ) तुल्य, समान, डब ।

मिस्त्रा, स पु (म मिश्र >) *मिश्रान् ।

मिस्त्री रोटी, म स्त्री, बेडनिका ।

मिस्त्री-स्त्री, स स्त्री (फा मिस्ती) दत्त,
*मस्ती-मस्ति (स्त्री), दत्यचूर्णभेद ।

—वाचलकरता, सु अत्मान भूष-मड् (सु) इमाष (प्रे) ।

मौगा, स स्त्री दे 'गिरी' ।

मीआद, स स्त्री (अ) काल, अवधि, नियम समर्थ २ अनेप-कारावाम-अवरि ।

मीआद, वि (अ मीआद) सावधिक, नियमकालवत् ।

—मुप्रा, स पु, सावधिकज्वर २ सानिषा निवज्वर ।

मीचना, क्रि स (स मिप्) निमिष (द्रु प से) क्षीन्-निमील (स्वा प से) नेत्रे मुद्रुल्यति (ना था) ।

मीजान, स पु (अ) योग, सकल, परि सत्या ।

मीनिग, स स्त्री (अ) मभा, गोष्ठो, अपि बेशनम् ।

माग, वि (स मिष्ट) मधुर मधुल, मधु मधुमय २ सरम, स्वादु संस्वाद, स्वात्तवत् ३ अत्न, मयूर ४ मध्यम, साधरण ५ मद्य मद ६ नपुमन ७ प्रिय, स्विकर । ८ सुशील सरल । स पु, मधुसूती, मि-निवृक्ष, मधुरतरीर, मधुवी-पूर, मधुली, मन्त्रला २ मिष्टान ३ मिष्ट, युट, रन्तरा ४ ।

—मालू, स पु, दे 'शरवद' ।

—जाल, स पु, मिष्टगट-ओदन (नम्) ।

—नेट, स पु नि, नेल-स्नेह २ रत्त मर्तलम् ।

—नलिया, स पु वल्गनाभ, प्रणहारव, ब्रह्मपुत्र गल, ध्वेष्ट, प्रदीपन ।

—नीवू, स पु दे 'माठा' स पु (१) ।

—दानी स पु बीरपेयम् ।

—दोलाता, सु, भिष म् (अ उ), मधुर अण (स्वा अ से) ।

मौगा छुगा, स स्त्री, अत शत्रु, कपरमित्त, विशाम्पाक २ कुटि कपरिम् ।

मौगामार, स स्त्री, गृह-गुप्त-आवरिक, ताडनं प्रहार ।

मान, स पु (सं) दे 'मटनी' (२२) शास्त्र, सति श्रमम् ।

—मेरु निकालना, सु, गु-दोषान् परीक्ष (स्वा आ म) २ डिद्रं और्वत् (दि प से) ।

मीना, स पु (का) चित्र-बहुवर्ण, काच २ नील-प्रस्तरभेद ३ *धातु-वर्न-चित्रण (इनमैल) ४ सुराग्रह ।

—कार, स पु (का) *धातु, रजव-चित्रण ।

—कारी, स स्त्री (का) दे 'मीना' (१) ।

—चाज्जार, स पु (का) *कातापण, मनोहमेला, प्रदर्शनो ।

मीनार, स पु (अ मनार) सञ्चयप्रदान, मेरु-वि ।

मोमासा, स स्त्री (स) दर्शनशालविशेष २ विचार, विवेचन, निर्णय ।

मीर, स पु (का) नायक, प्रधान ।

—मजलिस, स पु (का) मभा, पति अज्यम ।

—मुशी, स पु (का + अ) मुख्य, श्रेयक, वायस्थ ।

मीराम, स स्त्री (अ) रिक्थ, दाय, वित्द्रव्यम् ।

मीरासी, स पु (अ मीराम) समीतकुशल-यवननति विशेष २ भद्र, वैद्यनिक ।

मील स पु (अ माल) कौशार्द, अद्भुत, *मील, *मीलकम् ।

मीलन, स पु (स न) पिधान, निमीलनं, मुद्रणम् २ समीचन, सहरणं, आकुचनम् ।

मालित, वि (म) निहित, निमीलित, मुद्रित २ समीचित, सहन, आकुचित ।

मुंगरा, सं पु (सं मुद्रण) वि, पन द्रुषण न, प्रण [मुंगरी (का) छद्रमुद्रण ४.] ।

मुच, स पु, दे 'मूच' ।

मुड, सं पु (स पु न) शिरम् (न), शीर्षं मूडम् (पु), मस्तकं २ शिख, शिरस् शापम् । सं पुं, स्वाणु, निपथी मूष २ राडु ३ नपित, मुद्रन ४ उपनिषद्विशेष ।

वि मुद्रित, वापितमुद्र, कृत्तवेश (शा, सी स्त्री) २ अधम ।

—माला, सं स्त्री (सं) शिखमस्तकमाल्यम् ।

—मालिनी, स स्त्री (स) कान्ठी ।

—माली, स पु (स लि) शिव ।

मुडर, सं पुं (मं) नपित २ उपनिषद् विशेष ३ शिख, शीर्षम् ।

मुद्रन, स पु (मं न) शौर, वेद्य, क्षेपनं वपन, परिवापनं, भद्रवर्णं २ चूडा, चूडा वरपनमं (न), संस्कारविशेष (५म) ।

मुँडना, कि अ (स मुडन) व 'मुँडना' के कर्म के रूप।

मुडा, स पु (स मुड) मुंडित, उपकेन, छिन्नमूर्द्धन, कृत्तकेश २ कृत्तकेश साधु शिष्य २ शृगहीनपशु ४ भग-अवयव दासा, हीन ५ विपिविरोध (महावनी, लडे) ६ उपानस्यकार।

मुँडाई, स स्त्री (हि मुँडना) दे 'मुडन' (२) २ मुडन, मृत्वा मृति (स्त्री)।

मुँडासा, स पु (स मुडवास्तम (न)) उष्णीष ५, दे 'पगडी'।

मुडित, वि (स) दे 'मुड' वि।

मुडी, म, स्त्री (हि मुडा) मुटा, कलस केशाशी २ विषवा।

मुडी, स पुं (स मुडिन्) मुडित, जलसकेश २ नापित ३ सन्पासित्।

मुडेरा, स स्त्री (स मुड >) दे 'मुडेरा' २ दे 'मैड'।

मुँडेरा, म पु (स मुड >) प्रकरदीर्घ, मुडयमुड-डम्।

मुँडेरी, स स्त्री, दे 'मुँडेरा' तथा 'मैड'।

मुडो, स स्त्री (स मुण्डा) मुण्डिता, वपिता, धुदिता, उप्त-कृत, रशा-मूर्द्धजा २ विषवा, वृषभपुका।

मुतकिल, वि (अ) स्थानान्तर नीत २ पर हस्ने समापन परत्वत्वे दत्त।

मुतकव्र, वि (अ) निवाधित, वृत्त, चित २ उत्कृष्ट, श्रेष्ठ।

मुतजिम, म पु (अ) कल्पशु, व्यवस्थापक।

मुतजिर, वि (अ) प्रतीघ्नक, प्रतीक्षकारित्।

मुँडना, कि अ (स मुडना) व 'मुँडना' के कर्म के रूप।

मुँडरा, स पु (स मुडा) (योगिना) कर्ण, मुडन-मण्डन।

मुदरी, स स्त्री (हि मुँडरा) अगुली, तीक्ष्ण वक्र, उर्मिका।

मुसिबाना, वि (अ०) लेखक सद्गुण-उपयुक्त। सं स्त्री, लेखक, मृती (स्त्री) मृत्वा।

मुशी, सं पु (अ) लेखक, कावस्थ लिखित।

मुमिक, स पुं (अ) निर्णय, धर्म-न्याय अध्यापक-अधिकारित्।

मुसिकाना, वि (अ) न्याय, उचित-युक्त अनुसारी, न्याय्य।

मुसिकी, स स्त्री (अ मुसिक) २ २ न्यायाध्ययन पद-कार्य-मभा ४ निगम ५ न्याय।

मुँह, स पु (स मुह) आस्य, तुड, वक्त्र, वदन, रूपन, आनन २ मुख-वदन-आनन, मटल ३ (वर्तन आदि का) कण्ठविबर, मुख ४ िड, रभ ५ आदर ६ सामर्थ्य ७ साहस ८ उपरितनभाग, कर्ण, कठ प्रात ९ विद्यमानता, उपस्थिति (स्त्री)।

—अँडेरा—स पु, प्र-वि, गाल, विहान न, क्या, उपसु (स्त्री)।

—काला, स पु अनमाल, अपदससु (न)।

—चोर, वि, लज्जालु, हीमद, सलज्जव।

—जयानी, वि, वाचिक, लेखरहित। कि नि, वाचव मभाषणेन।

—नोर, वि, वाचा, वाचदूक २ दुर्दान ३ दे 'मुँहफट'।

—डिवाई, स स्त्री, नदोडामुखदर्शन २ मुख दर्शनोपहार (विवाह की रीतियाँ)।

—देखा, वि, बाध, उर्ध्वतन, हृत्त्रिन।

—फट, वि अवाचन, वाक्चपल, कण्ठदुष्ट, अक्षिण्ण्यवादिन्।

—घोला, वि, धर्म (धर्म ज्ञाना आदि)।

—भागा, वि, यथेष्ट, यथेच्छ, यथेच्छिन।

—उतरना या निक्ल आना, मु, कृशी-तनु भू, शृङ्खलन (वि) ननु (दि आ से), शि (म्वा प अ)।

—का कौर, मु सुलभ द्रव्य-वस्तु (न)।

—काला करना, मु, दुष् (श्रे दूषयान्), कलपयति (ना धा), अपकीर्ति बन् (श्रे)।

—काला होना, मु, कल्वित-दूषित (वि) भू, अपयसम (न), लभ (म्वा आ अ)।

—की गाना, मु, नितरा परा शि (कर्म) सुतरा अभिभू (कर्म) २ लज्जितो भू ३ दुःशा आपद (दि आ अ)।

—खोला, मु, वद (म्वा प से) २ गाली दा अपमप (म्वा आ मे) ३ अयमुठन जपसु (श्रे)।

—जुठारना या जूठा करना, मु, नाममात्रमेव मुन (र आ अ)।

—त(ता)रुना, मु, स्थिर आ-वद-भोक्त (सु) २ वि शिम (म्वा आ अ), चकित (वि) स्या (म्वा प अ)।

—देखते रह जाना, मु, दे 'मुँह तकना'।

—देखे की शीत, सु, मृषान्नह कृषिमा
नुराग ।
—पर छाना, सु बद् (भ्वा प मे) कथ
(सु) ।
—पर हवाइया उठना, सु (भयत्कारिभि)
मुख विवर्गीभू ।
—प्रक होना सु, दे 'सुँइपर हवाइया उठना ।
—फुलाना या सिकोडमा, सु, रष्ट-पु पित क्रुद्ध
(वि) भू ।
—फेरना, सु, उपेह् (भ्वा आ मे), अपरज
(दि उ अ) ।
—बनाना, विगाडना या चिदाना, सु,
विन्द (जु) मुख विक्र, स्वमुपविरारो उप
अव-रुम (भ्वा प मे) ।
—मौठा करना, सु, उत्तोचं दा ।
—में पानो भर आना, सु, वि प्र-दुम् (दि
प से) अत्यर्थ अमित्त्व (भ्वा उ मे) ।
—छटकाना, सु, दे 'सुँह पुनाना' ।
—(किसी के) लगाना, सु, उट्ट रव अचर
(भ्वा प से) २ शृष्टयवा प्रदोत्तर कृ ।
—लगाना, सु, हीनान् मिश्रीयति (ना धा,)
अनुमद् (क् प मे), उदण्णान् विधा
(जु उ अ) ।
—से फूल झडना, सु सुमपुर वच (वम) ।
सुर्हा—, सु परिपूर्ण, आकर्षी पूर्ण, निभर ।
सुँहासा, स पु (हि सुँह) धौवन, वटक
सिद(टि)ता ।
सुभ्रज्जम, वि (अ०) पूज्य, ममान्द २ महत्,
ज्येष्ठ ।
सुभ्रत्तल, वि (अ) आनियतकाल अधिकारात्
ध्याविन अथवा भ्रशित । २ दे 'बेकार' ।
सुभ्रत्तली, सं स्त्री (अ सुभ्रत्तल) आनियत
काल अधिकार, भ्रम ध्युति (स्त्री) २ दे
'बेकारी' ।
सुभ्रद्व, वि (अ) मध्य, शिष्ट ।
सुभ्रद्वयाना, अन्व (अ) सविनयम्, वि,
नम्र, विनयेन, नम्रतया ।
सुभ्रम्मा, स पु (अ) प्रदेशी, प्रदेशिका,
प्रदन्तनी २ शुद्ध, गोप्य, रक्ष्य ।
सुभ्रल्ला, वि (अ) उच्च, उत्कृष्ट, प्रकृष्ट
२ उच्च, पद-अधिकार ।
सुभा, नि, दे 'सुब' ।
सुभाह, वि (अ) शान, मर्षित, दोषदंड, सुत्त ।

—करना, दे 'क्षमा करना' ।
सुभाषिक, वि (अ) अनुकूल, अनुरूप
२ सहज, तुल्य ३ अन्वनाधिक ४ द्येष ।
सुभाशी, स स्त्री (अ) दे 'क्षमा' २ कार
सुकभू (स्त्री) ।
सुभामिला, स पु (अ) उपजीविता, वृत्ति
(स्त्री), व्यवसाय २ पारस्परिकव्यवहार,
क्रयविक्रय, दानादान ३ वृत्त, वास्तो, विषय
४ कलह, विवाद ५ अभियोग ६ प्रतिज्ञा,
सम्व ।
सुभायना, स पु (अ) दे 'निरीक्षण' ।
सुभावजा, सं पु (अ) निष्कृति (स्त्री),
निस्तार, प्रतिफल २ क्षतिपूरण हानिपूरण,
मूल्यम् ।
सुब्दमा, स पु (अ) अभियोग, अश,
अथ, कार्य, व्यवहार, व्यवहारपदम् ।
—करना या रखा करना, कि स, अभियुद्ध
(क् आ अ, जु), राजकुटे निविद (श्रे) ।
सुकदमेबाह्न, सं पु (अ + फा) कार्यभिन-
व दिन्, व्यवहृत, अभियोगशील ।
सुकदमेबाह्नी, सं स्त्री (अ + फा), अभियो
गशीलता, व्यवहर्तृत्वम् ।
सुकदमा, स पु, दे 'सुब्दमा' ।
सुकद्व, स पु (अ) मध्य, दैवम् ।
सुकद्वस, वि (अ) पवित्र, पुण्य, पालन ।
सुकम्मल, वि (अ) समाप्त, अवसित २ सं
पूण, नि शेष ।
सुकरना, कि अ (सं माहन + करण)
अप-निह (अ आ अ), अपल्प (भ्वा प
से) निरुक्त ।
सुकरनी, सं स्त्री, दे 'सुकरी' ।
सुकरी, स स्त्री (हि सुकरना) कविनाभेद,
अपह्नुतिपुता कविता ।
सुकरै, कि वि (अ) पुनर्पि, द्वितीयवार्त्त,
भूय ।
सुकरै, वि (अ) नियत, निश्चित २ नियुक्त ।
सुकायला, सं पु (अ) विरोध, प्रति-दिग्,
प्रतिकूल्य २ रषदां, संघर्ष, अहमहमिन,
प्रतियोगिता ३ ममान, सुद्ध ४ तुलना,
ओदम्य ५ साम्य, सादृश्य ६ मनी-महर्षी,
करणम् ।
—करना, कि, स, रार्थ (भ्वा आ से),
मंष्टृ (भ्वा प से) २ प्रतिह, विरुध्

(ह ल अ) इ युध (दि आ अ)
 ४ तुल (तु), उपमा (तु आ अ)
 ५ समी-सद्वनी, कृ ।

मुद्राम, म पु (अ) स्थान, स्थल २ विराम
 स्थान, दे 'पटाव' ३ विराम, निवेश ४ आ
 नि-वान, गृह ५ अवसर ।

—करना, क्रि अ, विश्रम् (दि प से),
 निविश (तु प अ), विरम् (भ्वा प अ) ।

मुकुद, म पुं (स) श्रीकृष्ण २ रत्नमेद
 ३ पारद ४ मोक्षद, परिजातृ ।

मुकुट, स पु (म न) किरोट-ट, मकुट,
 बोगीर, मौलि, उत्तस ।

मुकुर, स पु (स) दपण, दे ।

मुकुल, म पु (स पु न) कुडमल, दे
 'कली' २ आमल (पु) ३ शरीर ४ पृथिवी ।

मुकुलित, वि (स) समकुल, मकुडमल
 २ इंपद्विकसित, अर्द्धोन्नित अर्द्धनि
 मोलित ३ निमेषो मेपयुक्त ।

मुक्ता, स पु (म मुष्टिका) मुष्टि (पु स्त्री),
 मुख्, मुचुटी, सर्पिडितागुम्बिदपाणि
 २ मुष्-मुचुटी, प्रहार-वान-ताड हथ ।

—मारना, क्रि म, मुचुट्या मूढ (भ्वा
 प अ) ।

मुक्केवान, (हि + का) मुष्टि-योष-योषिन् ।
 मुक्केयाजी, स स्त्री, (हि + का) मुष्टियुद्ध,
 मौष्टा, मुष्टिक, मुष्टी(ष्ट)मुष्टि (अव्य) ।

मुक्त, वि. (स) लब्ध-प्राप्त, मोक्ष-निर्वाण,
 निस्तीर्ण २ मोचिन, स्वाधीन, बन्धन-निरोध
 रहित ।

—कठ, वि (स) तारस्वर, महास्वन २
 अविष्टदयधादिन्, अयतवाच ।

—हस्त, वि (स) व्यवशील, अतिव्ययिन्,
 बहुव्यय ।

मुक्ता, म स्त्री (म) }
 —फल, सं पु (स न) } दे 'मोती' ।

—हार, स पु (स) मुक्तावली ।

मुक्तागार, स पु (स न) शुक्ति (स्त्री),
 शुक्तिग, मौक्तिक-प्रक्ष (स्त्री) प्रसवा ।

मुक्ति, स स्त्री (म) मोक्ष, वैकल्य, निर्वाण,
 श्रेयस (न), नि-श्रेयस, अमृत, अपवर्ग,
 अपुनभव २ मोचन, निर्द्वन्-ग्या, निरोधा
 भाव ३ स्वच्छंदता, स्वतन्त्रता ।

—क्षेत्र, स पु (स न) काशी गगणसी ।

—धाम, स पुं (स न) मो-स्थानम्
 तीर्थम् ।

—फौज, म स्त्री (स + अ०) मुक्तिनेना,
 विस्वधर्मप्रचारकमथ ।

मुख, स पु (सं न) दे 'मुँह' ।

—बध, स पु (स न) प्रस्तावना, भूमिना ।

मुखडा, म पु (स मुख) दे 'मुँह' (२) ।

मुखतार, स पु (अ) प्रति, निधि पुरम्
 हस्तक २ परामियोगकारिन् ३ उपाभिभाषक ।

—नामा, स पु (अ + का) प्रातिनिध्य
 प्रतिनिधित्व पत्रम् ।

मुखतारी, स स्त्री (अ मुखनार) परामियोग
 कारितात्व २ उपाभिभाषकता-त्त्व ३ प्राति
 निध्यम् ।

मुखविर, म पु (अ) दे 'नाभून्' ।

मुखविरौ, म स्त्री (अ मुखविर) दे 'नाभूती' ।

मुखर, वि (स) कटु-अप्रय-वादिन् भाषिन्
 दुर्मुख २ वाचाल, वाचाट ३ नेत्र, अग्रया-
 यिन् ४ शब्दायमान ।

मुखरित, वि (स) प्रति, ध्वनित नादित ।

मुखरथ, वि (स) मुखाग्र, कठोग्र, कठस्व ।

मुखारिण, वि (अ) विपक्षिन्, विरोधिन्
 २ वैरिन् ३ प्रतिद्वदिन् ।

मुखिया, स पु (स मुख्य) नेत्र, नायक,
 पुरो अग्र-ग-गामिन्, अग्रणी, प्रधान,
 मुखर २ ग्रामणी (पु), ग्राममुख्य ।

मुखारिण, वि (अ) मित्र, अपर २ बहु
 अनेक, विष ।

मुष्कतसर, वि (अ) सक्षिप्त २ लघु, क्षुद्र
 ३ अल्प । सं पु, सक्षेप ।

मुष्कत, वि (स) प्रधान, अग्रथ, अग्रिम,
 प्रमुख परम, उत्तम, श्रेष्ठ, विशिष्ट, कथम,
 दद्र, पुणव, वर ।

मुष्कत, } क्रि वि, (स) प्रधानत-नया,
 मुष्कतया, } विशेष-तया, प्रधान-मुख्य
 विशेषण, रूपेण ।

मुष्कत, म पु, दे 'मुद्गर' ।

मुष्कत, वि (स) आसक्त, अतुरक्त, बद्धभाव,
 सानुराग, कामानुक २ मूढ, भ्रान्त ३ मुन्दर,
 अभिराम ४ नव, नवीन ।

मुष्कता, स स्त्री (स) आसक्ति (स्त्री),
 अनुराग २ मूढता ३ सौन्दर्यम् ।

मुग्धा, स स्त्री (स) नायिकाभेद २ सुकु
मारी तन्त्रणा ।

मुचलका, स पु (तु) निस्तार ।

मुउंडर, स पु (हिं मूउ) महा, गुफ इमशु
व्यनद इमशुल २ कपि ३ मूपिक ४ कुह
पमूय, जट ।

मुज्जकर, वि (अ) पुल्लिग (-ग) ।

मुजरा, स पु (अ) उदधून-व्यव-हित, धन
२ अभिवादनं, प्रणिपात ३ देशयाया सनु
स्वमन्त्र्य वा गानम् ।

मुजरिम, स पु (अ) अपराधिन, कृताप
राध दटय २ अभियुक्त ।

मुजस्मिम, वि (अ) सशरीर, देहवत्,
शरीरिन् ।

मुजिर, वि (अ) हानि, कारक, प्रद ।

मुज्ज, सर्व (हिं मुजे) (अस्मद् क रूप वर्णे) ;
—सो, मा, मा २ महा, मे ।

—से, मया २ मय ।

—मे, मयि ।

मुग्गड़े, मं स्त्री, दे 'मोगर' ।

मुद्रा, म पु (हिं मुट्टी) मुट्टि (पु स्त्री)
मुष्टिमान् द्रव्य २ वारम्, रट, मुष्टि
(पु स्त्री) ।

मुट्टी, मं स्त्री [स मुट्टि (पु स्त्री)] दे
मुफा' (१) । २ मुष्टिमेव पदाव, मुष्टि
२ मवाह हन इना ४ श्रद्ध-इणम् ।

—भरना, क्रि स, संवह (प्र), मुट्ट (क
प से) ।

—चाँपी, म स्त्री, दे 'मुट्टी' (१) । २ सेवा,
परिचर्या ।

—भर, वि, मुष्टि, मात्र-मय विन ।

—गरम करना, मु, स्त्रीव दा ।

—मे, मु, वणे, अधिपारे ।

मुद्रभेद, स स्त्री (हिं मुट्टी + निडना) मयट्ट,
ममापान २ भ्रमाम, मुद्रं ३ सामुख्य,
समुपगमन म, भिन्न अणम् ।

मुष्टिपा, म स्त्री (मं मुष्टिका >) (यङ्गादि
की) त्मर, वाग्ग, मर २ षट, वण,
मुष्टि पिना, तल-ल ३ अविचरणा ।

मुष्टना, क्रि अ (सं मुष्टे) क्रीडू, नष्ट
(स्वा प अ) २ प्रत्यागम्, प्रतिगम्, प्रतिनिष्ठम्
(स्वा आ, से) ३ व्याहृद् ; सं पुं, क्री

भान, नमन, प्रति, गमन आगमन, व्यावर्तनम् ।
मुडाना, क्रि प्रे व 'मूडना' के प्रे रूप ।

मुड्ढा, स पु (म मूर्द्धन् >) स्वध २ मूत
पिट-र, तुल्पीठी ।

मुड्ढी, स स्त्री (हिं मुड्ढा) छिन्नतस्मन् ।
मुतभस्त्रिक, वि (अ) सवद्ध, सलग्न, सगत ।
क्रि वि, विषये, सवये ।

मुतफरिक्क, वि (अ) बहु नाना वि, विप,
प्र-स, कीर्णा ।

मुतवन्ना, स पु (अ) दे 'दत्तक' ।

मुतलक, क्रि वि (अ) क्रिचिद मनात् ईपद
अपि २ केवल, सर्वथा । वि, केवल, पुरातिक ।

मुताविक, क्रि वि (अ) अनुसार रेण,
-अनुरोधेन धान्, यथा, अनु, वि, अनुकूल,
अनुरूप ।

मुतालजा, स पु (ज) प्रातःकथन २ कण
देय, शेष शेष ।

मुदित, वि (स) प्रमत्त, आनदित, प्रहृष्ट ।

मुद्गर, स पु (म) धन, दुपन-य, प्रथण
२ गोपु-अकारो व्यावामोपयोगी रभूदट
३ अनिगध, मथरान ।

मुद्भा, म पु (अ) अभिप्राय, तात्पर्यम् ।

मुद्दे, म पुं (अ) परिवारक, अभिवोगिन्,
वादिन्, अधिन्, अभियोक्त् २ शत्रु, वैरिन् ।

मुद्दत, म स्त्री (य) अवधि, समयसीमा,
नियतकाल, ० विरं, चिरकाल, महात् समय,
युग गम् ।

—का वि, चिर, कालिक-नाशिन, पुराण,
पुरातन ।

—तक, —मे, क्रि वि, विर, विरेण, विराय,
विराट, विरम्य विरे ।

मुद्दालेह, स पुं (अ) अभियुक्त, प्रत्यथिन,
प्रति-तद्व, उत्तरादिन् ।

मुद्दक, म पु (म) मुद्गण वार रत्न ।

मुद्गण, म पु (सं न.) मुद्गाशरे अकनं,
मुद्गानं २ मुद्गानिभोगम् ।

मुद्गालय, म पु (मं) मुद्गणग्रह, दे 'प्रेत' ।
मुद्गाकित, वि (मं) म रत्न, मुद्ग, मुद्गादिदि
२ नारायणायुधचिह्नयुक्त (वैष्णव) ।

मुद्गा, मं स्त्री (मं) मुद्रिना, प्रत्ययशरिणा,
* नामाक्री २ अगु-नी(री)य-यक, ऊर्ध्विका
३ नणप, टक-य ४ मुद्रित शब्द पिक्
५ दे 'मुद्गा' ६ शरीरस्य तदवयवानां वा

स्थितिविशेष, अगतिन्यास, सरिवनि (स्त्री)
 ७ सुग, आकार-आट्टनि (स्त्री) ८ मक्त
 देशकित भगवदासुधचिह्न ९ अगस्त्यपत्नी,
 लोपामुद्रा १० सुद्रा, लाठन चिह्नम् ।
 —मार्ग, स पु (स) अक्षरप्रम् ।
 —यत्र, म पु (म) मुद्रणयत्रम् ।
 —राक्षस, म पु (म न) विशासदत्तप्रणीत
 मस्कृतनाटकम् ।
 —शास्त्र, स पु (स न) मुद्रातल्लम् ।
 सुद्राक्षर, स पु (स न) सीमक धातुमय-
 मुद्रण, अक्षराणि ।
 मुद्रिका, म स्त्री (म) अगुलीयक, कर्मिका
 २ अनामिकाधार्य कुरागुलोक, पवित्र
 ३ नाणक ४ मुद्रा ।
 मुद्रित, वि (म) दे 'मुद्राङ्गित' २ मुद्राक्षरै
 मोमनाक्षरै अंकित ३ पिहित, सञ्चन, निमी
 लित मुद्रलित ।
 मुद्रा, अव्य (स) व्यर्थ, वृथा २ अमत्य,
 मृग (अव्य) । वि, व्यर्थ २ असत्य । स
 पु, अमत्य, अनृतम् ।
 मुद्रका, स पु (अ) कालराक्ष, तालका,
 फलोत्तमा, दुग्धी विका ।
 मुद्रमि(स)र, वि (अ) आश्रित, अव
 ल्वित ।
 मुद्राजरा, स पु (अ) शास्त्राय, वाद,
 तदशास्त्रम् ।
 मुद्राङ्गी, म स्त्री (अ) दे 'मनादी' ।
 मुद्राभा, म पु (अ) लाभ आय फलम् ।
 मुद्रामित्र, वि (अ) उचित, युक्त, योग्य ।
 मुद्रि, मं पु (स) विचारक चित्तक, तत्त्व,
 १ दाशन, प्रश्न २ मौनित्, वाचयम,
 ऋषि, व्रतित्, तपस्विन् ।
 मुनीम, स पु (अ मुनीव) सहाय-यक,
 उपकारित्, उप-(उ उपमरित् आदि)
 २ गणक, कायस्थ, लेखक ।
 मुनीव, म पु (स) मुनीश्वर, मुनिपुणव
 २ शत्रुहृदेव ।
 मुद्रा, मुन्द्र, म पु (म मुद्र >) शिशु
 बालक २ (बच्चों को बुलाने में) अग, तात ।
 मुद्ररद, वि (अ) पुराकिन्, असहाय २
 जमिधित् (औषधादि), वेवैक ।
 मुद्ररंह, वि (अ) आनन्द-मोद, दायक प्रद ।
 मुद्ररिस, वि (अ) अथन, अक्रियन, दष्टि ।

मुद्रलिप्सी, म स्त्री (अ) निर्धनता, दरिद्रता ।
 मुद्रस्मल, वि (अ) स, विस्तर प्रपञ्च । मि
 वि, मविस्न(स्ता)र, विस्न(स्ता)रेण, विन्तरत् ।
 सं पु, नगर, उपात प्रान्त, पुरोपकठ ठ,
 उप शाखा, नगर पुरम् ।
 मुद्रोद, वि (अ) उपकारित्, उपयोगित्,
 हितकर(री (स्त्री)] ।
 मुद्रपत्, वि (अ) नि-शुल्क, निर्मूय ।
 —घोर रा, वि, परपिडाद, पराध्रपुष्ट ।
 —मे, मु, नि-शुल्क, निर्मूल्य, मूल्य विना
 २ व्यर्थ, नि-प्रयोजनम् ।
 मुद्रती, स पु (अ) न्याय, अधीश अधि-
 पति, धर्माध्यक्ष (इत्याम) ।
 मुद्रतिला, वि (अ) प्रस्त, गृहीत, पीडित ।
 मुद्ररां, वि (अ) मुक्त, अनिरुद्ध २ निर्दोष,
 पूत ।
 मुद्रल(हि)ग, वि (अ) सर्व, समम् ।
 स पु, माना २ रूप्यकादिसत्या ।
 मुद्रारक, वि (अ) शुभ भद्र, मंगल । अव्य,
 शुभ भद्र मूयात्, स्वस्ति ।
 —वाड, स पु } (फा) दे 'वधाड' ।
 —वाडी, स स्त्री }
 मुद्रालिगा, स पु (अ) अत्युक्ति (स्त्री) ।
 मुद्राहिमा, म पु (अ) स वि, वाद, हतु
 वाद, प्रत, वाद, ऊहापोह, विचार-रणा ।
 मुद्रकित, वि (अ) सभाव्य, मंभवनीय,
 *मभव, शक्य, मभावित्, माध्य, सपाय ।
 मुद्रानियत, स स्त्री (अ) दे 'मनादी' ।
 मुद्रमुद्र, वि (स) मोघाङ्गित्, अपवर्गाभिला
 विन् २ श्रमण, मुनि, साधु, भिक्षु ।
 मुद्रमुद्र, वि (स) आमत्रमृत् २ निधनेच्छुक ।
 मुद्रमहिन्, म पु (अ) दे 'परीशक' ।
 मुद्रकना, क्रि अ (हि मुद्रना) व्याखर
 (भ्वा आ से), आहुच् (कर्म) २ वि,
 नद् (दि प वे) ३ अभिज्ञक (भ्वा आ
 से) ४ प्रतिगम् प्रत्यागम्, प्रतिनिवृत् (भ्वा
 आ मे) ५ अस्मान् उ (तु दि प
 से)-मुद्र (तु प से) ६ दे 'मोच आना' ।
 मुद्रकाना, क्रि स, व 'मुद्रकना' के प्रे रूप ।
 मुद्रकी, म स्त्री (हि मुद्रकना) कर्णपूरक,
 कर्णवलयक-कम् ।
 मुद्रगा, स पु (फा मुद्रं) उपाकल, कृकवाकु,
 दे 'हुक्कुट' २ पश्चिन् ।

मुरगाणी, म स्त्री (स) जलकुवकुट,
यष्टिन, शुक्लकण्ठ ।

मुरज, स पु (स) दे 'मृदय' ।

मुरझाना, क्रि अ (स मूर्जान् >) ग्ले म्ले
(स्वा प अ), निद्रा (कम), ग्लान
म्लान विशीर्ण (वि) भू, जृ (दि प स)
२ अवमद् विषद् (स्वा प अ), दुर्मनायते
(ना धा), विषण्ण-श्वसन्न विरुत्राय (वि) भू ।
स पु, ग्लानि म्लानि (त्वी) ३ विषाद,
अवमाद वै-शीर, मनस्वम् ।

मुरझाया हुआ, वि ग्लान, म्लान, जीर्ण,
शीर्ण २ विषण्ण, निर्विण्ण, अवमन्न, दीन ।

मुरदा, म पु (फा) मृतक-व, शव व,
कुणव, प्रतम् । वि, उपरत, प्रेत, परेत, विपन्न,
परात मृत, निर्जीव, निष्प्राण, प्रमीत २ दुर्बल
२ म्लान ।

मुरदार, वि (फा) मृत, प्रेत २ दूषित,
अपवित्र ३ अह, स्तभित, स्तब्ध ।

मुरध्वा, (अ मुरध्वह्) मिष्टपाक, फलोपस्कर ।

मुरध्वा, स पु (अ मुरध्वज) समचतुरस्र,
समचतुर्भुज २ वर्ग, दिघात ३ समचतुरस्र
समचतुर्भुज-वर्गाकार, भूखण्डः (खग) । दि,
वर्गोक्त, वर्ग- (गन, फुट-आदि) ।

मुरमुरा, स पु (अनु मुरमुर) भिन्ना,
भिर्महा-या भिस्म(स्मि)दा ।

मुरमुराना, क्रि अ (अनु मुरमुर) मुरमुरा
यते (ना धा) ।

मुरली, स स्त्री (नी) बशी शिवा, वद्य,
वणु, वद्य नाटिका, मानिका ।

—घर, }
—मनोहर, } म पु (स) धीठुणावन्द ।

मुरध्वन, म स्त्री (अ) शील २ सज्जनता ।
वे—, वि क्रम म्दानुभूतिगम्य ।

मुरा, म स्त्री (अ) अभिलाष, कामना
२ आशय, अभिप्राय ।

मुरादीं के दिन, मु, यौवनम् ।

मुरारी, म पु (सं-री) श्रीशुभचर ।

मुरोद्, म पु (अ) शिष्य २ अनुयायिन ।

मुरता, स्त्री (वा मुरंन) मृ-पु-प्राण
णानि (न बहु) कल्या २ अवमाद,
विषाद, दीर्घनम्य, निर्वेद, उत्साहाभाव ।

पहेरे पर मुरंती छाना वा विरजा, मु, मुन

मृत्युलक्षणानि प्राग्भू २ अति, विषण्ण-निराश
(वि) विद् (दि आ अ) ।

मुरा, स पु. दे 'मुरदा' ।

मुरां, स पुं (हि मरोड) दे 'मरोड' (२)
२ दे 'पेविदा' ।

मुरजिम, वि (अ) अभियुक्त, दूषित ।

मुरतवी, वि (अ) विन्वित, व्याक्षिप्त,
*स्थित ।

मुरतान, स पु (स मूलनाण) प्रहादपुर,
साम्बीपुरम् ।

मुरतानी, वि (हि मुरतान) मूलनाण-
विषयक-सवयिन, मौलनाण । स स्त्री, राणिणा
भेद २ *पीतगैरिक, मौलनाणीमृत्तिका ।

मुरम्मा, वि (अ) भागुर, भागमान
२ सुवर्ण-रजत, लिप्त रजित । सं पु, हेमलेप,
रजतरजन २ आडवर, आपानरम्यता ।

—करना, क्रि स, रजतेन-स्वर्णेन लिप् (दु
प अ) -रज् (प्रे) ।

—साज, स पु (अ + फा) *धातु हेम-
लेपकार ।

मुरहटी-डी, स स्त्री, दे 'मुलेडी' ।

मुरात्रात, स स्त्री (अ) दे 'मिलन' (२) ।

—करना, क्रि स, दे 'मिलना' ।

—करवाना, क्रि प्रे, परिचय कृ (प्रे), परि
चि (प्रे) ।

मुराकाती, स पु (अ मुराकात) परिगिन
२ दर्शक ।

मुराजिम, स पुं (अ) दे 'नौकर' ।

मुराजिमत, स स्त्री (अ) दे, 'नौकरी' ।

मुरायम, वि (अ) कोमल, मुकुमार २ शृङ्गा,
विषण्ण ।

—करना, मु, परस्व-ज्ञोष शम् (प्रे) शमयति ।

मुराहिजा, म पुं (अ) दे 'निरीशय'
२ आदर ३ अनुग्रह ।

मुलेडी, म स्त्री [स मधुदहीति (स्त्री)]
यष्टिमधु (न), मधुदहिता, मधुर, कर्पूरायम् ।

मुल्क, मं पुं (अ) देण २ प्रांत ३ संसार ।

मुल्का, वि (अ) स्व-देशीय २ शासन
संबन्ध ।

मुरगा, मं पुं (अ) यवनपुरोहित २ अध्या
पत्र ।

मुराहिल, मं पु (अ) *नभिभाषकनिया
२१ ।

मुना-आ, वि (म मृत्) निर्जोव, निम्प्राण
 २ नीच, तुच्छ ।
 मुनाइरा, स पु (अ) क्विसम्प्लेनम् ।
 मुनाबहत, म स्त्री (अ) सादृश्य, नान्यम् ।
 मुस्क, म पु (का) कस्तूरी रिका, मृगमद
 २ दुर्गन्ध ।
 मुस्क, स स्त्री (देश) पुत्र, बाहु ।
 मुस्क कसना या चाँधना, मु, बाहु पृष्ठत
 नियत्र (नु) ।
 मुस्किल, वि (अ) कठिन, दुस्ताध्य । स स्त्री,
 कठिनता २ विपत्ति (स्त्री) ।
 —कुशा, वि सन्त-क्लेश विन्, हर विनाशक ।
 —आसान होना, मु, सन्तहरणम्, विपद्
 विनश (दि प से) ।
 मुस्की, वि (का) कृष्ण श्याम २ मृामद-
 मिश्रित २ श्यामाश्, सुवाह ।
 मुस्त, म पु (का) मुष्टि (पु स्त्री) ।
 एक—, क्रि वि, युगपद् (अव्य) ।
 मुष्टामुष्ठी, स स्त्री [स टि (अव्य)] मुष्ठी
 मुष्टि (अव्य), मुष्टियुद्धम् ।
 मुष्टि, म स्त्री (म पु स्त्री) दे 'मुक्का' (२) ।
 २ पल्पपरिमाण (४ ना ८ तोल का) ३ चौथे
 ४ दुर्भिक्ष ५ त्तर, सर ।
 —युद्ध, म पु (स न) दे 'मुक्केवानी' ।
 मुष्टका, स स्त्री (स) दे 'मुक्का' २ दे
 मुटठी' (२) ।
 मुमक(कि)राना, क्रि अ (स स्मयकरण)
 म्नि (भ्वा आ अ), इत्तमद मृदु ह्म
 (भ्वा प ने) मृदुनास्य क । म पु, स्मयन,
 स्पन्दहमन, मिन, मृदुहाम ।
 मुमकरानेवाला, स पु, स्मेर, सग्मिन, स्मय
 मान, म्मित-कारिन् शालिन् ।
 मुमक(कि)राहट, म स्त्री (हि मुमकराना)
 स्मितति (स्त्री), मद-मृदु, हाम इमित-
 हास्यम् ।
 मुसत्रिक, म पु (अ) ग्रथकार, पुस्तकप्रणेत् ।
 मुसल, म पु दे 'मुसल' ।
 मुसलमान, म पु (का) यवन मोहमादीय,
 *मुसलमान ।
 मुसलमानी, म स्त्री (का) यवनी *मुस
 लमानी २ दे 'रतना' ३ दे 'दुलाम' ।
 वि, यवन (नी स्त्री), यवनधर्ममदधिन् ।

मुसल्लाधार, } दे 'मुसल' के नीचे ।
 —मह बरमना, मु }
 मुसलामुमलि, स स्त्री (म) मुस (अ, प)
 ल,—युद्ध-मग्राम ।
 मुसलिम, स पु (अ) दे 'मुसलमान' ।
 मुसली, स स्त्री (म मुश(ष)ली) मुश(ष)लिका,
 ताल-मूलिका पत्रिका, अशोनी, भूताली, दीर्घ
 कदिका हेमपुष्पी, गोधापदी ।
 मुसल्ला, म पु (अ) *आराधनास्तर,
 *उशमनामनम् ।
 मुसल्विर, म पु (अ) दे 'चित्रकार' तथा
 'फोगेयाफर' ।
 मुसल्विर, म पु (अ) पथिक, पाथ, दे
 'धानी' ।
 —खाना, म पु (अ + का) पथिकाश्रम,
 पाथ, शाला-मृद, *धर्मशाला ।
 मुसाकिरी, म स्त्री (अ) पथिकत्व २ यात्रा,
 प्रवास ।
 मुसाहब, स पु (अ) परिपार्थ(वि)क,
 पार्थग ।
 मुमीबत, स स्त्री (अ) कष्ट,क्लेश २ आपद
 विपद् (स्त्री) ।
 मुसल(ए)डा, वि (स दड का अनु) पुष्टाग,
 दृढ, देह-ननु-अग, बलवत् २ दुवृत्त, खल ।
 मुसलकिल, वि (अ) भ्रुव, अचल २ दृढ,
 चिररवायिन् ।
 मुस्तनद, वि (अ) प्रामाणिक, विश्वसनीय ।
 मुस्तहक, वि (अ) अर्ह, योग्य, पात्र, अधि
 कारिन् ।
 मुस्तैद, वि (अ मुस्तअद) सज्ज, सनद्ध
 २ आनु क्षिप्र-कारिन् ।
 मुस्तैदी, म स्त्री (हि मुस्तैद) सन्नद्धता,
 मज्जता २ आशुकारित्व, क्षिप्रता ।
 मुहताज, वि (अ) निर्धन, अकिंचन २ दीन,
 पराश्रित ३ आकाक्षिन् ।
 मुहब्बत, म स्त्री (अ) प्रेमन् (पु न)
 २ मित्रता ३ अभिलाष, काम, प्रणय ।
 मुहम्मद, स पु (अ) श्रीमोहम्मद, यवन
 धर्मप्रवक्त ।
 मुहारि, म पु (अ) लेखन, लिपिकार ।
 मुहल्ला, स पु दे 'महल्ल' ।
 मुहाना, म पु (हि मुँह) नदीमुख, मरि
 त्मगम २ प्रवेशद्वारम् ।

मुहाफिज, वि (अ) रक्षण, प्रावृ ।
 मुहाल, वि (अ) कठिन दुष्कर २ अत्युभाव्य,
 अशक्य, असम्य । स पु, दे 'महत्ता' ।
 मुहावरा, स पु (अ) वाग्धारा, वाग्-
 रीति (स्त्री)-सप्रदाय २ अभ्यास ३ नीत्यन् ।
 मुहासिरा, सं पु (अ) उपरिष, अवरोधनम् ।
 —करना, किं स, अव-उप, र-ध (उ उ अ) ।
 मुहिम, स स्त्री (अ) दुष्करकारी २ आत्ममर्ग
 ३ बुद्धिम् ।
 मुहु, अव्य (स) पुन ।
 —मुहु, अव्य, पुन पुन, अमट्त्व ।
 मुहुर्व, स पु (स पु न) द्वादशक्षणपरिमित-
 काल २ घण्टिकाद्वय, अहोरात्रस्य तिस्रो भाग
 ३ भागत्रयममव्य (ज्यो) ।
 मूँग, स स्त्री पु (स मुद्गा) सूक्ष्मश्रेष्ठ, रजो
 क्षम, हृदयानन्द, धार्मिकभोजनम्, सुफल ।
 छाती पर मूँग दलना, सु, दे 'छाती' के नीचे ।
 मूँगफली, स स्त्री (स भूजिफली) मठवी
 भूस्था, भूशक्तिका, भूदण्ड ।
 मूँगा, स पु (हि मूँग) विद्रुम, प्रवाल-ल,
 भोमीरा ।
 मूँगिया, वि (हि मूँग) मुद्गा-हरित (उ)-
 पलाश-वर्ण ।
 मूँउ, स स्त्री [स श्मश्रु (न)] गुण, ओष्ठ
 रो(लो)मन्द (न) ।
 —उखाटना, सु, कटोर दण्ड (जु) २ गर्व
 चूर्ण (जु) ।
 —नीची होना, सु, लजित (वि) भू
 २ अवमन्द (वम) ।
 —पर ताव देना या हाथ पेरना, सु, शीर्ष
 प्रहर (प्रे), वीरताभिमानेन श्मश्रुव्यावृत्त (प्रे) ।
 मूँन, स स्त्री (स मुन) मुमनक दृढ-नृण
 मूल, माक्षण्य, रत्न, दूग्ध, शत्रुभय ।
 मूँह, स पु (सं मुँह-ह) २ 'मु' (१) ।
 —मुझना, सु, फजिन् (भ्वा प मे),
 संन्यस् (रि प मे) ।
 मूँडन, स पु, दे 'मुँडन' ।
 मूँडना, किं म (सं मुण्डन) मुण्ड (भ्वा
 प से), वर (भ्वा उ अ, प्रे), सुरधुर
 (तु प से), वशील दूर (तु प मे)-
 णि (क प अ)-दूर (उ उ म) २ वृ
 (प्रे), छण्ड (तु), प्रण (प्रे), विप्रण्य
 (भ्वा आ अ) ३ शीघ्र (भ्वा आ मे

प्रे), उपनी (भ्वा प अ) । ४ भेदोर्गावृत्
 (तु प से) । सं पु, मुण्डन, क्षीर, वपन,
 वैश, छेदन-लवन-वतनम् ।
 मूँटने योग्य, वि, मुण्डनीय, वप्तव्य, वप्य ।
 मूँडनेवाला, स पु, मुण्डक, नापित मुडिन् ।
 मूँडा हुआ, वि, मुण्डित, क्षुरित, उप्त, कलस-
 केश श्मश्रु ।
 मूँडी, स स्त्री, दे 'मुण्ड' (१) २ मुण्डकार
 ऊर्ध्वभाग ।
 मूँदना, किं म (सं मुद्रण) प्र-आ, ऋट्
 (तु), स-आ, वृ (स्वा उ से), आ, मृ
 (स्वा उ अ), स्तृ (क् उ से) २ अ,
 पिषा (जु उ अ) ३ निमील (भ्वा प से),
 (मे) मुद्रयति (ना धा) । सं पु, आ प्र,
 च्छादन, आ-स, वरण, पिधान, निमीलन,
 मुद्रणम् ।
 मूक, वि (म) अवाच्, वागीहोत्र *निर्गिर ।
 मूगरी, सं स्त्री (स मुद्गार >) * वसन
 उद्दनी, *मुद्गरी ।
 मूजी, वि (अ) पु पन्थेय-वृष्ट, द-दापक
 २ दुष्ट, दुर्जन, खल ।
 मूठ, स स्त्री, दे 'मुठठी' (१ २) तथा 'मुठिया'
 (१ २) ।
 मूठा, स पु, दे 'मुठठा' ।
 मूठ, वि (सं) अश, मूर्ध, मरुधी, मरु, निजुद्धि
 २ स्तब्ध, निशेध ३ व्यामोहित, झटमड ।
 —मति, वि (सं) मूठ, बुद्धि-नेत्रम् ।
 मूठता, स स्त्री (सं) अज्ञता, मूर्धता, बुद्धि-
 होनता इ ।
 मूठ, स पु (म न) खव, प्रक्षव, मेह-
 गुणनिस्यद ।
 —रुना, किं अ, मूठयति (जु), मूठान्तर्ग
 क, निह (भ्वा प अ), मूठ उत्सृज् (तु
 प अ) ।
 —टुच्छ, सं पु (म न) अशरीर २ वृच्छ
 ३ मूठरोष ।
 —भ्यान, स पु (सं न) *प्रस्त्रागार-रन्,
 मूठान्य ।
 मूर्ध, वि (म) निर्-दूर, बुद्धि, अनिरू-
 बाध, अण, अनभिष्ट, अज्ञान विन्, मन्, मरुधी,
 विषा प्रदा गान-बुद्धि, हीन शब्द-रहित इ ।
 मूर्धना, स स्त्री (सं) अज्ञता, अनभिज्ञता,

मदता, दुर्निर, दुद्धि, व, अज्ञान, अवोष,
जन्ता इ ।

मूर्च्छना, सं स्त्री (म) सीता-प्रकार ।

मूर्च्छा, स स्त्री (स) सं, मोह, कर्मल,
मूर्च्छन, मूर्च्छाय, चैतन्य-सा-श्लेष-नाश ।

—आना, क्रि अ मूर्च्छ् (स्वा प से),
गृह (रि प से) मोह-मूर्च्छा प्राप् (स्वा
प अ), रुद्धा चेतना हा (जु प अ), नष्ट
सह-गुणचेतन (वि) मू ।

मूर्च्छित, वि (स) मूह, सुग्ध, मोहवश,
मूर्च्छात्र, नष्ट-गुण-विगत, चेतन-चैतन्य-सह ।

मूर्त्त, वि (स) मूर्तिमय, स्तार, अदृष्टियुक्त
र कठिन, स्थूल, सुसहन, धन इ 'मूर्च्छिना' दे ।

मूर्ति, सं स्त्री (स) चित्र अदृश्य रेखा
चित्र र प्रतिरूपि (स्त्री), प्रतिच्छद,
प्रतिमा इ अदृष्टि (स्त्री), आकार, स्वरूप
४ शरीर, देह ।

—कार स पु (स) चित्रकार र प्रतिमा
वार ।

—पूजा, स स्त्री (सं) प्रतिनिपूजनम् ।

—विद्या, सं स्त्री (स) मूर्ति-निर्मा-श्रयता ।

मूर्तिमान्, वि (स मय) शरीर, शरीरिन,
वय-देह, भू-धरिन्-वद, देहिन, मूर्त्त
२ इदम, वृत्तिगोचर, प्रत्यक्ष, सकार ।

मूर्द्धा, स पुं (स) शिरोरूप, दे 'चेद्य' ।

मूर्द्धा, स पु (स-द्धन्) शीर्ष, दे 'हिर' ।

मूल, सं पु (स न) शिष-का जटा,
ब्र(ह्म)ज, अप्रिमानक र वद-द इ उप
क्रम, आरग, अदि ४ आदि, कारा
बीज हेतु, प्रकृति (स्त्री) ५ मूलवित्त,
दे 'पूजी' ६ अद्य-अरभिक, अग ७ गृह
मूल, वास्तु (पु न) ८ मूलग्रथ, ब्याल्लेय
वक्य ९ नक्षत्रविशेष १० सन्निभदे ११ दे
'निपलानूल' । वि, मुख्य, प्रधान ।

—धन, स पु (स न) मूल, मूल, द्रव्य
वित्त, सामकम् ।

—मूलदा, वि (सं सम-सात्तमें) —कारणक,
उदमूल, —उपग्रह (उ अज्ञानमूलक, अज्ञान
कारणक इ) ।

मूली, स स्त्री (सं मूलक) राजकुल,
महकद, हस्तिदंत, वदमूल, दीर्घ, मूलक-

पत्रक-कदकम् । (छोटी मूली) मूलकपोनिव,
चातक्यमूलक, लघुमूलकम् ।

मिनी को मूली गावर समझना, सु, टाग-ग
नन् (रि आ अ), अवधीर्-भवाप् (जु) ।

मूल्य, स पु (म न) बल-न, अय,
अर्हा, अवकाय, पाप ।

—रहित, वि (स) तुच्छ, निस्तर, व्यर्थ,
धुद ।

—वृद्धि, स स्त्री (स) बल-अर्थ, वृद्धि-उप
वय-उश्रति (स्त्री) ।

मूल्यवान्, वि (स-वद) बहुमूल्य, महार्थ,
अभिमूय, अमूल्य ।

मूल्यकन, सं पु (सं न) मूल्यबल
अर्थ, निर्धारण-निद्वयनम् ।

मूप, मूप(पि)क, म पु (स) उदुर, दे
'चूहा' ।

—वाहन, स पु (म) गणेश ।

मूसल-र, स पु (स सुसल-ल) सुर(र)-
ल-ल, अयोधम् ।

—चद्र, स पु, अशिष्ट, असम्य र पुष्टदुष्ट ।

मूसल(ला)धार बरसना, सु, अनीव-अनि
वेन धारामरै वृप् (स्वा प से) ।

मूसलाधार वर्षा, आसर, धारा, आसर
(नि-नि)पात-वर्ष-वर्षम् ।

मूसली, स, स्त्री, दे 'सुसली' ।

मूसा, स पुं (स मूष) दे 'चूहा' ।

सुग, स पुं (स) हरिण, कुरा, नन,
वातापु, (अ)तिनयोनि, पा-क, क्रय-
ध, रिष्य-दय, चारुचन, शरण, कृष्ण
सार, ध्वन-र (पु), प्लाविन् (पुं),
मरु, रुह, रोहित, लिपु, वनन, शबर,
रौहित, वातप्रनी (पु) र पशुमत्र
र वन्यपशु ४ मार्गशीर्षमास ५ मकरराशि
६ पुरुषभेद ।

—छाला, स स्त्री (सं+हि) मृग-हरिण,
अतिन-वर्मन् (न) ।

—तृष्णा, स स्त्री (स) मृग, वृष-वृषा-
वृष्णि-वृष्णि-मरीचिका (सब स्त्री) ।

—नयनी, स स्त्री (स) कुरा-सुग-वृत्
(स्त्री)-श्लेषन-नी-अग्नी-वृष्णा-नयना ।

—राज, स पु (स) मृग, दे 'सिंह' ।

—सिरा, स स्त्री (सं) मृग-सिर-सिरम्
(न) शीर्षम् ।

रुग्या, स स्त्री (स) दे 'सिकार' ।

शुगाक, स पु (म) दास, अकलाञ्जन,
दे 'जौद' ।

रुगी, स स्त्री (स) हरिणी, कुरगी, एगी,
पृथ्वी २ अपरन्तर ३ कल्हरी ।

रुगेन्द्र, स पु (सं) शृग, पति-राव,
दे 'सिंह' ।

रुणाल, स पु (स पु न) विद्वान्, मृगाली,
पद्म-कमल-जाल, पद्मस्तु ।

रुन, वि (स) दे 'मुरदा' वि ।

रुतक, स पु (स पु न) दे 'मुरदा'
म पु ।

—कर्म, स पु [स-मन्द (न)] प्रेनहृत्य
(अत्येष्टि इ) ।

रुत्तिका, स स्त्री (स) दे 'मिष्टी' (१) ।

रुत्युजय, स पु (सं) वित्तमुल्य २ शिव ।

रुत्यु, स स्त्री (स पु) मरण, निषन-नं,
पचन्व ना, प्राणनाशः, तनु-स्वाग-विच्छेद,
कालधर्म, विद्यान, सम्पत्ति- (स्त्री), प्रलय,
अस्थव, प्राण मृत, नाश, मृति (स्त्री),
अवमान, दीर्घनिद्रा ।

—लोक, स पु (स) वनलोक २ मत्स्यलोक ।

रुदग, स पु (स) मुरज, पट्ट, घोष ।

रुद्र, वि (स) इक्ष्णु, मद्यम, छावस्पर्श,
२ श्नुनि मधुर, कवचश्च शन्य, मनुज
२ शुक्रमार, पेलव, कोमल, मृदुल, सौम्य,
४, मद्र, मधुर, विलम्बकारिन् ।

रुद्रता, स स्त्री (स) इक्ष्णुता, मद्यता
२ मनुजता, श्नुनि, मधुरता ३ शुक्रमारता,
बोमन्ता २ भद्रता, मधुरता इ ।

रुद्रुल, वि (स) दे 'मृदु' ।

रुद्रुलता, सं स्त्री (सं) दे 'मृदुता' ।

मै, भव्य (सं-अप्ये) अतरे, अतः, प्रायः
सप्तमी विभक्ति से (उ पर मै गृहे) ।

—सै, अध्याय (पृष्ठी के साथ), प्रायः पृष्ठी
मया सप्तमी विभक्ति द्वारा (उ रवाना
वगेणु वा इम श्रेष्ठ) ।

मै२, सं स्त्री (अनु) रोभर्ण, अजदम्भ ।

मैगनी, स स्त्री (वि गैनी) गृहपुत्रिका,
गृहपुत्री ।

मैगनीज, सं पु (अ) लोडकं, मात्स्य ।

मैडक, सं पु, दे 'मैडक' ।

मैडा, स प, दे 'मैडा' ।

मैबर, स पु (अ) सदस्य, ममान् (पुं) ।

मैह, स पु (स मेघ) > दे 'वर्षा' ।

मैहदी, स स्त्री, दे 'मैहदी' ।

मैक्सिमम, वि (अं) भूविष्ट, अधिकतम ।

मैख, स पु, दे 'मैख' ।

मैख, स स्त्री (का) दे 'खैटा' २ दे
'बील' ३ दे 'पखल' ।

—मारना, मु, बाध् (भ्वा आ से), विह्व
(अ प भ), विन्न (जा धा, विन्नवति) ।

मैखल-रुता, स स्त्री (स मैखल) बांकी
वि (स्त्री), रस(दा)नान, सारस(दा)न,
कस्या । मसकाकी २ मटियुज ३ सङ्गादि
निबधन ४ सैत्तितव ५ नर्मदा ।

मैगङ्गीन, स पु (अं) दाखालकोष्ठ २ सानि
यिवपविवा ।

मैगनेशियम, स पु (अ) भाज्यतु, मग्नकं,
माग्निषम् ।

मैघ, स पुं (सं) नल रथो धारा-अभो, धर,
अध्र अनु-वर्षि-वाह, स्तनयित्तु, बहादक,
अध्र नीरदः, वरिद, जलद, तोषद,
अनुद, अशोरः, पायोद, धन, जीमूत, धूम
योनि, वारि जल पयो, मुन् (पुं), पनाधन,
परन्थ २ रागभेद (संगीत) ।

—काल, सं पु (स) प्राङ् (स्त्री) बागं
(स्त्री, बहु), बरै-धन, काल-समय ।

—गर्जन, स पुं (स न) मेघ-मुदभि-ज्वाह-
स्वन, गजिनं, गर्जन-ना, स्तनिन, वि, स्फूर्धु ।

—दूत, सं पु (स न) बालिदास प्रणीनं
खलकल्पम् ।

—धनु, स पु [स-नुम (न)] शत्रुबाण ।

—नाथ, सं पु (म) मेघपति, इन्द्र ।

—नाद, सं पुं (सं) इन्द्रविद २ मेघगर्जनम्
३ वरा ।

—मण्डल, सं पु (सं न) पनपली, मेघ
मन्त्रा मन्त्रिणी ।

—दर्श, वि (सं) पनरयाम ।

—वाहन, सं पु (सं) इन्द्र, इन्द्र ।

मैत्र, स स्त्री (का) पदपत्क-जन् ।

—पौत्र, सं पु (का) पदपत्क-जन् ।

मेजवान, सं पु (फा) आतिथ्यकारिन्, अतिथिवेक ।

मेटना, कि स दे मिटाना ।

मेड, सं पु (म भिच) क्षेत्र, नीमा पर्यन्त ।

मेडक, सं पु (स मडक) मेक, प्लव, प्लवग, रुंदर, वर्षा, भू-शोष, अडुक, केंडुक, हरि, शाल, शा(मा)न् ।

मेडा, सं पु (स मेड) दे 'भेडा' ।

मेथिलेटिड स्पिरिट, सं स्त्री (अ) मिथिलिनसार ।

मेथी, सं स्त्री (स) मेथि (स्त्री), मेथिका मेथिनी, दीपनी, बहुपर्णी, गंध, फला-नीना ।

मेठ, सं पु [म मेदम (न)] वषा, वषा, मेद २ मेदस्विना स्वल्प ३ वस्तूरी ।

मेठा, सं पु (अ) पक्वाशय, पिचड, फड, मडक ।

मेदिनी, सं स्त्री (स) घरा, दे 'पृथिवी' ।

मेघ, सं पु (म) यज्ञ, मल २ हविस्(न) ।

मेघा, सं स्त्री (स) धारणावनी बुद्धि (स्त्री), स्मरणशक्ति (स्त्री), धारणा ।

मेघात्री, वि (स) पश्चि, धीमद, मेघावद ।

मेम, सं स्त्री (अ मैटम) गौरागी, श्वेतांगी (विदेशीय नारी) ।

मेमना, सं पु (अनु मे-में) अजपोत, छागशाव २ अविटिभ, मेपशिन् ।

मेमार, सं पु (अ) स्वपति, वास्तुशिल्पिन्, गृहमवेशक, पल्लव, *गेहकार ।

—का काम, सं पु, सत्रकर्मन् (न) ।

मेरा, री, सर्व (हि मै) मम, मदीय (-या स्त्री), मामकीन (-ना स्त्री), मामक (-मिका स्त्री), मत्- ।

मेरु, सं पु (स) सुमेर, हेमाद्रि, रत्नमा, सुरालय २ जपमालाया प्रधानगुट्टिया ।

—दूढ, सं पु (स) पृष्ठ, वश अस्थि (न) २ ध्रुवमध्यरेखा ।

मेल, सं पु (सं) दे 'मिलन' (१२) ३ ऐक्यत्व, साम्य, वैमत्वाभाव ४ सख्य, मित्रत्व, सौहार्द ५ आनुकूल्य, मामनस्य ६ साम्य, सादृश्यम् ।

—जोल, सं पु, सुपरिचय, अभ्यतरत्व,

—मिलाप, सं पु, गाढसौहार्दम् ।

मैला, सं पु (मं मेल) मेल्क, यात्रा,

ममाज, उत्सव २ जनसमर्द, सकुलम् ।

—टेला, सं पु, जनोप, जनसमर्द ।

मेवा, सं पु (फा) शुष्क, फलम् ।

—फरोश, सं पु (फा) फल, विक्रोत् विक्रयिन् ।

मेघ, सं पु (स) दे 'भेडा' २ क्रिय, राशि विशेष ।

मेहदी, सं स्त्री (स मेंधी) रागागी, मेथिका, यवनेष्टा, नख, रजिनी, रागगर्भ, कोकदत्ता ।

मेह^१, सं पु (स) मूत्र २ प्रमेह ३ मेघ ।

मेह^२, सं पु (स मेघ) जलद २ वृष्टि (स्त्री), दे 'वर्षा' ।

मेहतर, सं पु (फा, मि स महत्तर) ज्येष्ठ, प्रधान २ मलवाहक, दे 'भंगी' (मेहतरानी स्त्री) ।

मेहनत, सं स्त्री (अ) परिश्रम, प्रयास ।

—मजदूरी, सं स्त्री, शारीरिक-कायिक, श्रम

व्रतम् ।

—टिकाने लगाना, सु, श्रममाफल्यम्, श्रमेण कायमिद्धि (स्त्री) ।

मेहनताना, सं पु (अ + फा) * परिश्रमिक, कर्मण्या, मर्मण्या ।

मेहनती, वि (अ मेहनत) परिश्रमिन्, उद्योगिन् ।

मेहमान, सं पु (फा) अतिथि, दे ।

—खाना, सं पु, अतिथि प्रापुण, शाला-गृहम् ।

—नवाज़, वि, अतिथि प्रापुण, सेवक-पूजक-सत्कारक ।

—नवाज़ी, सं स्त्री, दे 'मेहमानदारी' ।

मेहमानदारी, सं स्त्री (फा) } आतिथ्य अतिथि, से

मेहमानी, सं स्त्री (फा मेहमान) } वा सत्कार ।

मेहर, सं स्त्री (फा) कृपा, अनुग्रह ।

मेहरवान, वि (फा) कृपाट, अनुग्रहशील ।

मेहरवानी, सं स्त्री (फा) दया, अनुकृपा ।

मेहराव, सं स्त्री (अ) तोरण-ग, वृत्तखण्ड-टम् ।

—दार, वि (अ + फा) तोरणाकार (द्वारादि) ।

मैं, सर्व (स अरुमद >) अहम् । सं स्त्री, अहमनि (स्त्री), अहकार ।

मेका, सं पु, दे 'मायका' ।

मैत्री, सं स्त्री (स) मैत्र्य, दे 'मित्रता' ।

मैथिल, वि (स) मिथिलासंबन्धिन् । सं पु, मिथिलावासिन् २ जनक ।

मैथिली, म खी (सं) वैदेही, जानकी ।
 मैथुन, स पु (स न) रत, सुरत, रति,
 क्रियाश्रीढा, महासुख, श्रीदारतन, अन्नस्य
 चर्यक, निधुवन, धर्मिन, समीप ।
 —करना, कि स, सुगत आनन (त प से),
 संभोग-रतिक्रीडा कृ, महासुख अनुभू ।
 मैदा, स पु (फा) ममिता, अपूप्य, *अट्टसार ।
 मैदान, स पु (फा) सम भूमि (स्त्री)
 दक्षल-स्थली प्रदेश, उपशाल्य २ क्रीडा,
 भूमि क्षेत्र ३ युद्धभूमि, रणक्षेत्रम् ।
 —मारना, मु, वि पराजि (भ्वा आ अ),
 दे 'जीतना' ।
 मैत्र, स पु (स मदन) वामदेन
 २ दे 'मौम' ।
 मैत्रफल, सं पु (सं मदनफल) श्वसन-छन्दन
 शल्य-करहाटक, फल २ (वृक्ष) मदन,
 श्वासन, छन्दन, शल्य ।
 मैत्रशिला, स पु (स मन शिला) नेपाली,
 मनोहा, शिवा, कुनटी, दिव्यौषधि (स्त्री),
 नागजिहिका, कल्याणिका ।
 मैत्रा, सं खी (स मदना) शा(सा)रिका,
 चित्रलोचना, कुणसी, मधुरालापा, मेधाविनी,
 गो, किराटा किराटिका, कलहप्रिया ।
 मैत्राक, सं पु (सं) हिमवत्सुत, सुहिरण्य,
 नाम ।
 मैया, स खी (स मानुका) दे 'माता' ।
 मैल, सं खी (सं मलिन >) दे 'मल'
 (१-२) । * दोष, विहार ।
 —मोरा, वि (हि + क्रा) मल, मोषिन्-मोष्यु ।
 सं पु, अन्तर-वस्त्र-वसन-वासन (न)
 २ दे 'सावुन' ।
 हाथ बी—, मु, कुष्ठवस्तु (न) पुत्रदन्वयम् ।
 मैला, वि (म मलिन) दे 'मलिन' । सं पु,
 दे 'मल' (१-३) ।
 —मरना, कि स, आविलयनि-मलिनयनि
 (ना धा), पत्रिली-मलिनोह ।
 —मोना, कि अ, आविली मलिनोभू,
 वस्तुष पत्रिल (वि) जन् (रि आ मै) ।
 —मुचैला, वि, अनि आविल वस्तुष मलिन ।
 मो, सं खी, दे 'मूठ' ।
 मोडा, सं पु (स मूर्द्धन >) *शरकांडपीठ
 = मुबमूल-स्वध-प्रदेश ।
 मोदा, सं पु (सं) दे 'मुक्ति' ।

—विद्या, स खी (स) वेदानशास्त्रम् ।
 मोगरा, सं पु (म मुदगर) अतिमन्थ गन्ध,
 राः सार, विट, प्रिय, जन मृदा, इष्ट २ दे
 'मुंगरा' ।
 मोघ, वि (स) *वर्ष, निफल ।
 मोच, म खी (स मुच् >) सधि, व्याक्षेप
 व्यावर्तन, स्नायुविधान ।
 —आना या निकलना, कि अ, सधि-
 व्याक्षिप् (कर्म) व्यावृत् (भ्वा आ से),
 स्नायु विधान (कर्म) ।
 मोचक, स पु (स) मुक्तिद २ मन्वामिन्
 ३ कदली ।
 मोचन, म पु (स न) मोक्षण, मुक्तिदानं,
 वधनभजन, मुक्ति (स्त्री) । वि, मोचक,
 मोक्षन, मुक्तिप्रद ।
 मोचना, स पु (स मोचन >) *मोचन,
 *वालोत्पादन २ मुचुटी, लोहकारीयक
 रणभेद ।
 मोचरस, सं पु (स) मोच, स्नात्र-स्नान
 निर्धान, मरुमन्वीष्ट, सुरत ।
 मोची, स पु (सं मुच् >) चर्मकार, पाद-
 कार मथावक ।
 मोजा, स पु (फा) अनुपदीना, *चरणचरणं,
 दे 'जुराव' ।
 मोजिजा, स पु (अ) चमत्कार, कौतुहं,
 आश्चर्यम् ।
 मोट, म खी, दे 'गठरी' ।
 मोटन, स पु, (सं न) पेषणं, चूर्णनं,
 मर्दन, णटनम् ।
 मोटा, सं पु (अ) चाल्य प्रवर्तक, यत्रम् ।
 —टार, सं. खी (अं) चित्ररत्न, रथ,
 *मोटरम् ।
 —टारना, सं पु, मोटरगारम् ।
 —टारवर, स पु, मोटरचालक ।
 —यथ, स खी *मोटर, यत्रम् ।
 —टोट, सं खी *मोटचनीरा ।
 —साइडिल, सं खी *मोटरसाइडलम्,
 *फटरटिया ।
 मोटा, वि (सं मुटि > ?) पीन, पीवर, पुष्ट,
 पुष्टा (श्री स्त्री), रम्य, स्थूलदेह, मरुमन्विन्
 २ पन, निविह, साद्रि, गाद, स्थूल ३ वधामव,
 कुपिष्ट, ४ अय, निवृष्ट, हान, गर्ह ५ कुरूप

३ 'ममाधर', विगिण ७ दृम, गवत् ८
नहृत्, अहृत् ९ धनत्, गन्त् ।

—असामी, स पु, धनिन्, धनशन्नि,
श्रीमन् ।

—ताता, वि, दृष्टपुष्ट, पद्या, माम्ल ।

मोती श्रात, म स्त्री, सामान्य-माधारण प्राकृत,
वार्ता ।

मोट्टे हिमाय से, कि वि, *शूलमानेन ।

मोटाड, म स्त्री
मोटापन, मोटापा, म पु

(हिं मोटी) पीवरता,
मरोदुदि (स्त्री), रथ
लता पीनता २ धन
न ३ डना, माद्रता इ

मोठ, म स्त्री (म मकुष्ठ) रात्र-अरण्य-वन,
मुदग मुकुष्ठ छत्र, मद(सु)ष्ट श्लक ।

मोड म पु (हिं मुडना) (नदीमा
आदि ना) वर आवृष्टि (स्त्री)
२ वक्रता, वक्रिमन् (पु), वक्रोभव,
शिक्षना ३ दे मुडना स पु ।

मोडना, क्रि म, व 'मुडना' के प्रे रूप ।

मोडा, स पु, दे 'मोडा' ।

मोतदिल, वि दे 'मोतदिल' ।

मोतिया, न पु (हिं मोती) मही, मलिका,
वन, चन्द्रिका, गौरी, प्रिया मौन्या, मिता, दे
'मोतरा' (१) ।

मोतियाचिद्र, स पु (हिं मोती + स चिद्र)
मौक्ति-मुक्ता विटु (नेत्ररोग) ।

मोती, म पु (म मौक्ति) मुक्त, शक्ति,
मुक्ताश्च शुक्तिन् ।

—पिरोदा, क्रि म, मौक्तिकानि मूत्र (चु)
उ(घु)न (घु प से) समथ् (क प से) ।
घु, समधुर भाष् (स्वा आ मे) २ मुख
शानरे लिप (घु प मे) ३ रद् (अ प
मे) ४ सुसूदनार्थं कृ ।

मोतीचूर, म पु (हिं मोती + चूर) मुक्ता
मासक ।

—आँख, म स्त्री, *मौक्तिकानत्र, लडुगोलभा
सुरनेत्रम् ।

मोतीज्वर, म पु (हिं मोती + स ज्वर)
दीनल-नसूरिका, ज्वर ।

मोतीसि(क्ष)रा, म पु (हिं मोती + श(रना)
आन्त्रि मन्थर, ज्वर ।

मोधा, स पु (सं मुलक क) मुक्ता, कुरु
विद, भद्रा, भद्रक ।

मोद, म पु (स) हर्ष, आनन्द, दे
प्रमत्रक ।

मोदक, स पु (स) मिष्टान्नभेद । वि, हर्ष
चनक, आरुदक ।

मोदी, स पु (स मोदक >) अन्न, विक्रेत
विक्रयिन्, दे 'परचूनिया' ।

—प्राणा, स पु (हिं + प्रा) अन्न
भाडारम् ।

मोम, स पु (फा) सिक्थ, सिक्थक, मांस
वामल-ल, मधुज, मधुशेष, मधुच्छिष्ट, मधु,
मधुधूम ।

—की नाक, स स्त्री, मु, चलचित्त, अस्थिरमति ।

—जामा, स पु (फा) *माधुज-सैविक-
मिक्थक, वलम् ।

—दिल, वि (फा) मृदुमानस, आद्रचित्त ।

—बत्ती, स स्त्री (फा + हिं) मधुज सिक्थ,
वर्ती-वर्ति (स्त्री) ।

—करना या बनाना, मु, दयादीकृ, करुणार्द्र
(वि) विभा (जु उ अ) ।

—होना, मु, दयार्द्र (वि) मू, अनुकप्
(स्वा आ से) ।

मोमियाई, स स्त्री (फा) कृत्रिमशिलानु
(न), कृत्रिमशिलानित (स्त्री) २ प्रण-
पूरक स्निग्धौषधभेद ।

मोमी, वि (फा) सिक्थमय, माधुज,
सैविक ।

मोर, स पु (स मयूर) बाँहण, नीलकण्ठ,
चित्र, पिच्छक पत्रक, कलापिन्, केकिन्,
चद्रकिन्, नतनप्रिय, बाँहिन, मुनगारि,
मयानदिन्, शिरादिन्, शिखावल, वर्षामद,
प्रचलाकिन् ।

—की ध्वनि, स स्त्री, 'केवा' दे ।

—की पूल, स स्त्री, कलाप, पिच्छ, प्रच
लाक, वहं, शिखड ।

—चद्रिका, स स्त्री, चद्रक, मेचक ।

—पखी, स स्त्री, कैलि-वि १२, नौका ।

—मुकुट, म पु, मयूरमुकुट-ट, शिखड
शेतर ।

—शिखा, स स्त्री, बाँहचूडा, शिखिशिखा,
शिखालु ।

मोरचा, स पु (फा) दे 'जग' २ मुकुट
मलम् ।

मोरचा^२, स पु (फा मोरचा^२) परिखा, खेप, खातम् ।

—बदी करना, मु, परिखा परिवेष्ट (प्रे) परिखा सन्ध (भा प मे) सेना छातेपु निनुञ् (र आ अ) ।

—सेना, मु, युध (दि आ अ) ।

मोरछल, म पु (हि मोर+छड) *शिल्पट चामर, *कलापव्यजनम् ।

मोरनी, स स्त्री (हि मोर) मयूरी शिखरिणी, बहिणी, केकिनी ।

मोरी, स स्त्री (हि मोहरी) नाली, नालि (स्त्री) *वहनी, जलमाग ।

मोल, स पु (स भूत्य, दे) ।

—लेना, कि स, दे 'खरीदना' ।

—तोल, स पु, अधनिर्धारण, मूल्यानिर्णय ।

मोह, सं पु (स) भ्रम, भ्राति-मिथ्यामति (स्त्री), विवर्न, आभास, प्रपंच, अविद्या अज्ञान २ ममतात्व ३ स्नेह, रस, प्रेमन् (पु न) ४ वष्ट, दुःख ५ मूर्च्छा ।

—लेना, कि स, मुह (प्रे), मन ह (स्वा प अ), वशी कृ ।

मोहक, वि (स) चेतोहर, मनो-हारिन् रत्न, २ मोहजनक ।

मोहताज, वि (अ) दे 'मुहताज' ।

मोहन, सं पु (स) मोहक, मनोहारिन् २ शौकण्य ३ मूर्च्छाकारक उपचाग्भेद (तत्र) ४ अस्वभेद ५ कदपवाणविशेष ६ धत्तरूप । वि, मोहक, चेतोहर ।

—भोग, स पु (सं) (१-३) सयाव कदली-आम्र, भेद ।

मोहना, कि अ (स मोहन) अनुरन्-आमन (कर्म), आसक्त-अनुरक्त-बद्धभाव भू २ मुह (दि प से), दे 'मूर्च्छा आना' । कि स, प्रीति-अनुशास-अभिलाषजन (प्रे), अनुरज् (प्रे), वशी कृ २ भ्रम भ्राति-संदेह जन (प्रे), प्रनु-वच (प्रे) । स पु, अनुरजन, अनुशास मूर्च्छा, भोदन, वशीकरण, वचन, प्रदारणम् ।

मोहनी, सं स्त्री (स) विष्णो रूपविशेष २ मिष्टान्नभेद ३ मोहन, शक्ति (स्त्री) भंत्र ४ माया । वि स्त्री (सं) मोहवा, चेतोहरि ।

—डालना, मु, अभिवरेण मायया वा वशीकृ ।

मोहर, स स्त्री (फा) दे 'मुद्रा' (१-४) । २ भुवर्णमुद्रा, निष्क व, दीनार ।

—लगाना, कि स., मुद्रयति (ना धा), मुद्रया अक (सु) ।

मोहरा^२, स पु (हि मुँह) पात्र भाजन, मुख २ पदार्थत्व अग्र-ऊर्ध्व, भाग ३ पशुमुख जात्रक ४ नासीरचरा (पु बड्), सेना मुख ५ निगमनमार्ग, द्वारम् ।

मोहरा^२, स पु (फा मोहर) शार-रि, सेचनी २ मृगमय *मस्थानपुत्र (माचा) ३ दे 'जहरमोहरा' ।

मोहलव, स स्त्री (अ) अवकाश २ अवधि ।

मोहित, वि (स) मोहमस्त, भ्रात २ आमक, अनुरक्त, बद्धभाव ।

मोहिनी, वि तथा स स्त्री (सं) दे 'मोहनी' वि तथा स स्त्री ।

मोही, वि (स-हिन्) मुष्कारिन्, चेतोहर २ अनुरागिन्, स्नेहिन् ३ भ्रात ४ तुष्य, लोभिन् ।

मौजी, म स्त्री (स) मुजमेरला ।

—बधन, स पु (स न) मुजमेरलधारणम् ।

मौजा, स पु (अ) घटनास्थानं २ स्थान, प्रदेश ३ अवसर, अवकाश ।

—देखना, मु, अवसर प्रनिषा (प्रे, प्रतिपा लयति) ।

—हाथ से न जाने देना, मु, अवसर न वा (प्रे वापयति) हा (सु प अ, प्रे, हापयति) ।

मौकफ, वि (अ) दे 'वरखास्त' ।

मौकफ़ी, म स्त्री (अ) दे 'वरखास्तागी' ।

मौकिक, स पु (स न) मुक्ता, मुक्ताफल, शौकिकम्, शक्तिजम् ।

—दाम, सं पु (स-म्वह न) मुक्ता-मौकक, हार-नर-मुक्तादली ।

—मर, स पु (सं) दे 'मौनिकदाम' ।

मौखिक, वि (सं) वाचक लल विना ।

मौज, स स्त्री (अ) तरंग, वप्सो, बोबी वि (स्त्री) २ कामचार, टं, छदम् (न), विततरंग ३ आनन्द, माद ४ वेमद, विभव ५ दे 'धुन' ।

—आना, मु, स्वच्छन्दया महत्ता प्रवृत् (स्वा आ से) ।

—मनाना या उठाना, मु, नद (भ्वा प से), मुद् (भ्वा आ से), रग् (भ्वा आ म) ।
 मौज़ा, स पु (अ) ग्राम ।
 मौज़ी, वि (अ मौन) अनदिन, उल्लामिन् २ वामचारिन्, त्वैरिन् २ अस्थिरमनि ।
 मौजूद, वि (अ) उपस्थित, विद्यमान ।
 मौजूदगी, स स्त्री (अ + फ्रा) उपस्थिति (स्त्री), विद्यमानता ।
 मौजूदा, वि (अ) वर्तमान, विद्यमान, प्रचलित, आधुनिक, सांप्रतिक ।
 मौत, स स्त्री (स मृत्यु दे) ।
 —सिर पर खेलना, मु, जीविनसशये वृद् (भ्वा आ से) ।
 अपनी—मरना, मु, प्रकृत्या स्वभावेन मृ (तु आ अ) ।
 मौन, स पु (स न) निश्च्युता, तूष्णीं भाव, वाक्, रोध-नियमन-स्तम्भ २ मुनि व्रतम् । वि, दे 'मौनी' ।
 —मृत, स पु (स न) मृकता-मृकिम-तूष्णीं कता, प्रतिज्ञा सकल्प व्रतम् ।
 —खोलना, क्रि अ, मौनं भञ् (रु प अ), तूष्णींभावं त्यज (भ्वा प अ) ।
 —धारण करना, क्रि अ, वाचयम् (भ्वा, प अ)-निरुध् (रु उ अ), मौनं धृ (तु) भञ् (भ्वा उ अ) ।
 मौनी, वि (स निन्) वाचयम्, मौनव्रतिन्, मृक, नि शब्द, तूष्णीक । स पु (स) मुनि, तपस्विन् ।
 मौर, स पु (स मुकुट) वरस्य तालपत्र मुकुट, *मुकुट, २ प्रधान, शिरोमणि ।
 मौरी, स स्त्री (हि मौर) कृष्णालालपत्रमु कुटक, *मुकुटकम् ।
 मौरुसी, वि (अ) पैतृक, पितृ, परंपरागत ।
 मौर्ष्य, स पु (स न) मूर्खता, अन्ता, बदता, मूढता ।

मौर्य, स पु, (स) प्राचीन भारतस्य वंश विशेष ।
 मौर्वी, स स्त्री (स) धनुष्युण, प्रत्यक्षा, ज्या ।
 मौलसिरो, स स्त्री (स मौलि + श्री >) बकुल, सीधुगंध, मुकु(कु)ल, मधुपुष्प सुरभि, स्थिरकुसुम, अमरानंद ।
 मौला, स पु (अ) परमेश्वर ।
 मौलि, सं स्त्री (स पु स्त्री) शिखर, शृंग, ऊर्ध्वभाग २ शीष, मस्तक ३ मुकुट, किराट ४ जूट, जूटक ५ अशोकवृक्ष ६ प्रधान, मुख्य ७ पृथिवी ।
 मौलिक, वि (स) मौल, आधारभूत २ प्रधान, मुख्य ३ भाव, आदिम ।
 मौमा, स पु, दे 'मासद' ।
 मौसिम, स पु (अ) ऋतु, काल, समय २ उपयुक्तसमय, उचितकाल ।
 मौसिम, वि (फ्रा) आर्तव, ऋतु-संबन्धिन् विषयक २ समयातुकूल, कालानुरूप ।
 मौसी, सं स्त्री, दे 'मासी' ।
 मौसेरा, वि (हि मौसी) मातृश्वस्रसंबन्धिन् ।
 —भाई, स स्त्री, मातृ, श्वसेयी श्वस्त्रीय ।
 मौसेरी बहिन, स स्त्री, मातृ श्वसेयी श्वस्त्रीया ।
 म्यौर्व, स स्त्री (अनु) विडालशब्द, *म्यौवार ।
 —करना, मु, भवेन मदमद वद् (भ्वा प से) ।
 म्याद, स पु, दे 'मीआद' ।
 म्यान, स स्त्री, दे 'नियान' ।
 म्लान, वि (स) म्लान, विशीर्णं २ दुर्बल ३ मलिन ४ सिन्न, अवसन्न ।
 म्लानि, स स्त्री (स) म्लानता, कानिश्चय, विव्रणता २ खेद, अवसाद, शोक, म्लानि, (स्त्री) ।
 म्लेच्छ, स पु (स) वर्णाश्रमधर्मविहीन, अनार्य २ गोमांसभक्षक ४ अस्पृष्ट्याधिन् ५ दुर्वृत, दुष्ट । वि, अधम, नीच, पापिन् ।

य

य, देवनागरीवर्णमालाया षड्विंशो व्यञ्जनवर्ण, यकार ।
 यता, स पु (स यन्त्) शासक, निदेशक २ वाहन-चालक, सारथि । ३ हस्तिपत्र, गजानोक् ।
 यंत्र, सं पु (स न) देवापधिष्ठान, विविध प्रभावयुक्त अंकाद्यख्युत कोष्कचित्र (तत्र.)

२ दारयत्रादि, यत्र (मशीन) ३ साधन, उपकरण ४ अग्न्यस्त्रं ५ वाद्य, वीणा ६ दे 'ताला' ।
 —गृह, स पु (स न) यत्रशाला २ मान गदिर, वेधशाला ३ (अपराधिना) यत्रणागृहम् ।
 —मंत्र, स पु (स न) अभिचार, कुहक, कुचति ।

—प्रिया, स स्त्री (म) यत्र शास्त्रविशानम् ।
 —शाला, स स्त्री (स) दे यत्रगृह ।
 यत्र, म पु (म) यत्रर यत्र, शान्तिम् ।
 यत्र, म पु (स न) निवर्षण, दन्तम्
 ० ब वन्, मयमनम् ३ पीडा, वेदना
 ४ रक्षण, अभिरक्षा ।
 यत्राणां, म स्त्री (स) कष्ट, क्लेश, यातना
 २ वेदना पीडा ।
 यत्रालय, स पु (म) यत्र-गृहशाला
 २ मुद्रणालय ।
 यत्रित, वि (स) यत्ररुद्ध २ तालकबद्ध ।
 यक्तता, वि (फा) अनुपम, अद्वितीय, अप्रतम ।
 यक्तर्षो, वि (फा) तु-य, सन, सदृश ।
 यज्ञीन, स प (अ) निक्षय २ विश्राम ।
 यज्ञ्य, म पु (म न) कालखट, कालक,
 बालेन, बरका, महास्नायु, दे 'जिगर'
 २ यज्ञ्य, जर्जर-वृद्धि ।
 यक्ष स पु (म) देवताभेद, गुह्यक २ कुबेर ।
 —रात्र, म पु (स) कुबेर, यक्षराज ।
 यक्षिणी, स स्त्री (स) यक्षभार्या, यक्षी,
 २ कुबेरपत्नी ।
 यक्ष्मा, म पु (स यक्षन्) क्षय, रोग,
 राजयक्ष्मन् (पु), रोगराज ।
 यज्ञनी, स स्त्री (फा) मान, मंड-रस
 २ शाक, मंड रस ।
 यज्ञान्तर, स पु, अन्तर्भाव, सन्धि, बाध,
 बहु । वि, प्रकारिन् २ अनुपम ।
 —योगासा, स पुं, स्वर्गीयपरस्वीया (बहु)
 २ मित्रवाधना (बहु) ।
 यज्ञमान, स पु (स) यज्ञपति, यष्ट, जतिन्,
 यज्ञ-कृत्-वर्तु २ दानिन्, दत्त ।
 यज्ञुर्द मं पु (स) अर्थागा धर्मप्रवर्षिणः,
 यज्ञुम (न), यज्ञु अति (स्त्री) ।
 यज्ञुर्वेदी, स पु (स-रिन्) यज्ञुविद् (पुं) ।
 यज्ञ, स पु (स) याग, अन्तर, सव-जन,
 मत्, वस्तु, सन, हवनं होम यज्ञ जि,
 हज्या, इष्टि (स्त्री), मत्तनु, मह २ विष्णु ।
 —यज्ञ, म पु [मं मंन् (न)] यज्ञ, क्रिया
 कृत्य २ व्रतवाङ्म ।
 —कुंठ, मं पुं (मं पुं न) हवन, वेदो-कुंठम् ।
 —वति, सं पु (स) दे 'यज्ञमान' ।
 —यज्ञ, मं पुं (सं) यज्ञिवचरि २ अथ
 ३ धाम ।

—यात्र, म पु (म न) याग, भावन भाव् ।
 —भूमि, स स्त्री (स) यागक्षेत्रम् ।
 —शाला, स स्त्री (स) यज्ञसदन-मंदिरं
 आगारम् ।
 —सूत्र, स पु (म न) यज्ञोपवीतम् ।
 —स्तम्भ, स पु (स) यागवृष ।
 यज्ञाग, स पु, (स न) यज्ञभाग २ यज्ञ
 साधनम् सामग्री उपकरणम् । (सं पुं)
 उदुम्बर जतुकल २ क्षदिर, दत्तधावन
 ३ विष्णु ।
 यज्ञागार, स पु (स न) यज्ञ, शाला वेदी
 वेत् (स्त्री) ।
 यज्ञोपवीत, स पु (स न) पवित्र, सावित्री
 यज्ञ ब्रह्म, सूत्र, द्विजायनी ।
 यति, स (सं) यतिन्, जितेन्द्रिय,
 तापस, परिश्रान्त, सन्यासिन्, योगिन्,
 भिक्षु, रक्तवसन २ ब्रह्मचारिन् ।
 —धर्म, स पु (स) सन्यास, गिष्यावर्षम् ।
 यति, स स्त्री (म) विगम, विरति (स्त्री),
 विभ्राम, पाठविच्छेद (छंद) ।
 यतिनी, स स्त्री (म) सन्यासिनी, परित्र
 जिज्ञा २ विधवा ।
 यती स पुं (स तिन्) दे 'यति' 'सं पु' ।
 यतीम, सं पु (अ) छल्लिमड, अनाथ,
 मातृविह्वलीन ।
 —याना, स पु (अ-फा) अनन्धान्य,
 छल्लिमडालय ।
 यत्न, स पु (स) प्रयत्न, उद्योग, उपम,
 अध्यवसाय, चेष्टाहित, आम्र-याम, परि,
 श्रम, व्यवसाय २ उपाय, बुक्ति (स्त्री)
 ३ विरिस्ता, उपचार, रोगप्रतिकार ।
 —यत्ना, वि अ, प्र, यत् तथा येष्ट (स्वा आ
 भे) परि, श्रम (दि प से), अध्यवसाय
 मो (दि प अ), उद्यम (भ्वा प अ),
 आवम (भ्वा दि प से) प्रयत्न परिश्रम
 अध्यवसाय य ।
 —शील, वि (स) यत्नकर, उद्यमिन्, उद्यो
 गिन्, आम्र-यामिन्, परिश्रम उद्योग यम,
 शील पत्नरायण इ ।
 यत्र, अथ्य (सं) यत्रियु देदे शाले-रूपने ।
 —तत्र, अथ्य (स) अत्र तत्र, इत्यतः २
 अनेत्र, यत्रुत्र ।
 यथासा, अथ्य (सं न) यथा, मार्ग राण्डम्,

मग अना, अनुस्वार-अनुकृत् २ यथायोग्यम्,
 दशोच्चिनम् ।
 यथा, अव्य (मं) देन प्रकरो, यदा रीत्या
 २ दृष्टान् उदाहरण, रूपेण, तथा यथा हि,
 नृत्, इव, यद्वत्, अनुरूप, अनुनासम् ।
 —काम, क्रि वि (स न) यथा, इच्छ इष्ट
 ईप्सिन् अभिमतम् ।
 —क्रम, क्रि वि (म न) क्रमेण, क्रम-अनुसारेण ।
 —तथा, क्रि वि (स) यथाकथञ्चिद्, येन
 केन प्रकारेण ।
 —भक्ति, क्रि वि (म न) यथाहुक्ति, यथाङ्ग-नम् ।
 —योग्य, वि (म) यथोचित, यथाह ।
 —रुचि, क्रि वि (स न) दे 'यथाराम' ।
 —वत्, क्रि वि (स) यथोचित, यथाह,
 यथाहुक्त २ यथाविधि, नियमानुसार ३ यथा
 नर्थ, यथ सत्यम् ।
 —शक्ति, क्रि वि (स न) यथा-बल-भामर्ष्य
 क्षमम् ।
 —शास्त्र, क्रि वि (स न) शास्त्रानुसूलम् ।
 —सम्भव, क्रि वि (स न) यथाशक्यम् ।
 —समय, क्रि वि (स न) यथाकाल,
 कालानुसारम् ।
 —साध्य, क्रि वि (स न) यथा, शक्ति
 मनाध्यम् ।
 —स्थान, क्रि वि (स न) स्थानानुसूल,
 रचिनस्थानेषु ।
 यथार्थ, वि (स) सत्य, अवितथ, निर्दोष,
 निभ्रान्त २ उचित, सत्य, युक्त । क्रि वि
 (म न) युक्त, यथाह, साधन, सत्यम् ।
 यथार्थता, स स्त्री (स) सत्तरता, निर्दोषता
 २ औचित्य, युक्तता ।
 यथच्छ, क्रि वि (स न) 'यथाकाम' दे ।
 वि, (न) यथष्ट, यथेप्तिन्, यथाक्रम ।
 यथच्छाचार, स पु (स) स्वच्छाचार,
 उपेक्ष्यवहार ।
 यथच्छाचारी, वि (स रिन्) स्वच्छन्द,
 न्वैर, स्वैरिन्, अनियत्रित ।
 यथष्ट, वि तथा क्रि वि दे 'यथेच्छ' ।
 यथोचित, वि (स) यथा, योग्य अह युक्त ।
 क्रि वि (स न) यथा, योग्य-अहम् ।
 यथा, अव्य (स) यस्मिन् काले-समये ।
 —कदा, अव्य (स) काले काले, कदाचिद्,
 कदापि ।

यद्दि, अव्य (म) चेत् (यह वाक्यारम्भ मे
 न्ही-ना) ।
 यद्दु, म पु (न) यस्मिन्पु ।
 —नान्, म पु (न) यद्दु, नाथ-श्रेष्ठ पति
 राज, श्रेष्ठम् ।
 यद्यपि, अव्य (म) पद्यै वा सप्तमी से भी,
 त्रै, यद्यपि दशरथ विलाप करना रहा तो भी
 राम वन को चक दिया = विलपित दशरथे
 (विलपनो दशरथस्य) रामो वन ययौ ।
 यम, म पु (स) धर्मराज, नितुपति,
 कृपा यमुनाप्राह वैवस्वन्, काल-दृढपर,
 अनर धन मद्रिषध्वज, मन्षिवाहन,
 जोवितेश २ इन्द्रयनिग्रह ३ योगा-विरोध,
 अहिमन्त्य-स्तेनमक्षचयापरिग्रहमपालन ४.
 बत्तु ७ दे 'यमज' ।
 —दूत, स पु (म) धर्मराजचर ।
 —पुर, स पु (स न) यमपुरी, यमलोक ।
 —राज, स पु (स) दे 'यम' (१) ।
 यमक, स पु (स न) शब्दालकाभेद
 (काव्य), (म पु) समय २ दे 'यमज' ।
 यमन, म पु (स-औ) यमौ, यमकौ, यमलौ
 २ अधिनीकुमारी (जोडे में से एक) यम,
 यमल । वि, यम, यमक, यमल ।
 यमल, स पु तथा वि, दे 'यमज' ।
 यमुना, स स्त्री (स) जालिन्दी, कलिन्दी,
 कन्धा-नदिना, यमौ, यमनी, सर्वभुता, तरणि
 तनुना २ दु ।
 ययाति, स पु (स) नहुषपुत्र, पुरनिष्ठ,
 चद्रवशिनृपविरोध ।
 यरजान, स पु (अ) पाण्डु-रोग-आमय,
 कामला, पाण्डुक ।
 यव, म पु (स) मिनता-हा-शुक, मध्य,
 दिव्य, अक्षय, धान्यराज, तुराप्रिय, शकु,
 महेष्ट, पवित्रधान्यम् ।
 —यव, स पु (स) यवन, पक्ष्य, यवाग्रज ।
 यवन, स पु (स) यूनानवासिन् २ दे
 'सुमममन' ३ विदेशीय ४ म्लेच्छ ५ वै ।
 ६ वेगवान् अश्व ।
 यवनानी, स स्त्री (स) १ २ यवन-यूनान,
 भाषा-लिपि (स्त्री) ।
 यवनारि, स पु (सं) कृष्ण, नन्दनन्दन,
 बामुदेव, मधुमूषण ।

यवनिका, स स्त्री (म) जवनका, अपनी, कांउपट २ निरस्करिणी प्रनिस्तीरा, व्यवधानम् ।
यवनी, स स्त्री (स) यवननभ्यां २ यवन आतेनारी ।

यवस, स स्त्री (म पु न) वाम, शाट्, नृणम् २ पठ, पलाट् धान्यवृणम् ।

यवागू, स पु (स स्त्री) उष्णिका, आणा, विलेपी, तरला ।

यश, स पु [म यशस (न)] ग्याति-कील विश्रुति प्रमिदि (स्त्री) श्लोक, विभाव, अभिल्यान, समाख्या ।

—गाना, मु प्रशस (भ्वा प से), श्लाघ (भ्वा भा से) २ वृत्तज्ञा (क ड अ), उपकार विद् (अ प से) ।

यशस्वी, वि (स स्वन्) कौन्मत्, प्र वि, ख्यात लोकविभूत, सुशस यशोभर, कौन्मत्, पुण्यलोक, प्रमिद् । [यशस्विनी (स्त्री) = कौन्मती, विरयाना इ] ।

यष्टि, } स स्त्री (स) दड, लगुड, यष्टी
यष्टिका, } २ हारभेद ।

यह, सव (स इह >) इदम् एतद् ।

यहाँ, कि वि (सं इह) अत्र, अस्मिन् देशे-स्थाने ।

—तक, कि वि, एतद्—अत्र, पर्यंत—यावद्—अवधि-अनम् ।

—यहाँ, कि वि, अत्र तत्र, इतस्तत, अत्रामुत्र ।

—से, कि वि इत, अस्मात् स्थानात् २ अत इत, पर-ऊर्ध्वं प्रभृति ।

यही, कि वि (हिं यह + ही) अयं इय इद एष-इया इतद्, एव ।

यहीं, कि वि (हिं-यहाँ + ही) इहैव, अत्रैव, अस्मिन्नेव स्थाने ।

यहूदी, सं पु (इब्रानी, यहूद) यहूद, नामिन् भाषालिपि (स्त्री) ।

यों, कि वि, दे यहाँ ।

या, अन्व (का) वा, अथवा यद्वा, (प्रवृत्त करने में) नु ।

याहूत, स पु (अ) दे ' इल ' (रत्न) ।

याग, स पुं (म) दे ' यज ' ।

याचक, सं पु (म) आधिन्, प्रार्थक २ मिथु, मिथुक ।

याचना, सं स्त्री (सं) यावनं, याव्या, प्रार्थनं ना । कि स, दे ' भागना ' ।

याजक, स पु (सं) याजयित्, पुरोहित ।
याज्ञवल्क्य, सं पु (सं) वैशंपायनशिष्य, वाजसनेय २ जनकसम्बन्धी योगीश्वरयाज्ञवल्क्य इ स्मृति-कारविशेष ।

याज्ञिक, सं पु (सं) यजमान, यष्ट् २ याजयित् । वि, यज्ञि(शी)य, यागविषयक । [याज्ञिकी (स्त्री)] ।

यातना, स स्त्री (स) पीढा-वैदना-व्यथा—अतिशय २ दमदण्डपीडा ।

यातायात, स प (स न) गतागत, आयातनियत २ प्रेत्यभाव, पुनर्नगन् (न) ।

यात्रा, स स्त्री (स) प्रस्थान, प्रयाण, जन्मा-गम भूत, प्रवस, देश, भ्रमण पर्यटन, प्रस्थिति (स्त्री), अध्व मार्ग, नामन क्रमणम् ।

—करना, कि अ, प्रया (अ व अ) प्रवम् (भ्वा प अ), देशे गत (भ्वा प से), यात्रा कृ ।

यात्री, वि (स त्रिन्) पथिक, पथिल, पाथ, अध्वग, अध्व य, पादत्रिक, प्रबामिन-मार्गिक, यात्रिक, सारणिक २ तीर्थयात्रिक, वापटिक ।

याद्, स स्त्री (का) धारणा, स्मृति-स्मरण शक्ति (स्त्री) २ स्मरणम् ।

याद्गार, स स्त्री (का) स्मृतिविद्, स्मारकम् ।

याद्दाहत्, स स्त्री (का) स्मृति (स्त्री), धारणा २ स्मरण, स्मारक-टिप्पणी ।

याद्व, म पु (स) यदुवहय, यदुर्वशज-२ श्रीकृष्ण । वि, यदुसवधिन् ।

यान, स पु (स न) प्रवहणं, रथ स्वदन, शताह्न, वाहनं, वणम् ।

यानी-ने, अन्व (अ) अय आशय, एष भाव, इद तात्पर्यं, अर्थात् ।

याचन, सं पुं (स न) कालक्षेप, समयानि बहन्म् ।

यानू, स पुं (का) दे ' यट्ट ' ।

याम, सं पुं (सं) दे ' यट्ट ' २ समय ।

यामिनी, स स्त्री (म) रात्रि, रजनी, निशा ।

यार, सं पुं (का) मित्रं, सुहृद् (पु) २ उपपति, आर ।

यारनी, सं स्त्री (क्त यार) उपपत्नी, मुनिभ्या २ मित्रा, दयिता ।

याराना, सं पु (का) मरुत, मित्रता
 यारी, सं स्त्री } - अधर्न्यं अनुचित, प्रणय
 प्रेमन् (पु न), अनगराग ।
 याल्, सं स्त्री (तु) दे 'अयाल' ।
 यावक, सं पु (सं) सत्तु २ अलक्तक ।
 यावजीवन, कि वि (स न) आ, मरण
 मृत्यो, यावज्जन्म, यावजीवनम् ।
 यावद्, वि (स) दे 'जितना' २ समस्ते,
 सकल (अव्य) पर्यन्तम्, आ- समास मे वा
 पञ्चमी युक्त ।
 यावनी, सं स्त्री (स) करकशाखिनामक
 रक्षु, गुडवृणभेद, वि स्त्री यवन-सम्बन्धिनी ।
 युक्त, वि (स) उचित, उपपन्न, योग्य,
 औपपत्तिक २ रुष्टि, महत्, मन्ग्न, मिलित ।
 युक्ति, सं स्त्री (स) उपाय, प्र-योग-युक्ति
 (स्त्री) २ कौशल, चातुर्य ३ राति (स्त्री),
 प्रथा ४ न्याय, नीति (स्त्री) ५ अनुमान,
 तर्क ६ हेतु, कारण ७ ऊहा, तर्क ८ योग,
 संक्षेप ।
 —युक्त, वि (स) उचित, उपपन्न न्याय्य,
 यथार्थ ।
 युग, सं पु (स न) द्वय, दितय, युगम्,
 युगल, युतक, वमक २ समय ३ सुदीर्घ
 कालपरिमाणविशेष, कृतादिकालचतुष्टय (दे
 'कलियुग' आदि) ४ धुर (स्त्री), धुरी,
 प्रामग, युग-ग ५ शार रि, खेलनी ६ एक
 दोष्टस्थ शास्त्रयम् ।
 —युग, कि वि (स न) निरतरं, सदा,
 शाश्वत्, नित्य, चिर, (मव अव्य) ।
 —धर्म, सं पु (सं) युगानुरूप, कर्तव्य
 आचार ।
 युगपत्, अव्य (स) सदैव, समकालम् ।
 युगल, सं पु (स) दे 'युग' (१) । २ दपती
 (द्रि) जपती ।
 युगात्, सं पु (स) महाप्रलय, कल्पात्
 २ सत्त्वादियुगविशेषस्य समाप्ति (स्त्री) ।
 युगात्तर, सं पु (सं न) अन्य द्वितीय-युग
 २ परिवर्तित समय ।
 —उपस्थित करना, मु, मवधा परिवृत्त (प्रे)
 क्रांति कृ ।
 युग्म, सं पु (स न) दे 'युग' (१) ।
 युत, वि (स) युक्त, संग्न, सहित, मिलित,
 सञ्चित ।

युद्ध, सं पु (स न) संग्राम, आयोधिनं,
 नन्य, प्रथम, मृध, आस्कदनं, मरय, ममर,
 रण, विग्रह, सप्रहार, अभिसंपात, वलि,
 आहव, विदार, आजि (पु जी) बलन,
 युध् (स्त्री) ।
 —काल, सं पु (स) सगर-संग्राम, समय
 काल-वेला ।
 —क्षेत्र, सं पु (स न) युद्ध-रण-संगर, भू-
 (स्त्री) भूमि (स्त्री) क्षेत्रम्-अजिरम् ।
 —विद्या, सं स्त्री (स) रण-ममर-संगर-
 शास्त्र विज्ञानम् ।
 —वीर, सं पु (सं) भद्र, योध, शूर,
 योद्धृ ।
 युधिष्ठिर, सं पु (स) पांडवराज, अज्ञात-
 शत्रु, धर्मपुत्र, शल्यारि, अजमीड ।
 युरेनियम, सं पु (अ) किरणधातु, बह-
 निकम् ।
 युवक, सं पु (स) दे 'युवा' ।
 युवती, सं स्त्री (स) युवति (स्त्री), तरुणी,
 मूनी, धनि(नी)का, मध्यमा, भिका, वयस्था,
 बयां, ईश्वरी, वृष्टरजस् (स्त्री), प्राप्तयौवना ।
 युवराज, सं पु (स) राज्याधिकारिन्, राज-
 कुमार ।
 युवा, सं पु (स युवन) तरुण, तल्लज, वय-
 (य)स्थ ।
 यूँ, अव्य, दे 'यो' ।
 यूका, सं पु (स) यूक, केशकीट, स्वेदज,
 बालकृमि, पालीलि (स्त्री), पट्पद ।
 दे 'जू' २ दे 'खटमल' ।
 यूय, सं पु (स न) कुल, वृद, गण, समन,
 सजलीयवस्तुसमूह २ सैन्य, दल-लम् ।
 —पति, सं पु (स) यूध, पनाथ २ दल-
 पति ।
 यूनान, सं पु (ग्रीक, आयोनिया) *यूनन,
 यवनदेश ।
 यूनानी, वि (हि यूनान) यवनदेशसंबन्धिन् ।
 सं स्त्री, (१-२) यवनदेश यूनान, भाषा-
 विक्रिन्मा प्रणाली । सं पु, यवनदेशीय,
 यूनानवाग्निन् ।
 यूनिसिटी, सं स्त्री (अ) विश्वविद्यालय ।
 यूप, सं पु (स) यज्ञ-याग, स्तम्भ २ वि,
 अयस्त्रम्, पीतिस्तम् ।

यूरोप, स पु (अ यूरोप) *यूरोप, महाद्वीप विशेष ।

यूरोपियन, वि (अ) *यूरोपीय, यूरोप मध भिन्न विषयक । स पु, यूरोपीय, यूरोप वामिन् ।

यूय, स प (स पु न) जूष प, द्विदल क्वाथरस । 'दे शोरवा' ।

ये, सव (हि यह) इमे षते इदम षत्त्वे बहुवचन के रूप ।

यो, अव्य (स एवमेव >) इत्य, एव, अनेन प्रकारेण, एतया रीत्या ।

—तो, क्रि वि प्राय, प्रायश, प्रायेण २ साधारण्येन, सामान्यत ।

—ही, क्रि वि, एवमेव, इवमेव २ व्यर्थ, मुधा, निप्रयोजन ३ अकारण, अहेतुम् ।

—ही सही, क्रि वि, एवमस्तु, एव भवतु, स्यास्तु ।

योग, स पुं (स) चित्तवृत्तिनिरोध, मन स्वीर्ष २ दर्शनशास्त्रविशेष ३ मोक्षोपाय, मुक्तियुक्ति (स्त्री) ४ सधि, संग, स(ममा)-गम, सहति (स्त्री), सयोग, सद्वेष ५ उपाय ६ औषध ७ धन ८ लाभ ९ शुभमंगल, अवसर मुहूर्त (र्त) १० दूत, चर ११ बलीवदशस्त्री १२ चातुर्व्य १३ नाहन १४ परिमाण १५ निवम १६ उपयुक्तता १७ सामासुपायचतुष्टय १८ बशीररजोपाय १९ ध्यान, चिन्तन २० सवध २१ धनोपार्जनवर्द्धने २२ सीढी २३ वैराग्य २४ संकलन, परिसक्या, विवरण (गणित) २५ सौकर्य २६ निविकार कथनादीना स्थितिविशेष (५०) ।

—सोम, स पुं (स न) अनागतनन्दनागत स्थणे (न डि), प्रतिशुभे । 'वाचननिर्वाह २ मंगल ३ लाभ ४ राष्ट्रसुख्यवस्था ५ दायादेषु अविभाज्य वस्तु (न) ।

—भिद्रा, स स्त्री (भ) योगममाधि २ वीरगति (स्त्री) ।

—पल्ल, स पुं (स न) सज्ज, पट, परिसत्त्वा (गणित) ।

—बल, स पुं (स न) तपोबल, योग शक्ति (स्त्री) ।

योगोग, स पुं (स न) योग, साधनानि

उपाया (पु) [यमनियमगमनप्रणायामि प्रत्य ह स्धारणाध्यानममाधयोऽष्टावगति ।

योगानन, स पु (स न) निद्रानन, भूय भस्वपदावदशस्त्रकञ्जलम् २ नेत्ररोगश काननम् ।

योगाभ्यास, स पु (स न) योगानुष्ठान योगसाधनम् ।

योगासन, स पु (स न) महासन, ध्यानासनम् ।

योगिनी, स स्त्री (स) योगान्यामिनी तपस्विनी २ रण, पिशाची पिशाचिनी ।

योगी, स पु (स भिन्) योगान्यामिन्, तपस्विन्, तापस, यति मुनि, वैरागिन् गिन्, सन्यासिन् ।

योगीश्वर, स पु (सं) योगीश्वर, योगीश्वर ।

योगेश्वर, स पु (स) श्रीकृष्ण २ शिव ३ योगेश्वर, सिद्ध, योगेश ।

योग्य, वि (स) क्षम, शक्त, समर्थ, पात्र २ सुशील, श्रेष्ठ, ३ चतुर, दक्ष, निपुण ४ उचित, उपपन्न, युक्त ।

योग्यता, स स्त्री (सं) क्षमता, सामर्थ्य २ चातुर्य, निपुण्य ३ औचित्य, युक्तता ।

योग्या, स स्त्री (सं) युवती, तरुणी २ अम्बास ३ शल्यकियाम्बास ।

योजक, वि (स) सयोजक, सम्मेलक सद्व्यय । स पु इमरमध्यम्, बृहद्भूतण्ड युग्मयोजनम् इमभूभाग ।

योजन, स पुं (स न) (१-३) द्विचतु अष्ट, वीर्यी ४ योग ५ सयोजनम् ।

योजना, स स्त्री (सं) उपाय, कल्पना, प्रयोग, प्रयुक्ति (स्त्री) २ नियुक्त (स्त्री) ३ रचना, विद्यास ४ व्यवस्था, आयोजनः ।

योडा, स पु (स योदध) भट, दाप, योधा, बार, शर भैतिक, आयुधिन, युद्ध शस्त्र उपनीविन्, अस्त्रास्त्र धर नृप आजीव ।

योजि, स स्त्री (स पु स्त्री) भय, वरान, स्मरनदिर, रनिगृह, अपर, स्मरवदप, शून नारी, गुह्य उरार्थ, समारमाण २ वारा ३ उद्गम, उद्भव, निगम ४ प्रायोजनि (स्त्री) ५ देह ६ गर्भ ७ जन्म (न) ८ गर्भासय ।

योनिज, वि (स) भगज, योनिजभव ।
 म पु, (स) जरायुज अट्जो वा
 नीव ।
 योरोप, स पु, दे 'यूरोप' ।
 यौगिक, स पु (स) व्युत्पन्न, प्रकृतिप्रत्यय
 योगलभ्यार्थवाचक शब्द २ समस्तशब्द ।

यौतक, स पु (स न) यौतुक, युतक,
 दे 'दहेज' ।
 यौवन, स पु (स न) तारुण्य, पूर्व प्रथम
 नव, वयः (न) ।
 —काल, स पु (स) यौवन, दशापदवी-
 तारुण्यावस्था ।

र

र, देवनागरीवर्णमालाया सप्तविंशो व्यञ्जनवर्ण,
 रेफ, रकार ।
 रक, वि (म) दरिद्र, निषंन २ कृपण,
 कदय । स पु, भिक्षुक २ दरिद्र ।
 रग, सं पु (स) रग, वर्ण २ वर्णक-का,
 लेप ३ नृत्यगीते (न दि), सगीत ४ नाट्य
 रग, क्षेत्र, शाला-गृह-मडप-स्थल-भूमि (स्त्री)
 ५ युद्ध-रण-क्षेत्र-भूमि ६ शरीर-स्वग-वण
 ७ यौवन ८ सौंदर्य ९ प्रभाव १० कौतुक,
 क्रीडा ११ युद्ध १२ कामचार, छद्म (पु)
 १३ आनन्द १४ दशा १५ काड, अदभुत
 व्यापार १६ कृपा १७ अनुरा १८ प्रकार,
 रीति (स्त्री) ।

—करना, क्रि स, दे 'रगना' ।

—चडना, क्रि अ, व 'रगना' के कर्म के रूप ।

—दग, स पु, अकार, रूप, २ दशा
 ३ आचार ।

—दार, वि, रजित, वर्णित, सराग, रागयुक्त,
 चित्रित ।

—विरग-गा, वि, अनेक-बहु-नाना-रग-वर्ण,
 चित्र, कर्तुर, शबल । २ विशिष्ट, अनेक-बहु
 नाना विध प्रकारक ।

—भूमि, म स्त्री (स) उत्सव, स्थल-स्थान
 २ क्रीडा-कौतुक, स्थल ३ दे 'रा' (४) ।

—र(रे)लियाँ, स स्त्री, आमोदप्रमाद, परि
 हाम, विनोद, लीला, हासिका, मिहार,
 क्रीडा ।

—रम, स पु, दे 'रगरलियाँ' ।

—रसिया, स पु, क्रीडाप्रिय, विलम्बित,
 विनोदित, आनन्दित, हास्यशील ।

—रुन, स पु (म न) आहार, आकृति
 (स्त्री), रूपम् ।

—रेज, स पु (का) रज, र-नीव ।
 [निज (स्त्री) -राजका] ।

—शाला, स स्त्री (स) दे 'रा' (४) ।

—माज, स पु (का) रजक, वर्णचारक,
 कृणु वर्णाङ्क, तौलिक, तौलिकिक, रा,
 कार-जीवक आनीव २ रग, निर्मादुर
 यित्कार ।

—साणी, स स्त्री (का) रजन, वर्णन,
 रजकता, तौलिकता ।

—महल, स पु (स+अ) रगभवन्,
 प्रमोदप्रसाद ।

—उडना या उतरना, मु, पाडुच्छाय (वि)
 जन् (दि आ से), विवर्णना प्रपद (दि-
 आ अ), मलिन-म्लान-मद, प्रम-काति घुनि
 जन् ।

—जमाना या बाँधना, मु, स्वयौरव प्रतिष्ठा
 (प्रे प्रतिष्ठापयति), निजप्रतिष्ठा प्रय (प्रे) ।

—पीला (फक, फीका या मद) होना,
 मु, दे 'रग उडना' ।

—बदलना, मु, कुब् (दि प अ), कुर्
 (दि प से) ।

—मं भंग पडना, मु, आनन्दोत्सव विह
 (म), रगमगो जन् ।

—र(रे)लियाँ मनाना, मु, मुद (म्वा अ
 से), रम् (म्वा आ अ), विह (म्वा प
 अ), नद् क्रीड विलम्बित (म्वा प से) ।

रगत, सं स्त्री (स रग >) दे 'रग' (१६) ।
 २ अनन्द, स्वाद ३ दशा, अवस्था ।

—लाना, मु, परिवर्तन जन् (प्रे), मात उत्प
 (प्रे) ।

रँगना, क्रि स (स रग >) रज (प्रे),
 चित्र-वण (वु) २ दे 'मोहना' क्रि स

(१) तथा क्रि अ (१) । सं पु, रजन,
 चित्रण, वर्णनम् ।

रगने योग्य, वि र-नीव, चित्रयितव्य,
 वर्णनीय ।

रगनेवाला, स पु, दे 'रग्नेव' तथा 'रगसान' ।

रगसूट, सं पु (अ रिङ्) नव-नूतन, सैनिक ० नव, गव-शोभित-शिष्य, शैश ।
 रँगरेज, म पु दे 'रग' के नीचे ।
 रगवाइँ, स स्त्री (हि रगवाना) रजन वर्णन, भृति (स्त्री) भृत्या ।
 रगवाना, क्रि प्रे, व 'रगना' के प्रे रूप ।
 रगाईँ, स स्त्री (हि रगना) दे 'रगवाईँ' २ दे 'रगना' स पुं ।
 रगा हुआ, वि, रनित, चित्रित, बणित, रागयुक्त ।
 रगी, वि (स गिन्) विनोदिन्, आनन्दिन्, उल्लासिन् २ सरग रगयुक्त *३ रनक, ४ अनुरक्त ५ अभिनेतृ ।
 रगीम, वि (फा) दे 'रगदार' २ विलासिन् आनन्दित, विहारिन्, विनोदिन्, रमिक ३ नमस्कृत, अलकृत (भाषा आदि) ।
 रगीनी, सं स्त्री (फा) सरागता, सचित्रता २ शृंगार, अलकिया ३ अनुरागिता, कामुकता ।
 रगीला, वि (स रग >) दे 'रगीन' (२) । २ सुदर ३ अनुरागिन्, वामुक ।
 रगोपजीवी, सं पु (सं विन) मट, अभिनेतृ, शैक्ष्य, भरतपुत्रक ।
 रच, रचक, वि (स रन्च् >) अल्प, स्लोक ।
 रज, सं पु (फा) शोभ, परितप, आर्ति (स्त्री) ।
 रजक, सं पुं (सं) दे 'रगसाज' (२) दे 'रगरेज' । वि (सं) रगवार, वर्णवाक २ आह्लादक, आनन्दप्रद ।
 रजन, स पु (स न) चित्रण, वर्णन २ आह्लादन, परितोषणम् ।
 रनित, वि (स) बणित, चित्रित, सरग २ आह्लादित, सख ३ अनुरक्त, आमक ।
 रनिदा, सं स्त्री (फा) वैर, शत्रुता २ अप वि-राग, प्रसाद प्रीति, अभाव ।
 रनीदगी, स स्त्री (फा) दे 'रनिश' (२) । २ शोक ।
 रजीदा, वि (फा) शोभप्रस्त, परितप्त ० विपण, प्रमत्तता-लम्प ।
 रई, वि (म) धूर्त, वक्र २ विवन्, निष्फल ३ टिक्क-विवन् अर्थ । स पु (स) निर पत्य, निस्मानान २ निष्फल अर्थ-वृक्ष म् ।

रडा, सं स्त्री (स) विधवा, गतमृत भर्तृका, विधरता, कात्यायनी । स पु (प०) दे 'रैडुआ' ।
 रडापा, स पु (स रटा) वैधव्य, दे ।
 रडी, स स्त्री [(प) विधवा सं रटा >] वेद्या भोग्या, गणिका ।
 —याच, स पु (हि + फा) वेद्या गणिका गामिन् ।
 —याजी, स स्त्री (हि + फा) वेद्यागमन, रम्भारमणम् ।
 रडुआ चा, स पुं (हि राड) मृत्पनीक, गतमाय, विधुर ।
 रदा, स पु (फा) तक्षणी, त्वक्षणी ।
 —फेरना, क्रि स, नक्षण्या समीप-दर्शनीक, तन् (भ्वा स्वा प से) ।
 रध, सं पु (स न) टिड, विवर, बिल २ योनि (स्त्री) ३ दोष ।
 रवा, स पु (प) सुरप्र ।
 रमा, सं स्त्री (स) कदली, दे 'केला' २ गोध्वनि ३ अप्परोविशेष ४ वेद्या ।
 रभाना, क्रि अ (स रभण) रभूरेभ (भ्वा आ से), मृदु नदं (भ्वा प से) । स पु, रमा, हवा भा, रेभणम् ।
 रभध्यत, स स्त्री (अ) प्रजा २ कुपीवल् ।
 रईस, स पु (अ) धनाढ्य, धनिक, रपीश २ भूस्वामिन्, क्षेत्रपति ।
 रङ्घा, सं पुं (अ) क्षेत्रफलम् ।
 रङ्गम, सं स्त्री (अ) सल्या, परिमाण २ सपत्ति (स्त्री), धनं ३ प्रकार, विधा ।
 रकाय, सं स्त्री (फा) (सादिन) पादाधार *नादधनं २ दे 'तदन्ती' ।
 —पर पर ररना, मु, गतु मज्जीभू ।
 रकायी, सं स्त्री (फा) दे 'तदन्ती' ।
 रनीष, सं पुं (अ) मपत्न, प्रत्यभिन् प्रति रपदिन् ।
 रफ, सं पुं (मं न) दाग, शोणित, लो(रो)-दिन, लोह, मथिर, अर्थ, अमृन् (न), क्षमज अंगन, त्वग्न, उर्मई ० मुडुमुमं ३ तत्र ४ मिदूर ५ पदं ६ दिगुलम् । वि, अनुरक्त, आनन्द २ रत्न-लोहित-वर्ण ३ लफ, वामिन्, वामुय ।
 —वमल, सं पु (मं न) कोरनदं, रवि

- प्रिय, रक्त-अरुण शोण, अमोच कमल पत्र
वारिजम् ।
- कोद, स पु (स रक्तकोद) रक्तकुष्ठ ध,
विमर्ष ।
- चदन, स पु (स न) अर्क-कुशोमित
धुद, चदन तिलपर्ण, रजन, ताग्रवृक्ष,
लोहितम् ।
- पात, स पु (स) रुधिर-रक्त, स्रवण
स्त्राव धरण २ शोण-रक्त, पातन स्रवण
३ नर नृ, इत्या पात ।
- शयी, वि (स विन) शोणप, रक्तप ।
स पु मत्स्य, दे 'खटमल' ।
- पित्त, स पु (स न) रोगभेद २ दे
'नक्रगीर' ।
- प्रदर, स पु (स) प्रदरभेद, नारोोग
भेद ।
- प्रमेह, स पु (स) रक्तमेह, मूत्ररोगभेद ।
- बहना, कि अ, रक्त स्र (भ्वा प अ) -
धर (भ्वा प से) ।
- बहाना, कि स, रक्त शोण पद लुमुच
(मे), वृ (मे), हन (अ प अ) ।
- मोचन, स पु (स न) रक्त, मोक्षण
मोक्ष, शोणितस्त्राव, दे 'फल्' ।
- लोचन, स पु (म) कपोत । वि,
लोहितेशुण ।
- घर्ण, वि (स) अरुण, लोहित, शोण, रक्त ।
- साव, सं पु (स) रुधिरक्षरण, अष्टक
सृति (स्त्री) ।
- हीन, वि (स) शोणशून्य, रुधिररहित
२ निर्वाय, निस्तोक्क ।
- रक्षक, सं पु (स) शरण्य, शरण, प, पाठ
(समासांत में), रक्षित, रक्षित, त्राट, पाट,
गोच २ प्रहरित, यामिक ३ पालक,
सवर्द्धक, पोषक ।
- रक्षण, स पु (स न) परि, त्राण, गोपन,
रक्षा, गुप्ति २ पालन, पोषण, सवर्द्धनम् ।
- रक्षणीय, वि (स) रक्ष्य, रक्षितव्य, त्रातव्य,
गोपनीय २ पालनीय, पोषणीय ।
- रक्षा, स स्त्री, (स) दे 'रक्षण' (१) । २ वष्ट
निवारक-यत्र, रक्षिका ।
- करना, कि स, अणुशुष्क (भ्वा प
से), पा (अ प अ) ।

- बधन, स पु (म न) श्रावणी, पर्वविशेष
२ श्रावणपूर्णिमादांवेदस्वाध्यायोपनिषत्संन (न) ।
- रक्षित, वि (स) त्रात, त्राण, गुप्त, गोपायित,
पात, उक्त, अहित २ प्रतिपालित, पोषित
३ रथायित ।
- रखना, कि स (स रक्षण) न्यस् (दि
प से), निक्षिप् (ञु प अ), निष्ठा
(ञु उ अ), स्या (प्रे स्थापयति)
२ रक्ष-अव-शुष् (भ्वा प से), वै (भ्वा
आ अ) ३ सवि (स्वा उ अ), सप्रह
(क्र उ से) ४ आधीक, उपनिषा (ञु
उ अ), न्यस ५ धृ (ञु), भृ (ञु उ
अ) ६ आतप्रसाद-स्वापत्तीक ७ (गौ
आदि) अस् (अ प) विद् (दि आ
अ) वृत् (भ्वा आ से) ८ नियुज (ञु,
र प अ) ९ विलम् (प्रे), व्याक्षिप्
(तु प अ) १० उपपत्तित्वेन उपपत्नीत्वेन
वा स्वीक ११ अव्ययेन सचि । स
पु, न्यसन, विक्षेपण, निधानं, स्थापन
२ रक्षण, गोपनं, ३ सचयन, सप्रहण ४
आधीकरण, उपनिषान ५ धारण, भरण ६
आतमसात्करण ७ निवीनन, ८ विलंबन ९ ।
- रखनी, स स्त्री (हि रखना) दे 'रखेत्नी' ।
- रखने योग्य, वि, न्ययनीय, स्थापयितव्य,
रक्षितव्य, सचेय, उपनिषेय, धार्य, नियोक्तव्य ।
- रखनेवाला, स पु, मिषाट, स्थापक, रक्षक,
स्वापक, उपनिषायक, धारक ६ ।
- रखवाई, स स्त्री (हि रखना) रक्षा, भृति
(स्त्री) भृत्या ।
- रखवाना, कि प्रे, न 'रखना' के प्रे रूप ।
- रखवाला, सं पु (हि रखना) दे 'रक्षक'
(१२) ।
- रखवाली, स स्त्री (हि रखवाला)
दे 'रक्षण' (१) ।
- रखा हुआ, वि, न्यस्त, निहित, रक्षित, सचित,
उपनिहित ६ ।
- रखेती, स स्त्री (हि रखना) उप, पत्नी भाषां
कलत्रम् ।
- रग, स स्त्री (फा) धमनी, मात्री, रक्ता
दिनी, शिरा, शैलिका ।
- मं, सु, सर्वसिद्धिपि शरीरे ।
- से वाक्यिक होना, सु, सम्यक्-दृष्टसाधु
ज्ञा (क् उ अ) परिधि (स्वा उ अ) ।

—रेशा, म पु (का) शरीर, अवयवा अङ्गानि (वहु) २ पत्र, पत्रव, नाड्य (स्त्री बहु) । रगड, स स्त्री (हि रगडना) दे 'रगडना' सं पु । २ त्वग्भगहीन-क्षुद्र, जण (ण) ३ अन्ध, विज्ञा ४ विज्ञ, परिश्रम प्रयास ।

—रगना या रगना, कि अ, व 'रगडना' के कर्म के रूप ।

रगडना, कि स (अनु) घृष् (भ्वा प स), घृर (क् प से) २ चूर्ण (जु), विष् (रु प अ) ३ श्लक्ष्णीकृ, परिष्कृ ४ परि प्रभृज (अ प से प्रे), निन् (जु ड अ) ५ अभ्यस (दि प से), पुन पुन कृ ६ सवेग सपरिश्रम च संपद् (प्रे) अनुष्ठा, (भ्वा प अ) ७ पीड (जु), सनप् (प्रे) ८ तड् (जु), आहन (अ प अ) । स पु, घषण, मर्दन २ चूर्णन, पेषण ३ श्लक्ष्णीकरण ४ परिमार्जन, प्रक्षालन, ५ अभ्यसन, आवृत्ति (स्त्री) ६ पीडन ७ ताडन ८ सवेग संपादन ९ ।

रगडने योग्य, वि, घपंणीय, मर्दनीय, पेषणीय ९ ।

रगडनेवाला, सं पु, घपंक, मर्दक, पेषक ९ ।

रगडवाना, कि प्रे, व 'रगडना' के प्रे रूप ।

रगडा, सं पु (हि रगडना) दे 'रगडना' सं पु । २ अनिश्चय-अत्यंत, परिश्रम-उद्योग ३ चिरस्थायिकालह, नैत्यिकविवाद ।

—रगडा, सं पु (नित्यसतत) विवाद-कालह-वक्ति ।

—हुआ, वि, घपित, मर्दित, पिष्ट, अभ्यसन ।

रगडी, वि (हि रगडा) विवादक, अन्ध वक्ति, प्रिय, विवादिन् ।

रगडत, सं स्त्री (अ) कामना २ रुचि प्रवृत्ति (स्त्री) ।

रगडना, कि स (स रेश), अपनुद् (तु प अ), निद्रुअपधाव् (प्रे) ।

रगु सं पु (सं) सर्ववस्थो नृपतिरोप, दिलीपस्यु ।

—रगडन, सं पु (सं) रगु-नाथ ननि-रान वर-वीर, भीरामचंद्र ।

—घरत, सं पु (सं) रगुतुर्क २ महारथि कान्दिदाग प्रणीतो महाहाय्यविद्युष ।

रचना, कि स (सं रचन) सज् (तु प अ), निर्मा (अ प अ, जु आ अ), जन्-उत्पाद (प्रे) २ कल्प-पृथ (प्रे), रर (जु), कृ ३ प्रणी (भ्वा प अ), निवध (क् प अ) रन् (जु), लिप् (तु प से) ४ यथाविधिन्यत् (दि प से) स्था (प्रे) ५ परिष्कृ, अलकृ, भूष् (भ्वा प से, जु) ६ आयुज् (प्रे), मत्र (जु आ से) । स पु, दे 'रचना' स स्था (१३, ८९)-परिष्करण, भूषण, अयोजनम् ।

रचना, कि स (स रचन) दे 'रगना' कि अ अनुरज् (कर्म), सिन्ह (दि प से) २ व 'रगना' के कर्म के रूप ।

रचना, स स्त्री (स) रचनं, निर्माण, सर्जन, घटन, विधानं, कल्पन, साधन, निष्पादन, उत्पादन, जनन २ ३ रचना निर्माण उत्पादन, कौशल-शोभि (स्त्री) ४ रचित निर्मित, वस्तु (न) ५ गणमयी पयमयी वा कृति- (स्त्री) ६ केशविन्द्याम ७ पुष्पगुफन ८ स्थापन ९ प्रणयनं, नि प्रचयनम् ।

रचने योग्य, वि, कष्टव्य, निर्माणव्य, रचनीय, प्रणव्य, यथाविधि, स्थपनीय ९ ।

रचनेवाला, स पु, सष्ट, निर्मात्र, जनविद्यु, घटविद्यु रचयिद्यु, प्रणेत्, लेखक आयोजक ९ ।

रचयिता, स पु (सं रच) निर्मात्र, सष्ट, विधातु, कलादक २. लेखक, प्रणेत् ९ ।

रचवाना या रचाना, कि प्रे व 'रचना' के प्रे रूप ।

रचा हुआ, वि, सष्ट, निर्मित, जनित, रचित, घटित, प्रणीत, लिखित, परिष्कृत ९ ।

रचित, वि (स) निर्मित, घटित, २ सष्ट, जनित ३ लिखित, प्रणेत् ।

रज, सं पु [सं रजस (न)] पुष्प, कुसुमं, आर्तव, श्वसु, रज (पु) २ प्रकृतेर्गुणविशेष, रज (पु) ३ आरारा र्ज ४ पापं ५ चर्त ६ पताग, रेणु (पु स्त्री), पुष्पभूमीति (स्त्री) ७ सुवनं, शोभ । सं स्त्री, रजम् (न), पूष्णीति (स्त्री) २ राप्ती ३ प्रकाश ।

—का रज जाना, सं पु, रजोदीप २ रजो निवृत्ति (स्त्री) ।

—की पीड़ा, सं स्त्री, श्वसुदल, रज रज्जुम् ।

रजक, सं पु (सं) निर्लेख्य, धावन, शोभेय, वर्मशील्य ।

रजकी, स स्त्री (स) रजका, निर्णेतिका, धाविका ।

रजत, सं स्त्री (सं न) रूप्य दे 'बाँदी' २ सुवर्ण ३ गजदंत ४ हार । वि, रजतमय २ शुक्ल ।

—कुम्भ, स पु (सं) रूप्य-श्वेत, कुम्भ-घट कलश ।

—पात्र, सं पु (सं न) रूप्य-श्वेत-दुवर्ण, पात्र भाजनम् ।

रजनी, स स्त्री (स) निशा, रात्रि २ हरिद्रा ३ जतुका ४ नीली ५ लाक्षा ।

—कर, स पु (स) रजनी, -पति-नाथ, चंद्र ।

—चर, स पुं (सं) राक्षस, निशाचर ।

—मुख, सं पुं (सं न) साय, प्रदोष, दिनात् ।

रजवाड़ा, सं पु (हि राज+बाडा) देशीय राज्य २ नृप, राजन् (पु) ।

रजस्, स पु स्त्री (सं न) दे 'रज' स पु स्त्री ।

रजस्वला, स स्त्री (स) स्त्रीधर्मिणी, ऋतु मती, पुष्पवती, पुष्पिता, म्लाना, पाशुला ।

रजा, स स्त्री (अ) इच्छा, काम २ समति (स्त्री), एकचित्ता, मतेक्य ३ अनुशा, अनुमति (स्त्री) ।

—मद, वि (का) सह-दक, मत-चित्त, समत ।

—मदी, स स्त्री (का) दे 'रजा' (२३) ।

रजाइस, रजायस, रजायसु, स स्त्री (स राजादेश >) आ-नि, -देश, नियोग, आशा, शासनम् २ अनुमति-स्वीकृति (स्त्री) ।

रजाई, स स्त्री (< सं रजन ?) • पिबुल प्रच्छद, तुलाच्छादनम् ।

रजिस्टर, स पुं (अ) पत्रिका, पत्री ।

रजिस्टर्ड, वि (अ) पत्रीबद्ध ।

रजिस्ट्रार, स पुं (अ) पत्री पत्रिका, लेखक ।

रजिस्ट्री, स स्त्री (अ) पत्रीनिबधनम् ।

—कराना, क्रि प्रे, राजकीयपत्रिकाया लिख (प्रे) ।

—शुदा, वि, पत्री-पत्रिकाकृत, लिखित ।

रजिस्ट्रेशन, स पुं (अ), पत्री पत्रिका, करण लेखनम् ।

रज़ील, वि (अ) अधम, नीच २ अन्त्यज ।

रजोगुण, स पु (सं) दे 'रज' स पु (२) ।

रजोदर्शन, स पु (सं न) कन्याया प्रथम युष्पलाव ।

रजोधर्म, स पु (स) दे 'रज' स पु (१) ।

रज्जु, स स्त्री (म) दे 'रस्ती २ वैणी ।

रट, स स्त्री (हि रटना) असकृत उच्चार, आग्नेदन्, अभीक्ष्णं वचन, पौन पुन्येन पठनम् ।

रटना, क्रि म (स रटनं >) अभ्यस (दि प से), असकृत आवृत् (प्रे) २ मुखरथ हृदयस्थ-कठरथ (वि) कृ, स्मरणार्थं पुन पुन उच्चर् (प्रे)-वद-पठ (भ्वा प से) ।

क्रि अ, अभीक्ष्ण रण-ववण् (भ्वा प से) ।

स पु, अभ्यसन, आवतन, आवृत्ति (स्त्रा), कठे करण, हृदये धारण, पुन पुन उच्चारणम् ।

रटने योग्य, वि, आवतनीय, स्मृतव्य स्मरणाह ।

रटनेवाला, स पु, अभ्यासिन, आवर्तयितृ ।

रटा हुआ, वि, अभ्यस्त, आवर्तित, कठे कृत ।

रण, स पु (स पुं न) समाम, दे 'युद्ध' ।

—क्षेत्र, स पु (सं न) रथागण-न युद्ध-रण, भूमि (स्त्री)-स्थल-क्षेत्रम् ।

—छोड़, सं पु, श्रीकृष्ण ।

—बाँकुरा, स पु (सं + हि) शू, भट ।

—रग, स पु (सं) युद्धोत्साह २ युद्ध ३ रणक्षेत्रम् ।

—स्तंभ, सं पुं (स) विजय, स्तम्भ-शूप ।

रत्, वि (स) व्यापृत, मग्न, लग्न, लीन, आसक्त २ अनुरक्त, बद्धभाव ।

रतजगा, स पु (हि रात+जागना) रात्रि, जागरण-जागरा २ नैशोत्सव ।

रतनार, वि (स रत्न >) आ-रत्न, रत्न लोहित ।

रतानू, सं पु (सं रत्नाञ्ज) (= लाल शकरकंद) रक्त पिंडक-पिंडाल, लोहित, लोहितान्ज, रत्नरत्न ।

रति, स स्त्री (म) कामदेवकल्त्र, मदनपरनी २ मैथुन, समोग, कामक्रीडा ३ अनुराग, प्रीति (स्त्री) ४ शोभा, सौन्दर्य, छवि (स्त्री) ५ सौभाग्य ६ स्थाविभावभेद ७ रहस्यम् ।

—क्रिया, स स्त्री (सं) रति, केलि (स्त्री)-कलह-ममर, मैथुनम् ।

—गृह, स पु (स न) रति, भवर्न-भदिर
२ योनि (स्त्री) ।

—नाथ, स पु (स) रति, कान्ति पनि मिय
राज-रमण, कामदेव ।

—वध, सं पु (स) सुरतासनम् ।

—शास्त्र, स पु (स न) कामशास्त्रं, कोक
शास्त्रम् ।

रत्तीधी, सं स्त्री (हि रात + मधा) निशाथ
साश्वम् ।

रत्ती, स स्त्री (सं रत्तिका) काक, तिका-
वह्नरी पीड-अवा-चिची, कृष्णम्, दे 'गुण' ।
२ रत्ति-भापरिमाणम् ।

—भर, वि, अल्प, स्तोक, ईष्य ।

रत्थी थी, स स्त्री (सं रथ) *विमानं, शव,
यनं, फलक, दे 'भरथी' ।

रत्न, स पु (स न) मणि (पु स्त्री),
अदमभेद २ स्वभावतिशेष्ट ३ माणिक्यम् ।

—गर्भ, स स्त्री (सं) बहुभरा, बहुधा ।

—जटित, वि (स) मणि, खचिन-अनुविद्ध
व रवित ।

—द्राम, स स्त्री [स-भृ (न)]
मणिमाला ।

—भारस्त्री, स पु, रत्नपरीक्षक २ मणिकार,
रत्नाजीविन् ।

नौ—, स पु, दे 'नवरत्न' ।

रत्नाकर, स पु (स) रत्नालय, समुद्र
२ मणि स्वानि (स्त्री) भजा ३ बालमीके
प्रथमनाम्य (न) ।

रत्नावली, सं स्त्री (स) मणिमाला, रत्न
दामन् (न) ।

रथ, स पु (स) शताग, स्थदन, चक्र
दालम् । (बुद्ध को रथ) क्षीराधिक, वैना
यिक । (मैर का रथ) पुष-रथ । (यात्रा
का) पारिवानिक । २ शरीर ३ चरण-शाम् ।

—कार, सं पु (सं) रथ-म्यन्दन-चक्रयान,
निर्माण-रचयित्-कर्तृ । २ वर्णसंकरजातिभेद ।

—चर्यो, सं स्त्री (सं) रथ-चक्रयान, यात्रा
व्रथा गमनम् ।

—रति, स पु (स) रविन्, रथिन्,
रति-रथि ।

—यात्रा, सं स्त्री (स) भाषादनुस्मृतिनी
यात्रा थी-यत्र-यत्र-रथारोपण-रूप-पत्रम् ।

—वीथि, सं स्त्री (स) रथ-मुख्य-प्रधान,
मार्गं पथ ।

—शास्त्रा, स स्त्री (सं) स्वन्दनागारम् ।

—विद्या, स स्त्री (स) रथ-शास्त्र-विज्ञानम् ।

—सूत, स पु (स) सारथि, रथवाह ।

रथवान्, स पु (सं रथवत्) रथ-वाह
वाहक, सारथि, दे 'सारथी' ।

रथाग, स पु (स न) चक्रम् २ भ्रमभेद
३ कोय, चक्र, कामुक ।

—पाणि, सं पु (स) चक्रपाणि, विष्णु ।

रथी, स पु (सं थिन्) रथिक, रथिन,

रथिर रथ-आरोहिन्-स्वामिन्, साराथि ।

वि, रथस्थ, रथासुद्ध । २ रथस्थ-महा-योध
योद्ध । ३ (स रथ) दे 'रत्थी' ।

रद, } स पु (स) दत्त, दे 'दार्द' ।

रदन, } स पु (सं) जोष, दे 'जोड' ।

—च्छद, } स पु (सं) जोष, दे 'जोड' ।

—पुट, } स पु (सं) जोष, दे 'जोड' ।

रह, वि (अ) गोप, निरर्थक २ मंद, निष्प्रभ,
३ निरम्न, सद्धित ।

—करना, कि स, निरस् (दि प से),
सड (चु), निवृत् (मे) ।

—बदले, स पु (अ + का) परिवर्तन,
विपर्यय, परि(री)वर्त ।

रहा, सं पु (देश) इष्टकामृत्तिका, स्तार ।

—रखना या लगाना, कि म, भित्ति वि
(स्वा उ अ), स्तरं रच् (चु) निर्मा
(जु भा भ) ।

रही, वि (अ रह) निरर्थक, अनुपयोगिन् ।
स स्त्री, निरर्थकपत्राणि (न बहु) ।

रत्न(नि)वाम्य, सं पु (हि रानी + मं वाम)
अन-पुरं, शुद्धान, भवरोध ।

रपट, सं स्त्री (हि रपटना) दे 'रिसलाहन्'
२ धोवनं, मत्तरगमन ३ निम्नभू (स्त्री),
प्रवणम् ।

रपट, सं स्त्री (अं रिपो) ध्वना, आख्या ।

रपटना, कि अ (सं रथन) दे 'रिसलाना' ।

रहू, वि (अं) विक्रमनाशय, दुःस्पर्श,
विषम २ संस्कार-परिहार-शय ।

रहा, वि (अ) अस्मार्ति, दूरीकृत २ निवा
रित, शान्त, शान्त ३ ममान, पूज ।

रहू, सं पु (अ) अनुभिव-रिष्णुपत्तम् ।

—करना, क्रि म, वल्खिद्र ततुभि पूर(सु) ।

मु, स्वविरोधिवचनेषु सामञ्जस्य द्वा (प्रे) ।

—गर, म पु (फा) वल्खिद्रपूरक ।

—चइर हांना, मु, पलाय (भ्वा आ से),
अपघाव (भ्वा प से) ।

रफ्तार, स स्त्री (फा) गर्भि (स्त्री) २ वेग,
जव ।

रफ्ता रफ्ता, क्रि वि. (फा) शनै शनै
(अव्य) १ क्रमश (अव +) ।

रथ, स पु (अ) परमेश्वर, जगदीश ।

रथड^१, स पु (अ रवर) धर्षक, धृषि (न) -
वृष्टनिर्वाणभेद २ वटजातीयो वृष्टभेद,
धर्षक ।

रथड^२, स स्त्री (हि रगड) व्यर्थ, अम
प्रयास २ दूरता, विषयवर्ष ।

रथडना, क्रि स (हि रपटना) तरलद्रव्य
परि भ्रम्-चल (प्रे) : भ्रम् कर्म (प्रे),
मुधा घाव (प्रे), आयस सिद् (प्रे) ।
क्रि अ, वृथा भ्रम् (भ्वा प से)-परिश्रम
(दि प से), आयस (भ्वा दि प से) ।

रथड़ी, म स्त्री (हि रथडना) किलाटिका,
क्षीरेयम् ।

रथाव, स पु (अ) वाघभेद, *रथापम् ।

रथाविया, रथावो, स पु (अ रथाव)
रथापवादक ।

रथ्त, स पु (अ) अभ्यास २ सर्वथ ।

—ज्वल, स पु, गाढसौष्टव, सुपरिचय ।

रथ्ठी की प्रमद, स स्त्री (अ) चैत्रशस्यम् ।

रमण, स पु (स अ) क्रीडा, विलास,
विहारण, विहार, केलि (पु स्त्री), टेल्ला, लीला
२ मैथुन, रति (स्त्री) ३ भ्रमण, पर्यटन
४ जघनम् । (स पु) पति २ कामदेव ।
वि, मनोहर २ प्रिय, आनन्दप्रद ३ क्रीडापर ।

रमणी, स स्त्री (स) नारी २ सुन्दरी,
वरवर्णिनी, वामा ।

रमणीक, वि (सं रमणीय) मनोह, मनोहर,
दे 'सुन्दर' ।

रमणीय, वि (सं) सुख्य, शोभन, दे
'सुन्दर' ।

रमणीयता, सं स्त्री (स) सुच्छवि (स्त्री),
मनोहरता, दे 'सुन्दरता' ।

रमता, वि (हि रमना) निचरत् विहरत्
अन् (शयत) ।

रमना, क्रि अ (स रमण) रग (भ्वा आ
अ) नदक्रीड (भ्वा प से), मुद (भ्वा
आ से) २ सुगोपलब्धये वम् स्था (भ्वा
प अ) ३ विह (भ्वा प अ), पर्यट
(भ्वा प से) ४ व्याप (स्वा प अ),
व्यग्न (स्वा आ से) ५ अनुरज् (कर्म),
स्निह (दि प से, सप्तमी के साथ)
६ कामक्रीडा कृ सुरत आतन् (त प से) ।
स पु रमण, नदन, क्रीडन, क्रीडा, मोद,
मुखाय वसन, विहरण, विवरण, व्यापन,
व्यशन, अनुराग, निधुवन २ ।

रमा, म, स्त्री (स) दे 'लक्ष्मी' ।

—पति, स पु (स) विष्णु ।

रम्ज, सं स्त्री (अ) (नेत्रादिभि) संकेत,
इगिनम् २ रहस्य, गुह्य, कूम् ३ आशय,
अभिप्राय ।

रम्माल, स पु (स) दैवज्ञ, ज्योतिषिक ।

रम्य, वि (स) दे 'रमणीय' ।

रम्या, स स्त्री (स) रथलपरिनी २ रजनी
३ गगा ४ निरुण्डी, इन्द्राणी ।

रम्याना, क्रि अ (स रमण) दे 'रमाना' ।

रम्यत, स स्त्री (अ रम्यत) दे 'प्रजा' ।

रव, सं पु (सं) शब्द, नि, नाद, ध्वनि,
वि, रव राव २ कलकल, कोलाहल,
उत्क्रोश ।

रवाँ, वि (फा) प्रवदत् प्रसवत् प्रचलत्
(शजन) २ अभ्यस्ता ३ निशित, तीक्ष्ण
(शस्त्रादि) ४ प्रस्थित ।

रवा', सं पु (स रज) कण, लव, अणु,
पेश २ दे 'खजी' ।

रवा, वि (फा) उचित, युक्त २ प्रचलित,
वियमान ।

रवाज, स पु (अ) दे 'रिवाज' ।

रवानगी, स स्त्री (फा) प्रस्थान, प्रयाणम् ।

रवाना वि (फा) प्रस्थित, प्रचलित २ प्रेषित,
प्रहित ।

—करना, क्रि स, प्रस्था (प्रे प्रस्थापयति),
प्रहि (स्वा प अ), स, प्रेष (प्रे),
प्रचल् (प्रे) ।

—होना, क्रि अ, प्रथा (भ्वा आ अ),
अप, सु-गम् (भ्वा प अ), प्रवा (अ प अ) ।
रवानी, म स्त्री (फा) प्रवाह, प्रगति (स्त्री) ।

रवायत, स स्त्री (अ) कथा २ लोको (खी) ।

रवि, स पु (स) अत्र मानु, दे 'रुव' ।

—चार, स पु (भ) आदित्य, चार वामर ।

रवैया, सं पु (फा रविश) आचार, आचरण, चेटित, वृत्त (खा), व्यवहार ।

रक्षणा, स स्त्री (सं) कान्ची, दे 'मखला' (१) २ जिहा ३ रज्जु (खी) ।

रक्षक, स पु (का) रक्षा, मात्मयन् ।

रक्षि, सं स्त्री (स पुं) किण्व २ अक्षरज्जु (खी) ३ पक्ष्मन्-वपु (न) ।

रस, सं पुं (स) आ, स्वाद २ षट् इति

संख्या ३ शरीररूपधातुविशेष, रसिका चम

रक्त, सार, त्रेत्र-अग्नि-आहार, मभव ४ तत्त्व,

सार ५ काव्यनाटकानुभवान् शृङ्गारादिदश

विधो मानसानन्दभेद (काव्य) ६ 'नव'

इति संख्या ७ आनन्द, सुख, आह्लाद, प्रमोद

८ अनुराग ९ रति (स्त्री), सुरत

१० उत्साह, औत्सुक्य ११ युग १२ द्वय,

सार, रस, आसव, नियाम, सत्त्व १३ जल,

१४ मू(ज)प ५ १५ द 'शरवत' १६ वीर्य

१७ विष १८ पारद १९ दे 'शिंगरक'

२० धातुभस्मन् (न) २१ आनन्दरूप ब्रह्मन्

(न) २२ २३ गध-शिला, रस २४ प्रकार,

रूप २५ विततरंग, छद्र ।

—चूना या टपकना, कि अ, रस कणश

निस्यद् (भ्वा आ स) -म् (भ्वा प अ) ।

—खेना, कि अ, नद (भ्वा प मे), मुद

(भ्वा आ से) ।

—कपूर, स पु (म रसकपूर) कपूररस ।

—गुल्ला, सं पुं, *रसगान् ।

—भरा, वि, रस, मूग-मय-शुक्ल-वपु, भरम

रसिन् ।

—भरी, स स्त्री, *रसकदरी ।

—पति, सं पु (सं) चद्र २ वृष ३ पाण्ड,

*रसराज ४ शृंगाररस रसराज ।

—मिहूर, स पु (म न) मिहूररस ।

रमज, स पु (मं) रम-स्वाद, विद शब्द

२ काव्यममज्ञ, बाल्यालोचन ३ निपुण,

कुशल ४ अनुदायिन्, रिसन, प्रमिन्

५ युगमाद्य ६ रसवैष ७ रमायनविद् (पु)

रमद, वि (मं) घुत्त, आनन्दप्रद, २ स्वाद,

रम्य । सं पुं (मं) रित्तना वैष, मिन् ।

रसद्^२, स स्त्री (फा) अन्नमाग्री भक्ष्यवानम् ।

रसना^१, स स्त्री (स) रसा, जिह्वा, रमजा,

लोल, रसनेन्द्रिय २ कान्ची, मेखला ३ रज्जु

(खी) ४ अनीशु पु, बल्गा ।

रसना^२, कि अ, दे 'रिन्ना' ।

रसनीय, वि (स) आस्वाद्य, चषणीय २

स्वादु, रष्य, रचिकर ।

रसनेन्द्रिय, स स्त्री (स न) जिह्वा, रसा,

लोल, रसजा ।

रसम, सं स्त्री (अ रसम) प्रया, परिपाटी-टि

(खी), रीति (खी) ।

रसा^१, स स्त्री (स) पृथिवी २ जिह्वा, रसन

३ पाटा ४ रासना, पलायणी ५ द्राक्ष

६ नदी ७ रसातलम् ।

—पति, सं पु (स) नृप, भूप ।

—पायी, वि (सं-यिन्) जिह्वापायिन् ।

स पु, अन्, कुक्कुर, सामेय ।

रसा^२, स पु (स रस >) मू(जू)प प*रस-

दे 'शोरवा' ।

रसाई, स स्त्री (फा) दे 'पहुँन' ।

रसाजन, सं पु (स न) दे 'रसीत' ।

रसातल, सं पु (स न) पाताल २ पाताल

विशेष ।

रसायन, स पु (स न) जराव्यापिनारा

जीवध २ तक्र ३ विष ४ रस विना शास्त्र

सिद्धि (खी) ५ रसायनशास्त्र, दे 'रसित्री'

६ धातुविद्या ।

—बनाना, मु, (छद्रधातून्) सुवर्णरूपय परि

णम् (प्रे) अथवा सुवर्णीक ।

—शास्त्र, सं पु (सं) दे 'रसित्री' ।

रसाल, स पुं (म) रसु, दे 'गत्रा' २ आश ।

वि, स्वादु, घुत्तवाद २ सरस ३ मजुर

४ सुंदर ।

रसिक, सं पु (सं) रसास्वादिन्, स्वाद

प्रदिन् २ प्रणदिन्, अनुदायिन्, वामुव

३ मद्दय, भातुर, काव्यममज्ञ ४ आन

दिन्, विनोदिन् ५ अल, प्रेमिन् ।

रसिकता, सं स्त्री (सं) विनोदित्व, परि

हान्प्रियता २ सहृदयता, भातुरता ३ वामु

वता, विलासिता ।

रसिया, सं पु, दे 'रसिक' ।

रमीद, सं स्त्री (फा) प्राप्ति-उपलब्धि

(खी) २ *प्राप्तियन् ।

—बुरु, म स्त्री (का + अ) प्राज्ञपत्रपत्रिका ।
 रसीला, वि (स रस >) दे 'रसभरा' ।
 रसूल, स पु (अ) ईशदूत ।
 रसोद्, स पु (स) पाद, दे 'पादा' ।
 रसोद्द्या, स स्त्री (हि रसोर्) पाचक, सद रूपरार, बह्व, आरागिक, आपसिक, औदनिक, रन्धक ।
 रसोई, स स्त्री (म रसवती) पाकशाला, महानस २ सिद्धात्र, पत्राहार, भोजनम् ।
 —घर, म पु, दे 'रसोई' (१) ।
 —दार, स पु, दे 'रसोईया' ।
 यचा—, म स्त्री (पुत्रादिपु) *अपक्वभोजनम् ।
 पकी—, स स्त्री, (घृतादपु) *अपक्वभोजनम् ।
 रसोत, स स्त्री (स रसोद्भूत) रसावन, रसगर्भ, कृक, बालभैषज्य, बर्षाजनम् ।
 रस्ता, स पु (हि रस्ती) स्थूलमदान, बृहदरञ्जु (स्त्री), स्थूलरदिम ।
 रस्ती, स स्त्री [स रदिम (पु)] रञ्जु (स्त्री), गुण, दामन् (न), बराट, शुल्वा, बगी, रश(स)ना ।
 रहँ, म पु, दे 'अरहर' ।
 रहटा, म पु, दे 'चरत्ता' ।
 रहते, कि वि (हि रहना) उपस्थितौ, विद्यमानताया, नीकने (सुव सप्तमी षक) ।
 रहन', म स्त्री (हि रहना) वाम, वसन, वसनीनि (स), वस्ति (स्त्री), स्थिति (स्त्री) २ आचार, व्यवहार, चरित, वर्तन, वृत्ति (स्त्री) ।
 —सहन, स स्त्री दे 'रहन' (२) ।
 रहन', स स्त्री (हि रसना) अधान, दे 'गिरवी' ।
 रहना, कि अ (स रसन >) अधि-नि प्रनि, वम (भ्वा प अ) २ अवस्था (भ्वा आ अ), वृत् (भ्वा आ मे), न्या (भ्वा प अ) ३ नीच (भ्वा प मे) प्राणान् घृ (पु) ४ विरम् (भ्वा प अ), विग्रम् (दि प से) ५ अव उत् परि, शिप (कम) ६ उज्ज-स्वन् (वर्म) ७ विद् (दि आ अ), उपस्था (भ्वा प अ) ८ मुषा बाल्यं या (प्रे) । सं पु, अधि-नि प्रनि, वसन वसनी नि (स्त्री), अवस्थान, अवस्थिति (स्त्री), जीवन, प्रागधारणं, अवशिष्टता, त्याग, उपस्थिति (स्त्री) ।

रहने योग्य, वि, निवसनीय, वासाह ।
 रहनेवाला, स पु, नि, वासिन, स्व, वर्तित्, (तद्धित प्रत्यय से नी, व, भारतीया, पाचनदा) ।
 रह रह के, मु, पुन पुनः, भूयो भूय, पौन पुन्येन, वार वारम् ।
 रहम', म पु (अ) कृपा, दया, करुणा, अनुकृपा ।
 —दिल, वि, कृपालु, स्वरूप ।
 रहम, स पु (अ रहम) गर्भाशय, दे. ।
 रहमत, स स्त्री (अ) कृपा, अनुग्रह ।
 रहमान, वि (अ) अनिशय-परम, कृपालु-दयालु । स पु, परमेश्वर ।
 रहस्य, वि (स) गोप्य, गोपनीय, गुह्य २ गुह्य, गूढ, प्रच्छन्न । स पु (सं न) गुह्य, गोप्य, मर्मन्, गूढ-मन्त्र, वार्ता ।
 रहा-सहा, वि, 'बचाहुवा' ।
 रहा हुआ, वि, वपित, अव, स्थित, अव-उत् परि, शिष्ट, उपस्थित इ ।
 रहाइना, स स्त्री (हि रहना) वसनी-तिः (स्त्री), वास, अवस्थान, अवस्थिति (स्त्री) ।
 रहित, वि (स) द्योन, विरहित, वञ्चित, शय, वियुक्त, विनाभूत ।
 रहीम, वि (अ) दयालु । स पु, ईश्वर ।
 राँग, गा, स पु (म रग-ग) वग, त्रपु, त्रपुष, पृतिगध, कुरुष्य, मधुर, हिम, पिच्छटम् ।
 राँड, वि (स रटा) विषया दे । २ वेदया ।
 राँधना, कि स (सं रधन) दे 'पकाना' ।
 राँधी, स स्त्री (देश) चर्मकाररुदिका, *चर्मकर्त्री ।
 राँभना, कि अ, दे 'रमाना' ।
 राई, स स्त्री (स राजी) रक्तसर्प-रक्तिका, जसुरी, क्षव, क्षवक, क्षुत्क । दे 'सरसो' के भेद २ अत्यल्प-मात्रा-परिमणम् ।
 —नोन डतारना, मु रानीलवणधूमेन कुट्टि प्रभाव नश (प्रे) ।
 —भर, मु, तिल अणु-लेश-राजी-मात्र, अत्यल्पम् ।
 —से पर्वत करना, मु, अणुमपि पवतीकृ, निके ताल परयति, अत्युक्त्या वण् (सु) ।
 राईफल, स स्त्री (अ) दुक्षिमृतास्त्र, नाग खभेद ।

राका, स स्त्री (स) सपूर्णचक्रा, पीर्यमाप्ती
 २ पूर्णिमा, पूर्णा, पूर्णमासी ।
 राक्षस, स पु (म) राकापति, चक्र ।
 राक्षस, स पु (म) निशा रजनी रात्रि नक्त,
 चर, ब्रह्मद-र (पु), रक्षस (न),
 पलाश शिन्, भूत, दापाट, सन्ध्यावल्,
 यातु, यातुधान, अस्त्र-कौण, प, बडूर,
 दैत्य, असुर दानव २ दुष्टप्राणिन, पाप
 ३ विनाहमेद (धर्म) ।
 —विवाह, सं पुं (म) विवाहमेद, युद्धेन
 कन्यां प्राप्य विवाह ।
 राक्षसी, स स्त्री (सं) पिशाची, निशाचरी,
 दानवी । वि, राक्षस दानव, उचिन्-भोग्य,
 भामानुषिक ।
 राक्ष, स स्त्री (स रक्ष >) भूमिन्, भग्मन्
 (न), भूति (स्त्री) ।
 राक्षी, स स्त्री (स रक्षा >) दे 'रक्षानपन'
 २ दे. 'रास' ।
 राग, सं पु (स) अभिमतविषयाभिलाष,
 सुखिपणा २ वलेश, वष्ट ३ मात्सर्ष्य, इष्यां
 ४ प्रीति (स्त्री), अनुराग ५ अंगराग
 ६ लोहित, रग-वर्ण ७ रजन, आह्लादन
 ८ कथा ९ सगीतशास्त्रीयराग (भैरवादि) ।
 —राग, सं पु (सं) विनोद, विलास कीर्ण
 कौतुक, संगीत, रजनम् ।
 अपना—अलापना, सु, (परविचारान् अश्रुत्वा)
 स्वकीयानेव विचारान् मारमन् श्रु (प्रे) ।
 रागान्वित, वि (स) अनुक्त, जामन्,
 सवाम २ बुषित, कुद् ।
 रागिणी, सं स्त्री (सं रागिणी) रागपत्नी
 (भैरवी, सुर्वरी आदि) २ विदग्धा नारी ।
 रागी, स पु (सं गिन्) रागविद् (पु),
 गायन्, गान् २ अनु-रागिन्-रक्त, प्रेमिन् ।
 वि, रगिन्, मराम २ लोहित-रक्त-वर्ण
 ३ विषयाम्क, भोगिन् ।
 राघव, सं पुं (म) रघुवश्य २ अत्र
 ३ दशरथ ४ आरामचंद्र ।
 राठ, स पु (म रथ >) (दिग्गिपना) उप
 वरण, स्रधन्, यथ २ वरदाया ३ दे 'रघूत्त'
 ४ चर्त्री पेशणी, वीर्य ।
 राज, सं पु (म राज्य) शामन, शिटि
 (स्त्री), देश प्रथम व्यवस्था, प्रजापत्य,
 आधिपत्य ३ जनपद, नीच्य (पु), मह्य,

राष्ट्र, देश, राज्य, विषय, उपवर्तन ३ अधि
 कार, आधिपत्य ४ सामन-राजत्व-गम्य,
 बाल । म पु (म राजन्) नृप २ 'मैमार' ।
 —करना, क्रि म, प्र, शान (अ प मे),
 ईश (अ अ से) अधिष्ठा (भ्वा प अ),
 परिषा (प्रे, पालयति), तन् (तु आ स) ।
 —कर, सं पुं (स) राज, स्वर्जि शु-र
 (क) धनम् ।
 —काज, स पु (स कार्य) शामन, व्यवस्था
 कृत्यम् ।
 —कुमार, स पु (सं) राज, पुत्र-नृप, ननु १
 —कुमारी, स स्त्री (म) राज-नृप, कन्या
 शुना-पुत्री ।
 —कुल, स पु (म न) राज-नृप, वंश अन्वय १
 —गद्दी, स स्त्री, नृपामन, राजभिहामनं
 २ राज्य, अभिषेक, *रापतिर्यक नम् ।
 —गीर, स पु, दे 'मैमार' ।
 —गुरु, सं पु (स) राज, शिक्षण पुरोहित १
 —गृह, सं पु (म न) नृप-राज, प्रामाद
 भवनं मदिरे सदन, सीध, सुधामय २ मगध
 प्रातरथ प्राचीनराजधानी ।
 —तिलक, स पु (स पु न) दे 'राजगद्दी'
 २ अभिषेकोन्वय ।
 —दद, स पुं (म) राज शामन, प्रजापालन
 २ राज्यनियमविहित आधिक-शारीरिक, दद
 ३ दे 'राजन्' ।
 —दंत, स पु (सं) पुरोवतिष्ठतचतुर्ध्वं
 २ उपरिधेणीमध्यवर्तिष्ठनद्वयम् ।
 —दरबार, सं पुं, द 'राजमभा' ।
 —दूत, स पु (म) नृप, वार्तिक-मादेशिक ।
 —द्रोह, स पु (स) नृपविराट, राजभवि
 प्लव, प्रजाघोम ।
 —द्रोही, स पु (सं द्वि) नृपविराटिन् ।
 —धानी, स स्त्री (सं) नृपनगरा ।
 —नीति, स स्त्री (म) नृप-राज, नय विषय,
 शामनरीति (स्त्री) (मधिविद्यमामान्तरि) ।
 —नीतिक, वि (सं) राजशामनविषय
 तत्त्वमवधिन् ।
 —पथ, सं पु (सं) राज, माग वामन् (न),
 महा-यंग श्री, पथ ।
 —पाट, सं पुं, (सं) राजभिहामनं २ शामन-
 धिकार २ जनपद, राष्ट्रम् ।

—पुत्र, स पुं (स) राजकुमार २ क्षत्रिय
जाति भेद ३ कुषप्रद ।
—पूत, स पुं (स राजपुत्र >) क्षत्रियजाति
भेद, *राजपुत्र ।
—पूतो, स स्त्री (हिं राजपूत) शौर्य, कीर्त्यम् ।
—फोडा, स पुं *राजस्फोट, *स्फीराज्ञ,
दे 'वारवकम्' ।
—बाहा, स पु, राज महाकुल्या ।
—भदार, स पु (स भागर) राज-राज्य,
कोष (स) भाडागार (रम्) ।
—भक्त, स पु (स) राज्य-राज, भक्त निष्ठ ।
—भक्ति, स स्त्री (स) राज्य-राज, भक्ति
(सो) निष्ठा ।
—भवन्, } स पु (सन) दे राजगृह' (१) ।
—भदिर, }
—भङ्गदूर, स पु, पल्लवकामिका, गेहकार
वर्मकारा (भाव बडु) ।
—महल, स पु, दे 'राजगृह' (१) ।
—मार्ग, स पु (स) दे 'राजपथ' ।
—माय, स पु (स) बब' टी, नील-नृप,
माष', नृपोचित ।
—मुद्ग, स पु (स) मुकुष, दे 'मोठ' ।
—यक्ष्मा, स पु (सं-क्ष्मन) राज्यक्ष्म,
दे 'यक्ष्मा' ।
—योग, सं पु (स) अष्टांगयोग ।
—राजेश्वर, स पु (स) सम्राट् (पु),
राज्याधिराज ।
—रोग, स पु (स >) असाध्यव्याधि
२ दे 'यक्ष्मा' ।
—रक्षण, म पु (मं न) सङ्घन राजचिह्न
(सामुद्रिक) ।
—रक्ष्मी, स स्त्री (स) राजश्री (स्त्री),
२ नृपच्छत्रि (स्त्री), नृपदेभवन ।
—वशी, वि (म राजवश >) राजवदय,
नृपकुलोद्भूत, राजकुलज ।
—सत्ता, म स्त्री (म) राज, शक्ति-अधिकार
(स्त्री), राजना-त्वम् ।
—सभा, स स्त्री (स) राज, परिषद्-संसद
(दोनों स्त्री) २ नृपतिसमाज ।
—हस, स पु (सं) मराल २ बल्हम्,
कदम्ब ३ नृपोत्तम ।
राज्ञ, सं पुं (का) रहस्य, गुह्य, गोप्यम् ।

राजकीय, वि (स) राज नृप, राज राज्य,
विवयत् २ नृपोचित, राजाह ।
राजत, वि (स) शीघ्र-श्रीप्यम्, रूपमय
यो-य, रजत, अय निर्मित-कृत ।
राजत्व, स पु (सन) राजता, नृपत्व राज
अधिकार आधिपत्यम् ।
राजस, वि (स) रजोशुण, उद्भूत तनिन-
प्रधान-मय (राजमी स्त्री) ।
राजसिक, वि, दे० 'राजस' ।
राजसी, वि (म राजस >) राज, योग्य-अहं,
नृपोचित, राजकीय ।
राजसूय, स पु (म) नृपाध्वर, क्रतु, राज
उत्तम ।
राजस्व, स पु (स पु न) राज, धन-रूप
वलि ।
राजा, स पु (म राजन) नृप, भूप, पाथव,
नर-नृ-भू-मही, पाल पति, क्ष्मा-महा भू भू
(पु), पाथ, महोद्ग, नरोद्ग, प्रवेशर,
भूमिप, दत्तधर, अकनि, -प-पति, इन,
भूमिन् (पु) राज् (पु), महीक्षिप (पु),
नामि, अथपति, प्रभु २ स्वामिन, अधि
पति ३ उपाधिभेद-४ धनाढ्य ।
राजाज्ञा, स स्त्री (स) नृपदेश, राजशा
सनम् ।
राजाधिकारी, स पु (स-रिज) राज, निषो
गिन भृत्य-कर्मकर-पुरष २ न्यायाधीश,
धर्माध्यक्ष ।
राजाधिराज, स पु (स) राजराजेदव,
सम्राज (पु) ।
राजाधिष्ठान, सं पु (स न) राजधानी,
नृपनगरी, राजपुरम् ।
राजानक, स पु (सं ?) राजक, साधारण,
नृप भूप पाथिव, सामत ।
राजाभियोग, म पु (स) प्रथया बलाव
कायकारणम्, दे 'वेगार' ।
राजि जिक्का, म स्त्री (स) श्रेणी, पक्ति
(स्त्री) २ रेखा ३ दे 'राई' ।
राजा, स स्त्री (स) दे 'राजि' ।
राज्ञी, वि (अ) एक-सह-स, मत-विच
२ स्वस्थ ३ प्रसन्न ४ सुखिन ।
—करना, क्रि सं, प्रसद् (प्रे), सपरि तुप
(प्रे), श्री (क्रु उ अ) ।

- होना, कि अ, प्रसद (भ्वा ष अ) स-
परि लुप् (दि ष अ) प्री (कर्म.) ।
- नामा, स पु (अ + का) समाधान
२ समाधानपत्रम् ।
- राजीव, स पु (स न) नीलकमल २ पद्म,
सरोज, कमलम् ।
- राजेन्द्र, स पु (सं) दे 'राजाधिराज' ।
- राज्ञी, स स्त्री (स) राजपत्नी, दे 'रानी' ।
- राज्य, स पु (स न) दे 'राज' (१२) ।
- च्युत, वि (स) राज्यभ्रष्ट, सिंहासनच्युत ।
- च्युति, स स्त्री (स) राज्य, भ्रष्ट भग,
मिहामिनारोपणम् ।
- नत्र, सं पु (स न) शासन, प्रणाली-
व्यवस्था ।
- पाल, स पु (सं) राज्य प्रदेश प्रान्त,
शासक । (प्रादेशिक शासन का सर्वोच्च
प्रबन्धक) ।
- लक्ष्मी, सं स्त्री (स) दे 'राजलक्ष्मी' ।
- व्यवस्था, म स्त्री (सं) राज्य, नियम -
व्यवस्था ।
- राज्याभिषेक, सं पु (सं) राज्य-सिंहासन,
आरोहण, राजनिलक की २ मिहामिनारोहणे
राज्ये वा नृपस्नानविशेष ।
- राणा, सं पु (सं राजन्) राजपुत्रनृपाणा
उपाधि ।
- रात, सं स्त्री [स राजीवि (स्त्री)]
रा(शा, वंरी निशा निशीथिनी त्रियामा, क्षणदा,
क्षपा, विभावरी, रजनी यामिनी तमी, तम
श्विनी इयामा, धोर, नक्त, दोषा ।
- दिन, कि वि, नक्तदिन, नक्तदिव, सदा,
मर्तदा ।
- भर, कि वि, यावत्रक, निदान यावद ।
आधी— म स्त्री मध्य अर्ध रात्र निशीथ,
निदानत्रि-अर्धम् ।
- रात्रो— कि वि, निशीथे ष्व ।
- रात्रि प्री, स स्त्री (मं) दे 'रात्र' ।
- रात्र्यध, सं पु (स) निशाथ (मनुष्य या
पु आदि) ।
- राधा धिका, सं स्त्री (सं) रामेश्वरी,
गिरिवेश्वरी कृष्णप्रिया, वृषभानुजनया ।
- रमण, सं पुं (स) राधावद्भय, श्रीकृष्ण ।
- रान, सं स्त्री (का) कर, सविध (न) ।

- राना, स पु, दे 'राणा' ।
- रानी, स स्त्री (सं रात्री) रात्रपत्नी, नृप-
कलत्र २ स्वामिनी ।
- छोटी—, स स्त्री, परिवृत्ती ।
- पट्ट—, स स्त्री, पट्ट-राश्री-महिषी देवी, महा
पट्ट राश्री ।
- प्रिय परन्दु छोटी—, स स्त्री, वावाता ।
- राध, स स्त्री (मं द्रावक) फाणित, अर्धा
वर्तिरोक्षुत्स ।
- रावदी, स स्त्री, दे 'रवडी' ।
- राम, स पु (सं) परशुराम २ बल, राम
देव ३ श्रीरामचंद्र ४ परमेश्वर ५ 'वि'
ऽति सख्या ।
- कली, स स्त्री (स) रामक(कि)री
(रागिणी) ।
- कहानी, सं स्त्री, बृहत्कथा २ करणकथा ।
- जनी, सं स्त्री, हिंदू नतकी २ वेदया ।
- तरोई, सं स्त्री, दे 'भिडी' ।
- दूत, स पु (सं) हनुमत् (पु),
पवनपुत्र ।
- धनुष, स पुं [सं नुस् (न)] इन्द्रवाप ।
- नवमी, सं स्त्री (सं) श्रीरामजन्मतिथि,
चैत्रशुक्लनवमी ।
- नामी, सं पु [सं रामनामन् (न)]
रामनामाकिनवस्त्र ३ रामनामाकिनहासभेद ।
- पुर, सं पु (म न) स्वर्ग २ अयोध्या ।
- बाण, सं पु (स) अजीमनाशक औषध
विशेष ३ रामशर, शरकृष्णभेद । वि,
अमोघ, मघ फलदायिन् ।
- रस, स पु (स) लवण २ भंगामव
(मदरास में) ।
- राज्य, स पु (सं न) धर्मव्याप्य,
राज्यम् ।
- राम, अर्थ (सं) प्रणाम, नमस्कार ।
- लीला, सं स्त्री (सं) रामायणाभिनय ।
- सखा, सं स्त्री (सं-य) सुप्रिय ।
- कफे, सु, अत्यावासेन, अनिकृच्छ्रेण,
यथाकथयिद ।
- जाने, सु, न वेधि, न जाने, ईश्वरो जानानि
३ ईश्वर साक्षी, अहं सरवं यन्मि ।
- नाम सत्य हे, सु, रामनाम(गोविन्दनाम)-
सत्य, प्रेनवचनकाशोचितवाक्यम् ।

रामचन्द्र, सं पु (स) दशरथस्य ज्येष्ठपुत्र, रघुनन्दन, सीतापति, रामभद्र, रावणारि ।

रामा, सं स्त्री (स) छुररनारी, छन्दरी, बाना २ नारी ३ सगीतकुशला नारी ४ सीता ५ राधा ६ रुक्मिणी ७ लक्ष्मी ८ सीतला ।

रामानन्द, स पु (स) वैष्णवाचार्यविशेष ।
रामानुज, म पु (सं) लक्ष्मण, सीमित्रि २ श्रीवैष्णवसम्प्रदायप्रवतनाचार्य (स १०७३ ११९४) ।

रामायण, स पु (स न) श्रीवाल्मीकि प्रणीतो महाकाव्यविशेष २ रामचरितम् ।

रामायणी, वि (स रामायणम् >) रामायण, मन्त्रिधर्म-विषयक, रामायणीय । स पु रामायण, पाठिन् पठित् ।

राय^१, स पु (स राजन्) नृप, भूप २ सामत, नायक ३ चारण, बदिन् ४ राजकीयोपाधिभेद, राजन् (पु) ।

—बहादुर, स पु (हि + का) *राज वीर (उपाधिभेद) ।

—साहब, स पु (हि + का) *राजमहोदय (उपाधिभेद) ।

राय^२, स स्त्री (का) मत्तं, मति (स्त्री) असाय, अभिप्राय, विचार, तर्क ।

—देना, कि अ, निजमतस्वमति प्रकटयति (ना श) ।

—पूना या लेना, कि स, परमत प्रच्छ (उ प अ), (स्वहिताय) परविचार श्वा (मन्नत, जिज्ञासते) ।

रायगॉ, वि, (स) व्यर्थ, निरर्थक, अपार्थक ।

रायन्, वि (म) दे 'प्रचक्षित्' ।

रायता, स पु (स राज्यका) दाधिरन्वय नभेद, दाधेयन् ।

रायल, वि (अ) राजकीय, रानोजित, नृपो विव, राजाह ।

राय, स स्त्री [म राग् (स्त्री)] दे 'क्षगड' ।

राल^१, स पु (स) शाल-शाल, नृप २ सर्ज शाल, नियान्-रस, सुरयश्च धूप, सुरभि, अग्निवह्नभ, दे 'धूप' ।

राल^२, स स्त्री (स लाग्) सवि(णी)का, स्वदिनी, द्राविका, मुखलाव ।

—गिरना चूना वा टपकना, पु, लालायते

(ना धा) लालयित (वि) भू, अत्यर्थ अभिलषू (भ्वा प मे) ।

राय, म पु, दे 'राय' ।

—चाव, सं पु, मगीनोत्सव, दे 'रायराग' २ लालनम् ।

रावण, स पु (स) पौलस्त्य, लक्षेश, दश, कथर ग्रीव भ्रानन आस्य ।

रावली^१, म पु (स राजपुर >) अत-पुरं, दे 'रनवास' ।

रावली^२, सं पु (म राजपुत्र >) नृप २ सामत ३ समानपूर्वक संबोधनपद, राजन् ४ योध, भट ।

रावी, स स्त्री (स रावती) पेटावती, पचनदप्र-नवतिनदीविशेष ।

रागि, म स्त्री (स पु) दु(रि)ज, पुनि (स्त्री), उत्कर, कूट-ट, समुच्चय, निकर, दे 'देर' २ ज्योतिषकस्य द्वादशाश ३ उत्तराधिकार ।

—चक्र, म पु (स न), ज्योतिषक, म, मडलपत्र-चक्रम् ।

—भाग, स पु (स) राद्वयंश, भग्नांश (ज्यो) ।

—भोग, स पु (म) राशी महावस्तिपति (स्त्री) २ राशी महावस्तिनिकाल ।

राशी^१, स स्त्री, दे 'राशि' ।

राशी^२, वि (अ) दे 'रिशवनलोर' ।

राष्ट्र, म पु (स न) देश, विषय, जनपद, दे 'राज' (२) । २ राष्ट्रधामिन, राष्ट्रिका, जना, प्रजा (सब बहु) लोक, जनता ३ राष्ट्रीय, उपर्य, दे 'रिति' ।

—पति, स पु (म) राष्ट्रिक, राष्ट्रिय, राष्ट्रनायक, प्रजातन्त्रप्रधान ।

—पाल, स पु (म) नृप, भूप । २ कम भाव ।

—विप्लव, स पु (स) राजद्रोह, प्रजा क्षोभ क्रान्ति (स्त्री) ।

राष्ट्रीय, वि (सं) देशीय, देश्य, राष्ट्रिय, जानपदक ।

राष्ट्रीयता, स स्त्री (स) देशीयता, देश मक्ति (स्त्री) ।

रास^१, स पु (स) कोलाहल, कलकल, महाध्वान २ ध्वनि, शब्द । सं स्त्री

(स पु), गोपाना नृत्य क्रीडाभद्र २ नट्यक रूपक, भेद ३ शृङ्खला ४ प्रचलितगानिनाभेद ५ विलाम ६ लम्ब ७ ननकममात्र ।

—क्रीडा, स स्त्री (स) रामविलाम र म लीला २ कृष्णगोपिनानृत्यम् ।

—धारी, स पु (स रिन्) रामाभिनेतृ ।

—विहारी, स पु (स रिन्) श्रीकृष्ण ।

राम, म स्त्री (अ) दे 'राम' ।

राम, स स्त्री, दे 'राशि' (१२) ।

रामभ, स पु (स) गर्दभ २ भवतर (रामभी स्त्री) ।

रास्त, वि (का) सरल २ उचित ३ अनु कूल ४ यथागत ।

रास्ता, स पु (का) मार्ग, पथिन् (पु) २ रीति (स्त्री) ।

रास्ती, स स्त्री (का) सत्य, तथ्य, त्त २ आन्व, धर्मशीलता ।

राह, स स्त्री (का) पथिन् (पु), दे 'मार्ग' २ प्रथा, रीति (स्त्री) २ नियम ।

—सर्ष, म पु (का) मार्गद्वय ।

—गीर, म पु (का) यात्रिन, पथिक ।

—चलता, म पु (का + हि) पथिन् २ अपरिचित ।

—ज्ञन, सं पु (स) दस्तु, परिपथिन्, मार्गनस्वर ।

—ज्ञनी, म स्त्री (का) तुटन, मोरण, अपहार ।

—दारी, म स्त्री (का) पथ, नर-द्वय, मार्ग शुल्क-कम् ।

—रीति, म स्त्री (का + म) परस्पर, व्यवहार-समर्ग ।

—ताकना या देखना, मु, प्रतीय (भ्वा आ ने), प्रतिपा (प्रे प्रतिपत्त्यति) ।

—नापना, मु, व्यर्थ पथट (भ्वा प म) ।

—निकालना, मु, मुक्ति चिद (चु) उपाय कल्प (प्रे) ।

—पर आना, मु, मुपधे प्रकृद (भ्वा आ स), म-मार्ग अलम्ब (भ्वा आ स) ।

—बचाना, मु स्वपदाद भ्रू-भ्यु (प्रे) २ मार्ग कृत् (प्रे) ।

—रखना, मु, व्यवहृ (भ्वा प अ) रमनी त्थ (भ्वा प मे) ।

—लेना, मु, प्रस्था (भ्वा आ अ), या (अ प अ) ।

राहत, म स्त्री (अ) सुख, आनन्द ।

राही, स पुं (का) पाथ, पथिन् ।

राहु, स पु (स) विधुनुद, मैदिक-वेद्य-तमस (पु न), स्वभानु, शीर्षक, क्वथ १

—ग्राम, स पु (स) राहु, यमन-दशन-स्पर्श-ग्राह उपराग, सूर्य-चन्द्र, ग्रहणम् ।

रिआयत, स स्त्री (अ) मूल्य-दूतता २ अनुग्रह, व्यवहारमादर्व, प्रसाद ३ पञ्चपात्र ।

—करना, क्रि स, मूल्य-न्यूनीकृ २ अनुग्रह (क् प से) ३ सपञ्चपात्र आचर (भ्वा प से) ।

रिआयती, वि, (अ) प्रामादिक, आनुग्रहिक, न्यूनमूल्य ।

रिआया, स स्त्री (अ) प्रजा, दे ।

रिक्शा, म स्त्री (अ रिक्शा) नर, जाल-बाहनम् ।

रिक्श, म स्त्री, दे 'रकाव' ।

रिक्शनी, म स्त्री, दे 'तहरी' ।

रिक्शम्, स पु (अ) बालग्रह (रोगभद्र) १

रिक्त, वि (स) पर, शून्य, शून्यगर्भ २ निर्धन ।

—हस्त, वि (सं) शून्यपाणि ।

रिक्त्य, मं पु (मं न) क्षाय, पैतृकधनम् ।

—हारी, म पुं (मं रिक्) रिक्थिन्, दायाद १

रिक्तक, स पु (अ रिक्क) आ-अप, जीविना-वृत्ति (स्त्री) ।

रिक्तर्ष, वि (अं) रक्षित, निश्चित, नियत ।

रिक्तल, स पु (अं) परोक्षा, मन्-परिणाम २ परिणाम, फलम् ।

रिक्ताना, क्रि स, व 'रीक्षता' के प्रे रूप ।

रिपु, सं पु (सं) अरि, बैरिन्, दे 'शत्रु' १

रिपोर्ट, म स्त्री (अं) मूलना २ विवरणिका-विवरण, प्रतिवेदनम् ।

रिपोर्न्व, स पु (अं) संवाद, दाह-प्रेषण, वृत्तान्त-समाचार, ज्ञानम् ।

रिपोर्न्व, मं पु (अं) पन्ना-दान-पानोना-मादित्थिविवरण, महित्वागविवरण, •रिपा-तापम् ।

रिक्कार्म, मं पु (अ) मंशोधन, दोषासनयन, संस्कारणम्, संस्कार । •शूद्र ।

रिश्कार्मर, म पु (अ) (समान) मशोधक
मस्कारक-शोधक, *मृद्धारक ।
रिश्कार्मरि, म स्त्री (अ) कानास्थनालक
सस्कारकभाठशान्ता *मशोधिका *मस्कारिका,
*मृद्धारिका ।
रिश्चन, म पु (अ) पट्टिका ।
रिश्चिम, म स्त्री (अनु) शीकर-वर्ष पात ।
—होना, कि अ, मद मद वृत् (स्वा प से) ।
रिश्चामत, स स्त्री (अ) देशीयराज्य, राज्य
२ पेश्वर्य, वैभवम् ।
रिश्वाज, म पु (अ) दे 'रीति' ।
रिश्वात, म स्त्री (त्र रिश्चन) उत्कोच,
आमिष, वीरुन, लवा २ उत्कोचदानादानम् ।
—खाना, कि अ, उत्कोच ग्रह (कू प से) ।
आडा (जु आ अ) ।
—प्रोर, म पु (अ + का) उत्कोचग्रहणम् ।
—प्रोरी, म स्त्री (अ + का) उत्कोच,
आदान ग्रहणम् ।
—वेना, कि म, उत्कोच दा ।
रिश्वा, स पु (का) दे 'मवध' ।
रिश्वादार, म पु (का) दे 'सवधी' ।
रिश्वादारी, स स्त्री (का) दे 'मवध' ।
रिश्म, स स्त्री (स रिष् >) कोष, कोच ।
रिश्मना, कि अ (स र्म >) विदुश कण
क्रमेण म्वद (स्वा आ से) अर-माल (स्वा
प से), री (दि आ अ) २ मद मद सु
(स्वा प अ) प्रम्नु (अ प से) स्वद, री ।
रिश्मालदार, स पु (का) मादि-सेना, नी
(पु) पनि ।
रिश्माला, स पु (अ) सामयिक, पत्रिका,
२ पुस्तिका ।
रिश्माला, स पु (का) तुरगवल, सदिसेन्य,
अशारीका किम् ।
रिश्वा, वि (का) निर वि, मुक्त विमोचिन,
दे 'मुक्त' ।
रिश्वाडे, म स्त्री (का) (बधनादिभ्य) वि,
मुक्ति (स्त्री) उदार, निम्नार ।
रिश्गना, कि अ, दे 'रिगना' ।
रिश्धना, कि स (म र्धन) दे 'पकाना' ।
री, अव्य (म रे) अरे, भो, अदि, हे, दे
'अरी' ।
रीछ, म पु (म कश्च) भल्लुज, दे 'भाल' ।

रीक्ष, म स्त्री (हि राक्षना) तुष्टि एति प्रीति
(स्त्री), प्रसाद, २ दे 'रीक्षना' स पु ।
रीक्षना, कि अ (स रचन) अनुरक्त-आमक्त
(वर्म) अनुरक्त-आमक्त-बद्धभाव (वि)
भू, वि-परि, मुह (दि प से) २ तुष-वृष्
(दि प से), प्रमद (स्वा प अ) । म पु,
अनुराग आमक्ति (स्त्री) । तुष्टि प्रीति
(स्त्री) ।
रीक्षा हुआ, वि, अनुरक्त, आमक्त, बद्धभाव,
वि, सुग्ध, प्रेमिन्, प्रणयिन् ।
रीटार्ट, म पु (सं) वक्रभाण्डम् ।
रीठा, म पु (स रिष्ट) अरिष्ट द्रु, मागल्प,
कृष्णवर्ण, अर्धमाधन पीतकेन, मुच्छकल
केनि(णि) २ रिष्ट केनि(णि)ल-कल्पम् ।
रीद, स स्त्री (स रीदक) पृष्ठवश, पृष्ठास्थि
(न), वयो(से)र(पु न), वशेरका ।
रीता, वि (स 'रिक्त' दे) ।
रीति, स स्त्री (स) रुढि (स्त्री), आचार,
व्यवहार प्रथा, परिपाटीदि (स्त्री)
२ मस्कार, कृत्य, विधि, कल्प ३ प्रकार,
विधा, पद्धति (स्त्री) ४ नियम ५ रसा
दीना उपकर्म पदसधटना (काव्य, उ)
वैदमी, गौडी इ) ५ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री),
धर्म ।
—रिश्वाज, सं पु, रुढ्य, आचारव्यवहार ।
सम्प्राप्त (मीर्नो बहु) ।
रीस, म स्त्री (स रीषी) मालमर्त्य २ स्पर्धा,
विनिर्णीषा ।
—करना, कि अ, स्पर्ध (स्वा आ से),
संपुष् (स्वा प से) । (प) अनुकृ ।
रुड, म पु (स पु न) कवच, नि शीर्षनाय
२ शिवाणिपादो दह ।
रुँ(रुँ) दवाना, कि प्रे व 'रौदना' के प्रे रूप ।
रुधना, कि अ (स रुड) अव-उप, रध
(कर्म) प्रतिवाष् स्तम्भ (कर्म) ।
रुकना, कि अ, व 'रुकना' के कर्म के रूप ।
रुक्वाना कि प्रे, व 'रुकना' के प्रे रूप ।
रुक्वा, स पु } (हि रुकना) दे 'रुक' ।
रुक्वा, स स्त्री }
रुक्वा, स पु (अ रुक्वद्) पत्रक, लुपवन्म् ।
रुक्म, स पु (स न) सुवर्ण, कावर्न
२ लोह इ रुक्मिणीभ्रातृ वि भास्वर ।

—रथ, स पु (मं) रथवाहन श्रेष्ठाचार्य ।
रविमणी, म स्त्री (स) शीकृष्णस्य प्रथम
पत्नी, विदर्भेशमीमपुत्री ।

रवमी, स पु (मं विमन्) विदर्भेशरमीमस्य
ज्येष्ठपुत्र ।

ररा, स पु (का) मुख, वदन, आनन,
२ वपोन, गल ३ मुखमुद्रा अट्टनि
(स्त्री) ४ भाव, आशय ५ वृषा-दया,
दृष्टि (स्त्री) ६ रथ-यन्त्र नामकश्चतुरंगशर ।
कि वि, मनि (द्विताया के साथ), दिशाया
२ ममर्थ, पुन ।

—करना या देना, मु, अवधा (जु उ अ)
मनोयुन (जु) २ अविद्युत्सीम् ।

—चटलना या केरना, मु, पराहमुत्सीम्
२ मनोज्ञ्यत्र युत् (जु), अन्वयमनस्क
(वि.) भू ।

रप्रसत, म स्त्री (अ) प्रस्थान, प्रयाण
२ अवकाश दे 'छुट्टी' ।

रपाई, सं स्त्री (हि रूपा) शुष्कता, शोष,
नीरसता २ रूयता, औदामीन्य, रनेहाभाव,
उपेक्षा, रौष्यम् ।

रवानी, म स्त्री (सं रोम्मानं) *रौर
मननी, वर्षस्त्रुपकरणभेद ।

रचना, कि अ (मं रोचर्नं) कच् (भ्वा आ
स), दिग्मद्र-रचिकर प्रति इ (वर्म) ।
इप्-अभिलष (वर्म) ।

रचि, मं स्त्री (सं) अमिरचि-प्रीति-मुक्ति
प्रवृत्ति (स्त्री), छंद, काम २ अनुराग,
प्रेमन् (पु न) ३. किरण ४ मौदवी,
गवि (स्त्री) ५ बुभुक्षा, निपत्ता, शुभा
६ आ-स्वार ।

—कर, वि (मं) स्वारिष्ट, सुरम २ द्रव्य,
प्रिय, मनोहर, रचिकारक ।

—चट्टक, वि (मं) रचिकारक-चरन्कारिन्
२ पानर, भीषर, अग्निवर्द्धन ।

रचिर, वि (मं) सुन्दर, मनोहर २ मधुर,
सुभादु ।

रचना, मि म, र 'रूयना' के प्रे रूप ।
रचना, मं पुं (अ) पद, पदवी २ मान,
प्रतिष्ठा ।

रदन, सं पुं (सं) रदित, रोदनं, विलयनं,
रिन्ना, रदनं, रदितं, अक्षुपात्र ।

रद्ध, वि (स) वेष्टित, बलपित, सनीन,
२ मुष्टित अ, पिहित, आस, वृत् ३ रत्ननि,
निश्चलीकृत ।

—कठ, वि (सं) गद्गदस्वर, स्वरद्वचन
२ बक्तुप्रममथ (प्रेमादि के कारण) ।

रद्र, सं पुं (सं) शिवस्य रूपविशेष, शिव
२ गणदेवताभेद ३ 'ध्वारादश' इति संख्या
४ रसभेद (काव्य) । वि, भीम, भयकर
भीषण ।

रद्राक्ष, म पु (स) (वृक्ष) नृगमरु, अमर,
पुष्यामर २ (कल) शिव हर मीनवट, अर्ध,
पावन, भूतनाशनम् ।

रधिर, सं पु (स न) शोणित, दे 'रक्त' ।

रप्या, मं पु, (स रूप्यं) रूप्यक, रूपक,
टड्य, रत्नमुद्रा २ धनम् ।

—उड़ाना, मु, धन अपव्यय् (जु) अथवा
वृथा श्रे (प्रे) ।

—जोड़ना, मु, धनं सचि (स्वा उ अ) ।

—सुड़ाना, मु, दे 'शुनाना' ।

—जाला, वि, धनिक, धनाढ्य ।

रपहला, वि (हि रूपा) रूप्य रत्न, मय,
राजत २ रूप्य-रत्न, वण, धवल ।

रमाली, मं स्त्री (का रूमाल) दे 'रंगोत्' ।

ररना, स पु (हि ररना) भीषणरव उन्म
कभेद ।

रराई, स स्त्री (हि रोना) दे 'रदन'
२ रोचनवृत्ति (स्त्री), रहसिया ।

रराना, कि म, अ 'रोना' के प्र रूप ।

ररु, वि (म) कुपित, क्रुद्ध ।

ररुधना, कि स (मं रोधनं) (रक्षाधिका
कारिणि) परि, वेष्ट (भ्वा आ म, प्रे),

परिष्ट (स्वा उ मे, प्रे) २ परिष्ट (अ
प अ), परिष्टद (जु), सवर्णवृत्ति (ना
धा) यवल् (स्वा आ म) ३ अवननि

म-पू (इ उ अ), विषा (जु उ अ) ।

ररुं ररुं, मं स्त्री (अनु) शिशु, रदित-रदनं,
*ररुकार ।

—करना, वि अ, मंद मंद दद (अ प स) ।
रु, सं पु (षा) सुर्म, वदनं (२ इ) उपरि
अध, माग ।

—स्याह, वि (का) अपदीर्गितम्, वञ्चित ।

—स्याही, सं स्त्री (षा) अप-यशम् (न),
वीरि (स्त्री) ।

रुई, म स्त्री [म रोमन् (न)] (पौडा)
वर्षा म समी, वर्षा मी मिका २ (घूआ)
कार्पा म, तूल ल, पिनु, पिचुन्, पिनु
तूलन् ।

—का गाला, म पु, पिचुपिड न् ।

—दार, वि, कार्पास (-सी स्त्री), कार्पासिक
(-की स्त्री) ।

—दार वर, स पु, वर्षासं, पाल, वादर,
तूलावरन् ।

रुख, वि (स) दे 'रुखा' ।

रुख, स पु (स वृम) पदप, तर ।

रुखा, वि (स रुख) स्निग्धना चिकणना
मसृणना इलङ्गना, शून्य-रहित २ घृत-तैल,
होम रहिन ३ विरस, स्वादहीन ४ शुष्क,
निर्जल, नोरस ५ उदासीन, प्रेमहीन, विरक्त
६ कठोर परुष ७ विषम मतोलन ।

—सूला, वि, रुक्षशुष्क (भोजनादि), विरस,
नि स्वाद ।

रुखापन, स पु, दे रुखाई ।

रुठन, स स्त्री (हि रुठना) दे 'रुठना'
स पु ।

रुठना, कि अ (स रुठ) र्प् (दि प से)
अप वि रज (भ्वा उ से) रज(व्य)ति-ने,
रुठ-कुपित रुपिन (वि) भू । स पु, रोष,
अप वि-राग, प्रीति प्रसाद परितोष, अभाव ।

रुठा हुआ, वि, रपित, कुपित, अप-वि-रक्त,
कुतरां ।

रुठ, वि (म) आ-अधि, रुठ, उपर्यासीन
२ प्रचलित, प्रमिद्ध ३ कठिन, कठोर
४ अविभाज्य (संख्या) ५ अशिष्ट, ग्राम्य ।

रुद्धि, स स्त्री (स) प्रया, दे 'रीति' (१) ।
२ ख्याति प्रमिद्धि (स्त्री) ३ आ-अधि,
रोह ४ वृद्धि (स्त्री) ।

रूप, स पु (स न) आकार, आकृति
मूर्ति (स्त्री) सस्थान २ प्रकृति, स्वभाव
३ मुप, सौन्दर्य-रवि (स्त्री)-वर्ण ४ काय,
देह ५ बेश-य ६ दशा ७ लक्षणम् ।

—विगाडना, कि स, विरूप (पु), आकृति
उप् (प्रे) विकृ ।

—रग, स पु (स न) वर्णासारम् ।

—रेखा, सं स्त्री, दे 'रूप' (१) ।

—भरना या बनाना, मु, वेप ग्रह (क् प
से), रूपं धृ (भ्वा प अ, तु) ।

रूपक, म पु (सं न) नाटक २ अथाकार
भेद (काव्य) । सं पु, दे 'रपया' ।

रूपवती, वि (स) मुरूपिणी, बरवर्णनी ।

रूपवान्, वि (स-वद) सुदर, सुरूप, रूप
शान्ति ।

रूपा, स पु (सं रूप्य) रजन, श्वेतं, शुभ-
मिन्, दे 'चौदी' ।

रूनी, वि (स-विन्) रूपान्वित, रूपधारिन्
२ तुल्य, समान ।

रूपोपजीविनी, स स्त्री (स.) वेरया,
वारागना ।

रूपोपनीवी, स पु (स-विन्) दे 'बहु-
रूपिया' ।

रूपोश, वि (फा) (दडभयाद्) पलायिन
गुप्त-गूढ प्रच्छन्न ।

रूपोशी, स स्त्री (फा) (दडदिभयाद्)
गुप्ति (स्त्री), अदातवास, प्रच्छन्नना ।

रूप्यक, स पु (स न) दे 'रपया' ।

रुवरू, कि. वि (फा) अमि स, मुख-मुखे,
पुर, पुरत (सब अव्य) ।

रूमाल, स पु (फा) वरक, कर, वस्त्र पू
(पु), कपट ।

—पर रूमाल भिगोना, मु, अत्यधिक रुद्
(अ प से), अश्रुधारा प्रवह (प्रे),
वाष्पवर्ष कृ ।

रूल, म. पु (अ) नियम, विधि २ पवरेखा
३ रेखादड ।

—दार, वि (अ+फा) रेखाकित, सरेख
(पत्रादि) ।

रूलर, स पु (अ) रेखादड २ प्रमाण-
पट्टिका ३ शासक ।

रूम, स पु (फा) रूम, देशविशेष ।

रूसी, स पु (फा) रूसवाग्निन् । सं स्त्री,
रूसभाषा ।

रुह, सं स्त्री (अ) जीव, आत्मन् (पुं)
२ तत्त्वं, सार-रन् ।

—केवडा, स स्त्री, केतकीमार ।

—गुलान, स स्त्री, जपा, तत्त्वं-सार ।

रेंक, म स्त्री (हि रेंकना) रेंकार, सर-
गर्भ, नाद, वि(ची)कार, हेप पापितम् ।

रेंकना, कि अ (अनु) आरट् (भ्वा प से),

रेंक, गीतक, हेप-हेप (भ्वा आ से)
२ पर्यनै (भ्वा प अ) ।

रेंगटा, स पु (हि रेंकना) गर्दभार्जक
राममशावक ।
रेंगना, कि अ (स रिगण) रिग्- (भ्वा प से)
सप् (भ्वा प अ) वरसा गम् २ निभूत
शने अनिमद चल (भ्वा प से)-सप् । स पु,
रिगण, सर्पण, वरमा गमन, शने चलनम् ।
रेंगनेवाला, म पु, उरोगामिन्, सापम् ।
रेंट-टा, स पु (देश) मिषाण, सिद्धान्त,
नासामलम् ।
रेंट, स पु (स परट) अल्बक, हस्तपर्ण ।
रेंदी, स स्त्री (हि रेंट) ऐरवदीजम् ।
—का मेल, स पु, परटतैलम् ।
रेंदी, स स्त्री (देश) छुद्ररा (उँ) वृज २ छुद्र
तरजु- (प रेंदी) ।
रें, स स्त्री (अनु) दे हूँ हूँ ।
रे, अव्य (स) अरे, अवि, भो (सव अव्य) ।
रे, स पु (स षषभ) ऋषमस्वर (सगीत) ।
रेग्, स स्त्री (स रेखा) दे 'रेपा' २ चिह्न
३ संख्या, गणना ४ नवदशम् (न), दश
शब्दे ।
रेखाश, स पु (स) द्राविशाश ।
रेखा, म स्त्री (सं) रेपा, ऐरग, दण्डकार
लिपि (स्त्री) २ चिह्न, अक ३ गणना,
सख्या ४ आकार ५ पाणिनादादिरेखा
(सामुद्रिक) ६ होरकदोषभेद ७ भाग्यम् ।
—गणित, म पुं (स न) भूज्या, मिति
(स्त्री) ।
बर्म—, सं स्त्री (सं) भाग्यलेख, देवम् ।
रेगिस्तान, स पु (फा) मरु, मरु, स्थल
भूमि (स्त्री), विदल, धनन् (पु), ऊपर-रम् ।
रेचक, वि (स) वि, रेचक रेचन, दे 'दस्तावट' ।
रेचन, सं पु (सं न) वि, रेक, प्रकटन,
रेचना, विरेचन, उदरदोषनम् । स पु,
मारक वि, रेचन रेचनम् ।
रेंगा, स पु (फा) एव, ऐश, अनु, वण ।
रेनीमेंट, स स्त्री (अं) से-य, दर्ल-गुल्मम् ।
रेट, म पु (अं) अर्थ, मूल्यम् ।
रेडियम, सं पु (अं) रेडियम, धातुभेद ।
२ तपानु (न) ।
रेणु सं स्त्री (म पु) पाणु-मु, धूनी-
(स्त्री) २ बाणु, मित्रा ३ वण-गिरा ।
—गणित, वि (सं) धूनिधूमरित २ गणम् ।

रेणुका, स स्त्री (स) दे 'रेणु' १, २, ३
जमदग्निपत्नी, परशुरामपत्नी ।
रेत, स पु [स तस (न)] वीय २ पाद
३ जलम् ।
रेत, स स्त्री (स रेतना) बालुका, मित्रता,
सिका, शीतला, मझा, मूझा ।
रेतना, कि स (हि रेत) ब्रधन्या धृप्
(भ्वा प से), लोहमार्जन्त्या इक्षणीक
२ ब्रधन्यादिभि शनै शनै वृत् (लु प से) ।
स पु, लोहमार्जन्त्या पर्वण इक्षणीकरण
कर्तन द्वेदनम् ।
रेतल-स्त्री, वि, दे 'रेतीला' ।
रेता, सं पु (हि रेत) दे 'रेत' २ धूली लि
(स्त्री) ३ सिकतिल्लयलम् ।
रेतिया, स पु (हि रेतना) (लोहमार्जन्त्या)
पर्वक ।
रेती, स स्त्री (हि रेतना) लोहमार्जनी,
ब्रधन-स्त्री ।
रेती, स स्त्री (हि रेत) पुलिन, सैन्य
२ सति-मध्ये सिकतिल्लयलम् ।
रेतीला, वि (हि रेत) सिगिल, सैन्य,
बालुका मित्रता मय-युत ।
रेफ, स पुं (स) रवर्ण, रकार (र) २ वर्णा
न्तरमूर्धन्थो रकार (उ, र्ध) ।
रेल्, स स्त्री (अं) लोहपथभाग ।
—की लाइन, स स्त्री, लोह, पथ-साएणी
माग ।
—गाड़ी, स स्त्री, वापशकटी ।
रेल्, सं स्त्री (हि रेलना) धारा, प्रवाह
२ आधिक्य, बाहुल्यम् ।
—पेल, सं स्त्री जनौष, जनसंमद २ बाहुल्य
रेलना, कि स (देश) दे 'थकेलना' ।
रेलवे, सं स्त्री (अं) लोहपथ २ लोहपथ
विभाग ।
रेला, सं पु (देश) दे 'थका' २ दे 'थाका'
३ प्रवाह, आप्लाव ४ पक्ति, राशि (स्त्री) ।
रेवद, सं पु (फा) पीतमूली, गंधिनी ।
रेवद, सं पुं (देश) (अन्नमेवादीना) मूर्ध,
वृद्ध, ममन, वृद्ध, षण्ट-रम् ।
रेवड़ी, म स्त्री (देश) म्युनि-गुणी ।
रेवणी, म स्त्री (सं) नक्षत्रादीना २ चन्द्रक
पत्नी, रेवणपुत्री ३ गौ (म्हा) ४ दुर्गा ।
—रमण, म पुं (सं) बल, देव-राम ।

रेवा, म स्त्री (स) नर्मदा २ वामरत्नी, रवि (स्त्री) ३ दुर्गा ।
 रेश, स स्त्री (क) दण्डिका, कूर्ब, कुर्बन् ।
 —सफेद, स पु (क) बृह, स्थविर, तरु ।
 रेशम, स पु (का) कौशेय, कौश, ज-यत्र, कौश, पट्ट-रुन् ।
 —का कौडा, स पु, तनु पट्ट, कौश ।
 रेशमी, वि (का) कौश, कौशिक, कौशेय, पट्ट, कौश— ।
 —कपडा, स पु, कौशिक, चीन-पट्ट, अशुक, दुकूल, कौशावरम् ।
 रेशा, स पु (का) (कन्वल्कलादीना) गुा, तनु, सत्र २ नदी, दे 'रग' ३ दे 'लुकाम' ।
 रेरोदार, वि (का) सूत्र-तनु, भव-युक्त ।
 रेहन, स पु (का) दे 'गिरवी' ।
 रेदास, स पु (स रावदास) मल्लविरोध, श्रीराम-नंदशिष्यविरोध २ चर्मकर ।
 रैन, स स्त्री (स रवनी) दे 'रान' ।
 रैयत, स स्त्री (अ) प्रज, दे ।
 रोआ, स पु, दे 'रौ' ।
 रोगा, स पु [स रोमन् (न)] लोमन् (न), आ चर्मन्त्वा, अ, तनुरहन ।
 रोगदे खडे होना, सु, रोमाच-रोमहर्ष-रोमो दगम वन् (दि आ से), दे 'रोमाच' ।
 रोक, स स्त्री (स रोधक) विराम, निरति (स्त्री), र्णविच्छेद, अवरोध २ नि प्रति-वेष, प्रत्याख्यान ३ बाध-धा, विन, प्रतिवध ४ वरण, वृत्ति (स्त्री) ।
 —येक, स स्त्री, दे 'रोक' (२३) ।
 दे—गेक, कि वि, निरंतराय, निर्विन्न, निराध (सब अर्थ) ।
 रोक, स पुं (स) प्रस्तुत-दकै-व्यं-वहार २ टक, नाक, मुद्रा, दे 'नकर' ३ दीप्ति (स्त्री) ।
 रोकड, स स्त्री (स रोक) दे 'रोक' (२) २ मूलद्रव्य, दे 'पूजी' ।
 —वही, स स्त्री (दि रोकड) मूलद्रव्य आयुर्वेद, वैद्यन-प्रिका ।
 रोकडिया, स पु (दि राक + प्रशया), ल-रथन-मूलद्रव्य, वैद्यक-प्रस्तौ ।
 रोकना, कि स, (दि रोक) अवनि-प्रति-म, र्ध् (र उ अ), अवन् (प्रे), प्रतिवध (क प अ), वि, सन् (क प से) ।

० नि-विनि वृ (प्रे), नि-प्रति-विध् (स्वा प से), निवृध् (प्रे) ३ वशीक, निग्रह् (क प मे), निवन् (स्वा प अ) ४ प्रतिवध (दि आ अ), इन्धुमेव्य प्रति वध-प्रतिवध । स पु, अवनि-प्रति-स, रोध रोधन, निवरण, नियमनं, निग्रह-हर्ण, प्रति योधन, नि-प्रति-वेष-वेषनम् ।
 रोकनेवाला, स पु, अवनि, रोधक, निवा रक, प्रतिवेषक, प्रतियोध ३ ।
 रोकडा हुआ, वि, अवनि, रुद, निवारित, निवृ हीन ३ ।
 रोग, म पु (स) र्न् (स्त्री), रज, व्याधि, गद, अ(आ)म, आनय, उपनय, मृत्युमृत्य ।
 —कारक, वि (स) व्याधिजनक ।
 —ग्रस्त, वि (म) रोगाक्रान्त, दे 'रोगी' ।
 —नादाक, वि (स) रोग-गद, हारिन्-हर, स्व-स्थ्यकर ।
 —निदान, स पु (स न) रोग, नि-नि-निरूपणम् ।
 —रान, म पु (स) रान, न-इन् (पु) -यक्ष ।
 —रक्षण, स पु (स न) व्याधि-विद्व २ रोग निदानम् ।
 —रुगाना, कि अ, रोगे धन्-उपसृज्-वध् (वर्न) ।
 रोगान, स पु (का रोगान) तैज, दे 'शेन' २ कुकुम, रग, राग, वर्ण-सं-रिका ।
 —करना, कि स, रज् (प्रे), वर्न् (पु), २ कुकुमेन लिप (तु प अ) ।
 —जर्द, स पु (का) धृव, अन्वन् ।
 रोगी, वि (स) व्याधिन्, रान, रोग-युक्त पंडित-आर्त-अक्रान्त, अनुप, अन्दाज, अन्ध निन, मामर, आमदाविन्, मद, विह्व । [रोगिणी (स्त्री) = रुगा, व्याधिगा] ।
 रोकक, वि (स) अहादक, मनोरञ्जक २ दे 'रुचिकर' (२) ।
 रोचन, वि (स) रोचक, रुचिकर २ दीप्ति मय, उषिन् २ ह्य, प्रिय ।
 रोचना, म स्त्री (स) रोचनद, रत्नकन २ र-रोचना ३ वलनरी, सुन्दरी ४ दे 'वदन्-वन' ।
 रोन, म पु (ना) दिन, दिवन्, अहन् (न) ।
 जि ति, दिने दिने, प्रि अनु-दिन-अहन् ।

—वरोज्ज, }
—मर्रो, } कि वि, दे, 'रोज' कि वि ।
—रोज्ज, }

रोजगार, स पु (का) आ-उप-जीविका, वृत्ति (स्त्री), व्यवसाय २ वाणिज्य, वृत्तिकर्मन् (न) ।

रोजनामचा, स पु (का) दे 'दायरी' २ दैनिकाव्यव्ययविका, दैनिकलेख ।

रोज्जा, स पु (का) प्रव, उपवाम, उपोषण पितम् (इस्लाम) ।

रोजाना, कि वि (का) प्रतिदिन २ सवदा ।
रोज्जी, स स्त्री (का) दैनिकात्र, प्रात्याहिक भोजन २ आ-उप-जीविका, व्यवसाय ।

रोज्जीना, वि (का) प्रात्याहिक, दैनिक । स पु, प्रात्याहिक-दैनिक, वृत्ति भूति (स्त्री)-वेतनम् ।

रोट, स पु (हिं रोटी) इहव-स्थूल, रोटि(ट)का २ मिहस्थूलरोटिका ।

रोटी, सं स्त्री (स रोटीका) रोटीका २ भोजन, सिद्धात्रम् ।

—कपडा, मु, भोजन-वस्त्र, निर्वाहसामग्री २ प्रासाच्छादनमात्रम् ।

—दाल, मु, सामान्य-साधारण, भोजन, अन्नोदकमात्रम् ।

—दाल चलना, मु, जीवन निर्वाह, सामान्य निर्वाह भू ।

बिन्दी के यहाँ—तोड़ना, मु, पराधेन जीव (भवा प से), परार्पित मुन् (र आ अ) ।

रोड़ा, स पु (स लोट-ष्ट) लोटक, लोट्ट पापाण प्रस्तर दृष्टका, खण्ड दाबल ।

—अटकाना, था डालना, मु, बाध् (भवा अ से), अव-उप नि प्रति स, रध् (र प अ), प्रतिबध (रू प अ) ।

रोदन, स पु (सं न) दे 'रदन' ।

रोधम्, सं पुं (स) अवरोध दे 'रोक' २ दमनम् ।

रोना, कि अ (स रोदन) रद (अ प से), अश्रुणि पद (त्रे) विमुच् (पु प अ), आ-उप (भवा प से) क्रुन् (भवा प अ), मुच् (भवा प से) २ दे 'रुटना' ३ अनुत् (दि आ अ), अनुशा (अ आ स) पचात्प क । नि स, अनुत्-रिन्

(भवा प से), परिदेव् (भवा आ से) । स पु, दे 'रदन' ।

रोनी, वि स्त्री (हिं रोना) विषण्णा, प्रोकमय ।

रोनीवाला, स पु, रोदक, अश्रुमोचक, आक दक २ अनुरोचक, परिदेवक, विलापक ।

रोपना, कि स (स रोपण) दे 'बोना' ।

रोष, स पु (अ रुअव) आतक, तेजस्(न), प्रताप, प्रभाव, प्रावलयम् ।

—दाब, सं पुं (अ) दे 'रोव' ।

—दार, वि (अ + का) तेजस्विन्, प्रतापिन, प्रभावशालिन् ।

—जमाना, मु, स्वप्रभाव जन् (त्रे), स्वगौरव प्रतिष्ठा (त्रे), निजतेजसा अभिभू ।

—जें आना, मु, परतेजसा अभिभू (कर्म), परप्रतापेन नम् (भवा प अ) ।

रोबीला, (अ) दे 'रोवदार' ।

रोमथ, स पु (सं) उदरार्थं चर्वण, दे- 'जुगाली' ।

रोम, स पु [स रोमन् (न)] दे 'रोंगठा' ।

—रूप, स पु (स पु न) लोम-विवर छिद्र, रोम-द्वार-गर्त ।

—राजी, स स्त्री (स) रो(लो)मलता, रोमा स्त्री, रोमादलीलि (स्त्री) ।

—हर्ष, स पु (सं) रोमाच ।

—हर्षण, स पु (स न) रोम-उद्गम-उद्भेद हर्ष । वि (स) रोमाचकर, भीषण ।

—रोम मे, मु, सर्वदेहे, सपूर्णशरीरे ।

—रोम से, मु, सर्वात्मना, सामितिदेशम् ।

रोम, सं पुं (सं रोमक) रोम, पत्तन-नगर, रोमन् ।

—वासी, स पु (सं सिन) रोमका (प्राय बहु) ।

रोमन, स पु (अ) रोम, निवाग्नि-वाल्लव्य । वि रोम, सम्बन्धिन, विषयक ।

—रैयलिक, स पु, तिरतमग्रशयविशेष ।

रोमाच, सं पुं (स) रोम-उद्गम-उद्भेद-विकार विजिया हर्ष हर्षण, पुलक, बंटक न्, उद्धर्षण, उन्नमन, उत्खणनम् ।

रोमाचित, वि (सं) दृष्टरो(लो)मन्, पुष्किल, बटगिन, सपुलक ।

—करना, कि स, बंटकयति पुष्कयति-रोमा चयति (ना धा) ।

—होना, वि अ, पुष्कित-बटगिन (वि) ज् (दि आ से) ।

रोया, स पु, दे 'रोंगटा' तथा 'रोम' (२) ।
 रोहर, सं पु (अ) (१२) समीकरण-पिंडी
 करण, यत्र ३ दे 'बेलना' ।
 रोला^१, स पु (सं रावण) कोलाहल, कलकल
 तुमुल, महा, शब्द स्वन ध्वन-शोष-रव
 राव, निनाद, निस्वन, उत्क्रोश, उद्धोष
 २ तुमुलपुद्गम ।
 —डालना या मचाना, क्रि स, कलकल-
 कोलाहल कृ, वि, रू (अ प ल), उत्क्रुश
 (भ्वा प ल) ।
 रोला^२, सं पुं (स) चतुर्विंशतिमात्रिक
 छन्दस् (न) ।
 रोली, स स्त्री (सं रोचनी >) चूर्णहरिद्रा
 निमित्त तिलकोषयोगि रक्तचूर्णम् ।
 रोशन, वि (फा) प्रकाशित, प्रदीप्त २ भास्वर,
 प्रकाशमान ३ प्रवि, ख्यात ४ प्रकट, व्यक्त ।
 —दान, सं पु (फा) गवाक्ष-छदिवातापनम् ।
 —दिमाग, वि, प्राञ्ज, बुद्धिमत् ।
 रोशनाई, सं स्त्री (फा) दे 'मली' २
 प्रकाश ।
 रोशानी, स स्त्री (फा) प्रकाश, आलोक
 २ दीप ३ दीपमात्रिका ४ शानालोक ।
 रोष, स पु (स) कोप, क्रोध, मन्द्यु ।
 रोहिणी, स स्त्री (स) धेनु (स्त्री), गौ
 (स्त्री) २ तटिद (स्त्री), चपला ३ नक्षत्र
 विशेष ४ बलदेवजननी ।

—पति, स पु (स) चद्र २ वसुदेव ।
 रोहित, वि (स) रक्त, लोहित । सं पु,
 रधिर, रक्त २ रक्त, वर्ण रग (३४) मृग
 मीन, भेद ५ हरिश्चन्द्रपुत्र ।
 रोहू, स स्त्री (स रोहिष) (१-२) मीन
 मृग, भेद ।
 रौंदि(घ)ना, क्रि. स (स मर्दन?) पादाभ्या
 मृद (कृ प से) धुद (र प अ) ।
 रौ, स स्त्री (फा) धार, प्रवाह, मदाक,
 स्रोतस् (न) ।
 रौगन, स पु (फा) दे 'रोगन' ।
 रौजा, स पु (अ) समाधि, चैत्य २
 उद्यानम् ।
 रौद्र, वि (सं) रुद्र, विषयक-संबन्धिन २ भीम,
 भीषण ३ चढ, सरम्भ, कोपान्वित । स पु
 (स) रुद्रोपासक २ कोप ३ रसभेद
 (काव्य) ४ यम ।
 रौनक, स स्त्री (अ) काति-दीप्ति-धुति
 (स्त्री) २ श्री (स्त्री), शोभा, छटा
 ३ जन-शोभ-समुदाय ।
 रौप्य, स पु (स न) रुप्य, रजतम् । वि
 (स) राजत, रजतमय, रजतोयम् ।
 रौरव, वि (स) भीम, धोर २ धूर्त, कापटिक
 ३ कर्मवन्धिन । स पु (स) नरकविशेष ।
 रौला, सं पु, दे 'रोला' ।
 रौशन, वि, दे 'रोशन' ।

ल

ल, देवनागरीवर्णमालाया अष्टाविंशो व्यन्जनवर्ण,
 लकार ।
 लंक, स स्त्री (स लका, दे) ।
 —नाय-नायक प्रति, सं पु (स) रावण,
 दशानन ।
 लका, सं स्त्री (सं) रक्षपुरी, रावणराज
 शानी २ भारतद-निगवनिद्रीपविशेष ।
 —पति, स पु (स) दे 'रावण' ।
 लग^१, स स्त्री, दे 'लग' ।
 लग^२, स पु (स) दे 'लौगडापन' ।
 लौगादा, वि (स लग >) पशु (-गू स्त्री),
 यत्र, शोण, खोड-रू, विकल्गति २ एकपाद
 हीन (मेघ आदि) । स पु, उत्तमाश्रभेद ।
 लौगडाना, क्रि. अ (दि लगडा) खञ्जोल्

खोर-खोड-ल्यू (भ्वा प से), सन्गं चल्
 (भ्वा प से) । स पु, खजन, खोडन-रण
 लनं, लगनं, लग विकल, गति (स्त्री) ।
 लगडापन, स पुं (दि लगडा) स्रजता,
 पशुना, खोड(रल)ना, लग, विकल्गति
 (स्त्री) ।
 लगर, सं पु (फा) लागल, पोतस्तमन
 २ महानम, पाकशाला ३ अनाथ-हरिद,
 भोजन ४ 'ल्योट' ५ लोहमपीस्थूल
 शृखला ६ लवक, लोलक ७ दुष्टधेनुता
 गल्लगुड । वि, भारवध, गुरु २ खल, दुष्ट ।
 —भ्राना, सं पु (फा) *धैव, अनाथभोजन
 शाल ।
 —गाह, स पु (फा) नौकाशय, नौकाश्रय ।

—करना, मु, कुस्मिन् चेष (भ्वा आ से),
बुचेष्टा कृ ।

लगूह, म पु (स लगूहिन) कषि, मकट,
वानर २ कषि-वानर, पुच्छ, लगु(गू)ल
३ श्वेतलोमा कृष्णमुखो वानरमेद ।

—फल, स पु (हि + स) नारिकेल,
लागलिन ।

लगूल, स पु (स न) लगूल, पुच्छं, दे
पुच्छ' ।

लँगोट टा, स पु (म लिंग + हि ओट)
पुगी पदी, वीपीन लिंगावरणम् ।

—वद्, वि, नक्षत्राचारिन्, ऊर्ध्वरेटम् ।

लँगोटिया यार, स पु (हिं फा) सह पाशु
नीतिन् शैशव-बाल्य-मित्र सखि (पु) ।

—म मन्त, मु, दारिद्र्येऽपि प्रतन्न, अकिंचन
त्वेऽपि सतुष्ट ।

लँगोटो, स स्त्री (हिं लँगोट) दे 'कठनी'
२ लु पुटी-वीरीन पन्था ।

लघन, म पुं (स न) उपवास, उपोषण
पित अनाहार, व्रत २ दे 'लौघना' स पु
प्लवन ३ अति, क्रमण-नम नियम मग-उल्ल
घन ४ घोटकाना अनित्वरितगति (स्त्री) ।

लघना, कि स (स लघन) दे 'लौघना' ।

लघ, म पुं (अं) मध्वाह-माध्यन्दिन,
भोजनम् ।

लठ, वि (हिं लठ्ठ) षठ, मूर्ख २ धृष्ट ।

लटूरा, वि (देश) अलागु(गू)ल, त्रिपुच्छ,
लमहीन (जगादि) २ परित्यक्त, निराश्रय ।

लप, स पु (अ लैप) दे 'लालटेन' ।

लपट, वि (सं) लिपट, अभिक, कामिन,
वानुक, विषय-काम, आमक, रतेच्छु, स्मरार्चं,
व्यभिचारिन्, दुराचारिन् ।

लपटना, सं स्त्री (मं , व्यभिचारी, विषया
सक्ति (स्त्री), कामुकता, अभिन्ता, लंपव्यं,
दुराचार ।

लप, स पु (सं) लपक (= अफूट) । वि
(स) दे 'लवा' ।

—कणं, म पु (स) अत्र २ तत्र ३ तत्र
४ दाम ५ राश्रम ६ श्येन । वि (सं)
दीन श्रवण ।

—श्रीय, म पुं (म) उष्ट्र, क्रमेलक ।

लवणद्वारा, वि (म लव + ताल + धर्ग)
दालानुप, अत्युध, अत्युच्छ्रित ।

लवा, वि (सं लव) दीर्घ, दीर्घ आकार परि
माण, आयत, आयामवत् २ उच्च, प्रासु, मुग,
उच्छ्रित ३ विशाल, महत्, बहु, अधिक ।

—करना, कि स, दीर्घो-लवी-आयमी वितनी
कृ आयम् (भ्वा उ अ), विस्तृ प्रष्ट (प्रे)
प्र-वि, नन् (त उ से) । मु, प्रस्था (प्रे)
२ भूमी अवपत् (प्रे) ।

—चौडा, वि, विशाल, विपुल, महत्, बृहत्,
लंबोद, आयतविस्तृत ।

—होना, कि अ, दीर्घाभू, विस्तृ प्रतन
आयम् (कर्म) । मु, प्रस्था (भ्वा आ अ),
प्रदा (अ प अ) ।

लवाड़े, सं स्त्री (हिं लवा) दीर्घान्त्व,
दीर्घो-लवी, द्राघिमत् (पु) आयाम, आय
मन, आयति (स्त्री) लवना, आनाह
२ उच्यता ।

—चौडाई, स स्त्री, आनाहपरि(री)णाश्री,
दीर्घान्त्वपुत्रे आयामविस्तारी (सब दि)
२ मन, प्रपरि-माणम् ।

लवान, स स्त्री (हिं लवा) दे 'लवार' ।

लबी, वि स्त्री (हिं लवा) दीर्घा, आयता,
आयामवती ।

—तानना, मु, निश्चिन्नी (अ प से) ।

—सास भरना, मु, दीर्घे न शस् (अ प से) ।

लवोतरा, वि (हिं लवा) दीर्घचतुष्टय
अड, आकार-आकृति ।

लवोदर, वि (स) लुटिक भल्लत । स पु
(स) गणेश २ भौदरिक, घस्मर ।

लकड़वाग्या, सं पु (हिं लकड़ + वाय) रंदा
वृक, • लयुदव्याघ्र ।

लकड़फोड़, स पुं (हिं लकड़ + फोड़ना)
दावांगट, काष्ठवृट ।

लकड़हारा, स पुं (हिं लकड़ + हारा)
वाघक, वाघउद, • लयुडहार ।

लकड़ा, स पु (सं लकुट) लयुड-र-र,
स्फु-बृहत्, नाठ-दार (न) ।

लकड़ी, सं स्त्री (हिं लकड़ा) वाघ, दाह
(न) २ इपतं, प्य, दट, पटि (स्त्री),
वेध ३ दे 'गतता' ।

—देना, मु, अत्येष्टि कृ, दर्व दह् (भ्वा प अ) ।

लकड़, सं पु (अ) उपाधि, उपनामन् (न) ।

लकड़क, सं पुं (अ) लवणीया न्यगामेद,
• लयुक्व ।

लक्ष्मी, सं पु (अ) आदत्तम् ।
 लक्ष्मी, सं स्त्री (स लेखा) रेखा-रत्ना, दंड का
 रत्नि (स्त्री) २ पक्ति-श्रेणि आलि (स्त्री) ।
 —का फकीर, मु, विवेकशाल्य, अध, अनुगा
 मित्-अनुयायिन् अनुवर्तिन्, परपरानुमारिन् ।
 —र चलना, } मु, अधवन् अनुगम् (भ्वा
 —पोटना, } प अ)-अनुया (अ प अ) ।
 लक्ष्म, सं पु (स) लक्ष्म, यष्टि (स्त्री),
 दम् ।

लक्ष्म, सं पुं, दे 'लक्ष्मा' ।

लक्ष्मा, सं पुं (अ) व्यननपुच्छ पारावत,
 ज्वांतभेद ।

लक्ष्म, रि तथा सं पु (स) दे लक्ष्म ।

लक्ष्मक, वि (म) प्रवटयिषु, प्रनाशक । म
 प (म) लक्ष्यार्थप्रनाशक शब्द । (म
 न) दे 'लक्ष्म' ।

लक्षण, सं पु (स न) अक, चिह्न, लिङ्ग,
 लक्षण, व्यञ्जन, अभिजातम् । २ परिभाषा,
 परिच्छेद, निर्देश ३ विशिष्टलिङ्ग, विशेष
 ४ चरित, आचार ।

लक्षणा, सं स्त्री (म) शब्दशक्तिभेद, शक्य
 संबन्ध (मा) २ सारमी ३ हसी ।

लक्षित, वि (स) निर्दिष्ट, शपित २ दृष्ट,
 बोधित ३ अनुमित, तर्कित ४ चिह्नित,
 अज्ञित ।

लक्ष्मण, सं पु (सं) रामानुज, सौमित्रि
 २ दुर्वाधनपुत्रविशेष ३ सारस ।

लक्ष्मी, सं स्त्री (स) श्री, यमला, पद्मा,
 पद्मान्या, हरि, प्रिया-बल्लभा, इदिरा, मा,
 रमा, क्षीराब्धितनया, भार्गवी, लोकराट्ट (स्त्री)
 २ धन, मपद (स्त्री) ३ छवि (स्त्री),
 शोभा ४ दुर्गा ५ मीना ६ वीरजारी
 ७ गृहस्वामिनी ।

—नारायण, सं पु (स) लक्ष्मीजनानन्द
 शालग्रामभेद ।

—पति, सं पुं (सं) विष्णु २ श्रीकृष्ण
 ३ नृप ।

लक्ष्मीदा, सं पु (म) विष्णु २ जाग्रदृष्ट
 ३ धनाढ्य ।

लक्ष्य, सं पुं (सं न) शक्य, लभ, वेध्य,
 वेध, प्रतिकाय २ निदा-आधेप-उपलभ,
 विषय ३ आशय, उद्देश, अभि, इष्ट,

मनोरथ, इप्सित ४ लक्ष्यार्थ । वि, दर्शनीय,
 अवलोचनीय ।

—वेधी, सं पु (सं धिन्) वेध्यवेधक ।

लक्ष्मपती, सं पु (स लक्ष्मपति) लक्ष्म, श्वर-
 अधीश २ धनिक धनाढ्य ।

लक्ष्मोरा, सं पु (हि लाल) लाक्षा-जतु, वार
 २ हिंदूपजातिभेद ३ कुक्कुभ, लेपक-लेपिन् ।

लक्ष्म, कि रि (स लक्ष्म) दे, 'तक',
 २ समीपपे । अन्व, सह, सार्द्ध २ दे 'लक्ष्म' ।

—भग, त्रि वि प्राय, प्रायश, प्रायेण, प्राय,
 कल्प, उप, आसन्न- ।

लगना, सं स्त्री (हि लाना) आमग, प्रीति
 , स्त्री), आ प्र सक्ति (स्त्री), अभिनिवेश,
 दे 'धुन' २ प्रेमन् (पु न), अनुराग,
 स्नेह ३ दे 'लगना' सं पु ।

लगन, सं पु (स लग्न) राज्ञीनामुदय
 (ज्यो) २ (विवाहस्य) शुभमुहूर्त-तन्म ।

—कुन्डली सं स्त्री (सं लग्नकुन्डली)
 जन्मकुन्डली ।

—लगाना, कि अ, अनुरज् (कर्म), स्निह
 (दि प मे) ।

लगाना, कि अ (स लगन) स, युज् (कर्म),
 लग (भ्वा प स), सहन्-मथा (कम),

मंशिल्य (दि प अ) संपृच्
 मस्त (कम) २ आरोप-मूल् (कर्म)

३ निवेश-मथाप् (कम) ४ आहन्-ताड
 प्रह्व-व्यध् (कम) ५ स्पृश-समालभ परामृश

(कर्म) ६ विन्यस-व्यवस्थाप-व्यह् (कर्म)

७ इदा-लभ-प्रती (कर्म), प्रति, भा (अ
 प अ) ८ संवन्ध (कर्म), सम्बन्ध शातित्व

वृत् (भ्वा आ से) ९ स्वाद-रस था
 १० अनुरज (कर्म), स्निह् (दि प मे)

११ कर शुन्य-नियोञ् (कर्म) १२ मूल्य
 अपेक्ष (भ्वा आ से), मूल्यकेन लभ (कम)

१३ व्याप् (तु आ अ), मग्न-व्यापृत
 (वि) वृत् १४ पण् (कर्म) १५ पूतीभू,

तृ (दि प से), पूय (भ्वा आ से) ।
 म प तथा भाव, लगन, स, योग, सधान,

म श्लेष श्लेषण, सपक, संसृष्टि (स्त्री),
 आरोपण, मूलन, निवेश, स्थापन, आघात,

प्रहार, स्पर्श, समालम्ब, वि-यान, व्यूह,
 व्यवस्थिति, प्रतीति (स्त्री), भान, व्यापृति
 आमक्ति (स्त्री) १६ पूतीभाव, पूयन इ ।

लगा हुआ, वि, स, युक्त, लीन लग्न सहन, सृष्ट, ससृष्ट, आरोपित निवेशित सृष्ट, विन्यस्त, अनरक्त, व्यापृत मग्न इ ।

लगवाना, कि प्रे, व 'लगाना' के प्रे रूप ।
 लगातार, कि वि (हि लगाना + तार) सतत, अविच्छिन्न, दे 'निरतर' ।

लगान, स पु (हि लगाना) भू भूमि, कर, शत्यशुल्क, राजस्वम् ।

लगाना, कि स, व 'लगना' के स रूप ।
 लगाम, स स्त्री (का) कविक का, खलीन न, व वि(वी)थ, कवी, पचागी २ वत्सा, रदिन, अवक्षेपणी, कुशा ।

—चदाना या देना, मु, सयम्(स्वा प अ), निमद्(क प से), वशीक, निद्(प्रे) ।
 लगालगी, सं स्त्री (हि लगाना) अनुराग, प्रेमम् (पु न) २ संबध, सपकं, ससर्प, सगति (स्त्री) ।

लगाव, स पु (हि लगाना) दे 'लगालगी'
 लगावट म स्त्री } १२ ।

लगुड-र-ल, स पु (स) दृढ यष्टि (स्त्री) २ लोहमयोऽम्भेद ।

लगा, स पु (सं लग्न >) लव, वेणु वश २ नौदड ३ आकाषणी ।

लगी, सं स्त्री (हि लग्गा) भीनद २ ४ दे 'लगा' १२ ।

लगन, स (पु स न) 'लगन' (१२) ।
 लगन, वि (स) सयुक्त, सदिल्ल, मलगिन, सर्वद २ आसक्त, मग्न, व्याप्त, पर, परायेण, निष्ठ ३ लम्बित ।

लघु, वि (सं) अल्प ईषद, भार, सु सुख, राश २ अणु, महत्त्व-वृद्धत्व, शय्य, क्षुद्र, तनु भ्रम्य, आकार-आकृति-काय ३ निस्तर, निस्मार ४ अल्प, स्नोक (मात्रा) ५. अथम, नीच ६ दुर्बल, निबल ६ बनीयम, यवीयस ।

—चेना, वि (सं नस) तुच्छ, क्षुद्रमति, क्षुद्राद्य ।

—शंका, सं स्त्री (सं) मूर्धोत्पण, मेहनम् ।
 लघुना, म स्त्री (स) लघुत्व, लघवं, लघिमन् (पु), अन्धभारवत्त्वं २ अणुना, तनुना, क्षुद्रता ३ अथमता ४ कनीयस्त्व ५ अल्पता ।
 लचक, म स्त्री (हि लचकना) शिक्षिन्धा परनास्त्वं, नम्यता, कुर्बन् वना २ द 'लचकना' सं पु ।

—दार, वि (हि + का) नम्य कुचनीय, नमन कुचन शील स्थितिस्थापक, प्रहृतिप्रापक ।

लचकना, कि अ (हि लच अनु) अव, नम् (स्वा प अ), वक्त्रीभू । स पु तथा भाव, अव नमन नति नाम, वक्त्रीभाव ।

लचकाना, कि स, व 'लचकना' के प्रे रूप ।

लचकीला, } वि (हि लचक) दे 'लचकदार' ।
 लचलचा, }

लचना, कि अ, दे 'लचकना' ।
 लचाना, कि स व 'लचकना' के प्रे रूप ।

लचीला, वि, दे 'लचकदार' ।
 लच्छा, स पु (स लचगुच्छ >) स्वस्तरक,

गुणगुच्छ, तनुपची २ सूत्राकार, पट्टिका कारा वा तनुदीर्घछटा ३ सूक्ष्मतनु रूप पाणिपादभूषणभेद ४ मिष्टान्नभेद ।

लच्छेदार वि (हि + का) गुच्छ-मूल पट्टिका, आकार २ श्रुतिमधुर, सुश्राव्य, सुगन्धव ।

लजाना, कि अ, दे 'लजित होना' ।
 लजालू, स पु, दे 'लाजवती' ।

लज्जीज, वि (अ) सुत्वाड, सुरस, स्वादिष्ट (भक्ष्य) ।

लनीला, वि (हि लाज) दे 'लजाशील' ।
 लज्जत, म स्त्री (अ) आ स्वाद, रम ।

—दार, वि (अ + का) दे 'लज्जीर' ।
 लजा, स स्त्री (सं प्रोड-टा हा (स्त्री)]

प्रपा, मरुथं, शालीनता, लज्या २ मान, प्रतिष्ठा ।

—कर, वि (स) प्रपा-लजा प्रद-अनक आवद, गर्हित ।

—शील, वि (सं) हीमव शालीन, लज्जाल, सलज्ज, विनीत, लज्जावद लज्जान्वित ।

—हीन, वि (सं) निर्लज्ज, निज्जोड, पृष्ट, निरुप, अग्रथप, लज्जा प्रपा, शूय ।

लज्जालु, वि (सं) दे 'लाजवती' २ दे 'लज्जाशील' ।

लजित, वि (सं) हीन, हीन, ईर्ष्यान्वित, प्रतिन, प्रपा-लज्जा-अन्वित ।

—करना, कि म, लज्जवत् प्रो-ही (प्रे) ।
 —होना, कि अ, लज्ज (तु आ से), प्र (स्वा आ से), प्रोड (नि प से), ही (तु प अ) ।

लज्ज, सं स्त्री (सं लट्वा) मल्ल, चूर्णानुत्प,

कुरल २ वेशपाश, कनक ३ नग, सदा, सशिल्पवेद्या ।

—रारी, म पु, नटिन, नरिण (निपु) ।

लृ, २ म स्त्री (हि लृप) चाला, अग्निशिखा ।

लृप्, स स्त्री (हि लृकना) दे लृफना

स पु । २ कुचनीयता, नम्यता ३ आवेश,

गवेग ४ हाव, विभ्रम, मनोहरो (रा)

आभंगि (स्त्री) ।

—गल, स स्त्री सविभ्रमगति (स्त्री) ।

लृकन, स पु (हि लृकना) दे लृकना

म पु २ हाव, विभ्रम ३ प्रालव

ल्लेख ४ नामिकाभूषणभेद ५ उणीपलविनो

रत्नगुच्छ ।

लृकना, क्रि अ (स लृन >) न प्रलम्ब

(न्ना आ मे), उदबध (कम) २ शोला

यन (ना था) । प्रौर (भ्वा प मे)

३ विलंबं कृ, विरागतिने (ना था),

विलम्ब (भ्वा आ मे) । म पु तथा

भार, अवप्र, लम्ब लम्बन उदबधन

२ प्रैक्षण, दोलन ३ विलम्बन, कालक्षेप ।

लृफा, म पु (हि लृक) गति (स्त्री),

चार २ हावभावो, विभ्रम ३ सविलासं

मापन ४ वागाधार (= तत्रिया क्लाम)

५ सक्षिप्त, योग-उपचार-औषध ६ चालद

गीत ७ मायायातु, यष्टि (स्त्री) ८ अभि

चारमन ।

लृकाना, क्रि स, व लृकना' के प्रे रूप ।

लृकाव, स पु, दे 'लृकना' स पु ।

लृकाली, वि (हि लृक) दे 'लृकरदार' ।

लृकपटा, वि (हि लृकपटाना) प्रमत्त

विचल्य (शान्त), अस्थिरगतिक २ 'शथिल',

अपरिच्छिन, अस्तन्वस्त, अव्यस्त ३ अस्पष्ट,

शुद्ध (शुद्ध) ४ कामहीन, असंपन्न

५ विन्न, शान, ग्लान, अशक्त ६ उदपेप,

गाढ-धन ७ कलियुत (वलादि) ।

लृकपटाना, क्रि अ (स लृ + पट) प्रस्वल्

(भ्वा प मे) २ पतत् चल (भ्वा प से)

३ पपत्तया गम् ४ वेप (भ्वा आ मे)

५ अनुरत (कम) । स पु, प्रमत्त, दूषि

ताति (स्त्री), कपन, अनुराग ।

लृग, वि (स लृट्) लृप २ नीय ३ तुच्छ

४ पतिन ५ दुष्ट ।

लृपापटी, म स्त्री (हि लृपटाना) दे 'लृट्

पटाना' स पु २ बलह, कलि ।

लृटी, म स्त्री (हि लृटा) १२ अमद

अमत्य, बार्ता ३ भिक्षा(क्षु)को ४ वैश्या

५ पतीति (स्त्री) ।

लृट्टी, म स्त्री (हि लृट्) दे 'लृट्' (१) ।

—उतरवाना, चूटावरणसम्भार क (प्रे) ।

लृटोरा, स पु (श्वा) कलिंग, धूम्राट, उगभेद ।

लृट्टू, स पु (म लृठन >) भ्रमरक क,

२ लवक लवमीसकम् ।

—होना मु अत्यधिक स्निह् (दि प से),

गाढ अनुरत (कर्म) ।

लृट्ट, स पु [मं लृगुट-यष्टि (स्त्री)] स्थूल

वृहद्-दट-यष्टि लुकुट, लगुड ।

—बाज, वि (हि + का) यष्टियोधयित्,

दडपर, दडिक ।

—बाजी, म स्त्री (हि + का) दंडा, डि

(अन्व), यष्टियुद्धन ।

—मार, वि (हि) दे 'लृट्टवाज' २ कड,

कठोर (वचन) ।

—मारना, क्रि स, दडेन-यष्टया प्रह (भ्वा

प अ) । मु, परुष मू (अ उ से) ।

पीडे—लिये फिरना, मु., सतत विरुध् (क

उ अ) २ प्रतिकूल आचर (भ्वा प से) ।

लृट्टी, सं पु (हि लृट्) दीर्घकाठ २ तुला,

छटि, रथूणा ३ साक्षिपचगबमितो भूमानदद ।

लृट्टम्—, स पु, दे 'लृट्टनाजी' ।

लृट्टी, सं पु (अ लृगक्लाथ) लंबपट ।

लृठ, स पु, दे 'लृट्ट' ।

लृठालठी, स स्त्री, दे 'लृठवाजी' ।

लृठेत, स पु (हि लृठ) दे 'लृठवाज' ।

लृठत, स स्त्री (हि, लृठना) दे 'लृडाई' ।

लृड, स स्त्री [स यष्टि (स्त्री) ?] आवली

लि (स्त्री), सरल, माला-हार २ रञ्जो

घटक-सूक्ष्म, नतु ३ शुखल-लला ४ अंभि

पक्ति (स्त्री) ।

लृडकपन, म पु (हि लृडना) बाल्य,

कौमार २ चापल्य, चाचल्यम् ।

लृडकबुद्धि, स स्त्री (हि + स), बालबुद्धि

(स्त्री), अपक्वमति (स्त्री) ।

लृडका, स पु (हि लाड) बालक, कुमार

२ पुत्र ।

—वाला, स पु, सति (स्त्री), मना २ *परिवार, कुटुम्ब ।

—लटकी, स स्त्री, सति (स्त्री) ।

लटकेवाला, मु, (विवाहे) वरस्य जनक सरक्षणी वा ।

लटके का खेल, मु, सुकरकमन् (न), सुमाध्यकार्यम् ।

लटकी, स स्त्री (हि लटका) बालिका, कुमारी २ पुत्री ।

—बाला, मु (विवाहे) वध्वा जनक सरक्षणी वा ।

लटकौरी, वि स्त्री (हि लटका) बालोत्सगा, शिशुमती ।

लटकबडाना, कि अ (स लट्+हि रडा) प्रस्तल (भ्वा प से), पूर्ण (भ्वा आ से) २ गदगदवाचा भाष (भ्वा आ से), सगदगदम् (अ उ से) स्वल् । स पु, प्रस्तलन, धूणन २ सगदगद भाषण, स्वलनम् ।

लटना, कि अ (स रणन >) विग्रह (क प से) युध (रि आ अ), युद्ध-भ्रमण सगर कृ २ विवद (भ्वा आ से) विग्रह रूप (भ्वा प से), बलहायन्ते (ना धा) ३ दश (भ्वा प अ) ४ सषट् (भ्वा आ से), ससृष्ट (क् प से) ५ मल्लयुद्ध कृ, हस्ताहरित मुष्टीमुष्टि युध् । स पु तथा भाव, विग्रह, युद्ध, विवाद, विप्रलाप, कलह, दशनं, सषट्क, समद, मल्लयुद्धम् ।

लटकबडाना, कि अ, दे 'लटकबडाना' ।

लटकावरा, वि (हि लटका+वारा) मूर्ख, अश, बालबुद्धि २ अशिष्ट, धार्मण ।

लटकाई, स स्त्री (हि लटना) समाप्त, दे 'युद्ध' २ मल्ल-बाहु, युद्ध ३ वायुद्ध, कलह ४ वाद, वादप्रतिवाद ५ सषट्, समापात ६ विरोध, वैरम् ।

—करना, कि स, दे 'लटना' ।

—का मैदान, रणक्षेत्र, युद्धभूमि (स्त्री) ।

—मौल सेना, मु, कामन बलहे प्रवृत्त (भ्वा आ से), युध (सन्नत, युयुत्सवे) ।

लटका, स पु (हि लटना) योध, मट, योद्धा । वि, बलह-बन्धि, विय, युयुत्स, विदरिन् ।

लटका, वि (हि लटना) सापत्निय (स्त्री स्त्री), दौड (स्त्री स्त्री) ।

लडाना, कि म, व 'लटना' के प्रे रूप ।

लडी, स स्त्री, दे 'लट' ।

लडीला, वि, दे 'लाटना' ।

लट्टु, म पु (स लट्टु) लट्टुक, मोदक ।

—खिलाना, मु, निमत् (जु आ स) ।

—मिलना, मु, मफल अभिगन् ।

मन के—खाना, मु, मनोरंज्य विनुम् (प्रे) ।

लडा, स पु [हि लुड(टक)ना]

लडिया, म स्त्री] बलदसकटी ।

लत, स स्त्री (स रति >) दु, वृत्ति (स्त्री) शिल्, कदम्ब्याम, दुर्व्यसन, दुःप्रवृत्ति (स्त्री), दे 'आदत' (डुरी) ।

लतखोर रा, वि (हि लात+का खोर) पाद प्रहारसह, अधोप नमह, कुकर्मिन् २ नाच, सुद । स पु, दाम, किन्नर २ देहना, अव प्रहणी ३ दे 'पायदान' [लतखोरित (स्त्री)] ।

लतपत, वि, दे 'लथपथ' ।

लता, म स्त्री (स) वल्ली, व(वे)ति व(प्र)-तति (स्त्री) (बहुत शाखाओं तथा पत्तों वाली) प्रतानिनी, युन्मिनी, वीरध (स्त्री), उल्फ २ सुन्दरी, तन्वी, रोचना ।

—मडप, म पु (म) लता, भवन कुत गृह, नि, युज न्, लुडग नम् ।

लताई, स स्त्री, दे 'लथाना' ।

लताहना, कि स (हि लात) दे 'राहना' ।

लतिका, स स्त्री (मं) लघु-वल्ली जतति (स्त्री) ।

लतीफा, स पु (अ) दे 'सुलतुला' ।

लत्ता, म पु (सं लत्तव) नक्त, पषट् ट, नीर, पट्टर, जीर्णवसन २ वस्त्र ३ वस्त्रम् ।

—कपडा, स पु, परिधानं, वस्त्रानि वानानि (न बहु) ।

लत्ती, स स्त्री (हि लत) पदप्रहार, ललापान, गुर, भाषान श्लेष ।

लत्ती, म स्त्री (हि लत्ता) *नगपुच्छ २ लवस्त्रकाट टम् ।

लथइना, कि अ, ट 'लथेइना' व वम व रूप ।

लथपथ, वि (अनु) अति, विच्छ उन्न निमित्त आद्र २ (पवादिभि) लित शिथ मन्नि, क्लृप ।

लथाइ, म स्त्री (अनु लथपथ) भूना पण

यित्वा इतस्तन कपण २ परात्रय ३ हानि (स्त्री) ४ अधिशेष, निर्मात्मन ना, तर्जनम् । लघाडना, क्रि स, दे 'लताडना' २ 'लथेडना' ।

लथेडना, क्रि स (अनु लथपत्र) पकेन मन्त्रिनयति (ना था), कदमे कृष् (भ्वा प अ) २ समिश्र (चु), ससृज् (तु प अ) ३ निर्मात्स (चु), अधिक्षिप् (तु प अ) ४ व्यथ् (प्रे), पीड (चु) ।

लदना, क्रि अ (स लन्ध >) व 'लादना' के वनं के रूप २ मृ (तु आ अ) ।

लदवाना, } क्रि प्रे, व 'लादना' के प्रे रूप ।
लदाना, }

लदा फँदा, ति (हि लदना + फँदना) भारा क्रान्त, भारग्रस्त, पर्याहारपीडित ।

लदाव, स पु (हि लादना) दे 'लादना' स पु २ भार, भर, पर्याहार ३ पटला दिधु निराधार ष्टकावय ।

लदुवा, लदुद्, वि (हि लादना) धुरधर, धुरीण, धौरेय, धुर्य, धृष्य, र्यूरिन् (धोत्र, बेल आदि) ।

लदुड, वि (हि लदना) अलस, मथर ।

—पन, स पु, आलस्य, मथात्वम् ।

लप, स स्त्री (देश) अंजलि, करपुत्र २ अजलि, मित्त-मान वस्तु (न) ।

लप, म स्त्री (अनु) वेध-यष्टि, शब्द, लपलपध्वनि २ खड्गादीना तरलप्रभा ।

लपक, म स्त्री (अनु) ज्वाला, अग्निशिखा २ क्षणिक-अस्थिर, दीप्ति (स्त्री) प्रभा ३ वेग, ज्व, त्वरा, लायव ४ प्लुति (स्त्री), क्षपा ।

लपकना, क्रि अ (हि लपक) धाव् (भ्वा प से), द्रु (भ्वा प अ), सत्वर गन् २ स्फुर (तु प से), तारलप्रभया प्रकाश (भ्वा आ से) ३ बल् (भ्वा प से), उद, म्ल (भ्वा प अ) ४ धृ (चु), ग्रह (क् प से) । स पु, धावन, स्फुरण, उद, म्लवन, धारणम् ।

लपकाना, क्रि स, व 'लपकना' के प्रे रूप ।
लपकी, म स्त्री (हि लपकना) सरलसीवन भेद ।

लपप्रप, वि (अनु लप + हि लपटना) चपल, चवल २ क्षिप्र, आशु ।

लपट, स स्त्री (हि ली + पट) बहिर्निखा, ज्वाला २ तत्रपवन, घमानिल ३ सुगन्ध, सुवास, दुर्गंध, पूनिगंध ४ मुनि-दुर्गंधि, पवनतरंग ।

लपटना क्रि अ, दे 'लिपटना' ।

लपटशापट, स स्त्री (म लपन + अनु) प्र, जल्प पन, निरर्थकशब्दा (बहु) ।

लपन, स पु (स न) मुख २ भाषणम् ।

लपलप, स पु (अनु) लैहन, लेह । वि, क्षिप्र शीघ्र-कारिन्, आशु । क्रि वि, क्षिप्र, द्रुतं, क्षणिति (सब अव्य) ।

—करना, क्रि स, लिह (अ उ अ), वि ह्याग्रेण पा (भ्वा प अ) ।

—खाना, क्रि स, सत्वर मद् (चु) ।

लपलपाना, क्रि स (अनु लपलप) (जिह्वा-स्वङ्गादिक) परिभ्रम (प्रे)-विधु (स्वा क् उ से) । क्रि अ, सडगवत् प्रकाश नाम् ध्रुव (भ्वा आ से) । स पु तथा भाव, विधुवन, विधूति (स्त्री), विधूनन, परिभ्रा(भ्र)मण, प्रकाशन, भासन, घोननम् ।

लपलपाहट, स स्त्री (हि लपलपाना) (लङ्गादीना) छुनि दीप्ति (स्त्री), प्रभा २ दे 'लपलपाना' स पु ।

लपग्नी, स स्त्री (सं लपिक्वा) द्रवप्राय सयाव ३ द्रवप्राय मध्यम् ।

लपेट, स स्त्री (हि लपेटना) दे 'लपेटना' स पु व्यावर्त, व्यावृत्ति (स्त्री) बधन चक्र ३ परिधि, परिणाह, परिवेश, मडल ४ कष्ट, क्लेश, कृच्छ्र, जाल ५ कुटुप, प्रभाव ६ वेहन, बधन ७ पुट, भग, वलि (स्त्री) ।

लपेटना, क्रि स (हि लिपटना) सवेष्ट (प्रे), सपुटीक २ भ्रम-धूर्ण (प्रे) ३ व्यावृत् (प्रे), पुटीक, पुटयति (ना था) ४ पिण्डी धतुली-क ५ आच्छाद (चु), परिवेष्ट (भ्वा आ से, प्रे) ६ सप्रथ् (क् प से) ७ अन्तर्गण (चु) सशिल्प (प्रे) । स पु तथा भाव, सवेष्टन, सपुटीकरण, भ्रामण, धूर्णन, व्यावर्तन, पिण्डीकरण, आच्छादन, सप्रथन, सश्लेषणम् ।

लपेटवाँ, वि (हि लपेटना) मपुट, मभग, बलियुत २ व्यावृत्त, आनुचित, ३ गूढार्थ, गुहाशय, व्यग्य ४ वक्र ।

लप्यद्, स पु, दे 'वप्यद्' ।
 लप्या, स पु (देश) सौवर्ण-राजन, तनुजाला
 भरणभेद ।
 लफगा, म पु (फा-ग) लफट, व्यभिचारिन्
 २ कुपभग, दुर्वृत्त ।
 लफट्ट, स पु (अ लैफ्टनेट) गणाधमश
 २ प्रतिपुरुष ।
 —गर्वनर, म पु (अ) उपप्राताध्यक्ष, उप
 भोगपति ।
 —जनगल, म पु (अ) अक्षीहिणीय ।
 सेरुड—, स पु (अ) गुल्मप ।
 लफज, म पु (अ) शब्द, पद २ उक्ति
 (स्त्री), भाषणम् ।
 —वलफज, कि वि, शब्दरा, यथाराब्द,
 अधुराश ।
 लफजी, वि (अ) शब्द चिह्न ।
 —तर्जुमा, स पु (अ) अक्षराश शब्दभ-
 मूलशब्दानुवर्ति भावोपेक्षक, अनुवाद ।
 —वह्म, म स्त्री (अ) भावोपेक्षक शब्दिक,
 वादप्रतिवाद ।
 लफफाङ्ग, वि (अ.) वावदक, वाचाल,
 बहुभाषिन्, मुग्ध ।
 लफफाङ्गी, स स्त्री (अ) वावदकता,
 वाचालता, मुग्धता, अल्पकता ।
 लब, स पु (फा) अथर, ओष्ठ, दतच्छद
 २ स्वदिनी, लाजा ३ प्रान्त, मुख, कठ,
 धार, कर्ण ।
 —रैङ्ग, वि, परि, पूर्ण, समूह ।
 लवङ्गधोषो, स स्त्री (अनु) कोलाहल-
 कलकल २ अनु-द्वर, व्यवस्था, संकुल,
 क्रमभाव ३ अन्याय, अधर्म, अतीति (स्त्री)
 ४ वाक्कुल, वाग्वचना ।
 लवलवा, सं पु (अनु) क्लेश, पठक्रिया
 (अं पेनक्रियासि) । वि, विकल्प, सल्यनशील ।
 —का रय, म पु, क्लेशरस ।
 लवादा, स पु (फा) *विचुक्तुक् २,
 कचुक ।
 लवार, वि (मं लपन >) मिथ्याभाषिन्
 २ बन्धक, शृण्वापिन् ।
 लवाल्य, नि वि (फा) आ, बर्त मुसं-वर्णम् ।
 नि, आवर्ण, परिपूर्ण ।
 लयी, म स्त्री, दे 'राव' ।
 लयेरा, म पु (देश) दे 'लमोदा' ।

लब्ध, वि (सं) अवग्र-भास, अधिगत,
 मनामादित २. उप, अजित । स पु (स
 न) फल, लब्धि. (गणित) २ दामभेदः ।
 —प्रतिष्ठ, वि (सं.) लब्ध-कीर्ति-नामन्,
 विप्र, ख्यात ।
 लब्धि, स स्त्री (स) प्राप्ति (स्त्री), लाभ.
 २ उत्तर, लब्धाव (गणित) ।
 लब्धय, वि (सं) पाप्य, अधिगम्य २ उचित ।
 लमछद्, स पु (हि लबा+छद्) लवयष्टि-
 (स्त्री) २ कुत, प्राप्त ३ लवान्यलम् ।
 वि. तनुनव ।
 लमदंगा, वि (हि लवी+दाग) दोषंजघ
 (स्वा, धी स्त्री) २ दे 'लमदोग' ।
 लमदोग, स पु (देश) सास, पुष्कराह ।
 लमतदंग, वि, दे. 'लवतदंग' ।
 लमहा, स पु (अ) क्षय, पल, निमि(मे)प ।
 लय, स पु (सं) एकरूपता, ऐकरूप्यं, यकी
 सदृशी, भाव, सानुर्ज्यं, मन्वता, लीनता
 २ एकामता, समाधि, अनन्यमनस्कता
 २ अनुराग, प्रेमन् (सुं न) ५ महाप्रलय,
 कल्पात् ५ अदर्शन, 'रोप', तिरोभाव ६ स-
 श्लेष, समिश्रण ७ नृत्यगीतवाधानां साम्यं
 (सगीत) ८. मूर्च्छा । स स्त्री, स्वरोद्गम-
 प्रकार (२३) दे 'तर्ज' तथा 'सम' ।
 लरङ्गना, कि अ (फा. जरजा) कपू-वेर्
 (स्वा आ से) २ भी (जु प अ), वि-
 सत्रस् (स्वा दि. प. से.) ।
 लरङ्ग, सं पु (फा.) कप, वेपथु २ भूदण
 ३ *कपञ्जर ।
 ललक, स स्त्री (सं लल् = चाहना >)
 उत्कटेच्छा, लालसा, अभिलाषानिराय ।
 ललकना, कि अ (हि. ललक) अल्पन लल्
 (जु. चतुर्थी के साथ), अतीव अभिलष-
 वात् (स्वा प से.) ।
 ललकार, स स्त्री (हि अनु. लेल+मं कारे)
 समर, आह्वानं, मुदाय आवादन-गा, रणनि-
 मयणं २ आक्रमण, उच्छेजना प्रेरणा ।
 ललकारना, कि स (हि ललवार) आह्वे
 (स्वा आ अ), (योद्) आहु उदीर्घ-उत्तिञ्-
 प्रचुर (मि) । सं पु तथा भाव, दे 'ललकार' ।
 ललचना, वि. अ (हि. लालच) दे 'लल-
 चाना' वि. अ ।

ललचाना, कि अ (हि ललचना) (अत्यन्त)
 लुभ (लि प मे) सुहृ (लु) वम् (स्वा
 आ से) अभिलष (स्वा दि प मे) २ मुहृ
 (दि प मे) । कि म, अभिलाषा नद (प्रे)
 प्र, लुभ (प्रे) २ मुहृ (प्रे) बदीकृ ।

ललचौहाँ, वि (हि लालच) लोलुप म गृध्रु
 अयभिलाषिद्, अत्यावाक्षिद् ।

ललन, स पु (स) प्रिय-ललित इत्
 कुमार २ वा १ वन्नम ३ (नारज्मबोधन
 पद) ललन 'प्रियकर' ४ विहार, कीर्ण,
 बेनि (स्त्री) ।

ललना, स स्त्री (म) वामिनी रामा
 २ विह ।

लला-लला, म पु (स लल >) दे 'ललन'
 (१३) २ (वाल्ज्मबोधनपद) अग ।
 वस्म । *ललित । ललितक ।

ललाई, म स्त्री (हि लाल) दे 'ललनी' ।
 ललाट, म पु (स न) अलि(ली)क, गोधि
 (पु स्त्री) भाल, निदि(ट)ल, दे 'माधा'
 २ भाग्य, दैवम् ।

—पटल, स पु (स न) ललाट-भस्मक,
 पट्ट-भस्मकम् ।

—रेखा, स स्त्री. (स) भाग्यरेखा ।

ललाटिका, स स्त्री (स) पत्रपाश्या, ललाटा
 भरणभेद २ ललाट, जरी चर्नी, मालस्थवर्
 दन, तिलक-कम् ।

ललाम, वि (स) रम्य, सुन्दर ० रक्त,
 लोहित ३ श्रेष्ठ, प्रधान । स पु (स न)
 आ, भूषण २ रत्न ३ चिह्न ४ ध्वज
 ५ शृंग ६ अथ ७-८ अथ, भूषण, भाल
 चिह्न ९ प्रभाव १० वेम(श)र, दे
 'अयाल' ।

ललित, वि (स) सुन्दर, मनोहर, रम्य,
 २ शिसित, अमीष्ट ३ लोच, चचल, कम् ।

—कला, स स्त्री (स) कीमल-उल्लूह, कला
 शिल्प (काव्य, संगीत, चित्रकारी इ) ।

—लोचन, वि (स) सु, नेत्र-नयन ।

ललिता, स स्त्री (म) रमणी, सुन्दरी
 ० रात्रिकाया सखीविशेष ।

ललिताई, स स्त्री (म ललित >) सौन्दर्य,
 रम्यता ।

लली, लली, स स्त्री (हि लला-ल्ला) प्रिय
 पुत्री, ललितननुता २ (नायिकासबोधनपद)

प्रिये 'बन्ने' वल्लभे' ३ (वाल्किामवेध
 नपद) ललिते । वल्लभे' वल्लभे' ।

ललीहाँ, वि (हि लाल) आशुभ, रक्त
 ललिते ।

लल्लो म स्त्री (स ललना) विह-रस ।

—चप्पो, } स स्त्री चाड (पु न),

—पत्तो, } चट्टक (स्त्री), उपच्छदनम् ।

—पत्तो करना, मु, मिथ्या प्रशाम् (स्वा प
 मे) उपच्छ (लु), चाडभि लुप् (प्रे) ।

ललग, म पु (स न) दे 'लीग' ।

—लता, स स्त्री (म) श्रीमुखलता (२ राधा
 मदीविशेष ।

लल म पु (स) परम अणु, लेश, कण,
 कणिक, सुद्रखड, विदु २ काष्ठारव, पट
 दिशक्तिव्यमित का ३ श्रीराधपुत्र,
 कुशभ्रवृ ।

—लेश, म पु (म) २ अत्यल्प, मात्रा
 समग ।

लवण, स पु (स न) दे 'नमक' । स पु
 (१३) राक्षस-रस-समुद्र, विशेष । वि,
 लवणित, लार्वाणक, दे 'ननकीन' २ सुन्दर ।

—भास्कर, स पु (स) पाचकचूर्णभेद
 (वैद्यक) ।

लवणाकर, स प (स) लवणख(ला)नि
 (स्त्री) २ सागर ।

लवनिनी, स स्त्री (स लवन) शस्य, लाव
 मचय ।

लवलोन, वि (स लव + लीन >) व्यव, नि,
 मग्न, पर, परायण, निरत, लीन, आमक,
 व्याप्त ।

लवा, स पु (स लव) लाव (व), लाव
 (व)क, लघुजगल ।

लशकर, स पु (क) सेना, सैन्य, अनीक
 मिनी २ वन, ओष सुन्दर ३ शिवि(वि)र,
 निवेश ४ नाविका-नीवहा (बहु) ।

लशकरी, वि (का लशकर) सैनिक, सेना
 मवधिद् २ पौन-थ, हीड । स पु, सैनिक
 २ नाविक ।

—भाषा, स स्त्री, मित्रित सैनिक, भाषा २
 दे 'उद्' ।

लशुन, म पु (म न) दे 'लहसुन' ।

लस, म पु (स लस् >) सलग्नशीलता,

—लुहान होना, मु, लोहितविलस रश्मि
 स्नान रक्तजितशोशोग (वि) भू ।
 लाग, म स्त्री (स लाग्) कच्छ च्छ,
 कच्छ/च्छा/गिका, कच्छा/गिका दे 'काँउ' ।
 —खुलना, मु, अत्यर्थे भी (लु प अ),
 साहस धैर्यं मुर् (तु प अ) ।
 लागल, स पु (स न) दे 'हल' ।
 लागली, स पु (संलिन) बलराम २ सर्प ।
 लागूल, स पु (स न) पुच्छ २ शिश्नम् ।
 लागूली, स पु (संलिन) कपि वानर ।
 लाँघना, कि स (स लघन) लघ (जु),
 अतिक्रम (भ्वा दि प से), नृ (भ्वा प
 मे) २ उत्कृत्व भ्णू (भ्वा आ से, जु) ।
 म पु तथा भव, अनिक्रम, लघन, तरण,
 उत्पत्य लघनम् ।
 लाछन, म पु (स न) कला, दोष, दूषण,
 अपकीर्तिविद् २ चिद्, लक्ष्णा लक्ष्मन् (न),
 लिंगम् ।
 —लगाना, दुप (प्रे) कलरयनि, यशो मलि
 नयनि (दोनों ना था) ।
 लाइन, स स्त्री (अ) पक्ति (स्त्री)
 २ रेखा ३ लोहमाग, ४ पक्षिसेना ५ दे
 'बागक' ।
 —डोरी, स स्त्री, दे 'पेड़कोला')
 ला, अ (अ) विना, न, कृते (सब अर्थ) ।
 —हलाज, वि (अ) असाध्य, निरुपाय,
 अचिकित्सा, अप्रतिवार्य ।
 —इलम, वि (अ) निरक्षर, शिक्षारहित,
 विद्यावि'न, अज्ञ ।
 लाइट, म स्त्री (अ) प्रकाश, आलोक ।
 —हाउस, म पु (अ) प्रकाश, स्तम्भ
 गृहम्, आकाशदीप दीपस्तम्भ ।
 लाकड़ा काकड़ा, स पु दे 'भाना(लोरी)' ।
 लाक्षणिक, वि (सं) लक्षणगम्य (अर्थ), लाक्षण
 २ लक्षणत लक्षण्य ३ गौण अप्रधान
 ४ लक्षणसंबन्धिन् ।
 लाक्षा, स स्त्री (स) कौश्या, जतुका, दे
 'लाख' ।
 —गृह, स पु (म न) पाठ्यशास्त्रार्थं दुर्बोध
 जनिर्भावितो जतुगृहविशेष ।
 —रस, सं पु (स) दे 'महावर' ।
 लाख, म स्त्री (स ला-ना) राक्षा, दाव,
 पावक क, जतुङ्का, नुतु (ति) रत्ना, अचक

(कज), द्रुम, आमय व्याधि, मुद्रिणी,
 जतुका ० रत्नवर्ग कृमिभेद ।
 —चपड़ा, स स्त्री, पत्रकलाक्षा ।
 लाज, वि (स लक्ष) नियुक्त, अयुतदशक,
 महत्संज्ञक २ असह्य, अगण्य । म पु (स
 न) उक्ता संख्या, तदकाश्च (= १,००,०००) ।
 कि वि, अनकृत, अनेकवार, बहु, अधिकम् ।
 —टके की बात, मु, अस्युपयोगिवार्ता ।
 —से झाक होना, मु, वैभवात् दाग्द्रिय उप
 इ (अ प अ), विरक्त परिशि (कर्म) ।
 लाखा, म पु (हिं लाख) ओष्ठरजवी लाक्षि
 करण ।
 लाखी, म स्त्री (हिं लाख) लाक्षिकरण । वि,
 लाक्षिक लाक्षा, निमित्त रश्मि-वर्ग संबन्धिन् ।
 लाग, म स्त्री, हिं लगना) सप्तक, समर्ग,
 सप्त ० प्रमन् (पु न), अनुगाय
 २ अभिनिवेश, आनक्ति (स्त्री) ४ युक्ति
 (स्त्री), उपाय ५ इन्द्रबाल माया ६ प्रति
 योगिना स्पर्द्धा ७ वैर, शत्रुता ८ अभिचार
 ९ भूमिदर १० धातुभङ्गम् (न), दे
 'भत्म' ११, *गान् ।
 —डॉट, म स्त्री (हिं) वैर, द्वेष २ प्रति,
 योगिना स्पर्द्धा ।
 —लपेट, स स्त्री (हिं) पशुपाल, पशुपालिता,
 [समष्ट्यभाव (स्त्री) २ मनोप्राप्ति-संबन्धि'
 (स्त्री) ।
 लागत, स स्त्री (हिं लगना) व्यय, विनि
 योग, विमानन २ मूल्य, अर्थ, अर्हा ।
 —आना या घटना, कि अ, मूल्येन की-ग्रह
 (कर्म) २ व्ययेन मपद्-भाध् (कर्म) ।
 लाघव, स पु (स न) दे 'लघु' (१५) ।
 ६ त्रिप्रता, द्रुतता, दक्षता ७ क्लीबता
 ८ आरोग्यम् ।
 लाजार, वि (का) विवश, निरुपाय,
 अगणिक । कि वि, विवश-निरुपाय-अगणिक-
 तथा ।
 लाचारी, स स्त्री (का) विवशता, अगणिकता ।
 लाची, म स्त्री, दे 'रलायची' ।
 लाज, म स्त्री (स लाजा) दे 'लजा' (१२) ।
 —भाना या करना, कि अ, दे 'लजित
 होना' ।
 —रखना, मु, प्रतिष्ठा रक्ष (भव प से),
 अपमानन् त्रे (भ्वा आ अ) ।

लानवत, वि (स लानवत्) दे 'लानशील' ।
लानवती, वि (हि लानवत्) लज्जावती,
शामनी । स स्त्री, लानाडु (पु स्त्री),
सकोचिनी, रसशंका, मन्थारीणा, महीपथि
(स्त्री) रक्त पादी-मूला ।

लानवर्द्ध, सं पु (का, मि स लानवत्)
गुणवत् आवनमणि २ (विदेशीय) नीलम् ।
लानवर्द्धी, वि (का) नीलवर्ण, वानवत् नील ।
लानवाय, वि (अ) निरुत्तर, मूरी, कृत
भूत वादे पराजित ३ अनुपम, अनुक ।

लाना, स स्त्री [स लाना (पु बहु)]
अक्षुणा (पु बहु) २ तदुल ।

लान्जिम, वि (अ) आवद्यक अवद्यकतय
२ उचित युक्त ।

लान्जिमी वि (अ लानिम) दे 'लानिम ।
लाट', स पु (अ लॉट) शामक, शानिन्
२ भोगपति, प्रानाध्यक्ष ।

लाट, स स्त्री (हि लट्ठा) रत्न, मेढि
थि, धूप ।

लाट, स पु (सं बहु) प्रातविशेष (गुन
रात, अष्टमदावाद के आसपास) २ लाट
प्रातवसिन (बहु) ३ (लाट) अनुप्राप्त
मेद (सा) ४ जीर्णवसनभूषणादिक
५ वसनाभि-नामासि (न बहु) ६ पटित ।

लाटरी, सं स्त्री (अ) गुटिकापात, पाटक,
कात्री ।

लाटानुप्राय, स पु (स) शम्भालकारमेद
(सा) ।

लाटिका, लाटी, स स्त्री (स) रीतिभेद
(सा) २ प्राकृतमात्रविशेष ।

लाठ, स पु, दे 'लाट' (१-२) ।

लाटी, स स्त्री (स लकुटयष्टी >) यष्टिक
का, यष्टि (स्त्री), वाट, लकुट, दट,
एतुन २ वेक, वेत्रयष्ट (स्त्री) ।

—चलना, मु, दट्टदडिअन् (हि आ मे) ।
—ट्रेड चलना, मु, यष्टिप्रवर्धय्य दहाश्रयेण
चलु (भ्वा प से) ।

—बोधना, मु, यष्टि धु (लु) ।

लाद्, स पु (स लट) लाटन, उप, लालन,
२ परिवग आनिगन, परिदभण ३ लुबन,
निम्न ४ बोडीररगम् ५ ।

—करना, क्रि म, लाल-लाट (लु),
मुद्-अनिग (भ्वा प से), बोयीह ३ ।

लाइला, वि (स लाड >) उप, लाटि(लि)-
त चुविन, आग्निगिन, प्रेम-लालन, आस्प-
पाय भाजन, मिथ, अभिमत ।

अत्यधिक—, वि, दुःखित, अनिन्नात्ति
लालनदुपित ।

लाडा, स पु (हि लाट) दे 'वर' ।

लाडी, स स्त्री (हि लाटा) दे 'वधु' ।

लाट, स स्त्री (देश) तथा 'वापर', पल्ल
२ पाट, चरण ष, पद ३ तथा पाद, मदार
आवाल ४ सुरभाण्य-श्लेष आगत ।

—चलाना, मु, पादेन तथा प्रह (भ्वा प
अ)-तट (लु) ।

—जाना, मु, (गौ भैम आदि) दुष्प न दद
(भ्वा आ मे) ।

—भारना, मु, शुभ्र मत्वा त्यन (भ्वा
प अ) ।

लाद, स स्त्री (हि लादना) दे 'लादना'
स पु २ उदर ३ अंशम् ।

लादना, क्रि म (हि लदना) भार स्वम
(दि प से), निधा (लु उ अ)-आरह
(प्रे)-निविद (प्रे), भारकाल दृ, भारेण
पूर (लु) ३ राशी क समाधि (स्वा उ अ) ।
स पु भ(भा)र, न्यास निवेशन-आधान
आरोपणम् ।

लादनेवाला, स पु भ(भा)र, -आरोपक -नि
वेशक ।

लादवा, वि (अ) दे 'लाइलाज' ।

लादा हुआ, वि, भार, अस्त आर्त्तान, अ रोपित
निदेशित-स, भार ।

लाडी, स्त्री (हि लादना) भार, पोडलिका ।

लादू, वि (हि लादना) दे 'लद' ।

लानत, स स्त्री (अ लानन) धिक्कार,
न्यकार, निर, मत्सर्जना, अधिरोप गहाः ।

—मलामन करना, क्रि स, निभर्त्स (लु
आ से) अधिनिप् (लु प अ) ।

लानती, स स्त्री (अ लानन >) निष, गद्य,
निर्भर्त्सनीय, दुःख, गल ।

लाना, क्रि म (हि लेना + प्राना) अनी
(भ्वा प अ), उप-ना, द (भ्वा प अ),
आवर (भ्वा प अ) १० उपग्या (प्रे), पुरी
निधा (लु उ अ), उपयम (लि प म)

३ उपह (भ्वा प अ), मद्क (प्रे),
उपादन ४ ५ उत्तर न (प्रे) । सं पु,

आनयन, आ उपा हरण, आवहन, उपस्थापन, उत्पादन २ ।

लाने योग्य, वि, आनेय उपाहार्य, उपस्थाप्य ।
लानेवाला, सं पु, आनेय, आ-उपा, हट्ट
हारक ।

लापता, वि (अ ला+हि पता) अलम्ब्य,
अदृश्य, तिरोहित, अन्तहित, गुप्त, प्रच्छन्न,
अज्ञातवास ।

लापरवा वाह, वि (अ ला+फा परवाह)
निश्चित, अनवहित, प्रगल्भ, प्रगादिन् ।

लापरवाही, स स्त्री (अ+फा) निश्चिन्ता,
अनवधानता, प्रमत्तता, प्रमाद ।

लाफ, स स्त्री (फा) आत्म-स्व, श्लाघा
प्रशंसा, विकल्पनम् ।

—जान, वि, आत्मश्लाघिन्, विश्च्यनशील ।

—जानी, स स्त्री, आत्मश्लाघिता, विकल्पन
शालिनी ।

लाफिंग गैस, स स्त्री (अ) इमनवाति
(स्त्री) ।

लाम, स पु (स) अवप्र, आसि, उप,
लम्बि (दोनों स्त्री) अधिगम-मन, आ
सादन ३ फल, अय, उदय, वृद्धि (स्त्री),
लम्ब्य ३ बन्वाण, उपकार, हितम् ।

—उठाना, क्रि अ, लाम अधिगम, अने
(म्वा प से, प्रे), लम (म्वा आ अ)
ममाम् (प्रे), विद् (तु उ वे) ।

—दायक, वि (स) लाम-कारक-कारिन्
पनकप्रद, गुणकारिन्, हित, हिनकर, फल
दायक, उपयोगिन् ।

लामालाम, स पु (स भौ द्वि) आयापायौ,
अधिगमापगमौ, वृद्धिस्थयौ, उपचयापचयौ ।

लाम, स पु (फा लाम) सैन्य, सेना
२ जनौ ३ युद्धम् ।

लामजहब, वि (अ) धमविगुल, नास्तिक ।

लायक, वि (अ) योग्य, क्षम, समर्थ, शक्त
२ अनुरूप, अनुकूल, उपयुक्त ३ गुणिन्,
गुणवत् सुशील, श्रेष्ठ, भद्र ।

लाया हुआ, वि, आनीत, आ-उपा, हन, उप
स्थापित, उपन्यस्त ।

लार, स स्त्री (स लार) दे 'राल' (२) ।

लार्ड, स पु (अ) चण्डीश २ स्वामिन्
३ क्षेत्रपति ४ आंग्लदेशे उपाधिभेद ।

लाल, स पु (फा) पमराग, दे माणिक्य'
वि, रक्त, लोहित, शोण ।

—आलू, सं पु, दे 'रतालू' २ दे 'अरुई' ।

—इलायची, स स्त्री, दे 'शलायची' (बडी) ।

—कुर्त्ता, स स्त्री, आंग्लसैन्यनिवेश, शिवि
(वि)रम् ।

—चदन, स पुं, रक्त-कुन्देवी, चदन, रजन,
दे 'चदन' में ।

—पानी, स स्त्री, सुरा, मद्यम् ।

—पेठा, स पु, दे 'कुम्हडा' ।

—बुझकूड, स पु, पडितप्रश्न-मय, प्राङ्-
पडित मानिन्-अभिमानीन्-वादिन् ।

—मिर्च, स स्त्री, दे 'मिच' में ।

—मूली, स स्त्री, दे 'शलजम' ।

—शकर, सं स्त्री, दे 'लॉड' ।

—मागर, स पु, रक्तसागर ।

—सुख, वि, अग्निरूप, अगारवर्ण, अतिलोहित
२ अति, कुपित-सरब्ध ।

—पीला होना, -पीली आँखें निकालना, मु,
अत्यत कुप् (दि प से) कुप् (दि प
अ), सरभानिशयेन लोहितलोचनरक्तवदन
(वि)म् ।

लालच में स्त्री (स लालता) लोलुपता,
दे 'लोम' ।

लालची, वि (हि लालच) लोलुप, दे 'लोमी' ।

लालटेन, स स्त्री (अ लैटन) प्रदीप पत्र,
प्रदीपकोश (प) ।

लालडी, स स्त्री (फा लाल) मिथ्यामा
गिन्य, झुनलोहितकम् ।

लालन, स पु (सं न) दे 'लाड' स पु ।

—पालन, स पु (स न) पालन भरण,
पोषण, सवदन, भरण, रक्षणम् ।

लालन, स पु (हि लाला) प्रिय-स्त्रालिन,
पुत्र-कुमार २ बालक ।

लालसा, स स्त्री (स) उत्कटेच्छा, लिप्ता-
आफाशा-वाता-म्यूहा-रच्छा-अभिलाष, अति
शय २ उत्कठा, उत्सुकता ३ गर्भ, दोहद ।

लाला, स पु (सं लालक >) महाशय,
महोदय, श्रीमत्, श्रीयुत् २ (क्षत्रियवैश्याना
सबोधन) श्रीमन् । महोदय । श्रेष्ठिन् ३ काय
स्व ४ शिशु, बाल ५ (बालसबोधनपद)
वत्स । अग । ललिन । लालिनक । ६ पितृ-
पत्नम् ।

—भैया करना, सु सादर सभाप (भ्वा आ मे) मनुष्य (प्रे) २ लट् लस (चु) ।

शाला, म स्त्री (म) मुखसाव, दे 'शाल' (२) ।

शाला, स पु (का) यस्यमममनिल पुापम् । शालाङ्गि, वि (स) लण्ट माल, सवधिन् ० शिव आवत्त निारष्ट ३ मावधान । स पु, मावधान मवक ० अलम ।

शालाङ्गित, वि (म) अत्वमिलगपिन्, अ त्वासादिन् अत्युमुम्, लालम् ।

शालित, वि (स) शालित, जुविन्, आङ्गित, ज्ञानेष्टः पिय ० श्वाङ्गित पापिन् ।

शालित्य, म स्त्री (म न) मोदयै, मनासता मनोहरता छवि (स्वा), माधुर्यम् ।

शालिमा, म स्त्री (का लाल) दे 'शाली' ।

शाली, म स्त्री (का लाल) रत्नत्वना, लौहत्व रतिमन्-लोहिमिन्-अरणिमन् (प) अरुणा, श्रेष्ठिताना-त्व, २ मन्मान, प्रतिष्ठा ३ प्रिय, कन्या(यि)शानुमारिका ।

शाले, म पु (स शाला) शालमा, उत्त देच्छा ।

(विभीषीन के) —पडना, सु, अतिशालाङ्गित (वि) भू, अत्यंत सृष्ट (चु, चतुर्थी के साथ) २ दुर्लभ-सु-प्राप (वि) वृत् (भ्वा आ से), कृष्ण लभ प्राप (वम) ।

शाली, स पु (स) कतन, कृतन, लवन, छेदनम् २ लव, लवन, लघुनील ।

शाली, सं स्त्री (देश) दे 'रत्ना, रत्नी' ।

शालक, म पु (स) लव, शालक, लघु गल २ छेदक, छेदु, छेदकर, -टिड ।

शालक्य, सं पु (सं न) लवणाना-त्व, धारता २ विशिष्ट-मौदयै-रूप, छवि (स्त्री), चारता, श्री-वार्ति (स्त्री) ।

शालनी, म स्त्री (देश) (१०) छदो-गीतिवा, मद्र, *शालणी ।

शालशकर, म पु (हि+का) मपरिच्छद सेव्यम् ।

शालवद, वि (अ) निरुमंगान, निरपत्य ।

शाला, म पु (म शाल-व) दे 'शाला' ।

शाला, म पु (अ) शालामुग्गी अरुण्य, उदाम् ।

शालारि, वि (अ) अदावाद, शयादरहित

(मनुष्य) ० अदाविन्, स्वामि प्रमु, हीन (धन) ।

—शाल, म पु (अ) अदाविक स्वामिहीन, रिक्थ-द्रव्य धनम् ।

शाला, स स्त्री (का) दे 'शव' ।

शाला, स पु (हि लम) मरुण्यक, श्रव्य-श्रेय २ द्रुमदुग्ध क्षुपशीरम् ।

—शाला, सु, प्र वि लुम् (प्रे) प्रभूवन् (प्रे) ० उतिन् उदीप (प्रे) ३ मरुतेष्व द्रव्येण जगान वध (कृ प अ) ।

शालानी, वि (अ) अनुपम, अप्रतिम, अद्वितीय ।

शालान्य, म पु (म न) नृत्य २ मवनाल लव-अश्रय नृत्य ३ स्त्रीनृत्य ४ तीयावकम् ।

शालीरानमक, म पु (हि+का) २ 'मैशा नमक' (नमक के दाणे) ।

शाली, स पु (म) चिह्न लक्षण अभिमान, लक्ष्मण (न) ० अनुसा-कारण, माधु-हेतु ३ मूलप्रवृत्ति (स्त्री, सा) ४ मेष्ट-इ, दे 'शिवोद्विष' - शिवमूर्ति मेष्ट इ शब्द रूपभद्र (व्या) ७ पुराणविशेष ।

—शैव, सं पु (स) मृष्टम श्लि, शरीर (=१० शक्ति, ५ न-मात्रा, मन, बुद्धि-१७ तत्त्व) ।

—पुराण, स पु (म न) शैवाना पुराण विशेष ।

—शुक्ति, स पु (स) धर्मशक्ति, दाभिन, लिङ्गिन् ।

—स्थ, स पु (म) मङ्गचारिन ।

शिवोद्विष, सं पु (सं न) शिव, शिरन न, श्लि, उदम्य-स्थ, शेषम् (न), शिव काम, शला मेष्ट, मेहन, शक्ति, वाम-मदन, अवुदा, ध्वज, वदपमुष्ण ।

शिवोदी, म स्त्री, दे 'शिवोदी' ।

शिव, सं पु (अ) शिवोपयोगी रश्मि-वस्तुभेद ।

शिव, स पु (अ) देहलम् ।

शिव, अव्य (वाक्चिह्न) (सं लान वा कृते) —अर्थ, अर्थ-अथाय-कृते, एतो, (प्राय चतुर्थी विभक्ति, मे, उ राम क श्लि-रामाय) ।

शिवान्, म स्त्री (म शिवित) शेष, शिवि बद्ध-अक्षरान्, विषय ० शिवितपत्रं ३ शिवित द 'दस्तवेठ' ।

शिवाना, वि म (सं शिवान) शिव (पु प मे), शरदा (चु) प्रतिपद् (प्रे),

पत्रे अरुह निविश (प्रे), लिपिबद्ध (वि)
 कृ २ (ग्रथदि) प्रणी (भ्वा प अ),
 रच (चु), निर्मा (लु आ अ, अ प अ),
 ग्रथ् (कृ प मे), निप्र, वप (कृ प अ)
 ३ वर्ण (चु), आ-अभि, लिपि, चित्र (चु) ।
 सं पु लि(ले)खन, पत्रे आरोपण नवेशन
 ० रचन, निर्माण, प्रणयन ३ आलिखन,
 विव्रणम् ।

लिपने योग्य, वि, लेख्य, लेखनीय,
 लेखाहृ ३ ।

लिखने वाला, ० पु, दे लेखक ।

लिखाई, स स्त्री, दे 'लिख' (४) ।

लिखवाना, क्रि प्रे, व 'लिखना' के प्रे रूप ।

लिखाई, स स्त्री (हि लिखना) लिपन,
 लेखन, अक्षरविन्यास २ लिपि (स्त्री)-पी,
 अक्षर रचना ३ लि(ले)खन, नीलि (स्त्री)

शैली ४ लि(ले)खन, भूति (स्त्री) ।

—पढ़ाई, स स्त्री, विद्याभ्यास, शिक्षा,
 लिखनपठनम् ।

लिखाना, क्रि प्रे, व 'लिखना' के प्रे रूप ।

—पढाना, मु, शिक्ष (प्रे), विद्याभ्यास कृ
 (प्रे) ।

लिखापढ़ी, स स्त्री (हि लिखना + पढना)
 लेख-पत्र, व्यवहार २ लिखनेन दृढीकरणम् ।

लिखावट, स स्त्री (हि लिखना) लिपी-पि
 (स्त्री), अक्षर, विन्यास-संस्थान २ लेख
 लयन, प्रणाली शैली ।

लिखा हुआ, वि लिखित, लिपिबद्ध, लेख्यपिप्त
 २ रचिन, प्रणीत, निमित्त ३ चित्रित ।

लिखित, वि (स) लेख लिपि, बद्ध, अवित,
 लेख्य, कृत् आरूढ स पु (स न) लि(ले)-
 खन, लेख २ लिपी-पि (स्त्री) ३ लिखित,
 दे 'दस्तावेज' ४ प्रमाणपत्रम् ।

—पाठक, स पु (स) हस्तलेख, पाठक
 अध्येत् ।

लिखम, स पु (अं) शैबलम् ।

लिखाना, क्रि स, व 'लेखना' के प्रे रूप ।

लिखइना, क्रि अ, व 'लेखइना' के कर्म
 के रूप ।

लिपटना, क्रि अ (स लिप >), आ-प्र-म,
 मन (भ्वा प अ), स परि, ल्प् (भ्वा प
 ने) मसक परिलेखन (वि) भू, दिल्ल
 (दि प अ) २ अलिप् (भ्वा प से),

अडिल्लप्, परि, स्वल् (भ्वा आ अ),
 डपु (भ्वा उ से) २ लीन भग्न-व्यापृत
 निरत परायण (वि) भू । स पु, आमग,
 परिलेखन, इलेष ० आलिखन, परिरभा,
 परिष्वजनम् ।

लिपटनेवाला, स पु, आसगिन, मंलग्नशोल
 २ आलिखनकर्तृ, परिरभक ३ आश्रित ।

लिपटाना, क्रि स, व 'लिपटना' के प्रे रूप ।

लिपटा हुआ, वि, परिलेखन, मसक, उपगूढ ।

लिपट्टी, स स्त्री (स लेप >) उपनाह,
 ज्योतिषा, प्रलेप ।

लिपना, क्रि अ, व 'लीपना' के कर्म के रूप ।

लिपनाना, लिपाना, क्रि प्रे, व 'लीपना' के
 प्रे रूप ।

लिपाई, स स्त्री (हि लीपना) प्र वि, लेप
 लपन, उपनाहन, लिप, लिप लिपीपि

(स्त्री) २ लेपन मृत्वा-वर्मण्या भ्रमण्या ।

लिपि, स स्त्री (सं लिपीपि, स्त्री) लिपिका,
 लिपीवि वि (स्त्री), अक्षर, विन्यास

संस्थान रचना, लिखित, लि(ले)खनम् ।

—कर, स पु (स) लेपक, लेपकार, पलगड,
 लिप लिपिकर २ लेपक, पत्रिकार,
 लिपिकार ।

—कार, स पु (स) दे 'लिपिकर' (२) ।

—बद्ध, वि (सं) लिपिन, अक्षराकित,
 लेखनिवेशित ।

—मज्ञा, स स्त्री, लेख-भाषनानि-उपकरणानि
 (न बहु) ।

लिप, वि (स) चांचित, दिग्ध, लेखान्वित,
 २ भग्न, लग्न, निरत, आमक्त, लीन ।

लिप्ता, स स्त्री (स) इच्छा, अभिलाष,
 ईप्सा २ लोभ, लोडपता ।

लिप्सु, वि (स) इच्छु च्युक, अभिलाषिन
 २ लोडुपभ, गृधु ।

लिपिकाका, स पु (अ) पत्र, पुट-कोष-आवे-
 टन-अक्षरण २ आपातरमणीयवेश ३ आर्ड

वर ४ भगुरभिदुर, पदाथ ।

—खुलना, मु, रहस्य विवृ (कर्म), स्वरूप
 प्रकटीम् ।

—बनाना, मु आटवर रच (चु) ।

लिबास, स पु (अ) दे 'वेश' ।

लियाकृत, स स्त्री (अ) योग्यता, क्षमता
 २, गुण, यत्न ३ सामर्थ्य ४ शीलम् ।

लिखाना, कि प्रे, व 'लेना' तथा 'लाना' के प्रे रूप।

लिखा लाना, कि स, सह अनी (स्वा प अ)।
लिसोडा, स पु, दे 'लसोडा'।

लिहाङ्ग, स पु (अ) अवैक्षण अवधान
२ कृपा-दया, दृष्टि (स्त्री) अनुग्रह ३ पञ्च
पात तिता ४ लम्बा, व्रथा ५ प्रतिष्ठा-मर्यादा,
विचार ६ शील-सकोच।

—करना, कि अवधा (जु उ अ) २ आद
(हु आ अ) ३ अनुग्रह (कू प से)
४ मर्यादा पा (प्रे पालयदि)।

लिहाङ्गा, अ (अ) अत, अत पव (दोनों
अर्थ)।

लिहाङ्ग, स पु (अ) दे 'रजाई'।

लीक, स स्त्री (स लेखा) रेखा-सा, दृष्टकार
लिपीयि (स्त्री) २ (शकटादीना) चक्र-
मार्ग ३ दे 'पगदवी' ४ यशस् (न),
प्रतिष्ठा ५ रीति (स्त्री), लोकाचार, प्रथा
६ कलक, पाठन ७ गणनाचिह्नम्।

—पर चलना, } सु दे 'लकीर' के नीचे।
—पीटना, }

—से बेलीक होना, सु पथभ्रष्ट (वि) भू,
रुद्धि त्वन् (स्वा प अ)।

लीख, स स्त्री (स लीखा) लिखा, सूनाट,
लि(स्त्री)का, लिख्य।

लीचद, वि (देश) अल्प, मद, मंथर
२ सलग्नशील, दृढप्रादिन् ३ कृपण, वर्ये।

—पन, स पु, आन्त्य, कापण्य, सलग्न
शीलता।

लीची, स स्त्री (चीनी-लीचू) अलीविका,
फलभेद।

लीहर, स पु (अ) दे 'नेता'।

लीह, स स्त्री (देश) (गजाभादीना) अव
स्वर, उच्चार, शमल, पुरीष, पलम्।

लीर, वि (स) लवप्राप्त, समाविष्ट, व्याप्त
२ न मय, नि भग्न, आसक्त, तद्वगतविच,
नरत, व्याप्त पर, परायण। ३ द्रवीभूत
४ निरोहित, दुःख।

लीनता, सं स्त्री (स) लमयता, तत्परता,
निभग्नता, आसक्ति (स्त्री)।

लीपन, स पु (स लपन) दे 'लिपाइ'(१)।

लीपना, कि स (स लेपन) अनु-प्र-वि,
'न्य (हु प अ) २ दिह (अ उ अ),

उपनह् (दि प अ), अज (रु प दे)।
स पु, अनुपवि, लेप-लेपन, उपनाहन,
उपदेहनम्।

—पोतना, कि स, शुष् (प्रे), सस्क।

लीपनेवाला, स पु, लेपक, पलगड,
२ उपदेहक।

लीपा हुआ, वि, प्र-वि, लिप्त, दिग्ध, अक्त।

लोमू, सं पु (का) दे 'निम्'।

लीला, सं स्त्री (सं) क्रीडा, केलि (स्त्री),
खेला, खेलन, वर्दन, क्रीडन २ विहार,
विनोद, रजन ३ शृङ्गारभाववैष्टा, विलास,
काम, क्रीडा-केलि (स्त्री) ४ हावभेद (सा)
५ विचित्रव्यापार, रहस्यकृत्य ६ चरित्रा
भिनय (उ रामलीला इ)।

—गृह, स पु (स न) विलास-क्रीडा,
चवनम्।

—पुरुषोत्तम, स पु (स) श्रीकृष्ण।

—स्थल, सं पु (स न) क्रीडाभूमि (स्त्री)।

लीलावती, वि स्त्री (स) विलासिनी।
सं स्त्री (स) भास्कराचार्यभाष्या २ गणित-
ग्रन्थविशेष (३४) रागिनी उदो, भेद।

लुगी, स स्त्री (दि लग) निष्कण्ड,
शाटी पौरिका २ खेलाभोग प, चित्रशिरो
देहनम्।

लुचन, स पु (स न) उत्पादन, उद्धरण,
उत्कृषण, २ पृथक् करण, अग्रनयन ३ कतन
धेदनम्।

लुज जा, वि (स लुचन) करचरणविहीन,
अपांग, व्यग, विरल, विकलांग, श्लोण। सं-
पु, स्थाणु भ्रुव, शकु अपत्रपादप।

लुठक, स पु (स) लुटा(ठा)क, दे 'लुटेरा'।

लुठन, स पु (स न) अपहरण, मोषण, दे-
'लुटना' (सं पु)।

लुंड', सं पु (सं) और, तस्तर।

लुड, स पु (सं रुड-ड) कथ।

—मुड, वि (सं रुड+मुड) दे 'लुज' वि
तथा सं पु २ पोडूनीवत् व्यवतिन।

लुडा, वि (स रुड) दे 'लुडरा'।

लुआदी, सं स्त्री (सं उल्ना+वाधं)
अलात, उल्ना, प्रदीपराजम।

लुआव, सं पु (अ) संलग्नशील, कल्मा-
२ लान, स्थिनी।

—दार, वि (अ + क्रा) सलग्नशील, दे 'लसदार'।

लुक, सं पु (सं लोक >) बुक्कुम (आ निदा) २ आला।

लुकना, कि अ (स लुक् = लोप >) दे 'टिपना'।

—लुकटिपकर, मु, निमृत्, रहमि, रह (सव अन्व)।

लुकमा, स पु (अ) कवल, घास, गुड्ड।

लुकमान, स पु (अ) प्राचीनो वैव विशेष।

—के पाप दवा नहीं, मु, असाध्य-अप्रति कार्य-निरुपाय, रोग-व्याधि-नामय।

—को हिम्मत मिखाना, मु, प्राणाय प्रशा दा (लु उ अ), चतुरमपि चातुर्यं शिष्य (प्रे)।

लुकाट, स पु (स लकु(क)व) (इश) भिक्व, शूर, कार्य, इदवल्कल, वट्ट। २ (फल) लकड़कुर्व, शूर इ।

लुकाना, कि स (हि लुकना) व 'पिपना' के प्रे रूप।

लुगदी, सं स्त्री (देश) आर्द्रगोलक-कर्म।

लुगाई, स स्त्री (हि लोभ) नारा २ पत्नी।

लुचपन, सं पु (हि लुचा) लपटना, बामुहता २ दुबल, दुराचार, दौर्जन्यम्।

लुचा, स पु (हि लुचकना, स लुचन से) लुचक, अपहारक, दुष्ट, दुराचारिण, कुपय गामिन् २ लपट, कामुक इ सुद्र, दुष्ट, निर्लज्ज [लुचा (स्त्री)]।

लुची, स स्त्री (सं चूर्णिक) पक्वान्मद।

लुटना, कि अ, व 'लटना' के कर्म के रूप।

लुटवाना, कि स व 'लटना' के प्रे रूप।

लुदाना, कि म (हि लटना) व 'लटना' के प्रे रूप। २ अमित व्यय् (लु), अप व्यय्-अतिव्ययक अपव्यय् (लु) इ मूल्य विना दा ४ मुष्टिभि परिणिप् (लु प अ) पर्यम् (दि प से)। सं पु, अप-जति अग्नि-भ्यव २ मुषा विशेष।

लुटानेवाला, स पु, अपव्यविन्, विशेषिन्।

लुगार, वि (हि लुगाना) अप-अति वृथा, व्यभिद, मुचदस्त, अधनाशिद्।

लुटिया, सं स्त्री (हि लोटा) लट्टनमट्ट।

—लुवाना, मु, अत्मान न्यनरु (प्रे)।

लुटेरा, स पु (हि लटना) मागतस्कर, इठमोषन, पाटघर, परिपविन्, लुट(दा, ठ)क २ वचन, प्रतारक।

लुडकना, लुडना, कि अ (स लुटन) वि लुट् (लु प से), विलुट् (आ दि प से) २ लु (आ प अ), बहिपत् निर्गल् (आ प से), नि लुट् (आ प अ)। सं पु वि, लुटन-लोटन २ बहि पतन, निगलन, च्यवनम्।

लुडकाना, लुडाना, कि स, व 'लुडकना' के प्रे रूप।

लुडियाना, कि स (हि लोडिया) वलिका धार तिब (दि प से)।

लुतरा, म पु (देश) परोपनिदक, विशुन, कण्डसाधक। वर्णोप २ अपहारक, कुपे ध्व। [लुगरी (स्त्री)]।

लुत्क, म पु (अ) आनद, मोद २ रम, आ, स्वाद इ उचमता ४ कृपा ५ रोचकता।

लु(लो)नाई, म स्त्री (हि लोना) दे 'लवण्य'(२)।

लुपरी-झों, सं स्त्री (स लोप >) दे 'लिपदी' २ द्रवप्राय भक्ष्य, लम्बिका।

लुल, वि (स) गुप, प्रच्छन्न, निमृत् २ अत्राहत, निरोभूत, अदृष्ट इ नष्ट, भ्रस्त। स पु, लुप्त, लौघनम्।

लुल्य, वि (म) गृध्नु, गर्दन, दे 'लोमी'। २ मुग्ध, मोहित, हत। सं पु, दे 'लुब्धक'।

लुल्यक, स पु (म) व्याध, दे. 'शिखारी' २ लपट इ गृध्नु।

लुल्यलुबाव, म पु (अ) तत्त्व, सार, साराध २ दे 'गुरा'।

लुभाना, कि अ (हि लोभ) विलुम् (प्रे), दुराचारे-कुमार्गे प्रवृत्त (प्रे) २ वि, मुह (प्रे), प्रनुभ (प्रे) इ मन्, आहृष् (आ प अ)। कि अ, दे 'रीझना'।

लुहडा, स पु (स लोहड्डी) *अयस्वाही।

लुहा(हं)गी, स स्त्री (स लोहा >) *गौडागी, लोहमुली यष्टी टि (स्त्री)।

लुहार, स पु (सं लो(लौ)हार) अयस्कार, व्योकर, कमार, कमकार (लुहारिन स्त्री)।

लुहारी, स स्त्री (हि लुहार) लो(लौ)-हारी,

अपस्वारी २ लोहकारव्यवसाय, कर्मारता, अव शिल्पम् ।

लू, स स्त्री (हि लून) पश्चात्, उष्णानिल तप्तपवन ।

—चलना, कि अ, उष्णानिल वा(अ प अ) ।

—मारना या लगना, लु, पमवातेन व्यथ (भ्वा आ से) ।

लूक, स स्त्री (म लोक >) ज्वाला २ दे तुआठी ३ दे 'ख' ४ वल्का ।

लूट, म स्त्री (हि लूटना) वि लुंठ(ठ)न, बलात् अपहरण मोक्षण, लुटाठा, लुठित, लुगी ठी टि ठि (स्त्री) २ अन्याय-व्यवहार ३ लोन, लोन लोप्यत्री, लोय-अपहृत लुठित, धन, लुपम् ।

—का माल, सं पु, दे 'लुट' (३) ।

—खसोट घाट, स स्त्री लुठनध्वसन, लुठालु ठि (न) ।

—खूट, मार, स स्त्री मोक्षार्हिसन लुठन मारणं लुठामारणम् ।

—पढना या मचना, कि अ, व 'लूटना' के कर्म के रूप ।

—सचाना, कि म, दे 'लूटना' ।

लूटना, कि म (मं लुठन) वि लुंठ-लुठ (भ्वा ष मे, लु) लुट (भ्वा षि प से), बलात् अपहृ (भ्वा प अ), प्रसङ्ग मुष् (क प से) २ लुर (लु) मुष्, अपहृ ३ वि ध्रम नश् (प्रे) ४ छलेन अन्यायेन वा आदा (लु आ अ)-हृ ५ अत्यधिक अनुचिन्, मूल्य आदा ६ मुह (प्रे), वशी कृ मनो ह । सं पु, दे 'लूट' ।

लूटने योग्य, वि, लुठनीय, लुठितव्य ।

लूटनेवाला, म पु, दे 'लूटेता' ।

लूटा हुआ, वि, लुटि(ठि)न, बलात् अपहृत मुषित ।

लूना, स स्त्री (सं) मर्कटक, ऊर्णनाभि, दे 'मवड़ी' २ पिपीलिका ३ मर्कटकमूल स्पर्शर स्वप्नोग ।

लूती, मं स्त्री, दे 'तुआठी' ।

—लगाना, मु, कलई जन (प्रे), दे 'सुगरी करना' ।

लून, वि (सं) छिन्न, कृपा ।

लून, मं पुं (सं स्वर्ण) दे 'नमन' ।

लूनिया, वि (हि लून) स्वर्ण धार । स पु, स्वर्णकार ।

लूम, स पु (स न) लागूल, पुञ्जम् ।

लूमडी, मं स्त्री, दे 'लोमडी' ।

लूला, वि (स लून >) छिन्न-लून पाणि-हस्त-कर २ अपाण, अंग इ असक्त, असमर्थ । लूडी, स स्त्री (स लूड >) बद्धमल, विद्या वति (स्त्री) २ दे 'मैगनी' ।

लूस, म पुं (अ) वीक्षम् ।

—मैरिनफाइड लूस, बृहद्दर्शकवीक्षम् ।

लूँहवा, सं पु (देश) पशु वृह-यूथ कुल समज ।

ले, लेकर, अव्य (हि लेना) आरभ्य, प्रभृति, आ, (पचमी से भी उ, गाव से ले(कर) = आग्रामात्, ग्राम द कल से ले(कर) = थ (प्रभृति आरभ्य) २ गृहीत्वा, आदाय ।

लेई, स स्त्री (मं लेप >) सङ्केपकलेप, २ मुषेष्टकचूर्णलेप ।

लेइ, म स्त्री (मं लेइ) अक्नेह, दे २ लक्षिका, द्रवप्रापकत्वव ।

लेकिन, अव्य (ज) क्लिप्त, परतु २ तथापि ।

—अगर, अव्य (अ + का) निनु, यदि ।

लेक्चर, मं पु (अ) व्याख्या, भाषण २ प्रपाठ, अध्यापनम् ।

—वाङ्गी, मं स्त्री (अ + का) व्याख्यान प्रालुब्धम् ।

—शाहना, मु, सोस्ताह व्याख्या (अ प अ) अथवा अधि इ (प्रे), अध्यापयति ।

लेक्चरार, सं पुं (अं लेक्चरर) व्याख्यात, उपदेशक, वक्ता २ अध्यापक, उपाध्याय ।

लेक्टोमीटर, सं पुं (अं) दुग्धमापकम् ।

लेर, सं पुं (सं) लिपी(वी)पि (नि) (स्त्री) २ अक्षित-अक्षिबद्ध-विषय-वार्ता ३ प्रस्ताव, निरूप ४ दे 'लिखार' (१-३) । ५ गणन, संकल्पनम् ।

लेरक, सं पु (मं) प्रवक्ता, पुराण-लेखन रचयित् प्रणेता २ लिपि(पी-वी) कार, मनिषण्य, पंजीगर, लिपिह, नापिन ।

लेखन, स पु (मं न) दे 'निय इ'(१) । २ लेखन-व्यवस्था ३ गणन, संख्यान ४ भूजत्वच् (स्त्री) ।

लेखनी, मं स्त्री (सं) अक्षर-वर्ण, तूनी

लिना कल्पन, चित्रण, कलाश्रय, बलिगा, शम्भरी ।

लेखा, म पु (ले ख) नकलन, मन्थन, लेखना २ अयनूल्य निरुत्पन्ना अनुमान २ सामान्य-देयादेय, विवरण ४ अनुमान विवर ।

—डालना, मु, अयव्ययपत्रिकादान ननन् (न) लिख (त प मे) ।

—पूरा या साफ करना, मु, अवशेष मुष (प्रे) ।

लेखिका, म स्त्री (स) ग्रथकर्त्री, पुस्तक प्रणेत्री २ लिपिगारी, लिपिज्ञा ।

लेखे, क्रि वि (हि लेखा) विचारणे २ नक्षि ।

लेख्य, वि (म) लि(ले)खितव्य, ले(लि)खनह, ले(लि)खनीय । स पु (स न) लिखित लिखित-विषय, लेख २ दे 'दत्तवेन' ।

लेखिस्लेखि काउमिल, म स्त्री (अ) अयव्ययपत्रिका ।

लेट, नि (अ) चिरविन, विलिखित, कल सम्य अनीन ।

लेट, म स्त्री (देश) २ 'ल' ।

लेटना, क्रि अ (हि लेटना) सविदा (तु प अ), शी (ज आ मे) २ विद्यन् (दि प से) ३ दे 'भरना' । म पु, संविद्य शन, शननम् ।

लेटनेमाला, स पु, मवेदोच्छुक्त शयानु ।

लेट, न पु (ले) (अ) पत्र, लेख, लेख्य, पत्रिक, पत्री पत्रक लिखित, मदेसपत्र । २ अन्तर, वार्ता, मी मातृका अभिनिष्ठान ।

—वाक्स, स पु (अ) पत्रवेष्टिका ।

लेटाना, क्रि स, व 'लेटना' के प्रे रूप ।

लेटा हुआ, वि, मविष्ट, शयान, शयित ।

लेट, स पु (अ) सीस, मीमकन्, दे 'सीमा' ।

लेटा, स स्त्री (अ) महिला, कुलाना, आर्या २ नारी, रमणी ३ लडोपाधिधर कन्य पत्नी ।

—डाक्टर, सं स्त्री (अ), चिकित्सा, चिकित्सा जीविनी, चिकित्सिका, रोगहारिणी ।

लेन, स पु (हि लेना) अदान, ग्रहण, धारण २ दे 'लहना' (१-२) ।

—दार, स पु (दि + का) उत्तमार्ग, कण्ठ, महानन ।

—देन, म पु (हि) आदानप्रदान, व्यवहार २ वीनीय, वृद्धिजीवन-विरा ।

लेना, क्रि न (म लभन) आदा (तु आ अ) प्रनिश्च (तु प मे), प्रतिगति, ग्रह (क प मे) २ अधिगम् (भ्वा प अ) जान् (प्रे) प्राप् (स्वा प अ), लभ (भ्वा आ अ) ३ धृ (भ्वा प अ), नु) अव-आ-लव (भ्वा आ मे) ग्रह ४ त्रि (भ्वा प अ) अभिभू (भ्वा प मे) वशीकृ ५ क्री (कृ उ अ) ६ क्षण ग्रह ७ अके-क्रीडे निधा (जु उ अ) ८ स्वी-अगी-कृ प्रतिपद् (दि आ अ) ९ प्रत्युद्-गम्-वन (भ्वा प से) भा (अ प अ) मत्कृ समन्-सभू (प्रे) १० काणभार स्वीकृ ११ रुचि (स्वा प अ) समग्रह (क प मे) १२ उपहस (भ्वा प से), व्यग्योक्तिभि लज्ज (प्रे) । स पु, आदान ग्रहण, प्रतिग्रह, अधिगमन, प्रायण आस'दान, आलवन, धारण, आदान, अगीकरण वशीकरण, सचय-यन, क्रयण, क्रय इ ।

लेने योग्य, वि (स) आदेय, ग्राह्य, ग्रहीतव्य, प्राप्य, आस'दनीय क्रय, क्रयणीय इ ।

लेने वाला स पु, अदातृ, गृहीतृ, अधिगतृ, आस'दवितृ, अगीकृतृ, क्रेतृ, ग्राहक ।

लेना हुआ, वि (स) आत्त, आदत्त, गृहीत, प्राप्त अधिगत, धृत, अगीकृत, वशीकृत, क्रीत इ ।

ले अना, मु, दे ३ 'लाना' ।

ले च ना या ले जाना, मु, अदाय गन् २ आत्मना सह नी (भ्वा प अ) ।

ले चुबना, मु, परमपि आत्मना सह क्षे अवमद-नरा (प्र) ।

ले देवर, मु, सर्वे मवलय्य २ कुक्षेण, कथनपि ।

लेना एक न देना दो, मु, न कोऽप्यर्थं, न निनपि प्रयोचनम् ।

लेना देना मु, दानादान, आदानप्रदान २ वीनीय, वृद्धिजीवनम् ।

लेने के देने पडना, मु, भद्रस्याभद्र फल, इष्टाशायामनिष्टप्रसंग ।

ले मागना, मु, सह नीत्वा पलाय् (भ्वा आ से), अपहृ (भ्वा उ अ) ।

- ले भरना, सु दे 'ले डबना' ।
 लेन्स, स पु (अ) कच ।
 लेप, स पु (म) अभि अजन, उपदेह, समा
 लभ, उपताह, प्रलेपपट्टिका २ लेपन, सुधा
 ३ लेपस्तर ४ उद्गतन, दे 'उवर्तन' ५ सपर्क,
 सम्बन्ध ।
 —चढ़ाना, कि स, दे 'लीपन' ।
 लेपक, स पु (स) लेपित्, लेपका, पल
 गट, लेप्यकृत ।
 लेपन, सं पु (सं न) दे 'लिया' (१) ।
 लेपना, कि स, दे 'लीपना' ।
 लेपालक, स पु (लि) लेना + पालना)
 दत्तक, दे ।
 लेबर, स पु (अ) परि, श्रम, आयाम,
 प्रयाम २ श्रमिक-कर्मकर, वर्ग ।
 —पार्टी, स स्त्री (अं) श्रमिज्दल लम् ।
 —यूनियन, स स्त्री (अ) श्रमिक-संघ, संघ-
 समाज मन्ग ।
 लेबुल, स पु (अ) लेपपत्रम् ।
 लेबोरेटरी, सं स्त्री (अ) प्रयोगशाला,
 २ रसायनशाला ।
 लेमोनेड, स पु (अ) जबीर पेय पानकम् ।
 लेखा, स पु (सं लेह >) दे 'बछडा' ।
 लेखा, वि (हि) लेना आ, दाह-दायक ।
 —देवा, स पु, आशानप्रदानम् ।
 नाम—, स पु, पुत्र २ दायाद ।
 लेख, स पु (स) दे 'लव' २ लिख, लक्षण
 ३ सवध ४ अलकारभेद (सा) २ अल्प,
 स्तोक ।
 —मात्र, वि (स) अणु-अल्प-मात्र (-त्रा,
 स्त्री स्त्री) ।
 लेम, सं पु, दे 'लामा' (१) ।
 —दार, वि (सि + प्रा) दे 'लसदार' ।
 लेहन, सं पु (सं न) जहवा स्वादन स्व
 दानरसनम् ।
 लेहाजा, वि वि (अ) अत, अतएव ।
 लेहिन, स पु (स) टकण-न, रमशोधन,
 रिहम् ।
 लेह्य, वि (सं) लेहनीय लटव्य । सं पु
 (सं न) दे 'अवन' २ लेहनीयाहार
 ३ अमृतम् ।
 लेन, सं स्त्री, दे 'लान' ।

- लैसम, स पु (अ लाइमॅस) अधिवरण
 अनुहालेप ।
 लेस, स पु (अ लेस) सज्ज, सत्रद, सिद्ध
 २ जालभरण, दे 'जीता' ।
 लेंद, सं पु, दे 'मलमास' ।
 लेंदा, स पु (सं लोट ट) आद्र पिठ
 (-ड)-पन, विलम्बगोल (-ल) लोट (-ट) ।
 लो, अव्य (हि) लो) दृश्यता, प्रेक्ष्यता,
 अवलोक्यता । (केवल इन्हीं स्त्री में) ।
 लोई, स स्त्री (स लोमीव) लोमी, नोशार,
 अ विद्ध ऊर्णयुक् बलभेद ।
 लोई, स स्त्री, दे 'पेटा' (गूधे हुए अटेवा) ।
 लोक, स पु (स) भुवन, भुम्बु स्वरादय
 चतुदशस्थानविशेषा २ जगत् (न), जगती
 विश्व, चरान्तर, मन्दाट, भुवन, विष्टप ३ नि
 आ, बा ४ दिशा, प्रदेश ५ लोक-ना,
 जन-ना ६ समाज ७ प्राणिम् ।
 —कटक, स पु (स) जनपीठक ।
 —तत्र, स पु (सं न) जनप्रधानीभ्रम् ।
 —त्रय, स पु (सं न) त्रिभुवन, त्रैलोक्य,
 त्रिलोकी ।
 —नाथ, स पु (स) भद्रम् (पु) २ विष्णु
 ३ शिव ४ बुद्ध ५ लोनाथ ।
 —पति, स पु (स) मन्त्र (पु) २ नृप
 ३ लोकपाल ।
 —परलोक, स पु (सं स्त्री) उभो लोकौ,
 लोकद्वयम् ।
 —पाल, स पु (सं) दिक्पाल २ नृप ।
 —प्रवाद, स पु (सं) जन-लोक-स्व-श्रुति-
 (स्त्री)-प्रवाद ।
 —मयांदा, सं स्त्री (सं) लोक, आचार-
 व्यवहार, जगदीति (स्त्री) ।
 —यात्रा, सं स्त्री (सं) जीवन, प्राणधारण ।
 —विभ्रत, वि (सं) जगद्भ्रतान् । २ व्यव
 हार, लैरिगद्वयानि (न वट्ट) ।
 —श्रुति, सं स्त्री (सं) दे 'लोनाप्रवाद' ।
 —रुद्र, स पु (सं) राहुजा, राजनं
 प्रगदन् २ लोहदिवेणा ।
 लोकान्तर, सं पु (सं न) परप्रेत-लोक ।
 लोकाचार, स पु (सं) जगदीति-रुद्रि
 (स्त्री) शैरि, लोक, मयांदा-व्यवहार ।

लोकाट, स पु (चीनी तु + क्) लवक, चैनन् ।

लोकालोका, म पु (न) चक्रवाल पवन विशेष (पुराण) ।

लोकैषणा, स स्त्री (स) अन्त्युत्थमिच्छा = स्वाल्पिणा ।

लोकोक्ति, स स्त्री (न) आभरण, जनवद लौकिक न्याय २ अलंकारभेद (लो०) ।

लोकोत्तर, लव (स) अलौकिक, अमानुष अपाधक लोसानिवापिन, दिव्य, अति, विलम्बज अदभुत ।

लोग, म पु (म लोक्) लोक या जन ना, मनवा, मनुष्या, नरा, मानुषा, मत्वा, मनुष्य (म्ब वटु) ।

लोचो, स स्त्री (हि लचक्) दे 'लचक २ चोमन्त, मृदुता ।

लोचो, स पु [स रचि (स्त्री)] अभि हास, इच्छा ।

लोचन, म पु (स न) नयन, नेत्रम्, दे 'लोच' ।

लोठ, स स्त्री (हि लोठ्ना) छु(लो), छन, लोटन, वेल्न, तुगा, तुडा, लोट ।

—पोट, वि, तुष्टि(ठि)न, बल्लिव, स्थलिन २ मुष, वदभद, अनुरागिन् ३ वि, आहुल ४ अत्यस्त, विषयरेन ।

—ज्ञाना, मु, मूर्च्छ (भ्वा प से, नूळ्नि) २ मृ (तु आ अ) ३ विघ्नन् (दि प से) ४ चरितो मुग्धो वा भू ।

—पोट होना, मु, (पाडाणि) वि, छठ (तु प से, भ्वा आ से) २ भाव-अनुराग वध (क प अ), ३ महसा विउत्थ वा मृ (तु आ अ) ।

—होना, मु, अनुरन्-आत्क (वि) भू २ अङ्कुलीभू ।

लोडन, स पु (म न) दे 'लो' २ *लोट नयनो ३ लागलभेद ४ मारकरा ।

लोडना, कि अ (म लोडन) छुट (भ्वा दि प से), छुठ (भ्वा आ से, तु प से) = पदर्व परिहृय (प्रे) ३ अङ्कुल-व्याकुल (वि) भू । स पु तथा भाव, दे 'लो' सं स्त्री ।

लोडा, मं प (हि लोडना) कमढल, दे ।

लोडन, स पु (स न) मयन, आवि लोडनम्, मय ।

लोडित, वि (स) मथिन, आवि-लोडित, व्यापद्वित ।

लोडा, म पु, (म लोट छ >) दे 'बट्टा' ।

लोथ धि, स स्त्री (म लोट छ >) इय दे ।

—पोथ, मु उभि, शिथिल धान-खिन्न ।

लोघडा, म पु (हि लोघ) परलभाम, पि (ड) ।

लोद घ, म स्त्री (स लोघ) (लल) लोघ, रक्त, मार्जन, तिरीट विदुक । (सफेद) सुम्भ, महा शम्भ लोघ, शाका ।

लोन, म पु (स लवण) दे 'नमक' २ भावप्य विशिष्टीन्दयम् ।

लोना, वि (हि लोन) लवण दे 'नमकीन' २ सुन्दर, चारु । स पु, *कुडपमिति, लवा ३ लवणिकुडपस्य भूलि (स्त्री) ।

लोनिया, स पु (हि लोग) दे 'दनिया' । स पु ।

लोप, स पु (स) वि, नास, क्षय, वि, ध्वस ३ अदर्शन, निरोभाव, अतर्धान ३ अभाव, अविपमानता ४ वर्णविनाश- (व्या) ५ विच्छेद, विराम ।

लोप मुद्रा, स स्त्री (स) अगस्त्यमुनिपत्नी, लोप, वरप्रदा, बोशीनकी ।

लोवान, म पु (अ) सुगधिनियासभेद *लोवानम् ।

लोबिया, स पु (स लोभ्य = मूंग) शुभा भिजनक, चप(बेल), चबरा, सुकुमार, शिबिता, दीर्घ, शिम्बीबीज ।

लोभ, स पु (स) परद्रव्याभिलाष, गृध्या, गृध्नता, स्रष्ट, लैत्य, लिप्सा, गर्द, वृष्णा, काशा, रासा, लोडुपता मता, इच्छा, वाडा, मनोरथ, अभिलाष, काम २, कार्पण्य, वदयता ।

लोभित, वि (स) मोहित, आकृष्ट, हतचित्त, दुग्ध, मुग्ध ।

लोभी, वि (स-भिद) गृध्नु, गर्दन, दुग्ध, लोडुप-म, लिप्सु, अभिजातुक, वृष्णाक ।

लोम, स पु (स) लोमन् (न) दे 'रोग' २ लोमूल, पुच्छन् ।

—हर्षण, स पु (म न) रोमाच, दे ।
वि, दे 'रोमहर्षण' ।

लोमङ्, स पु (न लोम >) *मानश,
*लोमङ्, दे 'गीदङ्' ।

लोमङ्गी, स स्त्री (हि लोमङ्) लोमङ्गा,
लोमाङ्गिका, दे गीदङ्गी (संस्कृत मे गीदङ्
लोमङ् तथा गीदङ्गी-लोमङ्गी के लिये समान
शब्दों का ही प्रयोग होना है) ।

लोमङ्ग, स पु (म) ऋषिविशेष २ जेप,
दे 'भेटा' । वि, बहुलोमान्विन, वैशान, वैशिक
२ ऊर्णामय (स्त्री स्त्री), औण (जी स्त्री) ।

—भाजार्, म पु (म) गंधमाजार्, पूतिक,
मूत्रपानन ।

लोरी, स स्त्री (स लोः >) निद्राशयन,
गीतिका ।

—टेना, क्रि म, निद्रा-गीतिमया स्वप् (प्रे) ।

लोः, वि (स) सम्प, कपमान, वेपमान,
धपित, कप २ चंचलचित्त ३ क्षणमयुर, पण,
क्षणिक ४ अस्तक, उत्पटित ।

लोला, स स्त्री (स) ब्रह्मा, रसना २ लक्ष्मी
श्री (स्त्री) ।

लोलुप, वि (स) दे 'लोभी' ।

लोलुपता, स स्त्री, दे 'लोभ' ।

लोशन, स पु (न) ब्रणशालन, धावनीपथ,
*औषधजलम् ।

लोष्ट, स पुं (स पु न) लोष्ट, मृत्तिसाम्युत्,
दन्ति (पु स्त्री) दलनी २ अश्मराहट ।

लोह, सं पु (स लोह ह) लोह, दे 'लोहा'
२ रुषिरं ३ रक्तगण ।

—कात, सं पु (मं) अवस्वान, लोह,
सुवक ।

—कार, सं पु (मं) अयस्कार, दे 'लुहार' ।

—कृष्ट, स पु (स न) लोह, मन्, मडूर,
लोहन, कृष्णचूर्ण, अयो, मन्-रजस (न) ।

—चून,

—चूर, } स पु (म लोहचूर्ण) कान्तशेद ।

—चूर्ण,

—द्रावी, सं पु (मं विन्) लहित, उक्ता
न दे मोहागा' ।

लोहांगी, सं स्त्री (मं लोहांगी) लोहादीर्घ,
यष्टी-दंढ-गुण्ड ।

लोहा, स पुं (सं भेद ह) कृष्ण, अयम्

(न) आयम, काल, कालवस, लौह, अश्म
गिरि मन्, इष्ट, पिष्ट २ अश्म, मन्,
३ लोहमयद्रव्यम् । वि, रक्त, लोहिन
२ अग्नि, इष्ट-वीर्यम् ।

लोहे का, वि, लोह (ही स्त्री), लोहजयो,
मय (स्त्री स्त्री), आयस (मी स्त्री), लोह,
आयस, ।

लोहे का चना, मु, सुदुष्पर वर्मण (न) ।

लोहे के चने चवाना, मुं, सुदुष्पर कम मपर
(प्रे) ।

—गहना या लेना, मु, युष् (दि आ अ)
दे 'लटना' ।

—यजना, मु, युष् प्रकृ (भ्वा आ म) ।

(निमीका)—मानता, मु, (अन्यस्य) प्रमुत्
*स्वीकृ २ विपरा, नि (वर्म) ।

लोहार, म पु (स लोहकार) दे 'लुहार' ।

—श्री स्वाही, स स्त्री, दे, 'हीराक्रीम' ।

लोहित, वि (स) रक्त, शोण । म पु (मं)
मगन्ग्रह, कुन, भौम २ रक्तवण । (स न)
रक्त, मरिचम् ।

—चदन, म पु, वैमर-र, दशमीरन्,
कुकुमम् ।

—नयन, वि, (सं) रक्त लोहित, नेत्र-नयन
रक्षण, सुपित, मृद्ग ।

—दातपत्र, सं पु, वीतनद, रक्त, उत्प
नीरजम् ।

लोहिया, सं (हि लोहा) लोहपण्य
विनेन, लोहविक्रयिन् २ लोहितपत्रं ३ लोह
गुल्फा ।

लोहू, म पु (स लोहित) दे 'रक्त' तथा 'लहू' ।
लौ, अव्य (हि ल्य) दे 'ल' २ महार,
सुय ।

लौग, सं पु (स लवग) देवकुसुमं, श्री,
प्रमद पुष्प मक्ष, स्वगर्भ, दिव्यं, शाररं, स्व
२ स्वग (धानभूषणभेद) ।

लौङ्ग, सं पु (हि लोना) (लावण्यविशिष्ट)
काल-दायक । वि, अवाप, अशु २ चपल,
चरण ।

—पन, सं पु, काल्यं २ चारण्यम् ।

लौङ्गीटिया, स स्त्री (हि लौङ्ग) वन्या,
कुमारी २ पुत्री ३ दामी ।

लौङ्ग्याङ्ग, वि (हि न-या) पुमेषुनशक्तिम् ।

लौटिबाज़ी, नं स्त्री (हि + का) पुनैशुनम् ।
 लौ, म स्त्री (हि लपट) कौल ला अग्नि
 ज्वाला(ल)ज्वाला, विद्या, शिष्या २ दीपशिखा ।
 लौ, म स्त्री (हि लग) अभिलाष राग
 २ विचमनो, वृत्ति (स्त्री) ३ कामना, वाछा ।
 —लगाना, क्रि अ, उच्यत (वि) भू
 २ (भक्त्यादिपु) लीन-मग्न-निरत(वि) भू ।
 —लगाना, क्रि म, सतत अभिलप् (स्वा प
 ने) २ आत्मान भक्त्यादिपु निमस्त्र-आसन्
 (द्वे) ३ आत्रे- (मे) ।
 —लीन, वि (स) मग्न, आसक्त, निरत ।

लौकिक, वि (म) सामरिक, ण्हिक,
 प्रपञ्चिक, लौक्य २ व्यावहारिक आचारिक ।
 लौकी, स स्त्री (स लाघ-वू दोनो स्त्री)
 अलापु वू (स्त्री) दे वदद् ।
 लौटना, क्रि अ (हि उलटना) दे वापस
 आना' तथा 'वापस जाना' ।
 लौटफेर, म पु (हि लौटना + फेरना) वृद्ध
 महा, परिवत परिवर्तनम् ।
 लौटाना क्रि स, दे 'वापस करना' ।
 लौट, म पु (म न) दे 'लोट' (१) । वि,
 दे 'लोहे वा' ('लोहा' में) ।

व

व, देवनागरीवर्णमालाया ऊर्ध्वनिशो व्यजनवर्ण,
 वकार ।
 वक्र, वि (स) अराल, वृत्तित, कुवित, वक्र,
 भ्रान्त, निहा, वेदित, आमुग्न, कुटिल । स
 पु (स) नदीवज्रम् ।
 वक्रिम, वि (म) श्वर-विधित, -अराल-
 वक्र-वृत्तित ।
 वग, स पु [स वगा (पु बहु)] वंगप्रति
 (=वगाल) । (स न) वपु, वपु (न),
 रग, मागन, वस्तीर २ सीसमक सीमपत्रम् ।
 —भस्म, स ए [म भस्मन् (ज)] रगभस्मन्
 (न) ।
 वगन, स पु, दे 'वैगन' ।
 वचक, वि तथा स पु (म) वपटित्,
 प्रतारव (, धृप ()) ।
 वचना, सं स्त्री (स) वचन, प्रतारणणा,
 मया, वपट, कौत्र, वचथ ।
 वचित्त, वि (सं) प्रतारित, विप्रलब्ध
 २ हीन, रहित ।
 वदन, स पु (स न) वदना, प्रणाम,
 प्रणति (स्त्री) नमस्कार २ पूजा, वर्ना,
 आराधना २ स्तुति-स्तुति (स्त्री) ।
 —वार, स स्त्री (स वदनमाख्य) वदनमाला
 निवा, तोरणधन (स्त्री) ।
 वदना, स स्त्री (म) दे 'वदन' (१३) ।
 वदनीय, वि (स) नमस्य, वध २ पूज्य,
 अर्चनीय ३ स्तुत्य, नाना, ल्य ।
 वद्री, रु पु (स िन्) स्तनिपाठक, मा(म)
 गध, चरण, वदथ २ वारालुप्त, वदीदि
 (स्त्री) ।

—गृह, मं पु (सं न) कारा, कारा, गृह
 गारम् ।
 वंघ, वि (स) दे 'वदनीय' ।
 वंघ्या, स स्त्री (स) दे 'वघ्या' ।
 वश, स प (म) कुर्व, अन्वय, अन्ववाय,
 गौत्र, अभिजन २ चाति (स्त्री), वग
 ३ बुद्धव, गृहजन, पुत्रकल्पादीनि (न
 बहु) ४ वेणु, वृद्धमथि, दे 'वाम' ।
 ५ मुरली, वशी ६ पृष्ठास्थि (न), पृष्ठवश
 ७ भुजादीना श्कारिण (न) ।
 —ज, स पु (सं) पुत्र २ सनेन ।
 —धर, सं पु (म) वशन, मन्ति (स्त्री) ।
 —लोचन, मं पु [स लो(रो)वना] वशशकरा,
 वशन-जा, वाशी शुभा ।
 —हीन, वि (स) निर्वश २ अपुत्र ।
 वंशानुक्रम, म पु (म) वश, अन्वय क्रम,
 परम्परा (स्त्री) अवलि वितति ।
 वंशावली, म स्त्री [स लीन् (स्त्री)] वश,
 क्रम-श्रेणी परंपरा ।
 वशी, स स्त्री (स) वशिष्ठा, मुरली दे ।
 —धर, स पु (स) मुरलीधर, श्रीकृष्ण
 व, अव्य (का) च, दे 'और' ।
 वक स पु (म) दे 'वगला' २ राक्षस
 विरोध ।
 —वृत्ति, स स्त्री (अ) विडालवृत्ति, दन ।
 वकालत, स स्त्री (अ) अभिभाषकतात्व,
 वाक्कीलत्व, व्यवहारदर्शकतात्व २ परंप्राति
 निध्य, परवायसाधकत्व ३ दूतकर्मन् (न)
 ४ परपशुमडनम् ।

—करना, क् अ, परिपङ्क समर्थ (चु)
० अभिभाषक शक्ति लपञ्ज (भ्वा प से) ।

—नामा, स पु (अ + षा) अभिभाषकना
पत्रम् ।

वकील, स पु (अ) अभिभाषक, व्यवहार
दशक, वाक्कील, पक्षवादिन् ० रात्रि,
दूत ३ प्रतिनिधि, प्रतिद्वन्द्व ४ पररक्ष
पोषक ।

वकुल, स पु (स) दे 'वकुल' ।

वक्त्र, स पु (अ) शान ० वाट (स्त्री) ।

वे—, वि (फा + अ) निर्बुद्धि ।

वक्ष, स पु (अ) समय, बाल २ अवनत
३ अवराज ४ कर्तु ५ शृङ्खला ।

—की चीज, स स्त्री, बालानकृते रात्रि ।

—वे वक्ष, वि वि कालजाले वा, समयेऽ
समये वा ।

—वाटना, मु, वेन केन प्रसरेण जाल या
(प्रे यापयति) २ मनो विनुद (प्रे) ।

—पडना, मु, आपद आपत् (भ्वा प से),
उपनम् (भ्वा प अ) ।

वक्त्र फौवतन, वि वि (अ) कदा यदा,
यदा यदा २ यथाकालम् ।

वक्त्रव्य, वि (स) कथनीय, वचनीय ० हीन,
कस्तिन । म पु (स न) कथन, वचन
२ व्याख्यानम् ।

वक्त्रा, म पु (स वक्त्र) वाग्मिन्, वक्त्रपट्ट
२ श्वायान्त, उपदेशक ३ कथ(धि)क ।

वक्त्रता, सं स्त्री (स) वक्त्रत्व, वाग्मिना,
वाक्पाटव, भाषणशीलक ० श्वाख्यान,
भाषा, कथनम् ।

वक्त्र, सं पुं (म न) मुख आस्थ, लपनं,
वदनम् २ चक्षु—चू (स्त्री) ३ श्मशानम्,
प्रलम्बसरम् ४ दायाग्रम् ५ कावारम्भ
६ परिधानभेद ।

—न, म पु (सं) श्रावण, विप्र ० दत्त,
दशन, रदन, रानन ।

—तुड, सं पु (म) गणेश, गजवक्त्र ।

—शोधन, सं पु (म न) मुखशुद्धि (स्त्री)
० निडुके, जंजीरम् ३ मातुर्लिंगम् ।

वक्त्र, म पुं (अ) परोपकाराय दान
२ धर्माय उत्सृष्टा संघ (स्त्री) ।

—नामा, सं पुं (अ + का) दानपत्रम् ।

वक्त्रा, म पु (अ) अवराज ० उद्योग
विश्रान्ति (स्त्री) ।

वक्त्र, वि (स) दे 'वक्त्र' २ छलिन, कपटिन,
धूर्त ।। स पु (अ) शरीरेश्वर २ प्रगल्भ, भीम ।
(म न) नदीवक्त्र, वक्त्र ।

—गामी, वि (स) कुम्भिकादि २ शठ, कुटिल ।

—तुड, स पु (स) गणेश २ शुक ।

वक्त्रता, म स्त्री (स) जिह्वता, आनति,
(स्त्री), वीर्य २ छल, कपट, शठ्यम् ।

वक्त्रोक्ति, स स्त्री (स) काकुक्ति (स्त्री)
२ शब्दालंकारभेद (सा) ३ चमत्कृत
कुटिल उक्ति (स्त्री) ।

वक्ष स्थल, सं पु (स न) उरस्-वक्षस्
(न), अंड, उत्सर्ग, उर स्थलम् ।

वर्ग रह, जन्व (अ) भादि, प्रभृति ।

वचन, स पु (स न) भाषा, सरस्वती,
वाणी दे २ उक्ति (स्त्री), कथन भाषण,
वाक्य ३ परस्वारिवीथक शब्दरूपभेद (व्या)
४ प्रतिज्ञा, संगर ।

वज्रह, स स्त्री (अ) कारण, हेतु ।

वज्रन, स पु (अ) भार, शुक्लम् ।

वज्रनी, वि (अ वजन) भारवत्, गुरु
२ मान्य प्रभावशालिन् ।

वजा, स स्त्री (अ वज्र) रचना २ आकृति
(स्त्री) ३ आचार, व्यवहार ४ दशा
५ रीति (स्त्री) ।

वज्रास्त, स स्त्री (अ) माचिन्व्य, अमात्यत्वं,
मन्त्रित्वम् ।

वज्रीका, म पु (अ) (द्वाद्य-वृत्ति-भृति (स्त्री) ।

वज्रीर, म पु (अ) अमात्य, सचिव,
मन्त्रिन्, मन्त्रधर, मन्त्रज्ञ, धी-बुद्धि, नदाय ।

वज्रीरी, सं स्त्री, दे 'वज्रास्त' ।

वज्र, सं पु (अ) प्राथनाया पूर्वं अंग
प्रधानत्वं (इस्लाम), अश्रुस्पर्श ।

वज्रद, सं पुं (अ) अमिर्ल, मत्ता ० शरीर
३ सृष्टि (स्त्री) ४ अभिव्यक्ति (स्त्री) ।

वज्र, म पु (म पुं न) बुद्धि, पवि,
अज्ञान (पु स्त्री), दंभोज, हृदिनी,
शतपार, अश्रुत्व, शक, विरिक्त्व २ हीर
३, हीरक, उत्तं २ विपुल (स्त्री) । वि,
अग्नि, वृद्ध-संज्ञक-कीकम-वठिन, दुर्मेघ २ धीर,
भीषण ।

—घर, म पु (स) इद्र, वजिन, वज
पणि बाहु-मुष्टि ।
—पात, स पु (स) बज्राघन ।
—मय, वि (स) दे वज्र' वि (१) ।
—हृदय, वि (स) पापाणहृदय, निष्
रण, निदय ।
वट, म पु (स) न्यग्रोध, वृक्षनाथ, रक्त
फल, क्षीरिन, ऋत्न, अवरोडा, मह जाय ।
वटी, स स्त्री (स) गुली-लिङ्गा, वटिका,
निम्नली, दे 'गोली' ।
वटु, } स पु (स) बालक, माणवद
वटुक, } २ वॉन्, ब्रह्मचरिन् ।
वडी, स स्त्री (स वदो) मापवटी ।
वणिक, म पु (स वजिन) पण्डितव
त्रयविक्रयिक २ वैश्य ।
वतन, स पु (अ) जम भू भूमि (दान
(स्त्री) स्वदेश २ निवासस्थान ३ जन
स्थानम् ।
वतीरा, म पु (अ) प्रधा, रीति (स्त्री)
२ आचार-वृत्तम् ।
वन्स, म पु (स) गोशिवा, तर्जक दोष
षव, तनुभ २ सिमु, बालक ।
वन्मवर, स पु (म) दन्व, दुर्दान, गि ।
पसवरी, म स्त्री (म) विहयपी गौ (स्त्री) ।
वस्मर, स पु (म) अय्य, हयन, वयन् ।
वस्सल, वि (स) अपत्यानुरागीन् सत न
स्नेहिन्, पुत्रप्रेमिन् २ स्नेहिन्, प्रेमिन् ।
वस्सलता, स स्त्री (स) (सन्नादिवत्स्य)
अनुरा-स्नेह ।
वदन, स पु (म न) मुष्ट, आननम् ।
वदान्य, वि (स) बहुदद, दानशाल, उदार
२ बलुवाच मधुरभाविन् ।
वदाम, स पु, दे 'वदाम' ।
वदावद्, वि (म) वाचल, वाचाट ।
वद, स पु (स) पान इनन, हत्वा,
विशसन, प्रमाथ, सहार ।
वधक, स पु (मं) नरपान्त्र, हट, हिम्ब
२ व्याध, शात्रुनिक ३ मृत्यु ।
वधू, वधूगी, स स्त्री (स) नवोडा, नववधू,
पत्नीगृहीता २ पत्नी ३ पुत्रवधू ।
वध्य, वि (म) बवाहं, दीर्घच्छेद्य, हतव्य ।
वन, स पु (स न) अरण्य, विपिन, अग्नी,

वनन रहन, द(दा व, बालार २ वमिया
३ नल्म् ।
—चर म पु (म) वन, चरिन् विहारिन्
२ वन्द्य पशु मनुष्य ।
—माली, म पु (स) शीट्टा २ वनपुत्र
मालाधारिन् ।
—राज, म पु (स) सिंह ।
—वाम, म पु (स) विपिनवसति (स्त्री) ।
—वासी, स पु (म मिन्) आटवित्र,
वनेचर वनोक्त ननिन् ।
—स्थली स स्त्री (स) वाननभूमि,
अरण्यप्रदेश ।
वनस्पति, म स्त्री (स प) पुष्पहोन फलि
वृक्ष (उ बट, पीपल आदि) २ वृक्ष
पात्र ३ वट, यग्रोध ।
—शास्त्र, म पु (स न) वनस्पतिविज्ञानम् ।
वनिता, स स्त्री (मं) नारी, रमणी
२ प्रिया, कान्ता ।
वनी, म स्त्री (स) वन, दे ।
वनी, म पु (स-निद्र) वनप्रस्थ दे.
२ दे वनवासी' ।
वन्व्य, वि (स) वन-उद्भव उद्भूत-ज्ञान,
अरण्यव जाल २ अमभ्य, अशिष्ट
३ क्रूर, हिंस्र ।
वपन, म पु (स न) वेशमुचन २ बीजा
धानम् ।
वपा, स स्त्री (स) मैदस् (न), वसा ।
वप, स प [म वपुन् (न)] शरीरम् ।
वप स पु (मं पु न) वरण, साल, प्रवार
२ क्षेत्र ३ भूलि (स्त्री) ४ युगत
५ विरिश्चिखरं ६ बलमीक-क मृत्तिकाचय ।
—व्रीडा, स स्त्री (स) वप्रक्रिया ।
वप्रा, म स्त्री (अ) प्रतिष्ठापालन २ आज्ञा,
वार्ता-अनुसरण पालन ३ विश्वसनीयता
४ सुशीलता ।
—दार, वि (अ + का) विधतनोय, विश्व
स्य, स्वामिभक्त २ आज्ञा, कारिन् पालक
३ वनव्यपात्रक ।
—दारी, स स्त्री (अ + का) दे 'वक्र' ।
वश, स स्त्री (अ) महा, मारी, जन, मार,
मरिचा २ स्वयंमंचरिरीय ।
वशाल, म पु (अ) मार, मर २ वटं,
विपद् (स्त्री) ।

वमन, सं पु (म न) वम, वमि (स्त्री),
 ध्वन, छदिका २ वान-वमन, श्लथम् ।
 —करना, क्रि स, उद्, वम् (भ्वा प से),
 छर् (चु) ।
 वय सधि, म स्त्री (स पु) बालमयीवन
 मध्यकाल ।
 वय, सं स्त्री [स वयस (न) आयुस् (न),
 वय क्रम, अनौतनीवनकाल ।
 वयस्क, वि (स) प्रौढ, प्रातन्व्यवहार,
 दे 'वाग्नि' ।
 वयस्य, सं पु (स) समवयस्क २ मित्र,
 सखि (पु) ।
 वयस्या, स स्त्री (स) मखी दे ।
 वयोवृद्ध, वि (स) स्वविर, जरठण, जरित
 न्, वृद्ध ।
 वरच, अव्य (म) अपि तु, दे 'बन्धि'
 २ परतु, क्रि तु ।
 वर, सं पु (म) वृत्ति (स्त्री), तपोमि
 देवैभ्यो वाचिनो मनोरथ २ (देवादीना)
 अनुग्रह, प्रमाद, आशित् (स्त्री) ३ जामात्
 ४ परिणेतृ, बोद्धृ ५ पति, भर्तृ । वि (स) -
 उत्तम, श्रेष्ठ (उ ऋधिवर = ऋधिश्रेष्ठ) ।
 —मागना, क्रि स, वर वाच (भ्वा आ
 ने) वृ (स्वा उ से) न् (क् उ से) ।
 —दान, सं पु (स) मनोरथपूरण, अभीष्ट
 प्रदान २ दे 'वर' (२) ।
 —दायक, सं पु (स) वरद प्रद-दातृ,
 दाष्टिनार्थद, समर्द्ध ।
 —यात्रा, सं स्त्री (सं) *त्रनेन, परिणेतृ
 प्रस्थानम् । दे 'वरात' ।
 —वणिनी, म स्त्री (स) वर, अगना नारी,
 सुदरी ।
 वरह, सं पु (अ) (पुस्तक-) पत्र पर्ण
 २ ३ सुवर्ण रजत, परम् ।
 —गदनी, स स्त्री, (अ + का) ग्रन्थे
 विद्वगमदृष्टि (स्त्री), अध्ययनाडम्बर,
 अध्ययनाभाम ।
 —स्थाह करना, मु, अत्यन्त-अत्यर्थ निरु
 (तु, प स) ।
 वरगलाना, क्रि, स (का वरगलानीदन)
 प्रलुम्बिमुद् (प्रे) २ प्रतुवन् (प्रे) ।
 वरजिह, सं स्त्री (का) न्ययाम, द ।
 वरण, सं पु (म न) वृत्ति (स्त्री), उग्रप्रहण

७ भर्तृत्वेनापीनरण पतित्वेन स्वीरण ३
 पूजा ४ आवरण, आच्छादनम् ।
 वरद, सं पु (स) दे 'वरदायक' ('वर'
 के नीचे) ।
 वरदी, सं स्त्री (अ) *नियतपरिधान, विशिष्ट-
 वगीय-वेष ।
 वरन्, अव्य (म वर >) अपि तु ।
 वरना, अव्य (अ) अन्यथा, इतरथा, मो चेत् १
 वराटिका, सं स्त्री (स) कपदिका, दे 'कौपी' ।
 वरानना, सं स्त्री (स) सुदरी, वरवणिनी,
 सुवदना नी ।
 वराह, सं प (स) छकर, दे 'सुअर' २,
 विष्णु, विष्णोरवनारविशेष ।
 वरिष्ठ, वि (स) उत्तम श्रेष्ठ, पूज्यतम ।
 वरण, सं पु (म) पाशिन, प्रचेतम, अप्
 अपा, पति, जलेश्वर, मेघनाद २ जल
 ३ मूर्य ४ मह विशेष (अ नेपचून) ।
 वरुणालय, सं पु (सं) माग १ ।
 वरुधिनी, म स्त्री (स) सेना, सेन्यम् ।
 वर, क्रि वि [म अवारत (अव्य)] इत्,
 एतस्स्थान प्रति, अत्र २ समीपपेपन,
 अतिकन्ठे (सव १ २ अव्य) ।
 वरेण्य, वि (स) प्रधान, मुख्य २ वरणीय,
 सत्कार्य ।
 वरुंशाप, सं स्त्री (अ) प्रावेशन, शिष्य-
 शाल शाला ।
 वर्ग, सं पु (स) (सत्रानीयानां) गण,
 जाति (स्त्री), समूह, श्रेणी णि (स्त्री)
 २ समस्थानवर्द्ध व्यजनपंचक (उ कवर्ग, इ)
 ३ अर्थाय, परिच्छेद ४ सम, चतुर्भुज
 चतुरस्र ५ समदिशात, वर्गफल, कृत्ति (स्त्री)
 (उ ३ ५ ३ = ९ वर्गफ) ।
 —फल, सं पु (म न) दे 'वग' (५) ।
 —मूल, सं पु (सं न) वृत्तिसमानार्थद्वय
 स्थायक, पर (उ ९ २ १ वगमूल = ३) ।
 वर्चम्, सं पु (म न) तेजम् (न), का
 (स्त्री) ।
 वर्चस्वी, वि (म स्विन्) तेजस्विन्, वांतिम् ।
 वर्चन, सं पु (म न) त्याग २ निरुप ।
 वर्जनीय, वि (म) स्वाभ्य, हेय, वज्य
 २ निषेधाई ।
 वर्जित, वि (अ) त्यक्त, उन्मुक्त २ निरिष्ट, हेय ।
 वर्ण, सं पु (म) आयागां ब्राह्मणादिविभाग

चतुष्टय, जाति (स्त्री) २ रत्न राग
३ प्रकार, विधा ४ अक्षर ५ रूप, अक्षर ।
—धर्म, स पु (म) ब्राह्मणादिकतत्त्वज्ञानप ।
—नाद, म पु (स) वर्ण-अक्षर, श्लेष पल
(निरुक्त) (उ, धृषनोदर से धृषोदर) ।
—मादा, स स्त्री (स) वर्णममानाद,
अक्षरभेदी (उ अ से ह तक) ।
—विकार, म पुं (म) अक्षरविक्रिया (निरुक्त)
(उ गान्धी मे गारी) ।
—विचार, स पु (स) व्याकरणाविवेक,
शिखा ।
—विपर्यय, स पु (स) अक्षरव्यत्यास
(निरुक्त, उ हिंस से सिंह) ।
—वृत्त, स पु (स न) अक्षरछन्दस (न) ।
—श्रेष्ठ, स पु (म) ब्राह्मण ।
—सक्र, स पु (स) वर्ण-जाति, मिश्रण
२ मिश्रण, सकरज, साम्रिक ।
—हीन, वि (म) वृद्धिभूत, अपात्तेय ।
वर्णन, स पु (स न) निरूपण, विवरण,
व्याख्यान, सविस्तरवचन, वर्णना २ स्तवन,
गुणकथन ३ रजन, चित्रणम् ।
—करना, क्रि स, विवृ (स्वा उ से), निरूप्,
वर्ण (चु), सविस्तर कथ् (चु), व्याख्या
(अ प अ) ।
वर्णनीय, वि (स) वर्णयितव्य, निरूपयि
तव्य, वास्तव्य, वर्ण्य ।
वर्णन, वि (स) निरूपित, व्यख्यात
२ उक्त, कथित ।
वर्णा, स पु (स जिन) ब्रह्मचारिण २ लेखक
३ चित्रकार ।
वर्ण्य, वि (म) वर्णनीय, निरूपयितव्य,
प्रस्तुत, उपमेय, व्याख्यातव्य ।
वर्तन, स पु (स न) व्यवहार, वृत्त,
चेष्टित, आचरण २ वृत्ति (स्त्री), आ-उप,
जोबिका ३ पात्रम्, भाजन, दे 'वर्तन' ।
वर्तनी, स स्त्री (स) माग, पथ, पथिन
२ वेपथमृत (स्त्री) ३ तर्जु (पु स्त्री),
तर्जुम । ४ वमतीनि (स्त्री), अवस्थिति
(स्त्री) ५ वर्णविन्यास, शब्दाक्षरोच्चारणम् ।
वर्तमान, वि (स) प्रचरि(लित), प्रचल
सर्वसमन २ उपस्थित, विद्यमान ३ आयु
निव(-की), अधुना भदानी, तन(-नी स्त्री) ।

म पु (स) क्रियावादा कालभेद (व्या)
२ वृत्तान ३ प्रचलितव्यवहार ।
वर्ती, स स्त्री (स) वर्ति विवा (स्त्री), दे
'वत्त' २ शलाका ।
—वर्ती, वि (स -तिव) म्थ, -वामिन ।
वर्तुल, वि (स) गोल, मण्डल चक्र, आकार ।
वर्दी, स स्त्री, दे 'वरदी' ।
वर्द्धन, स पु (स न) वृद्धि उत्पत्ति (स्त्री)
२ समृद्धि (स्त्री) ।
वर्मा, म पु (स वर्मन्) धृविबोधाधि ।
वर्वर, स पु (स) देशविशेष २ वर्वरवासिन
३ असम्भ, प्राण्य ४ म्लेच्छ, ववर, ववर,
अनार्य ।
वर्ष, स पु (सं पु न) अष्, हायन,
सगा, शरद् (स्त्री), म, वत्सर, मवत्
(अष्प) २ मेष ३ वृष्टि (स्त्री) ४ महा
भूभाग ।
—गाढ, स स्त्री (स+हि) वर्षभृष्टि (स्त्री),
अन्म, दिवस दिन विधि ।
—फल, स पु (स न) वाषिष्ठ्यह फल
दार्शनिक पत्रिका ।
वर्षा, स स्त्री [सं वर्षा (स्त्री नडु)]
प्रावृषा प (स्त्री), मेषागम, पनकाल,
अलगाव, पनानार २ वृष्टि (स्त्री), वर्ष-
र्ष वर्ण, गोपूत, परामृतम् ।
—काल, स पु (म) दे 'वर्षा' (१) ।
—होना, क्रि ज, वृष् (स्वा प से), वृष्ट
भू । शु, अतिमान अवपद (स्वा प से) ।
वलय, स पु (अ वन्द) पुत्र २ सनान ।
वलय, स पु (स पु न) कटक, आबापक
२ वेष्टन ३ मण्डलम् ।
वलयित, वि (स) परिवेष्टित, परिवृत ।
वलयल, स पु (अ) उत्साह, औत्सुक्यम् ।
वलाहक, स पु (स) मेष, जलद
२ पर्वत ।
वलि, स स्त्री (स) दे 'वली' ।
वलित, वि (स) न(ना)मित, आगुन
२ आवर्जित, प्रसू ३ वलयित, दे ४ वलीयव,
बलिम्, बलिन् ५ अन्तर्दिश ६ सहित
७ लग्न ।
वली, स स्त्री (सं) बलि (स्त्री), बलीलि
(स्त्री), २ 'शुली' ३ श्रेणी अवलीलि
(स्त्री) ३ रेखा ४ पुट, भग ।

बला, म पु (अ) स्वामिन्, प्रभु २ शासक
३ सधु ।

—अहद, म पु (अ) बुद्धि ।

बल्लल, स पु (स पु न) बल्ल क
बुद्धत्ववाच (स्त्री) चोच शक्त, छली
२ बल्लल-बल्ल, वसन-बल्लम् ।

बल्द म पु (अ) दे बल्द' ।

बल्दियन्, म स्त्री (अ) पितृनामन् (न) ।

बल्मीक, म पु (स) बामलूर, बामकूट,
कुमिनीलक नापु २ बल्मीक मुनि ।

बल्म, वि (स) प्रियतम दयित । म पु
(म) नायक प्रियतम, वान २ पति, अर्द्ध ।

बल्लभा, वि (म) प्रियतमा, वाता, दयिता ।
म स्त्री (स) मित्र, पत्नीभार्या ।

बल्लरीरि, म स्त्री (म) रत्ता, बलीरि
(स्त्री) २ मन्त्री ।

बलावद, वि (स) बलवत्तेन अनुग, अणा
कारिन् । स पु (म) सैवक दाम ।

बला, स पु (स पु न) अधिकार, प्रभुत्व
२ शक्ति (स्त्री) प्रभव, सामर्थ्य
३ अधीनता, आयत्ता ४ इच्छा, कामना ।

वि (स) अधीन, आयत्त ।

—(मि) करणा, क्रि स, बलीकृ दम् (प्र
पि प मे), बलीनी (स्वा प अ), नियम्
(स्वा प अ) ।

—बली, वि (स-वर्तिन्) बली, बलीनुग,
—बली, —अधीन —आयत्त पत्तत्र ।

बलिष्ठ सं पु, दे 'बलिष्ठ' ।

बली, वि (सं शिव) निरत्नम्, मयमिन्
२ अधीन, —आयत्त ३ शक्तिमत्, ममथ ।

बलीकरण, स पु (सं न) (मणिमश्रीपथा
दिशि) स्वयंतीकरण २ दम मन विग्रह
हृ, बलीगर ।

बलीकृत्, वि (सं) बली नीन २ मन्त्रमोहित
३ मुग्ध ।

बलीभून्, वि (स) अधीन, आयत्त २ पावराग ।

बली, वि (म) विनेय शिक्ष, दम्प ।

बलीकृ, वि (सं) आशा बवन, अनुवर्तिन्
आदिन् सेविन् पालक ।

बलीका, सं स्त्री (सं) आकाशवर्तिनी पत्नी ।

बलीवता, सं स्त्री (स) अधीनता, परवशता,
बलीनता ।

बलीया, स स्त्री (सं) वशवर्तिनी, आशा
वर्तिनी, पत्नी ।

बली, अव्य (स) देवनिमित्तकवहिविस्वामन्त्र ।

—कार, स पु (सं) होम, देवयण ।

बली, सं पु (सं) कर्तुराज, दे 'बली'
२ शीतलारोग ३ मयूरिकारोग ४ रागभेद
५ तालभेद ।

—तिलक, स प (सं व क-वा) वणवृत्त भेद ।

—पचमी, स स्त्री (सं) श्रीपचमी, माय
शुक्लपचमी ।

बली, वि, दे 'बली' ।

बली, स स्त्री (स) बली इति (स्त्री),
नि, वास २ गृह, सचन् (न) ।

बली, म पु (सं न) वस्त्र, वासस् (न) ।

बली, स पु (स) बलिविशेष २ सप्तविं
मन्त्रानुगतो नक्षत्रविशेष ।

बलीका, स पु (अ) समय प्रतिज्ञा सविद,
लस पत्रम् ।

—बली, स पु (अ + क) दे 'अनीनवीस' ।

बलीयत्, स स्त्री (अ) (मरण) मन्त्रव्य
अत्यादेश २ विवदविभागव्यवस्था ।

—करना, क्रि स, बलीपत्रेण दा (जु उ अ)-
क (प्रे, अपयति) ।

—नामा, स पु (अ + ण) गृह्णु पत्र लेख ।

बली, स पु (अ) उदाय, साधन,
२ साहाय्य ३ सवध ।

बली, स स्त्री (स) बलीपादा, पृथिवी, दे ।

बली, म पु (सं न) धन २ रत्न ३ सुवर्ण
४ तलम् । (सं पुं) गणदेवताविशेष, अष्ट
वमव (परी भुवश्च सोमश्च विष्णुश्चैव निलो
उत्त । प्रत्युपश्च प्रभातश्च बमवोऽग्री क्रमात्
रमुना) २ बलिपत्र ३ रत्न । अष्ट इति
मह्या ४ सुर्व ५ विष्णु ६ सज्जन ।

बली, स पु (सं) कृष्णपितृ भान्तकदुदुभि ।

बली, सं स्त्री (स) बली, बलीनी,
पृथिवी, दे ।

बली, वि (अ) प्रस, लम्प २ ममाह्व ।

बली, स स्त्री (अ बली) प्राप्ति (स्त्री)
अभिगम २ समाहार ।

बली, सं स्त्री (स पु स्त्री) नाभेरधोभाग,
दे 'बेह' २ मूत्रादाय ३ रेचनयंत्र, गृहक
कं, दे 'बिचरती' ।

—कर्म, म पु [म-अंन् (न)] यत्रिण मल
सूत्रनिष्कामनम् ।

वस्तु, स स्त्री (म न) पदार्थ, द्रव्य २ मत्स्य
३ वृत्तान्त ४ नाटकीयाख्यान, कथावस्तु(न) ।
वस्तुत, अव्य (स) यथार्थत, तत्त्वत, याथा
र्थ्येन, मत्स्य, यथाथम् ।

वस्त्र, म पु (म न) नि वसन, वासम(न)
आच्छादन जेल-क, अशुक, अबर, पट,
निचय, परिधान, छाद, वान, कपट ।

वस्त्र, म पु (अ) मद् गुण, विशेष
धर्म ३ स्तुति (स्त्री) ।

वस्त्र, स पु (स) सगम समागम,
मिलनम् ।

वह, सव (स म) तद् तथा अत्स के रूप ।
[उ स, अमौ (पु), मा, अमौ (स्त्री),
तद्, अद् (न)] ।

वहन, स पु (म न) प्रापण, स्थानान्तरे
नयन, २ धारण, उत्थापनम् ।

वहम, मं पु (अ) भ्रम, भ्रान्ति (स्त्री)
२ मिथ्या, शका-सदेह ३ मिथ्याधारणा
४ अपिकल्पना, कुक्षिरोग ।

वहमी, वि (अ वहम) सशयामन्,
शकाशील, आरात्रिन् ।

वहशी, वि (अ) वन्य, आरण्य २ अमम्य,
अगिष्ट ३ दुर्दान्त, दुर्दमनीय ।

वहौ, कि वि (हि वह) तत्र तस्मिन् स्थाने ।

—से, कि वि, तन, तन्मात्र स्थानात् ।

वहौ, कि वि (हि वहा + ही) तत्रैव, तस्मि
न्नेत्र स्थाने ।

वही, सर्व (हि वह + ही) स पक्ष, असावेव
(पु), मैव, असावेव (स्त्री), तदेव, अद्
एव (न) इ ।

वह्नि, म पु (स) अमल अग्नि, दे 'आग' ।
बाडनीय, वि (स) स्पृहणीय, कमनीय,
काम्य २ बाडिन, दे ।

वाडा, स स्त्री (सं) इच्छा, अमिलाष,
कामना ।

वाडित, वि (म) अभिलषित, अभीष्ट ।

वा, अव्य (स) अथवा । २ दे 'वह' ।

वाइदा, मं पु, दे 'वडा' ।

वाइम चान्सलर, स पु. (अ) विश्वविद्यालय
अध्यक्ष, कुलाध्यक्ष ।

वाइम प्रेसिडेंट, म पु (अ) उपसभापति,
उपप्रधान ।

वाइसराय, स प (अ) रात निर्दिष्ट ।

वाक्, म पु [म वाच (स्त्री)] वणी,
वाक्य २ सरस्वती शारदा ३ वाग्निद्रिय,
वाचशक्ति (स्त्री) ।

—पट्ट, वि (स) वाक्कुशल, वाग्मिन् ।

—पट्टता म स्त्री (म) वाक्पाठव, वाग्मिना,
वाग्बद्धम् ।

—पाठव, म पु (म न) अप्रियवाक्यो
चारण वडुभाषणम् ।

—सयम, स पु (स) वाग्यम, मितवाच्
(स्त्री) ।

वाक्, म पु (स) वाक्य, वचनम् उक्ति
(स्त्री) । स स्त्री, वणी, सरस्वती, शारदा ।
वाक्कुड, कि वि (अ) वस्तुत, यथाथन । वि,
यथाथ सत्य ।

वाक्त्रा, वि (अ) म्बित, वन्ति, म्थ ।

वाक्त्रि (क) आ, स पु (अ) घन्ना, वृत्त
२ ममाचार ।

वाक्त्रिफ, वि (अ) परिचित, अभ्यन्त
२ गालु बोद्ध अभिज्ञ ३ अनुभविन् ।

—कार, वि (अ + का) कायाभिज्ञ, कुशल,
निष्ठात ।

वाक्फियत, मं स्त्री (अ) परिचय, परि-
शान २ अनुभव ।

वाक्य, स पु (स न) पदसमूह, योष्यना
काप्रासक्तियुक्त पदोच्चय २ कथन, वचन
६ सूत्र ४ आभाषक ।

वागा, स स्त्री (स) बलाग, दे 'लगाम' ।

वागीश, स पु (म) ब्रह्मरूपि २ ब्रह्मन्
(पु) ३ वाग्मिन्, कवि । वि (स) सुवक्त्र,
सुव्यवहार ।

वागुरा, स स्त्री (स) मृगबधनार्थं जालभेद ।
वागुरिक, स पु (म) व्याप, शाकुनक ।
वाग्जाल, स पु (म न) वाग्द्वार, शब्द
द्वार, वाक्प्रपञ्च ।

वाग्द्व, स पु (स) निगमर्त्तना, अधिष्ठेय ।
वाग्दत्ता, स स्त्री (स) *नियन्त्रा, *वाचा
पिता (कन्या) ।

वाग्दान, सं पु (सं न) कन्यादानप्रविद्या ।

वाग्दुष्ट, वि (म) वडुभाषिन् २ अभिशात ।

वाग्दवी, मं स्त्री (स) सरस्वती, दे ।

वाग्मी, म पु (स वाग्मिन्) वाग्बिदग्ध
वाग्पद सुवक्तृ २ पठित प्राह ३ वृह
स्पति ।

वाग्मिलस, म पु (म) मानलो वातालाप ।
वाग्मय, वि (म) व श्यामक २ वाग्बिदित
(पापति) । म पु (स न) भाषा २
साहित्यम् ।

वाच, न स्त्री (स) वाणी २ वाक्यम् ।
वाच स स्त्री (अ) *रटिका ।
वाचक वि (म) शपन, शोचक, सूचक,
शोधक २ पाठक वाचयितृ ३ वक्तृ ।

—लुता, म स्त्री (स) उपमालकारभेद ।
वाचन स पु (स) पठन अध्ययन,
उच्चारण २ कथन ३ प्रतिपादनम् ।

वाचस्पति, स पु (म) बृहस्पति, सुविदस ।
वाचा, स स्त्री (सं) वाणी, गिरा २ वाक्य,
वचनम् ।

वाचाटल, वि (स) बहुभाषिन्, मुसर,
जल्प(ला)क २ वाक्पटु ।

वाचाल(ट)ता, म स्त्री (स) मुग्धता,
बहुभाषिणा २ वाग्बेदगध्यम् ।

वाचिक वि (स) वाग्बिषयक २ मौखिक ।
वाची, वि (स-चिन्) सूचक-शोधक ।

वाच्य, वि (स) वचनीय, वचनीय २
अभिधेय, अभिधावृत्त्या बोध्य (अर्थ) ३
कुस्मित, ह्रीन ।

वाच्यार्थ, म पु (न) अभिधेय-मूलशब्द,
अर्थ शब्दाथ ।

वाच्याजाल्य, वि (मं) भद्राभद्र (वाक्यदि) ।
वाज, स पु (अ) उपदेश, धार्मिक
व्याख्यानम् ।

वाजपेय, स पु (म पु न) श्रौतयागभेद ।
वाजपेयी, स पु (म विन्) हुतवाजपेय
२ ब्राह्मणोपाधिभेद ३ सुवृज्ज ।

वाजसनेय, म पु (सं) यजुर्वेदस्य शाखा
विशेष २ दाक्षवस्य ।

वाजिष-त्री, वि (अ) उचित, योग्य, युक्त ।
वाजी, स पुं (अ-जिन्) अश्व, पीठक
२ आमिशामरतु (न), मोरट (=फटे
हुए दूध का पानी) ३ पशुिन् ४ बाण
५ कामक ।

—कर, वि (सं) वामोदोपक (औषधादि) ।

—करण, म पु (म न) वीथवृद्धिर
प्रयोग ।

वाट, म पु (स) मार्ग २ वास्तु ३ भण्य ।
वाटर, म पु (अ) जल, वरि (न) २
जलाशय ३ भूकम् ४ होराभा ।

—ग्रफ, वि (अ) अन्वेष, जलाभेयम् ।
—फाल, स पु (अ) जलप्रपात ।

—चकर्म, म पु (अ) *जलयत्र २ जलय
शाल्य ।

वाटिका, स स्त्री (म) छुद्र आराम
उद्यान दे 'बगीचा' ।

वाडवाग्नि, स स्त्री (स) वाटव ब(वा)ट
वान् ।

वाण, म पु (स) बाण, दे ।
वाणिज्य, स पु (म न) क्रयविक्रय,
निगम, वणिक्कर्मन् (न), व्यापार ।

वणी, स स्त्री (सं) दे 'बागी' ।
वात, स पु (म) पवन, वायु, दे ।
२ देहस्थवायु ३ रोगभेद ।

—जम् म पु (स न) चक्रवान, वतवित्त ।
—ज, वि (स) वातवकीरण (रोगादि) ।

—नित, स पु (स) हनुमन् मार्गि ।
—तूल, स पु (स न) बृहस्पतक, शीघ्र
हामम् ।

—ध्वन, स पु (स) वातरथ, मेघ ।
—पट, म पु (स) ध्वज, पताका ।

—पुत्र, म पु (स) हनुमत् २ भीम
३ महाधूर्त ।

—प्रकोप, स पु (मं) (शरीरे) वायुवृद्धि
(स्त्री) ।

—रोग मं पुं (म) वायु-दान-व्यधि,
चलितक, अतिलामय, २ 'गठिया' ।

—वैरी, मं पु (सं रिन्) वनाद, दे ।
वाताद, सं पुं (सं) नेत्रोपमण, वानात्र,
वातवैरिन् । (पल) वानात्र, वातामम् (दे
वाताम्) ।

वातायन, सं पु (म न) छुद्रसटकिवा
२ दे 'रीशनदान' ।

वातुल, सं पु (सं) उमत्त, दे 'बावला' ।
वात्सल्य, स पुं (मं) रमविशेष (काव्य) ।
(म न) पित्रो-अपत्यरुद्धे, बत्सलता ।

वात्स्यायन, सं पु (सं) -वायस्यभाष्य
कार २ वामपुत्रप्रणेत्, पशिल, मंदनाग ।

वाद, म पु (स) वदानुवाद, वादप्रति
 वृ, कडाहोड, *शास्त्रार्थ, दे । ० मिदान,
 राक्षान ३ कलह, विवाद ।
 —विवाद, म पु (म) दे 'वाद' (१) ।
 वादक, म पु (स) वादवादिन् २ वक्तु
 ३ बदिन्, तार्किक ।
 वादन, स पु (स न) वचनदिन ध्वनन
 २ वाद्य, दे ।
 वादरायण, स पु (म) महापि वेदव्यास ।
 वादा, स पु (अ वददा) नियतममय
 २ प्रतिज्ञा, वचन, मगर ।
 वादानुवाद, स पु (म) दे 'वाद' (१) ।
 वादी, स पु (स-दिन्) अभियोक्तु, अभि
 नोति अभिन्, शिरोवातिन्, दे 'मुद्द' २
 २ प्रत्यावर्त, प्ररोत् ३ वक्तु ।
 —प्रतिवादी, म पु (स वादिप्रतिवादिनौ)
 अभिप्रत्यर्थिनौ २ पक्षिप्रतिपक्षिणी (सव दि) ।
 वाद्य, म पु (स) वादित्र, जलोद्यम् ।
 वानप्रस्थ, म पु (स) वृतीयाश्रमिन,
 वानम आरण्यक, तपस २ वृतीश्रम
 ३ ४ मधूक पलाश-वृक्ष ।
 वानर, स पु (न) कपि, मरुट, दे 'बदर' ।
 वानरी, म स्त्री (स) मकटी, बलीमुत्ती ।
 वापस, वि (क्रा) विप्रत्याप्रतिनि, वृत्त,
 प्रति, गत-आगत-यात-आयात ।
 —आना, क्रि अ, प्रत्यागम्, प्रत्यावृत्
 (आ वा से) ।
 —करना, क्रि स, प्रतिगम्, प्रतिनिवृत् (प्रे)
 २ प्रतिदा (जु उ अ), प्रतिञ्ज (प्रे
 प्रत्यर्पयति) ।
 —जाना, क्रि अ, प्रति, नम् निवृत् ।
 —लेना, क्रि स, प्रत्यादा, पुन स्वीकृ ।
 —होना, क्रि अ, दे 'वापस जाना' २ प्रति
 दा-आदा (कम) ।
 वापसी, वि (क्रा वापस) प्रत्या-प्रतिनि, वृत्त ।
 स स्त्री, प्रति, नमन-आगमन-आवृत्ति (स्त्री)
 २ प्रति, दान-अर्पण-आदानम् ।
 वापी, स स्त्री (स), वापि (स्त्री.) दीपिका,
 वापिका ।
 वावस्ता, वि (क्रा) वद, सद्यत, २ लग्न,
 दिष्ट ३ सवद, सप्रथित ।
 वाम, वि (म) मन्व, दक्षिणोत्तर, दे 'बर्वा'

२ प्रिदूल, विरुद्ध प्रवीर ३ कुण्डिल ४ दुष्ट,
 नीच ५ अमर, अमगल ।
 —देव, म पु (स) शिव ।
 —मार्ग, स पु (स) वामान्वर वेदविरुद्ध
 मप्रदायविदोष ।
 —मार्गी, म पु (स गिन्) वामाचारिन्,
 वे-विरोधिन् ।
 —लोचन, स स्त्री (स) वामाक्षी, सुररी,
 शोभना ।
 वामन वि (म) खर्व, हस्त्र, लघुकाय ।
 स पु (म) खट्टन, खट्टेक, खर्व, हन्व
 २ विष्णु ३ शिव ४ पुराणप्रयविदोष ।
 —अवतार, स पु (स) वामनावतार)
 अदिनिगमनो विष्णो पञ्चमावतार ।
 वामनी, स स्त्री (स) खवा खट्टनी ।
 वामा, स स्त्री (स) नारी, रामा, २ दुर्गा,
 गौरी ३ लक्ष्मी, सरस्वती ४ स्कन्दानुचरी ।
 वामी, म स्त्री (स) ववा, २ रासमा
 ३ श्याली ।
 वायव्य, वि (म) १३ वायु, सवधिन्
 देवताक निमित्त, वायवीय ।
 —कोण, स पु (स) पश्चिमोत्तर, कोण
 दिशा, वायवी ।
 वायस, स पु (स) वाक, ध्याय ।
 —वायु, म स्त्री (स पु) वान, पवन,
 अनिल, पथव(वा)ह, मनीर-रण, महत्,
 मा म)रुत, श्वसन, मातरिश्वन्, सदागति,
 जगन्प्राण, नभस्वत्, पवमान, प्रमजन,
 धूलिध्वज, पणिप्रिय ।
 —कोण, म पु (स) पश्चिमोत्तरदिशा,
 वायवी ।
 —गुल्म, म पु (स) वातचक्र, चक्रवान,
 वत्या २ जल, गुल्म आवर्त ३ वातगुल्म,
 उदरव्यधिभेद ।
 —पुत्र, म पु (स) पवन, सुत पुत्र, हनुमत् ।
 —मक्षण, स पुं (स) वायु, मक्ष-मुत्,
 यनिभेद २ पवनाशन, सर्प ।
 —मडल, स पु (स न) अतरि(री)क्ष,
 गगन २ वातावरणम् ।
 वारट, म पु (अ) अधिकारपत्रम् ।
 —गिरफ्तारी, म स्त्री (अ + क्र) *आमेधा
 विकारपत्रम् ।

—तलाशी, म पु (अ + का) *अन्वेषण विचारपत्रम् ।
 —रिहाई, म पु (अ + का) (कारागारा दिव्य) मोचन-विचारपत्रम् ।
 वारंवार, कि वि, दे 'वारंवार' ।
 वार, स ष (स) वदाय, क्रम २ अक्षर समय ३ सप्ताह-दिन-रात्रिस वामर ४ द्वार ५ आधान, प्रहार, आक्रमण ६ आवरण ७ समूह ८ पर-न्म् ।
 —करना, कि म अनिद्र (म्वा प अ) अवरक (म्वा प अ) आक्रम (म्वा प से, म्वा आ अ) ।
 —झाली जाना, मु, लक्ष्य न व्यथ (कर्म) अत्र अपलक्ष्य पद (म्वा प म्) २ बुक्ति निष्फलीम् ।
 वारक, वि (स) निषेधक, प्रतिबधक ।
 वारण, म पु (म न) निप्रतिषेध, २ विघ्न, अन्तराय । (म पु) गज, वाण वार, कवच-न्म् ।
 वारदान, स स्त्री (अ) दुपयना २ विन्व, मशुभम् ।
 वारना, कि स (म वारण >) अनिष्टवारपाय उत्सृज् (पु प अ) म्वाय (म्वा प अ) । म पु, शान्तिकर उत्सर्ग, कष्टवारक दानम् ।
 वारनारी, स स्त्री (स) वारमुयी, वारागना, वेद्या, वाराव्यामिनी ।
 वारपाद, स पु [स अवारपादौरे (पु न)] (नपादीना) तद्वय २ अत्र, मीमा । कि वि, अकाराद पार यावद् २ निकटपाथाद् परपाथपर्यन्म् ।
 वारागना, स स्त्री (स) वारनारी, दे ।
 वारा, स पु (स वारण >) मितभय २ लाम ।
 वाराणसी, स स्त्री (स) काशीशिका, शिवपुरी, तप म्बली, व(वा)रुपी ।
 वाराण्यार, स पु (हि वार + वार) निषय, निश्चय, निर्धारण २ सम्भान, मधि, सम-भनम् ।
 वारापार, म पु तथा कि वि, दे 'वारपण' ।
 वाराह, म पु (म) वराह, दे ।
 वारि, स पु (म न) पानीय, जल, ३ ।
 —चर, म पु (म) उत्सृज् २ मलय ।
 —न, म पु (म न) वमन्, वदि २ वन्दम् ।

—द, स पु (स) वारि, भर वाह, मेष ।
 —धि, स पु (स) वारिनिधि, सागर ।
 —यत्र, म पु (म न) जलयत्र, दे 'पञ्चवार' ।
 वारित, वि (म) नि-अद, रुद्ध, निवर्तित २ निषिद्ध, प्रतिषिद्ध, प्रत्यादिष्ट ३ आच्छादित, अचूत ।
 वारिद^१, स पु (स) मेन, जल ।
 वारिद^२, वि (अ) आगत, आराव २ प्रक, आविर्भूत ।
 वारिम, म पु (अ) अक्ष, हर हारिन् भाज्, दादाद, दक्षिण २ उत्तराधिकरिन् ।
 —होना, कि अ, पैदकमपदाधिकारी जद (दि आ मे), दायात्रीभू ।
 वारीड, म पु (म) वारीश, मार ।
 वारणा, स स्त्री (स) मदिरा, मय, सुरा २ पश्चिमदिशा ३ वरुणानी ।
 व डै, म पु (अ) रक्षा, गोगन २ पुर-विभाग ३ कारागारादीना विभा ।
 वार्डर, स पु (अ) रक्षक २ कारारक्षक ।
 वात्ता, स स्त्री (म) विषय, प्रमग २ विव दती, जनश्रुति (स्त्री) ३ समाचार, वृत्त ४ वाताण्य दे ।
 वात्तलाप, स पु (स) मशप, सबद, समापण, आलाप ।
 —करना, कि अ, सतप्-मवद (म्वा प मे), म गाष् (म्वा आ से) ।
 वात्तिक, स पु (म न) उत्तानुकुटुस्तर्ध प्रशाशकी ग्रथ, सीका । (सं पु) चर २ दूत ।
 वाढकय, स पु (सं न) वरुणक, वृद्धत्व, वृद्धावस्था, स्वविरम् ।
 वाषिक, वि (स) अम्बिद, दाल्मरिक, सांख्य लारिक २ प्रावृषेय ।
 वाल टैपर, म पु (अ) स्वदतेवक, स्वेच्छा नेवक ।
 वाल् (लि) डैन, सं पु (अ) विनरी, माग विनरी (दोनो दि) ।
 वालिद, मं पुं (अ) विदु, जनक ।
 वालिदा, म स्त्री (अ) मातृ (स्त्री), जननी ।
 वाल्मीकि, म पुं (मं) रामायणप्रणेयुनि विदोष, व(वा)ल्मीक, प्रायेण, अष्टकवि, बवित्रेष्ठ ।
 वाचदूक, मं पु (म) वार्मन् २ वाचन् ।

- वावेला, स पु (अ) विलाप २ कोलाहल ।
वाप्प, स पु (सं) उष्ण, दे 'भाप'
२ अशु (न) ।
वासती, स स्त्री (स) माधवी, प्रहसनी,
वसन्त २ यूथी ।
वास, सं पुं (स) अव, स्थान-स्थिति (स्त्री)
नि, वस्ति (स्त्री) २ गृह, भवन ३ सु, गध
४ दुर्, गध ।
वासक, स पु (स) अदरूप, वैद्य भिषङ्,
मातृ (स्त्री), वासा-सक ।
वासकेट, स स्त्री (अ वेस्टकोट) वासकटि ।
वासना, स स्त्री (स) कामना, अभिलाष,
वाटा २ सस्कार, भवना, स्मृतिहेतु ३ शान
४ प्रत्याशा ५ देहात्मबुद्धिजन्यो मिथ्यासं
स्कार (न्याय) ।
वासर, स स्त्री (स पु न) दिवस, दिनम् ।
वासव, स पु (स) इन्द्र, दे ।
वासित, वि (स) भावित, सुरभीकृत
२ बखवेष्टित ३ पशुषित ।
वासी, स पु (स-सित्) निवासित्,
वासाय ।
वासुदेव, स पु (स) श्रीकृष्ण ।
वास्तव, वि (स) सत्य, यथार्थ, अवितथ ।
—में कि वि, वस्तु, सत्यम् ।
वास्तविक, वि (स) तथ्य, सत्य, तार्त्विक,
दे 'वास्तव' ।
वास्ता, स पु (अ) सवध, सपर्क ।
—पड़ना, सु, व्यवहारावसर जन् (दि
आ से) ।
वारतु, सं पु (स पु न) वैश्मभू, गृहपो
तक २ गृह, सौध ।
—विद्या, स स्त्री (स) मवननिर्माणकला,
स्थापत्यम् ।
वास्ते, अव्य (अ) अर्थ, निमित्तम्, चतुर्थी
विभक्ति से भो (उ., तेरे वास्ते = स्वदर्भ,
तुम्हम् ।
वाह', अव्य (का) साधु, वर, भद्र, शोभन
२ अद्भुत, आश्चर्य ३ शिक् ४ हत ।
वाह, अव्य, साधु-साधु ३ ।
—करना, क्रि स, अभिप्रति, नद् (भ्वा प
से), साधु-वादान् दा २ करतत्पनि कृ ।
—होना, सु, अभिप्रति-नद् (यर्म) ।
- वाहक, स पु (स) भारवह, भारिक
२ सारथि, यत् ।
वाहन, स पुं (स न) यान, युग्य, दे
'सवारो' ।
वाहवाही, स स्त्री (का) रयानि विश्रुति
(स्त्री), साधुवाद, प्रशंसा ।
—लेना या लूटना, सु, यश वितन् (त उ
ने), साधुवादान् लम् (भ्वा आ अ),
प्रशंसापात्र भू ।
वाहिद, वि (अ) एक, एकाकिन, एकल,
अद्वितीय ।
वाहिनी, स स्त्री (म) सेना २ नदी
३ सैन्यभेद (= ८१ हस्ती, ८१ रथ, २४३
पाडे, ४०५ पैदल) ।
—पति, म पु (स) सेनापति ।
वाहियात, वि (अ वाही + का यात)
व्यथ, निरपक २ दुष्ट, खल ।
वाहीतवाही, वि (अ + का) निरर्थक, निष्प्र
योजन २ असंगत, असंबद्ध । स स्त्री, प्र,
अत्य पन २ गालि (स्त्री), अपमाषणम् ।
वाह्य, वि (सं) बोधव्य २ बोद्ध ।
विदु, स पु, दे 'विदु' ।
विध्याचल, स पुं (स) विध्य, पर्वतविशेष ।
वि, उप (स) वैशिष्ट्यनिर्णयार्थविबोधक
उपसर्ग (व्या) ।
विकच, वि (स) विकसित, उत्फुल्ल २ केश
हीन ।
विक्रट, वि (स) कठिन, दुस्माध्य, दुष्कर
२ भौम, भौषण, भयप्रद ३ विशाल, विस्तीर्ण
४ दुर्गम ५ वक, कुटिल ।
विकराल, वि (स) दे 'विक' (२) ।
विकल, वि (स) विह्वल, उद्विग्न, वि, अकुल,
अज्ञान २ दाडिल, अपूर्ण ।
विकलाग, वि (स) अ, शोड, अगहोन,
विकल-न्यून, अद्भ इद्रिय ।
विकला, स स्त्री (स न) कलाया पण्डितमो
भग ।
विकल्प, स पु (स) भ्रम, भ्रान्ति (स्त्री)
२ मदेह, सञ्जय ३ विभाषा (व्या)
४ विरद्ध विपरीत, विचार-क्लेशना ५ चित्त
वृत्तिभेद (यो) ६ अर्थात्कारभेद (सा)
७ अवानकल्प ८ पण्डितविषय ।

विघ्न, म पु (म) व्याघात, अतराय, प्रत्यूह, प्रतिबन्ध, बाध धा, रोध, प्रतिवि, दम्भ ।

—कारो, वि (स रिन्) बाधाजनक विघ्न, वर-कर्तृ विधातिन् ।

—नाशक, स पुं (स) विघ्न, विनायक पनि-राज नायक, गणेश ।

विचक्षण, वि (सं) विदस्, बुद्धिमत् २ कुशल, दक्ष, निपुण ।

विचरण, स पु (म) चलन, गमन, २. भ्रमण, पयटन, विहरणम् ।

विचल, वि (स) क्पमान, कप्र २ चञ्चल, चल ।

विचलता, स स्त्री (स) अस्थैर्यं, चाञ्चल्य २ वि आकुलता ।

विचलित, वि (स) पतित, स्खलित २ लोल, अधीर, चञ्चल ।

विचार, स पु (म) मात (स्त्री), नल्पना, भावना, सवल्प, तर्क, मत, अभिप्राय २ चिंतन, ध्यान, आलोचन, विचारण-गा, सत्त्व-निर्णय, वितर्क-कण, मनमा कल्पन, विवेचनं ३ व्यवहारदर्शन, विचारकरणम् ।

—शील, वि (स) विचारवत्, विवेचिन् समीक्ष्य विमृश्य-कारिन् ।

—शीलता, स स्त्री (स) विवेचिणा, बुद्धि मत्ता ।

विचारक, म पु (स) विचारधर्मन्वाय, अध्यक्ष, अधिकारिणक २ विवेचिन्, गुण दोष, विवेचक, आलोचक ।

विचारणीय, वि (स) विचाय, चिन्नाय, विचाराहं, ध्येय २ सद्विषय ।

विचारना, क्रि अ (स विचारण) विचर-मभू (भ्रे), विच-नर्क (चु) ध्यै (स्वा प अ), विच-न् (तु प अ), आ पर्यां, लोच् (चु) ।

विचारित, वि (स) ध्यात, चिन्तित, तर्कित, पदालोचित, विमृष्ट २ निर्णीत निश्चित ।

विचार्य, वि (स) दे 'विच रणीय' ।

विचिकित्सा, स स्त्री (स) सहाय, सदेह ।

विचित्र, वि (स) कर्तुर-रित, बलमाप पित, शार, शबल २ विशिष्ट, विलक्षण, असाधारण ३ अद्भुत, आश्चर्य, विरमापक ५ सुन्दर ।

—धीर्यं, सं पु (स) चन्द्रवंशीयो नृपविशेष ।

—शाला, स स्त्री (स) अद्भुतालय ।

विच्छिन्न, वि (सं) निहृत्त, विलून, विवृत्तग २ विदुक्त, विच्छिष्ट, पृथक्-स्थित ३ समाप्त, अवसित ।

विच्छेद, स पु (स) लवन, लाव, कानन, विच्छेदन २ विश्लेष-वण, वियोजनं ३ क्रम-वग नवन ५ विरह, वियोग ।

विच्छेद, सं पु (स विशोम >) वियोग, विरह ।

विजन, वि (स) निजन, विविक्त, नि-शलाक, पकान ।

विजय, स पु (स) जय, जयन, वशी त्वायत्ती करणम् ।

—दशमी, स स्त्री (म) दे. 'दशहरा' ।

—पताका, स स्त्री (स) जयकेतु २ जयचिह्न ।

—शील, वि (स) विचरिन्, सदाजयिन्, जिष्णु ।

—श्री, स स्त्री (स) जयलक्ष्मी (स्त्री) ।

विजया, म स्त्री (स) भगा, हविणी, दे 'भाग' २ उमासती ३ दुर्गा ।

—दशमी, स स्त्री (म) आश्विनशुक्लदशमी, आर्यागी पर्वविशेष, विजयोत्सव ।

विजयी, वि. (स-यिन्) वि, नेतृ, जयिन्, -जित, जिष्णु (विजयिनी स्त्री) ।

विजयोत्सव, स पु (स) विजयदशमी-विजयादशमी, उत्सव-पवन् (न) -क्षण । २ नय, उत्सव-क्षण उद्धर्ष ।

विजय, वि (सं) अजर, निरंतर, वादक्य रहित २ नूतन, नवीन ।

विजल, वि (स) अजल, निर्जल, जल-वारि, रहित ।

विजातीय, वि (म) भिन्न-असमान, जाति वर्ग २ साम्यरहित, अमम ।

विजिगीषा, स स्त्री (स) विजयकामना २ उत्कष ।

विजिगीषु, वि (स) जयामिलाषिन् ।

विजित, स स्त्री (अ) अभिगम, अभ्यागम, दर्शनार्थं गमन, दर्शनयात्रा ।

विजितर, स पु (अ) दर्शक, प्रेक्षक २ अभ्यागत, गृहागत ।

विजितिग कार्ड, स पु (अ) *दर्शकपत्रम् ।

विजित, वि (स) पराजित, अभिभरा, भूत, वशी-स्वायत्ती, कृत ।

विजेता, स पु (स-वृ) दे 'विजयो' ।

विज्ञ, वि (सं) प्रवीण, कुशल, विशेषज्ञ
२ धीमत्, बुद्धिमत् ३ कोविद, पंडित ।

विज्ञता, स स्त्री (म) प्रवीणता २ बुद्धिमत्ता
३ विद्वत्ता ।

विज्ञप्ति, स स्त्री (स) सूचन, रचयनम् ।

विज्ञात, वि (स) अबगन, अवबुद्ध २ प्रसिद्ध ।

विज्ञान, स पु (स न) ज्ञान, बोध, अबगम,
उपलब्धि (स्त्री) २ विषयविशेषस्य विशिष्ट
ज्ञान ३ अध्यात्म-विद्या ज्ञान ४ कमन् (न)
५ आत्मानुभव ।

—मयकोप, स पु (स) ज्ञानेन्द्रियसहिता
बुद्धि (स्त्री) ।

विज्ञापन, स पुं (स न) बोधन, सूचन
बोधनं, व्यापन, विज्ञप्ति (स्त्री), विज्ञापना
२ विज्ञापनपत्रम् ।

विष्ट, स पु (स) कामुक, लपट २ धूत
३ नायकभेद (सा) ३ कमुकानुचर ।

विष्टप, स पु (म प न) शाका शाखा
पक्षवसमुदाय २ क्षुप सुत्न म ३ वृक्ष ।

विष्टपी, स पु (स पिन्) वृष्ट, पदप ।

विष्टामिन, स पु (अ) खाद्यौजम् ।

विष्टवना, स स्त्री (स) अनु-करण-कार
कृति (स्त्री) २ अव-उप हान, अवहलना
२ निर्भर्त्सन ना ।

—करना, कि स, अव-उप-हस (भ्वा प म)
२ सोपहास अनुकृ विडम् (पु) मवहाम
अवमन् (दि आ अ) ।

विष्टारना, कि स (हि ङालना) विवृ
(तु प से), विक्षिप (तु प अ) २ (वि,
नदा (प्रे) ३ विद्रुपलाय (प्रे) ।

वि(वि)डाल, सं पु (स) माजार दास
लोचन-अक्ष, दे 'विज्ञा' ।

वितडा, स स्त्री (म) परपक्षन्युत्समपूवक
स्वपक्षस्थापन २ प्रतिपक्षस्थापनाहानो जल
३ व्यर्थ, कलह विवाद ।

वित्तत, वि (म) विस्तृत, विलीर्ण ।

वित्तय, वि (स) वितथ्य, अमत्य, अनृत
२ व्यर्थ ।

वितरण, स पुं (स न) दान, अरण, उत्सव
२ विभाजनं, अंशजम् ।

—करना, नि म, अंश (तु) विभ
(भ्वा उ अ) ।

वितर्क, स पु (सं) ऊह हन, ऊहापोह
२ सदेह ३ अनुमान ४ अर्थालंकारभेद
(सा) ।

वितल, स पु (स न) पातालविशेष ।

वितस्ता, स स्त्री (स) पचनदप्रानवती
नदविशेष ।

वितस्ति, स स्त्री (स पु स्त्री) द्वादशांगुल,
दे 'विज्ञा' ।

वित्तान, म पु (स पु न) उल्लोच, चद्रानप
२ विस्तार ३ यज्ञ ।

वितुड, सं पु (म वि + तुड >) गज, द्विप ।

वितृष्ण, वि (स) नि स्पृह, निष्कम, सतोविद् ४

वित्त, स पु (स न) सपत्ति (स्त्री), धन, दे ४

—वान्, वि (स अत्) धनाढ्य ।

—होन, (वि) निर्धन ।

विदग्ध, वि (स) चतुर, दक्ष, कुशल २-
व्युत्पन्न, पठित ३ प्लुष्ट, व्युष्ट । स पु (सं)
रमिक २ विदम ।

विदग्धता, स स्त्री (स) चतुर्यै २ पाठित्य-
विद्वत्ता ।

विदा, स स्त्री (अ विदाअ) प्रस्थान, प्रवाण
३ गमनानुमति (स्त्री), प्रस्थानानुष्ट ।

—करना, कि स, प्रस्था प्रया (प्रे) विद्यन्
(तु प अ) ।

—होना, कि अ, प्रस्था (भ्वा आ अ),
प्रया (अ प अ) ।

विदाई, स स्त्री (हि विदा) दे 'विदा'
(१ २) । ३ 'प्रास्थानिक धन द्रव्य वा ।

विदारक, वि (स) विपाटक, विभेदक, विदारण ।

विदारण, स पु (सं न) विपाटन, विभेदन,
विदलन २ हनन ३ युद्धम् ।

विदारीकद, स पु (सं पु न) भूमिदुग्धाट-
विदारी-नीका, वृष्य स्वादु, कदा ।

विदिन, वि (स) अबगन, उद्द, ज्ञान, दे ।

विदिशा, सं स्त्री (स) दशांगाना रजधानी,
नगरविशेष (मेलमा) २ दिव-दिशा, बोग ।

विदीर्षं, वि (सं) विपाटित, विदलित, विभिन्न
२ सुटित, भग्न ३ हत ।

विदुर, सं पु (स) धृतराष्ट्रस्य भ्राता मंत्री च ।

विदुप, म पु (सं विदम) पंडित, प्राण ।

विदुपी, वि (सं) विप्रकृष्ट, सुदूरवर्तिव ।

विदूर, सं पु (सं) वैदामिर, प्रदायित्व,
प्राणित, कामविर २ भट ।

विदेश, स प (म) परदेश, देशान्तरम् ।
 विदेशी, वि (स विदेशीय) अन्य पर, देशीय,
 वैपर शैशिक ।
 विदेह, वि (म) अजाय अशरीर रिन् ।
 स पु (म) जनक, मिथिलेश्वर ।
 —पुर, म प (म न) जननपुरी मिथिला,
 विदेहा ।
 विद्व, वि (म) मच्छिद्र, मनुत्कीर्ण [सुपर
 बेधित, चिद्रित, निमित्त २ क्षत, प्रणित
 ३ भित्त, अस्त ।
 विद्यमान, वि (स) वर्तमान, भवत्, २ प्रत्यक्ष,
 समक्ष, उपस्थित ।
 विद्यमानता, स स्त्री (म) उपस्थिति (स्त्री),
 वर्तमानता ।
 विद्या, म स्त्री (म) ज्ञान, विज्ञान, बोध
 २ अध्यात्मविद्या, परा विद्या ३ शास्त्रम् ।
 —दान, म पु (स न) अध्यापन २ पुस्तक
 दानम् ।
 —प्राप्ति, स स्त्री (स) ज्ञानाधिगम,
 अध्ययनम् ।
 —वान्, वि (स, वत्) विद्वस्, प्राज्ञ ।
 —हीन, वि (स) अशिक्षित, निरक्षर, अण,
 अविद्य ।
 विद्यारम्भ, म पु (स) १ वेदारम्भसंस्कार
 २ अध्ययनोपक्रम, शिक्षारम्भम् ।
 विद्यार्जन, म पु (स न) ज्ञान-बोध, प्राप्ति
 उपलब्धि (दोनों स्त्री) २ विद्यया धनोपा
 र्जनम् ।
 विद्यार्थी, स पु (स यिन्) छात्र, शिष्य,
 २ अधीयान, अध्वेतु, पाठक ।
 विद्यालय, स पु (स) पाठशाला, विद्या,
 गृह-मन्दिरम् ।
 विद्युत्, स स्त्री (स) चचला, चपला,
 तन्त्रि (स्त्री), दे 'विजली' ।
 —प्रिय, स पु (स न) काव्य २ वाक्य
 पानम् ।
 विदुम, स पु (स) प्रवाल, भोमीर,
 दे 'मृगा' २ रत्नवृक्ष ३ पत्तव-व, किस(श)-
 ल्य-यम् ।
 विद्रोह, स पु (स) राज-द्रोह, विरोध,
 प्रनाक्षोभ, प्रकृतिप्रक्षोभ, राज्यविप्लव ।
 विद्रोही, स पु (स-दिन्) राज-द्रोहित
 विरोधिन् दुह् ।

विद्वत्ता, स स्त्री (स) पारित्य-गुत्पत्ति
 (स्त्री), विद्वत्त्व, विद्यप्रकर्ष ।
 विद्वान्, स प (म वदम) पण्डित प्राज्ञ,
 बहुजन विपश्चित्त मानवर ।
 विद्वेष, म प (स) वेर, शत्रुता, विरोध ।
 विद्वेषी, स पु (स यिन) बैरिन, विरोधिन्,
 शत्रु ।
 विधवा, म स्त्री (म) रडा, गृहभर्तृका,
 विश्वस्ता, यतिनी जालवा ।
 —पत्न, स पु (म + हि) वैधव्य, दे ।
 विधवाश्रम, म पु (स) *विश्वस्तालय ।
 विधाता, म पु (म नृ) ब्रह्मण (पु),
 उगदुत्पादक मृष्टिकर्तृ परमेश्वर २ विधायक,
 रचयितृ ३ व्यवस्थापन, *प्रवचक ।
 विधात्री, स स्त्री (स) रचयित्री, विधायिका
 २ व्यवस्थापिका ।
 विधान, स प (स न) अनुष्ठान, करण,
 मपादन, निष्पादन, साधन २ व्यवस्था,
 आयोजन, *प्रवच ३ रीति पद्धति (स्त्री),
 प्रणाली ४ निर्माण, रचन-ना ५ उपाय,
 युक्ति (स्त्री) ६ पूजा, अर्चा ७ शासन
 पद्धति (स्त्री), राज्यव्यवस्था ८ विधि,
 नियम, कल्प ।
 —करना, क्रि स, विधा, आदिश (तु प अ),
 शान् (अ प से) ।
 —परिपद्, स स्त्री (स) विधि-अभिनियम,
 निर्मात्री सभा ।
 विधायक, म पु (स) अनुष्ठान, कर्तृ, निष्पा
 दक, साधक २ निर्मातृ, रचयितृ, विधातृ,
 ३ व्यवस्थापक प्रबन्धक, प्रस्तोतृ ।
 विधि, न स्त्री (स पु) (शास्त्रणा) आदेश,
 नियोग, नियम, कल्प, अनुशासन २ रीति
 (स्त्री), कार्यक्रम, प्रणाली ३ व्यवस्था,
 मगति (स्त्री), क्रम ४ आचार, व्यवहार
 ५ प्रवार, रीति (स्त्री) ६ भाग्यम् ।
 न पु (स) ब्रह्मण, विधातृ (पु) ।
 —निषेध, स पु [स धौ (दि)] नियोग प्रति
 षेधी (दि) ।
 —पूर्वक, क्रि वि (स-वंक) यथाविधि, यथा
 शास्त्र २ यथानुय, यथोचितम् ।
 —वत्, क्रि वि (स) दे 'विधिपूर्वक' ।
 —वशात्, अ (स) देवात्, भाग्येन, भाग्य
 देव-वशात् ।

—वाहन, स पु (म) इम, मराल, धवलपक्ष ।

—हीन, वि (स) अत्रै, आवाहन, विधि विग्रह, अनिवाहन ।

विष्णु, स पु (स) च ७ माम ।

—अदनी, स स्त्री (म) चाद्रुपती २ सुदरी ।

विष्णु, वि (स) दृष्टिना पीत ० आन, अस्त ३ वि, आल्ल ४ अमम ५ परत्यक्त ६ विमूढ [विष्णु (स्त्री)] ।

विषेय, वि (स) अनुषय, वनय, निष्पाद्य, माय २ वदवतिन्, विनीत, वश्य विनय, वचनेस्थित ३ विधानाह, अनुग्रामनाय ।

नं पु (म न) विशेषण, वाववाशभे (चा) ।

विष्वम, स पु (म) वि, नाश, अवमाद, निमूलन, उच्छेद ।

विष्वसी, वि (म-मिन्) विष्वसन् वि, नाशक, निमूलयिन् ।

विष्वस्त, वि. (स) वि नष्ट, उच्छिन्न, निमूलित, उस्तन्न ।

विनत, वि (स) प्रणत, वदमान ० आव पित, प्रवण ३ वक्र, निक्ष ४ मबुविन ५ नम्र ६ शिष्ट ।

विनती, स स्त्री (म ति) प्रार्थना, याचना २ विनय, नम्रता, शिष्टता ३ प्रवणता, प्रहता ।

विनय, स स्त्री (म पु) प्रशय, नम्रता, शालीनता, सौम्य, दाक्षिण्य २ शिष्टा ३ निवेदन, प्रार्थना ४ निर्भर्तना ५ नाति (स्त्री) ।

—शील, वि (म) नम्र विनीत, शिष्ट, दक्षिण, सम्म्य, सुजन, सुशील ।

विनधर, वि (म) क्षत्रिणु, नश्वर, अनित्य, अस्थायिन् ।

विनष्ट, वि (स) वि, ध्वस्त, अवमन्न, उच्छिन्न, निमूलित २ मृत ३ विह्व ४ भ्रष्ट ।

विनाश, मन्व (स) आशरेण मुवत्वा, वनदित्वा विहाय (मव द्वितीया व माध) । श्ने (पञ्चमा के साथ) ।

विनायक, सं पु (म) गणेश, दे ।

विनाश, सं पु (म) दे 'विध्वंस तथा 'नाश' ।

विनाशक, सं पु (स) नाशक, विध्वंसर ।

विनिपत्य, स पु (म) वि, नाश ध्वम

० कथ, इत्या ३ अर अप, मन, जनादर, अवधीरणा ।

विनिमय, स पु (म) परि वन-वृत्त (स्त्री), प्रति परि, दानन् ।

—करना, वि म, विनिमे (भ्या वा अ), प्रतिना, परिकृत् (प्रे) ।

विनियोग, स पु (म) वृत्तविशेषे मनप्रयोग २ उपयोग प्रयाग ३ प्रेषण ४ प्रवेश ।

विनीत, वि (स) दे 'विनयशील' २ निर्न द्रिय ३ शिक्षित ४ अपनात ५ दमित ६ धामित ।

विनोद, सं पु (स) कु(वी)तुहल, कौतुक, मनोरतवध्यापार २ खेला, क्रीडा, लाला ३ परिहाम, प्रमोद ४ आनन्द, हस ।

विनोदी, वि (सं दिन्) कु(वी)तुहलिन, कौतुकिन् ० लीलामय, मीमाशील ३ आन दिन् उल्लासिन् ४ परिहामशील, प्रमोदप्रिय ।

विन्यास, स पु (सं) स्थापन, न्यसन, निधान ० रचन, परिष्करण, अलकरण ३ प्रणिधान, उत्पन्न, अनुध्यधन ४ श्लेष पणम् ।

विपची, स स्त्री (स) बीणाभर २ केलि (स्त्री) ।

विपक्ष, स पु (स) प्रति विरुद्ध-विपरीत प्रतियोगि-विरोधि, पक्ष २ विराविषय, प्रति द्विविद्य ३ प्रतिवादिन्, विराधिन् ४ विरोध ५ अपवाद, वाचरनिवम (व्या) ६ साध्यामाववान् पक्ष (न्या) । वि (स) विरुद्ध २ असहाय ३ विरुद्ध, निनाय ।

विपसी, सं पु (सं क्षिन्) प्रतिपत्ति, प्रति वादिन्, पर, पक्षीय पक्ष पक्षपातिन् प्रति द्विन् २ गृह्य, वैरिन् ३ नि पत्र, पक्षहीन (पक्षी जादि) ।

विपणि, स्त्री, सं स्त्री (म) भागा, दृष्ट, पण्य शला-बीधी, २ विभेदपदार्थ (पु) ३ वाणिज्य, व्यापार ।

विपत्ति, स स्त्री (सं) आपद् विपद् आपत्ति (स्त्री), व्यसन, महा-दु गन्ध ० आपद् विपद्, वात्-मय ।

—आना वा पढ़ना, वि अ, व्यसन-व्यथा (न्या प अ) कर् आनमापद् (भ्वा ए मे) विपद् उपपत् (भ्वा ए अ) ।

विपथ, सं पु (सं) कु, पथ माग ० कर्-आचर आचरणम् ।

—गति, स स्त्री (सं) कुमार्य-कुपय, नामन
गति (स्त्री) ।

—गा, न स्त्री (सं) कुमार्यगामिनी नारी
२ नदी, मरिच (स्त्री) ।

—गामी, वि (सं मित्र) कुमार्यगामिन्य,
दुर्वृत्त, दुःखचारिण्य ।

विपद्-या, स स्त्री (सं) दे 'विपत्ति' ।

विपन्न, वि (सं) विपद्-अपद, प्रसन्न,
२ दुःखिन ३ आन्त ४ मृत ।

विपरीत, वि (सं) विरुद्ध, प्रतीप, अप प्रति,
सुख्य, प्रतिफल, विलोमक २ रष्ट, क्रुद्ध ३ कष्ट
कर, दुःखप्रद ।

विपरीतता, स स्त्री (सं) प्रतीपता, प्रति
कूलता, विरोध, वैपरीत्यम् ।

विपर्यय, स पुं (सं) व्यत्यास, व्यत्यय,
विपर्यास, व्यतिक्रम २ अव्यवस्था, क्रमाभाव
३ भ्रान्ति (स्त्री), स्थलिन ४ मिथ्याज्ञानम् ।

विपर्यस्त, वि (सं) व्यत्यस्त, अवरोचर
२ अव्यवस्थित, भग्नक्रम, सकुल, सकीर्ण ।

विपर्यास, स पु (सं) दे 'विपर्यय' (१ २, ४) ।

विपल, स पु (सं न) क्षण, निमिष,
पलस्य षष्ठिमी भाग ।

विपाक, स पु (सं) पचन, पक्वता २ चर
मोक्षार्थ, पूर्णता ३ फल, परिणाम ४ कर्म
फल ५ अदरे भोजनस्य रसरूपेण परिणति
(स्त्री) ६ स्वाद ७ दुःगति (स्त्री) ।

विपिन, स पु (सं न) जगत्, वन, दे ।
२ उपवन, वाटिका ।

विपुल, वि (सं) बहु, भूरि, प्रभूत, अत्यधिक
२ विशाल, विस्तीर्ण ३ बृहत्, महत्
४ अगाध, अतिगभीर ।

विपुलता, स स्त्री (सं) आधिक्य, बहुत्व,
अनिशय २ विशालता, विस्तीर्णता ३ महत्ता,
बृहत्ता ।

विपुला, सं स्त्री (सं) पृथिवी, दे ।

विप्र, स पु (सं) प्राज्ञ दे २ पुरोहित ।

विप्रतिपत्ति, स स्त्री (मं) विरोध, विस
वाद, असंगति (स्त्री) २ परस्परविसर्वादि
वाचनम् (न्या), दुःख्याति (स्त्री) ४ विकृति
(स्त्री) ५ अनिद्धि (स्त्री) ।

विप्रतिपेय, स पु (सं) मिथोविरोध,
असंगति (स्त्री) ।

विप्रलभ, स प (मं) वियोग, विरह,
रगिणोर्विच्छेद २ छल, वचन-ना ।

विप्लव, स पु (मं) उपद्रव, डिक, अनर
२ विद्रोह, दे ३ कुव्यवस्था इमहोचना
४ आपद्-विपद् (स्त्री) ५ विनाश
आप्लाव, जलबृहन्म् ।

विफल, वि (सं) निष्फल, दे ।

विबुध, स पुं (सं) पठित, प्राज्ञ २ देव
३ चद्र ४ शिव ।

विबोध, स पु. (मं) जागरण २. सम्यग्ज्ञान
३ सावधानता ४ विकास ।

विभक्त, वि (सं) कृतविभाग, परिकल्पित
० पृथक्कृत, विदलेपित ३ विभिन्न, प्राप्त
विभाग ।

विभक्ति, स स्त्री (सं) विभजन, विभाग
२ वियोग, पार्थक्य ३ सुप्रप्रत्यय, निड
प्रत्यय (व्या) ।

विभव, स पु (सं) धन, संपत्ति (स्त्री)
२ देशर्थ, प्रताप ३ मोक्ष, नि श्रेयसम् ।

—शाली, वि (सं-लिन) धनाढ्य २ प्रता
पिन् ।

विभा, सं स्त्री (सं) कानि (स्त्री), प्रभा
२ किरण ३ सौन्दर्यम् ।

विभाग, स पु (सं) परिकल्पनं, विभजन,
अदानं, वटन २ अश, भाग, राड-ड, एव
देश ३ दायाश, रिक्यभाग ४ प्रकरण,
अध्याय ५ शाखा, कार्यक्षेत्रम् ।

—करना, क्रि स, दे 'वर्तना' ।

विभाज, स पु (सं) विभाजयित, विभा,
परिकल्पक, वट(ड)क ।

विभाजन, स पु (सं न) वट(ड)न, विन
जन, विभा, परिकल्पनम् ।

विभाजित, वि (सं) कृतविभाग, परिकल्पित,
वटिन, पठित ।

विभाज्य, वि (सं) विभजनीय, विभाज्य,
वटि(डि)ज्यम् ।

विभाजना, स स्त्री (सं) अर्थालकारभेद
(सा) ।

विभावरी, स स्त्री (सं) शर्वरी, रात्री
२ दूती, कुट्टनी ।

विभाषा, स स्त्री (सं) विकल्प (व्या) ।

विभिन्न, वि (सं) विच्छिन्न, लून, कृन्

० विभक्त त्रिकुक्त, पृथक्स्थित ३ नाना
अनेकबहु-वि विष ।

विभिन्नता, म स्त्री (स) विविधता - पृथक्
कनास्त्वम् ।

विभीषण, स पु (म) रावणभ्राता । वि
(स) भयङ्कर, भीम ।

विभु, वि (स) सर्वव्यापक विश्वव्यापिन
सर्वत्र, सर्वगत, २ नित्य ३ सुमहत् ४ शक्ति
मद । स पु (म) ईश्वर २ स्वामिन्
३ अमन् ।

विभूति, म स्त्री (म) विभव, ऐश्वर्य २ धन,
वित्त ३ अलौकिक-दिव्य शक्ति मिद्धि (द्रोनों
स्त्री) ४ शिवधृतिभङ्गम् (न) ५ लक्ष्मी
(स्त्री) ६ (विविध) सृष्टि (स्त्री), वृद्धि
(स्त्री) उत्कर्ष ।

विभूषण, म पु (स न) अलङ्करण, मदन
२ आभूषण अलङ्कार ।

विभूषित, वि (म) अलङ्कृत, मण्डित ० युक्त,
महित ३ सुशोभित ।

विभ्रम, म पु (म) वि भ्रान्ति (स्त्री),
भ्रम स्थानित २ मदेह ३ भ्रमण ४ स्त्रीणां
हावमेव ५ तौन्दर्यम् ।

विमति, स स्त्री (म) विपरीत-विरुद्ध, मत
विचार २ कुमति (स्त्री) ।

विमन, वि (म नम) सित्त, विषण्ण, दुर्मनस ।

विमर्श, म पु (म) विचार-रण रणा मवण
णा, विवेचनं ० समीक्षा बालोचना
३ परीक्षा ४ परामर्श ।

विमल, वि (म) स्वच्छ निर्मल, दे
२ निर्दोष ३ सुन्दर ।

—मणि, म पु (स) दे 'रत्न टक' ।

—मति, वि, (म) युद्ध इत्यव्ययित ।

विमलता म स्त्री (म) निर्मलता दे ।

विमला, म स्त्री (म) मरुस्वती, शारदा
० मिद्धिविशेष ।

—पति, म पु (म) भद्रत (पु), विधि ।

विमाम, म पु (म पुं न) अस्वच्छ अप
विष-अमशुद्ध, अमन् । (इन्द्रपुरादीनाम्) ।

विमाता, म स्त्री (म-तृ) मातृभारती ।

विमान, म पु (म पु न) देवराज, वायु
ज्योमन्वान ० रथ, वाहन ३ घोष
४ उत्सृष्टिकं गृह ५ शक्यमानम् ।

विमुख, वि (स) विरत निरपेक्ष, निरीह,
जीर्णुव्यहीन २ विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल
३ निराश, अपूर्णकाम ४ अवदन ।

विमुखता, स स्त्री (स) विरति (स्त्री),
जीर्णुव्य ० विरोध, विपरीतता ।

विमुद्, वि (स) अज्ञ, अज्ञानिन, २ निस्मय,
मूर्च्छित ३ आभ्या, मुल, विकल्प ३ अति,
सुख-भोहित ।

विमोक्ष, स पु (स) दे 'मोक्ष' ।

वियोग, स पु (स) विरह, विप्रलम्ब,
विप्रयोग २ विच्छेद, विद्वेष, विभेद
३ पाथक्य, पृथग्भाव ४ व्यवकलनं (गणित) ।

वियोगात्, वि (स) दुःख, अत पर्यवसायिन्
(नाटकदि) ।

वियोगिनी, वि स्त्री (स) विरहिणी, वियुक्ता,
प्रोषित, पतिका भर्तुका ।

वियोगी, वि (मं गिन्) विरहित, वियुक्त ।

वियोजक वि (स) विद्वेषक, विच्छेदक ।

विरचि, म पु (सं) विधातृ, म्दान् (पु) ।

—सुत, स पु (म) नारद ।

विरक्त, वि (स) विरत, विमुग्ध, निरीह,
निवृत्त २ उदासीन, सिम्प्रयोदन ३ खिन्न,
रट वैरागिन्, वैरागिक ।

विरक्ति, सं स्त्री (सं) विरति (स्त्री),
विराग, विमुक्तता, वैराग्य, विरक्तता
२ उदासीन्य ३ रस ।

विरत, वि (स) दे 'विरक्त' (१, ४) साव
काश, अव्याप्त-अनिव्याप्त, -पर, -परायण ।

विरति, सं स्त्री (सं) दे 'विरक्ति' (१३)
४ विराम, विच्छेद, उपर(रा)म ।

विरद स पुं, दे 'विर' ।

विरल, वि (स) पनना-विद्वता, सुन्य
२ दुर्लभ, दुर्घ, प्रायःप्रायण ३ तनु ४ निर्जन
५ अल्प ६ विप्रकृष्ट, दूरस्थ ।

—पातक, वि (म) न्यून अल्प पातक पाप,
अभिलिख-अनन पूत, प्राय-वत्य ।

विरला, वि (सं विरल) दे 'विरल' (१२) ।

विरव, वि (स) नि मूढ, नीरव ।

विरस, वि (मं) नीर, दे २ अविद्य ।

विरमा, सं पुं (अ) दे 'विरामण ?' ।

विरह, म पुं (सं) दे 'वियोग' (१३) ।

५ वियोगत्र दुःखम् ।

—जनित, वि (स) विरह, जन्म, वियोग, पञ्चदशत ।
 विरहिणी, वि स्त्री (स) वियोगिनी, दे ।
 विरही, वि (स ह्रिन्) दे 'वियोगी' ।
 विराग, स पु (स) दे 'वैराग्य' ।
 विरागी, वि (स गिन्) दे 'वैरागी' ।
 विराजना, कि अ (स विराजन्) शुभ विराच् (भ्वा आ मे) प्रविभा (अ प अ) = ह्य (भ्वा आ मे), विद् (दि आ अ), उपविद् (तु प अ) आम (अ वा से) ।
 विराजमान, वि (स) प्रवाशमान, शोभमान, आश्रमान, भातुर २ विद्यमान, उपस्थित, वर्तमान ३ उपविष्ट, आसीन ।
 विराट्, स पु (स-राच्) विश्वरूप, ब्रह्मन् (न) ३ क्षत्रिय ।
 विराट्, स पु (स) मत्पदेश २ तद्वै शीघोराजविशेष ।
 —पर्व, स पु [म-र्वन् (न)] शीघ्रहा वारतस्य चतुर्थं पर्वन् (न) ।
 विराम, स पु (स) दे 'विरति' (४) । २ विग्राम, विश्रान्ति (स्त्री) ३ बाक्वत्त्व मन ४ दति (स्त्री) ।
 विराय, स पु (म) शब्द, ध्वनि २ क्लकल ।
 विरासत्, सं स्त्री (अ) दाय, पैतृकधन, रिष्य २ दायादत्त्व, रिष्यदत्त्वम् ।
 विरह, स पु (स) गुणोक्तपर्वण, यथा मोहन, प्रशस्ति (स्त्री) २ यशस (न), कीर्ति (स्त्री) ३ मृगेषु 'विशब्द' ।
 विरहावली, स स्त्री (स) लवमाला, यशोपणम् ।
 विरह, वि (स) प्रतिकूल, विरोधिन्, विपरीति, प्रतीप २ रुष्ट, शित्र ३ अनुचिन्, अन्वय्य ।
 विरूप, वि (स) बहुरूप, मानाकार = बुरूप, कुदर्योन् ३ परिवर्तन ४ निरधीन, हीन हीन ५ विरुद्ध ६ भिन्न ।
 विरेचक, वि (सं) सारक, मलमेदक, विरेचकाक, दे 'रेचक' ।
 विरेचन, स पु (स न) मलमेदकौषध, दे 'रेचन' २ रेक, रेचन-ना, मलमेद ।
 विरोध, सं पु (स) वैर, शत्रुनात्वं, वि, द्वेष, सापत्न्य २ असंगति (स्त्री), विरुद्ध, विपरीताना ३ विप्रतिपत्ति (स्त्री), व्यापान ४ जघान्यारमेद (सा) ।

—करना, कि स विप्रतिपत्ति (स उ अ), प्रतिकूल प्रत्यवस्था (भ्वा आ अ) विप्रतिहन (अ प अ) २ विप्रत्य (भ्वा प मे), प्रतिशिप (तु प अ) ।
 विरोधी, स पु (म-धिन्) वैरिन्, शत्रु, ३ विप्रतिन्, प्रागङ्घ्रिन् ४ विरोधन्, विनकर ।
 विरुध, स पु (स) अनिकल, बेलनिकम, काल श्लेष हरण दे 'देर' ।
 विरुचित, वि (स) विरायित, व्याकृत २ प्रत्य लक्षमान ।
 विलक्षण, वि (स) अनाधारण, अमामान्य, अदभुत अपूर्व, विरिष्ट ।
 विलक्षणता, स स्त्री (म) विलक्षण्य, विरिष्टता इ ।
 विलय, स पु (म) विलयन, द्रवीभवन २ लोप, मद्रशान ३ शृङ्ग ४ वि, नाश ५ प्रलय ।
 विलाप, स पु (स) परिवेदन, ना, शोकन वचन अनुसोचनोक्ति (स्त्री) २ कदम, र(रो)दनम् ।
 —करना, कि अ, विल्प अनुशुच् परिदेव् (भ्वा प से) ।
 विलायत्, स पु (म) विपर, देश २ दूर देश (यूरो, अमेरिका आदि) ।
 विलायती, वि (अ) दे 'विदेशी' ।
 —दान, स पु (अ+दि) दे 'दामार' ।
 विलास, स पु (स) विभ्रन, लीला, ह्राव भेद दे 'नलरा' २ आनन्द, ह्य ३ मनो, मन विनोद ४ सुसभोग ५ कप पन, पत्ति (स्त्री) ६ आश्रय ह्यप्रद-मनोहा रन्ति, वेष्टा किला ।
 विलासिनी, स स्त्री (स) कामिनी, मुदरी, रागला २ नारी ३ बेरया ४ वर्षवृष्टभेद ।
 विलासी, वि (स सिन्) भोगिन्, विषय म-आमक, कामिन् २ लोहापर, क्रीडा प्रिय, वीतुकिन् ३ मुत्तैविन् ।
 विलीन, वि (स) अन्तर गितो हित, क्षय २ नष्ट ३ गुप्त, गूढ ।
 विलोचन, स पु (स विलयन्) विलयन, द्रवीभव २ दारण, गहनम् ।

विलुठन, स पु, विलुठन, लुठ, लुठा २
चोरण मोरणम् ३ लुठन, लोठनम् ।

विलोकना, किं म (स विलोकन) द
'देखना' ।

विलोडना, किं स, दे 'विलोना' ।

विलोम, वि (स) प्रतिकूल, विपरीत, प्रति
लोम, प्रतीप २ स्वरावरोह (सगीत) ।

विलोल, वि, (स) चल, अस्थिर २ टट्टर ।

विवक्षा, स स्त्री (स) वक्तुमिच्छा, विव
दिषा २ तात्पर्य ३ संदेह ।

विवक्षित, वि (म) वक्तुमिष्ट २ अपेक्षित ।

विवर, म पु (स न) छिद्र, विल २ गन
लं, अवत, खान ३ कदरा, गुहा ।

विवरण, स पु (स न) व्याख्यान, विवे
चन २ विस्तृत, वर्णन-वृत्तता ३ टीका,
भाष्य, व्याख्या ।

विवर्जित, वि (स) निषिद्ध, बहिर् २ उपे
क्षित, अनादृत ३ वचित, रहित ।

विवर्ष, वि (स) निस्तेजस, निष्प्रभ, वन्ति
धीन २ क्षुद्र, नीच ।

विवर्त, स पु (स) भ्रम, भ्रान्ति (स्त्री)
२ रूपांतर, दशांतरम् ।

—वाद्, सं पु (स) वेदाननिष्ठाविशेष ।

विवश, वि (म) अग्निक, निरुपाय ३ परा
धीन ३ दुर्गत ४ निर्बल ।

विवस्वान्, स पु (सं स्वत्) सूर्य २ अरण्य,
सूर्यसारथि ।

विवाद, स पु (म) वाद, अनुवाद प्रति
वाद, वाग्वाद, युद्ध, तर्कवितर्क २ बलह,
कलि ३ मारभेद ४ व्यवहार, कृणादि
-याय, दे 'मुकदमेवाजी' ।

—करना, ति अ, विवद् (भ्वा आ से),
विप्रतिपद् (दि आ ज), विप्रल्प (भ्वा
प से) ।

विवादास्पद, वि (स) विवाद-अह प्रान्त
योग्य, सदिग्ध ।

विवाह, म पु (स) पाणि, प्रदण-करणं
पीडन, उपय(दा)म, परिणय, उद्वाह, दार,
परिमह-व्यसन् ।

—करना, किं स, उद् वि बह् (भ्वा उ अ),
दारान् परिमह् (क् प स), परिणी (भ्वा
प अ) ।

—(मं) देना, किं स, विवाहे दा, पाणि मद्
(प्रे), उद्द् (प्रे) ।

विवाहित, वि पु (मं) ऊढ, परिणीत,
निविष्ट, कृतविवाद, उपयत, स्त्रीमत्, सपत्नीग ।

विवाहिता, मं स्त्री (स) पतिवती, नभर्तृगा,
ऊढा, परिणीता, उपयता ।

विविक्त, वि (स) पृथग्भूत, विद्युक्त २
एकल, असहाय ३ पूत, निर्दोष ४ विवेचिन्,
विवेकशील ।

त्रिविध, वि (स) अनेक-जाता-बहु, विध
प्रकार-रूप-जातीय ।

विवेक, स पु (स) परिच्छेद, सदसज्ज्ञान,
मिथो ब्यावृत्त्या वस्तुस्वरूपनिश्चय, पृथग्भाव,
पृथगात्मता, विवेचन २ भ्रटामद्-सदसद,
परिच्छेदशक्ति (स्त्री), ३ बुद्धि मनि
(स्त्री) ४ सत्यज्ञानम् ।

विवेकी, वि (स किन्) परिच्छेदक, विवेचक,
गुणदोषक, विशेषक, विवेकान् २ बुद्धि-मनि,
मन् ३ ज्ञानिन् ४, न्यायशील ५ आधि
करणिक ।

त्रिवेचक, वि (मं) दे 'विवेकी' ।

विवेचन, मं पु (स न) दे 'विवेक'(२) ।
२ सम्बन्ध, परीक्षा-क्षण, गुणदोषविचारण,
परि-आलोचन ना ३ अनुसंधान ४ तर्कवि
तरं ५ मोक्षासा ।

त्रिवेचना, स स्त्री (सं) दे 'विवेचन' ।

विशद, वि (स) निर्मल, विमल, स्वच्छ
० सुवि, स्पष्ट, व्यक्त, प्रकट, स्पष्ट ३ सिन,
उज्वल, श्वेत ४ सुंदर ।

विशारा, स स्त्री (स) राधा, नद्यत्रिशेष ।
विशारद, वि (स) कुशल, दक्ष, प्रवीण
० विद्व, विशेषक, श्रुतपत्र, निष्णात ।

विशाल, वि (स) विलुप्त, विस्तीर्ण, महत्,
बृहत्, पृथु उरु २ भव्य, सुंदर ३, विस्फान ।
विशालता, स स्त्री (सं) प्रथिमत्, विस्तार,
बृहत्ता, पृथुता ।

विशारत, स पु (मं) बाण, शत्रु । वि-
(सं) शिरसाहीन ।

विशिष्ट, वि (स) युक्त, युक्त, अचिन, सहित
२ विशेष-असामान्य ३ अद्भुत, विलक्षण
३ अनिशिष्ट ४ यशस्विन् ५ प्रसिद्ध ।

विशिष्टता, सं स्त्री (स) दे 'विशेषण' ।

विशिष्टाद्वैतवाद, म पु (स) भेगभेगवाद,
द्वैताद्वैतवाद ।

विनीर्ण, वि (स) शुक्ल र क्षीण ३ जीर्ण ।
विशाल, वि (स) दुर्गचरित दुर्गान्,
कुशील ।

विशुद्ध, वि (म) दे 'शुद्ध' ० मन्व ।
विशुद्धि, म स्त्री (स) शुद्धता पवित्रता
२ मदेह-महाशय, निवारणम् । ३ प्रनि(ती)
वार, प्रनिरोध ४ कान्तशोधनम् ५ परि
ष्कार ६ पुष्कानम् ।

विशुचिका, म स्त्री, दे 'विशुचिका' ।
विरोध, वि (स) अमाधारण (पी स्त्री) ।
विशिष्ट, विलक्षण । स पु (स) त्मपदार्थो
नार्तिपदार्थविशेष (वैभेदिक) २ अन्तर, भेद
३ अर्थान्तरभेद (सा) ।

विरोधस्य, वि (स) प्रवीण, निपुण, विश्व,
पारंगत, पारदासिन ।

विरोधस्य, स पु (स न) सहायीना विरोध
साधोपक पद (व्या) २ उपाधि गुण,
विरोधधर्म ।

विरोधस्य, अन्व (म) विरोधेण, प्रथानत ।
विरोधता, म स्त्री (स) विशिष्टता, असा
धारणा, विलक्षणता ।

विरोधस्य, स पु (स न) विरोधस्यन्विन
नकारिणः (व्या) ।

विशोक, वि (म) शोकहीन, प्रसन्न, सुदित,
प्रहृष्ट ।

विश्रम, स पु (स) विश्रान्त, प्रत्यय
२ अनुराग प्रेमम् (पु न) ।

विश्रम्य, वि (स) विश्रमनीय, विश्रामार्ह
२ शान्त ३ निभय ।

विश्रान्त, वि (स) व्यपगतध्रम, इन्गान्ति
श्रान्ति, शून्य ।

विश्रान्ति, म स्त्री (म) विश्रान्त, दे ।

विश्राम, स पु (स) विश्रान्त, विश्रान्ति
(स्त्री), श्रमोपशम, कार्य-व्यापार, निवृत्ति
(स्त्री) २ सुख ३ शान्ति (स्त्री) ।

—करना, क्रि अ, विश्रम (दि प से),
आश्रयन् (म्वा प अ), कायात् निवृत्त
(म्वा आ से) ।

विश्रत, रि (स) विल्याप्त, प्रसिद्ध, दे ।

विशिष्ट, वि (स) पृथग्भूत, जिन, विरहित

२ विरहित ३ प्रकट ४ अपावृत्त ५ शान
६ व्यकृत ।

विश्लेष, म पु (म) विपटन, विच्छेद,
पृथग्भाव २ विरह, वियोग ।

विश्लेषण, म पु (स न) व्यवच्छेद,
व्याकृति (स्त्री), पृथक्करणम् ।

विश्वम्बर, सं पु (म) परमेश्वर २ विष्णु ।

विश्वम्बरा, सं स्त्री (म) भरणी, पृथिवी दे ।

विश्व, स पु (स न) पगद (न), जगती
(स्त्री), विशुवन, ब्रह्माण्ड २ भू-पृथिवी,
लोक । वि (म) सर्व, सकल, समस्त ।

—कर्ता, स पु (स न) परमेश्वर ।

—कर्मा, स पु (स-म्भन्) विश्वकृत, देव,
ब्रह्मक शिल्पिन, त्वष्टृ परमेश्वर ३ ब्रह्मन्
(पु) विधि ४ सूर्य ५ तक्षक, वषट्कि
६ लोहकार ७ गृहकारक, पलंगड ।

—कोरा (-प), सं पु (स) सर्वविषय वृहत्,
कोष ।

—विश्व, सं पु (स) यन्-व्याग, भेद ।
वि (स) जितविश्व, विश्वविजयिन् ।

—देव, स पु (स-वा बड) देवगणभेद ।

—नाथ, सं पु (सं) शिव २ साहित्य
दर्पणकार पटितविशेष ।

—पति, स पु (स) ईश्वर ।

—शत्रु, स पु (स) शिव २ जगत्सत्त्व ।

—विद्यालय, स पु (स) दे 'पूनिर्वासी' ।

—व्यापार, वि (स पिन्) विश्व-मन्त्र-व्यापक
(ईश्वरदि) ।

—साक्षी, स पु (स-भिन्) सर्वद्रष्टा जगदीश्वर ।

विश्वसनीय, वि (स) विश्वास्य, विश्वास,
योग्य भर्तृ, विश्रम, पात्र भात्रन आरूपदम् ।

विश्वसनीयता, स स्त्री (स) विश्वात्म्यता,
विश्वासपात्रता ।

विश्वस्त, वि (म) दे 'विश्रमनीय' ।

विश्रामिन्, स पु (म) गाथेय, गाथिन,
कौशिक (ब्रह्मविशिष्ट) ।

विश्वास, स पु (म) प्रत्यय, विश्रम,
० श्रदा, दे ।

—करना, क्रि, अ, विश्वत् (अ प से),
श्रदा (चु उ अ), प्रतिर (अ प अ) ।

—दिलाना, क्रि स, उपर्युक्त धातुओं के
रे रूप ।

—घात, स पु (म) विश्वभग प्रत्यय
भक्षण ममय-प्रन भग ।
—घातक, वि (क) विश्वममक, विश्वाम
घाति ।
—घात्र, स पु (स न) विश्वाम्य विश्वसनीय ।
त्रिधेश्वर, स पु (स) परमेश्वर २ शिवम्
तिविशेष ।
शिव स पु (स पु न) गरल, ज(वा)गुल,
खेट, कालकूट, ह(हा)लाहल, गर, गरद,
धोर, तीक्ष्णम् ।
—कन्या, स स्त्री (स) मैथुनमात्रेण सभोक्तृ
हनी दुमारी नारी वा ।
—धर, म पु (सं) सर्प ।
—हर, वि (म) विप, नाशक-घाति ।
—की गाठ, मु, अपनारक, हानिप्रद ।
—देसा, मु, विशेष मृद्दन् (प्रे) ।
विपक्त, वि (स) रुम्धित, बद्धमूल, दृढमूत्र
सम्पन्न ।
विपण्ण, वि (मं) शोभमान, परि-म, तप्त,
भवमान ।
—मुच, वि (स) विपण्णवदन, सशोभास्य ।
आर्त्त, विदूत ।
विपण्णता, म स्त्री (स), मनाङ्गता, पतिप्रसता,
अरुमन्त्रता, मोनार्त्ता ।
विपम, वि (सं) अमम, नतोन्नत, षिटलावृत्त,
२ अयुग्म, दे 'ताक' ३ विन्द, कठिन,
दुस्माद्य ४ अग्नि, तीव्र तीक्ष्ण ५ भीषण,
धोर ।
—ज्वर, स पु (सं) ज्वरभेद २ दे
'मन्त्रिया' ।
—नयन, म पु (म) विपमनेत्र, शिव ।
—वाण, मं पु (स) वदर्प, काम ।
—वृत्त, स पु (म न) अममचरण कृत
(छद) ।
विपमता, स स्त्री (क) वैषम्य, समताऽभाव
= अयुग्मता ३ वैर, विरोध ।
विषय, म पु (म) गोचर, इन्द्रिया
(=शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा) २ देश, जनपद
३ प्रवरण, प्रसंग ४ उपमा, आलोक्य
दन ५ सुरत, मैथुन ६ इच्छा, पदार्थ
७ कार्य, व्यापार, अर्थ ।
—सुख, मं पु (सं न) इन्द्रियभोग्यम् ।

—त्रिपयक, वि (सं)-सवधित, उदिरय,
अधिजत्य, अश्रित्य ।
त्रिपयी, वि (मं यिन्) भोगत्रिपय, आमक,
लपन् विषय, निरत पर परादण-अधीन, कामिन्,
विलासिन, रतद्विण्डक, टंकर, औपस्थिक ।
विपाण, स पु (स न) शृंग, दे 'सौंग'
२ गजदत ३ कोल्दत ।
विपाट, स पु (स) अवसाद, दुःख, शोक,
परि-म, ताप, आवि (पु), आति (स्त्री)
२ जात्य ३ मौल्यम् ।
विपुव, मं पु (स न) विपुवत (न),
विपुप, विपुण, समरात्रिदिवकाल [= मौर
चैत्र माम वी नवी (२२ मार्च) तथा मौर
आभिन् मास वी नवी (२२ मिनवर)] ।
—देखा, म स्त्री (सं) निरक्ष, भूकक्षा,
भूमन्त्रेया, विपुवदेखा ।
जल—, स ष (स न) विपुपद (२२ मिनवर) ।
महा—, स पु (म न) हरिपद (२२ मार्च) ।
मिपूचिना, स स्त्री, दे 'हिजा' ।
मिष्टा, स स्त्री (स) उच्चार, गृथ-ध, मल
ल, पुरीष, नाग, शकून (न), निष् (स्त्री) ।
विष्णु, म पु (म) चक्रिद, चतुर्भुज, चक्र
पाणि, जनार्दन, विविक्रम, हरि, हृषीकेश,
श्री, पति निरास बल्ल-वर धर, वैकुण्ठ,
मायव, मनुवदन, पुष्पोत्तम, पीतावर,
दामोदर, पद्मनाभ, नारायण, येशव,
कृष्ण, गोपाल ३ । २ अग्नि ३ अदित्य
विशेष ।
—गुप्त, स पु (स) वैयाकरणविशेष
२ चाणक्य ।
—पद, सं पु (सं न) आकाश ३ २ पर्श
३ क्षीरोद ।
—पर्दी, म स्त्री (सं) गगा ।
—पुराण, स पु (मं न) पुराणप्रदविशेष ।
विमर्ग, म पु (म) विमर्गनीय, वधविशेष
(= व्या) २ दान ३ स्वयं ४ मुक्ति
(स्त्री), नि शेषम् ५ मृत्यु ६ प्रलय
७ विरह ।
विमर्गन, सं पु (मं न) परि, श्याम उत्सर्ग,
मौन, उज्जत २ म, श्रेयण, प्रस्थापन
३ प्रस्थान, प्रवाण ४ समाप्ति (स्त्री), अंन
५ दान, वितरणम् ।
विमाल, मं पु (अ) संयोग, संगम ।

विशुद्धिका, स स्त्री (स) विशुद्धी, दे 'ईजा'
२ अन्वययोगभेद ।

विस्तार, स पुं (स) विस्तार, दे २ आसन,
पीठम् ।

विस्तार, स पु (स) विस्तार, प्रसन्न, प्र,
आयान, वितानि (स्त्री) विग्रह, व्यान,
विस्तारिता २ विन्द, गायत्रा ।

—करना, कि स, प्रस'बलु (प्रे), दे
'कैलासा' ।

विस्तारिणी, व (स) विस्तृत प्रसन्न, विगत
आयन २ विपुल, प्रचुर ३ विदाल, महत्,
बृहत् ।

विस्तृत, वि (स) दे 'विस्तारिणी' ।

विस्तारो, स पुं (सं) लशब्द-भा-भ्युत्पन्न
स्त्रोन् २ रि(वि)ट्ठक-कका, स्त्रोन्-ट्ठक ।

विस्तारोटक, स पु (स) दे 'विस्तारो' (२)
२ श्रोत्रमण्डल ३ दे 'वेचक' ।

विस्मय, स पु (स) आश्चर्य, चमत्कार
२ ग्व ३ सदेह' । वि (स) हतदर्प ।

विस्मरण, स पु (स न) विस्मृति (स्त्री)
स्मृति-नाश-शेष ।

विस्मय, वि (स) विस्मय-आश्चय, आपन
शक्ति, चकन, विस्मयकुल ।

विस्तृत, वि (स) स्मृतिज्ञान, स्मृतिपथ-
अपेक्ष ।

विस्तृति, सं स्त्री (स) विस्मरण, दे ।

विस्मन, स पु (स) विधास, प्रत्यय
२ हत्या, वध ।

विहय, विहयम, विहय, स पु (स) छग,
दे 'पत्नी' ।

विहारण, स पुं (स न) विहारण, अटन,
अमग २ विद्योग ३ प्रमत्तम ।

विहार, स पुं (स) परिक्रम-नय, पयटन,
परिभ्रमण, विहारण विचरण २ श्रुत,
संयोग ३ श्रुतारण्य ४ सपाराय, अणन,
कठ दे ।

विहारी, स पु (स रिट्) भोगमत्त
२ विहारण ३ शीघ्रता ।

विहित, वि (स) (शकादिभिः) अदिष्ट,
दिष्ट, उपदिष्ट २ न्याय, धन्य, उचित
३ कृत्, अनुष्ठित ४ दत्त ।

विहीन, वि (म) परि, स्वच्छ उच्छिन्न
२ रविन, वनिन हीन, वनिन, शून्य ।

विह्वल, वि (स) विकल्प, व्यकुल, दे ।

विह्वलता, स स्त्री (म) व्याकुलता, दे ।

वीची, स स्त्री (स) लहरी, तरा, दे ।
२ ररिम, मरीचि, दीपिति, (सप्त पु)
३ कान्ति शक्ति (स्त्री) ।

—सोभ, स पु (स) लहरी-विस्तृत ।

—तरण न्याय, स पु (स) दे षष्ठ परिशिष्ट ।

—माली, स पु (स लिट्) छार, स्तुत्र,
अप्य ।

वीज, स पु (स न) वीज, दे ।

वीजन्, स पु (स न) व्यवहन, दे 'पत्ता' ।

वीणा, स स्त्री (स) बल्लरी, विपची-विना,
ध्वनिमाना, वगमन्त्री, परिवारिणी घोषवती,
कठकूपिका २ विद्वत् (स्त्री) ।

—वृद्ध, स पु (म) प्रवृत्त ।

—पाणि, स स्त्री (म) सरस्वती ।

वीर, वि (स) प्रस्थित, प्रदान २ परित्यक्त
३ मुक्त ४ समाप्त ५ रजित, हीन ।

—भय, वि (सं) विगत-निर-भय ।

—राग, वि (स) विरक्त, निस्त्वह ।

—शोक, वि (स) निरशोक । स पु (स)
अयोविद्वेष ।

वीथी, स स्त्री (स) वीथि (स्त्री), वीथिना,
रम्भा, मार्ग २ पथि (स्त्री) ३ रूपकमेद
(स्त्री) ।

वीर, स पु (स) शूर, शीघ्र, मुक्किक,
प्र-महान्, वीर, जेव २ वीर, वीर्य, मन्,
सैनिक ३ नायक, अग्रणी (पुं) ४ पुत्र
५ पति ६ भ्रातृ । वि (स) विकार,
वीरवध, सङ्घटिक, पराक्रमिन् ।

—केसरि, स पु (स रिट्) वीर, पुत्र-
वत्सल ।

—गात्रि, सं स्त्री (स) वृद्धे नराण्य स्वर्ग
लभ २ स्वर्ग ।

—चक्र, स पु, (स वीर-चक्र) सैनिकानां
अरिणां सम्मानस्वरक्षणाय राजत वा
पदकम् २ पुरस्कारविशेष ।

—पत्नी, स स्त्री (स) वीर-नर्या ।

—प्रसू, स स्त्री (स) वीर, इ-माट (स्त्री)
जननी ।

—भद्र, स पु (स) अधनेवध २ वीरो
रुम ३ शिवान्-विद्वेष ।

—दोह, सं पु (स) स्वर्ग ।

धारता, स स्त्री (स) बायें, शरता, शौर्यं,
परावि, क्रम, सद्दत्त, रणात्साह, ओजस्
धामन् (न) ।

वीरान, वि (क्रा) निमातुप, निरवि, नन
२ निरश्रीक, शोमाहीन ।

वीराना, स पु (क्रा) विनन, निननप्रदेश ।

वीरानी, स स्त्री (क्रा) विननता, निर्जनता ।

वीर्यं, स पु (स न) शुक्र, रेतस-तेजस
(न) बीज, चरमषातु इन्द्रिय ३ दे 'रज'
३ वीरता, दे ४ बीजम् ।

—के कीडे, स पु, शुक्रवीदा ।

—ज, स पु (स) पुत्र, तनय ।

—विरहित, वि (स) निशक्त २ क्लेश
३ भीरु ।

वीर्यवान्, वि (स-वत्) बलवत्, वृद्धो
२ मासल ।

वृद्धक, स पु (अ) परिचय २ ज्ञानम्
३ वृद्धि (स्त्री) ।

वृह्, स पु (अ) अगशालनम् (इस्लाम) ।

वृत्, स पु (स न) चुचुक-क, स्तन कुच,
अय २ प्रसवदपन, दे 'दोटी' ।

वृद्, स पु (स न) समूह, निकर २ कोटि
शाक, अर्बुदम् ।

वृदा, स स्त्री (स) मुलती (पौदा) दे २ रथा ।

—वन, म पु (स) वृदारण्य २ नीपविशेष ।

वृक, स पु (स) शैर ईहमृग २ शृगाल ।

वृक्ष, स पु (स) तर, पादप, शारिम्,
विटपिन, द्रु, द्रुम, पत्तिसिन्धु, मही क्षितिभू,
रह १ अग, जग, विटप ।

वृत्त, म पु (सं न) चारत, चरित, आचार,
आचरण २ सद्, श्रुत आचार ३ समाचार,
वृत्तान्त, उद्ग ४ वर्णवृत्तस (न)
५ मन्त्र, वतुलम् ।

—राड, स पु (स पु न) मन्त्रवर्तुल,
अंश ।

वृत्ति, म स्त्री (सं) आशीर्षजन विना,
जीवन, जीविना २ उपजीविना, भूति (स्त्री)
३ संज्ञितार्थभोरव्याख्या, मृत्तार्थविवरण, टीका
४ वृत्, वृत्तान ५ नाटकीयदेवी (सा
कैथिकी ३) ६ व्यवहार ७ विद्यावस्था
(योग, शिष्टमूढ़ादि) ८ स्वभाव, प्रकृति
(स्त्री) ।

वृत्, म स्त्री (स) शिक्षणोपनीविका ।

मनो, स स्त्री (स) स्वभाव, प्रकृति
(स्त्री), प्रवणता ।

वृथा, वि (स) व्यर्थ, निरर्थक, भोष । कि
वि (स) मुधा, व्यर्थ, निष्फलम् ।

वृद्ध, वि (स) स्थविर, वयस्क, -न, वृणी,
जरितन । सं पु (स) जरट, स्थविर
३, दे 'वृद्ध' २ पठित ।

वृद्धता, स स्त्री (स) जरा, वाढन-व्य, दे
'वृद्धापा' ।

वृद्धा, स स्त्री (स) स्थविरा, जरणी, दे
'वृद्धिया' ।

वृद्धावस्था, स स्त्री (स) दे 'वृद्धता' ।

वृद्धि, स स्त्री (स) बर्धन, वृहण, उत्थि
(स्त्री), उत्कर्ष, उपचय, आधिनय, विस्तार
२ वृशीद, वाढन-व्य, दे 'वृद्ध' ३ अम्बुदय,
समृद्धि (स्त्री) ४ वृष्यशुद्धवर्गोपचय
(राननीति), स्त्रीनि-स्त्रीनि (स्त्री)
५ जीवमद्वा (औषधविशेष) ।

—जीवक, स पु (स) कुमीदिन, वाढविक ।

—जीवन, सं पु (स न) जीवाय, वृद्धि
जीविका ।

वृक्षिक, म पु (स) वृक्षन, पदाकु, दे
'विच्छू' २ अष्टमराशि (ज्यो) ३ अग्रहा
मणमास ।

वृष, स पु (स) ऋषभ, वृषभ, दे 'बैल'
२ पुत्रप्रकार (वामदास्य) ३ धम
४ द्वितीयराशि (ज्यो) ५ एनि ।

वृषभ, म पु (स) बलीवद, उज्वल, दे
'बैल' ।

वृष्टि, स स्त्री (सं) वर्ष, पपन, पराश्रुत,
दे 'वषा' ।

वृहस्पति, सं पु (स) सुराचय, दे 'वृह
स्पति' २ नवग्रहागणपंचमग्रह ३ गुरुवार ।
वे, मव (दि वृह वा बहु) ते अमी (दानो
पु बहु) हा, अमू (दोनो स्त्री बहु),
तानि, अमूनि (दोनो न बहु) ।

वेग, म पु (सं) प्रवाह, धारा, वैणी, ओष
२ जव, स्थद, रय, म्दम् रदस (ज),
रभम, प्रमम ३ भूवविष्ट दिनिगमप्रकृति
(स्त्री) ४ स्वरा, शायता ५ आनद
६ प्रकृति (स्त्री) ७ उषोग ८ वृद्धि
(स्त्री) ९ वीर्य, शुक्र १० गुणमद (वाय) ।

वेगवान्, वि (स-वत्) क्षिप्र, द्रुत, द्यौष, नवन, आशु ।
 वेणी, स स्त्री (स) वेणि (स्त्री), प्रवेणी
 णि, वेणिका २ जनीष, सोमप्रवाह ।
 वेणु, स पु (स) वश, दे 'बर्नि' २ वशी,
 दे 'बसिरी' ।
 वेतन, स पु (म न) भरु-ज्य, निर्वश,
 भति (स्त्री), मृत्या, भर्मण्या, कर्मण्या
 २ मासिक, मामिषमिति (स्त्री) ।
 —भोगी, स पु (स गिन्) वेतन मृति,
 पुञ्, वैगनिक ।
 वेताल, स पु (स) द्वारपाल २ भूतभेद
 ३ भूताधिष्ठितशव ।
 वेत्ता, स पु (म-त्) शाह, बोद्ध, विद ।
 वेद, स पु (स) श्रुति (स्त्री), छदस्
 (न), ज्ञान्या, निगम, मन्त्र (न),
 प्रवचन, अर्च्यमंत्र-यविशेषा (क्षग, यजु,
 साम, अथर्व = ४ वेद) २ सत्यज्ञानम् ।
 —त्रयी, स स्त्री (स) वेदत्रयम् ।
 —विद्वक्, सं पु (स) श्रुतिविरोधिन्,
 मान्दिक २ बुद्ध ३ बौद्ध ।
 —पारग, स पु (स) वेद, स विद्व-मूर्ति
 वेणु शान्तिन्-दक्षिन् ।
 —मत्र, स पु (स) श्रुति, वचन-वाक्यम् ।
 —माता, स स्त्री (स तृ) गायत्री, भावित्री
 २ मरुत्तरी ३ दुर्गा ।
 —वाक्य, स पु (स न) वेद, मत्र-वचन
 २ प्रामाणिकवचनम् ।
 —विद्व, म पु (स) दे 'वदपारग' ।
 —विहित, वि (स) वेद, प्रतिपादित आदिष्ट
 उक्त ।
 —व्यास, स पु (सं) दे 'व्यास' ।
 —सम्मत, वि (स) वेद, अनुसृत अनुमोदित ।
 वेदना, स स्त्री (म) पीडा, व्याथा, यतना,
 मत्ताप २ वेदनं, अनुभव, मवेद, ज्ञानम् ।
 वेदनीय, वि (सं) ज्ञानव्य, वेद, बोद्धव्य
 २ ज्ञाननीय, बोधवित्तम् ३ ऋषयः, दुःखर ।
 वेदगा, स पु (स न) श्रुत्यवयववर्णप्रकार
 शास्त्र [= शिक्षा, वक्ष्य, व्याकरण, निष्कर्ष,
 ज्योतिष, छदम् (न)] ।
 वेदात्, स पु (स) मन्त्र अध्यात्म, विद्या,
 ज्ञानराज २ उपनिषद् (स्त्री) ३ उत्तरमी
 मासा, दर्शनशास्त्रविशेष ।

वेदाती, म पु (स तिन्) वेदानशास्त्रवेत्तु
 ब्रह्मवादिन् ।
 वेदाभ्यास, स पु (स) वेद, अध्ययन
 स्वाध्याय-पाठ ।
 वेदी, १ स स्त्री (म) वेदि, वेदिका, वितर्दी
 दिक्का (सव स्त्री) ।
 वेदी, २ स पु (म-दिन्) पण्डित २ शाह ।
 वेदोक्त, वि (स) वेदविहित, दे ।
 वेध, स पु (स) वेधनं, निर्भेद-वन, व्यथ ।
 यत्रं प्रवेदनकराललोकनम् ।
 —शाला, म स्त्री (स) मानमदिरन् ।
 वेधक, म पु (स) वेधनकर, छिद्रकार,
 वेपिन् ।
 वेधना, क्रि स (स वेधन) व्यथ (दि प.
 अ), विधु-समुक्त (तु प से), छिद्रयति
 (ना भा) । स पु, वेध धनं, व्यथ धनं,
 गुणस्त्रिणं (दे वेधक, विद्व १) ।
 वेधनी, स स्त्री (स) वेधनिका, आ, स्फी
 टनी, वृषदक्षिका ।
 वेधी, म पु (स धिन्) वेधक, दे ।
 वेला, स स्त्री (स) काल, समय २ सागर
 तरण ३ समुद्रतट-टम् ।
 वेष्टिता, स पु (स) सन्धानम् ।
 वेष्ट, स पु (अ) कपाट ।
 —टय, म स्त्री (अ), *रुपाटनलिका ।
 वेष्ट, स पु (स) आकल्प, प्रसाधन, वेपथ्य,
 प्रतिकर्मन् (न), वेप २ परिधानं, वस्त्राणि
 वननानि (न बहु) ३ पट, कुटी-मडप
 ४ गृहम् ।
 —धारी, स पु (स रिन्) वेपथर, कपट
 छत्र, वैशिश् २ वभिन् ।
 —भूषा, म स्त्री (स) परिधान, वस्त्राभरणम् ।
 क्रिमी का—धारना, मु, अन्ववेष्टा परिधा, वेप
 परिवृत् (प्रे), वेष्टातर विधा ।
 वेष्ट्या, स स्त्री (स) वेष्ट, सुगती-वधू (स्त्री)-
 वनिता स्त्री, वार, भगना-वधू विक्रान्तिनी
 नारी स्त्री, गणिका, रूपाम्रीका, माधारणस्त्री,
 पण्वागना, कामरेखा, भोग्या, मुञ्जिया, धुष्ट ।
 —पन, म पु गणितावृत्ति (स्त्री),
 वेष्ट्यातीव ।
 वेप, स पु (स) दे 'वेष्ट' ।
 वेष्टन, स पु (स न) पु-ट, कोश प,

प्रावरण २ आच्छादन परिवेष्टन ३ उष्णीष
पम् ।
वेष्टित, वि (म) बन्धित, मवीन, कृतनेष्टन
२ रद ।
वैमर, स पु (म) वैश(श्व)र, अशतर,
वेगमर, दे 'जगर' ।
वेमद्याद, मं पु (म) उपस्तर, वैश (प्र)
वार ।
वैकल्पिक, वि (रु) श्रेष्ठिक, रच्यधीन
२ स्तित्थ, विकल्प्य ३ पर्यागतम् ।
वैकुण्ठ, स पु (म न) स्वम्, विष्णु-
(स पु) विष्णु ।
वैजयन्ता, म स्त्री (म) वैकु, पत्तारा ध्वज ।
वैज्ञानिक, स पु (मं) विज्ञान, वैत्त विद् ।
वि (स) विज्ञान, सम्बन्धिन् विषयक मूलक ।
वैतनिक, सं पु (स) दे 'वैतनभोगी' ।
वैतरणी, स स्त्री (म) यमद्वारवती नदी
विशेष (पुराण) ।
वैताल, वि (स) वैताल, विषय-सम्बन्धिन् ।
सं पु दे 'वैताल तथा 'वैतानिक' ।
वैतालिक, स पु (म) वैतल स्तुतिपाठक,
बोधकर ।
वैद, वि (स) वेद, विषयक सम्बन्धिन्, औन,
छन्दस् २ वेद, अनुकूल विहित समाधन ३
वेदज्ञ । स पु (रा) वेदज्ञ-वेदनिष्ठास
विप्र ब्राह्मण ।
वैदिक, वि (स) छांदस, औन, वेद, विषयक
सम्बन्धिन्-उक्त प्रतिपादिन ।
वैदूर्य, स पु (म न) केतुरान, विदूररत्न
जम् ।
वैदेशिक, वि (स) अन्य पर वि, देशीय ।
म पु (स) पारदेशिक, विदेशीय ।
—मन्त्री, मं पु (सं निन्) पारदेशिकमन्त्रिण ।
वैदेही, स स्त्री (स) विदेहतनया, जननी,
सीता ।
वैद्य, स पु (स) निषङ्, अगर्दहार रोग
हारिन्, विविस्तक, आयुर्वेदिन् २ पंडित ।
—राज, म पु (स) निषावर ।
वैद्यक, स पु (मं न) आयुर्वेद, चिकित्सा
शास्त्रम् ।
वैद्य, वि (स) वैधिक (या), धर्म्यं, -गन्ध
शास्त्र, ममन-अनुकूल २ चर्चित, युज् ।
वैद्यव्य, म पु (सं न) रंतात्वम् ।

वैनतेय, स पु (स) गरुड, दे ।
वैभन, म पु (म न) वित्त, धनं, विभव,
सपत्-सपत्ति (स्त्री) ऐश्वर्य २ महिमन्
(पु), सामर्थ्यम् ।
—शाली, वि (सं लिन्) सशुद्ध, धनिन् ।
वैमनस्य, स पु (सं न) वैर, वि, द्वेष
२ अन्यमनस्वता ।
वैयकरण, सं पु (स) व्याकरण, वैतृ-अव्युत्
पठित ।
वैर, स पु (म न) विरोध, वि, द्वेष,
शत्रुतात्व, सपान्य, विपक्षता, इद्रभाव ।
—करणा, वि द्विप (अ उ अ), विरप्,
(रु प अ), वैरायते (ना धा), अमिशा
यते (ना धा) ।
वैराग्य, स पु, दे 'वैराग्य' ।
वैरागी, स पु (स गिन्) वैरागिक वैराग्य
वन्, विरक्त'दे । २ वैराग्यमप्रदायविशेष ।
वैराग्य, स पु (सं पु) विरक्ति (स्त्री),
वैरत कव्य, अनासक्ति (स्त्री) ।
वैरी, म पु (म रिन्) अरि, शत्रु, सपत्न,
रिपु, अराति, निषास, द्वेष, प्रत्यभिन्-
परिपयिन् ।
वैसाहिक, वि (सं) औसाहिक (नी स्त्री),
वैवाह (ही स्त्री) ।
वैशाख, मं पु (सं) मास, राष, सौर
प्रथम चांद्रद्वितीय, -मास ।
वैशेषिक, स पु (सं न) कणारमुनिप्रणीतो
दशनप्रथमविशेष, औलक्यदर्शनम् ।
वैश्य, स पु (सं) कृत्न, अर्थ्यं, विद्वा,
बणिन्, पणिक, भूमिजीविन्, वार्तिक,
व्यवहर्तृ ।
वैश्यानी, सं स्त्री (सं वैश्य) वैश्या, अर्थ्या,
अव्याणां ।
वैश्वदेव, स पु (सं) विश्वदेवसंनधियश ।
वैश्वानर, सं पु (सं) अग्नि २ परमेश्वर ।
वैश्वन्व, सं पु (सं न) विषमता, दे ।
वैष्णव, मं पु (सं) विष्णु-उपासक भक्त,
वाष् २ सप्रदायविशेष । वि (सं) वाष्णा,
हार, विष्णुसम्बन्धिन् ।
वैसा, वि (हि बह+सा) तादृश-स्य, स्य,
सुख्य-मदृश, तथाविध ।
वैसा—, वि (सामाद्य, साधारण, प्राकृत ।
—का वैसा, वि वि, पूर्ववत्, यथापूर्वम् ।

वसे, किं वि (हि वसा) तथा, तद्वत्, तत्स इषाम् ।

—ही, किं वि, मूल्य विना, दे 'मुक्त' ।

वोट, सं पु (अ) मत, छद्, छद्स् (न) २ मतदर्शनं ३ मतदर्शनाधिकार ।

वोटर्, सं पु (अ) मतदर्शक २ मतदर्शी नाधिकारिन् ।

व्यग, वि (सं) अकाय, अक्षरीर २ विकल हीन, अंग ३ 'व्यग्य' ।

व्यगार्थ, सं पु, दे 'व्यग्य' ।

व्यंग्य, सं पु (मं न) व्यंगनया बोध्योऽर्थ, गूढ-गुप्त, अर्थ-आशय २ उपालभ, अधि भा, क्षेप ।

—कमना या छोड़ना, किं स, उपालभ (भ्वा अ अ), अधि-आ, क्षिप (तु प अ), अन्-उप-इम् (भ्वा प से) ।

व्यजन, सं पु (स न) स्फुटी प्रकटी, करण मवन, प्रकाशन २ दे 'व्यञ्जना' ३ चिह्न, लक्षण ४ अर्द्धमात्रक, ककारादयो वर्णा ५ अर्ग, अवयव ६ इमश्रु (न) ७ तेम, तेमन, निष्ठान, अत्रोरकरणं ८ सिद्धात्र ९ उपस्थ ।

—कार, सं पु (स) पाचक, सूद, रन्ध्रक ।

—साधि, सं स्त्री (सं पुं) व्यञ्जन, संयोग मुञ्जिकर्ष ।

व्यञ्जना, सं स्त्री (सं) दे 'व्यञ्ज' (१) २ शब्दशक्तिविशेष (सा) ।

व्यञ्ज, वि (सं) प्रकट टिन, स्फुट, विशद, स्पष्ट, प्रत्वधु, प्रकाशित ।

—करना, किं स, व्यन् (रु प से, प्रे.) प्रवाण (प्रे), प्रवटी विशदो-स्पष्टीकृ ।

—होना, किं अ व्यञ् (कम), प्रकटी स्पष्टी-आविर, भू, प्रवाश (भ्वा आ स) ।

व्यक्ति, सं स्त्री (सं) स्पष्टता, विशदता, स्पष्टता, प्रासूर्य, आविर-प्रादुर, भाव २ मनुष्य, मानव ३ व्यष्टि (स्त्री), पृथक्त्व ४ वस्तु (न), पदार्थ ५ भूतमात्र ६ प्रजात ।

—गत, वि (सं) व्यक्ति, स्थ, वर्तिन्-सवधिन्, वैयक्तिक, पुरुषविशेषानुबद्ध ।

व्यग्र, वि (सं) सम्राज, अधीर, व्याकुल, दे. २ मीन, व्रत ३ व्याप्त, कार्यमग्न, व्याप्तक ।

व्यग्रता, सं स्त्री (सं) उन्नैग, सम्रम, व्याकुलता दे २ चिन्ता, रणरणक, उत्कल्किता ३ व्यासक्ति (स्त्री) ।

व्यग्रन, सं पु (सं न) ताल्लघुनक, दे 'पंरा' ।

व्यतिक्रम, सं. पु (सं) क्रम, भग विपर्यय विपर्यास-व्यत्यय २ अतराय, विप्ल ।

व्यतिरिक्त, वि (सं) भिन्न, अपर, इतर २ अधिक, विशिष्ट । किं वि (सं न) विना, अतिरिक्तम् ।

व्यातिरेक, सं पु (सं) भेद, भिन्नता, पृथक्त्व, अतर २ वृद्धि (स्त्री) ३ अतिक्रम मण ४ अर्थालंकारभेद (का) ।

व्यतीत, वि (सं) अतीत, गत, अतिक्रान् ।

व्यत्यय, } सं पु (सं) दे 'व्यतिक्रम' व्यत्यास, } (१) ।

व्यथा, सं स्त्री. (सं) पीडा, वेदना, यातना २ कष्ट, क्लेश, दुःखम् ।

व्यथित, वि (सं) पीडित, आर्त २ दुःखिन, स परि, तप्त ३ शोकमग्न ।

व्यभिचार, सं पु (सं) जाद्वकर्मन् (न), पारदार्य, परलोपित्वा । (स्त्री का) पल्ल पन, परपुरषगमन २ कदाचार, दुराचर, दुर्वृत्तम् ।

व्यभिचारिणी, सं स्त्री (सं) जाद्विणी, पुश्वली, बधनी, परपुरषगामिनी ।

व्यभिचारी, सं पु (म रिन्) पारदारिक, परलोपगामिन्, नार, मुनग, परतल्पग, उप पति २ दुर्वृत्त, दुराचारिन् ३ दे 'सचारी' (भाव) ।

व्यय, सं पु (सं) वित्त, विनियोग, अर्थ, उत्पन्न, २ दानं ३ परित्याग ।

—शील, वि (सं) मुक्तहस्त, अमितव्ययिन् ।

व्यर्थ, वि (सं) विफल, निष्फल, मोर, निरर्थक, निष्प्रयोजन, वृथा, मुधा २ अपार्थक, अथहीन । किं वि (सं न) निरर्थक, वृथा, मुधा, निष्प्रयोजन, निनिमित्त, निष्फलम् ।

व्यग्रच्छेद, सं पु (सं) पाथक्य, पृथक्त्व, २ विभाग, खल ३ विराम, ४ निवृत्ति (स्त्री) ।

व्यवधान, सं पुं. (सं न) व्यवधा, आवरण,

२ तिरस्करिणी, प्रतिदीरा ३ विमाग, खड
४ विच्छेद ।

व्यवसाय, स पु (स) वृत्ति (स्त्री), उप
आ, नीविका, आनीव २ व्यापार, क्रय
विक्रय ३ काय, आरम्भ-उपक्रम ४ निश्चय
५ प्रयत्न, उद्यम ।

व्यवसायी, स पु (स विन्) उद्यमिन्,
उद्योगिन् २ क्रयविक्रयिक, वणिज् ३ वृत्ति
मद, व्यवसायविशिष्ट ४ अनुष्ठान् ।

व्यवस्था, स स्त्री (स) शास्त्रनिरूपित,
विधि विधाननिर्णय २ रचना, विन्याय,
क्रमेण स्थापन-ब्यह्न ३ प्रवच, कार्यनिर्वा
हण अवैक्षणं ४ स्थिरता ।

व्यवस्थापक, सं पु (स) व्यवस्थादायक,
व्यवस्थापयित् २ अधिष्ठात्, अध्यक्ष, चालक,
निर्वाहक, प्रवचक ।

—सडल, स पु (स न) व्यवस्थापिका सभा ।
व्यवहार, स पु (स) वृत्त, वर्तन, चरित,
आचार, चेटित २ क्रमन् (न), कार्य
२ व्यवसाय, व्यापार ३ कौमीय, वृद्धिनी
वन ४ विचार ५ गृह, पण ६ अभियोग,
कार्य (—मुहदमा) ७ प्र-उप-योग ।

—करना, कि अ, व्यवहृ (स्वा ड अ),
वृत् (स्वा आ से), आचर् (स्वा ष से) ।
व्यवहारी, वि (स रिन्) व्यवहारक, व्यव
हर्त् २ प्रचलित, सौत्रिक । स पुं (सं)
वर्दिन्, कार्य, अधिन् ।

व्यवहार्य, वि (सं) व्यवहरणीय २ उप
दोक्तव्य ।

व्यवहित, वि (म) व्यवधानविशिष्ट, सावरण,
निरोहित ।

व्यवहृत, वि (सं) व्यापारित, उपप्र-सुक्त
२ आचरित, अनुष्ठित ।

व्यमन, स पु (सं न) दोष, दुर्गुण,
दुर्शील, दुर्दृष्टि (स्त्री) २ विपद्-विपत्ति
(स्त्री) ३ दुःख, कष्ट ३ अनिष्ट, अमंगल
४ विषय, अनुराग-आसक्ति (स्त्री) ५ दुर्
दौर, भयं ६ अभिन्वि (स्वा) ।

व्यमना, वि (सं विन्) दुर्शील, दुर्दृष्ट,
विषयामक २ वदयागमिन् ।

व्यमत्, वि (सं) संभ्रान्त, व्याकुल दे
२ व्यासक्त, लीन, मग्न ३ व्याप्त

४ निम्न ५ प्रत्येक, पृथक्-पृथक् ६ क्रमहीन,
अन्वयवहित ।

व्याकरण स पु (सं न) वेदांगविशेष,
शास्त्रशास्त्र २ व्याकरणग्रन्थ ।

व्याकुल, वि (स) आकुल, व्यग्र, सभ्रान्त,
विकूल, विह्वल, मोहित, विक्रिप्त, वि, मूढ,
कानर, विह्वल, अधीर, सभ्रान्त-व्यस्त विक्रिप्त
मूढ, चित्तमनस २ अति, उत्क-उत्काठ-उत्सुक ।

—करना, कि स, मुह-सन्नप् (प्रे), आकुली
विह्वलीकृ, वि स, क्षुभ् (प्रे) ।

—होना, कि अ, आकुलीभू, मुह (दि प
ने), २ अत्युत्सुक (वि) भू ।

व्याकुलता, स स्त्री (म) आभ्या, कुलना
कुलत्व, व्या, मोह, व्यग्रता, सभ्रम, विकूल
ता, व्यस्तता, विह्वलता, संवि, श्लोम, चित्तै
क्लृप्त-अशांति अनिष्टि (स्त्री), उद्वेग,
व्याधेय, उद्विग्नता २ उत्कठप्रतिशय, लालसा ।

व्याख्या, स स्त्री (स) स्पष्टी विशदी, करण,
विवरण, प्रकाशन, व्याख्यान, प्रवचन २ टीका,
शिखी, भाष्य (विविधभेद) ३ विवरणात्मनी
ग्रन्थ ।

—करना, कि स, व्याख्या (अ प अ),
निरूप (तु), विवृ (स्वा उ से), व्याचम्
(अ आ अ), स्पृष्टी विशदी स्पष्टी कृ ।

—स्थान, स पुं (सं न) व्याख्यानभवन
सभाभवनम् २ विद्यालय ।

व्याख्याता, सं पु (स-न्) भाष्य-व्याख्या
टीका, कार २ प्र, वक्तृ, उपदेशक, व्याख्यान-
नदात्, सञ्चारक ।

व्याख्यान, सं पु (स न) दे 'व्याख्या' (२)
२ भाषण, उपदेश, प्रवचनम् ।

—देना, कि म, व्याख्या (अ प अ),
सभाय (स्वा आ से) उपदिश (तु प
अ), प्रवच् (अ प अ) ।

—शाला, सं स्त्री (स) मभा-व्याख्यान,
स्थान भवनम् २ शिष्यालय ।

व्याघात, सं पु (सं) विघ्न, दे २ प्रहार,
आघात ३ अन्वकारभेद (मा) ।

व्याघ्र, स पु (सं) शङ्ख, द्रापिन, २
शृगानह, हिमाक, चंद्रमिन्, यत्, वशाट
२ पच, नरा-शिव भाष्य, निह दे ।

व्याज^१, सं पु, दे 'व्याज' ।
व्याज^२, सं पु (सं) अद्भ्यय, देश,

कपट, छल, छद्मन (स), मिथ २ विन ३ विल्व ।

—निद्रा, स स्त्री (स) कपटकुत्सा २ अलंकारभेद (मा) ।

—स्तुति, स स्त्री (म) कपटप्रशंसा २ अलंकारभेद (सा) ।

व्याचोक्ति, स स्त्री (स) कपट-छल, वाक्य २ अलंकारभेद (मा) ।

व्याध, स पु (म) मृगयु, मृगजीवन, लुब्ध, द्रोहाट, बलपाशुन अस्त्रक, मृगवधानीव २ शाकुनिक, जालिक पक्षि प्राह्व, जीवाणक ।

व्याधि, स, पु (स) रोग, दे २ विपत्ति (स्त्री) ।

व्यान, स पुं (म) देहस्थवायुभेद ।

व्यापक, वि (म) व्यापिन्, प्रसारिन् २ आच्छादक ।

सव—, वि (स) विश्वव्यापिन्, सर्वग ।

व्यापकता, म स्त्री (स) व्याप्ति, दे ।

व्यापना, कि स (म व्यापनं) व्याप (स्वा प अ), वि-अण (स्वा आ से), अत प्रसृ (भ्वा प अ) ।

व्यापादन, स पुं (स न) अपकार-अनिष्ट, चिन्ता विभ्रनन् २ वध, हत्या ३ नाश, ध्वंस ।

व्यापार, स पु (स) वाणिज्य, वाणिककर्मन (न), क्रयविक्रय, निगम २ कार्य, कर्मन् (न) ३ व्यापार, इन्द्रियाधमयोग (न्या) ४ व्यवसाय ।

—करना, कि अ, क्रयविक्रय-वाणिज्य कृ, प् (भ्वा आ से) ।

व्यापारी, स पुं (स रिन्) वाणिन्, वाणिज, आपणिक, नैगम, क्रयविक्रयिण, पश्याजीव, साधिक, श्रेष्ठिन्, व्यापारिन् ।

व्यापी, वि (स रिन्) दे 'व्यापक' ।

व्यापृत, वि (स) कार्य, मलग्न-लान-रत २ निविन, स्थापित । म पु (स) मन्विन्, उच्चकर्मचारिन् ।

व्याप्त, वि (स) ओग प्रोत, अत प्रसृत २ भूत, परिपूरित ।

व्याप्ति, स स्त्री (स) व्यापन, परिपूरण, अंत प्रसार ।

व्याम, म पु (स) व्यानन, दीर्घमानभेद ।

व्यामोह, म पु (स) विसं, मोह, विवेक भ्रंश ।

व्यायाम, स पु (स) मत्तक्रीडा, बलवर्द्धक, श्रम २ परिक्षम ।

व्यायोग, स पु (म) रूपक-नाटक, भेद (सा) ।

व्याल, स पु (स) सर्प, अहि २ सिंह ३ व्याघ्र ४ हिरण्यपशु । वि (स) दुष्ट, अपकर्तृ ।

—प्राही, स पु (स हिन) दे 'संपिपा' ।

व्यावहारिक, वि (स) वागन-व्यवहार, विधायक २ अभियोगसम्बन्धिन् ३ सामान्य, साधारण ।

व्यास, स पु (स) पाराशर-रि-र्यं, कृष्ण, द्वैपायन, वानीन, वादरायण-णि, सत्य, भारत व्रत-रत, माठर, वेदव्यास, सात्यत २ कथावाचक ३ विष्कम्भ, गोलस्य मध्यरेखा ४ विस्तार ।

व्यासक्त, वि (स) अत्यतानुरक्त ।

व्याहृति, स स्त्री (म) उक्ति (स्त्री) २ मन्त्रविशेष (= भू, भुव, म्व) ।

व्युत्पत्ति, स स्त्री (स) विशिष्टज्ञान २ उद्गमस्थान, मूल ३ निरुक्ति (स्त्री), शब्द, साधन सिद्धि (स्त्री), निवचनम् ।

व्युत्पन्न, वि (म) निष्पन्न, प्रवीण, निपुण, विशेषज्ञ, विद्व २ व्युत्पत्तिपुत्र ३ संस्कृत ।

व्यूह, स पु (म) नैन्य-मेना, विन्यास-संस्थान २ मेना ३ समूह ४ रचना, ५-तक ६ दारोत्तरम् ।

—रचना, कि स व्यूह (भ्वा प से), सैन्य विन्यस (दि प से), व्यूह रच् (सु) ।

व्योम, स पु [स मन् (न)] आकाश श २ तल ३ तल्ल ।

—यान, स पु (स न) विमान-जं, वायुयान, वातपोत ।

घञ, स पु (स) समूह, मसुदाय २ मसुदायन-वोधतृपाश्वर्वादिदेश, ब्रज, मटल भूमि (स्त्री) ३ गोष्ठम् ।

—नाथ, स पु (म) धोकाण, व्रज मोहन-राज-वृत्तम इश्वर इद्र ।

—भाषा, स स्त्री (म) शौरसेनीप्राह्वनाडुद्भूतो भाषाविशेष ।

मण, स पु (स पु न) क्षत-नि (स्त्री),
 भरसु (न), भ्रमं मै २ दे 'विस्फोट' (२) ।
 मण, स पु (स पु न) निय(या)म, पुण्यक,
 २ उपवास उपोषणं, लघन ३ इद, सवल्प
 अथ्यवसाय निश्चय प्रतिज्ञा ।
 —रखना, क्रि अ, उपवस (भ्वा प अ), लघ
 (भ्वा आ से), उपोषण कृ, मृतपति (ना धा) ।
 —लेना, क्रि अ, इद-सवल्प कृ, सशपथ
 प्रतिज्ञा (क आ अ), मृत धृ (चु) चर
 (भ्वा प से) ।

मती, स पु (स तिन्) मत्र, धर-न्ध
 चारिन् २ यत्रमान ३ मक्षचारिन् ४ तापस,
 तपस्विन् ।
 मत्य, म पु (म) सस्कारहीन २ मावित्रो
 पतित ३ साकरिक, मिश्रज ।
 मीढा, स स्त्री (सं) त्रपा, लज्जा ।
 मीढि, स पु (स) शालि, स्ववकिर-
 २ धान्यमानम् ।
 मडु—, म पु (स) समासभेद
 (भ्वा) ।

श

श, देवनागरीवर्णमालया त्रिंशो व्यञ्जनवर्ण,
 शकार ।
 शकर, वि (सं) शुभ(भ)कर, मगल्य, शुभ,
 शिव, भद्र । सं पु (म) महादेव, शिव,
 दे । २ शकरान्वाय ।
 शकरा, स स्त्री (म) पार्वती २ मनिष्ठा
 ३ शमीवृक्ष । वि स्त्री, सुख-मगल, चारिणा
 दायिनी ।
 शंकराचार्य, स पु (स) अद्वैतमतप्रवर्तक
 आन्वयविशेष ।
 शंकरो, स स्त्री (सं) पार्वती, उमा २ मनिष्ठा,
 रक्ता ३ शमीवृक्ष ४ रागिण्यभेद । वि स्त्री,
 मगल-वल्याण, चारिणी ।
 शंका, स स्त्री (म) भय, भीति (स्त्री),
 प्राप्त, दर, माध्वभ २ मदेह, मशय,
 विकल्प, आशंसा ३ अक्षय ।
 शंखित, वि (म) भीत, व्रत्न, समध्वम
 २ सदिग्ध, अनिश्चित ३ सशय-मदेह-भ्रम,
 आशंसिन्, साशक ।
 शकु, स पु (म) तीक्ष्णान्निशितान्त्र,
 पदार्थ २ वीर्य ३ नागराक्षर, वानर
 ४ कुन्त, प्राम ५ (शगराना) फल फल्क
 ६ दशलक्ष्मीति (स्त्री) (मन्वाविशय)
 ७ मे ८ गोपुत्राकार सुभ्रमो वृष ।
 शक्य, स पु (स पु न) कतु, वक्राज,
 कर्णोभव, पावनध्वनि अत्र कुम्भ, मन्-
 सु-वृ-पौर्य, नन्द सुम्भ, हरिप्रिय २ लभ
 वोटि (स्त्री) दशतिगवमस्या ३ गड
 ४ गजगट गन्तमन्य वा ५ अनुगविशय ।
 —शाना, नि म, शरा ध्मा (भ्वा प अ),
 शयेन पूर (चु) ।

—ध्वनि, स. स्त्री (स पु) कंदुनाद ।
 —शणि, म पु (स) शंखधर, विष्णु
 २ कृष्ण ।
 शशिनी, म स्त्री (स) चक्रावधनारीध्वन्य
 तमा २ यत्र महाभद्र, तित्ता, सुहृमपुष्पी
 ३ दे 'मीप' ।
 शठ, स पु (सं) अविवाहित, अकृतविवाह,
 कुमार २ मूर्ख ३ क्लीव ।
 शठ, स पु (म) क्लीव, शिमुष्क, पट,
 नपुम (पु), नपुम-सक (क) २ गोपति,
 क्लीवर्द ३ उन्मत्त ।
 शान्तु, म पु (म) महाभीम, प्रातीप,
 भीमनगर ।
 शंनर, म पु (सं) दैत्यविशेष २ सुद्रम ।
 (म न) जल २ मेघ ३ धनम् ।
 —सुद्रन, म पु (सं) कामदेव ।
 शंनुक-क, म पु (स) शबूत वा, शठ,
 जल, शुक्ति (स्त्री) किंब, दुश्चर, पपमडूक,
 घौव २ शम् ३ सुद्रमम् ।
 शभु म पु (म) महादेव, शिव दे-
 २, मन्त्र ३ विष्णु ।
 —शान, म पु (स न) पारद, दे 'पारा' ।
 —भूषण, म पु (म. न) चद्र ।
 शज्ज, म पु (अ) विवेक, यद्रम, इष्टि
 बुद्धि (स्त्री) २ योग्यता, वीरल ३ शिष्टता,
 सुशीलता ।
 —शार, वि (अ + का) विवेचिन् २ योग्य
 ३ शिष्ट ।
 शक, म पु (म) नातिविशेष २ शकारित्य,
 शालिवाहन ३ शालिवाहनप्रवर्तित संवत्-
 विशेष ।

शक^२, स पु (अ) सदेह, मशय २ अवि
ज्ञान, प्रत्ययाभाव ।

—करना, कि अ, दे 'सदेह करना' ।

शकट, स पु (म पु न) वहन, अक्ष,
अनसु (न) २ शरीर, देह ।

—का भार, स पु, शकल, शाकटीन ।

शकटिका, स स्त्री (म) लघुशकट ट,
शकटी * शकटकीलनरम् ।

शकर, स स्त्री (स शर्करा, फा) शर्करा,
स्थूलरक्त, शर्करा, गुटचूर्णम् ।

—कद, स पु (स शर्करामद द) (लाल)
रक्तलु, लोहितालु, रक्त-कद पिडक (सपेद)
शर्करा-मधुर-कद ।

—पारा, स पु (स फा) शरपाल, शर्करा
पाल ।

—बादाम, म पु (फा) क्षुरमानिका, दे
'पुरमानी' तथा 'नद आल' ।

शकल^१, स स्त्री (अ शकल) आकार, आकृति
(स्त्री), रूप २ सुख-मुद्रा ३ रचना, घटन
ना ४ उपाय ५ मूर्ति (स्त्री), दे 'रूप' ।

त्रिगाडना, सु, भुक्त तट (चु) ।

शकल^२, स पु (स पु न) खड-ल, लव,
भाग ।

शकील, वि (अ शकल) आङ्गनिमित्त, सुदर,
सुरूप, बाह ।

शकुन, स पु (स) सग, दे 'पक्षी' २ कीट
भेद ३ विश्वामित्रपुत्र ।

शकुतला, स स्त्री (स) कण्वप्रतिपालिता
मेननाविश्वामित्रयो कन्या, दुष्यतपत्नी
२ श्रीकालिदामप्रणीत प्रत्यातनाटकम् ।

शकुन, स पु (स पु न) फलपूर्व-लक्षण,
अजन्य, निमित्त २ मगलवमुहूर्त (न), तत्र
भव कार्ये वा ३ पश्चिन् ४ गृभ ५ मातृलिक
गोत ५ विवाहनिश्चायको वरोपहार, *शकुन
नम् ।

—देखना वा विचारना, सु, (कायारभाग
प्राक्) शकुने फल चिन् (चु) ।

शकुनि, स पु (स) पश्चिन् २ गृभ
३ गाभारीप्राण, सौबल्य ४ महादुष्ट ।

शकर, स स्त्री (स शर्करा) दे 'शफर'
२ दे 'चीनी' ।

शकी, वि (अ शक) सशयात्मन्, विश्वास
विहीन, अज्ञान्य, शंकाशील ।

शक्त, वि (स) समर्थ, क्षम, योग्य २ सबल,
शक्तिमत् ३ धनिक ४ मधुरभाषिन् ।

शक्ति, स स्त्री (स) बल, सामर्थ्य, प्रभाव,
तरम-ओजस् तेजस ऊर्जस् महस (न), शौर्य,
पराक्रम, शुष्म, सह, स्थामन् शुष्मन्
(न), प्रण २ वरा, अधिनार ३ शत्रु-
विजयसाधन प्रभु मन उक्ताह, शक्ति (स्त्री),
४ गाया, प्रकृति (स्त्री) ५ दुर्गा, भगवती
६ गौरी ७ लक्ष्मी (स्त्री) ८ काश-म्
(स्त्री), शकभेद ९ खडग १० देव
ताबलम् ।

—धर, स प (म) शक्ति, ग्रह ध्वज
पाणि भूत, कार्तिकेय ।

—बाला, वि, शक्ति-मत् शक्तिन्, बलवत्,
शक्त, बलिन्, पराक्रमिन्, ऊर्जस्विन्,
समथ ।

—हीन, वि (स) अशक्त, अवल, निर्बल,
बलहीन, अममर्थ २ नपुसक, क्लीब ।

शक्य, वि (स) सम्भवनीय, सम्भाव्य, सम्भा
वित २ सपाय, साध्य २ दे 'शक्त' । स
पु (स) वाच्यार्थ ।

शक्यता, स स्त्री (स) सम्भाव्यता, सम्भव
२ साध्यता, सपादनीयता ।

शक्र, स पु (स) पुरन्दर, दे 'इन्द्र' ।

शक्राणी, स स्त्री (स) शची, इन्द्राणी ।

शकल, स स्त्री (अ) दे 'शकल' (१) ।

शकम्, स पु (अ) जन, मनुष्य, दे,
'व्यक्ति' ।

शक्यत्व, स स्त्री (अ) शक्यत्व, दे ।

शकल, स पु (अ) व्यवसाय, उपनीविका
२ मनोविनोद ।

शकु(गु)न, स पु, दे 'शकुन' ।

शकुनिया, सं पु (हि शकुन) निमित्तज्ञ,
देवज्ञ ।

शकूका, स पु (फा) कोरक-क, कलिज्ञ
२ पुष्प ३ विलक्षणवृक्षात् ।

—खिलना, सु, अदञ्जल, सवृद्ध (भ्वा अ मे) ।
शचिची, सं स्त्री (स) पौलोमी, ऐन्द्री,
दे 'इन्द्राणी' ।

—पति, स पु (स) शचीश, बलभिद्, दे,
'इन्द्र' ।

शजर, सं पु (अ) पादप, वृक्ष ।

शजरा, स पु (अ) वशावलीलि (स्त्री),
 वशवृक्ष २ वृक्ष ३ क्षेत्रमानविचर ।
 शठ, वि (स) धृत वचन, प्रतारक भावा
 विन्दु २ दुष्ट, दे दुचा ।
 शठता, स स्त्री (स) धृतवा भावा शठय,
 कपट २ दुष्ट उराचार, दौनयम् ।
 शठप्पा, म पु (अनु शठप) शठपार,
 दुतनिगरणध्वनि ।
 —मारना, सु, इव निव (तु प मे)
 शठपकारे मुख्य (क् आ अ) ।
 शण, म पु (स) दीप, शास्त्र पद्धत भास्य
 पुष्प, त्वन्मार, वमन, कठनिकक ० भगा,
 विनया ३ शणपुष्पी ।
 शत, वि [स शत (नित्य न)] । म पु,
 दशगुणितदशमस्या तद्बोधका अङ्काश्च (१००),
 दे ली' ।
 —कोटि, स पु (म) बर्ज, पवि । म स्त्री
 (स) अञ्जसरवा, अर्जुददशक अर्धम् ।
 —त्रुत, स पु (स) शतमत्र, इद्र ।
 —ध्नी, स स्त्री (स) अक्षभेद, लोटकटक
 सउन्ना महती शिला ।
 —च्छद, स पु (स) काष्ठद्रुपक्षिन् । (स
 न) शतदलपद्मम् ।
 —दल, स पु (म न) शतपत्र, कमलम् ।
 —पत्र, स पु (स पु न) दे 'शतच्छद' ।
 —पथ ब्राह्मण, स पु (सं न) शुक्ल्यजुर्वे
 दस्य ब्राह्मणग्रन्थविशेष ।
 —पथिक, वि (म) नानामनाबलविन्द,
 नानापथगामिन् ।
 —पद, म पु (म) शतपदी, कणारीदी
 २ विपीलिका । वि, शत, यद् पाद ।
 —पद्मी, स स्त्री (स) कणारीदी, शतपादिका,
 कर्ण, अलुका-बलीरम (स्त्री) शतपाद (स्त्री) ।
 —भिष, स पु (सं शतभिषा) नक्षत्रविशेष,
 शतभिषज् (स्त्री) ।
 —लक्ष, सं पु (स न) कोटी (स्त्री) ।
 —वादन, स पु (म न) अनेकवाद्याना
 युगपद् वादनम् ।
 —वर्ष, वि (सं) शताब्द, शतायुम् । म पु
 (स न) शताब्दी च्छम् ।
 —महत्, स पु (म न) लक्षम् ।
 शतक, स पु (सं न) शतवर्ष, वषट्शत,

शताब्द २ २ शत, शतवस्तुममूह । वि,
 शतसख्याविशिष्ट, शत ।
 शतधा, अव्य (म) शतप्रकार २ शतवस्तु
 ३ शतगुण गित ।
 शतद्रु, स स्त्री (नं) शिन्दु, शतद्रु, शतु
 द्वि द्रु (म न स्त्री) ।
 शतरज, स पु (फा) चतुरगम् ।
 —का मुहरा, म पु, खेल्नी, शार रि ।
 —की विसात, स स्त्री, अष्टापद, शारिफल्म ।
 —वाज, स पु (फा) चतुराक्रोच ।
 —बाजी, म स्त्री (फा) (१२) चतुरग,
 क्रीडा-व्यसनम् ।
 शतरजी, स स्त्री (फा) विविधजरोटिका
 ० बहुवर्ण, कुशा स्त्री ३ अष्टापद, शारिफल्म ।
 म पु, चतुरगचतुर ।
 शतश, अ (स) शत शतमिति श्रुत्वा
 २ शतकृत्व (अव्य) शतवारान् ३ अनेकधा,
 बहुधा नानाप्रकारेण ।
 शताब्दी, म स्त्री (स) दे 'शत' (१) ।
 शतायु, वि (म -युम्) शत, वर्ष अम् ।
 शक्ति, वि (मं) शतवान् २ शत, सबन्दिन्
 विषयक ।
 शनी, स स्त्री (म) शनी, शनाब्दी - शत
 वस्तुमयम् ।
 शत्रुजय, स पु (स) शत्रु-अभिन्न, नित्य,
 शत्रुण, अरिदम, रिपुसदन ।
 शत्रु, स पु (म) रिपु, अरि, सपत्न, वैरिन्,
 द्वेषण, द्वेष, दुष्ट, दौर्हृद, पर, शात्रव,
 अरानि, प्रत्यभिन्, परिपथिन्, प्रतिपथ
 शिन्, द्वेषिन्, निपाद्यु पाप, डिमर,
 २ शत्रुमना ।
 शत्रुघ्न, म पु (सं) लक्ष्मणानुज, शत्रुमर्दन ।
 (अ - य) ३ 'शत्रुजय' ।
 शत्रुता, म स्त्री (म) वैर, मापत्य, विदेष,
 प्रति वि, पथ(वि) ना, विरोध ।
 —करना, वि अ, वैरायत, अमित्रानि, अमित्र
 यनि, अमित्रायत (म न ना धा), वि, डिष्
 (अ उ अ) ।
 शहीद, वि (अ) गभीर, प्रबल, भयङ्कर तीज ।
 शनादन, म स्त्री (फा) दे 'पद्मान
 शनि, म पु (मं) शनश्चर भौरि, मर,
 छायायुज, प्रह्लापर, वक, पंगु सूर्यपुत्र-
 २ दीर्घाय ० शनिवामर ।

—प्रिय, स पुं (स) नीलमणि, दे 'नीलम' ।
 —वार, स पु (सं) शनि शनैश्चर, वार वासर ।
 शनैः, अव्य (स) मद शनकै ।
 —शनैः, अव्य (सं) मद मद, शनकै शनकै ।
 शनैश्चर, स पु (म) दे 'शनि' (१३) ।
 शपथ, म स्त्री (म) दे 'सौमद्र' २ दिव्य ३ प्रतिज्ञा ।
 शफ, स पु (स न) (गवादीना) मुर, दे ।
 शफक, सं स्त्री (अ) सथा, सध्या, सध्याशु ।
 शफकृत, स स्त्री (अ) अनुग्रह २ प्रेमन् (पु न) ।
 शक्रतालू, स पुं (का) (वे) सप्तालुक । (५७) सप्तालुक, आरूक, दे 'आडू' ।
 शक्रा, सं स्त्री (अ) स्वास्थ्य, मीरोगता ।
 —ज्ञाना, स पु (अ + का) चिकित्सालय ।
 शव, सं स्त्री (का) रानी वि (स्त्री), रजनी ।
 शयनम्, स स्त्री (का) अवश्याय, दे 'ओस' ।
 शयल, वि (स) कडुर, कल्माथ, नानावर्ण, चित्र ।
 शयाच, सं स्त्री (अ) यौवनं २ सौन्दर्या निशय ।
 शयाहन, स स्त्री (अ) आकृति (स्त्री) २ ममानया ।
 शयीह, स स्त्री (अ) चित्र २ साम्यम् ।
 शय्द्र, म पु (सं) निन(ना)द्र, वि, र(रा)व, निर्, घोष, स्व(स्वा)न, ध्वनि, ध्व(ध्वा)न २ पद, सार्थकोऽधुरसमूह ३ ओश्म, प्रणव ४ मक्तिगीतम् ।
 —कोप, सं पु [म - य (श)] अभिधान, शब्द समूह ।
 —चानुर्य, सं पु (सं न) वाग्मिता, वाक पाठवन् ।
 —चित्र, सं पु (स न) अधमकाव्यभेद, अनुप्रास ।
 —चोर, सं पु (स) कुम्भिल, शब्दतस्कर ।
 —चोरी, सं स्त्री, शब्दचौर्य, कुम्भिलत्वम् ।
 —पति, स पु (सं) अनुयायिरहितो नेटु ।
 —प्रमाण, स पु (सं न) आप्तप्रमाणम् ।
 —विरोध, सं पु (सं) विरोधाभास, मिथ्या वैपरीत्यम् ।
 —यद्गन्, स पु (स न) चत्वारो वेदा ।
 —भेदी, वि (स -दिन्) शब्द, वैभिन्-यानिन् ।

सं पु, अर्जुन २ दशरथ ३ बाणभेद ४ पायु ।
 —वेधी, सं स्त्री (सं धिन्) दे 'शब्दभेदी' ।
 —शक्ति, स स्त्री (स) शब्दानामर्थबोधक-शक्ति (स्त्री) (=अभिधा, लक्षणा -यचना) ।
 —शास्त्र, स पु (स न) शब्दविद्या, व्याकरणम् ।
 —श्लेष, स पु (म) शब्दात्कारभेद (सा), अनेकाधरूपदप्रयोग ।
 —सौष्टव, सं पु (स न) पदकाल्पित्वम् ।
 शब्दाडधर, स पु (म) शब्द पद, जाल प्रपञ्च ।
 शब्दातीत, वि (स) शब्दातिग, अवयवीय, (ईश्वरारि) ।
 शब्दानुशासन, स पु (सं न) दे 'शब्द शास्त्र' ।
 शब्दार्थ, म पुं (स) पदानुवर्ती अर्थ, भावी पेशक्रीड ।
 शब्दालकार, सं पु (म) अलकारभेद (मा), शब्दाश्रितो वाक्यमत्कार ।
 शम, स पु (स) प्र, शांति (स्त्री), शपथ, निश्चलत्व, स्वास्थ्य, प्र-उप, शम २ मोक्ष ३ इन्द्रियनिग्रह ४ निवृत्ति (स्त्री), बैराग्य ५ क्षमा ।
 शमन, स पु (स न) दे 'शम' (१) । २ यद्दार्थं पशुहननं ३ दमन, नाशन ४ चर्वण ५ हिंसा ।
 शमनी, स स्त्री (सं) निशा, रजनी ।
 शमला, सं पु (अ) उष्णीष शिरोवेदन, शिखा निखर-अद्य प्रान्त ।
 शमशेर, स स्त्री (का) अमि, रुडय ।
 —बहादुर, म पुं (का) आम्निक, रज्जुभिन् ।
 शमा, स पु (अ शमअ) दे 'शोम' २ दीपिका ३ दीप पक ।
 —दान, सं पु (फा) दीपि-दीपिका, वृक्ष ध्वज ।
 शमी, स स्त्री (सं) शकतु, फला-फली, शिवा, केशमथनी, पापशमनी, भद्रा, शशुभ, करी ।
 शमोः, वि (सं मिन्) शात, क्षीमरहित, निश्चल ।
 शयन, सं पु (स न) सवेश, स्वपन, निद्राणं, सुप्ति (स्त्री), स्वाप २ शय्या ३ सवेशनं, मैथुनम् ।

—गृह, म प (स न) शयन, आगार मन्दिरम् ।
 शयालु, वि (स) निद्रालु, तद्रात्रि २ सुषुप्त, निद्रावसा ।
 शय्या, म स्त्री (म) आस्त्र, दे 'विजौना' ० खटवा, पर्यक, दे 'खाट' ।
 —गत, वि (म) रुग्ण, रोगिन् ।
 —गृह, सं पु (स न) दे 'शयनगृह' ।
 —मूत्र, मं पु (स न) *स्वप्नज्ञान, शिगुरोगभेद ।
 —छादन, स पु (स न) पर्यकप्रच्छद ।
 शर, स पु (स) श्पु, बाण, दे । २ शरकाट, दे 'मरकटा' ३ क्षीरशर, दुग्धाघ्न, सतानी निवा ४ दधिशर, दधि, सार स्नेह, बट्टर, क्वर ५ उशर ।
 शरभ, म स्त्री (अ) धर्म, मत २ धर्मशास्त्र ३ प्रया ४ धार्मिकदेश ५ ईशदाशतमाग (इस्लाम) ।
 शरकाट, सं पु (म) दे 'मरकटा' ।
 शरण, स स्त्री (म न) आश्रय, गति (स्त्री) २ आश्रय प्राण-स्थान ३ गृह भवन ४ शरण्य, रभिन्, प्राट् ५ शरणगतत्वम् ।
 —डेना, कि म, अव-क्ष (भ्वा ष मे), शरण दा ।
 —डेना, कि अ, आशि (भ्वा उ ने), शरण प्रपद (रि आ अ) इया (दोनों अ प अ) ।
 शरणगात, वि (मं) शरणापन्न, अभिपन्न, शरणाधिनि, शरणैधिन् । स पु (स) शिष्य ।
 शरणार्थी, वि (म धिन्) शरणेष्युक, रश भिनाधिन् ।
 शरण्य, वि (स) शरण्य, शरण्यतरल्लरु, राट्ट, प्राट् २ दु गिन, अमहाय ।
 शरद्, म स्त्री (म) परि-वस्त्र, अम्, वर्ष पै २ बघारमान, मेघान, कालप्रभात - न प्राट्टत्पय (= आशिन-कारिक) ।
 शरधि, मं पु (स) लण, रपुधि, दे नरपण ।
 शरङ्ग, म पु (अ) महत्त्व, महत्ता २ अंशना ३ गुण ४ प्रतिष्ठा ।
 शरयन्, म पु (अ) शर्करोदक, गुडोदक, पानन, गीम्य, सिन्दर, मिष्टोदं २ शर्करा मधु-न्वाय ।

शरयती, स पु (अ शरवत) दे 'मीठी' (फल) २ इत्यपीतवर्ण । वि, रसपूर्ण, सरस, सुमधुर ।
 शरम, स स्त्री, दे, 'शर्म' ।
 शरह, सं स्त्री (अ) टीका, व्याख्या, भाष्य २ दे 'भाव' (मूल्य) ।
 शरा, म स्त्री, दे 'शरब्' ।
 शरामत्त, स स्त्री (का) सहभागिता, दे 'साक्षा' २ सहकारिता ।
 शराकत, स स्त्री (अ) सज्जनता, सौमन्य, शीलम् ।
 शराय, स स्त्री (अ) सुरा, मदिरा २ दे 'शरवत' (द्विकमन) ।
 —का प्रमीर, स पु, मद्यपक, सुरावल्क, मेदक, जगल ।
 —का प्याली, सं पु, पान-मद्य-सुरा, भाजन भाड पात्रम् ।
 —के प्रमीर की झाग, स स्त्री, मद्य, फेन - मद्य, कार-उत्तर-उत्तम ।
 —के नशे में चूर, वि, मत्त, क्षीव, मदोदक, मदोदक, समद, मदाढ्य, मदोन्मत्त, शौड ।
 —राना, स पु (अ + का) गता, शुभा, सुरालय ।
 —रीचना, कि स, मर्ष मथा (जु उ अ) सुरां लुभ्यद (त्रे) । म पु, मद्य, संधान अभिपव ।
 —रीचने का स्थान, सं पु, संधानी, अभिपव शाला ।
 —रीचने वाला, स पु, सुराकार, शौडिक, संधानिन् ।
 —त्रोर, स पु (अ + का) पान, आमन-रत, मधु-मद्य-सुरा-य, पानशौड, सुराष्ट्र ।
 —र्योरी, मं स्त्री, सुरापान-यं, मद्यनेवनम् ।
 —पीना, कि स, सुरां पा (भ्वा ष अ), मद्य सेव् (भ्वा आ से) ।
 शरावी, सं पु (अ शराव) दे 'शरावतोर' ।
 शरावोर, वि (का) दे 'लघपय' ।
 शरारत, मं स्त्री (अ) कुचेष्टा-दित, दुर्लभिन, दुष्टता रलता, अपकार ।
 शरारती, वि (अ शरारत) कुचेष्टक, दुर्लभिन, दुष्ट, राल, अपकारक ।
 श(म)राव, मं पु (सं पुं न) बर्दमानक, मार्गिक, मृत्कान्य, दे 'कुच्छ' ।

शरासन, सं पु (स न) शरास्य, शरावाप
 दे 'धनुष'।
 शरीभ्रत, म स्त्री (अ) दे 'शर' (२,५)।
 शरीक, वि (अ) समिलित्। सं पु, मह
 चर कान्ति-योगिन् २ सह भागिन्, अशिन,
 अशमदिन् ३ सहय-यक ४ सत्तातीय,
 सन्ति।
 शरीक, सं पु (अ) अभिजात, बुल्गन,
 आय, सुप्रतिष्ठ, भद्रजन, सज्जन। वि (अ)
 मन्थ, मित्र, सदाचारिन् २ बुल्गन, अभिजात,
 अभिजनवत् ३ पवित्र, निर्दोष।
 शरीका, सं पु (म धीम्) (फल)
 मोन-फल, वैदेहीबल्लभ, गडगात्र कृष्ण वड,
 बीजकम्। (वृष्ट) सीगफल इ पु रू।
 शरीर, सं पु (स न) कथ्य, देह-ह,
 कर्त्तव्य-र, गात्र, अंग, क्षेत्र, विग्रह, सहजन,
 वपुम (न)। मूर्ति-तनु-न् (स्त्री) पुर,
 चतुःशास्त्र, पिण्ड, स्कन्ध, पत्र, शक्तिपा
 यन, पुद्गल, करणम्।
 —त्याग, सं पु (स) देहपात, मृत्यु।
 —रक्षक, सं पु (म) अग्ररक्षक, अनुव।
 —शास्त्र, सं पु (स न) शरीरविज्ञानम्।
 —मल्कार, सं पु (स) गर्भाधानादय
 योऽशमस्कारा २ वायुशुद्धि (स्त्री),
 देहनिष्कार।
 शरीर, वि (अ) दे 'शरास्त्री'।
 शरीरात्, सं पु (म) देहपात, निषेधम्।
 शरीरी, सं पु (म रिन्) शरीरवत्, देहिन्
 २ जीव, अशमन् ३ प्राणिन्, जलु।
 शर्क, सं पु (अ) प्राची, पूर्वदिशा।
 शर्करा, सं स्त्री (स) दे 'शकर' २ तिक्ता
 का ३ अदमरी, दे 'पथरी' ३ अशीला
 पाषाणशकला (बहु) ४ क(वि)पूर।
 शर्की, वि (अ शर्क) प्राच्य, पूर्वीय।
 शर्त, सं स्त्री (अ) पा, गृह २ सनेन,
 मनय, नियम।
 —करना, बाँधना या लगाना, न, पा
 (भ्वा आ से), गृह् (भ्वा चु उ से)
 २ समय-नियम कृ।
 विना—, कि वि, समय-नियम विना।
 शक्तिया, कि वि (अ) गृह्देन, पत्नेन, गृह
 पा पूर्वक २ निस्सशय, निस्सन्देहम्। वि,
 अनेन, अवध्य।

शर्म म स्त्री (का) दे 'लज्जा' २ मंकोव,
 ३ शिन् ३ मान, प्रतिष्ठा।
 —सं गडना या पानी पानी होना, मु,
 अत्यर्थ लज्ज (त आ मे) वप् (भ्वा आ
 न) अनित्यत्वं (वि) भू।
 शर्ममार, वि (फा) लज्जाशील २ हा,
 लित्।
 शर्मा, सं पु (स शर्मन्) ब्रह्मणोपधिनेद।
 शर्माना कि अ तथा कि म (फा शर्म)
 दे लज्जित होना २ दे लज्जित करना।
 शर्मागर्मा, कि वि (फा शर्म) लज्जया, हिवा।
 शर्मिन्दी, सं स्त्री (पा) लज्जा, वषा,
 श्रेष्ठा।
 —उडाना, मु, दे 'लज्जित होना'।
 शर्मिदा, वि (फा) लज्जित, श्रेष्ठित, जित।
 शर्मीला, वि (फा शर्म) लज्जावत्, सलज्ज,
 दे 'लज्जाशील'।
 शर्वरी, सं स्त्री (स) निशा, रात्रो, दे 'रत्न'।
 —नाथ, सं पु (स) शर्वरीदोष, चन्द्र।
 शलग(ग)म, सं पु (का) शिला, मूलकर,
 गृध्रनम्।
 शल(र)भ, सं पु (स) पत्राक-ग, पत्रद,
 फटिग, शिरी, दे 'शिल्पी' २ पता, दे
 'पता'।
 शलाका, सं स्त्री (स) धातुःशुद्धिनिर्माणा
 यष्टिन्, दे 'सलाख' २ वा ३ अस्थि (न)
 ४ गृ ५ शरिका ६ क्वचलशलाका
 ७ जप, देवन ८ शीपशलाका।
 शल्य, सं पु (म) मद्राज, माद्रीभन
 २ ३ किन्वलोभ-वृष्ट ४ मीमा ५ शलाका
 ६ शलाकी, शल्यक ७ मीनभेद (म न)
 कुन, प्राम २ इपु, वा ३ कर्क-क
 ४ पीडकरण ५ दुबक ६ पाप ७ कष्ट
 ८ विप ९ अस्थि (न) १० अल्बुकिन्तमा
 ११ इडु।
 —कर्ता, सं पु (म-न्) दे 'मनन'।
 —क्रिया, सं स्त्री (स) दे 'सर्वरी'।
 शव, सं पु (स पु न) वृष्प, शिविबद्धन,
 मृत्क-क, प्रेतम्।
 —दाह, सं पु (स) अत्येष्टि-मृत्क-संस्कार।
 —यान, सं पु (स न) शवस्थ, खाद्य
 क्ति, सो, बाधनम्, दे 'अरपी'।

शबर, स पु (म) श्लेच्छजातिभेद २ शिव
३ जलम् ।
शबरी, म स्त्री (म) शम्भुना नासप्रतिवनी
२ शबरजातीनारी ।
शश, स पु (म) शशक शूलिन् रोम
वर्णं शूद्रोरोमन् २ चद्रलाघन ३ पुष्पभेद ।
—धर, स पु (सं) दाशभूव, चद्र ।
—शृग, स पु (म न) दाशकविषाण,
सपुष्प, गगनकुसुम, भ्रमभवनीयवस्तु (न) ।
शशक, म पु (सं) दे 'शश (२) ।
शशमाही, वि (का) पाष्मासिक जडवायिक
(स्त्री स्त्री) ।
शशकि, सं पु (म) शशधर, चद्र ।
शशी, सं पु (स शशिन्) शशधर, मोम,
दे 'चंद्र' ।
—कर, स पु (सं) चंद्रकिरण ।
—कला, स स्त्री (सं) चंद्रलंका २ वृत्त
भेद (छद्र) ।
—कात, म पु (म) चंद्रकात्मणि । (सं न)
कुमुदम् ।
—कुल, स पु (सं न) चंद्रवश ।
—पुत्र, स पुं (सं) शशिक, बुधम् ।
—प्रभा, म स्त्री (सं) कौमुदी, चद्रिका ।
—भूषण, म पु (सं) शशिचंद्र, मौलि
शेखर, शिव ।
—वदना, स स्त्री (म) वृत्तभेद (छद्र)
२ चंद्रमुरीखा । (उपयुक्त सभी ममानों में
'शशि' रूप रहेगा । उ शशिकर इ) ।
शश्व, स पु (सं न) अश्व, प्रहरणं, शशुध्न,
हस्तु, हेनि (पु स्त्री) ।
—शोधना, क्रि अ, शशाणि धृ (लु) सश्वह
(सि उ अ) ।
—कम, सं पु [म-मन्(न)] शल्य क्रम,
क्रिया ।
—गृह, म पुं (सं) शश्व, शाला आगारम् ।
—जीवी, स पु (सं-विन्) शश्वृत्ति,
अनुषिक् ।
—घाती, वि (सं-रिन्) शशश्व शश्व, मूव धर ।
—विद्या, सं स्त्री (म) धनुर्वेद ।
शशांगार, सं पु (सं शश्व+आंगार) शश्व
शाला-गृह-न्यासम् ।
शशाभ्याम, स पु (म) अश्वशिक्षा, गुरली ।
शश्व, स पु (सं) शश्व, क्षेत्रार्थं कम्, दे

'कसल' शश्व, शश्व ३ वृश्व-लता, मल
४ धान्य (शश्व क्षेत्रगत प्राहु, सतुर्थ धान्य
मुच्यते । अयं नितुषमित्युक्त, श्वित्तमव
मुदाहृतम् ॥) वि (सं) उत्तम, श्रेष्ठ २ स्तुत्य,
प्रशमनीय ।
—भक्षक, वि (सं) लृण शक, भक्षक ।
शश्यांगार, स पु (सं न) धान्यांगारम्,
कुशल ।
शहशाह, स पु (का) शानाधिराज, दे-
'सम्राज्' ।
शह, स स्त्री (का) शमोत्तेजना ।
—दना, मु, निभूत उत्तिज्-उदीप् (प्रे) ।
शहजादा, स पु (का) राजकुमार
२ सुवराज ।
शहजोर, वि (का) बलिन्, शक्तिशालिन् ।
शहतीर, स पु (का) शुला, स्यूगा, छत्राधार ।
शहनूत, स पु (का) (वृश्व) मल्लदार,
तूद, तूत, पूष मल्लण्व, तूत, मूष । (फल)
तूत, तूत, तूद, पूष, वृषम् ।
शहद, सं पु (अ) माक्षिक, शौद्र, मधु
(न) दे ।
—की मन्त्री, स स्त्री, मधुमक्षिका ।
—लगाकर चाटना, मु, अर्थ पदार्थ निरर्थ
रक्ष (भ्वा ष से) ।
शहनाई, स स्त्री (का) सनेयी-यिका,
मानिका ।
शहवाला, सं पु (का) *महवाल (पं-
सवाला), *वर, *गृहण-सहचर ।
शहर, स पु (का) नगर, पुरम् ।
—पनाह, सं स्त्री (का) *नगरकोट, वृत्ति-
(स्त्री), प्राचीर, दे ।
शहरी, स पुं (का) शेर, नागरिक, नगर-
पीर, दन । वि, नगरीय, नागर, नाथरेय-
नागरिक दे ।
शहवल, स स्त्री (अ) सभोग मैथुन,
इच्छा ।
—परस्त, वि, कामुक, लपट, कामालु ।
—परस्ती, सं स्त्री कामुकता, लम्पटा,
कामान्धता ।
शहसरा, सं पुं (का) बुद्धालादिम् ।
शहदत्त, सं स्त्री (अ) शश्व, दे 'गवाही'
२ प्रमा ३ बलिदानम् ।

शाहीद, स पु (अ) *दुतात्मन्, धमहत, धर्म पतन ।

—होना, क्रि अ, धमार्थं प्राणन्द हा (जु प अ) परोपन्याय हन् (कम) ।

शात्, वि (स) स्वस्वविच, प्रमत्त, मानन चेतन, निवृत्त, स्वस्थानद्वय, आवेशशून्य, शमित, शमान्वित २ रुद्र, वेगगति क्रिया, रक्ति, विरत ३ मौम्य गभीर, धार ४ नि शब्द, मोनिन् ५ नितेन्द्रिय मयमशील ६ शिथिल, निरुत्साह ७ शान्त, क्लान्त, स्थित ८ निवापित, निवाण (अन्यात्) ९ निर्विन निवाण । स पु (स) रमविशेष (वाच्य) २ विरक्त, योगिन् ।

—करना, क्रि म, उपप्रशन् (प्रे) २ प्रमद तुष (प्रे) ।

—होना, क्रि अ, शम् (दि प ने), शान निश्चल (वि) भू ।

शातना, स स्त्री (स) दे 'शानि' ।

शातनु, स पु (म) दे 'शानु' २ वरुंगी ।

शाता, स स्त्री (स) दशरथतनया, श्रेष्ठ श्यामावा ।

शाति, स स्त्री (म) दे 'शाम' (१) । २ गति क्रिया वेगशोभ, राहित्य ३ नीरचना, नि शब्दना ४ रोगादीना क्षय नाश ५ मृत्यु ६ मौम्यता, गम्भीरता ७ वैराग्य, वृष्णाश्रय ८ सकटनिवारणम् ।

—शायक, वि (म) शाति, प्रद-कर-दायिन् ।

—पर्व, स पु [स १ वन् (न)] श्रमन्महा भारतम्य द्वादशपर्वन् ।

शादूर, स पु द 'शायर' ।

शाइस्वगी, स स्त्री (का) शिष्टता, मज्जन्ता ।

शाइस्ता, वि (का, न) शिष्ट, सुशील ।

शाक, स पु (म पु न) ३ माग ।

शाकाहार, स पु (स) दारिद्र्यगौत्र, माम त्याग ।

शाकाहारी, वि (स रि) हरितकभोजिन्, मासत्यागिन् ।

शाक, स पु (म) शक्त्युपात्मक, शाक्तिक, शाक्तेय ।

शाक्तिक, सं पु (स) दे 'शाक्' । २ शक्ति वाद्य, धर सैनिक, शाकीक ।

शाक्य, स पु (म) प्रार्चनश्रुत्रियजानि विशेष ।

—मुनि, स पु (म) गौतममुख, सिद्धार्थ, महाबोधि, महामुनि ।

शाख, स स्त्री (का) दे 'शाखा' (१) । २ शृंग, विषाण ३ उपाग ४ वननदी ।

—दार, वि (का) शाखायुत २ शृंगयुत ।

शाखा, स स्त्री (म) विष्प प, शिखा, लका, लना २ देहावयव, शरीराग (हाथ, पाँव आदि) ३ अगुली, करशाखा ४ अग, उपाग ५ वि भाग ६ वैदिकग्रथ भेद ।

—नगर, स पु (स न) उपपुर शाखापुर, नगरप्रात ।

शाखी, सं पु (स खिन्) वृक्ष २ वेद । वि, मशाख ।

शागिर्द, स पु (का) शिष्य, दे ।

शागिर्दी, स स्त्री (का शागिर्द) शिष्यता २ सेवा ।

शाटक, स पु (स पु न) पत्र, वस्त्रम् ।

शाटिका, स स्त्री (म) दे 'भोती' ।

शाटी, स स्त्री (स) दे 'साडी' ।

शाठ्य, स पु (म न) दे 'शठना' (१२) ।

शाण, स पु (म) शाणी, सामक । (छोटा) शामर २ नि, वष-म, कपपट्टिका ३ माष-चतुष्टय, टक, निष्क ।

शाद्, स पु (स) कर्दम २ शम्पन् ।

शाद्, वि (फा.) प्रमत्त, मुदित २ परिपूर्ण ।

शादाव, वि (का) जलाढ्य, जलमिक्त ।

शाद्रियाना, स पु (का) मगन्वाद्य २ दे- 'बधार' ।

शात्री, स स्त्री (फा) विवाह, दे २ हर्षः ३ अगन्दोत्पन्न ।

—गमी, स स्त्री (का+अ) हर्षशोरी, सुख-दुःखे ।

—मर्ग, स स्त्री, हवतिरेकजनितमृत्यु ।

शाद्वल, स पु (म पु न) हरित-न, शम्प-बहुलो देश । वि, हरित, शम्भक्तुन्न ।

शान, स स्त्री (अ) श्री (खा), अभिरुचा, औज्ज्वल्य, शोभा, प्रभा, भव्यता, आडवर २ विभूति शक्ति (स्त्री) ३ प्रतिष्ठा, गौरव ४ विभ्रम ५ महिमन् (पु) ।

—दार, वि (अ+का) श्रीमत्, शोभान्वित, भव्य, साडवर, शोभन, सुप्रभ, समुज्ज्वल, वैभवशालिन् ।

न्याया, नियमन ८ राज्य दण्ड ९ लिखित
प्रतिज्ञा ।

—करना, कि स, प्र, शाम् (अ प से),
इश (अ आ से), त् (चु), अधिष्ठा
(स्वा प से), नियम-विनी (स्वा प अ) ।
म.पु, इशान, अभिष्ठान, नियमन, नियमगम् ।

—कर्ता, मं पु (स न्) शामक, शामनघर,
शाम्न्, शासित्, अभिष्ठत्, देशक ।

—पत्र, म, पु (स न) राजदेशपत्रम् ।

—हर, मं पु (म) आशवाहक २ शामन,
हारक-हारिन्, रातदूत ।

शामित, वि (स) कृतशामन, अधिकृत,
अभिष्ठित, नियमित २ दडित, दे ।

शास्त्र, म पु (म न) धर्मग्रन्थ २ विज्ञानम् ।

—कार, म पु (म) शास्त्र-कृत-वचिन्त्
आचार्य ।

—चल, म पु [स-क्षुम् (न)] व्याकरण
२ शानिन् ।

—ज्ञ, म पु (स) शास्त्र-दार्शिन-दृष्टि विद्
कोविद-वेत्तृ ।

—वन्ता, म पु (स-क्तृ) उपदेशक ।

—विन्द, वि (स) धमविरुद्ध, अरम्भ्य ।
शास्त्रानुसार, कि वि (स न) यथाशास्त्र,
धमानकूलम् । वि, शास्त्रोक्त, स्मृत ।

शास्त्री, स पु (म खिन्) उपाधिभेद
२ धमशास्त्र ३ दे 'शास्त्रज्ञ' ।

शास्त्रीय, वि (म) श्रौत, स्मार्त, शास्त्रविषयक
२ शास्त्र-उक्त-विहित ।

शास्त्रोक्त, वि (म) शास्त्र, विहित-निर्दिष्ट
अनुकूल ।

शास्त्र्य, वि (स) नियमणीय, नियतव्य,
शामन-अह-योग्य ३ शिक्षणीय, उपदेष्टव्य,
विनेय ३ दण्ड्य, दडनीय ।

शाह, म पु (फा) महाराज २ यवनभिषु
पाणि । वि, महत्, वृद्ध, प्रधान ।

—जादा, म पु (फा) दे 'जहजादा' ।

शाहिद, मं पु (अ) माभिन्, प्रत्यशुदासिन्,
देव्य ।

शाही, वि (फा) रात्रवीय २ मूपोचिन,
रूपयोग्य ।

शिकारक, म पु (फा शक) द्विगुल, ल,
द्विगुल, कि, रक्तपारद, सूर्णपारद, सुरग,
रसोद्भवम् ।

शियाण, म पु (स न) नानिकामल, शिना
पक-क २ लोहमल ३ काचपात्रम् । (म पु)
शिमाणक, श्लेषम् ।

शिजन, म पु (म न) शिजित, शणत्कार,
शणत्क्षणचनि ।

शिकतबी, स स्त्री (फा शिकतबी) पानक-
*अम्लगोत्र्यम् ।

शिकता, म पु (फा) ११ निपीडन-दृढी
करण-निताकन-न्यत्र ४ ग्रयनिपीडनयत्र
५ निगड, हृष्टि ६ ३ कोल्हू ।

शिकजे म स्त्रीचना, मु, प्रमथ (क प मे) २
यद् (प्रे), अत्यर्थ अद् (प्रे) पीड् (चु) २
निगडयति (ना धा) ।

शिकन, म स्त्री (फा) व(ब)ली नि (स्त्री)
२ पुत्र मग ।

—डालना, कि म, वलिन कृ २ सपुट विधा ।

—पडना, कि अ वलिन-वलिम-वलिदूत
(वि) भू २ सपुट ममग (वि) जन्
(दि आ से) ।

शिकम, म पु (फा) उदरं तठरम् ।

शिकरा, स पु (फा) श्येनभेद, *शीकर ।

शिकवा, म पु (ज) दे 'शिकायत' ।

शिकस्त, म स्त्री (फा) अभिग्रा, भव,
परानव दे २ वैफल्यम् ।

—खाना, कि अ, परिभू विनि (कर्म), दे
'हारना' ।

शिकायत, म स्त्री (अ) (सविलापा) विजा-
पना, दु रनिवेदन २ परि(री)वाद, आक्षेप,
गद्दा, निदा ३ उपात्मम्, ४ आभय, व्याधि

—करना, कि अ, मशोक-मविलाप विजा-
निविद् (प्रे) २ आ-अरि शिप् (लु प अ),
गह (स्वा चु आ मे), अपपरि, नद्
(स्वा प मे) ३ उपात्मम् (स्वा आ अ) ।

शिकार, म पु (फा) आग्ने खेटन-टक,
मृगया, मृगव्य, आचगेदन, पापदि (स्त्री)
२ मृग्य, जल प्राणिन् ३ मृगयाहती जीव
४ माम ५ मद्य ६ प्रवारित, वञ्चिन ।

—करना, कि स, मृग् (चु आ से, दि प,
से) मृगयाक, अनुभाव (स्वा प मे) । मु,
छलेन घनादिक हृ (स्वा प अ) ।

—होना, कि अ, आरिणे हन् मार (कर्म) ।
मु-वशवतीं च् (दि आ मे) ।

शिकारी, म पु (फा) व्याध, लुब्धक २

मृगयु, जखेटन, जीवातन, शकुनिक, जालिन, वायुरिक । वि, आसेटिन ।

—कुत्ता, म पु, मृगदशन, मृगयाकुञ्जुर, विश्वरु ।

—व्याह, स पु, गा-वविवाह ।

—लियाय, म पु, मृगया-अ खेन, वेष्ट (ष) ।

शिक्षक, म पु (स) अध्यापन, गुरु, उपाध्याय, अनुशास्त्र, उपदेशन आचार्य ।

शिक्षण—म पु (स न) शिक्षा, अध्यापन, विद्यादान पाठन, अनु-शामन शिष्टि (स्त्री), विनय २ विद्या, उपादान ग्रहण-अभ्यास ।

शिक्षा, म स्त्री (स) अध्ययनाध्यापन, पठनपाठन । २३ दे 'शिक्षण' (१२) ४ निपुणता ५ उपदेश, मत्र ६ वेदानविशेष ७ नियंत्रण ७ दद, कुफलम् ।

—हीन, वि (स) अशिक्षित, निरक्षर ।

शिक्षार्थी, स पु (सं विच्) शिक्षाप्राप्तन, छात्र ।

शिक्षालय, स पु (सं) शिक्षणालय, विद्यालय ।

शिक्षित, वि (स) साक्षर, अक्षरामिण, केय नवाचनक्षम, कृतविद्य २ पठित, विद्य । [शिक्षिता (स्त्री) = कृतविद्या पठिता इ] ।

शिरस-दक, स पु (स) मयूरपुच्छ २ चूडा, शिरा ३ कानपक्ष ।

शिराटी, स पुं (सं टिन्) मयूर २ कुक्कुट ३ हुपदपुत्रविशेष ४ विशु ५ कृष्ण ६ शिव ७ बाण ८ गुल्फ ९ स्वर्णशुद्धिका ।

शिरा, म पु (स पु न) गिरि, मस्तक शृङ्ग, पवनप्र, वृत् २ उच्चगो भाग, दे 'चोली' ।

शिरारन, म स्त्री (स शिरारिणी) *दन्ति मिलोदरम् ।

शिरारिणी, म स्त्री (म) कर्णवृत्तभेद २ स्त्री रत्न ३ रोमरानी ४ द्राघानेद ५ दे शिरारन ।

शिरारी, म पु (स रिन्) पर्वत २ वृक्ष ३ काष्ठ ।

शिरा, म स्त्री (स) शिरस दक, चूडा २ अग्निज्वाल, ज्वाल, अविम (न) ३ दीप, अविम् (न) शिरा ४ शिरार ५ शिरारण ६ शिरार ।

—कंद, म पुं (सं पु न) दे. 'शिरारम' ।

—वान्, वि (म-वत्) निरिन्, चूडावन, शिराधिन । स पु, दीपक २ जग्नि ३ केतुग्रह ४ उल्का, योल्का ।

—सूत्र, स पु (म-ने) चूडावशोपवीने (न द्वि) ।

शिराविनी, म स्त्री (स) मयूरी, शिराविनी, केकिनी २ कुक्कुटी, कुक्कुटवधू (स्त्री), पक्षिणी ।

शिरापी, वि (म लिन्) शिरावत् चूडावत् । स पु (म) मयूर २ कुक्कुट ३ दीपक ४ अग्नि ५ पर्वत ६ बाण ७ वृक्ष ८ उल्का, केतु ।

शिराफ, स पु (फा) छिद्र विल २ विदार, भेद ।

शिरार, शिरा(गा)ल, म पु (फा) शृगाल, जतुर ।

शिराव, कि वि (फा) शीघ्र, सतवरम् ।

शिराथिल, वि (स) मदनपथन, दन्ध, छस्त, दे 'डीला' २ अल्प, मंथर ३ उदासीन ४ दृढत्वशून्य ५ बधनहीन, मुक्त ६ आन, कर्ण ७ अस्पष्ट (शब्दादि) ८ उपैक्षित (नियम) ।

शिराथिलता, स स्त्री (स) शीथिल्य, दन्धता, सक्तता, दे 'डीलापन' २ अल्प्य ३ औदासीन्य ४ दृढताभाव ५ क्षान्ति (स्त्री) ५ नियमभंग ६ शक्तिन्यूनता ।

शिराडन, मं स्त्री (ज) उग्रता, हीनता, प्रचलता २ जाशिवम् ।

शिर, म पु (म) शिरस् (न) द 'निर' ।

शिर(रा)वन, म स्त्री (अ) दे 'शिरारन' ।

शिराखाण, म पु (म न) शीर्षण्य, शिरस्त्र, दे 'छोद' ।

शिरा, मं स्त्री (म) शिरा, रंलिरा, रकवाहिनी नान्नी (Vein) ।

शिराधार्य, वि (मं) अगोस्वी, शर्य, पाल विनय ।

—करना, मु, सादर स्त्री अगी, कृ ।

शिरामणि, म पु स्त्री (म) चूडामणि, शिरारत्न २ प्रधान, मुख्य ।

शिरा, मं स्त्री (म) शिरा, पट्ट, अल्प २ अदम्य शिरा (पुं) ३ शिरा ४ *दे शिरा, *शिरा पट्टी पट्टिका, *शिरा ।

- जीत, म पु [स-जतु (न)] गिरि
अग-अद्रि-अदन-शिला-ज, अरम-जतुक-लाम्
वध, शिला-नित (स्त्री) -द्र-मल-स्वेद ।
- लेप, म पु (स) प्रस्तरलेख्यम् ।
- वृष्टि, म स्त्री (स) करकामार ।
- शिलोड, स पु (म) उद्यशिल्प, उपात्तशिल्प
क्षेत्रात् शोपावचयनम् ।
- शिल्प, म पु (म न) यत्र कला, *हस्त
कर्मन् (न) -शिल्प-व्यवसाय शिल्पिक, दे
'दस्ताकारी' ।
- कला, म स्त्री (स) दे शिल्प' ।
- कार, म पु (स) शिल्पिन, कार, देवत,
शिल्पजीविन, शिल्पकारिन्, कमन्तर ।
- विद्या, म स्त्री (स) हस्तकौशल २ गृह
निर्माण-वास्तु-कला ।
- शाला, स स्त्री (म) शिल्प(विप), गृह
गेह शाला-नावेशनम् ।
- शास्त्र, स पु (म न) हस्तव्यवसाय
शास्त्र २ गृहनिर्माण-वास्तु, शास्त्रम् ।
- शिल्पो, स पु (स पिन्) दे 'शिल्पकार'
२ गृह-कारक-भविशक, पलगड ३ चित्र
कार ।
- शिव, स पु (स) महादेव, शम्भु, पशुपति,
शक्तिन्, महा ईश्वर, शंकर, चन्द्रशेखर,
गिरीश, शृङ्ग, पिनाकिन, त्रिलोचन, भूतेश,
धूम्रि हर, त्र्यम्बक, त्रिपुरारि, गंगाधर,
शुषध्वन, भव, रुद्र, उमापति, महानट,
भैरव, पञ्चानन, कठेकाल नदीश्वर
२ परमेश्वर ३ वेद ४ शृङ्गाल । (स न)
कल्पयन् मंगलम् । वि, कल्याण-मंगल, कारक
कारिन् ।
- हुम, स पु (स) विन्वकृष्ट ।
- नदन, स पु (म) गणेश ।
- पुराण, स पु (स न) शैवपुराण, पुराण
ग्रथविशेष ।
- पुरी, म स्त्री (म) काशी, शिवनीधम् ।
- पौत्र, स पु (स न) पारद, शिववीथम् ।
- रात, म स्त्री (स शिवरात्रि) शिवचतु
दशी फाल्गुनहृण्यचतुदशी ।
- लिंग, म पु (म न) शिवप्रतिमाभेद ।
- लिंगी, म स्त्री (म-लिंगिनी) शिव-वह्नी
वह्निका, श्वरलिंगी, चिवकला ।
- लोक, स पु (स) वेणुस, शिवशैल ।
- वाहन, म पु (म) शिवकृष्ण, नदिन् ।
- मुदरी, म स्त्री (म) दुर्गा ।
- शिवा, स स्त्री (स) दुर्गा २ पार्वती
३ शृङ्गाली ।
- शिवानी, म स्त्री (स) पार्वती, गौरी, दुर्गा ।
- शिवाला, स पु (स-ल्य) शिव, मन्दिर
आयनन २ देवालय ३ इमशानम् ।
- शिवि, मं पु (स) उद्धानरनृपपुत्र, ययानि
दोहिन २ हित्तपशु ३ भूतकृष्ण ।
- शिविका, म स्त्री (म) वायव्यान, शिवीरथ,
दे पालकी' ।
- शिविर, स पु (म न) वटक-क, निवेश,
आगतुकमैन्ववाम २ पट, मडप-कुटी, दे
'तवू' ३ दुर्ग-गम् ।
- शिवेतर, नि (स) अशुभ, अमंगल, हानि
कारक ।
- शिशिर, स पु (स पु न) कपन, शीत,
हिमकूट, शीतन (माघ तथा फाल्गुन)
२ तुषार, तुहिनम् । वि, शीत, शीतल,
उष्णताशून्य ।
- कर, स पु (स) हिमाशु, चद्र ।
- काल, म पु (स) दौतर्तु, शीतकाल ।
- शिशु, म पु (स) स्तनपय, स्तनप, वत्स,
बाल्य, दारक, उत्तानशय, डिम्भ,
अपत्यम् ।
- शिशुता, स स्त्री (स) शिशुत्व, शैशव,
बाल्यदे ।
- शिशुपाल, स पु (म) चेदिरान, दमघोष-
सुत, वैद्य ।
- वध, स पु (म न) महाकविमाधप्रणीत
महानाव्यविशेष ।
- शिष्ट, वि (म) सम्प, भद्र, श्रेष्ठ, सुशील
२ धर्मात् ३ ज्ञान ४ बुद्धिमत् ५ शालीन,
व्यवहारनिपुण ६ प्रत्याय ७ आशाकारिन् ।
- शिष्टता, स स्त्री (स) सम्पत्ता, भद्रता,
सुशीलता, श्रेष्ठता २ अर्थापत्ता ।
- शिष्टाचार, म पु (म) सदाचार, सद्ब्यव
हार २ मत्कार, ममान ३ विनय, प्रश्रय
४ उपचार आचार, यथाविधि वतन
५ अनिष्ट्य आलिधेयम् ।
- शिल्प्य, म पु (स) छात्र, अति-वानिन्, सद्

विषयिन्, शिक्षार्थिन ० अनु-गामिन्, चादिन् ।
 शिस्त, स स्त्री (फा) शरव्य लक्ष्यम् ।
 —बाँधना, सु, लक्ष्ये दृष्टि बध (क प अ) ।
 शीकर, सं पु (स) पवनप्रतिप्ररित, पलकण, सुधार २ अवश्याय, दे 'ओम' ३ स्वल्प वृष्टि (स्त्री) दे 'पुहार' (१) ।
 शीघ्र, किं वि (म शीघ्र) आशु, सद्य मपदि, अपिरेण, अविन्देन, क्षिति ।
 —कारी, वि (स-रिन) विलम्बामह, आशु कारिन ।
 —कोपी, वि (म पिन्) कोपन, आशुकोपिन् ।
 —गामी, वि (म मिन्) द्रतगामिन्, आशु ।
 —चेतन, वि (म) तीव्रबुद्धि ।
 —वेधी, स पु (सं धिन) लघुहन् ।
 शीघ्रता, स स्त्री (म) स्वरा, क्षिप्रता लघ्वत्, तरस् रहम (न) जव, वेग, रभन-मम् ।
 —हरना, किं अ, त्वर् (स्त्री आ से), मत्वरक्षतिनि कृ ।
 शीत, वि (म) शीतल, शिमिर, हिम, तुषार, उष्णत्वशून्य २ शिबिर, दीपनत्रिन् । म पु (सं न) शीत शीतनु, शीतनात्, शिमिर हिमागम २ शीतना, हिमना, शीत्य ३ अव द्याय तुषार ४ प्रतिश्याय दे 'जुगाम' ५ जलम् ।
 —कटिवध, म पु (म) कर्मस्त्रेस्वापर वाँनै अनिशोनी भूभगी (पु द्वि) ।
 —काल, स पु (म) दे 'शीत' स पु (१) ।
 —किरण, स पु (म) शीत हिम, कर र्दिम-अशु, शुति चद्र ।
 शीतता, स स्त्री (मं) शीत्य, शीत न्यम् ।
 शीतल, वि (मं) दे शीत वि । ० शान, शमन्विन ३ मनुष्ट, प्रमत्र ।
 शीतलता, स स्त्री (म) दे शीतता ।
 शीतला, स स्त्री (म) विश्वेन्द्ररोग, विस्फोटा, मय्मिका शीतली, वमनरोग, दे 'वेचक' २ वमनविस्फोटवादीनामधिष्ठात्री देवी ।
 —वाहन, म पु (सं न) गर्दभ, खर ।
 शीताशु, सं पु (स) शब्द ० कपूर रम् ।
 शीत, सं पु (फा) क्षीर, दग्ध, दे 'दूध' ।
 शीताकुल, वि (स) शीत शीत्य-दिम, आशु-मदित पीडित-विह्वल ।

शीरा, स पु (फा) दे 'शरदन' २ दे 'चशनी' ।
 शीरी, वि (क्त्) मधुर २ प्रिय ।
 शीरीनी, स स्त्री (फा) मिष्टान्न, दे 'मिठारं' २ माधुयम् ।
 शीर्ष, वि (सं) कृश, क्षीणननु, क्षाम, २ भग्न-खटिन, ३ च्युत ४ जीर्ण, विदीर्ण ५ म्लान, विरस ।
 शीर्षता, म स्त्री (सं) कृशता, दौर्बल्य, शीणता, विदीर्णता ।
 शीर्ष, स पु (म न) शिरम् (न), दे 'शिर' २ ललाट, दे 'माथ' ३ शिखर ४ अग्रभाग ।
 शीर्षक, स पु (सं न) अग्राक्षरपक्ति, शिर पक्ति (स्त्री) २ शिरस्त्र, दे 'खोद' ।
 शील, स पु (म न) चरित्र, आचरण, वृत्ति (स्त्री) ३ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) ४ सदाचर, सचरित्रम् ५ सत्, स्वभाव प्रवृत्ति (स्त्री) ६ हृदयमादव ७ सरोव, आदर वि पर, परायण (उ दानशील) ।
 शीलवान, वि (सं-वत्) सदाचारिन, सद्बृत्त २ सत्त्वभाव, कीमलप्रवृत्ति, सुशील ।
 शीशाम, स स्त्री (फा) शिशापा, पिच्छ (च्छ) ला, पिंगला, कपिला, भरमगर्भा ।
 शीशामहल, स पु (फा शीशाम-अ महल) काच-मण्डक, भवन २ काचकोष्ठ, अद शंकास ।
 —का कुत्ता, सु, उन्मत्त, बाहुल ।
 शीशा, सं पु (फा) काच, दे २ आदर्श, भुङ्कर, दर्पण, दे ३ काचफलक-कर्म ।
 शीशा, स स्त्री (फा शीशा) काचरूपी ।
 —सुधाना, औषधगणित मूच्छ (प्रे) ।
 शीशु, स स्त्री (सं) कडुप्रथि, दे 'सोठ' ।
 शुक, स पु (मं) शीर, वस्तुश, दे 'शोना' २ महपि-न्यासपुत्र ।
 शुक्ति, सं स्त्री (सं) मुक्तामाह (स्त्री), दे 'सोती' ।
 —वीन, स पु (म न) मीकिरं, सुस्र मणि ।
 शुक्र, सं पु (सं) निन, श्वेत, काव्य, कवि, भार्गव, दैत्यगुरु २ अग्नि ३ ज्येष्ठ नाम ४ शुक्रवासर । (सं न) वीन, वीथे

रेतम् (न) २ बन्, सामर्थ्यम् । वि (म)
मासुर, देदीभ्यमान २ स्वच्छ, उज्ज्वल ।

शुक्र, स पु (अ) धन्यवाद, कृतज्ञता
प्रकथ ।

—शुक्रार, वि (अ + का) कृतज्ञ, दे ।

—शुक्रारी, म स्त्री (अ + का) कृतज्ञता ।

शुक्ल, वि (स) धवल, मिन, श्वेत, दे
'सफेद' ।

—पक्ष, म पु (स) शुक्लक, दे पक्ष' मे ।

शुक्लता, म स्त्री (स) धवलता, दे 'सफेदी' ।

शुगल, म पु (अ) दे 'शगल' ।

शुधि, वि (म) विशुद्ध, पवित्र पूत
२ उज्ज्वल, निर्मल ३ निर्दोष, निष्पाप
४ शुद्ध मानस ।

शुभ्रमुग्, म पु (का) * उद्भ्रमुक्त् ।

शुभ्रता, म स्त्री (का) नियति (स्त्री),
भविष्यता ।

शुद्ध, वि (म) स्वल्, स्व- मिश्रण-रूप
२ उज्ज्वल, श्वेत ३ सुदिरन्ति, यथातथ,
वधार्थ ४ निर्दोष ५ पूत, पवित्र, पावन, म'थ ।

—करना, क्रि मं, परि पू (क् उ म),
शुचीकृ । परि वि म, शुभ्र (प्रे), निमली
कृ २ प्रतिममा-ममा धा (लु उ अ), इटि
रहित विग (तु उ अ) ।

शुद्धता, म स्त्री (म) शुचिता, शीघ्र, पवित्रता,
पूतता, वि, शुद्धि (स्त्री) २ निर्दोषता,
यथाथता ।

शुद्धि, म स्त्री (म) दे 'शुद्धता' (१) ।
२ स्वच्छता, नेर्मल्य ३ वैदिकधर्मप्रवेशम
न्कार ।

—पत्र, म पु (म न) सुदिरन्ताकपत्रम् ।

शुचदा, म पु (अ) सदिह २ भ्रम ।

शुभ, वि (म) मंगल, हित, कल्याण २ उत्तम,
भद्र । म पु (म न) मंगल, हित, कल्याणम् ।

—कर्म, म पु (म-भ्रं न) सुहृत्, पुण्यम् ।

—घटी, म स्त्री, मागलिकमुद्गत-भम् ।

—चित्रक, वि (म) द्विविध, त्रिविधक ।

—दर्शन, वि (म) प्रियम्-दर्शन, सुन्दर ।

—फल, स पु (म न) सुपरिणाम ।

शुभ्र, वि (सं) श्वेत, शुक्ल, भासुर ।

—कर, म पु (म) शुभ्र मानु-रविम,
चद्र ।

शुभ्रता, म स्त्री (म) शुक्लता, भासुरता ।

शुमार, स पु (का) 'गणन', सकलनम् ।

शुमाल, म पु (अ) उदीची, दे 'उत्तर'
(दिशा) ।

शुमाली, वि (अ) उत्तर, उदीचीन, उत्तर,
द्विदय-मन्त्रिन् ।

शुरू, म पु (अ) उपक्रम, आरम्भ दे
२ प्रभव, आदि ।

शुल्क, स पु (स पु न) वट्टपथाद्रीना कर-
२ वरात् प्राचीर्ध ३ सुनक दे 'दहेन'
४ पा म् ५ मूल्य ६ माट, भाटक
७ प्रतिकल, वेतनम् ।

शुश्रूषा, म स्त्री (म) पत्त्रिचा, सेवा दे
२ श्रवणेच्छा ।

शुष्क, वि (म) निर्मल, आश्रंतारहित, वान
२ रिन्नी-अ-नम, निम्बाद ३ मरकर,
अचिक ४ मोर, निरधन ५ म्भ स्नेहहीन
६ शीघ्र, शीघ्र ।

शुष्कता, म स्त्री (म) शोष, शुष्कता
२ नीगमता ३ अरोचकता ४ रूक्षता
५ तीर्णता ।

शुकर, स पु (म) बराह, दे 'शुभ्र' ।

शुद्ध, म पु (स) वृषल, दाम, पादत्र,
पत्र, पत्र, जघन्य, द्विजमेवक, उषामक,
चतुर् २ निकृष्ट ३ मैवक ।

शुद्धक, म पु (म) मृच्छकटिकाचयिता
महावि २ शुद्ध ३ शुभक, तपस्विशुद्ध
विशेष (रामायण) ।

शुद्धा, स स्त्री (म) शुद्धताये स्त्री ।

शुद्धी, स स्त्री (म) शुद्धम्य पत्नी ।

शुन्य, वि (म) रिक्त, वशिक, शून्य रिक्त,
गर्म-मध्य २ निराकार ३ अमत् ४ रहित ।
स पु (म न) आकाश श, दे २ विदु,
स ३ रिक्त पञ्चात निर्जन-स्थान ४ अभाव ।

शून्यता, म स्त्री (म) शून्यत्व, रिक्तता ।

शुष, म पु (स श्च प) शपं कुन्य, प्रसो
टन-ना दे 'शच' ।

शूर, म पु (म) दे 'वीर' ।

शूर्य, स पु (स) दे 'सूर्य' ।

शूरता, स स्त्री (स) दे 'वीरता' ।

शूर्प, म पु (म पु न) दे 'शूर' ।

—कण, स पु (स) गन २ गणेश ।

—गखा, सं स्त्री (स) रावणभगिनी ।
 शुल, स पु (स पु न) उदरवेदना, जठर
 व्यथा, वातरोगभेद २ पीडा, बलेश
 व्यथा ३ कुत, प्राप्त ४ शुल, त्रिदशैक
 ५ ध्वज ६ मृशु ७ अयकील ८ शालाका
 ९ दे स्त्री ।
 —धारी स पु (स रिन्) शुल, धर प्रादिन्
 पाणि, शिव ।
 शुली, सं पु (सं लिन्) शिव, शुलपाणि
 २ शशक ३ शुलात्त । म स्त्री, दे स्त्री ।
 श्रवला, सं स्त्री (मं) श्रवला-ज, निगड,
 बध, बधन २ क्रम, परपरा ३ श्रेणी, पक्ति
 (स्त्री) ४ मेखला, पुम्बदिवस्त्वध ५ काची,
 रश(म)ना ।
 —बद्ध, वि (म) श्रद्धालिन, निगडित २ क्रम
 श्रेणी, बद्ध ।
 शृंग, सं पु (स न) विषाणं, दे 'शृंग'
 २ मातु, कूट, शिखर, शैलाम्र ३ वाय
 भेद ४ कामोत्तजना ५ क्रीडानलवच (पिच
 कारी, दे खुर्वंश १६७०) ६ दे 'वंगुरा' ।
 शृंगार, स पु (म) रसविशेष (मा)
 २ मैथुनस्वहा ३ मंडन, भूषणं, प्रसाधनं,
 अलंकारण परिधरणं ४ सभोग, मैथुन
 ५ मंडन प्रसाधन, साधनद्रव्य (चन्दनादि)
 दे 'पौन्य शृंगार' ।
 —करना, क्रि स, अलंकृ, परिष्कृ, प्रसाध्
 (त्रे), भूषणम् (चु) ।
 —योनि, सं पु (स) मदन, वदपं ।
 शृंगी, मं पु (सं गिन्) गज २ वृष्ट
 ३ पर्वत ४ ऋषिविशेष ५ शृङ्गवत् पशु
 ६ वायभेद ७ महादेव ।
 शृंगाल, सं पु (म) गोमातु, क्रोड, चतु
 (चू)क, दे 'गोदड' । वि, भीरु २ तल
 ३ निशुर् ।
 शृंग, सं पु (अ) श्रीमोहमदवंशजातामुपाधि
 २ श्वनवर्गविशेष ३ श्वनोपदेशक ४ वृद्ध ।
 —चिल्ली, म पु (अ + हि) मद, जट
 २ मंड, विदूषक ।
 शृंगार, सं पु (स) शिरोमाला, शोभमाला
 २ शिरोभूषणमात्र ३ शीर्ष ४ विरीट,
 मौलि ५ पर्वनाम, सप्तु ।
 शृंगी, सं स्त्री (अ श्लोड) दप, गर्व
 २ विकल्पनं, गर्वोक्ति (स्त्री) ।

—वाङ्ग, वि (दि + का) विवत्थक, आत्म
 इलाभिन् २ इत्त ।
 —झडना या निकलना, सु, गर्व लड् (कर्म)
 मद व्यपगन् (स्वा प अ) लृभू ।
 —वधारना, सारना या हांकना, सु, विकथ
 (स्वा आ से), आत्मान इलाध (स्वा आ
 से) ।
 शेष, स पु (स) शेष(क)स् (न), शेष
 फ, भिद् २ मुष्क, धृषण, शुक्रप्रवि ३ पुच्छं,
 लंगूल, लम्प ।
 शैमुपी, सं स्त्री (स) बुद्धि धी मति (स्त्री),
 प्रशा ।
 शैयर, म पु (अं) अश, भाग ।
 —होल्डर, म पु (अ) अशिनू, भागिन् ।
 शैर, स पु (का) दीपिन्, भेल, मृगानक,
 शादल, व्याज दे २ केमरी, सिंह दे
 ३ वीर, शूर ।
 —पजा, स पु (का + हि) दे 'वधनरा' ।
 —वद्या, म पु (का + हि) सिंहव्याज,
 पौल शावक २ वीर, शूर ।
 —ववर, स पु (का) दे 'शैर' (२) ।
 —मर्द, वि (का) वीर, निर्भव ।
 —होना, सु, मय मुच् (तु प अ), निर्भय
 (वि) भू ।
 शैर, सं पु (अ) वकितायाश्चरणाद्यं (उर्द,
 कारसी आदि) ।
 शैरनी, सं स्त्री (का शैर) व्याघ्री, दीपिनी
 २ निही, केमरिणी इ ।
 शैरवानी, सं स्त्री (देश) *भाजानुलबी
 वंचुभेद ।
 शेष, स पु (मं) अनन, सर्पराज, शेषनाग,
 कर्णीद्र, कर्णीशर २ परमेश्वर ३ लक्ष्मण
 ४ बन्ध्या ५ अतरम् (गणित) ६ अत
 ७ परिणाम ८ गज ९ मृत्यु १० नाद ।
 (स पु न) अव परि, शेष, उदर, अव
 शिष्ट उपयुचोत्तर, वस्तु (न) २ अध्याहार्य
 शब्द । वि, अवशिष्ट २ समाप्त ३ हतर,
 अवट, अन्य ।
 —नाग, सं पु (मं) दे 'शेष' सं पु (१) ।
 —शायी, मं पु (सं शायिन्) विष्णु ।
 शेषान, सं पु (सं) १ २ अवशिष्ट-अनिम,
 भाग ।
 शैतान, सं पु (अ) ईश्वर विरोधी देवविशेष

(सनी धर्म) २ भूत, प्रेन ३ क्रूर ४ दुष्ट,
सुल ५ काम, मदन ६ क्रोध ।

शैतानी, स स्त्री (अ शैतान) दुष्टता,
कुचेष्टा ।

शैत्य, स पु (सं न) शीतता, शीतलत्वम् ।

शैथिल्य, स पु (स न) शिथिलता, दे ।

शैल, स पु (स) गिरि, अदि, पर्वत, दे ।

२ शंभूदेव, दे 'चट्टान' ३ दे 'शिवजीव' ।

—कुमारी, स स्त्री (स) अद्रिततया, शैल,
कन्या-जा, दे 'पार्वती' ।

शैली, स स्त्री (सं) भाषण-लेखन, रीति

मरणी (दीनों स्त्री) प्रकार २ प्रथा, रीति

३ वस्त्रादि (स्त्री), प्रणाली ४ चर्चा, बर्तन,

वृत्ति (स्त्री) ।

शैलेंद्र, सं पुं (स) हिमगिरि, हिमालय ।

शैव, स पुं (स) शिव, भक्त उपासक-अनु

यायिन् २ संप्रदायविशेष । वि (स) शिव

सम्बन्ध ।

शैव्या, स स्त्री (स) सत्यहरिश्चन्द्रपत्नी ।

शैशव, म पु (म न) दिग्गुणान्त, बाल्यम् ।

वि (स) बाल बाल्य-सम्बन्ध ।

शोक, स पु (स) आति (स्त्री) आधि,

दुःख, परिणाम, खेद, शुच (स्त्री), शुचा,

मन्यु, निस्सम, शोचनम् ।

शोकार्त्त, रि (स) शोकिन, शोक्त, आहुल

आहुर अत्य-उपहन विह्वल, सशोक, परितप्त ।

शोष, वि (का) घृष्ट, वियान २ वचन,

पथ ३ गाढ, भासुर (रग) २ दुर्लभित,

कुचेष्टक ।

शोषी, स स्त्री (का) धाष्टर्ष, वैयात्य

२ चाञ्चल्य ३ गाढता, प्रसरता ।

शोच, स पु (स शोचन) शोच २ चित्त ।

शोचनीय, वि (स) आपन्न, दुःख, आर्त्त,

निरानन्द २ मासयिक, सदिग्ध ।

शोण, स पु (स) रक्त-रहित-वर्ण-रग

२ नदविशेष, हिरण्यवाह ३ माणिक्य

४ रक्तोष्ण ५ अग्नि ६ लोहितारथ । स

न, रुचिर २ सिंहरम् ।

—रत्न, स पु (स न) पद्मरागमणि, शोण

तोषण ।

शोणित, स पु (म न) रुचिर, रक्त-दे ।

वि (स) लोहित, रक्त, शोण ।

शोणित्वा, स स्त्री (स मत् पु) रक्तिमत्,
लोहितिमत् अरुणितम् (पु) । दे 'शाली' ।

शोध, स पु (स) शोक, शोधक, श्वस्यु ।

शोध, स पु (म) शोधन, निस्तार (कणादि

का) २ अनुसंधान, अन्वेषण ३ शुद्धि (स्त्री),

शुद्धिसंस्कार ४ परीक्षा-शुणम् ।

शोधक, स पु (म) पावन, शोधन, मलहर

२ अन्वेषक, अनुसंधार ३ दे 'शुभारक' ।

शोधन स पु (स न) पावन, संस्करण,

निर्मली वित्री शुची, करणं, मार्जनं, प्रक्षालन,

पावन २ प्रतिमन्त्र-मन्त्रा, धन, शुद्धि-निरसन

३ धातूना निर्दोषीकरण ४ अन्वेषणं, अनुस

धानं ५ परीक्षण ६ ऋणनिस्तारण ७ दण्ड

८ प्रायश्चित्त ९ विरेचन १० निवृत्त ११ व्य

वर्तनम् ।

शोधना, क्रि स (स शोधन) दे 'शुद्ध

करना' (१२) ३ औषधार्थं धातु सत्क

४ अग्निष् (दि प से), अनुसंधा (जु

व अ) । म पुं, दे 'शोधन' ।

शोधनी, स स्त्री (स) स, मार्जनी, बहुकरी ।

शोधनीय, वि (सं) पवनीय, मार्जनीय

२ निरानयं, प्रत्यपयितव्य ३ अनुसंधेय ।

शोभन, वि (स) सुन्दर, रम्य, रमणीय,

२ उत्तम, श्रेष्ठ ३ उचित, उपयुक्त ४ माण

िक, मंगल्य, मंगलीय ।

शोभा, स स्त्री (स) वाति धृति-दीप्ति

(स्त्री), भा, भासा, श्री (स्त्री) २ उवा

वि (स्त्री), सुन्दरता, रुचिरता ३ भूषा,

परिष्कृता ४ वर्षा, रग ५ श्रेष्ठशुभा ।

—देना, क्रि अ, राजशुभ (भवा आ से) ।

शोभायमान, वि (स शोभामान) राजमान,

आजमान, भासुर, देदीप्यमान, सुन्दर

२ विद्यमान, उपस्थित ।

शोभित, वि (स) शोभान्वित, सुन्दर,

उविमत् २ मण्डित, भूषित ३ उपस्थित,

विद्यमान ।

शोर, म पु (का) महाख, कलकल,

कोलाहल-दे ।

—मचाना, क्रि अ, कोलाहलं क, उल्लुर्

(भवा प अ) ।

शोरवा, स पु (का) मूष-ध, ह्य, लास,

रस २ मासरस, दे 'वसनी' ।

शोरा, स पु (फा शोर) यवशार, विपा
त्रिन्, निषीत्रिन्, पावर ।

शोरे का वैज्ञाव, सं पु, भूविक्रान्त, पाष्य
श्रवक, नत्रिक्र-यवशार, अम्ल ।

शोला, स पु (अ), ज्वाला अचिम (न) ।

शोशा, स पु (फा) अद्भुत विलक्षण, वात्ता
२ व्यंग्योक्त (स्त्री) ३ कण्टोत्पादिका वात्ता ।

शोषक, वि (म) रमाकर्मक, शोषणर
२ क्षय-वम, वारिन् ।

शोषण, म पु (सं न) रमाकर्मण, शु-री
करण २ क्षण ३ वि, नाशन, वि, व्यसन
४ सारोद्धार, ५ चूषणम् ।

शोहदा, सं पु (अ) दे 'शुधा' ।

शोहदत्त, स स्त्री (अ) रयानि प्रमिद्धि
(स्त्री) ।

शोहरा, म पु (अ) शोहरन, दे ।

शौक, स प (अ) अभि रुचि (स्त्री)
प्रवृत्ति (स्त्री), प्रवणता २ हारमा उत्कृष्टा,
औत्सुक्यम् ।

—करना, सु, पुन (ह आ अ) ।

—घरांना, सु, नीत्रम् अदिलप (भ्वा प मे) ।

—पूरा करना, सु, काम उपभोगेन शम् (प्रे) ।

—से, सु, मानद, सहर्ष, समोदम् ।

शौकीन, स पु (अ शौक) प्रसाधन शृङ्गार
सुवेश प्रिय, वेषाभम निन्, छेक २ वेश्या
गामिन् ३ प्रेमिन्, अनुरागिन्, स्नेहिन्, अभि
न्यदिन् ।

शौकीनी, सं स्त्री (हि शौकीन) वेषाभिमान,
शृङ्गारप्रियता २ वेदयागमनम् ।

शौच, म पु (म न) शुद्धता, शुद्धि
(स्त्री), पवित्रता, पुरता, शुचिना-स्व, पुण्यता,
निष्पायता २ प्राण-हृत्यानि-कार्याणि (न
बहु०) (शौच, स्नान, म-या आदि) ३ पुरी
पोत्मग, हदनम् ।

शौरसेनी, सं स्त्री (सं) १ २ प्राकृत अप
भ्रम, भाषानिर्देश ।

शौर्य, म पु (सं न) शूरता, वीरता,
पराक्रम ।

शौहर, सं पु (ञा) पति, भर्तृ ।

शमदान, सं पु (सं न) शिव, वन-वानन,
अनशय्या, शमानक, कद्रात्री, दाहमर
(पुं), शक्मानम् ।

—वासी, म पु (स सिन्) शिव,
२ चांडाल ।

शमश्रु, स पु (सं न) कुर्व, चोट,
व्यंजन, मुखरोम (न), शिषिन् (न),
शिषाण, दे 'दाडी' ।

—वर्षक, म पु (स) नापित ।

श्याम, म पु (सं) श्रीकृष्ण २ कृष्णवर्ण ।
वि (स) काल, कृष्ण २ कालनील, कृष्ण
मेचक ।

—सुदर, सं पु (म) श्रीकृष्ण ।

श्यामता, स स्त्री (स) काश्मिन् कृष्णमन्
(पुं) २ नीलता, मेचकता ।

श्यामल, वि (म) बाल २ बालीन ।

श्यामा, म स्त्री (म) राधा विद्या २ शकुनी,
कालिन्ना कृष्णा (रमभेद) ३ अप्रमुता
गना ४ (तत्राचनवर्णाया) नारी ५ कृष्णा
गौ (स्त्री) ६ यमुना ७ रात्री ।

श्याल, म पु (म) श्यालक, भार्यापत्नी,
श्यान् ।

श्यालही, म स्त्री (स) श्यालिना, श्याली,
भार्यापत्नी, भगिनी ।

श्येन, स पु (म) शशाङ्क-वन, कपोतारि,
रामानक, धामि रण, पट्टिन, नीलविन्द ।

श्येनी, म स्त्री (सं) श्येनिना, नीलविन्द
पत्नी ।

श्रद्धा, म स्त्री (स) आदर, समान
सत्कार २ विश्वास, प्रत्यय, विश्रम
३ निष्ठा, आस्था, भक्ति (स्त्री) ।

—करना या—ररना, वि अ श्रद्धा (जु उ
अ), विश्रम् (अ प से) ।

—हीन, वि (सं) अविश्वासिन्, अश्रद्धधान
२ आस्था निष्ठा भक्ति, हीन ।

श्रद्धालु, वि (सं) श्रद्धा-वन् युक्त अविन्,
श्रद्धधान, विश्वासिन्, प्रत्ययिद् २ (स्त्री)
दोहदवती ।

श्रद्धेय, वि (सं) विश्वास श्रद्धा, पात्र आरपद्,
श्रद्धालव्य, पूज्य, सं, मान्य, नमस्य ।

श्रम, सं पु (स) परिश्रम, दे । २ श्रान्ति
(स्त्री) ३ व्यायाम ।

—जल, सं पु (सं न) प्र-स्वेद, श्रम, रणा
शीरग (बहु) दे 'पमीना' ।

—जीवी, सं, पु (सं विन्) श्रमिक, वर्मकर,
दे 'शन्दूर' ।

श्रवण, स पु (स पु न) वर्ण, श्रव, श्रोत्र दे 'कान' स न निशमन, आकर्णनम् (स पु स्त्री) श्रवणनक्षत्रम् (ज्यो) ।
 श्रवणा, स स्त्री (स) श्रवण-ण, नक्षत्र विशेष ।
 श्रव्य, वि (म) दे 'श्राव्य' ।
 श्राव, वि (स) क्लान, ग्लान, खिन्न, श्रमार्त्त, अवसन्न, नातश्रम २ क्षान्त ३ निवृत्त ।
 श्राति, सं स्त्री (स स्त्री) श्रम, आयाम, अवसाद, रोद ।
 श्राद्ध, स पु (स न) श्रद्धया क्रियमाण कर्मन् (न) २ पिनुन् उद्दिश्य श्रद्धया अन्नादिदान ३ पितृ-आश्विनकृष्ण, वक्ष ।
 श्राप, स पु, दे 'सराप' ।
 श्रावण, स पु (म) श्रावणिक, नभ (पु) ।
 श्रावणो, स स्त्री (स) श्रावणमासीयपूर्णिमा ।
 श्राव्य, वि (स) श्रव्य, श्रोत्रव्य, श्रवणाहं, अकर्णनीय, निशमनीय ।
 श्री, स स्त्री (स) कमला, लक्ष्मी दे २ सरस्वती ३ धन, सपद् (स्त्री) ४ विभूति (स्त्री), विभव ५ यशस् (न) ६ शोभा, प्रभा ७ कानि-भूति (स्त्री) ८ नामपुरोवति समानपद श्रीयुन, श्रीमन् ९ वृद्धि (स्त्री) १० साफल्य, निधि (स्त्री) ११ रागभेद ।
 वि, योग्य २ मनोह ३ उत्तम ४ मंगल ।
 —कट, सं पु (म) शिव, शशु ।
 —खट, म पु (म पु न) हरिखटन २ दे 'खिखरन' ।
 —धर, स (सं) विष्णु, श्रो, निवास निकेतन ।
 वि, तेनखिन् ।
 —पति, स पु (स) विष्णु २ श्रीराम ३ श्रीकृष्ण ४ कुबेर ५ नृप ।
 —पथ, म पु (स) राज, मार्ग पथ ।
 —पाद, वि (म) पूज्य २ सपन्न ।
 —पुष्प, म पु (स न) लवण, श्रीप्रद्युम्नम् ।
 —फल, स पु (स) बिल्ववृक्ष २ नारिकेल ३ राजादनीवृक्ष ४ आमलक-स्त्री ।
 —फली, स स्त्री (स) आमलकी २ नीली ।
 श्रीमत्, वि (स-मत्) धनिक, धनाढ्य ।
 श्रीमत्, वि (स) धनवत्, धनिन्, श्रील, २ शोभान्वित, धुनिमत् ३ छविमत्, सुन्दर ।
 स पु, विष्णु २ कुबेर ३ शिव ।
 श्रीमती, स स्त्री (म) स्त्रीनामपुरोवर्तिर्नमान

पद २ लक्ष्मी (स्त्री) ३ राधा । वि, धनाढ्या २ शोभान्विता ३ सुन्दरी ।
 श्रीमान्, स पु (स श्रीमत्) नरनामपुरो वर्तिसमानपद, श्रीयुन, श्रीयुक्त । दे 'श्रीमत्' वि तथा सं पु ।
 श्रीरम, स पु (स) श्रीवैष्ट, दे 'श्रीवास' ।
 श्रीराग, स पु (स) षड्रागमध्ये तृतीयो राग ।
 श्रील, वि (स) लक्ष्मीवत्, धनाढ्य २ श्री शोभा-युक्त-युन ३ अनश्लील, भद्र ।
 श्रीवत्स, स पु (म) विष्णु २ विष्णुवत् स्थशुक्लवर्णदक्षिणावरोभावन्ती ।
 —लाहन, स पु (स) विष्णु ।
 श्रीवास, म पु (सं) पायस, वृकभूप, श्रीवैष्ट, सरलद्रव्य दे 'गभाविरौडा' तथा 'तारपीन' २ पथ ३ विष्णु ४ शिव ।
 श्रीहर्ष, स पु (स) नैषधकान्वयरचयिता २ सम्राट् हृषवर्द्धन ।
 श्रुत, वि (स) आकर्णन, श्रवणोचरता गत, निशान्त २ प्र, ख्यान ।
 —कीर्ति, म स्त्री (मं) शशुन्त पत्नी । वि, कीर्तिपुत्र, यदास्तिप ।
 श्रुति, स स्त्री (सं) वेद २ वर्ण, दे 'कान' ३ श्रवण ४ ध्वनि ५ शिवदती ।
 —कट्ट, स पु (म) (काव्ये शोभेद) कर्क शशब्दप्रयोग, दुःश्रवत्वम् ।
 —पथ, मं पु (स) वर्ण २ वेदोक्तमार्ग ।
 श्रेणी, स स्त्री (स) श्रेणि (स्त्री) कक्षा, वर्ण, छात्रगण २ पक्षि, क्लिका, विजोन्नी, आलील, आवलिन्नी, राजीनि, वीथी थिका, रेखा, लेखा, पालील (मव स्त्री) ३ क्रम, परपरा, भङ्गला ४ समव्यवसायि मय ।
 —वद्ध, वि (स) पक्ति, बद्ध-स्थ, वगाहिन ।
 श्रेय, स पु [स श्रेयस (न)] कल्याण, आनन्द, मंगल २ धर्म, सुकृत ३ मोक्ष, समृद्धि (स्त्री) ४ कीर्ति (स्त्री), यशस् (न) । वि, भद्रतर, सार्थीयस्, उत्कृष्टतर २ उत्तम, श्रेष्ठ ३ शुभंकर, मंगल ४ कीर्ति कर, यशोदायक ।
 श्रेयस्कर, वि (स) कल्याण हित-मंगल, कारक-कारिन् ।

श्रेष्ठ, वि (म) उत्तम, परम, प्रशस्ततम, वरेण्य,
सुख्य, प्रथम, अग्नि(श्री)य ३ पूज्य, मान्य
४ वृद्ध, ज्येष्ठ ५ अभिमान, अभिमानवत्,
कुलीन ६ आर्य, महानुभाव, महादाय ।

श्रेष्ठता, म स्त्री (म) औदार्य, माहात्म्य,
प्रधानता, भद्रता, आयत्न, कुलीनता २ उत्त
मता, उत्कृष्टता ।

श्रोतव्य, वि (मं) दे 'श्राव्य' ।

श्रोता, म पु (स-न्) श्रावक, श्रवण निरा
मन, वर्तु, आकणयितृ ।

श्रोत्र, स पु (स न) श्रवण-ण, कर्ण, दे
'वान' ।

श्रोत्रिय, स पु (स) वेद, विद् पाठक,
छात्र २ ब्राह्मणजातिभेद ।

श्रौत, वि (स) श्रुति-वेद, विहित प्रति
पादित २ वैदिक, छात्रम ३ यज्ञीय । (स
न) शार्ङ्गपात्वाहवनीयदक्षिणाग्नेय (बहु) ।

—सूत्र, सं पु (म न) दशविधायकग्रन्थ
विशेष ।

श्लाघनीय, वि (स) इत्याव, प्रशमन य, दे
२ उत्तम, श्रेष्ठ ।

श्लाघा, म स्त्री (स) स्तुति-स्तुति (स्त्री),
प्रशम्ना, दे २ चाड (पु न), चार्त्त
(स्त्री) ३ इच्छा ।

श्लाघ्य, वि (म) इत्यानीय, दे ।

श्लिष्ट, वि (स) सयुक्त, मलग्न २ आलिंगित
३ अनेकार्थक, श्लेषयुक्त (शब्दादि) ।

श्लोपद, म पु (स न) पादवस्तीक, दे
'श्लोपाव' ।

श्लील, वि (म) उत्तम, उत्कृष्ट २ शुभ, मद्र ।
श्लेष, सं पु (म) अनेकार्थकशब्दप्रयोग,
शब्दात्कारभेद (सा) २ परिहरं, आलि
ग्न ३ मयोग, सधि ।

श्लैष्मा, स पु (स-मन्) कफ, दे 'क
गम' ।

श्लोक, म पु (म) अनुच्छेदम् (न)
२ पद्य, छन्दम् (न) ३ यज्ञम् (न)
४ प्रशम्ना ।

श्लसुर, सं पु (स) दे 'ससुर' ।

श्लशूर्य, स पु (म) देवर २ इत्याव ।

श्लशू, म स्त्री (म) दे 'माम' ।

श्लान, म पु (म) श्वन, कुक्कुर, दे 'कुत्ता' ।

—निद्रा, स स्त्री (म) अनाडकुक्कुर,
निद्रा-श्लाप ।

श्लानी, स स्त्री (म) कुक्कुरी, शुनी, नरमा,
मधी, मारमेधी ।

श्लापद, सं पु (स) हिंस्रपशु ।

श्लाम, म पु (म) प्राणा श्रमव (बहु),
दे 'मान' २ श्वातरोग, दे 'दमा' ।

—धारण, म पु (म न) श्वातरोध, प्राणा
याम ।

श्लामोच्छ्रवाम, स पु (स) प्राण-मति
क्रिया, श्लामोच्छ्रवामित्तम् ।

श्लित्र, म पु (म न) श्वेन-श्व, श्वेतच्छम् ।
वि (स) श्वेत २ श्वित्रिन् ।

श्लित्री, वि (म-त्रिन्) श्वित्-श्वेतपुष्ट-युक्त ।

श्लेत, वि (म) धवल, गौर, शुक्ल-कन्, दे
'मपेद' २ निमल, स्वच्छ ३ निर्दोष, निष्क
लक । म पु (स) शुक्लवा २ श्वेत
३ शुक्लप्रद (म न) रूप्य, रत्नम् ।

—कुष्ठ, म पु (स न) दे 'श्वित्' ।

—कृष्ण, वि (स) मित्रमित्त, शुक्लदयाम
२ पशुविपन्नः ।

—केतु, सं पु (म) उदात्कपुत्र ।

—प्रदर, स पु [म प्रदरभेद (स्त्रीरोग)] ।

श्लेतावा, सं स्त्री (सं) श्वेतमित्त (पु),
शुक्लता, दे 'मपेदी' ।

श्लेतावर, सं पु (स) जैनमप्रदावविशेष,
धवलवप ।

प

प, देवनागरीवर्णमन्त्राद्या ष्वनश्री व्यञ्जनवर्ण,
वकार ।

पद्, म पु (म) दे 'पठ' (१२) ।

पद्, वि (स षद्) सं पु, उदा संख्या,
उद्गोपकादिक (६) २ दीनकरगपुत्र ।

—कर्म, सं पु (स-मन्) (न) षट् ब्राह्मण

कमानि (यजनं, याजनं, अध्ययन, अध्यापनं,
दान, प्रतिग्रह) ।

—कोण, सं पु (म न) पट्पुत्र । वि,
वहमुत्र ।

—पद, स पु (सं) पदमि, पत्चरण,
भ्रमर ।

—यदी, स स्त्री (स) अमरी २ छन्दोभेद (छप्पय) ३ यूका ।

—शास्त्र, सं पु (स न) भाग्ययोगन्याय वैशेषिकमीमांसावेदान्तशास्त्राणि (न बहु) ।

—शास्त्री, सं पु (म -खिन्) षडदर्शनविद् ।
षट्क, स पु (स न) षट इति संख्या २ षडवस्तुसमूह ।

षडग, स पु (स न) वेदागषट्शास्त्राणि (शिक्षा, नचन, व्याकरण, निरुक्त, छन्दस (न), ज्योतिष) २ षट् शरीरावयवा (त्रि बाहू त्रिरो मध्य षट्पाणिदमुच्यते) वि, षडवयवयुक्त ।

षडग्निस, स पु (स) अमर, षट्पद ।

षडानन, स पु (स) कानिचन, षट्मुख ।

षडगुण, स पु (म न) षाड्गुण्य, राज्य रक्षणस्य षड्भाषा (= सधि, विग्रह, यान, आमन, द्वैधीभाव, सश्रय) । वि, गुणषट्कयुन २ षडगुणि ।

षड्, स पुं (स) स्वरसप्तके प्रथम, चतुर्थो वा स्वर (सगीत) ।

षड्दर्शन, सं पु (स न) दे 'षट्शास्त्र' ।

षड्यत्र, स पु (स) कूट-ट, कूट, युक्ति (स्त्री) उभाय उपजाप, *षड्यत्र, *षट्क, कुमत्रणा ।

षड्, स पु (स -रस, -रसा) रसषट्क (= मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय) ।

षट्पु, स पु (स न) षड्वाँ, विकारषट्क (= काम क्रोधस्तथा लोभो मदमोहो च मत्सर) ।

षष्टी, स स्त्री (स) शुक्लकृष्णपङ्क्तयो षष्ठी तिथि (स्त्री) २ सङ्गविभक्ति (ध्या) ३ कात्यायनी, दुर्गा ।

षाड्गुण्य, स पु (स न) दे 'षड्गुण' स पु ।

षोडश, वि तथा (सं) 'सोडह' ।

—कला, स स्त्री (स बहु) चद्रमङ्गलस्य षडधिकदश भागाः (= अमृता, मानदा, पूषा, तुष्टि, पुष्टि, रनि धृनि, शशिनी, चन्द्रिका, वानि, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अगदा, पूर्णा, पूर्णामृता = १६ कला) ।

—शुद्धार, स पु (स बहु) षोडशसंख्याकानि प्रसाधनसाधनानि ।

(अग शुची, मजन, वसन, माग, महावट, केस । तिलक भाल, तिल चिचुकमे, भूषण, मेहदीवेष । मिस्सी, काजल, अर्गना, बीरी और गुग्गु । पुष्पकली, युत शीय कर तव नवसत निषण्ण ।)

—संस्कार, स पु (स बहु) धार्मिककृत्यभेद (= गर्भाधानपुंसवनसमीपान्तोत्पन्नजातकमनाम करणानिष्क्रमणाग्रप्राशनचूडाकर्मकर्णविधोपनयन वेदार भ्रमभावर्जनविवाहवानप्रस्थसन्ध्यासात्येष्टि संस्कारा (स्वामी दयानन्द) ।

षोडशी, स स्त्री (स) षोडशवर्षा युवति (स्त्री) २ प्रेतनियामेद ।

षोडशोपचार, स पु (सं बहु) षोडशपूजन, (= आसन स्वागत पादमर्ध्यमाचमनीयिकम् । मधुपर्कचमरनान वसनभरणानि च ॥ गधपुष्पे धूपदीपौ नेवेय वदन तथा । भयोजयेदर्चनाया उपचारास्तु षोडश ॥)

स

स, देवनागरीवर्णमालाया द्वाविंशो व्यजनवर्ण सवार ।

सकट, सं पु (स न) आपद् विपद्-आपत्ति विपत्ति (स्त्री) २ इत्, कट ३ जन, समूह समर् ४ गिरिद्वार, दे 'दरां' ५ सवाधपथ ।

सकटापन्न, वि (स) आपद्-विपद्-आपत्ति, प्रस ।

सकटोत्तीर्ण, वि (स) कट-क्लेश-विपत्ति, मुक्त-रहित ।

सकर, स पु (स) सम्मिश्रण, समिलन

२ सावर्किक, मिश्रज, सकरण, ३ अधर्म्य विवाह ।

सकरता, स स्त्री (स) समिश्रता, सावर्क्य, क्रमभंग, व्यतिकर, अस्वव्यस्तता ।

सकल, स स्त्री (स) शृङ्खला, दे ।

संकलन, स पु (स न) समग्रण, सचयन २ सचय, राशि, ३ परिगणन, परिसंख्या ३ समग्र, समग्रग्रन्थ ।

—करना, क्रि स, सकल (चु), समग्र (क्, प से), समाह (भ्वा प अ) ।

सकलित, वि (स) मगृहीत, सचित २ परि
सख्यात, परिगणित ३ राशी-पङ्क्तौ-कृत ।

सकल्प, स पु (म) विकीर्ण, भाव, विचार,
इच्छा, काम २ विशिष्टमन्त्रपूर्वक-दान-वित-
रण-उत्सव-भजन ३ मंत्रविशेष ४ निश्चय,
अवधारण, अध्यवसाय ।

—करना, क्रि म निश्चि (स्वा प अ), दृष्ट
अवध (जु), मकल्प (प्रे) २ सव-स्वमन्त्र
पूर्वक विष्णु (भ्वा प से), दा ।

सकाश, वि (म) दुल्य, सदृश २ निकट
समीप, वनिष् । (म पु) सामीप्य, नैकत्वम् ।

सकीर्ण, वि (स) मबाध, मकट, सकुचिन
२ मिश्रित, समिश्र ससृष्ट ३ धुद्र, तुच्छ
४ सकुल निचिन व्याप्त, समा आ-कीर्ण ।

सकीर्णता, म स्त्री (स) मबाधना २ मिश्रि-
तत्व ३ सकुलता ४ धुद्रता नीचना ।

सकीर्तन, म पु (म न) (देवादीना)
गुणमान, कीर्तिकथनम् ।

सकुचिन, वि (स) सकीर्ण, मबाध ३ सलज्ज,
सजप ३ कदय, निपचन ४ सदृश, सधि
दित, आकुचिन ५ सुदित, भीलित, मुकुलित ।

सकुल, वि (स) आ-स, कीर्ण, निचिन,
व्याप्त, कलिल, गहन, मधुन, स-परि, पूर्ण,
पूरित । स पु (स न) युद्ध २ जन, ओज
समर्द्ध ३ पशुकुल, गौ, वृद्ध कुल, गृध्र, निनह
४ अमगतवाचयम् ।

सकेत, स पु (स) दक्षित, मशा, सजान,
अगनिशेष, प्रकृति (स्त्री) आजार, अभि
प्रायव्य-नकचेष्टा २ (प्रेमिणी) सकेतिनेतेन,
समितनस्यान ३ शृंगारचेष्टा, हाव, विभ्रम,
विन्यन ४ चिह्न ५ उपशेष, आकृत, उप-
न्याम ।

—करना, क्रि स, शकितेन मूच् (जु),
उपजिप् (तु प अ), माकृत उपयन् (दि
प ने) ।

सकौच, म पु (म) आकुचन, संकीचन,
समाकर्ष, मणीजन २ लम्भा, धया ३ निश्चया
भाव-विफल्य, सशय ४ सक्षेत्र-पणम् ।

सकौचन, स पु (म न) दे 'संकीच' (२) ।

सकौचना, क्रि स (म संकीचन) मकुच्
(प्रे), आकुच् (प्रे), अलीक, मंड (भ्वा
प अ) । क्रि अ, लज्ज (तु आ म) अच्
(भ्वा आ स) ।

सकौची, वि (स चिन्) लज्जात, लज्जाशान्,
विनीत, शालीन ।

सक्रमण, स पु (म न) गमन, दानन
२ भ्रमण पर्यटन ३ सूर्यस्य राश्यतर-प्रवेश ।

सक्रात, वि (स) अनीत, गत २ प्रविष्ट,
निविष्ट ३ प्राप्त गृहीत ४ स्थानान्तरित
५ प्रति, फलित विम्बित ।

सक्राति, सं स्त्री (स) दे 'सक्रमण' (३) ।
२ ३ सूर्यस्य-सक्रमण, समय दिवस ।

सक्रामक, वि (म) स्पर्श-ज-व-स-चारिन्
(रोग) ।

सक्षिप्त, वि (स) महत्, समस्त, सकुचिन,
लुप्त अल्पीभूत ।

—करना, क्रि म, सक्षिप (तु प अ),
ममस (दि प से), समाह-मह (भ्वा प अ) ।

—लपि, म स्त्री (म) दे 'शाईईड' ।

सक्षेप, म पु (न) सार २, सग्रह, ममास,
समाहार ।

सक्षेपण, स पु (म न) सकौचन, सहरण
२ मचयन, सग्रहणम् ३ प्रासन, क्षेपणम् ।

सक्षेपत, अव्य (स) सक्षेपेण, समाप्तेन,
माररूपेण ।

सख, म पु, दे 'शख' (१०) ।

सखिनी, स स्त्री, दे 'शखिनी' ।

सखिया, स पु (स श्रुतिक) केनादमन,
आसु-गौरी-भाषण, शत, मह, बरबोरा,
कुनटी नाग, जिहिमा मातृ (स्त्री) ।

सख्या, म स्त्री (म) गणना २ अक ३ बुद्धि
(स्त्री) ४ विचारणा ।

—करना, क्रि स, गण् (जु) सख्या (अ
प अ) ।

सग, म पु (स) मन्, समिलन, समागम
२ सगतति (स्त्री), साहचर्य, समग,
मवाम, मयर्त ३ विषय, अनुराग श्रामति
(स्त्री) ४ मरिहमयम् । क्रि वि, मह, माई,
मक, मम (तुर्वावा वे माथ) ।

—करना, क्रि अ, सगन् (भ्वा आ अ), सह
चर (भ्वा प म), सवम् (भ्वा प अ) ।

सग, म पु (श) पाषाण, प्रस्तर, दे
'पत्थर' । वि, वीजस, कर्कर, ककपट, २
नटो ।

—जराभत, म पु (श + अ) वपण,
पापण प्रस्तर ।

—तरादा, स पु (फा) मूर्ति प्रतिमा, वार, आदिमक, औपलिक ।

—तरासी, स स्त्री, मूर्ति प्रतिमा निर्माणम् ।

—त्रिल, वि (स) पाषाण-कठोर, हृदय, निद्रय ।

—दिलो, स स्त्री, निद्रयता, निष्करणता ।

—मर्मर, स पु (फा + अ) राजदमन (पु), मणिशिला, ममर, उपल प्रस्तर ।

—मूसा, स पु (फा) *मूषोपल, *मूषादमन (कृष्णदत्तक्षणप्रस्तरभेद) ।

सगठन, म पु (म म + हि गठना) सवट न-ना, सव्यवस्थान, सविधान, दे 'सघटन' २ सस्था, मव ३ ऐक्य, रुधि, सं, हनि (स्त्री) योग-गम ।

संगठित, वि (हि भगठन) सघटित, सविहित, सव्यवस्थापित ।

सगत, स स्त्री (स न) दे 'सग' (२) । २ सहचर, सतिन् ३ मैथुनम् ।

—करना, क्रि अ, दे 'सग करना' ।

सगतरी, म पु (पुर्न) (वृक्ष) नारग, नागरग, पेटावत । (फल) नारग ३, दे 'नारगी' ।

सगति, स स्त्री (म) दे 'सग' (१२) । ३ मैथुन ४ सवन्ध ५ सवाद, विरोधाभाव, आनुरूप्य ६ ज्ञान ७ युक्ति (स्त्री) ।

सगती, स पु (स मगत >) सहचर, मित्र, महाय ।

सगम, स पु (स) दे 'सग' (१०) । ३ वेणीपि (स्त्री) सरित्-सयोग समा गम-मन्त्र ४ मैथुन ५ ग्रहयोग (ज्यो) ।

सगर, स पु (स) युद्ध २ प्रतिष्ठा ३ नियम ४ आपद् (स्त्री) ५ आभीकार ६ विषम् ।

सगन्वार, स पु (फा) *उपलभार, प्राण दडभेद । वि, नष्ट, ध्वस्त ।

सगिनी, स स्त्री (हि सगी) सहचरी, सङ्गामिनी २ पत्नी ।

सगी, सं पु (हि सग) सहचर, महाय २ मित्र ३ वधु ।

सगीत, सं पु (स न) प्रेक्षार्थं गृह्यगीत वाद्यम् ।

—शास्त्र, स पु (स न) गधर्व, विद्या-वेद ।

सगीन, स स्त्री (फा) *नाक्षत्ररत्नगिनी । वि, अथम पाषाण, मय-रचित २ स्थूल ३ स्थापित, दृढ ४ धीर, विकट ५ सकीर्ण ।

सगृहीत, वि (म) मचित, समाहृत, एकवीक्षण २ सकृत्, परिमल्यात ।

सग्रह, म पु (स) सङ्ग यन, सग्रहण, समा, हार हनि (स्त्री) -हरण, सकलन, रादी-एकत्री, करण २ सग्रहप्रथ ३ सक्षेप ४ मुष्टि (पु स्त्री) ५ निग्रह, सयम ६ रक्षा ७ बद्धकोष्ठ, दे 'कवच' ८ स्वीकृति (स्त्री) ९ ग्रहणम् ।

सग्रहणी, स स्त्री (स) ग्रहणी (अजीणभेद) ।

सग्रहणोप, वि (स) सचेतन्य सचयनीय, निचेय ।

सग्रहालय, स पु (सं) अद्यमुतालय ।

सग्रहीता, वि (स न) सग्राहक, सग्रहित्, सचेत्, सचयिन् ।

सग्राम, स पु (स) रण, आहव, युद्ध, दे ।

—मुला, स स्त्री (स) युद्धपरीक्षा ।

—भूमि, स स्त्री (स) युद्धभेदम् ।

—सुसु, स स्त्री (स पु) वीरगति (स्त्री), रणमरणम् ।

सघ, म पु (स) सभा, समाज, समिति (स्त्री), गोष्ठी, परिषद्-ससद् (स्त्री) २ समूह, गण, वृद्ध, दल ३ प्राचीनप्रजा तत्रभेद ४ बौद्धधर्मणममाज ५ विहार, मठ ठम् ।

—चारी, वि (स रिन्) गण-गृध, गामिन् । स पु, मीन ।

—शासन, स पु (म न) *सयुक्तवम् ।

सघटन, म पु (स न) दे 'सगठन' (१३) ४ निर्माण, रचन ५ घटना, रचना ।

सघट्टन, स पु (स न) सघर्षे षण २ स घट्ट, समर्द ३ रचना, घटना ४ सम्मिलन, सयोग ५ दे 'सगठनम्' ।

सघर्ष, स पु (स) सघृष्टि (स्त्री), म अभि आ-अर्षे षण, आवि, घट्टन, परस्पर, सघण मदन २ प्रति, स्पर्धा, विजिगीषा, प्रतियोगिता, अहमप्रमिका ३ स-वृद्ध-मद ४ युद्धम् ।

सघर्षण, सं पु (म न) दे 'सघर्ष' ।

सघात, स पु (स) समूह वृद्ध २ हनन, वध ३ आपात ४ निर्विडसयोग ५ आवास ।

सघाती, म पु (सं सघा >) सहचर, मित्रम् ।

संधाराम, स पु (म) आश्रम, विहार, मठ ठम् ।

कृतार्थ ० अनुनास, तोषिन, प्रीत, मा त्वन, प्रमादित ।

सतोष, म पु (स) स परि, नोष नुष्टि (स्त्री), विदुष्णा शानि-नुष्टि (स्त्री), प्रीति, २ आनन्द, ह्य, सुगन् ।

—वरना, क्रि अ, सतुप-मरुप (दि प अ), नद (भ्वा प से) ।

सतोषी, वि (स पिन्) दे 'सतुप' (१) ।

सथा, स पु (म महिता > ?) आहिन, दैनिक, पाठ ।

सदर्भ, न पुं (स) रचना, घटना, निमित्ति (स्त्री) २ प्रस्ताव, लेख, प्रनि, बध ३ भाष्य-टीका, आत्मबध ४ लुपु मय पुनव ५ मग्रह, मकलन (ग्रथ) ६ विस्तार ।

सदल, स पु (फा) मलयन श्रोखड, चदन, दे ।

सदलो, वि (का सदल) चदनवर्ण, श्य र्पित २ चदन, मय-निमित्त ।

सदिग्ध, वि (म) सदेह-मशय, युक्त पूर्ण, निश्चयशून्य, सविनल्प, विकल्प्य ।

—व्यक्ति, स पु (म स्त्री) शक्ति शक्य, जन ।

सदृक्, स पु (अ) मपुट, पेदा, मजुपा, समुदय ।

सदृक्का, स पु } (अ + का) पेटिका,
सदृक्ची, म स्त्री } समुदगक ।

सदश, स पु (सं) मवाद, वार्ता, वाचिक, दिष्ट, आख्यायनी २ वयप्रानीयनिष्ठाभेद ।

—भेचना, क्रि म, सदश (तु प अ), वाचिक दिष्ट प्रेष (प्रे) ।

—हर, सं पु, वार्ताहर, वाचिक, सादेशिक, दूत, आरवाचक ।

सदसा, स पु, दे 'सदेश' (१) ।

सद्वेद, म पु (म) सदा, विच्छिन्निस्म, दापर, विकल्प, द्वेष, आशका, निश्चय निणय, अभाव २ प्रत्यय विश्राम, अभाव ५ अर्था लकारभेद (सा) ।

सद्वेद, स पु (स) समूह, निकर ।

सधान, स पु (स न) अभिषव, सधानी, मयसञ्जीकरण, सधिका २ चापे नाणयोजन ३ मदिराभेद ४ संधन, मयोजन ५ अन्वे षण ६ सञ्जीवन, दे ७ सधि ८ अवदश ९ वाचिक १० सधानिका ।

सधि, स स्त्री (स पु) मयोप, ममिन्न, मगम, सहति (स्त्री) २ सधि, पवन(न), सधिस्थान ३ मित्रीकरण, राजपरक्षाया युग विशेष (राजनीति) ४ मैत्री, मरय ५ वर्ष द्वयमेलन, सहिता (व्या) ६ रूपकागभेद (सा) ७ दे 'सधे' ८ युगसधि ९ वय सधि ।

—चोर, स पु (स) सधिहारक ।

—च्छेद, स पु (स) सहितपदविश्लेषणम् ।

—जीवक, म पु (म) विट, सचारक ।

—बधन, स पु (सं) स्वसा, रनासुबध ।

—वेला, स स्त्री (म) बहाराप्रमिलनसमय, मधिकाल २ मायम् ।

मध्या, म स्त्री (स) रुधिराल, अहोरात्र-सयोगसमय २ सायकाल, दे ३ उपासना भेद ४ युगसधि ।

—कालिक, वि (म) सध्याकालीन, विज्ञाल सधिराल, मन्वधिग ।

—बल, स पु (स) निशाचर, राक्षस ।

—राग, स पु (स) सध्या विकाल-विकालक-रक्तिमन् शानिभन्-राग ।

—वदन, म पु (स न) सध्यापानम् ।

सन्निर्गम, स पु (स) सन्निधि, मन्निभान, सामीप्य २ इन्द्रियार्थमन्वध ।

सनिपात, स पु (म) वातपित्तकफाना युग पद विकार, विगारोत्पादक मिलितदोषत्रय २ समाहार, समूह ३ समवपात ४ समु द्ययन ५ मयोग, मिश्रणम् ।

सनिवेश, स पु (स) समुपवेश-शन २ उपवेश शन, आसित, निपदन ३ आनि, धान, स्थापन ४ प्रतिबधन, उत्तचन, प्रणि धान ५ गृह ६ समूह ७ रचना ८ सत्थान ९ प्रतिमादीना स्थापनम् ।

सनिहित, वि (स) निकट-मनाप, स्थ-वार्तेन २ (समीपे) स्थापित ।

सन्ध्यास, स पु (स) आर्यजीवनस्य चतुर्था श्रम, प्रव्रज्या, वैराग्य २ काम्यकर्मन्याम (गीता) ३ जगमासी ।

सन्ध्यासी, स पु (स पिन्) चतुर्थाश्रमिन्, परि, घानक ब्राह्म, अमण, मिथु, मन्वरिन्, कमन्दिन्, पाराशरिन् ।

सपत्ति, म स्त्री (स) विभव, वैभव, ऐश्वर्य, अर्थ, धन, वित्त, श्री-लक्ष्मी समृद्धि (स्त्री)

२ रिष्य, दाव ३ निद्रि (स्त्री), मपलता, पूर्णता ४ लाभ, प्राप्ति (स्त्री) ।

सपद् दा, स स्त्री (स सपद्) दे 'सपत्ति' ।

सपद्म, वि (म) धनाढ्य, धनि, धनिन् दे
० लिङ, निपद्म, पूर्ण ३ सहित, युक्त
४ मयूह, धनधान्ययुत ।

सपराय म पु (स) उत्तरकाल ३ युद्ध
३ आपद (स्त्री) ।

सपर्क, म पु (म) समर्ग, सम्बन्ध, माह
चर्य ० मिश्रण दे ३ मयोग, मिलन ४
स्पर्श ५ योग मवलन (गणित) ।

सपात, म पु (म) सक्षपन ० समागम
३ मगमस्थान ४ मयुक्ति ममापत्ति (स्त्री) ।

सपादक, म पु (म), पत्र पत्रिवादीना
सपादयिन्, मपादनवर ३ मापक, निष्पादक
३ अनुष्ठान, कर्तृ, निर्वाहयिन् ।

सपादकता, म स्त्री (स) सम्पादनत्वम् ।

सपादकीय, वि (म) ३ २ सम्पादक-
लितिन-मन्विधन् ।

सपादन, म पु (म न) मुद्रणार्थं सज्जीकरणं
२ परिकल्पन, प्रमाधन, सज्जीकरण ३ माधन
निष्पादन, समापन ४ करण, निर्वाहन, अनु-
ष्ठानम् ।

संपादित, वि (म) मुद्रणार्थं सज्जीकृत
२ निष्पादित, पूर्ण गमित-नीत, संपूरित,
साधित ३ प्रस्तुत, सज्ज ।

सपुट, म पु (म) समुद्रगव, करडक, संपुट
(टि) मा, मजूषा, दे 'सिन्धा' २ अञ्जलि, कर
द्वल प्राणि, पु ३ श्रेण, पत्रपुट, दे 'दीना' ।

सपूर्ण, वि (म) व्याप्त, पूरित, पूर्ण, आर्या
भूत ० समग्र, समस्त, मवल, हस्त ३ समस्त,
अवन्तित । म पु, मत्तस्वरयुतो राग (मर्गात्) ।

सपूर्णतया, } क्रि व (म) साधनेन, साम
सपूर्णतया, } स्तयेन २ मयूक, मुद्र (मत्र अव्य)
सपूर्णता, म स्त्री (न) समग्रता, वात्सर्न्य,
मात्रम्य ० समाप्ति (स्त्री), अवमानम् ।

सपुत्र, वि (म) विश्व, मिथित २ स्वविन
३ सपुत्र ४ मयूह, ज्ञानमय्यक ।

संपेरा, म पु (हि तीव) अ(भा) हिनुष्टिक,
गारडिन, वागडिक, जागडि, व्यान्त्रादिन् ।

संपोला, म पु (हि तीव) अर्ह-मर्ष, दाव -
शक ।

संप्रति, अव्य (म) अधुना, इदानीं २ अष्टले,
वर्तमाने ।

संप्रतिपत्ति, म स्त्री (स) ऐकमत्य, सामर्थ्य
२ स्वीकृति (स्त्री) ३ लाभ, प्राप्ति (स्त्री)
४ प्रवेश ५ सम्बन्ध दोष ६ कार्यसिद्धि
(स्त्री) ।

संप्रदा, स पु (स न) दान, वितरण,
विश्रापन, प्रतिपादन २ कारकभेद, चतुर्थी
(व्या) ३ दीक्षा, मन्त्रोपदेश ४ उपहार ।

संप्रदाय, स पु (सं) मत, धर्म, शास्त्रा-
पथ मात्र ० आम्नाय सुरपरंपरागतमनुप-
देश, गुरुमत्र ३ अनुयायिमण्डल ४ प्रथा,
रीति (स्त्री) ।

संप्रदायी, वि (स यिन्) मतावलंबिन्,
मतानुयायिन् ।

संबन्ध, स पु (म न) मयोग, सहनेष,
सम्भिलन २ सम्पर्क, समर्गः ३ बंधुता,
समोचना, सजातीयता, शालित्व ४ प्रगाढसम्बन्ध
५ वष्टी, विभक्तिभेद (व्या) ।

संबन्धक, वि (स) सम्बन्धिन्, विषयक २
उपयुक्त, योग्य । म पु (स) ब्रह्मविवाह
सत्यादिजनित सम्बन्ध ।

संबन्धी, वि (सं यिन्) संबन्धविशिष्ट २ सपृक्त,
ससृष्ट ३ प्रमगगत । सं पु (सं) बधु, वायव,
समोच, शानि (स्त्री) २ दे 'ममर्षी' ।

संबद्ध, वि (स) सयुक्त, मक्षिष्ट, सन्त्यन
२ सम्बन्धविशिष्ट ३ (अ-) विहित, सञ्चन
४ मप्रथित, सन्नियतित ।

सबल, स पु (म पु न) पाथेय, सबल -
लम् ।

संबन्ध, वि (स) सकीर्ण, सञ्चयित २ संकुल,
परिपूर्ण । सं पु (म) विन्, बाध, बाधा
२ दन, अनुदाय-मयूह ममर्ष ओद ।

सञ्जोधन, म पु (स न) आभिमुद्रयविधानं,
आमर्जन, सन्मुद्रि (स्त्री), आशरण, आह्वानं
२ आह्वानाथक शब्दरूपभेद (व्या, उ
राप) ३ प्रबाधन निद्रान उन्मोचन ४ भाव्या
पन, शयन ५ आशाशभायिन् (नाटक) ।

संभलना, क्रि अ (हि सम्भलना) उत्तम्भ
उपमन म भू (सव वम) २ निश्चल-दृढ म्वा
(म्वा प अ) ३ सावधान-अवहित त्रागरूक
(वि) भू ४ पादमहारपरानयादिभ्यो रथ
मुच् (वम) ५ उत्सर्प या (अ प अ),

अभिवृध् (भ्वा आ से) ६ पुन स्वास्थ्य
लभ् (भ्वा आ अ), प्रकृति आपद (दि
आ अ) ।

मभव, म पु (म) उत्पत्ति (स्त्री), जन्म
(न) २ मेन्, मभागम ३ शक्यता
सम्भवीयता । वि (म >) शक्य, सम्भव
नीय, सम्भाव्य २ साध्य, सम्भाव ।

सम्भवत, क्रि वि (स) कदाचिन् स्यात्
सम्भाव्यते, शक्यते (विधिलिङ् से भी) ।

संभार, म पु (म) सद्ग्रहण, सञ्चयन
समाहरण ३ मामग्री, आवश्यक्वस्तुनि (न
वहु) ३ सम्पत्ति (स्त्री) ४ राशि चय
५ भरणपोषणम् ।

संभाल, म स्त्री (सं संभार) पोषण, भरण,
सर्वद्वन्द्व, २ रक्षण, त्राण, पालन ३ पयवेक्षण,
अवेक्षण, अधिष्ठानं, कायनिवाहणम् ।

संभालना, क्रि म (हि संभाल) उद्-उप-म
स्म (रु प मे, प्रे), आ-अव-ल् (भ्वा
आ मे), म, धृ (भ्वा प अ, जु), २ ग्रह
(रु प से), धृ विरम् (प्रे) र्धृ (रु
उ अ) (पादप्रहारपराजयादिभ्यो) रक्ष
(भ्वा प से) त्रै (भ्वा आ अ) ३ सवृष
(जु), पुष (ँ) ४ उपहृ साहाय्य विधा
(जु उ अ) ५ अधिष्ठा (भ्वा प अ),
निवहृ सम्पद् (प्रे) ६ मनोवेग नियम् (भ्वा
प अ) ७ पयवेप (भ्वा आ से) ८ प्रो
त्सह समाश्रम (प्रे) । म पु, आ भ्रव, ल्व
लवन, भारण, उत्तम्भन २ ग्रहण ३ रक्षण,
त्राण ४ सर्वधन, पोषण ५ साहाय्यदानं, उप
कार ६ अधिष्ठान, निर्वाहण ७ पर्यवेक्षण
८ प्रोत्साहन ९ ।

संभालने योग्य, वि धारितव्य, उत्तम्भनीय,
रक्ष्य, पालय्य, पोष्य, पर्यवेक्षणीय, इ ।

संभालनेयत्वात्, सं पुं, उत्तमरु, धातुक,
आधार, आश्रय, आलम्बनं, पोषण, सर्वद्वन्द्व,
रक्ष्य, प्रोत्साहक इ ।

संभाला हुआ, वि, मस्तमित, धृत, धारित,
रहित, सर्वधित, उपकृत, पर्यवेक्षित, प्रोत्सा
हित इ ।

सम्भावना, सं स्त्री (सं) शक्यता, सम्भव
नीयता, सम्भाव्यता, सम्भव २ आदर,
सत्कार ३ प्रतिष्ठा, मान ४ बल्यता, अनु
मानम् ।

सम्भावित, वि (म) दे 'सम्भव' वि
२ कल्पित, उद्भावित ३ आदृत सम्मानित ।

सम्भाव्य, वि (स) दे 'सम्भव' वि ।

सम्भाषण, स पु (स) आम, लाप, वार्ता
लाप, म, वधावाद भाषा २ प्रवचन, व्या
ख्यानम् ।

सम्भूत, वि (सं) (मद्-) गत उत्पन्न उद्भूत ।

सम्भूति, स स्त्री (सं) उद्भव, उत्पत्ति (स्त्री)
२ विभूति-शब्द (स्त्री) ३ क्षमता ।

सम्भोग, म पु (म) रति (स्त्री), मैथुन
दे २ मन्थन, -उपयोग -व्यवहार -प्रयोग
३ मयोगशुभाग (मा) ।

सम्भ्रम, म पु (म) याकुलता, वैकल्य,
व्यग्रता २ त्वगरि (स्त्री) रभम, रभम
(न), आ म, रेग ३ आदर मान ४ भ्रान्ति
(स्त्री) भ्रम, स्वल्पितम् ।

सम्भ्रात, वि (म) व्याकुल, व्यग्र, उद्विग्न
२ प्रतिष्ठित, संमानित ।

—जन, म पुं (स) सम्मान्य पूज्य, जन
मनुष्य ।

—मना, वि (म नस) वि-म, भ्रान्त शुब्ध,
आकुल, व्याकुल ।

समत, वि (स) मप्रतिपन्न, २ समादृत,
समादित ।

समति, स स्त्री (स) समन, ऐक्यमत्य, प्रतीय,
मानन्द, ऐक्य २ अनुमति (स्त्री)-न, अनुज्ञा,
अनुमोदन ३ मननि (स्त्री), अभिप्राय,
आशय, बुद्धि (स्त्री) ।

समन, सं पु (अ सम-न) (धर्माधिकरिण)
आह्वानपत्रम् ।

समर्द्ध, म पु (म) सुद २ विवाद ३ तन
समुदाय -सङ्घम् ।

समान, सं पु (स) मन्, आदर मत्कार,
पूजा, अहणा, अभ्यर्चन, सम्भावना, प्रतिष्ठा,
गौरव, अर्चा ।

—करना, क्रि म, समन् (प्रे) आइ (तु
आ अ), मद्-पूर्व (जु), मद् (प्रे) ।

संमानित, वि (स) ममादृत, सत्कृत, पूजित,
गौरव रित, अभ्यर्चित, पूज्य, उपास्य, नमस्य,
स-माय २ प्रधान, मुख्य, अग्रिय ।

समिलन, सं पु (सं न) सगम, समागम,
मग, संयोग, मगनेति (स्त्री) ।

संमिलित, वि (स) समिश्र, मिश्रित, मयुक्त, महत सयुक्त समवेत ।

संमिश्रण, सं पु (स न) मयुक्त, समर्प सयोग समिश्रण २ मिश्र मिश्र द्रव्य, सनि पात सरर नानाद्रव्यसमुच्चय ।

समुच्चय, क्रि वि (स सद्युक्त से) अभिमुक्त-रो पुर, पुरत, पुरस्तात् समर्थ साक्षात्, प्रत्यक्षम् ।

संमेलन, म पु (स न) समान, सभा, परिपद (स्त्री) २ वृद्धभिवेदानं ३ संमंजन, सदा ४ दे संमिलन ।

संयत, वि (स) अवनिम रूढ, नियत, निगृहीत २ निप्रत-वद्ध, निनयित, पिनद्ध ३ वश नीत वशीकृत, दमि ४ व्रमनियत, वद्ध व्यवस्थित ५ निद, ममयाद सावधि ६ विनेत्रिय, आम र्दिय, निग्रहिन् ।

—मना, वि (स नम) मयमशील, संयत, आत्मनिग्रहिन् ।

—प्राण वि (सं) प्राणायामिन, संयतवाम ।

—सुय, वि (स) मित अत्य, भाषि वादिन् ।

संयम, सं पु (स) इन्द्रिय तय निग्रह, दम, आत्मनियंत्रण २ निग्रह, निरोध, नियंत्रण-या ३ पथ्यमेवन, मिनाशन ४ परि मितान्तक मयादापालन ५ विमान, निमोक्षण, संवरण ६ वधनम् ।

संयमी, वि (स मिल) इन्द्रिय-आत्म नियं हिन, संयत निरोधिय, दमिन्, संयमशाल, योगिन् २ मित अ-व-मयन आहार भोजिन ।

संयुक्त, वि (स) समवत, मयत, संलग्न, सगृह २ मरित अन्वित, युक्त ३ संवद्ध, सयुक्त ४ संमिलित, समिभिन ।

संयोग, सं पु (स) दे 'संमिलन २ संश्लेष, समिश्रण ३ सभागभृंगार (सा) ४ संवध, मपरं ५ अना-यननवीपे ६ योग, संयुक्त (गणित) ७ देव, देव, पन्ना गति (स्त्री)-योग ।

—से, पु, देवान् देव, नानाद्रव्यसदा, अक स्मात् ।

संयोगी, सं पु (सं गित्) गृह्यस्यभु २ रयितयुत ।

संयोजक, वि (सं) संयोज, संश्लेष ।

संयु (स न) १२, शब्द वाक्य, योजक पदम् ।

संयुक्त सं पु (स) आश्रयदात्, पुरस्वन्, २ पोषक, प्रतिपालन, भरणवृद्ध, संवर्द्ध संश्लेष ३ नात् गोष्, पालक, ररिद् ५ सदायक, उपकरण ।

संयुक्त, सं पु (स न) गोपन रक्षा, व्राण २ अवेक्षा, पर्यवेक्षण ३ अधिकार ४ रोध, प्रतिवध ।

संयुक्त, वि (सं) संयुक्त, महत, मरिष्ट, महिद, संमिलित, संवद्ध ।

संयुक्त, सं पु (स) वार्तालाप, संवाद ।

संयुक्त, सं पु (सं अच्) वर्ण पै, अच्, वत्स, परि, वत्सर २ विक्रमाच्च ३ शास्त्र ।

संयुक्त, सं पु (सं) दे 'संयुक्त' ।

संयुक्त, सं पु (स न) गोपन, प्रच्छादन, निगृहनम् ।

संयुक्त, क्रि अ (स संयुक्त) व 'सैंवारा र्ना' के वर्ण, दे रूप ।

संयुक्त, सं पु (स) दे 'संयुक्त' (१) ।

२ वृत्त वृत्तान्त, समाचार ३ वश, प्रत्ये ४ व्यवहार, अभियोग ५ देवमत्त, मरुति (स्त्री) ६ मदेश, दे ७ स्त्रीकृति, अनुमति (स्त्री) ।

—दाता, सं पु (सं वृ) वृत्तप्रेषण वृत्तान् लेयक ।

संयुक्त, वि (सं-रिद्) मलापित, मलापित २ सद्युक्त, समान, सुव । सं पु (सं) संयोगे स्वरभेद ।

संयुक्त, क्रि म (सं मवर्णन) प्ररु, परिष्, भूयम् (सु), प्रमान (प्रे) । २ मरुत् सं-सुध (प्रे) ३ व्यवस्था (प्रे), विद्यम (पि प म), रच (जु) ४ वार्ध संयुक्त मयन्-निपद (प्रे) । सं पु, अन् परिष्, करण, मरुत् प्रमान २ संयुक्त, शासन ३ व्यवस्थापन ४ मरुत् संवाद ।

संयुक्त, क्रि अ, अन्-वार्ध, परिष्-रणीय, भूयवित्तव, संयुक्त, व्यवस्थाप्य ।

संयुक्त, सं पु, अन् परिष्, वृत्त-वार, प्रमाणक, मरुत् २ संयोग, संयुक्त ३ व्यवस्थापन, सुवर्णादि ।

संयुक्त, वि, अन्-परिष्, वृत्त, मित, संयुक्त

प्रसाधित २ मस्कृत, म, शोधित ३ व्यवस्था
पित ४ सुमपाधित ।

सवाहक, सं पु (म) अग शरीर, मर्दक
मवाहक । वि (स) चालक, चालयितृ ।
संचिदना, सं स्त्री (स) सवेदन, अनुभव,
मुण्डु खादि प्रतीति (स्त्री) ।

सशाय, म पु (म) मदेह, दे ।
सशयामा, स पु (म-स्मन्) विश्वासहीन,
सदेहशील, श्रद्धाशून्य, मशयालु ।

सशयापन्न, वि (स) सदिग्ध, अनिश्चिन ।
सशयालु, वि (म) दे 'मशयात्मा' ।

मशोधक, म पु (स) मशोधयितृ, प्रति,
समाधातृ २ मस्कृत, मन्वारक, ३ निम्नारक
(ऋणादि) ।

सशोधन, म पु (सं न) पावन, निर्मली
करण २ दोषनिवारण, वृद्धिनिष्कामन,
मस्कार, प्रति, समाधान ३ निलारण
(ऋणादि) ।

—करना, क्रि स, स-परि शुभ् (प्रे), पू
(क उ से) २ दोषान निहृ (प्रे), मस्कृ
३ निस्तृ (प्रे) ।

सशोधित, वि (स) सुपूत, मन्धक निर्मली
कृत २ संस्कृत, परशोधित ३ निस्तारित ।

संसर्ग, स पु (म) मपक, मवध २ नाह
चय, मगति (स्त्री) ३ मयोग समिलन
४ सुपरिचय, अन्वतरत्वम् ।

ससार, म पु (म) सृष्टि (स्त्री), भुवन,
विश्व, नगर् (न)-नी, चराचर, मसृति
(स्त्री) २ पुनर्न-मन (न), प्रेत्यभाव,
३ भू मर्त्य इह-लोक ४ प्रपच, नगज्वाल
५ सतनपरिवहन ६ गार्हस्थ्यम् ।

—चक्र, स पु (म न) १२, दे 'मसार'
(२, ४) ३ दशपरिवत-सनम् ।

ससारी, वि (स गिन) लौकिक, मासारिक
२ ऐहिक, प्रापचिक ३ व्यवहारकुशल
४ अमुक्तात्मन् । स पु (म) प्राणिन
२ नीरत्नम् ।

ससृति, म स्त्री (मं) दे 'मसार' (१२) ।
ससृष्ट, वि (मं) मिथिन, मछिष्ट २ मंबद्ध,
सल्पन ।

ससृष्टि, म स्त्री (स) समिश्रण, मरेप
२ सवध, मपक, ३ सुपरिचय, सीर्षार्

४ समग्रण, मवयन ५ अलक्षारमिश्रणभेद
(सा) ।

सस्करण, म पु (म न) अथमुद्रणवार,
आवृत्ति (स्त्री) २ मशीधन ३ परिष्करणम् ।

सस्कार म पु (म) परि-म, शोधन, मस्क
रण २ परिष, -कार-करण, परिमार्जन ३ शोच,
शरीरशुद्धि (स्त्री) ४ मानमी शिक्षा ५ शिक्षा
सगत्यादीना प्रभाव ६ पूर्व-अन्वयामना
७ पावन, शुद्धि (स्त्री) ८ धार्मिकरूपभेद
(दे 'षाटशमस्कार') २ अत्येष्टिक्रिया, दाह
कमन् (न) ।

सस्कृत, वि (म) म परि, शोधित, निर्मली,
कृत २ परिष्कृत, परिमाणन, परिमृष्ट
३ पाचिन, मिद्ध, पक्व ४ कृतमस्कार, मस्कार
पूत । म स्त्री (म न), देववाणी, सुर गर्
(स्त्री), आधाणा भाषाविशेष ।

सस्कृति, म स्त्री (स) मन्धता, आचार
विचारा (बहु) २ सन्क्रिया, सस्कार,
शुद्धि (स्त्री) ३ परिष्कार ।

सस्था, म स्त्री (म) मडल, दल, गण
२ समा, समाज, परिषद् (स्त्री) ।

सस्थागार, म पु (म पु न) समाभवनम्
२ ममदभवनम् ।

सस्थान, स पु (म न) चतुःस्थ, चतुःक
२ आकृति (स्त्री), आकार ३ रचना ४ स
त्रिवेश ५ स्थिति (स्त्री), दशा ६ नाश
७ मृत्यु ८ अयोजन, व्यवस्था (९१०),
दे 'द्वीचा' तथा 'प्यारा' ।

मस्थापक, सं पु (मं) प्रवर्तक, प्रवलयितृ,
आरम्भक, प्रतिष्ठापक ।

मस्थापन, म पु (म) प्रवतन, प्रारम्भण,
प्रतिष्ठापन, प्रारम्भ ० निमाण ३ दृढी
करणम् ।

सस्थापित, वि (स) प्रवर्तित, प्रतिष्ठापित,
प्रारम्भ २ निमित्त ३ दृढीकृत ।

मसृष्ट, वि (म) मृष्ट, छुत्त, परासृष्ट २
मंशुक, तातमपक ३ मसृक्त, मवद्ध ।

सस्फुट, वि (म) अपाहृत, -पाहृत, उद्
धटिन २ विरसित, उन्नित, स्फुटिन, उन्मीलित ।

सस्मरण, स पु (म न) मस्मृति (स्त्री),
सन्धक, स्मरण अनुचिन्तन अनुशोधन २ स्मा
रक, स्मारकघटना ३ सम्भारनं ज्ञानम् ।

सहस्र, वि (म) घन, दृढ, निर्दिष्ट, अन्तर
 ० मयुक्त, सवद ३ मनिन्द, समिश्रित
 ४ काहन ५ मगृहीत ।

सहस्रि, सं स्त्री (स) सगति (स्त्री),
 सनिन्द ० राशि, चप ३ गग, मगृह
 ४ घनाव, निविन्ता ५ मधि, मयोग ।

संहार, म पु (म) हिमाभन हनन, हत्या,
 वध, धन २ विनाश ध्वम ३ (मुक्ता
 रूप) महदण-मञ्जीवन-सङ्घति (स्त्री),
 ४ मग्रह-मञ्जीव - मञ्जेप, मार- ६ ममानि
 (स्त्री) अत ७ प्रत्य, कल्याण ।

—करना, कि म, वृ-प-पद-निपूद (प्रे)
 २ रि, नशाध्वन (प्रे) ।

सहारक, म पु (म) महर्त, नाशक २ मग्र
 हीनु, मञ्जेनु ।

सहिता म स्त्री (म) मधि, वर्णमन्त्रिणं
 (व्या) ० सयोग, मिलन ३ धर्मसहिता,
 म्मुति (स्त्री), अतिवैविका ४ वेदाना
 मत्रभाग ।

सङ्घर्ष, म पु (स स्वानिन्) पति २ वात
 ३ ईधर ।

सङ्घर्षा, सं स्त्री (हि सखिया) दे 'सर्ग' ।

सकता, म पु (अ-न) सन्यास, मूर्छा
 (रोगभेद) ० यति (स्त्री), विराम
 (छन्द) ।

सकना, कि अ (म दान) शक (स्वा प
 अ), प्रभू (भ्वा प से), क्षम-मनर्थ (वि)
 भू । (यह क्रिया मदा दूमरी क्रियाओं के
 साथ ही प्रयुक्त होती है) ।

सकपकाना, कि अ (अनु सकपक)
 विष्म (भ्वा आ अ), विष्मपातुलीभू ।
 २ अभिगाक् (भ्वा आ से) दोषायने
 (जा धा) ३ लज (तु आ से), वप
 (भ्वा आ से) ।

सकर्मक, वि (म) कर्मविशिष्ट (व्या) ।

सकल, वि (म) दे 'मत्र' ।

सकाम, वि (म) कल्पित-विन, कामना
 विशिष्ट ० लब्धकाम, पूगमनोरथ ३ वातुक,
 कन्दिन ।

सकारण, वि (म) रुद्धनुव, कारणविशिष्ट ।

सकुचनी, कि, अ (म सकोचन) क्रीड (दि
 प मे), ही (तु प अ), लज (तु आ

से) २ मकुच-मह (वम), मुद्रित-मकु
 चित (वि) भू ।

सकुचाना, कि अ (स सकोचन) दे 'सकु
 चना' । कि स, व 'सकुचना' के प्रे रूप ।

सकुचोला, वि (म मरोच >) मकोचशील
 दे 'लज्जोदील' ।

सकृत, म स्त्री (अ) नि, वाम, निकेतन,
 नि, वामस्थानम् ।

सकृद्, अभ्य (स) एकवार २ करा
 ३ सह ।

सक्रीडना, कि म, दे 'सिक्रीडना' ।

सक्रीरा, म पु (हि वनीग, दे) ।

सखरा, स पु } दे 'सोरो खची' ।

सखरी, म स्त्री }

सखा, म पु (म सखि) मित्र, सुद्वेद, २ सह,
 चारिन चर, सीनु ३ नायक-महचर
 (मा) ।

सखावत, म स्त्री (अ) वदान्यता ० औ
 दास्यम् ।

सखिच, म पु (म न) सख्य, मैत्री ।

सखी, स स्त्री (स) सहचरी, आनीलि,
 (खो), वरखा, अभीची *मनिनी
 २ नायिकाया सहचरी (सा) ।

सखी, वि (अ) दानशील, वदान्य ।

ससुत, म पु (फा) बर्तनाप, मवार
 २ काथ, कविता ३ वचनम् ।

—तकिया, म (का) दे 'नकिया कल्प' ।

—दौ, सं पु (का) बाल्यमर्मक, रमि
 २ वापड ३ कवि ।

—दानी, म स्त्री (का) काथमर्मज्ञता, रमि
 कता २ वापड ३ काथकता ।

—दानाम, म पु (का) दे 'मसुतर्दा' ।

—माज्ञ, सं पु (का) कवि २ दे 'गपरी' ।

सगत, वि (फा) वीरम, कर्कर, कसग, घन,
 दृढमधि, महत २ दुष्कर, कटिन, दुष्मात्य,
 निर्दय, निष्करा ४ चट, पक्ष, कपेर, दुग्मह
 ५ कुशील, दुप्रहति ६ कृपा ७ अविशय,
 अत्यधि । कि वि, पक्ष, निर्दय, तीव्रम् ।

—मुस्त कहना, (मु) भर्म् (तु आ से),
 अकृ (भ्वा प अ) ।

सर्गा, सं स्त्री (का) ककारणा, वीकमना,
 घनता २ दुष्करता ३ निर्दयता ४ चना
 ५ कुशीलता ६ अधिवर्ष ६ ।

—से, क्रि वि, चड, घोर २ निर्दयम् ।
 —करना, पु, बल प्रयुत् (र आ अ)
 निदय व्यवह (म्वा प अ) ।
 सत्य, म पु (म न) सौहार्द, मासपदीन,
 मित्रता, दे ।
 मगध, वि (स) गध-वाम, बट-युक्त, सुवाम,
 गधिन, वासिन ० सुगधि, सुगधिन, सुगन्ध
 वन, सुवामिन ३ ममान-सुन्य, मध ४ गर्धिन ।
 मग, म पु (का) शान, कुकुर ।
 मगण, वि (म) सदल, समैन्य । म पु
 (स) शिव २ छद शास्त्रीयगणभेद
 अन्नगुरगण ।
 मगवग, वि (अनु) अति किलन्न आर्द्र दे
 'लघय' २ आर्द्र-द्रवी, भूत ३ परिपूर्ण ।
 मगर्व, वि (स) गर्धिन, इत्त । क्रि वि, मगर्व,
 सामिमानन् ।
 मगा, वि (म स्वक >) सोदर, महोदर
 सोदर्य, मयोनि, सगर्भ २ स्वकुलव । स पु,
 सदुल्य, सगोत्र, बहु ।
 —भाई, म पु, सोदर, सहोदर, माम्यं ।
 मगापन, म पु (हि मगा) सोदरता, मग
 भंगा २ स्वभनैक्यम् ।
 मगाई, स स्त्री (हि मगा) दे 'मगनी' ।
 मगुण, वि (म) गुणित, गुणान्वित । म पु
 (म) साकारेश्वर २ अवतारपूजक भक्त
 मप्रदाय ।
 मगुन, म पु, दे 'शकुन' ।
 मगोती, म पु (स मगोत्र) एक नाम, गौर
 २ बहु, शानि (स्त्री) ।
 मगोत्र, वि (म) सबधिन, सनानि, मन्ता
 तीव, एक-म, गौर । (सं न) कुलम् ।
 मघन, वि (म) निविड, मांद्र, घन, अनन्तर,
 गाढ ० स्थूल, सहन ।
 मच, वि (सं मय) यथार्थ, अविनय, दे
 'सत्य' । स पु, मत्य, तर्क्य, अविनयम् । क्रि
 वि, वस्तुन यथार्थेन (दोनों अत्य) ।
 —बोलना, क्रि म, मत्य वद् (म्वा प ने)
 न (अ उ) ।
 —मुच, क्रि वि (हि अनु) तत्त्वन,
 वस्तुन, मत्य, मत्यन ० अवदर्श, नि मदिहम् ।
 मचराचर, म पु (मं) चराचर-स्थावर

चगम-अल्लचेतन मजीवनिर्जवि पदाथा (पु
 वटु०) ।
 मचल, वि (म) चल, चर, चगम, गति
 शील २ चेतन, प्राग्नि ।
 मचाई, म स्त्री (हि मच) सत्यता, अविन
 यता ० यथार्थ, वान्मविनता ।
 मचान, म पु (म मचान अथवा म
 मान > ?) श्येन, पत्रिन् शशादन, दे
 बान' ।
 मचित, वि (म) बिना पर मग्न, उदिग्न,
 व्याकुल ।
 मचिव, म पु (म) मित्र, मरि (पु)
 ० मरिन्, अमत्य ३ महाप-यक ।
 मचेत, वि, दे 'मचेतन' ।
 मचेतन, वि (स) चेतनम्, ममन, चेतनो
 पन्न ० सावधान ३ पुर ।
 मचेष्ट, वि (म) उद्योगिन्, उत्साहिन्,
 सोत्साह, मोहोग, उत्साह-उद्योग, शील ० चैष्ट
 मान, वर्माद्युक्त ।
 मच्चा, वि (म मत्य) मत्य-यथार्थ, भाविन्
 वादिन् ० मत्य, यथार्थ, वान्मविक्र ३ वि,
 शुद्ध, पवित्र, स्वच्छ, निश्रणान्य ४ यथा
 योग्य, यथोचित ।
 मच्चाई, म स्त्री, दे 'मच' ।
 मच्चिदानन्द, म पु (म) निर्व्यञ्जानसुखम्
 रूप ब्रह्मन् (न) परमेश्वर ।
 मच, म स्त्री (म मच्चा) अलक्रिया, परिक्रिया
 प्रमाथन, मन्न ० रूप, आकृति (स्त्री)
 ३ शोभा, श्रुति (स्त्री) ।
 —घन, घन, म स्त्री (हि अन) दे 'मन'
 (२३) । ४ परिकल्पन, मच्चा, सत्तर्कना ।
 मचरा, वि (सं म+हि वागना) तारात्मक,
 अरहित, सावधान ।
 मचन, म पु (सं मचन) आय, भद्र,
 मत्पुरुष ० पनि, भर्तृ ३ उपपति, नार
 ४ दपिन, कान्त ।
 मचनपद, वि (सं) एव-ममान, देशन
 दशीय-देशनामिन् ।
 मचना, क्रि अ (सं मचन) मचन (म्वा
 उ म) मत्र परिगलित मिद्र (वि) म्
 ० आत्मानं मंडभूप (जु) अलक ३ राज
 शुम् (म्वा आ म) ।

सजनी, म स्त्री (हि मनेन) मली, महचरी
२ उपपत्नी, गारिणी, मुनिप्या ३ वाता,
प्रिया, दयिता ।

सज्जल, वि (म) उत्त, उन्न, निमित्त, आर्द्र,
विलज्ज, नलयुत सनीर २ मवाप, सास्र,
अशुपूर्ण (नेत्र) ।

सज्जा, म स्त्री (पा) दे 'दल' ।

—याश्रता, वि (स) दहित, मुक्तदल २ अप
राश्रताल पुराणपातविन्द ।

—वार, वि (का) दटनीय, दडय ।

सजाति } वि (म) मगोन, गोत्रन, मवंश इय
सजातीय } २ तुल्य, सद्दश ।

सजाना, क्रि स (हि सजना) सजीक,
सजन्-परिवलप, (प्रे) २ व्यवस्था (प्रे),
ब्रमश निविश (प्रे) ३ मटभूप (चु),
अलक । दे 'सवारना' ।

सजावट, स स्त्री (हि मजाना) दे 'सज'
(१) २ शोभा, श्री (स्त्री) ३ दे 'सज
पन' (४) ।

सजावल्, म पु (तु मजाउल्) *शुल्ल, *
करमश्राइय २ राजकेमनारिन्द ३ दे
'निपादी' ।

सजा हुआ, वि, मज्ज, मिद्ध, सनद्ध २ भूपिन
३ शोभमान ।

सजीला, वि (हि सजना) सुवेशमानिन्,
वेशाभिमानिन्, अल्लन २ एविमद,
मनोहर ।

सजीव, वि (म) प्राग्निद, प्राणधारिन्,
चेनन, नैन्यवत् २ क्षिप्र, लुपु ३ आज
मिन्द ।

सजीवता, म स्त्री (स) प्राणवत्ता, चेनन्य
२ लग्न, प्रिप्रता ३ आनन्विता ।

सजीवन, म पु, दे 'सजीवनी', म स्त्री ।
१, २ ।

—क्री, म स्त्री कटवती (२) ।

—भूर, मूल, मं पु 'सजीवनी क्री' ।

सज्जन, मं पु (म) आर्ष, भद्र, मरुत्तरव,
सु-माधु-जन, महानुभव, महाशय २ कु
लोन, अभिवात । वि, भद्र, मरुद्दृष्ट २ महा
कुन्, कुन्नीन ।

सज्जनता, मं स्त्री (मं) भद्रता-त्वं, आयता

त्व, सुदी-यता, मौनन्य, सुजनता-त्वं २ कुली
नता, अभिजात्यम् ।

सज्जित, वि (म) अल्लकृद्, भूपिन, मटिन,
परिष्कृत २ मन्त्रद, मिद्ध, सज्ज, उवन ।

सज्जी, स स्त्री (स मर्जी) सान (स्त्री),
सज्जिता, स्वानिक, स्वानिन् ।

सज्जक, स स्त्री (अनु सज्) मृदुपटि (स्त्री)
२ धूमपानवयस्य नम्यनाली ३ निमृता
पमार ।

सज्जना, क्रि अ, निमृत् अपया (अनु मट)
(अ प अ), शनै अपसु (म्वा प अ) ।

सज्जना, क्रि अ (स स+स्था >) ल्
(म्वा प से), सज्जन् (तु प अ),
लग्न-सज्जन्-सज्जिहित (वि) भू २ शिप्
(दि प अ) सज (म्वा प अ) ।

सज्जपटाना, क्रि अ (अनु) सज्जपटायने (ना
धा), सज्जपटवनि चन् (दि आ से)
२ अज्ञान पर्याङ्ग चञ्चल (वि) भू दे
'व्याकुल होना' ।

सज्जपटया हुआ, वि, सज्जम्भ, समूह, अज्ञान,
व्याकुल, सञ्जान, अस्वम्भ ।

सज्जपटर, वि (अनु) शृद्र, तुच्छ, साधारण ।
म स्त्री, व्यर्थार्थ २ दुष्परकृत्यम् ।

सज्जाना, वि म, व 'सज्जना' के प्रे रूप ।

सज्जा हुआ, (वि), लग्न, मज्जट, सज्जिहित,
२ सक्त, शिष्ट ।

सज्जीक, वि (म) मभाष्य, व्याख्यान्वित ।

सज्ज, मं पु (म माथ >) ममयलय, दे
'श्वरारनामा' २ मदिग्धपल-व्यवहार, रान्ता ।

सज्जा-वट्टा, म पु (हि मज्जना+अनु)
उपनाप, वृट्-ट्, वृट्, वृत्ति-उपाय २ मंगल,
भल ।

सज्जियाना, क्रि अ (हि माठ) पटिवर्ष
(वि) भू २ ज्या (क प अ), ज (दि
न प से) ३ वार्धक्यन बुद्धि छि (कर्म)
नम (दि प से) ।

सज्जियाया हुआ, वि, पटिवर्ष २ जरट, श्व
विर २ जरया मद्रमि-जट्टुदि ।

सज्जक, मं स्त्री (अ शरर) अथ्वन्, पविन्द,
रात्र शी, पय, मार्ग, दे ।

सज्जन, मं स्त्री (हि मज्जना) गल्लन, विद्र
वर्ण, विलयनम्, धरणम् ।

सडना, क्रि अ (स शरण) विद् (कर्म),
ज (दि प से), विगल (भ्वा प से)
२ पूय (भ्वा आ से), पूतीभू ३ फेनयते
(ना धा), उत्तिच् (कर्म), अत क्षुभ (दि
प से) (= खनीर आना) ४ दुर्गंत (वि)
स्था (भ्वा प अ), अवसद् (भ्वा प अ) ।
स पु, जीणि (स्त्री), विगलन, पूयन पूनि
(स्त्री), अवमाद, दुर्गंति (स्त्री), अभिषव
अनश्रीमः ।

सडंसठ, म पु तथा वि, दे सनसठ' ।
सडाक, स स्त्री (अमु सड) त्वत् २ कडा
शब्द ।

सडार्थ, स स्त्री (हि सडना + ाथ >)
दुर्गंथ, पूति (स्त्री), पूतिगथ ।
सडा हुआ, वि, जीर्ण, विदीर्ण, दूषित, विग
न्त, पूनि, पूनिाथ, पूतिक, उत्सिक्, सफेन,
दुर्गंत, अवमथ ।

सडियल, वि (हि सडना) पूनि, पूतिगथ,
कडुप २ जीर्ण, शीर्ण ३ क्षुद्र, तुच्छ ४ नि
रर्थक, व्यर्थ ।

सड्, सं पु (स) ऋषि २ सज्वनः । (स
न) ब्रह्मन् (न) २ भद्रभू । वि (सं)
सत्य, यथाथ २ साधु, श्रेष्ठ ३ शीर ४ शापन,
नित्य ५ प्राण, पंडित, ६ पूज्य ७ पवित्र
४ उत्तम, उत्कृष्ट । सत्कर्म आदि, दे अगे ।
सत', स पु (स सत्त्व) तत्त्व, सार २ निष्क
र्ष, भाव ३ कर्मन (न), सामर्थ्यम् ।

सत', वि (सं सत्त्वं) दे 'सात' ।

—मजिला, वि (हि + अ) सत, भूमिक
मौन (महल आदि) ।

—मासा, स पु, सतमास्य (शिशु) २ रीति
विशेष, *मन्मसासिक् ।

—रगा, वि, सप्त-वर्ग-रग ।

सतगुरु, स पु (म सत्त्वं + गुरु) सद्गुरु,
सच्छिष्यक २ परमेश्वरः ।

सतनुग, स पु, दे 'सत्यनुग' ।

सतत, अव्य (म मानत) निरन्तर, सदा,
संवादा, नित्यम् ।

—गति, सं पु (म) पवन वायु ।

—ज्वर, सं पु (स) स्थाविस्थास्तु-नित्य
जीर्ण, ज्वर-लाप ।

सतर, सं स्त्री (अ) रेखा २ पक्ति (स्त्री) ।

सतरह, वि (सं सत्पदान्) स पु, उक्ता
सत्या तद्बोधकाः अत्रौ (१७) च ।

सतरहवाँ, वि (हि सतरह) सप्तदश शी
श (पु स्त्री न) ।

सतर्क, वि (म) सहेतुक, सयुक्तिक, उप
पत्तिम् २ प्रमादिरहित, जाारूक, मन्धान ।
सतर्कवा, स स्त्री (म) वारूकन, माव
धनगा ।

सतलन, स स्त्री, दे 'शतन' ।

सतलडा, स पु (हि सात + ळ) सप्त
सूत्रो हार २ सप्तगुणा माला । वि, सप्त, सूत्र
उपशुल्ब ।

सतवनी, वि स्त्री (स सत्यवनी >) द्रव
रिवा, पतिव्रता, पतिपरायणा, सना, साध्वी ।

सतसई, } म स्त्री (स सतरनी तिका)

सतसैया, } शतमत्तकपद्यत्नक सग्रह २ श्री
विहारीलालरचितो हिंदीभाषाया काव्य
विशेष ।

सतसठ, वि [स सप्तषष्टि (नित्य स्त्री)] स
पु, उक्ता सत्या तद्बोधकाः (६७) च ।

सतह, स स्त्री (अ) तल, पृष्ठ, उपरि-पृष्ठ,
भाग ।

सतहत्तर, वि [स सप्तसप्तति (नित्य स्त्री)]
म पु, उक्ता सत्या तद्बोधकाः (७७) च ।

सताना, क्रि स (स सनापन) सं परि-त्प
(प्रे), पीड (चु), दुःखयति (ना धा),

किल्ब (क प मे) २ सिद् आयस-उद्विद्
(प्रे) । स पु, स परि-नापन, पीडन,
क्लेशन अर्शन, आयानन, उद्वेजन, दानन ।

सताने योग्य, वि, सनाप्य, पीडनीय, उद्वे
जनीय ।

सताने वाला, स पु, स-परि-नापक पीडक,
क्लेश-दुःख-कर आवह, आयसक, खेदकर ।

सताया हुआ, वि, पीडित, सतपित, आदासित
उद्वेजित, बाधित, इ ।

सतालू, म पु, दे 'शतफल' ।

सतावर, स स्त्री (स शतवरी) शतमूली,
नारायणी, वरी, बहुमुता ।

सतासी, वि [स सप्ताशीति (नित्य स्त्री)]
सं पु, उक्ता सत्या तद्बोधकाः (८७) च ।

सती, वि स्त्री (सं) दे 'सतवती' । स स्त्री
(सं) पतिव्रता नारी २ मृतमेव सह दग्धा
नारी, सद्-गामिनी-मृता ३ दक्षकन्या ।

—चीरा, स पु (स + हि) *मतीवेदिका ।

—पुत्र, स पु (स) पतिव्रताभाषी, पुत्र वनय ।

—घत, स पु (स न), पातिव्रत-त्वम्, मनीत्वम् ।

—घता, म स्त्री (म) पतिव्रता नारी ।

—होना, मु, मृतभन्ना माडेँ दह (कर्म)-भस्मीभू ।

सतीत्व, स प (मं न) पातिव्रतत्व, भाषीत्व ।

—निगाढना या नष्ट-करना, मु, सतीत्व नष्ट (प्रे), बलात्कारेण गम् (भ्वा आ अ)-अभि गम् (भ्वा ष अ), पातिव्रतत्व दुष् (प्रे) ।

—हरण, स पु (स न) बलात्कार, दूठ ममोग, बलाग्नैशुनम् ।

सतीर्थ, स पु (स) सतीर्थ, एक्युम् ।

सतून, स पु (फा) स्थूणा, स्तंभ ।

सतोयुष्, स पु, दे 'सत्वयुष्' ।

सतोयुष्णी, वि (हि मनोयुष्) दे 'सत्व युष्णी' ।

सत्वर्म, स पु (स मं न) शुभ-सु पुण्य, कार्ये इत्य-श्रुति (स्त्री)-क्रिया-कर्मन्, पुण्यम् ।

सत्कार, स पु (स) आदर, समान, पूजा २ आनिध्य, अनिधियेवा ।

सत्कार्य, स पु (स न) दे 'सत्वर्म' । वि, पूज्य, मान्य, आदरणीय ।

सत्कृत, वि (स) आहृत, समानित, पूजित ।

सत्त, स पु दे 'सत' ।

—सत्तम, वि (स)-सत्तम, श्रेष्ठ ।

सत्तर, वि [स सत्पति (नित्य स्त्री)] उक्ता मरत्या तद्बोधकावौ (७०) च ।

सत्तरावौ, वि (हि सत्तर) सप्तविंशतम-तमौ तम (पु स्त्री न) ।

सत्तरह, वि, तथा स पु दे 'मत्तरह' ।

सत्ता, म स्त्री (मं) मत्त्व, अस्तित्व, भाव, विद्यमानता २ शक्ति (स्त्री), सामर्थ्य ३ प्रभुत्व, अभिशार ।

—घारी, स पु (म नीन >) अधिशारिव, अधिशारिक ।

सत्ता, (म सत्तन् >) सप्तविंशतिन-क्रान्तापत्र, *सप्तक ।

सत्ताइम्, वि [मं सप्तविंशति (नित्य स्त्री)] स पुं, उक्ता मरत्या तद्बोधकावौ (२७) च ।

सत्ताइंसवौ, वि (हि सत्ताइस) सप्तविंशति तम-तमौ-तम, सप्तविंश शी श (पु स्त्री न) ।

सत्तानवे, वि [म सत्तनवति (नित्य स्त्री)] म पु, उक्ता मरत्या तद्बोधकावौ (१७) च ।

सत्तावन, वि [म सत्तपचाशद (नित्य स्त्री)] म पु, उक्ता मरत्या तद्बोधकावौ (५७) च ।

सत्तासी, वि [मं समाशीनि (नित्य स्त्री)] म पु, उक्ता मरत्या तद्बोधकावौ (८७) च ।

सत्त, स पु [म मत्तु (क्वल पु बहु में सत्त्व)] मत्तु, शक्त (पु न), मृष्टयव चूर्णम् ।

सत्त्व, स पु (स न) प्रकृतैर्युगविशेष २ सत्ता, अस्तित्व, भाव ३ सार, तत्त्व, मूलद्रव्य ४ विशेषता, अन्न-प्रकृति (स्त्री) ५ वित्त-प्रकृति (स्त्री) ६ चेतना चैतन्य ७ प्राण ८ आत्मन् ९ प्राणिन् १० गर्भं ११ प्रेत, भूत १२ शक्ति (स्त्री), वीर्यम् ।

—गुण, स पु (म) सत्त्वमसु प्रवर्तको गुण, विवेकशील-प्रकृति (स्त्री) ।

—गुणी, वि (म) सात्त्विक, उत्तम-प्रकृति, विवेकशील ।

सपथ, स पु (सं) सु-मन, जागं २ सद्, श्रुत-आचार ३ सु, संप्रदाय मिदाल ।

सत्पात्र, स पु (स न) सुपात्र, दानार्हो जन २ आर्य, मद्रजन ३ सु कर श्रेष्ठ ।

सत्पुराण, स पुं (म) आर्य, मद्रवृत्तो मानव, भद्र ।

सत्य, स पु (स न) तथ्य, ऋ, तत्त्व, यथार्थ, अविश्वस्य, भूत-परम-तत्त्व, -अर्थ २ शपथ ३ प्रतिज्ञा ४ वृत्तयुगम् । वि, तथ्य, अविश्वस्य, वास्तविक, यथार्थ, श्रुत २ अश्रुतिम्, अश्रुतम् ।

—कर्म, वि (सं) सत्य, प्रिय अभिलाषितम् ।

—नारायण, सं पु (मं) देवत-विशेष (= सत्यपीर हिं) ।

—प्रतिज्ञ, वि (मं) सत्य, व्रत-कार-सुध अनिश्चय ।

—युग, सं पु (मं न) तनुयुगेषु प्रथमयुगं, वृत्तयुगं (= १७२८००० वर्ष) ।

—युगी, वि (म सत्ययुग >) सत्ययुगम्-परिन् २ अति, पुराण-प्रचीन ३ धर्मात्मन्, मद्-वृत्त, मरत् ।

- स्नेह, स पुं (म) सप्तलोकातर्गत उच्चतमो लोक, ब्रह्मलोक ।
- वचन, स पु (सं न) सत्य-यथार्थ, कथन भाषणं २ प्रतिज्ञा ।
- वादी, वि (स दिन्) तथ्य सत्य, भाषिन्, यथार्थवक्तु २ दे 'सत्यप्रतिज्ञ' ।
- व्रत, स पु (सं न) सत्यभाषणप्रतिज्ञा । वि, सत्य, वादिन् प्रतिज्ञ सत्थ ।
- सकृत्प, वि (सं) दृढसंकल्प ।
- सध, वि (स) दे 'सत्यप्रतिज्ञ' । स पु (मं) श्रीराम २ भरत ३ जनमेजय । मत्यत, अध्य (स) वस्तुत, सत्यम् । सत्यता, स स्त्री (म) वास्तविकता, याथार्थ्यं २ नित्यत्वम् ।
- सत्यभामा, म स्त्री (स) सत्रान्तिपुत्री, श्रीकृष्णपत्नीविशेष ।
- सत्यवती, वि स्त्री (स) सत्य, भाषिणी-वादिनी २ धार्मिकी । सं स्त्री (सं) व्याम जननी, योजन-मत्स्य, गधा गध, काली ।
- सुत, म पु (म) व्यास, द्रैपायन ।
- सत्यवान्, वि (म-वत्) दे 'सत्यवादी' (१२) ।
- स पु, सावित्रीपति, नृपविशेष ।
- सत्या, स स्त्री (सं) मत्वता, दे । २ स्त्री ३ श्रौपदी ४ दे 'सत्यवती' स स्त्री ५ दुर्गा ।
- सत्याकृति, स स्त्री (स) सत्यापन, सत्यं वार, अग्राय, दे 'देरागी' ।
- सत्याग्रह, म पु (सं) नि-शस्त्र-अहिंसात्मक, विरोध प्रतिवार २ तथ्यनिर्वह ।
- आदोलन, स पु (सं न) नि-शस्त्र विरोधादोलनम् ।
- सत्याग्रही, स पु (मं हिन्) अहिंसात्मक विरोधिन् २ तथ्याभिनिवेशिन् ।
- सत्यानास, सं पु (स सत्तानाश >) वि, ध्वस-नाश, सर्वनाश ।
- फरना, कि स, वि, नन् ध्वस् (प्रे), समूल उच्छिद् (४ प अ) ।
- सत्यानासी, वि (हि सत्यानास) सर्वं वि, नाशक ध्वसक २ मद हत, भाग्य ।
- सत्यानृत, सं पु (म न) वागिज्य २ सत्या सत्यमिश्रणम् ।
- सत्र, सं पु (सं न) यज्ञ, भाग, मख

- २ सोमयागभेद ३ भवन, सघ्न (न), ४ धन ५ दे 'सदावत' ।
- सत्रह, वि तथा स पु, दे 'सतरह' ।
- सत्वर, अव्य (सं-र) शीघ्र, दे ।
- सत्सग, स पुं (स) आर्य-सत्त्व, संगति (स्त्री)-समागम-सत्सर्ग-सवास-साहचर्यम् ।
- सत्सगी, वि (स गिन्) सञ्जनसहचर (-री स्त्री) २ धार्मिक (-त्री स्त्री) ।
- सधिया, स पुं (स स्वस्तिक) मागलिक चिह्नविशेष २ दे 'जर्ह' ।
- सदका, सं पुं (अ-वद्) दान, वलि, उपहार, दे 'निटावर' ।
- सदन, स पु (म न) भवन, गृह, दे 'घर' २ जलम् ।
- सदमा, स पु (अ सदमह) आघात, प्रहार २ दुःख, शोक ३ अत्याहित, विपद् (स्त्री) ४ महा, क्षति हानि (दोनों स्त्री) ।
- पहुँचना, कि अ, आहन् (वर्नं), शोकैत विपदा या ग्रम (कम) ।
- सदय, वि (स) दयान्वित, दयालु, दे ।
- सदर, वि (अ) प्रधान, मुख्य, विशिष्ट । सं पु, केंद्रस्थल २ राजधानी ३ सैन्यनिवेश, दे 'छावनी' ४ सभा, पति-अध्यक्ष ।
- नशोन, स पु (अ + फा) दे 'सदर' (४) ।
- बाजार, स पु (अ + फा) प्रधानापण २ सैन्यापण ।
- बोर्ड, स पु (अ + अं) *राजस्वपरिषद् ।
- मुकाम, स पु (अ) मुख्यकार्यालय ।
- सदरी, सं स्त्री (अ) दे 'वास्कट' ।
- सदस्य, स पु (स) दे 'सभासद्' ।
- सदा, अव्य (स) नित्यं, सर्वदा, अनिरा, सतत, सर्वकाल २ निरन्तर, अनवच्छिन्न, अविरतम् ।
- गति, स पु (स) वायु ।
- बहार, वि (सं + फा) *सदावसत, नित्य हरित शशत्वम् ।
- वर्त, स पु (स व्रत >) नैत्यभोजन, दान वितरण-उत्सव, *सदापन २ नैत्यकदानम् ।
- सुखी, वि (स दिन्) सर्वदानद ।
- सुहागिन, वि स्त्री (स + हि) नित्य सौभाग्यवती, अमरपतिका २ वैद्या ।
- सदाचार, स पु (स) सचर्या, सदाचरण, सचारिष्यं, सद्वृत्त त्ति (स्त्री), सचरित, सद

व्यवहार २ शिष्टता, मौज्य, भद्रता ३ रीति (स्त्री), प्रथा ।

सदाचारी, स पु (म रिन्) सद्वृत्त, सुचरित-मचरित्र २ धर्मात्मन्, पुण्यात्मन् [सदाचारिणी-सद्वृत्ता आदि (स्त्री)] ।

सदानन्द, वि (म) आनन्दशील, नित्यानन्द । म पु (म) परमेश्वर ।

सदार, वि (स) सपत्नीक, जायाचित ।

सदारक, म स्त्री (अ) सभा, पतित्वाप्यमता ।

सदाश्रित, वि (म) परावलंबशील, परावलम्बित्वात् ।

सदो, म स्त्री (अ) शताब्दी, शती ० शतम् ।

सदुपदेश, म पु (म) मञ्जिष्टा २ समवृत्ता ।

सदृश, वि (म) मरूप तुल्याकार २ मम, ममान, तुल्य सदृश ३ योग्य, उचित ।

सदृशता, स स्त्री (म) समानता, तुल्यता ।

सदेह, कि वि (म न) सारो, मकायम् ।

सदैव, अव्य (म) मवदैव, नित्यमैव ।

सदोष, वि (म) मापराध, अपराधित्वात्, दोषित्वात् सुप्रिदोष-युक्त ।

सद्गति, स स्त्री (म) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री) २ सुदशा, सुगति (स्त्री) ३ सदाचार ।

सद्गुण, म पु (म) सुगुण, मद्गुणम् ।

सद्भाव, म पु (स) हित शुभ चिन्ता, हितैषणा चिन्ता २ मारय ३ निष्कपयता, मरुता ऋजुता ४ सत्ता, अस्तित्वम् ।

सधना, कि अ (हि सधना) विनी (वर्म), वशीभू, दम् (दि प से) २ अभ्यन्त (वि) भू ।

सधमिणी, म स्त्री (स) धमपत्नी २ तुल्यमनावलम्बिनी ।

सधर्मा, वि (म मिन्) सधमन्, सधर्म, समान धर्मानुयायिन् २ तुल्यगुण ।

सधवा म स्त्री (स) निद्रावलिवा, सभतुका सनाथा, पतिवानी, नीरत्यनिका, सौभाग्यवती ।

सधाना, कि स (हि सधना) विनी (भ्वा प अ) दम् (प्रे) शिक्ष (प्रे) वशीकृ । सं पु, विनयनं, दमन, वरी वरणम् ।

सधानेयान्, स पु, विनेय, दमयित्वात् ।

सधा हुआ, वि, विनीत, दान, शिक्षित, वशग ।

सन्, स पु (अ) दे 'सवन्' (२, ३) ।

—डैसवी, सं पु, खिस्त, शाक-सवत् (अव्य) ।

—हिजरी, स पु, यवन, शाक सवत् ।

सन, स पु (स शण) दीर्घ, शाक पत्रक, त्वकसार, वमन ।

सन, स स्त्री (अनु) मणिति, मणत्कार, शीघ्रनिर्गमनध्वनि । वि, स्तब्ध २ नि शब्द । —से, कि वि, समणत्कारम् ।

सनई, स स्त्री (हि-सन) क्षुद्रशणः ।

सनक, सं स्त्री (म शका >) इडाग्रह, उल्काभिनिवेश, चित्तलहरी, छन्द ३ उन्माद, चित्तभ्रम ।

सनकना, कि अ (हि मनक) उमद् (दि प से), व्यामुह (दि प वे) ।

सनकी, वि (हि सनक) उल्काभिनिवेशिन्, दृढाग्रहिन् ।

सनद, म स्त्री (अ) प्रमाणपत्र २ प्रमाणम् ।

—यापता, वि (अ + का) प्रमाणपत्रधारिन् ।

सनना, कि अ (स सधान >) व 'सानना' के कर्म के रूप ।

सनम, स पु (अ) श्रियताम, दयित, वल्लभ ।

सनमान, स पु, दे 'समान' ।

सनसनाना, कि अ (अनु सनसन)

सगमणावले (ना धा) २ समणसगशब्द वा (अ प अ) ।

सनसनाहट, म स्त्री (हि सनसनाना) पवनवहनध्वनि, वातगतिशब्द २ (शरा दीना) सणसगावित, सणसणत्कार ३ दे 'सनसनी' ।

सनमनी, स स्त्री (अनु सनमन) सवेदन नाटीना स्पन्दनभेद, सणसणकृति (स्त्री) २ स्तब्धता ३ संक्षोभ, उद्वेग ४ नीरवता ।

—खेज, वि (अनु + का) संक्षोभनन, उद्वेगकर ।

सनह्योक्, सं पु (अ) अनुपात ।

सनातन, वि (सं) अति, पुराण प्राचीन पुरातन २ क्रमागत, परंपरालम्ब ३ नित्य, शाश्वत [सनातनी (स्त्री)] । सं पु, प्राचीनवाल् २ पुरातनी परंपरा ३ विष्णु ४ भद्रन् ५ शिव ।

—धर्म, सं पु (स) प्राचीन पुरातन धर्म

२ परपरानो धर्म ३ प्रतिनापूतनकृतक
श्राद्धादिविधाती हिद्दधर्मात्ताविशेष, पीरा
निकर्षम् ।

—धर्मी, स पु (स मित्) सनातनधर्मा
नुयायिन्, पुराणमतबलविन् ।

—पुरुष, स पु (स) विष्णु ।

सनातनी, स पु (स मनान) दे 'मना
तनधर्मी' । वि, पुराणन परपरालम्ब ।

सनाथ, वि (स) मत्तुनितुमय २ सपत्निक,
समर्तक, सस्त्रजुष, सहायबद्ध [मनाथा
(स्त्री) जीवदभ्युक्ता] ।

सनाभि, स पु (स) गोशर, सशोदर
२ सभित, सगोत्र, मनाभ्य ।

सनाथ, स स्त्री (अ मनऽ) स्वार्धत्री-त्रिका
रेचनी, कल्याणी मन्दादिणी ।

मनाह, स पु (स सनाह) तनुत्राण, क्वच
च दे ।

सन्दि, वि (स) निद्रिन्, निद्राण, शयित,
शुभ, शयान ।

सनीचर, स पु, दे 'शनैश्चर' ।

सनीड, वि (स) सङ्ख्य, सनन्धक, नीड
बनिन् २ सन्धिन्, सन्धक, सपत्निक् ।
स पु, सनीष्य, नैवत्यन् २ प्रातिवेद्यन्,
भविष्य ।

सनोवर, स पु (अ) दे 'बोड' (वृक्ष) ।

सन्न, वि (म शून्य) चकितचकित, अति
विरिन्त २ सन्ध, जडीभूत, व्यामोहित
३ नि मन्न, अनेन ४ ससाध्वस, भयाभिभूत ।

सनद्ध, वि (सं) बद्धवच, धृतसनाह
२ सायुध, सशस्त्र ३ सन्न, सिद्ध, उद्यत,
उपलुप्त ४ सन्न, मलग्न ।

सन्नाटा, स पु (हि सुत्र) नि शब्दता, नीर
वना २ निवनता, विनता, विविक्त ३ भय
विस्मयादिजनिता नि सन्धता । वि, नीरव
२ निर्जन ।

सन्मान, स पु, दे 'समान' ।

सन्मुख, अव्य, दे 'समुख' ।

सन्यास, स पु, दे 'सन्वाम' ।

सपत्न, स पु (स) स्वपत्न, पतिन्-अवन्विन्,
सहायक, मित्रम् ।

सपत्नी स स्त्री (स) समानपतिता, समान
भर्तृका ।

सपत्नीक, वि (सं) सकलत्र, सपरिग्रह ।

सपत्ना, स पु, दे 'स्वप्न' ।

—होना, सु दुर्दय-दुर्लभ (वि) भू ।

सपरदाई, म पु (स सपरदायिन् >) दे
'साजिदा' ।

सपर्या, म स्त्री (स) पूजा-जन, अराधन
नम् ।

सपाट, वि (म) मम, समरेल समत्थ,
ममत्तल ।

सपाटा, स पु (स सर्पा >) चलनभाव
नोड्डयनादीना, ज्व वेग, रय २ त्वरित
गति (स्त्री) धावनम् ।

सैर— स पु, परिभ्रमः पयन्, विहरणम् ।

सपिड, म पु (स) सनभि मत्तपुत्तान
गतपति (पु), सगोत्र, स्वशीय, बहु ।

सपूत स पु (स सुपुत्र) सपुत्र, सुनय ।

सपेग, म पु दे 'सपेता' ।

सपे(ये)रा, स पु 'सैरोन्' ।

सप्त, वि (स सप्तम्) स पु, उक्ता सख्या
सप्तोपवीड्यश्च (७) ।

—अपि, स पु [स सप्तर्ष्य (बहु)
=मरीचि, अत्रि, अगिरस, पुलस्त्य, पुलह,
क्रतु, वसिष्ठ, अथवा गौतम, भरद्वाज,
विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप] ।

—निह, म पु (स) सप्तज्वाल, अग्नि ।

—धातु, स पु [स सप्तधानव (बहु)
=रनाश्रनासनेदोऽस्थिमज्जान शुक्रमसुता ।]

—पदी, म स्त्री (स) विवाहायसप्तपदी
यमनम् ।

—पाताल, स पु (स न) सप्तसख्याकाधो
भुवन (= अन्त, वितल, सुनल, रसातल,
तलान्त, महातल, पातालम्) ।

—पुरी, स स्त्री (स) सप्तपुण्यनगराणि
(न व) (= अयोध्या, मथुरा, माया (हरि
द्वार) कारी, कांची, अवतिका, (उज्जयिनी),
शारका) ।

—प्रकृति, स स्त्री (स प्रकृतय (स्त्री बहु)
राज्यस्य सप्तार्गि (बहु) (= नृप, मन्त्रिन्,
सामत, देग, कोश, दुर्ग, सेना) ।

—भुवन, स पु (स न) सप्तोर्ध्वलोका (पु
बहु) भूमिव स्वर्गहृदयैव जनश्च तप एव च
सत्यलोकश्च) ।

—ससि, स पु (म) सूर्य, सप्ताथ ।
 ससक, स पु (स न) सप्तस्तुममूह
 २ सप्तस्वरसमूह (सगीत) ।
 ससनी, स स्त्री (स) शुक्लकृष्णपशवो
 सप्तमविधि (पु स्त्री) । २ अधिपत्यकार
 कस्य विभक्ति (स्त्री) ।
 ससपि, सं पु [स सप्तर्षय (बहु)] दे
 'सप्तर्षि' ।
 ससाध, म पु (म) सय, भाद्र, रवि,
 अर्द्ध ।
 ससाह, म पु (स) सप्तदिवमात्मन काल,
 *दिनमसक २ साप्ताहिक कृत्य ३ श्रीमद्भाग
 वतादीना साप्ताहिकी कथा ।
 सप्रज, वि (सं) सवाल, सापत्य, सम्मन्तान,
 अपत्यवहृत् ।
 सप्र, म स्त्री (अ) श्रेणीणि (स्त्री),
 पक्ति (स्त्री) २ लवङ्ग ।
 सप्रर, म पु (अ) वाना दे ।
 —खर्च, स पु (अ+फा) मार्गव्यय ।
 सपरमैना, म स्त्री (अ सैपर+माश्नर)
 यननमौग्गिना (पु बहु) ।
 सप्ररी, वि (अ मकर) यात्रोपयोगिन् ।
 सप्ररी, स स्त्री (गफरा) गफर, मल्यभेद ।
 सफल, वि (म) फलिन्, फलवत्, फलिन्,
 सुशस्य, फलयुत २ सार्वक, अमोघ, अर्धवत्
 २ निष्पन्न, मिद्ध, पूण ४ कृत, कार्य-कृत्य
 मफलमन्तारथ, मिद्धार्य, कृतार्थ, कृतिन्, चरि
 तार्थ, प्राप्त पूर्ण-रथ, वाम ।
 —होना, क्रि अ, कृतकार्य-सफल (वि) भू ।
 सफलता, म स्त्री (म) सापत्य, अर्थ-मनो
 रथ, मिद्धि (स्त्री), कृत, कायता-कृत्यता
 २ पूजता, निष्पन्नता ३ फलवत्ता ४ साधकता ।
 सप्रहा, म पु (अ) पत्र, पूर्ण, वृष्टम् ।
 सफ्रा, वि (म) अ वि निर, मल, स्वच्छ,
 २ शुचि, पून, पवित्र ३ श्दण, मसृण ४ सम
 तल, समस्य ।
 —चट, वि, अस्मिन्चट, निताननिर्मल २ अग्नि,
 श्दण-मसृण ।
 —चटकरना, क्रि म, क्षुरेण मुट (न्वा प स,
 चु), वंशान् सम्पक आवप् (न्वा उ अ,
 प्रे) २ विनन् विध्वम (प्रे) ।
 सफ्राहै, सं स्त्री (अ माफ) स्वच्छता,
 निर्मलता २ शौच, शुद्धि (स्त्री) ३ अक्

स्कारापमारण ४ निष्कपटता, आर्च ५ चित्त
 मानन, शुद्धि (स्त्री) ६ निर्दोषिता
 ७ अणशोधन ८ निर्णय ।
 —देना, मु, स्वनिर्दोषिता प्रमाणीकृ, आरोपिता
 पराध निरस् (दि प से) ।
 मफ्रीना, स पु (अ) पुस्तक २ दे 'समन' ।
 सफ्रीर, स स्त्री (अ) राजदूत ।
 सफेद, वि (फा सुफेद) श्वेत, धवल, श्यत,
 श्येन, शुक्र, सित, शुक्ल, शुभ्र, गौर (स्त्री
 स्त्री) २ अक् चिद्ध लेख, रहित (पत्रादि) ।
 —स्थाह, स पु (फा) हिताहित, श्दानिष्टम् ।
 —पोश, स पु (फा) आर्ष, भद्रजन । वि,
 श्वेतवाससु ।
 रग—पडना, मु, विवणता अपद (दि
 आ अ) ।
 सफेदा, स पु (फा सुफेदा) मीसकमस्मद
 (न), *श्वेतसीत २ आश्रभेद ३ *श्वेत
 (वृक्षभेद) ।
 सफेदी, स स्त्री (फा सुफेदी) शुक्लता, श्वेता,
 धवलता, धवलमिन्, शुक्लिमन्, श्वेतिमन्
 २ सुधा, सुधालेप ३ प्रत्युष, प्रमातम् ।
 —करना, क्रि स, सुधया लिप् (तु प अ)
 धत्वत्यति (ना था), सुधालेप कृ ।
 —आना, मु, ज (दि प से), ज्या (क
 प अ), केशा धवलायते (ना था) ।
 सब, वि (स सर्व) विश्व, समस्त, सकल,
 अगिल, निखिल, कृस्तन, अशेष, नि शेष
 २ पूर्ण, अनूत, अखड, समग्र ।
 —कहीं, क्रि वि, सर्वत्र ।
 —का सब, वि, समग्र, संपूर्ण ।
 —कुड, सं पु, सर्वम् ।
 —कोई, सब, सर्वे, विश्वे (पु बहु) ।
 —से अच्छा, वि, उत्तम, परम, श्रेष्ठ, प्रशस्ततम ।
 —हाल, स पु, संपूर्ण, वृष्ट-वृष्टता ।
 —मिटाकर, मु, सर्व, समस्त २ सर्वाणि
 सरलथ्य परिगणय्य ।
 सब—, वि (अ) सहायक, उप— ।
 —इन्स्पेक्टर, सं पु (अ) उप, निरीशक
 अवेष्टम् ।
 —जज, सं पु (अ) उपधिकरणिक, उप
 -दायापीता ।
 सयक, सं पु (फा) पाठ, दे । २ शिक्षा ।
 सयय, सं पु (अ) वारण, हेतु ।

सबर, स पु, दे 'सत्र'।

सबल, वि (स) बलवत्, बलशालिन्, बलिन्, धीर्यवत्, शक्तिमत्, शक्त, प्रबल, कर्जित, ऊर्जस्वल, समर्थ २ समैन्य।

सबा, स स्त्री (अ) प्रमातृपवन।

सबाध, वि (स) दुःखद, बृष्टदायक २ हानिकारक, अहितकर।

सबील, स स्त्री (अ) भाग, पथिन् २ उपाय ३ प्रपा, दे।

सबूत, स पु, दे 'सुबूत'।

सञ्ज्ञ, वि (का) हरितवत्, प(पा)लाश, हरिद्वर्ण २ नव, प्रत्यग्र, सरस (फलशाकादि)।

—बाग द्विस्थाना, मु, मोक्षशाभि वच् प्रतु (प्रे)।

सञ्ज्ञा, स पु. (का सञ्ज्ञह) हरितत्व, हारित्य, शाद, शादत्वला २ भगा, विजया ३ हरिभ्रमणि, मरकतम्।

—ज्ञार, स पु (का) शादल-म्।

सञ्ज्ञी, स स्त्री (का) दे 'सञ्ज्ञा' (१) २ शाकक, वि(नि)म्, हरितक-क ३ भगा, विनया।

सञ्ज्ञेष्ट, स पु (अ) विषय, प्रकरण, प्रमग २ प्रता।

—(सूत्) कमिटी, स स्त्री (अ) विषय समिति (स्त्री)।

सत्र, स पु (अ) सतोष, धैर्य, निनिक्षा, सहिष्णुता।

दे—, वि (का + अ) सतोषहीन २ असहिष्णु।

वेसवी, स स्त्री, निनिक्षाभव, असहिष्णुता २ धीरताभाव, व्याकुलता।

सभा, स स्त्री (स) समाज, गोष्ठि- (घी)

—समिति परिषद्-ससद-परिषद् (स्त्री), समज्या, सदस् (न), आस्थान २ सभा, भवन-गृह आगार-मंडप निकेतन, आस्थान-नी।

—पति, स पु (स) सभाध्यक्ष, ससत्पति, (सभाया) प्रधान।

—सद, स पु (स-सद) मदस्य, सभ्य, सामाजिक, परिष(पर्य)दल, प(पा)रिषद, परिषद्, सम्भार, प(पा)रिषय।

धर्म—, स स्त्री (स) धार्मिकपरिषद् (स्त्री)।

न्याय—, स स्त्री (स) व्यवहारमंडप।

राज—, स स्त्री (स) राजकीयपरिषद् (स्त्री)।

सभागा, वि (स मुभाग्य) सौभाग्य, वत् शालिन्, महाभाग, धन्य।

सभाला, स पु (स संभल) वरमत्त, परिणेतुमिवम्।

सभ्य, स पु (स) सभासद, दे २ सञ्जन, मद्रपुरुष। वि, शिष्ट नागरिक, दक्षिण, मद्र, विनीत, सुशील, आर्यवृत्त, सस्कृत, सस्कृति (स्त्री)।

सभ्यता, स स्त्री (स) शिष्टता, नागरिकता, दाक्षिण्य, सुननता, आर्यवृत्ति (स्त्री) २ सत्स्यता।

समजस, वि (स) उचित, न्याय्य, योग्य।

सम, वि (म) ममान, तुल्य, सदृश २, मद्रुष्ट, सनिभ, सविध, -उपम, -निभ, -प्रकार, -विध (समामान मे) २ समतल, दे ३ सुगम, दे जुष्ट। म पु (स) तालमानभेद (मगीत) २ अर्थात्कारभेद (सा)।

—कक्ष, वि (स) तुल्य, सदृश।

—काल, अव्य (म-ल) युगपद (अव्य), यौगपद्येन, एक-सम, काल(-ले)।

—कालीन, वि (म) एक-कालिक-कालीन, समकाल।

—कोण, स पु (स) नवत्यशात्मक कोण। वि, तुल्याभिमुखकोण (त्रिभुज अथवा चतुर्भुज)।

—चित्त, वि (स) मम, चेतस्-बुद्धि, धीर, ज्ञानमनस्क।

—तल, वि (स) सम, समस्य, समरेख, सपाट।

—दर्शी, वि (स) सम, दर्शन-दृश-दृष्टि-बुद्धि।

—भाव, वि (स) सम, प्रकृति-गुण २ समता, तुल्यता।

—भूमि, स स्त्री (स) सम, भू (स्त्री) -स्थली।

—वयस्क, वि (स) सबयस्क, समालुष्क।

समक्ष, अव्य (म-क्ष) अग्रे, अग्रत, पुर, पुरत, पुरस्तात् (भव अव्य)।

समग्र, वि (सं) दे 'सक' (२२)।

समझ, स स्त्री (दि समझना) बुद्धि धीमति (स्त्री), प्रज्ञा २ ज्ञान, बोध, उपलब्धि (स्त्री)।

—मे जाना, क्रि अ, अवगन्-वुप्-ज्ञा (रुम) ।
 —दार, वि (हि + का) धीमत्, बुद्धिमत्,
 प्राण, विश्वधृण ।
 समझना, क्रि म (म सज्ञान >) षा (क
 उ अ), वुष (भ्वा ष मे) अवगन्,
 बुद्ध्या प्रहृ (क् ष ने) २ क्लृप् (प्रे),
 उत्प्रेष (भ्वा आ मे), तर्क (चु)
 ३ क्विचर (प्रे) ४ प्रतिक्रि, नियत् (चु) ।
 म पु, ज्ञान, दीनत, अवगमन, उपलब्धि
 (स्त्री) ।
 समझने योग्य, वि, श्रेय, अवगन्त्य, वा व ।
 समझनेवाला, म पु, छाद्, वीद्-अवगन् ।
 समझाना, क्रि प्रे (हि समझना) व 'मम
 ज्ञाना (१) के प्रे रूप २ विमदी स्पष्टीकृ
 -वाग्वा (अ ष अ), व्याचक्ष (अ आ)
 ६ उपश्लि (तु ष अ), शिक्ष (प्रे)
 ४ निभत्स (चु आ म) ५ प्रति इ (प्रे),
 अभिगा (प्रे) ।
 —जुझाना, क्रि प्रे, दे 'समझाना' ।
 समझा हुआ, वि, ज्ञान बुद्ध अवगन् ।
 समझौंदा, म पु (हि समझना) मधि,
 म ममा, धान, क्लृद् विवाद, शम शानि (स्त्री),
 २ समधि (स्त्री), एकमत्यम् ।
 समझता, म स्त्री (म) तुल्यता, सादृश्य,
 समानता, साम्य, समत्वम् ।
 समझ, वि (म) मत्त, क्षीव, उमद्, मदी
 द्दत २ मडाकत, मत (गतादि) ३ प्रमत्त,
 प्रहृष्ट ।
 समझ (धि)न, म स्त्री (हि समधी) १२
 पुत्र पुत्री अपत्य, श्वश्रू (स्त्री), जामातृ-स्तुषा,
 चननी ।
 समझियवान, स्त्री, सं पु (हि समधी) पुत्र-
 पुत्री, श्वशुरात्पत्य ।
 समधी, सं पु (स सवधिवृ >) १२ पुन
 पुत्री आत्य, श्वशुर, जामातृ-स्तुषा, चननी ।
 समन्वय, म पु (स) सयोग, मिलन
 २ अनुकूप्य, विरोधाभाव, सवाद ३ वाच
 कारणनिवाद ।
 समन्वित, वि (म) मयुक्त, मिलित, संवद्
 २ युक्त युत, सदिन २ तिपाव ।
 समय, म पुं (मं) वेला, बाल, दिष्ट,
 अनहम् २ प्रमत्त, प्रमग ३ क्लृप् ४ अव
 वास, धृण ५ अवसर, उचितसमय ।

समर, म पु (स पु न) मग्राम, युद्ध दे ।
 —भूमि, म स्त्री (म) समरागण, युद्ध-रण,
 क्षेत्रम् ।
 —शाधी, म पु (स धिन्) लब्धवीरगति,
 भराशाधिन् ।
 समर्थ, वि (म) क्षम, बौन्ध, शक्त, सामर्थ्य
 वत् २ बन्धि, मवल ।
 समर्थक, वि (म) समर्थन-कार, महाध्वश
 रिन्, उपोद्बलक, अनुमोदक ।
 समर्थन, म ष (म न) दृढी प्रमाणी,
 करण, उपोद्बलन, अनुमोदनम् ।
 —करना, क्रि म, समर्थ (चु), दृढी
 प्रमाणीकृ, द्रष्टयनि (ना धा), उपोद्बलवनि
 (ना धा) ।
 समर्थित, वि (म) उपोद्बलित, दृढीकृत,
 अनुमोदित ।
 समर्पक, वि (स) समर्पयितृ, समर्पणकर,
 उपहारिन्, उपहारक ।
 समर्पण, म पु (म) उपहरण, समनानं
 उत्सर्जन ३ दान, उत्सर्ग ।
 —करना, क्रि म, न क्त (प्रे, समर्पयति),
 मादर दा, उपहृ (भ्वा ष अ) ।
 समर्पित, वि (म) उपहृत, मादर उत्सृष्ट-दत्त ।
 समवाच्य, स पु (स) समूह २ नित्य गुण
 गुणि नानिन्यक्ति अवयवावर्षि, स्ववध (न्याय)
 समवेत, वि (म) सधित, मगृहीत २ युक्त,
 मिलित ३ नित्यमवपरिशिष्ट ।
 समष्टि, म स्त्री (म) सर, ममुदाव, समूह ।
 समस्त, वि (मं) समग्र, मपूर्ण, नि शेष,
 दे 'सर्व' २ मनामयुक्त ३ संक्षिप्त ।
 समस्या, म स्त्री (सं.) समानार्थी, समान्य
 यथा (पधरचनावै) श्लोकाश्च २ विमटप्रदन
 ३ वठिनावसर ।
 —पूर्ति, म स्त्री (म) निर्दिष्टपचादामाश्रित्य
 काव्यरचना ।
 समी, स पु (मं समय) बाल, वेला ।
 —वैधना, सु (मगीतादिमन्त्रनया) स्तम्भीम् ।
 समालया, म स्त्री (म) यशम् (न),
 नाम् (न) ।
 समागम, सं पु (स) आगमन, आयानं
 २ ममिलन, सयोग २ मैशुनम् ।
 समाचार, म पु (स) वृत्त, वृत्तान, उदत,
 वाता ।

—पत्र, स पु (स) वृत्तपत्रम् ।
 समाच, स पु (स) सभा, दे २ समूह,
 सप्त, दल, समुदाय ३ आर्यमनाज ।
 —वाद, स पु (स) मपत्तौ राज्याधिकार
 इति मिद्वान् ।
 समाजी, म पु (स-विन्) सभामद् २ आर्य
 समाज,सदस्य सभासद्, आयामाजिक
 ३ दे 'सपरदार' ।
 समाहत, वि (स) सम्मानित, पूजित, मत्कृत ।
 समाधान, म पु (म न) समाधि, अन
 ध्यान, प्रणिधान २ शका-भेद, निवारण
 ३ शकानिवारकमुत्तर ४ आत्मना, ध्यान
 नात्वन ५ विरोधापहरण ६ निराकरण
 ७ अनुमथान ८ तपम (न) ९ ध्यान
 १० सनयन, दृढीकरण, उपोद्वलनम् ।
 —करना, कि स, समाधा (जु उ अ),
 शका निवृ (प्रे) ।
 उका—, स पु (स न) मदिहनिवारणम् ।
 समाधि, स स्त्री (स पु) अनध्यान, मना
 धान, ब्रह्मणि स्थिति (स्त्री), योग्य चरम
 फल २ प्रेतावत्, शक-अन्धि, नान ३ निद्रा
 ४ चिसैकाग्र्य, अनन्यमनस्कता ५ योग
 ६ मौन ७ प्रतिशोध ८ अथात्कारभेद-
 (सा) ।
 —लगाना, कि अ, ब्रह्मणि मनो निविश (प्रे)
 —मनधा (जु उ अ), अत ध्या (ध्वा
 प अ), सनाहित समधिस्थ (वि) म् ।
 समान, वि (म) तुल्य, सदृश शस्, मन,
 सविभ, सविध, सर्वा, -उपम, -विध, -रूप,
 -प्रकार ।
 समानता, स स्त्री (स) समता, मान्य,
 सदृश्य, औपम्य, सरूप्य, मावर्गम् ।
 समाना, कि अ (स सभावेष्टनम्) प्रविश
 (तु प अ), अत या (अ प अ), कि
 स, प्रविश (प्रे), अन्त स्था (प्रे), धाम्
 मृ (कर्न) ।
 समाप्त, वि (स) अवसित, अत, गत इत,
 संपूरित, सपूर्णा, नि-शेषीभूत ।
 —करना, कि स, समाप्त (स्वा प, अ, प्रे),
 निवृत्त (प्रे), सप्त (प्रे) पूर (जु), पार
 अत गम् (प्रे), निशिष् (प्रे), सपद्
 (प्रे) ।

—होना, कि अ, समाप्-अवनी (कर्न),
 नि-शेषीभू, सनाप्ति-अन गम् ।
 समाप्ति, म स्त्री (स) अत, परि, अवसान,
 निवृत्ति मिट्टि (स्त्री), नि-शेषना २ प्राप्ति
 (स्त्री) ।
 समारोह, म पु (स) आडवर, विभव,
 दे 'धूनधान' २ आडवरमय उत्तव ।
 —से, कि वि माडवर मागेनम् ।
 समार्थक, वि (म) समनाथक, पर्यायवाचिन,
 तुल्याशय (शब्द) ।
 समालोचक म पु (म) गुाशोध-निरूपक
 विवेचन अलोचक ।
 समालोचना, म स्त्री (म) स अलो
 चन-ना, गुादाय निरूपणा-विवेचन-दशन
 परोक्षम् ।
 —करना, कि म, गुाशोधन निरूप (जु)
 विविच (क उ अ)-विवर (प्रे), समालोच
 (प्रे) २ टिप्पणी अन्विष् (दि प से) ।
 समावर्तन, म पु (स न) (गुरुद्वारा)
 प्रत्यागमन, प्रत्यवृत्ति (स्त्री) २ अर्थात्
 सत्कारभेद, मन्-वर्न-वृत्ति (स्त्री) (धर्म) ।
 समाविष्ट, वि (म) अन्त, गत-भूत-गति
 २ एकाग्रचित्त ।
 समावेश, म पु (म) अनर्भाव, अनर्गना ।
 —करना, कि स, अनभू (प्रे), अनाप् (जु) ।
 समाप्त, म पु (स) पदमयोग (व्या)
 २ मध्ये ३ मन्त्रिणा ४ सप्रह ।
 —करना, कि म, मनम् (दि प मे),
 पकीक, सन्निश (जु) ।
 समासोक्ति, स स्त्री (स) अथात्कारभेद
 (सा) ।
 समाहार, म पु (स) मचयन, सप्रहा
 २ चय, राशि ३ मध्ये ।
 —द्वद्, स पु (म) द्वदसममभेद (व्या) ।
 समिति, स स्त्री (म) परिषद् (स्त्री)
 समा, दे ।
 समिधा, म स्त्री [स मन्धि (स्त्री)]
 यष्टिप होनीय, शकन-स्थ २ स्थ, शकन दे ।
 समीकरण, म पु (स न) मनानीकरण,
 समीक्रिया २ क्रियाभेद ।
 समीक्षा, म स्त्री (म) ममलोचना, दे ।
 समीचीन, वि (म) सत्य, दार्थ्य, अविषय
 २ उचित, उपपन्न, योग्य, ३ न्यय्य, धर्म्य ।

समीप, किं वि (स समीपये) अतिक्रमे वात्, आरात् निरुषा, निरुष्टे, उपकठ ठे, समया, मविधे, सकांशे शात्, सनिधौ, उप- ।

—धर्ता, वि (स तिव्) समीप, निकट, सनिहित, अनिक, अभ्याश, आमत्र, उपकठ, उपात, अभय, अभय सविध, समीप निकट स्थ वातेन् ।

समीपता, स स्त्री (स) मामीप्य, नैवट्य, मनिधि (पु), आसत्रना, सनिकर्ष ।

समीर, म पु (म) समीर, समीरण, पवन, वायु दे ।

समीहा, स स्त्री (स) उद्योग, प्रयत्न २ इच्छा ३ अनुमधानम् ।

समुद्र, सं पु (स समुद्र) सागर ।

—शाग, म पु, दे 'समुद्रपेन' ।

—सोत्र, म पु (म समुद्रसोप) क्षुभेद ।

समुचित, वि (म) यथेष्ट, उचित दे ।

समुच्चय, स पु (म समाहार) समिलन २ राशि, समूह ३ अर्थालंकार भेद (सा) ।

समुद, वि (म) सहर्ष, सामोद, सानन्द ।

अ, सहर्ष, सानन्दम् ।

समुदाय, म पु (स) निःस, चय, निर, राशि २ गण, सध, वृद, समूह ।

समुद्र, म पु (म) सागर, अधि, वारि अभी-उद तलनार अशुपाथी, र्थि, पारावार, सरित्पनि मिदु, अर्णव, रत्नावर, नीर-वारि जल, निधि मकरान्य, कर्मिमालिन् ।

—तट, स पु (स पुं न) सागर, नीर-शूल, रोधस (न) वेद ।

—पानी, म स्त्री (म) समुद्र, नाना-गा, नदी ।

—पेन, स पु (म) समुद्रवप, जलहाम, सागुद्रम् ।

—यान, स पु (म न) पान ।

—लयण, स पु (स न) अग्नि(क्षी)व, वशि(मि)र समुद्रक, लवणा-वजन् ।

—वद्धि, म पु (सं) वटवानल, वाडव ।

समूचा, वि (म समुच्चय >) समस्त, समग्र, सपूर्ण ।

समूल, वि (स) सकारण, सहेतुक २ मूल, वृ-अन्वित । किं वि (स न) मूलत, सम्पूर्णतया, अदोषेण, सावत्येन ।

समूलोन्मूलन, स पु (स न) (मूलत) उत्पादन-उच्छेदन-व्यपरोपणम् ।

—करना, किं म, उत्पट् (चु) विध्वस्त उन्मद (प्रे), आमूल उत्सन् (भ्वा प से) -व्यपहृ (प्रे, व्यपरोपयति) ।

समूह, स पु (स) निवह, ब्यूह, मदोह, विमर, व्रज, स्त्रीम, ओष, निरर, व्राण, वार, सघात, निप्रस-चय, समुद(दा)य, समवाय, गण, सट्टि (स्त्री), वृद, निकुरव, कदवक, ममाहार, समुच्चय, -मटल, -गाल, पूग, ग्राम (समासात् मे) । (सदृश पदार्थों का)

वर्ग । (जतुओं का) सध, साथ । (सजातीय जतुओं का) कुलम् (द्वे जतुओं का) यूप-य । (पशुओं का) समज । (औरों का) झुट ।

समाज । (एक धर्मवालों का) निकाय । (अत्रादि का ढेर) पुन, पिज, पुजि (स्त्री), राशि, उत्तर, कूट-ट २ जनता, जनमेलक, जन-

लोर, साथ समुदाय समर्द्ध भङ्गल ३ बहुवच, बाहुल्य, बहु वृहत्, सरया ।

समूहनी, स स्त्री (स) समार्नी, 'दे शाट' ।

समूह, वि (स) अतिशय, धनाध्य-धनिव-सपत्र ।

समूद्धि, सं स्त्री (सं) एषा, अतिशय प्रचुर, सपद-सपत्ति (दोनों स्त्री) विच विभव-वैभवम् ।

समेटना, किं स (हिं सिमटना) एषत्र कृ, समहृ (क् प से), सचि (स्वा उ अ), सनी-समाहृ (भ्वा प अ) २ आकुञ्च (प्रे), सजुच (ङ् प से), सट्ट (भ्वा प अ) ।

सं पु तथा भाव, प्वत्रकरण समहण, सच यन, सनयन, ममाहरण, आकुञ्चन, सरोचनम् ।

समेत, किं वि (सं न) सह, सार, सार्थ, सदित, सम (सब दुर्नीया के साथ) । वि (स) सजुक ।

समीमा, स पु (का) समीप, निराप-वार पक्वत्रभेद ।

सम्यक्, क्रि वि (स) सर्वथा, सत्रप्रकारेण
० संपूर्णतया, मामग्येन, मायत, संपूर्ण
३ सद्गुणात् ।

सम्राज्ञी, म स्त्री (स) सम्राट्पत्नी ० रात्र
रात्रेश्वरी, अत्रि महा-रात्राधि-रात्री ।

सम्राट्, म पु (म सम्राज) महत्, राजाधि
राज, मार्गभूमि, चक्रवाहन, महादेश्वर,
एक अधिपति-राज, अत्रि इश्वर-राज ।

सयाना, वि, दे 'स्याना' ।

सयुष्य, वि (स) एक-स-समान-अभिन्न-वर्ण
गण-संघ ।

सयोनि, वि (स) सोदर, मदीदर, सगम,
सोदर्यं २ निकटसमीप-सम्बन्धिन् । म पु
(स) मदीदर, मोदर, सोदर्यं ० इन्द्र,
शचीपति ।

सर, म पु [म मरम् (न)] मरमी,
कामर, हृद, मगोवर, पद्माकर, तदारु-क,
तडाग-य, जलाशय ।

सर, स पु (का) शिरम् (न), दे 'मिर'
२ शिखर, शिखा, अग्रम् । वि, पराजित,
अभिभूत ।

—अंजाम, म पु (का) मगमयी, मभार
० मिद्धि, ममात्रि (स्त्री) ।

—कश, वि, (का) उद्धत, उद्ध २ अवश्य
३ कुटुम्ब, ज्येष्ठक ।

—कशी, म स्त्री (का) औद्धत्य, उद्धण्डता
० कुचेष्टा, चापल्यम् ।

—गाना, —गरोष्ट, म पु (का) अग्रणी,
नायक ।

—गर्म, वि (का) उत्साहिन, उत्साहवर ।

—गर्मी, स स्त्री, उत्साह, व्यग्रता ।

—होर, वि (का) बलवान् २ उद्धण्ड ।

—होरी, म स्त्री, बलात्कार ० उद्धण्डता ।

—ताज्ञ, स पु (का) पुरोग, नायक,
शिरोचूटा-मुकुट, मणि ।

—पच, म पु (का + हि) सभा, पति -
अध्यय, *पत्रप्रधान ।

—परस्त, म पु (का) ज्ञान, रक्षक
० मरक्ष्य, आश्रय ।

—परन्ती, म स्त्री, रण, प्राण ० संरक्षण,
आश्रय ।

—पेच, म पु (का) उष्णीषभूषणभेद ।

—बराह, स पु (का) कायान्यक्ष, अधि
ष्टान्, *प्रबन्धक ।

—बराही, सं स्त्री, अधिष्ठान, *प्रबन्ध,
अवेष्टा २ अधिष्ठानृत्वम् ।

—हृद्, म स्त्री (का + अ) सीमन् (स्त्री),
मीमा, दे २ मीमान पर्यंत, प्रात ।

—हृदी सूबा, म पु (का) (पश्चिमोत्तर)
मीमाप्रात ।

—करना, मु, विवि (भ्वा आ अ), अभिभू,
वशीकृ ।

मर, म पु (अ) आगनीधानामुपाधिभेद,
*शिरोमणि ० भद्र, आर्य ।

मरकटा, स पु (म शरकाट) बाड, तेजन्,
गुदक, क्षुरिजापत्र, उल्लट ।

मरकना, क्रि अ (स मरण) शनै-मृदु चल्
(भ्वा प मे)-मुपसृ (दौनों भ्वा प अ)
२ सत्वर सृ ३ अलक्षित अती (अ प अ)
४ उरसा गम्-चल । म पु तथा माव, मृदु
सरण सपण चलन, इ ।

सरकाना, क्रि स, व 'मरकना' के प्रे रूप ।

मरकार, स स्त्री (का) राज्य-मस्थानत्र
शान्कर-अधिकारि, वर्ग, राजमणि (बटु)
० प्रभु, स्वामिन् ३ राज्य, राष्ट्रम् ।

सरकारी, वि (का) आधिकारिक, राजकीय,
राज्यमवधिन् ।

—नीकर, स पु (का) राज्य, मृत्य-मेव
परिचारक ।

—नीकरी, म स्त्री (का) राज्य, सेवा-
परिचर्या ।

सरगम, स पु (हि मा + दे + गा + मा)
स्वर, प्राण (मगीत) ।

सरधा, म स्त्री (स) मधुमक्षिका, दे ।

सरजा, म पु (का सरजाह = उच्चपदाधिकारी,
अ शरजह = शेर) नायक, अग्रणी, नर
शाईल २ सिंह ।

सरणी, सं स्त्री (म) मरणि (स्त्री), पविन्,
मार्ग ० पक्ति (स्त्री), रेखा ३ पथा,
पञ्जि (स्त्री) ४ शैली, प्रकार ।

सरद, वि, दे 'सर्द' ।

सरदई, वि (का सर्दई) हरित्पीत ।

सरदल, स पु (देश) द्वारोर्ध्वभूषण ।

सरदा, स पु (का सर्दह) *शीतसर्जम् ।

(स्त्री) ३ मगार, नगद (न) ४ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) ५ संति (स्त्री) मनाज ६ उदगम, मूल ७ प्रवाह, स्नाव ८ क्षेपण, प्राप्तन ९ प्राणिन् १० प्रवृत्ति (स्त्री) ।

सर्जन^१, स पु (स न) सृष्टि-जगदुत्पत्ति (स्त्री) २ विमनन दे ।

सर्जन^२, म पु (अ) शक्यवैद्य शक्य चिकि
त्सक ।

सर्जरी, स स्त्री (अ) शक्य, चिकित्साशास्त्र, शक्यवैद्य २ शक्यक्रिया ।

सर्जि, म स्त्री (स) सर्जी सर्जिका सर्जि
मञ्जिना-क्षार, क्षार, वापोद, सौवचल
रुचक, दे 'मञ्जी' ।

सर्ज, स स्त्री दे 'भरवू' ।

सर्जिकेट, स पु (अ) प्रमाणपत्र दे ।

सर्द, वि (फा मि स शरद >) शीत, शीतल
दे २ अल्प मद्र ३ नपमन, निर्वाय
४ जिह्वादे, नीरस ।

—अनु, म स्त्री (फा + म) शरद (स्त्री) दे ।

—खाना, म पु, हिमशृङ्खल ।

—मिनाङ्ग, वि (फा + अ) निरसाह
२ रुच ।

—होना, सु, मृ (तु आ अ) २ शीतली
मदी भू ।

सर्दी, म स्त्री (फा) शीत, शैत्य, हिम
२ प्रतिश्याय ।

—का बुझार, स पु शीतज्वर ।

—खाना, सु, शीतपीडित (वि) भू ।

सर्प, स पु (स) अहि मुजग, दे सर्प ।

—भसक, स पु (स) मयूर ।

—मणि, स पु (स) मुजगफणक ।

—याग, म पु (म) नननेत्रयवृत्तो नाग
यव ।

—राज, म पु (म) शेषनाग २ वासुकि
केय ।

—रुता, म स्त्री (म) नागवल्ली, दे 'पान' ।

सर्पिणी, म स्त्री (म) मुजगी, दे 'मांषिन' ।

सर्प, वि (अ) ध्वनित, विनियोजित, दे
'पर्य' ।

सर्प, म पु (अ मार्क) ध्वय, विनियोग
२ मितव्यय ।

सर्प, म स्त्री (अ) दे 'मगाक' ।

सर्व, नव (सं) सारल, मगमन ।

—वाग्य, वि (स) मव, प्रिय इष्ट ।

—काल, अ० (म) सर्वदा, नित्यम् ।

—कालीन, वि (स) सार्वकालिक, मदातन ।

—ननीन, वि (म) सार्वजनिक, विश्वजनीन ।

—चित्, वि (स) विश्व, जित्विजेत्
२ उत्तम श्रेष्ठ । (स पु) यदभेद
२ मृत्यु ।

—ज्ञ, वि (म) सव विश्ववेत्तृ विद् । (स पु)
परमेश्वर ।

—ज्ञता, स स्त्री (स) विश्ववेत्तृत्वम् ।

—तत्र, वि (स) सर्वशास्त्रसम्मत । (स न)
सर्वशास्त्रम् ।

—नरस्वतत्र, वि (स) सर्वशास्त्रपारण ।

—दमन, स पु (स) भरतराज, दुष्यद
पुत्र । वि (स) सवाभिभावक ।

—दर्शी, वि (स दिग्) विश्वद्रष्टृ ।

—नाम, म पु (स मन् (न) शब्दभेद
(न्या) ।

—नाश म पु (म) विध्वन, विनाश,
ममूलोच्छेद ।

—नियता, स पु (म मृ) विश्वनियामक,
परमेश्वर ।

—प्रिय, वि (स) विश्व प्रिय इष्ट-वत्तम ।

—भक्षी, स पु (स दिग्) सर्वभक्षक
२ अग्नि ।

—भूत, म पु (सं न) चराचर, सर्वसृष्टि
(स्त्री) ।

—मेघ, म पु (स) नौमयागभेद २ मार्ग
अनिक्रमत्रम् ।

—वल्लभा, म स्त्री (मं) दुल्हा, पुश्वली ।

—व्यापक, वि (स) विश्वव्यापिन्, विश्व
सर्व, नागत ।

—शक्तिमान्, वि (स-मद्र) सर्वभामध्यंयुत ।
(मं पु) परमेश्वर ।

—श्रेष्ठ, वि (म) सर्व, उत्तम, प्रशस्ततम ।

—साक्षी, म पु (म दिग्) परमेश्वर २
अग्नि ३ वायु ।

—साधारण, मं पु, जना, लोका, जनता,
पृथग् प्राकृत-जना । वि (सं) साधारण,
सामान्य ।

—सामान्य, वि (म) साधारण, प्राकृत,
प्रारिक् ।

सर्वत्र, अव्य (सं) सर्वदिग्देशकाल ।
 —ग, वि (म) सर्वव्यापक ।
 सर्वथा, अव्य (सं) सर्वप्रकारेण २ साम
 स्येन ३ निदान, अत्यन्तम् ।
 सर्वदा, अव्य (सं) सदा, दे ।
 सर्वस्व, स पु (म न) समस्तसपद (स्त्री),
 समग्रद्रव्य, निगिलधनम् ।
 सर्वांग, म पु (सं न) समस्तशरीर २ नव
 वेदांगानि (न बहु) ३ समग्रावयवा
 (पु बहु) ।
 सर्वांगीण, वि (सं) सार्वदेहिक-सर्वांगिक
 (—स्त्री स्त्री) ।
 सर्वात्मा, स पु (सं-त्मन्) परमात्मन्,
 ब्रह्मन् (न) ।
 सर्वाधिकार, स पु (सं) पूर्णप्रमुख, प्रेकाधि
 पत्यम् ।
 सर्वे, स पु (अ) सर्वेक्षणम्, भूमापनम् ।
 सर्वेश्वर, म प (अ) सर्वेश्वर, भूमापक ।
 सर्वेश्वर, म पु (म) सर्वेश, परमेश-श्च
 २ चक्रवर्तिन्, सर्वभौम ।
 सर्पप, स पु (सं) दे 'सरसों' ।
 सलगम, म पु, दे 'शलगम' ।
 सलग्न, वि (सं) हीमत्, लज्जाशील दे ।
 सलतनत, म स्त्री (अ) राज्य २ साम्राज्य
 ३ शासनम् ।
 सलना, क्रि अ (सं शक्य) व 'सालना'
 के कर्म के रूप ।
 सलफ, वि (अ) प्राचीन, पुरातन, पुराण ।
 सं पु, पूर्वजा, पूर्वपुरुषा, पितर (सभी
 बहु) ।
 सलब, वि (अ मत्व) नष्ट, उच्छिन्न ।
 सलवाई, स स्त्री (हिं सलवाना) वेधन,
 शुष्क-मृत्ति (स्त्री) ।
 सलवाना, क्रि प्रे, व 'मालना' के प्रे रूप ।
 सलहज, म स्त्री, दे 'सरहज' ।
 सलाई, म स्त्री (म शलाका) धत्वादि
 निर्मिता तनुयाष्टि (स्त्री) २ दीपशालाका ।
 सलाई, स स्त्री (हिं सालना) वेध धन
 २ दे 'सलवाइ' ।
 सलाख, म स्त्री (फा मि सं शलाका) दे
 'सलार' २ धातु-दट-यष्टि (स्त्री) ३ रेखा ।

सलाजीव, स स्त्री, दे 'शिलाजीव' ।
 सलाद, म पु (अ सैलाड) शिमुगायन् ।
 सलाम, स पु (अ) प्रणाम, दे ।
 —अलोक या अलेकम्, प्रणाम, नमस्ते, नम
 स्कार ।
 दूर से—जग्ना, मु (अनिष्ट दुर्जन वा दूरत)
 परिहृ (भ्वा प अ)-ष्टा (जु प अ) ।
 सलामत, वि (अ) सुरक्षित, अज्ञ, सस्
 मुक्त २ जीवत् सनीव ३ स्वस्थ, नीरोग
 ४ विद्यमान, वतमान । क्रि वि, सकुशल,
 क्षेमेण ।
 —रहना, क्रि अ, स्वस्थ (वि) जीव् (भ्वा
 प से) कुशल वृत् (भ्वा आ से) ।
 सलामती, स स्त्री (अ मलामत) स्वास्थ्य
 २ कुशल, क्षेम ।
 —से, मु, ईश्वरकृपया ।
 सलामी, म स्त्री (अ सलाम) नमस्क्रिया,
 अभिवादन, २ मौनिक, प्रणाम प्रणति (स्त्री)-
 नमस्कार ३ अग्न्यस्त्रै ममाननासभाधना
 ४ प्रवण, निम्न-अवसर्पि, भूमि (स्त्री) ।
 —उतारना, मु, अग्न्यस्त्रै सभू समन् (प्रे) ।
 सलाह, म स्त्री (अ) अभिप्राय, तर्क,
 मननि (स्त्री) २ परामर्श, मन्त्रणा
 ३ उपदेश, मन्त्र ।
 —करना, क्रि अ विचर (प्रे), समत् (चु
 आ से), परामृश (तु प अ), तृतीया के
 साथ) उपदेशार्थ प्रच्छ (तु प अ) ।
 —कार, म पु (अ + का) उपदेश, मन्त्रद,
 परामर्शप्रद, बुद्धिमहाय ।
 —देना, क्रि सं, उपदिश (तु प अ), अनु
 शास् (अ प से), मन्त्र (चु उ से) ।
 —ठहरना, मु, सर्वे निधिनिर्णी (कर्म),
 भाग्यत्वं (दि आ से) ।
 सलिल, म पु (म न) अनु, वारि, जल दे ।
 —निधि, म पु (सं) सागर, समुद्र दे ।
 सलिलाहार, वि (म) सलिल-जल-नीर,
 अशन भोजन । स पु (सं) जल-नीर,
 अदानम्-आहार ।
 सलीका, म पु (अ) कौशल, दाह्य, वेद
 ग्ध्य, चातुर्य २ ममय शिष्ट, आचार, शिष्टना
 ३ आचार, चरित्र, व्यवहार ४ सत्यता ।

—मद, वि (अ + फा) दम्, कुशल, विदग्ध, चतुर २ शिष्ट, शिष्टाचारिन् ३ मभ्य ।
 सलीस, वि (अ) सुगम, सुनोष २ दे 'सुहाकरदार' ।
 सलूक, म पु (अ) व्यवहार, वृत्ति (स्त्री), वर्तन २ स्नेह, मद्भाव ३ उपकार ।
 सलूना, वि (स सल्वण) ल(ल)वण, लाव गिह । सं पु, व्यजन, दे 'भाजी' ।
 सलोतर, स पु (स शालिहोत्र >) २२, पशु-अथ, निरित्सा ।
 सलोतरी, स पु (हिं सलोतर) १२ वशु अथ, निकित्मक-वैष ।
 सलोना, वि (स सल्वण) दे 'मलूना' वि २ सुन्दर, लावण्यमय, छविमद ३ स्वाडु सरस ।
 सलोनी, स स्त्री (स श्रावणी) ऋषितृणी रक्षावधनं दे ।
 सवन, सं पु (स न) यशस्वान २ हीम पान ३ यज्ञ ४ प्रसव ।
 सवर्ण, वि (सं) मुख्य-समान-सम्पक-त्राणि जानीय-वर्ण २ सदृश समान तुल्य ।
 सवा, वि (स सपाद) पादाधिक, पादोर्ध्व ।
 सवाय स पु (अ) पुण्यं सुकृतफल २ शिने उपकार ।
 सवाया, वि, दे 'सवा' ।
 सवार, स पु (फा) मादिभ, सुरगिन् अथ, आरौह-आरौहिन् । वि, आरूढ अधि रूढ, उपर्याग्नीन ।
 —होना, क्रि स (अथादिक) अधि-अध्या आ-ममार्ह (भ्वा प अ), अविस्था (भ्वा प अ) अध्याम (अ आ से) ।
 सवारी, सं स्त्री (फा) अधि-अध्या-ओ रोहण, आ-रोह रूढ, (रथाग्नि) सचरण विहरण २ यान, वाहनं ३ आरोहक, आरोहिन्, यात्रिन्, यात्रिक ४ यात्रा, दे 'मलून' ।
 —करना, क्रि अ, अध्याग्नि गम् या (अ प अ) ।
 सवाल, सं पु (अ) अनुयोग, प्रश्न दे । २ निवेदन, प्रार्थना ३ मिश्रायाचना ४ गति प्रदन ५ प्राथनाविषय ।
 —जवाब, सं पु (अ) प्रदनात्तरं २ वाद प्रतिवाद ३ पञ्च, ।

—जवाब करना, मु, विवद (भ्वा आ से), विचर (प्रे), तर्क (चु) ऊहापोह कृ ।
 सवालिया, वि (अ सवाल >) प्रदनात्मक, पृच्छापर ।
 सवाली, वि (अ मकाल >) याचक मिश्रक, अधिन् ।
 सविकल्प, वि (न) सशयमरैह विरम्प, युक्त, सदिग्ध २ सार्ध, मशयान, सदिहान । स पु (स) समाधिमेद ।
 सविता, स पु (स वृ) स्य, भानु ।
 सवित्री, स स्त्री (स) सविका, दे 'दाश' २ वदनी ३ गी (स्त्री) ।
 सवेरा, स पु [स सुवेला > (स्त्री)] जह्णो दथ, अहमुत्त, प्राण माल, दे विलम्ब निरता चिरत्व, अभाव ।
 सर्वया, सं पु (हिं मवा) मालिनी, छन्दोमेद २ सपादसेरात्मक भारमान ३ सपादगुणन सूची ।
 सव्य, वि (सं) वाम, दे 'बावी' २ दक्षिण (कभी ही) ३ विरुद्ध, प्रतिकूल ।
 —साची, म पु (स चिन्) अर्जुन ।
 सदाक, वि (म) दोषायमान, मशयापत्र, सशयान २ भीत, उद्विग्न, प्रन्त ३ भीम, भयकर ।
 ससुर, स पु (म शशुर) पतिविह २ जाया जनन ३ (माली) दुष्ट, शठ, लल ।
 ससुराल, स स्त्री (स शशुरालय) १२ पतिपत्नी, पितृगृह, शशुरगृहम् ।
 ससुरी, सं स्त्री (हिं ससुर) शशू (स्त्री), दे 'साम' २ दुष्टा, पापा ।
 सस्ता, वि (सं स्वरथ >) अप, अर्थ-मूल्य, सुतत्रेय २ मुलम ३ सामान्य, साधारण, अवर ।
 —होना, क्रि अ, अन्यमूल्य सुगत्रेय (वि) भू मरुते छुटना, मु, स्तोत्रान् मुच् (वर्ग) ।
 सस्य, सं पु (सं न) शस्यं, धान्य, भीय, त्रैदि, सर्वररि २ वृक्षादीनां फलम् ।
 सह, अन्य (मं) साक, सार्ध, समं, सहित (सव वृत्तीया के साथ) दे 'साध' ।
 —कार, म पु (सं) आय, आम्र २ राहा यक ३ सहयोग ।
 —करिता, सं, स्त्री (मं) मदयोगिता २ सहायता ।

- कारो, स पु (स रिन्) मह, कृत् कृत्वद्
योगिन, सव्यवसायिन् २ महायक ।
- गमन, म पु (स न) सह, चरण व्रजन
२ पतिशयेन मह ज्वलन, सह, मरण अनु
गमनन् ।
- गामिनी, स स्त्री (स) महशृणा पत्या
सह ज्वलिता नारी २ पत्नी ३ सहवरी ।
- गामी, म पु (स मिन्) सीगिन् मह
चर चरिन्-याविन् बसिन् २ अनुयायिन् ।
- चर, स पु (म) दे 'सहामी' (१) ।
२ सेवक ३ स्थिति मित्रन् ।
- चरी, म स्त्री (स) पत्नी, भार्या २ सती,
वयस्या ३ महगामिनी सगिनी ।
- चार, म पु (स) दे 'सहगामिन्' (१) ।
२ सग, सगनि (स्त्री) ।
- चारिणी, स स्त्री (म) दे 'सहचरी' (१ २) ।
- चारी, स पु (स रिन्) दे 'सहगामिन्'
(१) । २ सेवक, अनुचर ।
- जात, वि (म) सहजन्मन, यमन
२ सोदर, सहोदर ।
- जीवी, वि (म विन्) समकालीन २ मह
वासिन् ।
- धर्मिणी, स स्त्री (स) सहधर्म, चरी-
चारिणी, धर्मपत्नी ।
- पाठी, स पु (स ठिन्) सह, अध्यायिन्-
पाठक ।
- भोज, स पु (स) सधि (स्त्री) सह
भक्षण, समभ्र ।
- भोजी, स पु (स जिन्) सहभक्षक ।
- मत, वि (स) एक-मत चित्त, सवादिन्,
संप्रतिपन्न ।
- योग, स पु (स) सह, कार-कारिता-
योगिता २ मगनि (स्त्री) ३ सहायता ।
- योगी, म पु (स गिन्) दे 'सहकारी'
(१ २) ३ समवयस्क ४ समकालीन ।
- वाद, म पु (स) वादप्रतिवाद, हेतु, वात् ।
- वास, स पु (स) सहवसति (स्त्री)
२ सग ३ मैथुनम् ।
- वासी, स पु (स-सिन्) सहवासकृत्
२ दे 'महगामी' ।
- सहज, वि (स) सुगम, सरल, सुकर २ मह
ज्ञान, दे ३ स्वाभाविक, प्राकृतिक ४ माथा
रण । कि वि, मौख्येण, मुखम् ।

- पथ, म पु (म सहज+पथिन्) महत्
पथनामा वैष्णवप्रदायविशेष ।
- मित्र, म पु (म न) स्वाभाविकसुहृद्
२ भागिनेय ३ भ्रातृवसेय ४ पैतृवसेय ।
- शत्रु, म पु (स) स्वाभाविकशत्रु, सह
जाति २ पितृशत्रु ३ वैमानिकशत्रु ।
- सहजन, म पु दे 'सहिन' ।
- सहनिषा, म पु (म सहज) महत्
मतानुयायिन् ।
- सहदेव, म पु (म) पादुरास्य पञ्चमपुत्र ।
- सहन^१, म पु (म न) सहिष्णुता, मर्ष,
मषण २ क्षमा, निनिष्ठा, क्षान्ति (स्त्री) ।
- करना, कि अ दे, 'महना' ।
- शील, वि (म) सहिष्णु निनिष्ठा २ क्षमिन्,
क्षमिन्, महत् ।
- शीलता, म स्त्री (मं) दे 'सहन' (१ २) ।
- सहन^२, म पु (अ) आन, प्रागण, अपिर,
चत्वरन् ।
- सहना, कि अ (म सहन) क्षन् मह (भा
आ से), निन् (मन्त, निनिष्ठा), मृष
(दि प मे, चु) । स पु तथा भाव, सहन,
महिष्णुता, सहनशीलता, क्षमा, मर्षण, क्षान्ति
(स्त्री), निनिष्ठा ।
- सहनीय, वि (स) मषणीय, सह, सोढव्य,
क्षमार्ह, क्षान्त्य ।
- सहने वाला, स पु, सोढू, क्षन्, सह ।
- सहम, स पु (का) भय, काम २ मकौच,
दे 'लिहात्' ।
- सहमता, कि अ (का सहम) दे 'हरना' ।
- सहर, स स्त्री (अ) उषा, प्रभातम् ।
- सहारा, स पु (अ) मरु, मरु-स्थल भूमि
(स्त्री) २ वन, निविडकाननम् ।
- सहरी, स स्त्री (स शरी) मीनभेद ।
- सहल, वि (अ) सरल, सुगम, सुकर,
सुमाध्य ।
- सहला(रा)ना, कि स (हि-सहर = वरि
अथवा अनु०) मृद् (क प मे), घृष (भा
प से) । म पु अगमर्दन, सवाहनम् ।
- सहसा, अभ्य (म) अकस्मात्, एकपदे,
अकारट-टे, अकारित, लटिनि (सब अन्य) ।
- सहस्र, वि (स न) दशशत-नकम् । म पु,
दशशतसत्या २ तद्वोपवाकाश्च (१०००) ।

—कर, स पु (स) सहस्र, करिण रदिम, सूर्य ।
 —दल, स पु (स न) सहस्रपत्र कमलम् ।
 —नयन, स पु (स) सहस्र, नौचन नेत्र दृश् ।
 —नाम, स पु [स-मन् (न)] सहस्र नामयुत देवस्तोत्रम् ।
 —बाहु, सं पु (स) शिव, २ कातवीर्योऽङ्गुलं, नृपविशेष ३ वन्निनृपत्व ज्वेष्टमुन ।
 सहस्राशु, स पु (सं) धर्म ।
 सहस्राक्ष, स पु (स) द्यु २ विष्णु ।
 सहाइ ई, सं पु (स सहाय) महायक दे ।
 सहाध्यायी, स पु (म धिन्) दे 'सहपाठी' ।
 सहानुभूति, स स्त्री (स) समवेदन ना, समदुःख(वि)ता २ समदुःखसुखना ।
 —करना या दिव्याना, कि अ, महादुर्भूति प्रकटयति (ना धा), प्रकाश (प्रे) ।
 सहाय, स पु (स) सहाय, दे २ सहायता, दे ३ आश्रय ।
 सहायक, वि (सं) सहाय, उप, क्लृप्-कारिण कारक, साहाय्यद अभिस्तर, अनु, वर प्लव २ उप-, (उ उपमन्त्री) ।
 सहायता, म स्त्री (सं) साहाय्य, उप, नार कून इति (स्त्री) २ अनुग्रह ।
 —करना, कि म, साहाय्य कृ, महायन भू, उपकृ (पक्षी के माय), अनुग्रह (कृ प से) ।
 सहारना, कि स (वि सहारा) दे 'सहना' २ धृ (धु), भृ (जु उ अ) ३ उत्तम-उपस्कम्भ । (कृ प से) । सं पु, दे 'महना' म पु २ धारण, उत्तममन, उपलम्भ ।
 सहारा, स पु (स सहाय >) दे सहायता (३) २ आश्रय अवलम्ब, अवष्टम ३ विधाम, प्रत्यय, विधम ।
 —देन, कि म, साहाय्य कृ उपकृ २ उत्तम् उपलम्भ (कृ प से) ३ शरण आश्रय दा, गुप् (स्वा प से) ४ सभाधाम् (प्रे) ।
 —इदना, मु, आश्रय प्रन्विष (द्रि प से) ।
 सहिजन, मं पु (म गौमानन) तीक्ष्णपथ, मु, तीक्ष्ण, सारिजन ।
 सहित, वि (म) समेत, युक्त, भगन, अन्विन, द 'साय' तथा 'सद' । कि वि, मार्क, मार्ध, मर्म, मद ।

महिष्णु, वि (स) सहनशील, दे ।
 सहिष्णुता, सं स्त्री (स) सहनशीलता, दे ।
 सही, वि (फा सहीह) सत्य, यथार्थ ७ प्रामाणिक ३ शुद्ध, निर्दोष ।
 सहीका, स पु (अ) ग्रन्थ, पुस्तकम् २ धर्म, ग्रन्थ पुस्तकम् ३ पत्रम् ४ प्रविका ।
 —सलामत, वि (हि+अ) स्वस्थ, नीरोग २ सपूर्ण, निर्दोष, सुखरहित ।
 सहूलियत, म स्त्री (फा) सुकरता, सुगमता २ शिष्टान्तर ।
 सहृदय, वि (स) समवेदना महानुभूति, युक्त २ दयालु ३ रमिक ४ भद्र, महाशय ५ मद-माधु, स्वभाव ६ प्रसन्नमनस्क, आनदिनु ।
 सहृदयता, स स्त्री (स) समवेदना, सहानुभूति (स्त्री) २ मजनता, सौम्य ३ रमि वनास्व ४ अनुग्रह, दयालुता ।
 सहजेना, कि स (अ सही+हि जचना) सम्यक् परीक्ष निरीक्ष (भवा आ से) सुष्ठु बोधयित्वा प्रतिपद (प्रे) -दा ।
 सहेलो, सं स्त्री (स सह+हेलन >) सलो, अग्नी कि (स्त्री), सगिनी २ परिचारिका, अनुचरी ।
 सहोक्ति, स स्त्री (सं) अर्थालंकारभेद (सा) ।
 सहोदर, म पु (मं) मोदर, सोदर्य, सहज, सगर्भ, समानोदर्य, भ्रातृ ।
 सह्य, वि (स) सहनीय, दे । स पु (स) सहायि ।
 साँई, मं पु (न स्वामिन्) प्रभु, इश, अधिकारिन् २ परमात्मन, परमेश्वर ३ पति, भर्तृ ४ यवनभिष्टु ।
 साकल, साकल, म स्त्री (मं शृङ्गला, दे) ।
 साकेतिक, वि (म) सनेतात्मन, लक्षणिक, सकेत, अम्बन्धिन् विषयक ।
 साय्य, म पु (स पु न) मह ४ कवि प्रणीतो दर्शनग्रन्थविशेष ।
 सागी, स पु, दे 'न्याग' ।
 सागरे, सं स्त्री (म शक्ति) वाद्य-य (दोनों स्त्री), अस्त्रभेद ।
 साग', वि (मं) सपूर्ण, सर्वोपयुत ।
 सागी, मं स्त्री (हि सांग) दे 'सागरे' २ शक्यवाहनमन, युग-न ३ सत्यधोवर्ति जाल्यम् ।

सामोपाग, वि (स) अगोपागयुक्त, स, पूर्ण, मग्न, समस्त ।
 साँच, वि (स मल्ल) अविशय, यथार्थ ।
 साँचा, स पु (स स्थत्) आफारमाधन, सम्भान, मत्यानपुर २ दे 'छापा' ।
 साँचे मे ढला होना, मु, सर्वांगसुदर (वि) दूर (म्वा आ मे) ।
 साँझ, स स्त्री (म मध्या) मायफल दे ।
 साँझर, म प दे 'साया' ।
 साँट, म स्त्री (अनु मट) मूक्षम-तनु-दड-याष्टि (स्त्री) २ कश 'ग ३ कष्टि-कशा-प्रदागविद्ध-नीच ४ कन्नी ।
 साठी, म स्त्री (हि गाठ का अनु) मूल धन दे 'पूर्ती' ।
 साड ड, स पु (म षड) श(ष)ड, गोपति, वृषभ, वृषभ २ दिवगनसृत्थामुत्स्रोटोऽति तो वृषभ इ वृषणाथ, वृषभ । वि, इडाग, बलिन् २ स्वैरिन्, दुराचारिन् ।
 साँड(ड)नी, म स्त्री (हि माड) उष्ट्री, दे 'ऊठनी' ।
 —सागर, म पु (हि +का) उष्ट्र, आरोह आरोडिन् २ उष्ट्र क्रमन्क, बाहक ।
 साँडा, म पु (म शयानक) कुकलाशे-म, कक-याद, प्रनिमूत, मरट ड, गोषिका, चिचकील ।
 सात, वि (म) अतवन्, नशर, नाशवत् ।
 सात्वना, म स्त्री (म) सात्व-स्वन, आ सगा, धारानं २ शम, शानि (स्त्री), इ प्रणय ।
 —देना, कि म, सा(शा)त् (सु), आ समा-भम् (रे) शोक शम् (प्रे) ।
 साद्र, स पु (म) वन २ राशि । वि (स) धन, निविड, सुसह्य ।
 साद्रता, स स्त्री (सं) निविडता, धनता इ ।
 साधिविघ्नहिक, स पु (सं) स्विधयुद्ध मत्रिन् ।
 साध्य, वि (स) सध्या, सम्बन्धन् विषयक, वैकालिक, वैकालीन ।
 सानिध्य, स पु (म न) सामीप्य, निकटता २ माधुमेद ।
 साप, म पु (स सर्प) मुज(च)ग, मुजगम, अडि, फण-वप, धर, व्याल,

सरीसृप, आशीविष, कुडलिन्, चक्षु श्वस, फणि, विलेशय, उरग, पन्नग, पवनाशन, दर्दिन् द्वि, जिह्व-रसन, पशकु, चक्रिन्, दद शूक, भोगिन्, गूढपाद-द, दीर्घपृष्ठ, निद्रग । (धम्बीवाला साँप) मातुलाहि, मातुधान । (धारीदार साँप) रावि(नी)क । (फनिधर साँप) भोग फण भूत् धर, फणिन्, भोगिन् ।
 —की राहर, मु, अहित शय्या ।
 —के मुँह में, मु महामन्दे ।
 —छट्टेदर की दमा, मु, द्वैधीभाव, दोला वृत्ति (स्त्री) सृष्टि ।
 —मुँघ जाना, मु मर्षण दश (कर्म), सृ (तु आ अ) ।
 सलेजे पर—लोटना, मु (शैयांदिमि) मनोऽल्पन सतप (कर्म) ।
 सापत्तिक, वि (स) आधिक दे ।
 सापिन, म स्त्री (हि साप) सपिगी, मर्षा, पन्नगी, उरगी, मुजगी इ ।
 साप्रत, अव्य (स-त) अधुनैव इदानीमेव, सय, सप्रति । वि (स) उक्ति, योग्य, २ प्रामाणिक, प्रास्ताविक ।
 साप्रदायिक, वि (म) शास्त्रागत, मप्रदाय धम-मन, नियन्त्र-मन्थिन २ परपरोप, क्रमा गत ।
 साव, स पु (स) श्रीकृष्णपुत्र ।
 साबर, म पु (स सावर) संविरोद्धव, रौमक, वसुक २ राजपुत्रस्थानप्रदेशे कासारविशेष ।
 सामुच्य, म पु (म न) दे 'सामना' (२) ।
 साँय साँय, म स्त्री (अनु) दे 'सनसनाहट' (१) ।
 साँवला, वि (म श्यामल) कृष्ण, श्याम २ श्यच्छ्याम, आरुण ३ कृष्णनील । स पु, श्रीकृष्ण २ पनि ३ प्रेमिन्, प्रणयिन् ।
 साँवलापन, म पु (हि साँवला) श्यामलता, श्यामता, आ कृष्णता, रूष्णनीलता ।
 साँवाँ, म पु (म श्यामाक) श्याम-मक, त्रिकीर्ण, अविप्रिय ।
 साँस, म स्त्री [स श्याम (पु)] उच्छ्वास, उच्छ्वसित, नि(नि)शाम, नि(नि)शसित, आन, आहर, एतन, असव प्राणा (दोनों पु बहु) २ दीर्घश्वास, निश्वास, उच्छ्वास ३ विराम, विश्राम ४ स्फोट, भग ५ श्वासरोग, दे दमा ।

—रुकना, कि अ, शाम निरुध् (कर्म) ।
 —लेना, कि अ, अन्प्राण्-श्वम् (अ प से) २ जीव (श्वा प से) ३ विश्रम् (दि प से) विरम् (श्वा प अ) ।
 —उखटना, मु (निधनकाले) कुञ्ज् कष्ट श्वम् ।
 —खीचना, मु, शाममन निरुध् (रु प मे) ।
 —चढ़ना या—फूलना, मु, सर्वेण प्राण ।
 —तक न लेना, मु, मौन आकल् (चु) ।
 —हहते, मु, यावज्जीव-वन, आश्रयो ।
 गहरी या खनी—लेना, मु, दीव श्वम् ।
 सामारिक, वि (म) एहिक लौकिक, प्राय चिक, व्यावहारिक ।
 सा, वि (म नदृश) सम, समान, सुख्य, सदृश २ दब, मात्र (उ बोध सा=मिधि दिव, किञ्चिन्मान) २ आ, इषत (उ काल सा=भा-इषत-कृष्ण) ।
 साइक्लोपीडिया, स स्त्री (अ) (विषयविशेष निरूपक) इहदप्रव २ विशदोक्ष ष ।
 साइत, म स्त्री (अ साभन) होरा, दे 'वदा' २ पल, क्षण ष ३ मंगलमुहूर्त, शुभलग्नम् ।
 साइनबोर्ड, म पु (अ) चिह्नपट्ट-दृम् ।
 साइन्स, म स्त्री (अ) विज्ञान, शास्त्र २ रामायणकनिष्ठान् भौतिकविज्ञान च ।
 साइजन्, म स्त्री (अ) उरध्वेपणाली ।
 साइं, म स्त्री दे पश्या ।
 साइम्, स पु (राम वा अनु) अश्व, मेवरु पाल् पालक-रक्षक, यत्नामिक ।
 साइसी, स स्त्री (हि मारस) अश्वसेवा अश्वसवकत्वम् ।
 साक, म पु, दे 'माग' ।
 साकाक्ष, वि (स) इच्छु, इच्छुक, आका क्षिन्, अभिलाषिन ।
 साका, म पु (स शान) सवत् (अव्य), द २ यशस् (न), वादि-व्याप्ति (स्त्री) ३ बीज, विह-स्मारण ४ आनक, प्रभाव ५ कीर्तकर कर्मन् (न) ।
 साकार, वि (स) आकारवत्, आकृतिवत्, रूपवत् २ रद्वल, मूर्त्त ३ मूर्तिवत्, वपुष्मत्, देहधारिन् ।
 साकारोपायना, म स्त्री (स) मूर्त्तान्भि ममुपजन, मूर्त्तपूजा ।

साकिन, वि (अ) नि,वासिन्, वास्तव्य ।
 साङ्गी, स पु (अ) सुरापविषक २ वल्लभ, प्रेमपात्र, दे 'माशक' ।
 साङ्गुन, वि (स) सार्धक अर्धवत् साभि प्राय, सप्रयोजन ।
 साकेत, स पु (स न) अयोध्या, दे ।
 साक्षर, वि (सं) शिक्षित, अधार, श अभिज्ञ ।
 साक्षात्, अव्य (म) पुरत, अग्रत, ममथ, प्रत्यक्षम् । वि, मूर्तिवत्, साकार, विप्रवृत्त । स पु, स-समा, गम, भेळ, समिलनम् ।
 —करना, कि स, साक्षात् कृ स्वचक्षुर्भ्यां दृश (श्वा प अ), निनेन्द्रिये अवगम् ।
 —कार, स पु (स) दे 'साक्षात्' । म पु २ प्रत्यक्ष, इन्द्रियार्थसन्निकर्षजं ज्ञानम् ।
 साक्षी, स पु (स क्षिम्) दे 'गवाह' २ दृष्ट, प्रेक्षक । स स्त्री, साक्ष्यम् ।
 साक्ष्य, स पु (स न) साक्षिता-त्व, दे 'गवाही' २ दूरग्रम् ।
 साख, स स्त्री (हि साका) प्रभाव, वश दं, आनन २ (इट्टे) प्रतिष्ठा, प्रत्यय, विषस नीपना ।
 साग, म पुं (स शाक-कं) जि(मि)मु, इ(हा रितक २ व्यजन, अत्रोरस्कर, दे 'भाती' ।
 —पात, मं पुं, शाकपत्रं, कदमूलं २ साधा रण नीरस, भोजनम् ।
 सागर, स पु (सं) समुद्र, दे २ महा, इद-नटाग (कम्) ।
 सागवान, स पुं, दे 'सागौन' ।
 सागू, स पुं (अं सीनो) •सागु, वृक्षभेद ।
 —ज्ञाना, म पुं (हि + का) •सागुज्ञान ।
 सागौन, स पु (सं शारवन) •गृहद्रुम, श्रेष्ठजाड, शाक, शाक, तरु-वृक्ष, अण ।
 साङ्ग, स पु (का, मि सं सज्जा) सामग्री, उपकरणं २ (अर्थ-) सज्जा-संसाह ३ वाय, वादित्र ४ अक्षरस्थ ५ सुपरिचय, प्रगाढ मन्वयम् । वि (का) वार २ प्रतिममाधात् । (उ पटीमात्-पटीकार, पटीप्रतिममाधात्) ।
 —वात, मं स्त्री, सुपरिचय ।
 —सामान, स पु, सामग्री, उपकरणं, परि च्छद २ दे 'टाटायाट' ।
 साजन्, स पु (सं सज्जन) मद्रजन, आर्यं, सत्पुण्य २ पति ३ वल्लभ ४ परमेधर ।

साजना, कि म, दे 'माना' ।
 साजिद्रा, सं पु (का) वाचवादिज, वादक ।
 साजिद्रा, स स्त्री (का) दे 'वद्यय' ।
 साज्ञा, स पु (स साहाय्ये) अशिता,
 भागिता, भागपरत्वं २ अज्ञ, भाग ।
 साज्ञी, म पु (हिं सज्ञा) दे 'साज्ञेदार' ।
 साज्ञेदार, म पु (हिं साज्ञा) अज्ञ, अशित,
 भागपर, अज्ञमित् ।
 साज्ञेदारी, स स्त्री (हिं साज्ञेदार) दे
 'साज्ञा' (१) ।
 साटन, स पु (अ सैटिन) *साटन, कौशेय
 वाचभेद ।
 साटा, म पु (देश) विनिमय, परिवर्तन ।
 साठ वि [स वष्टि (नित्य स्त्री)] स पु
 उक्ता सख्या तद्वोधकांकी (६०) च ।
 साठमं, वि (हिं साठ) वष्टितम-मी-म
 (पुं स्त्री न) ।
 साठा, वि (हिं साठ) वष्टिवर्ध ।
 साठी, म पु (मं वष्टिक-का) म्निग्धतडुल,
 वष्टिन ।
 साठी, सं स्त्री (स शाठी) नारीवस्त्रभेद ।
 सादमराते, सं स्त्री (हिं सादे+मा)।
 सादमतवर्ध (आम-दिवस) कतिनी शनिदिशा ।
 —आना वा—चदना, मु, दुर्दिनानि आपद
 (भवा प से) ।
 सादू, स पु (म श्यालीधन) श्यालीपति,
 श्यालशिव ।
 साद्रे, वि (म साधं) अध्वर्य ।
 साध, वि (स साधन्) सं पु, उक्ता सख्या,
 तद्वोधकाश्च (७) ।
 —गुना, वि, मस, गुण-गुणित ।
 —प्रकार का, वि, सप्त विध-प्रकार ।
 —कैरी, स स्त्री, दे 'साधर' ।
 —पाच, मु, साध, वाच्यम् ।
 —पाच करना, मु, श्रद्ध-वच् (प्रे), विप्रठम्
 (भवा आ ज) ।
 —पुत्यों से, मु, अनादिकालात् ।
 —समुद्र पार, मु, अति, दूर-दूरे ।
 सातवर्ष, वि (हिं सात) सप्तम-मी-म
 (पुं स्त्री न) ।
 सात्विक, म पु (स) वादवबोधविशेष,
 धीकृष्णमात्रवि ।

सात्विक, वि (म सात्विक) १३ सत्त्वगुण,
 मरुभिर् निष्पादित प्रधान ५ शुद्धात्मन्,
 निष्कपट, ऋजु, सरल । सं पु (स) सत्त्व
 गुणजा अष्टप्रकारा भावा (—स्वेद स्तमोऽथ
 रोमाव स्वरमगोऽथ वेपथु । वैवर्ण्यमश्नु प्रलय
 हत्यष्टौ सात्विका स्मृता, सा) ।
 साध, अव्य (सं सहित) सह, साक, साधं,
 सधं, एतीया से मी (उ क्रोध के साथ=कीपेन
 ३) म—-पूर्वक, -पुर मर (उ आदर के
 साथ=नादर, आदर, पूजक, पुर सर ३),
 मं, (उ साथ रहना=मकाम) । सं पुं
 सग, सगति (स्त्री) सहचार, साहचर्य,
 संसर्ग ।
 —का, मु, व्यजन, अज्ञोपस्कार ।
 —सूटना, मु, त्रिभिर् (दि प अ), व्यप
 ३ (अ प अ) ।
 —देना, मु, साहाय्य कर रक्ष (भवा प से)
 ३ सह या (अ प अ) ।
 —ही, मु, अर च, अन्यच्च, अपि च, कि च,
 —अतिरिक्तम् ।
 एक—, मु, युगपत्, समकाल-म्, यौगपद्येन
 ३ सभूय, मिलित्वा ।
 साधिन, म स्त्री (हिं साधी) सहचरी
 २ सती ।
 साधी, सं पु (हिं साध) सगिन्, सहचर
 ७ मित्र, सति (पु) ।
 सादगी, स स्त्री (का) साधुना, सरलता,
 आर्जव, निष्पापदर्श २ आलवरहीनता ।
 सादर, वि (म) सगौरव, सविनय । कि
 वि (स रं) सप्रश्रयं, सविनयम् ।
 सादा, वि (का-द) निष्कपट, निश्छल,
 सरल, ऋजु माया, रहित, निर्धर्म, शुद्धात्मन्
 २ अज्ञ, मूलं ३ श्रेत, रथ-वर्ण, हीन ५ अक्ष
 रानादिरहित, रेखाहरित ५ शुद्ध, केवल
 ६ अलकाररहित ७ विनीत-अनुद्धत, वैश(प)
 ८ अल्पावयव (वन्नादि) ।
 सादापन, स पु (का सादह) दे 'सादगी' ।
 सादि, वि (स) सारम्भ, सोपक्रम, आरम्भ
 उपक्रम, वच-युक्त ।
 सादिक, वि (अ) सत्य, वसाधं २ शुद्ध,
 दुष्टिरहित ।
 साहचर्य, म पु (स न) समता, समानता,
 साम्य, सह शता, तुल्यता ।

साध^१, स पु, दे 'साधु' ।

साध^२, स स्त्री (स उत्साह >) अमि
लाष, कामना, लालसा, वाञ्छा ।

साधक, स पु (स) स निष, पादक, समा-
पक, मिश्रकर, निर्वर्तयितृ २ तपस्विन्,
तापस, योनि ३ करण, साधन ४ परहित
कारिन्, परकायमहाय ५ भक्त, उपासक
६ भूतापसारक, दे 'ओसा' ।

साधन, स पु (म न) निष्पादन, विधान,
सपादन, करण, अनुष्ठान, समापन, निर्वर्तन
२ उपनयन, सामग्री ३ युक्ति (स्त्री),
उपाय ४ उपामना, पूजा ५ सहायता
६ धातुशोधन ७ कारण हेतु ८ धन
९ पदार्थ १० सिद्धि (स्त्री) ।

साधना, स स्त्री (स) सिद्धि निर्वृत्ति निष्पत्ति
(स्त्री) २ आराधना उपासना ३ अभ्यास
क्रियासातत्य, नित्यानुष्ठानम् । कि स (स
साधन) साध (स्वा प अ, प्रे), सिध
(प्रे साधयति) २ निवृत् सपद् समाप् (प्रे),
अनुष्ठा (भ्वा प अ) २ विनी (भ्वा
प अ) सिध (प्रे) ३ दम् (प्रे दमयति)
वशीकृ ४ अभ्यस (दि प मे) अभ्यास-
व्यवहार कृ ५ नियत्र (चु) अनुशाम् (अ
प मे) । स पु तथा भाव, साधन, निर्वर्तन,
स निष, पादन, अनुष्ठान विनयन, दे 'साधक',
'साधन' इ ।

साधर्म्य, स पु (म न) मधमनास्व समान
तुल्य धमना गुणता ।

साधारण, वि (स) सामान्य, विशिष्टता-
रहित, प्रायिक प्राकृत मध्यम अवर २ सुकर,
सुसाध्य ३ सावर्जनिक सर्वजनीन ४ सदृश,
सुख्य ।

—धर्म, स पु (स) सार्जनिधर्म २ चातु-
र्वर्ण्यस्य सामान्यधर्म ।

—स्त्री, स स्त्री (सं) वेदया ।

साधारणत, अव्य (स) सामान्यत, प्रायश,
प्रायेण, बहुश (मत्र अव्य) ।

साधारणतया, अव्य (म) दे 'साधारणत' ।
साधारणता, स स्त्री (स) सामान्यता,
विशिष्टताऽभाव साधारण्यम् ।

साधु, स पु (म) स्यात्स्विन्, परिभाजक,
महात्मन, तापस, मुनि, यति २ सत्युष्ण,

सज्जन, आर्य ३ अभिमान, कुलीन । वि
(म) भद्र, उत्तम श्रेष्ठ २ यथार्थ, मत्स्य,
अविनाश ३ प्रशसनीय, स्तुत्य, ४ निपुण
५ अर्ह, योग्य ६ उचिन, युक्त ।

—वाद, सं पु (स) साधु, वचन-उक्ति
(स्त्री), शास्त्रिक वचनम् ।

—साधु, अव्य (स) धाय धाय, सम्यक्-
सम्यक, शोभन शोभन, वर वरम् ।

साधुना, स स्त्री (स) सज्जनता, श्रेष्ठता,
भद्रता आर्यता २ मरलता, आजव ३ ४
साधु, चरित धर्म ।

साधू, स पु, दे 'साधु' ।

साध्य, वि (सं), निष्पादनीय करणीय,
अनुष्ठेय, समाप्तव्य २ शक्य, सम्भाव्य, सम्भव-
नीय ३ सुकर, सुगम ४ प्रमाणयितव्य,
सात्यापयितव्य, उपपादयितव्य ५ प्रतिशरारह,
प्रतिवार्य ६ श्रेय । स पु (म) देवता
२ गणदेवताभेद ३ साधनीयपदार्थ (ग्या) ।

साध्यम्, स पु (म न) भव २ व्याकुलता ।

साध्वी, स स्त्री (स) सती, सचरित्रा २ पति-
व्रता परावणा ।

सानद, वि (स) प्रहृष्ट, मुदित । कि वि (स
न) मकुञ्जल, सहर्षम् ।

शान, स पु (स शाण) शाणी, शाणारमन् ।

—देना, क्रि स, निज् (प्रे), नि, शो (दि
प अ), तीक्ष्णीकृ, श्यु (अ प मे) ।

सानना, क्रि स (हि सनना, स सधा मे)
मदनेन समिध् (चु), इस्तान्वा मृद (क
प से, प्रे)-सपोड (चु) २ मलिनयति,
कतुपयति-कलवयति (ना धा) ३ सतिप्
(प्रे), मवध (क् प अ) ।

सानी^१, स स्त्री (हि सानना) *मित्ताजम् ।

सानी^२, वि (अ) द्वितीय, अपर २ तुल्य,
समान ।

ला—, वि (अ) अद्वितीय, अनुपम, अप्रतिम ।

सापन्व्य, सं पु (सं न) सपत्नीभाव, सदा
रत्वम् । (सं पु) सपत्नीसुत २ शत्रु ।

साक्र, वि (अ) स्वच्छ, निर्मल दे । २ शुद्ध,
वेबल ३ निर्दोष, शुद्धिहीन ४ स्पष्ट, विशद
५ द्रव्य उज्ज्वल, भास्वर ६ निष्पद,
निश्चल ७ सम, सम-नल रेत ८ निर्विघ्न,
निर्बाध ९ अवाश्रयण्य, श्रेयारहित । कि वि,

निष्कलंक निरपवाद २ प्रच्छन्नं, निमत
३ हानि क्षति विना ४ अत्यन्त निर्नात
५ निराहारम् ।

—करना, कि म, प्रक्षल (चु) प्रमं, मृत्
(अ प मे, प्रे), भाव (भ्वा प मे, चु),
निगिञ्ज (जु उ अ) २ शुभ (प्रे), पू
(क् उ मे), पवित्रीकृ ३ (शृणुदिक)
निस्तु शुभ् (प्रे)-अपाकृ ।

—गो, वि, स्पष्ट-यथार्थं, भाविन्-वादिन् ।

—गोई, स स्त्री स्पष्ट-यथार्थं भाविता-वादिता ।

—दिल, वि (म + का) श्रुत् मरल,
निष्कण्ट ।

—साक, अव्य, स्पष्टन प्रकटम्, प्रकाशम्
स्पृष्टं, व्यक्तम् (मर अव्य) ।

साफल्य, म पु (स न) सफलता दे
२ लाभ ।

साफा, म पु (अ साफ) उष्णीष प
शिरोवेष्टनम् ।

साम्नी, मं स्त्री (अ माफ) गालनी ।

साधन, म पु, दे 'साधुन' ।

साधर, मं पु (म शवर) मृग भेद २ शवर
चमन् (न) ३ वातशृगचमन् (न) ।

साधिक, वि (अ) पुरण, पुरातन, पूर्व,
प्राचीन, प्राक्कन ।

साधिका, म पु (अ) व्यवहार, मवप
२ परिचय ।

साधित, वि (अ) प्रमाणित, सिद्ध दे ।

साधु(व्)न, वि (फा मवृत्) सपूर्ण, समस्त,
पूर्ण २ निर्दोष ३ स्थिर ।

साधुन, म पु (अ) फेनल, स्वफेनम् ।

साधुदाना, म पु दे 'साधुदाना' ।

सामानस्य, म पु (स न) औचित्यं, योग्यता
२ उपयुक्तता ३ अनुकूलता ४ आनुकूल्य,
आनुरूप्यम् ।

सामत, स पु (स) वीर, मट, बोध,
२ नायक, गणाधिपति ३ क्षेत्र, पति
स्वामिन् ।

साम, सं पु [स मन् (न)] सामवेद
२ गेयवेदमंत्र- ३ प्रियवाक्यादिभिः सात्वन्,
मधुरभाषणं ४ उपायभेद (राजनीति) ।

—वेद, स पु (स) आर्वाणां प्रमिदो धर्म
शंखविशेष ।

सामक, स पु, दे 'सार्वा' ।

सामग्री, मं स्त्री (स) उपकरणानां, ममार,
माधनसमूह, आवश्यकद्रव्याणि (न बहु)
२ परिच्छन्, उपस्तर ।

सामग्र्य, म पु (म न) ममप्रता, पूर्णता,
समष्टि (स्त्री) २ अनुचर-मेवक, वर्ग
ममुदाय ३ उपगगनमग्रह ४ कीर्ण ५
परिच्छन्, उपस्तर ।

सामना, म प (दि सामने) अग्र पूर्व, भाग,
मुरा २ म(ममा)गम, सम्मिलन, दर्शनं,
सामुख्यं ३ विरोध, विपश्चना ।

—करना, कि स, विप्रतिन्धू (रु उ अ),
प्रत्यवस्था (भ्वा आ अ) बाध (भ्वा
आ से) ।

सामने, कि वि (म ममुसे) अग्रत, अग्रे,
पुर, पुरत, ममध, अभिमं, सुप-मुवे २ उप
रिधनी, विद्यमन्नाया ३ तुलनायां, प्रतियो
गिनया, विद्मन् ।

—आना या—होना, कि अ, अभि-सं, सुस्त्री
भू, ममुसं स्था (भ्वा प अ) ।

—करना कि म, अग्रे पुरत स्था (प्रे),
ममश्च नो (भ्वा प अ) ।

—से, कि वि, अग्रत, पुरस्तान, पुरत ।

आमने—, कि वि (अन्योन्यस्य) ममुप-ने,
मुसामुगि, प्रतिमुसाम् ।

सामयिक, वि (म) कालिक [—स्त्री (स्त्री)]
काल-ममय, विषयक २ साप्रतिक, इदानींतन,
आधुनिक, वर्तमान ३ ममवोचित, कालानुरूप ।

—पत्र, म पु (मं न) समाचारपत्र, दे ।

सम—, वि (स) समकालीन, दे ।

सामर्थ्य, म पु स्त्री (म न) धीशक्ति
(स्त्री), योग्यता, कार्यक्षमता २ बल, शक्ति
(स्त्री) ३ तेजम् (न), पराक्रम ४ शब्द
मवप (भ्वा) ।

साम्राजिक, वि (म) सामुदायिक, समाज
जनसभ, सवधिन्-ममान ।

सामान, स पु (फा) दे 'सामग्री' (१२) ।
यत्राणि, उपकरणानि (दोनो न बहु) ४ दे
'प्रवध' ।

सामान्य, वि (म) दे 'साधारण' । स पु
(स न) सादृश्य, ममानता २ साधारण, धर्म
गुण (वैशेषिक) ३ अर्थात्कार भेद (सा) ।

—वनिता, स स्त्री (म) वेदवा, वारणना ।
सामान्यत, कि वि (स) दे 'साधारणत' ।

सामान्यतया, किं वि (म) दे 'साधा
रणतया' ।

सामित्री, स स्त्री, दे 'सामयी' ।

सामीप्य, सं पु (स न) साभिध्य, नैकत्व
२ मुक्तिभेद ।

सामुदायिक, वि (म) सामूहिक, सामवायिक ।

सामुद्रिक, सं पु (स न) *तनुचिह्नविज्ञानम् ।

वि (म) सामुद्र, ममुद्रीय ।

साम्भ, सं पु (स न) समता, समानता,
तुल्यता ।

—वाद, सं पु (स) समाज-समष्टि, वाद,
पाश्चात्य सामाजिकसिद्धातविशेष ।

साम्राज्य, सं पु (स न) आधिपत्य, आधि
राज्य, पूर्वाधिकार, दशकशाधिपत्य २ महा
विस्तृत-राज्य विषय-राष्ट्रम् ।

सार्ध, किं वि (स) दिनाते, सायकाले ।
स पु, दे 'सार्धकाल' ।

—काल, सं पु (म) सायङ्क, साय-य,
सायमव्याममय, रजनीमुलं, प्रदोष, दिवस
दिन, अत अवसान, मध्या, वि वै, काल ।

—कालीन, वि (म) सायतन (—नी स्त्री),
साय, प्रादोषिक वैकालिक (—वी स्त्री), सायभव ।

—सध्या, स स्त्री (म) परिचमा मध्या ।

सायम्, स स्त्री, दे 'सायम्' ।

सायन, सं पु (स) श्पु, बाण २ छटग ।

सायण, सं पु (म) चतुर्वेदभाष्यकारो माय
णपुत्र ।

सायत, स स्त्री, दे 'सारत' ।

सायवान, सं पु (का माय वान) प्रघ(पा),ण,
अह्नि २ *नृणप्रकटदिस, *प्रच्छायवत् ।

सायल, सं पु (अ) प्रदत्त, क(वा)र-वन्त,
प्रह, पृच्छव २ याचक, भिक्षु ३ प्राधिन्,
आवेदन ४ पद-आकाशिन-अन्वेषिन् ।

साया, सं पु (का-यह) दे 'छाया' ।

सायुज्य, सं पु (सं न) एकीभाव, ऐक्य,
माह्व्य २ मुक्तिभेद ।

सारग, सं पु (सं) मृगभेद २ मृग
३ वाद्यभेद ४ रागिणीभेद ५ धनुम् (न)
६ श्पु ७ मर्व ८ रायी ९ रमणी १० खटग
११ मंत्र १२ खग १३ मयूर १४ हस्त
१५ चानर १६ ज्रमर १७ सागर
१८ वमन १९ चद्र २० खाट्टण, इ ।

—साणि, सं पु (सं) विष्णु ।

—लोचना, स स्त्री (स) मृगलोचनी,
हरिणाक्षी, कुरगाक्षी, मृगनयनी ।

सारगिया, सं पु (सं सारणी) सारग(गी)-
वाद्यम् ।

सारंगी, स स्त्री (सं) शारंगी, सारग,
पिनाकी, वाद्यभेद ।

सार, सं पु (सं पु न) तत्त्व, मुख्यार्थ,
स्थिरार्थ, मूल, मूलवस्तु (न) २ भाव,
तत्पर्य, निष्कर्ष, पिहित निष्कृष्ट निर्मलित,
अर्थ ३ मञ्जा, अस्थि, अ-सम्भव स्नेह-नेत्रस्
(न) । (सं पु) रस, द्रव, निर्याम
२ सङ्घेप, मग्नह ३ शक्ति (स्त्री), बल ४
वीर्य, पराक्रम ५ वज्रक्षार ६ वायु ७ रोग
८ पाशक ९ दध्युत्तर १० अर्थालंकारभेद
(सा) । (सं न) जल २ धन ३ नवनीत
४ अमृत ५ लौह ६ वनम् । वि (सं) उत्तम,
श्रेष्ठ २ दृढ, बलवत् ३ -वाच्य, धर्म्य ।

—सर्भित, वि (म) तत्त्वपूर्ण, सार, युक्त वन् ।

—सर्जित, वि (न) निस्तार, तत्त्वहीन ।

सारथिर्षी, सं पु (स थि) सूत, हयनप,
नि, यत्, नियामक, शत्रु, प्राजित्, दक्षिणस्थ,
रथ, नागर-नुडंनिन् ।

सारथ्य, सं पु (सं न) मरलता, दे ।

सारस, सं पु (सं) पुथराज, लक्ष्मण,
लक्षण, कामिन्, रमिक, सरसीर २ हस्त
३ चद्र । (सारमी स्त्री) ।

सारस्वत, सं पु (सं) ब्राह्मणजातिभेद
२ व्याकरणग्रन्थविशेष । वि (सं) सार
स्वतीय ।

साराश, सं पु (सं) सार, निष्कर्ष,
पिहितार्थ २ अभिप्राय, आशय ३ परिणाम,
फल ४ उपमहार ।

सारा, वि (सं सर्व) सपूर्ण, समग्र, समस्त ।

सारिका, स स्त्री (सं) सारी, शारीरिका,
चित्रलोचना, पीतपादा, कन्दप्रिया, मधु
रान्पाया ।

सारूप्य, सं पु (सं न) तुल्य, सम-म एव,
रूपता, तुल्यता, समता २ मोक्षभेद ।

सार्ध, वि (सं) सार्ध, सामिप्राय २
समान तुल्य, अर्थेन अधिन् (शब्दार्थि) ३
धनिन्, धनाढ्य । सं पु (सं) धनाढ्य,
धनिर २ यात्रि-यात्रिन, गमूह-समुदाय

३ तीर्थयात्रिणा (बहु) ४ पण्णाजीव ,
साधिका, व्यापारिन् ।

सार्धक, वि (म) सार्धं, अर्थ, वस्तुयुक्त-पूर्वां
२ मन्त्र, पूर्णराम ३ शुभकारिन्, उपयोगिन,
हिनन् ।

सार्धकता, म स्त्री (म) अर्धवत्ता २ मफ
रत्ना, मिट्टि (स्त्री) ।

सार्धक, म पु (मं शार्धक) मिह ।

सार्धकालिक, वि (म) सार्धकामविक,
शासनिक ।

सार्धनिक, वि (मं) सार्धनिकिन, म(मा)-
वञ्जनन सार्वलौकिक ।

सार्धनिक, वि (मं) सार्धन, सार्वव्यापिन् ।

सार्धनिक, वि (मं) सार्धनिक, दशविषयक ।

सार्धभौतिक, वि (म) सार्धभौतिक ।

सार्धभौम, म पु (म) सार्धभौमिन्, नृपाम्नी,
सर्वभूमीश्वर, एतन्नमन । वि (म) सार्धभौमिन्
भूमिदशविषयक ।

सार्धलौकिक, वि (मं) सार्धलौकिकमन्त्रिन्
२ सार्धभौम ।

सार्ध, म पु (म) सार्ध, चारणा, अग्नि
वत्सम, सार्धनियाम ।

सार्ध, म पु स्त्री (हि सार्धना) गिह,
विश्वर १ व, अत ३ पीडा, व्याधा ।

सार्ध, म पु (का) द 'वर्ष' ।

—गिरह, मं स्त्री (का) वृत्त, दिन दिवस,
नववर्षारम्भ ।

सार्धग्राम, म पु, दे 'सार्धग्राम' ।

सार्धन, मं पु (म सार्धना) सार्धन, दे
'सार्ध' ।

सार्धना, वि म तथा क्रि अ (सं सार्धना)
दे 'सुमाना' तथा 'सुमन' ।

सार्धममित्री, म स्त्री (अ सार्धम + मित्री =
मिस्र देश वा) सुधान्त्री, वीरकदा, अमृतात्था ।

सार्धमा, मं पु (अ सार्धमैरिहा) रत्नशो-
भयस्वयमेद ।

सार्धा, मं पु (म सार्धा) सार्धार्थ्य,
अत्मवीर बन्धी, पत्नीभ्रष्ट ।

सार्धाना, वि (का) सार्धिक, दे ।

सार्धिक, वि (अ) सार्धिक, पन्थ, अत्रग,
सन्नि, सार्धिक ।

सार्धियमित्री, मं स्त्री, दे 'सार्धममित्री' ।

सार्धिम, वि (अ) सार्धिम, मं पु, अत दत्त,
अशुन ।

सार्धिस, सं पु (अ) सार्धिस, मध्यरथ,
प्रमत्तपुरुष ।

सार्धिम, मं स्त्री (अ) सार्धिमथ्य, निर्गम
२ दे 'सार्धिम' ।

सार्धि, म स्त्री (म सार्धि) सार्धि,
वेत्तुविना, पत्नीममिनी, (गी) सार्धि,
सार्धि, (बटी) कुटी ।

सार्ध, स पु (देश) सार्धि रत्नशोभेद ।

सार्धिनी, मं पु, दे 'सार्धिनी' ।

सार्धिपान, वि (मं) सार्धिपान, दत्तशोधन,
सनाहित, तत्र प्रमत्त, सार्धि, सार्धि, दश ।

—करना, वि न, सार्धि (पु) सार्धि (मं) ।

—होना, वि अ, सार्धिपान सार्धिपान-सार्धि
(वि) म् २ अर्था (सु उ अ), मनो
सुच (पु) ।

सार्धिपानता, म स्त्री (म) सार्धिपान, सार्धि,
जगत्सुखा, मनायाग, अग्निनिवेश ।

सार्धि, म पु (म सार्धि) नम, नमस्
(पु), सार्धि ।

—सार्धि, म स्त्री, सार्धिनी मननवृत्ति
(स्त्री) ।

—हरे न सार्धि मूर्ते, सु, सार्धिपानदशा,
सार्धिपानता ।

सार्धिनी, म स्त्री, दे 'सार्धिनी' ।

सार्धिनी, म स्त्री (म) सार्धिनी २ सार्धिनी
३ सार्धिनी पत्नी ४ सार्धिनीपान ५ दश
कथा, धर्मस्य पत्नी ६ सार्धिनीपान नृपस्य पत्नी
७ सार्धिनीपान ८ सार्धिनी ।

—सार्धि, म पु (मं न) सार्धिपान, दे ।

सार्धिग, वि (सं) सार्धिगुण ।

—सार्धिग, म पु (म) सार्धिगान, सार्धिग
नमस्कार, दे 'सार्धिग' ।

—सार्धिग, सु, दूत सार्धि (म् प अ) ।

सार्धि, स स्त्री (मं सार्धि) सार्धि (स्त्री),
२ सार्धिपत्नी, सार्धि (स्त्री)-सार्धिनी ।

सार्धिनी, स स्त्री (मं) सार्धिनी ।

सार्धि, म पु (म सार्धि) सार्धि, सार्धि, अर्थ
२ सार्धि, सार्धि ३ सार्धि, सार्धि ।

सार्धि, म पु, दे 'सार्धि' ।

सार्धिम, मं पु (सं न) सार्धिम, निर्मिता,
सार्धिपान, सार्धि, धर्मस्य २ सार्धिम, सार्धि अर्थ

हरण ३ कुक्कुट ४ दण्ड ५ क्रूरता, निर्दयता
६ ब्रह्म-वीर, क्रमन् (न) ७ परदारगमन
८ बलरकार ९ दह १० अथ धन, दण्ड ।

साहस्यक म प (म) विक्रमदित्य,
शालि ।

साहस्यिन्, म पु (म) साहसिन्, आतन
यिन, कपोषन ० कुटक, दस्यु ३ परत
व्यग परदारगमिन् । वि (सं) साहसवत्,
पराक्रमिन् वीर २ निर्भीक, प्रगल्भ
३ मिथ्या, अभिनु-वदिन् ४ परुषभाषिन्,
बद्धवन् ५ हठकारिन् ।

साहसी, वि (म निन्) दे 'साहसिक'
वि (३२) ।

साहाय्य, म पु (म न) सहायता, दे ।

साहित्य, स पु (म न) वाङ्मय, सारस्वत
ग्रन्थसमूह मरणि (स्त्री), सलिलन,
मद्य ३ ४ साहित्य अलंकार, शास्त्र ।

साहित्यिक, वि (म) साहित्यभूषिन्, वाङ्मय
विषयक स पु, साहित्य, मेवक, मेविन् ।

साहिब, म पु (अ) मित्र, सुहृद् २ प्रभु,
स्वामिन् ३ परमेश्वर ४ महाराज, औमय
५ श्वेतवर्णो वैदेशिक ।

—इत्रवाल, वि (अ) सपत्न, सपृद्ध ।

—फादा, म पु (अ + का) पुत्र, लज्जान ।

—दिमाग, वि (अ) धी-कुण्डि, मय ।

—सलामत, म स्त्री (अ) मिथ प्रणाम,
पारस्परिकनमस्कार ० परिचय ।

साहिबा, म स्त्री (अ) स्वामिनी, इधरा-री
३ आर्था, गुलागता ३ देवी, भद्रिनी ४ अत्र
त्र भवती, भद्रा, भवती, आननी ।

साहिल, म पु (अ) वेला, लघु टम् ।

साही, म स्त्री (म साहवी) शल्य, शल्यक,
शक्ति, कच्छपाद, शल्यभृग, विलेशय,
सेदार ।

साहुह, म पु (म मपु) सज्जन, आय,
भद्रमनुष्य २ कुमीरि-दिन्, वाङ्मयिक ।

साहु(ह)ल, स पु (का साहुल) लक्ष,
श्वेतोत्तमम् ।

साहुकार, म पु (हि साहु) धनिक, धनाप
२ संप्रदाह, सार्थिक, श्रेष्ठिन् ३ कुमीरिन्,
वाङ्मयिक ।

साहुकारी, म पु (हि साहुकार) वृद्धि,
वीरन-वीरिका ३ अर्थव्यवसाय ३ अध्यापन ।

साहुकारी, स स्त्री (हि साहुकार) दे
'साहुकारा' (१२) ।

सिगा, स पु (स श्ग >) दे 'नरनिहा' ।

सिगार, स पु (स श्गार दे) ।

—दान, म पु (हि + का) शृङ्गारधन,
श्रृङ्गारधनपिठकम् ।

—हाट, स स्त्री, शृङ्गारहृत्-वेरयापन ।

सिगारिधा, सं पु (हि सिगार) शृङ्गारकार,
प्रमाथक ।

सिगिया, सं पु (स श्गिय) विषमेद ।

सिगौटी, स स्त्री (हि सौग) (वृषादीनां)
शृङ्गारणम् ।

सिगौटी, स स्त्री (हि सिगार) दे 'सिगा
रदान' ।

सिघ, म पु, दे 'सिंह' ।

सिघण, म पु (स न) सिघाम्, सिघनी
सिघाकम्, नाभिकामन् २ अयोमल्ल-कं,
अयोरम ।

सिघादा, सं पु (स श्घाट टक) सशुभिका,
जलवति, कटक-कुम्भक, म, बन्द-मूल,
गुत्तलुम्भ ।

सिघासन, सं पु, दे 'सिघासन' ।

सिघाई, म स्त्री (हि सीघना) सिक, मेचन,
नलप्लावन, सिकि (स्त्री) २ अभिघ्न,
उक्षय ३ मेचन प्रोक्षण, मृत्ति (स्त्री) मृत्त्या ।

सिघित, वि, दे 'सीघाहुआ' ।

सिडिबेट, स पु (अ) व्यापारमिति
(स्त्री) व्यवहारमय २ विरवित्तालय
प्रवचनमिति (स्त्री) ।

सिदूर, सं पु (सं न) सीरुतक, मरत्य,
गणेशभूषण, शृङ्गारक, सीमाय, नाग, ज
संभवनाभे, अर्ण, शोण, रक्तम् ।

सिदूरिया-री, वि (स सिदूर >) शोण
सिदूर, वर्ण ।

सिध, स पु (स सिधु) सिधुजेल, भारत
वर्षत्य प्रायविशेष । सं स्त्री (सं पु) पर
नदप्रायवित्तविशेष ।

—सागर, सं पु (स सिधुसागर) सिधु
विनलमप्यवतिप्रदेश ।

सिधी, सं स्त्री (हि सिध) सैधवी, सिधुदांत
अथा । स पु, सिधु देशीय-वादिन्, सैधवा
(प्राय बहु) २ सैधव (घोडा) ।

मिडु, स पु (स) मागर २ नद ३ नद विशेष ४ प्रातर्विशेष, मिधुमेल ।
 —स्त्रिया, म स्त्री (स) मिधु-जायला, लक्ष्मी (स्त्री) ।
 —पुत्र, स पु (स) चद्र ।
 —माता, म स्त्री (म वृ) सरस्वती (नदी) ।
 मिधुर, म पु (म) गज, द्विप ।
 —वदन, म पु (सं) गजवन, गणेश ।
 मिधोरा, म पु (म मिद्र >) मिद्रपुट ।
 मिह, म पु (सं) हरि, हर्षध, गृग, राज इन्द्र अभिष, पञ्च-आस्य शिव मुस, केश(म रित्), महा, नाद-वीर, नरिय, कथाद २ लेख, पञ्चमराशि (ज्यो) ३ वीर श्रेष्ठ (३ पुरुषमिह) ४ दे 'मिक्त्' ।
 —के(रा)मर स पु (म पु न) मट्टा २ खुल्लवृक्ष ।
 —नाद्र, सं पु (म) मिह, गजत गर्जना ज्वनि २ ह्वेदा, रणोत्साहव्रव ३ नि शक्य वनम् ।
 —पौर, स पु (म + हि) मिहवार, प्रवे शनम् ।
 मिहनी, स पु (हि मिह) नयिनी, मिही, पचमुत्पी ।
 मिहल, स पु (म) स्वगदीप-य (मीनोन या लका) ।
 सिहली, वि (स मिहल >) मंहल २ मिहल वामिन् ।
 सिद्धान्तोक्त, - पु (स न) सिद्धान्तोक्ति २ पूर्व, अनुदशन-वृत्तान्तविमर्श ३ पद्यरचना रीतिभेद ।
 सिद्धान्त, म पु (म न) गृप-राज, आमनम् ।
 —पर घटना, क्रि अ, सिद्धान्ते उपविश (हु प अ), राज्ये अभिषिच् (कर्म) ।
 —से उतारना, क्रि स, राज्यात् भश् च्यु (प्रे) ।
 सिद्धान्त, म स्त्री (म) राहुभाट्ट, राक्षसी विशेष ।
 —सूनु, स पु (स) संहिव, रय, राहु ।
 सिद्धिनी, म स्त्री दे 'मिहनी' ।
 सिद्धी, म स्त्री (म) दे 'मिहनी' २ सिद्धि ३ शय, वायभद्र ।
 सिद्धार, म पु (म श्यात्) दे 'गार' ।
 सिद्धचौवन, म स्त्री (वा) दे 'शिद्धचारा' ।
 सिद्धी, सं स्त्री (म. श्रुत्वा) द्वार-प्राद,

श्रुत्वा, दे 'कुटी' २ गल्भूपणभद्र ३ कानी, मेगला ।
 मिहता, सं स्त्री (सं बहु) बालुका (स्त्री बहु), दे 'रित्' २ अरमरी, दे 'शरी' ३ शकरा, निता ।
 —मेह, म पु (स) प्रमेहभेद ।
 मिहत्तर, म पु (अ मैत्रेरी दे) ।
 मिहलीगर, म पु (अ मैत्रा + का गर) दे 'मैत्रपर' ।
 मिहहर, म पु (म शिष्य + हर) शिष्य क्वा शिष (स्त्री), काव, दे 'लीता' ।
 मिहडन, म स्त्री (हि मिडुटना) मरीच वन आडुवन २ दे शिवन ।
 मिहडना, क्रि अ (हि मिडुटना) मकुच् (भ्वा तु प मे), आकुच् (भ्वा आ से, हु प से), मङ् (कर्म) २ वस्त्रिन् वन् (दि आ से) ३ अक्षी-म्यूनीभू ।
 सिहोडना, क्रि स (सं मरीचन) मकुच् (प्रे) मङ् (भ्वा प अ), आङ् (प्रे) २ मङ्गि (तु प अ), अक्षी ३ वस्त्रि (वि) रु । सं पु तथा भाव, मरीच-वन, सहरण, आकुञ्चन, मक्षप पण, अक्षीरक्षण ।
 मिह्वा, म पु (अ) टा-क, नाणक, मुद्रा २ पदकम् ।
 —जमाना या घैदाना, मु, शामन प्रभु-व-अविपत्य रथा (प्रे), वटा ट, अभिषा (भ्वा प अ) २ प्रताप प्रभाव प्रष्ट (प्रे) ।
 मिह्व, म पु (म शिष्य) अनेवामिन्, छात्र २ गुरुनानकमतानुयायिन्, *मिक्त् ।
 —मत्, म पु, शिष्य मिह्व, मत् मध्वाय -धर्म, जानकपय ।
 मिह्व, वि (न) अभ्युक्षिन् २ वृत्तमेचन, अर्द्र, निम्न, दे 'मीचिता' ।
 मिह्व, म स्त्री (स शिक्षा) उपदेश ।
 मिह्वलाना) मि स, व 'मीचिता' क प्रे मिह्वाना) रूपः ।
 मिह्वार, म पु (अ) तमागुवती (सं स्त्री) ।
 मिह्वार, म पु (अ) तमागुवती ।
 मिह्वार, सं पु (अ) प्रणाम, नमस्कार ।
 मिह्विनी, म स्त्री (अनु) दे 'गुनी' ।
 मिह्विपिटाना, मि अ (अनु) दे 'मिह्विपिटाना भूला' २ मिह्वर (भ्वा आ से), दोला

यते (ना धा), मदी (अ आ से) ।
 सिटी, म स्त्री (ङ) नगर-री, पुर-री ।
 सिट्टा, म पु (दिश) बणिश, मगरी, दे 'मुट्टा'
 तथा 'धाली' (अघ वी) ।
 सिट्टी, म स्त्री (अनु मीयना) बाणपाठकम् ।
 —पिट्टी भूलना, मु, व्यामुह (द प वे),
 विज्जन्य मूढ (वि) न्न (दि आ से),
 मन्नम् (स्वा दि प से) ।
 मिठनी, म स्त्री (म अक्षिण्ट >) वैवाहिक-
 गति (स्त्री), गणक्रीडिता ।
 सिद्ध, म स्त्री (हि निन्) उन्माद वातुलता
 २ दे 'पुन' ।
 —पिल्ला, म पु (हि मित्रो + विल्ला)
 उन्मत्त २ मूर्ख ।
 सिद्धी, वि (म शृणि >) उन्मत्त, वातुल
 २ दृढाग्रहिन ३ स्वेच्छागारिन् ।
 सितवर, म पु (अ) नाद्रपदाभिन आग
 लीयो नवमसाम ।
 सित्त, वि (स) दवेन शुक्ल ० शुभ्र, भास्वर
 ३ निमल, स्वच्छ । म पु (स) शुभ्रग्रह
 ० शुक्लपक्ष ३ मिता, शर्वरा ४ रजनम् ।
 —च्छद्, स पु (म) दम, मितपक्ष ।
 —भानु, म पु (म) मिताशु, चद्र ।
 मितम, म पु (का) अर्धन, पीन, नेष्ट्य,
 क्रौर्य ० अन्याय, अनीति (स्त्री) ।
 —गर, म पु (का) निष्ठुर, क्रूरवित्त,
 अनर्थकर २ अन्यायशील ।
 —डाना, क्रि म, पीट् (जु), अर्दं (भ्वा
 प ने, प्रे) ।
 मितरी-स्त्री, म स्त्री (स शीतल >) शीतल
 प्रस्वेद ।
 मितौ, म पु (का) स्थान, स्थलम् २
 निवास, स्थानम् ३ देश ।
 सिताशु, म पु (म) चन्द्र, मोम ।
 मिना, म स्त्री (सं) दे 'चीनी' २ दे
 'शकर' २ मक्षिना ४ चदिका ।
 —मंड, म पु (म) मधुशर्करा २ दे
 'मिनी' ।
 सितार, म पु (म मत्त + तार) वीणा, बल्लवी,
 विपंची, (मान तारोंवाण) परिवारिनी ।
 —याङ्ग, म पु (दि + ङ) वीणावादक ।
 मितारा, म पु (ङा र) नारा, तारका, मं,

नक्षत्र, रावित्र, उड्ड (स्त्री न) २ भाग्य,
 देव ३ अतिहार, वाद्यभेद ।
 —चमरुना वा बलद होना, मु, भाग्यम्
 उत् + इ (अ प अ), भाग्यपुण्य फल्
 (भ्वा प मे) ।
 सितोपल, स पु (म) कठिना, दे गङ्गिका
 (म पु) स्वदिक, सितमणि ।
 मितोपला, म स्त्री (स) शर्करा दे 'शकर'
 २ दे 'चीनी' ३ मितारुण, दे 'मिनी' ।
 सिद्ध, वि (म) निष्-मं, यत्र पादित, माभिन,
 अनुष्ठित, कृत ० प्राप्त, उपलब्ध ३ कृतकृत्य,
 मन्त्र ४ अतिशुद्ध, मुनिपुण्य ५ दिव्यशक्ति
 युत ६ योगविभूतिश ७ मोक्षाधिकारिव
 ८ प्रभागित, माभिन ९ निर्णय १० शोधित
 ११ अनुकूल १२ पक्व, शून्य, श्राण १३ प्र
 ग्यात १४ सञ्जी, भूत कृत, उपलब्ध, १५ प्र
 स्तुत, उपस्थित । सं पु (स) मुनि, श्रद्धि,
 पुण्यजन, योगिन्, महात्मन् २ देवयोनिभेद ।
 —करना, क्रि स, माध (भ्वा प अ या प्रे),
 मिध (प्रे, माधयति) सपद् (प्रे) २ मने
 वशीकृ ३ प्रमाणीकृ, मत्पाक ।
 —होना, वि अ, मिष् (दि प अ) स-
 निष्, पद् (दि आ अ) २ मने वशीकृ
 ३ प्रमाणीकृ (कम) ।
 —हस्त, वि (मं) प्रवीण, कुशल, पद्, निपुण ।
 सिद्धात, सं पु (सं) रादान, पूर्वपक्ष
 निरस्य स्थापित मत २ तत्त्व, मत, बाद ।
 —पक्ष, स पु (म) तर्कमगत-युक्तियुक्त,
 पक्ष मतम् ।
 सिद्धाती, म पु (सं दिप्) मोक्षार्थक, तार्किक
 २ शास्त्रविद् ३ सिद्धान्त नियम, मिध ।
 सिद्धार्थ, वि (म) आप्त पूर्ण, वाम, इतदृश्य ।
 स पु (म) गौतममुद्द ।
 सिद्धि, म स्त्री (मं) निष्पत्ति, समाप्ति
 (स्त्री), पूर्णता २ साफल्य, कृतकार्यता
 ३ योगना दिव्यशक्ति (स्त्री), विभूति (स्त्री)
 (योग वी आठ सिद्धियाँ —अणिमा रदिमा
 प्राप्ति प्राकाम्य महिमा तथा । ईशित्व च वसित्वं
 च सर्वकामत्वमायिना ॥) ४ समृद्धि (स्त्री),
 भाग्योदय ५ निर्णय ६ निश्चय ७ मोक्ष
 ८ नेपुण्य, दास्यम्,
 सिधाई, म स्त्री (हि मीधा) मरलता, श्रजुता,
 माग्य, आनंदम् ।

मिथारना, ि अ (स गिद्ध) प्रथा (भ्वा आ अ), प्रया (अ प अ) २ प्रइ (अ प अ), गृ (तु आ अ), दे 'मरना' ।
 सिन, सिब, म पु (अ) वयम्-अयुम (न) , दे 'उम' ।
 गिनक, ग खी (स मिहा/घाणक) नामा नामिका, अल्, मिण्(वा)ण, दे 'रेंट' ।
 सिनकना, कि स (दि गिनक) निपण सु (प्रे), नामिका शुष (प्रे) ।
 सिनेट, म खी, दे 'सीनेट' ।
 सिनेमा, म पु (अ) चलचित्र, गृह शाला, २ चलचित्रम्, विनपट ।
 सिन्धी, म खी (का शीरीनी) दे 'मिठाई' ।
 सिपर, म खी (का) सगररीट, सेटक, डाल, दे ।
 सिपाह, म खी (का) सेना, सैन्यम् ।
 —सिरी, म खी (का) बुद्धव्यवसाय, मैनिष्ठुति (खी) ।
 —सालार, म पु (का) प्रधान, सेनापति सेनानी चनूति ।
 सिपाही, म पु (का) मैनिक, योष, योद्ध, भट २ रावपुरष, शष्टिद्वड, धर, रक्षित, शान्तिरक्षक, रक्षापुरष ।
 सिपुर्दे, दे 'सुपुर्' ।
 सिप्रा, स खी (म) उज्जयिनीमभीपवदिनदी विशेष ।
 सिफ्त, स खी (अ) गुण, विशेषना २ लक्ष्ण ३ स्वभाव, धर्म ।
 सिफर, म पु (अ) शस्य, विदु, सम ।
 सिफारिश, स खी (का) गुणवर्णन, प्रशमन २ अनुशसा, परकार्यमिद्वन्द्वधमनुरोध ३ प्रशमा, पद-लेख ।
 —करना, कि म, प्रशस (भ्वा व से), गुणान् वर्ण (चु) २ परकार्यमिद्वच्छे अनुसूध (र अ अ), अनुशान (भ्वा व से) ।
 सिफारिशी, वि (का) गुणशलाविन्द प्रश सामक ।
 —टट्ट, स पु (का ँ हि) परप्रभावल्भ्या पिकर, परानुग्रहनिपुक्त, गुणहीन ।
 सिमन्ना, कि अ (स मदि) आकुच् मनुच् मनिप-मह (वर्म), मकुचित भू, दे 'मिकुन्ना' ।
 सिमेटना, कि स, दे 'समेटना' ।

सियापा, स पु (का सियाहपोह) सविलाप, मपरिदेवन-ना ।
 सियार, म पु (म श्यान्) चतुर, दे 'बीदह' ।
 सिर, म पु [स शिरम् (न)] शीर्ष, शीर्षक, मस्तक-क, मूषम् (पु), मीलि (पु खी), गुड-ड, उत्तमवर, अग, शिर २ अग्र, शिखर, शिला सातु (पु न) शृङ्गम् ।
 —कटा, वि, डित्र, शीर्ष मस्तक शिर ।
 —का धूमना, म पु, अ(आ)मर, अम मि (खी) वृष्णि (खी) ।
 —का दूद, स पु, शिर, शल् पीन, गिरो वेदना ।
 —के बल, कि वि, अनाकशिर, अथोशीर्षम् ।
 —गुधी, स खी, *शिरप्रथन आरोग्यसौद् वाहिनीतिविशेष ।
 —घटा, वि, दुर्लभित, अतिगन्धिन, दाम, उरिमक्त ।
 —सुडा, स पु, सुड, श्लक्केसु सुष्ठितशिर ।
 —आँखो पर होना, सु, शिरोधार्य(वि)वृत् (भ्वा आ से), महर्ष म्बीकाय(वि)वृत् ।
 —आँखो पर धैडाना, मु, अत्यन्त मत्क, अत्यर्थ मन्मभू (प्रे)-आह (तु आ अ) ।
 —उतारना या काटना, मु, शिर शिद्व (र प अ), मगतक छुर (तु प से), शिरक्षेद क ।
 —पना करना, मु, बन्धन तट (चु), पक्ष प्रह (भ्वा प अ) ।
 —चडाना, मु, वृप्त-वसित्त-अवसित्त विषा (तु व अ) २ अत्यन्त लब् (चु) ।
 —झकाना, मु, नम् (भ्वा प अ), अशिवद् (प्रे) ।
 —धुनना, मु, शुच (भ्वा व से) सशीर्षता दन रुद (अ प से) ।
 —नीचा करना, मु, वप् (भ्वा आ से), लज् (तु आ से) ।
 —पर, मु, मनीपये, निकट टे ।
 —पर खून सवार होना, मु, त्रिषामाविद्व (व) वृत् (भ्वा आ से), वधीषत(वि) भू ।
 —पर पटना, मु, आ-मदा पद (भ्वा व से), उपनम् (भ्वा प अ, पद्यो के माध) ।
 —पर लेना, मु, उचरदापित्त उररीक, भार स्वीक ।

- परस्त्री करना सु, अनु प्रतिपा (प्रे पालयति) सवृष (प्रे), साहय्य कृ ।
 —पीटना, सु दे 'मिग धुनता' ।
 —भारी होना, सु आ रेण घूर्ण्या वा पीट् (कर्म) = शिरोवेदना वृत् ।
 —भारना, सु, अत्यन्त प्रयत्न (भ्या आ मे) भूरि परिश्रम् (दि प मे) = मपरिश्रम अविप (दि प मे) विरि (स्वा उ ज) ।
 —मुँडाना, सु, परिजन (भ्वा प मे), सभ्यस (दि प से) ।
 —मुँडना, सु छर् (भ्या प से, पु), इत्नेन अपट्ट (स्वा प अ) ।
 —मक्रोद होना, सु, वेदा धवलीभू, पक्ति शीर्ष (वि) जन् (दि आ से) ।
 —से कफन बाँधना, सु, निषनोषन (वि) भू मरणाय मञ्जीभू ।
 —से पाँच तक, सु आमूलचूल, आपादशीर्षे, आनमशिराम् ।
 —होना, सु, मन्दायने (ना धा), कलहोषन (वि) भू ।
 विना—पैर का, वि, निराधार, निर्मूल २ असतक, अप्रामाणिक, असतत ।
 भिरका, स पु (का) शुक्ल, शौक्लिकम् ।
 सिरकी, स स्त्री (दि सम्बन्ध) शरकाट, क्षुरिकापत्र २ शरकांड शिखरिणी प्रतितीरा ।
 सिरजनहार, म पु (स सज्जन) सवृ, जगत्कर्तृ, विभाट्ट (सप्त पु) ।
 सिरताच, सं पु (दि+का) शिरीट २ मु(म)कुट दे = शिरोमणि, अघर्णा, पुरो, श्रेष्ठ, मुख्य, प्रधानम् ।
 सिरनामा, म पु, दे 'मरनामा' ।
 सिरपेच, म पु (का) उष्णीष प दे पगती ।
 सिरहाना, म पु (म शि+धन) शिरोधाम् (न), इत्वादीना शिरो-अण, भाग २ उपधान, सुराजिन, उपवह हृणं, उष्णीषे, कर्णिक, मधुरक ।
 मिरा, म पु (म शिरस) अन्, प्राण, अवि, मीमा २ कर्णं शीर्षे भाग, शिवा, शिरस २ अत्य मनिम भाग ४ आद्य ऋदिग, भाग २ अद्य, भयभाग ६ अणा णि (स्त्री) अत्रि ऋदि (स्त्री) ।
 सिरिन, सं स्त्री (अ) शृंग न, दे 'पिववारा' ।

- सिरोपाव, स पु (स शिर पाद) समान वेश प ।
 सिरोही, सं स्त्री (देश०) मिरोहीनगर निर्मित राडग, शिरोनी ।
 सिक्र, वि वि (अ) दे 'केवल' ।
 सिरि, वि, दे 'सिडी' ।
 सिल, मिला, सं स्त्री (मं शिला) पाषाण, प्रस्तर, उपक २ शैल, शिल्पोद्य, महा प्रस्तर २ शिला, पट्ट फलक ।
 —बट्टा, स पु, शिलावटक, श्लेषगपाषाणी (दि) ।
 मिलना, कि अ (दि सीना) सिव् (कर्म) ।
 सिलपट, वि (म शिलापट्ट) सम, ममम्भ, सपाट ।
 सिलपट्टा, स पु (स शिला+वटक) शिलावटकनी, शेषग, पाषाणी प्रस्तारी ।
 मिलवट, स स्त्री (दि मिलना) वलि (स्त्री), वल्लभंग, पुटनिहम् ।
 सिलवाइ, सं स्त्री (दि मिलवाना) मीवन मेवन म्पूति, मनि भृत्या कर्मण्या ।
 मिलवाना, (दि मीना) मिव् (प्रे) ।
 सिलमिला, म पु (अ) क्रम, आनुपूर्वी, परपरा २ वक्ति रादि श्रणि (स्त्री), ३ शृङ्गना ४, व्यवस्था, मविधानं, वियाम ५ वशानुकम कुलपरपरा ।
 —लेवार, कि वि (अ+का) क्रमेण, क्रमश, यथाक्रम, आनुपूर्वा, अनुपूर्वश ।
 सिलह, स पु (अ मिलाह) अस्त्र, शस्त्रम् ।
 —ज्ञाना, म पु (अ+का) शस्त्रशाला, अस्त्रागारम् ।
 —पोश, वि, सधक, शस्त्रात्मसञ्ज ।
 मिला, म पु (अ) पुरस्कार, पारितोषि कम् २ परिणाम, फलम् ।
 मिला, म स्त्री, दे 'शिला' ।
 मिलाइ, सं स्त्री (दि सिलाना) मधि, मीवन २ मी(मि)वन्, म्पूति (स्त्री) ३ दे 'मिलवार' ।
 मिलातीत, मं पु [स शिलावतु (न)] अदिज, अदननं, दे 'शिलाजीत' ।
 मिलागम्, म पु (मं मिलागोरम) श(म)म नं, द्रव रम निर्वाम ।
 मिलिडर, सं पु (अं) रम्भ वहुं (पात्रभेद) ।

सिली, सिल्ली, म स्त्री (हि निन्) शान्
नी, सानक, शागादमन् (पु) ।
सिलौट, सिलौटा, स पु (हि सिल + वट्ट)
शिन्ना, मट्ट फलक २ दे 'सिलवट्टा' ।
सिवट्टे, म स्त्री, दे 'सेवट्टे' ।
सिवान, स पु (स सोनात्) सीमा, प्राग,
पर्वत ।
सिवाय, क्रि वि (अ सिवा) अपि च, अपर
च = कते, विना, अन्येण, विहाय, वनवित्वा ।
वि, अधिक, भूयस २ अपेक्षाधिक ।
सिवार-ल, स स्त्री पु (स शैवाल) शैवाल -
ल, जल, केश नीली-नीलिका, शैवाल, मच्छि-
कुन्तलम् ।
सिविल, वि (अ) नागरिक, पौर २ सभ्य,
शिष्ट ।
—डिसओब्रिडिण्ट्स, स स्त्री (अ) नविन
यावदा ।
—सर्वन, स पु (अ) नागरिक शरुवैद्य ।
—सविस्, स स्त्री (अ) नागरिकमेवा ।
सिमकना, क्रि अ (अनु) सादाद रद
(अ प मे) २ निधनासत्र (वि) कृत्
(भ्वा आ से) ।
सिमक्री, स स्त्री (हि तिसकना) गद्गद्-द,
गद्गद्भवनि ।
—भरना या लेना, क्रि अ, दे 'निनकना' ।
सिहरा, म पु, दे 'सेहरा' ।
सीक, म स्त्री (स इषीका) इषिका, एा
काम, मूहननाल-सूक्ष्मकाडम् ।
सीकर, स पु (हि सीक) इषीकपुष्पम् ।
सीक्रिया, स पु (हि सीक) सुरेखो वलनेद ।
सींग, म पु (स मूह) विद्या-म, कृत्तिका
२ काङ्कल, लला, मूहमयो बद्धमेद ।
(किनी वे मिर पर)—होना मु, वैशिष्ट्य
वृत् (भ्वा आ से) ।
—दिखाना, मु, अगुह दृश (प्रे), किनप्य
दन्वा उपहम् (भ्वा प से) ।
—निम्नलना, मु, (पशु) युवा वन् (दि
आ म) २ वनम् (दि प से), दे
'श्वरण' ।
—समाना, मु, आश्रय शरण लम् (कर्म) ।
सीगी, स स्त्री (हि सींग) दे 'सींग' (२) ।

२ रक्तचूषाशृय, रक्तचूषी ३ मूत्री, मीन
मेद ।

—लगाना या तोडना, मु मूहोण रक्त निष्कम्
(प्रे) ।

सीचना, क्रि स (स. सेचन) अव्, मिच्
(तु प अ), वारिणा अण्ड (प्रे)-अभ्युक्ष्
(भ्वा प से), अभिवृष् (भ्वा प से),
जल दा २ अभि प्र-स, वश्, अव-आ-नि,
सिच ३ अव-वि, कृ (तु प से) । स पु,
अव-आ, मेक-मेचन, जलप्लावन, अभिवर्षा,
अभ्युक्षण, प्रोक्षणम् ।

सीचने योग्य, वि अव-आ, सेचनीय-मेकप्य,
अभ्युक्षणीय, अभिवर्षणीय ।

सीचने वाला, स पु, सेवक, सेवक, प्रोक्षक ।

सींचा हुआ, वि, सिक्त, अभ्युक्षित, जल-
प्लावित ।

सींह, स पु (देश) शल्य, शल्यक, शल्यकी,
शल्यमृग ।

सी, वि स्त्री (हि सा) समा, तुल्या, सदृशी,
सदृशी ।

सी. आई. डी., स पु (अ) उत्तचरविभा,
अनसर्प च(चार) र प्राणिधि, विभाग ।

सीकर, स पु (स) का, द्रप्स, पृषत, लव,
रिडु, विप्रुष् (स्त्री) २ शीकर, तुगार
३ प्रवेद, धर्म, स्वदेनलम् ।

सीख, स स्त्री (म शिक्षा) शिक्षा, विनयन,
अध्यापन, अनुशामन, बोधन २ शिक्षाविषय
३ मन्त्रा, परामर्श, उपदेश ।

सीख, म स्त्री (का) शलका, धातु-नोह,
दब २ लुप्तुल्लभयष्टि (स्त्री) ३ शङ्कु,
शल्य, नडाशुधि (स्त्री) ४ (माममर्त्तनाय)
शुक्लम् ।

सीखचा, स पु (का) दे 'सीख' (१, ४) ।

सीखना, क्रि म (स शिक्षा) शिक्ष् (भ्वा
आ से), अधिश् (अ आ अ) अन्यत्
(दि प मे), अभ्यमेन विद्या लम् (भ्वा
आ अ)-प्राप (स्वा प अ), पठ् (भ्वा
प से) । म पु, शिक्षा, अध्ययन, अभ्यास,
विद्या, अर्जन-लाम, प्राप्ति (स्त्री) ।

सीखने योग्य, वि, शिक्षणीय, अध्येन्य,
अभ्यननीय ।

सीमने चाला, स पु, छान शिष्य, शिक्षक (क्वचित्) अध्येतृ विद्यार्थिन् शिक्षार्थिन् । सीसा हुआ, वि (मनुष्य) शिक्षित, कृतविद्य, पठित, प्राज्ञ, बुध । (विषय) शिक्षित, छान, बुद्ध, पठित, अधीन ।

सीसा, सं पु (अ) शामन विभाग २ व्यवसाय, वृत्ति (स्त्री) ।

सीसना, कि अ (सं निद्ध >) तापेन मिध् (दि प अ), उष्मणा श्रीपच (कम), निद्ध (वि) भू २ (तापादिभि) मृद्भू, मादव मन् (भ्वा आ अ) ३ वष्ट सह (भ्वा आ से) ४ षण शुभ (दि प अ), षणनिस्तार जन् (षि आ से) ५ शीतेन वि, गल् (भ्वा प से) ।

सीसी, म स्त्री [स शीत्कृति (स्त्री)] शीत-कृत-कार, शीत्कृत् २ शीत्करी, बाधभेद ।

—सताना, कि अ, शीच्छब्द कृ । कि स, शीत्करी वद (प्र) ।

—सेना, सु, शीच्छब्देन आकृ (प्रे) ।

सीटना, सं पु (म अशिष्ट >) अधीन गीतनि (स्त्री), वैवाहिकगालि (स्त्री) ।

सीटनी, सं स्त्री (हि मीटना) दे 'सीटना' ।

सीटा, वि (मं शिष्ट >) बरत, विरस, नारस, स्वादहीन ।

—पन, सं पु, नीरमता, निरस्वादना ।

सीटी, सं स्त्री (स शिष्ट) (पत्रपुष्पफलादीनां) वच्छिष्टं, नारसांश २ निरस्तारद्रव्यं ३ नीरमपदार्थं ।

सीद, सं स्त्री (सं शीत >) क्लेद, स्तेम, आर्द्रता २ किन्त्रभूमि (स्त्री) ।

सीदी, सं स्त्री (म श्रेणी >) सीपान, पथ मार्गं पक्ति (स्त्री) पदति (स्त्री) पदवी, अपिरोह (हि) णा, नि (जि) श्रेणी णि (स्त्री), नि (नि) श्रेय (वि) णी २ काष्ठनिश्रेणी ।

—का रंडा, स पु, सीपानदद ।

—चदना, सु, कमश उत्कर्षं म् (भ्वा प से) ।

सीतल, वि, दे 'शीतल' ।

—पाटी, सं स्त्री, शोतलकट ।

सीतला, सं स्त्री, दे 'शीतला' ।

सीता, सं स्त्री (मं) आनरी, मेदिनी, वैदेही, अधोनिना, भूमना, पार्थिवा । २ पाल रेसा, हांगलपद्धति (स्त्री), ह्मि (पुं) ।

—द्रव्य, म पु (सं न) वृत्ति-कर्षण, उपकरणानि (न वटु) ।

—पति, सं पु (म) श्रीराम, राघव ।

—फल, म पु (स) दे 'शरीका' २ दे 'कुम्हडा' ।

सीत्कार, सं पु (मं) मोद, कृत-कृति (स्त्री), आनंदपीडादिन मीच्छब्द ।

सीध, सं स्त्री (हि सीधा) सरलायाम्, अवसावति (स्त्री) २ लक्ष्यम् ।

सीधी, वि (म शुद्ध >) सरल, वक्रनारहित, अजु, अजम, प्रगुण २ निर्ब्याज, निष्पट, निरटल ३ शिष्ट, सुशील ४ शान्तस्वभाव, सीम्य, ५ सुन्दर, सुसाध्य ६ सुबोध, सुगम ७ दक्षिण, अपमथ्य । कि वि, सरलं, अवन्, अनिक्लम् ।

—करना, कि स, सरली प्रगुणी, कृ २ दम् (प्रे), वशीकृ, विनी (भ्वा प अ) ।

—पन, स पु, सरलता, धकनाजभाव २ जानव, सीम्यता, निष्पटता ।

—होना, सरली प्रगुणी भू २ वशीभू । ३ ममार्गं अवन्व (भ्वा आ से) ।

सीधी, सं पु (सं असिद्ध) असिद्ध-अपक्व आय, अजम् ।

सीधी तरह, कि वि, शान्त, शात्या २ सम्पक्, युवाकरूपेण ३ धर्मेण, म्यायेन ।

सीधे, कि वि, सरल, अवस २ दे 'सीधी तरह' ।

सीन, म पु (अ) दृढयं, दृक्वानविषय २ ज(य)वन्दिना, अपटी ।

सीनरी, सं स्त्री (अ) दृढ्यप्रदेश, प्राट्टिक दृढ्य २ रंगसज्जा ।

साना, कि म (स मीवन) मिध् (दि प मे) । म पु, मवनं, सीवनं, वृत्ति (स्त्री), ऊति ध्युनि (स्त्री) ।

—पिरोना, सं पुं, सूची(वि)-कर्मन् (न) -दिश्वम् ।

सीना, सं पु (का) उरसु-वधुम् (न) ।

—जोर, वि (का) प्रबल, दुर्दम, उर्ध्वन ।

—जोरी, सं स्त्री, और्ध्वत्य, बलात्कार ।

—यद्, सं पु (रा) भागिक-कं, दे 'अगिया' ।

—उभार कर चलना, सु, मटोर्ष, चळ (भ्वा प से) ।

सीने से लगाना, सु, आर्लिग (भ्वा ष से),
 दरगुह (भ्वा उ म) ।
 सीनियर, वि (अ) वरीयन्-ज्यायम (नी
 स्त्री) । म पु, पुग्गन ।
 सीनेट, म स्त्री (म) बृद्ध प्रधान-महा-मभा ।
 सीने योग्य, वि शीवनीय, सीविनव्य,
 सीवनाई ।
 सीने घाला, म ष मेवक सीवनकर्तृ, सीवन ।
 सीप, स पु [स शुक्ति (स्त्री)] शुक्ति ।
 मुक्ता, मान् (स्त्री) प्रसू (स्त्री) रणित, नीतिक
 प्रनवा, तौनिर ।
 —सुत, स पु (म शुक्तिवुत) मान्किक,
 तुला, शक-ज-सीनम् ।
 सीपा, म स्त्री, दे 'सीप' ।
 —मा मुँह निरुल थाना, सु अत्यन्तदुबल
 अत्यधिकश्री (वि) भू ।
 सामत, म पु (स) केरेपु वरन् (न),
 दे 'संगि' । २ अस्थिमधि ।
 सीमतिनी, स स्त्री (स) नारी, द ।
 सीमन्तोद्वयन, म पु (स न) गनन्धिने
 पष्ठेऽप्ये वा माने करणीय सस्वार (धर्म) ।
 सीमात, म पु (म), सीमा, सीमन् (स्त्री),
 उपाय, पर्यंत, प्राय २ ग्रामसीमा ।
 सीमा, स स्त्री (म) नामन् (स्त्री) अवधि,
 आधार, प्राय, पर्यन्त, मर्यादा २ दे
 'सीमन्' (१) ।
 सीमित, वि (स) परि-मित, उन्मन नया
 दिन ।
 सीया हुआ, वि, स्मृत, स्मृत् ।
 सीमेंट, स पु (अ) वज्रचूषणम् ।
 सीर स पु (स) हल, हाल २ मूय
 ३ अववृष । स स्त्री, क्षेत्रपने अरुनकृष्ट
 भूमि (स्त्री) ।
 —ध्वज, स पु (स) जनक २ कलराम ।
 —में, सु, मभूय, एकत्र मिलित्वा ।
 सीरम, स पु (अ) रत्नरस ।
 सीरा^१, म पु (का शीरह) मधु शर्करा, कवच,
 दे 'चासनी' २ लम्बिका ।
 सीरा^२, वि (स शीतल) शीत, शिशिर,
 उष्णत्वशून्य २ शान, मौनिन् ।
 सीर, स स्त्री (स शीतल) कन्द, स्तेन,
 आर्द्रता ।

सीला^१ वि (स शीतल) आर्द्र, विलम्ब ।
 सीला^२, म पु (स शिल्-ल) मुनीना नीव
 नोपायभेद, मन्वर्थात्मकानेकधान्योच्चयनम् ।
 सीवन, स पु (स न) सेवन, स्मृति (स्त्री),
 सूचीकर्मान् (न) २ सीवन, (स्मृति) सधि-
 ३ लिंगमण्यध सूत्रम् ।
 सीस, म पु (म शीर्ष) दे 'निर' ।
 —पूल, सं पु (हिं) *शीर्षपुल्ल, शिरोभूषण
 भेद ।
 सीसा, स पु (सं सीस) सीसक, सिन्दूर
 कारण, त्रप (पु न), महाबल, बहुमल,
 सुवर्णादि, तन्म् ।
 सीसे का दर्द, म पु, सीमकालम् ।
 सी सी, स स्त्री (अनु) सीय, कार-हनि,
 (स्त्री) कृत, हर्षपीडाशीतादिजनितध्वनि ।
 सीह, स पु, दे 'सीह' ।
 सींधनी, म स्त्री (हिं सींधना) नख, दे
 'नमवार' ।
 सींधाना, कि प्रे, वनाशो 'सींधना' के प्रे रूप ।
 सुदर, वि (म) रचिर, सुधम, वाह, शोभन,
 कान्त रुच्य, मजु, मजुल, मनोहर, मनोव,
 मनोरम, (मनो)हारि, रमणीय, रामणीयक,
 बधु(धूर), पैरा(म)ल, वाम, (अभि)राम,
 नन्दित, सुमन, बलु, सुरूप, अभिरूप,
 दिव्य २ शुभ, भद्र, मंगल ३ उत्तम, श्रेष्ठ,
 उत्कृष्ट । ('सु' ने भी रूप बनाने हैं, जैसे-
 सुमुग्म् ।)
 —काड, स पु (सं पु न) लकावतिसुदर
 पवनमधिवृत्त्य रचिन रामायणस्य पवम काडम् ।
 सुदरता, स स्त्री (स) मौन्दर्य, रचिरता,
 सुधमा, वाग्नि (स्त्री), मजुता, मजुलत्व,
 मनोहता-त्व, रमणीयता, अभिरूपता, लवण्य,
 शोभा, रूप, अभिल्या, श्री-लक्ष्मी (स्त्री) ।
 सुदरी, स स्त्री (स) रूपलावण्यसपत्न्या नारी,
 रामा, वामा, रोवना, वरागना, वरवर्णिनी,
 सिता । वि (स) रूपवती, मनोशा, रचिरा ।
 सुबा, स पु (म सूचक) *लोडवेपनी,
 शतानी, शोषनी ।
 सुबुल, स पु (का) सुगधितमभेद,
 सुबुलम् ।
 सु, उप. (स) सौन्दर्योत्कर्षमद्रत्वादिबोधक
 उपसर्ग (उ सुपुव इ) ।

मुकुचाना, कि अ, दे 'सुकुचाना' ।
 मुकुचना, कि अ, दे 'सिकुचना' ।
 मुकु, वि (सं) सु-मुख-अयत्न, साध्य निष्पाद
 कार्य, अनायास ।
 मुकुता, सं स्त्री (स) सु-मुख, साध्यता,
 सौकर्य, मुकरत्वम् ।
 मुकुमं, सं पु [सं-मन् (न)] सु-सर्व-उत्तम
 पुण्य-श्रेष्ठ, कर्मन् (न) इत्येव कार्यम् ।
 मुकुर्मो, वि (सं-मिन्) मुकुमन्, मुकुव,
 सत्किय, मुकुर्मशील २ धर्मात्मन्, पुण्यात्मन्
 ३ सराचारिन्, सद्वृत्त ।
 मुकुवि, स पु (सं) कवित्र, मुकुल्यकार ।
 मुकुल, स पु (सु) सुसमय २ सुमिष्टम् ।
 मुकुमार, वि (स) अति कोमल, शृङ्,
 शृङ्ग, प्र-तनु, परि-पेलव, इलक्ष्य, ललित ।
 स पु (सं) सुन्दर-उत्तम, नालक ।
 मुकुमारता, स स्त्री (स) सौकुमार्य, मादर्य,
 पेलवता, शृङ्गता, तनुता ।
 मुकुमारी, स स्त्री (स) सुन्दर श्रेष्ठ, कन्या
 २ दुहिन् (स्त्री), पुत्री ३ वि (स) वीमा
 लागी, तन्वगी, तनुगात्री ।
 मुकुल, वि (म) महाकुल, अभिजन, सदत्
 राज, कुलीन । सं पु (सं न) सु-मद,
 वर ।
 मुकुलीन, वि (स) दे 'मुकुल' वि ।
 मुकुव, स पुं (सं न) पुण्य, सद-सु पुण्य
 कार्य-कृत्य-कर्मन् (न) वि (सं) मीमा
 ण्यवद, भाग्यशालिन् २ धार्मिक, पुण्यात्मन्
 ३ सुविहित ।
 मुकुति, सं स्त्री (म) पुण्य, सत्कृत्यम् ।
 मुकुती, वि (सं निन्) धार्मिक, पुण्यवत्,
 सत्कर्मन् २ सौभाग्यशालिन् ३ प्राण, बुद्धिम् ।
 मुकुेशी, सं स्त्री (स) सुन्दरवेशवती नारी,
 सुवेशिनी ।
 मुख, स पु (सं न) मुद (स्त्री), मुदा,
 मुदितता, प्रीति (स्त्री) हृष, आप्र-मोद,
 संमद, शमन् (न), उ(सा)न, आ, नद,
 आ, नन्सु प्र-मद, भोग, रमस, निवृत्ति
 (स्त्री) मौल्य, जीव ।
 —कर, वि (सं) सुप्र-कार-कारिन्-कारक
 आवह-द-दायक, सुकर ।
 —की नीद सोना, मु, सुस जीव् (भ्वा प
 से) भस् (भ्वा प अ)

—चैन, म पु (सं + हि) दे 'मुख' ।
 —दायी, वि (सं-यिन्) मुख, द-प्रद-दायक
 दातृ-आवह, दे 'मुखकर' ।
 —देना, कि स, मुखयति (ना भा), झली क,
 मुख दा, निवृत्त-मुखिन् क ।
 —धाम, सं पु [सं-मन् (न)] स्वा,
 स्वर्लोक ।
 —याना, कि अ, मुखमनुभू सुखायते (ना भा),
 निवृत्त-मुखित (वि) स्वा (भ्वा प अ),
 सौख्य लम् (भ्वा आ अ) ।
 —पाल, स पु (सं + हि पालकी) मुख
 शिक्षिका ।
 —पूर्वक, कि वि, (स-क) मुखेन, सौकर्येण,
 मुख, लीलया, अनायासम् ।
 —लूटना, मु, सुखायते (ना भा), यथेष्टमुप
 मुन (स आ अ) ।
 —साध्य, वि (सं) सुकर, अयत्नसाध्य ।
 सुखात, सं पु (स न) मुखप्रधान नाटक
 रूपकं वा २ प्रहसनं (सा) ।
 सुखागत, स पु (स न) स्वागतम्, सुभा
 गमनम् ।
 सुखाना, कि स, वनाओ 'सुखना' के प्रे रूपः
 सुखार्थी, वि (स थिन्) सुखेधिन्, सुखेचुव-
 सुप्रकामिन् ।
 सुखी, वि (स-यिन्) सुखित, निवृत्त निश्चिन्,
 स्वस्थ, सुस्थ, निरदोग, शांत, आनरिन्, मुदित,
 धीनचिन्, प्रसन्न, सानन्द, सतुष्ट ।
 सुखेच्छा, स स्त्री (सं) मुख-अभिगण-
 कामना-वांग ।
 सुख्यात, वि (सं) प्ररपन्, प्रसिद्ध, विद्युत् ।
 सुख्याति, स स्त्री (सं) सुकीर्ति विद्युति
 (स्त्री), दगाठ (न) ।
 सुगध, म स्त्री (सं पुं) सु, वाम, सुरभि,
 सु, गंध, सौरभ-स्य, अनोद, परिमन् ।
 सुगधि, सं स्त्री (स >) दे 'सुगध' म स्त्री ।
 वि (स) दे 'सुगधिन' ।
 सुगधित, वि (सं) सुरभि, सुगधि, सुवाम,
 आमोद परिमन्, वद-सुक्त, सुवासित, सराध,
 इष्ट-ध, प्राणतपण, सुगंधाद्य ।
 सुगम, वि (सं) उपगम्य, उपसर्पणीय, सुगम्य,
 सुख-गम्य-उपसर्प २ सुबोध, सुवदेय ३ सुवर,
 सुसाध्य, सरल ४ सुलभ, सुप्राप्य, सुप्राप ।

सुगमता, स स्त्री (म) मौर्धन्यं, सुसाध्यता ।
 सुगम्य, वि (स) दे 'सुगम' (२) ।
 सुग्गा, म प (म) 'गु'क' दे 'तोता' [सुग्गी
 (स्त्री) = शुर्गी] ।
 सुग्रीव, म पु (म) सुकठ, वानरेत्र,
 श्रीराममण । वि, सुगठ, शोभनग्रीव ।
 सुघट, वि (स) सुकर, सुलमाध्य २ सुदर,
 मनोहर ३ सुषण्डित, सुरचित, सुरेय ।
 सुघटित, वि (म) सुरचित, सुनिर्मित ।
 सुघट, वि (स) सुपट सुदर, सुरेय, सुघटित
 २ निपुण दक्ष, प्रवीण ।
 सुघट(वा)ई, स स्त्री (हि) सुघट सुदरता,
 सुरूपना २ वातुर्य, वीशलम् ।
 सुघटता, स स्त्री, दे 'सुघटई' ।
 सुघटी, स स्त्री (स) सुघटी सुशुभ, काल
 समय सुदंतम् ।
 सुघर, वि, दे 'सुघट' ।
 सुचित, वि (म) सुचित सावकाश, निर्व्या
 पार २ निश्चित ३ मावधान ।
 सुचेत, वि (स) सुचेतम् अवहित, सावधान,
 प्रमादशून्य ।
 सुजन, स पु (स) आर्यं, सत्यरुष,
 भद्रजन, सजन दे ।
 सुजन, मं पु (स) स्वजना आत्मीय पारि
 वारिक, जना मवधिन, बाधवा (सव बहु) ।
 सुजनता, म स्त्री (म) मौजन्य, भद्रता,
 सजनता दे ।
 सुजाति, म स्त्री (स) सखुल, सदवश,
 बरावय । वि (म) अभिजात कुलीन दे ।
 सुजान, वि (स) सुजान प्राज्ञ, बुद्धिमद,
 पटित, विश्व २ प्रवीण निपुण । स पु, पति
 २ प्रणविन्, रमण ३ परमात्मन् ।
 सुजाना, कि म बनाओ 'सूजना' के प्रे रूप ।
 सुजाना, कि म, बनाओ सुजना' के प्रे रूप ।
 सुदि, वि [म सु'डु (अव्य)] सुदर, वर,
 उत्कृष्ट २ अनिशय, बहु । कि वि, मामग्र्येण,
 सपूजतया, मन्यक ।
 सुहपना, कि म (अनु सुउ-सुह) ममठ
 सुहशब्द पा (भ्वा प अ)-आचम (भ्वा
 प मे) ।
 सुहृन्ना, कि म (अनु सुहसुट) सशब्द
 सत्वर च निगु (तु प से) २ सशब्द श्चस्
 (अ प से) ।

सुडौल, वि (म सु+हि टौल) सुरूप, सुरेय,
 मदाभार, सदाशक्ति, सुन्दर, सुपदित ।
 सुदंग, म पु (स स+हि डंग) सुरीति
 सुरुति (स्त्री) । वि, सुरूप, सुदर ३ सदवृत्त ।
 सुत, स पु (सं) आत्मन, सुतु, पुत्र दे ।
 सुतनु, वि (स) सुगाथ, सुन्दरशरीर । स
 स्त्री (म) कोमलांगी, कुशांगी, सुन्दरी ।
 सुतराम्, अव्य (स) अत २ अपितु
 ३ अगत्या ४ अत्यत ५ अवश्यम् ।
 सुतली, सं स्त्री दे 'सुतली' ।
 सुता, स स्त्री (स) पुत्री, दुहित (स्त्री),
 तनुजा ।
 —पति, स पु (स) जामातु (पु), दे
 'दामाद' ।
 सुतारी, स स्त्री (स) सकार >) आर, चर्म,
 प्रमेदिका प्रमेदिनीवेधनी, *चर्म, सूची
 सीवनी ।
 सुतार्थी, वि (स) धिन् पुत्र-सन्तान-सन्तति
 अपत्य, अभिलाषिन्, कामिन् इच्छुक ।
 सुतिनी, स स्त्री (सं) पुत्रवती, सुनवती,
 प्रजावती, सन्तानवती, ससन्ताना ।
 सुतीक्ष्ण, वि (स) अत्यन्त-अत्यधिक, शित
 शान-तीव्र प्रखर । दे 'तीक्ष्ण' । स पु (स)
 अग्रस्त्यभ्रातृ, ऋषिविशेष । २ शोभाजन,
 तीक्ष्णगध, दे 'सहिजन' ।
 सुत्यन, म स्त्री (देश) सुस्यूणा, *सुत्यान,
 जपावक्षभेद ।
 सुथना, स पु } दे 'सुत्यन' ।
 सुथनी, स स्त्री }
 सुथरा, वि (स) स्वच्छ वा सुस्थ >) स्वच्छ,
 निर्मल, विमल ।
 —पन्, स पु, स्वच्छल, नैर्मल्यम् ।
 सुदर्शन, वि (स) शोभन, सुरूप, सुन्दर,
 प्रियदर्शन [सुदर्शना नी (स्त्री)] । स पु
 (स) सुदर्शनचक्रम् ।
 —चक्र, स पु (स न) विष्णुचक्र, सुनाम,
 श्रीकृष्णस्याग्रविशेष ।
 —चूर्ण, स पु (म न) ज्वरीषधभेद ।
 सुदामा, स पु (स-मन्) श्रीकृष्णसख । वि
 (स) सुदार ।
 सुदिन, स पु (सं न) शुभ, दिन दिवस
 पुण्याहर ।

सुदी, स स्त्री (स सुदि अन्य) शुक्ल मित, पद्म-अङ्गमास ।

सुदूर, वि (स) अनि-सु-वद् दूर-दूरवातन् दूरस्थ, अनिविप्रकृष्ट, दवीयम, दविष्ट । किं वि (स न) अतिदूर रे ।

सुदृढ, वि (स) सुस्थिर, सुनिश्चल, सुधीर २ अति-गाढ-धन-वीकम, दुर्नय ३ अतिवलिन्, सुशक्तिमत् ।

सुदेह, वि (स) सुतनु, सुकाय, सुन्दर । स पु (स) सुन्दरशरीरम् ।

सुध, स स्त्री [सं शुद्ध (बुद्धि) >] स्मरण, स्मृति (स्त्री) २ सज्ञा, चैतन्य, उपलब्धि (स्त्री), प्रति, बोध, चेतना ३ अवधान, वृत्तज्ञानम् ।

—सुध, स स्त्री, चेतना, चैतन्य, सज्ञा ।

—दिलाना, मु, सृ (प्रे) ।

—न रहना या विमरना, मु विम् (कम) ।

—विसराना या विसारना, मु, विसृ (भ्वा प अ) ।

—रखना, मु, सावधान जागरूक (वि) स्था (भ्वा प अ) ।

—लेना, मु, वृत्तान्त श (क् उ अ) ।

वे—, वि, नि मव, मूर्च्छित २ प्रमादिन् ।

सुधना, कि अ (हि सोधना) शुध् (दि प अ) निर्भलीभू ।

सुध-सुध, स स्त्री (स शुद्धुद्धि >) दे 'सुध' (२) ।

—जाती रहना या मारी जाना, मु, गतने तन-वृष्टसङ्ग नि सङ्ग-मूर्च्छित (वि) भू ।

—टिकाने न रहना, मु, विशिस्त (वि) जन् (दि आ से) ।

सुधरना, कि अ (हि सुधना) दोष बुद्धि, रहित हीन (वि) भू, परि वि-म, शुध (दि प अ), शुद्ध निर्दाष (वि) चन् (दि आ से), प्रतिममाषा (कर्म) ।

सुधवाना, कि प्रे (हि सोधना) शुध् (प्रे), पू (प्रे), दोषमल, हीनं कृ (प्रे) ।

सुधार, स पु (सं) चद्र दे ।

सुधा, म स्त्री (सं) पीयूष, अमृत दे २ मरु (दे, पुष्परस ३ मधु (न) ४ जल ५ दुग्ध ६ विष ७ चूर्ण, दे 'चूना' ।

—कंठ, मं पु (सं) विव, वोकिल ।

—कर, म पु (सं) सुधा, घट दीपिति (पु) वर आधार मवृत् रश्मि-योनि (पु) -स्रति (पु)-निधि, चद्र ।

—कार, स पु (म) सुधाजीविन्, पलगट, लेपक ।

—घाँत, वि (म) सुधा चूण, मित-शालिन धवलित ।

—निधि, स पु (म) दे 'सुधाकर' ।

—भोजी, म पु (सं निन्) सुधामुज, देव ।

—स्पर्शी, वि (म षन्) अमृत पीयूष, उपम मद्दश, सुमधुर ।

सुधाना, कि प्रे, दे 'सुधवाना' ।

सुधार, स पु (हि सुधारना) दोष, इरण-अपनयन, स, शोधन, संस्करण, प्रति, समाधानम् ।

—करना, कि म, म, शुध् (प्रे), निर्दोष दोषरहित निधा (जु उ अ) कृ प्रति, समाधा, संस्कृ ।

सुधारक, म पु (हि सुधार) सशोधक, दोषहारिन्, मस्कारक ।

सुधारना, कि म (हि सुधारना) दे 'सुधार करना' ।

सुधित, वि (सं) सुध्ववस्थित २ सुमन्वक्, पक्व मिद्ध शृत ।

सुधी, स पु (म) पट्टिन, विद्वस् (पुं), २ चतुर, सुबुद्धि ।

सुनता, कि म (म श्रवणं) श्रु (भ्वा प अ, शृणोति), आ-समा-वर्णं (चु), निशान (दि प मे या प्रे निशामयति), श्रवण गोचरीकृ २ अवधा (जु उ अ) ३ भर्त्सनावचनानि श्रु । मं पु, श्रवण, आ-समा, वर्णनं, निश(श्र)मनं, श्रुति (स्त्री) ।

सुनने योग्य, वि, श्रोतव्य, श्राव्य, आ-समा, कर्णनीय, निशमनीय ।

सुनने वाला, म पु, श्राव्य, आ-समा, वर्णं विनृ-श्रोतृ (पुं) ।

सुन लेना, मु, श्रुत्वन सदृच्छया अश्रुति वा श्रु ।

सुना सुधा, वि, श्रुत आ-समा, वर्णित, श्रवण गोचरीकृत ।

सुनी अननुनी कर देना, मु, श्रुत्वापि न अवधा (जु उ अ)-उपेय (भ्वा आ से) ।

सुनय, म पु (सं) सु-उत्तम-श्रेष्ठ, नीति (स्त्री) ।
 सुनयन, म पु (स) मृग । वि (मं) सुनीवन ।
 सुनयना, म स्त्री (स) नारी । वि (स) सुनीवना-नी ।
 सुनवाई, म स्त्री (हिं सुनना) श्रवण, निरा (शा) मन २ व्यवहारदर्शन, कार्य, अवशेष विचारणम् ।
 सुनयान, वि (स शून्यस्थान >) निर्जन, विपन्न, विक्रम, एवान्त २ उच्छिन्न, उद्ध्वस्त, चरं । म पुं, नीरवता, निस्तम्भता ।
 सुनहरा री, वि, दे 'सुनहला' ।
 सुनहला, वि (हिं सोना) हेम, सौवर्ण, सुवर्ण-नावन हेम हिरण्य, वर्ण-आम ।
 सुनाई, म स्त्री (हिं सुनना) दे 'सुनवाई' (१, २) । ३ न्याय ।
 सुनाना, क्रि प्रे, व 'सुनना' के प्रे रूप ।
 सुनार, स पु (हिं मोना) सुवर्ण हेम, कार, बलाद, नाडिभम, मौष्टिक, हेमल ।
 सुनारी, स स्त्री (हिं सुनार) सुवर्णकार, व्यवसाय वृत्ति (स्त्री) २ सुवर्णकारपत्नी ।
 सुनावनी, स स्त्री (हिं सुनाना) मृत्युममा चार, निधनवृत्तम् ।
 सुनीति, म स्त्री (स) सुनय, दे २ ध्रुव जननी, उत्तानपादपत्नी ।
 सुनी सुनाई, स स्त्री (हिं सुनना-सुनाना) विवदना, अनप्रवाद ।
 सुनेत्र, वि (स) सु-सुन्दर, नयन-नेत्र-लोचन ईक्षण ।
 सुन्न, वि (स शून्य >) चेष्टा क्रिया-त्वेनना रपदन, शून्य हीन, जडीभूत, निस्तम्भ, निक्षेष्ट, निजाव, निश्चल । स पु (स शून्य) किं, खम् ।
 सुन्नत, म स्त्री (अ) दे 'खतना' ।
 सुन्ना, म पुं (स शून्य) किं, खम् ।
 सुन्नी, स पुं (अ) यवनसमदायविशेष ।
 सुपक, वि (म) सुपरिणत २ सुसिद्ध, सुश्रुत, सुश्रण ।
 सुपथ, म पु (स) मत्पथ, समार्ग, सुपथा (पु एक) २ सदाचार, सद्वृत्तम् ।
 सुपथ्य, स पु (स न) पर्य, स्वास्थ्य प्रदाहार ।

सुपना, म पु, दे 'स्वप्ना' ।
 सुपरि टेंडेंट, सं पु (अ) पर्यवेक्षक, अध्यक्ष ।
 सुपर्ण, स पु (स) गरुड २ कुक्कुट ३ किरण ४ खग ।
 सुपात्र, सं पु (स न) योग्यवन, अधिकारि व्यक्ति (स्त्री) ।
 सुपारी, सं स्त्री (मं सुप्रिय >) क्रमुक, पूग, क्रमुक पूग, फल, ताबूलम् ।
 —पाक, सं पुं (हिं + सं) शौष्टिकोषधमेद ।
 सुपास, स पु (देश) सौख्य, सुख दे ।
 सुपुत्र, स पु (स) सद-उत्तम-श्रेष्ठ, पुत्र ।
 सुपुत्री, म स्त्री (स) सद-उत्तम-श्रेष्ठ पुत्री ।
 सुपुर्द, स स्त्री, (का) निक्षेप, न्याम ।
 —करना, क्रि स, निक्षिप् (तु प अ), न्यस (दि प से) ।
 सुपूत, स पु (स सुपुत्र, दे) ।
 सुपूती, स स्त्री (हिं सुपूत) सुपुत्रत्व २ सुपुत्रती ।
 सुस, वि (स) निद्रित, निद्राण, शयित २ जडीभूत, निक्षेष्ट, निस्तम्भ ३ मुद्रित, मुकुलित ४ कर्णविमुख ५ अलस ।
 सुसि, स स्त्री (स) निद्रा, स्वप्न, स्वाप, शयन, सवेन-२ सुसागता, भगजडता, स्तम्भ ३ तद्रा, निद्रानुतास्त्रम् ।
 सुप्रतिष्ठा, स स्त्री (स) सुख्याति-सुविश्रुति (स्त्री) ।
 सुप्रतिष्ठित, वि (मं) मुकीर्तिमत, सुविल्यात ।
 सुप्रतीक, वि (सं) सुदराग, रूपवत्, सरूप, सुन्दर, सरूप २ धार्मिक । स पु (स) शिव २ कामदेव ३ दिग्गजविशेष ४ यज्ञ विशेष ।
 सुप्रदर्श, वि (सं) सुदर्शन, रूपवत्, सुन्दर ।
 सुप्रसिद्ध, वि (सं) सुविश्रुत, प्रख्यात ।
 सुफल, सं पु (म न) सपरिणाम २ सुन्दर फल । वि सफल, कृतार्थ २ सुन्दरफलयुक्त ।
 सुबड, म स्त्री (अ) प्रात, दे ।
 सुवास, स स्त्री, दे 'सुवाम' ।
 सुबाहु, सं पु (स) राक्षसविशेष । वि (म) दृढ-सुन्दर, बाहु-सुन्दर ।
 सुबुक्, वि (का) लघु, अल्प-रुपु, भार २ सुन्दर ।
 सुउद्धि, स स्त्री (सं) सुमति (स्त्री),

सुषिषा, सुषी (स्त्री) । वि (म) इति
षी, नद, पत्ति, प्राय सुष ।

सुवृत्, स ए (अ) प्रमत्ता, साधन, उपपत्ति
(स्त्री) ।

—उहरीरी, म पु (अ) उहप्रमत्ता, साधन
पत्रम् ।

सुभ वि दे 'सुभ' ।

सुभग, वि (म) सुन्दर, मनोरम २ मौमा
ग्यवत्, धन्य ३ प्रिय, प्रियजन ४ सुख आनन्द,
प्रद ५ वनात्प, देश्यशक्तिम् ।

सुभगा, वि (स्त्री) सुन्दरी, रूपवती २ जीवित
पत्रिका, मन्त्रा । स स्त्री (म) पातप्रिया,
मद्वल्लभा ।

सुभट्ट, स पु (स) सुभैतिक, सुबोध ।

सुभट्ट, स पु (स्त्री) सुविदस (पु) पठितवर ।

सुभद्र, वि (स) भाग्यवत् २ श्रेष्ठ । स पुं
(न न) मौमग्य २ कल्याणम् ।

सुभद्रा, स स्त्री (स्त्री) अहृष्यमिनी,
अनुनय्य भार्या, अभिमन्युजननी ।

सुभाग, वि (स) स्त्री, भाग्यवत्, सुभाय ।
स पु (स) मौमग्य, सुदैवम् ।

सुभागी, वि (म सुभागा) धन्य, महाभाग,
मौ, मन्त्रवत्, सुभाय ।

सुभाग्य, वि (म) दे 'सुभागी' । स पु
(स न) मौमग्य, दे ।

सुभान, अन्य (अ सुवहान) माधुसु
वाटम् ।

—अल्ला, धन्योऽसि परनेधर । (अक्षयादि
वापकं बन्धम्) ।

सुभाष, म पु (स स्वभाष, दे) ।

सुभाषित, वि (म) सम्युक्त । स पुं (म
न) मूर्ति (स्त्री), वरवचनम् ।

सुभिम, म पु (स न) सुवत्, अन्ननिष्ठा,
दङ्गुलम् ।

सुभावा, म पु (स) मौमग्य एतन्न
० मन्त्रवत्, सुबोध ३ सुख मौमग्यम् ।

सुभूषित, वि (म) मन्दक उल्लङ्घ, सुनडित ।

सुभगल, वि (म) सुनालिक, सुन्द, शिव,
मन्त्र ।

सुभ, स पु (का) सुभ, विभ, सुभ दे ।

सुभति, स स्त्री तथा वि (म) दे 'सुभति'
स स्त्री तथा वि ।

सुभन, म पु (स मभनम् न, स्त्री वट्ट)
पुत्र, सुभन ० सुविच, सुहृदयम् (म पु)
देव २ पत्ति ३ गोहूम । वि (स) सुहृदय,
सुविच, दयात् ।

—चाप, म पु (स सुभनथाप) वानदेव ।
सुभनय, म पु, तथा वि दे 'सुभन' म पु,
तथा वि ।

सुभरन, म पु, दे 'स्मरण' ।

सुभरना, स स्त्री (हि सुभरना) (मन्त्रविंश
तिपुरिकावती) उपमात्मिका ।

सुभापरा, म पु (म सुभावा) मलयद्वीप
पुत्रान्तर्वासेनहादीपविशेष, सुवर्णा, भूमि (स्त्री)
द्वीपम् ।

सुभार्ग, स पुं (स) दे 'सुभ' ।

सुभित्ता, म स्त्री (म) दशरथपत्नी ० मातृ-
व्यवहनती ।

—नदन, स पुं (म) लक्ष्मण २ शत्रुघ्न ।

सुभुम्ब, म पु (म न) सुवदन, शोभनाननम् ।

वि (म) सुवदन, सुन्दरानन ० सुन्दर
३ प्रसन्न ४ इत्युत् ।

सुभुम्बा, म स्त्री (स) सुवदनानी, सुन्द
राननानी २ सुन्दरा ३ दयम् ।

सुभूर-र, स पु (स सुभूर) मेघ, इनादि,
रत्नसत्तु, सुरालय २ उच्यते ३ उपना-
लाया वृक्षशुद्धिका ।

सुभ्या, म पु [स सुभ (न)] सुवीति
एतन्नि सुवीति सुभितिदि (स्त्री) ।

सुभ्याग, स पु (स) योष्यत्वित्र, वत्, ३
मन्त्र-अवसर ।

सुभोग्य, वि (स) सुभुम्ब, सुशक्त, सुकुशल,
मनियन्त एनिपुग ।

सुभोधन, म पु (म) दुर्वाधन ।

सुभग, वि (स) शोभन-सुन्दर-वर, वत्-रग
रत्न । वि, सुन्दर, सदावृत्ति, सुभ्य ।

सुभग, म स्त्री (म सुभ (र) ग) सुभ (र)
रत्न, अन्तर्गुह्यमौमग्य ० मधि,
माध्या नुर (र) ग ग्या, मन्त्रिक ३ व (र) नी
नि (स्त्री), आकर ४ योउप्यादिनी सुभगा
(यशम्) ।

—उराना, वि स, सुभ्रं सुभ्रं सुभ्रं (र) ।

—सुभगा, वि स, सपिडां कृ अदवा मन्
(व ९ म) ।

—त्रिजाना, सु, सप्तदशे पथि वा सुरगा न्यम्
(दि प मे) निद्रिप (तु प अ) ।

सुरगिया, म पु (म सौरभिक) सुरद्र
(गो)कार ।

सुर, स पु (म) अमर, देव देवता दे
२ मय ३ पटिन ।

—गत्र, म पु (म) देवद्विप २ ऐरावत ।

—गाय, म स्त्री (म गौ) कामधेनु (स्त्री) ।

—गायक, म पु (म) गधर्व ।

—गिरि, म पु (स) मुमरु, मरुपर्वत ।

—गुर, म पु (म) गृहस्पति ।

—चाप, म पु (स) सुरद्र धनुम (न) ।

—जन, स पु (म) देवगण ।

—जन, वि (स) मुजन सजन २ चतुर ।

—तर, म पु (म) कल्पवृक्ष, सुर, द्रुम
पादप ।

—दाह, सं पु (स न) देवदाह (न) ।

—द्विष्, सं पु (म) अनुर, राभम २ राहु ।

—धाम, सं पु [स-मन् (न)] स्वर्ग, नाक,
देवलीक ।

—धुनी, म स्त्री (म) गगा, देवनदी ।

—धूप, म पु (स) राल ।

—धनु, स स्त्री (म) कामधेनु ।

—ध्वज, स पु (स) इन्द्रध्वज, सुरकेतु ।

—नाथ, म पु (म) सुर, नाथर पति पालक
इन्द्र इश ।

—नारी, म स्त्री (म) सुरदेव, वधू (स्त्री)
वाला अगना ।

—पथ, म पु (स न) अकाश शम् ।

—पुर, म पु (स न) देवपुरी, अमरावती ।

—मन्दिर, म पु (म न) देवलय, मन्दिरम् ।

—मणि, म स्त्री (म पु) चिन्तामणि ।

—रिपु, म पु (म) दानव, राक्षस ।

—लोक, म पु (स) स्वय, देवलोक ।

—लला, म स्त्री (म) तुलसी, वृदा ।

—जापी, म स्त्री (म) देवजापी, मरुतभाषा ।

—श्रेष्ठ, म पु (म) इन्द्र २ शिव ३ विष्णु
४ गणेश ५ धर्म ।

—सरि, } म स्त्री (म-सरि) गगा,
—सरिता, } सुरमिधु ।

—सरी, }
सुर, सं पु (म स्वर) ध्वनि, नाद, स्वन
दे 'सुर' ।

—मिलाना, क्रि म, तुल्यस्वरं कृ ।

दे—, वि विस्वर ।

वेमरा क्रि वि विम्बर, अपम्बरम् ।

—म सुर मिलाना, सु, 'गदू'कभि तुप (प्रे)
वा उपच्छन्द (सु) ।

सुरत, स स्त्री [स स्मृति (स्त्री)] स्मरणं,
दे मुष' (१३) ।

—सँभालना, सु, सावधान-अवहित (वि) भू ।

सुरत, स पु (स न) कामकेली, क्रीडा,
संभोग, मैयुन, रतिक्रिया, निधुवनम् ।

ग्लानि, म स्त्री (स) रतिनरीकिल्यम् ।

सुरता, म स्त्री (स) देवत्व, अमरत्वम् ।
२ देव-सुर, म्मूह-समुदाय ३ पत्नी, भाया ।

सुरति, म स्त्री, दे 'सुरत' (१-२) ।

सुरभि, म स्त्री (स पु न) सुगंध, मौरभ,
सु, वाम । (म स्त्री) गौ (स्त्री) २ काम
धेनु (स्त्री), सुरभी ३ पृथिवी ४ सुरा ।

सुरभित, वि (स) सुरभि, सुगंधित दे ।

सुरभी, स स्त्री (म) सुगंध, दे २ कामधेनु
(स्त्री) ।

सुरमई, वि (फा) यामुनरग, मोवीरखणं,
आ दपत-कृष्ण-नील ।

सुरमा, स पु (फा-मह) यामुन, सीवीर,
स्रोतोंजन, कपोताजन, कृष्ण, अजनम् ।

—दानी, स स्त्री, यामुन-सीवीर-अजन,
आधना ।

—लगाता, क्रि स, (नेत्रयो) मौवीर निविशु
(प्र) या ऋ (प्रे) अपयति ।

सुरम्य, ि (म) सुदर, दे ।

सुरम, वि (स) मधुर, स्वाडु २ सरस, रस
युक्त ३ सुदर ।

सुरमा, म स्त्री (म) हनुम-मर्गावरोधक
नागमत् (स्त्री) २ राधमीविशेष ३
दुर्गा ४ नदीविशेष ५ तुत्सी ६ ब्राह्मी ।

सुरसुराना, क्रि अ (अनु सुर+सुर>)
सुप (भ्वा प अ), मन्द निभूत च गन्
२ कङ्कति अनुम् ३ सुरसुरायते (ना था) ।

सुरसुरी, सं स्त्री (मं) सुरसुर-मपण, ध्वनि-
२ कङ्क-कङ्कति-खड्ग (स्त्री) ३ क्री भेद ।

सुरक्षित, वि (स) सत, स्वयित, सुज्ञान,
सुज्ञान, सुप्राप्त ।

सुरागना, स स्त्री (स) देवी, देवपत्नी,
अमरागना ३ अपसरा, स्वर्देश्या, नाकनतकी ।

सुरा, म स्त्री (स) मदिरा, वरणी, हला, कादवरी, मद्य दे ।
 सुराज, म पु, दे 'सुराज' । दे लगा ।
 सुराग, म पु (तु) अन्वेष, अनुसंधान २ पद चिह्न लक्षण सूत्र संधानम् ।
 —लगाना कि म चिह्नै मृग (तु) या अन्विष (दि प से) ।
 —लेना, कि म निभूत निरीक्ष (भ्वा आ मे) ।
 सुरागाय, स स्त्री [मं सुरागो > (स्त्री)] चमर-समर [-ती (स्त्री)], विविष्टपदेशीय सकरजो गोभेद ।
 सुरागी, स पु (का सुराग) ज(जा)र अपसर्प दे 'भेदिया' ।
 सुराही म स्त्री (सं) *लवणीवधगी, *सुराधि ।
 —दार वि (अ + का) सुराधिसन्ध ।
 सुरीला, वि (हिं सुर) सु-मधुर-स्वर-स्वन कल, मञ्जुल कणमधुर (राग, कठादि) > सु मधुर, कठ (गायकादि) ।
 सुरखुर वि (का सुखंरू, दे) ।
 सुरधि, सं स्त्री (म) उत्तम, रवि-अभिरचि शील २ ध्रुवभक्तस्य विमात् (स्त्री) । वि (स) सुरधि-उत्तमाभिरचि, विशिष्ट ।
 सुरूप, वि (स) सुन्दर, रूपवत् २ बुद्धिमत् । स पु (म न) बराकृति (स्त्री), सुन्दराकार ।
 सुरेन्द्र, म पु (स) देवेश, इन्द्र, सुरेश-धर ।
 —चाप, म पु (स) इन्द्रधनुस (न) ।
 सुरज, वि (का) रक्त, रौले, हिन शोय, शोणित, अरुण, कषाय, फलपुन ।
 —होना, कि अ., रक्षायते-लोहिनायते (ना था) ।
 —रू, वि (का) तेजस्विन्, कानिमत् २ प्र निष्ठित, ममानित ३ कृतकाव ।
 —रुड्, म स्त्री, कृतकार्यता २ यशम (न), कीर्ति (स्त्री) ३ समान, प्रतिष्ठा ।
 सुरजंघ, म पु (का) बोक, कुक, चक, चक्रवाल, रथाय, रथागनामक ।
 —का पर लगाना, पु, वैलक्षण्यविशिष्ट (वि) इत् (भ्वा आ मे) ।
 सुरगी, स स्त्री (का) रक्तिमन्-लारिनिमत्, अरणिमत् (पु), शोणता, रक्तता २ (लरता दीनां) शीर्षकं ३ रधिर, रक्तं ४ इष्टगार्थी ५. रक्तवर्ण ।

सुलक्षण, सं पु (सं न) शुभ भद्र-सु-लक्षण चिह्न-लक्ष्मण (न) । वि (म) शुभ, शिव, मागलिक, सुलक्ष्मयुत २ भाग्यवत्, धन्य ।
 सुलगना, कि अ (अनु सुलसुल >) (मभूम) ज्वल (भ्वा प से) दह इत् (कर्म), दीप् (दि आ से) २ अत्यत मतम् (कर्म), दु जायते (ना था) ।
 सुलगाना, कि स (हिं सुलगाना) उदीप्-प्रज्वल (प्रे) सन्, इत् (न आ से) २ मत्प (प्र), पीठ (तु) ३ उर्ध्व उदीप (प्रे) ।
 सुलगाना, कि अ (हिं उलयना) उदग्रत् (कर्म) विदिलप् (दि प अ), मरलीभू ।
 सुलगाना, कि स (हिं सुलयना) उदग्रत् (क प से) विदिलप् (प्रे), सरलीक, पठित्ता अपनी (भ्वा प अ) > विवाद शम् (प्रे ग(शा)मयति) ।
 सुलगाव, स पु (हिं सुलयना) विश्लेष-मोचन, सरलकरण, ज विद्यापनयनम् ।
 सुलतान, म पु, दे 'सुलतान ।
 सुलका, सं पु (का) तन्मातृभेद, *सुलफ २ दे 'चरस' ।
 सुलभ, वि (स) सुलभ्य, सुप्राप्य २ सरल, सुगम ३ मामाद्य, साधारण ।
 सुलभता, म स्त्री (स) सुलभत्व, सुप्राप्यता २ मरलता ।
 सुलह, स स्त्री (अ) मरय मैत्री, लोहाई २ शान्ति (स्त्री), विष्णुवामाव ३ संधि, संधान ४ प्रसादन, ममाधनम् ।
 —नामा, स पु (अ + का) मधिपत्रम् ।
 सुलाना, कि स, व 'सोना' व प्रेरणार्थक रूप ।
 सुलूक, स पु, दे 'सलूक' ।
 सुलेमान, स पु (अ) सुल्मान, देवदूतो नृपविशेष २ पर्वतविशेष ।
 सुलेमाना, वि (अ) सुलेमानसवधिन् । सं पु (अ) सिनशोश्च २ श्वेतकृष्ण प्रस्नर भेद ।
 सुलोचन, वि (सं) मुनयन, सुनेत्र । सं पु (म) दैत्यविशेष २ मृग ३ चक्रोर ।
 सुलोचना, वि स्त्री (सं) मुनयनी-जा । सं-स्त्री (म) मेरुतापरीनी ।
 सुलतान, सं पु (अ) नृप, राजन्, सम्राट् ।
 सुलताना, स स्त्री (अ) सन्, रासी, नृपपत्नी ।

सुस्तानी, वि (अ) राजकीय ० रत्त्वर्ण ।
स स्त्री, राग, पद अधिकार र न्य ० वीक्षे
यवस्त्रभेद ।

सुवर्ण, स पु (स न) स्वर्ण, काचन,
दे सोना । २ धन, विचम । वि (म)
सुदर-रम्य, न्य राग २ हेमवर्ण ३ कुलीन,
अभिजात ।

—कार, स पु (स) दे 'सुनार' ।

सुवाम, म पु (स) सुगंध दे ० सु,
सदन भवन-गृह, सुदर, निवास निलय ।

सुविचार, स पु (स) सदिमर्श २ सुनिर्णय,
सुन्याय ।

सुविधा, स स्त्री, दे 'सुभाता' ।

सुवृत्त, वि (म) मद्राचारिन् मन्त्रिन्
२ गुणिन् ३ साधु ४ सुचन्द्रोकिशिष्ट (वाच्य) ।

सुवेश प, वि (स) सुदरवेषण, सुवसन,
सुवेशि(धि)न् ० सुन्दर, स्वरूप ।

सुशिक्षा, म स्त्री (स) मच्छिक्षा सुदर,
अनुशासन-अनुशिष्टि (स्त्री) ।

सुशिक्षित, वि (स) सुविनीत, व्युत्पन्न,
सुपाठित, सुपरिष्ट २ शिष्ट, सम्पन्न प्रबुद्ध ।

सुशील, वि (म) मद्र-उत्तम, शाल स्वभाव
प्रकृति, शीलवत्, सभ्य, दक्षिण ० मन्त्रिन्,
सदाचारिन् ३ नम्र, विनीत ४ नरत्न, शत्रु ।

सुशीलता, स स्त्री (स) शीलवत्ता,
दाक्षिण्य, सम्यता, शिष्टता ० मन्त्रारिय,
सद्वृत्ति (स्त्री) ३ नम्रता ४ आचम ।

सुश्री, वि (स) अति, सुदर-रम्य-मनोहर
२ महावट, धन, सुसपन्न, सुमधुद ।

सुपमा, म स्त्री (म) शोभानिश्चय,
सुदरता, दे ।

—शाली, वि (म) अनिसुदर, सुपमित ।

सुपिर, म पु (स न) विचिर, टिष्ट ० बह्या
दिवाचम । वि (म) सच्छिद्र, मरभ्र ।

सुपुस, वि (म) गाढ शक्ति सुप्त निद्राण,
गाढनिद्रामग्न ।

सुपुसि, स स्त्री (स) सु-गाढ, निद्रा-स्वप्न
स्वाप सुप्ति (स्त्री)-शयन-सवेश २ अज्ञान
(वे) ३ चित्तवृत्तभेद (यो) ।

सुपुष्पु, वि (स) शिशुविपु, निद्रा, आकुल
आहुर ।

सुपुष्पा, स स्त्री (स-गा) शिशुगलामध्वगा
मध्यगाढी, नाडी, पुष्पशु ।

सुष्ट, वि (म दुष्ट का अनु) शुभ, भद्र
२ सुदर ।

सुष्टु, अन्य (म) अत्य त, सानिश्चय २ सम्यक्,
सुचारु ३ यथायोग्य, अविनाशम् ।

सुष्टुता, स स्त्री (म) मंगल, शिव २ सौभाग्य
३ सौ दयम् ।

सुसगति, म स्त्री (म) सु-मद्र साधु-उत्तम,
सग सगम-ममागम-सगति ।

सुसजित, वि (म) सुप्रसाधित, सुमंडित,
सुश्रुषित, सुपरिष्कृत स्वलकृत ।

सुसताना, कि अ (का सुप्त) विश्रम
(दि प से), आविरम् (भ्वा प अ),
कापांत निष्ट (भ्वा आ से), अम अपनी
(भ्वा प अ) ।

सुसमय, म पु (म) सुकाल २ सभिक्षम् ।

सुसर रा, स पु (स शशुर) दे 'ससुर' ।

सुसरार-ल, म स्त्री (म शशुरालय) दे
'ससुराल' ।

सुसरी, स स्त्री (हिं ससुर) दे 'ससुरी' ।

सुस्त, वि (का) अलस(क), आलस(स्व),
कार्य-उद्योग, विमुग्ध, मद्र, मय(द)र, शीतक,
गुद, परिश्रुत परिमार्न २ निर्बल ३ निस्ते
जत्क, हतप्रम ४ मद्र, गति-वेग ५ स्थूल मद्र,
वृद्धि ६ रण, दे 'रोमी' ।

सुस्ताना, कि अ, दे 'सुस्ताना' ।

सुस्ती, स स्त्री (का) आलस्य माद्य, उद्योग
कार्य, विसुखता-द्वेष २ तेजोहीनता, निष्प्रभता
३ रोग ।

—करना, कि अ, समय व्यर्थ नी (भ्वा प अ)
अलस निर्ब्यापार-उद्योगशून्य (वि) स्था
(भ्वा प अ) ० विन्द (भ्वा आ से),
चिप(र)यति (ना धा) ।

सुस्थिति, स स्त्री (म) सुदर-सुपद, स्थिति
(स्त्री)-अवस्था-दशा । २ सुख, मंगलम्
३ स्वास्थ्यम् ।

सुस्थिर, वि (स) अचल, निश्चल २ सुदृढ,
धीर ।

सुस्पर्श, वि (म) कोमल, मृदुल, चिकण,
शृण्ण ।

सुस्मिता, स स्त्री (स) स्मेरसुती, प्रसन्न-
प्रफुल्ल, सुस्ती-आनना-वदना ।

सुहृदवत, स स्त्री, दे 'मगत' ।

सुहाग, स पु (सं सौभाग्य) सुभगत्व, प्रतिपत्नीत्व, २ वरस्य वैवाहिकवस्त्र, द्वे नामा ३ वैवाहिकमंगलगीतम् ।

—पिटारा, सं पु, *सौभाग्यपिटक ।

—पूरा, स पु, सौभाग्यपुट ।

सुहागा, सं पु (सं सुभग) प्रकण-न, वनकक्षार, रसशोधन, विट, लोहद्राविन्, स्वणपाचक ।

सुहागिननी, स स्त्री (हि सुहाग) सधवा, पतिवधो, सनाथा, समनुता, वावृत्तिका ।

सुहाता, वि (हि सुहाना) शोभन, सुखनर ।

सुहाता, वि (हि सहना) सहनीय, सख्य । ३ कोष्ण, कटुष्ण (जल) ।

सुहाना, क्रि अ (स शोभन) विराज् शुभ (भ्वा आ से) २ ह्व (भ्वा आ से), श्विकर श्व (भ्वा आ से) ।

सुहावना, वि (हि सुहाना) शोभन, प्रिय सुभग-दर्शन, सुन्दर दे । [सुहावनी (स्त्री) = शोभना] । क्रि अ, दे 'सुहाना' ।

—पन, स पु, सौन्दर्य, मनोहरता ।

सुहृद्, स पु (सं) सखि, मित्र, बन्धव्य ।

सुहृदय, वि (सं) श्विच, सुमनस्क २ सहृदय, स्नेहशील ।

सूँघना, क्रि स (सं शिजन) शिष् (भ्वा प म), आ-उपा-स, प्रा (भ्वा प अ), प्राणे द्विद्वेण गध ग्रह् (क् प मे) २ अत्यल्प मह् (चु) ३ (सपादि का) दस् (भ्वा प अ) । स पु, उपा-आ, प्राण, प्राणति (स्त्री) गन्धग्रहणम् ।

सिर—, सु, शिरनि आ-मना-उपा, प्रा ।

सूँघनी, सं स्त्री (हि सूँघना) नम्य, दे 'नसवार' ।

सूँघने योग्य, वि, प्रातश्च, श्रेय, शिषनीय ।

सूँघने चाला, म पु, शिषर, प्रातृ, गध ग्राहक ।

सूँघानं पु (हि सूँघना) विश्वद्, सुगदा कुङ्कु, अक्षैरि २ *निवित्रानृ ३ च(चा)-र, अपमर्ष ।

सूँघाहुआ, वि, निरित, प्रण, प्राण, गृहीत गध ।

सूँड, म स्त्री (स सुड) सुटा, दट, सुटार, र्दिग, रूम, करि, कर ।

सूँय, सं पु [सं सि(दि)सुमर] अडुगदि, ।

असि, पुच्छ प्लव, शिशुक, मदानम, उणवय, उनु(ख)पिन् ।

सूँसूँ, म स्त्री (अनु) *सूँ, कार-वृत्ति (स्त्री) ।

—करना, क्रि अ, नामिकया सूँ कृ अथवा सूँ सूँध्वनि कृ ।

सूँअर, म पु [स म(रु)अर] वराह, रोमश, विरि, दक्षिण, क्रीट, पोत-दनरद, आयुध, शर, कोर, मेदन, घोणिम्, पोनिन् २ (गाली) अधमनन, गृन्तु ।

—का मास्य, स पु, शकर-वराह-मासम् ।

सूँअरी, म स्त्री [स म(श)अरी] गोनी, वराही, शरा इ ।

सूँआ, म पु (स शुक) कीर, दे 'तोता' ।

सूँआ, म पु (स गृचा) गृचक, रम्य वृहद, मूची ।

सूँई, म स्त्री (स सूची) गृचि (चा), व्यथनी, मूचिना, सी(से)वनी २ धर्मीमूची ।

—पिरोना, क्रि स, सूची समूहा कृ या मृग्य सनायवति (ना धा) ।

—वा काम, स पु, सूचीकर्मन् (न) ।

—का नासा, स पु, सूची, उद्गर-भ-मुग पाश ।

—की भोक, सं स्त्री, मूच्यग्र, मूचिकाप्रम् ।

—तागा, स पु, *सूची, मूत्र टोरम् ।

—का भाला या फावडा बनाना, मु, अनु पर्वनीकृ, अत्युक्तया वर्ण (चु) ।

सूँअर, म पु (सं) दे 'सूँअर' ।

सूँअरी, म स्त्री (सं) दे 'सूँअरी' ।

सूँअ, सं पु (सं न) वेदमत्र ऋग्-अमृह २ उत्तमनवनं ३ महावाक्त्वम् । वि (सं) सधु वरित, मम्ययुक्त ।

सूँक्ति, म स्त्री (सं) सुभाषित, सुन्दरखवनं, सुन्दर-वर, अचन-अक्षय-उक्ति (स्त्री) ।

सूँहम, वि (सं) अति-अत्यन्त, अन्य सुन्द-ननु दभ-ननु-न्याक-मुक्त धृष्ट २ दुर्वध, गहन, गूढ ३ अति-ननु विरल पदम् ।

—कोण, म पु (सं) नुगो ।

—दुर्गमंयं, सं पु (म न) अनुवीक्षण यंम् ।

—श्रीशिता, म स्त्री (सं) कुशाग्रवृद्धि (स्त्री)-प्रत्युत्पन्ननिवम् ।

—दर्शी, वि (म शिन्) कुशाग्र, बुद्धि-मति, सूक्ष्मदृष्टि, गूढज्ञ, सूत्रविवक्षण, प्रत्युत्पन्नमति ।
 —भूत, म पु (स न) अपवाहन-काशादि भूतम् ।
 —मति वि (म) तीक्ष्ण-तीव्र-कुशाग्र, बुद्धि-मति ।
 —शरीर, स पु (स न) सूक्ष्मलिङ्ग, देह-शरीरम् ।
 सूक्ष्मता, सं स्त्री (स) सूक्ष्मत्व, अति, लघुता-अल्पता-स्योक्तता २ सू-अति, ननुता विरलता, क्लृप्तता ३ दुर्बोधता, गहनता, गूढता-स्वम् ।
 सूचना, कि अ (म शोषां) शुष (दि प अ), शोष-शुष्कता या (अ प अ), शुष्क-निर्जल-नीरम (वि) भू २ कान्ति-प्रभा, हीन (वि) भू ३ नद् (दि प वे) ४ कृश-दुबल (वि) जन् (दि आ से) ५ भी (जु प अ), सद (म्वा प अ) ६ विगृ (कर्म), म्ने (म्वा प अ) । स पु, शुप, शा, शोषा, शुषीवि (स्त्री) ।
 सूया, वि (स शुष्क) निर्जल, निरुदक, अरम, विरम, नीरस, वान २ निःप्रभ, कान्तिहीन ३ नष्ट, ध्वस्त ४ कुशाग्र, दुबल विशीर्ण, म्लान ६ परुष, कठोर, निदर ७ केवल, शुद्ध । स पु, अनवृष्टि (स्त्री) अवर्षण, अवप्रा(ग्र)ह २ नदा, तीर-शूल ३ निर्जलस्थान ४ शुष्कतनसु ५ बाल-वाना) कामभेद, शोष ६ दौर्बल्य, कृशागता ७ भा, दे 'मार्ग' ।
 —पडना, कि अ, वृष्टि-वर्ष, विघ्न-निरोध वृत् (म्वा आ से) ।
 —जवाब देना, सु, स्पष्ट निराह वा प्रत्याख्या (अ प अ) ।
 सूखा हुआ, वि दे 'सूखा' (१०) ।
 सूयकर काँटा होना, सु, अतिदूर अग्निशीर्ण (वि) जन्, अत्यतश्चि (म्वा प अ) ।
 सूत्रे खेत लहलहाता, सु, सुदिवसा आन ।
 सूचक, स पु (स) सूचो-चि (स्त्री), दे 'सू ३' दे 'सूअ' ३ सू(नी)चिक, नैचि, तुत्रवाय, सूभिद, दे 'दरनी' ४ स्वधर ५ कथक ६ कुकुर ७ सल, विशासनक ८ गुप्त, चर-चर ९ मिथुन,

कौनय १० शिक्षक । वि (स) शापक, बोधक, निर्देशक निदर्शक ।
 सूचना, स स्त्री (म) विज्ञापना, अ, ख्यापना, विज्ञप्ति (स्त्री) २ दे 'सूचनापव' ३ वार्ता, संदेश, ज्ञान, बोध ।
 —पत्र, स पु (स न) विज्ञापन-विज्ञप्ति-बोधना-प्रसिद्धि, पत्रम् ।
 सूचनीय, वि (स) बोधनीय, ज्ञानीय, ज्ञापयितव्य, अवैदनीय ।
 सूचि, स स्त्री (स) दे 'सूई' ।
 सूचित, वि (स) ज्ञापित, बोधित, आ, ख्यापित, कथित, प्रकाशित ।
 सूची, स स्त्री (स) दे 'सूई' २ अनुक्रमणी टीका, नामावलीलि (स्त्री) परि, गणना-सख्या ।
 —कर्म, स पु [सं-मन् (न)] कलभेद ।
 —पत्र, स पु (स न), सूचि(चौ) पुस्तक-पत्रकम् ।
 —भेद्य, वि (स) सीवनी-भेद्य २ घन, निविड (अन्धकार) ।
 सूजन, स स्त्री (हि सूजना) शोष, शोष, गड ।
 सूजना, कि अ (फा सोशिश) सशोष-सशोक (वि) सजन् (दि आ से), धि (म्वा प से), र्कय् (म्वा आ से) । स पु, दे 'सूजन' ।
 सूजनी, म स्त्री (फा मोडनी) कुयभेद *सूचिनी ।
 सूजा, स पु (स सूजा >) दे 'सूजा' २. वेधनी, वेधनिका ।
 सूजाक, स पु (फा) भृश, उष्णवात, रतिवरीभेद ।
 सूना हुआ, वि, सूज, र्कान, मशोरु, शोषयुत ।
 सूनी, स स्त्री (स सूचि >) कणिक ।
 सूस, स स्त्री (हि सूजना) कलना, उद्भावना २ बोध, ज्ञान ३ दृष्टि (स्त्री) ।
 —सू, स स्त्री, बुद्धि-मति (स्त्री) ।
 सूसना, कि अ (स सुष्यानम्) दृश-रक्ष (कर्म), अवभस् (म्वा आ से), प्रतिभा (अ प अ) २ (मनसि विचर) अविभू अयदा उत्तर (दि आ अ) ।
 सूट, स पु (अ) आदल, वैश (प) परिधान २ *सन्वेश-य ।

- केम्, स पु (अ) वैश(प)कोष ।
 सूटा, स पु (अनु) (तमासुप्रभृतीनां) धूम, कर्षं कृष्टि (स्त्री) ।
 सूत^१, स पु (स मञ्ज) तनु, डोर, शुल्ब २ मूत्र, गणोपवीत ३ मेमला, काची ।
 —धार, स पु, दे 'बद्ध' ।
 सूत^२, म पु (म) वर्गमकरभातिभेद, क्षत्रि वायु ब्राह्मणीमूत्र २ मारवि, बट, क्षत्र, ह्ययम ३ चारण, बदिन्, वैतालिक ४ पुराणवक्तु पौराणिक । [सूती (स्त्री)] वि (स) प्रेरित २ उत्पन्न ।
 —पुर, स पु (म) सारथिव २ सारवि ३ कर्ण ४ वीचक ।
 सूतक, स पु (म) जन्माशौचम् २ मरणाश्रीचम् ३ सूर्यचन्द्र, ग्रहण, उपराग ।
 सूतली, स स्त्री (हि मूल) मूत्र, डोर, गुण, रज्जु (स्त्री), शुल्ब, सुन्नम् ।
 सूति, म स्त्री (म) प्रमृति (स्त्री), प्रमत्, जननम् २ सन्तति (स्त्री), सन्तान ।
 —गृह, स पु (स न) दे 'सूतिकागृह' ।
 —मारुत, स पु (सं) प्रसव प्रमृति, पीडा वेदना, भूतिवान् ।
 सूतिका, स स्त्री (म) सद्य नव, प्रसूता, दे 'गार' ।
 —गृह, स पु (सं न) अरिष्ट, मृत्तिकागार, प्रसवमृति, गृह भवन आवास गेहम् ।
 सूती, वि (हि सूत) कार्पास, कार्पासिक, मूल-मूलक पिचु-पिचुल, निर्मित मवधिन् ।
 —कपडा, म पु, कार्पास, पाल, बादर, तूलावरम् ।
 सूत्र, स पु (म न) तनु, डोर, शुल्ब, सुन्नं २ यज्ञ, मूत्र-उपवीत ३ प्राचीनमानभेद ४ रेखाषा, लेखा ५ मेमला, काची ६ नियम, व्यवस्था ७ समार मन्त्रित्वचक्र ८ कारण, मूल ९ संधान दे 'सुता' ।
 —वर्त, स पु (सं) ब्राह्मण २ वपोत ३ सन्न, सवरीट ।
 —कर्म, सं पु [म-मन् (न)] दासकर्मन्, नभसिन्धु २ हृत्पकर्मन्, इष्टराम्यास, बारतु निर्माणम् ।
 —कार, सं पु (स) मूत्र, वर्तुं प्रगेवृ-रचयितु कृत् ।

- ग्रथ, म पु (स) सूत्ररूपेण रचित पुस्तकम् ।
 —धार, म पु (म) नाटकीयकथासूत्रसूत्रक प्रधाननट, नाट्यशालाव्यवस्थापक, सूत्रभृत् २ तन्त्रन्, रथमार ३ इन्द्र [धारी (स्त्री) सूत्रधारपत्नी] ।
 —पात, स पु (स) उपक्रम, प्र, आरम्भ । सूयनी, म स्त्री, दे 'सुत्पन्न' ।
 सूद^१, म पु (का) लाभ, प्राप्ति (स्त्री), आय, फल, अर्थ २ वृद्धि (स्त्री), वाद्ध्य, कला काविया, कारिका, कान्ठिका ।
 —खाना, कि स, वाद्ध्य ग्रह (कृ प से) ।
 —खोर, म पु (का) कुशी(शीषा)द दक, कुमीदिन्, वाद्ध्यिक, वाद्ध्यिन्, वृद्ध्याजीव ।
 —खोरी, म स्त्री, कुमीद, वीमाष, वृद्धि, जीवन्तीविका ।
 —दर मूद, म पु (का) चक्रवृद्धि (स्त्री) ।
 —पर देना, कि म, कुतीद कृ ।
 —पर लेना, कि स, वृद्ध्या ऋण ग्रह ।
 —वहा, म पु, हानिलाभौ, आयापयो ।
 दे—, वि, वृद्धि-बला, रहित २ निष्फल, व्यर्थ ।
 सूद^२, म पु (स) पाचक, मूषकार २ -व जन, दे 'भानी' ३ मारथ्य ४ अपरप ५ पापम् ।
 सूदन, वि (स) नाशक, घातक ।
 सूदी, वि (का) सवादुष्य, सन्न (दत्त आदत्त वा) ।
 सूना, वि (म सू व) निर्जन, विजन, विविक, जन, हीन शून्य २ रिक्त, -विरहित, -हीन, वाशिक, तुच्छ, निर- । स पु (स न) एवान, विविक, निर्जनस्थानम् ।
 —पन, म पु, सू-न्यता, विजनता, विविकता २ रिक्ता ३ एवान ।
 सूनु, म पु (सं) पुत्र २ अनुज ३ दीहित ।
 सूप^१, म पु (स शर्षं दे) प्रसोदननी, कुह्य, मृत् ।
 सूप^२, म पु (स, मि अ म्प) पक्व-मिद्ध, दालीजि (स्त्री) २ दालीरस ३ मरमं भ्यजन ४ मूद ।
 —कार, सं पु (सं) मूद, भौदनिक, आर्थमिक, पाच(कु)क, भक्ष्यवार ।

सूफ, स पु (अ) दे 'ऊन' ।
 सूफ्री, म पु (अ) यन्ममप्रदायविशेष ।
 वि शुद्ध, पवित्र ।
 सूवा, म पु (अ) प्रातः प्रदेश, देशभाग ।
 सूवदार, स पु (अ+फा) प्रातः, अथिपति
 शमन-अयक्ष, भोगपति २ मैनाधिका
 रिभेत् ।
 सूवेदारी, म स्त्री (अ+फा) भोगपतित्व,
 प्राताधिपतित्व २३ प्राताधिपति, पद
 कमन् (न) ।
 सूम', वि (अ श्म=अशुभ) कृपण, मितपत्र
 दे 'कज्जुम' ।
 सूम, म पु (म) नल, नीम् २ दुग्ध,
 क्षीरम् ३ गगनं, आकाश शम् ।
 सूय, म पु (म पुं न) सीम-भोमलता,
 निष्पीडन संपीडनम् २ यज्ञ, याग, भेष,
 मय ।
 सूय', म पु (म) सूर्यं २ अकं वृक्ष
 ३ पटित ।
 सूय', स पु, दे 'शूर' ।
 सूय', म पु, दे 'सूअर' ।
 सूयन, म पु (म सूय, दे) ।
 सूयत, म स्त्री (फा) रूप, आकार, आकृति
 (स्त्री) २ मी-दर्व, छवि (स्त्री) ३ युक्ति
 (स्त्री), उपाय, विधि ४ दशा, अवस्था ।
 —निर्याना, मु, प्रकटति (ना धा) समुत्स
 रे आया (अ प अ) ।
 —यनाना, मु वेप परिचुत् (प्रे) २ अन्यस्य
 रूप ग्रह (क प मे) वृ (चु) ३ अग्नि
 प्रकटयति (ना धा), विटव (चु) ४ चित्र
 लिख (स्वा प से) ।
 —विगडना, मु, वदन विवर्ण जन् (दि
 आ से) ।
 —विगाडना, मु, सुर्म विरूपयति (चु) कुरूप
 विधा (जु उ अ) २ दड (चु) ३ अप
 अव मद्र (प्रे) अवगा (क प अ) ।
 —शक्ल, म स्त्री (फा+अ) आकृति (स्त्री) ।
 सूरदास, सं पु (म सूर्यदाम) हिन्दीभाषाया
 श्रीकृष्णभक्तो महाकविविशेष २ अथ,
 प्रणाचमुष्क ।
 सूरन, स पु [स सू(शू)रन्] अरौधन्, ओल
 ह, वानरि, सुवृत्त, बहुरुच्य, कद, दे
 'उमीकद' ।

सूरमा, स पु (म शूरमानिव्) शूर,
 वीर, योध, मट, विक्रमशीर् ।
 —पन, स पु, शौर्यं, वीरत्व, विक्रम, माहसम् ।
 सूरमागर, स पु (सं) भक्त सूरदामरचित
 श्रीकृष्णलीलावर्णनात्मक काव्यविशेष ।
 सूरार, म पु (फा) छिद्र, विल, विवर,
 श्रम न्वि (स्त्री) ।
 —करना, कि म, छिद्रयति (ना धा),
 ममुक्त (तु प से) ।
 —द्वार वि, सच्छिद्र, मरभ ।
 सूर्यं म पु (स) सूर, आदित्य, भास्कर,
 जिन प्रभा विभा दिवा, कर, भास्वत, विवस्वत,
 उष्ण निग्म चड, रश्मि, कर, अर्क, मातण्ड,
 माहुर, तरणि, मित्र, सविट्ट, अशु-भरीचि,
 मन्दिन, महस्ताशु, रवि, दिन अह, पति,
 तपन, पथिनीवल्लभ, दिनमणि, सप्त-अश्व-
 सप्ति तापन, रादिवा, मणि, पतन, ग्रहाज,
 तमोनुद ।
 —दात, सं पु (स) सूर्यं-तपन, मणि,
 रविमान, सूर्यारमन, अग्निगर्भं अर्क-दीप्त,
 उपल ।
 —ग्रहण, म पु (स न) सूर्योपराग,
 मयग्रह ।
 —घड, स स्त्री (स सूर्यघटी) शकुयत्रम् ।
 —तनय, स पु (स) सूर्य, पुत्र-सुत-नदन,
 कण २ शनि, शनैश्वर ३ यम ४ सुग्रीव
 ५ त्रिभुवौ (दि) ।
 —तनया, म स्त्री (स) सूर्यपुत्रां, सूर्या,
 यमुना मानु-जा-तनया ।
 —मडल, म पु (स न) उपनूदन, परिधि,
 परिवेश, मडल, सूर्यविबन् ।
 —सुर्वा, स स्त्री (सं) सूर्यलता, आदित्य
 भक्ता, वरदा, अकंकान्ता, भास्करेष्टा, अकहिता ।
 —सुरी का फूल, स पु, सूर्यकमल, वरदा
 पुष्पम् ।
 —रश्मि, म स्त्री (स ष) रवि-किरण-
 पाद रर ।
 —लोक, म पु (सं) सौरमुवन, लोक
 विशेष ।
 —वदा, म पु (म) रविकुलम् ।
 —वशी, वि (स शिन्) सूर्यवश्य, रविकुलज ।
 —वार, स पु (मं) रवि-आदित्य, वार
 वामर ।

—सञ्जाति, स स्त्री (स) रविनक्रमणम् ।
 प्रातः का—म पु, बाल-रवि-सूर्य-अर्क ।
 सूर्यास्त, म पु (स) अस्त, अस्तमन,
 निम्बोच्च, भानोरस्ताचलदमनं २ दिनात्,
 सार्यकाल ।
 —होना, क्रि अ, सूर्य अस्त इ-या (अ प
 अ)-नाम् ।
 सूर्योदय, स पु (सं) भानूरुगम २ प्रातः
 काल ।
 —होना, क्रि अ, सूर्य उद इ (अ प अ)-
 उदयम् ।
 सूल, स पु, देखो शूल ।
 सूली, सं स्त्री (स शूल-ल) शूला, तीक्ष्णाद्य
 स्थूणा २ शूलारोपण, प्राणदण्डप्रकार ३ बध
 पाशस्थूणा, दे 'धौती' ४ दण्डपाशवध, कंठ
 उद्वेगघात, उद्वेगधन ५ प्राण-शूलु-रुद ।
 —चदाना या—देना, क्रि स, सुले आरुह (प्रे
 आरोपयति) २ उद्वेगव्य व्यापद (प्रे) या हन्
 (अ प अ) ।
 —चदाने या—देनवाला, दण्डपाशिक,
 बधक शूलारोपक ।
 सूस, सूसमार, सं पु (स शिशुमार) दे
 सूतम् ।
 सूहा, वि (हि सीहा) रक्त, शोण, लहित ।
 सूजन, स पु (स सजन) उत्पादन, निर्माण,
 रचनं २ सृष्टि-उत्पत्ति (स्त्री) ३ मोहनम् ।
 —हार, स पु, सृष्ट, उत्पादक, विधान् ।
 सूजना, क्रि स (स सजन) सृज् (तु प
 अ), उत्पद (प्रे), विधा (जु प अ) ।
 सृष्टि, सं स्त्री (स) ससार-उत्पत्ति (स्त्री)
 —सर्ग निर्माण-रचना २ जगत् (न), ससार,
 चराचर वस्तुनात् २ प्रकृति (स्त्री), दे
 'सृदरत्' ।
 —कृता, स पु (सं कृ) सृष्ट, बेषस, विधान्,
 विश्वसृज्, महान् (सव पु) २ इधर ।
 सैक, सं पु (हि सैकना) उ(क)-मन्, त(ना)-
 प, उष्ण शब्दा, उष्णता २ तापन, उष्णी
 करण, तापेन अंगारेषु वा भजनं ३ प्र-स्वेदने,
 धर्मिक, कामणा तापन-उष्णिकरणम् ।
 सैकना, क्रि स (सं श्रेयण) कामणा अंगारे
 वा भस्त् (तु उ अ) २ तप (प्रे), उष्णी
 कृ २ (उष्णजलादिभि) स, सिच् (तु प
 अ)-सक कृ, प्र, सिच् (प्रे) ।

औत्—सु, सौन्दर्य अवलोक् (भ्वा आ से,
 चु प से) ।
 धूप—, सु, आतप मेव् (स्वा आ मे) ।
 सेंटर, स पु (अ) वेन्द्र, मध्यविन्दु, मध्य-
 ध्य २ प्रधान-मुल्य, स्थानम् ।
 सेंट्रल, वि (अ) केन्द्रीय, मध्य, मध्यम,
 मध्यस्थ ।
 सेंटिप्रिड, क्रि (अ) शक्ति ।
 सेंटिमीटर, स पु (अ) शक्तिमान्, शनांश
 मानम् ।
 सैंत, स स्त्री (स सहति = क्लिष्टायत
 २ राशि >)-पयामाव विनियोगाभाव ।
 —मत, क्रि वि (हि + अनु) मूल्य विना
 २ निष्प्रयोजन, व्यर्थम् ।
 —का, सु, मूल्य विना लम्ब, निर्मूल्य ।
 —म, सु, व्यर्थ-मूल्यं, विना २ व्यर्थम् ।
 सेंद्रिय, वि (स) सकरण, साक्ष, इन्द्रियवत्,
 सतीव । २ पुस्तकमुक्त, मैथुन-समर्ध, वीर्यवत् ।
 सैंध, स स्त्री [स मधि (पु)] सधिला, सुर-
 (रु) ग गा, रानिकम् ।
 —लगाना या सैंधना, सधिलां कृ अथवा सन्
 (स्वा प से) ।
 —लगाने वाला, स पु, सुर(रं) गयुज् सधि
 हारक, सधिलाकत ।
 सैंधा, स पु (सं सैंधव-व) भीतशिव, माणि-
 मथ-वध, व'शर, मिथु(देश) व, शिव, निड
 पत्थम् ।
 सैंधिया, सं पु (हि सैंध) दे 'सैंध लगान
 वाला' ।
 सैंवडै, म स्त्री (म् मेदिना) मृत्रिका ।
 —पूरना या—बटना मु, मेविका व्यावृत्त(प्रे) ।
 सैंडुड, म पु, दे 'यूडर' ।
 से, प्रत्य (प्रा सुते, पु हि सैंति) वरग
 कारकविद्ध (प्राय तुनीया ने, 'स' से या
 —पूर्व, —पूर्वक आदि से अनुवाद करते हैं । उ,
 आदर से—आदरेण, सन्दर, आदरपूर्वकं इ)
 २ अपादानविद्ध (प्राय पचमी से 'आ' से
 या 'प्रभूति' 'आरम्भ' आदि से अनुवाद करते
 हैं । उ, वृक्ष से गिरा वृक्षम् अपनन्, जम
 से—आजम, आजन्मन, कल म लेकर=ध-
 प्रसृति, अ आरम्भ इ) ।
 सैं, वि (हि 'सा' का बहु) सम, समान,
 सहता ।

सेकड, स पु (अ) विकला, विपन्न, क्षण ।
 वि (अ) द्वितीय ।
 सेक, स पु (स) दे 'सित्वा' ।
 सेक्रेटरी, म पु (अ) मन्वि, सेरानसविब ।
 सेकुरान, स पु (अ) वि, भाग ।
 सेचक, स पु (स) मेघ, वरिष्ठ । वि
 प्रो. क, सेचु ।
 सेचन, स पु (स न) कव-आ, नेक
 मेचन, अन्वुक्षण, प्रोक्षणम् ।
 सेच, स स्त्री (स शय्या, दे) ।
 —पाल, स पु (स शय्यापाल) शयना
 गाररक्षक, शय्या, अध्येक्ष पाल ।
 सेठ, स, पु (स श्रेष्ठिन्) लक्ष्मण, कोटीश्वर,
 धनाढ्य । २ वणिग्वर, सार्थवह ३ धनिमा
 नितनोपाधि ४ क्षत्रियोपातिभेद [सेठानी
 (स्त्री) धनाढ्या, धनाढ्यपत्नी] ।
 सेतु, स पु (स) वारण, सवर, दे 'पुल' ।
 —बध, स पु (स) वारण सवर, धन-
 निर्माण २ शौरामनिमित्त सेतुविशेष ।
 सेना, कि स (स सेवन) अडाव उत्पन्ने,
 अदेपु उपविन् (पु प अ) २ सेव (म्वा
 आ से) ३ उपाम् (अ आ से) ।
 सेना, स स्त्री (स) सैन्य, बल, वहिनी,
 चतु (स्त्री), अनौकिकिनी, पृतना, ध्वनिनी,
 वरुथिनी, चक्र, मुलिननी ।
 —पति, म पु (स) सेनानी, पाहिनीपति,
 सेना, बह-नायक-पाल-अध्यक्ष-अधीश-
 नाथ ।
 —स्पृह, स पुं (स) सैन्यविन्यास ।
 सेनानी, म पु (स-नी) दे 'सेनपति' ।
 सेनेट, स स्त्री (अ) प्रधानव्यवस्थापिका
 मभा, २ विश्वविद्यालय्य प्रबन्धकर्त्री सम्रा
 ३ परिषद् (स्त्री), सभा ।
 सेक, म पुं (अ) लोहपेटिका, रक्षामयूषा ।
 सेब, स पु (का) आत-नेवि मित्रित्व-
 मित्रित्वा, फल, सेव, मुष्टिप्रमाणवदरम् ।
 सेम, स स्त्री (म दिनी) दिना, सिद्धि । वि
 (स्त्री) मित्रा, सिद्धिका, सिद्धि (स्त्री) ।
 सेमल, स पु [स शम्भलि (पु स्त्री)]
 शम्भल लिनी, वृक्ष, दीर्घदुम, रन्ध्रपु-
 टारोहा ।

सेर^१, स पु (स) सेटनम् ।
 सेर^२, वि (का) वृत्त, सगुण ।
 सेराव, वि (का) जलप्लुन, अनिक्लिन्न २ सिक,
 प्लावि ।
 सेरी, स स्त्री (का) वृत्ति (स्त्री), सतीष ।
 सेर, स पु (हि सिरो) खट्वाया शीर्षपादपट्टी ।
 सेल, सं पु (अं) जीवकोष ।
 सेलखड़ी, स स्त्री, दे 'खडिया' ।
 सेरूलोज, स पु (अ) काष्ठीजनम् ।
 सेवक, म पु (स) परि अनु, चर, किकर,
 भृत्य, भूतक, कर्मक(कार) अनुजीविन्,
 दास, नियोज्य, वेष्ट, वेष्टक, डिगार, परि,
 कामिन्-चारक-जन-स्कर, प्रेष्य, मुञ्चिष्य,
 लक्षिक, शुश्रूषक २ भक्त, उपसक्त, आरा
 धक ३ शिष्य, अन्तेवात्सिन ।
 सेवकाई, सं स्त्री (म सेवक >) उप, चार-
 चर्यास्थान, परिचर्या, शुश्रूषा, सेवकत्व, कर्मचर्य,
 सेवा, श्रवृत्ति (स्त्री) २ आराधन, पूजा ।
 सेवती, स स्त्री (स सेवती) सनपत्रा,
 कर्षिका, चास्केर(स)रा, महाकुमारी, यथास्था,
 अनिमज्जुला, तन्मो, मूढेष्टा, शिववत्सभा, राम
 तरुणी ।
 सेवन, स पु (म न) दे 'सेवा' २ उपा
 सन, आराधन, पूजनं ३ उपयोग, प्रयोजन,
 उपभोग ४ सनतवास्त ।
 —करनी, कि स, उपभुन् (स अ अ), सेव्
 (म्वा आ से) ।
 सेवनीय, वि (म) सैन्य, सेवितव्य, सेवा
 परिचर्या-उपचर, अहंयोग्य २ पूज्य, आराध्य
 ३ उपयोग्य, प्रयोजनीय ।
 सेवा, स स्त्री (सं) दे 'सेवकार' (१, २)
 ३ अश्रय, सरानम् ।
 —करनी, कि स, सेव् (म्वा आ से),
 अनु उप परि, चर (म्वा प से), उपाम
 (अ आ से), उपस्था (म्वा आ अ),
 शु (सत्रन्त शुश्रूषणे) ।
 —टहल, स स्त्री (सं + हि) परिचर्या ।
 —शुश्रूषा, स स्त्री (स) उप-चार चर्या ।
 सेविका, स स्त्री (स) चेटी, दासी, मुञ्चिष्या,
 प्रेष्या, कर्मकरी, नियोज्या, परिचारिका ।
 सेवित, वि (स) शुश्रूषित, उप परि, चरित

२ उपामित, पूजित, आराधित ३ व्यवहृत, प्रयुक्त ४ आश्रित ५ उपनुष्ठा, कृत्रिमयोग ।

सेवी, वि (स विन्) नेवक सवापरायण २ पूनक, आराधक ३ -भोनी। -नुन्, -भक्षिन्, -पायिन ।

सेवान, म पु (अ) बहुदिवसममध्य अधि देशन समेजन २ सत्र (स्त्राल आदि का) ।

—कोट्टे, स स्त्री (अं) दण्डसत्राधिकरणम् ।

—जज, स पु (अ) दण्डसत्रार्थात् ।

सेहत, स स्त्री (अ) छटा, मौल्य २ रौत मुक्ति (म्हा), दे 'स्वास्थ्य' ।

—खाना, सं पु (अ + का) शौचागारम् ।

सेहरा, स पु (स शेखर) बरमुग्धावलि मालावली-खरबाल २ बर-परिपेय, -मुकुट ३ बरगुणवर्णनात्मकं गौतम् ।

—बैघाई, स स्त्री, दोसरबधनगुणम् ।

सेही, स स्त्री, दे 'साही' ।

सेङ्गलाई फीवर, सं पु (अ) बाहुकामक्षि काञ्चर ।

सेतालोस, वि (स सततत्वारिणश्च) स पु, उक्ता मल्या, तद्बोधकावौ (४७) च ।

सेतालीमर्वा, वि (हिं सेतालीम) सततत्वारिणश्चम-मीम, सततत्वारिण-शीश (पु स्त्री न) ।

सेतीस, वि (मं सतविशन्) स पु, उक्ता मल्या, तद्बोधकावौ (३७) च ।

सेतोसर्वा, वि (हिं मैतीम) सततविशत्तम-मीम, सततविश-शीश (पु स्त्री न) ।

सेधव, म पु (म) (मिधरदूभव) धोक्, मिधुदेशीयोऽथ २ दे 'सेधा' ३ जयदथ ४ मिधुदेशवमिन् । वि (मं) मिधुदेशीय ० समुद्रप, समुद्रीय मानुषिक ।

सेकदा, म पु (म शतवाट-ठ) शत, शतक ० शतवस्तु-ममुदाय-ममूह-ममुच्चय । कि वि, प्रतिभातम् ।

सेकडों, वि, पर-दान ।

सेकडगर, सं पु (अ सैक-+गर) शत, -मार्ज-मानक-जेडक ।

सेद्धातिक, सं पु (म) मिद्यान-विद्, लक्ष्म, राज-मिन् २ ताविद् । वि (म) मिद्यान-राज-मिन् सत्र, मरीधिन् ।

सेन, सं स्त्री (म सतपन् >) मनेन, महा, शक्ति २ लक्षणं, चिह्नम् ।

—करना, कि स, (शीर्षहस्तादिभि) मशं मनेन वा कृता ।

—मारना, कि स, सहाय मबलोक (जु) २ निमेषेण मनेन कृ ।

सेना, स स्त्री, दे 'सेना' ।

सेनानत्य, सं पु (स न) सेनापति सेनाध्यक्ष, कार्य पदम्, सेनापतित्वम् । वि (मं) सेनापति, सम्बन्धिन्-विषयक ।

सेनिक, स पु (सं) सेनाचर, योध, भट, मैन्य, आयुधिक, योद्ध २ रक्षापुरव, दे 'मनरी' । वि (मं) सामानिक, सामरिक, आयुधिक, क्षत्र[-त्री (स्त्री)] ।

—जाद, स पु (स) ममरसमर्थकसिद्धान्त, युद्धानुमीदकवाद ।

सेनिटरी, वि (अ) स्वास्थ्य आरोग्य, कर रक्षक विषयक ।

सेनिटेशन, स पु (अ) आरोग्य स्वास्थ्य, रक्षा-रक्षणम् ।

सेन्य, स पु (स न) दे 'सेना' ।

सेरग्री, म स्त्री (मं) स्वतत्रा शिल्पचरिणी २ अन पुर, परिवारिका-दानो ३ द्रौपदी ।

सेर, म स्त्री (का) मुख, पर्यटन, परि, भ्रमन, विहार, विहरणं, विचरणम् ।

—करना, कि, अ, सुव पयट-विचर (म्हा प मे), विह (म्हा प अ), भ्रम् (म्हा प से) ।

—गाह, म स्त्री (का) भ्रमण पर्यटन, श्वानं स्थली ।

—यपाटा, म पु, दे 'सेर' ।

सेरानी, वि (का सेर) पर्यटन भ्रमण-विहरण, शील, पयटक, यथेष्टविहारिन् २ आर दिन, विनोदिन्, प्रमोदिन्, उन्मामिन् ।

सेर-व, स पु (का) जल, स्वानन-वृक्षा विष्वक् प्रलय म्हालाव २ महा, प्रवह-अन् ।

सेर, प्रत्य, दे 'से' ।

सेरर नमक, स पु (म सीर-वं-+न) मीर-वं-ल, रचवं, रच्यं, अर्ज, कृत्वा-र्वा, निष्क, हृद्यगणकम् ।

सेरटा, सं पु (सं सुट >) लुट्-ट, रथूक, यटि (स्त्री)-दण्ड २ मुमल-लम् ।

—सरदार, सं पु (हिं-+रा) दद, भर-भूट ।

सोढ, स स्त्री [स शुठी ङि (स्त्री)] मदा
विश्व-औषध विश्वमेघन, कटुमार्थ, कफारि ।
सोँघा, वि (स सुगन्ध) सुगन्धिन, दे ।
सोँपना, क्रि म दे 'सोँपना' ।
सोँह, स स्त्री दे 'सोँगद' ।
सो, सर्व (म स) देखो वह' । अर्थ, अग,
अन-एव, अनेन वास्तेन अरमात् कारणत् ।
सोड्ड, वाक्पाठ (म न + अह) अह ब्रह्मा
निम (वे) ।
सोभा, स पु (स शताब्द) मिन-अति,
-उत्था, शन, अश्री पुं वका मधुरा, मधुरिका,
मधुरी, मिश्रीशि [(स्त्री) शास्त्रभेद] ।
सोँड़े, सर्व, दे 'वडा' ।
सोखना, क्रि म, दे 'सुखाना' ।
सोख्वा, स पु, दे 'व्यादीचूम' ।
सोगद, स स्त्री, दे 'सोँगद' ।
सोग, स पु (म शोण) (शृत्युनित)
परिनाप, शुचा, शु राम् ।
—मनाना, मु, शौरचिदान धृ (चु), शुच
(स्त्र प से) ।
सोच, म पु (स शोचन) शोक, शुचाच
(स्त्री), विषाद २ विचार, विमर्श, विचा
रणना ३ चिन्ता, रणरणक, उत्तरिका,
-वपत्ता ४ पश्चात् अनु, ताप ।
—विचार, स पु (ङि + म) विचार-रथा,
विमर्श, आलोचना, समीक्षा, विनक, विवे
चन-ना ।
सोचना, क्रि अ (म शाचन) विचर् (प्रि),
विमृश (तु प अ), आपर्षा-समा लोच
(चु) २ विन्नाक, चिन्त (चु) ३ शुच
(स्त्रा प मे), दे 'विचारना' ।
सोण्डूवास, वि (स) प्रमत्त, प्रष्ट २ शिबिल,
इत्य ३ उच्छ्वासमुक्त ४ मन्वरप्राण । अर्थ
(स न) नदीवशास, नि श्वात्मपूर्वक, सनि
श्वामम् ।
सोज, स स्त्री (हि सुजना) शीघ्र, शाक,
दे 'सुजल' ।
सोत्रिश, स स्त्री (का) पात्र, प्रदाह
२ शीघ्र ।
सोटा, म पु दे 'सोँग' ।
सोडा, स पु (अं) विशार ।
—वाटर, स पु (अ) विशारलम् ।
खने का—, *भक्ष्यविशार ।

धोने का—, *भावनविशार ।
सोडियम, स पु (अ) धारातु (न),
धारनम् ।
सोत ता, म पु (स) श्रोतस (न) उत्पन्,
वारिप्रवाह, प्रववण, निर्, शर २. नदी-
शाखा, कुल्हा ।
सोता, वि (स) सुप्त, शयान, निद्रित ।
सोते-जागते, मु, अहनिश, दिवानिश, प्रति
क्षण, सदा ।
सोदर, स पु (स) सहोदर, सोदर्य, भ्रातृ ।
सोदरा, म स्त्री (सं) महोदरा, सोदर्या,
स्वस (स्त्री) ।
सोने, स पु (स शोण) शिरण्यवाह-दु,
शोणभद्र, शोणा (नदविशेष) ।
सोनजूही, स स्त्री (स स्वर्णवृषी) हरिणी,
पीतिका, हेमपुं पका, हेमा, स्वर्णवृषिका ।
सोना, स पु (स सुवर्ण) स्वर्ण, कनक,
शिरण्य, हेमन् (न), हाटक, तपनीय, शात
कुम्भ, चानीर, जातरूप, महारजत, वाचन,
रुक्म, कात्स्वर, नाबूनद, अष्टापद, भद्र,
कल(पु)र, द्रविण, पिंजर, कलधौत, लाहवर,
कल्याण, मनोहर, भास्कर, दीप्त, मगल्य,
निष्क, अग्निशिखा, २. महावै-बहुमूल्य, नस्तु
(न)-द्रव्यम् ।
—(ने)का तार, स पु, कनकचूडम् ।
—(ने)का पानी, स पु, सुवर्णलेप ।
—(ने)का वडू, स पु, सुवर्णपत्रम् ।
गहनों का—, म पु, शृंगि, शृगी, शृगी
कनकम् ।
सोना, क्रि अ (स शयन) स, शी (अ
आ स), निद्रा (अ प अ), सविश (तु
प अ), स्वर (अ प अ) २ (आदि)
निद्रनेत्र निरस्वभ-निश्चल (वि) भू ३ दे
'मरना' । स पु, शयन, निद्रा, गुडाका, तंद्रा,
तामसी, प्रमीला, सवेश, सुप्तति (स्त्री),
स्वप्न, स्वाप, शी ।
सोनामास्त्री, स स्त्री (म स्वर्णनामिक)
माषिक मधु पातु, तापित (उपधातुभेद) ।
सोने का कमरा, स पु, स्वप्न-गृह निद्रनेत्र,
शयन-गृह मंदिर-आगारम् ।
सोने चोथ, वि, शयितव्य, शेष, शयनाथ ।
सोनेवाला, स पु, सुषुप्त, विशविपु,
निद्रालु, शयालु, तद्रालु ।

सोया हुआ, वि, निद्रित, निद्राग, भयित, सुप्त, शयान, निद्रामग्नः ।
 सोप, स पु (अ) दे 'सावुन' ।
 सोपान, स पु (स न) दे 'सीडी' ।
 सोक्रा, म पु (अ) शय्या, पर्शक, शयनीयम्, *उपवेश्य, *आस्थ ।
 सोम, स पु (म) दुर्भांशु, चद्र, दे 'चदि' २ सोमवार ३ स्वर्ग ४ कर्पूर ५ सोमलता ।
 —काव, सं पु (सं) चद्रवर्त ।
 —ग्रह, स पु (स) चद्रग्रहणम् ।
 —देव, स पु (स) सोमदेवता २ चद्रदेवता ३ कथास्तोत्रसागरस्य रचयितृ ।
 —नाथ, स पु (स) ज्योतिर्विज्ञविशेष २ प्राचीनगरविशेष ।
 —पान, स पु (स न) सोमपीननि (श्री) ।
 —पायी, वि (स-यिन्) सोम, पया-पीतिन् ।
 —पुत्र, स पु (स) सोमज, बुधग्रह ।
 —यज्ञ, स पु (स) सोम, याग मल-कतु ।
 —रोग, स पु (स) म्यारोगभेद २ बहुभूजता, मृत्पातिसार ।
 —रत्ना, स स्त्री (स) सोमवर्जा, सोमा, क्षीरी, दिवप्रिया, शुक्लवस्त्र, वल्ली, धनुन्ता, सोमक्षीरा, यज्ञश्रेष्ठा २ गुह्यवी ३ मफा ।
 —वक्र, सं पु (सं) चद्रवक्र २ युधिष्ठिर ।
 —वती, म स्त्री (सं) सोमवती अमावस्या ।
 —वल्ली, सं स्त्री (स) सोमलता २ गुह्यवी ३ सोमराजी ४ पातालगरनी ५ बाह्यी ६ सुदर्शना ।
 —वार, स पु (सं) सोम-वक्र, वार वामरदिनम् ।
 सोरठ, सं पु (सं सोरठ) प्राग्निशेष (गुजरान तथा दक्षिणी काठियावाड) २ सोमपुत्र राजधानी (सुरत नगर) ३ रागभेद ।
 सोरठा, स पुं (हिं सोरठ) हिन्दोवकियाका शरीभेद ।
 सोल^१, वि (?) शीत, शान्त, सिद्धि २ निलम्बकषाय । स पु (?) शीत, शीत्य ३ निलम्बकषाय स्वाद ।
 सोल^२, म स्त्री (अं) आत्मन्, ज्ञान, ज्ञेयम् ।
 सोल^३, सं पु (अं) पाद, तन्त्र २ पादकषणम् ।

सोलह, वि (स पौ-शब्द) षट्सन्दरा । स पुं, जका मल्या, तद्गोषभाडी (२६) च । सोलहो जाने, सु, सायत्येन, अशेषन, पूर्वतया, सामत्येन ।
 सोलहवाँ, वि (हिं सोलह) षोडश शीश (पु स्त्रान) ।
 सोसल, वि (अ) सामाजिक, समाजविषयक ।
 सोसलिङ्गम्, सं पु (अ) ममानवाद ।
 सोसलिस्ट, म पुं (अ) समाजवादिन् ।
 सोसनी, (वि (फा मौसन) रक्तनील ।
 सोसाइ(य)टी, स स्त्री (अ) ममाञ्, सभा, गोष्ठी २ मगति (स्त्री), ममार्ग ।
 सोह-मोहगम, वेदान्त-वाक्य, दे 'सोह' ।
 सोहन, वि (मं) शोभन, मनोहर, दे 'सुदर' । स पु, नायक, सुन्दरपुरुष ।
 —चडिया, स स्त्री, *शोभनचटक (का स्त्री) ।
 —पपट्टी, म स्त्री, *शोभनपपट्टी ।
 —इलवा, स पु, *शोभनसयाव ।
 सोहना^१, क्रि अ (स शोभन) शुभ्विराज (भवा आ से), ललित-सुदर शोभन (वि) श्रु (भवा आ से), विभा (अ प अ) । वि, शोभन, रम्य, सुदर, मनोज ।
 सोहना^२, क्रि स (म शोभन) कुतूष्णानि उन्मूल (सु), क्षेत्र कुतूष्णरहित कृ ।
 सोहवत्, स स्त्री (अ) सगति (स्त्री), ममार्ग २ मैथुनम् ।
 सोह(हि)ला, म पु (हिं सोहना) *पुत्रज-मोत्यवगीत २ मगत्य-मांगलिक शुभ, गीत ३ देवतास्तोत्रम् ।
 सोहिनी, वि स्त्री (सं शोभिनी) सुदरी, मनारमा, रम्या, सुरूपा । स स्त्री, रागिणी भेद ।
 सौंदर्यं, स पु (सं न) रमणीयता, दे 'सुदरता' ।
 सौंपना, क्रि अ (सं समर्पण) न्यस्त (दि व म), निधिप (सु प अ), सम्पत् (प्रे समपयति), प्रतिपद-निविश (प्रे) । म पुं, न्याम, निधिप, समर्पण, प्रतिपदनम् ।
 सौंपने योग्य, वि, निधेयव्य, समर्पणीय ।
 सौंपने वाला, म पु, निधेय, समर्पयितृ ।
 सौंपा हुआ, वि, निश्चित, न्यस्त, ममापित ।
 सौंफ, सं स्त्री (सं शयपुष्पा) मपुरिया,

माधवी, माधुरी, मधुग, मुगधा, शतपत्रिका,
अनि मिन, छत्रा ।

—का अत्र, स पु, शतपुत्रासव ।

माह, म स्त्री दे 'सौद' ।

सौ, वि (स शन, नित्य न) दशगुणितदश
मर्या । स पु, उक्ता मल्या, तद्बोधका
(१००) च ।

—यात की पुरु बात, मु, सार, तत्पर्य,
साराण ।

—विस्त्रे, मु निश्चयेन, अवद, नि मशयम् ।

सौर्वा, वि, शतनम-नीमम् ।

सौम्न, स स्त्री, दे 'सौन' ।

सौकर्य, स पु (म न) सुकरता, सुभाष्यता
२ दे 'सुमीता' ।

सौकुमार्य, म पु (म न) कोमलता, दे
'सुकुमारता' २ यौवन ३ वाच्यगुणभेद ।

सौखिक, वि (स) सुखेच्छुक, सुखैषिन्,
सुखकामिन् २ सुख-आनन्द-मोह, दायक प्रद
३ सुख-आनन्द, विषयक-सम्बन्धक ।

सौरय, म पु (म न) आनन्द, सुख दे ।

सौगद, स स्त्री (जा) शपथ, समय, प्रतिज्ञा,
वचन, वाचा, सत्त्व ।

—श्वाना, क्रि अ, शप् (श्वा दि उ अ),
सशपथ वद (श्वा प से) ।

—देना, क्रि स, शप् (श्रे), सशपथ वच
(श्रे) ।

सौगध, सं प (स न) सुगंध दे २ गाधिक,
दे 'गधी ३ क्लृप्तम् । म स्त्री, दे 'सौद' ।

वि (स) सुगंधि दे ।

सौगधिक, वि (सं) सुगंधि, सुगंधित, सुवाम,
सुरभि । स पु (म) गाधिक, गध,
विक्रमिन् उपजीविन्-वणिज । २ गध(धि)त्र,
गधदम् । (म न) नील, श्मल-उत्पल,
कुवच्यम् । २ पुण्ट्रांक, सिताम्भोज, श्वेत
कमलम् । ३ मगन्धिपानभेद ४ पन्नराग ।

सौगात, स स्त्री (तु) उपहार, उपायन,
प्राप्तन-नक २ दुर्लभवस्तु (न) ।

सौगन्ध, म पु (म न) मञ्जनता, सुजनता,
दे ।

सौत, सौत(ति)न, म स्त्री (सं सपत्नी)
ममानपत्रिका ।

सौतिया डाह, स पु, सापत्येभ्यां २ साप
त्य, ईष्यां ।

सौतेला, वि (हि सौत) सापत्य [-नी (स्त्री)]
सपत्नी जन्मवधिन ।

—पिता, न पु, वि भानृपति ।

—पुत्र, म प सपत्नीपुत्र, सापत्य ।

—बच्चा, स, पु पर नाम अपत्यम् ।

—भाइ, स पु वैमात्र, वैमात्रेय विमातृज ।

सौतेला पुत्री, स स्त्री, मपत्नी, पुत्री-दुहितृ
(स्त्री) ।

सौतेली बहन, स स्त्री, वैमात्री, वैमात्रेयी,
विमातृता ।

सौतेली माता, स स्त्री, विमातृ (स्त्री) ।

सौदा, स पु (अ) भाड, भाडानि (बहु),

पण्य, क्रयविक्रयवस्तु (न) २ अदान प्रदान,
दानादान, व्यवहार ३ क्रयविक्रयी (द्वि),

नियम, वाणिज्य, व्यापार, वगिकर्मन् (न)
४ क्रय विक्रय, प्रतिज्ञा ।

—करना, क्रि अ, क्रयविक्रय कृ, वाणिज्य कृ,
पण (श्वा आ अ) ।

—सुलुक, स पु, दे 'सौदा' (१) ।

—सूत, स पु, व्यवहार ।

सौदा, स पु (अ) उन्माद, दे 'पागलपन' ।

सौदाई, स पु (अ सौदा) उन्मत्त, दे
'पागल' ।

सौदागर, स पु (का) नैगम, क्रयविक्रयिक,
पण्याजीव वणिज, वाणिज्यकारिन्, सार्थ
वाह, सार्थिक ।

—बच्चा, स पु (का + हि) वणिज
२ वणिजपुत्र ।

सौदागरी, स स्त्री (का) दे 'सौदा' (१) ।

सौदाम(मि)नी, स स्त्री (स) सौदाम्नी,
चपला, चचला, तडिट विद्युत् (स्त्री), दे
'विन्दती' ।

सौध, स पु (स न) हर्ष, प्रसाद, भवन,
अट्टानिका ।

सौस्तिक, स पु (स न) निशायुद्ध, रात्रिण,
रात्रि निशा, मारण २ महाभारतीयपर्वविशेष ।

सौभागिनी, सं स्त्री, दे 'सुहागिन' ।

सौभाग्य, म पु (स न) सु भग्य-भागधेय
दैव-दृष्टिदिशि (स्त्री)-निपति (स्त्री) २ सुख,
आनन्द ३ कल्याण, कुशल ४ दे
'सुहाग' (१) ५ ऐश्वर्य, विभव ६ सौन्दर्य
७ सुभेच्छा ८ साकल्य ९ मित्रम् ।

—शुद्धी, स स्त्री (म) मृत्तिरोगनाशक
याकमेद (आयु) ।

सौभाग्यवती, वि स्त्री (स) मधवा, दे
'मुद्गागिन' २ भाग्यशालिनी ।

सौभाग्यवान्, वि पु (स-वर्द) महाभाग,
शुभाग्य, शुभग, पुण्यवत्, भय २ सुखी
सपन्नश्च ।

सौमित्रि, स पु (म) सौमित्र, लक्ष्मण ।

सौम्य, वि (म) भोमसंबन्धित २ मौमिक,
चान्द्र २ शीतरिन्गध ४ नम्र सुशील, शीत
५ शुभ, मग्न्य ६ प्रमत्त, प्रहृष्ट ७ प्रियदर्शन,
सुदर ८ लज्जल, मामुर ।

—दर्शन, वि (म) प्रियदर्शन, शुभगाकार ।

—वार, सं पु (स) दुषवासर ।

सौम्यता, स स्त्री (स) शीनलता, शीत
रिन्गधना २ सुशीलता, साधुत्व ३ सौन्दर्य
४ उदारता, परोपकारिता ।

सौर, वि (स) सौर्य, स्य विषयक मन्धिन
२ भानुन ३ मृद्यानुसारिन् ।

—माम्, स पु (स) सूर्यकटाशिभोगावच्छि-
न्नकाल ।

—सवत्सर, स पु (म) सूर्येव द्वादशराशि
भोगावच्छिन्नकाल ।

सौर, सं स्त्री (देश० सौर) दे 'चादर' ।

सौर्य, स पु (म) वीर, मट, बोध,
योद्ध ।

सौरभ, स पु (मं न) सुगंध, दे २ कुकुम,
दे 'केमर' ३ आजम् ।

—वाह, स पु (म) वायु, पवन ।

सौरभित, वि (म) मरभि, सुगन्धित दे ।

सौराष्ट्र, सं पु (म) प्रान्तविशेष (गुजरात
नाडियाकाह) ।

सौरा, म स्त्री (म मृत्तिकाकार) दे 'मृत्तिका
गृह' ।

सौष्टव, म पु (म न) सौन्दर्य, सुप्रभा,
लावण्य २ लाजव, क्षिप्रता ३ शुण अनिशय
उत्सव, बेनिष्ठ ४ उपयुक्तता, उपयोगिता ।

सौहार्द, सं स्त्री (मं शरय) दे 'सौहार्द' ।

सौहार्दिना, म पु (स शोभाजन) नील्य
गंध, सु, नीलग, रचिर्जन ।

सौहार्द, सं पु (मं न) सूर्य, मातृपदीन,
मौहर्ष, अत्रय २ 'मित्रता' ।

स्कन्द, म पु (स) कानिरेव, सेनानी,
शिल्पिवाहन, षाण्मातुर, कुमार, शक्तिधर,
स्वामिन्, द्वादशनेचन ।

—पुराण, म पुं (म न) पुराणप्रथविशेष ।

स्कंध, स पु (स) अम, पुन शिरम् (न)-
मूल, दो शिखर, कल्मष २ प्रकाश-द्वै, दड,
स्कंधस् (न) प्रकाशक, दे 'नना' ३ शारा
४ समूह ५ मैन्यव्यूह ६ ग्रन्थविभाग,
राउ-उ, पवन (न) ।

स्कंधावार, म पु (स) शिवि(वि)र, कटर,
२, सेना, अक्वाम-स्थान ३ राजधानी ४ सेना
५ यात्रिन्वगिष्ट, निवेश ।

स्कर्वी, स स्त्री (अ) शीताद ।

स्कारलेटिना, म पु (अ) आरक्तज्वर, उदरं,
लोहितज्वर ।

स्कारर, म पु (अं) छात्र, विद्यार्थिन्
२ सुविदम्, भट्ट, प्रकाशपटित ।

—शिप, म पु (थ) छात्रवृत्ति (स्त्री)
२ पाठित्य, विद्वत्ता ।

स्कीम, स स्त्री (अ) योचना, आवोजनं,
व्यवस्थितविचार, प्रयोग, युक्ति (स्त्री) ।

स्कूल, म पु (अं) विद्यालय, पाठशाला ।

—मास्टर, म पु (अ) शिक्षक, अध्यापक ।

स्खलन, म पु (म न) पतनं, भ्रंश, क्षय,
सहनं २ सम्मार्गं च्युति (स्त्री)-ध्ववनं
विकलन भ्रंश, उन्मार्गप्रसम् ।

स्खलित, वि (म) पतित, च्युत, भ्रष्ट,
२ सस्त, मृदु सत ३ विकल्पित ४ भ्रान्त
५ उन्मार्गगत ।

स्नाप, म पु (अं र्दं) (आधिकारिक)
मुद्राङ्कितपत्र २ पत्रगुरुमुद्रा, दे 'टाक वा
टिक्ट' ३ मुद्रा ४ मुद्राङ्क ।

स्टार्च, म पुं (अं) श्वेतमाग ।

स्टीम, म स्त्री (अ) वाष्प ।

—इजन, स पु (अ) वाष्पयन्त्रम् ।

स्टीमर, म पुं (अ) वाष्पपोत ।

स्टूल, सं पु (अ) कर्षादिम् ।

स्टेज, स पु (अं) रत्न, मञ्च भूमि (स्त्री)-
पीठ २ मञ्च ।

—मनेजर, म पु (अं) रगमञ्चप्रबंधक,
मन्त्रधार ।

स्टेथिस्कोप, म स्त्री (अ) अर परीक्षणी ।

स्टेशन, सं पु (अ) (वाष्पयन्त्र) स्थानम् ।

स्टेशनरी, स खी (अ) लेखननामध्री ।
 स्टैंड, स पु (अ) आधार, स्थापकम् ।
 स्तम्भ, स पु (सं) स्तूणा, स्थाणु, स्तूप, मेढि थि २ तरुस्तम्भ, प्रकाड-ड इ सात्त्विक भवभेद ४ प्रतिबंध २ मूर्च्छा, जाडयम् ।
 स्तम्भक, वि (म) स्तम्भकर, रोमक २ जाण, कर-जनक ३ वीयरोधक ४ मलावष्टम्भक ।
 स्तम्भन, स पु (स न) अव, रोध-रोधन, निवारण २ शुक्रपातविल्व ३. स्तम्भक (औषध) ४ जडी निदोषटी, करण ५ (स पु) मदनवाणविशेष ।
 स्तम्भित, वि (म) अव, रुद्ध, निवारित २ जडी, भूतहता, निस्तम्भ ३ स्थित, विरत ।
 स्तम्भय, स पु खी (स) उत्तानशय-या, विभ भा, स्तनय पा, स्तम्भय-यायी, स्तन, पायक (पायिका)-पायिन् (-पायिनी) ।
 स्तन, स पु (स) कु(कु)व, उरो-उरमि, अ, वशी, अ-रुह ।
 —चूचुक, स पु (स न) स्तन, मुख-अग्र-शिक्षा-भूत, मेनकम् ।
 —पान, स पु (स) स्तन्य-पीनि (खी) ।
 —पायी, स पु, दे 'स्तम्भय' ।
 स्तम्भ, स पु (स न) क्षीर, दुग्धम् ।
 स्तम्भ, वि (स) निश्चली-जडी, भूत निक्षेष्ट, सुप्त, निस्तम्भ २ इष्ट निरुद्ध ३ इष्ट ग्यिर ४ मंद अलस ५ दुराप्रदिन् ६ इष्ट ।
 —दृष्टि, वि (म) स्तम्भनयन, निर्निभेय ।
 —बाहु, वि (मं) जघ-निलम्ब, निक्षेष्ट, हस्त-कर-बाहु मुज ।
 —भक्ति, वि (सं) मद्भुक्ति, जड ।
 स्तम्भता, स खी (म) चटना, म्पदन हीनता २ स्थिरता, दृढता ३ धरिता, श्रवण-स्थिता ।
 स्तर, स पु (म) दे 'परत' २ शय्या, भारत, नल्य-स्वम् ।
 स्तव, स पु (म) स्ताव, स्तुति (खी) दे । २ स्तोत्र ३ शंभरप्रार्थना ।
 स्तवक, स पु (म) पुष्प-कुसुम, मुच्छ-स्तव २ राशि अघ्वाय, परिच्छेद ४ स्तन ५ स्तोत्र ।
 स्तवन, स पु (स न) गुणगोचन स्तुति (खी) ।

स्तुत, वि (मं) प्रशंसित, प्रशम्न, श्लाघित, इडिन, कीर्तित ।
 स्तुति, स खी (म) स्त(स्ता)व, उण, वर्णन कीर्तन-कथन, दलावा, स्तुति (खी), इडा, प्रशंसा दे ।
 —करना, क्रि म, नु (अ प मे), स्तु (अ प अ), इड (अ आ ने), इण्य (म्वा आ से), प्रशम् (म्वा प मे) ।
 —पाठक, स पु (स) भाग्य, चारण, वैतालिक ।
 स्तुत्य, वि (स) नव्य, नाव्य, नवितव्य, प्रशम्न्य, प्रशमनीय, स्तोत्रव्य स्तवनीय, प्रश साई ।
 स्तूप, स पु (म) मृदादि-कूट-राशि २ बौद्धचैत्य ।
 स्तोन, स पु (म) चौर, तस्कार ।
 स्तोय, स पु (स न) चौयै, परद्व्यहरण, स्तैन्यम् ।
 स्तोत्रव्य, वि (म) दे 'स्तुत्य' ।
 स्तोता, वि (म न्) प्रशंसक, स्तावक, नविन्, नावक, वर्णक, स्तुतिवादेक ।
 स्तोत्र, स पु (म न) छन्दोबद्ध देवगुण कीर्तन, स्तव, स्तुति (खी) ।
 स्तोम, स पु (म) स्तुति (खी), स्तव २ यज्ञ ३ राशि ।
 खी, स खी (म) बनिता, महिला, रामा, नारी, दे २ परनी, माया ३ खीलिंगी जलि ।
 —ग्रह, स पु (म) चन्द्रबुधशुक्रग्रहा (ज्यो) ।
 —मित्त, खी वरा विनित-वदय ।
 —धन, स पु (म न) खीस्वत्वास्पदोभूत धन (माना, पिता, भाई तथा पति मे प्राप्त, विवाह मस्कार के समय प्राप्त और रहेन) ।
 —धर्म, स पु (म) ऋतु, पुष्प, रजम (न) २ मैथुन ३ खीकान्य ४ खीसवधि विधानम् ।
 —पुमलक्षणा, स खी (स) पोडा (स्तन दमश्रवादियुक्ता) ।
 —पुरष, स पु (स) खी, -पुष्पौ-पुनी, मिथुन द्वाद, युग्मम् ।
 —राज्य, स पु (म न) प्राचीनपदेरा विशेष (महाभारत) ।
 —रुपट, वि पु (स) खी, लोल शीड-चौर, वामुक ।

—लिंग, म पु (स न) योनि- (स्त्री), भग, स्त्रीचिह्न २ शब्दलिंगभेद (व्या) ।
 —प्रत, सं पु (सं न) पत्नीप्रत, एकपत्नी परायणता ।
 —समागम, स पु (स) स्त्री, -समर्ग - मम्मो ।
 —स्वभाव, स पु (स) महत्प्रक, दे खोवा' २ नारीशीलम् ।
 स्त्रीत्व, स पु (स न) नारीत्व, स्त्री-नारी, - धर्म भाव ।
 स्त्रेण, वि (स) स्त्रीजिन, रमगीरत ३ स्त्री, - सवधि-योग्य ।
 स्थगित, वि (न) विलगित, व्याक्षिप्त दे 'मुल्लव' २ आच्छादित ३ गुप्त ४ अव, रूढ ।
 स्थपित, म पु (म) वानुधिरिविन् २ वधुत् ।
 स्थल, म पु (सं न) भूमि (स्त्री), भूभाग, स्थली २ शुष्क-निजल, -भूमि ३ स्थान ४ अवसर ।
 —कमल, स पु (स न) पद्मा, पद्मचारिणी, अतिचरा, स्थलरहा ।
 —चर, वि (स) स्थल, ग गामिन् चारिन्, भू, चर चारत् ।
 स्थली, स स्त्री (स) शुष्क, भूमि (स्त्री) - भूभाग २ मगोत्रनभू (स्त्री) ३ स्थान, स्थलम् ।
 स्थविर, म पु (स) वृद्ध २ वृद्धन् (पु) ।
 स्थानु, म पु (स) अशाखवृक्ष, भ्रूव, शकु २ स्तम्भ, स्थूया ३ शिव ४ स्थावरपदार्थ । वि (स) अचल, स्थिर ।
 स्थाण्वीश्वर, स पु (सं न) पुरश्चेत्, स्थाने शरणागतम्, स्थानुनीधम् । २ स्थानेश्वरस्य लिंगविशेष ।
 स्थान, स पु (स न) स्थल २ आनि वाम, गृह ३ भूमि (स्त्री) स्थानी, भूभाग ४ पद्, दे 'पदवी' ५ वर्णाधारणस्थान (व्या) ६ शिव, देश ७ देवलय, मन्दिर ८ अवसर ९ दद्या १० परि-वेद, अध्यय ।
 —च्युत, वि (स) स्थानघट २ पद, चुन प्र १ ।
 स्थानक, म पुं (सं न) स्थान, स्थानम् २ पद, स्थिति (स्त्री) ३ ४ शरत्क्षेप मृष्य,

मुद्रभेद ५ नाटकव्यापारस्थलविशेष ६ आलवाल, आवालवालम् ७ सुराफेन ।
 स्थानी, वि (सं निन्) सस्थान, पदयुक्त २ स्थायिन ३ उचित, उपयुक्त ।
 स्थानीय, वि (स) स्थानिक, स्थानविशेष सवधिन् ।
 स्थापक, म पु (स) स्थापयित् सस्थापक, प्रवर्तक, प्राग्भक, स्थापनक २ निधायक ३ उत्पापक, उन्नयक ४ मूर्ति प्रतिमा, -कार ।
 स्थापत्य, स पुं (स न) वास्तु विद्या-शिल्प कला २ मन्त्रकर्मन् (न), भवननिर्माणम् ।
 स्थापन, स पु (सं न) निधान, न्यसन, निवेशन २ उत्पापन, उन्नयन, उन्नमन ३ मस्था पन, प्रवतन, प्रारम्भ ४ प्रतिपादन, साधनम् ।
 स्थापना, स स्त्री (स) (मदिरे) मूर्ति, प्रतिष्ठापनं निवेशन २ ३ दे स्थापनं (३ ४) ४ विनारागविशेष (न्या०) ।
 स्थापित, वि (स) सस्थापित, प्रवर्तन २ निहित निवेशन, न्यसन ३ उत्पापित, उन्नयन, उन्नमन ४ स्थिर, दृढ ५ निश्चित ।
 स्थापितव, सं पु (म न) स्थापिता, स्थिरता, स्वैर्य, भुक्ता, नैस्यम् ।
 स्थायी, वि (सं -विन्) भुव, नित्य, शाश्वत, अश्रय २ निरस्थायिन, दृढ ३ स्थिर, स्थास्तु, स्थायुक्त, स्थितिशील ४ विश्वसनाय ।
 —भाय, स पु (स) रसस्व भावविशेष (सा) (९ स्थायिभाव = रति, द्वास्, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विगमव और निर्वेद) ।
 स्थानी, सं स्त्री (सं) उजा, पिठर री, दे पत्नीला ।
 —पुलक न्याय, स पु (सं) न्यायभेद, अज्ञानगुणानेन पूज्यगुणानामुमानम् ।
 स्थानर, वि (स) अचल, निश्चल, स्थिर २ स्थविर, स्थाव, स्थानु, स्थायुक्त, स्थानु, स्थितिज्ञान । (सं न) अज्ञान अचल, मरुति (स्त्री) ।
 स्थित, वि (म) विद्यमान, वतमान २ उप विष्ट अर्थिन ३ उदित ४ अवस्थित ।
 —प्रण, वि (सं) स्थिरस्थित, बुद्धिपी प्रण, मद्यबुद्धिमत्प्र २ अन्मसनेपिन् ।
 स्थिति, सं स्त्री (सं) अवस्थ, आधार, अन्व २ निवास, अवस्थानं ३ दद्या,

अवस्था ४ पर, दे 'पदवी' ७ अन्वित्व, सत्ता ६ प्रयांता ।
 —स्थापकता, म स्त्री (म) कुचनीयता, नन्यता, दे 'लचक' ।
 स्थिर, वि (म) अचल निश्चल, अविचल २ निश्चिन्त, स्थिरीकृत ३ शांति ४ दृढ बलवत् ५ श्लाघन, शासन, ध्रुव ६ नियत ७ विश्वमनीय ८ स्थायुक, स्थास्तु ।
 —चिन्त, वि (म) दृढमन्त्र, स्थिर मति धी-बुद्धि ।
 स्थिरता, स स्त्री (म) निश्चलता, अचलता । स्थावत्व २ दृढता, बलवत्ता ३ स्थयित्व, ध्रुवता ४ शैली, धीरता ५ चिरस्थायिता, स्थानुता ।
 स्थूणा, म स्त्री (म) गृहस्त्रम्, दे 'स्त्रम्' (२ २) ।
 स्थूल, वि (म) पीन, पीवर (-रानी स्त्री) पुत्र, माम्, मेदुर, मित्र, मेदग्निव, पावन, पीवर २ स्पष्ट, सुबोध ३ मूल, जड ४ विषम, उत्तम ।
 —बुद्धि, वि (म) मदमति, जट ।
 स्थूलता, म स्त्री (म) पीना, पीवरता, मेदुरता, स्थूलत्व २ गुणतास्त्व, भारवत्ता ३ विषमता ४ महाकायता ।
 स्थैर्य, म पु (म न) दे 'स्थिरता' ।
 स्थौल्य, स पु (स न) दे 'स्थूलता' ।
 स्नान, वि (म) कृत्स्नान, दे 'नहाया हुआ' ।
 स्नानक, म पु (म) आप्तुनप्रति ।
 स्नान, म पु (स न) आप्तु(स्ना)न, अभिपन्न, उपस्थान शौच, अवगाहनम् ।
 —करना, क्रि अ, स्ना (अ प अ), अवगाह (स्ना आ मे), दे 'नहाना' ।
 —गृह, म पु (स न) स्नान, शाला आगार ।
 स्नायु, म स्त्री (म पु) स्नाना, स्नाना, नना, धानपनु, माती का डि स्त्री), वायु वाहिनी नार्थी, वातरज्जु (स्त्री) ।
 स्निग्ध, वि (म) चिक्चण, चिक्क, चक्चण, मत्तण, रुपा, अमृष्ट २ मन्नेह, सत्त्व, तीक्ष्ण ।
 स्निग्धता, म स्त्री (म) चिक्चणता, मत्तणत्व, रुपाता २ मन्नेहता, स्नेहवत्ता ३ प्रियता ।
 स्नोड, वि (म) मृदुल, कोमल, स्निग्ध २ अनुरक्त, आमक ।

स्नुया, म स्त्री (म) पुत्र, मृ (स्त्री) ।
 स्नेह, म पु (म) प्रेमन् (पु न) अनु, राग प्रति (स्त्री), प्रणय २ चिक्चणपदा (घृत्तनैक रि) ।
 —करना, क्रि म, दे 'प्रेम करना' ।
 —मन्त्र, वि (म) घृत्तनैक पत्र आग ।
 —सार, म पु (म) मञ्जा, दे । वि, नैक प्रधान म्बुल ।
 स्नेहनाय, वि (म) स्नेह, नैकहं २ प्रेम पात्र भानन अनुगाग, अह-योग्य ।
 स्नेही, म पु (स = हिन्) स्नेहशील, अनु रागिन्, प्रणयिन्, प्रेमिन्, मिथम् । वि (म) चिक्चण, मत्तण ।
 स्पन्, स पु (अ) प्रिष्ठ म्बुल ।
 स्पन्दन, म पु (म न) स्पन्द, शैलकपन, मत्तुण, शिक्कण ।
 स्पर्द्ध, स स्त्री (स) विनिगीवा, मत्तण, अहमहिम्ना, ईर्ष्या, सापत्त्वम् ।
 —करता, क्रि अ, प्रति, स्पर्ध (स्ना आ मे), मयु (स्ना प से), विनि(सन्न विनिवापने), आमभवितु यत् (स्ना आ से), ईय (स्ना प से) ।
 स्पर्श, म पु (म) स, स्पर्शं हंन, ससर्ग, सपर्क, परामर्श २ त्वमिन्द्रिय प्राणगुणविशेष ३ कदिवगपवक (व्या) ४ वायु ।
 —करना, क्रि म, स, स्पृश् (ह्र प अ), दे 'टूना' ।
 स्पष्ट, वि (स) परि, स्पृष्ट, प्रकट, व्यक्त, प्रत्य, प्लवण, उदिक, विजद, मुहोष, स्पृष्टार्थ ।
 म पु (म) वर्गोत्तरणप्रयत्नप्रकार (व्या) ।
 —कथन, स पु (म न) मरल निष्कपण, भाषण २ कथनप्रकारभेद परस्वनात्मावित्त धोरनाम (व्या) ।
 —दत्ता, म पु (स-वृ) स्पष्टनादिम् ।
 स्पष्टनयो, क्रि वि (म) प्रकट, स्पष्ट, व्यक्त, स्पृष्ट प्रत्यम् ।
 स्पष्टता, स स्त्री (म) वैशद्य, विशदता, स्पृष्टता, उदाता, सुबोधता, मरलता, आर्षव, मारत्व, निष्वात्ता ।
 स्थिरि, म स्त्री (प्रे) पाव, आत्मन्, देहिन्, जीव २ प्राण जीवन, शक्ति (स्त्री), वीर्य ३ नव, मत्त, मार ४ मयत्तर ।

—लेप, स पु, सारप्रदीप ।
 मेधिलेटिड—, मिथिलितमघनार ।
 रेक्टिफाइड—, शुद्धमद्यसार ।
 स्पीच, स स्त्री (अ) व्याख्यान, वचनम् ।
 स्पृहा, स स्त्री (स) कामना, इच्छा दे ।
 स्पेक्टरास्कोप, स स्त्री (अ) रश्मिवर्णदर्शकम् ।
 स्पेशल, वि (अ) विशिष्ट, विलक्षण, असा-
 मान्य, अमाधारण, सविशेष, विशेष ।
 —गाड़ी, सं स्त्री (अ + हिं) विशिष्टशकटी ।
 स्फटिक, स स्त्री (स) स्फाट(टि)क, भासुर,
 स्फाटिकोपल, भौतशिल्प, सिनोपल, विमल,
 स्वच्छ मणि, स्वच्छ, अमर-निस्तुप, रत्न,
 शिवमिय ।
 स्फुट, वि (स) व्यक्त, प्रकट प्रकाशित, दे
 स्पष्ट = विवर्णित इ शुक्ल च नाना-बहु वि,
 विष ।
 स्फुरण, स पु (स न) स्फुरणा, स्फुरित,
 स्फुलनं, स्फुरणा, स्फ(स्फा)रण, स्पष्ट
 किञ्चिच्च, चलनम् ।
 स्फुलिंग, स पु (स) अग्निरण, दे
 'चिनगारी' ।
 स्मृति, सं स्त्री (स) क्षिप्रता, शीघ्रता अ शु-
 कारितान्त्र, त्वरा र स्फुरण इ माननी प्रेरणा ।
 स्फोटक, स पु (स) पिडक, गड । वि,
 स्फोट ।
 स्फोटन, सं पु (सं न) सशब्द, भेदन विदा-
 रण र प्रकाशनं, प्रलयपन इ शब्द, ध्वनि
 च आकस्मिक, भवनं विद्वलन स्फुटनम् ।
 समय, स पु (सं) अश्मान, दप ।
 समर, स पु (स) बर्षं मदन, न म
 = स्मृति (स्त्री), स्मरणम् ।
 स्मरण स पु (सं न) आध्यानं अनुचितन,
 र स्मृति (स्त्री) ।
 —वरना, वि स, अनु-स, रमृ (भ्वा प अ),
 अनुचित (लु), अनुबुध (भ्वा प मे),
 आप्ये (भ्वा प अ) र कठस्थ-मुग्धश्च कृ ।
 —दिलाना या—कराना, क्रि प्रे, व 'स्मरण
 वरना' के प्रे रूप ।
 —रावना, वि स, चित्ते-चेतमि मनमि निधा
 (लु उ अ), मनमि धृ (लु) ।
 —पत्र, स पु (म न) स्मरण-स्मारक पत्रम् ।
 —दाप्ति, स स्त्री (स) स्मृति (स्त्री),

स्मरण, धारणा, वि ता, आ, ध्यान, आध्या,
 चर्चा, चित्ति (स्त्री), चित्त, चितिया ।
 स्मरणीय, वि (सं) आध्येय, अनुचितनीय,
 स्मनन्व, स्मरणार्हं, मनसि धारणीय ।
 स्मशान, स पु, दे 'स्मशान' ।
 स्मारक, वि (स) अनुबोधक, स्मृतिकर । स-
 पुं (स न) स्मृति-स्मरण, चिह्न इ स्मार-
 कदान, स्नेहाभिज्ञानम् ।
 स्मार्त्तं, वि (सं) स्मृति, विहित सवधिन्
 र स्मरणसंबंधिन् ।
 स्मित, स पु (स न) ईषद्भास्य, मदहास-
 दे 'भुसकराइट' ।
 स्मृति, स स्त्री (स) दे 'स्मरणशक्ति'
 र स्मरण, आध्यान, अनु, चित्त-बोध इ-
 आर्थधर्मशास्त्राणि (मनुस्मृति आदि) ।
 —कार, सं पु (स) धमशास्त्रकार ।
 —चर्चिनी, स स्त्री (स) ब्राह्मी ।
 स्थदन, स पुं (सं) स्थ, दे ।
 स्यात्, अव्य (स) दे 'शायत्' ।
 स्यानपन, स पु (हिं स्याना) नैपुण्यं, दाक्ष्यं,
 चातुर्यं र कौतवं, शाठ्यं, व्याज ।
 स्याना, वि (स स्याना) चतुर, बुद्धिमत्
 र धूर्तं, कापटिक इ वयस्क, युवन् । स पु,
 शृद्ध र श्रामणी इ, चिन्तितक ।
 —पन, स पुं, दे 'स्यानपन' ।
 स्यानी, वि (स्त्री) (हिं स्याना) चतुरा, दक्षा,
 बुद्धिमती । स स्त्री, युवतीति (स्त्री),
 समकन्दा, परिणया, उदाहा ।
 स्यार, सं पुं (सं श्यात्) चतुर, दे-
 'शीदइ' ।
 स्याह, वि (का) काल, कृष्ण, अमित ।
 —दिल, वि (का) दुष्ट, राल, पाप ।
 स्याही, सं स्त्री (घा) मशी, धीसी, मशि
 पि मि (सव स्त्री), मला र कालिमन्
 (पु), कृष्णता, श्यामता इ कज्जलभेद च
 कल्प, हास्यम् ।
 —घट, —चूम, स पु, मनी शोषक चूमनं
 (पत्रम्) ।
 —जाना, मु, शीघ्रन अति इ (अ प अ) ।
 —लगाना, मु० अपवदपरिवर्द्धि इ (भ्वा
 प म), बलक (ना धा बलप्रयति) ।
 स्यूत, वि (सं) स्यूत, निष्कृत र भ्यूत,

व्युत्, प्रोत्, पुग्नि, पुदिन ३ विद् । स पु
(म) स्थीन, प्रसेव ।
श्रवण, स पु (म न) स्व(स्त्र)व, प्रवाव,
२ गर्भ-पात-स्त्रव ३ मून ४ प्रस्वेद ।
श्रष्टा, स पु (म ष्ट) विश्वसृन्, ब्रह्मन्,
चतसृत् । वि (म) रचयितृ निनाट् ।
श्रुवा, मं पु (म स्त्री) श्रुव, श्रु (स्त्री),
श्रु (स्त्री) (यज्ञपात्रभेद) ।
श्राव, स पु (स न) श्रोतम (न), प्रवाह,
ओष, धारा, मशक २ नदी ३ देहछिद्राणि
(न बटु) ४ वशपरपरा ।
श्लीपर, म पु (अ श्लिप्पर) पफरीका ।
शुभ्र—, म पु (अ) पूर्णफररीरा ।
श्लेट, म स्त्री (अ) लेखन शिला, अश्म
पापाण, पट्टिका, *पापाणी ।
श्व, मं पु (सं) आत्मन् २ बहु, शानि
(पु) २ धनम् । वि (म) स्वीय, स्वकीय,
आत्मोय, स्वक, नित्र, स्व-नित्र-आत्म- ।
—कार्यं, म पु (म न) निवृत्त्यन् ।
—कुटुंब, म पु (म न) नित्रपरिवार ।
—जन, म पु (स) बहुवर्ग, वाषवा (बटु) ।
—देश, सं पु (स) नम-मातृ भूमि
(स्त्री) ।
—देशी, वि (स शीय) निवृत्तदेश, स्वधिन्
निमित्त ।
—धर्म, स पु (म) नित्रकतव्य २ सहज
गुण ।
—राज, मं पु (म राज्य) नित्रज्ञानमन् ।
स्वकीय, वि (स) स्व, नित्र, आत्मोय, स्वीय ।
स्वकीया, स स्त्री (स) नायिकाभेद (म्),
स्वीया, स्वामिन्वेवानुरक्ता ।
स्वगत, म पु (म न) आन-मनो-गत,
अथाभ्यं, नाख्ययोक्तिभेद (सा) ।
स्वच्छद, वि (सं) स्वतत्र स्वाधीन, स्वायत्त
२ नियन्ता शून्य, स्वैररिन् निरकुश, स्व
रुचि । क्रि वि (मं न) स्वान्देश्ये, स्वच्छदन्
३ स्वैर, निरकुश, यथेष्टम् ।
—चारिणी, म स्त्री (म) वरदा ।
—चारी, वि (स रिन्) स्वच्छानारिन्,
स्वैर, स्वैरिन् ।
स्वच्छदता, म स्त्री (म) स्वायत्त, स्वाधीनता,
स्वतन्त्रता २ स्वैर(रि)ता, निरकुशता ।
स्वच्छ, वि (म) अमल, निमल, विमल, मल,

होनरहित २ शुभ्र इवेत्, उज्ज्वल ३ पवित्र,
शुचि, वि, शुद्ध ४ स्पष्ट, विशद ५ स्वस्थ,
निरामय ६ निष्पद, मज्जु ७ पारदर्शक ।
स्वच्छता, म स्त्री (म) निमलता, विमलता
२ उज्ज्वलता ३ पवित्रता ४ पारदर्शकता ।
स्वतत्र, वि (म) ६ 'स्वच्छद' वि तथा
क्रि वि ।
स्वतत्रता, म स्त्री (स) दे 'स्वच्छदता' ।
स्वत, अव्य (म) स्वच्छया, स्वयमेव, स्वच्छा
पूर्वं कामत (सत्र अव्य) ।
—प्रमाण, वि (स) स्वत सिद्ध, स्वयनिद्ध,
प्रमाणांतरनिरपेक्ष ।
स्वत्व, म प (म न) शक्ति (स्त्री),
अधिकार वश २ आधिपत्य, स्वामित्व,
प्रभुत्वम् ।
स्वप्न, स पु (म) स्वाप, प्रसुप्तम्य धान
२ निद्रा २ अमभवकल्पना, वृथा मिथ्या
वामना, आभास, स्वप्नसृष्टि (स्त्री) ।
—देवता, स्वप्न दृश (भ्या प अ), स्व
प्नायते (ना धा) ।
—दोष, स पु (म) निद्राया शुनयात् ।
—मैं बोलना, क्रि अ उत्स्वप्नायते (ना धा) ।
—लेना, मु, अमभवकल्पना कृ, मनमा कल्प
(प्रे) ।
स्वभाव, म पु (स) धर्म, गुण, प्रकृति
संसिद्धि (स्त्री) स्वरूप, नि, मर्ग, भाव,
२ प्रकृति-मनोवृत्ति (स्त्री), शील ३ अ
भ्यास, नित्यव्यवहार ।
—मिद्ध, वि (म) सहज, प्राकृतिक,
स्वाभ विद् ।
स्वभावत, अव्य (स) प्रकृत्या, ज-मत,
निसर्गत ।
स्वय, अव्य (स) आत्मना २ स्वत एव,
विनाऽऽयाम, प्रयत्न विना ।
—भू, म पु (स) ब्रह्मण (पु) २ काल
३ कामदेव ४ विष्णु ५ शिव । वि (म)
स्वय, पात भूत स्वय, स्वयोनि ।
—वर, म पु (मं) स्वयवरण, स्वच्छया
पतिवरणम् ।
—वरा, म स्त्री (म) पतिवरा, वर्या ।
—सिद्ध, वि (म) स्वत सिद्ध २ स्वत-
सफल ।
—सेवर, म पु (स) स्वच्छामेव ।

—सेविका, म पु (म) श्वेकामविभा ।
स्वर, म पु (स अन्व) स्वा २ परलोप
३ आकाश शब्द ।

स्वर, म पु (म) ध्वनि, शब्द नि स्व
(स्वा)न, नि नाद घोष श्वत्, विरन,
वि,र(रा)ज, छाद २ पटवद्वय सप्त
स्वरा (मगीन) ३ उदात्तादित्स्वरविक (स्वा)
४ अन्व, मात्रा (व्या) ५ उच्छ्वसम् ।

—भग, सं पु (स) स्वर, श्वय भेद, गल
रोगभेद ।

—मङ्गल, स पु (स) स्वरासौख्यरोही
(मगात) ।

स्वरूप, म पु (स न) निरूप, आकार,
आहृति (स्त्री) २ मूर्ति (स्त्री), चिन् ३
३ प्रान्ति (स्त्री), स्वभाव ४ देवादिभि
भूत रूप ५ देवादिरूपधारिन् । वि (म)
तुल्य, मम २ सुदर, मनोह ३ पलित, प्राह ।
क्रि वि. रूपेण, रीत्या (उ प्रमाण स्वरूप =
प्रमाणरूपेण) ।

स्वर्ग, म पु (स) स्वर-देव अमर सुर-उर्ध्व
लोक, स्वर (अन्व), नाव निदिव,
विदशाल्य, मन्दर, शुक्रमवन, सुग्धार
२ इक्षर ३ सुप्त ४ सुमद रवान
५ आकाश शब्द ।

—शाम, वि (सं) श्वग, लिप्थ इच्छुत् ।

—गमन, सं पु (स न) स्वर-स्वग-गति
(स्त्री) लाम, निधनं, मरणम् ।

—गामा, वि (स-मिन्) स्वगमनरन्तु २ स्व
गन्ध, स्वगत, मृत ।

—नर, स पु (स) क-पशुश्च ।

—धनु, म स्त्री (सं) वामपेनु ।

—नदा, म स्त्री (सं) स्वर्गापण, मदाहिना ।

—पति, सं पु (स) इन्द्र ।

—पुरी, सं स्त्री (म) अमरावती ।

—लोक, सं पु (म) दे स्वर्ग (१) ।

—वधू, स स्त्री (स) स्वर्गस्त्री, अन्तरम
(स्त्री) ।

—शाम, सं पु (म) स्वर्गवाम २ मरण
निधनम् ।

—शामी, वि (म-मिन्) दवन्नेकवामिन्
२ दिवगन, प्रेन, मृत, स्वयान, स्वर्गन्ध ।

स्वर्गीय, वि (म) स्वर्ग, लिप्थ, श्व २ दे
'स्वर्गवानी' (२) ।

स्वर्ग्य, वि (म) दे 'स्वर्गीय' (१, २) ।

स्वर्ण, स पु (स न) दे 'सोना' (१) ।

स्वर्लोक, म पु (म) दे 'स्वर्ग' (१) ।

स्वल्प, वि (म) अल्पस्व, अतिस्तोक ।

स्वशूर, म पु (स शशूर) दे 'समुद्र' ।

स्वस्ति, अन्व (सं) ब्रह्माण्ड-मगल मद्र
भूयात् (अमीस) । स स्त्री (म) कल्याणं,
मगल २ सुखम् ।

—वाचन, स पु (स न) मगल्यमत्रपाठ
२ धार्मिकवृत्त्यभेद (गणेशपूजनानि) ।

स्वस्तिक, म पु (म) मगल्यचिह्नभेद
(卐) २ मगलव्य ३ चतुःपथ ।

स्वस्तिका, म स्त्री, दे 'स्वस्तिक' (१) ।

स्वस्वयथन, म पु (म न) कार्यात्मै
मगल्यमत्रपाठ २ सत्सृष्टिसाधनम् ३ दद्यात्
नीयमानो मगल्यवलयकल्पः । ४ दानप्राप्त्य
नंतर विप्रत्याशीर्वाद ।

स्वस्थ, वि (स) अनामय, निरामय, नीरोग,
अरोग, कुशल, कुशलिन, सुख, आरोग्यवत्,
नीरुच ३, निष्वादि, व्याधि-नीरोग, रक्षित २
'सावधान' दे ।

—चित्त, वि, शा-तमनस्क ।

स्वाग, म पु (सं स्वाग >) (उपहासार्थ)
अनु, अरण-कार-कृति (स्त्री), विन्वन २
वेपानर, छत्र-हृत्-कल्प-वध ।

—रचना, क्रि स, वेध परिहृत् (प्रे),
वेपानर रच (चु) २ नद् (चु) अग्निना
(स्वा प अ) ।

स्वागी, म पु (म स्वाग >) गट, अभिनन्द,
श्रीकृत्, रगा-नीत २ मद्र उ दे बहुकुरिया ।

स्वागत, म पु (म न) उपचार, ममान,
ममावना, मद्र, शर-कृति (स्त्री) मिया,
प्रत्युत्तमन, प्रत्युद्गमन, प्रत्युत्वन, प्रत्युद्,
गम-गति (स्त्री) ।

—करना, क्रि म, प्रत्युद्गम (स्वा प अ),
प्रत्युद्गम (स्वा प से) ।

—स्मिति, म स्त्री (स) स्वागत-भारिणी
सभा ।

स्वातथ्य, म पु (म न) दे 'स्वत वता' ।

स्वानि, म स्त्री (म) स्वानी, पञ्चदश
नक्षत्रम् ।

स्वाद, सं पु (म) आम्वाद, रम २ आनन्द,
रमागुभूति (स्त्री) ३ इच्छा ४ मातृपदम् ।

—हेना, किं स, आ स्वाद् (भ्वा आ मे), रस् (चु) २ ईषद् ग्नाद् (भ्वा ष से) । म पु, आ, स्वादन, रमनम् ।

स्वादिष्ट, वि (म स्वादिष्ट) सरम, सुरम, म्चप, हनिकर (-री स्त्री) स्वादु २ निष्ट ।

स्वादीला, वि (स स्वाद् >) दे 'स्वादिष्ट' ।

स्वादु, वि (स) 'स्वादिष्ट २ मधुर, मिष्ट, ३ मनोज्ञ ।

स्वादुता, सं स्त्री (सं) सुरसता, स्वादवता २ मधुरता ।

स्वाधिपत्य, स पु (स न) निप्रमुन्वम् ।

स्वाधीन, वि (स) दे 'स्वतन्त्र' ।

स्वाधीनता, म स्त्री (मं) दे 'स्वतन्त्रता' ।

स्वान, म पु (स श्वन्) कुकुर, दे 'कुत्ता' ।

स्वाध्याय, स पु (स) वेदाध्ययन, धर्मशास्त्रानुशीलन २ अध्ययन, विषयविज्ञोपायुशीलनम् ।

स्वाप, स पु (म) निद्रा २ स्वप्न ३ अज्ञानं ४ निस्पन्दता, स्वशांतिता ।

स्वाभाविक, वि (स) स्वभावसिद्ध, सहज, प्राकृतिक, नैसर्गिक, कृत्रिमता, रङ्गित ।

स्वामित्व, स पु (स न) स्वामिना, प्रभुता त्व, स्वाम्यम् ।

स्वामिनी, सं स्त्री (स) गैहिकी, गृहिणी, गृहपत्नी, कडम्बिनी, पुरभी २ ईश्विनी, ईश्वरी, स्वत्ववती, अधिकारिणी ३ धीराधा ।

स्वामी, स पु (स विन्) प्रभु, अधि, य-पति भू, ईश्वर, ईशित, परिष्ट, नायक, नेतृ, आर्य, पालक २ गृहपति, कुडम्बिन्, गृहदि ३ पति, भट्ट, ध्व ४ परमेश्वर ५ नृप ६ कार्तिकेय ६ परिव्राजकोपाधि ।

स्वाम्य, सं पु (स न) स्वामित्व, प्रभुत्व, अधिपत्य, अधिपार ।

स्वायत्त, वि (मं) आत्मवश, निजाधिकारव्य ।

—शामन, स पु (म न) न्धानिकस्वराज्य ।

स्वाराज्य, म पु (स न) स्वाधीनशामन ० स्वगलोक ३ ब्रह्मणा तादात्म्यम् ।

स्वार्थ, सं पु (सं) निजोद्देश्य, आत्मप्रयोजन २ अहमहित, निजलाभ ३ स्वधनम् ।

—त्याग, म पु (सं) निजलाभोत्सर्ग ।

—त्यागी, वि (स विन्) निजलाभोत्सर्गिन् ।

—परायण, वि (म) स्वार्थं स्वहित-स्वलाभ, पर-परायण निष्ट ।

—परायणता, सं पु (स) स्वाथ स्वहित स्वलाभ, परता निष्ठा बुद्धि-दृष्टि (दोनों स्त्री)

—साधक, वि (म) दे 'स्वार्थपरायण' ।

—साधन, स पु (म न) निजहितनिर्वहणम् ।

स्वार्थी, वि (स विन्) दे 'स्वाथपरायण' ।

स्वावमानना, स स्त्री (स) स्वावमाननम्, आत्म भर्तृमता-गर्हानिन्दा ।

स्वावलम्बन, म पु (म न) आत्मनिर्भरता, स्वाश्रय ।

स्वावलंबी, वि (स विन्) आत्मनिष्ठ, आत्मा श्रय आत्मश्रित, स्वाश्रित ।

स्वास, म पु (स श्वास्) दे 'सौम' ।

स्वामा, म स्त्री (स श्वास्) दे 'सौम' ।

स्वास्थ्य, स पु (सं न) आरोग्य, स्वस्थता, कुशल, नीरोगता, अरोगिता ।

—कर, वि (स) आरोग्य प्रद-वर्द्धक ।

स्वाहा, अव्य (म) हविर्दान, मंत्र शब्द ।

—करना, मु नम (प्रे), अपभ्यच् (चु) २ भरममाहू ।

स्वीकार, सं पु (स) अगीकार २ स्वीकरण, अंगीकरण, ग्रहणं आदानं ३ वचन, प्रतिज्ञा ।

स्वीकार्य, वि (स) स्वीकरणीय, अगीकार्य ।

स्वीकृत, वि (स) आदत्त, अगीकृत, प्रति-गृहीत, २ प्रशस्त, अनु मं, मत ।

स्वीकृति, स स्त्री (स) सं अनुमति (स्त्री), अनुमोदन २ आदान, स्वीकार, प्रतिग्रह ।

स्वीय, वि (म) स्वनीय, निज, आत्मीय ।

स्वेच्छा, स स्त्री (स) निनाभिलाष, स्वरचिः (स्त्री) स्वच्छद ।

—घारी, वि (मं) स्वैर, प्रनिविष्ट, निरदुग, स्वच्छद ।

—सुयु, स पु (म) भीष्म ० स्वेच्छया मरणम् । वि (स) स्वायत्तनिधनम् ।

स्वेद, म पु (म) घम, निदाघ, प्रस्वेद, स्वेद घर्म, गर्भ उदक २ वाष्प ३ ताप-उत्पन्न ४ स्वेदन ५ घर्मकारकमौषधम् ।

स्वेदन, वि (मं) घमजात (जू, लीस आदि) ।

स्वैर, वि (स) दे 'स्वच्छद' ।

स्वोपाजित, वि (स) आत्म निज स्व-अजित-उपाजित ।

हृ

- हृ, देवनागरीवर्णमालायास्त्रयस्त्रिंशो व्यन्जनवर्णः,
हकार ।
ह्रैकानां, क्रि प्रे, व 'ह्रौना' व प्रे रूप ।
ह्रैकानां, क्रि स तथा प्रे, दे 'ह्रौना' तथा
ह्रयानां ।
ह्रैकारना, क्रि म, दे 'पुत्राणा' २ दे
'लटकारना ।
ह्रगामा, म पुं (का-भट्ट) कानाहल, गुमुल
७, कन्वन् २ समदं, विष्णव ।
ह्रनीरौ, म स्त्री (ष) गण्यमाना, गन्तुर ।
ह्रर, म पु (ल) कदा शा, द 'कोदा' ।
ह्रटां, म पु (म) धातुस्य ह्रैकालभाट्टम् ।
ह्रदिया, म स्त्री (स ह्रदिना) ह्रवा ।
ह्रदी, म स्त्री (सं) ह्रदिना ।
ह्रता, म पु (म-न्) धातक, मारक, वध
करिन्, -हन् (समामान्त में) ।
ह्रम, म पु (सं) मरान्, मानसीकम्,
च(व)जा, क्षीराशु, नागश, चक्रपक्ष,
राजहम, श्वेतगुरुद, कल्कठ, सिन्धुद
पक्ष, धवलपक्ष, मानमान्य ७ मृध ३ पर
मान्य ४ शुद्धामन् ५ परिव्रान्तकभेद ।
—गति, म स्त्री (स) कन्वमगति ।
—गामिनी, वि स्त्री (सं) कल्कटामिनी ।
—गतिनी, वि स्त्री (म) मन्तुरन्वन्-प्रिय,
भक्ति, ह्रमगदगदा ।
—वाहन, म पु (म) मन्तु (पु), ह्रमथ ।
—वाहनी, म स्त्री (म) मन्वनी ।
ह्रैमना, क्रि अ (म ह्रमनं) प्रवि, ह्रम्
(भ्वा ष म), ह्रम्य ह्र ० (मद्-मद्
ह्रैना), निम् (भ्वा आ ल) ३ (क्वा
ह्रैना) उट्टुहाम ह्र ४ नमन्वन् ह्र, परिहम
५ मुद् (भ्वा आ म), ह्रप (हि ष स) ।
क्रि म, अन्-अन्, ह्रम् । मं प, हाम, ह्राम्य,
ह्रमन्, ह्रमितम् ।
—खेलना, म पु, विनोद, प्रमोद, आनन्द,
परिहास ।
—बोलना, मं पु, ह्राम्यानाद, मुरमभाषणं ।
ह्रैमने योग्य, वि, ह्राम्य(भ्वा) ह्र ह्रमित्व्य,
ह्राम्य, ह्रसक (री स्त्री), ह्राम्यानाम् ।
ह्रैमने वाला, मं पु, ह्रामक, ह्रामिन् ।
ह्रैसमुख, वि (हि ह्रैमना + म सुत्र >)
ह्राम्यमुख(भ्वा, स्त्री स्त्री), स्मैरानन(ना, नी
स्त्री), प्रमन् प्रकुल-ह्राम्य, वदन (ना, नी
स्त्री) । ० नर्मगर्भ, विनोदप्रिय, ह्राम्यशील,
विनादिन् ।
ह्रैमली, म स्त्री (म भ्रम >) ण्तु (न),
चतुक, श्रीवन्वि (न) ० प्रेवय, कठामरणभेद ।
ह्रैमाहृ, म स्त्री (हि ह्रैमना) ह्रमन, ह्राम
२ अवहाम, उपहाम, मोर, निद्रा श्रपवाद ।
ह्रैसाना, क्रि म., व 'ह्रैमना' वे प्रे रूप ।
ह्रसिनी, म स्त्री, दे 'ह्रमी' ।
ह्रैमिवा, म पु (म ह्रम >) ल्वात्, ल्वा
णक, ल्वि ।
ह्रमी, म स्त्री (म) वरदा-टो, च(व)जागी,
ह्रसिवा, व(वा)रणा, वरानी, मनुगमना,
मृदुगामिनी ।
ह्रैमी, म स्त्री (हि ह्रैमना) ह्राम, ह्राम्य,
ह्रमित, ह्रमन ह्रमिति (स्त्री) ० परिहाम,
नर्मन् (न), कौतुक, लीला, विनोद ३ उप
अव, ह्राम ४ लोक, श्रपवाद निद्रा, अपकीर्ति
(स्त्री) ।
—सुनी, म स्त्री, आनन्द, मोद ।
—खेल, म पु, विनोद, कौतुक २ मुरर
मुनाध्य, वार्त्, साधारणवार्त्ता ।
—ट्टा, म पु, द 'ह्रैमी' (२) ।
—उद्धाना, मु, उप-अव, ह्रम् (भ्वा ष स),
सन्वय निन्द् (भ्वा ष म) ।
—खेल मममना, मु, सुकर-मुसाध्य मन्
(हि आ अ) ।
—में उद्धाना, मु, साधारण मत्वा उपशु
(भ्वा आ म) ।
—में ग्वांमी, मु, विनोदे कल्ह, परिहाम,
उपद्रवे परिगत ।
ह्रैमोद्, वि (हि ह्रैमना) ह्राम्य परिहाम-विनाद,
प्रियशील, ननगर्भ, विनोदिन्, कौतुविन् ।
—पन, म पु. ह्राम्यशीला, विनादप्रियता,
नर्मगर्भता ।
ह्रैमीह्रौ, वि (हि ह्रैमना) ह्रामो-मुग २ परि
हासपुक्त ।
ह्र, वि (अ) सत्य, क्त्न, अविनय, मध्य,

यथार्थ २ उचित, -यार्थ, धर्म्य । स पु (अ) अधिकार, स्वत्व २ प्रभुत्व, शक्ति (स्त्री) ३ कर्तव्य, धर्म ४ मत्प, कर्त, तथ्य ५ पर नत्तम् ६ देव परिशोध्य ७ ग्रह्य प्राप्यन ।
 —भद्राकरना, मु कर्तव्य पा(मे, पाल्यनिर्ते) ।
 —दार, म पु (अ + का) अधिकारित, स्वत्ववत् ।
 —नाटक, अव्य (अ + का + अ) बलवत्, उत्तम (दोनो अर्थ) २ व्यर्थ, निप्रयोगन ।
 —मालिकाना, स पु (अ + का) स्वान्यधिकार ।
 —भौरूसी, स पु (अ) परपरागत पैतृक, अधिकार ।
 —शुका, म पु (अ) प्रतिवेशाधिकार ।
 हकबकाना, कि अ (अनु हका बका) निशेधी निस्तन्वी नटी, भू, व्यंगुद् (दि प वे) ।
 हकला, वि (हि हकलाना) अव्यक्त गद्गद, वादिन, स्फुलितस्वर ।
 हकलाना, कि अ (अनु हक) गद्गदवावा वद (भ्वा प से), स्फुलितस्वर-अस्फुटवणे भाष् (भ्वा आ से), स्वर (भ्वा प से) ।
 स पु, स्खलन, गद्गद-अस्पष्ट अव्यक्त, भाषणम् ।
 हज्जारत, स स्त्री (अ), क्षुद्रता, तुच्छता, लघुता ।
 —की नगर से देखना, मु, अवमत् (दि आ अ), उपेक्ष (भ्वा आ से) ।
 हज्जीवत, स स्त्री (अ) तथ्य, तत्त्व, सत्य २ तथ्यवार्त्ता, सत्यवृत्तान्त ।
 —मै, मु, सत्त्व, वस्तुत ।
 हज्जीवी, वि (अ) सत्य, यथार्थ २ निन, अस्मीय, सीरर ३ इशरीय, पारमाधिक ।
 हज्जीम, स पु (अ) आचाय, विद्वान् २ वैष, चिन्तित्तक ।
 नीम—, स पु, मिथ्या-अनुभवयन्त्र, वैद ।
 नीम हकीम खतरे जान, लौकिक, इष्यज्ञान भयकरम्, अत्यवोषो भयावह ।
 हज्जीमी, स स्त्री (अ हज्जीम) (यावन) चिन्तिताशास्त्र २ (यावनी) वैषवृत्ति (स्त्री) ।
 हज्जीर, वि (अ) तुच्छ, क्षुद्र २ उपेक्ष्य ।
 हज्ज क, स पु (अ, हज्ज का बहु) न्वत्वानि, अधिकारा (दोनो बडो) ।
 इकूमत, स स्त्री, दे 'इकूमत्' ।

हका बका, वि (अनु हक बक) विरमयापन्न, आश्चर्य-वक्तिन, सभ्रान्त, नटी-आकुली निशेधी, भूत, निस्तन्वी ।
 —होना, कि अ, दे, 'हकबकाना' ।
 हगना, कि अ (स हदन) हद् (भ्वा आ अ) पुरीष-मल उत्सृन् (तु प अ), उच्चर (भ्वा प से) । स पु, हदन, मत्, उच्चार, रेक, पुरोभोत्सर्ग ।
 हगाना, कि प्रे, व 'हाना' के प्रे रूप ।
 हचकोला, म पु (अनु हचक) उद्घान, उत्क्षेप उच्छलन, सक्षीम ।
 हन, स पु (अ) मकायात्रा, हज ।
 हज (—ज), स पु (अ) सुख, आनन्द, ह्य २ लाम प्राप्ति (स्त्री) ।
 हजम, म पु (अ) जठरे पचन, वि परि, पाक, परिणाम (वि, (जठरे) पच, परिणन, नीर्ण २ सरुप अपहृत, छत्रेन अत्मसात्कृत ।
 —होना, कि अ, दे 'पचना' । मु, कपटाप हतवस्तुन स्वपार्श्वे स्थिति (स्त्री) ।
 हजरत, स पु (अ) महात्मन्, महानन २ महाशय । मशेदय । श्रीमन् । (सवोपन वचन) ३ धूर्त्त, कितव (व्यग्य) ।
 हजामत, स स्त्री (अ) देशादीना वपन, मुग्धन क्षीर २ प्रवृद्धा श्मश्रुवेगा (वह) ।
 —बनना, कि अ, मुण्ड-वपु-धूर्-सुर् (कर्म) । म, वच् शठ-विप्रलभ (कर्म) ।
 —बनाना, कि स मुण्ड (भ्वा प से, तु) धुरेण कुर (तु प से) छिद् (रु प अ), धूर्-सुर् (तु प से) । मु, धन ह (भ्वा प अ) २ तड (चु) ।
 हजारा, वि तथा स पु (का) दे 'सहस्र' ।
 कि वि, सहस्र वदु-असख्य-वारन् ।
 हजारा, (का) सहस्रदल (पुप) २ धारा यत्, दे 'कौवार' ।
 हजारी, स पु (का) सहस्रिय, महत्त्वयोध-ध्यक्ष ।
 दम—, स पु, दससहस्रिय ।
 पच—, स पु, पचसहस्रिय ।
 —बातारी, म पु, उच्चनीच-विविध तथनापन, चना ।
 हज्जम, म पु (अ) नपित, दे 'नाह' ।
 हट, म स्त्री, दे 'हट' ।
 हटना, कि अ (स घटन >) स्थानान्तर या

(अ प अ), सु (स्वा प अ) २ अत्र,
दाइ (अ प अ), अपसु ३ वनव्यात्
विमलाभू, व'व्य त्यन (स्वा प अ) ४
दूरीभू, नेत्रगोचर (वि) वन्द (दि आ स)
४ स्थीन (वि) वन्द, व्याक्षिप (कर्म)
५ नदा (दि प वे), शम् (दि प म)
६ विचलन्ति (वि) मू, प्रतिशामा कृ। म
पु तथा भाव, स्थानान्तरगमन, अर, सरणी
सृति (स्त्री), वतव्यत्वात्, व्याक्षिप, विन्व,
शमन, शक्ति, (मकटादि का), विचलन,
प्रतिशामन ।

हटनेवाला, स पु, स्थानान्तरगमिन, अपयान्,
अपमन्, कर्तव्यविमुख, शमनोन्मुख, प्रतिज्ञा
विरोधिन् ।

पाँडे न हट्टा, सु, पराहमुख (वि) न
जन्, सन्न (वि) स्था (स्वा प अ) ।

हट्टवाना, त्रि प्रे, व 'हट्टाना' क प्रे रूप ।

हट्टाना, क्रि स (हि हट्टाना) स्थानान्तर नी
(स्वा प अ), अप, सु (प्रे) २ दूरीकृ,
अपनी ३ पलाय (प्रे) ४ प्रतिशामा हट्टादे ।
म पु तथा भाव, स्थानान्तरे नयन, अपमा
रण, अपनयन इ ।

हट्टा हुआ, वि, स्थानान्तरगत, अर, यान्त्रिक
गत-स्तन, दूरीभूत, कर्तव्यविमुखीभूत, शान,
नष्ट, विचलित ।

हट्ट, म पु (स) आपन, निगम, पण्य
भूमि (स्त्री) बीविना, क्रयविक्रयस्थान
२ पण्यशाला, दे 'हट्ट' ।

हट्टा-हट्टा, वि (स हट्ट+अनु) हट्टपुत्र,
मांसक, हट्टाग, प्र-महा, नष्ट, महा-शूल, काय ।

हट्टी, स स्त्री (म) शूद्र, आपनानिम
२ पण्यशाला (दे 'हट्ट') ।

हट्ट, स स्त्री पु (स) कलात्कार, रमम
२ दुराग्रह, निर्वैध, प्रतिनिवेश ३ हट्ट,
प्रतिनिवेशक ४ अवश्यभावित अनिवायना ।

—करना, क्रि अ, दुराग्रह कृ, प्रतिनिवेश
(वि) हट्ट (स्वा आ स) ।

—धर्मो, म स्त्री (म हट्टधन) हट्ट, दरा
दह २ विचारमूर्धोता दे 'कट्टपन' । वि
दुराग्रहिन, प्रतिनिवेश, निर्वैधपर ।

—योग, स पु (म) योग-भेद, हट्टविषय ।

—योगी, सं पु (म मिन्) हट्टयोग्यामिन् ।

हट्टात्, अव्य (स) दुराग्रहेण, सनिर्वैध
२ कलात्, सरमम ३ अवश्यम् ।

हट्टी, वि (म हट्टिन्) दे 'हट्टीण' ।

हट्टीला, वि (स हट्ट >) दुराग्रहिन, प्रति
निवेश, निर्वैधपर २ हट्टप्रतिष, सत्यसकलः ।

हट्ट, सं स्त्री (म हट्टीतरी) अमया, अमृता,
पण्या, श्रेयसी, शिवा, रसायनशाला, प्राणदा,
देवी, दिव्या ।

हट्टक, स स्त्री (अनु) उत्कटेष्टा, दीप्राभि
लाप ।

हट्टकाया, वि (देह हट्टकाना) उन्मत्त-
वत्पुत्र (प्राय तुष्टो के लिट्) २ अस्तुत्तर-
अनीच्छुक ।

हट्टगोला, स पु (हि हट्ट+गिलना) १
*हट्टगिल, खणभेद ।

हट्टताल, स स्त्री (म हट्ट+ताल) *हट्ट
ताल, (विरोधादिप्रकाशनार्थ) संभूय व्यवसाय
कर्म, स्वाग ।

—करना, क्रि अ, समूय व्यवसाय त्यन्
(स्वा प अ), हट्टताल कृ ।

हट्टर, वि (अनु) निगोर्ण, बठरपित्त, प्रमित
२ कपटापह्न ।

—करना, मु, दे 'हट्टना'(२) ।

हट्टपना, क्रि म (अनु हट्टप) आस्य निक्षिप्
(तु प अ), निम् (तु प मे), प्रम
(स्वा आ मे), सत्तर मष्ट (तु) २ कप
देन अपहृ (स्वा प अ), अन्यायेन आदा
(तु आ अ) ।

हट्टवहाना, क्रि अ (अनु हट्ट+वह) त्वर
(स्वा आ से), मममन विधा (तु व थ),
आतुर, आकृल (वि) वन्द (दि आ म) ।

हट्टवाह्या, वि (हि हट्टवाही) त्वरित-तृ-
क्षिप्र अशु, कारित, त्वराकुल ।

हट्टवही, सं स्त्री (अनु) त्वरा, तूष्णि (स्त्री),
रमम-म, क्षिप्रता, शीघ्रता, २ संक्रम, त्वरा,
अनुरता-आनुत्ता ।

हट्टहट्टाल, क्रि स (अनु हट्ट+हट्ट) त्वर
(प्रे), त्वरित मष्ट (प्रे) । क्रि अ, कप
वेध (स्वा आ मे) २ मष्ट चत् (स्वा
प मे) ।

हट्टा, स पु (सं ववाचिका) वरटा, दे 'मिन्' ।

हट्टा, सं स्त्री (मं हट्टाई) अस्थि (न)
अदिकं, कुल्यं बीडम, मदीभव, मष्टाकर,

विडम्, कर्कर, श्वदयित (प्राय बहु) २ १२, बुद्धम् ।

हृद्विर्था गदना वा तोन्ना, सु, पश्य तद् (सु) ।

हृद्विर्था निजल अना, सु, अनिष्टा-अनिष्टीन् अस्थिदीप (वि) जन् (दि आ मे) ।

हृत्, वि (स) प्रमापित, निवृद्धित, नि, हिसित, निवृत्, क्षणित, निवृत्तित, विवृत्तित, मरित, प्रति, प्रतित, प्रमथित, आलभित, विवृत्तित, वधित, व्यापादित, पचत्व परल्लेख, गमित-नीन प्रेषित २ तद्धित, प्रहृत, आहृत, ३ रहित, विहृत (उ श्रीदत्त) ४ नशित, नष्ट, घ्वन्, घ्वमित ५ पीडित, प्रस्त ६ निवृद्ध, उपवोदानर्हं ७ गुणित (गति) ८ व्यथित, अर्द्धित ।

—प्रभ, वि (सं) निप्रभ, कान्तिहीन ।

—तुद्धि, वि (म) मूर्ख, निवृद्धि ।

—भागी, वि (स गिन्) हृत नद, मग्य, दुर्द्धव ।

—वार्य, वि (स) निर्वल, अशक्त ।

—हृन्व्य, वि (स) हृताश, भग्न, वित्त हृदय उत्साह ।

हृत्क, स स्त्री (अ हृत = पत्न्या) अपमान, निरादर निरस्वत, अवस्था, मन हानि (स्त्री) ।

—इज्जती, स स्त्री (अ हृत + इत्त) मानहानि (स्त्री), अवधीरणा ।

—करना, क्रि स (समुपने) अप अव, मन् (प्रे) अवस्था (कृ प अ), निरम्भ ।

हृताश, वि (म) निराश, त्वल्लस, अशा, अनीन हीन-रहित, निरपेक्ष ।

हृताहृत, वि (म) मृत्पूत, प्रेत्त्र-त्त, क्षय मृत्, प्रणित्रेत्त ।

हृतोत्साह, वि (म) निर-भग्न उत्साह, मनो हृत, भग्नोद्यम, विपणा, अवम्भ, रित्र प्रति, बद्ध हृत, स्तम्भितपेय ।

हृत्पा, सं पुं (सं हृत् >) मुक्ति (स्त्री),

हृत्पी, स स्त्री / वारण, दड ।

हृत्पा, स स्त्री (सं) हृत्प, वध, घात, मृदन, हिसन, हिसा, मारणम् ।

—करना, क्रि स, हृत् (अ प अ, तथा प्रे घानयति), व्यापद् (प्रे), दे 'मारना' ।

हृत्पारा, स पु (स हृत्पाकार) घानक, मारक, वधकारिण, हृत्, हृत्, प्राणहर ।

हृत्पारी, स स्त्री (हि हृत्पारा) प्राण, हरी-हारिणी, वधकारिणी, घानिका २ हृत्पा, पाप-अपराध-दीप घानकम् ।

हृत्प, स पु (म हृत्) वर, पाणि ।

—कडा, स पु (सं हृत्कडा >) हृत्-लापव, करवीराल, इन्द्रजाल २ गुत्तवेष्टा, प्रच्छन्न प्रयोग प्रयुक्ति (स्त्री), प्रनारणा, छल-लम् ।

—कडी, स स्त्री (स. हृत्कटक >) हृत्, पाश निगड, करवधनी ।

—कडी लगाना, क्रि स, पाणिपद्येन वध (हृ प अ) सवम् (प्रे) ।

—धुत्, वि, तडनशील ।

—लना, स पु, पाणि-कर, पीडन, पाणि कुट्टनम् ।

—मार, सं स्त्री, गत हरित, शाला, दे 'कील याना' ।

हृथनाल, सं स्त्री (हि) *हृत्तिनलम्, गत नेयशनप्ती ।

हृथ(धि) नी, स स्त्री (सं हृत्तिनी) करिणा, करेणु-शू (दोनों स्त्री), इमी, मातगी, गत योपित, क, रेणुका, व(वा)सा, वचा, वटभरा ।

हृथिया, स पु (स हृत्पा) हृत्पा, प्रयोदश नक्षत्रम् ।

हृथियान, क्रि म (हि हृथ) वल्लव प्रहृ (कृ प से) धृ (सु) आदा (जु आ अ) २ चुर (सु), मुप (कृ प से) ३ वन्नेन स्वायचीह ।

हृथियार, स पु (हि हृथियाना) अत्त, इत्त, आयुध, हनि (पु स्त्री), हृत्तु २ उपकरण, यत्र, दे 'औत्तार' ।

—बद्ध, वि, सदाश्व, सायुध, सक्क, सज्ज ।

—वोधना, सु, शकाकाणि धृ (सु), मत्रह (दि प अ), सञ्जीभू ।

हृथेली, स स्त्री (मं हृत्तल) करतल, तल-ल, प्रतल, ताल, प्रयाणि, प्रहृत्त, फर्करीक ।

—सुजलाना, सु, वितल्लभ सम्भाव्यते ।
 —पर सिर रखना, सु, जीवनमोह त्यज्
 (भ्वा प अ), प्राणान् अवाण् (सु) ।
 —म आना, सु, स्वाधिकारे आया (अ प अ) ।
 हथौडा, स पु (हि हाथ) महा, पन-विषन ।
 हथौडी, स स्त्री (हि हथौडा) वि, घन,
 दुषण, अयोपन ।
 हथ्यार, स पु, दे 'हथियार' ।
 हद्, म स्त्री (अ) सीमा, दे ।
 —करना, सु, सीमा-मर्यादा अतिक्रम (भ्वा
 प से)-उल्लव (भ्वा आ से) ।
 —से ज्यादा, सु, अमीम, नि सीम, अभिन,
 अपरिमित ।
 हनन, स पु (स न) दे 'हत्या' २ ताडन,
 प्रहरण ३ गुणनं, गुणाकार, पूरण (गणित) ।
 हननीय, वि (स) हन्तव्य, बघाई, शीर्ष
 च्छेद्य, बध ।
 हनु, सं स्त्री (सं पु स्त्री) हन् (स्त्री),
 कपोलद्वय परमुसमाग २ = वि (व-सु) तुकम् १,
 —की जकडाहट, सं स्त्री हनुग्रह ।
 हनुमान, स पु (सं हनुमत्) मासुति, पवन
 पुत्र, वायुसुत, आनन-जैय, कपीन्द्र ।
 हप, स पु (अनु) स्वरितनिगर्णात्मको हपिति
 शब्द ।
 —कर जाना, सु, मत्वर निपू (तु प से) ।
 हप्रता, सं पु (का) सप्ताह, दे ।
 हवर दवर, क्रि वि (अनु हट बट) शीघ्र,
 तात्पर, समग्रमम् ।
 हवशी, स पु (अ) हवशीय, हवशदेश
 वासिन् २ कुष्णांग, वरुप ।
 हव्या डव्या, स पु (हि हॉक + अनु टव्या)
 शिश्या आमरोगभेद, असनक ।
 हव्स, स पु (अ) वारावास ।
 —वेना, स पु (अ + का) अन्यायकारा
 वास ।
 हयो, मत्वं (अ अह्य) च्छप (अह्य) ।
 सं पु, अहकार ।
 हमरे, अन्य (का) मह, साक २ मम, तुल्य ।
 —अमर, सं पु (का + अ) एक-सम,
 व-जीवन-माल, मह, व-तन्त्री वन् ।
 —निम्न, सं पु (का) सजान-नीय, मवर्ग-
 गाय ।

—जोली, स पु (का + हि) सहचर, सवि
 (पु) ।
 —दर्द, म पु (का) समदुःख, समवेदन,
 सहानुभूति, मव तुक, सानुकप ।
 —दर्दी, स स्त्री, सहानुभूति (त्नी), अनु १,
 समवेदना ।
 —निवाला, स पु (का) सह, भोक्तृ (पु)
 भोक्त ।
 —प्याला, सं पु (का) सहपायिन् ।
 —राह, अन्य (का) सह, साकम् ।
 —राही, स पु (का) सह, चारिन्-गामिन्,
 मित्रम् ।
 —वतन, स पु (का + अ) सम एक, देशीय,
 देशभान् ।
 —वार, वि (का) सम, सम-नल रेख, सपात् ।
 —सबड, सं पु (का) सहपाठिन् ।
 —सर, स पु (का) सम, गुण-नल पद ।
 —सरी, सं स्त्री (का) समता, समानता ।
 —साया, सं पु (का) प्रति, नासिन्-वेशिन्
 वेश ।
 हमल, सं पु (अ) गर्भ, दे ।
 हमला, सं पु (अ) युद्धपात्रा, यान
 २ अवस्कद, आक्रम, आक्रमण दे ३ प्रहार
 ४ क्रूरव्ययम् ।
 —आवर, (हमलावर) वि पुं, आक्रामक,
 आक्रमण-चारिन्-कर्तृकार, अवस्कन्दकृत् ।
 हमक्रत, म स्त्री (अ) मूढता, अज्ञता,
 मूर्खता, मूर्खत्व, मोर्ख्यम् ।
 हमाम, सं पु (अ हमाम) स्नानागारम् ।
 हमारा, सव (हि हम) अस्माक, अस्मदीय -
 या-य (पु स्त्री न) ।
 हमामहमी, सं स्त्री (हि हम) स्वार्थ, स्वार्थ
 परता २ अहमप्रिया, अहमहमिका ।
 हमं, सर्व (हि हम) अस्मान्, न २ अस्म
 न्य, न ।
 हमेल, स स्त्री (अ हमेल) अर्थ सुता,
 माला ।
 हमेशा, अन्य (का) मद, नित्यम् ।
 हय, सं पु (सं) अथ, घोटक (हया स्त्री) ।
 —घोष, स पु (सं) विष्णो अवतारविश्व
 २ वेददारी राक्षसविश्व ।
 हया, सं स्त्री (अ) लजा, प्रया ।

हरसिगार, स पु (न हारस्यजार) पारि
जाल-तक, भानक्तः, रागपुष्पी, खरपनक ।

हरा, वि (स हरित) हरित, प(पा)लाश
२ प्रमत्त, प्रहृष्ट, प्रपुल्ल ३ अभि, नव, प्रपय, ४
आम, अपक्व, अपरिणत ५ (व्रण दि)
अविरोपित, अमुष्क । स पु, हरित, पलाश
हरिद्, वर्ण ।

—पन, स पु, हरितत्व, पलाशत्व २ अपरि
णति (स्त्री), अपक्वता ३ नवता प्रत्ययना ।

—वाग, सु, आपातरमणीया वाता ।

—भरा, सु, सरस, शोपरहित, हरिततरुल
ताभि आच्छादित (वि) ।

हराना, क्रि स (द्वि हारना) अभि परि
परा, मु (भ्वा प से), जि (भ्वा प अ)
वि परा जि (भ्वा आ अ), दन् (प्रे)
२ (शत्रु) विकली-मोथी कृ ३ क्लम श्रम
सिद् आयस (सव प्रे) ।

आण—, सु, छ (प्रे), हन (अ प अ) ।

मन—, सु, मन नेन छ (भ्वा प अ)
मुद् (प्रे) ।

हराम, वि (अ) अधम्य, अयाय्य, अवेष,
म्याय धर्म नियम विधि-विरुद्ध निषिद्ध, दूषित ।
स पु, शरर २ अधम, पाप दोष
३ व्यवहार, जारकर्मन् (न) ।

—जार, म पु (अ + ङा) अधिगारिन,
औपस्थिक २ पाप, पापाचारिन ।

—वारी, सं स्त्री, पाप, अधर्म २ व्यवहार,
जारकर्मन् (न) ।

—शोर, सं पु (अ + ङा) पापावीचिन
पापमहिन् २ पराभिदार, पराश्रपुष्ट ३
अलस, उपयोगविमुख ।

—शोरी, सं स्त्री, पाप, आजीव आजीवन
२ पराश्रभोजन ३ अल्पस्य, उपयोगविमुक्तता ।

—झादा, स पु (अ + ङा) जार, न जान
उत्पन्न, विनात (जारजा स्त्री) २ दुष्ट, खल,
पापिन् (गाली) ।

हरमी, वि, दे 'हरामजादा' (१२) ।

हरारण, म स्त्री (अ) ताप, दाह, उष्मन्
२ मंद शब्द, खर, खराश्र ।

हरायल, सं पु (ह्र) सेना मुल-अश्र, अद्या
नीक, नाशीरचारा (बहु) ।

हरास, स पु (का हिराम) भय त्राम २
आशक्ता ३ विषाद ४ निरादर्श, निरज्ञता ।

हरा हुआ, वि, अप, हून, चोरित, स्तेनित,
मुषित, मुष्ट, २ अर्च्छिन्न, महत्मा जाकलित
गृहीत धृत् ३ दूरीकृत, अपमारित ४ नाशित
ध्वमित ५ नीत ऊढ ।

हरि, स पु (सं) श्री, खर पर निवाम ।
पति-वत्स, विष्णु दे २ इद्र ३ अथ
४ कपि ५ मिह ६ मूर्ख ७ चद्र
८ मद्क ९ मय १० अग्नि ११ मयूर
१२ श्रीकृष्ण १३ श्रीराम १४ शिव
१५ यम । वि (स) (१२) विगल
हरित, वर्ण ।

—व्या, स स्त्री (स) भगवच्चरितवर्णनम् ।

—कीर्तन, स पु (स न) भगवद्गुणगानम् ।

—गीतिका, म स्त्री (स) हरिगीता, छन्दो-
भेद ।

—चदन, म पु (सं पु न) नैलपरिष्क,
गोशीर्ष (चदनभेद) २ स्वगन्धवृद्धविशेष
३ पञ्चवारा ४ कुबुम ५ चन्द्रिमा ।

—चाप, म पु (स) इद्र हरि, धनुम् (न) ।

—जन, स पु (सं) भगवद्भक्त, इद्रासेवक ।

—ताल, म पु (स न) दे 'हरताल' ।

—द्वार, सं पु (स न) प्रत्यानतीवविशेष,
गगाद्वारम् ।

—धाम, म पु [छ -मन् (न)] विष्णुलोक-
वेकुंठ हरि, परं पुरम् ।

—भक्त, सं पु (दे) 'हरिभक्त' ।

—भक्ति, स स्त्री (सं) हरि, भजनं प्रेमन्
(पु न) मवनम् ।

—चदा, सं पु (सं) श्रीकृष्णसत्तान २ पुरा
णश्रवविशेष ।

—चाहन, स पु (सं) गरुड २ हय
३ इद्र ।

हरिण, सं पु (सं) मृग, पुराण ।

—कलक, सं पु (सं) मृगान चद्र ।

—नयना, सं स्त्री, मृग हरिण नयनी नया
नेत्री-अक्षी ।

हरिणी, सं स्त्री (सं) दे 'हरिणी' ।

हरित, वि (सं) हरित, प(पा)लाश, हरित(द)-
वर्ण २ कपिल, विग, विगल, विशग ।

हरिद्रा, सं स्त्री (सं) दे 'हृदी' ।

हरिन, स पु (सं हरिण) दे 'हरिन' ।
हरियाला, वि (दि हरा) हरित, हरिद्रण
२ शादल ।

हरियाली, सं स्त्री (दि हरा) हरितत्व,
विस्तार प्रसार, हरीनिन्द (पुं) २ तर-
लता, ममूह विस्तार, शाद, शादलता ।

हरिश्चन्द्र, स पु (स) विशकुञ्ज, श्रेतासुगे
नृपविशेष ।

हरि(री)स, स स्त्री (स हलीपा) हल-लागल,
दड ।

हरीतकी, स स्त्री (म) दे 'हड' ।

हरीक, स पु (अ) शशु २ प्रति, दन्दिन
स्पादन् ।

हरीश, स पु (सं) वानरेद्र २ सुमीव
३ हनुमद ।

हर्ष, स पुं (अ) विघ्न, अन्तराय २ हानि
क्षति (स्त्री) ।

हर्षा, म पुं (सं हर्ष) दे 'हरनेवाला' ।

हर्ष, स पु, दे 'हरज' ।

हर्म्ये, सं पु (सं न) प्रासाद, राजभवन
२ विशालभवन, धनिगृहं ३ न(ना)रक ।

हरा, स पु, दे 'हड' ।

हर्ष, म पु (स) पुलक, रोमाच दे ।
२ आनन्द, प्र, मंद, आह्लाद, विलास ।

—विपाद, सं पु (म औ दि) मोदसेनौ,
आनन्दविशदौ ।

हर्षित, वि (म) हृष्ट, हर्षित, प्रीत, प्र,
सुदित, प्रमत्त, प्रसुप्त, आनन्दित ।

हल्, स पु (म) शुद्धस्वरहीन, व्यजन,
(कू से ह् नक अक्षर) ।

हलन्, वि, (स) शुद्धव्यन्तान्न (शब्द) ।
म पु, दे 'हल्' ।

हल, सं पु (सं न) लागल, हाल, हलि,
गोदारण, मीर, सौरक ।

—चलना या जोतना, कि स, हल् (भ्वा
प मे) कृप (भ्वा प अ, तु उ अ) ।

—नीवी, म पु (स-विन्) शालिक, लां
दिन्, कृपाण, कृपिन् ।

—घर, सं पु (सं) हल, पाणि भूत,
बलदेव ।

—मुख, स पु (सं न) निरीष ध, काल
लम् ।

—वाहा, स पु (सह) हल्ग्राहिन्, परहल
चाल्प ।

—वाही, म स्त्री (दि हल्वाहा) कृषि (स्त्री),
वपणम् ।

हल्, म पु (अ) विवरण, व्याख्यान, माधन
२ निणय, समाधान, ममाधि ३ गणन,
सत्यन ४ द्रावणं, विन्यनम् ।

—करना, कि स, विट्ट (स्वा उ से),
व्याख्या (अ प अ) विरादयति (ना धा),
स्पष्टीकृ, उत्तर दा २ विद्रुविली (प्रे),
द्रवीकृ ।

हलक, स पु (अ) कठ, ग, निगरण ।

हलका, स पु (अ) वृत्तं, वतुल, मडल
२ परिधि ३ समूह, निक्कर ४ ग्रामादि
समूह ५ चक्रवलय-यम् ।

हलका, वि (स लघुक) लघु, अल्प-लघु
स्त्रीक, भार-तोल, सु-सुख, वाह्य २ विरल,
पनता-रहित ३ गाथ ४ अल्प, स्तोक ५ अल्प,
मूल्य-अर्थ ६ मंद, सख ७ तुच्छ, नीच, छद्र
८ सुकर, सुसाध्य ९ निश्चित, कृपकार्य
१० सहम, तनु ११ निकृष्ट, अपकृष्ट ।

—पन, स पु, लघुता, लापव, अल्पभारता,
सुखवाहता २ क्षुद्रत्व, तुच्छता ३ अन्, मान
हेलना, प्रतिष्ठाभाव ।

—करना, सु, लघयति (ना धा), लघुक
२ अवगण् (तु) अवमन् (प्रे), लघाय
मन् (दि आ अ) ।

हलचल, (दि हिलना+चलना) संभोभ,
मरभ, सन्नभ, सकुल, कोलाहल २ उपद्रव,
पिप्पव, समद ३ कप, रपंद ।

—मचना, कि अ, संभोभ सजन् (दि आ से)-
प्रवृत् (भ्वा आ से) ।

हल्दिया, स पुं (दि हलदी) पण्डु, रोग-
आमय, पण्डुक, कामला ।

हल्दी, स स्त्री (स हलदी) हरिद्रा, पीनिका,
पीता, कांचनी, वर्णवती, विना, वर, वर्णिनी,
रजनी, नदी, मगला, शोभा ।

—उठना या चढ़ना, सु, विवाहात् प्राक्, वर
वधो तीर्त्तहरिद्राभ्यजनम् ।

—लगा के बैठना, सु, निहृषम पक्त्र स्था
(भ्वा प अ) २ दयावलि (वि) धृ
(भ्वा आ से) ।

—रगी न पिठकरी, सु, व्यय विनैव ।

हलक, स पु (अ) शपथ, दे 'सौमद' ।

—नामा, स पु (अ + फा) शपथपत्रम् ।

हलवा, स पु (अ) काटाह सयाव, मोहनभोग ।

—सोहन, स पु, शोभन मयाव काटाह मोहनभोग ।

हलवाइ(य)न, स स्त्री (हि हलवाई) काद विकी, मिष्टान्नविक्रेत्री (खादिकी, खादविकी) २ कादविक मिष्टान्नविक्रेतृ-सात्त्विक, पत्नी ।

हलवाई, स पु (अ हलवा) सात्त्विक, सात्त्विक, कादविक, मिष्टान्नविक्रेतृ ।

हलाक, वि (अ) हल, मारित ।

—करना, सु, इन् (अ प अ) ।

हलाकत, स स्त्री (अ) ५५, ह या मृशु ३ विनाश ।

हल ल, वि (अ) धर्म्य, दा य देध, शास्त्र विधि धर्म, अनुकूल विहित, उचिन । स पु (अ) मह्य पशु-जतु (इस्लाम) ।

—झोर, स पु (अ + फा) धम पुण्य-आजी निरु २ खलपू (पु), समार्थक, दे 'भगी' ।

—झोरी, न स्त्री, धम पुण्य-आजीव-आजी वनम् ।

—करना, सु, न्यायन धर्मेण व्यवहृ(भवा प अ) २. शनै शनै इन् (अ प अ) (इस्लाम) ।

—का, सु, शास्त्रानुकूल, वैध, धर्म्य ।

—कई कमाई, सु, पुण्यलक्ष्मी, न्यायोपार्जित धनम् ।

—हलाहल, स पु (स न) हल(ल)हल, हाहल, समुद्रमथनजो विषविशय २ घालकूट, महाविष ३ गरल-ल, विषद ।

हला, न पु (स लिन्) बलदव २ कृपाय ।

हलाम, वि (अ) नम्र, विनीत २ शान्त, शमान्वित ।

हलामी, स स्त्री (अ इन्मी) नम्रता, विनय २ शान्त (खा), प्रसाद ।

हलका, वि, द हलका' ।

हलदा, न स्त्री, द 'हलदी' ।

हल्ला, न पु (अनु) कोलहल बल्यम्, सुदुल, लक्ष्मी, विर(रा)व २ आक्रम, अवलम् ।

—करना, क्रि, अ कोलाहल ह, उत्कृष्ट (भवा प अ) ० आक्रम (भवा प मे, भवा आ अ) ।

हवन, स पु (स न) होम, होय, यज्ञ दे २ अग्नि ३ हवती होमकर्मम् ।

—करना, क्रि म, इ (जु उ अ), यन् (भवा उ अ) होममुटे हवि शिप् (शु प अ) ।

—कुड, स पु (स न) हवनी-यज्ञ होम कुडम् ।

हवलदार, न पु (अ हवाल + फा दार)

•हवालदार, सेनाधिकारिभेद ।

हवस, स स्त्री (फा) कामना, लालता २ लुणा, दे ।

हवा, स स्त्री (अ) मन्त्र, पवन, वायु दे ।

० भूत, प्रेत ३ रथाति, प्रसिद्धि (स्त्री)

५ विश्राम, प्रत्यय ५ उरफटेचटा ।

—झोरी, स स्त्री (अ + फा) पयटन, भ्रम, वायुमेवनम् ।

—चकी, स स्त्री (अ + हि) •वायुचक्रा, पवनपेणी ।

—दार, वि (अ + फा) प्रवात, सुवान, पवनपूण ।

—उरफटना, सु यज्ञ प्रत्यय नश् (दि प वे) ।

—करना, सु, वीन् (जु) ।

—खाना, सु, पर्यट (भवा प मे), वाउ सेअ (भवा आ स) ।

—बाँधना, सु, रथाति वीति तन् (दि आ म) ।

—बाँधना, सु, विकल्प (भवा आ से), आत्मान दलाप (भवा आ स) ।

—से बाते करना, सु अतिवयेन भाव (भवा प से) ।

—से रटना, सु, नित्य कल्होषण (वि) वृत् (भवा आ म) ।

—हो जाना, सु, मत्सर पलाय (भवा आ म) ० निरोधू, विली (वन) ।

हवाई, वि (अ हवा) वायव (वी स्त्री), वादव्य-वायवीय (भवा स्त्री) २ नम म्प, गगन, नाभिन् चारिन् ३ निर्दुल, निराधार ।

म स्त्री, •व दवा, अनित्योत्पन्नभेद ।

—अड्डा, स पु, विमान, वायुयान, रथान् विनवेश ।

- किला, महल, सं पु, उपुष्प, गगन कुट्टमम् ।
- चकी, स स्त्री, दे 'हवाचकी' ।
- जहाज़, स पुं (हि + अ) वायु-व्योम यनं, विमान-न, पवनपोत ।
- हवाल, सं पु (अ अहवाल) दशा, अवस्था २ परिणाम, गति (स्त्री) ३ वृत्त, समाचार ।
- हवाला, म पु (अ) उल्लेख, निर्देश, संकेत २ उदाहरण, दृष्टान्त ३ रक्षा रक्षण, अधिकार ।
- देना, क्रि स, निर्दिश (तु प अ), उल्लिख (तु प से) ।
- करना, मु, दे 'सौपना' ।
- हवालात, स पु स्त्री (अ) गुप्ति (स्त्री), निरोध २ गुप्तिगृहम् ।
- करना, मु गुप्तिगृहे निरोध (रु प अ) ।
- हवाम, स पु (अ) इन्द्रियाणि हृषीनाणि (न बहु) २ उपलब्धि (स्त्री), सवेदन ३ सहा, चेतयं, दे 'होश' ।
- हवि, स पु [स हविस (न)] हवनसामग्री, हव्य, साम्राज्य, हवनीय, होनीयद्रव्यम् ।
- हवेली, सं स्त्री (अ) हर्म्यं, भवन, धनिगृह २ पत्नी ।
- हव्य, सं पु (स न) दे 'हवि' ।
- हशमत, स स्त्री (अ) गौरव, महिमन् २ विभव, ऐश्वर्यम् ।
- हसद, म पु (अ) ईर्ष्या मत्सर ।
- हसन, अव्य (अ)-अनुसार, यथा- ।
- सौफ्रीक, अव्य (अ) सामर्थ्यानुसार, यथशक्ति (दोनों अव्य) ।
- हसरत, सं स्त्री (अ) शोक, आधि, दुःखम् ।
- हमीन, वि (अ) घुन्दर, मूलम् ।
- हस्त, म पु (स) कर, पाणि, दे 'हाथ' २ चतुर्विंशत्यगुलिपरिमाण ३ हस्त लिपि (स्त्री), लेखनशैली ४ नक्षत्रविशेष ५ शुद्धा, दे 'हूँड' ।
- कार्य, सं पु (स न) करदमन् (न) ० हस्तशिल्प, दे 'दस्तकारी' ।
- शौशल, स पु (स न) पाणिपाठ्य, हस्त, हस्तपत्र चापत्यम् ।
- निया, सं स्त्री (स) दे 'हस्तकार्य' (१०) ।

- क्षेप, स पु (स) प्रति, बधन रोधनं २ परकार्यं, चर्चा प्रतिपादन ।
- क्षेप करना, क्रि स परकार्येषु भ्यापु (तु आ अ), परकायाणि चर्चं (तु प से) निरूप (चु) ।
- गत, वि (स) प्राप्त, लब्ध, अधिगत, हस्तस्थ ।
- तल, सं पुं (स न) करतल, दे 'हथेली' ।
- ग्राण, स पु (स न) करवाण दे 'दस्ताना' ।
- गृष्ट, सं पुं (सं न) करपाणि गृष्टम् ।
- मैथुन, स पु (स न) हस्तेन शुरुपातन इन्द्रियसवालनम् ।
- रेखा, स स्त्री (स) करतल, रेखा रेखा ।
- छाद्य, सं पु (सं न) हस्त, बौशल चापत्यम् ।
- लिखित, वि (स) हस्तेन लिपिबद्ध ।
- लिपि, स स्त्री (स) लेखनशैली ।
- सूत्र, स पुं (स न) मंगल्य करतल, वृत्त मयं, कर्कण-बलयम् ।
- हस्ति, सं पुं (सं निम्) दे 'हाथी' ।
- हस्तिनी, म स्त्री (स) दे 'हथनी' २ स्त्री भेद (कामशास्त्र) ।
- हस्ती, स पु, दे 'हाथी' ।
- हस्ती, सं स्त्री (क्रा) सत्ता, अस्तित्वम् ।
- हस्ते, अव्य (स) द्वारा, क्षेपण ।
- हहा, स स्त्री (अनु) अट्ट हास्य हान् हसित, हहाकार, हीही (अव्य), हास्यध्वनि २ दैन्यसूचकध्वनि, अयि (अव्य), हहा कृति (स्त्री) ३ अनुनयातिशय, मप्रणि पात प्रार्थनम् ।
- खाना, मु, पादयो पतित्वा अनुनी (भ्वा प अ)-प्राप्त (चु आ से) ।
- हॉ, अव्य (सं आम्) ओम्, एव, अध किं २ लथेति, बाध, साधु (सव अव्य) ३ तथापि ४ दे 'यहाँ' ।
- हॉ, अव्य, आमात्र, ओमोम् २ न न, मामा, न, नहि, नो ।
- करना, मु, अंगी स्वी, कृ, अनुशा (क उ अ), अनुमन् (दि आ अ) ।
- जी हॉ जी करना, मु, चाट्टभि प्रमद् (प्रे)-उपचट्ट (चु)-स्तु (अ प अ) ।

—मे हों मिलाना, मु, अविचारैव द्रव्यनि
मत्पापयति (ना भा) २ दे हँ जी हँ
जी करना ।

हाँक, स स्त्री (स हुकर) हुकति (स्वा),
अकारणणा, उचैराहान सारस्वरेण मबोधन
२ गनन ना, युद्धाहान, सिंहनाद क्षेपडा,
समरार्थमाकारणणा ३ प्रोत्साहन सन्द ध्वनि
४ रक्षार्थं सहायनार्थं, आह्वान-आकारणम् ।

—पुकार, स स्त्री, कोलाहल, उत्क्रोश ।

—देना या लगाना, मु, उच्चै आकृ (प्रे),
सारस्वरेण भाहे (भ्वा प अ), सन्दायते
(ना भा) ।

हाँकना, कि स (हि हँक) दे 'हाँक देना'
३ सिंहनाद कृ, युद्धाय आकृ (प्रे) ३ वि
कल्प (भ्वा आ से) आत्मान इत्याप्
(भ्वा आ से) ४ मुद्रप्रणुद (भु प अ,
प्रे) प्रेर (प्रे), चर्चल (प्रे), बुद (बु),
अज (भ्वा प स) ५ अपसृनिष्कम् (प्रे)
६ वीच (बु) । स पु तथा भाव, दे 'हाँक'
(१२) ३ विरह्यन, आत्मदलघनया ४
प्रणोदन, प्रेरण, प्रचोदन, प्रचालन, प्रजनं
५ अपसारण निष्कासन ६ वीचनम् ।

हाँकनेवाला, स पु, प्रेरक, वाहक, चालक,
प्रमोदक, प्रचोदक इ ।

हाँडी, स स्त्री (स हडी) हटिका २ कान,
हटी हटिका ।

—पकना, मु, उपजप (कर्म), कूट, रच्
(कर्म), उपजप कृ (कर्म) ।

हाँफ(प)ना, कि अ (अनु हफ हँक या
म हाविरा >) सरष्ट श्वम (अ प से),
मत्वर प्राण (अ प से) । स पु, वृत्तस्थान,
स्वरितप्राणनम् ।

हाँसी, स स्त्री दे 'हँसी' ।

हा, अव्य (सं) ह्यसोऽभयविरमयतोऽपानदा
सुचरनव्ययम् ।

हाड्डोवन, स पु (अं) उदवनम्, आर्द्र
जनम् ।

हाड्डोसोत्रिया, स पु (अं) अन्वर्गोग,
आत्कं जन्, भय-सवाम ।

हाड्डवन, सं पु (अं) ममासविद्ध () ।
(व रात्रमेव) ।

हाड्डिकोर्ट, स पु (अ) प्रधानभ्यायालय,
उच्चारणम् ।

हाड्डि स्कूल, स पु (अ) उच्च विद्यालय ।

हाड्डम, स पु (अ) गृह, गेह हं, अ(आ)
गार ल् २ सभा, परिषद ३ दूरवश ।

हाऊ, स पु (अनु) दे 'हौव' ।

हाकिम, स पु (अ) शासक, शानिन्,
अभिनारिन् नियोगिन्, आधिकारिक ।

हाकिमी, स स्त्री (अ हाकिम) शासन,
अधिकार, प्रमुख अविपत्य, दिष्टि (स्त्री),
राज्यम् ।

हाँकी, स स्त्री (अं) अगलक्रीलभेदः ।

हाजत, स स्त्री (अ) आवरणरुता, अवेष्ट
२ कामना, स्वात्ता ३ मन्-मूत्र, उत्तिसृष्टा
४ गुणि (स्त्री), दे 'हवालात' (१) ।

हाजना, सं पु (अ) पचन, वि परि, पाक,
पक्ति (स्त्री) २ जठर, अग्नि जनक,
पाचनशक्ति (स्त्री) ।

—हाजना, मु, अग्निमाष ज्व (दि आ
से) अन्न न पच् (कर्म) ।

हाजिम, वि (अ) पाचक, पाचन, अग्नि
वहक ।

हाजिर, वि (अ) उपस्थित, पुर स्थित वर्त
मान, विद्यमान २ सनद, मज्ज, उद्यम ।

—करना, कि स उपपु (संमुख तथा प) ।

—पचाव, वि (अ) प्रत्युत्पन्नमति, विदग्धः ।

—पचावो, स स्त्री, प्रत्युत्पन्नमतिसात्वं, वैद
ग्यम् ।

—च नाजिर, वि, प्रत्यक्षदर्शक ।

—होना कि अ, उदस्था (भ्वा उ अ)
उपस्थित (वि) भू ।

गैर—, वि, अनुपस्थित, अविद्यमान ।

हाजिरी, स स्त्री (अ) उपस्थिति (स्त्री),
विद्यमानता ।

—जा रनिस्तर, सं प, उपस्थितिपत्रिका ।

—लेना, कि स उपस्थिति अंक (पु) ।

हाजिरीन, स पु (अ 'हाजिर' का बहु)
उपस्थितवता (बहु०) धोतृवर्ग ।

—(न) जलसा, सं पु, सभ्या भरस्य
(बहु) ।

हाजी, स पु (अ) मकायापित्त, अहातिन्
२ कृत् मकायाप हज ।

- हाट, स स्त्री, दे 'हट' (१२) ।
- हाटक, सं पु (म न) सुवर्ण, दे 'सोना' ।
- हाता, म पु, दे 'हथाना' ।
- हाविम, म पु (अ) जखदेवीयोज्युदार सामनविशेष २ मुचहहनमनुष्य ३ निपुण दक्ष मनुष्य ।
- हाथ, स पु (म हस्) कर, पाणि, शय श्वशर, मुन्दल, शन, कुटि २ चट्टि विशत्युत्तिपरिमण ३ वार, दे 'अवि' ४ कर्मकर ५ दश, मुक्ति (स्त्री), वारग ६ वश, अधिमार ।
- आना, मु, अधिगम्-उपलम् (कन) ।
- उठाना, मु, नड (चु), प्रह (म्वा प अ) ।
- की चालाकी, मु, हस्तग्रीशल, दे ।
- की मैल, मु, तुच्छ धुर असार, वस्तु (न) ।
- खींचना, मु, परिह-विरम् (म्वा प अ), वरं (चु) ।
- चढ़ना, मु, दे 'हाथ आना' २ वश आया (अ प अ) ।
- जोड़ना, मु, हस्ती समानोय अधना कर्त्तव्य दशधा अधना सागलि प्रार्थ (चु आ से) ।
- अनुनी (म्वा प अ) ध्याच (म्वा आ से)
- डालना, मु, दे 'हस्तक्षेप करना' ।
- धोना, मु, विपुज (कर्म), वचित विरहित विधेन (वि) भू ।
- नेरा होना, मु, दाद्विभेग निर्यन्तया पीड (कन) ।
- पर हाथ धरे रहना, मु, निरयोग निरुपम स्था (म्वा प अ) ।
- पमारना, मु, पाच् (म्वा आ से) ।
- पाँव फूलना मु, भयन निरवन्धीभू, शोचन पटीभू ।
- पाँव मारना, मु, प्र पव (म्वा आ से), वचन (क उ अ) ।
- फेरना, उ, ल्ह (चु) ।
- पड़ाना, मु, प्रहीतु आदान प्रवत् (म्वा आ से) ।
- पोंधना, मु, दे 'हाथ पीटना' ।
- मटना, मु, म्नुरी (अ आ से), पश्चात्ताप कृ २ निराश पु सिन (वि) भू ।
- मारना, मु, छम्न अपह (म्वा प अ) २ जग्गिा प्रह (म्वा प अ) ।

- मिलाना, मु, करौ सग (तु प अ) २ मनुप्राय सज (वि) भू ।
- मे खरना, मु, वशी-अधिकारे स्था (प्रे) ।
- लगाना, मु, दे 'हाथ आना' २ आरम् (कन) ।
- रुमेटना, मु, दानार, विनार २ निवृत्त (म्वा आ मे)-विरम् (म्वा प अ) ।
- सारा करना, मु, हप (अ प अ) २ अन्ययेन ह (म्वा प अ) ।
- मे जाना, मु, दे 'हाथ पीना' ।
- हभा हाथ, मु, मत्वर, शीर २ कर हस्त, पर-पग्या ।
- हाथा, स पु (सं हस् >) दे 'हस्ती' २ कुत्तारिण मास्य हस्तनिहम् ।
- पाई, म स्त्री, हस्ताहस्ति (अन्व), समय, कल्ह ।
- पाई करना, क्रि अ, हस्ताहस्ति युष् (दि आ मे), कल्हायते (ना था) ।
- पाँही, म स्त्री, दे 'हाथापाई' ।
- हाथी, म पु (म हस्तिन्) करिव, वनिव, दन्तवत्, द्विप, अनेका, द्विरद, गज, नाग, कुन्तर, बाण, इम, स्वभवेय, म(मा)निग, पयिन्, पुष्करिन्, महावृत्, वशुर्षणी, सिपुर, म्द म्द, मिन्द्राविलक, रदानिन्, महावल, द्रुमारि ।
- खाता, म पु (हिन्-का) गजगृह, कर्त्तव्यशाल ।
- दौत, स पु (स हस्तिदत्त) गजदत्त ।
- पाँव, म पु, शीवद, शिलीवद, प पा)द, गजोर-वहनीय ।
- खन, स इ आभारय हस्तपक, हस्तिपक, दे 'महावने' ।
- पर चन्ना वा बाँधना, मु, मुनमृद (वि) मृत् (म्वा आ से) ।
- हाटमा, म पु (अ) दुर्घटना, दे ।
- हानि, म स्त्री (स) कृति (स्त्री), अय, जव हार, अपाय २ क्षय, नाश, अगाय, ३ न्नाम्ययथा ४ अनिष्ट, अहित, पशुमृत् ।
- करना, क्रि म, हानि कृ, नय (सं), क्रि (प्रे), अपवि (म्वा उ अ), क्षति जन् (प्रे) ।
- कारक, वि (म) हानि, कर-कार-कारिन्, अपचय-य, कारिन्, नाशक, अनिष्टोत्पादक ।

—होना, क्रि अ, क्षति बन् (दि आ से), नद् (दि प ने), विवृत् (कम), वि परि, हा (कम), विवृक्तहानरहित (वि) भू।
 हाक्रिज्ञ, स पु (अ) रक्षक, वानृ २ *कुरानपाठिन।
 हाक्रिजा, म पु (अ) स्मृति, दे 'हमरण शक्ति'।
 हामिल, वि (अ) भारवाह हक, भारिन् २ नेट, प्रापक।
 हामिला, स स्त्री (अ) गमिणी, गर्भवती, अन्तर्वर्ती, सत्तरवा।
 हामी, स स्त्री (दि हाँ) अनुमति स्वीकृति (स्त्री), स्वीकार, अनुज्ञा।
 —भरना, मु, स्वी-अगी, कृ, अनुगा (क उ अ), अनुमन् (दि आ अ)।
 हाय, अव्य (स हा) आ, अहट, वष्ट, हट (सब अव्य)। स स्त्री, निर्दीर्घ-श्याम, उच्छ्वसित २ वष्ट, पीडा।
 —हाय, अव्य (सँ हा हा) आ आ इ। सँ स्त्री, शोक २ व्याकुलता।
 —पढ़ना, मु, दुष्कृतशाप फल (भ्वा प से)।
 —मारना, मु, दीर्घ श्स् (अ प मे), (शोकेन) हा हा कृ, निश्वास मुच् (तु प अ)।
 हार, स स्त्री (स हारि) पराजय, परि परा-अभि, भव २ शक्ति, क्लानि (स्त्री), आयरस ३ हानि-शक्ति (स्त्री)।
 —जीत, म स्त्री, जयपराजयौ (पु दि)।
 —खाना, मु, दे 'हारना'।
 —देना, मु, दे 'हारना'।
 हार, स पु (स) कठ, भूषा आभरण माला, श्रैव, श्रैवेयक २ दे 'मानिषा का हार'।
 —का मनना, स पु, हार, मुदिगा मुलिका अक्ष।
 पूर्णों का—, स पु, माला, माल्य, खन् (स्त्री) आपीड।
 मोतियों का—, म पु, मुक्तावली जि (स्त्री), मुक्ता, रत्ना-माला, मोक्षिमर, हारा।
 रत्नों का—, स पु, मणिमाला, रत्नावली जि (स्त्री)।
 सने का—, म पु, वनकमुश्रम्।
 —हार, प्रत्य, दे 'हार'।
 हारना, क्रि अ (सँ हारण >) परा, जि

(कर्म), अभिपग परि, भू (कर्म) अभिभूत पराजित (वि) भू २ विकल (वि) नृ (दि आ से) ३ श्रम कर्म (दि प से), खिद् (दि आ अ)। क्रि स, हा (जु प अ प्रे हापयनि), अप, ह (प्रे) २ नद्-क्षि (प्रे) ३ त्यज (भ्वा प अ) ४ दा (जु उ अ)। स पु तथा भाव, दे 'हार'।
 हारने योग्य, वि, अभिभवनीय, पराजेय।
 —वाला, स पु, आमन्त्रपराजय, पराजित, वन्व प्राय।
 हारा हुआ, वि, वि परा, जित, अभिपरा परि, भूत २ दृढ, हारित, नष्ट, ३ अन्न, क्लान्त, रिश्र ४ अकृतकार्य।
 हारमोन, स पु (अ) जीवनरस।
 हारमोनियम, म पु (अ) *मधुरध्वनम्।
 —हारा, प्रत्य (स हार >) (प्राय कृत्यकारक प्रत्ययों, (अन, नृच, तन् अदि) में अनुवाद किया जाता है। उ देनेहार=रायण, दाट ३०)।
 हारिल, सं पु (म हरितालक) हरितवर्ण-पीतपाद नीलचक्षु चटकभेद, हारि(री)त-हारिणक।
 हारी, वि (मँ हारिन्) अप, हर्तुं हारक, आच्छेदक, बलाद प्रशान्त २ वाटक, प्रापक, नायक, हर ३ लुटक, मुठक, मोषक, चौर ४ नाशक, ध्वंसक ५ समाहक, समाहृ- (वर आदि) मनो चैनो, हर।
 हारीत, स पु (स) चौर, जुठन, वित्तव २ स्थितिकारविशेष ३ दे 'हारिल'।
 हार्टकेल, स पु (अ) हस्त्यन्दनविरोध, हृदयावरोध।
 हार्दिक, वि (स) हृदय, स्वभिन् विषयक, चैत(-त्ती स्त्री), चैतिक (-वी स्त्री) मानस-स्त्री स्त्री), मानसिक (-वी स्त्री) २ निर्वाण, निष्पट ३ स्नेहशाल, मिमथ, स्नेहिन् अनुरागवद, अनुरागिन्।
 हाल, स पु (अ) अवस्था, दशा २ परि स्थिति (स्त्री) ३ समाचार, वृत्तान ४ विवरण, इतिवृत्त ५ चरित्र, क्या ६ समाधि, इरीकायता ७ वतमानहाल। वि, वतमान, विद्यमान, उपस्थित, अव्य, अधुनेव २ शीघ्र, स्वरिन्।

- का, सु, अभि, नव, नूतन, अचिर, प्रत्यग्र ।
 —वेहाल होना, सु, शुभाद अनुभ, मगलात्
 अमगल, क्रमशो विकारवृद्धि (स्त्री) ।
 —मे, सु, वर्तमाने, आयुनिवन्मये, इदानीतने
 काले ।
 हाल^२, म स्त्री (स हल्लन) वप, कपन
 २ सपट्ट, स्माघात ३ लौह चक्रवलयम् ।
 हाल^३, म पु (अ) मुख, शाल, बाणघोष,
 आस्थानी ।
 हालत, म स्त्री (अ) दशा, अवस्था, स्थिति
 (स्त्री) २ आर्थिकावस्था ३ परिस्थिति
 (स्त्री) ।
 हालहल, स स्त्री (स हल्लनम् >) कलकल,
 कोलाहल २ उपद्रव, समर ।
 हालो कि, अव्य (का) यचि (अव्य) ।
 हालो, म स्त्री (स) मद्य, नुरा दे ।
 हालाल, म पु, दे 'हलाहल' ।
 हाली, अव्य (अ हाल) शीत, मत्वरम् ।
 हाव, स पु (स) शृङ्गारभावना चेष्टा (लीला,
 विभ्रम, विलास आदि) आह्वानम् ।
 —भाव, म पु (स) पुरुषमनोहरौ स्त्रीचेष्टा
 भेद, विभ्रम, विलास, लीला ।
 हावनदस्ता, सं पु (का) पद्यमन्त्रमल्ल,
 मुसल लेखी (दि) ।
 हाशिधा, म पु (अ-यह्) प्रात, उषान्,
 मीमा २ वृत्तप्रात, चीरी रि (स्त्री), दशा ।
 हास, सं पु (सं) दे 'हँसी' (१४) ।
 —कर, वि (स) हास्यजनक २ अव-उप,
 हास्य ।
 हासिद्, वि (अ) ईर्ष्या(धा)ट्ट, इरुं ध्युं ।
 हासिल, वि (अ) लब्ध, अधिपान, प्राप्त दे ।
 हास्य, वि (स) हाम, कर नमर उत्पादक,
 हाम, योग्य आस्पद २ अव उप, हास्य, अव
 उप, हासाहं। सं पु (सं न) दे 'हँसी' (१४) ।
 —कर, वि (स) दे 'हास्य' वि (१२) ।
 हास्यास्पद, म पु (सं न) हामविषय
 २ उपहामविषय । वि, दे 'हास्य' (वि १२) ।
 हास्योत्पादक, वि (स) दे 'हास्य'
 (वि १२) ।
 हाहा, स पु (अनु) हास/म्य, शब्द
 ध्वनि, अट्टहाम, अनुनय-द्वन्द, शब्द ध्वनि
 ३ अहह, कष्ट, हा हन ।

- ही ही, } स स्त्री, परिहास, विनोद ।
 —ठी ठी, }
 —खाना, सु, सदन्य आकृ (प्रे)-प्राथं
 (जु आ मे) ।
 —ही ही करना, सु, हस् (भ्वा प से)
 २ परिहस, विनोदवाक्यानि उदीर (प्रे) ।
 हाहाकार, म पु (म) हाहा, न्व शब्द
 ध्वनि २ आ वि, क्रोश, आ, कदन, कन्दिन,
 चीत्कार, मयन कोलाहल ।
 —करना, त्रि अ, हा हा कृ, हा हा ध्वनि
 उत्पद (प्रे) २ आ वि, कस् (भ्वा प अ),
 आ, कद् (न्वा प से) ।
 हिजीर, स पु (सं) गजपद, न-धन-शुखला
 रञ्जु (स्त्री) ।
 हिडोल, स पु (म हिदोल) रागभेद ।
 हिडोला, स पु (स हिदोल-ला) हिदोलक,
 २ दोल-ला लिटा प्रैला, आन्दोल, दिन्दोल
 ३ दोला, गीत गीतिका ।
 हिद, स पु (का) भारत, भारतवर्ष,
 आर्यावर्त ।
 हिदवाना, म पु, दे 'तरबूज' ।
 हिंदवी, म स्त्री (का) भारतीयभाषा
 २ हिन्दीभाषा ।
 हिदसा, सं पु (अ) अक (गगिन) ।
 हिदी, वि (का) भारतीय, भारत, वर्षव
 देशीय । स पु, भारत, भारतवासिन,
 भारतवर्षवासिन, भारतीय । स स्त्री उत्तर
 भारतस्थ मुरयभाषा, हिंदीभाषा ।
 हिदुस्तान, म पु (का हिदोस्तान) दे 'हिद'
 २ उत्तरभारतस्थ मध्यमभाग (दिल्ली से
 पन्ने तक) ।
 हिदुस्तानी, वि (का हिदोस्तानी) दे 'हिदी'
 वि । स पु, दे 'हिंदी' स पु । म स्त्री,
 अलिभारतीयभाषा, *हिन्दुस्थानी ।
 हिद्, स पु (का) आर्य, वेद-सृष्टि पुराण,
 अनुयायिन-अनुगमिन, *हिन्दु ।
 —पन, स पु, *हिदुत्व, आर्यत्वम् ।
 हिदोस्तान, सं पु (का) दे 'हिदुस्तान' ।
 हिसक, वि (सं) घात(वृ)क, घानन, हिथ,
 शरर, हन्ट मिनाछ, वष-हिसा, शीक
 २ मामभङ्क, क-याद (पशु) ।

हिंसनीय, वि (स) हन्व्य, व्यापदनीय, मारणाय, बध्य ।
 हिम्मा, म स्त्री (स) अप-कार रुनि (स्त्री)
 त्रियाकरण, पीडा बाधा, अदन २ वध,
 हत्या, हनन, हिंसन, धान, मारण, निवृद्धनम् ।
 —फरना, क्रि स, पीड् (चु), अपठ् व्यथ्
 (प्रे), अद् (भ्वा ए से, प्र) २ ह्व
 (अ प अ), हिंस (रु प ने) व्यापद्
 गृ (प्रे), निवृद् (चु) ।
 हिसात्मक, वि (स) पीणाबाधा, आत्मक
 युक्तदायक २ हत्यात्मक, जीवजवयुक्त ।
 हिम्बालु, वि (स) हिंसक, पालन, हिंस,
 बधशील । स पु (स) हिंसक, तुक्कुर
 भषक शुनस अलर्क, भक्तशम् ।
 हिंस्र, वि (स) दे हिंसक ।
 हिंसमत, स स्त्री (अ) सत्त्वगान, दर्शन
 २ शिल्प, वल्लरीशल ३ उपाय, युक्ति
 (स्त्री) ४ नीति (स्त्री), नय ५ मित
 व्यय ६ चिन्तित्सा, वैद्यकम् ।
 हिंसमती, वि (अ हिंसमत) कर्मवृत्त,
 कार्यपटु २ चतुर, विदग्ध ३ मितव्यपिन् ।
 हिंसयत्, स स्त्री (अ) कथा, आग्यानम् ।
 हिंसरत्, सं स्त्री (अ) निरस्कार,
 अवगणना ।
 —की नजर से देखना, मु लपथनि (ना
 पा), अवगन् (दि आ अ) अवगण्
 (चु) ।
 हिचक, स स्त्री (हि हिचकना) आवि
 परि, गका, सदेह, रुशय, विज्ञप, निश्चय
 निणय, अभाव ।
 हिचकना, क्रि अ (अनु हिच) दोलायते
 (ना धा), विकल्प् (भ्वा आ से),
 आवि, ग् (भ्वा आ से), भरी (अ आ
 म) २ दे हिचकी आना ।
 हिचकचाना, क्रि अ, दे 'हिचकना' ।
 हिचकिचाहट, स स्त्री, दे 'हिचक' ।
 हिचकिची, स स्त्री, दे 'हिचक' ।
 हिचकी, म स्त्री (अनु दिन) हि(हे)हा,
 हिकिरा, हिम्मा, शिणिवा ।
 —आना, क्रि अ, हिचक (भ्वा उ से) ।
 —लगाना, मु, मरणोन्मुख (वि) वृद्
 (भ्वा आ से) २ हिचक ।

हिचर पि (मि) चर, स स्त्री, दे 'हिचक'
 २ दे 'टालमगुल' ।
 हिजडा, म पु, दे 'हीजडा' ।
 हिजरी, म पु (अ) यवनसवत (अच्य)
 (यह १५।७।६२२ इ० अर्थात् श्रावण शुक्ल २,
 सवत ६७९ वि से चला है) ।
 हिजाब, स पु (अ) अदगुठन २ लज्जा ।
 हिज्ज, स पु (अ हिज्जह्) शब्दाक्षरोच्चारण ।
 —करना, क्रि स, शब्दाक्षराणि उच्यर् (प्रे) ।
 हिज्र, स पु (अ) विनोग, विरह ।
 हित, वि (स) लाभ, प्रददायक, उप-कारिन्
 योगिन्, हिनकर २ अनुवृत्, योग्य २ हितेच्छु
 लुक, हितैपिन् । सं पु (स न) लाभ,
 अर्थ २ मंगल, भद्र ३ अनुकूलता ४ स्वास्थ्य
 लाभ ५ स्नेह, अनुराग ६ मैत्री, हितेच्छा
 ७ मित्र ८ नवध, बहुता ९ सन्धि, बहु ।
 अर्थ, लाभाय, हिताय २ कारणात्, हेनो
 ३ अर्थ, कृते ।
 —कर, वि (म) हित, कर्तृ-कारक-कारिन्
 २ लाभ, दायक प्रद, उपयोगन्, फलावह
 ३ स्वास्थ्य, कर प्रद ।
 —काम, सं पु (स) हित, कामना इच्छा ।
 वि (सं) हितैपिन् ।
 —कारी, वि (स रिन्) दे 'हितकर' ।
 —चित्त, वि (स) हितेच्छु च्छुर्, हितैपिन् ।
 —चित्तन, स पु (स न) हितेच्छा, उप
 विधीर्षा ।
 —वार्दी, वि (स दिन्) सत्परामर्शिन् ।
 हिताहित, म पु (सं न) हानिलाभी उप
 काराकारौ (पु दि), रदानिष्टे भद्राभदे
 (न दि) :
 हित्, म पु (मं हित) मित्र, हितैपिन,
 सुहृद् २ सन्धिन्, बहु ।
 हितैर्षी, वि (सं पिन्) हितचिन्त, दे ।
 हितोपदेश, म पु (सं) सत्परामर्शदान
 २ विष्णुगर्मरगिती नीतिग्रथविशेष ।
 हिदायत, म स्त्री (अ) पथप्रदर्शन २ शिक्षा,
 अनुशिति (स्त्री) ।
 हिनहिनाना, क्रि अ (अनु हिनहिन)
 ह्प ह्प (भ्वा आ से) ।
 हिनहिनाहट, सं स्त्री (हि हिनहिनाना)
 ह्वा, ह्वा, ह(हे)पिन्म् ।

हिसं, म स्त्री (अ) लोभ, शृंगा, लिप्ता ।

।हर्षी, वि (अ हिम) दुग्ध, शृधु, लोडुप ।

हिलना, क्रि अ (म हलन) नल चर (भ्वा प ने), इया (अ प अ), गन् २ सु-स्य् (स्वा प अ) ३ कप वैप रूप (भ्वा आ मे) ४ दोषायते (ना था) प्रैम् (भ्वा प से) इतस्तन विम च ५ (जले) प्राकश (तु प अ) । स पु तथा भाव, चरन, चरण, अयन, यान, गमन, सर्ण, सपण, नप, वेपन, रूपन, चेष्टा, चेष्टत, क्रिया प्रवृत्ति, व्यापार ।

—टोलना, मु, अट् अन् (भ्वा प से) २ धन् (दि प से) प्रयत् (भ्वा आ से) ।

हिलनेवाला, वि, चर, चल, गम, चलन गमन, शील, कपमान, वेपमान, चेष्टमान, रूपमान ।

हिला हुआ, वि, चलिन, सून यात, इत इ ।

हिलाना, क्रि अ (हि हिलाना, स अधि ल्गा) सुपरिचित-बद्धसत्य रुढसौष्ट (वि) जन् (दि आ से) ।

—मिलना, क्रि अ परस्पर सरनेन धृत् (भ्वा आ से) भ्यवह अस (दोनों भ्वा प अ) ।

हिलमिलकर, मु सौमनस्येन, मौहार्देन २ स भूय, मिलित्वा ।

हिलमिला, मु, सुपारचित, गादेसौहृद, बद्ध सत्य ।

हिलाना, क्रि म, व 'हिलना' (१२) क प्रे रूप ।

हिलोर रा, स प (स हिलाक) उहोर , तरा, भा, काम (पु स्त्री) ।

हिलोर लेना, मु, तरगायने (ना था), तर गिन (वि) भू ।

हिलोरना, क्रि म (हि हिलोर) तरगायति उलोयति (ना था), इतरनन चल् (प्रे) - विधू (स्वा व मे) ।

हिलोर, स पु दे 'हिलोर' ।

हिमात्र, म न (अ) गन् न जा, इत्यान २ क्यध्वप देनादेय, जेव विवरण ३ गणित, अवविद्या ४ अर्ध-मूल, मान प्रम ५ नियम,

व्यवस्था ६ विचार, मत ७ रीति (स्त्री), विधि ।

—करना या लगाना, क्रि स, गप् (लु), मत्या (अ प अ) ।

—किताब, म पु (अ) दे 'हितद' (२) ।

—चटना, मु, व्यवहार-दानादान वृत् (स्वा आ से) ।

—सुखाना या सुखता करना, मु, ऋण निम्न शृध् (प्रे) ।

—बद्ध करना, मु, व्यवहार त्यन (भ्वा प अ) ।

हिस्दीरिया, म पु (अ) योशपरमार, नार गभांशय उमाद, हृषभोह ।

हिस्सा, म पु (अ) वि, भाग, अक्ष २ वट, उकार ३ खट-व, एकदेश ४ अंग, अवयव ।

—करना, क्रि स, अद् (लु), विभन् (भ्वा व अ) ।

—दार, स पु (अ + का) अशिर, अक्ष आहिर, सह, भागिन ।

—दारी, म स्त्री, सहभागिता, अक्षिता ।

हींग, स स्त्री [सं हिणु (पु न)] र(रा) मठ, बाल्हीक, जलु, धन-नाशन, धूपधूपन, उग्रगध रशोन, जरण, अग्रुतधन ।

हींसना, क्रि अ (म हेण) दे 'हिनदिनाना' २ दे रेंकना' ।

ही, अण्य (म हि) एव, अवश्य, केवल (सच अण्य) ।

हीक, म स्त्री (स हिका) दे 'हिचकी' दुर्गंध ।

हीजडा, सं पु (देश) श(प)न्-व, नृनीया शृति, वनीव, नपुसक ।

हीन, वि (म) वि, रदित, शय, बनिन, वयिन, विमुक्त, अ, निर्, वि, (उ धनहीन = अधन इ) २ परि त्यक्त उत्सृष्ट ३ अपवृष्ट, निवृष्ट नीच, अधम ४ छुट, तुच्छ ५ कुम्भित, निप, अम्ब, दुष्ट पु ६ दीन दरिद्र, अकिंचन ७ अल्प, उन्न, मनीव ।

—गाति, वि (म) नीच, वर्ग जति २ अ पालेय, पतिन ।

—घान, म पु (म न) शीघ्रमप्रायमेद ।

हीनता, म स्त्री (स) अभाव, राहित्य, दुष्टि (स्त्री), न्यूनता २ छुद्रता, तुच्छता ३ नि-अप, वृष्टता ।

हीमोग्लोबिन, स पु (अ) रक्तकण, रक्त रक्षकम् ।

हीरे, स पु (स) शिव २ इन्द्रवज्र ३ सप्त ४ हार ५ सिद्ध ६ हीरक ।

हीरे, स पु (हिं हीरा) सार, माराश, अन्तर्मा, तरा २ नीर्य, शुक्र ३ बल शक्ति (स्त्री) ।

हीरक, स पु (स) > 'हीरा' ।

हीरा, म पु (स हीर) हीरक, वज्र ज रत्नसुरप, सूचीमुख, दधीष्वास्वि (न), बराकरम् ।

—मन, स पु (हिं + म मणि) हेमवर्णं रत्नं शुक्रभेद, *हीरमणि ।

हीला, स पु (अ हील) व्याज, छपन(न) व्यपदेश, मिय, २ साधन, उपाय ।

—करना, क्रि अ, वि, अपदिशू (तु प, अ) कपट ७ दान कृ ।

—बाज़, वि, कापटिक-छात्रिक (—की स्त्री) ।

—हवाला, स पु, दे 'हीला' ।

—निकलना, मु, उपाय शा (कर्म), साधन प्राप (कर्म) ।

हीहो, अव्य (म) ह्यषादचर्यमूचकमव्यय, (ह्य) ह्य २ (आश्रय) अहह ।

हू, अव्य (म) ओ, आ, २ माधु, वाढ, अस्तु ।

हुकार, स पु (स) हुकृति (स्त्री), हुकृत अर्जनाशब्द २ गजनना, निनाद, हुहुत ३ चीत्कार, उत्क्रोश ।

हुकारन्त, क्रि अ (स हुकार >) निमत्स (तु आ अ), तन (तु), अधिश्रिप (तु प अ) २ गद्-गद्-निनद् (भ्या प मे) ३ चीत्क, उत्क्रोश (भ्या प अ) ।

हुडानन, म पु (हिं हुडा) *विशिवशुल्क २५८ ।

हुडो, स स्त्री (> २) *विशिवत्र, धन पंणा देशपत्रम् ।

हुकूमत, म स्त्री (अ) शासन, राज्य २ अधिकार, प्रमुत्वम् ।

हुका, स पु (अ) *धूमपानयत्रम् ।

—पानी, म पु (अ + हिं) सामानिन व्यवहार ।

—शुडगुडानी, मु, धूमपान कृ ।

—पाना ब्रद करना, मु, समानाव रहिष्-अपानी कृ जाने निष्कन् (प्रे) ।

हुकाम, म पु (अ हाकिम का बहु) शासक अधिकारि-वर्ग वृन्दम् ।

हुकम, म पु (अ) अदेश, आज्ञा दे २ अनुमति (स्त्री) ३ प्रमुत्व, अधिकार ४ नियम, विधि, उपदेश (धनशाखादि का) ५ क्रीडापत्ररगभेद ।

—नामा, स पु (अ + का) आज्ञापत्रम् ।

—बरदार, स पु (अ + का) आज्ञा, पालक-अनुमतिरनुवर्तिन्-अधीन ।

हुकमी, वि (अ हुकम) आज्ञा, पालक-अनुवर्तिन् २ अमोघ, सफल, सिद्धिका ३ लक्ष्य, भेदिन-वेधिन् ४ विक्लपरहित, अवश्य कर्तव्य, अनिवार्य ।

हुजूम, स पु (अ) जन, समूह मनुदाय-समद-जोर ।

हुजूर, म पु (स) सामीप्य, मनिधि २ न्याय आग्य मभा ३ (सर्वोपनशब्द) भगवन् । श्रीमन् । (सर्वोपन एक), भग वन् । धीमत । (सर्वोपन बहु) ।

हुजूरी, म स्त्री (अ हुजूर >) निकृता, समीपता २ उपस्थिति (स्त्री), विद्यमानता ३ राज-राजकीय-गभा । स पु विशिष्ट, मेवः नृत्य २ राजमभामद्, मन्व्य, सन्नि ।

हुजत, म स्त्री (अ) कुतक, -व्यर्थयुक्ति (स्त्री) २ विवाद, वाग्बुद्धम् ।

—करना, क्रि अ, -व्यर्थ तर्क (तु) २ विवद (भ्या आ म), वाग्बुद्ध कृ ।

हुजवा, वि (अ हुजन) कुतार्किक २ कन्ह विवाद, प्रिव ।

हुडदगगा, म पु (अनु हुड+हिं दगा) उपदव, टनुल, मक्षोम ।

—ग्राही, वि (स हिन्) हृदयहारिन्, मनो मोहक ० रुचिकर, प्रिय ।
 —वान्, वि (स-वत्) महदय, हृदयात् २ मातृक, रसिक ।
 —विदारक, वि (सं) हृदयवेधिन्, शोक जनक, कर्मणोत्पादक ।
 —स्पर्शी, वि (स-रिन्) हृदिस्पृश, प्रभावोत्पादक २ दयोत्पादक, कृष्णाजनक ।
 —हारी, वि (स-रिन्) चेतोहर, मनो हारिन् ।
 हृदयेश्वर, स पु (स) वल्लभ, प्रियतम, प्रेमपात्र २ पति, भर्तृ ।
 हृदयेश्वरी, स स्त्री (स) हृदयेशा प्राणेशा, कान्ता ० पत्नी, भार्या ।
 हृद्गत, वि (म) आन्तर, आन्तर, अग्नि, अन्तर, हृद्य, अन्तर, वर्तिन्-जन मानस, चैत्त २ अवगत, ज्ञान, बुद्ध ३ प्रिय, रचिन् ।
 हृद्य, वि (स) (१२) दे हृद्गत' (१२) २ सुन्दर ३ शान्तिप्रद ४ स्वादु, सुरम ।
 हृदीक, स पु (स न) उद्विद्य, दे ।
 हृदीकेश, स पु (स) विष्णु ० श्रीहृत् ३ तीर्थविशेष ।
 हृष्ट, वि (स) हर्षित, सुप्रसन्न, प्रमुञ्जित, आनन्दित, प्रीत, पुष्ट, प्रसन्नम् ।
 —पुष्ट, वि (स) इष्ट, अग-देह-जन, पीन, मासल, बलवन् ।
 हृगा, स पु (स अभ्यग >) गत्य कोटि (टी) श ।
 हृष्ट, स स्त्री (अनु) मन्दहाम्बुनि ० वैश्व सूचनशब्द ।
 हृ, अव्य (स) भग, भो, हृहो हृहो, अरे, अरे, अवि, पाद्, प्वाट (स न अय) ।
 हृक्क, वि (हि दिया + क्क) दे हृष्टपुष्ट ० प्रवृत्, उग्र ३ उद्द, विवान, धृष्ट ।
 हृक्कवी, स स्त्री (हि हृक्) उग्रमा चन्ता, उद्दता २ बल, बलात्कार, रमम् (न), रमम् ।
 हृक्, वि (का) तुच्छ, क्षुद्र २ निस्मान्, तत्त्वहीन ।

हृष्ट, क्रि वि (स गभ स्थ >) नीचे, अथ (दोनों अव्य) ।
 हृष्टा, वि (हि. हृष्ट) अवर, अधर २ ऊन, हान ३ तुच्छ, क्षुद्र ।
 —पन, सं पु, तुच्छता, क्षुद्रता, ऊनता ।
 हृष्टो, स स्त्री (हि हृष्ट) मानहानि (स्त्री), अवधीरणा, अपमान ।
 हृष्टी, स पु (स) निरस्कार, अवज्ञा, अपमान ।
 —ज, सं पु (म) क्रोध, कोप, रोष ।
 हृष्ट, स पु (अ) शिरम् (न), शीर्ष, मुण्ड, मस्तकम् २ मुख्य, प्रधान, अध्यक्ष ।
 —कार्टर, स पु (अ) मुख्यालय, मुख्य कार्यालय ।
 हृष्टिग, स स्त्री (अ) शीर्षक, शिर-पत्ति (स्त्री) नामन् (न), सज्ञा ।
 हेत, स पु, दे हेतु' (१, २) ।
 हेतु, स पु (स) प्रयोजन, अभिप्राय, निमित्त, उद्देश ० कारण, बीज, मूल ३ युक्ति-उप पत्ति (स्त्री), प्रमाण ४ अर्थान्तरभेद (सा) ।
 —वाट, स पु (स) जहापोट, तर्क ० कुत्क, नास्तिकता, नास्तिक्यम् ।
 —वादी, वि (म दिन्) तार्किक २ नास्तिक ।
 —विद्या, स स्त्री (म) तर्क-हेतु, शास्त्रम् ।
 —हेतुमद्भाव, स पु (म) कायकारण, भाव मबध ।
 हेत्वाभाम्, स पु (स) असद्-दुष्ट, हेतु ।
 हेमन्, स पु (स) हेमन्, उग्रामह, शरदन्त, हिमागम, अग्रहायणवीथमासात्मक ऋतु ।
 हेम, स पु [सं-मन् (न)] सुवर्ण, दे 'सोना' ।
 —गिरि, स पु (स) सुमेरु, हेम-अचल अष्टि ।
 —चद्र, सं पु (मं) नैनाचायविशेष ।
 हेय, वि (म) त्याग्य, त्यक्तव्य, उत्सर्जनीय, हान्य ० निकृष्ट, अपकृष्ट, गता, निन्द्य ।

हेरना, क्रि स (स अट् >) अन्विष्
(दि प मे) गवेष् (भ्वा आ मे नु प मे)
२ दृष्ट (भ्वा प अ) ३ विचर (प्रे) ।

—केरना क्रि स (अनु + हि) परिहृत
विषयस (प्रे), अचयावि, छ, विनिमे
(भ्वा आ अ) ।

हेर फेर, स पु (हि हेरना + फेरना) परिवर्त
न, परिहृति (स्त्री), विनिमय २ विकार,
विक्रिया, विकृति (स्त्री) ३ विपर्याय,
क्रमाभाव, अव्यवस्था ४ पञ्चोक्ति (स्त्री),
बागाडवर ५ कपट, छल ६ अंतर, भेद ।

हेरा-फेरी, स स्त्री, दे हेर फेर' ।

हेलमेल, स पु (हि हिलना + मिलना)
दृढ-गाढ सौहार्द सौहार्द मरय मैत्री २ सगति
(स्त्री), सपर्क ३ परिचय ।

हेला, स स्त्री (स) अव-अप, मान, अवज्ञा,
तिरस्कार २ प्रमाद, उपेक्षा ३ ब्रीडा, खेला
४ सुकर-सुसाध्य, कार्य ५ शृंगारचेष्टा, कलि
(स्त्री) ६ नारीणा सुस्तरालता ।

हेला, स पु दे 'हला' ।

हे, अव्य (अनु) (निषेध) मा, मास्म, अल
२ (आक्षर्य) अरो, ही ।

—हे, अव्य (अनु) मा मा, अल अल २
ही ही ।

हे, क्रि अ (हि होना) सति विद्यन्ते
वर्तन्ते (लट्, वट्ट) ।

हेडवेग, स पु (अ) (चमनयी) कारपेटिका
२ कर, प्रसेव मण्ड ।

हेडल, स पु (अ) मुष्टि (स्त्री), वारग ।
हे, क्रि अ, (हि होना) अस्ति विद्यते-वर्तते
(लट्) ।

हेकर, स स्त्री (सं ह + गर >) अथ
शैवेयक २ 'हमे' ।

हेजा, स पु (अ-जह्) विपूजिता, दे ।

हेट, स पु (अ) गुरट-आगल, शिरस्त्राण
शीर्षम ।

हेफ, अव्य (अ) हा, हन, रोद, शोर ।

हेवत, स स्त्री (अ) नास, भयम् ।

—हार, वि (अ) शीम, मयवर ।

हेरत, सं स्त्री (अ) आक्षर्य, विरमय ।

हेरान, वि (अ) चकित, विस्मित २ वि,
आकुल, उद्विग्न ।

हेवान, स पु (अ) पशु, चरि, मृग
२ जट, मूर्ख, असभ्य ।

हेवानियत, स स्त्री (अ) पशुना-त्वं २
अशिष्टता, अमभ्यता ३ क्रूरता ।

हेवानी, वि (अ हेरान) पाशव, पशु-तुल्य
सम २ क्रूर, निष्ठर ।

हेमियत, स स्त्री (अ) म मर्थ, योग्यता
२ आर्थिकतास्था, धनबल ३ धन, वित्त
४ संमान । प्रतिष्ठा ५ मूल्य, अर्थ ।

हे हे, अव्य (म हा हा) हत, हा हन्त,
कट, इ सम् ।

होठ, स पु (म ओठ) दतरद-दशन,
उद दे 'ओठ' ।

—फटना, सं पु, ओठभेद ।

—काटना या चबाना, मु, कृष (दि प अ),
आन्नखोभ प्रवट्यति (ना भा) ।

—हिलाना, मु, वक्तु उपकम् (भ्वा आ अ) ।

हो, अव्य (स) 'हे' ।

होटल, सं पु (अ) भोजनशाला २ पांथ
शाला ।

होद, स स्त्री (रु हार = युद्ध) पण, ग्लह
२ प्रति, स्पृष्टा, विजिगीषा ३ आग्रह ।

—चदनी, बाँधनी या लगाना, क्रि म.,
ग्लह (भ्वा प से, लु), दिव् (दि प से),
पण (भ्वा आ से) २ विजिगीषते (सप्रन्त),
स्पर्धे (भ्वा आ से) ।

होडावादी, स स्त्री } (हि होद + बदना)
होडाहोदी, स स्त्री } (हि होद) दे 'होड'
(२२) ।

होता, सं पु (म हान्) कृत्विग्भेद, होत्रिन्,
होमवर्त, वट्ट ।

होत्र, स पु (म न्) यत्, पाण, मत्त
हवनम् २ यत्त हवन साममी, हविस् (न),
हव्यम् ।

होत्री, सं पु (स त्रिन्), हाट, यात्र, २
यत्, कृत्विग्भेद हात्रन् ।

होनहार, वि (दि हाना) मत्तश्रम, उग्रनि
शीन्, प्राशानक, निद्रिन्मूक २ भाविन्,

भविष्यत्, भविष्यन् । म स्त्री, भविष्यन्ता, नियति (स्त्री), भय, दैव, विधि ।

होना, क्रि अ (स भनन्) भू अस (अ प) वृद्ध (भ्वा आ अ), विद् (दि अ अ), अवस्था (भ्वा आ अ) २ भू वन् (णि आ से), सपद् (णि आ अ), परिपन् (भ्वा प अ) ३ कृ अनुष्ठा विधा (वम) ४ रच निर्मा (कन् ५ घटसवृद्ध (भ्वा आ से), नमपद् (दि आ अ) अपद् (भ्वा प मे) ६ (गोगदिभि) पीड (वम) ७ अनि ग्नि, इ (अ प अ), व्यतित्र (भ्वा प मे) ८ उत्पद् (दि आ अ), जन् (णि आ मे) ९ जीव (भ्वा प मे) । म पु तथा भाव मत्ता, अस्तित्व, अव स्थिति (स्त्री), मद्, नाव, वच, विद्यमानता ९ ।

होने योग्य, भविष्य, शक्य, सम्भाव्य, सम्भवनीय, सम्प्रादनीय, साध्य ।

होनेर टा, भविष्य, भविष्यत्, भविष्यन्, दे 'होने योग्य' ।

हुआ हुआ, वि, भूद्, वृत्त, जात, सपत्र, निपत्र, अनुष्ठित, विहित, रचित, निर्मित, उत्पन्न इ ।

(जो) हुआ सो हुआ, मु, अतीत विस्मर २ यद् भूत न तद्भावि ।

हो आना, मु, दृष्ट्वा मिलित्वा आगम् (भ्वा प अ) ।

होकर या होने हुए, मु, मध्यम, मार्गेण ।

हो चुकना या-जाना, मु, स निप्, पद् (दि आ अ), समाप् (स्वा प अ) ।

हो न हो, मु, नि मद्देह, नि मद्ययम् ।

होनी, स स्त्री (द्वि होना) उत्पत्ति (स्त्री), जन्मन् (न) २ वृत्त, वृत्तात् ३ दे 'होने हार' म स्त्री ४ सम्भाव्य शक्य-वार्ता ।

होम, स पु (स) देवयद्, दे 'हवन' ।

होमना, क्रि स, दे 'हवन करना' ।

होमियोपेथी, म स्त्री (अ) मनचिकित्सा, चिकित्सापद्धतिविशेष ।

होरा, म स्त्री (म, घूनाती से गिया गया) लग्न २ राश्यब्दे ३ जन्मतिथि ४ चातक, चातकशस्त्र ५ दे 'घग' (= ६० मिनट) ।

होला, स पु (स होलक) लूणाग्निभृष्टा अर्धपक्षशमीधान्यम् ।

होला, स पु (म होनी) सिक्त्वानां होलि कौत्सव ।

होली, त स्त्री (म) होलिका, होलका, २ होलिकादहनार्थस्तृणकाष्ठराशि ३ होलि नागीतम् ।

—खेलना, भु, होलिकौत्सवे रन् (भ्वा आ अ), खेल-क्रीड (भ्वा प से), अन्योर्न्य रञ् (प्रे) ।

होल्डर, स पु (अ) लेखनीद्व २ लेखनी ।

होश, स पु (का) सशा, चैतन्य २ स्मरण, स्मृति (स्त्री) ३ बुद्धि-मति (स्त्री) ।

—मद्, वि (का) धी बुद्धि-मति, मद् ।

—हवास, स पु (का+अ) सवायुद्धी २ चैतन्यम् ।

—उठना या जाग्य रहना, मु, (मायादिभि) निस्तब्धी-जडो अत्याकुली, भू ।

—करना, मु, सावधान-अवहित (वि) भू ।

—ठिकाने होना, मु, मोह भ्रान्ति (स्त्री) नश् (दि प मे) २ चेत स्वास्थ्य आपद् (दि आ अ) ३ गवताश जन् (दि आ से) दृढ युक्त्वा अनुनृ (दि आ अ) ।

—दग होना, मु, आश्चर्यस्तम्भ (वि) जन् (दि आ से), चकितचकित (वि) भू ।

—दिलाना, मु, स्थ (प्रे) ।

—में आना, मु, प्रकृति आपद् (दि आ अ), सशा लम् (भ्वा आ अ) ।

—सँभालना, मु, प्रीड प्राप्तवत्क (वि.) जन् २ सावधानो भू ।

होशियार, वि (का) बुद्धिमत्, चतुर, प्रज्ञ २ निपुण, कुशल ३ मावधान, अवहित ४ धृत, मायाविन् ५ पक्वबुद्धि ।

होशियारी, स स्त्री (का) बुद्धि धी, मत्ता, २ दक्षता, नैपुण्य ३ मावधानता ।

होस्टल, सं पु (अ होस्टेल) छात्रावास, छात्रालय ।

हौकना, क्रि अ (स हुकरण) हुक, गर्ज (भ्वा प से) २ दे हाफ(प)ना' ।

हौआ, स पु (अनु हौ) भूत, विराच, काकिनी, गिशुत्रासार्थं काल्पनिक भयमूलम् ।

स स्त्री, दे 'हौआ' ।

हौआ, स पु (अनु हाव) औदरिका, वस्त्ररता २ लोभ-वृष्णा, अनिदाय ।

हौआ, स पु (अ) कुड, जलाशय, शुद्र तटाग २ इन्द्रवृद्धर्माड, दे 'नाद' ।

हौआ, स पु (क्रा हौनह्) परिस्नो(ष्टे)न, प्रवेणी, आस्तरण, कुथ-या-यम् ।

हौल, सं पु (अ) भयं, सजास ।

—नाक, वि (अ + क्रा) भयकर, त्रासन ।

हौले, कि वि (हि ह्रूमा) शनै, शनके, मर २ मृद, कोमलम् (सत्र अव्य) ।

हौवा, स स्त्री (अ) आदमपत्नी, ह्रवा, पृथिव्यां प्रथमा नारी मानवजाते जननी च । स पुं, दे 'हौआ' ।

हौस, स स्त्री दे 'ह्रस' ।

हौसला, स पु (अ) लाल्सा, उत्कंठा माहम, उत्साह ३ हर्षं, प्रपुञ्जना ।

—मद, वि (क्रा) उत्कंठितं, अत्यभिलाषिन् २ सहसिन्, उत्साहिन् ३ छष्ट, प्रपुञ्ज ।

—निकालना, मु, आकाशा-बाह्या स्पृहा सपद (प्रे)-सम्पूर (प्रे) ।

—पस्त होना, मु, हतोत्साह भग्नहृदय (वि) मृ ।

हद, सं पु (स) अगाधजटाशय, महा तडाग २ तटाक, वासार, सरसी ३ नाद ।

हसित, वि (सं) अतपीन्धूनी, कृत-भूत, सक्षित, सकुचित ।

हसिमा, स स्त्री (स-मन् पु) हस्वता, अल्पता, सुद्रता ।

हस्व, वि (स) लघु, सुद्र, दभ्र, अल्प, दैर्घ्य आयास, शून्य २ ऊन, मूल, हीन ३ सर्वं, न्यच् ४ अवनत, नीच ५ सुद्र, तुच्छ । स पु (स) वामन २ लघुवर्ण (अ इ उ इ) ।

हास, स पु (स) अपकथ, अवनति (स्त्री), क्षय, अधोगति (स्त्री), अपचय, ध्वंस, भ्रस ।

—होना, कि अ, भि (कर्म), हम (म्बा प मे), अपवि (कर्म) ।

ही, स स्त्री (स) लज्जा, प्रपा, व्रीडा ।

ह्रीद, स पु (स) आनन्द, प्र-जोद, हर्षं ।

ह्रिकी, स स्त्री (अ) आग्लमयभेद ।

ह्रैल, स पु (अ) विमाल, तिमि, हल-मत्त्व ।

प्रथम परिशिष्ट

संस्कृत-शक्तियों का हिन्दी-अनुवाद

संस्कृत

अकालमघवद् वित्तमस्मादेति याति च ।
(कथसरित्सागर)

असाम्यतैव महता महत्वस्य हि लक्ष्यगम् ।
(कथा०)

अगच्छन् वेनतेयोऽपि पद्मेकं न गच्छति ।

अगुणस्य हतं रूपम् ।
अङ्गमाख्या सुपं हि हत्वा किं नाम पौरुषम् ?
अङ्गीकृतं सुकृतिन परिपालयन्ति ।
अचिन्त्यं हि फलं सूते मद्यः सुकृतपादपः ।
(कथा०)

अजीर्णं भोजनं विषम् ।
अज्ञता कस्य नामेह नोपहासाय जायते ?
अतिदानाद् बलिर्वद्धः ।
अतिपरिचयादवज्ञा, संततगमनादनाद्रो
भवति ।
अतिभुक्तिरतीवोक्तिः सद्यः प्राणापहारिणी ।

अतिलोभो न कर्तव्यः ।
अति सर्वत्र वजयेत् ।
अगूणे पतितो बद्धिः स्वयमेवोपशाम्यति ।

अधरेष्वलुप्तं हि योपिता हृदि हालाहलमेव
केवलम् ।
अधर्मविषमृक्षम्य पच्यते स्वादु किं फलम् ?
(कथा०)

अधिकम्याधिकं फलम् ।
अनध्या वाजिनां जरा ।
अनन्यगामिनी पुंसां कीर्तिरेका पतिव्रता ।

अनपेक्ष्य गुणागुणो जनः स्वरचिं निक्षयनोऽ-
नुधावति । (विशुद्धबोधे)
अनवसरे याचितमिति स्यात्प्रमपि कुप्यते
दाता ।

हिन्दी

धन अकाल-मेघ के समान अकस्मात् आता-
जता है ।

शुभ्य न होना ही बड़ों के बचपन का चिह्न है ।

बिना चने तो गहड़ भी पग-भर भी नहीं जा
सकता ।

निर्गुण व्यक्ति का रूप किस काम का ?
गोद में सोने हुए की हत्या में कर्हा को बोरना है ।
श्रेष्ठ लोग कड़ी दुर्द बान को पूरा करते हैं ।
पुण्यरूपी वृक्ष शीम ही अचिन्त्य फल देता है ।

अपच में भोजन विष-सुल्य होता है ।
अज्ञान के कारण किसका उपहास नहीं होता ?
अत्यधिक दान से बलि को बंधना पड़ा ।
बहुत मेहनत-बोज से अवज्ञा होती है और किसी
के दर्हा अधिक जाने से अनादर ।
बहुत खाने और बहुत बोलने से तुरन्त मृत्यु
हो जाती है ।

अत्यधिक लोभ नहीं करना चाहिए ।
नव बानों में 'अति' स्पन्द है ।
जो भाग तुमदि पर नहीं पनी, वह स्वयमेव
गुप्त जाती है ।

शक्तियों के ओठों में तो अमृत रहता है किंतु
हृदय में भयकर विष ।
कदा कभी अधर्मरूपी विषमृक्ष पर सरन फल
लग सके हैं ?

विजना गुड उतना मीठा ।
समा बंधे रहनेवाले घोड़े बड़े हो जाते हैं ।
पुरुषों की स्त्रियों कीर्ति पतिव्रता नारी के समान
होती है ।

बस्तुः मनुष्य उपा-दोष को उपेक्षा करके रुचि
के अनुसार ही कार्य करता है ।
यदि कुअवसर पर मौत आर तो दानो मनुष्य
सत्यांत्र पर भी श्रेष्ठ करता है ।

अनार्य परदारव्यवहार । (अभिज्ञानशाकुन्तले)
 अनार्यसंगमाद्भर विरोधोऽपि समं महा-
 त्मभिः । (किरानाञ्जनायै)
 अनाश्रया न शोभन्ते पण्डिता वनिता
 लताः ।
 अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम् । (अभिज्ञान०)
 अनुकूलेऽपि कलत्रे नीच परदारलम्पटो
 भवति ।
 अनुत्तेषु खलु विक्रमालम्बारः ।
 अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं
 शमयति परित्यापं छायाया संश्रिताना-
 नाम् । (अभिज्ञान०)
 अनुसृत्य सतां वरुं यन्म्वल्पमपि तद् बहु ।
 अनुहुवृक्षे धमध्वनि नहि गोमासुस्तानि
 कसरी । (शिशु०)
 अन्त सारविहीनानामुपदेशे न विद्यते ।
 अन्यायं कुरुते यदा क्षितिपतिः कस्त
 निरोदुषु क्षमः ?
 अपथे पदमर्पयन्ति हि ध्रुतवन्तोऽपि रजो-
 तिमिलिताः । (रघुवती)
 अपान्थानि तु गच्छन्त सोदरोऽपि विमुञ्चति ।
 अपायो मस्तकस्थो हि विषयग्रस्तचेतसाम् ।
 (कथा०)
 अपि धन्वन्तरिवैद्यं किं करोति गतायुषि ।
 अपि स्वदेहात् त्रिमुतेन्द्रियार्थाद्यशोधनार्ता
 हि यशो गरीयः । (रघु०)
 अपुत्रस्य गृहं शून्यम् ।
 अपेक्षन्ते हि विपद् किं पेलवमपेलवम् !
 (कथा०)
 अप्रकटीकृतशक्तिः शक्तोऽपि जनस्तिरस्त्रिक्रिया
 लभते ।
 अप्राप्य नाम नेहास्ति धीरस्य व्यव-
 सायिनः । (कथा०)
 अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च
 दुर्लभः ।
 अवला यत्र प्रवला ।
 अभद्र भद्रं वा द्विषित्स्त्रितमुन्मुल्यति
 कः ?
 अभितप्तमयोऽपि मार्तव भजते वैव कथा
 शरीरिषु ! (रघु०)
 अभोगस्य हत धनम् ।

पराई कियों में मन्मन्ध रचना आर्दोचिन नहीं ।
 अनार्यो (दुष्टो) के साथ मेल जोड़ की अपक्षा
 महारनाओं में वैर अच्छा ।
 विद्वान्, कियों जोर लक्ष्यें आश्रय के बिना
 शोभा नहीं देती ।
 पराई कियों का ओर क्षान्ना न चाहिए ।
 पत्नी के अनुकूल होने पर भी नीच मनुष्य
 परदारभिलमन करता है ।
 नम्रता बोरता का भूषण है ।
 वृक्ष स्वयं तो बड़ी धूप सहता है, परन्तु शरणा-
 गनों के ताप से छाया में शान्त कर
 देता है ।
 मजनों के मार्ग पर चलने हुए थोड़ा भी मिले
 तो बहुत ममलिये ।
 मित्र मेघनाचन सुनकर तो दहाटन है, गीदवों
 की ध्वनि सुनकर नहीं ।
 अज्ञुद्धि मनुष्य को शिक्षा देना व्यर्थ है ।
 जब राजा ही अन्याय करने लग पड़े तब उसे
 भी न रोक सकता है ।
 रजोगुण से अभिभूत विद्वान् भी कुमार्गगामी
 बन जाते हैं ।
 कुपयगामी का साथ सगा भर्ष भी नहीं देता ।
 विपत्तियों विषयी लोगों के मिर पर प्रहराती
 रहती है ।
 जब आयु समाप्त हो जाती है तब वैद्य धन्वन्तरि
 भी कुछ नहीं कर सकता ।
 यशस्वी लोग, भोगों की तो बात ही क्या,
 स्वशरीर में भी यश को श्रेष्ठ ममजते हैं ।
 पुत्रहीन व्यक्ति व लिंग पर चला होता है ।
 विपत्तियों लक्ष्य की सोचना वा बटोरता नहीं
 देता करती ।
 जो बलवान् नित बल की बनी प्रकट नहीं
 करता वह निरस्तार वा भागन बनता है ।
 धीर और व्यवसायी व्यक्ति व लिंग मक्षार में
 कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं ।
 बला परन्तु दिनकर बन बहन और सुनने
 वाले व्यक्ति दुर्लभ है ।
 जहाँ स्त्री सब हो ।
 बुरा हो या भरा, विषाया व लग की कीन
 मिटा सकता है ?
 नराने पर लोहा भी विपद् जाना है, प्राणियों
 की तो बात ही क्या ?
 जो भोगता नहीं, उसका धन व्यर्थ है ।

असंपन्नं शोणितकाङ्क्षया किं पदा स्पृशन्तं
दशति द्विजिह्वः ? (रघु०)

असृतं क्षीरभोजनम् ।

असृतं प्रियदर्शनम् ।

असृतं राजसंमानम् ।

असृतं शिशिरे वह्निः ।

अम्बुगर्भो हि जीमूतश्चातकैरभिनन्दते । (रघु०)

अयशोभीरवः किं न कुर्वते बत माधवः !

(कथा०)

अयातपूर्वा परिवादगोचरं सता हि वाणी

गुणमेव भाषते । (किरातजुनीय)

अरंतुदन्वं महतां ह्यगोचरः । (किरात०)

अर्थमनर्थं भावय नित्यं,

नामिन् ततः सुखलेश सन्त्यम् ।

अर्थांतुराणा न गुरन् यंधुः ।

अर्थो हि कन्या परकीय एव । (अभिज्ञान०)

अर्थो घटो घोषमुपैति नूतम् ।

अल्पविद्यो महामर्षी ।

अल्पश्च कालो बहुवश्च विघ्नाः ।

अहपीयसोऽप्याभयतुल्ययुक्तेर्महापकाराय

रिपोर्विवृद्धिः । (किरात०)

अवन्तुनि कृत्स्नलो मूर्खो यान्यवहास्य-

तान्म् । (कथा०)

अविप्राजीवनं शून्यम् ।

अविनीता रिपुर्भार्या ।

अन्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयंकरः ।

अशीलस्य हतं कुलम् ।

अन्नुते न हि कल्याणं, व्यसने यो न

मुह्यति ।

अध्रेयसे न वा कस्य विश्वासो दुर्जने जने ?

अमन्तुष्टा द्विजा नष्टाः ।

अमन्मैत्री हि दोषाय कूलच्छायेव सेविता ।

(किरात०)

अमारे द्रुप्रसंमारे सार सारङ्गलोचनाः ।

अस्तिद्वार्यां निवर्तन्ते न हि धीराः कृतो-

द्यमाः । (कथा०)

अम्बिद्रेस्तु हता विद्या ।

क्या उग्र सर्प पाँव से छूनेवाले व्यक्ति को लहू
पीने की इच्छा से नाटता है ?

क्षीर रूपी भोजन अमृत है ;

प्रिय पदार्थ का दर्शन अमृत है ;

राजा ने प्राप्त सम्मान अमृत है ।

जार्ज मे अग्नि अमृत है ।

पपीहे जलपूर्ण बादल की ही प्रशंसा करते हैं ।

अपयश से बरने वाले मञ्जन क्या नहीं करते !

सज्जनों की वाणी, निन्दा के मार्ग से अपरिचित

होने के कारण, गुणों का ही वर्णन करती है ।

बड़े लोग किमी का जी नहीं दुखाते ।

सदा ही धन को दुःखरूप समझो, वस्तुतः उसने

तनिक भी सुख नहीं ।

धन के लोभी गुरु क्षीर बन्धु तक का ध्यान

नहीं करते ।

कन्या पराया ही धन है ।

अधजल गंगरी छलमत जाए ।

थोड़ी विद्या वाला व्यक्ति बहुत ही गर्वीला

होता है ।

समय थोड़ा है और विघ्न बहुत ।

रोग की तरह स्वभाव वाले छोटे से शत्रु की

उन्नति से भी भारी अनिष्ट होता है ।

तुच्छ वस्तु के लिए बट उठाने वाला मूर्ख

उपहासस्पद बनता है ।

अविद्यापूर्ण जीवन मृता है ।

नम्रता-रहित पत्नी शत्रु है ।

जिसका मन ठिकाने न हो, उसकी कृपा भी

मयावनी होती है ।

शीघ्ररहित व्यक्ति की कुलीनता व्यर्थ है ।

जो विपत्ति में डिम्ब नहीं होता वह अवश्य ही

कल्याणभागी बनता है ।

दुष्ट जन पर विश्वास करने से किमका अनिष्ट

नहीं होता ?

सतोष हीन भ्रातृजन नष्ट हो जाते हैं ।

दुर्जनों की मित्रता कगार की छाया के समान

अनर्थकारिणी होती है ।

दम दुःसपूर्ण निम्मार मसार मे साररूप तो

केवल मृगानयनिर्वा ही है ।

उष भी धीर कार्यसिद्धि से पूर्व नहीं स्वते ।

मिद्धि के विना विद्या व्यर्थ है ।

अस्थिरं जीवित लोके ।
 अस्थिरा. पुत्रद्वाराश्च ।
 अस्थिरे धनयौवने ।
 अस्वर्ग्यं लोभविद्विष्टम् ।
 अहितो देहजो व्याधि ।
 अहो चित्रानारा नियतिरिव नीतिर्नयविद ।
 अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता । (किरात०)
 अहो देवाभिदासता प्राप्तोऽध्वर्यं पलायते ।
 (कथा०)
 अहो रूपम्, अहो ध्वनि ।
 आकण्ठजलमनोऽपि आ लिहत्येव जिह्वया ।
 आचार. प्रथमो धर्म ।
 आज्ञा गुरुणा ऋविचारणीया । (रघु०)
 आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ।
 आदानं हि विसर्गाय सता वारिसुचामिव ।
 (रघु०)
 आपत्काले च कष्टेऽपि नीत्साहस्यज्यते
 बुधे । (कथा०)
 आपन्सु धीरान् पुष्ट्यान् स्वयमायान्ति
 संपदः । (कथा०)
 आपदि स्फुरति प्रज्ञा यस्य धीर स पुत्र हि ।
 (कथा०)
 आपद्यपि सतीवृत्तं किं मुञ्चन्ति कुलस्त्रियः ?
 (कथा०)
 आपन्नार्तिप्रशमनफला सपत्नी ह्युत्तमानाम् ।
 (मेघदूते)
 आमुखापाति कल्याणं कार्यंभिद्धि हि
 दांसति । (कथा०)
 आये दुःख व्यये दुःख धिगर्था कष्ट-
 संश्रया ।
 आरुच्ये हि मुदुष्यतेऽपि महता मध्ये विराम-
 कुतः । (कथा०)
 आज्ञेवं हि कुटिलेषु न नीतिः ।
 (नैषधीयचरिते)
 आलस्योपहता क्विया ।
 आचष्टितो महासर्पश्चन्दन किं त्रिपायते ?
 आहारं व्यग्रहारे च त्यक्तलज्ज. सुखी भवेत् ।

जगत् में जीवन अस्थिर है ।
 पुत्र और बलवत् अस्थिर है ।
 धन और यौवन अस्थिर है ।
 लोभविद्वत् आचरण सुखदायक नहीं होगा ।
 शरीर में उत्पन्न रोग शत्रु है ।
 नीतिज्ञ की नीति नियति के समान विचित्र
 रूपों वाली होती है ।
 बलवान् से विरोध करने का परिणाम बुरा ही
 होता है ।
 हाँ देव से शक्ति लोगों के बने हुए काम भी
 बिगड़ जाते हैं ।
 वह ! क्या रूप है और क्या स्वर !
 गले तक पानी में डूबा हुआ भी कुत्ता जल को
 जीभ से ही चाटता है ।
 आचार सर्वोत्तम धर्म है ।
 गुरुजनों की आज्ञा का बिना विचारे ही पालन
 करना चाहिए ।
 अपने रक्षार्थ पृथ्वी को भी त्यग दे ।
 भेषों के समान सत्पुरुषों का आदान भी प्रदान
 के लिए ही होता है ।
 विपत्ति और कष्ट के समय में भी बुद्धिमान्
 उत्साह नहीं छोड़ते ।
 आपनियों में धैर्य रखने वालों के पास सम्प-
 त्तिर्था स्वयमेव आती है ।
 जिमकी बुद्धि आपत्ति में चमकती है, वह धीर है ।
 क्या कुलीन लज्जाएँ आपनि में भी सनीस का
 त्याग करती हैं ?
 उत्तम जनों का धन दुखियों के दुःख दूर करने
 पर ही सकल होता है ।
 कार्यात्म में होने वाला मगल, कार्यतिरिक्त का
 सुखन होता है ।
 धन का आगम और व्यय दोनों ही दुःखपूर्ण
 होते हैं, हम दुःखदायक धन को थिकार हैं ।
 अरुण विद्ये हुए अत्यन्त कठिन काम में भी
 बड़े लोग बीच में नहीं रकते ।
 कुटिलों के साथ सरलता का व्यवहार नीति
 नहीं है ।
 आलस्य विषा का बिनाराव है ।
 सर्पों से परिवेष्टित चन्दन क्या बिप्रेला हो
 जाता है ?
 आहार और व्यवहार में स्वीच छोड़कर
 सुखी रहे ।

आहुः सप्तपदी मैत्री ।
इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः ।
इदं च नास्ति न परं च लभ्यते ।
इन्द्रोऽपि लघुता याति स्वयं प्रत्या-
पितैर्गुणैः ।
इन्धतौघधगप्यग्निसिवपा नात्येति पूष-
णम् । (शिशु०)

इष्टं धर्मेण योजयेत् ।
इहामुत्र च भारीणा परमा हि गतिः पतिः ।
(कथा०)
ईर्ष्या हि त्रिवेकपरिपन्थिनी । (कथा०)
ईश्वराणां हि विनोदरमिकं मनः । (विराट०)
उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः । (अभिज्ञान०)
उत्साहैरुधने हि वीरहृदये नाप्नोति खेदो-
ऽन्तरम् । (कथा०)
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।

उदारस्य तृणं वित्तम् ।
उदिते तु सहस्राशौ न स्वद्योतो न चन्द्रमाः ।
उदिते परमानन्दे नाहं न त्वं न धै जगत् ।

उद्योगः पुरुषलक्षणम् ।
उन्नतो न सहते तिरस्त्रियाम् ।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।
उसं सुकृतबीजं हि सुश्रेयसु महफलम् ।
(कथा०)

उष्णन्वमन्यातपसंप्रयोगाच्छैत्यं हि यत् सा
प्रकृतिर्जलस्य (रघु०)
उरणो दहति चाद्धारः शीतः कृष्णायते
करम् ।

श्रेणकर्ता पिता दात्र ।
श्रद्धिश्चित्तविकारिणी ।
एको हि दोषो गुणमतिपाते निमज्जतीन्दो
किरणेष्विवाह्वः । (कुनर०)
क उष्णोदकेन नवमखिलकां सिञ्चति ! (अभि०)
द पातः क्षणशश्चैव विद्यामधंज्ञं साधयेत् ।

कण्ठे सुधा वसति वै खलु सखनानाम् । (कथा०)
कमलवनमूपा मधुकरः ।
कर्तव्यं हि सतां वच । (कथा०)
कर्तव्यो महदाश्रयः ।

मान पग साथ साथ चलने को मैत्री कहते हैं ।
न इधर के रहे न उधर के रहे ।
न यह रहा, न वह मिला ।
अपने मुंह मिर्चा मिट्टू बनकर इन्द्र भी गौरव-
हीन हो जाता है ।
ईधन के बहुत बड़े ढेर की जलानेवाली भाग भी
अपनी ज्योति से सूर्य को मान नहीं कर
सकती ।

अभिज्ञानापा परमज्ञानादिणी चाहिए ।
लोक और परलोक में तिर्यों का परम आश्रय
पति ही है ।

ईर्ष्या विवेक की शत्रु है ।
धनादयः लोग विनोदी हाते हैं ।
मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं ।
वीरों के उत्साहपूर्ण हृदय में खेद के लिये
अवकाश नहीं ।
उदारचरित लोगों के लिये तो सारी भूमि ही
कुटुम्ब है ।

उदार व्यक्ति के लिये धन तृणतुल्य है ।
सूर्य के उदय पर न जुगुनु की चमक रहती है,
न चाँद की ।

महानन्द की प्राप्ति होने पर मैं, तू और जगत्
का ज्ञान नहीं रहता ।

उद्योग ही पुरुष का लक्षण है ।
उच्च व्यक्ति तिरस्कार नहीं सहता ।
मूर्ख लोग उपदेश से प्रकुपित होते हैं, शान नहीं ।
उत्तम पार्श्व में बोया हुआ पुण्यरूपी बीज महान्
फल देता है ।

जल का स्वाभाविक गुण ही शीतलता है, उसमें
गर्मी तो अग्नि या धूप के संसर्ग से आती है ।
गर्म अद्धार हाथ ही जलाना है, ठण्डा कल्पित
करता है ।

श्रेण लेनेवाला पिता शत्रु है ।
श्रद्धा चित्त को विकृत कर देता है ।
युग समुदाय में अकेला दोष ऐसे ठिप जाना
है जैसे तिरणों में चाँद का कलक ।
मोक्ष के पीथे की गर्म जल से कौन मीचता है ।
विद्या और धन का समग्र क्षण-क्षण में कग-कग
करके करते रहना चाहिए ।

अमृत सचनों के कण्ठ में ही रहना है ।
भ्रमर कमल-मनुह का अलंकार है ।
सत्पुरुषों के वचनानुसार चलना चाहिए ।
आश्रय बड़ों का ही लेना चाहिए ।

कर्मणो गहना गतिः ।
 कर्मणो ज्ञानमतिरिच्यते ।
 कर्मदोषाद् दरिद्रता ।
 कर्मानुगो गच्छति जीव एकः ।
 कर्मायत्तं फलं पुंसाम् ।
 कलासीमा वाच्यम् ।
 कवयः किं न पश्यन्ति !
 कवले पतिता सद्यो वभयति ननु मक्षिकात्र-
 भोष्कारम् ।
 कष्टं निर्धनस्य जीवितमहो दारमपि
 त्यज्यते ।
 कष्टं खलु पराश्रयः ।
 कष्टादपि कष्टतरं परगृहवासं पराश्रं च ।

कस्त्यागः स्वकुटुम्बपरोपणविधारथव्यय
 कुर्वत !
 कस्य नेष्ट हि यौवनम् ? (कथा०)
 कस्यचित् निमपि नो हरणीयम् ।
 कस्य नीच्छद्गुलं धार्यं गुरुरासनवर्जितम् ?
 (कथा०)
 कस्य सत्सगो न भवेच्छुभः ? (कथा०)
 कः कालस्य न गोचरान्तरगतः ।
 कः परं प्रियवादिनाम् ।
 कः पंतामद्गोलकेऽथ निखिलं सम्मानितो
 वर्तते ?
 कः प्राज्ञो वाञ्छति स्नेहं वेदयासु भिक्ता-
 सु च ? (कथा०)
 कः सुनूविनय विना !
 कानां किमपराध्यगितं हसंजग्धेषु शालिषु !
 (कथा०)
 कान्ता रूपवती शत्रुः ।
 कामं व्यसनवृक्षस्य मूलं दुर्जनमंगतिः ।
 (कथा०)
 कामानुराणा न भयं न रत्ना ।
 कामिनश्च कुतो विद्या ?
 कायः कस्य न बल्लभः ?
 कालस्य कुटिला गतिः ।
 काले शत्रु समाश्रया फलं धननिः
 नीतयः । (रघु०)
 काले दत्तं वरं ह्यल्पमशाले धनुनापि किम् !
 (कथा०)

कर्म की गति गहन है ।
 कर्म से ज्ञान बढ़कर है ।
 दरिद्रता कर्म-दोष का फल है ।
 अकेला जीव कर्मानुसार गति पाता है ।
 मनुष्य की फल की प्राप्ति कर्मानुसार होती है ।
 कला की सीमा वाच्य है ।
 कवि क्या नहीं देखते !
 कवले में गिरी हुई मखरी भोजन-कर्मों को तुलना
 बमन करा देती है ।
 हा ! निर्धन का जीवन इतना दुःखपूर्ण होता
 है कि पत्नी भी उसका साथ छोड़ देती है ।
 दूसरे का भरोसा दुःखदायक होता है ।
 पराये घर में निवास और पराये अन्न में निर्वाह
 सबसे बड़े दुःख हैं ।
 अपने कुटुम्ब के पालन में ही धन व्यय करने-
 वाले व्यक्ति का त्याग भी कोई त्याग है !
 यौवन किसे अच्छा नहीं लगता ?
 किसी का भी कुछ भी चुराना नहीं चाहिए ।
 रूढ़ि या शपथ न होने से निमग्न बचपन उच्छृ-
 ङ्ख नहीं हो जाता ?
 सत्सह किम्का भला नहीं करता !
 फल के क्षेत्र से बाहर कौन है !
 मधुरभाषी का कोई शत्रु नहीं होता ।
 हम ब्राह्मण में सर्वश्रमानित कौन है ?
 कौन-सा विद्वान् वेदयागों और रेत में स्नेह
 (प्रेम, तेल) चाहता है ?
 विनय से रहित पुत्र क्या ?
 जब धानों को हम खा गये तब कौए क्या
 अपराध करेंगे !
 शत्रुता पत्नी शत्रु है ।
 गुरी भगत व्यसन रूपी वृक्ष की जड़ है ।
 कामपीडित व्यक्ति भय और लज्जा से रहित
 होते हैं ।
 कामी को विद्या नहीं ?
 शरीर किसे प्यारा नहीं होता ?
 काल की चाल देखी होती है ।
 समय पर प्रयुक्त नीतियों अवश्य फल लाती हैं ।
 मनुष्य पर दिया हुआ धोड़ा भी दान अममय
 पर रिये हुए बड़े दान से अच्छा होता है ।

कालेन फलते वीर्यं, सखा माधुममागमः ।

का विद्या कविता विना ?

काश्मीरजस्य कटुतापि निनान्तरम्या ।

का ह्यदिजनी विना हंसं, कश्च हंसोऽजिनरी
विना ? (कथा०)

किं हि न भवेदीश्वरेच्छया ? (कथा०)

किं किं करोति न निरर्गलता गना स्त्री ?

किञ्चिन्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि
च ।

कुराजान्तानि राष्ट्राणि ।

कुरूपता दालतया पिराजते ।

कुरूपी बहुचेष्टिकः ।

कुलवधुः का स्वामिभक्तिं विना ?

कुले कश्चिद्वन्धुः प्रभवति नरः श्लाघ्य-
महिमा ।

कुवस्त्रना शुभ्रतया विराजते ।

कुवाक्यान्व च सौहृदम् ।

कुशिव्यमध्यापयतः कुतो यमः ?

कृतधनाना शिव कुत ?

कृतार्थः स्वामिर्न द्वेष्टि ।

कृपणानुसारि च धनम् ।

कुर्ये कस्यास्ति सौहृदम् ?

केचिदज्ञानतो नष्टाः ।

केचिन्नष्टाः प्रमादतः ।

केवलोऽपि सुभगो त्वाम्बुद किं पुनश्चिदश-
चापलाच्छितः ? (रत्न०)

केषा न स्यादभिमतफला प्रार्थना ह्युत्तमेषु !
(मेघ०)

केषां नैया कथय कविताकामिनी कौतुकाय !

को जानाति जनो जनार्दनमनोवृत्तिः कदा
कीदृशी ?

कोऽतिभार समर्थानाम् ।

को धर्मः कृपया विना ?

को न याति वशं लोके मुखे पिष्टेन पूरितः ।

को नाम राजा प्रियः !

कोऽर्थान् प्राप्य न गर्वितः !

कोऽर्थो गतो गौरवम् ?

को विदेशः समर्थानाम् ।

को हि मार्गमार्गा वा व्यसनान् प्रे निरीक्षते ?
(कथा०)

तीर्थ का फल विलम्ब में परन्तु मरमगनि का फल
शीघ्र प्राप्त होता है ।

कविता के बिना विद्या कैसी ?

केसर की कड़वाहट भी अत्यन्त प्यारी होती है ।

हस्त डीन मरमो कैसी और मरसी हीन हम
कैसा ?

ईश्वर की इच्छा में क्या नहीं हो सकता ?

निरकुश नारी क्या-क्या नहीं करती ?

यौवन तथा सम्पदा के सुख कुछ ही काल तक
छूटे जा सकते हैं ।

पुरे राताओं में राष्ट्रों का नाश हो जाना है ।

सुन्दर शील में दुस्वप्ना भी मिल उठती है ।

कुरूप मनुष्य बहुत चेष्टाएं करता है ।

पतिभक्ति विहीन कुलवधु कैसा ?

कुल में कोई ही धन्य व्यक्ति यशस्वी प्रभु
होता है ।

फटे पुराने वस्त्र भी स्वच्छ रहनेसे मिल उठते हैं ।

कुवस्त्रनों में मित्रता नष्ट हो जाती है ।

कुशिव्य को अध्यापक को यश कहाँ ?

कृत्यों का क्यापण कहाँ ?

पूर्ण-मनोरथ व्यक्ति स्वामी में द्वेष करता है !

धन कृपण के पीछे चलता है ।

निर्बल या निर्धन में कौन मित्रता करता है ?

कई लोग अज्ञान में नष्ट हो गये ।

कई लोग प्रमाद में नष्ट हो गये ।

नया मेघ वैसा भी सुन्दर होता है, परन्तु जब वह
इन्द्रधनुष में युक्त हो तब तो वात ही क्या ?

उत्तम जनों के सम्बन्ध की दुर्द किनती प्रार्थना
सफल नहीं होती ।

कहो तो, यह कविता-कामिनी किन के मन में
कौतुक उत्पन्न नहीं करती ?

कौन जानता है कि भगवान् के मन की हृत्ति
कर कैसा होता है ?

बलवानों के लिये जोर भी मार अधिक नहीं है ।

दया के बिना धर्म कैसा ?

समार में निमके सिंह में धाम डाल दो, वहीं
वश में हो जाते हैं ।

राजाओं का प्यारा कौन होता है !

धन पत्तर कौन गवित नहीं होता !

किम् याचक को गौरव प्राप्त हुआ ?

समर्थ व्यक्ति के लिये विदेश कौन-सा है ।

कौन व्यसनान्ध मनुष्य सुपथ कुपथ का ध्यान
रखता है ?

को हि विरत रहस्य वा स्त्रायु दाकनोति
गृहेतुम् । (कथा०)

को हि स्वतिरमच्छाया विप्रश्चोक्लहृषेद्
गतिम् ? (कथा०)

त्रियाणा खलु घम्याणा मपन्व्यो मूलकारं
णम् । (कुमारमवे)

त्रियाग्निद्धि मरुत भवति महता नोपकरणे ।

द्रुद्धे विधौ भवति मित्रममित्रमाद्यम् ।

त्रोधो मूलमनयनाम् ।

काश्रयोऽस्मि तुरामनाम् ?

क्षणविष्वामिन काया का चिन्ता मरणे रणे ।

क्षणे क्षणे यत्प्रवतामुपति तद्रेय रूप रमणाय
ताया । (शिशु०)

क्षमया हि न विष्यति ?

क्षान्तिमुख्य तपो नास्ति ।

क्षार विवति पयोधेर्वर्ष्यम्नोधरो मधुर-
मम् ।

क्षितितल कि जन्म कीर्ति विना !

क्षाणा नरा निष्करणा भवन्ति ।

क्ष्यातुराणा न रुचिर्न पक्षम् ।

ग(५) गगोपो भयङ्कर ।

गदस्य शोचन नास्ति ।

गतानुगतिको लोको न लोक पार
माधिक ।

गुणलुप्ता स्वयमेव सप्त ।

गुणान् भूययते रूपम् ।

गुणा पूत्रान्यान् गुणिषु न च लिङ्ग न च
वय ।

गुणा गुण वनि न वक्ति निगुण ।

गुणविद्वाना यदु चलयन्ति ।

गुप्ता नयन्ति हि गुणा न महति । (किरा०)

गृह या पुण्यनिष्पत्ति स्वावनि अमद
कुल । (कथा०)

ग्रामन्यार्थे क्व त्यन्तु ।

चक्षान्ति योग्येन हि याग्यमगम (नेपथ०)

गुरुवत् परिपन्व्य द्रु ग्वानि च सुगानि च ।

गुरुपूतं न्यसेत् पादम् ।

गर्वा हि शूराणा रणे नयपगतया ।

(कथा०)

गिर्वी ममरति भीर गावलाय वान यो नह्य
टिपा मजनी ।

अपन मिर का परटाई भीर विधि की गति का
उल्लसत जान कर सकता है ?

धार्मिक कृत्या का मूल धारण श्रेष्ठ पत्नियाँ
हानी हैं ।

बड़े लाभ स्वप्नाप मे पाय निद्र करते हैं, उप
करणों से नहीं ।

विधाता ब्रह्म हा तो मित्र भां अमित्र बन
जाता है ।

शोध अनर्थों का नष्ट है ।

दुष्टों को आश्रय कहाँ ?

जब गरिग अगमद्वार है तब रण में मरने में
चिन्ता कैसी ।

कल्पविक सौन्दर्य कहाँ है जो अनुभूत नवानया
हाना पाय ।

क्षमा मे क्या नहीं निद्र हाना ?

क्षमा क तुल्य का तप नहीं है ।

मन समुद्र का मरुत पानी पीता है और मधुर
बल बरमाना है ।

मूनि पर कालदीन जीवन क्या !

निधन छोड़ निद्रय बन जाते हैं ।

भूय से व्याकुल व्यक्ति न स्वाद देखो है न
पक्वता ।

पत्र का विस्मरण-भाव भी मयकर होता है ।

बाता वान का गाव - वय है ।

लोग नन्वत्त चलते हैं, तत्त्व की पहचान नहीं
करते ।

सम्पत्तिवाँ स्वयं पुत्रों को लाम्बी होती है ।

रूप गुणा का अलङ्कृत कर देता है ।

गुणिया में गुण ही पूज्य हान हैं, न वाश चिह्न
और न ग्यु ।

गुण का मूल्य गुणों जानना है, निगुण नहीं ।

गुणहान मनुष्य बाबाल हाने हैं ।

गीतव गुण से निन्ता है, मूढ म नगी ।

गहम्य म न पुण्य मिय ना मरते हैं न
मन्यान में नहीं ।

गाँव की गथा क विन कुल की वक्ति दे दे ।

योग्य म वाग्य का मन् हा शाना देता है ।

दु व और सुव (ग व) चक क गुण घूमते हैं ।

दलकर हा पत्र गटना चाँद ।

सुद्ध में वारा की तब या पराजय अग्निश्चिप
होती है ।

चाण्डालोऽपि नरः पूज्यो यस्यास्ति त्रिपुलं
घनम् ।

चित्तमेतदमलीकरणीयम् ।

चित्ते वाचि क्रियाया च साधूनामेकरूपता ।

चित्रा गतिः कर्मणाम् ।

चिन्ता जग मनुष्याणाम् ।

चिन्ताममं नास्ति शरीरशोषणम् ।

चौराणामनृतं बलम् ।

चौरं गते वा किमु सावधानम् !

उद्वेष्वनर्था बहुलीभवन्ति ।

जटारं को न विभर्ति केवलम् !

जपतो नास्ति पातः ।

जरा रूपं हरति ।

जलविन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।

जातस्य हि भ्रुवो श्रुत्युः ।

जातापत्या पति द्वेष्टि ।

जातौ जातौ नवाचाराः ।

जानन्नि पशवो गन्धात् ।

जामाता दशमो ग्रहः ।

जारस्त्रीणा पतिः शत्रुः ।

जितशोभेन सत्रं हि जगदेतद् विजीयते ।

(कथा०)

जीवन् हि धीरोऽभिमतं किं नाम न यदा-
प्नुयात् । (कथा०)

जीवो जीवस्य जीवनम् ।

ज्ञानस्याभरणं क्षमा ।

ज्येष्ठभ्राता पितुः समः ।

अटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः । (नैषध०)

तन्नामं गन्तु भोजनम् ।

तपोऽधीनानि श्रेयासि, ह्युपायोऽन्यो न
रिचते । (कथा०)

तपोऽधीना हि संपदः । (कथा०)

तमस्तपति धर्माशां कथमाविर्भविष्यति ?

(अभिज्ञान०)

तस्करस्य कुतो धर्मः !

तस्य तदेव मधुरं यस्य मनो यत्र मंलग्नम् ।

निष्पद्येकां निशां चन्द्रः श्रीमान् संपूर्ण-
मण्डलः ।

अनि धनवान् चाण्डाल भी पूज्य है ।

इस चित्त को निर्मल करना चाहिए ।

सज्जनों के मन, वाणी और कर्म में समानता
रहनी है ।

कर्मों की गति न्यारी ।

चिन्ता मनुष्यों का बुदापा है ।

चिन्ता के समान शरीर को कोई भी नहीं
सुझाना ।

शूठ ही चौरा का बल है ।

चोर के भाग जाने पर सावधानता से क्या !

दोषों के कारण अनेक विपत्तियाँ आ बेरती है ।

केवल अपना पेट कौन नहीं भर लेता !

जप करने वाला पाप मुक्त रहता है ।

बुदापा सौन्दर्य का नाशक है ।

बूँद-बूँद करके घटा भर जाता है ।

उत्पन्न व्यक्ति की मृत्यु अटल है ।

सदानवनी नारी पति से द्वेष करती है ।

प्रत्येक जानि के आचरण अलग-अलग होते हैं ।

पशु गन्ध से पहचान जाते हैं ।

दामाद दमर्वा ग्रह है ।

कुल्हा की पति शत्रु प्रतीत होता है ।

क्रोध वा विवेका जगदि नयी होना है ।

धैर्यशाली व्यक्ति जीवित रहे तो प्रत्येक अमी।
प्राप्त कर लेता है ।

प्राणी प्राणी का जीवन है ।

क्षमा ज्ञान का भूषण है ।

बड़ा भाई पिता के तुल्य है ।

विद्वान् लोग दूसरे के भाव को तुरन्त जान
जाते हैं ।

भोजन के अन्त में मट्ठे का सेवन करे ।

मुल-सुविधाएँ तपस्या से ही प्राप्त होती हैं,
किसी अन्य उपय से नहीं ।

सपत्तियाँ तप के अधीन हैं ।

सूर्य के चमकने पर अन्धकार कैसे प्रकट होगा ?

चोर का धर्म कहाँ !

निमका मन जिसमें लगा हो, उसे वही प्रिय
होना है ।

१. शोभावित्र पूर्ण चाँद तो एक ही रात रहता
है । २. चार दिन की चाँदनी और फिर
अंधेरी रात है ।

धनं सर्वप्रयोजनम् ।
धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उरनुजेत् ।

धर्मक्षयकर क्रोधः ।
धर्मस्य तत्रैवं निहितं गुहायाम् ।
धर्मं कीर्तिद्वयं स्थिरम् ।
धर्मं स नो यत्र न मन्यमस्ति ।
धर्मेषु हीना पशुभिः समानाः ।
ध्रिक् कल्पत्रमपुत्रकम् ।
ध्रिक् पुत्रमपिनीतं च ।
धिगात्रा मर्नदोषभूः ।
धिगृहं गृहिणीयुन्वयम् ।
धिर्जीवितं चोद्यमर्जितस्य ।
धिर्जीवितं व्यर्थमनोरथस्य ।
धिर्जीवितं शास्त्रकलौघित्तस्य ।

धृताः क्रीडन्ति बालिणैः । (कथा०)
ध्रुवं फलाय महते महतां मह संगमः । (कथा०)
न काचस्य कृते जातु युक्ता मुनामणे
क्षितिः । (कथा०)
न कामसदृशो रिपुः ।
न दूरन्वतनं युक्तं प्रदीपे वह्निना गृहे ।
न यत्न स उपरतो यस्य बल्लभो जन
स्मरति ।
न च धर्मो दयापरः ।
न चलति खलु वाक्य सज्जनानां कदाचित् ।
न च त्रिद्याममो बन्धुः ।
न च व्याधिममो रिपुः ।
न चापन्थसमः स्नेहः ।
न जाने संसारः किमसृत्तमयः किं विषमयः ।
न ज्ञानात् परमं चक्षुः ।
न तोयात् परमं सुपम् ।
न तोयो महतां सुधा । (कथा०)
न दरिद्रस्य दृष्टी लब्धसौणधनोऽथवा ।
न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते । (कुमार०)
न धर्मसदृशं मित्रम् ।
न नश्यति तमो नाम कृतया दोषवान्धया ।
ननु प्रजातेऽपि निष्कम्पांगिरस्य । (अग्नि०)
ननु वस्तुविज्ञेयनि मृदा गुणगृह्या वचने
विपश्चिन् । (किरात०)
न पुत्रान् परमो लाभः ।

धन सर्वप्रमुख प्रयोजन है ।
बुद्धि न मानव परोपकार के लिए धन और
जीवन त्याग दे ।
क्रोध धर्म का नाशक है ।
धर्म का तत्रैव गुहा में छिपा है ।
धर्म और कीर्ति ही दो स्थिर पदार्थ हैं ।
धर्ममें मूल्य नहीं, वह धर्म नहीं ।
धर्महीन जन पशुतुल्य हैं ।
अपुत्रा भारी विकार्य है ।
अनपुत्र पुत्र विकार्य है ।
सब दापा की जननी आशा विकार्य है ।
गृहिणीरहित घर विकार्य है ।
उद्यमदान का जीवन विकार्य है ।
विफल मनोरथ मनुष्य का जीवन विकार्य है ।
शास्त्र तथा कला से रहित मानव का जीवन
विकार्य है ।
धूर्त लोग मूर्खों को ही उल्टू बनाते हैं ।
बड़ों की संगति का फल बड़ा होता है ।
कौच का प्राप्ति के लिए मीनों की हानि
उचित नहीं ।
काम के समान शत्रु नहीं ।
घर में आग लगने पर कूआँ खोदना उचित नहीं ।
धिमता स्मरण भियजन करते हैं, उमे मरा न
समझिए ।
दया से बड़ा कोई धर्म नहीं ।
सज्जनों की बात कभी झूठी नहीं होती ।
विद्या के समान बन्धु नहीं ।
रोग के तुल्य शत्रु नहीं ।
मन्यति के प्रति प्रेम अप्रतिम है ।
न जान यह जगत् अमृतमय है या विषमय ।
ज्ञान में बड़ी आँख नहीं ।
मनोर ने बड़ा मूल्य नहीं ।
बड़े लोगों की प्रमत्ता व्यर्थ नहीं होती ।
निधन उनका दु मी नहीं होता चिन्ता धन को
पंकर मनेबाळा ।
धर्मवृद्धा की उमर नहीं देगी जानी ।
धर्म का समान मित्र नहीं ।
दापत्र का वात करने में अंधेरा नष्ट नहीं होता ।
आँसू में पवन कभी नहीं दिलने ।
गुणग्राही लोग बात का गुण ग्रहण करते हैं,
बल्यदिशेष का ध्यान नहीं करने ।
पुत्र प्राप्ति से बन्ना कोई लाभ नहीं ।

न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्त-
मानाम् ।

न भयं चास्ति जाग्रतः ।

न भवति पुनरुक्तं भाषितं मज्जानानाम् ।

न भार्यायाः परं सुखम् ।

न भूतो न भविष्यति ।

न सुखे परमा गतिः ।

नये च शौर्ये च वसन्ति सपदः ।

न रत्नमन्विष्यति सुग्यते हि तत् ।

(कुमार०)

नवा बाणी मुखे मुखे ।

न शरीर पुन पुन ।

न शान्ते परमं सुखम् ।

न शस्त्रं वेदनं परम् ।

न स शक्नोति किं यस्य प्रज्ञा नापदि
हीयते ? (कथा०)

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा ।

न सुवर्णे ध्वनिस्ताडय्याहृक् कास्ये
प्रजायते ।

न स्पृशति पद्मलाम्भं पद्मरसेपोऽपि
कुङ्कुमं कापि ।

न स्वच्छं व्यवहर्तव्यमामनो भूति-
मिच्छता । (कथा०)

न हि कृत्तमुपकारं साधवो विस्मरन्ति ।

न हि वापयितुं शक्यं सागराम्भमृषो-
लक्या ।

न हि हृत्करमस्तीह किञ्चिदप्यवसायिनाम् ।
(कथा०)

न हि नायों विनेर्ष्या ।

न हि प्रफुल्लं महकारमेव्य वृक्षान्तरं कान्ति
पट्टपदाली । (खु०)

न हि वन्याऽऽनुते दुःखं यथा हि सुत-
पुत्रिणी ।

न हि सत्त्वावनादेन स्वल्पाप्यापद् निर्लं-
घ्यते । (कथा०)

न हि सर्वविद् सर्वे ।

न हि मिहो गजाम्बन्दी भयाद् गिरिगुहा-
शय । (खु०)

न हि सुसन्धय मिहस्य प्रविशन्ति मुखे रुगा ।

नातिशीलयितुं भग्नामिच्छन्ति हि महीजमः ।
(विपण०)

नाद्यमंश्चिराद्दये । (कथा०)

प्राणान्तकारी ममय आ जाने पर भी उत्तम
मनुष्यों के स्वभाव में विकार नहीं आता ।

जामनेवाले को कोई डर नहीं ।

सज्जन एक ही वान को बार-बार नहीं कहते ।

पत्नी में बड़ा कोई सुख नहीं ।

न हुआ है न होगा ।

मोक्ष में कौंचो कोई स्थिति नहीं ।

सपदाएँ नीति और शूचीरता में रहती हैं ।

रत्न किन्ती को नहीं खोजता, उसी की खोज बंद
जाती है ।

प्रत्येक मुख में वाणी धृष्ट-धृष्ट होनी है ।

शरीर बार-बार नहीं मिलता ।

शान्ति से बड़ा कोर सुख नहीं ।

वेद में बड़ा कोई शान्त नहीं ।

निम्नकी बुद्धि विपत्ति में भी स्थिर रहनी है, बड़
क्या नहीं कर सकता ?

बड़ समा ही नहीं निम्न बुद्ध न हों ।

कॉम म जैनी ध्वनि उत्पन्न होनी है वैसी मोने
में नहीं ।

हाथी की हड्डियाँ निम्न आँवें तो भी बड़
औदृष्ट का जल नहीं टूटा ।

बुद्धि के इच्छुक मनुष्य को स्वच्छ-पूर्वक व्यवहार
नहीं करना चाहिए ।

श्रेष्ठ लोग किये हुये उपकार को नहीं भूलते ।

समुद्र का जल तिनकों की मशाल से गर्म नहीं
किया जा सकता ।

अध्ववनाथा ब्रह्मिक क लिये जगत् में कोई भी
कार्य दुष्कर नहीं ।

स्त्रियों शया-रहित नहीं होती ।

भैंसे पुष्टि न अशुद्ध पर पहुँचकर अन्य
वृद्ध का इच्छा नहीं करते ।

बाँस का बड़ डग नहीं होता या मृत्पुत्रा
नरीकी ।

उत्तम के त्याग में तो सत्कारण अपत्ति पर
भी विजय नहीं मिलना ।

सब लोग मत्र कुछ नहीं जानते ।

हाथियों पर आक्रमण करनेवाला सिंह डर के
कारण पर्वत-शुभ में नहीं रहता ।

मोन हुए विद क समय में मृग स्वयं नहीं का
पुसते ।

आक्रमण जन पराजितों को अन्यधिक परिहार
नहीं देना चाहते ।

अधर्म निरकार तक पन नहीं देता ।

नानृतात्पातकं परम् ।
नारीणां भूषणं पतिः ।
नारत्नैर्जलज्जनेति हिमेस्तु दाहम् । (नैषध०)
नालपीयान् बहु सुकृतं हिनन्ति दोषः ।
(किर०)

नाममोक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत् ।
नास्ति कामयमो व्याधिः ।
नास्ति क्रोधयमो वह्निः ।
नास्ति चक्षु यमं तेजः ।
नास्ति आत्मसमं बलम् ।
नास्ति प्राणयमं भयम् ।
नास्ति वन्द्यमं बलम् ।
नास्ति मेघसमं तोषम् ।
नास्ति मोहयमो रिपुः ।
नास्त्यद्वयं महात्मनाम् ।

नास्त्यद्वो स्वामिमक्तानां पुत्रे वामनि वा
रुद्राः । (कथा०)

नि.सारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान् ।
निजेऽप्यपत्ये करुणा कठिनप्रकृतेः कुतः ?
(प्रस्त्रराजवे)

निरुत्तरादपे देशे परुषोऽपि द्रुमायते ।
निर्द्रुम्यं पुरं त्यजन्ति गणिकाः ।
निर्धनता सर्वापद्रामास्पदम् ।
निर्धनस्य कुतः सुखम् ?
निर्वाणद्रोपे किमु तैलदानम् ?
निवर्तन्ति पराक्रमाश्रया

न विषादेन समं ससुख्यः । (किरा०)
निवमन्नन्तर्दाराणि लंज्यो वह्निर्न तु ज्वलितः ।

निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम् ।
निप्यज्ञास्त्ववर्माद्रन्ति लोकरोपहमिताः
सदा । (कथा०)
निसर्गसिद्धो हि नारीणा सपनीषु हि
मत्सरः । (कथा०)

नि.रुद्रस्य वृषं जगत् ।
नीचाश्रयो हि महवामरमानहेतुः ।

नीचैर्वाञ्छत्युपरि च दत्ता घृष्टनेमिक्रमेण ।
(ने०)

नीचैर्नीचैरतिनीचनीचैः
सर्वैरायैः फलमेव साध्यम् ।

मूठ मे बड़ा कोई पाप नहीं ।
पति त्रियों का भूषण है ।
बमल धूल से नहीं, पाप में शुल्कना है ।
थोड़े में थोप में बड़न से पुष्यों का नारा नहीं
होता ।

दूतरे स्थान को देखे बिना पहले को न छोड़े ।
काम के समान कोई रोग नहीं ।
क्रोध के समान कोई तेव नहीं ।
नेत्र के समान कोई आय नहीं ।
आत्मा के तुल्य कोई बल नहीं ।
प्राणभय के तुल्य कोई भय नहीं ।
बन्धु के तुल्य कोई दल नहीं ।
मेघ के समान कोई जल नहीं ।
मोह के समान कोई शत्रु नहीं ।
देवी कोई बस्तु नहीं जिसे महत्ता लोग न
दे सकें ।

अहो ! स्वामिभर्तों को न पुत्र वा मोह होना है
न प्राणों का ।

प्राय निवन्नी वस्तु का आडम्बर बहुत होना है ।
कठोर स्वभाववाले व्यक्ति को अपनी सन्तति
पर भी दया नहीं आती ।

वृद्धहीन देश में परुष भी वृद्ध माना जाता है ।
वेदवाद निर्धन पुरुष को छोड़ देती है ।
दरिद्रता सब दु खों का कारण है ।
निर्धन को सुख कहाँ ?

दीनक इस जाने पर तेल डालने से क्या ?
समृद्धिदा पराक्रम के आश्रय पर रहती है,
विषाद के साथ नहीं ।

एकड़ो के अन्दर विषमन अभि पर से दूदा
वा सकता है, जलनी पर से नहीं ।
राग-रहित के लिए घर ही तपोवन है ।
बुद्धिहीन व्यक्ति दुःख उठाते हैं तथा लोगों के
उपहासस्वर बनते हैं ।

त्रियों की सौतों के प्रति ईर्ष्या स्वभाविक है ।

कामनारहित के लिये अन्ध सु-तुल्य है ।
नीच का आश्रय लेना बड़े लोगों के लिये अ-
मानजनक होता है ।

पशिये के हल के समान मनुष्य की अवस्था
ऊँची-नीची होनी रहती है ।

नीचे, ऊँचे और अत्यन्त नीचे, सभी उपायों से
अभीष्ट सिद्ध करनी चाहिए ।

नीचो वदति, न कुर्वते,
 वदति न साधु ऋतोत्येव ।
 नैकत्र सर्वो गुणमभिपात ।
 न्याय्या वृत्ति समाचरेत् ।
 न्याय्यात्ययः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।
 पशो हि नभमि क्षित क्षेप्यु पतति मूर्धनि ।
 (कथा०)
 पद्मभिर्मिलितं किं यज्जगतीह न साध्यते ।
 (नैषध०)
 पटत्रो नास्ति मूर्ध्वन्म ।
 पदं हि सर्वत्र गुणनिधीयते ।
 पदं महेत भ्रमरस्य पेलवं
 शिरीषपुष्पं, न पुनः पत्तत्रिणः । (कुमार०)
 पद्मपत्रस्थितं चारि भ्रते मुक्ताफलश्रियम् ।
 पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम् ।
 पयोगते किं रत्नं सेतुवर्धनः ?
 परदुःखेनापि दुःखिता विरलाः ।
 परदुःखिर्विनासाय ।
 परमुक्ते हि कमले किमलेर्जायते रतिः ?
 (कथा०)
 परम लाभमरानिभद्रमाहुः । (किराण०)
 परलोकागतस्य को वन्दु ?
 परबुद्धिमत्परि मनो हि भानिनाम् । (विशु०)
 परसदननिविष्ट को लघुवं न याति ?
 परहितविरतानामादरो नात्मकार्यं ।
 परं द्रितज्ञानफला हि बुद्धयः ।
 परोपकारजं पुण्यं न स्यान्ननुसूतेरपि ।
 परोपकाराय सत्वा विभूतयः ।
 परोपकारार्थमिदं शरीरम् ।
 परोपदेशेलायां क्षिप्यः सर्वं भवन्ति वै ।
 परोऽपि हितवान् बन्धुः ।
 परव्रतानां भयं वज्रात् ।

नीच मनुष्य कहता है, करता नहीं। सज्जन
 कहना नहीं, कर देता है ।
 सभी गुण एकत्र नहीं रहते ।
 जीवकीपार्षान न्याय के अनुसार करना चाहिए ।
 धीर लोग न्याय के मार्ग से तनिक भी विचलित
 नहीं होते ।
 आमादा में कौन दुआ कोचट पेंरुनेवाले के
 मिर पर ही पटना है ।
 मसार में ऐसा कौन-सा काम है जिसे पाँव
 मनुष्य मिल्कर नहीं कर सकते ?
 अत्रयनशील मनुष्य मूर्ख नहीं रहता ।
 गुण सर्वत्र अपना स्थान बना लेते हैं ।
 शिरीष का फूल भ्रमर के कोमल चरण को तो
 मह लेता है, पक्षी के चरण को नहीं ।
 कमल-पत्र पर पटा हुआ जल मोती की शोभा
 धारण कर लेता है ।
 सर्पों को दूध पिलाने से उनका विष ही बढ़ता है ।
 वाद के उत्तर जाने पर भौंभ नाँवने से क्या लाभ ?
 दूसरों के दुःख से दुःखित होनेवाले लोग
 थोड़े ही हैं ।
 दूसरों के मतानुसार आचरण विनाशकारी
 होता है ।
 क्या भैंवरा दूसरे से मुक्त कमल में प्रेम करता है ?
 शत्रु का नाश सब ने बढ़ा लाभ कहा जाता है ।
 दिवगत व्यक्ति का बन्धु कौन है ?
 मानी मनुष्यों का मन दूसरों की उन्नति से
 ईर्ष्या करता है ।
 दूसरे के घर जाने से किमका गौरव क्षीण
 नहीं होता ?
 परोपकारपरायण लोग अपने कार्यों की परवाह
 नहीं करते ।
 बुद्धियाँ बड़ी हैं जो दूसरों के सङ्केत समझ
 जाती हैं ।
 परोपकार शून्य पुण्य सैकड़ों यज्ञों के पुण्य से
 श्रेष्ठ है ।
 मध्यनों की सम्पत्तियों परोपकार के लिए होनी हैं ।
 यह शरीर परोपकार के लिए है ।
 दूसरों को उपदेश देते समय तो सब मन्थ बत
 जाने हैं ।
 दिनकारक नेपाना भी बन्धु ही है ।
 पर्वतों की वज्र में भय होता है ।

पाणौ पयसा दग्धे तर्द्धं पूह्य पामर-
पिबति ।

पात्रत्वाद् धनमाप्नोति ।

पापप्रभावात्तरकं प्रयाति ।

पितृदोषेण मूर्खता ।

पिपासितं काव्यरसो न पीयते ।

पीत्या मोहमयी प्रमादमदिराम्

उन्मत्तभूतं जगत् ।

पुण्यवन्तो हि सन्तान परयन्त्युच्चं वृता-
न्वयम् । (कथा०)

पुत्र क्षत्रपण्डितः ।

पुत्रप्रयोजना दाराः ।

पुत्रहीनं गृहं शून्यम् ।

पुत्रादपि भयं यत्र तत्र सौर्यं हि कीदृशम् ?

पुनर्दृष्टी पुनरेव पापी ।

पुनर्पनाश्च पुनरेव भोगी ।

पुण्या अपि बाणा अपि गुणच्युता कस्य न
भयाय ?

पूज्यं वाक्यं सरणद्वयम् ।

पूज्यपुण्यतया विद्या ।

प्रच्छन्नमाप्युहयते हि चेष्टा । (किता०)

प्रजानामपि दीनानां राजैव सद्यः पिता ।

प्रज्ञाश्लं च सर्वेषु सुर्यं कार्येषु साधनम् ।
(कथा०)

प्रणामान्त सतां कोपः ।

प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाभ्यतिक्रमः ।
(रघुवश०)

प्राणव्यवाय शूराणां जायते हि रणोत्तरम् ।
(कथा०)

प्राणिना हि निकृष्टाणि जन्मभूमिः परा
प्रिया । (कथा०)

प्राणेष्वोऽन्ययमात्रा हि कृपणस्य गरी-
यसी । (कथा०)

प्राणैरपि हि भृत्यानां श्यामिसरक्षण धनम् ।
(कथा०)

प्राणोतीष्टमनिकलवः । (कथा०)

प्राप्यते कि यदाः शुभ्रमनदीकृत्य साहसम् ?
(कथा०)

प्रायः श्वश्रुत्वरयोर्न दृश्यते सौहार्दं लोके ।

दूष का जला छाठ को फूँक फूँक कर पीता है ।

मनुष्य योग्य होने पर धन प्राप्त करता है ।

पाप के प्रभाव से नरक को जाता है ।

मूर्खता पिता के दोष से होती है ।

प्यासे काव्यरस नहीं पिया करते ।

मोहमयी प्रमाद मदिरा पीकर जगत् उन्मत्त
हो गया है ।

वश को ऊँचा करनेवाली मन्तान पुण्यवानों
के घर ही होती है ।

मूर्ख पुत्र शत्रु है ।

पत्नी पुत्र को जन्म देने के लिए ही होती है ।

पुत्रहीन घर सूना है ।

जहाँ पुत्र ने भी भय हो वहाँ सुग कैमा ?

फिर दरिद्री, फिर पापी ।

फिर धनी, फिर भोगी ।

पुरुष भी और बाण भी गुण (गुण, धनुष की
डोरी) से रहित हो जाने पर किसके लिए
भयकर नहीं होते ?

धनाढ्य का वाक्य पूज्य होता है ।

विद्या विछले पुण्यो ने मिलती है ।

चेष्टा शुभ्र बान की भी व्यक्त कर देती है ।

राजा दीन प्रजाओं का दयालु पिता है ।

मन कार्यों में बुद्धिबल मन्मै बड़ा साधन है ।

सज्जनों का काव्य प्रणाम से समाप्त हो जाता है ।

पूज्यों की पूजा में उन्मत्त फेर कल्याणों का वाधक
होता है ।

युद्ध का भेला शूरवीरों के प्राणधन के व्ययार्थ
होता है ।

प्राणियों को अपनी निकृष्ट जन्मभूमि भी अत्यन्त
प्यारी लगती है ।

कजूस को भोडा-मा भी धन प्राणों से अधिक
प्यारा लगता है ।

प्राण देकर भी स्वामी की रक्षा करना सेवकों
का धन है ।

धीर अभीष्ट को पा लेता है ।

जान जोषिम में डाले बिना कहीं शुभ्र वश प्राप्त
हो सकता है ?

मस्तार में प्रायः साम्बद्ध में सौहार्द नहीं
देखा जाता ।

प्रायः समानविद्यः परस्परयदा पुरोभागा ।

प्रायः समानद्विपत्तिकाले
धियोऽपि पुंसां मलिनीभवन्ति ।

प्रायः स्त्रियो भवन्तीह निसर्गादिपन्ना-
शठाः । (कथ०)

प्रायः स्वं महिमानं क्रोधोऽतिपद्यते हि
जनः ।

प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्दार्थेषु कुटुम्बिनः ।
(कुमारमन्त्रे)

प्रायेण भासांदौःशील्यं स्नेहान्धो जेष्ठने
जनः । (कथ०)

प्रायेण भूमिपतयः प्रमदा रुनाश्च
या पार्श्वतो भवति तं परिवेष्टयन्ति ।

प्रायेण साधुवृत्तानानत्यायिन्यो विरक्तयः ।

प्रायेण सामप्रयविधौ गुणानां
पराद्मुखी विश्वस्य प्रवृत्तिः । (कुमार०)

प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणैः सुसंज्ञो जायते ।

प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्र
यान्त्यापदः ।

प्रारभ्य शोचनञ्जना न परिवृजन्ति ।

प्रामादसिद्धिरस्योऽपि कारु किं नृजायते ?

प्रियबन्धुविदारो यः शोकमग्नौ क न
तापयेत् ? (कथ०)

प्रियमांसरुगाधिपोजितः किमदृक् करि
कुम्भजो मयि ? (शिशु०)

प्रियानारो हृत्तं किल जगद्दर्शनं हि
भवति ।

फलं भाग्यानुपात ।

दवाधिवानुरोधेन किं न कुर्वन्ति साधवः ?
(कथ०)

दधिरस्य गानम् ।

दधिरस्यन्मन्त्रकर्म, धेयम् ।

दन्धुः को नाम दुष्टानाम् ?

दन्धुरप्यहित परः ।

दलं मूर्खस्य नीतिवन् ।

दली बल वेत्ति न वेत्ति निबन्धः ।

दलीपनी केवलनीकरेष्वा ।

दधुरना वमुन्धरा ।

बहुपचनमल्पमार य कथयति विप्र
लापी स ।

मनुविन्दास्तु मना म्लयाणसिद्धय । (कथा०)

बह्वश्रय हि मदिनी ।

गालाना रोदन बलम् ।

बुद्धय कुञ्चगामिन्यो भयन्ति महतामपि ।

उदि कम नुमाणिणी ।

बुद्धिगाम च सर्वत्र सुरय मित्र न पौरुषम् ।
(कथा०)

बुद्धे फलमनाम्न ।

बुभुक्षित कि न ज्ञोति पाश्च १

बुभुक्षेत् न प्रतिष्ठाति किञ्चित् ।

बुभुक्षितैः प्राकरण न भुज्यते ।

ब्रूयते हि फलन माग्ना न तु कष्टेन निजो
पयोगिताम् । (नैष्य०)

भक्षया हि तुष्यन्ति महानुभवा ।

भद्रहृप्राप्तुयाद्भद्रमभद्र चाप्यभद्रकृत् ।
(कथा०)

भये सीमा सुसु ।

भर्तृमागं नुमरण खीणा च परम व्रतम् ।

भयन्ति म्लेषवहुणा सर्वस्यापीह मिद्वय ।
(कथा०)

नरन्मयुदयकाले हि सत्कल्याणपरम्परा ।
(कथा०)

भयितव्यता बलवती । (अभिधान०)

भयितव्य भययेव कर्मणातीवृती गति ।

भयज्ञ यस्य यत्कर्म स तत्कर्मन् विनश्यति ।
(कथा०)

भस्मीभूतस्य भूतन्य पुनरागमन कुत १
(नैष्य०)

भाष्येनैव हि लभ्यते पुनरर्था सर्वोत्तम
सेवक ।

भाषामन नास्ति शरीरतोषणम् ।

भिक्षुको भिक्षुक दृष्ट्वा श्वानवद् गुरुरायते ।

भिन्नरचिर्हि लोह ।

जो अल्पमात्र को बहुत शब्दों में करता है
वही विप्रलापी है ।

कल्याणों की सिद्धि में मद्रा अनेक विघ्न पड़ते हैं ।

पृथ्वा आश्वर्यो से पूर्ण है ।

रोना ही बच्चों का बल है ।

बच्चों की बुद्धि भी कुमागगामिनी हो जाती है ।

बुद्धि कर्मों के अनुसार होती है ।

भव स्थानों पर बुद्धि ही मुख्य मित्र है, पुरु
षाथ नहीं ।

हठ का न होना ही बुद्धि का फल है ।

भूला मनुष्य कौन सा पाप नहीं करता १

भूखे को कुछ नहीं चयता ।

भूखे लोग व्याकरण नहीं खाया करते ।

श्रेष्ठ लोग अपनी उपयोगिता बाणी से नहीं,
फल से कहते हैं ।

महानुभाव लोग भक्ति (श्रद्धा) से ही प्रसन्न
होते हैं ।

भले का भला और बुरे का बुरा होता है ।

सबसे बड़ा भय मृत्यु है ।

पति निर्दिष्ट मर्ग पर चलना किर्यों का परम
व्रत है ।

समार में सत्के कार्य अनेक कष्ट उठाने पर ही
सिद्ध होते हैं ।

जब अच्छे दिन आते हैं तब सभी काम शुभ
होने जाते हैं ।

होने शर बलवती है ।

बर्षों की गति ऐसी है कि होनी होकर ही
रहती है ।

१ जिसका काम उत्तम को साने, और करे तो
दकार्थी बाजे ।

२ जो काम जिसका न हो, उसे करने पर
मनुष्य नष्ट हो जाता है ।

भरमाभूत प्राणी लौटकर कैसे आ सकता है १

सर्वोत्तम सेवक भाग्य में ही प्राप्त होगा है ।

परती के समान शारीरिक सुख देनेवाला
बोई नहीं ।

भिन्नारी, भिल्लारी को देखकर कुत्ते के समान
सुराता है ।

लोगों की रचि भिन्न भिन्न है ।

भीता इव हि धीराणा दूरे यान्ति विपत्तय ।
(तथा०)

भूयोऽपि सिद्धं पयसा घृतेन
न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ।

भोगो भूपयते धनम् ।

अष्टस्य का वा गति ?

मतिरेव बलाद् गरीयसी ।

मदमूढबुद्धिषु विवेक्षिता कुत्र ? (शिक्ष०)

मद्यपस्य कुत सत्यम् ? (कथा०)

मधुरविधुरमिध्रा सृष्टयो हा विधातु ।
(प्रमत्तराश्रवे)

मन एत समाचरेत् ।

मन एव मनुष्याणा कारण बन्धमोक्षयो ।
मनस्यैकं वचस्यैक कर्मण्येक महा मनाम् ।

मनस्वी कार्यार्था न गणयति ह्य न च
सुखम् ।

मनोरथानामगतिर्न विद्यते । (कुमार०)

मरण प्रवृत्ति शरीरिणाम् ।

मर्दान गुणवर्धनम् ।

मर्मवाक्यमपि बोधरणीयम् ।

महाननो धेन गत स पन्था ।

महान् महत्येव करोति विक्रमम् ।

महीपताना विलयो हि भूषणम् ।

मातलक्षिम, तव प्रसादवदानो दोषा अपि
स्युर्गुणाः ।

माता दुश्चारिणी रिपु ।

मातापिशृम्या दाह सन् न जानु सुखम
श्नुते । (कथा०)

मातृजहा हि व सम्य स्तम्भीभवति बन्धने ।

मात्रा सम नास्ति शरीरपोषणम् ।

मान म्लाने कुत सुरम् ?

मित च सार च वचो हि दाग्मिता ।

मूढ परप्रत्ययनेद्युद्धि ।

मूर्खस्य किं शास्त्रकथाप्रसंग ?

मूर्खस्य हृदय शून्यम् ।

मूर्खणा बोधको रिपु ।

मूर्खेहि मग कम्यस्ति शर्मणे ? (कथा०)

शून्यः सर्वत्र तुल्यता ।
मेघो गिरिजलधिपर्षो च ।

मोहान् प्रमदिवेकं हि श्रीश्रियेण न सेवने ।
(कथा०)

मानं त्रिधेयं सततं सुधीभिः ।
मानं न्ययथमायम् ।
मानिन कनडां नाम्नि ।
यतः सयततो धर्मं ।
यतो धर्मन्ततो धनम् ।
यतो रूपं ततः शीलम् ।
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः ?

यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्रालम्बीरपि ।

यत्राकृतिस्तत्र गुणा यमन्ति ।
यत्रास्ति लक्ष्मीवित्तयो न तत्र ।
यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रिया ।

यथा देशस्तथा भाषा ।
यथा वीरं तथा अङ्कुर ।
यथा भूमिस्तथा तोयम् ।
यथा राजा तथा प्रजा ।
यथा वृक्षस्तथा फलम् ।
यथाशक्त्यतिथेः पूजा धर्मो हि गृहमेधि-
नाम् । (कथा०)

यथौषधं स्वादु डिर्तं च दुर्लभम् ।
यदि वाप्यन्तरादुता न कस्य परिभूतये ?
(कथा०)

यदेव रोचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम् ।

यद्वाप्रा निजमालपट्टलिगितं तन्मार्जितुं
क- क्षमः ?

यद्यपि शुद्ध लोफत्रिद्वं नो करणीयं वाचर-
णीयम् ।

यद्वा तद्वा भविष्यति ।
यथा पुष्पैरवाप्यते ।
यथास्तु रक्षं परतो यशोधनैः । (२५०)

यः क्रियावान् स पण्डितः ।
याचनान्न हि गौरवम् ।
याचना मोघा वरमपिगुणे नाधमे लब्ध-
कामा । (मेघ०)

मीन के सामने सब समान हैं ।
मेघ पर्वत और सागर दोनों स्थानों पर
बरसता है ।

मोहग्रन्थ और विवेकहीन के पाम लक्ष्मी अविश्व
नहीं ठहरती ।

बुद्धिमानों को निरन्तर चुप रहना चाहिए ।
मीन से सब काम मित्र होने हैं ।

मीना का किमी से कल्प नहीं होत ।
जहा मत्स्य है वहाँ धर्म है ।

जहाँ धर्म है वहाँ धन है ।
जहाँ रूप है वहाँ शील है ।

यदि यत्न करने पर भी सिद्धि न हो तो हमने
यत्नकर्ता का क्या दोष ?

जहाँ विद्वान् नहीं होना वहाँ अल्पबुद्धि भी
दलाय होता है ।

जहाँ रूप वहाँ गुण भी है ।
जहाँ लक्ष्मी होती है वहाँ नम्रता नहीं ।

जैसा मन वैसी बानी, जैसी बानी वैसी क्रिया ।
जैसा देश वैसी भाषा ।

जैसा वीर वैसा अङ्कुर ।
जैसी भूमि वैसा जल ।

जैसा राजा वैसी प्रजा ।
जैसा वृक्ष वैसा फल ।

अनिधि की यथाशक्ति सेवा करना गृहस्थों का
धर्म है ।

जैसे स्वादिष्ट और गुणकारी दवा दुर्लभ है ।
अत्यधिक कोमलता से मिमका निरादर नहीं
होता ?

जो विषे अच्छा लगता है, वही उसके लिये
सुन्दर होता है ।

विधाता ने भाग्य में जो किर दिया है, उसे
कौन मिटा सकता है ?

लोडविन्द शूद्र बात भी न करनी चाहिये ।
कुठ न कुठ तो होगा ही ।

यश पुण्यों में ही मिलता है ।
यशस्वियों की शूद्र से यश की रक्षा करनी
चाहिए ।

जिसके कर्म अच्छे, वही पण्डित है ।
याचना गौरव को ममात् कर देनी है ।

नीच से याचना के सफल होने की अपेक्षा गुणी
से उसका विकल होना अच्छा ।

यादृशो य दृतो धात्रा भवेत्तादृशो मृतसः ।
(कथा०)

यादृशास्तन्त्व काम तादृशो ऋषयते पत् ।
(कथा०)

यानरत्न हि सुरगः ।

यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यञ्चोऽपि सहाय
ताम् । (अनर्षराघवे)

या यस्य प्रकृति स्वभावप्रतिता कनापि न
स्यज्यते ।

युक्तियुक्त प्रगृह्योयाद् बालादपि विवक्षणा ।

युद्धस्य वार्ता रम्या स्यात् ।

ये नु ध्वन्ति निरर्थक परहित ते के न
जानीमहे ।

येन केन प्रकारेण प्रसिद्ध पुरगे भवेत् ।

यो यद् वपति धीन हि लभते सोऽपि
त फलम् । (कथा०)

रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ।

रत्नदीपस्य हि सिखा वात्यथापि न नश्यति ।

रत्नन्ययेन पापाण को हि रक्षितुमर्हति ।
(कथा०)

वनेऽपि दोषा प्रभवन्ति रागिणाम् ।

वर हि भानिनो ह्यस्यु, न द्वैव्य स्वचना
प्रत । (कथा०)

वर क्लृप्त्यं पुंसा न च परकलत्राभिगमनम् ।

वर भिक्षाशिव न च परधनस्य दानमुखम् ।

वर मौन कार्यं न च वचनमुक्त यदनृतम् ।

वर्तमानेन कालेन वनयन्ति विषमणा ।

वस्त्रपूत पिबेजलम् ।

वस्त्राणामातपो परा ।

वामे विधौ न हि फलन्यन्निवाञ्छितानि ।

वाम प्रधान रत्न योग्यतायाः ।

वासोविद्वान विनहाति लम्बा ।

विदारहेती सति निश्चिन्तते

येषां न चेतासि त एव धीराः । (कुमा०)

विनीते करिणि स्मिद्धो विवाद ?

विचित्ररूपा रत्न विचित्रतय । (किरात०)

विषय ने विने नैसा बना दिया चक बैसा ही
होया र ।

विने तग होने हे बैसा करण बनना हं ।

वर्तने मे घोडा रतन है ।

वायलुमार चरनेराने की सहायता पशु पक्षा
भी करते है ।

वो निमका महव स्वभाव है वह छोटा नहीं
जा सकता ।

वुद्धिमान को बच्चे की भी युक्तियुक्त धान मान
हैनी चाहिए ।

वुद्ध के समाचार रोचक होते है ।

वो दूसरों के गार्थों को व्यर्थ ही नष्ट करते है वे
दिन कोपि के होते है हम नहीं जानते ।

मनुष्य का किसा भी उपाय से प्रसिद्धि प्राप्त
करनी चाहिए ।

नैसा बोधया बैसा कायेगा ।

वृष पुत्र मनुष्य की रक्षा करते है ।

रत्नों के दीये को ली आँधी मे भी नहीं बुझती ।

वीन इतना समर्थ है जो पत्थर के रक्षार्थ रत्न
व्यय करे ।

वन मे भी दोष रागयुक्तों को दबा लेते है ।

प्रतिष्ठित शक्ति की शूरु अक्षय विजु सम्प्रथिन
के सामने दोनना बुरी ।

पुरुषों का मनुष्यक होना अच्छा, परन्तु
गमन बुरा ।

भीव मर्ग कर खाना अच्छा परन्तु धन व
भोग का सुख बुरा ।

झूठ बोलने की अपेक्षा चुप रहना अच्छा

वुद्धिमान वचन काल के अनुसार व्यवहार
करते है ।

वस्त्र मे लानकर ही जल पीना चाहिए

धूस वस्त्र का पुङ्गव है ।

वामे विपरीत हो तो अमीष्ट मित्र नहीं होने ।

योग्यता से ही परिधान प्रधान होना है ।

वस्त्रविहीन को लस्मी छोड़ जानी है ।

विकारन वस्तुओं की विषमजता में भी दिन

विन विह्वल नहीं होने के ही धीर है ।

हाथा के बेव देने पर अहुत के बारे न
विवाद कैसा ?

विचित्र की वृत्तिया के रूप विचित्र होते है ।

विदेशे धन्वुलानो हि सरास्यनिरार ।
(कथा०)

विद्यातुराणां न मुखं न निद्रा ।

विद्या ददाति दिनयम् ।

विद्या मित्रं प्रवासेषु ।

विद्यारत्नं भरतकविना ।

विद्या रूपं कस्मिन्निगन् ।

विद्याममं भास्विं शरारभूषणम् ।

विद्या सर्वस्य भूषणम् ।

विद्वान् कञ्चो नो न करोति गर्वम् ।

विद्वान् सर्वत्र पूष्यते ।

विनयाद् यति पात्रनाम् ।

विनयो हि सर्वोत्तमम् । (कथा०)

विना मन्थमन्थत्र चन्दनं न प्ररोहति ।

विनादाकाले विनयानुबुद्धिः ।

विना विभुवंदरेण सपूर्णा सिद्धयः कुत्र ?
(कथा०)

विप्रियमन्त्राख्यं ब्रूते प्रियमेव सर्वदा
सुखम् ।

विभूषणं मौनमनविडम्बनाम् ।

विमलं कलुषीभयं चैव

कथयन्त्येव हितैषिणः रिपुषु वा । (विराट्)

विरक्तस्य गृण भाषा ।

विलासिनी हि सर्वस्य सख्येव क्षणराशिणी ।
(कथा०)

विवक्षितं अनुकम्पनाय न च्यति । अभिज्ञा०)

विधानं कुत्रिलेषु क ? (कथा०)

विषं गोष्ठौ दृष्टिद्वयम् ।

विषयाङ्गुलमाणा हि तिष्ठन्ति सुखये कथम् ?
(कथा०)

विषयिणं कस्याप्योऽस्तं गता ?

विषयसोऽपि मनस्यै स्वयं हेतुमयाप्रयत्नम् ।
(कुम्भार०)

वीरो हि स्वान्नमर्हति । (कथा०)

वृक्षं क्षीयन्तु त्वान्ति विहगा ।

वृषा दीपो दिनापि च ।

वृषा वृष्टिः समुद्रेषु ।

वृद्धस्य वरणी विषम् ।

विदेशं नैषु मे समानं महभूमिं नैः अष्टम्
सौतं दे मन्त्रं है ।

विद्या विद्यां स्वयं व्यक्तियों को न सुना
रचना है न गौर ।

विद्या न नमना अर्थ है ।

विदेशं नैः विद्या मित्र है ।

सरनं कविता करना ही उत्तम विद्या है ।

कुरूप लोगों का रूप विद्या है ।

विद्या के मन्त्रान् गौर का कोर भूषण नहीं ।

विद्या नमना भूषण है ।

कुलीन विद्वान् अभिमान नहीं करता ।

विद्वान् जो स्व जगह पूरा होनी है ।

विनय मे अनुभूय योग्य बनता है ।

विनय ही मन्त्रियों का मन्त्र है ।

चन्दन मन्थ पत्र के बिना कड़ों नहीं उगता ।

विना के समय बुद्धि फिर नहीं है ।

गुरु के उपदेश के बिना संपूर्ण निर्दिष्ट नहीं ?

कड़ु बन भी सुन्दर सज्जन मदा दिय बात ही
कान्ते है ।

मौन भूषण का भूषण है ।

१ दिल दिल का सखी है ।

२ निर्मल का मन्त्र होना हुआ मन हीन
या मन्त्र को बना देना है ।

विरक्त को पत्नी खानन नहीं है ।

सध्या के स्नान मन्त्र के मन्त्र वेदना का राग
(प्रेम होने) सख्यारी होना है ।

अकर्षित विनयित बन पश्चात्ताप उत्पन्न
करती है ।

कर्मियों पर क्या विषय ?

निर्धन की बात चेत विष है ।

विषयमन्त्र लोग सुनाएँ पर कैसे रह सकते हैं ?

किन्तु विषय व्यक्ति को अपेक्षा समाप्त हो
नहीं है ?

अपने पले रोने हुए विषय को भी उलझना
उचित नहीं ।

वीर ही स्वामी बनने के योग्य होता है ।

कर्मणः कर्म को पक्षी छोड़ जाने है ।

दिन में वृक्ष व्यर्थ है ।

समुद्रों में वृषा व्यर्थ है ।

बूढ़े के लिए सुखी विष है ।

बुद्धा न ते ये न चरन्ति धर्मम् ।
बुद्धा नारी पतिव्रता ।
वेदान्तानन्ति पण्डिता ।
वेद्याङ्गनेव नृपतीतिरनेरुह्या ।

व्याघ्रस्य चापनासस्य पारणं पशुमारणम् ।
व्याधितस्यौषधं सिग्म् ।
व्रताभिरक्षा हि मत्तामलक्रिया । (किरान०)
शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या
गुरोरपि ।
शरीरमाद्यं खलु धर्ममाधनम् । (कुमार०)
शाभ्येत् प्रत्युपकारेण नोपकारेण दुर्जनः ।
(कुमार०)

शास्त्राद् रुडिर्बलीयसी ।
शीलं परं भूषणम् ।
शीलं भूषयते कुलम् ।
शीलं हि विदुषां धनम् । (कथा०)
शुभकृत् हि मोदति । (कथा०)
शुभस्य शीघ्रम् ।
शुष्केन्धने वह्निरपैति वृद्धिम् ।
शूर कृतज्ञ इडसौहृदं च
लक्ष्मी स्वयं याति निजामहेतो ।
शूरस्य मरणं नृणम् ।
शोभन्ते विद्यया विप्राः ।
श्यालको गृहनाशाय ।
श्रद्धया न विना दानम् ।
श्रेयसि केन कृत्यते ? (शिशु०)
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रम् ।
मसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ।
मन्त्रं शीलं कुयाद्दणम् ।
मन्त्रगुणभूषा च विनयः ।
मन्त्रगुणधीमा वितरणम् ।
मन्त्रसुखमीमा सुवदना ।
म धात्रियस्त्राणमहं सता यः ।
मकटे हि परीक्षयन्ते प्राज्ञा शूराश्च मगरे ।
(कथा०)
सत्ता महासमुत्थावि परैरपम् । (नेप०)
सता हि सद्मं सन्त्रं प्रसूते ।
सता हि सन्देशपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्त-
करणप्रवृत्तयः । (अभिज्ञान०)
म तु निरयधिरैकं सज्जनानां शिष्यः ।
मत्वाधीना हि सिद्धयः । (कथा०)

को धर्म की बात नहीं कहते, वे बुद्ध नहीं ।
बुद्धा स्त्री पतिव्रता होती है ।
बुद्धिमान लोग वेद से ज्ञान पाते हैं ।
वेद्या के समान राजनीति भी अनेक रा-
धारण करती है ।
भेड़िण के उपवास की पारणा पशु वध होनी है ।
औषध रोग का मित्र है ।
व्रत का पालन सज्जनों का भूषण है ।
शत्रु के भी गुणों का और गुरु के भा दोषों का
कथन करना चाहिए ।
धर्म का प्रथम साधन शरीर ही है ।
दुष्ट जन उपकार से नहीं, अपकार से ही शान्त
होता है ।
शास्त्रों से रीति बलवती है ।
शील सर्वोत्तम भूषण है ।
शील कुल को अलङ्कृत करता है ।
शील ही विद्वानों का धन है ।
शुभ कार्य करने वाला दुःखी नहीं होता ।
भला काम शीघ्र ही कर देना चाहिए ।
सूखे ईंधन में आग तुरन्त फील जाती है ।
वीर, कृतज्ञ और ईड मित्र के पास रहने के
लिध लक्ष्मी स्वयं जाती है ।
वीर के लिए मृत्यु वृणवत् है ।
वाङ्मय विद्या से सुशोभित होते हैं ।
साला पर का नाश कर देता है ।
श्रद्धा रहित दान दान नहीं ।
मगल से वीर वृत्त होता है ?
शास्त्र कान का भूषण है ।
दोष और गुण संगति में होते हैं ।
सक म मर को बशीमृत करना चाहिए ।
नश्रना सब गुणा का भूषण है ।
दान सब गुणों की सीमा है ।
दुसुखी सर्व सुखों की सोमा है ।
सज्जनों की रक्षा में समय व्यक्त धनिय है ।
बुद्धिमानों की परीक्षा सज्ज म और सत्तों की
परीक्षा सधाम में होनी है ।
मजनों का पौल्य बड़ों पर ही प्रवट होता है ।
मत्भगति में सब कुट प्राप्त हाता है ।
सदिग्ध विषयों में सत्पुरुषों का अन्त वरण ही
प्रमाण होता है ।
मज्जनों के विवेक की सीमा नहीं होती ।
सफलदर उस्ताह के अधीन है ।

सत्युत्र एव कुलमग्नौ कोऽपि दीपः ।
 सत्यपुतां वदेद् वाणोम् ।
 सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
 सत्यं न तद् यच्छलमभ्युपैति ।
 सत्यमेव जयते ।
 सत्येन धार्यते पृथ्वी ।
 सदसदा न हि त्रिदु कुर्सीवचनज्ञोहिता ।
 (४२०)

सद्यो भूषा सूक्ति ।
 मद्भिः कुर्वीत संगतिम् ।
 सद्भिर्विवादं मैत्री च ।
 सद्भिस्तु लीलया प्रोक्तं शिलाहसित-
 मक्षरम् ।
 न धार्मिणो यः परममं न सृजेत् ।
 सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भङ्गन्ते ।

संततिः शुद्धवंश्या हि परग्रेहं च शर्मणे ।
 (२५०)

सतोष एव पुरस्म्य परं निधानम् ।
 संतोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत् ।
 संधि कृत्वा तु हन्तव्यः संप्राप्तेऽश्वरे पुन ।
 (४५०)

मभारत्नं विद्वान् ।
 समये हि सर्वमुपकारि कृतम् । (निशु०)

समानशीलव्यसनेषु सत्यम् ।
 सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दम् ।
 मग्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ।
 (भावदगीना)

सरित्पतिर्न हि समुपैति रिक्तनाम् । (निशु०)
 सरित्पूरप्रपूर्णाऽपि क्षारो न मधुरायते ।

सर्वः कालश्रेण नश्यति ।
 सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि चान्छति जन सत्त्वानु-
 रूप फलम् ।
 सर्वः कान्तमात्मीय पश्यति । (अभिलान०)
 सर्वः प्रिय स्वसु भवत्यनुरूपचेष्टेः । (निशु०)
 सर्वं कार्यवशाज्जनोऽभिरमते तत्कस्य
 को बल्लभः ?
 सर्वं जीवद्भिराप्यते (कथा०)
 सर्वं रत्नमुपद्रयेण सहितं निर्दोषमेकं यदा ।

अच्छ पुत्र ही बग न विच्छुण दोनक ही ।
 सत्य मे शोधिन वनी वीजनी चाहिण ।
 सत्य कण्ठ का भूषा है ।
 वह सत्य नहीं तो छत्र का आश्रय लेना है ।
 सत्य की ही विजय होती है ।
 पृथ्वी को सत्य ही धारण विचे हुए है ।
 तुरी नरियों के वचन में मोहित लोग अच्छरै
 या तुरार नहीं मनयने ।
 सुभाषण समा का भूषा है ।
 सज्जनों का साथ करना चाहिण ।
 झगडा और मैत्री सज्जनों से ही करनी चाहिण ।
 सज्जनों की स्वामन्त्रिक बान भी पत्थर की
 लकीर होती है ।
 धार्मिक वही है जो दमरे का जी नहीं दुखाना ।
 सज्जन परीक्षा के अनन्तर ही कोई बात स्वकार
 करते हैं ।

शुद्ध वंश की मन्मान लोक परलोक में सुख
 दायक होती है ।
 सतोष ही मनुष्य का सर्वोत्तम कोष है ।
 सतोष के समान धन नहीं ।
 सन्धि करके भी अवन्त प्राप्त होने पर शत्रु को
 मार देना चाहिण ।
 विद्वान् समा का रत्न है ।
 समय पर किया हुआ सब कुछ उपकारक
 होता है ।

समान शील तथा व्यसन वालों में मैत्री होती है ।
 भरा हुआ घटा दण्ड नहीं करता ।
 सम्मानित मनुष्य के अन्दे अपयश मृत्यु से भी
 बुरा होता है ।
 समुद्र कभी खाली नहीं होता ।
 नदियों के जनममूह से भर जाने पर भी समुद्र
 भीटा नहीं होता ।

समय पाकर सब नष्ट होने हैं ।
 विपत्ति पड़ने पर भी सब लोग अपनी योग्यता-
 नुसार फल चरते हैं ।
 सबको अपनी वस्तु सुन्दर दिखाई देती है ।
 अनुकूल चेष्टाओंवाले सब व्यक्ति प्यारे लगते हैं ।
 लोग सभी को कार्यवश प्यारे लगते हैं, वैसे
 कौन किसका प्रिय है ?
 जीवित मनुष्य सब कुछ पा लेते हैं ।
 सब रत्नों में कोई न कोई दोष होता है, निर्दोष
 तो केवल दण्ड है ।

रुपं शून्यं दृष्टिदस्य ।
रुपं माप्रधि नावधि एलमुवा प्रेण
परं केवलम् ।
रुपं नासाथ्य मानुल ।
मर्चलोकप्रतिष्ठायां यतन्ते बहवो जनाः ।

रुपं मे दुर्जनो विपम् ।
रुपं रम्भास्तुल्यप्रस्थमूलां ।
नयां स्ववस्थासु रमणीयत्वमाकृतिविशेषा-
णाम् । (अभिज्ञान)
रुपं गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते ।
मलजा गणिका नष्टा ।
रा सुहृद्व्यसने य स्यात् ।
रुहने विपस्वहृत्प्रमानी नैत्रापमानलेशमपि ।

सहसा विदधीत न क्रियाम्
अविद्येक परमापदा पदम् ।
सहस्रेषु च पण्डितः ।
सागर वर्जयित्वा कुत्र महानद्यवतरति ?
(अभिज्ञान)

साधने हि नियमोऽन्यजनानां
योगिना तु तपमारिजलिभिद्धि । (नैषध)
साधु सीदति दुर्जनं प्रभवति प्रार्त्ता कलौ
दुयुगे ।
साधूनां दुर्जनाद् भयम् ।
सानुदूले जगन्नाथे विप्रियः सुप्रियो भवेत् ।

सामानाधिकरण्यं हि तेजस्तिमिरयोः कुत ?
(शिशुपालवधे)

सार गृह्णन्ति पण्डिताः ।
निर्दिभूययते विद्याम् ।
सुसविता यद्यस्ति शन्येन रिम् ?

सुकृती चानुभूयैव तु समस्यन्नुते सुपम् ।
(कथा)

सुखमास्ते नि स्पृह पुरप ।
सुखार्थिन कुतो विद्या ?
सुतप्तमपि पानीय शमयत्येव पावकम् ।

सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जतम् ।
(किरात)

सुलभो हि द्विधा भद्रो, दुर्लभा सम्प्रदा
भ्यता । (किरात)

दृष्टि के लिए सब कुछ सूना है ।
सबकी सीमा है परन्तु कुलीन नारियों के प्रेम
की सीमा नहीं ।
माना सर्वनाश कर देता है ।
बहुत से व्यक्ति लोगों में प्रणिष्ठा पाने के लिए
उद्योग करते हैं ।
दुष्टजन के सभी अर्थों में विप रहना है ।
सभी उद्योग दूमेरी भर धान के लिए हैं ।
सुन्दर व्यक्ति सभी दशाभा में सुन्दर लगते हैं ।

सभी गुण धन पर आधिपत्य रहते हैं ।
लज्जाशील बेश्या नष्ट हो जाती है ।
जो विपत्ति में सहायक है, वही मित्र है ।
मानवी मानव सहस्रों वृष्ट सद् लेता है, परन्तु
तनिक सा भी अपमान नहीं ।
कोई भी कार्य एकाएक न करना चाहिए,
अविवेक भारी आपत्तियों का कारण है ।
सहस्रों में कोई एक विद्राव होता है ।
बड़ी नदी सागर के सिवा कहीं आश्रय लेती है ?

साधारण जन साधनों में कार्य सिद्ध करते हैं,
योगियों को तप से सब निद्रियाँ मिलनी हैं ।
इत बलियुग नाम के दुरे युग में मज्जन दुख
पते हैं और दुर्जन अधिकार जमाने हैं ।
सज्जनों को दुर्जनों से भय होता है ।
भगवान् अनुकूल हो तो विरोधी भी निज
बन जाते हैं ।

प्रकाश और अन्धकार एकत्र कैसे रह सकते हैं ?

दुद्धिमान नारदाही होने हैं ।
सिद्धि विद्या को अलकृत करती है ।
यदि सुन्दर काव्य रचना आनी हो तो राज्य में
क्या लाभ है ?

सुकृती मनुष्य दु ख सहनर भी सुलभ भोगता है ।

कामनारहित मनुष्य सुखी रहता है ।
सुखी की विद्या कहीं ?
पानी भले ही तुव गर्म हो फिर भी अग्नि को
शान्त कर हा देता है ।

ससार में सुन्दरता सुलभ है, गुण धारण दुर्लभ ।

शत्रु का नाश करना सरल है, सज्जनों में
प्रदत्ता दुर्लभ ।

सूर्यापाये न खलु कमलं पुण्यति स्वामभि-
रयाम् । (शिशु०)

सूर्ये तपःचावर्णाय दृष्टेः दल्पेन लोकस्य
कर्त्तुं तमिमा ? (रघुवती)

सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यतम्यः ।

स्तोत्रं कम्प न तुष्टये ? (कुमार०)

स्त्रियश्चरित्रं पुरस्त्र्य भास्यं देवो न जानानि
कुतो मनुष्य ?

स्त्रियो नष्टा शर्मर्तुः ।

स्त्रीणां पतिः प्राणा न वाञ्छया । (कथा०)

स्त्रीणां प्रियालोकलोलो द्वि वेष । (कुमार०)

स्त्री पुंवच्च प्रभवति यदा तदि गेहं विनष्टम् ।

स्त्रीसुद्धिः प्रख्यापयति ।

स्त्रीभिः कस्य न रभिडत भुवि मनः ?

स्त्री विनश्यति रूपेण ।

स्त्रीषु वात्सल्यम कुत ? (कथा०)

स्नातिलोऽपि बहुशो नदीजलैर्गर्दमः किमु
हयो भवेत् कश्चित् ?

स्नुयात्वं पापानां कलमघनगेहेषु सुहृताम् ।

स्पृशन्नि न नृशमानां हृदयं वन्धुबुद्धयः ।
(नैषध०)

स्पृशन्त्यास्तारुण्य किमिव न द्वि रम्यं
सुगहशः ?

स्वकर्ममूर्त्तप्रयितो हि लोकः ।

स्वगृहे पूज्यते मूर्त्तः ।

स्वप्राप्ते पूज्यते प्रसु ।

स्वदेशज्ञानस्य नरस्य जूनं
शुभादिस्स्यापि भवेद्दवजा ।

स्वदेशे पूज्यते राजा ।

स्वधर्मं निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।

स्वपत्न्यजा हि निश्चेष्टाः, कुनो निद्रा
त्रिवेक्षितान् ?

स्वपदात्स्यप्रमानस्य कस्यासां को हि
मन्यते ? (कथा०)

स्वभाव एव परोपकारिणाम् ।

स्वभावतः सर्वाभिर्द हि मिद्धम् ।

सूर्य के जल हो जाने पर कमल अपनी शाखा
को धारण नहीं करता ।

जब सूर्य कमल रखा हो तब रात्रि लोगों की
दृष्टि कैसे बढ़ कर सकती है ?

सेवा रूपी धर्म अत्यन्त बठिन है, योगी भी
वहाँ तक नहीं पहुँच सकते ।

प्रशंसा से कौन प्रसन्न नहीं होता ?

स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाव्य को भगवान
भी नहीं जानता, मनुष्य भी क्या जानेगा ?

पति हीन स्त्रियों नष्ट हो जाती हैं ।

स्त्रियों का जीवन पति है, वन्धु नहीं ।

स्त्रियों को नैतिकबद्ध परिधान पहननी है ।

जब स्त्री पुरुषवत् प्रभावशाली हो जाती है तब
पर नष्ट हो जाता है ।

स्त्री की बुद्धि प्रत्यकारिणी होती है ।

भूमि पर स्त्रियों ने जिस के हृदय को रण्डित
नहीं किया ?

स्त्री रूप में नष्ट होती है ।

स्त्रियों में बाणी का मयम कदा ?

नदी के जल में बहुत बार नहाने पर भी
क्या नहीं रक्षा भी छोडा बनता है ?

निर्धन घरों की पुत्रवधु बनना सुन्दरियों के
पापों का फल है ।

मन्वथियों की सीख क्रूर जनों के हृदय को
प्रभावित नहीं करती ।

यौवन में प्रविष्ट होती हुई सुगन्धनी की कौन-नी
बात सुदर नहीं होती ?

समाज अपने कर्मों के मूल से गुँथा हुआ है ।

मूर्त्त आने घर में ही पूजा जाता है ।

भ्रमपति अपने गाँव में ही पूजा जाता है ।

आने देश के गुणों न्याय की भी उपेक्षा नहीं
पाती है ।

राजा को पूजा अपने ही देश में होती है ।

अपने धर्म में मरजा उन्मत्ता है, पर धर्म भयकर
होता है ।

अज्ञानी गहरी नींद में सोने है, विवेकियों को
बौद्ध कहाँ ?

अपनी पत्नी से च्युत हुए की भाशा कौन
मानता है ?

परोपकारियों का यह स्वभाव ही है ।

यह सब स्वभाव से ही सिद्ध है ।

स्वभावात्स्वच्छाना पतनमपि भाग्य हि
भवति ।

स्वयमेव हि चातोऽग्ने मारुध्य प्रतिपद्यते ।
(रघु०)

स्वमुख नास्ति साग्नीना तासा भर्तुसुख
सुखम् । (कथ०)

स्वस्थ को वा न पण्डित ?

स्वस्थे चित्ते बुद्धय मभवन्ति ।

स्वादुभिस्तु विषयहृतस्ततो
दुःखमिन्द्रियगणो निवार्यते । (रघु०)

स्वाधीना दयिता सुतावधि ।

हसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिथ्रा वर्चयत्यप ।
(अभिज्ञा०)

ह हो पद्मसर कुत कतिपयहृत्सेविना
श्रीस्त्व ?

हत्त ज्ञानं क्रियाहीनम् ।

हत्त निर्नायक संन्यम् ।

हत्तश्चाज्ञानतो नर ।

हरति मनो मधुरा हि यौवनधरा ।

(किरात०)

हस्तस्य भूषण दानम् ।

हित परोऽपि स्वीकार्या हेथ स्वोऽप्यहित
पुन । (कथा०)

हितप्रयोनन मित्रम् ।

हितभुक्, मितभुक्, शाकभुक् ।

हित मनोहारि च दुर्लभ वच । (किरात०)

हितोपदेशो मूलस्य कोपायैव न दान्तये ।

(कथा०)

हेम्न सरुदयते ह्यनौ विशुद्धि दयामिकापि
वा । (रघुवध०)

अर्यों हि हाके पुरपस्य वन्तु ।

स्वभावतः पवित्र व्यक्तियों का पतन भी
भाग्याव ही होता है ।

पवन स्वयमेव अग्नि वा सारथि बन जाता है ।

सन्धियों का अपना कोद सुख नहीं होता वे
पति व सुख को ही अपना सुख समझती हैं ।
कीन स्वल्प मनुष्य बुद्धिमान नहीं ?

स्वस्थ चित्त में ही सुविचार उत्पन्न होने हैं ।

स्वादिष्ट विषयों से आजापन शत्रुओं को उनमें
हान्ता नष्टि है ।

सन्तान में पूज ही स्त्री स्वाधीन होती है ।

हम वध ले लेता है और उममें मिले नर को
उत्त देना है ।

अरे कमलमर ! कुत्त हमों के बिना तुम्हरी
शोभा कहाँ ?

क्रिया-रहित ज्ञान व्यर्थ है ।

सेनानो के बिना सेना निरम्भी है ।

मनुष्य अज्ञान से मारा जाता है ।

यौवन की मधुर शोभा मन को हर लेती है ।

दान हाथ का गहना है ।

हितकारक बेगाना भी स्वीकार्य है और अहित
कारक अपना भी त्याज्य ।

मित्र भलाइ के लिए ही होता है ।

दिनकर वस्तु खानेवाला, भोज खानेवाला,
माग-भोगी खानेवाला (स्वस्थ रहता है) ।

हितमर तथा मनोहर वचन दुर्लभ है ।

हितकारक उपदेश मूर्खों को बुद्धि करता है,
ज्ञान नहीं ।

सुवर्ण की सरार-सोयत अग्नि में ही परखी
जाती है ।

समार में धन ही मनुष्य का बंधु है ।

द्वितीय परिशिष्ट

हिन्दी सूक्तियों के संस्कृत पर्याय

हिन्दी

संस्कृत

अगूर सट्टे हे ।

भडा सिराये बच्चे को तू चीन्ची मत कर ।

अंडे सेवे कोई बच्चे लगे कोई ।
अंडे होंगे तो बच्चे बहुतेरे हो जायेंगे ।
भ्रत करण के अनुसार आचरण करे ।
अँतड़ा म रूप युक्की म छप्य ।

अत बुरे का बुरा ।
अत भले का भला ।
अत मता सो गता ।
अदर से काले बाहर से गोरे ।

अधा क्या चाहे ? दो आँखें ।
अधा क्या जाने बमत की बहार ?

अधा गुरु बहुरा चेला, दोनों नरक म
टलमटला ।

अधा घाँटे रेवड़ियाँ फिर फिर अपनी हों को ।
अधी पीसे कुत्ता खाय ।
अधे क आगे रोवे अपने दीदे खोये ।

अधे के हाथ धटेर लगाना ।
अधे को अधा कइने से बुरा मानता है ।
अधे को अधेरे में बड़े दूर की सूझी ।
अधे को सब अधे ही दीखते हैं ।

अधेर नगरी चौपट राजा,
टक सेर भारी टके सेर राजा ।
अधों ने गाँव लूटा दौड़ियो रे लँगड़े ।

१ अकथ्य हीनमुच्यते ।
२ दुष्प्राया द्राभा अम्या ।
१ बाल शिष्ययि वृद्धान् ।
२ वृद्धानां मात्रगो बाल ।
पश्येह मधुकरिणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यये ।
स्थिरे मूले भुवा वृद्धि ।
मन पूत समाचरेत् (मनु०)
१ रूपमन्ने छविवसने ।
२ निराहारे कुतो रूप निर्वासने च कुतश्छवि ।
१ दुरितस्य दु खम् । २ दुष्टस्य कष्टम् ।
१ भद्रस्य भद्रम् । २ शुभस्य शुभम् ।
अन्ते मति सा गति ।
१ विषकुम्भा पयोमुखा ।
२ अत गाक्ता वहि शैवा ।
इष्टलाम पर सुखम् ।
१ गुणावभक्तस्य न वेत्ति बायस ।
२ लोचनाम्भी विहीनस्य दर्पेण किं करिष्यति ?
३ न भेक कौकनन्तिकिज्जलास्वाकोविद ।
(कथासरित्सागर)
अ धस्याधानुत्पन्नस्य शिनिपान पदे पदे ।

विवेररहित सल्ल पशुपानी ।
पश्येह मधुकरिणां सञ्चितमर्थं हर त्वन्ये । (पंचतन्त्र)
१ अरण रोत्ता व्यर्थं भस्मनि हुतमेव च ।
२ अरण्यकण्ठिमिव निष्प्रयोजनम् ।
अभस्य बतशीलाम ।
न भयान्मयमश्रियम् ।
बालिशस्य मनिस्कृति ।
१ पित्तन वने रसने सिताजपि नित्तावसे ।
२ पश्यति पित्तोपहत शशिशुभ्र शङ्कमपि पीतम्
नृपे मूढे नय कुत ?
१ अय बाध्यामुनो याति समुष्पकृतशेखर ।
२ अभैतुण्डिनी धन पगो रे धाव सत्वरम् ।

अधो म काना राज ।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता ।
अकल बटी कि भैंस ?

अकलमद को इशारा, अहमरु को फटकारा ।
अकलमद से इशारा ही काफी है ।

अच्छी बात अच्छे की भी मान लेनी चाहिए ।
अच्छी वस्तु स्वयमेव प्रसिद्ध हो जाती है ।
अच्छी सतान सुख की खान ।

अक्का बनिया देय उधार ।
अटकेगा सो भटकेगा ।

अढाई पाव कगनी चौवारे रमोई ।
अति का भला न बोलना, अति की भली न
धुप्य । अति का भला न बरसना, अति
की भली न धुप्य ।
अदले का बदला ।

अधकल रागरी छलकत जाय ।
अधिकार बड़ा है न कि बल ।
अधेला न दे, अधेली दे ।

अनहोनी होती नहीं होनी होनहार ।

अपना अपना गर गर ।
अपना टेंपर न देखे
दूसरों की फुलली निहारें ।

अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है ।

अपना पैसा खोटा तो परखया का क्या
दोष ?

अपना बही जो भाए काम ।

अपना हाथ जगन्नाथ ।

अपनी अपनी टफली अपना अपना राग ।

१ अनरस्तपादपे देस परण्टोऽपि द्रुमायते ।
२ यत्र बिद्वज्जनो नास्ति इलाष्यस्तत्रात्पपीरपि ।
उत्पत्तिनोऽपि चण्ड राक्ष किं भ्राह्मण भडकुम् ?
१ बुद्धियस्य बल तस्य निर्बुद्धेरसु कुतो बलम् ।
(पचनत्र)

२ मतिरेव बलाद् गरीयसी ।
३ प्रशा नाम बल श्रेष्ठ निष्प्रशस्य बलेन किम् ?
विहाय सशा, मूढ य दण्ड ।

१ अनुक्तमप्युह्नि पण्डितो च न ।
२ परेक्षितानपञ्चा हि बुद्धय ।
युक्तियुक्तं प्रगृह्णीयाद् बलादपि विनक्षय ।
न हि कस्तुरिकामोद शपथेन विभाव्यते ।

१ मतानि शुद्धवदया हि परत्रेह च शनने । (रघु०)
२ सुदमूळ सुमन्वति ।
परवदी किं क्रियते ?
सशय-म विनदयति ।
निरुमारस्य पदाधस्थ प्राचेणाटम्बरो महाम् ।
अनि सवत्र वज्रयेत् ।

१ वृते प्रतिष्ठानि कुर्यात् ।
२ भद्रो भद्रे खल सखे ।
३ शठे शोध्य समाचरेत् ।
अढों घणे घोषमुपैति नूनम् ।
स्वान प्रधान न बल प्रधानम् । (पचनत्र)
१ अल्पस्य हेतोर्वैदु हातुमिच्छन् विन्दारमूढः
प्रतिभ्रानि मे त्वम् । (रघुवश)
२ पणमदत्त्वा निष्कं प्रयच्छति ।
न यद् भावि न तद् भावि भावि चैत्र तदन्यथा ।
(हिनोपदेश)

निजो निज एव पर परश्च ।
खल सर्पमाशानि पशुच्छानि पश्यति ।
अत्मनो विन्वमात्रानि पश्यति न पश्यति ॥
(महाभारत)

१ जठर को न विभ्रति केवलम् ?
२ कायेऽपि जीवति विराय बलिञ्च सुदुक्ते ।
१ आत्मनीया सुदोशयेत् को लाभ परदूषणे ।
२ समले सुवर्णे निरथो न निरथ ।
१ न एव बधु महापरो य ।
२ परीरपि हिततर स्वीय ।
स्वानन्वमिष्टप्रदम् ।
स्वार्थनिदो हि ये मन्तारनेया साम्प्रत्य कुत ?

अपनी इज्जत अपने हाथ ।

अपनी करनी पार उतरनी ।
अपनी शरज़ बावली होती हँ ।

अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है ।
अपनी छाछ को कोई राटी नहीं कहता ।

अपनी देह किसे प्यारी नहीं ?

अपनी नाक कटे तो कटे दूसरों का सगुन
तो बिगड़े ।

अपनी पगड़ी अपने हाथ ।
अपनी बुद्धि पराया धन कई गुना दोस्तता है ।
अपने गरीबान में मुँह डाल कर देखना ।

अपने दही को कोई खट्टा नहीं कहता ।
अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ा मारना ।
अपने मुँह मियाँ मिट्टू ।
अप्यदा से मौत भली ।
अब पछताएँ होत क्या जब चिड़ियाँ सुग
गाईं खेत ।

अभी दिल्ली दूर है ।
अमीर को जान प्यारी, गरीब को जान भारी ।
अहर की टही गुजराती ताला ।
अलब्रामोशी नीमरज़ा ।
अत्याहारी सदा सुखी ।
अशरफियाँ लुटीं, कोयलों पर मुहर ।

अस्मो की आमद खौरासी का इत्रचें ।

आँत्र और कान में चार अंगुल का क्रक
होता है ।

आँख न दीदा कादे कसीदा ।
आँख से दूर दिल से दूर ।
आँखा के अंधे नाम नयन-सुख ।

१ लोके गुरत्व विपरीगता वा स्वबेष्टितान्येव
नर नयन्ति । २ निजाधीनं स्वगौरवम् ।
कृत्ये स्वकीये सत्तु तित्थिलम्बिः ।

१. अर्थाधीनं जीवन्लोकोऽप्य इमंज्ञानमपि सेवते ।
(पंचतंत्र)

२. किन्न बुवंन्ति स्वाधिनः ?
निजमदननिविष्टं या न मिहायते किम् ?

१. सर्वं सत्कारनीयं काम्तं पश्यति ।
२ न हि कश्चिन्निर्यं तन्ममलप्रित्यभिभाषते ।
(अश्वघोषदोषदुष्टोऽपि) कायः कस्य न वल्लभः ?
(पंचतंत्र)

आत्मशक्त्याऽपि विघ्नन्ति परकर्माणि दुर्जनाः ।

दे 'अपनी इज्जत अपने हाथ' ।
स्वमति परधनञ्चैव वृद्धवृद्धं हि इदयते ।
विरूपो यावदादर्शं पश्यति नात्मनो मुखम् ।
मन्यते तावदात्मानमन्येभ्यो रूपवत्तरम् ।
(महाभारत)

दे 'अपनी छाछ को ...'
१ दुःखसदन स्वदोषेण । २ स्वकरोणागारकर्षणम् ।
इन्द्रोऽपि लघुना याति स्वयं प्रख्यापितैर्युगैः ।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणात्तिरिच्यते । (गीता)

१. निर्वाणदीपे किमु तैलदानम् ?

२. गतस्य शोचनं नास्ति ।

३. गत शोचन्त्यपण्डिताः ।

४. गते शोको निरर्थकः ।

अद्यापि दूरतः सिद्धिः ।

धनाढ्यो रक्षति प्राणाद् निर्धनस्त्यक्तुमिच्छति ।

पापाणे मृगमदलेपः ।

मीन स्त्रीकारलक्षणम् ।

अत्याहारी सशस्त्रोऽपि ।

१. निष्कापव्ययं, पगरक्षणम् ।

२. चन्दनदाहः, शमीरक्षा ।

१. अल्प आयो व्ययो महान् ।

२. न्यूनयोऽपि रुष्यवः ।

श्रवणे दन्तने चैव वर्तते महदन्तरम् ।

अन्यो वीक्षितुमुद्यतः ।

१. दूरता स्नेहनाशितो । २. नयनदूरं मनोदूरम् ।

१. यस्य पार्श्वे धनव्रान्ति सोऽपि धनपाल उच्यते ।

२. वित्तेन हीनो नाम्ना नरेणः ।

आँधी के आम ।

आँड़े को कौन टारे ?

आँड़े तो ईद बरात न आँड़े तो जुम्मेरात ।
आँड़े थी आग लेने मालिक बन बैठी ।

आँड़े हैं जान के साथ जायगी जनाङ्ग के साथ
आपू की खुदाई न गए का गम ।

आग पानी का मेल कैसे हो सकता है ?

आग लगने पर कूआँ नहीं खोदा जाता ।

आग लगा पानी को दौड़े ।

आगे कूआँ पीछे खाई ।

आगे जगह देखकर पाँव रखा जाता है ।

आगे दौड़ पीछे चौड़ ।

आगे नाथ न पीछे पगहन, सब से भली
कुम्हार का गदहा ।

आज का काम कल पर मत छोड़ो ।

आदत सिर के साथ जाती है ।

आदि बुरा भत बुरा ।

आधा तीतर भाधा बटेर ।

आधी छोड़ सारी को धावे,
ऐसा दूबे थाह न धावे ।

आप मरे जग परलै ।

आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलतर ।

आप हारे बहू को मारे ।

आ बला, गले लग ।

आमों की कमाई नींव में गँवाई ।

आम के आम गुठलियों के दाम ।

आम बोओ आम खाओ ।

आयगा लो जायगा राजा रक फकीर ।

आरत काह न करइ कुकर्म ।

३ ज्ञानेन हीनोऽपि सुबोधमंश ।

४ गुणैर्विरहितोऽपि गुणाकराल्य ।

अल्पार्थद्रव्यम् ।

१ अपि ध्वन्तारिवैश किं करोति गतायुषि ?

२ मृत्योनास्ति भेषनम् ।

संशुत भोजन विचे, दारिद्र्ये शुष्कमेव च ।

१ मृत्वीप्रवेशे मुसलप्रवेश ।

२ अनलार्थे समायाता सजाता गृहस्वामिनी ।

जीवनमगिनी रुजा ।

१ सन्दुष्ट सदासुखी ।

२ लामालामयो सम ।

१ सामानाधिकरण्य हि तेजस्विमिरयो कुत ?

२ जलानलयो सङ्गम कुत ?

१ सन्दीप्ते भवने तु कूपखनन प्रत्युचम कीदृश ?
(नीतिशतक)

२ न कूपखनन युक्त प्रदीप्ते बहिना गृहे ।

१ अन्नदुष्ट क्षमायुक्त सर्वानर्थकर किल ।

२ विषकुम्भ पयोमुख ।

इत कूपस्तनस्तदी ।

१ इष्टिपूत न्यसेत्पादम् । (मनु०)

२ नासमीक्ष्य पर स्थान पूर्वमादतर्न त्यजेत् ।

पूर्वाधीन तु विस्तृत्य अपस्थं प्रत्युत्सुकः ।

का चिन्ता बधुहीनस्य ?

यद्य कार्यं न श्व कुर्यात् ।

अभ्यासो हि दुस्त्यज ।

१ दुरारम्भो दुरन्त स्यात् ।

२ दुर्वीमात्सुफलं कुल ?

विषमयोगो न शुज्यते ।

यो भ्रुवानि परित्यज्य अभ्रुवाणि निषेवते ।

भ्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अभ्रुवं नष्टमेव तु ॥

१ आत्मप्रलये जगत्प्रलय ।

२ आत्मनाशे जगन्नाश ।

१ नात्मयत्न विना सिद्धि ।

२ यावन्न निधनं तावन्न स्वग ।

निजापरधे मृत्यस्य भर्त्सनम् ।

विपत्ते ! परिष्वजस्व माम् ।

इतो लामस्तन क्षति ।

एका क्रिया इयर्थवरी प्रसिद्धा ।

यादृशमुप्यने बीज तादृशं फलमाप्यते ।

जानद्व हि भ्रुवो मृत्यु ।

आर्त्तो चन विश करोति पापम् ।

कालस्य बुरी बला है ।

आलिस वह क्या जमल न हो जिसका
क्रिताव पर ।

आस पास घरसे दिल्ली पडी तरसे ।

आस्मा पर थूका अपने सिर ।

आम्मान से गिरा खजूर में अटका ।

आहारे ब्यौहारे लज्जा न कारे ।

इक चुग हजार मुख ।

इक नागिन अरु पन्व लगाई ।

इधर कूओं उधर खाई ।

इधर बाघ उधर खाई ।

इलान लाख, एक पच्य ।

इरक नाज़ू क मिताज है बेहद ।

अकल का बोझ उठा नहीं सकता ॥

इम घर का यात्रा आदम ही निराला है ।

इस हाथ दे उस हाथ ले ।

इंद का जवाब पत्थर से ।

इंधर की निगाह सीधी हो तो किमी वस्तु
की कमी नहीं रहती ।

इंधर की निगाह सीधी हो तो कोई बाल
भी बौका नहीं कर सकता ।

इंधर की निगाह सीधी हो तो शत्रु भी
मित्र बन जाता है ।

इंधर की माया कहीं धूप कहीं छाया ।

इंधर के नियम अटल हैं ।

इंधर फ रंग (खेल) न्यारे हैं ।

इंधर के सिवा कोई निर्दोष नहीं ।

इंधर पर भरोसा रखना चाहिए ।

इंधर से क्या दूर है ?

उखली में मिर दिया तो मूमलों का दर क्या ?

उतर गई कोई तो क्या करेगा कोई ?

उदार मनुष्य पात्र का विचार नहीं करते ।

उधार का खाना फूम का तापना बराबर है ?

१ अगच्छन् वैततेनोपि पदमेक न गच्छति ।

२ आलस्य हि मनुष्याणा शरीरस्यो महारिपु ।

४ क्रियावान् स पण्डित ।

सस्पृहा निर्धना दृष्टा नि स्पृहाणा धन बहु ।

पद्मी हि नममि क्षिप्त क्षेप्तु पतति मूर्धनि ।

इतो मुक्तस्ततो बद्ध ।

आहारे ब्यवहारे च त्वक्तञ्ज सुखी भवेत् ।

मौनं सबसुखप्रदम् ।

दे 'एक तो करेला '

१ इनोऽथकूपस्ततो दन्दशक्त ।

२ अग कूपस्ततस्तदी ।

इनो व्याघ्रस्ततस्तदी ।

मध्ये सति गस्तस्य किमौषधनिषेवणे ?

अनुरागान्धमनसा विचारसहता कुत । (कथा.)

गृहमेतद् निलक्षणम् ।

१ इनो देय ततो ग्राह्यम् ।

२ त्वरित फल कर्मणाम् ।

१ शठे शठ्य समाचरेत् ।

२ वृत्ते प्रतिकृतिं कुर्यात् । (चाणक्यनीति)

१ प्रसन्ने हि किमप्राप्यमस्तीह परमेश्वरे ।

२ विधिर्हि षट्यत्यर्थानचित्त्यानापि समुख । (कथा)

श्रीकृष्णस्य कृपालवो यदि भवेत् क कं निहन्तु
क्षम ।

सानुकूले जगन्नाथे विप्रिय सुप्रियो भवेत् ।

द्वैवी विचित्रा गति ।

ध्रुवा परमेशनियमा ।

१ विधेर्विचित्राणि विचेष्टितानि ।

२ अहो विधेरचिन्तयैव गतिरदमुतकर्मणाम् । (कथा.)

३ अहो नवनवाश्रयनिर्माणे रसिको विधि ।
(कथा०)

४ द्वैवी विचित्रा गति ।

५ मधुरविधुरमिश्रा सृष्टयो वा विधातु ।

विभुवनविषये कस्य दोषो न चास्ति ।

रामधाम शरणीकरणीयम् ।

किं हि न भवेदोषरेच्छया ?

रणे योर्द्धु प्रवृत्तरथ शत्रुशक्तात् किं भयम् ।

१ निर्लेब्धस्य कुतो भयम् ?

२ मानहीनमनुष्याणा लोकौज्य किं करिष्यति ?

मेधो गिरिजलधिबधा च ।

उदारभोजनं वृणतापसेवनम् ।

उधार दिया ग्राहक रोया ।
 उधार मुहब्बत की कैंची है ।
 ऊधो मन माने की बात ।
 उबोस-बोस का तो फूट्ट होता ही है ।
 उपजहि एक मग जल माहीं,
 जलज जोंक जिमि गुन बिलगाही ।
 उलटा घोर कोतवाल को उटे ।
 उलटे बॉस बरौली को ।
 ऊँट के मुँह में जीरा ।

ऊँट की चोरी और झुके झुके ।
 ऊँची हुकान फीका पकवान ।
 ऊँट धोटे बहे जायें, गधा कहे कितना पानी ?
 ऊँट तो कूदे बोरे भी कूदे ।
 ऊँट रे ऊँट तेरी कौन मी कल सीधी ?
 ऊँटों के विवाह में गधे गावये ।
 ऊधो का लेना न माधो का देना ।
 ऊपर से पानी देना नीचे से जड़ काटना ।

एक भडा वह भी गदा ।
 एक अनार मौ बीमार ।
 एक और एक ग्यारह होते हैं ।

एक कदो दस सुनो ।
 एक कान से सुनना दूसरे से निकाल देना ?
 एक के दूने से सौ के सवाए भले ।
 एक लुर हज़ार को हराए ।

एकता में बंदी शक्ति है ।

एक तो करेला कडुभा दूसरे नीम चदा ।

एक तो घोरी दूसरे सीनाज़ोरी ।
 एक थैली के चट्टे-बट्टे ।
 एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे
 दिन बलाए जान ।
 एक नज़ीर न सौ नमीहन ।
 एक पंथ दो काज ।

एक परहेज़, न सौ हकीम ।
 एक पुष्य दूसरे फलियाँ ।

उद्धार केतूलोपक ।
 उद्धार रनेहुनाशक ।
 तरय तरेव हि मधुर बन्ध मनो यत्र सल्पन्म् ।
 समयोरप्यल्पमन्नरम् ।
 न सोदरास्तुल्यगुणा भवति ।

दोषी पृच्छन्मवक्षिषेत् ।
 गङ्गा हिमाचल नयति ।
 १ दाशेत्स्य मुखे नीर ।
 २ न स्तोत्रेण घस्मरत्सि ।
 न महान्नि कर्माणि भवति गुदम् ।
 निस्सारस्य पदाभंश्य प्रायेणादम्बरो महात् ।
 यत्र शूरगनिर्नास्ति कातर किं करिष्यति ?
 नृत्यति विनारूपणी तृष्यत्यन्देऽपि भूतवेताला ।
 १ सर्वपापमयो जन । २ मवदोषयुतो नर ।
 उद्ग्राणा विवाहे तु गीत गायति गर्दभा ।
 निश्चिन्तो नर सुखी ।

१ अतदुद्गृक्षमायुक्तं सर्वांसुनधर किल ।
 २ शान्तयन्नपि वृथाग्निं नदीवेगो निकृन्तति ।
 ३ अत शत्रु वहि सुहृद् ।
 वाग्मांसं शुनोच्छिद्यन्नित्त्वल्पञ्च तत्पुन ।
 एक कपोतपोत इयेना शतशोऽभिधावति ।
 १ सकृति वायमाधिका । २ समनायो दुरत्ययः ३
 एकचित्ते द्वयारेव किमनाध्य भवेदिदं ।
 (कथासरित्सागर)

गाल्या उत्तर दश ।
 अवधानरहित अवर्ग हि ष्यवर्गम् ।
 विक्रयाधिक्ये लाभधिक्यम् ।
 १ मीन सर्वांसुनधनम् ।
 २ मीन विशतिद् ध्रुजम् ।
 १ सम्बन्धो दुस्त्ययः ।
 २ सहति कर्षसाधिका ।
 १ अयमपरो गण्ठस्योपरि स्फोट ।
 २ मर्वदस्य सुहायान तनो वृश्चिकदशनम् ।
 अपराधित्वेऽपि धृष्टार ।
 दुष्टत्वे सर्वे समा ।
 १ प्राणुणिको दिनद्वयम्, यमद्वयस्तत परम् ।
 २ प्राणुपूत दिनद्वयम् ।
 कृतिस्वरेऽशानाद् वरेयसो ।
 १ एका क्रिया द्वयधर्मरी प्रसिद्धा । (महाभाष्य)
 २ देहत्या दीप ।
 पथ्य भिषगशानाद् वरम् ।
 १ एका क्रिया द्वयधर्मरी प्रसिद्धा ।
 २ एक कृत्यं लोन्परलोक्फलदम् ।

एक बार मरना फिर मरने से क्या डरना ?
एक कोटी सौ कुत्ते ।
एक मछली मारे जल को गद्गा करती है ।
एक म्यान में दो तलवारों नहीं समा सकतीं ।

एक हमाम में सब नगे ।
एक हाथ से ताला नहीं बनती ।

एक हो लकड़ी से सब को हौकना ।
एक साथे सब साथे, सब साथे सब जाय ।
प्रेम करने को भी हुनर चाहिए ।
ऐसे बूढ़े बल को कान बाँध भुस देय ।
भोड़े की प्रीत बालू की भीत ।
भोड़े को मुँह लगाना अपनी इज्जत खोना ।
भीम चट्टे प्यास नहीं बुझती ।

झोर बात खोटी सही दाल रोटी ।
कनवी दुबाई का फल मोटा ।
कच्चे बोल न बोल ।
कन्या पराया घन होती है ।
करमगति टारें नाहि टरे ।

करम प्रधान बिल्व रचि राखा,
जो अस करहि सो उस परल चाखा ।
करमो की गति न्यारी ।

कल की छोडो भात की बात करो ।
कर रहसि परकाच हित सपति सँचहि
सुनान ।

का कर अद्वितीय जन यद्यपि होय समर्थ ।

काल मयको खा जाता है ।
काला भस्म भंस घावर ।
काठ की निल्ली तो धन गड़े परन्तु म्याऊँ
कौन करेगा ?
कुत्ता कुत्ते का बैरी ।

कुत्ते की दुम बारह बरस बली में रखो तो
नी टेंग्री की टेंग्री ।

क्षुब्धचित्तिल वाया वा चिन्ता मरणे रणे ।
हे 'एक अनार सौ बीमार' ।
एतेनैव कुपुत्रेण मलिन नायते कुलम् ।
१ नैवस्मिन्नेव वान्तरे सिद्धयोरसति क्वचिद ।
२ बन्धुवर्गेकव शासनम् ।
सर्वे सहवाभिन् सम्रा ।
१ न्हेनेन हस्तेन तालिना सप्रययते । (पंचतप)
२ नैकाकी बरहे क्षम ।
योग्यायोग्योविवेकाभाव ।
एकलपद्ये सबसिद्धिर्दयाधिक्येन काचन ।
पाप वीराल पेक्षि ।
वृत्तिहीनय वृद्धान को जने भोजनं दद्यात् ।
अस्तिर सुद्रसौहृदम् ।
सुद्रसगतिर्माननादिनी ।
१ न तरालेकेन तमित्तलात् ।
२ प्रायेयदेहान् पुत्राविकाश ।
अन्नपान परित्यज्य सर्वमन्यत्रिरथं कम् ।
यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽभूदुपोषणम् ।
मनवाक्यमपि नोच्छरणोपयम् ।
अर्थो हि कन्या परकीय एव । (अभिज्ञान०)
१ भवितव्य भवत्येव कर्मणामोदृशी गतिः ।
२ भवितव्यानां हाताणि भवन्ति सर्वत्र ।
(अभिज्ञान०)

त्वकर्मसूत्रप्रथिनी हि लोकः ।
हे 'जैती करना वैती मरनी' ।
१ चित्रा गति कर्मणाम् ।
२ गहना कर्मणो गति ।
वर्तमानने कालेन वर्तमानि विचक्षणः ।
१ अदान हि विसर्गाय सना वारिणवनिदा (ख)
२ आचरन्तिमहमतफलं मयरो धुपनानाम् ।
(ख)

३ परोपकारक सत्ता विभूतयः ।
असहाय समर्थोऽपि वैवस्वी किं करिष्यति ।
(पंचतपम्)

सर्वभोग्येकलोऽबलः ।
सर्वे काञ्चरोन नश्यति ।
निरक्षरमहाचार्यः ।
सुलभा रम्यता लोके दुर्लभ हि उगात्रं वम् ।

१ मिथुको मिथुक इष्टवा शानवद् गुणरायते ।
२ वाचको वाचक इष्टवा शानवद् गुणरायते ।
तरुणीवच यव नीच कौण्डिन्य नैव विवद्वादि ।

क्या बूढ़ क्या जवान मौतकेलिए सब समान
खूँटे के बल बउडा कूडे ।
घुवाले का गवाह मँटक ।
गंगा गण गंगाराम जमुना गण जमुनादाम ।
शरीर को पू दा की मार ।
शरीर को संसार मूना ।

शरीर को सुख कहाँ ?

शुणी गुणों से आदर पाते हैं, आयु तथा
लक्षणों से नहीं ।
गुर बिना गत नहीं ।
शु स्या बडा घटाल है ।

गेहूँ के साथ धुन भी पिस जाता है ।
घर का जोगी जोगका बाहर जोगी सिद्ध ।

घोड़ों का घर कितनी दूर ?
चुपही और दो दो ?
घमही जाय दमही न जाय ।
चार दिन की चाँदनी और फिर अँधेरी रात ।
जगत मेह-खाल है ।
जब बुरे दिन आते हैं बुद्धि मारी जाती है ।

जब भाग्य ही सीधा न हो तो काम कैसे
सिद्ध हो ।
जब लग पैसा गौंट में तब लग ताको बार
झड़ों शरीर मुझ गीरी ।
जूरुत के वक्त गये को भी बाप कहा
जाता है ।
तहाँ न जाय रवि वहाँ जाय कवि ।
जान जिसे प्यारी नहीं ।
जान है तो जहान है ।
जिसका काम उम्मी को साजे,
और करे तो टहली बाजे ।
जिनका भाप उम्मी का भात गापूँ ।
जिनकी लाठी उमकी धँस ।
जिनके घर दाने उम के कसने (मूर्ख)
भी स्थाने ।
जितना गुद् दालोगे उतना भाँटा होगा ।
जितने सँह उतनी चाले ।
जिनको कट्टू न चाहिए तेहें माहमाह ।

मृत्यो मर्वत्र तुत्याना ।
अन्तरमात्ररूपपदी नाच प्रायेण दु महो भवति ।
अहो रूपमहो ध्वनि ।
भजनि वैतमी वृषि मानव काण्वेदिन ।
देको दुबंलयानर ।
१ सर्वं सून्य इतिद्रम्य ।
२ सर्वसून्या दरिद्रता ।
१. निर्धनस्य दुःखं सुखम् ?
२ निर्धनता सर्वोपदामाप्स्यन् ।
गुणा पूजाशार्दं गुणिषु न च श्लि न च वर ।

विना हि युवादेशेन सम्पूर्णां सिद्धय उत ?
१. धर्मक्षेत्रर क्रोध ।
२ क्रोधो मूलमनधानाम् ।
अपेक्षन्ते हि विपद किं पेश्वमपेश्वम् ?
स्वदेशान्तस्य नरस्य नूनं गुणाधिकस्यपि भवे
दवगा ।
किं दूरं व्यवसायिनाम् ?
यथोपथ स्वादु हितं च दुर्लभम् ।
प्रागेभ्योऽप्यर्थमात्रा हि वृषणस्य गरीयसीः (कथा०)
निश्चयेन निशां चन्द्र श्रीमान् संपूर्णमण्डल ।
गनानुगतिको लोको न शेर परमाधिक ।
१ विनाशकाले विपरीतबुद्धि ।
२ प्राय समापत्रविपत्तिकाले विषोऽपि पुर्ण
प्रतिना भवन्ति ।
१ वक्रे विधौ वद वध व्यवसायनिधि ।
२ वधे विधौ न हि वन्त्यभिवान्तिनाम् ।
अमुगर्भो हि जीमूतधानर्कभित्तवधे । (गनु)
क पर विपदारिनाम् ?
महानपि प्रसङ्गेन नीचं मेविदुमिच्छति ।
कवय किं न परमनि ?
काय कस्य न वज्रम् ।
आरमार्ये वृषिर्वा स्वयन् ।
अशना कस्य नानेद नौरहास्य प दन ।
(वधान्तरिमातर)
को न शक्ति उमा लोक सुन शिखेन पूर्ण ?
शौचवित्य गगयति को विद्यापराय ।
लक्ष्मीयस्य गृह म पत्र भवति प्रायो जगत्-
वन्दनम् ।
अधिनस्यधिकं कन्म् ।
नका वाणी मुने मुने ।
स्यमान्ते नि म्हर पुत्र्य ।

जीम रोगों की जड़ है ।
जीवन का क्या भरोसा है ?
जैसा कारण वैसा कार्य ।

जैसा मुँह वैसी चपेड ।
वैसी करनी वैसी भरनी ।

जैसी सगत वैसी रगत ।

जैसे को तैसा ।

जो भयनी सहायता करते हैं ईश्वर भी
उनकी सहायता करता है ।
जो गरजते हैं वे बरसते नहीं ।
जो तुव को काँटा खुवे ताहि बोव तू फूल ।
जो पैदा हुआ सो मरेगा ।

जो मुख छज्जु के चौबारे, वह न बलज्ज न
डुज्जारे ।

जो है निसको भावता सो ताही के पास ।
ज्ञान मे बदा कोई मुख नहीं ।
दूबा बस कबीर का उपजे पूत कमाल ।
तृष्णा बूझी नहीं होती ।
मोया घना दजे घना ।

दमझी की बुदिया टका सिरमुड़ाई ।

दया धर्म का मूल है ।

दिल दिल का साक्षी होता है ।

दुधार गाय की छात भली ।
दूध का जला छाल भी फूँक कर पीता है ।
दूर के डोल सुहावने ।
धन जोयन का शरव न कीन ।

रसमूला हि व्याधय ।

अस्थिर जीवित लोके ।

१ यथा बीज तथाद्भ्र । २ यथा वृषस्तथा फलम् ।
३ यादृशास्त्र तव काम तादृशो नायने पट ।
पात्रानुसार फलम् ।

१ भद्रहृत्प्राप्त्युपाद् भद्र, अमद्रञ्जाप्यभद्रकृद् ।
(कथा०)

२ भद्रमभद्र वा कुनम त्मनि कल्प्यते । (कथा०)

३ यो बद्रपति बीज हि लभते सौख्ये तत्फलम् ।

४ कर्मावत्त फल पुताम् । दे 'करम प्रधान '

१ ससर्गजा दीवगुणा भवन्ति ।

२ प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुण ससर्गानो जायते ।

३ शठे शठ्यै समाचरेद् ।

४ आजव हि कुटिलेषु न नीति । (नैषध)

दिवमेव हि साहाय्य कुरते सत्त्वशास्त्रिनाम् ।

नीचो वृत्ति न कुर्वते वदति न साधु करोयेव ।

क्षार विवति पयोधेवत्पद्मभोधरो मधुरमम्म ।

१ क कालस्य न योचरान्तरगत ।

२ नातस्य हि भ्रुवो शृत्यु । (गीता)

३ मरण प्रकृति शरीरिणम् ।

४ उत्पद्यते विलीयते ।

प्राणिनां हि निकृष्टाऽपि नमभूमि परा भिया ।
(कथा०)

न डि विचलति मैत्रो दूरतीऽपि स्थितानाम् ।

नास्ति शानात्पर सुखम् ।

कुपुत्रेण कुल नष्टम् ।

दुष्पुत्रो का तरुणायते ।

१ अर्द्धा घटो घोषमुपैति नूनम् ।

२ गुणैर्विहीना बहु जल्पयति ।

३ अल्पज्ञानी महाभिमानो ।

४ न सुवर्णे ध्वनिस्तादृग् यादृक्कास्ये प्रजायते ।

१ न कालस्य कृते नातु युक्ता मुक्तामणे ध्वनि ।
(कथा०)

२ रत्नव्ययेन पापाण को हि रश्मितुमहति? (कथा)

३ धर्मस्य मूल दया ।

४ को धर्म कृपया विना ?

विमल वस्तुषीभवच्च जेन वधयस्येव हितैषिण
रिपु वा ।

वादनीरजस्य बद्धतापि नितान्तरम्या ।

पापी पयसा दग्धे तक्क फूल्कृत्य पामर पिबति ।

दुरत पर्वता रम्या ।

१ अस्थिरे धनयौवने ।

२ निश्चित्वाग्निपभोग्यानि यौवनानि धनानि च ।

धर्महीन नर पशू समाना ।
न इधर के रहे न उधर क रहे ।

नदी नाव सजोगी भेले ।

नहि अम कोउ जग माहीं, प्रभुता पाइ
जाहि मद नाहीं ।
नहीं यह जन्म बारबार ।
नहीं शील सम गहना दूजा ।

न होने की अपेक्षा थोड़ी अच्छी ।

निरन्तर खर्च से कारु का खजाना भी
समाप्त हो जाता है ।
पर उपदेश कुसल बहुतेरे, जे आचरहि ते
नर न धरेरे ।

पर धर कबहुँ न जाइए जात घटत हे जोत ।
परहित मरिस धरम नहि भाई ।
पराधीन सपने सुख नाहीं ।
परोपकारी लोग स्वार्थ की चिन्ता नहीं करते ।

पहले तोलो पीछे बोलो ।

पाप का भाडा फूट ही जाता है ।
पैसा पापियों को पूज्य बता देता है ।
पैसा रहा न पास चार मुख से नहि बोलें ।
पैसा हाथ की मील है ।
पैसे से दोष भी गुण बन जाते हैं ।
प्रभुता पाइ काहि मद नाही ।

प्राण जायें पर धर्म न जाई ।

प्राण जायें पर वचन न जाई ।
बदर क्या जाने अदरक का स्वाद ?

घड़ों का मार्ग ही ठीक मार्ग है ।
घड़ों की बढी चालें ।
घड़ों की सगत से बहुत लाभ होता है ।
चढ़ी हुई (आयु) के इलाज हैं घटी हुई के नहीं।
यदनाम जो होंगे तो क्या नाम न होगा ?
बहुत नियममिलि बल कर, करें छु चाहें सोया ।

धर्मण हीना पशुभि समाना ।

१ इतो भ्रष्टस्तनो भ्रष्ट ।
२ इदं च नास्ति न परं च लभ्यते ।
३ उभयतो भ्रष्ट ।

असंभाव्या अपि नृणा भवन्तीह समागमा ।

(कथा०)

अद्विधित्तविकारिणी ।

भरुनीभूतस्य भूतस्य (देहस्य) पुनरागमनं कुत ?

१ शीलं परं भूषणम् ।
२ शीलं हि सर्वस्य नरस्य भूषणम् ।
३ अधिरन्पन्दनर्णं श्रेयान् ।
४ अभावादल्पता वरा ।

भक्ष्यमाणो निरदमं सुमेरुपि क्षीयते ।

१ परोपदेशवेलाया शिष्टा सर्वे भवन्ति वै ।
२ परोपदेशे पाण्डित्य सर्वेषां सुकरं नृणाम् ।
धर्मं स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्तु महात्मन ॥

परमदमनिविष्टं को लघुत्वं न याति ।
परोपकारजं पुण्यं न स्वाद्यं क्रतुशतैरपि ।
कष्टं सतु पराश्रय ।

१ परहितनिरस्तानामादरो नात्मकार्ये ।
२ परार्थप्रतिपन्ना हि नैक्षते स्वार्थमुत्तमा । (कथा)
युक्तं न वा युक्तनिर्दि विचिन्त्य वदेत् विपश्चिन्म
हनोऽनुरोधतः ।

नाशमंधिरमृद्धये । (कथा)
चाण्डालोऽपि नरं पूज्यो यत्पासितं विपुलं धनम् ।
वृक्षं क्षीणफलं त्यजति विद्वान् ।
उदारस्य तृणं विसृजम् ।

मानस्यैव तव प्रमादवशतो दोषा अपि स्थुर्युगा ।
१ कोऽर्थान् प्राप्य न गविनं ?
२ यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र ।
त्यजन्त्युत्तमसत्त्वा हि प्राणानपि न सत्पथम् ।

(कथा०)

न चलनि खलु वाक्यं सज्जनानां कदाचिद ।

१ न भेठ कोरनदिनीकितकरास्वादकोविद ।

२ किमिष्टमनं खरसुरारणाम् ?

महान्तो येन गतं स पन्था ।

अहह महतीं निस्स्वामातश्चिरविभूतय ।

भुवः कथय महते महतीं महं सगनं । (कथा०)

प्रतिहारविधानमायुषं सति शेषे हि फलाय कथ्यते ।

येन केन प्रकारेण प्रतिहं पुरुषो भवेत् ।

वदनामप्यमारणां संहतिं कार्यसाधिका ।

वातां से काम नहीं चलता ।
बाप पर बेदा तुल्य पर घोड़ा ।
बिन घरनी घर भूत का देरा ।

प्रिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय ।

बीती बात का शोक न करना चाहिए ।

सुरी संगत का घुरा फल ।

बूँद-बूँद पडने से घड़ा भर जाता है ।
भले काम में देर कैसी ?
भलो का संग करना चाहिए ।

भाग्य का मारा जहाँ जाता है विपत्ति भी
वहाँ उसे जा घेरती है ।

भूख में सब कुछ स्वादु लगता है ।
भँस के भागे बीन बजे भँस खड़ी पगुराय ।

मन के हारे हार है मन के जीते जीन ।

मन चगा तो कठौती में गंगा ।
मनस्वी लोग सुख-दुःख की परवाह नहीं करते
सरता क्या न करता ।

महात्माओं के मन, वाणी तथा कर्म में
समानता होती है ।
भाँगन गण सो भर गण ।

मित्र की पहचान विपद में ही होती है ।

न नश्यति तमो नाम कृत्या द'पवर्तया ।
कार्ये निदानादि गुणानधीते । (नैषध०)
१ म्रियान'शे कृत्स्नं किल जगद्दरण्य हि भवति ।
२ भाषां हान गृहस्थस्य शू'यमेव गृह मतम् ।
३ भिगृह गृहिणीगुन्यम् ।
१ सहसा विदधीत न क्रियामविवेक परमापदां
पदम् ।
२ सहसा हि कृत पाप (कार्य्यै) कथ मा भूदि
पत्तये । (कथा०)
१ गतस्य शोचन नास्ति ।
२ गते शोको निरर्थक ।
३ गत शोचन्त्यपडिता ।
असम्मैत्री इि दोषाय कूलच्छाश्व सेविता ।
(किरान०)
जलविन्दुनिपातेन क्रमश पूर्यते घट ।
शुभस्य शीघ्रम् ।
१ सद्भि' कुर्वीत सगतिम् ।
२ सद्भिरेव सहासीत ।
३ प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रापदां
भाजनम् ।
२ प्रायो गच्छति यत्र दैवहतवस्तत्रैव यान्त्या
पद । (नीति०)
शुधातुराणा न रुचिर्न पक्वम् ।
१ अन्धस्य दीप ।
२ बधिरस्य गीतम् ।
१ जिते चित्ते जित जगत् ।
२ जितचित्तेन सर्वं हि जगदेतद्विधीयते ।
३ जित जगत्त्वेन ' मनो हि येन । (शंकराचार्य)
निवृत्तरागस्य गृह तपोवनम् ।
मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दु ख न च सुखम् ।
१ बुभुक्षित किञ्च करोति पापम् ?
२ क्षीणा जना निष्कल्या भवन्ति ।
३ दारिद्र्यदोषेण करोति पापम् ।
मनस्वैक वचस्वैक वर्मण्येक महात्मनाम् ।
१ याचनान्त हि गौरवम् । २ याचनाम्भरण वरन् ।
३ वर हि मनिनो मृत्युर्न दैन्य स्वपनाग्रत ।
(कथा०)
४ नोऽधी गतो गौरवम् ?
१ हेन्न सलक्ष्यते क्षत्री विशुद्धि दयामिकापि
वा । (रघु०)
२ मित्रस्य निक्त्रो विपद ।
३ स सुहृद् व्यसने य स्यात् ।

मुक्ति तथा बंधन का कारण मन ही है ।
 मूर्ख का बल मौन ।
 मूर्ख लोग भेद चाल चलते हैं ।
 मूर्खों की सगत से कौन सुख पाता है ?
 भेरे मन कष्टु और हैं बिधना क कष्टु और ।
 मोह की फाँसी बड़ी प्रचल है ।
 मौत का कोई इलाज नहीं ।
 योग्य, योग्य के साथ ही फवता है ।
 रक्षिण मैलि कपूर म हींग न होय सुगंध ।
 राम भणु जेहि दाहिने सबे दाहिने ताहि ।

राम राम जपना पराया माल अपना ।
 रोग तथा शत्रु को छोटा न समझो ।

लालच बुरी बला है ।
 लोकमर्थादा का पालन अवश्य करना चाहिये।
 लोभ पापों की खान ।

विद्या पुण्य कर्मों से आती है ।
 विधाता मृदु हो तो मित्रभी शत्रु बन जाते हैं।
 विधि का लिखा मिटाया नहीं जा सकता ।

शूरवीर मौत की परवाह नहीं करते ।
 शीर भूखा मर जाता है परन्तु घास नहीं खाता।

सगठन में बड़ी शक्ति है ।

सतसमागम बड़ा दुर्लभ है ।
 सतो के कारण आप सँवारे ।

सतोप सबसे बड़ा धन है ।

सतोप सबसे बड़ा सुख है ।

समर में धन-सा सन्ध्याही बोटें नहीं ।

मन एव मनुष्याणा कारण बन्धमोक्षयो ।
 बल मूर्खस्य मौनित्वम् ।
 मूढ परप्रत्ययनेयवुद्धिः । (कान्दिदाम)
 मूर्खैर्है संग कस्यास्ति शमणे ? (कथा०)
 को जानाति जनी जनार्दनमनोवृत्ति कदा कीदृशी ?
 नास्ति मोहसमो रिपु ।
 अपि भवन्नरिर्वैद्य किं करोति गतायुषि ?
 चकास्ति योग्येन हि योग्यमगम ।
 किं मर्दिनोऽपि कस्तुर्वा, लघुनो दानि मौरभन् ?
 १ प्रावाणोऽप्यार्द्रता सम्यग् भजन्यभिमुखे विधी ॥
 २ इशेऽनुकूले सर्वेऽनुकूला ।
 ३ दोषोऽपि गुणता दानि प्रभोर्भवति चेत्कृपा ।
 अहो विश्वास्य बन्धुवन्ते धूर्तैरुत्प्रभिरिधरा ।
 अल्पीयमोऽप्यप्रमयतुल्यवृत्तेर्महापकाराय रिशेर्वि-
 बुद्धिः । (किरान)
 नान्ति दुष्णासमो व्याधि ।
 यद्यपि दुष्ट लोचविरुद्धनी करणीय नावरणीयम् ॥
 १ लोभ पापस्य कारणम् ।
 २ लोभमूलानि पापानि ।
 ३ पापानामाकरो लोभ ।
 पूर्वपुण्यतया विद्या ।
 बुद्धे विधी भवति मित्रममित्रभावम् ।
 १ अमर्दं भद्रं वा विभिलिखितमु मूल्यमनि क ।
 २ यद्देनललाग्त्रनिधित तत्प्रोक्षितु क क्षम ?
 ३ यद्वावा निजमालपट्टि निरिन तं माभितु क क्षम ?
 ४ लिखितमपि ललाटे प्रोक्षितु क समर्थ ?
 ५ शिरसि लिखितं लघुवति क ?
 शूरस्य मरण दुर्गम् ।
 १ न प्राणाते प्रकृतिविडम्बिनायते चोत्तमानाम् ।
 २ न शूरसति पत्यसाम्भ पञ्चरसोऽपि कुभर
 क्वापि ।
 ३ सर्वं कृच्छ्रगतोऽपि वाष्पति जन स्वानुरूपं
 फलम् ।
 पञ्चमिर्मित्तै किं वज्रगतोह न साध्यते ।
 (नैषध)
 पुण्यैरेव हि लम्बते मुकृतिभि ससर्मगतिदुर्लभा ।
 देवेनैव हि साध्य ते सदर्पा शुभकमगणम् ।
 (कथा)
 १ सतोषतुल्य धनमग्नि नापद ।
 २ सतोष एव पुरुषस्य पर निधानम् ।
 ३ संतोष परम धनम् ।
 ४ न तोषात् परम सुखम् ।
 २ सतोष परम सुखम् ।
 अर्थो हि लोके पुरुषस्य वपु ।

सच की ही जीत होती है ।
सदाचार सब से बड़ा धर्म है ।
सबको काम प्यारा है, काम प्यारा नहीं ।
सब लोग गुण तो किसी में नहीं होते ।
सब सब कुछ नहीं जानते ।
साँच बराबर तप नहीं शठ बराबर पाप ।
साँप निकल गया लकौर पीटा करो ।

सार सार को गढ़ि रहे धोधा देय उडाय ।

सारी जाती देखकर भाधी लेय बचाय ।

सारी रात रोते रहे मरा एक भी नहीं ।
सास-बहू में मेल कहाँ ?
सीख न दीजै बानरा जो बणका घर जाय ।

सीधी उँगलियों से घी नहीं निकलता ।

सुख-दुःख सब के साथ लगे हुए हैं ।

सुत बिना सूना रोह ।

सुरदास जाको जासों हित सोई ताहि सुहात ।
सोने में सुगन्ध ।

स्वभाव नहीं बदलता ।

होनहार फिरती नहीं होये बिस्ते बीस ।

हो बिधना प्रतिकूल जयै तब ऊँट चड़े पर
चूकर काटत ।

सत्यमेव जयते ।

आचार. परमो (प्रथमो) धर्म. ।

सर्वे कार्यवशात्तानोऽप्रिभरमने तत्त्वस्य को वदन्त ?
नैऋत्र सर्वो गुणमनिपातः ।

१. न हि सबविद सर्वे । २. सर्वे सर्वं न जानन्ति ।

नास्ति मत्त्वत्परो धर्मः, नानूतात् पानक परम् ।

१. चौरे गने वा किमु सावधानम् ?

२. पर्यागते किं खलु मेतुबन्ध ।

१. सार गृह्णति पण्डिता ।

२. हसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्वात् ।

३. हनो हि क्षीरमादसे तन्मिथा वज्रंयत्पर ।

(अभिज्ञान)-

१. सर्वनादो मसुत्पन्ने, अर्द्धं त्यजति पण्डितः ।

२. भ्रामस्यार्थं कुत्र त्यजेत् ।

३. त्योदेक कुलस्यार्थे ।

परमार्थमविशय न भेदव्यं क्वचिन्मृषि । (कथा)

माय शश्रुस्तुषयोर्न दृश्यते सौद्व लोके ।

१. उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।

२. हितोपदेशो मूर्खस्य कोपायैव न शान्तये ।

(कथा.)

३. मूर्खाणां बोधको रिपुः ।

१. आर्धं हि कुटिलेषु न नीतिः । (नैषध)

२. शान्त्यै प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः ।

कन्यास्यन्त सुखमुपगत दुःखमेकान्ततो वा ।

नीर्वर्गं च त्पुत्रि च दशा चक्रनेमिक्रमेण । (मीर)

१. अपुत्रस्य गृह शून्यम् ।

२. पुत्रहीन गृह शून्यम् ।

यदेव रोचते यस्मै भवेत् तत्तस्य सुन्दरम् ।

केरलोऽपि सुभयो नवाम्बुद, किं पुनस्किदशचाप-

लाञ्छितः । (रघु)

१. यद्दृशो य कृतो धात्रा भवेत्तद्दृश एव सः ।

२. या यस्य प्रकृति स्वभाववनिता केनापि न

त्यज्यते ।

३. स्नादिभोऽपि बटुशो नदीजलैर्गर्दभ किमु हयो

भवेत् क्वचिच्च ?

१. प्राचीनकर्म बलवन्मुनयो वदन्ति ।

२. साधनाध्यविवार हि नेशते भविन्वना ।

(कथा.)

३. हनविधिपरिपाकः केन वा लङ्घनीयः ?

४. भविन्वना बलवती ।

५. विधिरहो बलवानिति मे मतिः ।

अहो विधौ विपर्यस्ते न विपर्यस्यतीह विन् ।

तृतीय परिशिष्ट

अंग्रेजी संस्कृत शब्दावली

A

- Academy—१ शिक्षालय २ साहित्य विज्ञान कला परिषद् (स्त्री) ।
 Accountancy—लेखा सख्यान, अर्थात् (न) ।
 Account—१ लेखा २ विवरणम् ।
 Accountant—लेखापाल ।
 Accountant general—महालेखापाल ।
 Acknowledgment—प्राप्तिपत्रम् ।
 Act—अधिनियम ।
 Acting—१ कार्यकारिन् २ अभिनय ।
 Ad hoc committee—सदर्यमिति (स्त्री) ।
 Adjournment motion—स्वयंगनप्रस्ताव ।
 Administration—प्रशासनम् ।
 Administrator—प्रशासक ।
 Adult—वयस्क, प्रौढ ।
 Adult franchise—वयस्कमतप्राप्ति ।
 Advance—अग्रिमधनम् ।
 Advocate—अधिवक्ता (पु) ।
 Advocate general—महाअधिवक्ता ।
 Aesthetics—सौन्दर्यशास्त्रम् ।
 Affidavit—दृष्टपत्रम् ।
 Affiliation—*सम्बन्धनम्, सम्बन्धीकरणम् ।
 Agency—अभिकरणम् ।
 Agenda—कार्यसूची ।
 Agent—अभिकर्ता (पु) ।
 Agitation—आन्दोलनम् ।
 Agreement—१ सन्धि २ सम्मेलनम् ।
 Air conditioned—नियन्त्रितान्ना ।
 Air-port—वयुपत्तनम् ।
 Air tight—*पवनवात, रोधक ।
 All India Radio—आकाशवाणी ।
 Allotment officer—आवटनाधिकारिन् ।
 Alphabetically—वर्णक्रमानुसार, वर्णमालाक्रमेण ।

- Amenity—सुखसुविधा ।
 Anniversary—वार्षिकोत्सव ।
 Appeal—पुनरावेदनम्, पुनर्न्यायप्रार्थना ।
 Application—आवेदनपत्रम् ।
 Appointment—नियुक्ति (स्त्री) ।
 Archaeologist—पुरातत्त्वज्ञ ।
 Architect—वास्तुकार ।
 Aristocracy—अभिजातकुलीन, तन्त्रम् ।
 Assembly—सभा ।
 Assembly, legislative—विधानसभा ।
 Assessment officer—करनिर्धारणाधिकारिन् ।
 Assistant controller/director/secretary—सहायक, नियंत्रक, निदेशक - सचिव ।
 Assosiate member—सहसदस्य ।
 Atlas—मानचित्रावली ।
 Atmosphere—१ वायुमण्डलम् २ वातावरणम् ।
 Attesting officer—साक्ष्यावनाधिकारिन् ।
 Attorney general—महान्यायवादिम् ।
 Audience—श्रोतृवर्ग ।
 Audit—लेखापरीक्षा ।
 Auditor—लेखापरीक्षक ।
 Authority—१ प्राधिकारिन् २ प्राधिकार ।
 Autocracy—एतन्त्रम् ।
 Autonomy—स्वायत्तशासनम्, स्वायत्तता ।
 Aviation—विमाननम्, विमानयात्रा ।

B

- Balance sheet—दुष्पत्रम् ।
 Ballot box—मतपेटिका ।
 Ballot-paper—मतपत्रम्, शपथपत्रम् ।
 Bank—अभिकार ।
 Banker—अधिकारिन् ।

- Basic Education—आधारिक शिक्षा ।
 Bibliography—ग्रन्थसूची ।
 Bill—१ विधेयम् २ प्राप्पयम् ।
 Biology—जीवविज्ञानम् ।
 Birth control—सन्ताननियन्त्रणम् ।
 Black-out—बिजुत्तरावरोधम् ।
 Blood pressure—रक्तचापम् ।
 Board—मण्डली ।
 Board District—मण्डल, मण्डली पञ्चिका ।
 Board, Municipal—नगर मन्त्री-पञ्चिका ।
 Board of Directors—निदेशकमण्डली ।
 Body—निकायम् ।
 Bonafied—विश्वस्त, प्रामाणिक, सदाशयम् ।
 Bonafides—विश्वस्तता, सदाशयता, प्रामाणिकता ।
 Bond—बन्धपत्रम् ।
 bonus—अधिलभासा ।
 Booking-office—टिकटगृहम् ।
 Broad-cast—प्रसारणम् ।
 Budget—आयव्ययकम् ।
 Bye election—उपनिर्वाचनम् ।
 Bye law—उपविधि ।
 By post—पत्रविभागेन ।
- C**
- Cabinet—मन्त्रिमण्डलम् ।
 Cadet—सैन्यछात्रम् ।
 Calculator—गणकम् ।
 Calendar—निधिपत्रम्, पत्रगणम् ।
 Calory—क्यालोरी ।
 Candidate—१ परीक्षार्थी २ अभ्यर्थी ३ पदार्थी ।
 Cantonment—फटक नगम् ।
 Capital—मूलधनम् ।
 Capsule—पुगी ।
 Case—काण्डम् ।
 Cash Memo—विक्रयपत्रम्, विक्रयिका ।
 Casting vote—निर्णायक मतम् ।
 Casualty—हताहतम् ।
 Cell—१ कोशम् २ कुटी ।
 Census—जनगणना ।
 Central Investigation Agency—केन्द्रियान्वेषणसंस्थानम् ।
 Century—१ शती २ शताब्दी ।
 Cess—उत्तर ।
 Chairman—सभापति ।
 Chamber of Commerce—वाणिज्यमण्डलम् ।
 Chancellor—कुलधिपति ।
 Chancellor, Pro-vice—उपकुलधिपति ।
 Chancellor Vice—कुलधिपति ।
 Charge d' Affairs—कार्यदूतम् ।
 Charge sheet—अरोपपत्रम् ।
 Chart—१ रेखापत्रम् २ चित्रकलत्रम् ।
 Charter—अधिकारपत्रम् ।
 Chartered Accountant—अधिकृतपत्रितवेत्तगणम् ।
 Cheque—चेकम् देयादेशम् ।
 Cheque Bearer—वाहकचेकम् ।
 Cheque, Blank—निरकचेकम् ।
 Cheque, Crossed—रेखितचेकम् ।
 Cheque, Order—आदेशचेकम् ।
 Chief Commissioner—मुख्यायुक्तम् ।
 Chief Judge—मुख्यन्यायाधीशम् ।
 Chief Justice—मुख्यन्यायाधिपतिम् ।
 Chief Minister—मुख्यमन्त्रिन् (५) ।
 Chief of Air staff—वायुसेनाध्यक्षम् ।
 Chief of Army staff—स्थलसेनाध्यक्षम् ।
 Chief of Naval staff—नौसेनाध्यक्षम् ।
 Chief of Protocol—नयाचारप्रमुखम् ।
 C. I. D.—गृहचरविभागम् ।
 Circular—परिपत्रम् ।
 Citizen—जनशक्तिम् ।
 Citizen ship—नागरिकता ।
 Civil—नागरिक, असेनिकम् ।
 Civil Code—व्यवहारसंहिता ।
 Civil Court—व्यवहार न्यायालयम्, व्यवहारालयम् ।
 Civilization—सभ्यता ।
 Civil Service—नागरिकसेवा ।
 Clause—खण्डम्-इम् ।
 Clock tower—घण्टा, गृहम् लम्बम् ।
 Code—संहिता ।
 Collector—समाहृत, समारकम् ।
 Commerce—वाणिज्यम् ।

Commission—१ आयोग २. वर्तनम् ।
 Commissioner—मायुक्त ।
 Committee—समिति (स्त्री) ।
 Committee, Executive, working—
 कार्यकारिणी समिति (स्त्री), कार्यसमिति ।
 Committee, Select—प्रवरसमिति
 (स्त्री) ।
 Committee, Standing—स्थायिसमिति
 (स्त्री) ।
 Commonwealth—राष्ट्रमण्डलम् ।
 Communication—संचार ।
 Communiqué—विहसतिः (स्त्री.) ।
 Communism—सान्ध्यावादः ।
 Community Development—सामु-
 द्वायिक विकासः ।
 Company—समवायः ।
 Compensation—प्रतिवर, क्षतिपूर्ति
 (स्त्री) ।
 Complaint—१ अभियोगः २ परिवादः,
 परिवेदना ।
 Computer—संगणकम् ।
 Confederacy—राज्यसंघः ।
 Confederation—राज्यमण्डलम् ।
 Conference—सम्मेलनम् ।
 Constituency—निर्वाचनक्षेत्रम् ।
 Constituent Assembly—सविधानसभा ।
 Constitution—सविधानम् ।
 Consul—वाणिज्यदूत ।
 Context—सन्दर्भः, प्रसंगः, प्रकरणम् ।
 Continent—महाद्वीपः-पम् ।
 Contingency fund—आकस्मिकतानिधि,
 सांयोगिकनिधिः ।
 Contract—सविदा ।
 Contribution—अनुदानम् ।
 Control—नियन्त्रणम् ।
 Controller General—महानियन्त्रकः ।
 Convassing—उपार्थनम् ।
 Convener—सयोजकः ।
 Convention—१ रुटि (स्त्री) २ संगमनम् ।
 Co-operation—सहयोगः । सहकारिता ।
 Co-operative society—सहकारिमस्था ।
 Co-ordination—समन्वयः ।
 Copy—१ प्रतिनिधि (स्त्री) २ प्रति (स्त्री) ।

Copyright—प्रकाशनाधिकारः ।
 Corporation—निगमः ।
 Cost—परिचयः ।
 Cottage Industry—कुटीरोद्योगः ।
 Council—परिषद् (स्त्री) ।
 Council, Advisory—परामर्शपरिषद्
 (स्त्री) ।
 Council of Ministers—मन्त्रिपरिषद्
 (स्त्री) ।
 Council of States—राज्यपरिषद् (स्त्री.) ।
 Court—न्यायालयः ।
 Court, Criminal—दण्डन्यायालयः ।
 Court, District—मण्डलन्यायालयः ।
 Court, Federal—संघीयन्यायालयः ।
 Court, High—उच्चन्यायालयः ।
 Court, Martial सेनान्यायालयः ।
 Court of Appeal—पुनर्विचारन्यायालयः ।
 Court of Wards—प्रतिपालकाधिकरणम् ।
 Court, Revenue—रानस्वन्यायालयः ।
 Court, Session—सत्रन्यायालयः ।
 Court, Subordinate—अधीनन्यायालयः ।
 Court, Supreme—उच्चतमन्यायालयः ।
 Credential—प्रत्ययपत्रम् ।
 Credit—१ प्रत्यय (हि. साम)
 २. आकलनम् ।
 Criminal Law—दण्डविधि (पु.) ।
 Culture—संस्कृति (स्त्री) ।
 Currency—चलार्थः, मुद्रा ।
 Custodian—अभिरक्षकः ।
 Custody—अभिरक्षा ।
 Custom duty—सीमा-शुल्क शुल्कम् ।

D

Daily diary—दैनिकी ।
 Debt—विकलनम् ।
 Decentralization—विभेददीयकरणम् ।
 Declaration—घोषणा ।
 Decree—आहसि (स्त्री.) ।
 Deed—विदेसः ।
 Defence—रक्षा ।
 Delegate—प्रतिनिधि ।
 Delegation—प्रतिनिधिमण्डलम् ।
 Democracy—लोकतन्त्रम् ।

Demonstrator—निदेशक ।
 Deputation—शिष्टमण्डलम् ।
 Deputy Commissioner—उपायुक्त ।
 Deputy Speaker—उपाध्यक्ष ।
 Designer—रूपकार ।
 Despatcher—प्रेषक ।
 Development Block—विकासखण्ड-रम् ।
 Diplomacy—राजनय, कूटनीति (स्त्री) ।
 Directorate—निदेशालय ।
 Director General—महानिदेशक ।
 Director, Managing—प्रबन्धनिदेशक ।
 Disposal—व्ययनम् ।
 Disqualification—अनर्हता, अयोग्यता ।
 District—मण्डलम् ।
 District Board—मण्डलमण्डली ।
 Dividend—लाभादा ।
 Division—प्रभाग ।
 Divorce—विवाहविच्छेद, विविच्छेद ।
 Document—प्रलेख ।
 Draft—१ प्रारूपम् २. धनार्पणादेश ।
 Draftsman—प्रारूपकार ।
 Drainage—जलनिकास ।
 Drive—अभियानम् ।
 Duplicate Copy—अनुलिपि (स्त्री) ।
 Duty—१ शुल्क-कम्, २ कर्तव्यम् ।
 Duty, Custom—सीमाशुल्क-कम् ।
 Duty, Death—मरणशुल्क-कम् ।
 Duty, Estate—संपत्तिशुल्क-कम् ।
 Duty, Excise—उत्पादशुल्क-कम् ।
 Duty, Export—निर्यातशुल्क-कम् ।
 Duty, Import—आयातशुल्क-कम् ।
 Duty, Stamp—मुद्राशुल्क-कम् ।
 Duty, Succession—उत्तराधिकारशुल्क-कम् ।

E

Election—निर्वाचनम् ।
 Election, Bye—उपनिर्वाचनम् ।
 Election Commission—निर्वाचना-योग ।
 Election, Direct—प्रत्यक्षनिर्वाचनम् ।
 Election, Indirect—परोक्षनिर्वाचनम् ।
 Election, Campaign—निर्वाचनाभि-यानम् ।

Election, Tribunal—निर्वाचनाधिक-रणम् ।
 Flector—निर्वाचक ।
 Electoral Roll—निर्वाचकसूची ।
 Electorate—१ निर्वाचनक्षेत्रम् ।
 २ निर्वाचकसङ्घः ।
 Electorate, Joint—संयुक्तनिर्वाचनपद्धति- (स्त्री) ।
 Electorate, Separate—पृथङ्निर्वाचन-पद्धति (स्त्री) ।
 Electorate, Separate—पृथङ्निर्वाचन-पद्धति (स्त्री) ।
 Embassy—राज, दूतावास ।
 Emergency—आपात ।
 Emigrat on—परावास ।
 Emporium—आषण ।
 Employment Exchange—नियोजन-कार्यालय ।
 Enfranchisement—समाधिकारदानम् ।
 Enquiry clerk—पृच्छलिपिक ।
 Equator—भूमध्यरेखा ।
 Establishment Officer—स्थापना-धिकारिन् ।
 Estates—सम्पत् (स्त्री) ।
 Excise—उत्पादशुल्क-कम् ।
 Executive Engineer—वार्यपालकाभि-यन्तु ।
 Ex-officio—पदेन ।

F

Family Planning Centre—परिवार-नियोजनकेन्द्रम् ।
 Federal—संघीय ।
 Federation—संघ ।
 Fermentation—किण्वनम् ।
 Feudalism—साम-तवाद ।
 Finance—वित्तम् ।
 Financial—वित्तीय ।
 Financial Year—वित्तवर्षं धम् ।
 Fine—अर्थदण्ड ।
 Fire Service—अग्निशमनसेवा ।
 Flying Squad—उड्डयनदल-रम् ।
 Foreign Exchange—विदेशीयवित्तियम् ।

Forensic Science—न्यायवैद्यविज्ञानम् ।
 Form—प्रपत्रम् ।
 Formula—मूलम् ।
 Franchise—मताधिकार ।
 Freedom of press—मुद्रणस्वातन्त्र्यम् ।
 Freedom of speech—भाषणस्वातन्त्र्यम् ।
 Function—कृत्यम् ।
 Fund—निधि ।

G

Gallery—दीर्घा ।
 Gate keeper—द्वारपाल ।
 Gate pass—द्वारपत्रम् ।
 Gazette—राजपत्रम् ।
 Gazetteer—राजपत्रित विवरणम् ।
 Geologist—भू, विज्ञानिन्-वैज्ञानिक ।
 Germ—बीजाणु ।
 Glacier—हिमनदी ।
 Government—शासनम् ।
 Government, Hereditary—वैदिक
 शासनम् ।
 Government, Interim—अन्तरिम
 शासनम् ।
 Government, local self—स्थानीयस्वा
 यत्तशासनम् ।
 Government, Parliamentary—संस
 दीयशासनम् ।
 Government, Presidential—राष्ट्र
 प्रदीय प्रधानीय, शासनम् ।
 Government, self—स्वशासनम् ।
 Government, unitary—एकीयशासनम् ।
 Governor—१ राज्यपाल २ शासक ।
 Grant—अनुदानम् ।
 Grant in aid—महायकानुदानम् ।
 Gratuities—उपदानम् ।
 Guarantee—प्रत्याभूति (स्त्री.) ।

H

Habeas corpus—बन्दिप्रत्यक्षीकरणम् ।
 Handicrafts—हस्तशिल्पम्, हस्तकला ।
 Head Quarter—मुख्यालय, प्रधान
 कार्यालय ।
 Hereditary—वैदिक, आनुवंशिक ।
 Honorarium—मानदेयम् ।

Horticulturist—उद्यानकृषिविशेषज्ञ ।
 Hostess—सत्कारिणी ।
 House—१ मदनम् २ गृहम् ।
 House of people—लोकमहा ।
 Housing Department—आवासविभाग ।

I

Illiteracy—निरक्षरता ।
 Immigrant—अवागिन् ।
 Improvement Trust—नगरसुधार-
 मण्डलम् ।
 Incharge—प्रभारिन् ।
 Indian Administrative Service—
 भारतीय प्रशासनिकसेवा ।
 Indian Council of Agricultural
 Research—भारतीयकृष्यनुसंधानपरिषद्
 (स्त्री) ।
 Indian Council of Medical Re-
 search—भारतीयचिकित्सानुसंधानपरिषद्-
 (स्त्री) ।
 In due course—यथासमयम् ।
 Industry—उद्योग ।
 Industry, cottage—कुटीरोद्योग ।
 In order of merit—योग्यताक्रमेण ।
 Inquiry—परिप्रदन ।
 Inspection—निरीक्षणम् ।
 Institute—संस्थानम् ।
 Institution—संस्था ।
 Insurance—भीमा ।
 International—अन्तर-राष्ट्रीय (द्वि) य ।
 In toto—पूर्णत, पूर्णतया ।
 Investigator—अन्वेषक ।

J

Judge—न्यायाधीश ।
 Judge, additional—अपर-अतिरिक्त,
 न्यायाधीश ।
 Judge, extra—अतिरिक्त-न्यायाधीश ।
 Judiciary—न्यायपालिका ।
 Justice—१ न्याय २ न्यायपति, न्याया
 विपति ।
 Justice, chief—मुख्य, न्यायपति-न्याया
 विपति-न्यायाधीश ।

L

Labour Commissioner—प्रमादुक ।

Land revenue—भूराजस्वम् ।
 Latitude—अक्षांश ।
 Law—विधि (पु) ।
 Law & order—विधिव्यवस्थे (को दि) ।
 Law Commission—विधि आयोग ।
 Legation—इतावास ।
 Legislation—विधानम् ।
 Legislative assembly—विधानसभा ।
 Legislative council—विधानपरिषद् (स्त्री) ।
 Legislature—विधानमण्डलम् ।
 Letter of Introduction—परिचयपत्रम् ।
 Levy—१ आरोपणम् २ उद्ग्रहणम् ।
 Liaison officer—सम्पर्काधिकारिन् ।
 Licence—अनुज्ञप्ति (स्त्री) ।
 Lieutenant governor—उपराज्यपाल ।
 Life Insurance Corporation—जीवनमीमांनिगम् ।
 Literacy—साक्षरता ।
 Local board—स्थानीयमण्डली ।
 Local body—स्थानीयनिकाय ।
 Local government—स्थानीयशासनम् ।
 Longitude—रेखांश ।

M

Major—वयस्क ।
 Majority—१ बहुमतम् २ बहुसंख्या ।
 Mandamus—रामादेश ।
 Manifesto—आविष्यपत्रम् ।
 Marketing officer—पणनाधिकारिन् ।
 Maternity home—प्रसवशाला ।
 Matriarchy—मातृतन्त्रम् ।
 Medical Science—अयुर्विदित्सा, विज्ञानम् ।
 Member—सदस्य ।
 Memo—डाय ।
 Memorandum—पत्रकम्, स्मृतिपत्रम् ।
 Meteorological Department—ऋतु विज्ञान विभाग ।
 Meteorologist—ऋतु, विज्ञानिन् वैज्ञानिक ।
 Migration—प्रवासनम्, प्रवास ।
 Military Engineering Service (M E S) सैनिकवायुविज्ञानसेवा ।

Minerologist—खनिज, विज्ञानिन् वैज्ञानिक ।
 Minister—मन्त्रिन् ।
 Ministry—१ मन्त्रालय २ मन्त्रिमण्डलम् ।
 Minor—अवयस्क ।
 Minority—१ अल्पसंख्यकवर्ग २ अल्प मतम् ।
 Mission—१ उद्देश्यम्, लक्ष्यम् २ प्रचारक-मण्डलम् ।
 Monopoly—एकाधिकार ।
 Motion—प्रस्ताव ।
 Motion of no-confidence—अविश्वास प्रस्ताव ।
 Multipurpose—बहुदेशीय ।
 Municipal area—नगरक्षेत्रम् ।
 Municipal commissioner—नगरपाल, नगरपालिकासदस्य ।
 Municipal corporation—नगरनिगम, नगरमहापालिका ।
 Municipality—नगरपालिका ।
 Museum—संग्रहालय ।

N

Nation—राष्ट्रम् ।
 Nationalization—राष्ट्रीयकरणम् ।
 Nationality—राष्ट्रीयता ।
 National Physical Laboratory—राष्ट्रीयभौतिकप्रयोगशाला ।
 Nomination—मनोनयनम् ।
 Nominee—मनोनीत ।
 Notice—१ सूचना २ सूचनापत्रम् ।
 Notification—अधिघूचना ।
 Notified area—(अधि-) सूचितक्षेत्रम् ।

O

Oasis—मरुस्थानम् ।
 Observatory—वैपशाला ।
 Office—१ कार्यालय २ पदम् ।
 Officer—अधिकारिन् ।
 Officer incharge—प्रभारअधिकारिन् ।
 Official Language—राजभाषा ।
 Officiating—स्थानापन्न ।
 Oligarchy—अतन्त्रम् ।
 Ordinance—अध्यादेश ।
 Organization—संघटनम् ।

Out door patients Department—
बहिरंगरोगविभाग ।

P

Pact—वचनपत्रम् ।
Parliament—सभम् (स्त्री) ।
Parliamentary secretary—संसदीय
सचिव ।
Pass—पारणम् ।
Passport—पारपत्रम् ।
Patents—पत्रत्वम् ।
Patriarchy—पितृपुत्रम् ।
Patron—मरक्षक ।
Penalty—श्राप्ति (स्त्री) ।
Pending—१ लम्बित २ लम्बमान ।
Pension—निवृत्तिवेतनम् ।
Personal Assistant—वैयक्तिकमहापक् ।
Petition—याचिका ।
Planning Commission—योजनायोग ।
Plebiscite—जनमतसंग्रह ।
Police—आरक्षक ।
Police force—आरक्षकबलम् ।
Police station—आरक्षकस्थानम् ।
Poll—मतदानम् ।
Polling station—मतदानस्थानम् ।
Portfolio—मन्त्रिभाग ।
Ports department—पत्तनविभाग ।
Post—१ पत्रम् २ पत्रम् ।
Post-office—पत्रालय ।
Preference—अभिमानम् ।
Prerogative—परमाधिकार ।
President—१ राष्ट्रपति २ प्रधान ।
Prime Minister—प्रधानमन्त्रिन् ।
Post & Telegraph Deptt—पत्रतार
विभाग ।
Private Secretary—निजसचिव ।
Privilege—विशेषाधिकार ।
Privy purse—राजवृत्ति (स्त्री) ।
Procedure—प्रक्रिया ।
Proceedings—* १ कार्यावली, कृत्यावली
* २ कृत्यावलीविवरणम् ।
Proclamation—उद्घोषणा ।
Project—प्रायोजना ।

Promissory note—वचनपत्रम् ।
Proof reader—सुद्धिपत्रसोषक ।
Provident fund—भविष्यनिधि (पु) ।
Provision—१ उपबन्ध २ अन्नमामग्री ।
Provisional—अन्त कालीन ।
Proxy—प्रतिपत्री ।
Public Health—लोकस्वास्थ्यम् ।
Publicity—प्रचार ।
Public Relations Officer—जन
सर्पकाधिकारिन् ।
Public Service Commission—लोक
सेवायोग ।
Public Services—लोकसेवा ।
Public Works Department—लोक-
निर्माणविभाग ।

Q

Quality Control Officer—कौटि
निर्बन्धकाधिकारिन् ।
Quarantine—संगरोध ।
Quorum—गणपूर्ति (स्त्री) ।
Quota—अभ्यंश, नियन्त्रांश ।

R

Railway Board—रेलपथमण्डली ।
Receptionist—स्वागतकर ।
Recommendation—अनुसंज्ञा ।
Record—कमिटेष्ट ।
Records keeper—अभिटेष्टपाल ।
Recruitment—* सैन्यप्रवेश ।
Reference—निर्देश ।
Referendum—परिपृच्छा ।
Regent—राजप ।
Regional—क्षेत्रीय ।
Register—पञ्जी ।
Registered—पञ्जीकृत ।
Registrar—पञ्जीकार, कुलसचिव ।
Registration—पञ्जीकरणम् ।
Regulation—विनियम ।
Rehabilitation Ministry—पुनर्वास-
मन्त्रालय ।
Reminder—अनुस्मारकम् ।
Report—प्रतिवेदनम् ।
Representation—प्रतिनिधानम् ।

Representative—प्रतिनिधि ।
 Republic—गणराज्यम् ।
 Requisition—अधिग्रहणम् ।
 Reservation—रक्षणम्, प्रारक्षणम् ।
 Reserved seat—रक्षित प्रारक्षित, स्थानम् ।
 Retirement—निवृत्ति (स्त्री) ।
 Returning officer—निर्वाचनाधिकारिन् ।
 Revenue—राजस्वम् ।
 Review—पुनर्विलोकनम् ।
 Revision—पुनरीक्षणम् ।
 Rule—नियम ।

S

Safeguard—सुरक्षणम् ।
 Sales Tax—विक्रयकर ।
 Savings—व्यावृत्ति (स्त्री) ।
 Savings bank—व्यावृत्तबैंकम् ।
 Schedule—अनुसूची ।
 Scheduled caste—अनुसूचितजाति (स्त्री) ।
 Scheduled Tribe—अनुसूचितजनजाति (स्त्री) ।
 Secondary Education Board—मध्य विद्यालयसमिति ।
 Secretariate—सचिवालय ।
 Section officer—अनुभागधिकारिन् ।
 Secular—धर्मनिरपेक्ष, वैदिक ।
 Security—१ प्रतिभूति (स्त्री) २ सुरक्षा ।
 Security council—सुरक्षापरिषद् (स्त्री) ।
 Self-determination—आत्मनिर्णय ।
 Session—सत्रम् ।
 Sitting—उपवेश, * उपविष्टि (स्त्री) ।
 Small Scale Industries—लघुद्योग ।
 Socialism—समाजवाद ।
 Social Welfare—समाजवल्यागम् ।
 Sovereign—प्रभु ।
 Sovereign democratic republic—
 संपूर्णसमृत्तसम्पन्नलोकतन्त्रात्मक गणराज्यम् ।
 Speaker—१ अध्यक्ष (लोकसभादीनाम्)
 २ वक्त्र (पु) ।
 Staff—कर्मचारिवृन्दम् ।
 State—१ राज्यम् । २ राष्ट्रम् ।
 State, Buffer—अन्तराष्ट्रम् ।

State, Totalitarian—एकदलराष्ट्रम् ।
 State Trading Corporation—राज्य
 व्यापारनिगम ।
 State, Unitary—एकीयराष्ट्रम् ।
 State, Welfare—हितकारिराष्ट्रम् ।
 Statistician—सांख्यिक ।
 Statistics—सांख्यिकी ।
 Statute—संविधि (पु) ।
 Stenographer—आद्युष्टिक ।
 Steno-typist—आद्युष्टक ।
 Stock Exchange—भेडिचत्वरम् ।
 Store keeper—भाण्डारिन् ।
 Subcontinent—उपमहादीप पत्रम् ।
 Suffrage—मताधिकार ।
 Suffrage, Universal—सर्वमताधिकार ।
 Summon—आवाहनम् ।
 Superintendent—अधीक्षक ।
 Supervisor—पर्यवेक्षक ।
 Supplies—पूत, मभरणम् ।
 Suspension—निलम्बनम् ।
 Surcharge—अधिवर ।
 Survey—सर्वेक्षणम् ।
 Syndicate—अभिवद् (स्त्री) ।

T

Tabulator—तालिक मारणी, कार ।
 Tariff—शुल्कसूची ।
 Tax—कर ।
 Tax, Direct—प्रत्यक्षकर ।
 Tax, Entertainment—प्रमोदकर,
 मनोरञ्जनकर ।
 Tax Indirect—परोक्षकर ।
 Tax, Export—निर्यातकर ।
 Tax, Income—आयकर ।
 Tax, Sales—विक्रयकर ।
 Tax, Super—अधिवर ।
 Tax, Terminal—सीमाकर ।
 Technician—प्रविधिज्ञ ।
 Technique—प्रविधि ।
 Tele communication—दूरसंचार ।
 Telegraphist—तारमकेतक ।
 Telephone Exchange—दूरभाषकेन्द्रम् ।
 Tenure—पदावधि (पु) कार्यकाल ।

Territory—राज्यक्षेत्रम् ।
 Terrorism—आतङ्कवाद ।
 Terrorist—आतङ्कवादिन् ।
 Theocracy—धर्मतन्त्रम् ।
 Theory—सिद्धान्त ।
 Through proper channel—विधिवत् ।
 Time keeper—समयपाल ।
 Toll—पयकर ।
 Totalitarianism—एकदलवाद ।
 Tourist—पर्यटक ।
 Tourist Depatt—पर्यटनविभाग ।
 Tracer—अनुरेखक ।
 Tractor—कर्षकरथ ।
 Trade mark—व्यापारचिह्नम् ।
 Trade Union—कामिकसंघ ।
 Traffic—यातायातम् ।
 Training—प्रशिक्षणम् ।
 Training, Technical—प्रविधि प्रशि-
 क्षणम् ।
 Tramcar—रथयायानम् ।
 Transfer—१ स्थानान्तरणम् २ हस्तान्-
 रणम् ।
 Transition—संक्रमणम् ।
 Transport—परिवहनम् ।
 Treaty—संधि (पु) ।
 Tribe—जनजाति (स्त्री) ।
 Tribunal—न्यायाधिकरणम् ।
 Tropic of Cancer—कर्करेखा ।
 Tropic of Capricorn—मकररेखा ।
 Trust—न्यास ।
 Trustee—न्यास निक्षेप, धारिन् ।
 Tube well—नलकूप ।
 Typist—टंकक ।

U

Under Secretary—अवरसचिव ।
 Union—संघ ।
 Union Public Service Commi-
 ssion—संघसंसेवायोग ।
 Unit—एककम् ।
 United Nations Organization—
 संयुक्तराष्ट्रसंघ ।

V

Vacancy—१ रिक्तस्थानम् २ रिक्ति-
 (स्त्री) ३ रिक्तता ।
 Verification officer—सत्यापनाधिका-
 रिन् ।
 Veto—प्रतिषेध, रोध, अधिकार ।
 Vice President—उपराष्ट्रपति ।
 Village Industry—ग्रामोद्योग ।
 Visas—दृष्टांक ।
 Vote—मतम् ।
 Vote by ballot—गुप्तमतदानम् ।
 Vote of censure—निन्दाप्रस्ताव ।
 Voter—मतदानु (पु) ।
 Vote, Single Transferable—एक-
 सङ्गमणीयमतम् ।

W

Warrant—अभिपत्रम् ।
 Will—इच्छापत्रम् ।
 Wireless operator—विनायप्रबालक ।
 Works Manager—वर्धनालाप्रबन्धक ।
 Writ—आदेशलेख ।

Z

Zonal Council—अर्धराज्यपरिषद् (स्त्री) ।

चतुर्थ परिशिष्ट

छन्दःपरिचय

छन्द—संस्कृत में रचना प्रायः दो प्रकार की होती है—गण और पद्य । छन्द-रहित रचना को गण कहते हैं और छन्दोबद्ध रचना को पद्य । जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि के नियमों से युक्त होती है, उसे छन्द कहते हैं । जिन ग्रन्थों में छन्दों के स्वरूप तथा प्रकार आदि का विवेचन रहना है, उन्हें छन्द शास्त्र कहते हैं ।

वर्ण या अक्षर—छन्द शास्त्र की दृष्टि से केवल व्यंजन (क ख आदि) अक्षर या वर्ण नहीं कहलाते । अव्यय स्वर या व्यंजन-सहित स्वर अक्षर कहलाता है । 'आ', 'वा' और 'कान्' में छन्द शास्त्र की दृष्टि से एक ही अक्षर है क्योंकि उनमें स्वर तो केवल एक 'आ' ही है । छन्द में अक्षर गिनते समय व्यंजनों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता ।

गुरु, लघु—ह्रस्व अक्षरों (अ, इ, उ, ऋ, लृ) को छन्द शास्त्र में लघु कहते हैं और दीर्घ अक्षरों (आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ) को गुरु । इसी प्रकार क, कि आदि लघु अक्षर हैं और का, की आदि गुरु । छन्द शास्त्र में निम्नलिखित को गुरु अक्षर माना गया है—

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गो च गुरुर्भवेत् ।

वर्णं सयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा ॥

अर्थात् अनुस्वार युक्त, दीर्घ, विभक्तयुक्त और सयुक्त अक्षरों से पूर्व वर्ण गुरु होना है । छन्द के पाद या चरण का अन्तिम अक्षर आवश्यकतानुसार लघु या गुरु माना जा सकता है । सो इस श्लोक के अनुसार 'कस' में 'क', 'काल' में 'का', 'दु रा' में 'दु' और 'युक्त' में 'यु' गुरु अक्षर हैं । छन्द के चरणों की लम्बाई और गति को ठीक रखने के लिए अक्षरों के गुरु-लघु के भेद को सम्यक् हृदयगम कर लेना चाहिए । गुरु का चिह्न (ऽ) है और लघु का (।) ।

गण—छन्द शास्त्र में तीन-तीन अक्षरों के समूह को गण कहा गया है । उन गणों के नाम, स्वरूप तथा उदाहरणों को निम्नलिखित तालिका से समझ लेना चाहिए—

गण-नाम	संक्षिप्तनाम	लक्षण	संकेत	उदाहरण
१ मगण	म	तीनों अक्षर गुरु	५ ५ ५	मा-भता, विपार्थी
२ नगण	न	तीनों अक्षर लघु	। । ।	निगम, सरल
३ भगण	भ	प्रथम अक्षर गुरु	५ । ।	भारत, कुविभ
४ यगण	य	प्रथम अक्षर लघु	। ५ ५	यशोदा, सुमित्रा
५ जगण	ज	मध्यम अक्षर गुरु	। ५ ।	त्रिगीषु, जवान
६ रगण	र	मध्यम अक्षर लघु	५ । ५	राधिका, राक्षसी
७ मगण	स	अन्तिम अक्षर गुरु	। । ५	मविता, कमला
८ लपण	त	अन्तिम अक्षर लघु	५ ५ ।	तारेण, आकाश

गणों का स्वरूप स्मरण रखने के लिए निम्नलिखित श्लोक कण्ठस्थ कर लेना चाहिए—

मसिगुरुखिलद्युश्च नकारो
भादिगुरु, पुनराविलद्युश्च ।
जो गुरुसभ्यगतो, रलसभ्य
सोऽन्तगुरु, कथितोऽन्तलद्युस्त ॥

अर्थ—मगण में तीना गुरु, नगण में तीनों लघु भगण में आदि का अक्षर गुरु, वगण में अदि का लघु, अगण में मध्यम गुरु, नगण में मध्यम लघु सगण में अन्तिम गुरु और तगण में अन्तिम लघु होता है ।

मात्रा—हरव या लघु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है उसे एक मात्रा कहते हैं और दीघ या गुरु के उच्चारण-काल को दो मात्रा । इसलिए जब छंदा में मात्राओं की गिनती की जाती है तब लघु की एक और गुरु की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं । छन्द शास्त्र में एक अक्षर को मात्राएँ दो से अधिक नहीं होतीं परन्तु सगीत में स्वर को यथेष्ट मात्राओं तक बढ़ाया जा सकता है । एक ही शब्द में अक्षरों और मात्राओं की संख्या समान भी हो सकती है और भिन्न भिन्न भी । जैसे—'कल' में दो अक्षर हैं और दो ही मात्राएँ, 'काल' में दो अक्षर और तीन मात्राएँ, 'काला' में दो अक्षर और चार मात्राएँ ।

गति—छन्दों में अक्षरों या मात्राओं की नियत संख्या से ही काम नहीं बनता, उनमें गति अर्थात् लय या प्रवाह का भी ध्यान रखना पड़ता है । वार्षिक छन्दों में तो प्रायः गणों का क्रम प्रवाह को अनुगुण रखता है परन्तु मात्रिक छन्दों में इसकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता रहती ही है । जैसे—

अक्ष सुखमाराध्य सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञ ।

ज्ञानलघुदुर्बिद्धं महापि नर त न रज्जयति ॥ (भृश्रर)

यदि उपयुक्त आवांछन्द को चों पढ़ें—

'आराध्य सुखमक्ष विशेषक्ष आराध्यते सुखतरम्' तो कान झरत बता देते हैं कि इसमें आवांछन्द की गति नहीं रही ।

गति—जिन छन्दों के एक एक चरण में अक्षरों या मात्राओं की संख्या थोड़ी होती है उन्हें पढ़ने में तो कोर बठिन इ नहीं होती परन्तु लम्बे चरणों के पाठ में बचन में रुकना ही पड़ता है । उस बिधाम स्थल को ही यति या विराम कहते हैं । कुशल कवि इस बात का ध्यान रखते हैं कि यति किमी शब्द की समाप्ति पर ही आए परन्तु कभी-कभी वह किमी शब्द के मध्य में भी आ जाती है ।

चरण—अधिकतर छन्दों में चार चरण पाठ या पठित्या होती हैं, परन्तु कभी-कभी छन्द न्यूनधिक चरणों के भी विचार देते हैं ।

छन्दों के भेद—छन्दों के मुख्य भेद दो हैं—वार्षिक छन्द और मात्रिक छन्द । मात्रिक छन्द को जानि छन्द भी कहा जाता है । वार्षिक छन्दों में वर्णों की संख्या और गणक्रम पर विशेष ध्यान रहना है तथा मात्रिक छन्दों में मात्राओं की संख्या और गति पर । वगवृत्तों के चरणों में गुरु लघु-वचन प्रायः समान होता है, परन्तु मात्रिक छन्दों में यह बंधन नहीं होता । उक्त दोनों भेदों के तीन तीन अर्थ-तर भेद भी होते हैं—सम छन्द, अर्द्धसम छन्द और विषम छन्द । सम छन्दों के चारों चरणों में वर्णों या मात्राओं की संख्या समान होती है । अर्द्धसम छन्दों में प्रथम

और तृतीय चरणों की तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों की अक्षर या मात्रा-संख्या समान होती है। जो छन्द उक्त दोनों वर्णों में नहीं आते, उन्हें विषम कहते हैं।

नीचे संस्कृत के कुछ प्रसिद्ध छन्दों का परिचय प्रस्तुत किया जाता है। विस्तार के लिए छन्दःशास्त्र, नृचरत्नावर, छन्दोमञ्जरी आदि ग्रन्थ द्रष्टव्य हैं।

(ऋ) वर्णवृत्त, सम्मल्लुन्द

प्रति चरण ८ अक्षरवाले छन्द

(१) अनुष्टुप् (अन्य नाम—श्लोक)

लक्षण—श्लोके षष्टं गुरु ज्ञेयं, सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।

द्विचतु-पादयोर्ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥

अर्थ—इसके प्रत्येक पाद का पाँचवाँ वर्ण लघु होता है और छठा गुरु। सप्त (द्वितीय तथा चतुर्थ) चरणों का सातवाँ वर्ण लघु होता है और विषम (प्रथम तथा तृतीय) चरणों का सातवाँ वर्ण गुरु। शेष वर्णों के विषय में लघु गुरु की स्वतंत्रता है।

उदाहरण—यदा यदा हि धर्मस्य; ग्लानिर्भवति भारत ।

। ५ ५ । ५ ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

। ५ ५ । ५ ।

(२) विद्युन्माला

लक्षण—मो मो गो गो विद्युन्माला ।

अर्थ—मगण, मगण और दो गुरु के क्रम से इसके प्रत्येक चरण में ८ वर्ण होते हैं; अर्थात् सब चरणों के सब वर्ण गुरु।

उदाहरण—

म म

गु गु

(क) मौनं ध्यानं भूमौ शय्या, गुर्वो तस्याः कामाऽऽस्था ।

५ ५ ५, ५ ५ ५, ५ ५

मेघोत्सङ्गे नृत्तासक्ता, यस्मिन्काले विद्युन्माला ॥

(ख) गगा माता तेरी धारा, कटै फरा मेरा सारा ।

विद्युन्माला जैसी सीढ़ी, बीचोमांला तेरी मोढ़ी ॥ (सुधादेवी)

प्रति चरण १० अक्षरवाले छन्द

(१) रवमवती (अन्य नाम—चम्पकमाला)

लक्षण—भ्रौ सगद्युक्तौ रवमवतीयम् ।

अर्थ—रवमवती के प्रत्येक पाद में मगण, मगण, सगण और गुरु के क्रम से १० वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

भ म स

(क) भग्नमसत्त्वं कायसहस्रैः, मोहमयी गुर्नी तव माया ।
 s 11, s s s, 11 s, s

स्वप्नद्विलासा योगवियोगा, स्वमेवती'हा कस्य कृते श्रीः ॥

(ख) शान्ति नहीं तो जीवन क्या है, कान्ति नहीं तो जीवन क्या है ।
 प्रेम नहीं तो आदर क्या है, प्यास नहीं तो सागर क्या है ।

(रामनरेश त्रिपा० >

(२) मत्ता

लक्षण—मत्ता ज्ञेया मभमगयुक्ता (विराम ४, ६) ।

अर्थ—मत्ता के प्रत्येक चरण में भगण, भगण, सगण और गुरु के क्रम से १० वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

भ भ स

पीत्वा मत्ता मधु मधुवाली, कालिन्दीये तटवनकुञ्जे ।
 s s 's, s' 11, 11 s, s

उद्दीव्यन्तीर्षजजनरामाः, कामासक्ता मधुजिति चक्रे ॥

प्रति चरण ११ अक्षरवाले छन्द

(१) इन्द्रवज्रा

लक्षण—स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ ग । (विराम पादान्त में)

अर्थ—इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में दो तगण, जगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

त त ज

(क) गोष्ठे गिरि सव्यकरणे धृत्वा,
 s s 1, s s 1, s 1 s s

राटेन्द्रवज्राहतिभुक्तपृष्टौ ।

यो गोकुलं गोपकुलं च सुस्थं,
 चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणि ॥

(ख) मैं जो नया ग्रन्थ विलोकना हूँ,
 भाला मुझे सो नव मित्र सा है ।
 देखूँ उने मैं नित बार बार,
 मानो मित्र मित्र मुझे पुराना ॥ (गिरधर शर्मा)

(२) उपेन्द्रवज्रा

लक्षण—उपेन्द्रवज्रा क्षतजास्ततो गौ । (विराम पादान्त में)

अर्थ—उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और दो गुरु अक्षरों के क्रम से ११ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

ज त ज

(क) जि० जगत्पे भवन्नमस्तै-
 १५ १,५५१, १५१,५५
 गुंरुदितं ये गिरिसं स्मरन्ति ।
 उपास्यमानं कमलासनाद्यै-
 रुपेन्द्रमजायुधवारिनाथं ॥

(ख) वडा कि छोटा कुछ काम फीने,
 परन्तु पूर्वापर मोच लीने ।
 बिना बिबारे यदि काम होगा,
 कमी न अच्छा परिणाम होगा ॥ (मैथिलीकरण गुप्त)

(३) उपजाति

लक्षण—त्रिम छन्द के कुछ चरण इन्द्रवज्रा के हों और कुछ उपेन्द्रवज्रा के, वने उपजाति कहते हैं। इनके १३ भेद होते हैं।

टि०—मम-न-मत्यक अक्षर तथा समान यनिवाले अन्य छन्दों के भी इसी प्रकार के मिश्रण का नाम उपजाति ही है। जैसे वसुस्थ और इन्द्रवज्रा (१२ १२ अक्षरों के छन्द) के मिश्रण से भी उपजाति छन्द बनता है।

उदाहरण—(क) उत्साहसम्पन्नमदीर्घैर्मुने, (इन्द्र.)
 क्रियाविधिज्ञ व्यसनेष्वसक्तम् । (उ.)
 शूरं कृतज्ञ हृदयैर्द्वंद्वं च, (इ.)
 लक्ष्मीः स्वयं वाञ्छति वासहेतोः ॥ (उ.)

(ख) इच्छा न मेरी कुछ भी बनीं मे, (इ.)
 कुबेर का भी जग में कुबेर । (उ.)
 इच्छा मुझे एक वहाँ सदा है, (इ.)
 नये नये उत्तम प्रथ देखू ॥ (उ.) (गिरधर शर्मा)

(४) दोषक (अन्य नाम—बन्धु)

लक्षण—दोषकनामनि भवत्यतो गौ । (विराम पाद के अन्व मे)

अर्थ—दोषक छन्द के प्रत्येक चरण में ऽसि भगण और दो युक्त के क्रम से ११ वंश होते हैं।

उदाहरण—

म भ म

— — — गु गु

(+) दोषकमर्याद्विरोधकमुषं
 ५११, ५११, ५११, ५५,
 छीचपलं युधि कातरचित्तम् ।
 स्यापरं मतिहीनममार्थं
 मुञ्चति यो वृपतिः स सुखी स्यात् ॥

(ख) पाकर मानव-देह धरा में,
पादाववृत्ति तजो जितना है।
पुष्प विषाण विहीन पद जो,
होन न चाहत प्रेम करो तो ॥ (रामवहोरी शुक्ल)

(५) शालिनी

लक्षण—शालिन्युक्ता स्त्री तर्गा शोऽन्धिलोकैः ॥ (५, ७ पर विराम)

अर्थ—शालिनी के प्रत्येक पाद में मगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से ११ अक्षर होते हैं। अन्धि (५) और लोक (७) पर विराम होता है।

उदाहरण—

म त त

(क) अंधो हन्ति ज्ञानवृद्धि विघ्नते
ॐ ॐ ॐ, ॐ ॐ ॐ, ॐ ॐ ॐ, ॐ ॐ ॐ, ॐ ॐ ॐ
धर्म दत्ते काममर्थं च सूते।
मुक्ति दत्ते सर्वदोषास्यमरणा,
पुंसां श्रद्धाशालिनी विष्णुभक्ति ॥

(ख) कैमी कैमी ठोकरें पा रहा है,
तीखी पीड़ा चित्त में ला रहा है।
तौ भी प्यारे! हाल तेरा वही है,
बिद्वानों की पदती क्या यही है ॥ (छन्दमिक्षा)

(६) रयोद्धता

लक्षण—राजराविह रथोद्धता लगी। (विराम पाद के अन्त में)

अर्थ—रयोद्धता के प्रत्येक चरण में रगण, नगण, रगण और लघु गुरु के क्रम से ११ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

र न र

कि त्वया सुभट! दूरवर्जितं
ॐ ॐ ॐ, ॐ ॐ ॐ, ॐ ॐ ॐ, ॐ ॐ ॐ
नारत्मनो न मुहदा प्रियं कृतम्।
यत्पलायनपरायणस्य ते
याति धूलिरधुना रयोद्धता ॥

(७) स्वागता

लक्षण—स्वागतेति रनभाद्गुरयुग्मम्। (पादान्त में विराम)

अर्थ—स्वागता के प्रत्येक पाद में रगण, नगण, भगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

र न भ

— — — गु गु

(क) स्तनभङ्गविमलैर्गुणवुक्ते-

S I S, I I I, S I I, S S

रधिनामभिमतारणसकै ।

स्वागताऽभिमुखनम्रशिरस्केः

जीव्यते जगति साधुभिरेव ॥

(ख) रानि । भोगि गदि नाथ कन्हादे,

साथ गोप जन आवत भाई ।

स्वागतार्थं मुनि आतुर माना,

पाद देखि मुद सुन्दर गाता ॥ (भातु कवि)

प्रति चरण १२ अक्षरवाले छन्द

(१) वंशस्थ (नामान्तर-वंशस्थविल तथा वंशस्तनित)

लक्षण—जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जतौ । (पादान्त मे विराम)

अर्थ—वंशस्थ के प्रत्येक पाद मे जगण, तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं ।

उदाहरण—

ज त ज र

(क) जनस्य तीव्रात्पजातिवारणा

I S I, S S I, I S I, S I S

जयन्ति मन्तः सततं समुज्जता ।

सितात्पन्नप्रतिमा विभान्ति ये

विशालवंशस्थतया गुणोचिताः ॥ (सुवृत्तिलक)

(ख) स्वरूप होता जिनका न भव्य है,

न वाक्य होने जितके मनोप है ।

अतीव प्यारा बनता मदैव है

मनुष्य मो भी गुण के प्रभाव मे ॥ (हरिऔष)

(२) इन्द्रवंशा

लक्षण—स्यादिन्द्रवंशा ततजैरसंयुतै । (पादान्त मे विराम)

अर्थ—इन्द्रवंशा के प्रत्येक पाद मे दो तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ वर्ण होने हैं ।

उदाहरण—

त त ज र

(क) कुर्वन्ति यो देवगुरर्दिजन्मना-

S S I, S S I, I S I, S I S

मुर्वीपतिः पालनमर्थलिप्मया ।

तस्येन्द्रवंशोऽपि गृहीतजन्मन-

सञ्जायते श्रीः प्रतिकूलवर्तिनी ॥

- (ख) यों ही बडा हेतु हुए बिना कहीं,
होने बटे लोग कठोर यों नहीं ।
वे हेतु भी यों रहते युगुम हैं,
ज्यों अदि अम्भोनिधि में प्रसृत हैं ॥ (चन्द्रहास)

(३) तोटक :

लक्षण—इह तोटकमम्बुधिमे. प्रथितम् । (पादान्न में विराम)

अर्थ—तोटक के प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं ।

उदाहरण—

स स स स

- (क) स्यञ्च तोटकमर्थनियोगकरं
।। ५, ११५, ११५, ११५
प्रमदाऽधिकृत स्वमनोपहतम् ।
उपवाभिरशुद्धमति सच्चिदं
नरनायक ! भीरुकमायुधिकम् ॥ (छन्दोवृत्ति)

- (ख) अब लों न कहीं बड़ देस भिना,
इसका न जिसे उपदेश भिदा ।
उम गौरव के गुण अन्न हुए,
गुरु के गुरु शिष्य समस्त हुए ॥ (नायूराम शंकर)

(४) द्रुतविलम्बित

लक्षण—द्रुतविलम्बितमाह नभो भरी । (पादान्न में विराम)

अर्थ—द्रुतविलम्बित के प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण और रगण के क्रम में १२ अक्षर होते हैं ।

उदाहरण—

न न भ र

- (क) तरणिजापुलिने नखरलर्वा-
।।।, ५ ।।, ५ ।।, ५ ।।
पत्रिपदा सह केलिकुन्डलात् ।
द्रुतविलम्बितचारविहारिण
हरिमहं हृदयेन सदा बहे ॥ (छन्दोमन्त्री)

- (ख) मन ! रमा रमणी रमणीयता,
मिल गई यदि वे विवि योग में ।
पर निमि न मिन्दी कविना-मुधा
रमिकता निकतात्मन है उसे ॥ (रामचरित उपाध्याय)

(५) मौक्तिकदाम

लक्षण—स्तुजगण चद्र मौक्तिकदाम । (पादान्न में विराम)

अर्थ—मौक्तिकदाम (हिन्दी, मौक्तियदाम) ँद के प्रत्येक चरण में चार ङगण के क्रम में १२ अक्षर होते हैं ।

उदाहरण—

ज ज ज ज

- (क) मया तव किञ्चिदकारि कदापि,
 । ५ ।, । ५ ।, । ५ ।, । ५ ।
 विलाग्निनि । वाक्यमनुस्मरताऽपि ।
 तथापि मनस्तर नाश्रगनाय,
 वजामि कुतो भवतीमपहाय ॥ (वाणीभूषण)
- (ख) बडे जन को नहि माँगन जोग,
 फदै हल साधन में लडु लोग ।
 रमापनि विष्णु अलग अनूप,
 धर्या एहि कारण वामन रूप ॥ (देवीप्रसाद पूण)

(६) भुजङ्गप्रयात

लक्षण—भुजङ्गप्रयात भवेद्यैश्चतुर्भिः । (पादान्त में विराम)

अर्थ—भुजङ्गप्रयात के प्रत्येक खरण में चार यगण के क्रम से १२ वर्ण होने हैं ।

उदाहरण—

य य य य

- (क) धनैर्निष्कुलीना कुलीना भवन्ति,
 । ५ ५, । ५ ५, । ५ ५, । ५ ५
 धनेरापद मानवा निस्तरन्ति ।
 धनेभ्य परो बान्धवो नास्ति लोके,
 धनान्यर्जयध्वम् धनान्यर्जयध्वम् ॥
- (ख) अजन्मा न आरंभ तेरा हुआ है,
 किसी से नहीं जन्म तेरा हुआ है ।
 रहेगा मदा अत्र तेरा न होगा,
 किसी काल में नाश तेरा न होगा ॥ (नाथूरामशंकर)

(७) स्रग्विणी

लक्षण—रैश्चतुर्भिर्युता स्रग्विणी सम्मता । (पादान्त में वृत्ति)

अर्थ—स्रग्विणी के प्रत्येक पाद में चार यगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं ।

उदाहरण—

र र र र

- (क) इन्द्रनीलोपलनेव धा निमिता
 ५ । ५, ५ । ५, ५ । ५, ५ । ५
 शान्तुम्भद्रवालुकता शोभते ।
 नव्यमेघच्छवि पीतवासा हरे-
 मूर्तिरास्ता जयायोरमि स्रग्विणी ॥

(ख) वे गृही धन्य है जो मनोहारिणी,
निष्ठभाषी सुशीला मन्दाचारिणी ।
धर्मशीला सनी धीरताधारिणी,
सुन्दरीशुक्ल है प्रेमशृङ्गारिणी ॥ (रामनेत्र विपाठी)

प्रति चरण १३ अक्षरवाले छन्द

(१) प्रहृषिणी

लक्षण—श्यामाभिर्मनजरगा प्रहृषिणीयम् । (विराम ३, १०)

अर्थ—प्रहृषिणी छन्द के प्रत्येक पाद में मगण, नगण, जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं । तीन और आदा (दिशा १०) पर यति होती है ।

उदाहरण—

म न ज र

(क) ते रेखाध्वजकुलिशातपन्नचिह्नं,
S S S, 111, 1 S 1, S 1 S, S
सम्राजक्षरणयुगं प्रसादलभ्यम् ।
प्रस्थानप्रणतिभिरगुलीषु च
भौलिस्त्रकृच्युतमकरन्दरेणुगौरम् ॥ (रघुवश ४८८)

(ख) मानो जू, रँग रहि प्रेम मे तुम्हारे,
पानों के, तुमहि अहार ही हमारे ।
वैसी ही, विचरहु राम हे कन्हारं,
भावे जो, शरद प्रहृषिणी जुन्दारं ॥ (भानुकवि)

(२) रुचिरा (नामान्तर—अतिरुचिरा)

लक्षण—चतुर्प्रैरतिरुचिरा जभस्जगा । (विराम ४, ९ पर)

अर्थ—रुचिरा या अतिरुचिरा छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, भगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं । चार और प्रह (९) पर यति होती है ।

उदाहरण—

ज भ स ज

(क) कदा मुख घरतनु कारणाहते,
1 S 1, S 1 1, 1 1 S, 1 S 1, S
तदागतं क्षणमपि कौपपात्रताम् ।
भदर्वणि प्रहकलुपेन्दुमण्डला,
विभावरी कथय कथ भविष्यति ॥ (मालविकाग्निमित्रम् ४१३)

प्रति चरण १४ अक्षरवाले छन्द

(१) वसन्ततिलका (अन्य नाम—सिहोरता तथा उद्धाषिणी)

लक्षण—उक्ता वसन्ततिलका तभज्जा जगौ ग ।

अर्थ—वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक पाद में तगण, भगण, दो जगण और दो गुरु के क्रम से १४ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

- त भ ज ज
- (क) $\overbrace{\text{जाह्य}} \overbrace{\text{धियो}} \overbrace{\text{हरति}} \overbrace{\text{मिदति}} \overbrace{\text{वाचि}} \overbrace{\text{सत्यं}} \text{गुगु}$
 ५ ५ १, ५ ११, १ ५ १, १ ५ १, ५ ५
 मानोवतिं दिनानि पापमपाकरोति ।
 चेतः प्रमादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
 मत्संगतिः कथय किं न करोति पुमाम् ॥ (नीतिशतक)
- (ख) रोगी दुर्वा विपन प्रायन मे पडे की,
 सेवा बनेरु करते निज हस्त से धे ।
 देसा निकेत वन में न मुझे दिखाया,
 कोरुं जहाँ दुस्ति हो पर वे न होवें ॥ (हरिऔध)

प्रति चरण १५ वर्णवाले छन्द

(१) मालिनी

लक्षण—ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोके । (विराम ८, ७ पर)

अर्थ—मालिनी के प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण और दो यगण के क्रम से १५ अक्षर होते हैं । भोगी (८), लोके (७) पर यति होती है ।

उदाहरण—

- न न म य य
- (क) $\overbrace{\text{मनसि}} \overbrace{\text{वचमि}} \overbrace{\text{काये}} \overbrace{\text{पुण्यपीयूषपूर्णा-}} \overbrace{\text{स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः}} \overbrace{\text{प्रीणयन्त-}} \text{।}$
 १११, १११, ५ ५ ५, १ ५ ५, १ ५ ५
 परगुणपरमाणु, पर्वतीकृत्य नित्यं
 निजदृदि विक्रसन्तः, समित सन्तः क्रियन्तः ॥ (नीतिशतक)
- (ख) सहृदय जन के जो, कठ का द्वार होता,
 मुदिन मधुकरी का, जीवनधार होता ।
 बह कुमुन रंगीला, धूल में जा पडा है,
 नियति नियम तेरा, भी बटा ही कहा है ॥ (रूपनारायण पंडित)

(२) चामर (अन्य नाम—तूणक)

लक्षण—तूणक समानिका पदद्वयं विनान्तियम् ॥ (विराम ८, ७)

अर्थ—तूणक या चामर छन्द के प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण के क्रम से १५ अक्षर होते हैं । आठवें और पादान्त में यति होती है ।

उदाहरण—

- र ज र ज र
- (क) $\overbrace{\text{मा}} \overbrace{\text{सुवर्णकेतकं}} \overbrace{\text{विकादि}} \overbrace{\text{भृङ्गपूरितं}} \overbrace{\text{पंचगणयाणजालपूर्णहेनितूणम्}} \text{।}$
 ५ १५, १ ५ १, ५ १ ५, १ ५ १, ५ १ ५
 राधिकर वितर्क्य माधवाद्यमासि माधवे,
 मोहमेति निर्भरं स्वया विना बलानिधे ॥

- (ख) मत्तदन्ति-राज राजि, वापिराज राजि कै,
हेम हीर मुक चौर, चारु नाज साजि कै ।
वेप वेपवाहिनी, अशेष वस्तु सोधि यो
दाहजो विदेहराज, भौंनि भौंनि को दिवो ॥ (केशवदाम)

प्रति चरण १६ वर्णवाले छन्द

पचचामर

- लक्षण—जरी जरी ततो जगौ च पचचामरं चढेत् ॥ (८, ८ या ४, ४, ४, ४ पर विराम)
अर्थ—पचचामर छन्द के प्रत्येक पाद में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और गुरु के क्रम
में १६ वर्ण होते हैं । ८, ८ या ४, ४, ४, ४ पर यति होनी है ।

उदाहरण—

ज र ज र ज

- (क) $\overbrace{सुर} \overbrace{द्रु} \overbrace{मूल} \overbrace{मण्डपे} \overbrace{विचित्र} \overbrace{रत्ननिर्मिते} \overbrace{गु}$
। ५।, ५। ५, । ५।, ५। ५, । ५।, ५
लसद्वितानभूषिते सलीलविभ्रमालसम् ।
सुरागानाभयलवीकरप्रपंचचामर—
स्फुरत्समीरवीजित सदाच्युतं भजामि तम् ॥
- (ख) उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से भरा कृतार्थ भाव मानती ।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कृजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती ॥ (मैथिलीशरण गुप्त)

प्रति चरण १७ वर्णवाले छन्द

(१) शिखरिणी

- लक्षण—रसे रुद्रैश्छिद्य यमनमभला ग- शिखरिणी । (६, ११ पर विराम)
अर्थ—जिस छन्द के प्रत्येक चरण में बगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु-गुरु के
क्रम से १७ अक्षर हों तथा रम (६) और रुद्र (११) पर यति हो उसे शिखरिणी कहते हैं ।

उदाहरण—

थ म न स म

- (क) $\overbrace{करे} \overbrace{श्लाघ्य} \overbrace{स्व्यागः} \overbrace{शिरमि} \overbrace{गुरपाद्} \overbrace{प्रथयित्वा},$
। ५ ५, ५ ५ ५, । । ।, । । ५, ५ । ।, । ५
मुखे सत्या वापी, निजधिभुजयोर्वीर्यमनुलम् ।
हृदि स्वच्छा वृत्ति, श्रुतमधिगतं च श्रवणयो-
र्विनाप्यैश्वर्येण, प्रकृतिमद्वितां मण्डनमिदम् ॥ (भर्तृहरि)
- (ख) छटा कैगी प्यारी, प्रकृति निय के चन्द्रमुख की
नया भोग ओढ़े, बसन चटकीला गगन का ।
जरी-अ-मा-रूपी, जिस पर मितारे सब जड़े
गळे में स्वर्गा, अनिलिन माला सम पड़ी ॥ (सत्यशरण रतूड़ी)

(२) पृथ्वी

लक्षण—जसौ जसयला वसुप्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः । (८, ९ पर विराम)

अर्थ—पृथ्वी छन्द के प्रत्येक पाद में अगण, सगण, अगण, सगण, यगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ वर्ण होते हैं। वसु (८) और ग्रह (९) पर यति होती है।

उदाहरण—

- ज स ज स य ल गु
 (क) लभेत सिरुतासु तैलमपि यन्नतः पीडयन्
 । १ ।, । १ ।, । १ ।, । १ ।, । १ ।, । १ ।, । १ ।
 पिबेच्च सुगृह्णिकामु सलिलं पिपासादिवः ।
 कदाचिदपि पर्यटन्नाशविपाणामासादयेत्
 न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥ (भृगुहरी)
- (ख) अगस्त ऋषिरात्र जू, बचन एक भरे सुनी,
 प्रद्यस्त राव भानि भूनल सुदेश जी में सुनी ।
 सुनीर तरुखड मंडिल समृद्ध शोभा धरे,
 तहाँ हम निवाम की, विमल पर्णशाला करे ॥ (रामचन्द्रिका)

(३) हरिणी

लक्षण—समरसलागः पङ्क्तेर्देहेर्हेरिणी मता । (६, ४, ७ पर विराम)

अर्थ—हरिणी के प्रत्येक चरण में नगण, सगण, मगण, रगण, सगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ अक्षर होते हैं। छठे, दसवें और सत्रहवें अक्षर के बाद विराम होता है।

उदाहरण—

- न स म र स ल गु
 वहति भुवनधेर्णी शेषः फणाफलकस्थिता,
 । १ ।, । १ ।, । १ ।, । १ ।, । १ ।, । १ ।, । १ ।
 कमठपतिना मध्येष्टुं सदा स च धार्यते ।
 तमपि कुट्ने क्रोडाधीनं पयोधिरत्नाद्रा-
 दहह महतां नि.सीमानश्चरित्रविभूतयः ॥ (भर्तृहरि)

(४) मन्दाक्रान्ता

लक्षण—मन्दाक्रान्ताम्बुधिरमनगौर्मो भनौ तो गयुगमम् । (४, ६, ७ पर विराम)

अर्थ—मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक पाद में मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से १७ अक्षर होते हैं। अम्बुधि (सगण ४), रत्न (६) और नग (७) पर यति होती है।

उदाहरण—

- म भ न त त गु गु
 (क) मौनान्मूकः, प्रवचनपटुर्वाचको जल्पको वा,
 । १ ।, । १ ।, । १ ।, । १ ।, । १ ।, । १ ।, । १ ।
 एष्टः पार्श्वे भवति च वसन्तूरतोऽप्यप्रगल्भः ।
 क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः,
 सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥ (भर्तृहरि)

- (ख) जो लवेगा, चूपनि मुझ से, दब दूंगी करोड़ों,
लोटा थाली, सहिन तनके, बख भी बँच दूंगी ।
जो मंगिया, हृदय बह तो, काढ दूंगी उसे भी
बैठा तेरा गमन मथुरा, मैं न आँखों लखूंगी ॥ (हरिऔध)

प्रतिचरण १९ वर्णवाले छन्द

(१) शार्दूलविक्रीडित

लक्षण—सूर्याश्वमेसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम् । (१२, ७ पर विराम)
अर्थ—शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, दो तगण और गुरु के क्रम से १९ वर्ण होते हैं । यति सूर्य (१२) और अश्व (७) पर होती है ।

उदाहरण—

म स ज स त त

- (क) केयूराणि न भूषयन्ति पुरर्षं हारा न चन्द्रोज्ज्वला,
SSS, I I S, I S I, I I S, S S I, S S I, S
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः ।
वाण्येका समलङ्करोति पुरर्षं या संस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥ (मर्त्यहरि)
- (ख) छोटे और बड़े जहाज जल में, देखो वहाँ वे खड़े,
सो भी वृक्ष विचित्र किन्तु हमको, वे हानिकारी बड़े ।
ले जाते बरवस्तु देनामर की जाने वहाँ की कहीं,
छाते केवल उपरी चटक की, चीजें विदेशी यहाँ ॥ (कन्हैयालाल पोद्दार)

प्रति चरण २० वर्णवाले छन्द

(१) गीतिका

लक्षण—सजजा भरी सलगा यदा कथिता तदा खलु गीतिका । (५, ७, ८ पर विराम)
अर्थ—गीतिका छन्द के प्रत्येक चरण में सगण, जगण, जगण, मगण, रगण, सगण और लघु गुरु के क्रम से २० वर्ण होते हैं । पाँचवें, बारहवें और बीसवें अक्षर के बाद यति होती है ।

उदाहरण—

स ज ज म र स

- (क) करवालचंचलकंठं कणस्वनमिधमेन मनोरमा,
I I S, I S I, I S I, S I I, S I S, I I S, I S
रमणीयवेषुनिनादरगिमसंगमेन सुखावहा ।
बहुलानुरागनिवामराससमुद्भवा तत्र रागिणे,
विदधौ हरिं खलु वल्लवीजनचारचामरगीतिका ॥
- (ख) सज जीम री ! सुखी सुखी छुन मो वहा चिद भावके,
नय बान् लकखन जानबी सह राम को नित मायके ।
पद मो शरीरहि राम के बान् धाम की लय धावह,
कर चीन ले अनि दीन है निग गीति बान् सुनावह ॥ (भानु कवि)

प्रति चरण २१ वर्णवाले छन्द

(१) स्रग्धरा

लक्षणा—अभ्रैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् । (७, ७, ७ पर विराम)

अर्थ—स्रग्धरा के प्रत्येक पद में मगण, रगण, भगण, नगण और तीन धगण के क्रम से २१ अक्षर होते हैं । सानवें, चौदहवें और इक्कीसवें अक्षर के अन्त में यति होती है ।

उदाहरण—

म र म न य य य

(क) प्राणाधातास्त्रिभृतिः, परधनहरणे संयमः, सत्यवाक्यं,

५ ५ ५, ५ १ ५, ५ १ १, १ १ १ १ ५ ५, १ ५ ५, ५, १ ५ ५

काले शक्या प्रदानं, युवतिजनक्या, मूकभावः परेषाम् ।

वृष्णास्रोतोविभंगो, गुरुषु च विनयः, सर्वभूतानुकम्पा,

सामाज्यं सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः, श्रेयसामेष पन्थाः । (मर्वहारी)

(ख) नाना फूलों-फूलों में, अनुपम जग की, बाटिका है विविधा,

भोका है श्वैशं हो, मधुप शुक्र तप कोकिला गानशील ।

दौष्ट भी है अनेकों, पर धन हरने में सदा अग्रगामी,

दोई है एक माली, सुधि इन सबकी, जो सदा ले रहा है ॥ (रामनरेश त्रिपाठी)

(ख) वर्णवृत्त, अर्द्धसप्त छन्द

(१) वियोगिनी (अन्य नाम—सुन्दरी)

लक्षणा—विषमे ससजा गुरुः समे, सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी ।

अर्थ—वियोगिनी के विषम (प्रथम, तृतीय) चरणों में दो सजा, जगण और गुरु के क्रम से

१०-१० अक्षर और सम (द्वितीय, चतुर्थ) चरणों में मगण, भगण, रगण, लघु और गुरु के क्रम से ११-११ अक्षर होते हैं । (१०, ११, १०, ११) ।

उदाहरण—

स स ल

(क) सहसा विदधीत न क्रियाम्,

१ १ ५, १ १ ५, १ ५ १, ५

अविवेकः परमापदां पदम् ।

पृणुते हि विदुष्यकारिणं

स भ र

लघु

गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥ (विराताजुनीय २।३०)

१ १ ५, ५ १ १, ५ १ ५, १ ५

(ख) चिर-काल रमाल ही रहा,

दिस भावस्य वकीन्द्र का कहा ।

दय हो उस कालिदास की,

कविता-कैलि-कला-विलास की ॥ (छन्दरत्नावली)

(२) हरिणप्लुता

लक्षण—सयुगात् सलघू विषमे गुर्युंजि नभौ भरकौ हरिणप्लुता ।

अर्थ—हरिणप्लुता छन्द के विषम चरणों में तीन सगण और लघु-गुरु के क्रम से ११-११ अक्षर और सम चरणों में नगण दो भगण और रगण के क्रम से १२-१२ अक्षर होते हैं ।

(११, १२, ११, १२)

उदाहरण—

स स स
 ल गु
 स्फुत्फेनचया हरिणप्लुता,
 ।। ५, ।। ५, ।। ५, । ५
 वलिमनोज्ञनटा तरणे सुता ।
 कलहसकुलारवशालिनी,
 न भ भ र

विहरतो हरति स्म हरेर्मन ॥ (छन्दोमञ्जरी)
 ।।।, ५ ।।, ५ ।।, ५ । ५

(३) अपरवक्त्र

लक्षण—अयुजि ननरला गुर समे ।

तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ ॥

अर्थ—अपरवक्त्र वृत्त के विषम चरणों में दो नगण, एक रगण और लघु-गुरु के क्रम से ११ १२ अक्षर और समचरणों में नगण, दो जगण और रगण के क्रम से १० १२ अक्षर होते हैं ।

(११, १२, ११, १२)

उदाहरण—

न न र
 ल गु
 स्फुटमुमधुरवेणुगीनिभि-
 ।।।, ।।।, ५ । ५, । ५
 स्तमपरवक्त्रमवेच माधवम् ।
 सुगयुवतिगर्भं नम स्थिता
 न ज ज र

मजवनिता घृतचित्तविभ्रमा ॥ (छन्दोमञ्जरी)
 ।।।, ५ ।।, ५ । ५, । ५

(४) पुष्पिताम्रा (नामान्तर औपच्छन्दसिका)

लक्षण—अयुजि नयुगरेषतो यकारो,

सुनि च ननौ जरगाश्च पुष्पिताम्रा ।

अर्थ—पुष्पिताम्रा के विषम चरणों में दो नगण, रगण और दगण के क्रम से १० १२ अक्षर तथा सम चरणों में नगण, दो जगण, रगण और गुरु के क्रम से ११ १३ अक्षर होते हैं ।

(१०, १३, १०, १३)

उदाहरण—

न न र य

(क) अथ मदनवधूपप्लवान्त

॥ १, १११, १११, १११

व्यसनकृशा परिपालयांबभूव ।

शशिन इव दिवातनस्य लेखा

न ज ज र

किरण परिक्षयधूसरा प्रदापम् ॥ (बुमारसम्मव ४४६)

॥ ११, १११, १११, १११, १

(ख) प्रमु सम नहि अन्य वोद दाना,

सुष न जु ध्यावत तीन लोक त्राणा ।

मकल असन कामना विहई,

हरि नित मेवहु मित चित्त नई ॥ (मानुक्वि)

(ग) वर्णवृत्त, विष्णु छन्द

उद्गता

लक्षण—प्रथमे सञौ यदि सलौ च नसजगुरुक्काण्यनन्तरम् ।

यद्यथ भनजलगाः स्युरभो सजसा जगौ च भवतीयमुद्गता ॥

अर्थ—उद्गता के प्रथम चरण में साण, जगण, सगण और लघु के क्रम से १० अक्षर, द्वितीय चरण में नगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १० अक्षर, तृतीय चरण में भगण, नगण, जगण और लघु गुरु के क्रम से ११ अक्षर तथा चतुर्थ चरण में सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १३ अक्षर होते हैं । (१०, १०, ११, १३)

उदाहरण—

स ज स

अथ वासवस्य वचनेच,

॥ १, १११, १११, १

न स ज

रचिरवदनखिलोचनम् ।

॥ ११, १११, १११, ११

भ न ज

बलान्तिरहितमभिराधयितुं,

॥ १, १११, १११, ११

स ज स ज

विधिवत्तपांसि विदधे धर्मजयः ॥ (किरानाजुनीय १११२)

॥ ११, १११, १११, १११, १

(घ) मात्रिक वा जाति छन्द

आर्या (विषम छन्द)

लक्षण—यस्या. पादे प्रथमे, द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।

अष्टादश द्वितीये, चतुर्थके पञ्चदश सार्या ॥

अर्थ—आर्याछन्द के प्रथम और तृतीय चरण में १२ १२ मात्राएँ, द्वितीय में १८ तथा चतुर्थ में १५ मात्राएँ होती हैं । (१०, १८, १२, १५ मात्राएँ)

उदाहरण—

	१ १ १ १ १ १ १ १	
(क) सिंह शिशुरपि निपतति,		= १२
	१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	
मदमलिनकपोलभित्तिषु राजेषु ।		= १८
	१ १ १ १ १ १ १ १ १ १	
प्रकृतिरियं सत्त्वयता,		= १२
	१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	
न खलु वयस्तेजसा हेतु ।		= १५

(ख) कवि निर्धन भी होकर,
शठ की सेवा कभी न करता है ।
रत्नाकर में जाकर,
हंस कभी क्या विचरना है ॥ (रामचरित उपाध्याय)



पञ्चम परिशिष्ट

संस्कृत-साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय

अनांगद्वर्ष—ये चेदिदेश के कल्चुरीवंशीय रूप नरेन्द्रवर्धन के पुत्र थे। वारसविक नाम माडराज (माडराज) था। समय अष्टम शतक का उत्तरार्ध है। इनकी कृति 'तापस वत्सराज' (नाटक) में उदयन तथा वासवदत्ता की प्रसिद्ध कथा है। 'मायुराजसमो जडे नान्य कल्चुरिः कवि' (राजशेखर)।

अप्यय दीक्षित—इनका जन्म भारद्वाजगोत्रीय रघुराज के गृह में १५५४ ई० में काञ्ची के समीप अणपलम में हुआ था। ये अनेक वर्षों तक बेल्लोर और विजयनगर की राजसभाओं में सम्मानित रहे। प्रख्यात वैयाकरण भट्टोजीदीक्षित को वेदान्त इन्हीं ने पढाया था। पूर्व तथा उत्तरमीमांसा के ये पारङ्गता पंडित थे। १६२६ ई० में इन्होंने ग्यारह विद्वान् पुत्रों की उपस्थिति में विश्वम्बरम् में सहस्रं प्राणविसर्जन किया। काव्य, अलंकार, तर्क, दर्शन आदि अनेक विषयों पर इन्होंने १०४ ग्रंथों की रचना की जिनमें से काव्यकृतियाँ निम्नलिखित हैं—(शिवपञ्चाशिका, दशकुमार चरितप्रबंध, पंचरत्नस्तव, शिष्यकर्णामृत, वैराग्यशतक, भक्तामरस्तव, शान्तिस्तव, रामावण-कार्यनिर्णय, भरतस्तव, बरदराजस्तव, आदिशरत्नोरत्न आदि। बशुमतीचित्रमेगधिलास (नाटक), चित्रमीमांसा, वृत्तिवास्तिक, दुवल्लदानन्द (अलंकार) आदि के अतिरिक्त इन्होंने कई ग्रंथों पर टीकाएँ भी रची हैं।

अमरक—इस कवि का वंश, देश, बाल आदि अज्ञात हैं। आनन्दवर्द्धन ने 'ध्वन्यालोक' में इन के 'अमरकदातक' के श्रद्धारी मुसकों की सरसता की मुसकठ से प्रशंसा की है। अतः ये नवमी गुणान्दी से पूर्व विद्यमान थे। वे शब्द-कवि न थे, रस-कवि थे। हिन्दी के विद्यारी, पद्याकर आदि कवियों पर इनके काव्य का पर्याप्त प्रभाव लक्षित होता है।

अश्वघोष—संस्कृत के बौद्ध कवियों में सर्वश्रेष्ठ हैं। इनका जन्म साकेत में सम्भवतः मालवप्रदेश में सुवर्णाक्षी के गर्भ से हुआ था। परम्परानुसार ये महाराज कनिष्क (७८ ई०) के गुरु तथा आश्रित कवि थे। ये दार्शनिक तथा सगीनक भी थे। बौद्ध बनने के बाद इन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार में भरसक सहयोग दिया। 'सोन्दरानन्द' तथा 'बुद्धचरित' इनके प्रख्यात महाकाव्य हैं। 'सोन्दरानन्द' के १८ सर्ग हैं। उनमें बुद्ध के उपदेश से उनके अनुचर नन्द द्वारा पत्नी सुदरी के परित्याग तथा दीक्षाग्रहण की कथा है। 'बुद्धचरित' के २८ सर्गों में से १७ उपलब्ध हैं और बुद्धचरित विषयक हैं। वैदभी रीति में रचित ये महाकाव्य संस्कृत काव्यमहाहित्य के अलंकार हैं। अश्वघोष संस्कृत के प्रथम बौद्ध नाटककार हैं। इनके तीन नाटक उपलब्ध हुए हैं। 'शारिपुत्र-प्रवर्णन' नौ अंकों में है और पूर्ण है। इसमें बुद्ध के उपदेश से शारिपुत्र और मीदगल्लायन के दीक्षित होने का उल्लेख है। शेष दो नाटक तुष्यनामक और सन्निहत हैं। उनमें एक का कथानक 'प्रबोधचन्द्रोदय' के समान रूपकथक है और दूसरे का 'वृण्डकवि' के तुल्य वेदान्तिकप्रणयकथक।

आश्वर्य—ये बौद्धकवि सम्भवतः पाँचवीं शत-की में विद्यमान थे। 'जातकमाला' तथा 'पारमिता-समाप्त' इनकी दो प्रख्यात कृतियाँ हैं। इनकी कीर्ति का आधार-स्तम्भ 'जातकमाला' है जिसमें गार्हमा बुद्ध के ३४ जन्मों की कथाएँ गद्य पद्यमयी सरस भाषा में वर्णित हैं। दूसरे काव्य में दान, शील, क्षान्ति आदि विषयों पर रचना की गई है। 'जातकमाला', 'पारमितास' के आधार पर रचित स्वतंत्र कृति हैं। इसके 'पद्यभाग के समान गद्यभाग भी सुश्लिष्ट, सुन्दर तथा सरस

है।' जातकमाला के कुछ अंश का चीनी में अनुवाद १६० और ११७७ ई० के मध्य में किया गया था।

कलहण (कल्याण)—इनके पिता कणक काश्मीरनरेश हर्ष (१०४८-११०१ ई०) के प्रधानमंत्री थे। ये अलकदत्त नामक व्यक्ति के आश्रित थे। इन्होंने राज-दरवार से दूर रहकर अपनी प्रवृत्तता ऐतिहासिक काव्यकृति 'राजतरंगिणी' की रचना मुस्तल के तनुज राजा जयसिंह (११२७-५९ ई०) के शासनकाल में की थी। 'राजतरंगिणी' का निमित्तकाल ११४८-११५० ई० है। इसमें काश्मीर के राजनीतिक इतिहास, भौगोलिक विवरण, सामाजिक व्यवस्था, साहित्यिक मसूदा आदि का सविस्तर और रोचक उल्लेख किया गया है। 'राजतरंगिणी' काव्य तथा इतिहास दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण कृति है जिमें काश्मीर के प्राचीन काल से लेकर बारहवीं शती तक का विश्वसनीय वृत्त प्रस्तुत किया गया है।

कविराज सूरि—जयन्तपुरी के राजा कामदेव (११८७-९७ ई०) के सभापटित माधवमठ की ही उपाधि कविराज थी। इनकी रचना 'राघवपाण्डवीय' अपने ढंग की अपूर्व कृति है जिसका अनुकरण परवर्ती अनेक कवियों ने किया। इसका प्रत्येक पद्य छिष्ट है और रामायण तथा महाभारत दोनों से सम्बन्धित अर्थ व्यक्त करता है। इसी के अनुकरण पर हरदत्त ने 'राघव नैषधीय', चिदंबर ने 'राघवपाण्डवयादवीय' और विद्यामाधव ने 'पार्वतीरमणनीय' नामक काव्यों की सृष्टि की। इस प्रकार की छिष्ट रचनाएँ सस्कृत के अतिरिक्त सभी भाषाओं में अलभ्य हैं और सम्भवतः अलभ्य रहेंगी।

कालिदास—कुछ विद्वान् इन्हे ई० पू० प्रथम शताब्दी में मानते हैं तो कुछ छोटी शती ई० में। कोई इनकी जन्मभूमि काश्मीर मानता है, कोई बंगाल और कोई उज्जयिनी। बहुमत उज्जयिनी के प्रति विशेष पक्षपात तथा सूक्ष्म भौगोलिक परिचय के आधार पर कालिदास उज्जयिनीवासी प्रतीत होते हैं।

कृतियाँ—ऋतुसंहार, कुमारसम्भव, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, रघुवश, अभिज्ञान शाकुन्तल, मेघदूत।

'कुमारसम्भव' तथा 'रघुवश' महाकाव्य हैं। 'कुमारसम्भव' के १७ सर्गों में शिव-पार्वती के विवाह, कार्तिकेय की उत्पत्ति तथा तारकासुर के वध की कथा है। 'रघुवश' के १९ सर्गों में सूर्य वशी राताओं का कीर्तमान है। मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशाकुन्तल—तीनों नाटक हैं। प्रथम में राजा अग्निमित्र और मालविका की, द्वितीय में राजा पुरूरवा और अप्सरा उर्वशी की तथा तृतीय में राजा दुष्यन्त और शाकुन्तला की प्रेमकथा का वर्णन है। 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' मस्कृत गीतिकाव्य की प्राचीनतम कृतियाँ हैं। ऋतुसंहार के १४ सर्गों में षट्सतुओं का सुन्दर वर्णन है तथा उनका प्रेमियों के हृदय पर प्रभाव अंकित किया गया है। 'मेघदूत' के १२१ पदों में एक निर्वासित विरही यक्ष की मनोव्यथा का हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है। कालिदास की सर्वप्रियता का कारण है उनकी प्रसादपूर्ण, ललितोपेत, परिष्कृत शैली। इन्होंने नभी ग्रन्थ वैदर्भी रीति में लिखे हैं। उपमाओं में ये अपना जोड़ नहीं रखते। भाव, रस, भाषा, शैली, छन्द, अलंकार जिस किमी भी दृष्टि से देखें कालिदास उत्कृष्टतम ठहरते हैं।

कुमारदास—मिहल की जनश्रुति के अनुसार कुमारदास ने वहाँ ५१७-५२६ ई० तक शासन किया था। आधुनिक विद्वान् इन्हे ६५० और ७५० ई० के बीच में मानते हैं। इनके महाकाव्य 'जानकीहरण' के २५ में से १५ सर्ग ही प्राप्त हैं। कथा रामायण की पुरानी ही है परन्तु बगन्त-शैली अभिरूप है। प्रसाद, सुकुमारता, शब्दसौष्ठव तथा भादसौन्दर्य कृति के उल्लेख्य गुण हैं। रामशेखर (९०० ई०) ने इसकी प्रशंसा में यों लिखा है—

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति ।

कवि कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षम ॥

रघुवंश की विद्यमानता में जानकीहरण करना या तो रावण का काम है या फिर कुमारदाम का।
कृष्ण मिश्र—'बोधचन्द्रोदय' नामक रूपक नाटक के रचयिता कृष्ण मिश्र नेबालमुक्ति के राता
 कीर्तिवर्मा के शासनकाल में ११०० ई० के लगभग विद्यमान थे। भाम के 'बालचरित' के समान
 इस नाटक में विवेक, मोह, ज्ञान, विद्या आदि भावों को स्त्री पुरुष पात्रों के रूप में कल्पित किया
 गया है। इसी कृति के अनुकरण पर यशपाल ने 'मोहनराज्य', बंकरनाथ ने 'मङ्गलसूर्योदय'
 तथा कविकर्णपुर ने 'चैतन्यचन्द्रोदय' की रचना की। हिन्दी कवि केशवदाम ने 'विज्ञानगीता'
 में इसका छन्दोबद्ध अनुवाद किया है। दार्शनिक दृष्टि में कृति महत्त्वपूर्ण है।

सोमेश्वर—सिंधु के पौत्र तथा प्रकाशेश्वर के पुत्र क्षेमेन्द्र का जन्म काश्मीर के एक धनाढ्य और
 उदार परिवार में हुआ था। इन्होंने आचार्य अभिनवगुप्त में साहित्याध्ययन किया था। वे
 ११वीं शती के मध्य में विराजमान थे। शैवमठल में रहते हुए भी वे परम वैष्णव थे और
 इसका कारण था भागवताचार्य सोमपाद की शिक्षा।

इनके बृहदाकार अनेक ग्रंथों में प्रमुख ये हैं—राम यमजरी, भ रतमजरी तथा बृहत्कथा
 मञ्जरी। ये क्रमशः रामायण, महाभारत और युगाद्ध की बृहत्कथा के आधार पर रचिन स्वतंत्र
 काव्यकृतियाँ हैं। 'दशावतारचरित' में विष्णु के दशावतारों का तथा 'बोधिमत्त्वावदान'
 कल्पलता' में जानक कथाओं का सरल सुन्दर वर्णन है। अन्धकार कृतियों में कलाविलाम, चतुर्वर्ग
 मगध, चारुचर्या, नीतिकल्पतरु, समयमादका और सेव्यमेवतोपदेश व्यवहारविषयक सुन्दर
 काव्यकृतियाँ हैं। इसकी रचना में साहित्यिकता से पूर्ण भी हैं और लोकोपकार की भावना से
 ओज प्रीत भी।

गोवर्धनाचार्य—वे बंगाल के अन्तिम हिन्दू नरेश लक्ष्मणसेन (१११६ ई०) की सभा के प्रति
 श्रित कवि थे। 'आयासप्तशती' इसकी एकमात्र रचना है जो 'हाल' की 'गाथासप्तशती' के
 अनुकरण पर रचित है। 'गाथासप्तशती' तो हालकृत संग्रह है परन्तु 'आयासप्तशती' केवल
 आचार्य की रचना है। इसमें सयोग तथा वियोग शृंगार की विविध दशाओं का मार्मिक चित्रण
 पुष्ट आर्वा छन्द में किया गया है। नागरिक ललनाओं की शृङ्गारिक चैष्टाओं तथा ग्रामीण
 रमणियों की स्वामाविक उत्कियों का उल्लेख अत्यन्त रमणीय है। हिन्दी के बिहारी आदि शृङ्गारी
 कवि भी इसके प्रभाव में अडूते नहीं रहे।

जगन्नाथ (पंडितराज)—आंध्र ब्राह्मण जगन्नाथ काशीनिवासी पेरुमट्ट तथा लक्ष्मीदेवी के
 पुत्र थे। इन्होंने काव्य और अलंकार का अध्ययन अपने पिता से किया और न्याय, व्याकरण
 आदि विषयों का ज्ञानेन्द्रमिश्र, महेशाचार्य, खण्डदेव, शेष वीरेश्वर आदि से। दिल्लीपर शाहजहाँ
 (शासन १६२८-६६ ई०) ने इन्हे दाराशिकोह के शिक्षार्थ दिल्ली में बुल्वा लिया था। उसके
 पश्चात् बृहदावस्था में इनका स्वर्गवास १६७४ ई० में मथुरा में हुआ। कहते हैं, किमी यवनी के
 प्रेमजाल में फँसने के कारण इन्हे स्वजानीयों का वीपमानन भी बनना पड़ा था।

गंगालहरी, सुपालहरी, अमृतलहरी, कर्णालहरी और लक्ष्मीलहरी इनके सरस काव्यस्तोत्र
 हैं। 'जगदानरण' में दाराशिकोह का, 'आमङ्गलिलाम' (गद्यकाव्य) में नवाब आसफ़जहाँ का और
 प्राणामरण' में कामरूपधिपति प्राणनारायण का वर्णन है। इसकी अन्य कृतियाँ 'चित्रमीमांसा
 रादन', मनोरमाकुचमर्दन तथा 'भामिनीविलाम' हैं। इसकी सर्वोत्तम कृति 'रसगंगाधर' नामक
 अलंकार शास्त्र है जिसमें इनके प्रकाण्ड पाण्डित्य तथा अप्रतिम काव्य प्रतिभा का पूर्ण परिचय
 प्राप्त होता है। इन्होंने अपने पाण्डित्य और कवित्व पर जो अभिमान था, वह अनुचित न था।

जयदेव—मान अंकों के प्रसिद्ध मस्कृत नाटक 'प्रसन्नराघव' के कर्ता जयदेव का परिचय अभी
 निमित्ताच्छल है। सुनते हैं, वे मिथिलावासी थे। वे १४वीं शती से पूर्व हुए हैं। 'प्रसन्नराघव'
 में रामायणीय कथा सुचारु रीति से चित्रित की गई है। मज्जल पदावली तथा प्रमादोपेत कविता

के कारण नाटक का नाम स्थल है। 'रामचरितमानस' के कई स्थलों पर इन तांत्रिक और कवि का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है।

जयदेव—अमर काव्य "गीतगोविन्द" के रचयिता जयदेव जगन्निधिपति लक्ष्मणसेन (१११६ ई०) के समकालीन थे। बंगाल के बन्दुखिल नामक स्थान में इनका जन्म हुआ था। वे राधाकृष्ण की भक्ति के रस में पूर्णतया डूबे हुए थे और उसी रस से पूर्ण 'गीतगोविन्द' नामक गीतिकाव्य भी है। २२ मंत्रों का यह गीतिकाव्य इतना सरस व मधुर है कि कालिदास की कृतियों की भी मात करता है। भाव-सौष्ठव, कल्पनोत्कर्ष और सुललित पदावली के कारण रचना अपने दम की एक ही है।

तिरुमलादा (रानी)—एक जन्तु राय की पत्नी तिरुमलादा ने 'वरदानिकापरिणयचम्पू' की रचना १५५९ ई० के बीच में किसी समय की। इसमें अच्युत राय और बरदानिका के प्रेम तथा परिणय का वर्णन है। सम्भव है, रानी ने नमनन्तर से अपनी ही कथा अन्तित की हो। कृति से कवी की पुष्ट कल्पना तथा संस्कृत भाषा पर पूर्ण अधिभार का परिचय मिलता है।

त्रिविक्रम भट्ट—शाहित्यशास्त्र। त्रिविक्रम वा सिद्धादित्य, नेमादित्य (देवादित्य) के पुत्र थे। राष्ट्रकूट नृपति तुताय इन्द्र (९१४-९१६ ई०) के समकालीन थे। 'नलचम्पू' (दमयन्तीकथा) और 'मदालसाचम्पू' इनकी विख्यात कृतियाँ हैं। ये संस्कृत-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ रत्न-कवि हैं। 'नलचम्पू' में सरस तथा चमत्कारपूर्ण श्लेषों का प्रानुय है। इस कृति के वननीय उद्धरणों को भोजरान तथा विश्वनाथ ने अनेकत्र उद्धृत किया है। नलचम्पू संस्कृत का प्रथम उपलब्ध चम्पू है।

दही—कहा जाता है कि दही का जन्म भारवि की चौथी पत्नी में हुआ था। इनकी माता का नाम गौरी तथा पिता का वीरदत्त था। ये सप्तमी राती के उत्तरार्द्ध तथा अष्टमी के पूर्वार्द्ध में विद्यमान थे और काशी के पल्लवनेशों की सभा में रहते थे।

इनकी तीन रचनाएँ हैं—दशकुमारचरित, काव्यादर्श तथा अवन्तिमुदरीकथा (?)। एक किंवदन्ती के अनुसार दहाने काव्यादर्श की रचना पल्लवनेश के पुत्र के शिषार्थ की थी। 'दशकुमारचरित' नामक प्रथम गद्यकाव्य में दस कुमारों के रोमाञ्जनक चरित प्रस्तुत किये गये हैं। छन्द-अपद, मारकट तथा स्तयान्त से परपूर्ण होने के कारण रचना अत्यन्त समीच है। पात्रों के चरित्र सुन्दर शैली में हैं तथा हास्य और व्यंग्य से पूरा है। भाषादली के विचार में भी यह रचना उत्कृष्ट है। भाषा प्रवाहपूर्ण, परिष्कृत तथा मुहावरों में अच्युत है। जो पदलक्षणत्व दही में है वह अन्यत्र दुर्लभ है। कहा भी है—'दृष्टिन् पदलक्षण्यम्'। कुछ आलोचक वामाङ्कि और व्यान के अनन्तर उन्हें ही तीसरा कवि मानते हैं—

जाते जगति वाग्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत् ।

कवी इति ततो व्यासे कवयस्त्रयि दृष्टिनि ॥

दामोदर मिश्र—इनके महानाटक 'हनुमत्कवच' की रचना ८५० ई० के पूरुत हुई थी। इसमें १४ अंक हैं और कथानक रामायण पर आधुन है। प्रस्तावना और प्राकृत का अभाव, पद्यों की मधुरता, गद्य की सुन्दरता, पात्रों की बहुला तथा विरुद्ध की अविद्यमानता इनकी मुख्य विशेषताएँ हैं। इसके दो स्वरूप हैं—प्रथम दामोदर मिश्र द्वारा, द्वितीय किमें ९ अंक हैं, मधुसूदन-रचित हैं।

दिदनाग—'कुन्दनाग' नामक रचयिता दिदनाग या धीरनाग (अथवा धीरनाग) पाँचवीं शती के बौद्ध दार्शनिक दिदनाग से संबंधा भिन्न है। ये १००० ई० के लगभग हुए हैं। 'कुन्दनाग' की कथा 'उत्तररामचरित' के स्नान वैदेहीवनकाम पर आधुन है। इन पर उत्तर रामचरित का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। यह नाटक 'उत्तररामचरित'भा सरस तो नहीं परन्तु किवाड तथा में उससे बढ़कर है। शैली प्रभावपूर्ण है तथा करणरस की व्यञ्जना अच्छी हुई है।

धोयी—जयदेव ने 'गीतगोविन्द' (१४) में धोया का 'श्रुतिर' लिखा है। ये गावर्धनाचार्य तथा जयदेव के साथ राजा लक्ष्मणसेन (१११६ ई०) की सभा में विद्यमान थे। मद्राकान्ता छन्द में लिखे हुए इनका 'पवनदूत' में १०४ पद्य हैं। मलयालक में कुवलयकर्तृनाम्नी गावर्धकन्या लिखितगी लक्ष्मणसेन पर आभक्त हो गई और उसने उनके निदेश जाने पर पवन द्वारा संदेश भेजा। 'पवनदूत' का प्रभाव इस कृति पर स्पष्ट दिखाई देता है। काव्य में भावमोघव तथा वाक्यविग्रह मनोरम हैं।

नारायणरुण्डिन—यं बंगाल के राजा धरलचन्द्र के आश्रित थे। इन्होंने १४वीं शती में पूर्व 'दिनोपदान' की रचना बहुत सीमा तक 'पञ्चतंत्र' के आधार पर की। यह लोक काल-द्वैतीय नीतिशास्त्र से लिखा गया है। हितोपदेश में नीति-शास्त्र की रोचक गद्य-पद्यमयी रचनाएँ हैं। भाषा सरल एवं सुराज है।

पद्मगुप्त—ये धारानदेश मुक्त तथा उनके पुत्र मिथुराज (नवमाहमाक) के मन्त्र-कवि थे। इन्होंने 'नवमाहमाक चरित' काव्य की रचना म० १००५ ई० के आस-पास की थी। काव्य का निरपेक्ष कृति नाम से ही अनुमित हो जाता है। उसमें मिथुराज और शशिप्रभा के विवाह आदि का उल्लेख है। पैनिसामिक तथ्यों की दृष्टि से भी कृति महत्त्वपूर्ण है। कृति में १८ सर्ग तथा १९ प्रकार के छन्द हैं और कुल १५०० पद्य हैं। भाषा व शैली कल्पितराम से प्रभावित है। काव्य का माधुर्य तथा वर्णनशैली प्रशंस्य है।

बाणभट्ट—बाणभट्ट के पूर्व अत्यन्त विद्वान् थे और सोनवीरवर्ती प्रीतिकूट नगर में रहते थे। बाण भूज में वाग्मयादनगोत्री चित्रमानु के गृह में हुआ था। कुमरगति में पत्र-र बाण पहले तो आचार्य धूमने रहे परन्तु भैरवने पर महान् विद्वान् तथा सम्राट हर्षवर्धन के समारत्न बन गये। बाण अपनी 'कादम्बरी' को पूरा नहीं कर पाये थे कि राजा का निमन्त्रण आ पहुँचा। उस अपूर्ण कृति को इनका पुत्र पुलिन या पुलिन्दभट्ट ने पूर्ण किया। कहते हैं बाण का विवाह मयूर कवि की पुत्री से हुआ था और उनकी एक भिन्न मान्यता थी। बाण का स्फुरण सातवीं शती में हुआ। उनकी प्रख्यात कृतियाँ ये हैं—

१ 'बाणदीशतक' में देवी भगवती की प्रशंसा है।

२ 'हर्षचरित' के प्रथम दो उच्छ्वासों में कवि का आत्मचरित है और दोष-हर्ष में हर्ष का चरित। यह रचना बड़ी ओजस्विनी तथा समासबहुला है। संस्कृत की प्राचीनतम उपलब्ध आर्य विक्रम बड़ी है।

३ 'कादम्बरी' इनकी उत्कृष्टतम कृति है। दो निदान भाग (पूर्वाह्न) बाणकृत है और उत्तरार्ध पुलिन्दरचित। नाव, भाषा, बर्णना, वर्णन, रस-मयी दृष्टियाँ में कादम्बरी अनुपम है।

४ 'पावतीपरिणय' नाटक में शिव-पार्वती के विवाह का वर्णन है, यह श्लोक इतने किमी अन्य बाण की कृति कहते हैं।

५ 'सुकुण्ठाद्वितक' नाटक को इनकी रचना कहा गया है परन्तु अभी तक प्राप्त नहीं हुआ।

किमी ने तो ममम संसार को ही बाण का चूड़ा कहा है—'बाणाच्छिद्य चण्ड सर्वम्।' गोवर्धनाचार्य ने तो बाण को बाणी का अवतार ही माना है—

जाता शिररुण्डिनी प्राग् यथा शिखण्डी तथाऽगवत्समि ।

प्रागभ्यसधिकमाप्तु बाणो बाणी बभूवेति ॥

विहण—अपने पैनिसामिक महाकाव्य 'विक्रमाकदेवचरित' में विहण ने स्वपरिचय भी प्रस्तुत किया है। विहण काव्य-रस और नागदेवी के पुत्र तथा शृङ्गय और अनन्द के भाई थे। आश्रयता की रीति में ये कादम्बरी से निश्चलन मथुरा, प्रयाग, काशी आदि जाते हुए कल्याणनगर के आठव्यवर्षीय विक्रमादित्य षष्ठ (१००६-११२७) का समा में जा

पहुँचे। उक्त काव्य में कवि ने निम्न आश्रयदाता तथा उत्तर वंश का विस्तृत वर्णन किया है। १८ सर्गों के इस काव्य में मातुर्य एक प्रसन्न की भाषा प्रचुर है तथा वेदमी रीति प्रयुक्त की गई है। यह काव्य जन्ठी मूर्तियों तथा बीर, शूद्रार और कृष्ण रम में पूर्ण है।

भट्टनारायण—भक्त विशेष वृत्त अभी तक अविदित है। सुनते हैं, य उन पाँच कवीय्या ब्राह्मणों में से थे जिन्हें बगनरेश 'आदिशूर' ने बग में वैदिकधर्म प्रचारार्थ बुलाया था। आदिशूर ७१५ ई० में गौडिपति के पद पर आसीन हुए थे। इनका नाटक 'वेणीमहार' ८०० ई० में पूर्ण रचा जा चुका था। कवि की उक्त एकमात्र कृति का विषय है महाभारत का युद्ध। रचना में गौरी रीति तथा ओजगुण विनिष्ट रूप में दिखता है। नाटकीय सिद्धान्तों के प्रदर्शनार्थ नाटक 'लघुनोपयोगी' है।

भट्टि वा भट्टिवासी—'भट्टिकाव्य' (राजवध) के रचयिता का विशेष वृत्त अज्ञात है। इस महाकाव्य के अन्तिम पद्य से ज्ञात होता है कि बलमी नरेश श्रीधरमेन की समा में कवि समाहित था। भट्टि का समय छठी शती का उत्तरार्ध तथा मत्तमी का पूर्वार्ध है।

उक्त महाकाव्य की रचना सरलता से व्याकरण सिखाने की गई थी। इसके २२ सर्गों में १६२४ श्लोक हैं। इसके प्रकीर्ण, प्रसन्न, अलंकार और तिङन्त नामक चार भागों में व्याकरण तथा अलंकारों का सुन्दर निरूपण हुआ है। राम-कथा के साथ-साथ पाठक को व्याकरण ज्ञान भी पूरणवा हो जाता है। काव्यत्व की दृष्टि से भी ग्रन्थ उपादेय है। कवि ने इसके उद्देश्य के विषय में स्वयं लिखा है—

दीपतुल्य प्रबन्धोऽयं शब्दलक्षणचक्षुषाम् ।

इस्तादर्श इवाभ्यासा भवेद् व्याकरणाद् भूते ॥

और इस उद्देश्य की पूर्ति में कृति मजबूत हुई है।

भर्तृहरि—भर्तृहरि का नाम जिनना प्रसिद्ध है उतना ही जीवन चरित अबुद्ध। कुल लोग १६ महाभारत विक्रमादित्य का अग्रज मानते हैं परन्तु अधिकतर विद्वान् इन्हें प्रत्यात बधाकरण भर्तृहरि से अभिन्न कहते हैं। कुछ लोग इन्हें बीड कहते हैं परन्तु इनकी कृतियाँ इन्हें अद्वैतवादी वैदिकधर्मोपनि करती हैं। इनका समय सप्तमी शती कहा जाता है।

इनके तीन शतक प्रसिद्ध हैं—नीतिशतक, शूद्रारशतक और वैराग्यशतक। भर्तृहरि ने जो पर्वान मानसिक अनुभव प्राप्त किया था उसी को स्वकृतियों में अन्वित कर अक्षय वंश प्रालभ किया है। धार्मिक कृतियों में जेमे गीता प्रख्यात है, लौकिक कृतियों में जेमे ही इनकी शतकत्रयी।

भवभूति—इनके नाटकों की प्रस्तावना से विदित होता है कि इनका जन्म विदर्भ (बरार) के पन्नपुर नगर में उदुम्बरवंशी निम्न परिवार में हुआ था। इनका परिवार वृष्णवल्लुर्वेद का अध्यापक तथा सोमयात्री था। ये भट्टगोपाल व पीर तथा नीलकण्ठ के पुत्र थे। इनकी बहन की का नाम 'चतुर्कर्णी' था तथा इनका निम्नी नाम श्रीकण्ठ था। भवभूति इनका प्राण प्रदत्त नाम था और य शाननिधि के शिष्य थे। इनका जीवन-काल सम्भवत ६५०-७५० ई० के मध्य में होया। ये प्रत्यात भीमासक कुमारिल भट्ट के भी शिष्य थे और दार्शनिक जगत् में भट्ट उम्बेक के नाम से विख्यात थे।

इनके जीवन रूपक प्राप्त हुए हैं—महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित। महावीरचरित के छह अंकों में श्रीराम का चरित प्रस्तुत किया गया है। नाटक वीररत्न प्रधान है। मालतीमाधव दस अंकों का विशाल 'प्रकरण' है। इसमें मालती तथा माधव की काल्पनिक प्रेम-कथा की भावपूर्ण दृष्टि से उपन्यस्त किया गया है। उत्तररामचरित में सीतानिवन का बहुत ही बर्याप्तानक वर्णन है। सात अंकों की यह रचना भवभूति की सर्वोत्कृष्ट कृति है। इसमें कवि ने राम के विनाय से निर्जीव पत्थरों तक की रलाया है। कवि ने अपने कल्पना बल से वाल्मीकीय

रामायण के कई प्रसंगों में परिवर्तन कर दिये हैं। इनकी कविता में भाव तथा भाषा का अतुल्य सामञ्जस्य है। भाषा में भावानुकूल परिवर्तन करने में ये विशेष निपुण थे। यों तो सभी रसों की अभिव्यक्ति में ये कुशल थे परन्तु कहरस की व्यञ्जना में तो विशेष दक्ष थे। नाटककारों में कालिदास के पश्चात् इन्हीं का नाम लिया जाता है।

भारवि—‘अवन्तिमुन्दरीकथा’ के अनुसार ये दाक्षिणात्य थे और पुलकेशी द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (शामनकाल ६१५ ई०) के सभाकवि थे। कुछ विद्वान् इन्हें त्रवणकोरवामी बताते हैं। इनका समय ६०० ई० के लगभग है।

‘किराताजुनीय’ महाकाव्य ही इनकी एकमात्र प्राप्त कृति है। महाकाव्य के सभी लक्षण इसमें पूर्णतया विद्यमान हैं। इसका कथानक, जो महाभारत के वनपर्व पर आधुन है, इस प्रकार है—घट में पराजित पाण्डव जब द्रौपदी के साथ वन में रह रहे थे तब उनके पुत्रचर ने दुर्योधन के मुख्यवर्तिन शामन की स्तुति की। इस पर द्रौपदी और भीमसेन ने युधिष्ठिर को युद्धार्थ उत्तेजित किया परन्तु धर्मपुत्र ने प्रतिशामग अनुचित माना। वेदव्यास की प्रेरणा से अर्जुन शिवजी में पाशुपतास्त्र प्राप्त करने की इन्द्रकील पर्वत पर पहुँचे। उनकी उग्र तपस्या को अप्सराएँ भी मग्न न कर सकी। पँदे अर्जुन ने किरातवेशी शिव की अपनी शक्ति से प्रसन्न कर पाशुपतास्त्र की प्राप्ति की।

समय संस्कृत-वाङ्मय में किराताजुनीय-ना ओन पूण काव्य अन्य नहीं है। १८ सर्गों के इस महाकाव्य में प्रधान रस वीर है, अन्य रम गीण। अर्थवीरव अर्थात् थोड़े शत्रुओं में विशाल और गभीर अर्थ को सन्निविष्ट कर देना भारवि की उल्लेख्य विशेषता है जिसके कारण ‘भारवेरथंगौरवम्’ उक्ति प्रख्यात हो चुकी है। भारवि का काव्य आपात्न कठिन है परन्तु अर्थ व्यक्त होने पर वैसे ही आनन्ददायक मित्र होता है जैसे नारियल की जटा और खोल तोड़ देने पर उसका फल। इन्हीं गुणों के कारण महाकाव्यों का बहुत्वयो (किरात, माघ और नैषध) में ‘किराताजुनीय’ का स्थान प्रमुख है।

भास—प्रख्यात नाटककार भास के काल के सम्बन्ध में विद्वानों में ऐकमत्य नहीं है। कुछ इन्हें तीसरी शती ईसवी का बताते हैं तो कुछ ई० पू० दूसरी शती का। इनके तरह नाटक प्रायः हुए हैं तिनका सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१. प्रतिमा नाटक—इसमें राम-वनवाम में रावणवध तक की घटनाओं का उल्लेख है। केकय में लगेते हुए भरत देवकुल में दशरथ की प्रतिमा देवकर उनकी मृत्यु का अनुमान करते हैं। अतएव नाटक को उक्त नाम दिया गया है।

२. अभिषेक नाटक—राम के राम्याभिषेक का वृत्त है।

३. पञ्चरान—महाभारत में सम्बन्धित एक कल्पित घटना के आधार पर रचा गया है। दुर्योधन की शत्रु के अनुसार द्रोण ने पाण्डवों को पाँच रातों में हूँट लिया और दुर्योधन ने उन्हें अथा राज्य दे दिया, यही कथानक-भास है।

४-८ मध्यमन्यासीग, दूतघटोत्कच, कर्णभार, दूतवाक्य, कहरमग के कथानक महाभारत के विशिष्ट प्रसंगों से सम्बन्धित हैं।

९. बालचरित—यह सम्बन्ध बालकृष्ण की लीलाओं से है।

१०. दरिद्रचारदत्त—इसमें निर्धन परन्तु चरित्रवान् चारदत्त और गुणप्राहिणी वेश्या वसन्तमेना के प्रणय का विवर्ण है।

११. अविमरक—में एक प्राचीन आख्यायिका को नाटकीय रूप दिया गया है।

१२. प्रतिशायीगन्धरायण—इसमें मन्त्री योगन्धरायण को नीति में बल्तराज उद्यन के वारासुन्द होने तथा अवन्तिकुमारी वासवदत्ता से उनके विवाह का वर्णन है।

१३ स्वप्नवासवदत्त—इसे 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' का उसराज्य कहना उचित है। इसमें उदयन का मगधकुमारी पद्मावती से विवाह और वासवदत्त से पुनर्मिलन वर्णित है। यही भास की सर्वोत्तम कृति है।

भास नवों रसों की व्यनना में कुशल है। उनके चरित्र चित्रण मनोवैज्ञानिक हैं और मवाद चुम्बत तथा सशक्त। मकसे बड़ी बात यह है कि वे नाटक अभिनय के लिए अल्पमत उपयुक्त हैं।
भोज—मिथुल के पुत्र परमार-वंशीय राजा भोज की राजधानी मालवा की धार या धारानगरी थी, वहाँ इन्होंने १०१८-१०६३ ई० तक शासन किया। पिता का मृत्यु के अनन्तर बालक भोज, राज्यलुप्तप चाचा मुज के हार्थों कालवंचित होने को वे वे परमत्तु भाग्यवश रच्य गये। वे बहुत उदार, विद्वान् तथा विद्वानों के आश्रयदाता थे। भोजप्रबन्ध आदि कई ग्रंथों में इनक गुणों की कथारें लिखित हैं।

शृङ्गारमञ्जरी (आलपायिका), विष्णुविनोद (काव्य), शिवदत्त (मनोज), शिवनस्तारनवलिता (शिवमनोभव्याख्या), सुभाषित, मगीनप्रकाशित, शृङ्गारप्रवाश, रामायणचम्पू और सरस्वती वटापरण इनकी कृतिषीं बड़ी जाती है।

मल्लक—बादमीरनरेश महाकवि मल्लक प्रख्यात आलकारिक श्य्यक के शिष्य थे और गुरुशिष्य दोनों ही वाशीनरेश राजा जयसिंह (११२९-१० ई०) के समर्पित थे। स्वर्गीय पिता की आज्ञानुसार ही मल्लक ने 'श्रीकण्ठचरित' नामक २५ सर्गों के सुन्दर महाकाव्य की रचना की जिसमें शबर और त्रिपुर का युद्ध वर्णित है। इनकी शैली कालिदासानुसारीणी है। प्राकृतिक दृश्यों, सरस भावों तथा प्रभावक कल्पनाओं को कौमल पदावली में व्यक्त करने में मल्लक विशेष कुशल है।

अमूरमट्ट—ये वाणमट्ट के संगे सम्बन्धी थे और वाराणसी के पूर्व में रहते थे। वाण के समान य भाईपर्वदन की सभा क कवि थे। इन्होंने अपने कुछ रोग के निवारणार्थ सगंधा वृत्त में 'सूर्यशानक' स्तोत्र का प्रणयन किया जो वस्तुतः प्रौढ और मार्मिक कृति है। ये सूर्यदेव के रथ, अश्व आदि उपकरणों के वर्णन में तथा अनुप्रासमयी भाषा के प्रयोग में विशेष सफल हुए हैं।

माघ—महाकवि माघ क पितामह सुप्रभदेव गुजरात के वर्मलाल नामक राजा क मुख्यमंत्री थे और पिता दत्तक प्रशाण्ड विद्वान् तथा वदान्व। माघ का जन्म भीममाल नगर में हुआ था और य धारा क भोज से भिन्न किसी अन्य राजा भोज के भिन्न थे। सुसंगम कुल में उत्पन्न होने पर भी, कहते हैं इनकी मृत्यु अत्यधिक उदारता के कारण, दरिद्रता-वश हुई थी। वे सातवीं शती के उत्तरार्द्ध में विद्यमान थे।

वे अपने एकमात्र उपलब्ध महाकाव्य 'शिशुपाल-वध' के कारण अमर हो गये हैं। बीम सर्गों क इस महाकाव्य में सुषीरिष्ठ क राजमूद वश में श्रीकृष्ण के हार्थों शिशुपाल क वध का विस्तृत वृत्त वर्णित है। काव्य के अध्ययन से माघ की राजनीतिज्ञता और अल्पाकाशियता का अल्पा परिचय प्राप्त हो जाता है। माघ केवल रसमिद कवि ही नहीं, सर्वशास्त्रविद् गम्भीर विद्वान् भी थे। शास्त्रीय सिद्धान्तों का जितना सुन्दर सरस प्रतिपादन शिशुपालवध में उपलब्ध होता है, उसी अन्य काव्य में नहीं। माघ का पांडित्य सर्वतोमुखी है, वेद तथा दर्शन से लेकर राजनीति तक की विशेषज्ञता इनक ही काव्य में दिखाई देती है। नव-नव शब्दों क प्रयोग तथा व्याकरणानुरूप नव-नव शब्दरूपों के स्पष्टहार के कारण भी माघ विशेष प्रख्यात हैं।

किसी भारतीय आलोचक का मत है—

उपमा कालिदासस्य, भार्तेर्यर्थांतरवम्।

दृष्टिद्वय पद्मलालित्यं, माघे सन्ति श्रयो गुणा ॥

शारि—'अनंतराज' नाटक के रचयितर सुरारि मीदगम्भगोत्री वर्धमानक तथा तनुमती के पुत्र थे। ये समवन माहिष्मती (दक्षिण में दिवन माग्धाना नगरी) क निवासी थे और ८०० ई०

के लगभग वर्णान्ध थे। 'अनर्परायण' सात-अकों का और भवभूति के महावीरचरित से प्रभावित नाटक है। उसमें ताडकावच से लेकर रामराज्याभिषेक तक की घटनाएँ बर्णित हैं। कविता प्रौढ़ तथा पांडित्यपूर्ण है, वर्णन प्रशस्त है और शब्दराशि विशाल है। इनकी उपमाओं की मौलिकता देखकर ही कहा गया है—'मुरारिन्मृतीय पन्था'।

रत्नाकर—कादंबरी महाकवि रत्नाकर, अमृतमानु के पुत्र और काश्मीर-नरेश जयापीड (८०० ई०) के समकालिक थे। इनके 'हरविजय' महाकाव्य में ५० सर्ग तथा ४३२१ पद्य हैं। आकार के कारण ही नहीं, काव्योचित अन्य गुणों के कारण भी यह महाकाव्य संस्कृतवाङ्मय में विशिष्ट स्थान रखता है। यह महाकाव्य ललित, मधुर, प्रमादोपेत भाषा तथा चित्र, यमक और श्लेष के चमत्कारों से मण्डित है।

इस महाकाव्य में शहर द्वारा अन्धक असुर के वध का वर्णन है। रत्नाकर ने 'शिशुपालवध' की मात करने के लिए इस काव्य का प्रणयन किया था और उनका प्रथम व्यर्थ नहीं हुआ।

राजशेखर—ये 'महाराष्ट्रचूडामणि' कविवर अज्ञानजलद के प्रपौत्र तथा दुर्दक और शीशुवती के पुत्र थे। ये स्वयं यायावर क्षत्रिय थे और इनकी पत्नी अवन्तिसुन्दरी चौहान, मस्कृत और प्राकृत की प्रकाण्ड विदुषी थीं। राजशेखर महाराष्ट्र, सम्भवतः विदर्भ के रहनेवाले थे और कन्नौज-नरेश महेंद्रपाल के गुरु थे। अतः इनका काल नवीं शती का उत्तरार्ध तथा दशमी का पूर्वार्ध माना जाता है। राजशेखर धुरधर विद्वान् थे और अपने ही वाल्मीकि तथा भवभूति का अवतार समझते थे। ये भूगोल के बहुत बड़े पण्डित थे परन्तु इनका इस विषय का ग्रन्थ 'भुवनकोष' आज अप्राप्य है। ये संस्कृत, प्राकृत, देशाची तथा अपभ्रंश के दिग्गज विद्वान् तथा लेखक थे।

इनके चार नाटक उपलब्ध हैं—कर्पूरमञ्जरी, विद्वशात्मजिका, बालरामायण और बाल-भारत अर्थात् प्रचण्डपाण्डव। कर्पूरमञ्जरी प्राकृत में लिखित एक 'मट्क' है जिसमें चण्डपाल तथा राजकुमारो कर्पूरमञ्जरी का विवाह चित्रित किया गया है। विद्वशात्मजिका चार अङ्कों की प्रेमालयानात्मक नाटिका है। बालरामायण दश अङ्कों का महानाटक है। वाल्महाभारत के दो ही अंक प्राप्त हैं। भाषा-कौशल तथा सुन्दर उक्तिओं से युक्त होने पर भी इनके नाटक नाटकीय कला की दृष्टि से उत्कृष्ट नहीं माने जाते। इनका महाकाव्य 'हरविलास' तो आज उपलब्ध नहीं है परन्तु 'काव्यमीमामा' इनका अलंकारविषयक प्रौढ़ ग्रन्थ है।

चन्द्रराज—कालिन्धर-नरेश परमदिदेव (११६१-१२०३ ई०) के मन्त्री बत्सराज के छह रूपक उपलब्ध हुए हैं—१ किरातार्जुनीय-व्यायोग, २ कर्पूरचरित, ३ हास्यचूडामणि, ४ हविमणी-हरण, ५ त्रिपुरदाह और ६ समुद्रमन्थन। किरातार्जुनीय-व्यायोग की रचना भारवि के किरातार्जुनीय के आधार पर हुई है। कर्पूरचरित 'भाग' में चतुरकर कर्पूर ने स्वरोचक अनुभव-वर्णन किये हैं। हास्यचूडामणि एफकी महत्तम है। हविमणी-हरण चतुरात्मक 'महायुग' है। त्रिपुरदाह चतुराकी 'डिम' है जिसमें शिव द्वारा त्रिपुर असुर के पुर के विध्वंस का वर्णन है। समुद्रमन्थन पदवी 'समवपार' है जिसमें समुद्रमन्थन तथा लक्ष्मी-विष्णु के विवाह का चित्रण है। भास के पश्चात् बत्सराज ने ही अनेक प्रकार के रूपकों की रचना की है। इनके लब्धाकार नाटकों की शैली मरल और सरल है। उनमें नाटकीय किवाशीलता और रोचकता प्रचुर है।

वाल्मीकि—कहते हैं वाल्मीकि पहले एक दस्तु थे परन्तु सप्तगि से ऋषि बन गये। वे भारत के आदिवासी माने जाते हैं और रामायण आदिकाव्य। शब्दाल्ल लोगों का विश्वास है कि रामायण की रचना श्री राम के आविर्भाव से सहस्रों वर्ष पूर्व की जा चुकी थी परन्तु आधुनिक विद्वान् इसे आज से प्रायः ढार महस्र वर्ष पूर्व की कृति बनाने हैं। अधिकतर विद्वान् इसके उत्तरकाण्ड को पूर्ण- और बालकाण्ड को अंशतः प्रक्षिप्त मानते हैं। रामायण में २६०० श्लोक हैं जिनमें बहुलता अनुष्टुप् छन्द की है। उत्तरी भारत, बंगाल तथा काश्मीर में रामायण के

जो सम्बन्ध प्राप्त होते हैं उनमें पर्याप्त पाठभेद है। सच्चा कवि और उत्तम महाकाव्य कैसा होना चाहिए, वह हमें वाल्मीकि रामायण से ही विदित होता है। सामान्य मनुष्य गृहस्थ बनना है परन्तु गार्हस्थ्य को सफल बनाना सिद्धना दुष्कर है, इसे गृहस्थ ही जानने हैं। इसी उच्च उद्देश्य की सिद्धि का मार्ग वाल्मीकि ने दशरथ, राम, लक्ष्मण, सीता, भरत आदि क विश्व चरित्रों में प्रगल्भ किया है। किसी विद्वान का यह विचार अत्युक्तयुक्त नहीं है कि मत्सर भर के साहित्य में सदाचार और काव्यत्व का जितना सुन्दर मिश्रण वाल्मीकि-रामायण में हुआ है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं। रामायण वर्णरम प्रधान महाकाव्य है। इसमें वास प्रकृति तथा मानवीय प्रकृति का अत्यन्त मनोरम चित्रण हुआ है। यह प्राचीन भारत की सभ्यता का उज्ज्वल दर्पण है। यही कारण है कि इसके उदात्त आदर्शों तथा पवित्र कथा के आधार पर परवर्ती असुरय कवियों ने अपने काव्य, नाटक, चम्पू आदि की रचना की तथा इस पर लिखक, शृङ्गारलिखक, रामायणकूट, वाल्मीकिनाट्यव्यवर्णन, विवेकलिखक आदि अनेक-दोषार्थ लिखकर विद्वानों ने अपने प्रयाम को सफल समझा।

विशाखदत्त—इसके पितामह बटेश्वरदत्त अथवा बत्सराज कहीं के सामन्त थे और पिता भास्करदत्त वा पुत्र ने महाराज-पदवी प्राप्त की थी। विशाखदत्त राननीति, दर्शन और ज्योतिष के विशेषज्ञ थे। ये वैदिकधर्मवाचस्पती थे परन्तु साम्प्रदायिक कट्टरता से रहित थे। इन्होंने अपने प्रख्यात राजनीतिक तथा कूटनीतिक नाटक 'मद्राक्षस' की रचना छोटी शशी ईश्वरी के उत्तरार्द्ध में की थी। नाटक में चाणक्य का समग्र उद्योग इसी उद्देश्य को सिद्धि के लिए है कि राष्ट्रस को चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधान मन्त्री बना दिया जाय और अन्ततः वे उसमें सफल होते हैं। राजनीतिक चालों तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से नाटक विशेष महत्त्वपूर्ण है। विशाखदत्त की दूसरी रचना 'देवीचन्द्रगुप्त' के कुछ ही उद्धरण अन्य कृतियों में प्राप्त हुए हैं। उन्हीं के आधार पर चन्द्रगुप्त के अग्रज रामगुप्त की मत्ता ऐतिहासिकों ने स्वीकृत की है।

विष्णुशर्मा—महिलारोप्य के शमरु अमरशक्ति अपने मूर्ख राजकुमारों को चतुर बनाने के लिए योग्य शिक्षा की खोज में थे। इस कार्य को विष्णुशर्मा नामक ब्राह्मण ने पंचतत्र की रचना द्वारा छह मास में ही पूर्ण कर दिया। 'पंचतत्र' का रचना-काल ३०० ई० के लगभग माना जाता है। छोटी शशी में इमवा पहलवी भाषा में अनुवाद भी हो गया था। बदायिन् आरम्भ में इसके बारह भाग थे परन्तु वर्तमान में हमारे पाँच भाग हैं—मित्रभेद, मित्र-सम्प्राप्ति, काकेलुकीय, लम्घ प्रणाह, अपरीक्षितकारक। इस कथा-ग्रन्थ में कथाएँ गद्य में हैं और शिक्षाप्रद बातें पद्यों में। एक एक मुख्य कथा के अन्तर्गत अनेक गौण कथाएँ दी गई हैं। सदाचार, व्यवहार और नीति के शिक्षार्थ यह कृति अत्यन्त उपयोगी है और यही कारण है कि अनेक विदेशी भाषाओं तक में अनूदित हो चुकी है।

वैकटाचरि—ये मद्रास प्रान्त के श्रीवैष्णव थे। इन्होंने अपने 'विश्वगुणादर्शचम्पू' में मद्रास में अग्नेशों के दुराचार का भी वर्णन किया है जिससे ये सप्तशती शती के मध्य के प्रतीत होते हैं। इनका यज्ञोविस्तारक काव्य तो 'लक्ष्मीमहल' है जिसकी एक सहस्र कलित व भावपूर्ण पद्यों की रचना कहते हैं, इन्होंने एक ही रात में कर दी थी। काव्य में श्लेष तथा अन्यान्वयों की छटा अवलोकनीय है। इस अत्यन्त सरस व उत्प्रेक्षावदुल रचना से कवि अमर हो गया है।

व्यास—व्यासजी का पूरा नाम कृष्णदेवायन व्यास था। ये पराशर और सत्यवती के पुत्र थे। सुनते हैं, रग से कृष्य होने के कारण कृष्ण, हीर में उत्पन्न होने के कारण देवायन तथा वैदिक मन्त्रों की वर्तमान व्यवस्थित रूप देने के कारण ये व्यास कहलाए। भारतीय परंपरा उन्हें महाभारत, १८ पुराणों तथा ऋष्यमूर्खों का वर्ण मानती है, परन्तु आधुनिक विद्वान् महाभारत को न ष्ववर्तक मानते हैं न पेशवर्णीन। उनका मत है कि महाभारत के विभिन्न अंशों की रचना अनेक विद्वानों द्वारा समय-समय पर होनी रही और उसे वर्तमान रूप ३२० ई० ५०० तथा ५० ई० के मध्य में किसी समय प्राप्त हुआ।

किया गया है। कृति का प्रेमि प्रेमविषयक अश नामकृत 'दरिद्रवारुदत्त' से बहुत अधिक प्रभावित है परन्तु राजनीति भाग कवि को निजी सम्पदा है। 'युद्धकृतिक' की सबसे बड़ी विशेषता उसकी प्राकृत भाषा है। तिनी प्राकृत इस नाटक में प्रयुक्त हुई है जतनी अन्य किसी में भी नहीं। नाटक में पात्रों का चरित्र तथा समाज का चित्र सरल शैली में सम्यक् चित्रित किया गया है। नाटक का प्रधान रस शृङ्गार है।

श्रीहर्ष—श्रीहर्ष का जन्म हीर पण्डित और वामदेवी के गृह में हुआ था। हीर पण्डित कान्य कुब्जेश्वर जयचन्द्र के पिता विजयचन्द्र की सभा के प्रधान पण्डित थे परन्तु सयोग्यवश मैथिल नैयायिक उदयनाचार्य से शास्त्रार्थ में पराजित हो गये थे। मरणासन्न हीर ने पुत्र को कहा— 'यदि तুম सुपुत्र हो तो मेरे विवेका को पराजित करना' श्रीहर्ष ने शगल पर विजितामणि मंत्र का वर्ष भर जप किया और सफलमनोरथ हुए। श्रीहर्ष, जयचन्द्र की सभा के रत्न तो थे ही, सम्भवतः विजयचन्द्र की सभा को भी सुभूषित करते रहे होंगे, क्योंकि उन्होंने 'विजयप्रशस्ति' उन्हीं के नाम पर रची है। ये रसमिद कवि ही न थे, प्रकण्ठ पण्डित भी थे, जैसा कि इनके 'नण्डनखण्डसाध' से सिद्ध होता है। इनका सिद्ध योगी होना नैषधकाव्य के अन्त्य श्लोक से सिद्ध होता है—

य. साक्षात् कुरुते समाधिषु परं ब्रह्म प्रमोदाणंजम् ।

इनका आधिभाषकाल बारहवीं शती का उत्तरार्ध है।

श्रीहर्ष ने अपनी कृतियों का उल्लेख 'नैषध' में इस क्रम से किया है—(१) रंयंविचारण प्रकरण (दरसन), (२) विजयप्रशस्ति, (३) खण्डनखण्डसाध (विद्वान्), (४) गौडोर्वीशुकुम्भप्रशस्ति, (५) अणववर्णन, (६) छिन्दप्रशस्ति, (७) शिवशक्तिसिद्धि, (८) नवसाइमांकचरित्रचम्पू, (९) नैषधीयचरितः। सुविख्यात 'नैषधीय चरित' में २२ सर्ग हैं और २८३० श्लोक। हमने नल-दमयन्ती की कथा का सरल तथा सुवित्तुत वर्णन है। नैषध में देवदत्त तथा पण्डित्य का अनुसुत मिश्रण है। वकीतिके प्रयोग में श्रीहर्ष विशेष कुशल हैं। भाव-यश तथा कला पक्ष दोनों को अभिव्यक्ति नैषधकाव्य में मार्मिक ढंग से की गई है। किमी आलोचक का यह पक्ष नैषध को महाभाष्य का सच्चा निरुद्धक है—

तावद्वा भारवेर्भाति यावन्माधस्य नोद्भय ।

उदिते नैषधे काव्ये क माधः क च, भारविः ॥

सुबन्धु—अविदित-भूत सुबन्धु अपने एकमात्र गद्यकाव्य 'वामवदत्ता' से अक्षुप्त कीर्ति के भागी बने हैं। इस काव्य की कथा का वासवदत्ता की प्राचीन कथा से रार्द्र-रत्नी मात्र का भी सम्बन्ध नहीं है। पूर्ण कथानक कवि के उर्वर मस्तिष्क की वरना है। अनुमानतः इनकी रचना सातवीं शती के प्रथम चरण में की गई थी।

अनि सशेष में कथा यह है कि राजकुमार विजितामणि स्वप्न में एक सुन्दर कन्या को देख-वर मुग्ध हो जाता है और जगने पर मित्र मकरन्द के साथ उसकी खोज में निकल पड़ता है। उधर कुम्भपुर की राजकुमारी वामवदत्ता भी स्वप्न में एक सुस्वप्न सुवक को देखकर स्वप्न में जाये सुवकों का विचार त्याग देती है। कई विजय-भाषाओं के अनन्तर प्रेमियों का सुखर मिजन हो जाता है। 'वामवदत्ता' एक वर्णनबहुल आख्यायिका है जिसमें उपमा, उत्प्रेक्षा और निरोधा-भास की बहुलता है परन्तु समग या अमग श्लेष तो प्रतिपद पाया जाता है जहाँ कवि की कल्पना प्रसन्ननीय है, वहाँ श्लेष की 'अनि' तथा तामसित्त दुरुहता अस्विकर हो गई है।

सोद्वल—ये गुजरात के छत्रप्रदेश के निवासी थे और कौकशाधीन मुमुगिगर (१०६० ई०) के आश्रित थे। इनका 'उदयसुन्दरीकथ' चम्पूकाव्य है जिसमें प्रतिहात श्लेष मयवाहन और नागनृप विशण्डनिलक की पुत्री उदयसुन्दरी के विदार का वर्णन है। कृति भाग के हर्षचरित्र

मे प्रभावित है और उसने भाषा का माधुर्य और लालित्य प्रशंसनीय है। लेखक कमनीय बलवन्तपणे करने में कुशल है।

सोमदेव सूरि—ये जैनकवि राष्ट्रकूटनरेश कृष्णराजदेव के समकालीन थे। ९५८ ई० में रचित इनके 'पदाहिन्यकचम्पू' में अवन्ति-नरेश यशोधर की कथा का वर्णन है। रानी की सखत चालों से राजा की विरक्ति, चथ तथा पुनर्जन्म की घटनाओं का रोचक उल्लेख है। जैनधर्म के पालन के महत्त्व को सम्यक् व्यक्त किया गया है। इसमें अनेक अज्ञात वाक्यकारों और कृतियों का उल्लेख है, अतएव साहित्य के इतिहास के विचार से भी कृति महत्त्वपूर्ण है।

हरिचन्द्र—जैनकवियों में हरिचन्द्र का नाम विशेष उल्लेख्य है। ये कायस्थ अग्निदेव तथा रथ्यादेवी के तनुज थे। सम्भवत इनका समय ग्यारहवीं शती है। इनके 'धर्मशान्तिस्तुतय' नामक महाकाव्य में पन्द्रहवें तीर्थंकर धर्मनाभजी का चरित्र वर्णित है। वैदभी रीति में उपनिबद्ध इस काव्य की भाषा अतिमुन्दर और अलकृत है। जैनसाहित्य में २१ सर्गों के इस महाकाव्य का बड़ी स्थान है जो नैषध और शिशुपालवध का ग्राह्य साहित्य में।

हर्षवर्धन—ये धानेसर के महाराज प्रभाकरवर्द्धन के द्वितीय पुत्र थे और अग्रज राज्यवर्धन के पश्चात् सिंहासनासीन हुए थे। इन्होंने ६०६-६४८ तक शासन किया था। बाणभट्ट, मयूरभट्ट और दिग्बर इन्हीं के सभासजित थे। इनके तीन रूपक मिलते हैं—रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानन्द। प्रथम दो संस्कृत की प्राचीनतम नाटिकाएँ हैं और बत्सराज उदयन की प्रणयनथाओं के आधार पर प्रणीत हैं। नागानन्द का आधार एक बौद्ध कथानक है जिसमें नर्गों को गरुड़ से बचाने के लिए जीमूतवाहन आत्मसमर्पण कर देता है। इस उच्छादश के कारण नागानन्द विद्वत्समाज में विशेष सम्मानित है।

हेमचन्द्र—प्रसिद्ध जैनमुनि हेमचन्द्र का जन्म ढुङ्ग में १०८८ ई० में हुआ। इनके पिता का नाम छट्टिमश्रेणी और माता का पहिनी था। इनकी माता ने इन्हे पाँच वर्ष के वय में ही देवेन्द्र सूरि को सौंप दिया और ये विद्याध्ययन में सलग्न हो गये। ये संस्कृत और प्राकृत वाङ्मय के विभिन्न विभागों में देमे निष्णात हो गये कि 'कालिकालसर्वश' कहाने लगे। इनके संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों की पङ्क्तिस्तथा साढ़े तीन करोड़ है। ये गुजरात में राजा जयसिंह और कुमरपाल की सभा में रहे थे और इनकी प्रेरणा से जैनधर्म राज्यधर्म बन गया था। इन्होंने अन्धज्ञान समाधि से ११७३ ई० में प्राणत्याग किया। इनके 'कुमारपालचरित' में २८ सर्ग हैं—पहले २० संस्कृत में और अन्तिम ८ प्राकृत में। 'त्रिषष्टिशालाकापुरुषचरित' और 'स्थविरावली-चरित' में जैन सन्तों की जीवनीयाँ हैं। कुछ अन्य कृतियाँ ये हैं—काव्यानुशासन, छन्दोऽनुशासन, देशीनाममाला, अभिधानचिन्तामणि, अनेकार्थसमग्र, निघण्टुशेष, शब्दानुशासन, योगशास्त्र।

तथा 'भेदक' मुहावरे इसी के समान भव है। उदाहरण—'विरलविरला एव जना नगनि
स्विवेकमाचरन्ति प्रयत्नव्यपरस्परैवावलोक्ष्यते।'

६. अरण्यरोदन्याय—उक्त न्याय का अर्थ है निर्जन में रोने की वृत्तवत्। ग्राम, नगर आदि
में रोनेवाले व्यक्ति से उमका बह पूछा जाता है और उसे नष्ट करने का उद्योग भी किया जाता
है। परन्तु सुनमान स्थान में रोना तो स्वभाव्य अर्थ है। श्री प्रणव जिमि अर्थ कार्य के लिए
या किसी क्रूर के समक्ष प्रार्थना के समय पर यह न्याय होता है। यथा—'अरण्यरोदनमेव घना
दग्धे माह्वययाचन प्रायशो भवति।'

७. अरन्धतीप्रदर्शनन्याय—अरन्धतीप्रदर्शन न्याय अर्थात् अरन्धती नक्षत्र दिखने का न्याय।
इन्हीं व्यक्तियों का स्वामी शक्राचार्य ने इस प्रकार की है—'अरन्धती दिदर्शयिमुन्नात्समीपस्था
स्थूला तर मसुरा प्रथममरन्धतीति ग्रहयित्वा, तां प्रत्यारवय पश्यात्पतीमेव दारवति।'
अर्थात् किसी की अरन्धती दिखाने का इच्छुक व्यक्ति पहले उसके समीपवर्ती किसी बड़े नक्षत्र
को ही अरन्धती बताता है और उसके बाद वास्तविक अरन्धती को दिखाता है जिसका प्रवास
मन्द होता है। इस प्रकार जहाँ किसी सूक्ष्म वस्तु के स्पष्टीकरणार्थ पहले किसी स्थूल वस्तु को
बताने निषेध किया जाता है, वहाँ 'अरन्धतीनक्षत्रन्याय' का प्रयोग होता है। यथा—'अपमेव
स्यो देव इति पूर्वमुदितय तत्पश्चात्—वास्तविकी देवस्तदनवर्त्तति अरन्धती प्रदर्शनन्यायेन गुरु
शिष्य ज्ञापयति।'

८. अशोकवनिजान्याय—अशोकवनिजान्याय अर्थात् अशोकनामक वृक्षों की वाटिका का
न्याय। रावण ने अपहृत सोना को अशोकवाटिका में रखा था परन्तु यह बहना कठिन है कि
अन्यत्र कहीं न रखकर वहाँ क्यों रखा? इसी प्रकार जहाँ किसी कार्य की निष्पत्ति के अनेक
समान उपायों में से किसी एक का प्रयोग किया जाए, परन्तु यह न बताया जा सके कि अन्यो
को छोड़ उसी को क्यों प्रयुक्त किया गया है, वहाँ 'अशोकवनिजान्याय' व्यवहृत होता है। जैसे—
'प्रायो निर्वेके स्वामिन स्वसेवकान् अशोकवनिका न्यायेन। विविधकार्येषु प्रवर्त्तयन्ति।'

९. अस्मलोष्टन्याय—अस्मलोष्टन्याय अर्थात् पत्थर और ढेले का न्याय। जिस प्रकार मिट्टी का
टोला रुद से बठोर होना है और पत्थर स कोमल, उसी प्रकार कोई मनुष्य अपने से छोटी की
अपेक्षा तो महार होता है और बड़ी की अपेक्षा क्षुद्र। उदाहरण—'अस्मिन् ससारे सर्वे
सायैक्षममस्मलोष्टवत्, न हि किमपि अत्यन्तसुष्टमपवृष्ट वा कथयितुं पार्यते।'

१०. अहिकुण्डलन्याय—अहिकुण्डलन्याय अर्थात् साँप की कुण्डलाकार स्थिति का न्याय। साँप
स्वभावतः कुण्डली मार कर बैठता है, इसके लिए उसे प्रवास नहीं करना पड़ता। इसी प्रकार
जहाँ किसी पदार्थ के स्वाभाविक धर्म का उल्लेख किया जाता है, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता
है। जैसे—'अहिकुण्डलवत् स्वाभाविकं हि कवे काव्यं न हि तत्र तस्य महाप्रयासस्यापश्चात्।'

११. आकाशमुष्टिहननन्याय—रम न्याय का शब्दार्थ है आकाश को मुक्की से पीटने की
वृत्तवत्। जैसे आकाश को मुक्की से पीटना असंभव है, वैसे ही किसी की असंभव कार्य करते
देख हम उक्ति का प्रयोग किया जाता है। यथा—'आकाशमुष्टिहननमेव तवायमुद्योगो प्रधानमन्त्रि
पदप्राप्तये।'

१२. आग्रसेकपितृवर्षणन्याय—रम न्याय का अर्थ है, आम खींचने और पितरों के तर्पण करने
की वृत्तवत्। आशय वही है जो हिन्दा की वृत्तवत् 'एक पथ दो काय' का है। जहाँ एक क्रिया
में दो प्रयोजनों की सिद्धि अभीष्ट हो वहाँ इस न्याय का प्रयोग न्याय्य है। यथा—'सत्सत्परस्या
आग्रसेकपितृवर्षणन्यायेन राष्ट्रसेवामपि कुर्वन्ति, पर्याप्तं वेतनं चापि प्राप्नुवन्ति।'

१३. आशामोदकनृतन्याय—इस न्याय का अर्थ है—प्रत्यादिन लट्टुओं में छत मनुष्य का दृष्टान्त । लट्टु साने पर ही प्रसन्नता का प्रकाशन उचिन है । जो मनुष्य कल्पनि लट्टुओं से तृप्ति का अनुभव कर मुग्ध होना है, वह सयाना नहीं माना जाता । सो वास्तविक और वाप न्तिक प्रसन्नता में भेद करना ही समीचीन है । जैसे—को नाम व्यवहारपटुमानवो वात्वाशामो दकैन्नुमो दृश्यते ।

१४. द्युकारन्याय—इस न्याय का अर्थ है, बाण बनानेवाले का दृष्टान्त । यह 'याव महाभारत के शान्तिपर्व के १७८वें अध्याय के निम्नलिखित श्लोक पर आधृत है— 'द्युकारो नर कश्चिदिवा वासतमानस । मदीपेनापि गच्छत राजान नावबुद्धवान् ।' भाव यह कि एक बाणनिर्माता बाण-निर्माण में इतना निगमन था कि वह पास में जाते हुए रात को भी न देख सका । इसी प्रकार की एकाग्रचित्ता के लिए यह न्याय व्यवहृत होगा है । यथा—'विद्यात्रन स्वप्नभाष्ययन इत्य निगमन आसीत् यदियुकारन्यायेन कक्षायामागतम दाषकमपि न ज्ञानवान् ।'

१५. द्युवेगक्षयन्याय —इस न्याय का अर्थ है—बाणवेग के नाश का दृष्टान्त । धनुष से जैसे हुए बाण की गति क्रमशः क्षीण होती जाती है और अन्ततः समाप्त हो जाती है । इसी प्रकार जहाँ किसी पदार्थ में उत्पन्न शक्ति या क्रिया आदि का क्रमशः हान और अन्त में विनाश हो जाता है, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है यथा—'इयं सृष्टिरियुवेगक्षयन्यायेन कारेण स्वयमेव प्रलययुयैति ।'

१६. उत्खातदंष्ट्रीरग्न्याय —उक्त न्याय का अर्थ है, निर्दन्त किये हुए सर्प का दृष्टान्त । दाँत उखाड़ देने पर सर्प की भयंकरता नष्ट हो जाती है । इसी प्रकार जहाँ किसी पदार्थ के अतिष्ठकर अहं का निवारण कर उसकी पातकता नष्ट कर दी जाती है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है । यथा—'इन्द्रप्रदत्तशक्त्या घटोत्कच हत्वा कर्णं पाण्डवेभ्य उत्खातदंष्ट्रीरावत् निरुपद्रव सजात ।'

१७. उष्ट्रलगुडन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है—ऊँट और लकड़ी का दृष्टान्त । ऊँट पर लकड़ी का भार प्रायः लादा जाता है । आवश्यकता के समय उहाँ में से एक लकड़ी निकालकर (उष्ट्रचालय) ऊँट को पीट भी देता है । इसी प्रकार जहाँ विरोधी की युक्ति से ही विरोधी की उक्ति का खण्डन कर दिया जाये अथवा वैरियों के उपकरण से ही वैरियों का नाश कर दिया जाये वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है । जैसे—'सक्तो गृहस्थ उष्ट्रलगुडन्यायेन औरशस्त्रैव खौर गतायुमवरोत् ।'

१८. उपरदृष्टिन्याय —इस न्याय का अर्थ है, ऊपर में वर्षा का दृष्टान्त । भूमि उर्वरा हो तो वृष्टि सफल होती है । उपर में बरसना न बरसना बराबर है । इसी प्रकार जहाँ कोई कार्य संवधा बेकार हो वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है । यथा—'इमा सुभाष्यन्दिश्य मूलवोऽग्निमेभ्य लषरदृष्टिवक्षिण्णत्वा ।'

१९. एकवृत्तगतफलद्वयन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है, एक टटल पर लगा दो फलों की उक्ति । जैसे एक टटल पर वभीकभी दो भी फल लग जाते हैं, वैसे ही जब इष्टेय अग्नि का बल से कोई शब्द दो अर्थ देता है या एक क्रिया फलद्वय की साधिका होती है, तब यह न्याय व्यवहृत होता है । यथा—'एकवृत्तगतफलद्वयन्यायेन देवदत्त आहूलेऽगमः परश्वर भारतायनाल्लक्षणं प्रतिनिधित्वमपि चाक्रोत् ।'

२०. कदमकोरक(गोलक)न्याय —कदमकोरकवाप्य अर्थात् कदम की पत्तियों का न्याय । कहा जाता है कि कदम की सब पत्तियाँ एक साथ विकसित हो उठती हैं । इसी प्रकार जहाँ

कुछ व्यक्ति एकदम उठ खड़े हों या सब लोग एक साथ ही कार्य में जुट जायें वहाँ इस न्याय का व्यवहार दिया जाता है। यथा—'श्रीकृष्णचन्द्रमवलोक्य कम्बरीकन्यायेन प्रहृष्टा वभूव पण्डवा ।'

२१. कफोष्णिगुडन्याय —उक्त न्याय का शब्दार्थ है कोहनी और गुट की कहावन। यदि किसी को कोहनी पर कुछ गुड़ लगा दिया जाय और उसे जिहा से चाटने को कहा जाय तो वह अपने उद्योग में कदापि सफल न होने के कारण उपहामास्पद बनेगा। इसी प्रकार इस उक्ति का प्रयोग तरमानेवाली परन्तु अल्प्य वस्तु के विषय में होता है। यथा—'सरोवरे पतित प्रति निम्ब नीक्ष्य कफोष्णिगुडन्यायेन चन्द्रग्रहेणाय प्रयतते शिशु ।'

२२. कम्बलनिर्गोजनन्याय .—अर्थ है—कम्बल स्वच्छ करने का दृष्टान्त। कई बार मनुष्य कम्बल की मिट्टी झाड़ने के लिए उसे अपने पाँव पर झकटते हैं। इस एक क्रिया के दो फल होते हैं। कम्बल भी स्वच्छ हो जाता है और पाँव भी सड़े जाते हैं। इस प्रकार यह न्याय हिन्दी के 'क पय दो कान' का समानार्थक है। उदाहरण—'द्य सायमह भ्रमणार्थं नागच्छन्, प्रदर्शनीक्ष्य एवाभ्रमम् पथ कम्बलनिर्गोजनन्यायेन भ्रमणमपि जान, नवज्ञानक्षाप्युपलब्धम् ।'

२३. करिवृद्धिन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—हाथी की चिंगाड का न्याय। प्रदेन होता है, 'चिंगाड' के साथ 'हाथी' शब्द के प्रयोग की आवश्यकता नहीं क्योंकि 'चिंगाड' शब्द हाथी की चीख के लिए ही प्रयुक्त होता है। उत्तर यह है कि देने वाक्यों में 'फाल्गू' प्रतीत होने बाला शब्द विशिष्टता का सूचक होता है। यहाँ 'करि' शब्द मन्त्र या प्रबल हाथी के लिए व्यवहृत हुआ है। ऐसे ही अवसरों पर जहाँ कोई शब्द व्यर्थ प्रतीत होता हुआ भी विशिष्टतासूचक हो, यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'कि क्वेस्तस्य काव्येन नि काण्डेन पनुष्यत । परस्य हृदये लग्नं न पुर्णयति यच्छिरः ॥ इति । अरिमन् दलोके 'क्वे' इति पद करिवृद्धिन्यायेन प्रयुक्तम् ।'

२४. काकतालीयन्याय :—काकतालीयन्याय अर्थात् वीए और ताड के फल की कहावन। एक कौआ ताड के वृक्ष पर बैठा ही था कि एकाएक ऊपर की शाखा से उसका भारी फल टूट कर वीए के निर पर आ गया जिससे वह मर गया। इस प्रकार की आकस्मिक घटना के लिए यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'अपहृत ममेद पुस्तक काकतालीयन्यायेन पुनरविगत मापगात् ।'

२५. काकदधिघातकन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—दही को विवाहने वाले कौआ का दृष्टान्त। आशय यह है कि जब किसी को कौआ से दही की रक्षा करने के लिए कहा जाता है तब वह रक्षक कुत्तों आदि से भी दही को बचाता ही है। इसीलिए जहाँ एक वस्तु अनेक वा प्रतिनिधित्व करती है, अर्थात् उपलक्षण होती है, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'अदलीन्येय मदनमोहनाख्योपन्यासो नाधेतत्त्व इति तातोपदिष्ट सुपुत्रोऽन्यापि कुग्रन्यात्राधीने काकदधिघातकन्यायेन ।'

२६. काकदन्तगवेषन्याय :—काकदन्तगवेषन्याय अर्थात् कौए के दाँत की खोज का न्याय। चिडिया के दूध तथा शश के सींग के समान कौए के दाँत नहीं होते। इसलिए इस न्याय का प्रयोग वहाँ किया जाता है जहाँ कोई निम्नी नितान्त निरर्थक कार्य के लिए उद्योगशील हो। उदाहरण सामान्येषु सार्वजनिकपुरस्तफाल्येषु पुरातनग्रन्थरत्नानामन्वयणं तु काकदन्तगवेषणमेव ।'

२७. काकाक्षिगोलकन्याय :—काकाक्षिगोलकन्याय अर्थात् कौए की आँख के डेले का न्याय। जैसे कि कौए क पदार्थ 'दकाक्ष', 'एकदृष्टि' आदि सरहृत शब्द में व्यक्त होता है कि लोगों का यह विश्वास रहा है कि कौआ दो आँखें रखता हुआ भी देखता एक ही आँख से है। तात्पर्य यह है कि उसे जिधर देखना होता है, उधर ही आँख में उसकी पुतली चली जाती है। इसी

प्रकार हम न्याय का व्यवहार वहाँ होता है। जहाँ वाक्य के किसी शब्द का अर्थ एक से अधिक तरफ विद्या वाय अथवा कोई व्यक्ति का बदरकानुसार एक से अधिक पक्षों से सम्बन्ध रखे। यथा—'बलिनोद्विषनोर्मध्ये वाचात्मान समर्पयत् । द्विधीमवेन वरुँत वावाशिवदलशिवः ॥' (बामन्दकीय नीतिसार • १।२४)

२२. कुल्याप्रणयनन्यायः—शब्दार्थ है—कृत्निर्माण का न्याय। विमान ली अपने क्षेत्रों की नियंत्रण के लिए ही नशी-नालों में कूल निकालने है। परन्तु ध्यान लाने पर हममें से पानी पी भी लेने है। इसी प्रकार जहाँ एक उद्देश्य से किये हुए कार्य से दूसरा कार्य भी निकल कर लिया जाय वहाँ हम न्याय का प्रयोग करते हैं। यथा—'महावेन देशसेवायां रत्ना मेवार्क कदाचिद् कुल्याप्रणयनन्यायेन समत्सरस्या अपि आयन्ते ।'

२३. कृपणदूकन्यायः—हम न्याय का अर्थ है कूरों के मदक की वहावत। कूरों का मदक कूरों में रहना है, हमन्त्रि कूरों से विस्तृत वा विशाल स्थान का अनुमान नहीं कर सकता। हम न्याय का प्रयोग उस अनुभवहीन व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसका पालन-पोषण सत्पुत्रित बना वरण में हुआ हो और जो सार्वजनिक जीवन तथा मानव जाति की गतिविधि में अन्विष्ट हो। यथा—'अथ खनु देशमत्तोऽपि कृपणदूक एव मन्यते युगधर्मस्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इति लक्षणात् ।'

२४. कृपयत्रष्टिकान्यायः—कृपयत्रष्टिकान्याय अर्थात् अरहट की पटियों (लीयों) का न्याय। अरहट की माला के मध्य बंधे हुए लोठों की दशा समान नहीं होती। जब कुछ लोठे नीचे पानी से मरते हैं, सभी ऊपर के लोठे रिक्त होते हैं। कुछ पूर्ण लोठे एक ओर से ऊपर को अठते हैं तो कुछ रिक्त नीचे को जाते हैं। समार में मनुष्यों के मरण की दशा भी इसी प्रकार निज-भिन्न है। इसी अर्थ में इस न्याय का प्रयोग यों होता है—'कृपयत्रष्टिका इव अन्वोऽन्यनुपतिष्ठन्ते रायः ।'

२५. क्षीरनौरन्यायः—हम न्याय का अर्थ है—दूध और पानी का दृष्टान्त। जब दूध और पानी परस्पर मिल जाते हैं तब यह जानना दुष्कर होता है कि उसमें दूध या पानी किसना और कहाँ है। इसी प्रकार जब दो या अधिक पदार्थों में पक्षिष्ठ सम्बन्ध बनाना हो तब दूध-पानी की उपमा दी जाती है। यथा—'क्षीरनौरन्यायेन सायानामेव मित्राणा मैत्री भेयस्वरी भवति ।'

२६. गगनरोमन्थन्यायः—इस न्याय का अर्थ है, आकाश की जुगाली या पागुर करने का न्याय। यदि कोई पशु जोड़े आकाश की घाम का मैदान मानकर मुँह हिलाना हुआ यह समझने लगे कि घाम की जुगाली कर रहा हूँ तो उसका यह लोभ निवान्न निष्फल होगा। इसी प्रकार क निरर्थक लोभ के विषय में इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'लोभसेवां विना शाश्वतयत्नोऽपि भित्तो ननु गगनरोमन्थ इव ।'

२७. गार्हृरिकाप्रवाहन्यायः—इस न्याय का अर्थ है मेढियासमान। यदि मेड़ों के झुंड में से एक नेत्र नदी आदि में गिर जाए तो शेष मेड़ों भी रोके नहीं रुकती और नदी में कूद पड़ती है। इसी प्रकार जहाँ लोग समझने पर भी मत्पथ का अनुसरण न करें और अन्ध-धुन्ध किसी के पाँदे चलने आँदें, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'न जानु गार्हृरिकाप्रवाह विचरन्ति केमरिणः ।'

२८. शुद्धजिह्विकान्यायः—उक्त न्याय का अर्थ है, गुद को जिह्वा पर लाने की वहावत। प्रायः बालक बच्ची दबर्ष प्रसन्नत-पूरुषक नहीं पीते। जब उनके हिन के लिए उन्हें यह विज्ञानी अन्वि वार्य होती है तब शुद्धिमान् मनुष्य पहले उनकी जिह्वा पर गुद का लेप कर देते हैं। इससे औरत की बहुराहट प्राप्त या नून हो जाती है। इसी प्रकार जब किसी मनुष्य की किसी दुष्कर कार्य में प्रवृत्त करना होता है तब कोई प्रलेभन आदि दे दिया जाता है। ऐसे ही अवनर हम न्याय के

प्रयोगार्थ उपयुक्त होने हैं। जैसे—'न हि लोकाः प्रायशो विना गुहत्रिहिका दुःकरवर्गसु प्रवर्तन्ते ।'

३३ घटकुटीप्रभातन्याय .—घटकुटीप्रभातन्याय अर्थात् चुगी की चौकी के समीप सवेरा होने का न्याय। चुगी से बचने के लिए गाड़ीवान आदि रात को उन भागों में निरक्तने का धरन करते थे जिनमें चुगी देने में बच था। परन्तु कभी कभी दुर्भाग्यवश प्रभात वहाँ हो जाता था जहाँ चुगी की चौकी समीप होती थी। इस प्रकार उनके क्रियेकारण पर पानी फिर जाना था। इस वहावन का प्रयोग हमें हा अवसरों पर किया जाता है जिन पर परिहाय वस्तु अवश्य हो समझ आ जाती है। यथा—'कानिचिद् वस्तून्येकाक्षयेव क्रेतुमह मध्याह्ने आपणप्रगच्छन्, परन्तु घटकुटीन्यायेन मोहनस्तत्र मा विक्रमनोरथ व्यदधात् ।'

३६ घृणाश्ररन्याय —घृणाश्ररन्याय अर्थात् घुन या किमी अन्य कीडे द्वारा लकड़ी आदि में कोई अक्षर बन जाने का न्याय। घुन आदि कीड़े लकड़ी, पुस्तक के पत्रे आदि को गाने रहने हैं। कभी-कभी उनके राने से कोई अक्षर-सा बन जाता है, जिसे देव कौतुक होता है। इसी प्रकार देवयोग से होने वाली बातों के लिए इस न्याय का व्यवहार होता है। पूर्वोक्त अन्धचटक-न्याय का आशय भी इसी प्रकार का है। यथा—'प्राचीनइहस्तनिश्चितग्रन्थान्वेषणाय गतेन मया तत्र 'विमाननिर्माणम्' अपि घृणाश्ररन्यायेन धिगतम् ।'

३७ चन्दनन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, चन्दन के तेल की उपमा। यदि शरीर के किसी एक भाग पर चन्दन के तेल की बूँद या चन्दन का लेप लगाया जाए तो उसके आह्लादक प्रभाव का समय शरीर में अनुभव होता है। इसी प्रकार जहाँ एकव स्थित पदार्थ व्यापक प्रभाव डाले वहाँ इस न्याय का व्यवहार होगा है। यथा—'चन्दनन्यायेन प्रसरति दिग्दिगन्त युगा-धुगद् महात्मना कीर्ति ।'

३८ चौरापरामाण्डन्यनिग्रहन्याय .—इस न्याय का अर्थ है, चोरों के अपराध पर माण्डव्य को दण्ड देने की कहावत। महाभारत के आदिपर्व में ऋषि अणोमाण्डव्य के मौनमन से सम्बन्धित तप की कथा आती है। जब वे तपोमग्न थे तब चोर, चुराई हुई सम्पत्ति के सहित उनके आश्रम में आ गिरे। राज-कर्मचारियों ने चोरों के साथ उन्हें भी पकड़ लिया और लगे सूली पर चढ़ाने। अन्त में मुनिजी छोड़ तो दिये गये परन्तु सूली की अणी के शरीर में रह जाने के कारण अणोमाण्डव्य कहलाने लगे। इसी प्रकार जहाँ 'करे कोई और भरे कोई' का व्यवहार होता है वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'वदाचिन्तु नृपः कुसवानुष्टापरार्थेन सर्वानिव प्राप्तवानिन चौरापरामाण्डन्यनिग्रहन्यायेन दण्डयति ।'

३९ छत्रिन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है, छात्रेवालों की कहावत। आशय यह है कि यदि किसी जाति हुए जन समुदाय में अनेक लोगों ने छत्रिर्वा तानी हुई हों तो हम उन सबको 'छात्रे वाले लोग' कह देते हैं चाहे सबके पास छत्रिर्वा न भी हों। इसी प्रकार जहाँ कुछ एक के सम्बन्ध में कही-हुई बात सब पर चरितार्थ कर दी जाती है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार उचित होता है। जैसे—'पुरा देवा राधु मुरमेव मेनिरे छत्रिन्यायेन ।'

४० जामातृशुद्धिन्याय .—इस न्याय का अर्थ है—नमर्द कुन पुनरीक्षण की कहावत। मेरुतुंग के 'प्रबन्धविन्तामणि' में कहानी यों दी गई है कि विक्रमादित्य ने राजकुमारी के लिए बर हँवने का काम बररुचि की सौंपा। राजकुमारी ने बररुचि से पढते समय एक दिन उनकी अवज्ञा की थी, इसलिये चतुरार से बररुचि ने एक मूढ को राजा का जामाता बना दिया। बररुचि के उपदेशानुसार जामाता चुप ही रहता था परन्तु राजकुमारी ने परीक्षार्थ एक पुस्तक उसे दोहराने को दी। उसने अक्षरों के ऊपर के बिन्दु और मात्राएँ नखछेदिनी से मिया डालीं। कुमारी पहचान गई कि यह तो कोई चरवाहा है। तब से मूर्ख से शोधन-कार्य कराने के सम्बन्ध

में यह न्याय चल पडा है। यथा—कैशिक अयोग्यजनै करित कार्ये जानादशुद्धिवदुपहा-
सात्परमेव भवति ।'

४१. तिलतण्डुलन्याय — उक्त न्याय का अर्थ है—निल और चवल की उपमा। दूध और पानी
भी मिलते हैं तथा निल और चवल भी। परन्तु प्रथम मेल में दूध पानी का पार्थक्य अदेय
होता है, द्वितीय में स्पष्ट। निल-चवल की तरह जहाँ मेल न हो परन्तु दोनों पदार्थ धूप्य
पृथक् प्रतीत भी होते हैं, वहाँ तिलतण्डुलन्याय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'कथं नाम
मीनमेव पण्डितानामकृताया अच्छादन भवितुमर्हति विदुषा समाजे, तिलतण्डुलयो स्पष्टं
पृथग्दशनात् ।'

४२. तुलोद्यमनन्याय — इस न्याय का अर्थ है—तुला को उठाने की वहावन। आशय यह है
कि जब तुला का एक पल्ला हाथ में उठाया जाता है तब दूसरा स्वयमेव नीचे चला जाता है।
इसी प्रकार जहाँ एक क्रिया से दूसरी क्रिया करना भी अभिप्रेत होता है वहाँ इस न्याय का
व्यवहार होता है। जैसे—'आनतायिननायान् हन्यादेवाविचारयन्, तेन हि तुगेवयनम्यायेन
दुष्टनारो जायते देवप्रमदश्च ।'

४३. तृणभक्षणन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—तिनका खाने का न्याय। भारत में यह
रीति रही है कि जब कोई व्यक्ति किसी के सम्मुख दानों से तिनका दवा लेगा या तब इसका
आशय होता था—परायण की स्वीकृति। ऐसी दशा में वह अवश्य माना जाता है। हिन्दी में
यह उक्ति 'दानों तले तिनका दवाना' के रूप में प्रचलित है। पराण्य की स्वीकृति के अर्थ में
इसका प्रयोग भी होता है—'आर्थे, पराजिता रिषत्र खतु तृणभक्षणन्यायेन निजप्राणानरक्षन् ।'

४४. दग्धेनवनवह्निन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—उस अग्नि का दृष्टांत जो ईंधन को जलकर
स्वयं भी उल्लस गद हो। इसी प्रकार जहाँ कोई वस्तु अपने कार्य की सम्पन्न कर स्वयं भी समाप्त
हो जाए, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। 'जलकतकरोपुन्याद' का अर्थय भी ऐसा ही है।
यथा—'पाण्डवना कोप दुयोधनादान विनाश्य दग्धेनवनवह्निन्यायेन शान्त ।'

४५. देहलीदीपकन्याय :—देहलीदीपकन्याय अर्थात् देहलीज में रखे हुए दीपक का न्याय। कमरे
के कोने में रखा हुआ दीपक तो कमरे को ही आलोकित करता है परन्तु देहलीज पर रखा
हुआ अन्दर और बाहर दोनों ओर प्रकाश देता है। इसी प्रकार जहाँ कोई शब्द, वाक्यांश
या कोर अन्य वस्तु दो तरफ अपना प्रभाव डाल रही हो, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है।
उदाहरण—'भवति हि पितृवर्णार्थे अविनश्य भोजनस्यापिष्ट्युपकरत्वे देहलीदीपकन्यायेन ।'

४६. घान्यपलालन्याय — इस न्याय का अर्थ है—जानाव और भूसे का दृष्टान्त। जिस प्रकार
लोग जानाव को प्रहण कर लते हैं और भूसे को त्याग देते हैं, उसी प्रकार जहाँ सारसहित वस्तु
को लिया तथा निस्सार को छोड़ दिया जाता है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। जैसे—
'आप्तो बुधे सरः निस्सारम् अपान्य पशुभान्यपलालन्यायेन ।'

४७. नष्टाश्वदग्धरथन्याय — इस न्याय का अर्थ है—उल्लस घोड़ों और जले रथ की वहावन।
वहावन की आधार-कथा इस प्रकार है कि दो यन्त्री अपने अपने रथों में यात्रा करते हुए रात
को एक गाँव में रुकें। देवयोग से रात को गाँव में आग लगी जिसने रथ के घोड़े उल्लस हो गये और
दुमरे का रथ जल गया। तब एक न घोड़ों को दुमरे के रथ में जोड़ दिया गया और यात्रा जारी
रही। इसी प्रकार यह न्याय वहाँ व्यवहृत होता है जहाँ पारस्परिक लाभ के लिए मिल जुलकर
काम किया जाए। जैसे—'भयदुरहमिच्छिने तथा पुास्त्व तु गर्भे, मये नष्टाश्वदग्धरथन्या-
येनैवाकी परीशुमुत्तरिष्यात् ।'

४८ नासिकाग्रेण कर्णमूलपर्यन्तयाय — इस न्याय का अर्थ है—जब की नास से कान के अधोभाग की सींचने की वहावत । जैसे नास क अग्रभाग में कान के निम्न भाग को सींचना अम्भव है, वैसे ही अशक्य विषयों में यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है । यथा—
'यो वै विद्यायां परिश्रम विनैव विद्वान् भवितुमिच्छति, स तु नासिकाग्रेण कर्णमूलं कषति ।'

४९. नृपनापितपुत्रन्याय — नृपनापितपुत्रन्याय अर्थात् राजा और नारी के बेटे की कहावत । कहा जाता है, कि एक राजा ने अपन नारी की राज्य भर में से सुन्दरतम बालक लाने का आदेश दिया । वह नारा मरे देश में बहुत धूमाफिरा परन्तु उसे ऐसा कोई बालक दिखाने न दिया जैसा कि राजा चाहत था । विवश होकर वह घर लौट आया । उसने अपना पुत्र न स्वरूप धान सुलक्षण परन्तु उसे वही सुन्दरतम प्रतीत हुआ । इसलिये वह उसे ही लेकर राजा के समक्ष जा उपस्थित हुआ । पहले तो राजा यह समझकर कि यह भेरा उपहास कर रहा है, क्रुद्ध हुआ; परन्तु कुछ मोचने पर उसे इस मनोवैज्ञानिक तथ्य का बोध हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति आत्मीय पदार्थ को ही सर्वोत्तम समझता है । अतः इस न्याय का प्रयोग उन्हीं अवसरों पर होता है जिनमें कोई व्यक्ति अपनी बुरी वस्तु को भी अच्छी समझता है । जैसे—'अज्ञानमपि स्व कुक्कव्यं नृपनापितपुत्रन्यायेन सत्काम्यपदे गणयन्ति ।'

५० पक्षक्षालनन्याय — पक्षक्षालनन्याय अर्थात् कीचट धोने का न्याय । शरीर पर लग कीचट को सभ्य मनुष्य तुरन्त धो डालता है । परन्तु उसमें वहाँ अच्छी बात यह है कि कीचट लगने ही न दिया जाय । इसी प्रकार परिस्थितियों से पहले ही बचना उत्तम है जिनमें पहने के पक्षधर फिर उनके प्रभाव को मिटाने का यत्न किया जाय । जैसे—'पक्षाक्षनादि वित्तस्य वरं पूर्वममद्ग्रह । प्रक्षालनादि पक्व्य दूरादस्पर्शनं वरम् ।'

५१ पम्बन्धन्याय — इस न्याय का अर्थ है लँगटे और अंधे की वहावत । न अथा मार्ग देख सकता है न पंगु पथ पर चल सकता है । परन्तु यदि पंगु अंधे के कर्णों पर बैठ जाय तो दोनों निश्चिन्न यात्रा कर सकते हैं । इसी प्रकार जहाँ पारस्परिक लाभार्थ सहयोग किया जाय, वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त किया जाता है । यथा—'सुवक्तारो देवदत्तो न पण्डितः, सुपण्डितोऽपि यशदत्तो वक्तृत्वविद्वान्, तथापि तौ पम्बन्धन्यायेन संगत्य स्वदेशसेवायां सन्तुष्टौ दृश्येते ।'

५२ विष्टपेवणन्याय — विष्टपेवणन्याय अर्थात् पीपी दुःख वस्तु को पुन पीमने का न्याय । गेहूँ, मकई आदि को तो पीमा जाता है परन्तु उनके आगे की पीमना निरर्थक होता है । साथ ही वह पेया पेयक की मूर्खता का धोना माना जाता है । इसी प्रकार के अनावश्यक और अनर्थक कार्यों के सम्बन्ध में उक्त न्याय का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है—'महान् दोष एवायं बद्धिः सुकस्य पुन पुनर्वचनम्, विष्टपेवणं हि तदम् ।'

५३ पुष्टगुडन्याय — इस न्याय का अर्थ है, मोटे टटे वा दृग्गन्त । आशय यह है कि यदि भीमने वान् कुत्ते की ओर मोगा टटा फेंका जाय तो वह मनुष्य दूरी कुत्तों को भी लग कर शान्त कर देगा । इसी प्रकार वहाँ एक क्रिया से एकाधिक कार्यों की निधि हो जाय, वहाँ इन्ही न्याय का प्रयोग होता है । जैसे—'हीरोऽसीमानाणामाकांक्षान्तरादौपुत्रमाम्बां विञ्चस्वयोर्महं युद्धं पुष्टगुडन्यायेन निमित्तेण समाप्तिमवाप् ।'

५४ प्रधानमहलनियर्हणन्याय — इस न्याय का अर्थ है, सुगन्ध राशु के विनाश की वहावत । आशय यह है कि जब प्रबलनम बेरी का विनाश कर दिया जाता है तब सामान्य बेरी स्वयमेव वन में हो जाते हैं । इसी प्रकार जब भारी बाधाएँ मिटा दी जाती हैं तब सामान्य विनाश बाधक नहीं बन सकते । जैसे—'हतयोर्भीमप्रदोणयोर्निश्चितं पञ्चाभूर पाण्डवानां विजयं प्रधानमहलनियर्हणन्यायेन ।'

११. प्रदानकरतन्व्याय —प्रदान करनेवाला अर्थात् सर्वत्र की उपमा। सर्वत्र बनाने के लिए अनेक द्रव्यों को मिश्रित करना पड़ता है। सर्वत्र का स्वार्थ उनमें सब विन्नी एक के भी तुल्य नहीं होगा। इसी प्रकार जहाँ अनेक वस्तुओं के संयोग से एक विशेष पदार्थ निर्मित हो जाय वहाँ यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'अभिमान्यु किञ्च प्रदानकरतन्व्यायेन वृष्ट्याऽपान्दवाऽऽतुरैस्त्विरिच्यत।'

१२. फलवत्त्वहकारन्याय —इस न्याय का अर्थ है—आम के फलिन पेड़ का दृष्टान्त। आम का फलवान् वृक्ष फल ही नहीं देता, भजे-मदि यात्रियों को सुआथ और छाया भी प्रदान करता है। इसी प्रकार जहाँ कोई क्रिया अष्टे फल के अनिरिक्त भी कोर पान दे, वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। यथा—'पुत्रोऽस्ति हि नाम प्रत्यवपित्री मातृवधन, प्रथमपित्री पितृ मैत्रयोर्विक'शमित्री च भवति वास्य फलवत्त्वहकारन्यायेन।'

१३. बहुराजदेशान्याय —इस न्याय का शाब्दार्थ है—अनेक राजाओं के देश की लड़ावत। जहाँ एक अधिक राजाओं का शासन होता है वहाँ उनकी परस्पर विरोधी आशाओं के कारण प्रजा अति पीड़ित हो उठती है। यथा—'परिनिवृत्तुने मानापित्रोर्वैमत्य विचक्षते तत्रातिदुग्णिग भवति सन्तिबहुराजकदेशवत्।'

१४. बीजाङ्कुरन्याय —बीजाङ्कुरन्याय अर्थात् बीज और अङ्कुर का न्याय। इस न्याय का उद्गम बीज और अङ्कुर के पारस्परिक कारण-कार्यभाव से हुआ है। बीज से अङ्कुर उत्पन्न होता है अतः बीज कारण है, अङ्कुर कार्य। परन्तु अगे चकार उन्नी अङ्कुर से बीज भी उत्पन्न होत है, इसलिए अङ्कुर कारण और बीज कार्य बन जाता है। इस प्रकार जहाँ दो पदार्थ एक दूसरे के कारण और कार्य भी हों वहाँ यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। जने—'स्वास्म्येन वित्तमधिगम्यते विद्येन च पुन स्वस्म्य बीजाङ्कुरवत्।'

१५. मण्डूकप्लुतिन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है, मेंडक की छलांग की लोकोक्ति। मेंडक सतत समग्र मार्ग का स्पर्श करता हुआ नहीं चलता, छलांग लगाता जाता है, जिसमें मध्यवर्ती स्थान अस्पष्ट रह जाता है। इसी प्रकार जहाँ कोई नियम सब पर समानरूप से लागू न हो, बीच-बीच में कई वस्तुओं को छोड़ना जाए, अथवा कोई काम बीच-बीच में छोड़कर किया जाए वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। यथा—'अत्रमात्रमध्यापक पाठ्यपुस्तकं मण्डूकप्लुतिन्यायेन पाठ्यपठितं न तु यथाक्रमम्।'

१६. मान्दन्व्याय —मत्स्य न्याय अर्थात् मछलियों का दृष्टान्त। प्रायः यह देखा जाता है कि बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों को हडप जाती हैं। इस प्रकार जहाँ बलवान् निर्बल को मारने या मारने लग जाए वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी की लोकोक्ति 'जिसकी लाठी, उन्की भैंस' भी इसी भाँ样 की व्यक्त करती है। उदाहरण देखिए—'सुशासनं न वै यदि पाठ्ये मान्दन्व्याय प्रवर्तते, तर्हि किमश्रयम्।'

१७. रथकारन्याय —इस न्याय का अर्थ है—रथकार (रथ बनानेवाले) का दृष्टान्त। दास में कहा गया है कि रथकार बघाकतु में अग्नि की स्थापना करे। प्रश्न उठता है, रथकार का अर्थ रथ बनाने वाला कोई भी व्यक्ति है या विशेष उपजति वा मनुष्य। तैमिनि ने निर्णय किया है कि केवल अतिविशेष का व्यक्ति ही। इस प्रकार इस न्याय का भाव यह है कि शर्मों का रूप या प्रचलित अर्थ कौनिक अर्थों से बचाना होता है। यथा—'अथ सु रथकारन्यायेन कार्यपटुवै कुशलो मन्यते न पूरवत् श्रुते कृते कुशानयनदक्ष एव।'

१८. राजपुरप्रवेदान्याय —इस न्याय का शाब्दार्थ है—राजधानी में प्रवेश का दृष्टान्त। राजपुर में प्रवेश करने का नियम यह है कि व्यक्ति बनकर पर्याय से प्रविष्ट हुआ जाए। जो रथ्याङ्गल

इस नियम को भंग करता है, उसके विटने की आदाका रहती है। इसी प्रकार जहाँ किसी कार्य को नियमानुसार करना अभीष्ट हो, वहाँ इस न्याय का प्रयोग करते हैं। दृष्टान्त लीजिए—
'यस्मिन् नु विचालये छात्रा रात्रिपुरप्रवेशन्यायेन स्वकृशा प्रविशन्ति न तत्र कीलाहली जायते ।'

६३ रमाक्षिसकाष्टन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, नमक की खान और लकड़ी का दृष्टान्त । यह प्रसिद्ध है कि जो वस्तु नमक की खान में फेंकी जाती है, नमक बन जाती है। इसी प्रकार जहाँ कुम्भगनि के प्रबल प्रभाव से अन्य वस्तु भी वैसी बन जाए, वहाँ इस न्याय का प्रयोग उचित है । यथा—'विनीता अपि जना अधिकार प्राप्य रमाक्षिसकाष्टन्यायेन दृशा भवन्ति ।'

६४ लोहचुम्बकन्याय :—लोहचुम्बकन्याय अर्थात् लोहे और चुम्बक का न्याय । यह न्याय उस सम्बन्ध को व्यक्त करता है जिसके कारण दो पदार्थ दूर होते हुए भी, स्वभावः एक-दूसरे के समीप जाने का उद्योग करते हैं । जैसे—'दूरस्था अपि सज्जना लोहचुम्बकवत् मिथो मिलितु वाञ्छन्ति ।'

६५ बरुवन्धनन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, बगुले की एकड़ने का दृष्टान्त । किसी ने बगुला एकड़ने की रीति यह बताई कि जब बगुला बैठा हो तो चुपके से उसके मिर पर मक्खन रख देना चाहिए । जब मक्खन धूप से पिघलकर उसकी आँखों में पड़ेगा तो वह अन्धा हो जायगा और शूट पकड़ लिया जाएगा । वस्तुतः यह विधि हास्यास्पद है क्योंकि बगुला तभी क्यों न पकड़ लिया जाए जब उसके मिर पर मक्खन रखा जाए । इसी प्रकार जहाँ सहज सरल विधि को छोड़कर किसी हास्यास्पद ढंग को स्वीकृत किया जाता है वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त होता है । जैसे—'बरुवन्धनन्यायप्राय एवार्थं यद् गलपट्टिकारारेण अवगते मानार्तागमे मूषाणा-मात्मरक्षाविचार ।'

६६ वनसिंहन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—वन और सिंह का दृष्टान्त । सिंह न हो तो लोग वन को ही काट डालें और वन न हो तो सिंह को ही मार डालें । ये दोनों वस्तुतः एक-दूसरे के रक्षक हैं । इसी प्रकार जहाँ पदार्थ परस्पर रक्षक हों वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है । जैसे—'न जातु सेव्यमेवकौ अन्योऽन्य हन्तु पारयत वनसिंहवद-योऽन्याश्रयित्वात् ।'

६७ वह्निधूमन्याय :—वह्निधूमन्याय अर्थात् अग्नि और धुँएँ के निरन्तर साथ-साथ रहने का न्याय । जहाँ धुँआँ होता है वहाँ अग्नि होती ही है । इसी प्रकार जहाँ एक पदार्थ का दूसरे से अनिवार्य साहचर्य बताया जाए वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है । जैसे—'यत्र योगेश्वरः कृष्णः यत्र च धनुर्धरः पार्थः, तत्र विजयो वह्निधूमन्यायेन निश्चित एव ।'

६८ विषकृमिन्याय :—विषकृमिन्याय अर्थात् विष के कीड़ों का न्याय । साधारण प्राणी तो विष के प्रभाव में मर जाते हैं, परन्तु विष के कीड़े विष में ही उत्पन्न होते हैं, उसी को खाते हैं और फिर भी जीवित रहते हैं । इस न्याय का प्रयोग उन अवसरों पर होता है जिन पर सामान्य प्राणी तो प्राणों से हाथ धो बैठते हैं परन्तु व्यक्तिविशेष सुरक्षित रहते हैं । जैसे—'हरिजनानां कर्म कुर्वन् सभान्यास्तु अचिरात् कालकृत्वलिता भवेयुः ते च हरिजना पुन विषकृमिन्यायेन दीर्घजीविनो भवन्ति ।'

६९ विषवृक्षन्याय :—विषवृक्षन्याय अर्थात् विषैले पेड़ का न्याय । कालिदास ने 'कुमारसम्भव' में कहा है—'विषवृक्षोऽपि स्वर्ष्यं स्वयं छेतुमताप्रतम्' अर्थात् यदि विष का वृक्ष भी स्वयं लगाया और पाला पोसा गया हो तो उसे काटना या उखाड़ना उचित नहीं होता । इसी प्रकार जिस व्यक्ति का स्वयं पालन पोषण किया हो, वह बड़ा होने पर अनिष्टकर भी सिद्ध हो, तो भी उसका विध्वंस समीचीन नहीं । यही इस न्याय का अर्थ है । उदाहरण द्रष्टव्य है—'विषवृक्षन्यायमनुसरता पित्रा कुपुत्ररुपाप्यहितं कर्तुं न पार्यते ।'

३० वीचित्ररूपन्याय — वीचित्ररूपन्याय अर्थात् तरण और तरंग का न्याय । नदी, मरोतर, समुद्र आदि में इन देखते हैं कि तरंगें कनक एक दूसरी को जब तक ओगेओगे ढकेलती जाती हैं तब तक वे सब एक एक नहीं — पशुचर्या । इसी प्रकार जब कूट बस्तुएँ या व्यक्ति एक-दूसरे की सहायता से सम्बन्ध तक आ पहुँचते हैं तब इस न्याय का निम्नलिखित प्रकार से प्रयोग किया जाता है—'वीचित्ररूपन्यायेन प्रत्योऽन्वयोरकारि खलु मन्वन्निश्च वीचित्रम् ।'

३१ बृद्धकुमारीवाक्य(वर)न्याय — बृद्धकुमारीवाक्यन्याय अर्थात् बूढ़ी कन्या के वर का न्याय । एतद्वृत्ति ने महाभाष्य में लिखा है कि जब इन्द्र ने एक बूढ़ी कन्या को वर माँगने की वृत्ति तब वर बोला—'पुत्रा न बहुलाः पृथुनोदनेन काञ्चनपापात्ता सुश्वोरत्' अर्थात् मेरे पुत्र सुवत्ता के पापों में प्रमूढ दूध और यो स सुलभ खजान खर्वे । अब यदि यह वर प्राप्त हो जाय तो पति, मन्त्रण, गी, दूध, धी, सुवर्ण आदि सभी पदार्थ स्वतः प्रवृत्त हो जाते हैं । इसी प्रकार वहाँ कोर एसी वस्तु माँगी जाए जिसके साथ अनेक उपयोगी द्रव्यों की प्रति अनिवार्य हो जाय, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है । जैसे—'स्वयैत्र राजसिंहमनस्यनैः सिधुमिच्छन्तं किं वर देव दावमनेनैव न्यवृत्तेन अत्यन्तं दृष्टे दौषेन न्ये पत्नी पुत्र पौत्रश्च वृत् ।'

३२ श्यालनकुलन्याय — इस न्याय का अर्थ है—साँप और नेत्रनेत्री कहावत । साँप और नेत्रनेत्री में जन्मजात वैर होता है । वे वहाँ एक-दूसरे को देखते हैं, सज्ज दखते हैं । जहाँ की तरह जब दो बस्तुओं में स्वभाविक वैर ही तब श्यालनकुलन्याय (अहिनकुलन्याय) का व्यवहार होता है । यथा—'अद्यत्वे तु रुधिरादीश्यालनकुलवद् दृश्यते ।'

३३ शतपत्रप्रशस्तभेदन्याय .—उक्त न्याय का अर्थ है—कमल के सी पत्रों को देखने का दुःखान्त । जब कोर व्यक्ति कमल के सौ कोमल पत्रों को सुद से देखता है तब देना लाता है कि तब पत्र पत्र-समूह ही छिद्र गये हैं । परन्तु बस्तुव छिद्रते एक दूसरे के अनन्तर ही हैं । इसी प्रकार वहाँ कमल जाने वहाँ अनेक क्रियाओं का एक साथ होना कहा जाता है, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है । जैसे—'पत्रि मूल भुक्त्वा सा मन्थी क्वचिन्ना मूर्च्छिता मृत्' च एत पत्रप्रशस्तभेदन्यायेन ।'

३४ शालमन्याय — इस न्याय का अर्थ है पत्नी का दृष्टान्त । मूर्ख पत्नी जलते हुए दासक की देय देता सुख होता है कि प्रपों तक को विन्ता नहीं करता । इसी प्रकार मूर्ख लोग विद्वानों से अदृष्ट होकर प्रपों से हाथ भी बैठते हैं । आबकल इनके प्रयोग प्रसामा के लिए भी किया जाता है । दोनों के दृष्टान्त एक ही वचन में देखें—'विषयेषु शम्भदन्ते मूढाः, प्रमदात्ता कामुका, राष्ट्रवेद्या च राष्ट्रमत्ता ।'

३५ शास्त्राक्षन्द्रन्याय — शास्त्राक्षन्द्रन्याय अर्थात् बृह की शास्त्र और चाँद का न्याय । अकाश में चाँद तो बहुत दूर होता है परन्तु प्रतिपदा आदि के दिन किमी की दिखाने के लिए प्राय कहा जाता है—'देगे, वह बृह का शास्त्र का ऊपर है । इसी प्रकार वहाँ कोर पदार्थ ही तो बहुत दूरवर्ग पर उसके दिखाने के लिए देने पदार्थ की ओर मन्त्र किंवा जाय जो उसके समाप प्रकाश होता हो, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है । जैसे—'शम्भान्द्रन्यायेन परिसनारामनि रोम सनीपवर्तितनेव शम्भनि काञ्चि मनचिन् ।'

३६ शिरोवेष्टनेन नामिकास्पर्शन्याय — उक्त न्याय का अर्थ है—बाहु की सिर के पीछे से लाकर लाक को छूने का दृष्टान्त । लक को समन से छूना छुकर है, बाहु पीछे से लाकर छूना छुकर । जब उद्देश्य वस्तु नामिकास्पर्श हात् बाहु की सिर के पीछे से लाकर छूने में कोर लाभ नहीं है । इसी प्रकार हर लोग किम् कर्में की सीधे दृष्ट से नहीं करते, पुनाकिरकर व्यर्थ कष्ट

महते या देते हैं। देते जा अवसरों पर उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'को लामोऽनेन शिरोवेष्टनेन नामिकम्परैः, प्रकृत एव बुद्धिः'

७७ अशुच्योपशमनन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—जिन की दूँट को मंथा करने का दृष्टान्त। कुत्ते की पूँट अनेक यत्न करने पर भी मीथी नहीं होने, प्रयत्न करने वाले का श्रम व्यर्थ ही निर्र होना है। इसी प्रकार जहाँ काम के लिए किया हुआ उद्योग मभवथा निष्फल रहे, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'अशुच्योपशमननेवैः न महत्मा गतीः कर्त्तव्यं यद् मुस्लिम-लीगिन प्रेरणा वयोक्तुमवयत ।'

७८ शबोद्धतनन्याय—इस न्याय का अर्थ है—मृतक को उठाने लाने का दृष्टान्त। मुगलध्वज द्रव्य सजीव शरीर के शोभाबद्धक है, निर्जीव के नहीं। इसी प्रकार जहाँ सर्वथा निष्फल उद्योग किया जाता है, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'पक्षिण्णनिर्णानन्तर मुस्लिमलीगस्य पुन मारते सम्पन्न शबोद्धतननेव ।'

७९ सिंहावलोकनन्यायः—सिंहावलोकनन्याय अर्थात् सिंह के समान देखने का न्याय। चउठा हुआ सिंह सामने तो देखता ही है, बाँकी-बाँकी देर बढ़ पड़े भी दृष्टिपत्र कर लेता है कि कोई भय वस्तु पहुँच के भीतर पड़े भी है या नहीं। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति अपने-अपने कार्य करता हुआ निर्रुद्धे कार्य पर भी कुछ दृष्टान्त करता है, तब सिंहावलोकनन्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'साम्नाईति छात्रैःपीठस्य सिंहवलोकन कथयन्नेव ।'

८० मिहतावैरन्यायः—अर्थात् रैन से लेक निकालने की कहावत। जैसे गधे या शय के सिर पर सींग नहीं निकलते वैसे ही रैन से तेल की उत्पत्ति कठिन है। इसी प्रकार की असम्भव बातों के लिए यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'प्रतिनिविष्टमूर्त्तवनविद्याराधन कविभिः सिक्क-लसु सैःस्वीयच्छा वपनीयते ।'

८१ सुन्दोपमुन्दन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—सुन्द और उपसुन्द की उपमा। महामरत के अदिपर्व (अध्याय २०९-२१२) में सुन्दोपमुन्द नाम के दो कन्ये अदुर भाइयों की कथा बतायी है। उन्हें गढ़ करने के उद्देश्य से जसा ने विधवाओं की एक अदिपर्व सुन्दरी (विजोचना) निर्माण करने को कहा। जसा ने विजोचना ही उन महार्यों के पास कैलासीधान ने भेजा। दोनों उसे देख मुग्ध हो गये और एक-अन्य-अपनी ओर खींचने। अन्त-दोनों क्रुद्ध होकर एक-पडे और दोनों ही मर गये। इन्हीं का समान जब दो स्मरन बहवाउ परार्थ एक दूसरे के नाशक हों, तब इस न्याय का प्रयास्यक होता है। जैसे—'नवद्रुमनरि-करात्रे परस्पर शुष्यमाने सुन्दोपमुन्दवत् न नरदत्त, शन्मिन्वत् अस्मिद्वत्त्वन एव ।'

८२ सूचीकटाहन्याय—सूचीकटाहन्याय अर्थात् सूँ और काँहे का न्याय। सिद्धी लोहार के पास जब एक व्यक्ति कवाहा बनवाने जा पहुँचे और दूसरा सूँ, तब लोहार पहले सूँ बनाता है क्योंकि उसे वह सहज ही कल काल में बन लेता है। इसी प्रकार इस न्याय का अर्थ यह है कि कठिन तथा दीर्घकालाध्य कार्य पड़े करता वहि और सुकर तथा अल्पकालाध्य कार्य पहले। जैसे—'शेनध्यापयन् शिशुक सुख्यध्यापक दण्डा मूचना, प्रकृत पठ न्यायित्वा, सूचीकटाहन्यायेन प्रथम श्रवयति ।'

८३ सूत्रवद्दशकुनिन्याय—इस न्याय का अर्थ है—मूत्र म बंधे हुए पशु का दृष्टान्त। मूत्र से बंधा हुआ पशु न श्वर-उपर स्वच्छन्द चल सकता है, न कहीं गपेट विभ्रन कर सकता है। विस परार्थन व्यक्ति की दशा उसके समान हो, उसके विषय में यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'द्वैतैःशोऽपराधस्य दशरथस्य दशा सूत्रवद्दशकुनेरिवन्मिः ।'

८५ सोपानारोहणन्याय —सोपानारोहणन्याय अर्थात् साढ़ियाँ चढ़ने का दृष्टान्त । जैसे मनुष्य छत पर एकाणक नहीं जा पहुँचना, एक-एक साढ़ा चढ़कर ही पहुँचना है, वैसे ही शानादि की प्राप्ति भी क्रमशः ही होती है । ऐसे ही अवसर इस न्याय के प्रयोगार्थ उचित है । जैसे—
'सोपानारोहणन्यायेनैव भवति विद्योत्तयो विद्यार्थिना, धनवृद्धिश्च सम्भनानाम् ।'

८६ स्थालीपुलाकन्याय —स्थालीपुलाकन्याय अर्थात् देगचे और पुलाक वा न्याय । जब किसी देगचे में चावल पकाये जाते हैं तब पाचक प्रत्येक दाने को निवाल कर नहीं देसता कि वह गल गया है या नहीं । दो-चार दाने देखकर ही अनुमान कर लेता है कि सब के सब गल गये या कुछ बकर है । इसी प्रकार नहीं किसी ममुदाय के दो-चार व्यक्तियों से सबके सम्बन्ध में कुछ अनुमान लिया जाता है, वहा इस न्याय का इस प्रकार व्यवहार किया जाता है—'विद्यालय-निरीक्षका स्थालीपुलाकन्यायेनैव विद्यार्थिना योग्यता परीक्षन्ते ।'

८६. स्थावरजगमविपन्याय —अर्थ है—स्थावर और जगम विष का दृष्टान्त । पीपों और खनिज द्रव्यों के विष स्थावर विष कहलाने हैं तथा प्रगियों के विष जगम विष । कहते हैं, विष को विष नष्ट करता है, जैसे कि महाभारत की कथा में भीमभेन को दुर्योधन द्वारा दिया हुआ स्थावर विष नदा में सर्पों के जगम विष में डर हो गया था । इसी प्रकार जहाँ एक वस्तु का प्रतिकार दूसरा से हो जाय, वहाँ यः न्याय प्रयुक्त है । यथा—'वर्तमाने बहूना रोमाणां यिकित्ना स्थावरजगमविपन्यायेनैव विधीयते ।'

८७ स्थूणानिखनन्याय —स्थूणानिखनन्याय अर्थात् खवा गाडने का न्याय । जैसे भूमि में खवा गाडना ही तो उसे बार-बार हिलाकर गहरा ठाँरा जाता है, वैसे ही अपने पक्ष के सुमर्मन के लिए जब बोर बका, लेखक अदि अनेक युक्तियाँ, दृष्टान्त आदि प्रस्तुत करता है तब यह न्याय प्रयुक्त होता है । यथा—'स्थूण निखनन्यायेन समर्थयात प्रवक्ता स्वकीयं पक्षं दृष्टान्तपरम्परया ।'

८८ स्वामिभृत्यन्याय —स्वामिभृत्यन्याय अर्थात् मात्रिक और नौरर का न्याय । स्वामी और सेवक में पोषक तथा पोष्य या धारक और धर्य का सम्बन्ध होता है । इसी प्रकार का सम्बन्ध जहाँ दो वस्तुओं या व्यक्तियों में दिखाए दे, वहाँ उक्त न्याय व्यवहृत होता है । यथा—'इह लोके सबन्नं ज वेधरयो व्यवहार स्वामिभृत्यन्याय इव दूरवसे ।'

८९ स्वेदजनमित्तेन शाकटत्यागन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—पसीने से उत्पन्न कीड़ों के कारण बख फँक देने का न्याय । इसी को कहीं पर 'शूकामिद्या कन्यात्यागन्याय' भी कहते हैं जिसका हिन्दी रूपान्तर 'जुओं के टर से गुदडी नहीं फँकी जाती' है । आशय यह है कि सामान्य भयों से भीत होकर भारी हानि सहन करना बुद्धिमत्ता नहीं है । यथा—'परीशाया वैपत्स्यमपि सम्भवतीति भयन परीशाया छात्रा न सन्मिलिता भवेयुरिति न, स्वेदजनमित्तेन स्वागन्वायेन ।'

९० हृदनन्याय —हृदनन्याय का अर्थ है—होल और मगर का दृष्टान्त । इसका आशय 'बलमिह्न्याय' के समान है । विस्तारार्थ वहाँ देखिए ।

सप्तम परिशिष्ट

प्राचीन भारत का भौगोलिक परिचय

मातृसंस्कृति से अपना स बन्ध स्थापित करने के लिए जहाँ मातृभाषा का परिचय आवश्यक है, वहाँ मातृभूमि के विषय में भी कुछ न कुछ ज्ञान अपरिहार्य है। इसी ध्येय से प्रस्तुत अनुक्रम में हम जोड़ रहे हैं।

जिस बृद्ध भारत के विषय में हम म्हा गर्व अनुभव करते हैं, उसके तीर्थार्थि स्थानों के सम्बन्ध में परिव्यात्मक सकेत प्राचीन साहित्य में जहाँ-तहाँ विखरे पड़े हैं। सस्कृत-नाटक के कथा प्रवाह को भी, उनकी पृष्ठभूमि के अभाव में, समझ सकना असम्भव है। हमारी विभिन्न बोलियों, रीति वृत्तियों, कवि-समयोलियों के मूलोद्गम भी तो लोक-संस्कृति के यही उबार प्रदेश ही थे। राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का तिनना श्रेय अथमथ का परम्परा को अतुंग्य रखने वाले हमारे चक्रवर्ती म्हाद्यों को रहा है, उतना ही श्रेय इस देश के महाकवियों (वरनीकि, व्यास) को भी है। मेघदूत का सदेशहर बादल स्वयं कवि का उदार हृदय है, जिसके मुक्त व्योम में उमड़ने-उठने में भारत, मानो एक घोंसले में आबद्ध हो गया है।

हमारे प्राचीन भूगोल को लेकर कोई क्रमबद्ध अनुसन्धान अभी तक नहीं किया गया। श्री नन्दूलाल दे की 'दि निओमाकिरल डिक्शनरी ऑफ एन्टोप एण्ड मिडिवाल इण्डिया' (प्रथम संस्करण १८८९, द्वितीय १९२७) आप स्वयं सशोधन चाहती हैं। डा० वासुदेवशरण त्रिवाली ने जिस प्रकार पाणिनिवालीन तथा वाणवालीन भारतवर्ष के साम्स्कृतिक रूप को एकसूत्रित करने का यत्न किया है, जिस प्रकार डा० ऑरेलस्टेडन ने काश्मीर के विस्मृत नामों का उद्धार किया था, उसी प्रकार की वृत्तार भारत की क्रमिक कहानों के लेखक को अभी जन्म लेना है।

प्राचीन भारत के कुछ एक नामों का तुलनात्मक उल्लेख हम कर रहे हैं, इस आशा से कि कोई अज्ञात युवक, एक ही सर्ही, उन 'प्रथम प्रभात' के सस्पर्श से पुलकित होकर अनुसन्धान की इस ऊछूती दिशा में प्रयत्नशील हो जाए।

अंग—प्राचीन भारत के १६ 'राजनीतिक' जनपदों में एक, जो कभी रोमपाद (रामायण) तथा कर्ण (महाभारत) के शासन में था। आकल भागलपुर के आसपास का प्रदेश।

अजानगिरि—पंजाब की 'झलेमान' पर्वतमाला (पृष्ठ १००)।

अगस्त्याश्रम—नासिक, कोल्हापुर (दन्वर्द), उत्तरप्रदेश, गढ़वाल, सतपुडा आदि में कृषि अगस्त्य के नाम से प्रसिद्ध आश्रम। अगस्त्य ही वे 'चरित्र विजयी' वीर थे, जिन्होंने सर्वप्रथम आर्य-सभ्यता का दक्षिण में प्रवेश संभव किया था। लोगों का विश्वास है कि अगस्त्य अत्र भी ताम्रपर्णी के उद्गम स्रोत (तिनिवेली में) 'अगस्त्यकूट' पर समाधिस्थ हैं।

अचिन्त—मध्यभारत में एलोरा के प्राय ६० मील उत्तरपूर्व की ओर 'अजिष्ठा' ('अन्ता' उच्चारण अशुद्ध है) नामक गुहा मनुह, जहाँ (बौद्धों के) योगाचार्य मत के सस्थापक आर्य अन्नग का प्रथम 'आश्रम' था। गुहाओं में अभ्युत्थितकला का अद्भुत विहार के स्वविर 'अचल' के आदेश पर ५वीं-६ठी शती में सम्पन्न हुआ था।

अचि(ञ्जि)रावती—अवध की राप्ती (रेवती) नदी, जिस पर कभी श्रवस्ती नगर बसा हुआ था। २ इरावती (राप्ती)। (पृष्ठ १००)

• संकेतों के विवरण के लिए ग्रन्थारम्भ में सकेत-सूची देखिए।

अच्छोद—काश्मीर का एक सरोवर (आधु० अ-छावत), जिसके तट पर कभी 'सिद्धाश्रम' अवस्थित था। (वादम्बरी)

अनन्तनाग—नेहलम के दक्षिण तट पर स्थित (काश्मीर की) प्राचीन राजधानी। (आधु० रत्नामावाद)

अनन्तशायन—ब्र वनकोर का पद्मनाभपुर, जहाँ एक मन्दिर में विष्णु की शैवनाग पर प्रसन्न मुद्रा में अविन मूर्ति सुरक्षित है। (पद्य० उत्तर०)

अनहिलपत्तन—बल्मी-साम्राज्य के विश्वस पर 'वनराज' द्वारा गुजरात (उत्तर-बड़ोदा) में (७४६ ई०) प्रतिष्ठापित एक (आधु० अनहिलवाळ) नगर।

अनुराधपुर—मिहल (मी-गोन) की पुरानी राजधानी, जहाँ महिन्द तथा सप्तमित्रा द्वारा रोपित बाधिवृक्ष की शाखा से विकसित 'अश्वत्थ' आज भी विद्यमान है। (महावज्र)

अनूप—दक्षिण मालव देश, हेहय, महिष (साहिक)। (हरिवंश०)

अन्तर्वेद—गंगा तथा यमुना के अन्तगत दोशव। (भविष्य०)

अपरा—अरुणानिम्बान। (महाण्ड०)

अपरान्त (क)—बौवण तथा मन्वावर, पश्चिमी घाट। (रघु०, मत्स्य०)

अभिसारा (रि)—वेशावर डिभिजन में एक त्रिज, उरसा (आधु० हवारा), जिसे अजुन ने (मभपर्व०, पद्म०) अपनी चर दिवित्रय में जीता था।

अमरकण्ठक—गोंडवाना में मेकल पर्वतमात्र का एक माग, जो नर्मदा तथा शोण का उद्गमस्थल है, आम्रकूट (?) (पद्म०, स्कन्द०, मेघदूत)।

अमरावती—आश्र में कृष्णा के तट पर, बेजवाहा के प्राय २० मील पश्चिम की ओर स्थित प्रसिद्ध बौद्धस्तूप (का मध्य स्थान) जिसे चतुर्थ शती के अन्त में आश्रों ने निर्मित किया था।

अम्बर—जयपुर (के समीप प्राचीन नगर आमेर)। इसकी मूल प्रतिष्ठा माघाना के पुत्र अम्बरीष न की थी तथा 'वर्तमान' रूपान्तर मानसिंह ने अकबर के दिनों में किया था। (भविष्य०)

अयोध्या—'राम-राज्य का पुनीत धर्मेश्वर', अवध। बौद्धयुग में सरयू नदी अयोध्या की उत्तरकोमल तथा दक्षिणकोमल में विभक्त करती थी। अयोध्या के प्वल तीर्थों का पुनरुद्धार ५वीं शती में क्रिमी गुप्त 'विक्रमादित्य' ने किया था।

अरण्य—मन्वत, दण्डक, नैमिष, कुहर्जंगल, अपरावृत्त, जम्बुमार्ग, पुष्कर, हिमान्य तथा अरण्य का भी तीर्थ-वनों में परिगणन होता है। (देवी०)

अरणाचल—वैजाम के पश्चिम में एक पर्वतमाला। २ दक्षिण भारत में सुरक्षित 'अष्टमूर्ति' (शिवजी महाराज) की पाँच 'भौतिक' मूर्तियों में एक—'अग्नि प्रतिमा' जहाँ प्रतिष्ठित है। (महाण्ड०)

अरण्योद—गडवाल। (स्कन्द०)

अपरागा—वावेरी। (हरिवंश०)

अरुंद—(राजपूताना की) मिरौही स्थान में अरवली पर्वतमाला की 'आर्' शाखा, जहाँ मे वशिष्ठ ने विश्वामित्र के विरुद्ध युद्ध करने के लिए 'परमर' जैसे वीर को एक 'अग्निकुण्ड' से उत्पन्न किया था। (महाभा०, पद्म०)

अरुका—यद्यपि कुबेर की राजधानी, जिसका नामकरण, ममवन, गडवाल में बहती अरुका नदी (अपरनन्दा, यमुधारा) नामक नदी के अनुकरण पर हुआ था। (स्कन्द०)

अरुनी—मालव राज्य की 'राजधानी' उज्जयिनी (उज्जैन), जिसे ७८वीं मदी ने मालवा बहते आते हैं। कभी यह महत्त्वपूर्ण विक्रमादित्य की 'राजधानी' थी। २ मिमा (नदी का पर्व नाम), जिस पर प्राचीन उज्जैन स्थित था।

अविमुक्त—काशी, वाराणसी (बनारस) । (शिव०, मत्स्य०) ।

अशमक—(दशकुमारचरित में) दिग्भू के अधीन एक राज्य, जो अयंशास्र के टीकाकार
भट्टश्यामी के अनुसार, महाराष्ट्र है—और कभी अन्नन्ती-साम्राज्य के उत्तर-पश्चिम में था ।
(कूर्म० इर्ष०, नाटक०) वक्षु (अशमन्वती आम्) की सम्यता का देश—ऑक्सियाना, 'पागल' ।
अशमन्वती—वक्षु (आक्सस), श्मु, यक्षु, आम् दरिया । (खु०)

असिचना—चनाव की पट्ट धारा ।

अहिच्छत्र—रोहीण्यजड में बरेली में २० मील पश्चिम की ओर, आधुनिक रामनगर; अहिषेत्र,
छत्रवती । (महा०)

आदर्शावली—अरबकी एवंमाला । (दे० आर्यावर्त)

आनर्त्त—अनारत (तथा मालवदेश का कुछ अंश), जिसकी राजधानी कभी कुशास्थली
(ट्रासिका) थी । उत्तर गुजरात की राजधानी का नाम भी कभी आनर्त्तपुर (आनन्दपुर,
अधु० वाठनगर) रहा था । (भागवत०)

आन्ध्र—गोदावरी तथा कृष्णा नदियों का 'मध्यदेश', राज० अमरावती । सदियों यहाँ बेल्लों के
पत्तों तथा कन्न्यापुर के खोबों का उत्थान पतन होना रहा । स्वयं अन्धों का राजवश,
इतिहास में, सातवाहन अथवा सातकर्णिक के नाम से अधिक प्रसिद्ध है । (गृह०, अनर्षराषव)

आपगा—(पश्चिमी पनाब की) रावी के पश्चिम में एक सरिता । २. कुरुक्षेत्र में चितांग नदी की
एक महायिका, जिसे ओघवती नदी 'आपगा' भी कहते हैं । (वाग्म०)

आभीर—नर्मदा के मुह ने के गिर, गुजरात का दक्षिणपूर्वी भाग । (ब्रह्मण्ड०, महाभा०)

आस्रकूट—अमरकण्ठक ।

आतिकाया—यास (विपासा) की एक धारा ।

आर्यावर्त्त—(मनु के अनुसार) हिमाद्रि तथा किन्च्य के मध्य में स्थित देश, उत्तरापथ ।
पश्चिम के समुद्र में आस्रकूट की चार 'पार्वती' मर्यादाएँ थीं—१. उत्तर में हिमालय, २. दक्षिण
में पारियात्र, ३ पश्चिम में आदर्शावली, तथा ४ पूर्व में कालकवन । राजशेखर के बाल-
रामायण के अनुसार दक्षिणभारत तथा उत्तरभारत को स्थानात्मिक विभाजन रेखा है—नर्मदा ।

आशापल्ली—अलबेरुनी का येस्ताबल अथवा आशाबल, आस्रकूट का अहमदाबाद ।

इन्द्रपुर—इन्दौर । (स्कन्दपुरा के अभिलेख, शहरविजय)

इन्द्रप्रस्थ—पुरानी दिल्ली, बृहत्स्थल, खाण्डवग्रन्थ (महाभा०) । कहते हैं पुराने किले का
निर्माण (वलियुग ६५३ में ?) युधिष्ठिर ने किया था, लोकभाषा में उसे आज भी 'इन्द्रपत्त' कहते
हैं । महाभारतकाल में यह युधिष्ठिर की राजधानी थी, किले का पुनर्निर्माण हुमायूँ का
किया बताया है ।

इ (ऐ) रावती—रावी (पनाब) २ (अवध की) राती (अचिरावती) । (गृह०)

इषिपत्तन—अपिपत्तन, भारतनाथ ।

उदण्ड(न्त)पुर—पटना जिले का 'विहार' शहर, जो कभी बंगाल के पाल राजाओं की राजधानी
था । यहाँ बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की चन्दनमयी मूर्ति से सुशोभित एक प्रसिद्ध बौद्ध विहार भी
है । (शक्ति अथरान)

उग्र—देर (देवीपु०) । बिहार में महास्थान (पञ्च०) ।

उच्च—वरण, बुन्दराहर, जहाँ जनमेजय ने 'भागसत्र' (अर्थात् पुराणों के प्रवचन) का
प्रचलन किया था ।

उज्जयिनी—प्राचीन मालवदेश (अर्थात् अजन्ता) की राजधानी । तीसरी सदी ई० पू० में
विन्दुसर के समनराल में अशोक यहाँ राज्यपाल थे । विक्रमादित्य मकरप्रवर्तक ने शकों को

(५७ ई० पू०) पराजित कर इस अपनी राजधानी बनाया था । चंद्रगुप्त विक्रमादित्य (द्वि०) ने सुराष्ट्र-मालव देश के शत्रुओं को भारत से निर्वासित कर उज्जैन की प्राचीन परम्पराओं को अन्तत समाप्त कर दिया । गाथाओं में उदयन की प्रेम लीलाओं का भी इधर से ही सम्बन्ध रहा है । शहर के मध्य में कभी यहाँ कालप्रियनाथ भगवान् का एक मन्दिर था, जहाँ शिव पुराण के प्रसिद्ध १२ ज्योतिर्लिंगों में एक की प्रतिष्ठा थी ।

उ(ओ)ड़—उड़ीसा, उत्कल (उत्-कलिंग, अर्थात् कलिंग का उत्तर भाग) । इसकी दक्षिणी सीमा पर जगन्नाथ (पुरी) का प्रख्यात मन्दिर था । पुराणों के युग में उत्कल तथा कलिंग का विभाजन हो चुका था ।

उत्तराखण्ड—गढ़वाल तथा हिमाचल प्रदेश का उत्तरीय भाग, जो हिमालय के परतल प्रदेशों का एक पुत्र था—शौर जिसे अर्जुन ने अपनी दिग्विजय में युधिष्ठिर के साम्राज्य का अङ्ग बना लिया था ।

उत्तरापथ—काश्मीर तथा काबुल का 'एक राज्य' । २ उत्तर भारत (भारतवर्ष) ।

उत्तरमद्र—काश्मीर में 'मद्र' प्रान्त, जिसमें अवस्ता का 'आयानन वानों' (आर्य-अपवर्ग) भी सम्मिलित था ।

उत्तरविदेह—नेपाल का दक्षिण भाग, जिसकी राजधानी गन्धर्वती थी । (स्वयम्भू पुराण)

उत्पलारण्य—कानपुर से १४ मील दूर (आयु० विदूर), 'वाल्मीकि आश्रम', जहाँ सीता ने प्रवास में लव तथा कुश को जन्म दिया था । यहीं पर, सरस्वती तथा दृपद्वता के 'मध्यदेश' (ब्रह्मावर्त) में ध्रुव के पिता उत्तानपाद ने 'प्रतिष्ठान' की स्थापना की थी ।

उदयगिरि—उड़ीसा में सुबनेधर के पाँच मील पूर्व एक पर्वत, जिसकी प्रसिद्ध गुहाओं में ई० पू० ५००—५०० ई० के सहस्र वर्षों में भारतीय कलाकार अपना सर्वस्व उँडेलते रहे ।

उदीच्य (भूमि)—सरस्वती के उत्तर पश्चिम का प्रदेश । (अमरकोश)

उरग (पुर)—काश्मीर के पश्चिम में, जेहलम तथा सिन्ध नदियों के बीच का प्रदेश (हजारा),

उरसा, अभितारा (मत्स्य०) । २ विचित्राक्षी = उरैपुर, जो छठी शती में पाण्डवों की राजधानी थी, नागपत्तन (?) । (रघु०) ११वीं शती में चोड़ों का सम्पूर्ण तमिल देश पर प्रभुत्व जम चुका था । 'पवनदत्त' का कवि हसे, साम्रण्य पर प्रतिष्ठित करना हुआ, भुजंगपुर नाम से स्मरण करता है ।

उरविस्व (स्व)—'गया' के ६ मील दक्षिण में, 'बुद्धगया', जहाँ ६ठी शती ई० पू० में भगवान् बुद्ध ने बोध प्राप्त किया था । यहीं से बोधिवृक्ष की शाखाओं का देश विदेश में प्रनिरोग हुआ था । आज यहाँ एक महान् विहार भी है, जिसकी स्थापना छठी शती ई० पू० में अमरदेव ने की थी ।

ऋक्षपर्वत—विन्ध्य की पूर्व शाखा जो शोण, शुक्तिमती, नर्मदा, महानदी आदि का उद्गम है ।

ऋषिपत्तन—(काशी में) इक्षिपत्तन, सारनाथ । (ललितविस्तर)

ऋष्यमूक—विन्धिना में (बुद्धभद्रा पर) पम्पा का उद्गमस्त्रोत ।

(ऋष्य) **श्रुतगिरि**—मैथिल में बैलर के उत्तर में एक पर्वतशृङ्खला, जहाँ स्वामी शंकराचार्य ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए (चार मठों में, दक्षिण में) 'शुद्धेरा' का प्रसिद्ध मठ स्थापित किया था । (शंकरविजय)

एल(ः)पुर—एलोरा ।

एरण्डपट्ट—खानदेश । (हरिवंश-प्रशस्ति)

एरिकिण—एरण ।

औदुम्बरा—सि० गुरदामपुर ।

कम्पाश्रम—म्हारनपुर तथा गढ़वाल में से गुजरती मालिनी ('जुका') नदी के किनारे कवि कण्व का आश्रम था, जहाँ शकुन्तला का भरण पोषण हुआ था । (बोरदार से ५ सिन्धीनीट की दूरी पर) । (शतपथ०)

कनक—रावतपुर। (पन्ना)

कनिष्कपुर—गानगर से दम मील दक्षिण की ओर कनिष्क की बसाई नगरी, जहाँ ७८ ई० में अन्तिम 'शुद्धमणी' का अधिवेशन तथा 'शक-सन्ध' का प्रवर्धन हुआ था।

कन्या(कुमारी)—'केप कौमोरिन' (सु)कुमारी।

कपिलग्राम्—शत्रुओं की राजधानी, भगवान् बुद्ध की जन्मभूमि—जो आज कैलाश से २५ मील उत्तरपूर्व में, 'भुइला' के नाम से विदित है।

कपिलग्राम—बंगाल में 'भागर-मगम' तीर्थ, जहाँ महाराज सगर के अश्वमेधीय अश्व का दूत्र ने अपहरण किया था।

कपिला—कुभा (कातुल) नदी के नाम पर उमका 'उत्तरप्रदेश' भी 'कपिला' कहलाने लगा; कभी कपिला नगरी 'गान्धार' साम्राज्य की राजधानी थी। २ रघुवंश में उद्योता की 'स्वर्गरेखा' (नदी) को बवि ने 'कपिला' (पलाशिनी) कहा है।

कपिल—(पूर्वा) अफगानिस्तान। अरग। (राजत०, मार्कण्डेय०) यास्क के अनुसार 'गलचा' भाषणा का प्रदेश, जहाँ आज भी (') √शु (गतो) का क्रियात्मक प्रयोग (मात्र 'शव = प्रेत' नहीं) होता है, और जिसे अर्जुन ने अपनी दिग्विजय में युधिष्ठिर के माघ्राज्य में जीता था। (महा०)

करतोया—रगुण, दीनानपुर, बोगरा में से गुजरती हुई एक तीर्थ नदी सदादीरा, जो कभी बगल तथा कामरूप (आसम) की विमानक रेखा थी। (स्कन्द०)

कर्णसुवप—(बंगाल में) मुर्शिदाबाद जिल में, रगामाटा (कानसोना), जो की अदिशर की राजधानी थी।

कर्णट—कुन्तलदेश, राम० कल्याणपुर।

कर्णपुर—कुमाऊँ, गढ़वाल, अन्गोडा, कांगडा का पर्वतीय राज्य—जिसे समुद्रगुप्त ने विजित कर गुप्त साम्राज्य का अंग कर लिया था। (हरिपिंग०)

कर्णकुण्ड—(हैदराबाद में हीरों की खानों के लिए प्रसिद्ध) गोलकुण्डा, 'सर्वदशैतसमह'—कार भाषणाचार्य की जन्मभूमि।

कलङ्कि(टि)—(केरल में) शकराचार्य की जन्मभूमि।

कलिंग—'उत्तरी सरकार' का इलाका, जिसकी 'युद्धविनय' से विजित हुए अशोक ने 'धर्मविजय' की प्रेरणा जगी थी। 'कलिंगविनय', भरत ही की नहीं, विश्व भर की आत्मा में एक नवज्योत्सव का मुहूर्त है। (एच० जी० वेल्स)

कलिंगनगर—(उड़ीसा में) भुवनेश्वर (पुगी)। (दशकुमार०)

कल्याणपुर—(निजाम साम्राज्य में) बीदर के ६ मील पश्चिम में, चातुर्वर्षी (के कुन्तलदेश) की राजधानी।

काञ्ची (पुर)—वाणवेरम्, जो शकराजाय द्वारा स्थापित 'विष्णुकाञ्ची' मन्दिर के लिए तथा 'नालन्दा विश्वविद्यालय' के लिए प्रसिद्ध है। अष्टमूर्ति शिव की 'भोत्रिक' मूर्तियों में 'आकाश-त-र' की प्रतीय मूर्ति (चिदम्बरम्) इधर दक्षिण में हो क्यों मिलती है ? (दे० अरणाचल)

कान्यकुब्ज—विश्वामित्र की जन्मभूमि (रामायण), तथा (बौद्धयुग) में दक्षिण-याञ्चालों की राजधानी—कन्नौज। हर्षवर्धन से पूर्व यह कुछ समय तक मौरवियों की राजधानी भी रहा। इमा के ('त्रिकोण' दुर्ग के) दक्षिण पश्चिम में स्थित 'रगमहल' से ही शूचीरान ने सयोगिता का हरण किया था। (भविष्य०)

कामरूप—असम (अहोम, उच्चारण 'आमाम' नहीं) जिसकी राजधानी था—प्राग्ज्योतिष। कुछ विद्वान् प्राग्ज्योतिष का कामारूप अथवा गोहाटी से एकीकरण करने हैं। (मेघनूत,

कालिका पु०) कुट हो, 'कामरदन' का माता का सारा वानावरण (तीर्थों तथा लोकवाङ्मय की साक्षी पर) शर ही अधिक उचित उतरता है। (मेघदूत)

काम्पिल्य—दक्षिण पञ्चाल (सुपद्रुदेश) की राजधानी।

कार्तिकेयपुर—(ब्रामाऊँ में) देवनाथ (वैद्यनाथ) तीर्थ। (देवी पु०)

कालीघाट—सती से सम्बद्ध स्त्री 'पीठ' के आधार पर 'कल्कचा' का नानवरण हुआ प्रतीत होता है।

काश्यपपुर—उपनिषदों के 'चरैवेति' युग में ऋषि काश्यप द्वारा स्थापित (उपनिवेशित) नगरों, प्रदेशों का 'सर्वनाम', यथा—काश्मीर, मुक्तान।

काश्यपीगंगा—पुञ्जान की सावरमती (नदी)। (पद्म०)

किम्पुर (देश)—नेपाल।

किरात (देश)—नेपाल के सुदूरपूर्वकी ओर किरातों की बस्ती—(त्रिपुरा) निपारा, जहाँ 'त्रिपुरेश्वरी' का तीर्थमन्दिर है। (महा०)

किष्किन्धा—सुदुमरा के दक्षिण तट पर धारवाह में आज भी इसे उनी पुराने नाम से लोग जानते हैं। लोकगाथा के अनुसार, यहाँ (राक्षस) बाली का ध्वंस हुआ था। अयोध्या से किष्किन्धा तथा किष्किन्धा से लका—कुल दो सौ मील की दूरी थी। 'लका'—'निहल' (सीलोन) नहीं है।

कुण्डमास—बैशाली का एक और नाम, जो महावीर की जन्मभूमि था और आधुनिक मुत्तपूरपुर (निरहुत) में अवस्थित था। (जैनध्वज)

कुण्डिनपुर—विदर्भ की प्राचीन राजधानी, बीदर (?)। (मायत्रीभाष्य)

कुन्तल (देश)—नर्मदा, तुङ्गभद्रा, पश्चिममागर और गोदावरी से सीमित इस प्राचीन देश ने पाण्डवों तथा मराठों के हाथ कई उत्थान पथन देखे, वरुं राजधानियाँ (कल्याण, नासिक) बदलीं। (दत्तकुमार०, तारावन्त्र)

(कुन्ती) भोज—मालवदेश का एक पुराना नगर, जहाँ पाण्डवों की माता का बाल्यकाल, 'बुन्तीभोज' की छत्रछाया में बीता था।

कुभा (कुहु)—बाबुल (नदी)।

कुमारवन—ब्रामाऊँ, चूर्माचल। (बिराटपर्व)

कुम्भघोष—तमोर तिल में चोर्नी की राजधानी तथा विष्णुपीठ रहा है। (चैतन्यचरित०)

कुम्भेश्वर—महा नगरों का धर्मक्षेत्र भी, सुदक्षेत्र भी—धानेसर।

कुम्भजागल—हर्गिन पुर के दक्षिण पश्चिम का 'आरण्यक' प्रदेश।

कुम्भिनद (देश)—कभी मन्तज तथा गंगा के बीच क सारा प्रदेश 'कुम्भिनद' कहलाना था, आज गढ़वाल व स थ (उत्तर) दिल्ली तथा महारनपुर जमने शामिल करने होंगे। (महा०)

कुल्ल—कुल्ल, कभी कुम्भिनद का ही एकास था। (बृहत्संहिता)

कुशा(भवन)पुर—अवध में गोमती के तट पर, मुत्तानपुर। इहा कुशों की पुरानी राजधानी अयोध्या की छत्रछाया, कुशा शहर आ बसा था। (रघु०)

कुशाग्रपुर—मगध का प्राचीन राजधानी, राणगृह, गिरिवज्ज।

कुशास्फली—क्षरिका। इतिहास में आनसों की राजधानी भी रही है। प्रसिद्ध विद्वान् कीच ने इसे (कुशीभा) का 'इन्द्रो काव पुञ्जान' पर भ्रमति देने हुए) श्रीरूप, दयानन्द तग गौरी की जन्मभूमि होने का श्रेय दिया है।

कुशासनगर—जहाँ भगवान् बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था, गोरारपुर क निकट आहु० 'शक्तिवा' गाँव (विष्मन)।

कुसुमपुर—पाटलिपुत्र (पटना) । (मुद्राराक्षस)

कुर्मांचल—कुमाऊँ । कुमारवन ।

केकय—व्यास तथा सनत्कुब के बीच का प्रदेश, भिक्ती एक राजकुमारी (कैकेयी) की ईर्ष्या से राम को बनवास मिला था ।

कोसल—अयोध्या । जब कोसल सम्राज्य को (उत्तर, दक्षिण) दो भागों में विभक्त कर दिया गया, उनकी राजधानियाँ भी क्रमशः कुशावती तथा धावस्ती बन गईं । भगवान् बुद्ध के समय में कोसल एक बलशाली साम्राज्य था, कपिलवस्तु तथा बनारस उसके अन्तर्गत थे । बिन्दु, ३०० ई० पू० में इसका मगध में समावेश हो गया और इसकी राजधानी भी नव आवस्ती बनकर पाटलिपुत्र हो गई । कहीं-कहीं दक्षिण-कोसल की प्रतिष्ठा 'महाकोसल' नाम से भी मिलती है ।

कौशाभ्मी—इलाहाबाद के प्राय ३० मील पश्चिम की ओर 'कोमन' जो कभी वसुदेव की राजधानी थी । (बृहत्कथा, यास)

क्रौञ्च (देश)—कुर्ग । (कावेरीमाहात्म्य)

क्रौञ्च (रन्ध्र, पर्वत)—'तिम्बत तथा भारत' में (कुमाऊँ की पाटी में) मवेशदार, जिसका 'उद्घाटन' परशुराम ने किया था । कुछ विद्वानों के अनुसार यह 'वर्मा-भारत' की पूर्वीय पर्वतमाला का शोक है । रामायण के अनुसार क्रौञ्चपर्वत कैलास का बड़ भाग है जहाँ मानसरोवर बोल शोभायमान है । तो क्या 'कैलास' शिव पार्वती के दस कौड़ा शीलों का एक सामान्य नाम है और तथैव क्या मानसरोवर का भी ?

क्षप(स)—विष्टवाल तथा वितस्ता के बीच का इलाका, जिस पर कभी खसों का 'साम्राज्य' था । कुछ विद्वानों के अनुसार इन पावतीय खसों को परास्त करके ही चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' बने थे, किन्तु अधिक सम्भव यही है कि शकाधिपति किदार को बहुत तक सदेव कर चन्द्रगुप्त ने खसों का नश्यदोष हो किया ही था, साथ ही गुप्तों की दूर लुकी प्रतिष्ठा का उद्धार करके वे बराह-अवतार भी कहलाये । (देवीचन्द्रगुप्त, हर्षचरित, खुवंश १३)

राजसाह्वय—हस्तिनापुर । (भागवत०)

राजेन्द्रमोक्ष—गंगा तथा गण्डकी के संगम पर प्रसिद्ध तीर्थ (भागवत०) । शोणपुर ।

राज्यमादन—कैशम की दक्षिणी शाखा, जहाँ कभी हनुमान का आवास था—बर्दिकाध्रम भी यहीं स्थित है । (कालिका०, विक्रमो०)

गांधिपुर—कान्यकुब्ज (कन्नौज) जिसे विधामित्र के पिता ने बसाया था ।

गान्धार, गन्धर्वदेश—बाबुल नदी के साथ-साथ बसा हुआ कुनार तथा सिन्ध नदियों का 'मध्यदेश', जिसमें कभी पेशावर तथा रावलपिण्डी समाविष्ट होते थे । पुरुरपुर (पेशावर) तथा तदाशिला इसकी दो राजधानियाँ थीं ।

गिरिकर्णिका—(गुजरात में) साबरमती ।

गिरिनगर—गिरिनार—जूनागढ़ में एक पर्वतमाला, जहाँ नेमिनाथ तथा पार्श्वनाथ के प्रसिद्ध २० मन्दिर हैं । कनी शक्ति दत्तात्रेय का आवास था । अशोक के कुछ शिलालेख यहाँ भी अभिलिखित हुए थे । सुदर्शन शैल का तथा उसके उद्धारक हरदामन् का नाम भी इससे सम्बद्ध है । (स्क २०, बृहत्स०)

गिरिवज्र—(बिहार में) मगध की प्राचीन राजधानी—राजगृह—'बहु' के द्वारा सत्थापिना होने से इसे वसुमती भी कहा जाता है (रामायण) ; 'उद्भय' में इसे कुसुमपुर भी कहने लगे थे । प्रसिद्ध विपश्चाल्य 'विक्रमशिला (बिहार)' यहीं स्थित था । (महावग्ग)

शुभ्रवृट—'गिरिनार' के दक्षिण की ओर रत्नगिरि शृङ्खला का एक भाग, जहाँ तपोमन्य बुद्ध पर

देवदत्त ने शिला पेंकी थी : वहाँ, जीवक वन में, अमरानशु तथा उसके प्रधानमन्त्री वर्षकार ने स्वयं भगवान् की सेवा में उपस्थित हो, 'पाटलिपुत्र' को स्थापना-शोचना बनाई थी। (बुद्धवग्ग)
गुप्तफासी—(उड़ीसा में) भुवनेश्वर । (कुमाऊँ में) शोणितपुर (हरिवंश) ।

गोरण—(उत्तर गों०) गगोचरी से ८ मील दूर, भगोरथ का 'तपोवन' । (दक्षिण गों०) करवाल में गेंडिया तीर्थ ।

गोकुल—कृष्ण के बाल्यकाल की क्रीडाभूमि—व्रज गोकुल मथुरा से ६ मील पर है ।

गो(गौ)तमी—गोदावरी । (शिव०)

गोनर्द(न्द)—पंजाब, क्योंकि बादमीर के राजा गोनर्द ने दमे जीन लिया था । एक 'गोनर्द' अवध में भी है, (शोडा), जहाँ महात्मापथकार पत्रज्ञि ने जन्म ग्रहण किया था ।

गोपत्रवन—जापु० गोभा । (विक्रमांकदेवचरित) ।

गोपाद्रि—१ रोहतास (पर्वत) । २ काश्मीर में 'तड़ने सुलेमान', जिसे शास्त्रों में 'शङ्कराचार्य' पर्वत भी कहा गया है । ३ ग्वालियर । (राजतरनिणी)

गोवर्धन—वृन्दावन से १८ मील दूर, वही पर्वत जिसे ('पैथो' ग्राम में) बाल कृष्ण ने अपनी उगली पर उठा लिया था ।

गौड़—(मगध साम्राज्य से मुक्त हुए) बंगाल की प्रतिष्ठा (७वीं सदी में) इस नाम से हुई थी । यह अंग देश के दक्षिण में था । (हप०)

गोमती, चर्मण्वती (दे० 'रत्नपुर') । गोमल ।

घर्घरा—पगार नदी, जो कुमाऊँ में निकल कर सरयू में आ मिलती है । (पद्य०)

चक्षु—चक्षु (इक्षु) और आम्र नामक नदी जो महाभारत, रघुवंश तथा चन्द्र के महारीली ३-मिथेस के अनुसार 'शाकद्वीप' में बहती थी ।

चन्द्रनगिरि, मलयगिरि—भालावार घाट । (त्रिकाण्ड०)

चन्द्रशा—मावरमनी ।

चन्द्रभागा—चनाव (चन्द्रिका), जिसकी एक शाखा अम्बिकनी थी ।

चम्पा—इयामाद्वीप (इन्त्साग) । २ अंग तथा मगध के बीच रहनेवाली चम्पा नदी (पद्य०) । ३ चम्प । रियासत (राजतरनिणी) । ४ अंग देश की राजधानी (जिसका पुराना नाम 'मालिनी' था) ।

चम्पारण्य—(मध्य भारत में) राजिम के पाँच मील उत्तर में, जैनों का एक तीर्थ (जेमिनि भारत) । २ पटना डिब्रीचन में 'चम्पारन' । (चक्तिमप्रहलन्ध)

चरणाद्रि—(मिर्जापुर में) चुनर का प्रसिद्ध अथैय दुर्ग, जिसे बंगाल के पाल राजाओं ने ८-१०वीं सदियों में बनवाया था ।

चरित्रपुर—(उड़ीसा में) पुरी का तीर्थ, तीर्थपुरी ।

चर्मण्वती—'रत्नपुर' गोमती नदी ।

चिनाभूमि—मन्थल परगना में, वैद्यनाथ अथवा देवघर, जहाँ १२ ज्योतिर्लिंगों में एक (रावन द्वारा स्थापित) है ।

चित्रकूट—कुन्देरगण्ड में पयस्विनी मन्दाकिनी के तट पर वह पर्वत-तीर्थ, जहाँ भगवान् रामचन्द्र ने अपने प्रवास की कुछ आधावधि बितायी थी ।

चिदम्बरम्, चित्तम्बरम्—दक्षिण में शिव की पाँच भौतिक भूमियों में 'आनाश-नन्द' का प्रतिष्ठा-स्थान । (देवी भाग०) ।

चेदि—'शाली मिथु' तथा तौम के मध्यगत, कुन्देरगण्ड तथा मध्यप्रान्त का कुछ भाग, जो वही 'शिपुवाल' की राजधानी था ।

चैत्यगिरि—भीष्म से तीन मील उत्तर की ओर, वन-नगर—वहाँ अशोक का समुदाय था। (कपिलवस्तु में सुन्दिनी, मरनाथ में बोधगया, वनशा में मृगदाय, श्रावस्ती में जवनन, मगध में राजगृह वैदाली, कुशीनार आदि बौद्धों के ८ तीर्थ 'चैत्य' कहते हैं।) कुछ विद्वानों ने इसरी रिबिन्मनया साची तथा सिद्धिना में भी बौद्ध (महावश)

घोल—पिनाकिनी (पेत्रार) तथा कुण नदियों के बीच में कोरोमण्डोल घाट जिमरी राजधानी, कावेरी पर अवस्थित, 'उरैपुर' थी।

ज्यवन—(बाल के शब्दावद्ध निसे में) ज्यवन ऋषि का आश्रम।

जन(क)स्थान—गोदावरी तथा कृष्णा के बीच का प्रदेश (जनम्पुर विदेह) तथा औरंगाबाद को 'पडने' दण्डकारण्य का एक भाग था—दण्डकारण्य में पंचवटी (नामिक) भी शान्ति थी। (भवभूति)

जमदग्नि—गाड़ीपुर में ('गमानिया' नाम से प्रसिद्ध) ऋषि परशुराम का आश्रम।

जावालिकपुर—जवनपुर। (प्रबोधचित्तमणि)

जयपुर—प्राचीन मत्स्यदेश, विराटनगर।

लाह्वरी—गंगा। किन्तु, जहू का आश्रम आजकल, मुलतानगर (भागलपुर) के समुद्र गंगा से निकल रही एक बन्दर पर था, ऐसा कहते हैं।

जौर्णनगर—पूना निसे का जुनेर—चौबसो क्षत्रप राजा महपान की राजधानी था।

जूर्णनगर—जवननगर, जूनागढ़।

जौवन (विहार)—श्रावस्ती से १ मील दक्षिण की ओर 'जोतिनीमरिया' नाम का टीला, वहाँ बसो उपवन के अन्दर श्रावस्ती के श्रेष्ठो दानवार 'अनध पिण्डक' सुदत्त ने एक 'विहार' स्थापित किया था। (सुदृग्ग)

जालामुखी—काठा में एक 'पीठ', वहाँ 'सती' को निहा गिरी थी। जालामुखी पर्वत का ऊँचाई ३२८४' है, वहाँ १८८२' पर मडेश्वरी की एक 'मूर्ति' स्थापित है।

जालपुर—जोडा नागपुर, जिसको राजा मधुसिंह की पराजय के अनन्तर अक्षर ने १५८५ ई० में मुगल-साम्राज्य में मिला लिया था।

जहू—ज्याम तथा जिन्धु के मध्य क प्रदेश, पञ्चप। (मृ-उत्पत्तिक)

जहूशिला—जिला रावलपिण्टी का एक प्राचीन नगर, जहाँ बौद्धयुग में एक प्रसिद्ध विश्व विद्यालय था। पाणिनि जहूशिल-विषयपीठ में 'आर्य' थे। दिग्-भावदान' में अंकित है कि बुद्ध किमी पूर्वजन्म में 'भद्रशिल' क राजा थे, वहाँ एक ब्राह्मण मिथु ने उनका सिर काट डाला था। तब से भद्रशिला को लो 'जहूशिला' कहने लगे। बौद्धयुग में यहाँ पाणिनि के 'मस्तूत व्याकरण' का अ-वश निरुक्त होना (तब धनुर्वेद का पाठ्यक्रम में सम्बन्ध) हमारी बौद्ध 'शान्ति' तथा अहिंसा विषयक धारणाओं को एकदम निरमूल सिद्ध कर देना है।

जपनी—जाती, सामन्ती। (मेघदूत)

जमना—(अर्य में) लोम नदी, निजके लट पर बाल्कोनिक का 'अदि' जीवन बना था।

जालरन—कावेरी पर चोड़ राजाओं की पुरानी राजधानी 'तटक'। तीसरी सदी से यहाँ गजवंश का राज्य रहा था, जिसे ११वीं सदी में जोनों ने तमिळ देश से उखाड़ फेंका।

जालरणी—(बौद्ध बाल्मय में) मिडल द्वीप। २ दक्षिण में अगस्त्यकूट पर्वत से उद्भूत जालरणी नदी। (रघुवंश)

जालरणी—प्राचीन सुदूर देश की एक नदी एवं राजधानी, नीर्यकाय से लेकर जहाँ के पान तक (एक मइल वर्ष) इसका यथावत् ऐतिहासिक महत्त्व रहा। (महा०, रजु०)

जीरभुक्ति—निरहुत। (देवीभाग०)

मुंगमड्रा—मैसूर के दक्षिण-पश्चिमी सीमान्त पर कृष्णा की सहायक नदी ।

मुण्डीरमण्डल—द्रविड देश का एक भाग, 'तोण्डमण्डल' (कोरोमण्डल ?) जिसकी राजधानी काञ्चीपुर थी । (मद्रिकनरम्)

मुरक—पूर्वी तुर्विन्नाम । (मण्ड०)

मुषार—यूनानी लेखकों का 'बकिन्ना' तथा अरबी लेखकों का 'हुजुरिन्नाम', जिन्से दण्ड तथा बदक्या शामिल थे ।

मृष्णा—पिन्नामदी । शाल्ललि नीर (= विद्रम) में 'टाइपिन नदी' ।

त्रिककुट्ट, त्रिविष्टप—(विन्वत) । ० त्रिकूट (सिंहल में भी ?) । ३ जुनर ।

त्रि(क)लिंग—त्रैलंगाना ।

त्रिगत—जालन्धर—'राबो-क्याम-ननन्' का 'नि-ग्रब' ।

त्रिपदी (ति)—त्रिपदि, बेडुर्गिरि । रामानुज ने यहाँ विष्णुनाथ की मूर्ति स्थापित की थी, 'रम-गगाधर' व रचयिता पण्डितराज जन्नाथ की जन्मभूमि ।

त्रिपुरा—किरात देश, निपारा—ओ कामरूप के आउगंत था ।

त्रिपुरी—नदरपुर से मात्र मील पश्चिम में, नर्मदा तट पर, 'त्रिओर' जहाँ महादेव ने त्रिपुरासुर का वध किया था (लिङ्ग०) । २ वञ्चुरियों की राजधानी—चेदिनगर । ३ शाणितपुर ।

त्रिवेणी—(मयाग में) गंगा-यमुना-सरस्वती का, तथा पूर्व की ओर गण्डकी-देविद्या-नरुपु-का 'मन्मन्वीय' । (बगाल में 'तुल' त्रिवेणी, इलाहाबाद में तुल'-त्रिवेणी) ।

त्रिशिरपल्ली—'त्रिचनापडी', जहाँ रवग का मेनापति रहा करता था ।

त्र्यम्बक—नमिक में २० मील पर, प्रसिद्ध गोदावरीतीर्थ ।

दक्षिणभागा—गोदावरी अथवा कावेरी अथवा नर्मदा अथवा तुलमन्ना ।

दक्षिणगिरि—इक्षार्य (काञ्चिदाम), जिसकी राजधानी 'चेरिय' थी, भूपुर राज्य ।

दक्षिणअधुरा—मडुरा अथवा मीन'सी, पण्डियों की प्राचीन राजधानी ।

दक्षिणायथ—दक्षिणात्य अनपद, अर्थात् 'दक्षिण के दक्षिण का भारत' ।

दण्डका,प्य—विष्णु तथा शिवालय के मध्य का 'महाकान्तार' अथवा 'महाराष्ट्र', जो अजस्य न के पश्चिम में था । (भवभूमि)

दुर्—(मद्रास में) नीलीरि पर्वतमाला ।

दमंवती—(उजरात में) दमौर ।

दशपुर—(मन्ना में) मन्मौर (मन्मदगपुर) अर्थात् दानौर ।

दक्षार्ण—'दूनों मालव' देश । (दक्षिण-रि) जिसका राजधानी (अक्षीय के मध्य में) 'चेन्दगिरि' थी ।

दामोरक—मालवा । (त्रिकण्ड०)

दुर्जयलिंग—दार्जिलिंग ।

दुर्वासाधम—मालपुर में ३५ मील का दूरी पर; 'कल्हजाम' के निकट, 'एग पराट्ट' पर दुवाना स्तूप का अंश ।

दुपट्टी—अम्बाला और सरहिंद के मध्य की नदी, शहर ।

देवगिरि—'नन्म राज्य में, हीन्नाबद । ३ महाराष्ट्र (देवराष्ट्र ?) में । शिरालय । ३. अर-वनी की एक शरण । (मण्ड०)

देवपत्तन—प्रभाम = सारनाथ ।

देवपुर—मध्यनरत में, महानदी तट पर देश व मंगल पर, राजिम ।

देवराष्ट्र, महाराष्ट्र (?)—मनुस्मृत की दक्षिण विजय के मध्य इका राबा कुबेर था ।

वि. (न) (जना (रा) — फल्गु नदी (अवधोप), जिसमें तट पर भन्वान् तुड़ को बोध प्रप्त हुआ था ।

पञ्चकेदार—गढ़वाल की पवनमाला पर केदारनाथ, तुड़नाथ, रुद्रनाथ, मध्यमेधर, कल्पेश्वर नामक (महादेव के आंग के चोकक) पाँच स्थल । (बदरीविशाल०)

पञ्चगौड—बंगाल में प्राचीन विभाग—पुण्ड्र, रङ्ग, मगध, तारुक्ति, वारेन्द्र । (राजन०)

पञ्चग्राम—दे० पाणिप्रस्थ ।

पञ्चतीर्थ—हरिद्वार की पश्चिमी घाट में (सप्त, सीता, अमृत, राम, सूर्य) कुण्ड । (स्कन्द०)

पञ्चद्विज—द्राविड वर्णों के गुजरात महाराष्ट्र, आन्ध्र—दक्षिण के निम्न विभाग का आधार, भूगोल नहीं, प्रजाणों का 'अन्तर्जातीय मूल' है ।

पञ्चतद—पञ्जाब । कुश्लेट में एक तीर्थस्थान । कृष्णा, वेत, तुद्र, मद्र, वोन (नैदियों का) 'दक्षिणी' पंचाल ।

पञ्चपथाय—भिन्न सगमों पर अवस्थित देव, कर्ण, रुद्र, नन्द तथा विष्णु—'प्रयाग' तीर्थ ।

पञ्चबदरी—बदरीनाथ, वृद्धबदरी, भविष्यबदरी, आदिबदरी, पाण्डुस्यर आदि ।

पञ्चद्वी—नासिक्य (नामिक), जहाँ रावण ने सीता का अपहरण किया था । यहीं शूर्पणखा तथा मारीच के काण्ड हुए थे ।

पंचाल—रोहिलखण्ड, जो पहले मग की धारा द्वारा दक्षिण तथा उत्तर पंचालों में विभक्त था । उत्तर पंचाल की राजधानी अहिच्छत्रा थी, दक्षिण (जहाँ की द्रौपदी थी) की कापिल्य ।

पञ्चक्षेत्र—उड़ीसा में, 'बौशाक' नाम से प्रसिद्ध स्वर्ण मन्दिर ।

पञ्चपुर, पञ्चावती—भवभूति की जन्म तथा दीक्षाभूमि, आधु० पञ्चपाया (चिन्मयनगर = विद्यानगर) । (उत्तरचरित)

पम्पा—किरिन्धा में, तुद्रमन्ना की एक धारा । यहाँ पर, कव्यमूक के चरणों में 'पम्पा' सरोवर भी है ।

पयस्विनी—गङ्गानदी में, पापनाशिनी नदी ।

परुणी—इरावती (पञ्जाब की रावी) नदी ।

पर्णशा—राजपूताना में, चम्बल की एक धारा, रत्नाम ।

पल्लव-ट—पल्लव दशानपुर ।

पलाशिनी—कपिला, सुवर्णरेखा ।

पल्लव—दक्षिण में, कोरामण्डल से माहित देश—राज० काञ्ची ।

पञ्चमान—पारियात्र की, एक हिन्दुस्तान की, एक पर्वतमाला ।

पशुपतिनाथ—(नेपाल) मृगश्वली न, महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर ।

पश्चिम सागर—अरब सागर ।

(अ ?) पल्लव(न)व—प्राचीन पार्थ (फारस) राज्य का 'मद्र' प्रदेश । यहाँ की 'पल्लवी' लिपि में 'नेन्द्र' 'अवस्ता' को सर्वप्रथम उल्लेख किया गया था । पल्लव देश वभी (अरबी ?) घोड़ों के लिए भी विख्यात था ।

पाटलिपुत्र—गटना, सिन्धु मूल निमांग अब तदाहु (४८० ई० पू०) ने किया था । मगध की प्राचीन राजधानी गिरिद्वार (राजगृह) का स्थान कर, पाटलिपुत्र की नयी राजधानी उद्घाटन से बनाया था ।

पाठेय्य—तुड़-युग में 'पश्चिमी' भारत—जिसमें कुह, पंचाल, भवनी, गान्धार, वम्बोज, शरमेन आदि सम्मिलित थे । (महावग्ग)

प्राणिप्रस्थ—पानीपत । पानि, शापा, इत्र, निर, मग—ये पाँच 'प्रस्थ' (ग्राम) केन्द्र भी

दुषिष्ठिर सन्वृष्ट या, किन्तु दुर्योधन न माना। इन 'पाँच आर्यों' के नाम महाभारत में तथा बेनीसुवार में कुछ भिन्न हैं।

पाण्डू (पाण्डु)—दक्षिण के अधुन नित्रेवेल्ली तथा मदुरा सिबीवन—जो समय-समय पर अपनी राजधानी—उरैपुर > मदुरा > कोल्लवे—बदलते रहे। यहाँ के राजा पुरु ने २६ ई० पू० में अपने दूत रोम बने थे।

पाताल—(रामायण में) अन्नमन्वली (जम्बू) के उत्तर में और बल्ल के ६० पू० अक्षमङ्क = 'भक्तिनयाना' देश।

पापनाशिनी—पयम्बिनी।

पारम्यद्वज—मिडन। (अर्धशकल)

पारसीज, पारन्य—कारम। (रघु०, विष्णु०)

पारस्वर—मिडन में 'थल पारकर'। (पाणिनि)

पारिया(पा)ज—विन्ध्य की पश्चिमी शाखा, जो कभी आयांचर्य की दक्षिणी सीमा थी। (महाभारत)

पान्नी—(कुण्ड में धरारा = हृष्टवती) पार नदी, जो पञ्जाब के हिन्दी पञ्जाबी जनपदों की प्राकृतिक 'न'प' है।

पिनाकिनी—(मद्रास में) नन्दिदुर्ग से उदगत, 'पेन र' नदी।

पिष्टपुर—गोदावरी में, 'पिठापुर'। (हरिविष्णुप्रश्न)

पुण्ड्रवर्धन—धंजौड (बंगाल) में, गंगा तथा हेमाद्रिकूट का 'मध्यदेश'।

पुण्यपत्तन—पुणे, पूना, पुनक।

पुन्यपुर—गन्धार देश की (एक) राजधानी, वेजावर। (विप० खीराज्य)

पुरयोत्तमक्षेत्र—(बिहार में) पुरी।

पुलिन्द—भारत की पूर्वाप (कामरूप) तथा पश्चिमीय (दुम्बेहरण्य, सागर) सीमाओं पर कभी पुण्ड्रों तथा शबरों के घर थे।

पुष्कर—अजमेर से ६ मील दूर, झील 'पोखडा'। महाभारत के समय में यहाँ उत्तमकेनों की सात (सैकड़ ?) जानियाँ रक्षा करती थीं।

पुष्काम्नीप—मध्य-एशिया में, 'बोखारा'।

पुष्करावती—प्राचीन गन्धार की राजधानी—जिसे भरत ने अपने पुत्र के नाम से बसाया था और जिस (अष्टनगर) पर सिक्न्दर का पहला आक्रमण हुआ था।

पुष्करावती नगर—रगून। (दीपवस)

पुष्पपुर—कुमुमपुर, पटना।

पूर्वगंगा—नमदा।

पृथुदक—करनाल के सरस्वती नदी पर, 'पिहीता'—जहाँ प्रसिद्ध 'ब्रह्मवोनितीर्थ' अवस्थित है।

पृष्ठचम्पा—बिहार।

पीरघ—जैहलम के पूर्व में, पीरवाँ का राज्य—जहाँ सिक्न्दर पुर छोड़ 'अग्निपरीक्षा' पर चरित रह गया था।

प्रतिष्ठान—उत्पलारण्य (विहूर), जहाँ के (राजा ज्ञाननद के पुत्र) भुव ने मथुरा में शेर तपस्या की थी। पालिग्रन्थों में गोदावरी के तट पर अध(श्म)ल (महाराष्ट्र) की (राजधानी) का उल्लेख 'ब्रह्मपुरी' प्रतिष्ठान नाम से हुआ है। इलाहाबाद के समुद्र गंगा पार झूँसी की आज भी 'प्रतिष्ठानपुर' कहते हैं। विल पुरदासपुर (औदुम्बर) की राजधानी पठानकोट का भी पुराना नाम 'प्रतिष्ठान (कोट ?)' ही था।

प्रन्वग्रह—अहिच्छत्र ।

प्रभास—काठियावाड (जूनागढ़) में मोमनाथ का प्रसिद्ध तीर्थ, प्राचीन नाम देवपत्तन । यहाँ भगवान् कृष्ण का प्राणोत्सर्ग हुआ था ।

प्रायाग—प्राचीन कोसल का वह भाग, जिसकी राजधानी प्रतिष्ठान (शुंसी) थी । इतिहास में पुरूरवा (दुष्यन्त), नहुष, ययाति, पुरु, भरत का सम्पर्क इधर से ही अधिक रहा है, आधुनिक रलाहाबाद ।

प्रवरपुर—प्रवरमेन द्वितीय द्वारा प्रतिष्ठापित (काश्मीर की राजधानी) श्रीनगर ।

प्रस्थल—फिरोज़पुर पन्थाला सिरमा के अन्तर्गत प्रदेश । (मार्क०)

इक्ष्वाणु—गोदावरी के तट पर, जनस्थान में शोभायमान (औरंगाबाद) की पहाडियाँ, जिन्हें रामायण में माल्यवान् (गिरि) भी कहा गया है ।

प्रह्लादपुरी—मुल्तान ।

प्राग्योतिष—प्राचीन 'कामरूप' की राजधानी—कामारुषा, गोहाटी ।

प्राच्य—(सरस्वती के) दक्षिण पूर्व का भारतवर्ष ।

फल्गु—निरंजना नदी—भगवान् बुद्ध के नव जन्म एवं बोध की भूमि । (अश्वमेध)

वंग—'बंगाल', किन्तु दे० पंचगौड ।

यद्री—यदरिकाश्रम, यद्रीनाथ । दे० पंचयद्री ।

वालुकेश्वर—(बम्बई के निकट) 'भालावार हिल' ।

खालोझ—खलोविस्तान । (अवदानकल्पलता)

बिन्दुसर—गगोत्तरी के दो मील दक्षिण की ओर, 'शुद्ध हिमालय' पर प्रसिद्ध सरोवर, जो भगोरव भी सपोभूमि था ।

वेस्सनगर—वैश्यनगर (?) भूपाल में, सौंजी के निकट, भीमसा से तीन मील पर, वैश्वनगर, जो प्राचीन दशार्ण की राजधानी था । दे० चैत्यगिरि ।

ब्रह्मकुण्ड—ब्रह्मपुत्र का उद्गम स्त्रोत ।

ब्रह्मदेश—बर्मा ।

ब्रह्मनाल—काशी में, 'मणिकर्णिका' कुण्ड ।

ब्रह्मपिंदा—ब्रह्मवर्त तथा यमुना के अन्तर्गत देश—जिसमें कुम्भेश्वर, मत्स्य, पंचाल तथा शूरमेन समाविष्ट थे । (मनुसं०)

ब्रह्मसर—रामहृद् ।

ब्रह्मवर्त—सरस्वती तथा इन्द्रती का 'मध्यप्रदेश', जो आर्यों का प्रथम 'उपनिवेश' था ।

भद्रा—यारकद, तथा यारकद की जरकदा नदी ।

भर (भृगु) कच्छ ?—भड़ोच, जहाँ वामन ने राजा बली का अभिमान भंग किया था ।

भारतवर्ष—भरत के नाम से 'भारतवर्ष' कहलाने से पूर्व हमारे देश का नाम 'हिमाद्र' अथवा 'हिमवत' था । अर्थात् मूल अर्थ में भारतवर्ष 'उत्तर भारत' का नाम था । मार्कण्डेय तथा विष्णु पुराण के अनुसार भारतवर्ष की सीमाएँ थी—उत्तर में हिमालय, दक्षिण में समुद्र, पश्चिम में सवन तथा पूर्व में निराग । दक्षिणापथ में प्रथम प्रवेश आस्त्य ने, पश्चात् अशोर के धर्म ने तथा समुद्रगुप्त की बाहुओं ने किया था ।

भार्गीर—पश्चिमी आस्ताम । (महाण्ड०)

भास्करक्षेत्र—प्रवाण । (प्रायश्चित्तस्व)

भंस(र)—रिद्ध (देग एव नदी) ।

भोज (पाल)—मध्यभारत में, गंगा नदी के बनावे (शीलों के) पालों (बाँधों) का नाम पर 'भूपाल' (देश) ।

भोटांग—नामीर—नामरूप के अन्तर्गत देश, भूटान, तिब्बत । (तारान्त्र) ।

आनुद्वारन—(अवध में) मन्दिग्राम, आशरसा—जहाँ भरत ने राम के विद्योग में १४ वर्ष कटे थे । (अर्वाचना)

मगध—दक्षिण बिहार, जिमहो राजधानी गिरिविजय थी । अजातशत्रु ने वैशाली के बुजियाँ की उन्नति पर रोक रखने के लिए 'पाटलिग्राम' को नई राजधानी में परिणत कर दिया था । यहीं पर भीम ने जरामन्थ का वध किया था ।

मणिक्गिका—कुखु की पाटी में व्यास की एक धारा, पित्तके निकट कुण्डों के गरम पानी में सभियाँ आग के बिना उवाली जा सकती हैं ।

मणितट—(आन्ध्र में) मणिपुर । (मघ०)

मस्य—जयपुर का प्राचीन क्षेत्र, जिसमें अधु० अलवर तथा भरतपुर शामिल थे । पाण्डवों का अज्ञानवाम शर ही विराट के महलों में गुजरा था ।

मद्र—रावी चनाब का मध्यदेश, जिसकी राजधानी शाकल (म्यालकोट) थी । शन्य तथा अश्वपति (सावित्री का पिता) यहाँ के राजा रहे । 'भाद्री' कन्याएँ अपने रूप-लावण्य के लिए प्रसिद्ध थीं ।

मधुपुरी—मधुरा (मधुरा) । इसे शत्रुघ्न ने बसाया था । मधु (राक्षस) की नगरी समवन-आमकल की 'महोली' है (जहाँ 'मधुवन' तीर्थ भी है) ।

मध्यदेश—हिमगिरि, विन्ध्य, सरस्वती और प्रयाग के अन्तर्गत देश (जिसमें अन्तर्वेद सम्मिलित था), वीर ग्रन्थों का 'महिम्नदेश' । इसमें कुरु, पंचाल, मन्थ्य, द्रौप्य, कुन्ती, सुरसेन आदि का समावेश होता था । (मनु०)

मध्यमराष्ट्र—दक्षिणकोसल, महाकोसल । (अर्धशाख)

मन्दाकिनी—गडवाल में, केदारपति से उदगत, कालीगंगा । (मन्दागिनि)

मन्दारगिरि—भागलपुर की एक पहाड़ी, जो 'समुद्रमन्थन' में मथन-दण्ड के रूप में प्रयुक्त हुई थी ।

मर—(धन्व, रथल)—राजपूताना, माखाड ।

मरुचूचा—मन्वरवा, अस्मिणी (चनाब को एक धारा, 'आंस') के पश्चिम में ।

मयूर—हरिद्वार के निकट, मायापुरी ।

मलयगिरि—पश्चिमी घाट का दक्षिण भाग, 'श्रावनकोर दिव्य' ।

मलयालम्—मल्लार, मालबार—जिसके अन्तर्गत कोचीन त्रावनकोर का सारा प्रदेश था । (राजावली) ।

मल्लदेश—मालव-देश, मुलतान ।

मल्लराष्ट्र—मगाराष्ट्र ।

महती, महिता—(मालवा में) माही नदी ।

महाकोसल—दक्षिणकोसल ।

महाकौदिक—नेपाल में सात 'कोसियों' से निर्मित एक शीर 'सप्तसिन्धु' देश, जहाँ 'तामोर-अरुण-सुन' की 'त्रिवेणी' भी है ।

महाराष्ट्र—कृष्णा-गोदावरी के इस 'मध्यदेश' को पहले 'दक्षिण' भी कहा करते थे, अश्मक भी । अशोक ने यहाँ महाधर्मरक्षित को भेजा था । 'आन्ध्रमृत्य, क्षत्रप, राष्ट्रकूट, चातुर्ग्य-किने ही राजवंशों के उत्थान पतन के अनन्तर, दक्षिण में, मराठों का युग आता है ।

महावन—वन, गौडल ।

महिष(मण्डल)—अनूपदेश अथवा हृदय राज्य (अधु० मेहर में डूब अधिक), राज० साहिष्मती । यहीं शकर तथा मणहन मिश्र का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था । (दापवश)

महोत्सव—उड़ीसा से मडुरा तक व्यापक पवनशुद्धता ।

महोत्सव—मु देलखण्ड का 'महोवा', निम्नके नाम पर कभी-कभी सारे दे मरे कुन्देखण्ड को भी महोत्सव कह देते थे । (प्रबोधचन्द्रोदय)

महोदधि—बंगाल की खाड़ी । (रघु०)

महोदध—बाल्यकुण्ड, गांधिपुर ।

मातंगी—क मरूप में, दक्षिण पूर्व की ओर, हीरों की खानों के लिए प्रसिद्ध एक 'फट्टी' ।

मानस—पच्छिम दिग्धत (हृणदेश) में केराल के चरणों में प्रसिद्ध पुण्य स्थान ।

मायपुर—मयूर । हरिद्वार-कनख म यापुरी की विपुरी ।

मारकण्ड—समरकन्द ।

मारव—मारवाड, मरस्थल ।

मातिनावन—मलबर (मालव) ।

माल()—(विदेह के पूर्व तथा मगध के उत्तर पश्चिम में) एक 'द्वयमल' देश ।

मालिनी—हरितनापुर के निरट की 'मन्नाकिनी', निम्न पर कण्व ऋषि का आश्रम था ।

माल्यवत्—गुहमद्रा पर प्रयत्न गिरि ।

मित्रवन—मुलवान ।

मिथिला—नवपुर, विदेह । 'नवद्वीप' विश्वविद्यालय की स्थापना ने मिथिला एक विभ्रमशिला से मृत्निरीष कर दिया था ।

मीनाक्षी—मडुरा ।

मुक्तेश्वरी—शुद्धवादा की 'शुक्तेश्वरी' क विपरीत, दुगली पर त्रिभेणी का 'विप्रलम्भ' सयम ।

मुण्डा—छोटा नगपुर में, जि० रावी ।

मुद्गल(ल)गिरि—(विदार म) दुगर, 'हों कभी मुद्गल ऋषि का आश्रम था और जहाँ मुद्ग के महान् (निय मीगलायत न 'श्रुतवि'कोटि) श्रेणी की धम में दीक्षित किया था । (भारतवाङ्मय)

मुरला—आमा की एक धारा । नमदा । बरल = मालावार ।

मू(मौ)वत्—बादमीर में एक पर्वत, जिम्न पर सोम बहुत था ।

मूलस्थान—मालवस्थान (१), मुलवान । प्रसिद्ध देविर्वासिन्स पूछे ने नाम-'मूल्यसि' के आधार पर इसे 'सृष्टि का उद्गम' माना है । पौराणिक गाथाओं के अनुसार वहाँ मूर्ति से द्वारा हिरण्य ऋषि का वध हुआ था, सो, इसका एक नाम प्रह्लादपुरी (अर्थात् 'होली' का मूलस्थान) भी है । हयचरित के अनुसार मालवदेश, रामायण के अनुसार मल्लदेश भी । यूनानियों ने इसी को हिरण्यपुरी (हिरण्यऋषिपुरी की पुरी, होला = हिरण्य = Aura ?) कहा है ।

मूर्धिका—निच का ऊपर का भाग, रत्न 'श्लोक' ।

र(मि)गदाध—सारनाथ, 'धम्म-कपलन' का 'मुला विहार' ।

सुत्तिकवर्ता—पण्डाश (वनाम्) पर मोच-राजाओं का एक देश, मार्त्त = मात्वाड ।

मेकल—विजय का पण्डाश, अमरकण्टक शृङ्खला, 'मेकलकनका' (नर्मदा) का उद्भव ।

मेवना (द)—पू० बहाल की एक नदी । आसाम में, 'समुद्रो-मुख' मध्यपुर ।

मेदपान—मेकद ।

मेहलु—रुमु (बाबुल) की एक धारा ।

मेनारु—'सिवालिन' शृङ्खला ।

मोसदा—हरिद्वार, मडुरा, वाडी, काशी आदि (मान) 'मोसदा' पुरी मानी गई है ।

मौलि—'शुद्धत' हिला' ।

मौलिस्ना(स्था ?)न—मालव, मडल, मूल-स्थान, मुलवान ।

यज्ञपुर—उड़ीसा में वैतरणी नदी पर, ययातिपुर—जो छठी-दसवीं सदियों में वैसरी राजवंश की राजधानी था।

यव—'जावा' द्वीप, जिसे गुजरात के एक राजकुमार ने सातवीं सदी के आरम्भ में बसाया था। (महाकाण्ड०)

यवननगर, जूर्णनगर—गुजरात का जूनागढ़। वधु नदी का क्षेत्र, अश्मक 'आक्सियाना', जहाँ (५वीं सदी ई० में) हूणों की एक उपजाति 'ज्वॉ-ज्वॉ' (यवनी) रहा करती थी। (रघु०)

युक्तवेषी—बंगाल की 'विप्रलब्धा' मुक्तवेषी के विपरीत, प्रयाग की 'सम्भोगिनी' त्रि-वेषी।

यौधेय—बदायलपुर का जोहिय वाड़, जो महाभारत तथा गुप्तयुग में यौधेयों का सीमान्त था। बाइबिल में इन्हें 'दुद' तथा १६वीं सदी के यादावृत्तों में 'आयुध' कहा गया है।

रत्नद्वीप—मिहल।

रत्नपुर—विलामपुर के १५ मील उत्तर, (मयूरध्वज ईइयों की) दक्षिणकोसल की राजधानी।

रथस्था—अवध की राप्ती (रेवती) नदी।

रन्तिपुर—गोमती तट पर 'रिन्ताम्बूर'। गोमती (चर्मशयती) के तट पर रत्नदेव का दीनर 'गोमहल साव' (यज्ञ) होता था।

रसा—अवस्ता की 'रन्हा' नदी, अथवा यूनानियों की 'जकमाटिम'—जो शकों जागों हूणों का मूल-आवास थी।

रसातल—कैस्पियन सागर के उत्तर की ओर, हूण राज्य, पश्चिमी तानार। हूणों की विभिन्न नानियों के आधार पर रसातल के सात लोक थे—अतल, नितल, वितल, तलातल, महातल, सुतल, पाताल (?)।

राजारह—मगध की प्राचीन राजधानी, जिसे (गिरिविजय ने उत्तर में) विम्बिसार ने बसाया था।

राजपुरी—(काश्मीर में) पुछ के द० पू०, 'राचीरी'।

राड़—'पंचगौड़' का पश्चिमी प्रदेश।

रामगिरि—कालिदास के यज्ञ की तथा रामायण के शम्भूक की तपोभूमि—मध्यभारत में, 'रामटेक' पर्वतशृङ्खला।

रामणीयक—आर्मीनिया। (महा०)

रामदासपुर—अमृतसर—गुरु नानक का, रामदास द्वारा प्रस्तुत, 'शान्ति नरेशन'।

रामद्वद—(कुरुक्षेत्र में) 'ब्रह्मसर' तीर्थ, जो राजा कुरु की तपोभूमि, पुरूरवा उर्वंशी की मरेंत भूमि तथा वृत्र की मृत्युभूमि था। यहीं 'प्रतिष्ठा'-भंग कर कृष्ण ने भीष्म के विरुद्ध 'सुदर्शन चक्र' उठाया था—चक्रतीर्थ।

रामेश्वरम्—सिंहल तथा भारत के मध्य, सेतुबन्ध।

रावणद्वद—कैलास के निकट, 'अनवतप्त' सरोवर, रावण की तपोभूमि।

रेवती—अचिरावती (राप्ती)।

रेशा—नर्मदा—

रैवत (तक)—जैन सन्त नेमिनाथ की जन्मभूमि, गुजरात का गिरिनार पर्वत।

रोह (हि)—अफगानिस्तान।

रोहितक—बंगाल के शाहानाद जिले में विन्ध्य की एक शाखा, रोहितास (श्व)। पंजाब में 'रोहतक' का स्थापक रोहिताथ (हरिश्चन्द्र या पुत्र) नहीं था—अपितु यह नाम ही स्वयं 'बहु-धनरु' का पर्याय एवं अपभ्रंश है।

लंका—विन्ध्याचल, जो कि भारत की रीड़ (दु० पतानी में 'लव') है। रावण की 'लङ्का' (गोंडवाना ?) कहीं विन्ध्य शिखर पर थी—जहाँ के गोंड आजकल भी अपने को रावण व वंशज बताते हैं, जहाँ ने ओरवा आज भी अपने को वानरों के वंशज बनलाते हैं, जहाँ हर टील (शृङ्ग) की 'लंका' तथा हर नदी को 'गोदा' कहते हैं। स्वयं रामायण के अनुसार अयोध्या

किष्कि ध्या-रुका २०० मील का अन्तर था। बराहमिहिर के अनुसार उज्जयिनी और रुका पर ही अक्षांश पर स्थित थीं, पुराणों के अनुसार भी रुका तथा मिहल दो भिन्न भिन्न द्वीप हैं। साहस्य का प्रथम 'आरोप', सम्भवतः, धर्मतीर्त्ति में मिलता है, और आज तो 'सैयुन्ध' आदि किनारे ही 'तीर्थों' ने इतिहास की स्पष्टता एवं परम्परा को सर्वथा धूमिल कर दिया है।

ल(न)वपुर—लवकोट, लोभपुर, लौहोर (राजत०), लोहोर।

ला(ना)ट (वेदा)—दक्षिण गुजरात (माही-ताप्ती का दोआब)।

ली(नी) लाजल (न)—बुद्ध तथा मुजाना की तपोभूमि-पुनर्भवभूमि—निरंजना(रा), फल्यु। (अश्वघोष)

लुम्बि(क्षि)नी—नेपाल की तराई में, 'रम्भेन्द्रे'—भगवान् बुद्ध का जन्म तपोवन, जिसका स्थान बीरहों के ८ चैत्यों में प्रथम है।

लोत्रज्ञानन—कुमाऊँ में, गग ऋषि का आश्रम, 'लोभमूना'। (रघु०)

लौहित्य—ब्रह्मपुत्र नदी, जहाँ परशुराम ने मातृहत्या के पाप को धोया था, कालिदास के दिनों में प्राग्ज्योतिष की सीमा।

लक्षु—बहु, रक्षु, चक्षु—औवनम् अर्थात् आमू दरिया।

लश—लक्ष (देश)।

लटपट्टपुर—गायकवाड की राजधानी, बजोदा।

लक्ष्य—इलाहाबाद के पश्चिम में उदयन का राज्य, राज० कौशाग्रणी।

लन—ब्रजमण्डल के १२ वनों—वृन्दा, मधु, कुमुद आदि—का सर्वनाम, वामनपुराण के अनुसार कुक्षेत्र के ७ वनों का।

लरदा—मध्यभारत में 'वर्षा' नदी।

लराहक्षेत्र—काश्मीर में, जेडलम के तट पर, 'बारामूला'।

लर्धमान (कोटि)—काशी तथा प्रयाग का मन्व्यवर्ता, अस्थिर (ग्राम), जहाँ महावीर ने 'बैबल्य' 'सिद्धि पाकर प्रथम 'वर्षा' वितार दी।

लर्षे—बराहपुराण में वर्णित—नील, निषध, चेत, द्वैम, हिमवत, शृङ्गवत—६ पर्वत।

ललभि—बलभि युग में सुराष्ट्र की राजधानी।

लशिष्ठाश्रम—अवध में अर्युद (आवू) पर्वत पर, तथैव कामरूप में, बशिष्ठा का तपोवन।

लसुभारा—अलकनन्दा।

लस्राटव—हैदराबाद-दक्खिन में, कैलविल बवनों का—तथा अनन्तर (बाकाटक) विन्ध्य शक्ति द्वारा स्थापित गुजरातीन—राज्य।

लानापिपुर—बीजापुर में, 'बादामी'—जो छोटी नदी में महाराष्ट्र राज पुलकेशी की राजधानी था।

लामनस्थली—जूनागड के निम्न, बनधाली। राजस्थान की 'बनस्थली' (?)।

लारणसी—'वरणा' तथा 'अरसी' के संगम पर अवस्थित होने से, काशी का अर्थ नाम।

लालमीरि-आश्रम—हानपुर से १४ मील दूर, विह्वर (उत्पलारण्य)—जहाँ भगवान् राम ने यज्ञिय अश्व को लव कुश ने बाँध लिया था।

लालिष्ठी—गोमती नदी, चर्मेश्वती (?)।

लालीक—व्याम तथा सनलन का दोआब (वेन्ज के उत्तर में), पंजाब।

लालीक—श(१)यद्वीप, वैविद्या की राजधानी, बल्लभ। चन्द्रयुत द्वितीय ने, शक्यपिपि की बल्लभ तक खदेड़ कर, माली बराह-अवतार द्वारा पृथ्वी का उद्धार करते हुए भुवस्वामिनी तथा गुप्तसाम्राज्य की 'लाल रक्ती' थी। (मेहरोत्री अभिलेख, मुद्राराक्षस, रघुवंश)

लालमपुर—ठाका में, 'बल्लालपुरी'—आदिशर की तथा सेन राजाओं की राजधानी।

- चिन्मशिला—आठवीं सदी के राजा धर्मपाल द्वारा स्थापित बौद्ध विहार, जिम्का महत्त्व, आसिर, 'नवद्वीप विद्यापीठ' की स्थापना के अनन्तर ही कुछ पटा था।
- विजयनगर—बंगाल के राजशाही डिबीजन में, सेन राजाओं की राजधानी। विद्यानगर।
- विनस्ता—वि-नमसा (?), जेहलम (नदी)।
- विदिशा—मालवा में बेनवा (वेन्नवती) नदी पर भीन्सा, जो प्राचीन दशार्ण की राजधानी थी, विशाला। (मेम०)
- विदेह—दरभंगा में जनकपुरी, तीरभुक्ति (तिरहुत), मिथिला, जनस्थान।
- विद्यामगर—बुद्धमद्रा पर विजयनगर के ब्रह्मण राजाओं की राजधानी, विजयनगर।
- विनसान—कुश्क्षेत्र (सरहिन्द, पदियाला) में उर्दा मस्खनी युक्त हो जानो हैं, वह तीर्थ।
- विनाशिनी—गुजरात में बनाम नदी।
- विनीतपुर—उडीसा में, कटक।
- विन्ध्यपाद—ताप्ती आदि का उद्गम, 'सप्तपुडा' पर्वतश्रेणी।
- विपासा—ग्यास नदी।
- विराटनगर—मत्स्यदेश, जयपुर—प षट्ठों का अज्ञानवासगृह।
- विशाला—अवन्ती की राजधानी, उज्जैन (उज्जयिनी)। बौद्ध युग में वैशाली की राजधानी, बसाद।
- विशाला (पत्तन)—विजयापट्टम्।
- विश्वामित्राश्रम—जहाँ ताटका का वध हुआ था, बिहार के शाहाबाद जिले में बरमर, वेदगर्भपुरी।
- वीनभयपत्तन—प्राचीन 'वीचिग्राम', अल्हाबाद से ११ मील दक्षिण पश्चिम, 'विठा'—जहाँ कई ऐतिहासिक मुद्राएँ मिली हैं।
- वृद्धकाशी—मद्रास का तीर्थ, 'पुदुवेलिगोपुरम्'।
- वैकटगिरि—मद्रास में, तिरुपति के निकट, 'तिरुमलई' पर्वत।
- वैंगी—गोदा-कृष्णा के अन्तर्गत, आन्ध्रों की राजधानी।
- वैष्णो—कृष्णा नदी।
- वेन्नवती—बेनवा नदी।
- वेदारण्य—तजोर में, अगस्त्य का तपोवन।
- वेदगर्भपुरी—बक्सर, 'जहाँ विश्वामित्र को 'गायत्री' ने आलोकित किया था।'
- वेन—मध्यमार्तीय गंगा, गोदावरी की एक धारा।
- वैकुण्ठ—ताम्रलिप्ती पर एक तीर्थ।
- वैतरणी—परशुराम के भगोरथ प्रयत्न से 'अवतारित', उडीसा की गंगा—जहाँ कभी ययाति-पुर बना था।
- वैशाली—मगध विदेह के मध्य का प्राचीन साम्राज्य, जो आनन्दल मुजककरपुर जिले का दक्षिणी भाग ढहरता है। बौद्ध युग में यह वृजियों-लिच्छवियों की राजधानी थी।
- व्याघ्रसरोवर—बक्सर, विश्वामित्राश्रम।
- शकरतीर्थ—नेपाल में, जहाँ शिव ने 'पार्वती विजय' के लिए तप किया था।
- शंकराचार्य—काश्मीर में, 'तस्ते सुलेमान', मन्धिमान गिरि।
- शंकास्य—कान्यकुब्ज।
- शकस्थान—मीस्तान, शकों का मूल देश जहाँ से वे मध्य-एशिया की ओर बढ़े।
- शतद्रु—मन्त्रज।

- रामवृकाश्रम—मध्यभारत में, रामगिरि (रामटेक) । (रामा०)
- शर्यणावत्—रामद्वद, ब्रह्मसरोवर ।
- शाकभरि—पश्चिमी राजपूताना में, 'साभर'—नहीं शर्मिष्ठा ने देवयानी को 'देभोरानी' रूप में दबेल दिया था ।
- शाकद्वीप—मध्यएशिया में 'शक-भूमि', 'तारतरी'—बोखारा तथा समरकन्द के मध्यगन 'साइयिया' अथवा 'सोन्दियाना' ।
- शाकल—मद्र देश की राजधानी, क्याल्कोट ।
- शान्ति—साँची । (महा०)
- शाहनाथ—सारनाथ ।
- शालानुर—प्राचीन गान्धार में, पाणिनि की जन्मभूमि ।
- शालमली (द्वीप)—काल्दिया । मैसोपोटामिया । मीरिया । (ब्रह्माण्ड०)
- शाल्व—कुरुक्षेत्र के निवृत्त सरयवान् के पिता सुगन्धिन का राज्य, जिसमें जोधपुर, नयपुर, अलवर शामिल थे—मार्तिकावत । शाल्वपुर = सौभनगर (अलवर) उसकी राजधानी थी ।
- शिवालय—एलोरा ।
- शिरोवन—प्राचीन चेर (केरल) की राजधानी, तटवळ ।
- शुक्तिमती—(उड़ीसा में) सुवर्णरेखा नदी ।
- शुद्रक—मिन्ध तथा सजलन के मध्यगत देश, राज० उच्च ।
- शूरसेन—कृष्ण के बाबा क नाम से विख्यात राज्य, राज० मथुरा ।
- शुपरक—सुपारग, सरत ।
- शुद्रगिरि—शुद्धेरी, दक्षिण में नहीं वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए शकराचार्य ने अपने चार मठों में एक स्थापित किया था ।
- शोपाद्रि—त्रिपदी, निरुपति, निरुमलर्दं ।
- शोवाल—शिवालय, एलोरा । रामटेक । (रामगिरि)
- शोण—गोंडवाना में अमरकण्ठक से उद्गान नदी, जो मगध की पश्चिमी (प्राकृतिक) सीमा थी ।
- शोणप्रस्थ—गोनीपत ।
- शोणितपुर—कुमाऊँ में, केदारगंगा (मन्दाकिनी) के तट पर, एक नगर ।
आमाम में, आधु० 'तेजपुर' ।
- शौरिपुर—नेमिनाथ की जन्मभूमि, मथुरा । मध्यदेश की 'शौरसेनी' हमारी (वर्तमान) 'राष्ट्र भाषा' की जननी थी ।
- श्रवणाश्रम—अवध में, जहाँ दशरथ ने शिकार करते हुए अग्ने माना-पिता के शकलौते बड़े श्रवण को भूल से मार डाला था ।
- श्रावस्ती—अवध में, गोंडा जिले में, राप्ती नदी के तट पर, आधु० 'सहेन महेन' । बुद्ध-युग में श्रावस्ती गौरव के शिखर पर थी ।
- श्रीपथ—नयपुर से १० मील उत्तर में, 'विआना'—'पथथमपुरी' ।
- श्रीप(ठ)द—सिंहल का 'एहम्मज जिन' ।
- श्रीकण्ठ, कुरुनागल, महाकान्तार—जिसकी राजधानी विलासपुर थी ।
- श्रीसैत्र—उड़ीसा में, पुरी ।
- श्रीनगर—कादमीर की राजधानी, जिसकी स्थापना ५वीं सदी में प्रवरसेन द्वितीय ने की थी ।
- श्रीरंगपट्टन—(मैसूर में) आधु० 'मैरिंगपट्टन' ।
- श्रीरील—कृष्णा के दक्षिण में एक तीर्थ पर्वत ।
- श्रीस्थानक—(बम्बई में) 'धाना', जो अभी उत्तरी कोरुण की राजधानी था ।
- श्रीहट्ट—मिन्धैत । (योगिनी०)

श्लेष्मातक—नेपाल में, पशुपतिनाथ के उत्तर-पूर्व, उत्तर-गोरुण ।

पद्मी—रम्बई से १० मील उत्तर की ओर, मालमेन द्वीप ।

मंगम (तीर्थ)—रामेश्वरम् ।

मंज्या—मालवा में, यमुना की धारा, सिन्धु ।

मदानीरा—प्राचीन पुण्ड्र की एक नदी, जो 'पार्वती परिणय' के क्षण में शिव के हाथ से छूटे पसीने से जननी थी—करतोया । गण्डकी । राप्ती ।

मपादलक्ष—शाकम्भरि ।

सप्तकुलाचल—महेन्द्र, मलय, नद्य, सुकिमान्, गन्धमादन, विन्ध्य, पारियात्र ।

सप्तगंगा—गंगा, कावेरी, गोदावरी, ताम्रपर्णी, सिन्धु, सरयू, नर्मदा ।

सप्तगंडकी—गंडकी के 'सप्तमुख' ।

सप्तगोदावरी—गोदावरी के 'सप्तमुख' ।

सप्तद्वीप—जम्बु, प्लक्ष, शाल्मली, कुश, कौञ्ज, वाक, पुष्कर ।

सप्तमोक्षदापुरी—दे० मोक्षदा ।

सप्तर्षि—महाराष्ट्र में सत्तारा ।

सप्तसागर—जम्बुद्वीप (भारत) की 'समुद्रीय' सीमाएँ—स्वर्ग, क्षीर, सुरा, घृत, रघु, दधि, स्वादु ।

सप्तसिन्धु—पञ्जाब, प्राचीन भारतवर्ष । (उत्तरापथ)

सप्ततट—बग अर्थात् पूर्वा बंगाल ।

सप्तपंचक—कुरुक्षेत्र ।

सरयू—(अवध में) वागरा नदी ।

सरोवर—ब्रह्माण्डपुराण के मानम आदि १२ तीर्थसर, विदे० नारायणसर ।

सह्याद्रि—कावेरी के उत्तर में, पश्चिमी घाट की उत्तरी शृंगला (मलयादि) । कावेरी का एक नाम सह्याद्रि जा भी है ।

साची—भीमसा के द० पू० में, प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ, शान्ति ।

साकेत—अवध, अयोध्या ।

सागरसगम—'पगामुख' पर कपिलाश्रम, जहाँ मगर के महल पुत्र 'भग्न' हुए थे ।

साभ्रमती—साबरमती ।

साम्बपुर—मुलतान ।

सारस्वत—अजमेर में, पुष्कर सरोवर ।

सिंहल—सीलोन । लंका कुछ ओर थी—'विन्ध्यपाद' में ।

सिद्धपुर—कपिल ऋषि की जन्मभूमि, भगीरथ की तपोभूमि—विन्दुसर ।

सिद्धाश्रम—शाहाबूद में, बक्सर—जहाँ विष्णु ने वामनावतार ग्रहण किया था ।

सिम्रा—मालवा में, 'क्षिम्रा' नदी—जिस पर उज्जैन बसा था ।

सुगन्धा—गोदावरी पर, नासिक ।

सुदशान—जम्बू द्वीप । काठियावाड़ की प्रसिद्ध ऐतिहासिक शील, जिसका मौर्यकाल में निर्माण तथा, गुप्त युग तक, कितनी ही बार 'उद्धार' हुआ था ।

सुदाम(१)पुरी—गांधी तथा कृष्ण की 'जन्मभूमि', पौरवन्दर । (कीर्ण)

सुपारग—शुपर्णक, हरत ।

सुमरुष्य—मद्रास में, कुमारस्वामी (तीर्थ) ।

सुभद्रा—हरावती नदी ।

(सु)मागधी—पटना की शोण नदी, जिस पर कभी राजगृह बना हुआ था ।

सुमनसू—श्रीप(१)द ।

सुमेरु—गङ्गा में, बदरीनाथ के निकट, पञ्चपर्वत (मद्र हिमा०)—स्वर्णगिरि अथवा हेमकूट नहीं ।

सुरय (अद्रि)—नर्मदा आदि का क्षत्र, अमरकण्ठक ।

सु(मौ)राष्ट्र—सूर्यपुर, सुपारग (मुरग), काठियावाड़ तथा सुन्नरग का कुछ अंश ।

सुनाम्नु—गन्धर्वदेश की नदी, स्वान ।

सुवर्णमूमि—ब्रह्मदेश (वमा)

सुवर्णगिरि—(सैमूर म) मास्की । अज्ञात क समय में चार 'राजपाल' क्षत्रिय—रक्षसिन्धु, उनेन, नौमानी तथा सुवर्णगिरि ।

सुवर्णग्राम—(डाका में) मानारगाँव ।

सुवर्णरेखा—गिरिचार की पलासिनी । खडीमा की कपिशा ।

सुश्रु—यम तथा कल्पि क अन्तर्गत देव, राक्ष, दे० पञ्चगौड़ ।

सूर्यनगर—श्रीनगर ।

सूर्यपुर—मुरग । यहाँ शक्राचार्य ने अपनी 'वद-र-र' रची थी ।

सुनुवन्त—भारत तथा सिंहल के बीच में, श्रीप(१)द ।

सोम पर्वत—अमरकण्ठक ।

सोमनगर—शाखपुर (अन्वर) ।

सौवीर—विन्धु तथा मद्र का अन्तर्देश (चौधेय ?) ।

सौराज्य—कुमाऊँ अथवा गङ्गा का पुराना नाम । महाभारत-युग में दक्ष क्रिषी का अनुत्पन्न हाता था—प्रमीग ने श्वर हा अनुत्पन्न में लोहा लिया था । (विप० पुरुरपुर)

स्थाने(श्वरी)श्वर—धानेनर (कुरुक्षेत्र), स्थानुतीर्थ ।

सुन्न—तीनसर विन्धु में, कास्की ।

हमद्वार—श्रीद्वार ।

हन्त्याहरण—अवध में, हरद्वार में २८ मील उत्तर-पूर्व, पञ्च तीर्थ—जहाँ भगवान् राम ने (२ वर की) मन्मथता का पाप प्रक्षालन किया था ।

हरकल—वग, दे० 'पञ्चगौड़' ।

हरलेत्र—सुवनेश्वर ।

हरिद्वर्ष—उत्तर कुट्ट, जिसमें विन्धुन का पश्चिमी भाग शामिल था ।

हस्तिनापुर—कुर्भों की प्राचीन राजधानी, रामक्याह्य, किन्तु जनमेजय के दो पीढ़ी बाद, नयी राजधानी काँशाम्बी हो गई थी ।

हिरण्यपर्वत—सुवग(१)गिरि, सुगिर ।

हिरण्यवाहु—शाण नदी ।

हृषीकेश—बदरीनाथ तथा हरिद्वार के मध्यस्थित प्रसिद्ध तीर्थ, 'अपिकेश' ।

हेमकूट—वैताल ।

हेमवत—भारतवर्ष ।

हेमवती—गङ्गा के निकट, मद्र से उद्गत अपिकुल्या नदी । हरवती । शतदु (मतडुन), का विशिष्ट के दृष्टिमान में सौ-सौ भारतों में फूट गई ।

हेहय—अनूपदेश अथवा 'माहिष्मती राज्य' अथवा मालवदेश ।

ह्यादिनी—ब्रह्मपुत्र नदी ।

सहायक ग्रन्थों की सूची

हिंदी-ग्रन्थ

- १ हिन्दी शब्दसागर—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
- २ भाषा शब्दकोश—डा रमाशंकर शुक्ल ।
- ३ हिन्दुस्तानी कोश—श्री रामनरेश त्रिपाठी ।
- ४ प्रामाणिक हिन्दी कोश—श्री रामचन्द्र वर्मा ।
- ५ हिन्दी पर्यायवाची कोश ।
- ६ पाणिभाषित शब्दकोश—श्री मुकुन्दलाल श्रीवास्तव ।
- ७ भारत भूमि और उसके निवासी—श्री जयचन्द्र विद्यालंकार ।
- ८ भारत के इतिहास की रूपरेखा— " "
- ९ इतिहास प्रवेश— " "
- १० इतिहास मीमांसा— " "
- ११ पाणिनिवादीन भारतवर्ष— डा वासुदेवशरण अग्रवाल ।
- १२ हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन— " "
- १३ भारत ब्राह्मण (बँगला)— बोषाल
- १४ केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् की शब्द मूचियाँ ।
- १५ बृहत् हिन्दी कोश—वाणिक प्रसाद ।

संस्कृत-ग्रन्थ

- १ पद्मचन्द्रकोश ।
- २ संस्कृत हिन्दी कोश—भाष्टे ।
- ३ वाचस्पत्य कोश ।
- ४ शब्दवत्पट्टम ।
- ५ शब्दार्थचिन्तामणि ।
- ६ अमरमिह, हेमचन्द्र, केशव, हलायुध आदि कोश ।
- ७ सिद्धान्तकौमुदी ।
- ८ सुभाषितरत्नभांडागार ।
- ९ सुभाषितरत्नाकर ।